वीर अर्जुन

क्या कभी भारत का अपने इस प्रदेश पर स्वामित्व होगा ?
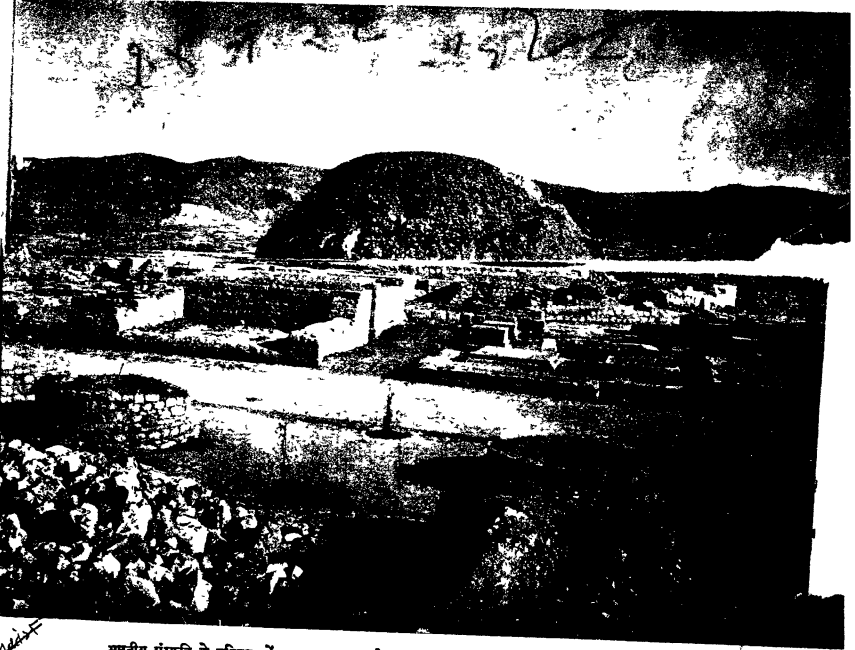
भारतीय संस्कृति के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण तक्षशिला (विश्वविद्यालय) का धर्मराजिका स्तूप

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १७] दिल्ली, रविवार २३ पौष सम्वत् २००७ [अङ्क ३८

कोरिया में शाँति-प्रस्ताव की विफलता

कोरिया के युद्ध को रोकने के लिए राष्ट्रसंघ ने भारत आदि १२ राष्ट्रों के प्रस्ताव पर जो उपसमिति बनाई थी, वह युद्ध को रोकने में असफल रही। साम्यवादी चीन ने कोरिया में ३८ अक्षांश के दक्षिण में भी विशाल सैनिक आक्रमण कर दिया और दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल पर उसका अधिकार कर लिया है। राष्ट्र-संघ-समिति के युद्धबन्दी प्रस्ताव को ठुकरा कर चीन ने न केवल राष्ट्र-संघ की अवहेलना की है, किन्तु उसने अपने दुर्धर्ष आक्रमण द्वारा भारत और उसके अन्य साथी राष्ट्रों को भी यह बता दिया है कि विजय के मद से गर्वित चीन शक्ति का पुजारी है, अपने मित्र भारत की भी सलाह उसे स्वीकरणीय नहीं है। इससे पहिले भी चीन तिब्बत पर सैनिक आक्रमण न करने की हमारी प्रार्थना को ठुकरा चुका है, यह भारत भूला नहीं है। किन्तु इस नये आक्रमण ने तो भारत को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी तिरस्कृत कर दिया है।

कोरिया के युद्ध में चीन के बलप्रदर्शन ने राष्ट्र-संघ के सामने जो नई परिस्थिति पैदा कर दी है [illegible] इस पर विचार करेगा और उसका भला बुरा जो प्रतिकार संभव होगा, करने का प्रय[illegible] करेगा, किन्तु उसने भारत को जो शिक्षा दी है, हम आज उसी को चर्चा [illegible] करना चाहते हैं। चीन से युद्ध करने का अनुरोध करने वाले राष्ट्र एशियावासी थे। इसलिए यह अधिक स्वाभाविक होता कि चीन इनके प्रस्ताव का आदर करता। चीन और भारत दोनों एशिया के प्रधान राष्ट्र हैं। यूरोप अथवा अमेरिका ने एशिया का शोषण किया है, इससे समस्त एशिया क्षुब्ध है। यूरोप की महत्वाकांक्षायें आज भी समाप्त नहीं हुई हैं। पांडिचरी व हिंदचीन में फ्रांस और न्यूगिनी में हालैंड आज भी अपने स्वार्थ छोड़ने को तैयार नहीं है। काश्मीर में राष्ट्रसंघ के महारथी भी जो खेल खेल रहे हैं, वह यूरोप की अभी तक एशिया पर गृध्रदृष्टि के प्रमाण हैं। किन्तु इसीलिए आवश्यकता इस बात की है कि एशिया संगठित हो और इसके लिए चीन व भारत का परस्पर सम्मेलन अनिवार्य था। चीन और भारत के सम्बन्ध प्राचीन काल से अच्छे रहे हैं। भारत चीन का सांस्कृतिक गुरु रहा है। चीन में साम्यवादी शासन के बाद भी भारत ही प्रथम बड़ा राष्ट्र था, जिसने उसे स्वीकार किया और उसे राष्ट्रसंघ में सम्मिलित करने का भी प्रयत्न किया। आज भी पंडित नेहरू लन्दन-सम्मेलन में साम्यवादी चीन को राष्ट्रसंघ में लेने पर जोर दे रहे हैं। इस सब हितैषिता, सद्भावना और मित्रता का मूल्य चीन इस तरह उसके प्रस्तावों को ठुकरा कर दे रहा है।

इस स्थिति के दो ही कारण हो सकते हैं। एक तो यह कि रूस चीन पर कोरिया में आगे बढ़ने के लिए भारी दबाव डाल रहा हो और दूसरा यह कि चीन को अपनी शक्ति पर अपूर्व विश्वास हो और वह समस्त एशियावासी राष्ट्रों की उपेक्षा कर भी यथासम्भव अपने साम्राज्य विस्तार के लिए उत्सुक हो। इन दोनों में से कोई भी कारण हो, भारत को अधिक सतर्क होने की आवश्यकता है। यदि रूस का दबाव ही कारण है, तो हमें समझ लेना चाहिये कि इंगलैंड और अमरीका ही नहीं, रूस भी एशिया में अपना स्वार्थ साधन करना चाहता है और इसलिए रूस से भी हमें उतना ही सतर्क रहना चाहिये, जितना कि अमरीकी व ब्रिटिश साम्राज्यवादिता से। यदि चीन का शक्तिमद कारण है, तो वह भी चिन्तनीय है। आज का युग शक्ति का युग है। केवल सद्भावना, शांति की इच्छा और आदर्शवाद से काम नहीं चलेगा। किसी भी आक्रमण से रक्षा करने योग्य संगठित शक्तिशाली होना आवश्यक है। हमें आज अपनी अन्तर्राष्ट्रीय नीति का निर्माण करते समय शक्ति संग्रह से उदासीन नहीं होना चाहिये।

★

हि० सा० सम्मेलन का संदेश

हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अपने कोटा अधिवेशन में जो प्रस्ताव किये और उन पर जो भाषण हुए, उन सब के मूल में एक भावना विद्यमान थी और वही सम्मेलन का सन्देश था। हिन्दी राष्ट्र-भाषा के रूप में स्वीकार कर ली गई, किन्तु भारत सरकार राष्ट्र के इस निर्णय का स्वागत करती प्रतीत नहीं होती। इस सम्बन्ध में राष्ट्र का असंतोष उग्र रूप में वहां प्रकट हुआ। भारत सरकार के शिक्षा मन्त्री ने पारिभाषिक शब्दों के हिंदी अनुवाद के लिये जो उपसमिति बनाई है, उसमें उर्दू, अंग्रेजी जानने वाले तो अनेक हैं, किन्तु देश की राष्ट्र-भाषा हिन्दी का प्रतिनिधित्व नहीं के बराबर है। शिक्षा मन्त्री ने उस समिति को लातीनी, और फ्रेंच भाषाओं के प्रचलित शब्दों से मिलते-जुलते शब्द बनाने की सलाह दी है। शिक्षा मन्त्री का यह परामर्श विधान की भावना के सर्वथा विपरीत है। हमारे पारिभाषिक शब्दों का आधार विदेशी भाषाएं न होकर अपने देश की भाषा होनी चाहिए और यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत इस दृष्टि से बहुत अधिक सम्पन्न भाषा है। सम्मेलन के शेष प्रस्तावों में भी सरकार से हिन्दी को शीघ्रातिशीघ्र अपनाने का [illegible] अनुरोध किया गया [illegible] सरकारी मन्त्रालयों में, सूचनापट्टों पर, विज्ञप्तियों में, रेलों, बैंकों तथा अन्य विभागों में हिंदी को अपनाने का अनुरोध किया गया था। संविधान परिषद् द्वारा नियत १५ साल की अवधि को चुनौती मानते हुए सभापति श्री जयचन्द्र विद्यालंकार ने इस बात पर विशेष बल दिया कि अंग्रेजी शिक्षा व अंग्रेजी परम्परा के दास सरकारी कर्मचारियों व शिक्षा शास्त्रियों में आज न मौलिकता है और न राष्ट्रीयता। वे किसी प्रश्न पर स्वतन्त्र दृष्टि से विचार ही नहीं कर सकते और इसलिए सभापति ने इसकी विस्तृत चर्चा की और भारतीय संस्कृति व साहित्य से विज्ञ विद्वानों का सहयोग लेने का परामर्श सरकार को दिया। यदि आज सरकार जनता की इस आवाज को स्वीकार नहीं करेगी, तो उससे असंतोष बढ़ेगा ही।

सम्मेलन को सबल बनाओ

किन्तु सम्मेलन अपने इन प्रस्तावों को भारत सरकार से क्रियान्वित करा सकेगा, इसमें पूर्ण सन्देह है और इसका कारण यह नहीं है कि इन प्रस्तावों में कहीं कोई कमी है। अंग्रेजी की शिक्षा-दीक्षा में दीक्षित सरकारी अधिकारी जहां इन प्रस्तावों के क्रियान्वित होने में बाधक होंगे, वहां स्वयं सम्मेलन का संगठन भी अत्यन्त दूषित और शिथिल हो गया है। कोटा में जाने वाले हिन्दी प्रेमियों ने सम्मेलन की जिस गुटबन्दी के दर्शन किये, वह अत्यन्त निन्दनीय थी। ठीक परीक्षाओं से पहले उसके पर्चे 'आउट' कर दिये गये, सम्मेलन के [illegible] पर दो साल से कोई निर्णय ही हो पाया, नियमावलि-समिति निश्चय ही नहीं कर पाती, कभी पर[illegible] बोर्ड बनता है, तो कभी टूटता परीक्षा समिति का संगठन भी अत्य[illegible] दूषित है। सम्मेलन के एक मंत्री की [illegible] से अधिक किताबें कोर्स में लगा दी हैं। इन सब बातों की आलोचना क[illegible] अधिवेशन में हुई और सम्मेलन के मा[illegible] रथियों के सम्बन्ध में तरह तरह के सच्चे अपवाद भी वहां सुनने को मिले [illegible] जिस सम्मेलन की यह स्थिति हो, [illegible] सम्मेलन कोई ऐसे कार्य कर सकेगा, [illegible] सम्बन्ध में पूर्ण सन्देह है। हमा[illegible] निश्चित धारणा है कि आज सम्मेलन [illegible] परीक्षा सम्बन्धी कार्य किसी दूसरी [illegible] तन्त्र संस्था को सौंप कर अपनी समा[illegible] शक्ति हिन्दी के प्रसार और उत्कृष्ट साहि[illegible] त्य-निर्माण की ओर लगानी चाहिये [illegible] परीक्षा-बोर्ड का संगठन यदि दूषित [illegible] तो उसमें सुधार किया जा सकता है [illegible] परन्तु आज सम्मेलन के अधिकारियों [illegible] ध्यान केवल परीक्षा और उसकी पाठ्य[illegible] पुस्तकें रह गया है। आज जब प्रा[illegible] सब विश्वविद्यालय हिन्दी को स्थान दे[illegible] के लिए उद्यत हैं, सम्मेलन का कर्त[illegible] है कि इस नये वातावरण से पूर्ण ला[illegible] उठावे और हिन्दी को राष्ट्रभाषा के [illegible] पर क्रियात्मक रूप से बिठाने में अपनी शक्ति लगा दे। हिन्दी संसार की सम्मेलन से उदासीनता अवक्तव्य सीमा तक पहुँच चुकी है। उसका कर्त्तव्य है कि वह सम्मेलन को प्रयाग की गुटबन्दी से निकाले और वहां होने वाली अन्धेर गर्दियों की जांच के लिए तीव्र लोकमत उत्पन्न करे। आपसी दलबन्दी और गन्दगी से मुक्त होकर ही सम्मेलन अपने प्रस्तावों पर जोर देने में समर्थ हो सकेगा। क्या सम्मेलन के नये सभापति सम्मेलन को हिन्दी संसार के निकट विश्वासपात्र और सबल बनाने का प्रयत्न करेंगे?

शिक्षा-पद्धति को चुनोती

उत्तर प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री सम्पूर्णानन्द ने कन्याओं के एक शिविर में उपस्थित लड़कियों को चुनौती दी कि उनमें से आधी से अधिक छात्राओं से अच्छा भोजन वे स्वयं पका सकते हैं। यह चुनौती वस्तुत: उन छात्राओं को नहीं थी, वह थी उस शिक्षा पद्धति को [illegible] जिसमें शिक्षा का जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं है। कन्या विद्यालयों का पाठ्यक्रम और वातावरण भी प्राय: बालकों के शिक्षा क्रम जैसा होता है। श्री सम्पूर्णानन्द जी इस कमी को अनुभव करते हैं, तो उन्हीं के सिर पर इसे दूर करने का उत्तरदायित्व भी है और अधिकार भी। क्या वे शिक्षा-पद्धति के इस भारी दोष को दूर करेंगे?

१९५१ की समस्याएं

★ गुप्तदृष्टि

'वीर अर्जुन' का गत अंक सन् १९५० के अन्तिम दिन, दिसम्बर ३१ को प्रकाशित हुआ था। उसके दूसरे दिन से ईसा के सन् का १९५१ वां वर्ष प्रारम्भ हुआ है। भारत का विक्रमी सम्वत् यद्यपि वैज्ञानिक रीति से अधिक शुद्ध काल गणना प्रणाली पर आधारित है, तो भी अंग्रेजों के राज्य के समय से सभी व्यावहारिक कार्यों में ईसवी सन ही प्रयुक्त हो रहा है, और आज भी हो रहा है। यथार्थ में तो चाहिये यह था कि भारतवर्ष के स्वतन्त्र होने के पश्चात सभी कार्यों में विक्रमी संवत का प्रयोग होने लगता। किन्तु ऐसा नहीं हुआ, और न हीं हमारे वर्तमान शासकों का इस ओर कोई ध्यान है। अस्तु।

काल के इस अनन्त पथ पर ईसा के जन्म से १९५० मील पार कर लेने के पश्चात् १९५१ में पर पांव रखते हुए आगे का मार्ग कैसा दिखाई देता है! जीवन की इस महान यात्रा में चलता आता हुआ यह प्राचीन राष्ट्र आगे क्या देखता है? क्या इसका मार्ग पक्का बना हुआ, आम की चौराहों में होता हुआ, फूलों से भरे हुए उपवनों के मध्य में होता हुआ जाता है? अथवा कंटकाकीर्ण भयानक वन और विकराल मरुभूमि इस मार्ग में आती [illegible]?

विचार कर यदि देखेंगे तो प्रतीत होगा कि हम जीवन की उस मरुभूमि की ओर बढ़ रहे हैं, जिसमें प्रवेश करने के पश्चात् आगे मार्ग ढूंढ निकालना कठिन हो जायगा। जैसे-जैसे मरुभूमि के निकट पहुंचता जाता है, उसके मार्ग में मिलने वाली हरियाली कम होती जाती है। यथार्थ में क्रमशः कम होती हुई हरियाली ही यह बताती है कि व्यक्ति मरुभूमि के निकट तट आता जा रहा है।

भारतवर्ष के राष्ट्रीय जीवन में शीघ्रता से कम होती हुई हरियाली यह बताती है कि हम मरुभूमि की ओर बढ़ ही नहीं रहे, उसके निकट आ पहुँचे हैं। स्वतन्त्रता आने से पहिले तो प्रत्येक संकट, दुर्भाग्य अथवा कठिनाई का दोष अंग्रेजों के सिर मढ़ कर हम सरलता से ये सोच लिया करते थे कि यदि अपने जीवन का मार्ग स्वयं निश्चित करने की हमें स्वतन्त्रता होगी तो ये आपत्तियां और कष्ट कभी भी नहीं आते। किन्तु अपने हाथ में शासन सूत्र आये ३॥ वर्ष हो गये। किन्तु इतने दिनों का अनुभव यही बताता है कि अनन्त कष्टों की जिस मरुभूमि से बचने के लिए हमने जो पगडण्डी पकड़ी थी, वह उस मरुभूमि की ओर ले जाने वाला एक छोटा सा रास्ता सिद्ध हुआ।

युद्ध की विभीषिका

१९५१ में पैर बढ़ते हुए हम भयानक भूमि में प्रवेश कर रहे हैं। सामने क्षितिज पर विश्वयुद्ध के बादल घुमड़ रहे हैं। कब ये हमारे सिर पर नहीं आ जायेंगे, कहा नहीं जा सकता। हमारा भवन इतना सुदृढ नहीं, जिसमें बैठ कर हम इनकी घनघोर वर्षा से सुरक्षित रह सकें। भावी युद्ध की विभीषिका भारतवर्ष के लिए सब से विकट प्रश्न है।

यह कह कर इस प्रश्न को टालना कि हम तो तटस्थ रहेंगे, अपने-आपको धोखा देना है। हम किसी से नहीं लड़ेंगे यह इस बात की गारण्टी नहीं कि कोई हमसे नहीं लड़ेगा। हमारा निकटतम पड़ोसी पाकिस्तान यही मानता है कि जिस बात से भारत की हानि अथवा ह्रास होता है, वह उसके लाभ की है। युद्ध की स्थिति में वह यह कैसे देख सकेगा कि तटस्थ भाव से बच कर भारत युद्ध की ज्वाला से बच जाय।

इसके अतिरिक्त संसार के जो बलवान राष्ट्र युद्ध में जूझेंगे, उन में से ही कोई अपने स्वार्थ के लिए हमारे ऊपर [illegible] क्या गारण्टी है? गत महायुद्ध में जर्मनी ने बेल्जियम, हालैंड आदि यूरोप के कई देशों पर इसलिए ही आक्रमण कर दिया था कि इनका उसके अधिकार में होने से उसकी शक्ति अधिक प्रबल हो जाती थी। फिर भारत जैसे विशाल देशों पर अधिकार करने का लोभ केवल कोई हमारी तटस्थता के लेबिल को देख कर रोक लेगा यह विचार करना घोर आत्मवंचना होगी।

अन्न व अर्थ संकट

युद्ध की विभीषिका के अतिरिक्त अर्थ और अन्न की भयानक समस्या इस वर्ष में हमारे सम्मुख खड़ी हैं। अन्न के अभाव में आज विदेशों से हम भीख मांग रहे हैं। अपने और परिवार के पेट की आग से व्याकुल एक साधारण व्यक्ति जिस प्रकार अपने परिश्रम को एक धनी व्यक्ति के हाथों में बेच देता है पेट भर खाने के लिए, अन्न संकट से व्याकुल होकर हमारे प्रधान मंत्री वैसा ही करने के लिये कहीं बाध्य तो नहीं हो रहे। अमेरिका हमारी सहायता किसी उदारता की भावना से नहीं कर रहा। बदले में उसको हम से अपेक्षायें हैं। वे अपेक्षाएं विषैले कांटे बन कर हमारे मार्ग में उग सकती हैं।

अर्थ संकट तो और भी भयानक है। अर्थ के अभाव में हमारी क्रयशक्ति क्षीण हो जायेगी। घर की चीजें बेच कर काम चलाना होगा। बहुमूल्य पदार्थ कौड़ियों में देने होंगे। कर्ज लेकर काम चलाना होगा। पहिले ही अन्तर्राष्ट्रीय बैंक से हमने कर्जा लिया हुआ है। वह यदि और बढ़ा तो स्थिति क्या होगी? फिर कर्जदार की स्थिति बड़ी विचित्र होती है। उसे अपने बालकों के मुंह का ग्रास ले कर कर्ज और उसका ब्याज चुकाना पड़ता है। इससे उसकी सन्तान के विकास का मार्ग रुकता है।

भ्रष्टाचार

इसके अतिरिक्त भ्रष्टाचार का महा भयानक रोग हमें लगा हुआ है। घूस का बाजार गरम है। सामाजिक जीवन के किसी भी क्षेत्र में आइये, घूस का नंगा रूप दिखाई देगा। जो घूस लेते नहीं उन्हें दी जाती है, जो देते नहीं उनसे मांग की जाती है। किसी भी सरकारी दफ्तर में आइये, बिना घूस दिये आपका काम नहीं चलेगा। न्याय की सुरक्षा के लिए बने हुए न्यायालयों [illegible] घूस का राज्य है। यातायात में घूस चलती है। ठेके घूस देने वाले को मिलते हैं। [illegible] कराया जाता है। काला बाजार अथवा चोर बाजार भी घूस लेने की ही एक पद्धति का नाम है। मकान या दुकान लेने के लिए घूस पगड़ी का रूप ले लेती है। यहां तक कि होटल में चाय पिलाने के लिए 'टिप' के रूप में बेरे को भी घूस दी जाती है।

जिन बड़े बड़े लोगों को सीधी घूस नहीं दी जा सकती, उनके रिश्तेदारों के द्वारा दी जाती है, अन्यथा उनको काम में एक ठाटदार दावत दी जाती है। नहीं तो वर्षगांठ आदि पर भेंट तो किसी ने रोकी ही नहीं है। साधारण रूप से टैक्स बचाने, नौकरी प्राप्त करने, ठेका लेने, किराया बचाने, सस्ता माल खरीदने, मकान लेने बिजली लेने अथवा अन्य किसी भी उद्देश्य के लिए घूस देना इतनी साधारण बात बन चुकी है कि उसे घूस के स्थान पर 'हक' कहा जाता है।

भ्रष्टाचार का यह दैत्य हमारे सामने मुंह बाए खड़ा है। कोई भी सामाजिक जीवन पारस्परिक सहयोग, प्रेम और आत्मीय भाव के आधार पर चलता है। अपने स्वार्थ के लिए इस प्रकार एक दूसरे को लूटने से हमारे सामाजिक जीवन में घुन लगता आ रहा है। यदि इसका उपाय करने में हम असफल रहे तो १९५१ का वर्ष हमारे लिए सुखकर न हो सकेगा, क्योंकि जब तक भ्रष्टाचार का रोग नष्ट नहीं होता, अन्य समस्याओं को हल करने के लिए किये जाने वाले उपाय सफल नहीं हो सकते।

बेकारी

इसके अतिरिक्त इस वर्ष में बेकारी का विकट प्रश्न हमारे सामने है। आज देश में बेकार लोगों की संख्या बहुत अधिक है—ऐसे बेकार जो शिक्षित हैं, योग्य हैं और काम करने में समर्थ हैं। एक ओर हमारे नेता चिल्ला चिल्ला कर कहते हैं कि देश का उत्पादन बढ़ाओ, दूसरी ओर लाखों बेकार युवकों की शक्ति नष्ट हो रही है। वे कोई भी काम न मिलने की समस्या में घुले जा रहे हैं। देश में प्रतिदिन इस प्रकार से बेकार लोगों की बढ़ती हुई संख्या आज एक भारी प्रश्न बन गई है, दुर्भाग्य से जिसके हल के विषय में किसी ने सोचा तक नहीं।

शिक्षित व्यक्तियों को काम मिलने के दो ही बड़े क्षेत्र हैं — सरकारी नौकरियां अथवा व्यापार। खेती करने की ओर न तो उनकी रुचि ही होती है न उसके लिए आवश्यक उत्साहप्रद वातावरण ही दिखाई देता है। आर्थिक संकट के कारण सरकार अपना खर्च करने पर तुली है। यह खर्च कितना कम हो रहा है, यह अलग प्रश्न है, किन्तु इसके कारण न केवल कितने ही लोग सरकारी नौकरी से पृथक् कर बेकार हो गए हैं, वरन विश्वविद्यालयों से बाहर आने वाले युवकों को भी [illegible] है। आज ऐसे लोगों की संख्या पर्याप्त मात्रा में प्रत्येक बड़े नगर में मिलेगी जो नौकरी के लिए बीसियों प्रार्थनापत्र भेज चुके हैं, कई स्थानों पर मिल भी आये हैं, और उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

दूसरा क्षेत्र है व्यापार का। जब व्यापार अच्छा चलता हुआ होता है, तो उसमें बहुत से लोगों को काम मिल सकता है किन्तु आज व्यापार की बड़ी दुर्दशा है। व्यापारी नई नई योजनाओं में अपना धन लगाने के स्थान पर अपना चलता काम किसी प्रकार चलता हुआ रखने के पक्ष में हैं। उन्हें अपना रुपया खोने का भय है। जब रुपया ही नहीं आवेगा तो व्यापार बढ़ेगा कैसे? प्रत्येक बड़े व्यापार के चलने से उससे संबन्धित अनेकों छोटे मोटे धन्धे चला करते हैं और उनसे हजारों लोगों को काम मिलता है। व्यापार के गिरे हुए रहने के कारण बहुत से लोग बेकार हैं और उन्हें पेट भरना कठिन हो रहा है, इतना ही नहीं व्यापार के गिरे हुए रहने से देशव्यापी आर्थिक संकट प्रतिदिन विषमतर होता जा रहा है।

सम्बन्धित प्रश्न

यथार्थ में ये सभी समस्यायें तथा प्रश्न एक दूसरे से सम्बन्धित हैं और एक

[शेष पृष्ठ ११ पर]

प्रधान मन्त्री श्री नेहरू ने राष्ट्रमण्डलीय प्रधान मन्त्री सम्मेलन में भाग लेने लन्दन के लिये प्रस्थान किया हैं।

तिब्बत के आध्यात्मिक शासक दलाई लामा के भविष्य के सम्बन्ध में अब तक यही ज्ञात हुआ है कि वे अभी तिब्बत में ही रहेंगे।

पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री मियां लियाकतअली खां राष्ट्रमण्डलीय प्रधान-मन्त्री सम्मेलन में भाग न लेने के अपने निश्चय पर पूर्ववत अड़े हुये हैं।

राजस्थान में राजनीतिक परिवर्तन
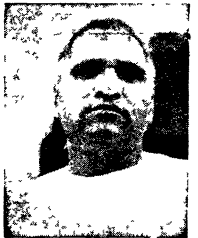
राजस्थान के प्रधानमंत्री श्री हीरालाल शास्त्री ने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया है।

श्री हीरालाल शास्त्री के स्थान पर श्री जयनारायण व्यास के प्रधान मन्त्री बनने की विभिन्न क्षेत्रों में चर्चा है।

श्री वेंकटचारी राजस्थान के शासक-सलाहकार नियुक्त हुये हैं।
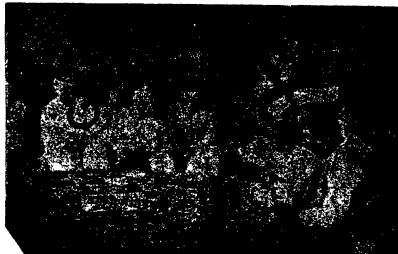
० सा० सम्मेलन के कोटा अधिवेशन में राष्ट्रभाषा परिषद् के अध्यक्ष श्री रंगनाथ दिवाकर भाषण दे रहे हैं।

हि० सा० सम्मेलन के अध्यक्ष श्री जयचन्द्र विद्यालंकार के जलूस का दृश्य

हिंदू सभा का असफल पूना अधिवेशन

हिन्दू महासभा के अध्यक्ष

★ श्री केशवदेव

> यथार्थ सिद्धान्त और नीति पर व्यवहार न होने के कारण ही कांग्रेस असफल हो रही है। यह सत्य है कि आज सिद्धान्त और नीति से युक्त कोई भी दल (हिन्दू सभा भी) देशमें दिखाई नहीं देता, किंतु यह भी सत्य है कि समय अपनी माग पूरी करने के लिए तत्त्व तथा व्यक्ति खोज लेता है।

डा० खरे

पूना में हाल ही में समाप्त हुआ अखिल भारतीय हिन्दू महासभा का अधिवेशन देश के विचारशील व्यक्तियों की सहानुभूति प्राप्त करने में सफल नहीं हुआ, यह कहा जा सकता है। वहां की गतिविधि, वहां आगत सज्जनों में से अधिकांश का संकुचित दृष्टिकोण, तथा ... व्यावहारिक उदारता के अभाव के साथ-साथ प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण आदि के कारण देश के कुछ व्यक्ति, जो हिन्दू-सभा की धूमधाम से आकर्षित हो कर उसके पूना अधिवेशन की ओर देखने लगे थे, पुनः निराश से होते दिखाई देते हैं।

यह सत्य है कि आज देश में एक प्रबल तथा समर्थ विरोधी राजनीतिक दल की आवश्यकता समय की मांग है। देश के प्रमुख राजनीतिक दल कांग्रेस के अध पतन ने देशवासियों के मन में यह विचार जाग्रत कर दिया है कि देश की बागडोर कांग्रेस के हाथ में रहने से भविष्य संदिग्ध रहेगा। कारण स्पष्ट है। एक व्यक्ति के शासन को तानाशाही कहा जाता है, किन्तु एक ही दल का शासन तो तानाशाही का और भी अधिक विकृत रूप है। शासन में असंतोष होने पर जनता अन्यान्य राजनीतिक दलों के पीछे खड़ी होकर हमारे हाथ से शासनसूत्र छीन सकती है, यह भय ही प्रजातंत्र प्रणाली में सत्तारूढ़ दल पर अंकुश का काम करता है और उसमें तानाशाही प्रवृत्तियां उत्पन्न नहीं होने देता।

इस तथ्य का सबसे बड़ा उदाहरण स्वयं हमारा देश है। अंग्रेजों को निकालने के लिए संयुक्त मोर्चा बनाने की दृष्टि से प्रत्येक वर्ग ने कांग्रेस को अपना सहयोग दिया। फलस्वरूप जहां एक ओर कांग्रेस दिन प्रति दिन बलवान होती गई वहां दूसरी ओर अन्य राजनीतिक दलों को अपना विकास करने का अवसर नहीं मिला। ऐसी स्थिति में सहसा बागडोर अपने हाथ में आ जाने के कारण कांग्रेस दल तथा कांग्रेस जनों में सत्ता के मद से उत्पन्न होने वाली तानाशाही को रोकने वाले अन्य दल का देश में अभाव था ही था। भ्रान्त विचारधारा और कोरे आदर्शवाद के पीछे व्यावहारिक बुद्धि की उपेक्षा कर कांग्रेस सरकार ने देश के जीवन में कई ऐसी समस्यायें उत्पन्न कर दीं, जिनसे देशवासियों का जीवन और भी अधिक दुःखी हो गया। कांग्रेस की इन राजनीतिक भूलों के कारण जहां देश में उसके प्रति असन्तोष बढ़ता गया, उसकी प्रतिष्ठा नष्ट हो गई और देशवासी इस बात की उपेक्षा करने लगे कि कोई विरोधीदल खड़ा होकर देश का योग्य मार्ग दर्शन करे, जिससे आगामी चुनाव में देश अपने शासन की बागडोर उसके हाथ में सौंप सके, वहां अन्य किसी बलवान विरोधी दल के अभाव में कांग्रेस सरकार की तानाशाही वृत्ति बढ़ती ही गई। फलस्वरूप आज देश में कांग्रेस का विरोधी भाव पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है।

किन्तु इतिहास की भूलों से हम पाठ लें। कांग्रेस की वर्तमान असफलता का कारण केवलमात्र विरोधीदल का अभाव नहीं था। यथार्थ में कांग्रेस की नीति तथा विचारधारा अंग्रेज-विरोध पर ही आधारित थी। अंग्रेजों के काल में देश की जनता को जागृत करने के लिए उन्हें विदेशियों के विरुद्ध खड़ा करना चाहिये, यह विचार लेकर कांग्रेस ने अपने नारे, अपना कार्यक्रम, अपना प्रचार आदि सभी बातों में अंग्रेजों का विरोध करने को ही प्रमुख स्थान दिया। फलस्वरूप देश स्वतन्त्र होने के पश्चात् किस प्रकार देश का नवनिर्माण किया जावेगा, इस रचनात्मक विचारधारा की उपेक्षा रही। जो रचनात्मक कार्यक्रम भी अपनाये गए, उनका भी यथार्थ में प्रचार-मूल्य ही अधिक था। अतः १५ अगस्त १९४७ को यथार्थ में राज्य की बागडोर अपने हाथों में और राष्ट्रनिर्माण का कार्य अपने कंधों पर आ पड़ने पर जिस व्यवस्थित ढंग का विकास किया जाना चाहिये था, उसमें कांग्रेस पूर्णतः असफल रही।

हिन्दू महासभा का पूना अधिवेशन इसी इतिहास की याद दिलाता है। उस समय के शासक अंग्रेजों के प्रति देश की जनता में फैले हुए विरोधी भाव का लाभ उठाकर वर्तमान स्वरूप धारण करने वाली कांग्रेस जिस प्रकार देश की समस्याओं को सुलझा कर उसे समृद्धि के मार्ग पर ले जाने में असफल हुई है, उसी प्रकार आज जनता में फैले हुए कांग्रेसविरोधी भाव का लाभ उठा कर अपने को बलवान बनाने का प्रयत्न करने वाली हिन्दू महासभा के हाथों में यदि देश की सत्ता आ गई तो इस इतिहास की पुनरावृत्ति नहीं होगी यह कैसे कहा जा सकता है। यदि केवल अंग्रेजों की प्रतिक्रियात्मक विचार धारा लेकर कांग्रेस ने आज देश को समस्याओं के दलदल में फंसा दिया है, तो केवल कांग्रेस की प्रतिक्रिया के रूप में व्यवहार करने का पूना अधिवेशन में स्पष्ट संकेत करने वाली महासभा देश की समस्याओं को कैसे सुलझा सकेगी? विरोध के लिए विरोध करने वाले से राष्ट्र निर्माण कैसे होगा?

यथार्थ में आज देश सच्चे नेतृत्व के अभाव में भटक रहा है। किसी भी विरोधी दल का निर्माण अथवा विकास केवल इस बात पर ही नहीं होना चाहिए कि आज देश में कांग्रेस के प्रति विरोधी भाव है और उसका लाभ उठा कर अपने को बलवान बना देना। चाहिए उसका आधार कुछ सिद्धान्त होने चाहिए—शुद्ध राष्ट्रीयता पर आधारित सिद्धान्त। उन सिद्धान्तों को क्रियात्मक रूप देने वाली व्यावहारिक नीति होनी चाहिए। और उस दल के कार्यकर्ताओं के जीवन में चारित्रिक दृढ़ता और उदारता होनी चाहिए, जो सार्वजनिक जीवन में इतनी अधिक आवश्यक है।

यह ठीक है कि वर्तमान शासक दल का हम विरोध करते हैं, किन्तु यह विरोध उसके भ्रांत दृष्टिकोण और अव्यावहारिक आदर्शवाद के कारण है। उस-की इस नीति के कारण है, जो एक काल्पनिक आदर्शों को पाने के प्रयत्न में व्यावहारिक जगत से अलग हट गई है। और देश के जीवन में दिन प्रति दिन समस्याओं की वृद्धि करती जाती है। निर्वासित समस्या, आर्थिक संकट,

श्री भोपटकर

काश्मीर, सार्वजनिक चरित्र का पतन, भ्रष्टाचार आदि इसी के उदाहरण हैं।
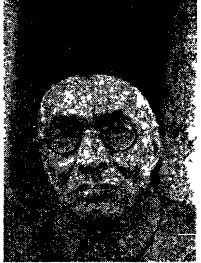
किन्तु इस विरोध की एक सीमा है। यह नीति तथा सिद्धांत तक ही सीमित है। इसे इससे आगे ले जाना देश के लिए हितकर न होगा। कांग्रेस जनों से, कांग्रेस के नेताओं से व्यक्तिगत रूप में विरोध भाव रखना अनुचित है। यह राष्ट्र-निर्माण का मार्ग नहीं। हिन्दू संस्कृति रक्षा करने के लिए उत्सुक महासभा का तत्त्ववर्ग यह भूला हुआ प्रतीत होता है कि व्यक्तिगत द्वेष अथवा विरोध हिन्दू संस्कृति के प्रतिकूल है। सिद्धांत, विचारधारा आदि से घोर विरोध रखते हुए भी व्यक्ति के लिए हृदय में मान रखना ही हिन्दू संस्कृति की विशेषता है।

कांग्रेस की भूलों को ठीक करने का उचित मार्ग है और वह है यथार्थ सिद्धांत और नीति पर व्यवहार। चूंकि कांग्रेस वैसा करने में पूर्णतः असफल हुई है। अतः किसी अन्य दल की आवश्यकता है, जो इन्हें देश के सामने रख सके। यही समय की मांग है। यह सत्य है कि आज ऐसा कोई भी दल देश में दिखाई नहीं देता। किन्तु यह भी सत्य है कि समय अपनी मांग पूरी करने के लिए तत्त्व तथा व्यक्ति ढूंढ लेता है।

हिन्दी राजभाषा कैसे हो?

★ श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

● संविधान के अनुसार जिस मार्ग को हिन्दी ने पन्द्रह वर्षों में तय करना है, उसका अभी सौवां भाग भी पूरा नहीं हुआ।

● कई मंत्रालयों मे हिन्दी पढने वाला एक लेखक भी नहीं है।

● संसद के अध्यक्ष और प्रधान मंत्री से लेकर नीचे तक सब महानुभाव अंग्रेजी का प्रयोग करने में ही अपने जीवन की सफलता मानते हैं।

● तब किया क्या जाय, कैसे हिन्दी अपना मार्ग तय करे, यही इस लेख मे बताया गया है।

अपना राष्ट्रपति भाषण हिन्दी में देकर आप हिन्दी की मर्यादा की रक्षा करते हैं।

श्री श्रीप्रकाश

एकमात्र मंत्री, जिन्होंने संसद् में हिन्दी मे भाषण दिया।

[१]

स्वतन्त्र भारत के संविधान के अनुसार १५ वर्षों के अन्त में भारत के राज्यभवन से अंग्रेजी विदा हो जायगी और उसके स्थान पर हिन्दी स्थापित हो जायगी। इन पन्द्रह वर्षों में से लगभग एक वर्ष व्यतीत हो गया। होना यह चाहिये था कि हिन्दी की प्रगति कम से कम इतनी तीव्र होती कि एक वर्ष में कम से कम मार्ग के पन्द्रहवें हिस्से को लांघ लेती। परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि हिन्दी ने अभी उस मोर्चे के द्वार में भी प्रवेश नहीं किया, जिस पर उसने पन्द्रह वर्षों में पूरी विजय प्राप्त करनी है। इस कथन में कोई अत्युक्ति नहीं है कि भारत की केन्द्रीय सरकार को अभी हिन्दी ने छुआ भी नहीं है। केन्द्रीय सरकार से सम्बन्ध रखने वाले तीन ऐसे बड़े बड़े क्षेत्र हैं, जिनमें अंग्रेजी को पदच्युत करके हिन्दी को बैठना है। वे तीन क्षेत्र यह हैं—

(१) सरकार का बड़ा कार्यालय, जिसमें सब मंत्रालय हैं।

(२) केन्द्रीय प्रकाशन विभाग।

(३) भारतीय संसद्।

इन तीनों विभागों पर अलग-अलग दृष्टि से देखिये तो आपको विदित होगा कि अभी तक वहां हिन्दी का कोई स्थान नहीं है। यदि कभी कभी उनमें हिन्दी की सूरत दिखाई दे भी जाती है तो वह ऐसे ही समझी जाती है, जैसे बड़े शहर में कोई देहाती चला जावे। जो थोड़े से हिन्दी की चर्चा करते दिखाई देते हैं वे या तो सनकी समझे जाते हैं या व्यर्थ आन्दोलनकारी। सरकार के मन्दिर में उन्हें सह लिया जाता है— उन्हें पसन्द नहीं किया जाता। सरकारी दफ्तर के बाजार में वे चौबे वालों की तरह 'हिन्दी वाले' कहलाते हैं। जिस मार्ग को हिन्दी ने पन्द्रह वर्षों में तय करना है, उसका अभी सौवां भाग भी पूरा नहीं हुआ।

[२]

पहले आप सरकारी कार्यालयों को लीजिये। किसी प्रमुख कार्यालय में अभी तक हिन्दी का प्रवेश नहीं हुआ है। यदि कोई भूला भटका हिन्दी का पत्र पहुँच भी जाता है, तो वह प्राय रद्दी की टोकरी में डाल दिया जाता है। मुझे निश्चित मालूम है कि कई मंत्रालयों में हिन्दी पढ़ने वाला एक लेखक भी नहीं है, उत्तर देने की तो बात ही दूर रही। प्रकाशन विभाग में हिन्दी का एक उपविभाग है, परन्तु उसकी जो दीन दशा है वह कई बार समाचार पत्रों में प्रकट हो चुकी है। हिन्दी विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों के वेतन अंग्रेजी विभाग की अपेक्षा बहुत कम हैं और फलत उनका प्रभाव भी न्यून है। यों देश के बहुसंख्यक निवासी हिन्दी को ही समझते हैं, इस कारण स्वाभाविक तो यह होता कि हिन्दी द्वारा प्रकाशन पर अंग्रेजी की अपेक्षा बहुत अधिक व्यय किया जाता। परन्तु यथार्थ बात इससे बिल्कुल उल्टी है। प्रकाशन के बजट का मुख्य भाग अंग्रेजी के ही अर्पण होता है। पिछले दिनों कुछ कार्यालयों में हिन्दी में टाइप करने वाले लेखक रखे गये हैं। सरकार के दरबार में हिन्दी की कितनी पूंछ है, इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि जहां अंग्रेजी के टाइपिस्टों का प्रारम्भिक वेतन १६० रु० है, वहां हिंदी के टाइपिस्टों को प्रारम्भ में १०० रु० दिये जाते हैं। वह प्रारम्भिक भेद अन्त तक उनके साथ चलता है। संसद् में हिन्दी की जो दुर्गति है, वह तो सबकी आंखों के सामने है। एक राष्ट्रपति के भाषण को छोड़ दें, तो वहां अंग्रेजी का पूर्ण आधिपत्य है। राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसाद का भला हो कि वह अपना प्रारम्भिक अभिभाषण सदा राष्ट्रभाषा में देते हैं— अन्यथा सरकारी तौर पर तो वहां बहुत ही मानी जाती है। अध्यक्ष और प्रधानमन्त्री से लेकर नीचे तक सब सरकारी महानुभाव अंग्रेजी का प्रयोग करने में ही अपने जीवन की सफलता मानते हैं। हां, एक अपवाद है— वह हैं शिक्षामंत्री — परन्तु वह जो कुछ बोलते हैं वह हिंदी से कोसों दूर है, वह तो कठिन उर्दू ही होती है। और यदि कहीं शब्द की तलाश में जाना भी पड़े तो वह अंग्रेजी के शब्दकोष की ओर जाते हैं, हिन्दी के शब्दकोष की ओर नहीं। शरत अधिवेशन में एक बार बाबू श्रीप्रकाश जी हिन्दी में बोलने लगे तो मानों संसद भवन में सन्नाटा छा गया। ऐसा प्रतीत होने लगा, मानों काबे में कुफ्र फूट पड़ा हो। सरकारी बेंचों ने व्यापार मन्त्री की ओर आश्चर्य से देखने के लिये आँखें उठाईं, इधर संसद के अधिकतर सदस्यों ने हर्षध्वनि द्वारा हिन्दी भाषण का स्वागत किया। अस्तु। बाबू श्रीप्रकाशजी तो हिन्दी में बोल ही गये, परन्तु सुनते हैं सेक्रेटेरियट में उनके भाषण को अशकुन ही समझा गया। चिन्ता होने लगी कि यदि मंत्री लोग ही इस तरह अंग्रेजी का परित्याग करने लगे तो वह बेचारी पन्द्रह साल कैसे बितायेगी।

संसद् का कार्यालय अभी तक पूरी तरह अंग्रेजीमय है। कभी कभी प्रश्नों या भाषणों में हिन्दी का प्रवेश हो जाता है, परन्तु वह अपवाद रूप में ही होता है। उन दीये बत्तियों से तो अन्धकार का घना रूप ही प्रकट होता है।

[३]

प्रश्न यह है कि इस शोचनीय परिस्थिति को बदलने का उपाय क्या है, यह तो स्पष्ट कि जब तक सरकार का पूर्ण सहयोग न हो, तब तक राज्य के गढ़ में हिन्दी का प्रवेश नहीं हो सकता। मुख्य रूप से विचारणीय बात यही है कि हिन्दी के विकास में सरकारी सहयोग कैसे प्राप्त हो। केवल अनुनय, विनय या प्रार्थना से सरकार का सहयोग प्राप्त नहीं हो सकता। कोई ऐसा वैधानिक उपाय काम में लाना चाहिये जिससे स्वयमेव हिन्दी आगे को बढ़ती जावे। पिछले वर्ष भर के अनुभव से मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूं कि सरकार को हिन्दी की ओर झुकाने का वह उपाय ही सफल हो सकता है, जो वैधानिक रूप से प्रमाणित हो। इस सम्बन्ध में दो तीन सुझाव सामने आते हैं। एक सुझाव यह है कि सरकार संविधान की राज्यभाषा-सम्बन्धी धारा की पूर्ति के लिये योजना-आयोग की तरह हिन्दी विकास-आयोग बना दे और न्यून से न्यून एक करोड़ रुपया उसके सुपुर्द करदे। उस आयोग का काम होगा कि हिन्दी में जो न्यूनतायें विद्यमान हैं, उन्हें दूर करे और सरकारी कार्यालयों में उसके प्रवेश का निरन्तर उद्योग करे। उसके कार्य की प्रगति भी ऐसी तेज होनी चाहिये कि पन्द्रह वर्ष पूरे होने से पूर्व ही हिन्दी राज्यभाषा के आसन पर दृढ रूप से प्रतिष्ठित हो जावे।

दूसरा सुझाव यह है कि ब्राडकास्टिंग के मंत्रालय की तरह हिन्दी के विकास के लिये भी एक मंत्रालय बना दिया जावे, जिसका या तो एक नया मंत्री नियुक्त किया जावे, अथवा किसी विद्यमान मन्त्री को ही उसका अध्यक्ष मान लिया जावे। उस मंत्रालय का कार्य होगा कि वह ऐसे सब उपायों को काम में लावे, जिनसे पन्द्रह वर्ष पूरे होने के समय अंग्रेजी को नमस्कार दी जा सके।

ये दो सुझाव हैं यदि कोई अन्य सुझाव हों तो उनपर भी विचार किया जा सकता है। समय आ गया है कि इस प्रकार के सब परामर्शों पर विचार करके कोई रचनात्मक पग उठाया जावे, तभी हमारे देश का विदेशी भाषा की दासता से पिण्ड छूटेगा, अन्यथा नहीं।

— —

हमारे देश का सरदार

★ श्री सत्यनारायण सिन्हा

सरदार पटेल का स्मरण आते ही हमारे सामने भारतीय इतिहास की उन महान् विभूतियों के चरित्र सजीव हो उठते हैं, जिन्होंने समय-समय पर इस विशाल देश को एक सूत्र में आबद्ध करने के पवित्र प्रयास किये हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक यशोधर्म देव, विक्रमादित्य, हर्षवर्धन, अकबर आदि महापुरुषों के नाम सहसा ही सरदार के नाम के साथ याद आ जाते हैं और सच तो यह है कि इन महापुरुषों ने भारतीय एकता के जिस महायज्ञ में अपनी-अपनी आहुतियां चढ़ाईं, उनकी पूर्णाहुति का अपूर्व श्रेय सरदार पटेल को ही प्राप्त होना था। देश के स्वाधीनता संग्राम में एक उद्भट योद्धा और कुशल सेनानी की हैसियत से जो कुछ किया, यदि उसे थोड़ी देर के लिये अलग भी कर दिया जाय, तो गत दो-तीन वर्षों में भारत के मानचित्र को उसका वर्तमान स्वरूप प्रदान करने में उन्होंने जो कुछ किया, केवल उतना ही सरदार पटेल को इस देश के इतिहास में अमर बना देने को काफी है।

अब मैं सरदार पटेल के आरम्भिक जीवन पर दृष्टिपात करता हूं तो जो घटना मुझे सबसे विलक्षण और अर्थभरी दीखती है, वह है उनका भारत के राष्ट्रीय जीवन में प्रवेश। किस प्रकार ४० वर्ष की परिपक्व अवस्था में उन्होंने एक राग-रंजित जीवन की बहती धारा को एकाएक विराग और तपस्या की धारा में परिणत कर दिया, यह उनकी दृढ़ता अनुशासन-प्रियता तथा अपने प्रति कठोर निर्ममता का एक अद्भुत उदाहरण था। जो व्यक्ति अहमदाबाद के एक नितान्त सफल और चोटी के बैरिस्टर का वैभवशाली, विनोदी और विलासप्रिय जीवन व्यतीत कर रहा था सहसा बारडोली के एक किसान के रूप में परिणत हो गया। इतिहास में इस प्रकार के जीवन परिवर्तन के दृष्टांत अधिक नहीं हैं। प्रभु ईसामसीह की एक झलक झांकी देख कर उद्दंड पाल, सन्त पाल के रूप में परिवर्तित हो गया था। गांधी जैसे महात्मा का दिव्य प्रकाश प्राप्त कर इस युग का एक अहम्मानी बैरिस्टर अहिंसा और असहयोग के कठिन जीवन का पुजारी बन गया।

जो लोग सरदार को केवल मात्र राजसी वृत्ति का पुरुष मानते हैं वे उनका सही मूल्यांकन करने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। सरदार निस्सन्देह रजोगुण प्रधान थे, परन्तु उनमें सतोगुण भी काफी मात्रा में विद्यमान था। यदि ऐसा न होता तो उनके श्रवण गांधीजी के त्याग और तपस्यामय सन्देश को इस रूप में न सुन पाते और यदि सुन भी लेते तो उनकी भी वही दशा होती जैसी हम अनेक लोगों की, जिन्होंने एक कान से सुना और दूसरे से निकाल दिया। जो महापुरुष जीवन भर गांधी जी के 'क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया' दुर्गम पथ पर चलता रहा हो, उसे सात्विक गुणों से संयुक्त न मानना हमारी भूल होगी। सरदार का तपोमय, सरल आडम्बर शून्य, सादा जीवन उनकी उच्च सात्विकता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

सरदार पटेल को लोगों ने एक सफल सेनानी और कुशल शासक और जननायक, महान संगठनकर्ता और राष्ट्र निर्माता, दृढ़ नेता और कर्मठ आदि विशेषणों से याद किया है। इसमें सन्देह नहीं कि वे इन तथा ऐसे ही अनेक सद्गुणों के भंडार थे। परन्तु इन सभी गुणों के पीछे जो महान व्यक्तित्व था और उनकी जो अगाध मानवीयता थी, वह अपने ढंग की निराली थी। जिस प्रकार बादाम के सूखे और कठोर छिलकों के नीचे उसका कोमल सरस, और जीवनदायी बीज छिपा होता है, ठीक उसी प्रकार सरदार की बाह्य परुषता के आवरण में एक अत्यन्त कोमल और उदार हृदय विद्यमान था। इन लोह रेखाओं के पर्दे में जहां एक ओर दृढ़ संकल्प कठोर अनुशासन अदम्य इच्छा-शक्ति और दुर्दान्त निर्भयता निवास करते थे, वहीं दूसरी ओर मित्रों के प्रति सहज सहानुभूति तथा विजितों और विरोधियों के प्रति अगाध क्षमा और उदारता की अजस्र धारा भी बहती थी।

सुना है, एक बार यरवदा जेल में बापू ने अपने 'जाने' की बात कही। सरदार पटेल जो उनके पास ही बैठे थे, तुरन्त बोल उठे, नहीं ऐसा नहीं हो सकता। देश को मंझधार में छोड़ कर आप कैसे जा सकते हैं? एक दफा जहाज को किनारे पहुँचा दीजिये, फिर जहां जाना हो, चले जाना। मैं साथ चलूंगा।' इस प्रकार का ही एक अन्य प्रसंग उपस्थित होने पर उनके मुंह से निकल पड़ा था, 'जहां तक साथ आये हैं तो क्या इस तरह अकेले चले जा सकेंगे।' इन मार्मिक शब्दों के पीछे छिपी कोमलता की गहराई को कौन आंक सकता है। और एक दिन जब विधि के अटल विधान ने बापू को, अपने अनन्य सेनानी और भक्त को अकेला छोड़ चले जाने को विवश कर दिया, तो उस दिन सरदार के दिल पर क्या बीती, इसका अनुमान कौन लगा सकता है? साधारण दर्शक के लिए तो उनके फौलादी चेहरे की निर्भयता वैसी ही बनी रही, लेकिन जिन लोगों को उन दिनों उन्हें निकट से देखने और समझने का अवसर मिला, वे ही उनकी व्यथा का थोड़ा आभास पा सके।

लेकिन उनकी इस व्याकुलता से उनके कर्तव्य मार्ग में कोई शिथिलता आई हो सो बात न थी। कर्तव्य के कठोर पथ पर कोमलता का प्रदर्शन अरूरी है। अपने महान् कर्मयोगी गुरु की यह दीक्षा उन्हें अब भी याद थी। इसलिए बापू के चले जाने पर भी सरदार को उनका काम पूरा करने के लिए रुकना पड़ा। गुरु और शिष्य दोनों ही ने शुक्रवार के दिन अपने भौतिक शरीर का त्याग किया, मुझे तो इसमें भी हरि इच्छा ही दीख पड़ती है।

पिछले तीन वर्षों में देश के विभिन्न भागों में फैली हुई छः सौ से अधिक छोटी और बड़ी रियासतों का एकीकरण करने तथा उन सभी के शासकों के साथ हर एक की परिस्थिति अनुसार समझौते करने में भी सरदार पटेल को अपने चरित्र और स्वभाव की इस दिव्यधारा से कम सहायता न मिली। उनकी अदम्य राष्ट्रीयता, विलक्षण राजनैतिक सूझ और शासन प्रतिभा ने जहां एक ओर देशी नरेशों को शीघ्र से शीघ्र देश और काल की मांग को हृदयंगम कराने में मदद दी, वहां उनकी स्वभावगत कोमलता और गम्भीर आत्मीयता ने इतने बड़े राजनीतिक परि-परिवर्तन को संसार की एक रक्त-हीन क्रान्ति के रूप में सिद्ध होने का सम्मान भी प्रदान किया। इतना ही नहीं, एक और भी अजीब बात हुई और शायद उसके जोड़ की दूसरी घटना इतिहास में नहीं मिलती। अपनी सम्पत्ति और वैभव सभी को प्यारे होते तथा उस सम्पत्ति के अस्तित्व पर कुठाराघात करने वाले को सम्पत्ति का स्वामी स्वभावतः विरोध और शत्रुता की दृष्टि से देखता है। सरदार पटेल ने राजाओं से उनकी सम्पत्ति और राज्याधिकार ले लिये। सामन्तशाही को ध्वस्त करके प्रजातंत्र की नींव डाली। ऐसा करने में राजाओं का सारा वैभव समाप्त हो गया। लेकिन किसी भी नरेश ने इस अजीब आघात करने वाले को अपना शत्रु न समझा। उन्होंने सरदार को अपना सबसे बड़ा हितैषी माना और आज उनके निधन को वे अपनी सबसे बड़ी क्षति समझते हैं। यह कोई मेरी मनगढ़ंत कहानी नहीं है। अनेक नरेशों को मिलने और उनके आन्तरिक मनोभावों को समझने के पश्चात् ही मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूं। राजनीति में यह एक ऐसा विलक्षण तत्व है, जिसका समाधान सरदार पटेल जैसे मनुष्य के पावन चरित्र की पुष्टि में ही हो सकता है।

अब जहां तक सरदार पटेल के उन गुणों का सम्बन्ध है। जिन्होंने उन्हें एक अच्छे अर्थ का राजनीतिज्ञ व्यक्तित्व प्रदान किया, उनकी तो गाथा-अपार है। खेड़ा और बारडोली के सत्याग्रहों का भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में क्या स्थान है, इसे कौन नहीं जानता? लेकिन एक सर्वांगीण व्यक्तित्व के लिये विद्रोह की क्षमता ही पर्याप्त नहीं है। असली सफलता तो निर्माण के समय देखी जाती है और वह भी ऐसा निर्माण जो विध्वस्त भित्ति पर किया जाता है। सच पूछा जाय तो ऐसे निर्माण कार्य में ही मनुष्य की शक्ति, सूझ और कार्य-क्षमता की असली परीक्षा होती है। भारत के 'सरदार' ने इस दृष्टि से अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। जहां उन्होंने एक ओर देश के शत्रुओं का खोज-खोज कर विनाश किया। वहीं उन्होंने विभाजित और बिखरे भारत का नव निर्माण करने में अथक परिश्रम किया। देश के अकृत्रिम विभाजन से उत्पन्न शासन और व्यवस्था सम्बन्धी अनेक विकट परिस्थितियों का जिस प्रकार उन्होंने सामना किया वह अन्य किसी के लिए सम्भव न था। और आज यदि सारे एशिया में व्यवस्था और स्थायित्व की दृष्टि से भारत को सर्वोपरि स्थान प्राप्त है, तो उसका प्रमुख श्रेय सरदार पटेल को ही है।

गत तीन वर्षों में अनेक ऐसे अवसर आये हैं, जब साधारण बुद्धि सामर्थ्य वाले शासक धैर्य खो कर देश को हानि पहुंचा सकते थे। परन्तु इन्हीं अवसरों पर सरदार की सागर सदृश गम्भीर, दृढ़तापूर्ण, स्पष्ट और निश्चित वाणी ने देश को मार्ग प्रदर्शित किया है। जिन्होंने सरदार की कर्म कुशलता को निकट से देखा है, वे यह बात स्वीकार करेंगे कि आनबान के अवसर पर उनकी तीव्र बुद्धि जिस प्रकार चलती थी, उसमें न केवल अद्भुतता रहती थी वरन् पूर्ण औचित्य और सामयिकता से भरपूर यथार्थता भी निहित होती थी।

सरदार की स्नेह गाथा अनन्त है। आइये, इस पुण्य अवसर पर हम सब भारतवासी मिल कर उनकी स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें और भगवत् चरणारविन्दों में अपनी यह प्रार्थना निवेदित करें कि वे हमें सरदार के संदेश को ग्रहण करने के योग्य बनावें।

वीर अर्जुन साप्ताहिक का मूल्य

वार्षिक	१२)
अर्धवार्षिक	६॥)
एक प्रति	चार आना

कल के भारतीय प्रदेश में

पूर्वी बंगाल की आग बुझाने कराची से दौड़ धूप

नाजिमुद्दीन के पश्चात् लियाकत के प्रयत्न

पश्चिमी पंजाब की राजनीति : काश्मीर

पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री श्री लियाकत अली खां पूर्वी बंगाल का दस दिन तक दौरा करके कराची वापिस आगये। कुछ ही समय पहिले पाकिस्तान के गवर्नर जनरल ख्वाजा नाजिमुद्दीन ने भी पूर्वी पाकिस्तान की सैर की थी। पाकिस्तान के इन दो सर्वप्रमुख, प्रभावशाली व्यक्तियों का थोड़े से अन्तर से पूर्वी बंगाल का दौरा करना मामूली ही नहीं हुआ। पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री तथा मुस्लिम लीग के सर्वेसर्वा को यह आवश्यकता अनुभव हुई कि ख्वाजा नाजिमुद्दीन के दौरे के पश्चात् भी वे स्वयं पूर्वी बंगाल को देख कर आवें। यह दौरा उन्हें इतना आवश्यक जान पड़ा कि लन्दन का प्रधान मन्त्री सम्मेलन सिर पर होते हुए भी, जबकि उनकी अनुपस्थिति के काल के लिये सूचनायें आदि देने तथा काम निपटाने के लिये उनका कराची में रहना सबसे अधिक आवश्यक था, उन्होंने दो-चार दिन नहीं बल्कि पूरे दस दिन पूर्वी बंगाल के व्यापक दौरे के लिये निकले। आखिर ऐसा कारण क्या था?

× × ×

गवर्नर जनरल और प्रधान मन्त्री के इन दौरों का कारण हाल ही में पाकिस्तान संविधान सभा में उपस्थित की गई आधारभूत सिद्धांत समिति की रिपोर्ट के विरुद्ध पाकिस्तान के इस सुदूर खण्ड में उठी हुई एक प्रचंड विरोध की लहर थी। पूर्वी बंगाल में शासक वर्ग की ओर से कुछ बातें ऐसी हो रही थीं, जो वहां के निवासियों की समझ में नहीं आ रही थी। विभाजन के पश्चात जब उन्होंने यह समझ कर आंखें खोलीं कि मुस्लिम लीग ने उन्हें काफिरों की गुलामी से बचा लिया और अब वे अपना शासन स्वयं संभालेंगे तब उन्होंने देखा कि वे ही मुस्लिम लीग के नेता उनकी ओर ...र। की दृष्टि से देखते हैं। शासन यंत्र चलाने के लिए पाकिस्तान के इस पूर्वी भाग में वहां के योग्य व्यक्ति नहीं, अपितु १२०० मील से भी अधिक दूर पश्चिमी पाकिस्तान से लोग वहां भेजे गये, जिन्हें वहां की भाषा, रहन-सहन, खान-पान, तथा रीति-रिवाज का कुछ भी ज्ञान नहीं था। ये लोग शासन के सभी भागों में छा गये और इच्छा से अथवा अनिच्छा से पूर्वी बंगाल के लोगों ने यह अनुभव किया कि कराची यह अपेक्षा करता है कि वे इन लोगों के इशारों पर चलें।

इसके पश्चात् मुद्रा अवमूल्यन का अवसर आया और कराची ने अवमूल्यन से इन्कार कर दिया। भारत तथा पाकिस्तान के मध्य व्यापारिक गतिरोध उपस्थित हो गया। पूर्वी बंगाल के किसानों को अनुभव हुआ कि जिस जूट की फसल के अच्छा होने के कारण वे प्रसन्न हो रहे थे वह उनके घरों में पड़ा सड़ रहा है। उसका सबसे बड़ा बाजार बन्द हो गया। वह बेचना चाहता था, उसका पुराना खरीदार भारतीय व्यापारी खरीदना चाहता था, किन्तु कराची के महाप्रभु दोनों में से एक भी बात नहीं चाहते थे। और इस सम्बन्ध में बताये गये कारणों से वे कुछ सन्तुष्ट नहीं हो सके। तत्पश्चात उनका ध्यान बटाने के लिए हिन्दुओं की मारकाट हुई कि उन्हें अनुभव हुआ कि पश्चिमी पाकिस्ता के लोगों ने उन्हें और भी जकड़ लिया है और उनकी स्थिति पहिले से भी खराब है।

× × ×

फिर संविधान सभा में आधारभूत सिद्धान्त समिति की रिपोर्ट आई और उन्होंने यह अनुभव किया कि उस समिति के अनुसार पूर्वी बंगाल की जन संख्या की बहुसंख्या को अल्पसंख्या में बदल देना ही पाकिस्तान संविधान का आधारभूत सिद्धान्त है। उन्होंने देखा कि बात सीमा से बाहर जा रही है और यदि शीघ्र ही वे खड़े नहीं हुए तो पछताने के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं आएगा। कराची बड़ी चतुराई से उनके पैरों में बन्धन डाल रहा था और समस्त पाकिस्तान में उन की बहु संख्या को एक अल्पसंख्या में परिवर्तित कर देने का प्रयत्न चल रहा है और तब पाकिस्तान के इस सुदूर भाग में क्रोध की एक ऐसी व्यापक लहर फैली, जिसके प्रभाव को संसार ने देखा।

× × ×

पश्चिमी पाकिस्तान के इस प्रयत्न के विरुद्ध सारा पूर्वी बंगाल खड़ा हो गया। पूर्वी बंगाल के प्रधान मन्त्री ने विधान सभा में विरोधी दल के श्री सुहरावर्दी के बंगाल विषयक प्रस्ताव का समर्थन किया पूर्वी बंगाल का सारा प्रेस कराची और कराची द्वारा भेजे गये शासकों के विरुद्ध हो उठा। स्थान-स्थान पर सभाएं, विरोधपत्र तथा प्रदर्शन हुए। कितने ही बुद्धिमान लोगों ने यह भांडा भी फोड़ दिया और यह प्रकट कर दिया कि कुछ ही समय पूर्व जो हिन्दुओं के धन जन का विनाश हुआ था, वह कराची की योजना थी और वह भी इसलिए कि पूर्वी बंगाल के लोगों का ध्यान बंट जाय और वे भूल जांय।

× × ×

पूर्वी बंगाल के अपने दौरे में श्री लियाकतअली को यह अनुभव हो गया कि विरोध की भावना कितनी उग्र और व्यापक है। जनता ही नहीं, स्वय उस मुस्लिम लीग के सदस्यों, कार्यकर्त्ताओं और असेम्बली सदस्यों को उन्होंने अपने विरुद्ध पाया। शायद ही कभी पाकिस्तान के प्रधान मंत्री को इतनी कड़ी बातें सुननी पड़ी होंगी और शायद ही कभी इतना कड़वा घूंट पीना पड़ा होगा। उनके खुद के आदमियों ने उन्हें आड़े हाथों लिया और वह इस तरह कि उनके पास कोई उत्तर नहीं रहा। सार्वजनिक सभाओं में जनता का विरोधी रुख स्पष्ट था और उन्हें दिये गये स्मृतिपत्रों तथा विरोधपत्रों की कोई संख्या नहीं थी।

× × ×

लीग के सह मन्त्री ने लीग के अध्यक्ष से स्पष्ट कहा है कि आधारभूत सिद्धांत समिति ने पूर्वी पाकिस्तान की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति की उपेक्षा की है और वह चाहता है कि इस प्रान्त को पूर्ण आन्तरिक स्वतन्त्रता दी जाय। अन्य सदस्यों ने भी इस भौगोलिक विभिन्नता पर बल दिया और प्रान्त के लिए आन्तरिक स्वतन्त्रता मांगी। एक ने तो यह भी आग्रह किया कि इस विषय पर मत संग्रह किया जाय। एक अन्य ने कहा कि रिपोर्ट से पूर्वी पाकिस्तान में 'विक्षोभ फैल गया है' और केन्द्र ने पूर्वी बंगाल तथा पूर्वी पाकिस्तान की जनता की राय पर जरा भी 'ध्यान नहीं दिया।' एक भूतपूर्व मन्त्री के अनुसार एक साधारण मनुष्य की वह दशा है कि जो सरकार से वह कठिनाइयों और परेशानियों को दूर करने की उपेक्षा करता है, वह उसके पास तक नहीं पहुंच सकता। उसने कहा कि 'पूर्वी बंगाल के लोगों के मन में एक प्रकार का निराशा और कटुता का भाव उत्पन्न हो गया है।' आन्तरिक स्वतन्त्रता की व्याख्या करते हुए उसने कहा कि 'सुरक्षा, विदेशी मामले और सिक्का तथा नोट केन्द्र के हाथ में रहे, शेष सभी कुछ, जिसमें डाक, तार व टेलीफोन भी सम्मिलित है, प्रान्त के हाथों में होना चाहिये।'

× × ×

अपने उत्तर में श्री लियाकतअली खां ने विश्वास दिलाया कि पूर्वी पाकिस्तान के साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रखा जायगा। किन्तु उन्होंने यह भी कहा कि पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तान के ही दोनों भाग हैं और दोनों में से कोई भी दूसरे के बिना जीवित नहीं रह सकता। यद्यपि आन्तरिक स्वतन्त्रता की बात समझ में आ सकती है, तो भी उन्होंने यह संकेत किया कि केन्द्र उतनी सत्ता नहीं दे सकेगा, जितनी की मांग उस सभा में कुछ वक्ताओं ने की। अन्त में उन्होंने पांच सदस्यों की एक समिति नियुक्त करने का प्रस्ताव किया, जो किसी एक अथवा अधिक विषयों पर केस तैयार ... उन्होंने अन्त में पुन यह विश्वास दिलाया कि वे उनकी आशंकाओं और सन्देहों को दूर करने का प्रयत्न करेंगे। इस प्रकार श्री लियाकतअली खां ने अपने-आपको उस कोने से जहां वे घिर गये थे, तब तक के लिए निकाल लिया जब तक कि इस समिति को सुझाव नहीं आते, और सुझाव आयेंगे, तब कराची में आराम से बैठ कर वे उन पर विचार कर सकेंगे।

पाकिस्तान बनने के पश्चात् सर्वप्रथम मुस्लिम लीग और अन्य नये बने हुए राजनीतिक दलों में (जो कल तक मुस्लिम लीग ही में थे) नये वर्ष के प्रारम्भ में पश्चिमी पंजाब में बल परीक्षा होगी, जब कि पश्चिमी पंजाब की विधान सभा के चुनाव होंगे। पंजाब के चुनावों के फल का प्रभाव साधारण से अधिक महत्वपूर्ण है, इसलिए अनेक क्षेत्र उत्सुकता पूर्वक उस ओर देखते रहे हैं। स्वयं पंजाब में प्रत्येक दल भारी तैयारी में लगा हुआ है। इन चुनावों की तिथि यद्यपि अभी तक निश्चित नहीं हुई तो भी नये वर्ष के आरम्भ में ही होगी।

पश्चिमी पाकिस्तान में पंजाब का सबसे अधिक महत्व है। उसकी आबादी पश्चिमी पाकिस्तान के अन्य प्रान्तों की सम्मिलित आबादी की दुगनी है।

× × ×

मुस्लिम लीग ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में उसे 'पाकिस्तान का हृदय, मस्तिष्क और खड्हस्त भुजा' कहा हैं। वह सेना में भरती का प्रमुख क्षेत्र है और अन्न की उपज में सबसे धनी हैं। यदि पश्चिमी पंजाब में मुस्लिम लीग का तख्ता पलट गया तो पाकिस्तान की राजनीति और सरकार पर उसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है।

× × ×

पश्चिमी पंजाब में लीग के विरुद्ध कई प्रभावशाली दल खड़े हो रहे हैं। ममदोत के खान ने पंजाब की राजनीति में प्रमुख भाग लिया है और उसका अभी भी काफी प्रभाव है। उसके दल का नाम जिन्ना लीग है जिसका भाव

[शेष पृष्ठ २२ पर]

आज से ५००० वर्ष पूर्व

१६१०८ अपहृता स्त्रियों से विवाह

★ श्री श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

नरकासुर ने सोलह हजार एक सौ आठ आर्य कन्याएं अपने राज-महल में लाकर रखी थीं। भगवान् श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध किया और उन आर्य कन्याओं को मुक्त होने तक तो 'आर्य कन्याओं के मुक्त करने का ही एक प्रश्न' भगवान् श्रीकृष्ण के सम्मुख था। नरकासुर के वध से वह प्रश्न दूर हुआ और नई समस्या उनके सामने खड़ी हुई।

नई समस्या

नरकासुर के बन्दी खाने में वे आर्य कन्यायें करीब एक वर्ष से थीं। किसी पुराण में इस बात का एक भी वचन नहीं है कि इन आर्य कन्याओं पर असुरों द्वारा बलात्कार, अत्याचार अथवा सम्मान भंग हुआ। तथापि आर्यों का मन पहिले से संशंकित ही रहता आया है। रावण ने सती सीता का केवल हरण ही किया था। सीता के समान अनेक आर्य कन्याओं का समावेश रावण के अन्तःपुर में हुआ था, पर बलात्कार से नहीं। अनुमति से आर्य कन्यायें रावण के अंतःपुर में प्रविष्ट हुई थीं। रावण ने एक भी स्त्री पर बलात्कार नहीं किया था। वाल्मीकी रामायण में स्पष्ट कहा है कि जो स्त्रियां रावण के अन्तःपुर में प्रविष्ट हुईं, वे सब सम्मति से प्रविष्ट हुईं। केवल अकेली सीता ही अन्तःपुर में प्रविष्ट होने के लिए तैयार नहीं थी।

आज के राक्षस इससे बढ़ कर हैं। वे तो खुले स्थान में संवश. अत्याचार करते हैं। इसलिए आज के राक्षसों का अत्याचार रावण से कई गुना अधिक है और इसलिए अपहृत नारियों की समस्या हमारे सामने है।

नरकासुर के बन्दी-गृह से मुक्त कन्याओं ने भगवान् श्रीकृष्ण से कहा— "भगवन्! आपने तो हमें कारावास से मुक्त किया। हम आपकी ऋणी हैं। परन्तु माता-पिता के घर में हमें सम्मान मिलेगा? यह असम्भव है, तथा हमारा सम्मान से विवाह होगा, यह भी संभव नहीं है। इस कारण आप ही हमारा तारण करने वाले हैं। इसलिए हमने आपको ही मन से वरण किया है। हम अब किसी दूसरे के पास जाना नहीं चाहतीं और जा भी नहीं सकतीं, इसलिए आप ही हमें स्वीकार कीजिये।"

इस तरह सोलह हजार एक सौ आठ कन्याओं को मुक्त करने पर भगवान् श्रीकृष्ण के सामने यह समस्या भयानक रूप में आ खड़ी हुई कि इनका किया क्या जाय?

इस समस्या पर उस समय भगवान् श्रीकृष्ण ने तथा उनके मंत्रियों ने बहुत विचार किया, पर वे भी आर्यों के मन पर चढ़ा हुआ संशय-पिशाच दूर करने में असमर्थ रहे और अन्त में श्रीकृष्ण को स्वयं उनसे विवाह करना पड़ा। सन्तोष से नहीं, परन्तु इतनी तरुणियों को समाज में सम्मान का स्थान देने का दूसरा कोई उपाय नहीं था और यह एकमात्र उपाय था।

आज इतने सुधार हो चुके हैं और आर्यों के मनों पर आधुनिक संस्कार भी हुए हैं, तथापि इस समय की पचीस हजार अपहृता आर्य कन्याएं वापस भी आ गईं तो सबकी सब आर्य परिवार में सम्मान से सम्मिलित हो सकेंगी, इसका विश्वास नहीं है तथा इन सबका विवाह अच्छे परिवार में हो सकेगा, ऐसा भी विश्वास नहीं है।

स्मृतियों की आज्ञा

यहां यह कहना अत्यन्त आवश्यक है कि 'रजसा शुध्यते नारी' (देवल स्मृति) मासिक रजोदर्शन होने से स्त्री पुनः शुद्ध होती है। यह आर्य धर्म की आज्ञा है।

हमारे शास्त्र उदार हैं, समय का महत्व जानने वाले हैं। पर लोगों के मन में शुद्धता की कल्पना ऐसी बैठी है कि वह जाति का सम्पूर्ण नाश किये बिना दूर नहीं होगी, ऐसा भय हमारे सामने इस समय खड़ा है।

इस समय श्री शंकराचार्य ने, स्थान स्थान की धर्म सभाओं ने इस बात का प्रस्ताव किया है कि इन अपहृत स्त्रियों को शुद्ध मान लिया जाय, पर कितने मानेंगे यह एक प्रश्न है। कई तरुण इस कार्य के लिए तैयार भी होंगे, पर उच्च श्रेणी के कितने घर तैयार होंगे, इस पर राष्ट्र के जीवित रहने का प्रश्न अवलम्बित है।

हिन्दू जाति का नाजुक मन ऐसा है, जिसके सामने भगवान् रामचन्द्र जी को भी झुकना पड़ा! भगवान् श्रीकृष्ण जी ने स्वयं अपहृत स्त्रियों के साथ विवाह कर बताया कि यही मार्ग राष्ट्र के जीवित रहने का है। हिन्दू यदि भगवान् कृष्ण को भी नहीं मानेंगे, तो दूसरा उनको कौन समझा सकता ?'

और एक समस्या है!

किसी जाति की हिन्दू स्त्री मुसलमान के पास रही, तो उसकी सन्तान मुस्लिम होती है और यदि कोई मुस्लिम स्त्री हिन्दू के पास रही तो उस स्त्री की सन्तान भी मुस्लिम समझी जाती है। इस नियम का अपवाद सिखों में है — ऐसा हमने सुना है, इस विषय की सत्य बात पाठक ही जानते होंगे। पर अन्य हिन्दुओं में मुस्लिम रखैली की सन्तान मुस्लिम समझी जाती है। इस तरह दोनों रीतियों से हिन्दू ही घाटे में रहते आये हैं।

पहिले बाजीराव के पास मस्तानी (मुस्लिम स्त्री) आकर रहीं। उसका पुत्र शुद्ध करके ब्राह्मण जाति में उपनयन पूर्वक समाविष्ट किया जाय, ऐसा बाजीराव का कथन था। पर पूना के तथा महाराष्ट्र और काशी के ब्राह्मण ने माना नहीं। और बाजीराव (ब्राह्मण) का पुत्र मुस्लिम ही बना।

यह मूर्खता यहीं समाप्त नहीं होती। पांडवों में भीम का गन्धर्व विवाह हिडिंबा राक्षसी से हुआ। इसका पुत्र घटोत्कच आर्य क्षत्रिय नहीं माना गया। इसी तरह पुलस्त्य ऋषि ब्राह्मण था। उसकी राक्षसी स्त्री से रावण, कुम्भकरण, विभीषण हुए थे। वे भी ब्राह्मण नहीं माने गये और इनकी गणना राक्षसों में हुई। यह मातृसावर्ण्य की प्रथा है।

रावण के अन्तःपुर में अनेक आर्य स्त्रियां थीं। उनकी सन्तानें राक्षस ही मानी गयी थीं। उनमें से एक भी स्त्री के पुत्र आर्य नहीं माने गये।

अब इसके विरुद्ध देखिये। देहली के बादशाहों के अन्तःपुर में कई राजपूत कन्यायें गयीं। ये राजपूत कन्यायें हिन्दू ही थीं। इन्होंने मुस्लिम धर्म स्वीकार नहीं किया था। तुलसी पूजा ये करती थीं? हिन्दू देवताओं का उत्सव करती थीं, पूजा के लिए हिन्दू पण्डितों का प्रवेश जनानखाने में होता था। वहां से पंडित पूजा-पाठ करते थे। भाषा भी इनकी हिन्दी थी। इसलिए बादशाहों के कई कुमार जन्म से हिन्दीभाषी थे। इतना होने पर भी इन हिन्दु कन्याओं के पुत्र मुस्लिम माने गये थे! यह है हिन्दुपन! आत्मघात ही इसके सम्मुख रहता है।

अपहृता स्त्री को अपने घर में रखने की इच्छा भगवान् रामचन्द्र की थी, पर उनको यश नहीं मिला। भगवान् श्रीकृष्ण ने अपहृता स्त्रियों से स्वयं विवाह कर बताया कि ये अपहृता स्त्रियां पवित्र हैं, सम्मान के योग्य हैं, आदर से प्रतिष्ठित घराने में रहने योग्य हैं। पर इनका यह आदेश भी न उस समय के लोगों माना और न उसके पश्चात् के लोगों ने माना।

जाति के जीवन-मरण की यह समस्या है। यदि कोई श्रीकृष्ण का अनुयायी इस देश में जीवित है, तो वह उनके समान अपने कर्तव्य करे। नामधारी अनुयायियों से यह कार्य नहीं होगा।

आदर्श पितृसेविका

[श्री सोमसुन्दरम्]

सन् १९४७-४८ में जिन लोगों को नयी दिल्ली के लोदीपार्क में सवेरे पांच बजे टहलने का सौभाग्य मिला, उन्हें भारत के इतिहास को अपनी आंखों के सामने चलते फिरते देखने का भी अद्वितीय अवसर मिला। भारत के ५६० के करीब राज्यों के एकीकरण की तैयारियां उसी पार्क में होती थीं। इस एकीकरण के निर्माता सरदार पटेल वहां नियमित रूप से टहलने आते और राजा-महाराजाओं की एक लम्बी कतार उनके पीछे आया करती थी।

सरकारी स्विच

जिसने एक बार उस दृश्य को देखा वह जीवन में कभी उसे भूल नहीं सकता। आगे सरदार, उनकी एक ओर कुमारी मणिबेन और दूसरी ओर वह महाराजा या नवाब, जिसे सरदार से बात करने का समय दिया गया हो। पीछे काफी दूर तक दो दो, तीन तीन की पंक्तियों में भेंट के इच्छुक लोग। जरा गौर से देखने पर पता चलता कि दो मिनट से अधिक किसी भी व्यक्ति को सरदार के पास टिकने नहीं दिया जाता था। जैसे कहीं कोई अदृश्य 'स्विच' दबाया जा रहा हो और आगे का व्यक्ति पीछे और पीछे का एक व्यक्ति आगे सरका दिया जाता हो। दर्शक के मन में हठात् यह ध्यान आ जाता कि यदि वह 'स्विच' ठीक काम न करता तो सरदार का अमूल्य समय एकदम नष्ट हो जाता और अविचलित मन भी चंचल हो उठता, यह विचार उठते ही दर्शक का मन उस अदृश्य 'स्विच' के प्रति कृतज्ञता से भर जाता।

यह 'अदृश्य' स्विच थी, सरदार की अद्वितीय पुत्रीरत्न कुमारी मणिबेन पटेल। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि मणिबेन की निःस्वार्थ एवं आडम्बर-विहीन सेवा ही वह नींव थी, जिसके बल पर सरदार की महत्ता का भव्य भवन खड़ा रह सका।

सन् १९३१ के बाद मणिबेन का एकमात्र ध्येय पिता की सेवा रहा है।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

आर्थिक विषमता कम्यूनिज्म से दूर नहीं होगी

★ श्री गुरुदत्त

जन साधारण के मन में यह अंकित कर दिया गया है कि कम्यूनिज्म के स्थापित हो जाने से निर्धन लोगों, जिनकी संख्या संसार में, ६० प्रतिशत से ऊपर है, की सब कठिनाइयां समूल नष्ट हो जायेंगी। कम्यूनिस्टों का कहना है कि संसार की पूर्ण प्राकृतिक सम्पत्ति पर समाज का अधिकार हो, और उससे उपार्जित सम्पूर्ण धन, सुख तथा वैभव समाज के प्रत्येक व्यक्ति के उपभोग की वस्तु हो। ऐसा करने से वे लोग समझते हैं कि लोग अधिक परिश्रम से काम करेंगे और समाज में उन्नति अधिक गति से होने लगेगी

कम्यूनिस्ट समाज में प्रकृति में उपस्थित सब पदार्थों को मनुष्य मात्र की साझी सम्पत्ति मानी जाती है अर्थात् मिट्टी, पत्थर, जल खनिज-पदार्थ, वन, उपवन इत्यादि सब प्रकृति में पाये जाने वाले पदार्थ समाज की साझी सम्पत्ति हैं। समाज की साझी सम्पत्ति का प्रबन्ध करने वाली संस्था उस समाज पर शासन करने वाली राज्य-सत्ता है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि संसार के प्राकृतिक पदार्थों पर राज्य का अधिकार मानना कम्यूनिज्म का एक अंग है।

कम्यूनिज्म का, यह बात कोई अंग है अथवा नहीं, वाद-विवाद का विषय नहीं, परन्तु यह अधिकार कि एक देश में प्रकृति में उपस्थित सब पदार्थ राज्य की सम्पत्ति हों, चिरकाल से प्रचलित है। भूमि में गड़ा धन, जंगल में कीमती लकड़ी, सिंचाई के लिए नदी का जल इत्यादि वे सब पदार्थ जिनका कभी कुछ भी मूल्य हुआ है, राज्य ने उसे प्रयोग के लिए लोगों को देने के पूर्व सदैव उस का मूल्य प्राप्त किया है। भूमि का कर तो बहुत प्राचीन काल से राज्य प्राप्त करता रहा हैं। इसी प्रकार जब भूमि में से गड़ा धन अथवा कोई खनिज पदार्थ आवे तो उसका मुख्य अंश राज्य से लिया जाना कोई नई बात नहीं है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि प्राकृतिक पदार्थों को राज्य के आधीन करने के लिए कम्यूनिज्म की कुछ भी आवश्यकता नहीं, यह तो पहले ही ऐसा है। अन्तर यह आ गया है कि मशीनों के आविष्कार से प्राकृतिक पदार्थों का मूल्य अधिक हो गया है। इससे बहुत से ऐसे पदार्थ जिनका मूल्य पहिले कुछ नहीं था, भारी कीमत के हो गये, इसी प्रकार विज्ञान में उन्नति हो जाने से बहुत से पदार्थ जो व्यर्थ और बेकीमत के माने जाते थे, भारी मूल्य के हो गए। इससे जो भूमि, जंगल अथवा नदी का पानी किसी भी दाम का नहीं माना जाता था और जिन पर अधिकार कर लेने को आपत्तिजनक नहीं माना गया था, इस वैज्ञानिक युग में उनकी कीमत इतनी बढ़ गयी है कि वे लोग जो इन पर अधिकार रखते थे, अतुल धन के मालिक हो गए। जहां तक सिद्धांत का सम्बन्ध है प्राकृतिक पदार्थों का स्वामित्व तो राज्य का ही है। केवल बात यह हो गई कि जिस समय कुछ प्राकृतिक पदार्थों पर स्वामित्व कुछ व्यक्तियों को दिया गया था, तब उनका बहुत कम मूल्य था, अथवा कुछ भी मूल्य नहीं था।

परिवर्तन की बात यह नहीं कि प्राकृतिक पदार्थों पर स्वामित्व राज्य का नहीं है और अब होना चाहिये। यह तो पहिले ही है, करने की बात है कि जिन प्राकृतिक पदार्थों का मूल्य बढ़ गया है अथवा नया बन गया है उनका मूल्य पुन आंका जावे और इसके स्वामियों से प्राप्त किया जावे। अब हम जान गए हैं कि विज्ञान उत्तरोत्तर उन्नति कर रहा है और इस की उन्नति से प्राकृतिक पदार्थों का मूल्य भी उन्नत होगा। इसलिए इन पदार्थों का मूल्य आंकते समय वर्तमान प्रगति का ध्यान रखना आवश्यक हो गया है।

आज प्रत्येक सभ्य देश में प्राकृतिक पदार्थों के बढ़ रहे मूल्य का ध्यान रख कर ही, कर नीति अथवा पट्टे पर देने की नीति का निर्माण किया जाता है। नगरों में जब मकान बनाने के लिए भूमि दी जाती है और भूमि सींचने के लिए नदी नालों के जल का प्रयोग करने दिया जाता है तो जो कर अथवा दाम निश्चित किया जाता है वह सदैव के लिए नहीं होता परन्तु एक सीमित काल के लिए होता है। इसके यह अर्थ स्पष्ट ही हैं कि भविष्य में वह कर अथवा वह दाम न्यूनाधिक हो सकता है।

इसके यह अर्थ स्पष्ट हैं कि धन के प्राकृतिक स्रोतों पर समाज का अधिकार पहिले ही स्वीकार है। इस के लिए कम्यूनिज्म जैसे बेतुके वाद को ला खड़ा करने की आवश्यकता नहीं है। कई पदार्थ पहिले बेदाम के समझे जाते थे और उन पर किसी का अधिकार हो जाने पर आपत्ति नहीं की गई थी। अब उनके दाम बढ़ जाने पर अथवा दाम बन जाने पर समाज उनके दाम की वृद्धि करने का पूर्ण अधिकार रखता है और इस अधिकार का प्रयोग कानून में परिवर्तन करने से हो सकता है और किया जा रहा है। इसके लिए क्रांति की आवश्यकता नहीं है। न ही इसके लिए किसी नये वाद अथवा मत की आवश्यकता है।

कम्यूनिज्म का दूसरा अंश, जिससे निर्धनों को कठिनाइयां दूर करने का दावा किया जाता है, सब लोगों से उपार्जित धन वैभव पर सब लोगों का साझा अधिकार मानना है। वास्तव में यही इसका प्रधान रूप है। यह बात न तो युक्ति संगत है न ही समाज के हित में। इस बात का अनुभव तो अब कम्यूनिस्ट देशों में भी होता जाता है। वहां भी सब लोगों से उपार्जित धन पर सब का एक समान अधिकार नहीं माना जाता। सब लोग एक समान योग्यता नहीं रखते। शारीरिक अथवा मानसिक दोनों प्रकार की शक्तिएं सब मे एक समान नहीं होती। अतएव सबके प्रयत्नों का फल भी एक समान नहीं हो सकता। जब फल एक समान नहीं है तो उसका भोग भी एक समान नहीं हो सकता। इससे सबसे उपार्जित धन को सब में समान बांटना एक अयुक्ति संगत बात है और एक अयुक्ति सगत बात को बल पूर्वक चलाने के अर्थ सबल अन्याय करना ही नहीं, प्रत्युत समाज में असंतोष और अशांति उत्पन्न करना है।

रूस में, प्रारम्भ में तो इस सिद्धांत पर आचरण करने का प्रयत्न किया गया था, परन्तु शीघ्र ही यह अनुभव किया गया कि ऐसा करने से अयोग्य और अकर्मण्य लोगों को उपमा मिलेगी और योग्य तथा कर्मशील लोगों को अकर्मण्य बनने में प्रोत्साहन करना है। परिणाम यह है कि अब रूस में भी अन्य देशों की भांति हजारों और लाखों रुपये कमाने वाले हैं। अब तो यह समाचार भी आने लगे हैं कि वहां पर बेकारी अधिक हो रही है, जिससे फौज में वृद्धि करनी और बढ़ी हुई फौज को स्थिर रखना एक आवश्यक बात होती जाती है। इस बेकारी से लोगों की चरित्र-हीनता बढ़ती जाती है। 'स्टालिन के काल का रूस' नाम के पुस्तक मे जो फ्रांस की एक कम्युनिस्ट 'सुजाना लोबिन' ने लिखी है, उसके पृष्ठ सख्या २८४ पर प्रवदा जून १० और एप्रैल १९, १९३५ और इजवैस्ता मई १४ और २९, १९३५ तथा मार्च २, १९३७ इसी प्रकार प्रवदा कोस्टोका एप्रैल १४, १९३८ में से उद्धृत कर यह बताया गया है कि रूस में अल्प आयु के बच्चों से होने वाले अपराध बहुत बढ़ रहे हैं। एक दिन में लड़कों के ग्यारह झुंड मास्को में चोरी करते पकड़े गये। एक और स्थान पर लिखा है कि एक बारह वर्ष की लड़की चोरी करती पन्द्रहवीं बार पकड़ी गई।

प्रवदा फरवरी २८, १९३९ में यह लिखा है, "स्कूल के विद्यार्थी चोरी, डकैती और दूसरे अपराध करने लग गये हैं।" इस प्रकार के उदाहरण बहुत दिये जा सकते हैं, जिनमे यह बात निर्विवाद हो जाती है कि रूस में अकर्मण्यता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

रूस में यह मान लिया गया है कि सबको एक ही वेतन देना ठीक है और इससे योग्य कर्मचारी पूरे ध्यान से काम कर सकने हैं। यही कारण है कि अब रूस म भी हजारों और लाखों कमाने वाले उपस्थित हैं। चोरी, डकैती इत्यादि की वारदातों के बहुतायत में होने से यह बात भी सिद्ध हो जाती है कि वहां बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो ईमानदारी से अपना पेट नहीं भर सकते।

इन्टरनेशनल लेबर ऑफिस की १९३७ की बुलेटीन में भिन्न भिन्न देशों में मजदूरों के जीवन-स्तर का मुकाबला इस प्रकार किया है। एक कीलोग्राम अनाज के लिए दाम कमाने के लिए एक मजदूर को यू० एस० ए० में १६५ मिनट लगते हैं। ग्रेट ब्रिटेन में २१५ मिनट। फ्रांस में ३७५ मिनट और यू० एस० एस० आर० में ११८९ मिनट। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि रूस की अवस्था, जिसमें कम्यूनिज्म को काम करते तीस वर्ष के लगभग हो चुके हैं, अभी भी बहुत देशों से खराब है।

यह निर्विवाद सत्य है कि कम्यूनिज्म का यह रूप कि सबके प्रयत्नों से उपार्जित धन पर सबका बराबर अधिकार है, अयुक्ति सगत है, अन्याय है और समाज को अवनति की ओर ले जाने वाला है। इससे अयोग्य लोगों को उन्नति करने के लिए यत्न करने में उत्साह नहीं मिलता। योग्य लोगों को अपनी पूर्ण शक्ति से काम करने के लिए कोई प्रलोभन नहीं रह जाता। खुले मुकाबले में काम करते हैं और इस मुकाबले में अपने अपने प्रयत्नों का फल स्वयं भोगने से उन्नति करने में उत्साह और उत्तेजना मिलती है। प्रतिस्पर्धा की भावना से हमने स्कूल

शेष पृष्ठ १८ पर]

कहानी

जीवन

★ श्री रमेशचन्द्र

"हटिए जी हटिए, आप नहीं जानते यह जनाना डिब्बा है" ? खिड़की से झांक कर उपेक्षापूर्ण दृष्टि डालते हुए एक नवयुवती ने कहा ।

'केवल पैर रख लेने दीजिए कृपा होगी खिड़की पर खड़ा खड़ा चला चलूंगा' । कुशाग्र ने घबराहट से बेग सम्हाल कर चढ़ते हुए उत्तर दिया । तब तक गाड़ी प्लेट-फार्म पार कर तीव्र वेग से चल-चुकी थी ।

गाड़ी चल रही थी और छोड़ रही थी एक के बाद दूसरा मैदान, बाग पेड़ और उसी प्रकार कुशाग्र के हृदय-पटल पर अतीत की स्मृतियां एक के बाद दूसरी आकर उसकी विचार-सरिता को तरंगित कर रहीं थी । उसे याद आ रहा था बाल्यकाल का वह सुखद जीवन जब, उसका पिता राजकपिरुषी के प्रमुख धना-ढ्यों में गिना जाता था । पैसा कैसे पैदा किया जाता है, इसकी उसने कभी स्वप्न में भी कल्पना करने की आवश्यकता नहीं समझी । वह तो जानता था आमोद-प्रमोद में पैसा बहाना । इसी प्रकार उसने बी ए पास किया और इसी प्रकार एम.ए. पर आज ! आज तो वह केवल निरावलम्ब शरणार्थी है । हाय रे दुर्दैव ! आज उसका अपना कोई नहीं । उसके लिए संसार नीरस है — और वह है इस नीरसता में भी मधु का स्वाद लेने-वाला भौंरा । पर फिर भी पेट तो भरना ही है और वह भी स्वाभिमान से' । यही विचार बराबर उसके मस्तिष्क को आन्दोलित कर रहे थे ।

वायु के प्रबल आवेग से उसका दुर्बल शरीर पत्ते की तरह कांप रहा था ।

'बेचारे को सर्दी लगती होगी !" नवयुवती ने पास में बैठी हुई अधेड़ा से, जो शायद उसकी मां थी, कुछ नीची गर्दन कर सकुचाते हुए कहा ।

'बेटा ! ऊपर क्यों नहीं आ जाते" ? "बेटी ज्योत्सना इनका बेग तो पकड़ लेना" । युवती की मां ने सहानुभूति प्रकट करते हुए चढ़ने का आग्रह किया ।

'व्यर्थ आपको तकलीफ ही होगी ।" युवक ने सिर हिला कर इन्कार किया ।

'अरे इसमें क्या तकलीफ है, लाइए अपना बेग ।' युवती ने उत्साह से थैला पकड़ते हुए खिड़की खोल दी ।

'जरा सम्भल कर, कहीं ऐसा न हो कि जीवन में संचित समस्त निधि हाथ से चली जाय ।' कुशाग्र ने उचक कर डिब्बे में चढ़ते हुए चुटकी ली ।

अब कुशाग्र डिब्बे में था, पर खड़ा था ।

'सामने बैठ जाइये ।' युवती ने एक सीट की ओर इशारा कर बैठने को कहा ।

'मेहरबानी ।' कुशाग्र ने बैठते हुए युवती की ओर ध्यान आकृष्ट किया ।

कम्पार्टमेंट भर में तीन ही प्राणी थे, पर सब मौन ।

'बेटा कहां रहते हो और कहां जाने का विचार है ?' अधेड़ महिला ने नीरवता को भंग करते हुए प्रश्न कर डाला । 'माता जी, आश्रय - हीन ग्रेजुएट पुरुस्वार्थी हूं और जाने की दिशा अज्ञात है । कुशाग्र ने हंसते हुए पहेली बुझाई ।

'आखिर फिर भी कहीं तो ?' पहेली न बुझाइए ।' ज्योत्सना ने किंचित चिड़-चिड़ाहट मिले स्वर में कहा ।

'कहीं नहीं, देहली जा रहा हूं, भाग्य की अजमाइश करनी है । आई सी एस. का उम्मीदवार हूं । इन्टरव्यू के लिए बुलाया गया हूं । इस थैले में इन्टरव्यू कार्ड और अन्य सार्टिफिकेट हैं ।' कुशाग्र शीघ्रता से सब कुछ कह गया ।

फिर निस्तब्धता ।

'क्या आपका परिचय प्राप्त कर सकता हूं ?' कुशाग्र ने ज्योत्सना से उत्सुकता पूर्वक पूछा ।

ज्योत्सना सकुचा गई । 'बताती क्यों नहीं बेटी ?' अधेड़ ने उत्साह बढ़ाते हुए पुत्री को आदेश दिया ।

'एम. ए. की छात्रा हूं ।' ज्योत्सना ने जल्दी में ही उत्तर दे डाला । पर उसका सिर अनायास ही लज्जा से झुक गया ।

कुशाग्र फिर गम्भीर हो गया । वह सोच रहा था 'उज्ज्वल भविष्य को, अब वह आई. सी. एस. होगा । बंगला होगा कार होगी, नौकर-चाकर सभी कुछ होंगे । पर' "पर ने दिल में एक हास का अनुभव कराया । कुशाग्र अब विचार तरंगों में इतना डूब गया कि उसे पता तक न था कि वह है कहां । वह जीवन का तथ्य ढूंढ डालना चाहता था । क्या जीवन का भौतिक सुख ही जीवन का तथ्य है, वह अपने मन में कह उठा । पर अन्तरात्मा आगे बढ़ी । उसका उत्तर कठोर नकारात्मक था । तो फिर क्या ? मस्तिष्क ने प्रश्न कर डाला । पर यह जीवन के किस पहलू में है ? उसका मूल स्रोत क्या है ! सुख नहीं, तो क्या दुःख उसका उद्भव स्थान है । सुख और दुःख तो दोनों स्वयं ही अपूर्ण हैं— वे केवल एक विश्व चक्र के पूरक मात्र हैं । विचित्र समस्या है ? 'जीवन रस' ही जीवन में चिर प्रसन्नता की सृष्टि करता है । जीवन-रस का मूल स्रोत क्या है ?

नीरसता की जननी है निराशा । निराशा का कारण जीवन का एकाकीपन । एकान्त में विचार सरिता का बहना स्वाभाविक है, जिसमें निराशा रूपी पानी ही बहेगा । कारण मस्तिष्क के प्रत्येक विचार में जीवन के प्रति निराशा अनिवार्य है, क्योंकि विश्व स्वयं निस्सार है । तो क्या जीवन के एकाकीपन का विनाश ही जीवन रस की गंगोत्री है, जिस द्वारा प्रवाहित प्रत्येक गंगाधारा मनस्थल को सरसब्ज कर वास्तविक और चिर-प्रसन्नता की सृष्टि करता है ।" प्रश्नों पर प्रश्नों की झड़ी लगाते लगाते कुशाग्र का अन्तरतम में निहित ज्वाला-मुखी फूट ही तो पड़ा । वह रो रहा था पर सहसा वह हंस पड़ा । उसके मुख की चमक बता रही थी कि कुशाग्र ने कुछ पा लिया था, वह था जीवन का तथ्य ।

'पर सार को प्राप्त करने में संघर्ष है और संघर्ष में जीवन, पर क्या वह संघर्ष बिना जीवन-संगी के सफल होगा ?' सोचते-सोचते कुशाग्र की आंखें फिर डबडबा आईं । पर इन आंसुओं में एक चमक थी ।

'ज्योत्सना कितना प्यारा नाम है, जैसा कलापूर्ण नाम, वैसा ही मृदुल स्वभाव और उसके द्वारा विभूषित अंग-प्रत्यंग । छि कैसा विचार है ?' कुशाग्र सोचता ही जा रहा था । पर यह क्या ? अचानक गाड़ी को झटका लगा, गिरती हुई ज्योत्सना को कुशाग्र ने सम्हाला । गाड़ी क्यों रुकी ? अधेड़ा ने प्रश्न किया । बात समाप्त भी न हो पायी थी कि चारों ओर से चीत्कार, भाग-दौड़ का स्वर सुनाई देने लगा ।

कुशाग्र भी खिड़की से कूद पड़ा । ठहरो-ठहरो करती हुई युवती अपनी मां को साथ लिए हुए घटना को जानने के लिए उतर पड़ी । तीनों इंजन की ओर आगे बढ़े । गाड़ी कालो नदी के पुल पर थी । पटरी पर तो दीर्घकाय पत्थर पड़े थे । परन्तु सब यात्री ड्राइवर की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे कि आज उसने अनेकों यात्रियों का उद्धार किया ।

'डाकू कमूनिट की सरारत मालूम पड़े है ।' एक बूढ़े गंवार यात्री ने अपनी बुद्धिमानी प्रकट करते हुए कहा— 'लगे तो ऐसा ही है ।' दूसरे ने पुष्टि की ।

युवक कुशाग्र यात्रियों के अज्ञानों का अध्ययन करता जा रहा था । सहसा एक ओर से चीत्कार उठी 'डूबी' कुशाग्र ने पीछे मुड़ कर देखा । ज्योत्सना कहां है ? माता जी, इस प्रश्न भी साथ-साथ कर डाला । अधेड़ा आंखें फाड़ रही थी । कुशाग्र ने हिलोरें मारती हुई कालिन्दी में देखा ज्योत्सना का उछलना और फिर डूबना । चढ़ी हुई कालिन्दी को देख कुशाग्र झिझका, पर आन्तरिक प्रेरणा ने कुशाग्र को ज्योत्सना के पास तक पहुंचा ही दिया । निर्बल कुशाग्र के केवल चोटी ही हाथ लगी । वह बेहोश ज्योत्सना को सम्हाल जीवन के साथ खेल खेलता किनारे की ओर बढ़ रहा था । पर निर्बल शरीर लहरों से कब तक टक्कर लेता । कुशाग्र थक गया था तथा दोनों सरिता के प्रबल वेग में बह निकले । पर न जाने कुशाग्र किस उत्साह वर्धक प्रेरणा से लहरों से जूझ रहा था । भीड़ में खड़ी मां चिल्ला रही थी । पर सौभाग्य से पुलिस घटना स्थल पर आ गई ।

'मोहन सिंह, गुलाम मुहम्मद कूद पड़ो ।' पुलिस सुपरिन्टेडेन्ट ने दो कानि-स्टबिलों को आज्ञा दी ।

ज्योत्सना बच गई थी । उसे लिटाया गया । दोनों कानिस्टबल तथा कुशाग्र विजय गर्वित मुद्रा में खड़े थे ।

'माता जी, धीरज धरिये ।' कुशाग्र ने अधेड़ा को समझाते हुए कहा क्योंकि वह रो रही थी । कुशाग्र ने होशियारी से पानी निकाला । अब ज्योत्सना स्वस्थ थी पत्थर हटाये गए । यात्री अपनी जगह पर आये ।

'आआइए आप भी ।' युवती ने कृतज्ञ नेत्रों से देखते हुए कुशाग्र से प्रार्थना की ।

'आप बैठ जाइए । मैं कहीं और बैठ जाऊंगा । मैं अभागा ही हूं जिसके कारण आप लोगों को इतना कष्ट हुआ । अब मैं अधिक कष्ट आप को न दूंगा ।' कुशाग्र ने प्रत्युत्तर में कहा ।

'और अधिक शर्मिन्दा न कीजिए ।' युवती और अधेड़ा एक साथ कह उठी और कुशाग्र को जबरदस्ती गाड़ी पर खींच लिया । गार्ड ने सीटी दी । गाड़ी चल दी । न जाने आज कुशाग्र के मन में क्या उमंग थी । उसकी दृष्टि सहसा कपड़े बदलती उपक्रम करती हुई ज्योत्सना पर पड़ी । कुशाग्र ने देखा ज्योत्सना के बहुमूल्य कपड़े उसके शरीर से इस प्रकार चिपट गये थे कि मानो ज्योत्सना का बिछोह उनके लिए असह्य है । उसके दिल को सहसा एक ख्याल ने झकझोर डाला क्या वह भी कभी ज्योत्सना के जीवन को इसी प्रकार अपने जीवन में समीभूत

[शेष पृष्ठ १८ पर]

चंबल तट पर बांध योजना का विकास

★

अपने तटवर्ती कोटा नगर की सुरक्षा को अच्छी वर्षा में खतरे में डालने वाली राजस्थान की एकमात्र बारह मासी नदी चम्बल है, जो राजस्थान के एकीकरण के पूर्व राजपूताने की तीन पुरानी रियासतों कोटा, बूंदी और जयपुर के बीच प्राकृतिक सीमा थी और जो अब निकट भविष्य में सिंचाई और बिजली के साधनों से संयुक्त एक बहु उद्देश्यक नदी घाटी - योजना के रूप में आधुनिक राजस्थान की समृद्धि और सम्पन्नता का महान स्रोत बनने जा रही है।

समूचे राजस्थान की एक वर्ष की आय से कुछ कम, अर्थात् १४ करोड़ की लागत पर, पूर्ण होने पर यह योजना राजस्थान में ७७,५०० किलोवाट बिजली और १,००,००० टन अनाज, जो इस राज्य में अनाज के ५०,००० टन प्रति वर्ष के घाटे को इतनी ही मात्रा की बढ़ोतरी में बदल देगा, प्रदान करेगी। योजना के अन्तर्गत सिंचाई के लिए और विद्युत शक्ति उत्पादन के लिए ३ बांध बनाये जाएंगे। सिंचाई-बांध के दोनों ओर से नहरें निकाल कर दूरस्थ शुष्क रेत को लहलहाते खेतों में परिणत किया जाएगा।

आर्य ऋषियों के हिमालय के पश्चात् दूसरे तपोवन और भारत को दो प्राकृतिक भागों में विभाजित करने वाले विन्ध्याचल पर्वत के उत्तरी ढालों में चम्बल का उद्गम होता है और वहां से मानो अपने उद्गम स्थान की पवित्रता को बनाये रखने के लिए, चम्बल उत्तर और उत्तर पूर्व की ओर ६०० मील की लम्बाई में बहती हुई गम्भीरी, चम्बला, सिपरा, कालीसिंध, पार्वती और बनास नाम की सहायक नदियों सहित लगभग २२,००० वर्गमील भूमि का जल एकत्रित करके उत्तर प्रदेश में इटावा के निकट यमुना से जा मिलती है। नदी सर्व प्रथम मध्य भारत में आती है और फिर मेसरोलगढ़ के निकट राजस्थान में पश्चिम दिशा से प्रवेश करती है। वहां से उत्तर पूर्व की ओर बहती हुई मध्यभारत और राजस्थान की सीमा बनाती हुई सवाई माधोपुर और धौलपुर के निकट से मध्य भारत में चली जाती है। मध्यभारत छोड़ने के पूर्व यह १० मील तक एक गहरी पर्वत कन्दरा में हो कर बहती है। इस कन्दरा से आगे राजस्थान के इलाके में फिर अनेक ऊंचे प्रपातों से गिरती हुई पुनः १२ मील की लम्बाई तक एक दूसरी गहरी पहाड़ी घाटी में बहती है। इन्हीं कन्दराओं और घाटियों में गिरते हुए जल के वेग से टरबाइन चला कर बिजली पैदा की जायगी। कोटा के निकट नदी काफी गहरी और चौड़ी है और भारी वर्षा होने पर तीव्र जल प्रवाह को पार करने में नाविकों को भी कठिनाई होती है। कोटा और धौलपुर में उस क्षेत्र को जहां नदी पथरीले भूतल पर से गुजरती है 'डांग' कहते हैं। वहां नदी ने चट्टानों को काट-काट कर कहीं-कहीं १००-१०० फीट तक गहरे गर्त बना दिये हैं।

जब राजसी सत्ता राजप्रसादों और सैनिक गढ़ों में निहित थी, तब युद्ध काल में शक्ति सचय और शान्तिकाल में जल विहार के लिए अनेक दुर्ग और क्रीड़ा स्थल चम्बल के किनारे ही थे। मैसोरगढ़ नामक गढ़ चम्बल के तट पर आज भी भग्न अवस्था में खड़ा कह रहा है मानो 'कभी हम भी थे !' विदेशियों आक्रमण के पश्चात् जब भारत मध्य-काल में धींगाधींगी, अराजकता और अव्यवस्था का अखाड़ा बना तो भारतीय धर्म, संस्कृति विद्यायें इन्हीं राजाओं के दरबारों में पनपीं। इसका जीता जागता उदाहरण चम्बल के तट पर कोटा से चार मील केशोराय पाटण नामक स्थान पर सैंकड़ों वर्षों पुराना एक विशाल मन्दिर तथा आसपास अनेक भवनों और मन्दिरों के खण्डहर हैं। इसी जमाने में दिल्ली के पृथ्वीराज चौहान के पराजित होने और दिल्ली में विदेशी मुस्लिम सत्ता के जमाने के बाद, दिल्ली के इर्द-गिर्द वाले क्षेत्रों में स्वतन्त्रता की पुनः प्राप्ति के लिए जो प्रयत्न किये गये उनका सम्बन्ध चम्बलवर्ती क्षेत्रों से अवश्य रहा है। शत्रुओं को बन्दी बना बना कर छोड़ देने की परम्परा वाले उस युग में स्वाधीनता की रक्षा में स्थानीय सत्ताओं में जो पारस्परिक मुठभेड़ें हुईं और विदेशियों से जो मोर्चे लिये गये उनमें कितने राजस्थानी वीरों का लहू चम्बल के जल में मिश्रित हो कर गंगा जमुना की राह मथुरा, प्रयाग, काशी होता हुआ बंगाल की खाड़ी में लुप्त हुआ और कितने भाई के लालों ने चम्बल की रेत के अंचल से अपना मुख ढका इसका उत्तर देना तो स्थानीय इतिहासवेत्ताओं का काम है, पर जिसके लिए राजस्थान में बहुत बड़ा कार्य क्षेत्र खुला पड़ा है। किन्तु यह सत्य है कि मुहम्मद गौरी के जमाने से बाबर के काल तक चम्बल के तीर अनेकों युद्ध हुए हैं। अंग्रेजों के आने के बाद

[शेष पृष्ठ २७ पर]

केशोराय पाटन नामक ग्राम में चम्बल के तट पर स्थित एक प्रसिद्ध मन्दिर।

युद्ध और शान्ति—१

★ राजनीति का एक विद्यार्थी

> प्रत्येक राष्ट्र द्वारा शान्ति की बार बार दुहाई दिये जाने और तथाकथित शान्ति प्रयत्नों के पश्चात भी असंदिग्ध रूप से समस्त विश्व पर युद्ध के काले बादल मंडरा रहे हैं। सभी राष्ट्र एक दूसरे पर युद्धस्थिति उत्पन्न करने का दोषारोपण कर रहे हैं। साथ ही महाविध्वंसकारी युद्ध के लिये भी पूर्णतया सज्जित हैं। प्रस्तुत लेख माला के अनुभवी लेखक ने युद्ध और शान्ति के सिद्धान्तों की विशद विवेचन करने का प्रयास किया है।

बीसवीं शताब्दि नये जमाने के नाम से विख्यात है। प्रगति पथ पर निरन्तर बढ़ते जाना आज का प्रधान युगधर्म है। प्रत्येक देश विज्ञान, कला कौशल, अर्थ सभी ओर प्रगति करने की होड़ में लगा हुआ है। ऐसा दीख पड़ता है मानों आज की आराध्य देवी-प्रगति को प्रसन्न करने के लिये उसके पुजारी ये राष्ट्र सब उसकी साधना में क्या न लगा दें गे विज्ञान की चरम सीमा कहां होगी यह समझ में नहीं आता। अर्थ तो विज्ञान से भी बढ़ गया और संसार की प्रधान समस्या बना हुआ है। 'आर्थिक प्रभुत्व' से कौन परिचित नहीं? राजनैतिक प्रभुत्व का ही यह दूसरा नाम है।

प्रगतिवादी इस युग में संघर्ष की दिशा में प्रगति न हो यह कैसे संभव था? युद्ध विश्वव्यापी शीघ्र व्यापी एवं अधिक विनाशकारी होने लगे। संसार का लक्ष्य शांति से हटकर युद्ध हो गया। आराध्य देवी प्रगति युद्ध की दासी हो गई। दो महायुद्ध समाप्त हुये तीसरे की भूमिका बन कर सेनायें सुसज्जित की जा रही हैं परमाणु बम अभी तक और समय को थामे हैं। न जाने कब उसके हाथ से लगाम छूट जाय। अन्ततोगत्वा तीसरा महायुद्ध अवश्यम्भावी है।

बीसवीं शताब्दि की एक विशेषता यह है कि पहले युद्ध लड़ा जाता है और तत्पश्चात चिरन्तन शान्ति के उद्देश्य से संसार के समस्त देशों की एक संस्था बनाई जाती है जिसमें राष्ट्रों के परस्पर झगड़े निबटाये जाते हैं, तथा संसार की प्रगति के मार्ग प्रशस्त किये जाते हैं। जहां तक इन संस्थाओं के उद्देश्य का संबंध है, भला शान्ति जैसे पवित्र उद्देश्य के बारे में कौन शंका उठा सकता है? परन्तु प्रत्यक्ष अनुभव यही है कि भावी युद्ध का भी गणेश इन्हीं संस्थाओं में होता है।

सच तो यह है कि युद्ध कभी समाप्त होता ही नहीं। केवल उसके शस्त्र, स्वरूप एवं क्षेत्र बदल जाता है।

यह युद्ध गरम युद्ध कहलाता है और यह शरत। यहां राजनीतिज्ञ अपने वाक् प्रहारों से कूटनीति क विषय में भरे तीखे वाणों से परस्पर प्रहार करते हैं। इनके अस्त्र शस्त्र होते हैं प्रतिनिधि मंडल रेडियो, और समाचारपत्र और युद्धस्थल होता है, इन संस्थाओं के सभा मंच।

प्रथम महायुद्ध के पश्चात् लीग आफ नेशन्स का निर्माण हुआ। विभिन्न देशों के शक्ति परिचय का यह अड्डा बनी। संसार के अमामद कब तक अपने जोश को संभालते। बातों से जब काम न चला तो हाथों पर उतरना पड़। और परिणाम हुआ द्वितीय महायुद्ध। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् निर्मित एन० ओ० (संयुक्त राष्ट्र संघ) भी उसी के पद चिन्हों पर चल रहा है। रूस के परराष्ट्र मंत्री का उक्त कथन सत्य ही समझना चाहिए। ऐसी अवस्था में यह कहना कठिन है कि मुर्गी और अंडे के समान युद्ध इन संस्थाओं को जननी है, या ये संस्थायें युद्ध की जननी हैं। परन्तु यह स्पष्ट है कि ये संस्थायें युद्ध को नहीं रोक सकती और न ही समय पर किये जाने वाले शांति सम्मेलन अपनी सुन्दरता एवं रोचकता से संसार को धोखा देने के अतिरिक्त इन नाटकीय शांति दृश्यों का और अधिक उपयोग हमें दिखाई नहीं देता। वास्तव में यह तो शांति देवी का उपहास है और है इसके पवित्र नाम का दुरुपयोग। कहना ही चाहिए कि पश्चिमी राज्य से विश्वशांति कोसों दूर है। वह शांति मार्ग पर नहीं, युद्ध मार्ग पर चल रहा है। उसको यह गति कहां अवरुद्ध होगी यह असंदिग्ध एवं भविष्य के गर्भ में है।

गत दो महायुद्धों के गंभीर अध्ययन से यह और अनुभव में आता है कि पहले की अपेक्षा दूसरा युद्ध विशाल, उनके केन्द्र संकुचित और केन्द्रों के अधिकार और क्षेत्र अपरिमित होते चले जाते हैं। बागडोर उन्हीं के हाथों में रहती है। जो शक्तिशाली होते हैं। इस प्रकार संसार की राजनीति भी केन्द्रित होती चली जारही है। जब निरन्तर युद्ध की अवस्था रहती है और उनके केन्द्र संकुचित होते जाते हैं, तो परिणाम यह होता है कि संसार को तानाशाही की ओर प्रयाण करना पड़ता है। कारण युद्ध में सेनायें लड़ती हैं और सेना में क्यों और किस लिए का प्रश्न नहीं उठाया जाता। और न ही उठाया जा सकता है। सार्वजनिक मत लेना तो असंभव ही है, वहां तो अनुशासन और सेनापति की आज्ञा का पालन करना सर्वोपरि होता है। स्वरक्षा की प्राथमिकता के समक्ष अन्य बातें गौण ही हैं, अत. जिन राष्ट्रों का गठबन्धन किया जाता है उनकी पराजय स्वाभाविक होती है। गत महायुद्ध में महाशक्तिशाली नाज़ी फासिस्ट आदि राष्ट्रों की पराजय इसी कारण से हुई कि उनके नेतृत्व में एक सूत्रता नहीं थी और मित्र राष्ट्रों में वह पूर्णतया थी। इसके साथ ही साथ एक और बात अनुभव में आती है कि पहले युद्ध मानापमान की भावना के परिणाम स्वरूप अथवा भूमि विजय की लालसा से लड़े जाते थे। परन्तु आज के युद्ध विभिन्न पाश्चात्य विचार धाराओं को जय पराजय के लिए लड़े जा रहे हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि साम्राज्यशाही के लिए विचार धारायें लड़ती हैं। हमारा मत है कि साम्राज्यशाही की वृत्ति और विचार 'वाद' ये एक ही सिक्के के दो कोने हैं। एक ओरसे देखिये तो विचार धारा की मूर्ति दिखाई देगी और दूसरी ओर साम्राज्यशाही के अंक दिखाई देंगे। एक दूसरे का परस्पर कोई सम्बन्ध न होते हुए भी अटूट सम्बन्ध है। इनको किसी प्रकार भी एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

इस शताब्दि के सब युद्धों का केन्द्र पश्चिम और विशेषत: यूरोप है। वैसे तो पश्चिम के देश सदैव परस्पर युद्ध में रत रहे हैं, परन्तु आज के युद्धों को तीव्र, उग्र तथा विश्वव्यापी बनाते हुए उन्हें आज की विभिन्न एवं विरोधी विचारधाराओं के युद्ध तक पहुंचाने का सारा दोष पश्चिम के योरोपीय देशों और उनकी सभ्यता को है। आज का 'फैशन' इस प्रकार का है। रूस समता के सिद्धांत पर 'दुनिया के मज़दूरो एक हो जाओ और युद्ध करो' का नारा लगा कर संसार को आह्वान दे रहा है। 'प्रजातन्त्र ख़तरे में है। अतः संसार के प्रजातन्त्रवादी देश संगठित हो जाओ।' इस ललकार से ऐंग्लो-अमेरिकन देशों ने रूस की चुनौती को स्वीकार कर लिया है। साम्यवाद में कृषकों और मज़दूरों का राज्य होगा, भर पेट रोटी, तन ढकने को पूरे वस्त्र और निवास के लिए सुन्दर मकान मिलेंगे, इसलिए अपने-अपने देशों में आज क्रान्तियां करो। रूस का साथ दो। 'साम्यवादियों की इस पुकार ने संसार की भूखी, नंगी जनता में हलचल मचा दी है। ठीक भी है। भूखा मरता क्या न करता। घबरा नहीं, हम तुम्हें भूखा नहीं मरने देंगे। यह लो मार्शल सहायता।' अर्थ महासागर कुबेर पंथी अमरीका ने यूरोपीय, और अब पूर्वी देशों की भी पीठ थपकी। उन्होंने भी (सहायता) सहर्ष स्वीकार की। सत्य है नौ नकद न तेरह उधार।

स्पष्ट है, संसार साम्यवाद और प्रजातन्त्र वादों के नामों से दो दलों में विभक्त हो गया है। रूस और अमरीका क्रमशः जिनके दो केन्द्र हैं। अन्य देशों का भविष्य भी इन्हीं के साथ रहेगा, कारण दो पार्टी के बीच में तटस्थ रहा न कोय।

क्रमशः

कुलपति नरेन्द्र निर्जन साधना के लिए अपने घर से निकले थे। पर सुरम्य कृष्णा के तट पर विद्यार्थियों को शिक्षा दान देने का लघु प्रयास विराट गुरुकुल के रूप में परिणत हो चुका था। राजपाल और राघवेन्द्र आचार्य नरेन्द्र के प्रमुख शिष्यों में से थे। गुरुकुल की सम्पूर्ण शिक्षा समाप्त कर वह दोनों विद्यार्थी गुरु के प्रेरणाप्रद सन्देश के साथ जीवनक्षेत्र में प्रवेश करते हैं, तथा जीवन और जगत की समस्याओं का समाधान ढूंढने की ओर अग्रसर होते हैं। राघवेन्द्र आचार्य दुबे के सम्पर्क में आकर गांधीवाद की ओर प्रवृत्त होता है। इधर राजपाल अनेक प्रकार की मानसिक उथल-पुथल के पश्चात् राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की आवश्यकता का अनुभव करता है तथा दृढ़ चित्तता से उसी कार्य में लग जाता है। राजपाल अपने पूर्व सहपाठी आनन्द के सम्पर्क में आता है, जो साम्यवादी विचारधारा से पूर्णतया प्रभावित है। इस प्रकार दोनों ही अपने निर्दिष्ट मार्ग की ओर बढ़ रहे हैं। राघवेन्द्र आचार्य दुबे के अधिक सम्पर्क में आता है इसी बीच उसका परिचय एक मुस्लिम महिला जेबुन्निसा से हो जाता है जो उसकी ओर कुछ आकर्षित होने का ढोंग रचती है। राजपाल के प्रयत्नों से वोला उच्छृंखल कम्यूनिस्ट युवकों के फन्दे से छूटती है।

[गतांक से आगे]

[१०]

राजपाल कपड़े खोल कर बैठा ही था कि बाहर से किसी ने पुकारा— राजपाल, राजपाल जी !

मां ने पूछा— कौन है ?

'मैं, आनन्द !'

'आनन्द चले आओ।' राजपाल वहीं से पुकार उठा— 'क्या मां आनन्द को भूल गईं'। उसने कहा।

'नहीं तो, वही नटखट ! वही बेटा आनन्द बहुत दिनों बाद आये।'

नमस्ते कहने के बाद उसने कहा— हां माता जी, भइया राजपाल, यहां थे ही कब।

राजपाल ने उठकर उसका स्वागत किया, उसने आज आनंद में देखी वही बाल सुलभ आत्मीयता।

'तुम्हारा तो पता ही नहीं चलता भाई आनन्द ! क्या मकान बदल लिया है ?'

'हां भाई राजपाल, जीवन भी परिवर्तनशील है। फिर मिट्टी के घर से कैसा प्रेम !'

उसकी बातों में गम्भीरता थी और परिवर्तन। राजपाल को याद आ गया वह दिन जब वर्षों बाद राजपाल और आनन्द प्रिंस स्ट्रीट पर मिले थे। आनंद मानों दुःखी था। उसमें अब विद्यार्थी सुलभ चंचलता नहीं थी। उसकी बातों में अनुभव की सारगर्भित द्युति थी।

'तो क्या अब अध्ययन समाप्त कर दिया ?'

'नहीं, अध्ययन तो चल रहा है। बहुत दिनों से ढूंढ रहा था कि कहीं तुम मिलो और फिर स्मरण करें उन बाल्यलीलाओं को। आज तो मन न माना। मैं चल ही पड़ा।' आनन्द ने विषय बदल दिया था।

'स्वागत, आनन्द स्वागत ! मैं अपना सौभाग्य समझता हूं कि तुम्हारे दर्शन हो गये। तुम्हारा तो कहीं पता ही नहीं।'

मां ने बीच में ही आकर कहा— 'बेटा आनन्द, आज तो तुम्हें बिना भोजन किये जाने न दूंगी। चलो भोजन तैयार है।'

आनन्द ना नहीं कर सका। दोनों मित्र वर्षों बाद मिल कर एक साथ भोजन कर रहे थे।

'बेटा आनन्द,' मां ने निःश्वास निकालते हुए कहा— 'राजपाल को तो समझाओ। क्यों नहीं वह विवाह करने को तैयार होता। मेरे कहने को तो यह बातों में ही उड़ा देता है। तुम्हारी तो मानेगा ही।'

राजपाल ने आनन्द को देखा और आनन्द ने राजपाल को। दोनों के नेत्र एक पल मिल कर पुनः अलग हो गये। राजपाल मुस्करा रहा था, बीच में ही उसने कहा—

'क्यों आनन्द, आज की इस दौड़ के युग में विवाह की क्या आवश्यकता है।' उसकी वाणी में विनोद था।

आनन्द के सामने मानों एक समस्या आ खड़ी हुई। विवाह और लीला का जीवन। अविवाहित नवयुवती का जीवन। उसका मन एक बार पुनः रात की घटनाओं को दुहरा रहा था।

'माता जी, राज भइया तो विनोद करते हैं, विवाह, विवाह यह अवश्य करेंगे।' आनन्द मानो विश्वास के साथ कह रहा था।

'अच्छा तो मां तुम किसके साथ मेरा विवाह कर रही हो ? और आनन्द का विवाह न करोगी।'

'यह देख यह फोटो, कल की डाक से आया है।'

'अच्छी बात है, तो आपको मान्य है न' राजपाल ने मां की ओर देखते हुए कहा।

'क्यों नहीं बेटा। उसका पिता बड़ा गरीब है और लड़की, लड़की क्या रत्न है, हीरा। पढ़ी लिखी।'

मां के दुःखी हृदय में एक हलकी पीड़ा थी, राजपाल के पिता की मृत्यु के पश्चात उसे केवल एक ही चिंता थी, राजपाल का पाणिग्रहण ! यह बात नहीं कि अपढ़ हो, उसने भी मध्यमा तक अध्ययन किया था। पर आज उसकी ममता अपना धैर्य खो चुकी थी। वह राजपाल को जीवन का उपभोग करते देखना चाहती थी, केवल बड़ा भारी दार्शनिक और विद्वान ही नहीं, और राजपाल का उद्देश्य था, त्याग।

बात समाप्त हो गई, राजपाल की अनुमति के साथ। मां के आनन्द का पारावार न था।

× × ×

दिन के चार बज चुके थे। आनन्द ने कहा— 'अच्छा राजपाल अब तो चलूं। आज तो आचार्य दुबे के यहां उनकी पुत्री शैलिनी के जन्म दिवस के उपलक्ष में निमंत्रण है।'

'अरे, वहां तो मुझे भी जाना है। अच्छा अब रहते कहां हो ?' राजपाल ने फिर पिछले प्रश्न को दुहराया।

'क्या बताऊं राजपाल, घर नहीं केवल आश्रम है। तुमसा एक मित्र है जिसके घर लिखक जैन पोस्ट बोक्स नं. १२९। वह नहीं चाहता था कि वह किसी को बतलायें कि वह कहां रहता है पर राजपाल, राजपाल उसका अंतरंग मित्र है। मानो वह उसका कोई निकट आत्मीय हो। वह उससे कैसे छुपाता।

'तो क्या पिता जी ने कोई व्यवस्था नहीं की ?' राजपाल ने पूछा।

'तुम तो जानते ही हो भाई, पिता जी व्यवस्था करने में असमर्थ हैं' ?

राजपाल ने समझ लिया, आनन्द अभी इस विषय में वार्तालाप करना नहीं चाहता। किन्तु उसकी इस अवस्था ने राजपाल को और अधिक सोचने को बाध्य किया, उसने कहा —

'भाई आनन्द, मैं तो केवल इसी लिये सब कुछ पूछ रहा हूं कि मैं और तुम दो नहीं हैं। क्या मैं भी तुम्हारी कुछ सहायता कर सकता हूं ? अच्छा आओ, वहां तो मिलोगे ?'

'अवश्य।'

आनन्द चला गया और राजपाल ने भी जाने की तय्यारी कर दी।

× × ×

[११]

गये दो वर्षों में राघवेन्द्र ने घर का बहुत कुछ उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया था। बेचारे आचार्य को अब एक पल का भी विश्राम दुर्लभ था। बहुत प्रयत्नों के पश्चात् वे अपने परिश्रम में सफल हो गये थे। अपने सहयोगियों की हां में हां मिला कर आचार्य ने अपने आप को योग्य सिद्ध कर दिया था। भाग्य की बात, आचार्य को मिनिस्ट्री मिली; और आचार्य दुबे मंत्री-मंडल के सदस्य हो गये — शासन की आर्थिक डोर के भाग्य-विधाता ! फिर विश्राम, विश्राम कहां ? मोटर में बैठे-बैठे आचार्य परेशान थे।

प्रातः की मधुर मुस्कान की मंगल बेला से लेकर सांध्य की क्षीण रेखा के बीच आचार्य रामधुन लगाने के अतिरिक्त और कुछ न कर पाते थे और फिर मोटर ! कहीं किसी मंत्री के घर, किसी सभा में, कहीं द्रुतपान में और कभी समय मिला तो अपनी पुरानी सहयोगिनी जेबुन्निसा के बंगले पर। बस दिन निकल कर अस्त हो जाता था और रात्रि के पश्चात् पुनः प्रभात ! आचार्य का जीवन बहुत व्यस्त हो गया था।

राघवेन्द्र को पा कर आचार्य प्रसन्न थे। उन्हें कोई पुत्र नहीं था, इससे वे बहुत दुखी थे, पर प्रभू की दिन ! शैलजी ही उनके लिए लड़का थी, राघवेन्द्र उनका सहायक। उनका हिसाब-किताब अब राघवेन्द्र रखता है। राघवेन्द्र आश्रित नहीं अब स्वामी है, नौकर नहीं भाई है।

× × ×

आचार्य दुबे की कोठी के सामने की सारी ही 'प्रिंस स्ट्रीट' मोटर और तांगे से खचाखच भरी हुई है। कोठी पर तिरंगा पताका में शुभ्र आकाश को रंग-बिरंगे सावों में सजा रही हैं और चमक-दमक

अठखेलियां करता आनन्द की दौड़-दौड़ रहा था।

कोठी की सजावट आज अनुपम है। द्वार से ही कोई भी व्यक्ति उसके आंतरिक सौन्दर्य का भास कर लेता है। घर में फूल बरस रहे हैं। इत्रों की सुगन्ध से वातायन गूंज रहे हैं। सारी व्यवस्था कुरसियों की सुन्दर पंक्तियों की सजावट का ही रूपान्तर थी और निमंत्रित भी चुने हुए व्यक्ति ! बैठक के मध्य में एक राजसी कुरसी रखी है और फिर क्रम से अपनी-अपनी बनावट के अनुसार कुर्सियों की पंक्तियां की पंक्तियां! दूसरी ओर एक ऊंचा मंच है, जिस पर कुछ बाक्स रखे हुए हैं।

आज आचार्य के वेश में तो कोई विशेष परिवर्तन नहीं था, किन्तु उनकी आकृति में था पूरा राजसी ठाट। जीवन भर की साधना के पश्चात्, आज अपनी पुत्री शैलिनी की वर्षगांठ मनाने का आयोजन उन्होंने किया है। वास्तव में हृदय मत्त मयूर की भांति पुन. पुनः नाच उठता था। पर अतीत के दुखद चित्रों का आवरण — उमा की अनुपस्थिति — ओह, आचार्य का हृदय मानों टूक-टूक हो गया। उनके मुख पर एक हलका पीलापन छा गया।

राघवेन्द्र भी खादी के श्वेत वस्त्रों में सारी व्यवस्था का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले, रोब से कुछ भिन्न था। वह प्रत्येक को अपना स्थान बतला कर बड़ी नम्रता से कहता —

तशरीफ रखिये !

और शैलिनी ! शैलिनी का किशोर वदन मानों पूर्णिमा का चन्द्र हो। हलकी सुनहली साड़ी पहने हुए मानों सौन्दर्य साकार और सजीव रमणी के रूप में आ गया हो। उसके अधरों की लाली में संसार भर की केसर की लाली का रंग था और घुंघराली लटें। काली नागिन सी बलखाती चली जाती थीं। उसके मुख पर यौवन की भीनी सी झलक के साथ दीप्ति और शुभ्रता का अंकन था। उसकी आंखों में सरल भोलापन था—एकदम हृदय के अन्तर को छू जाने वाली साध थी। उसकी चाल ढाल में भारतीयों की सी शिष्टता थी, चंचलता नहीं। वह भी राघवेन्द्र के साथ स्वागत कर रही थी।

बैठक खचाखच भर गई थी, फिर भी कार्यक्रम प्रारम्भ होने में विलम्ब था। अभी प्रधान मंत्री का आसन रिक्त था। बैठे हुए निमंत्रित सज्जनों और राजपाल की वेशभूषा में कोई अन्तर नहीं था। उसके वस्त्र खादी के नहीं थे, फिर भी सदैव की भांति उनमें कोई सामयिक नवीनता और आनन्द भी नहीं। उसी के पास बैठा हुआ बिलकुल पश्चिमी ढंग की पोशाक में केवल अकेला ही मानों डूबते हुए मंगल का तारा हो।

पास में बैठी हुई लीला ने राजपाल को सम्बोधित करते हुए आनन्द से कहा—

'आपका परिचय ?'

'आप मेरे परम मित्र और भाई राजपाल जी हैं और आप हैं मिस लीला' आनन्द ने दोनों का परिचय कराते हुए कहा—

मित्र और भाई, लीला के सामने एक समस्या थी। उसमें राजपाल ने अनुभव किया एक अजीब आकर्षण— निश्छल आत्मीयता। 'सादी वेशभूषा में राजपाल गूदड़ी में छिपे हीरे के समान है।' लीला हंस पड़ी।

'परिचय प्राप्त कर बहुत प्रसन्नता है।' लीला ने अनुमोदन करते हुए कहा।

'खुदा करे परिचय घनिष्ठता में बदले। इन शब्दों के साथ वातावरण में खिलता छा गई। लीला ने पीछे देखा जेबुन्निसा ! वह हंस रही थी।

'धन्यवाद परमात्मा करे आपके वचन सत्य हों।' राजपाल ने कहा। उसकी वाणी में सजीवता थी—बिलकुल गम्भीरता।

क्षण भर की निस्तब्धता के पश्चात् पुन वातावरण में वही उल्लास था, वही आनन्द था।

प्रधान मंत्री के आते ही सब उठ खड़े हुए— सभी ने हाथ जोड़कर उनका स्वागत किया। कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया। कालेज की सुन्दर गाने वाली छात्राओं ने गाया 'हिंडोल' वायलिन के मधुर संगीत में लोगों ने अनुभव किया उल्लास ! तालियां बजी, वाह वाह हो उठी।

प्रधान मंत्री से विनती की गई कि वे इस मंगलमय अवसर पर शैलिनी को आशीर्वाद दें। उन्होंने कुरसी से उठते हुए कहा—

दोस्तो !

आज हम आचार्य दवे के अहसानमन्द हैं कि उन्होंने इस खुशी के मौके पर हमें नहीं भुलाया। हम प्रार्थना करते हैं कि बेटी शैलनी चिराऊ हो।

फिर तालियां बजी और पुनः वही मधुर आलाप। कुछ अल्पाहार हुआ फिर दुग्धपान।

—क्रमशः

वृद्धजनों की 'वर्कशाप'

ब्रिटेन में अभी हाल में ही 'डम्स आफ रेस्ट' नामक एक वृद्धजनों की 'वर्कशाप' स्थापित की गयी है, जहां सत्तर वर्ष से अधिक आयु वाले ग्यारह आदमी मुख्य कारखाने के शोरगुल से मुक्त और उनकी आयु के बारे में हीनता की भावना अनुभव कराने वाले युवक कामकाजियों के बिना निर्यात प्रयत्न में सहायता पहुँचा रहे हैं। ये लोग विदेशी मण्डियों के लिये दफ्तरी सामान और कृषि साधनों को छेदने और मिलाने जोड़ने का काम करते हैं।

ये वृद्धजन मुख्य उद्योग शाखा की तुलना में एक घण्टे बाद काम करना शुरू करते हैं। इस प्रकार वे साढ़े सात घण्टे प्रतिदिन के हिसाब से सप्ताह में पांच दिन काम करते हैं। उन्हें काम की मजदूरी औसतन चार पौंड प्रति सप्ताह मिलती है। उमर भर की कड़ी मेहनत ने उन्हें समय का पूरा पाबन्द तथा अपनी कार्यकुशलता में पूर्ण विश्वास करने योग्य बना दिया है। लेकिन वे कभी कभी तेज रक्त दबाव और पेट के दर्द जैसी बीमारियों के शिकार बन जाते हैं।

सबसे बूढ़ा कामकाजी जान बेको इस समय ८४ वर्ष का है जिसे अपना बीता हुआ जमाना याद है जो औद्योगिक सुधार के इतिहास का चित्रण करता है। चौदह वर्ष की उम्र में वह पूरे समय के काम से सात शिलिंग अर्थात् पौने पांच रुपये प्रति सप्ताह कमाने लगा था।

पृथक अस्तित्व रखने वाली यह 'वर्कशाप' अपना काम ठेके पर करती है। नफा अतिरिक्त सुविधाओं और विकास पर खर्च किया जाता है। उद्योगशाला के सामने बनी एक आरामगाह में ये बूढ़े कामकाजी भोजन छुट्टी में सुस्ताया और रेडियो सुनने के अलावा अपने अपने अखबार पढ़ा करते हैं।

उद्योगशाला में निर्मित ट्रैक्टरों के विभिन्न पुर्जों का निरीक्षण कर रहे हैं।

प्रात काल का कार्य समाप्त कर अपराह्न के लिये तैयार हो रहे हैं।

जौन बैको नामक यह ८४ वर्षीय वृद्ध आयु में तथा साथ ही कार्य कुशलता में सबसे बढ़ा चढ़ा है।

कार्यव्यस्त वृद्ध कामकाजी
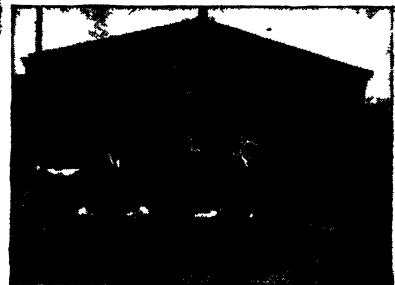
दिन भर के कड़े परिश्रम के पश्चात् वृद्ध कामकाजी उद्योगशाला से लौट रहे हैं।

आर्थिक विषमता कम्यूनिज्म से दूर नहीं होगी

(पृष्ठ ११ का शेष)

कौलिजों के विद्यार्थियों में, दुकानदारों में व्यापारियों में दस्तकारों में, अभिप्राय यह कि प्रत्येक प्रकार के काम करने वालों में उन्नति होती देखी है। दूसरी ओर रूस जैसे कम्यूनिस्ट देश में प्रत्येक काम पर राज्य के नियंत्रण से लोगों की दशा बिगड़ती देखी है। इस से बड़ा और क्या प्रमाण हो सकता है कि लोगों को स्वतंत्रता से कारोबार करने की स्वीकृति ही उन्नति का मार्ग है।

रूस में जो बाहर की खबरें बिना रोक टोक नहीं जाने दी जातीं उस में एक भारी कारण यह भी है कि वहां के लोगों की हालत बहुत बुरी है और उन को समाजवाद के परीक्षण की नितान्त असफलता का भान नहीं होने देना ही ठीक समझा जाता है। रूस से बाहर के लोगों को रूस की वास्तविक अवस्था के पता लग जाने से रोकने के लिए वहां पर किसी बाहर की 'खबर एजेन्सी' को काम नहीं करने दिया जाता।

यह एक भ्रम है कि कम्यूनिज्म के आजाने से भारत के मजदूरों की अवस्था में किसी प्रकार की भी उन्नति होगी। एक गुर की बात यह है कि मालिक के बराबर उत्साह और हिम्मत से कोई भी नौकर काम नहीं कर सकता। कम्यूनिज्म और सोशिलिज्म समाज के प्रत्येक व्यक्ति को नौकर की पदवी ही देता है। उस में स्वामीपन का उत्तरदायित्व आने का अवसर ही नहीं आ सकता। जिस संविधान से पूर्ण जाति ही शूद्र की पदवी पर पहुँचा दी जावे उस से जाति का कल्याण कैसे सम्भव हो सकता है। यदि विद्वानों को भी नौकरी ही करनी है और योग्य शूरवीरों व्यापारियों अर्थात समाज के प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे की दासता ही करनी है तो वह समाज एक दिन अवश्य नाश को प्राप्त होगा।

प्रश्न यह रह जाता है कि यदि कम्यूनिज्म समाज में आर्थिक विषमता का इलाज नहीं तो इस के अतिरिक्त और क्या उपाय है? यह हमारा मत है कि कम्यूनिज्म अथवा सोशिलिज्म वर्तमान दुर्व्यवस्था की चिकित्सा करने के सर्वथा अयोग्य हैं। वर्तमान पूंजीवाद भी एक पुरानी व्यवस्था हो गई है। समय की आवश्यकताओं में परिवर्तन हो जाने से पूंजीवाद की व्यवस्था में बहुत से दोष आगए हैं। परन्तु इसके यह अर्थ नहीं कि उन दोषों को मिटाने के लिए एक मिथ्या, अयुक्ति संगत, अन्याय युक्त और अहितकर व्यवस्था का प्रचार करने दिया जावे। ऐसा मार्ग है जिस से वर्तमान आर्थिक दुर्व्यवस्था को, बिना कम्यूनिज्म जैसे थोदे सिद्धान्त का आश्रय लिए, मिटाया जा सकता है।

जीवन

[पृष्ठ १२ का शेष]

कर पायेगा। न जाने क्यों उसका दहिना अंग फड़का। तब तक ज्योत्स्ना कपड़े पलट चुकी थी। कुशाग्र ने भी कपड़े बदले।

अब ट्रेन जमना पुल को पार कर रही थी अभीष्ट स्थान आया जान और यात्रियों की तरह कुशाग्र ने भी अपना बेग सम्हाला और नमस्ते करने वाला ही था कि अधेड़ा कह उठी—'बेटा आज तो हमारे ही घर चलो। मैं तो आजीवन तुम्हारा अहसान न भूलूंगी।' कुशाग्र इनकार न कर सका। गाड़ी रुकी, चारों ओर कुली चाहिये २ की आवाज गूंज रही थी। श्रीमान राजेन्द्र प्रसाद अपने तीनों नौकरों के साथ अपनी पुत्री और पत्नी को लेने आये थे। कुशाग्र को देख उन्हें आश्चर्य हुआ। कुशाग्र ने ज्योंही बेग उठाना चाहा— युवती ने कहा—'रहने दीजिये। नौकर उठा लेगा। सामान स्टेशन से बाहर आ गया। सामने कार खड़ी थी। सामान लदवाया गया। अब कलैक्टर साहब अपने आप को न रोक सके और उन्होंने अपनी पत्नी से प्रश्न कर ही डाला।' यह महोदय कौन हैं?' 'मेरे जीवन रक्षक' युवती बीच में ही बोल पड़ी। अधेड़ा न घर पर पूर्ण विवरण कहने का इशारा किया थोड़ी देर में साहब का भव्य भवन दृष्टिगोचर हुआ। और वहीं कार खड़ी हुई। नौकर सामान लेकर चल पड़े। आओ ज्योत्स्ना इन्हें गैस्ट रूम में ठहरा आओ।' कलैक्टर साहब ने कुशाग्र की ओर इशारा करते हुए पुत्री को आदेश दे डाला।

कुशाग्र मेहमान गृह में ठहरा हुआ था। उसका हृदय आन्दोलित हो रहा था। — वह सोच रहा था अपने उज्ज्वल भविष्य के वैभव-पूर्ण जीवन— नहीं वैभव पूर्ण नहीं अपितु जीवन-रस पूर्ण भविष्य को।

अचानक ही कमरे की निस्तब्धता भंग करती हुई ज्योत्स्ना ने नाश्ता लिए नौकर के साथ प्रवेश किया।

'नाश्ता कीजिए आप'। ज्योत्स्ना ने अतिशय प्रेम प्रदर्शित करते हुए कहा।

नौकर चला गया था।

'इतने से ही उऋण न होगी, ज्योत्स्ना' आज कुशाग्र ने मन को हलका कर पाया। "इसके लिए कुछ और देना पड़ेगा?" कुशाग्र ने प्रश्न सूचक ढंग से वाक्य समाप्त किया।

'वह तो प्रथम ही दे चुकी। अब मेरे पास कहां है।' ज्योत्स्ना कहती हुई भाग गई।

रात्रि हुई। कुशाग्र को खाना खिला उसके सोने की पूर्ण व्यवस्था कर कलैक्टर साहब ने अपनी पत्नी के कमरे में प्रवेश किया। कमरा कुशाग्र के बराबर था। वह सब सुन रहा था।

'यह युवक कौन है?' बाबूजी ने प्रश्न किया। प्रश्न के साथ ही पत्नी की आँखें डबडबा आईं और उन्हीं आँखों से वह स्पष्ट करते हुए —"इस निरालम्ब युवक को मैं अपना पारिवारिक-प्राणी ही बनाना चाहती हूं।' आदि से अन्त तक घटना को पूर्ण किया। 'यह युवक आई सी. एस. का उम्मीदवार है।'

'अरे इनका इन्टर व्यू तो मैं ही कल ले रहा हूं —युवक वास्तव में कुशाग्र-बुद्धि है। मेरा दिल तो चाहता है कि ज्योत्स्ना को इसे ही सौंप कर दोनों का जीवन सुख-मय किया जाय।' पत्नी ने अनुमति सूचक सिर हिला दिया।

सर्वत्र मौनता का साम्राज्य है! पर कुशाग्र को अब भी नींद नहीं। कल उसकी अग्नि परीक्षा थी।

सुबह हुआ। कुशाग्र उठा और शौच आदि से निवृत्त हो जाने को तत्पर हो कलेक्टर से आज्ञा मांगने पहुँचा। कलैक्टर साहब ने कहा—"अब तुम मेरे हो। मैं ज्योत्स्ना को तुम्हें ही सौंपना चाहता हूं। वाक्य समाप्त होने भी न पाया था—कुशाग्र गद्गद् हो कलेक्टर साहब के पैरों पर गिर पड़ा। वह रो पड़ा।

'छि पगले। रोते क्यों हो।" कलैक्टर साहब ने कहा। आज कुशाग्र के जीवन का उषाकाल था और 'जीवन-रस' का प्रथम घूंट ·····

सुन्दर ऐतिहासिक विवेचन

सुरंगें और उनका निर्माण

★ डा० कृष्णकुमार पी० एच० डी

मनुष्य बहुत प्राचीन काल से सुरंगों से परिचित है। चूहे, दीमक और चींटों के निवास स्थान जब से उसने देखे, तभी से सुरंग को उपयोगिता समझ कर उसके निर्माण की ओर मानव की प्रवृत्ति होना स्वाभाविक था। जहां तक इतिहास से पता चलता है गोपनीयता और सुरक्षा के उद्देश्य से ही मनुष्य ने सुरंगों का निर्माण किया और सहस्रों वर्षों तक वह इसी उद्देश्य के लिए इनका उपयोग करता रहा। इंगलैण्ड के पाषाण युग में वहां के निवासियों ने बारहसिंगों के सींग से पृथ्वी को खोद-खोद कर बहुत सी सुरंगें इस लिए बनाई थीं कि वे अपने पत्थर के शस्त्रों के उनमें छिपाकर रख सकें। मिश्र के राजा अपनी समाधि (कबर) पहाड़ियों के नीचे सुरंगें खोद कर अपने जीवन काल में ही बनवा लेते थे। कहते हैं कि पाण्डवों को नष्ट करने के लिए दुर्योधन ने लाक्षागृह का निर्माण किया था और उस तक एक गुप्त सुरंग भी बनवाई थी। चाणक्य के समय शत्रु को नष्ट करने के लिए उसके निवास-स्थान तक पृथ्वी के भीतर ही भीतर सुरंग बनाने की बात कई ग्रन्थों में पाई जाती है। मुसलमानों के शासन काल में भी अनेक सुरंगों का निर्माण भारतवर्ष में हुआ। दिल्ली से आगरे तक और लाल किले से जुमा मस्जिद तक मुसलमानों की बनवाई सुरंगें अब भी विद्यमान हैं। दिल्ली से आगरे तक की सुरंग का इतना व्यास है कि उसमें दो अश्वारोही साथ-साथ जा सकते हैं। लखनऊ में भी कई सुरंगें होने की बात सुनी जाती है। किन्तु इन सब सुरंगों का उपयोग सुरक्षा या गुप्त आवागमन के लिए ही होता था।

सर्व-साधारण के यातायात की सुविधा के लिए सब से पहले सुरंग का उपयोग रोमन काल में हुआ। योरोप के जिन जिन देशों में रोमन गए, वहां उन्होंने सड़कों और पुलों के साथ सुरंगों का भी निर्माण किया। स्विटजरलैंड में पृथ्वी के अन्दर पानी के नल बिछाने, पर्वतों में मार्ग बनाने और पानी के निकास के लिए अनेक प्रकार की सुरंगें रोमन लोगों ने बनवाई थीं।

२००० वर्ष पूर्व

देपिनाइन पर्वतमाला के सैल्विनो नामक पर्वत में अब से २००० वर्ष पूर्व रोमन काल में ३॥ कोसक लम्बी, १० पाद चौड़ी और ६ पाद ऊंची सुरंग फूसीनो झील के पानी के निकास के लिए खोदी गई थी। तीस सहस्र श्रमिक ११ वर्ष तक निरन्तर कार्य करते रहे थे। इस में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर चालीस कूपक ऊपर से सुरंग की तली तक बनाए गए थे; इन कुओं में कई चार सौ पाद तक गहरे थे। इन्हीं पर गिर्री लगाकर रस्सों और टोकरियों की सहायता से टूटा हुआ कंकड़ पत्थर बाहर निकाला जाता था। अभिनव वायु के पहुंचने में भी इन कुओं से सहायता मिलती थी। सुरंग सीधी रखने के लिए भी इन कुओं की आवश्यकता होती है। इन्हीं की सोध में सुरंग खोदते चले जाते हैं। सुरंग बनाने के लिए ये कुए कितने आवश्यक हैं इसका अनुमान हम इसी से कर सकते हैं कि आज इस विज्ञान के युग में भी सुरंग खोदने के लिए इन कुओं की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी रोमन काल में आज से २००० वर्ष पूर्व थी। आज सुरंगें खोदने में जितनी कठिनाइयां आती हैं रोमन काल में भी उतनी ही आती थीं। बेचारे श्रमिक मोमबत्ती के प्रकाश में छेनी और हथोड़े से एक एक अंगुल कर के चट्टानें तोड़ते थे। कहीं कहीं शिलाओं को पहले गर्म किया जाता और फिर तुरन्त उस पर ठण्डा जल डाल देते थे। इससे भी वे टूट जातीं या फट जाती थीं। किन्तु सबसे बड़ी कठिनाई तो यह थी कि कभी-कभी सुरंग की पूरी छत बैठ जाती थी और श्रमिक बेचारे उसी के नीचे दब कर मर जाते थे; कभी ठंडे या गर्म जल के सोते फूट पड़ते थे और सारी सुरंग को पानी से भर कर काम करने वालों को डुबा देते थे। कभी विषैली वातियां निकल पड़ती थीं और कार्य-कर्ता प्राण घुट कर मर जाते थे। किन्तु आज विज्ञान ने ऐसी कठिनाइयों के लिए उपाय निकाल लिए हैं जिनकी सहायता से कार्य की गति भी बढ़ गई है और वैसी दुर्घटनाएं भी अब नहीं होतीं।

कठफोड़े से शिक्षा

पहले थोड़ी थोड़ी सुरंग खोदते थे और छत के नीचे बल्लियों की टेकन लगाकर आगे बढ़ते थे। १६ वीं शताब्दि के आरम्भ में ब्रुनल नामक एक अंग्रेज अभियंता ने कूपक गला गला कर टेम्स नदी के नीचे एक सुरंग बनाने का प्रयत्न किया। अभी वह ११०० पाद तक ही खुद पाई थी कि मृदु मिट्टी सुरंग में बैठ गई। पांच वर्ष परिश्रम के पश्चात कार्य बन्द कर देना पड़ा। ब्रुनल फिर भी सोचता रहा। उसके मस्तिष्क से भी इस सुरंग की चिन्ता दूर न हुई। एक दिन अचानक एक कठफोड़े घुन को लकड़ी में छिद्र करते उसने देखा। घुन के ऊपर एक कड़ा आवरण चढ़ा था जिसे घुमा-घुमा कर वह लकड़ी में छिद्र करता था और लकड़ी के बुरादे को अपने और उस आवरण के बीच के मार्ग से पीछे की ओर बाहर निकालता जाता था। ब्रुनल को अपने नवीन यन्त्र का मार्ग मिल गया। उसने इसी आधार पर लोहेकी सुदृढ़ चादरके लम्बे गोल २२ ढोल परस्पर मिलाकर एक लम्बी नाल बनाई और इसका नाम 'शील्ड' रखकर १८१८ में इसका एकस्वकरण (पेटेन्ट) करा लिया। ये ढोल २२ पाद ऊंचे और ३ पाद लम्बे थे। इसमें ३६ कोष्ट थे। सबसे आगे के कोष्ठ में खड़े होकर श्रमिक खोदने या चट्टान तोड़ने का काम करते थे। एक गज तक काट लेने पर यह ढोल आगे सरका दिया जाता था और पीछे छुटे हुए स्थान में पक्की ईंटों की चिनाई कर दी जाती थी। इतना बड़ा छिद्र करके उसे दो भागों में विभाजित करने से सुरंगें एक साथ निष्पन्न हो जाती हैं। इस प्रकार छत बैठ जाने से सुरंग के नष्ट होने और श्रमिकों के प्राण जाने का भय दूर हो गया।

किन्तु इसमें एक कमी अब भी खटकती थी। रेत और जल की धारा को रोकने का इसमें कोई प्रबन्ध नहीं था। इस कमी को जेम्स ग्रीट हेड ने इसमें संकुचित वायु का उपयोग करके दूर किया। इस सुधार से यह यन्त्र बहुत उपयोगी हो गया। इससे सुरंग के सामने की भित्ति पर वायु निपीड(दबाव)२०० प्रवर्त पड़ता है। इस प्रबल निपीड के कारण जल या रेत सुरंग में नहीं आ सकते। किन्तु वायु के इस निपीड में मनुष्य का अधिक देरी तक कार्य करना सम्भव नहीं। इसीलिए इस यन्त्र के बाहर कोष्ठों में प्रत्येक कोष्ठ के द्वार के पास एक कोठरी रहती है जिसका वायु निपीड इच्छानुसार घटाया और बढ़ाया जा सकता है। श्रमिक को कार्य पर जाने से पूर्व पहले इसमें कुछ समय बैठकर और कोठरी के वायु निपीड को शनैः-शनैः बढ़ाकर अपने फेफड़ों को कोठरी से बाहर के वायु निपीड के लिए अभ्यस्त बनाना पड़ता है। तब कहीं वह काम करने योग्य होता है। इतने पर भी श्रमिक अधिक समय तक कार्य नहीं कर सकते। यदि वायु निपीड प्रतिवर्ग प्रांजलि हो तो काम २४ घंटों में ६ घण्टे और वह भी ३-३ घंटे के क्रम से दो बार में कर सकते हैं और बीच में एक घण्टा विश्राम करते हैं। ४२ प्रांजलि वायु निपीड हो तो केवल दो घंटे काम कर सकते हैं, वह भी एक एक घण्टा करके, बीच में ४ घंटे विश्राम करना पड़ता है। निपीड ५० होने पर केवल १॥ घंटा ही कार्य कर पाते हैं, वह भी ४५ ४५ कला करके और बीच में ५ घण्टे विश्राम लेकर काम करके बाहर निकलते समय भी श्रमिकों को उक्त कोठरी में कुछ देरी तक रहना पड़ता है, क्योंकि इतने अधिक वायु निपीड के अभ्यस्त फेफड़ों को बाहर की खुली हवा के योग्य बनाना आवश्यक होता है।

किन्तु पहाड़ों की सुदृढ़ चट्टानों को काट कर जो सुरंगें बनाई जाती हैं उनमें यह यन्त्र विशेष काम नहीं आता। इसका उपयोग तो पृथ्वी के अन्दर ही अधिकतर किया जा सकता है। जहां मृदु मिट्टी और रेत होता है वहीं पर यह विशेष उपयोगी सिद्ध होता है।

(आगामी अंक में समाप्त)

मालव की नृत्य-कला

★ श्री 'अनूप'

लोक कलाओं में सबसे रसवती कला है—नृत्य कला। इसीलिये हर प्रांत में अन्य कलाओं की अपेक्षा नृत्य-कला अधिक विकसित हुई है। मालवी जनता के दिलों में पहले नृत्य के प्रति हीन भावना थी और नृत्य हेय दृष्टि से देखा जाता था। मालवी बोली में इसी भाव की एक कहावत भी प्रचलित थी कि "नाचन लगी तो घूंघट काहको" मतलब जब स्त्री नाचने जैसा हीन कर्म कर सकती है तो फिर घूंघट की लाज की क्या जरूरत। पर धीरे-धीरे नृत्य के प्रति जनता की यह भावना लुप्त होती गई और आगे चल कर मालवा में यह कला इतनी विकसित हुई कि नाच की स्टेज पर "जरा ढोलक वाल फड़क के" से लेकर हर प्रकार के छोटे मोटे उत्सव, पर्व, त्यौहार पर नृत्य ने अपना स्थान बना लिया। मालवे में नृत्य की प्रेरणा सन और बबूल के बीजों से मिली है। मालवे की लड़कियां सन के बीजों के बिछुवे बना कर "बिछुआ बोले छाम-छाम" कहती हुई थिरक उठती हैं।

लोक-कला के अध्ययन के लिये हमें लोक-जीवन की पृष्ठभूमि पर ध्यान देकर चलना होगा। मालवे की काली भूमि सोना उगलती है, इसीलिये मालवी जन को जीविकोपार्जन के हेतु कड़ा परिश्रम नहीं करना पड़ता और खाने कमाने की ओर से वह निश्चिन्त रहता है। तो बेफिकरी में आदमी को मस्ती सूझती ही है, और पृथ्वी पुत्र की यह मस्ती लोक-कला का रूप धारण कर लेती है।

मालवे की नृत्य-कला पर राजस्थानी नृत्य-कला की छाप है। राजस्थान मालवा की सीमा से जुड़ा हुआ है और फिर समय समय पर राजस्थान की दुर्भिक्ष ग्रस्त नाचने-गाने वाली जातियां मालवा के ग्रामों में घूमती-फिरती, नाच-गा कर, कठपुतलियों के नाच का प्रदर्शन कर खाती-कमाती रही हैं। इससे राजस्थानी कला और मालवी कला का विनिमय हुआ। "कला का यह विनिमय सदा से होता आया है, एक प्रांत का दूसरे प्रांत से, दूसरे का तीसरे-चौथेसे। इसीलिये श्री सत्यार्थी जी ने एक स्थान पर लिखा है कि "कला लोक प्रांतीय अथवा एक देशीय न होकर सदा विश्वव्यापी वस्तु के रूप में जीवित रहती है।"

हां, तो मालवे का अपना नृत्य है मटकी को नाच। वैसे मालवा में कई प्रकार के नृत्य प्रचलित हैं जैसे—'नृत्यद्वय' 'आड़ोनाच,' 'घूमर' होली के नृत्य, मांच के नृत्य, गर्बा नृत्य। मालवे में भील-बस्तियां (वनवासी क्षेत्र) भी हैं। अतः उनके नृत्यों की एक झलक यहां दे देना असंगत न होगा। भीलों के अधिकांश नृत्यों में स्त्री पुरुष दोनों समान रूप से भाग लेते हैं। यहां स्त्री पुरुषों के सामीप्य की यह संस्कृति इस देश की आदि निवासी जातियों में आज तक स्थिर है। "ग्रामों में सर्वत्र स्त्री और पुरुषों की स्वाभाविक आत्मीयता की भूमि पर लोक-कला का विकास हुआ है।" भील-नृत्य में स्त्री और पुरुष पंक्ति में आमने-सामने खड़े हो जाते हैं और फिर नृत्य-गान गाते हुए नृत्य की तरंग में झूम उठते हैं। भीलों का दूसरा नृत्य मालवा के घूमर की तरह है, जिसमें भील-भीलनियां संयुक्त रूप से घेरा बना कर नाचती हैं। भीलों के एक नृत्य में पुरुष हाथों में ढाल तलवार आदि हथियार लेकर नाचते हैं। यह नृत्य देवी-देवताओं की स्तुति में किया जाता है।

मालवे में अष्टद्या खेलना भी नृत्य कला के अंतर्गत लिया जा सकता है। पुरुष घेरा बना कर कई प्रकार से एक दूसरे के डंडे बजाते हुए नाचते हैं।

मटकी नाच—मटकी नृत्य को मालवे में खड़ो नाच भी कहते हैं। इस नृत्य में स्त्री को कमर से नीचे तक नहीं झुकना पड़ता, केवल अंगों को मोड़ कर ही नाचना होता है।

'नृत्य द्वय'—इसमें दो स्त्रियां एक साथ एक ही भूमिका में नाचती हैं। नृत्य द्वय नृत्यगीतों के अध्ययन से ऐसा ज्ञात होता है कि दोनों स्त्री पात्रों के स्थान पर पहिले एक पुरुष और एक स्त्री अभिनय करते होंगे, पर आज नवीन सभ्यता के गर्द गुबार में वह प्रथा दब सी गई और पुरुष पात्र का स्थान स्त्री ने ले लिया।

आड़ो नाच—इस नृत्य में स्त्री को कमर से नीचे तक झुक कर ही नाचना पड़ता है।

उपर्युक्त नृत्य पूजा, पर्व, उत्सव, 'फूल पाती,' विवाह आदि अवसरों पर किये जाते हैं।

'घूमर'—यह पुरुषों का नृत्य है। होली अथवा फसल पकने पर यह नृत्य किया जाता है। इसमें पुरुष और स्त्री (अब स्त्री पात्र पुरुष ही बनते हैं) घेरा बना कर नाचते हैं। होली के पर्व पर पुरुष एक हाथ में दुपट्टा और दूसरे में छतरी लेकर भी नाचते हैं। होली के एक नृत्य में पुरुष स्त्री का वेष बनाकर नाचते हैं। दर्शक चारों तरफ घेरा बना खड़े हो जाते हैं। नाच बंद हो जाने पर एक दर्शक घेरे में जाकर 'छल्ला' कहता है और 'छल्ला बोल्यो रे' के साथ नाच शुरू हो जाता है। इस प्रकार यह क्रम चलता रहता है।

मांच के नाच—मांच या ग्राम्य नाट्य के कथा प्रवाह के प्रदर्शन के साथ नाच भी होते हैं। अधिकांश नाच शृंगार प्रधान हैं और उनमें कई जगह अश्लीलता भी आ गई है, परन्तु कला की दृष्टि से ये बेजोड़ हैं।

गर्बा नृत्य—गर्बा नृत्य का नाम सुनते ही आप गुजरात के गर्बा नृत्य की कल्पना न कीजिये। मालवा में गर्बा स्टेज पर होता है और पुरुष स्त्री का वेष बना कर नाचते हैं। इसके गीतों और नृत्यों में खेतों खलिहानों की छाप नहीं होती। इसके नृत्य तथा गीत फिल्मी होते हैं। गीतों की जगह गजलों ने ले ली है।

उरांव में जिस तरह नृत्य का संचालन मृदंग पर होता है उसी तरह मालवे का नृत्य वाद्य है ढोल। युवक कीमटी से ढोल की ताल पर थाप दिये जाता है और मालव रमणी लचक लचक के साथ थिरकने लगती है मालवे में ढोल की अपनी महत्त है। इसकी गति और लय भी अलग ही है और प्रत्येक नृत्य के लिए अलग लय। ढोल की नृत्य-लय सुनकर राह चलते आदमी के पैर भी काबू की तरह उठने लगते हैं, और हां आप चौपाल पर बैठे किसी भी युवक से पूछ देखिये कि इस समय कौन सा नृत्य हो रहा है? तो वह आपको ढोल के बोल सुन कर बता देगा कि इस समय अमुक नृत्य हो रहा है। मालवा में नेपाल की तरह 'रोडी घर या नृत्य-शालाएं' नहीं फिर गांव की हर रमणी नाचना गाना जानती है और ढोल की ताल पर अपने अंगों को मोड़ सकती है जैसे लचक और लचक की बात दूसरी है, किसी में कम और किसी में ज्यादा। मालवी स्त्रियां नाचते समय घूंघट काढ़ लेती हैं। कारण पूछने पर जवाब मिला कि घूंघट इसलिए काढ लेती हैं कि कहीं नाचते समय हंसी न आ जाय और फिर मैंने भी सोच लिया कि 'लोक-कला में स्त्री को अपना रूप विज्ञापित करने को बाध्य नहीं किया जाता।'

सत्यान्वेषी नचिकेता

श्री अवध कुमार गुप्त

[आज से सहस्त्रों वर्ष पूर्व महर्षि वाजश्रवा ने विश्वजित यज्ञ किया। यज्ञ के अन्तिम दिन उनका पुत्र नचिकेता तथा उनका बाल सखा बातें कर रहे हैं।]

नचिकेता—सखा ! आज मेरा मन व्याकुल हो रहा है अनेकों अपशकुन हो रहे हैं। न जाने आज क्या विपत्ति आने वाली है।

सखा—नचिकेता, आज तो तुम्हें प्रसन्न होना चाहिये। आज तो तुम्हारे पिता के यज्ञ की समाप्ति है।

नचिकेता—यही तो मैं सोच रहा हूं कि आज शुभ दिन के समय अपशकुन कैसे।

सखा—नचिकेता, तुम एक ऋषी के पुत्र हो ! ब्रह्मचारी तथा निडर हो, तुम्हें इन अपशकुनों से नहीं डरना चाहिये।

नचिकेता—नहीं मैं इनसे डरता नहीं हूं, परन्तु यह अवश्य जानना चाहता हूं कि ये विपत्ति किस रूप में आवेगी।

सखा—यह तो भविष्य बतलावेगा। चलो आज तुम्हारे पिता ऋत्विजों को दक्षिणा देंगे, चलो चल कर देखें।

[दोनों चल कर वहां आते हैं, जहां नचिकेता के पिता वाजश्रवा दक्षिणा दे रहे हैं।]

सखा—देख रहे हो नचिकेता तुम्हारे पिता दुबली, पतली गायों को दक्षिणा के रूप में दे रहे हैं।

नचिकेता—(सोच में) देख रहा हूं।

सखा—और तुम यह भी जानते हो कि इनको (गायों को) दक्षिणा के रूप में नहीं देना चाहिये था।

नचिकेता—यह भी जानता हूं।

सखा—तुम पिताजी को समझा सकते हो। इन मूक पशुओं की पुकार, क्या तुम्हारे पिता के हृदय को नहीं पिघला सकती।

नचिकेता—(सांस भर कर) तुम उनके क्रोध को नहीं जानते। उनका एक ही शाप मृत्यु से भी बढ कर है। फिर भी मैं पिताजी से अवश्य इसका उत्तर पूछूंगा।

नचिकेता अपने पिता के पास पहुंचता है।

नचिकेता—पिताजी आप मुझे किसे देंगे ?

[पिता ने इस पर कान नहीं दिया] पिताजी आप मुझे किसे देंगे ?

वाजश्रवा—तुम्हारे इस प्रश्न का तात्पर्य क्या है ?

नचिकेता—मेरा अभिप्राय इन मूक पशुओं की दशा से है। क्या इनकी सेवा करना हमारा कर्त्तव्य नहीं था ?

वाजश्रवा—(क्रोध से) ये मेरी सम्पत्ति है। इनको दान में देना मेरा हक है।

नचिकेता—ये आपकी सम्पत्ति अवश्य है, परन्तु इस निरीह दशा में ये रक्षा के पात्र हैं।

वाजश्रवा—पर मेरी सम्पत्ति, जो चाहे करूं।

नचिकेता—मैं भी आपकी सम्पत्ति हूं, बताओ मुझे आप किस को देंगे।

वाजश्रवा—(क्रोध से) मैं तुम्हें यमराज को दूंगा।

[नचिकेता एकान्त में]

नचिकेता—(सोच में) मुझे पिताजी यमराज को देंगे। पर क्यों मैंने कौन सा अपराध किया है, मैंने आज तक कोई भूल नहीं की। और एक दिन मरना तो निश्चित है, प्राणों का शरीर धारण कर यम से क्या ,भय। कभी न कभी तो उस द्वार को खटखटाना पड़ेगा। तब आज ही क्यों न चलूं पिताजी की आज्ञा का भरपूर पालन होगा।

[यमपुरी में !]

नचिकेता को तीन दिन तक यमराज की प्रतीक्षा करनी पड़ी। चौथे दिन यमराज का आगमन हुआ।

यमराज—ब्रह्मचारिन् ! इस असमय में आपके आने का कारण।

नचिकेता—भगवन् ! पिता की आज्ञा ने मुझे यहां आने तक विवश किया।

यमराज—आपके इस आज्ञा पालन से मैं प्रसन्न हुआ। तुमने तीन दिन तक मेरी प्रीतक्षा की। अतः कोई भी तीन वर मांग लो।

नचिकेता—यदि आप मेरे से प्रसन्न हैं, तो मुझे ऐसा वरदान दीजिये जिससे मेरे पिता का क्रोध शान्त हो जाय।

यमराज—तथास्तु ! दूसरा वर मांगो।

नचिकेता—मुझे उस अग्निविद्या को बताइये जिसके श्रवणमात्र से ही प्राणी के सब कष्ट दूर हो जाते हैं।

यमराज—तथास्तु ! तीसरा वर मांगो।

नचिकेता—इस शरीर से प्राणों के निकलने के बाद कोई ऐसी वस्तु है, जो सोम अमर है। आप मृत्यु के देवता हैं आपके सिवा कोई इस प्रश्न को नहीं सुलझा सकता।

यमराज—नचिकेता इस प्रश्न को न पूछो। तुम और जो कुछ चाहो ले लो परन्तु ये न पूछो।

नचिकेता—प्रभो यदि आप मेरे से प्रसन्न हैं तो मुझे इस प्रश्न का उत्तर अवश्य बताइये। मुझे और कुछ न चाहिये।

यमराज—तुम्हारे इस दृढ़ निश्चय से मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूं। तो लो सुनो ! मृत्यु के बाद अमर रहने वाली वस्तु का नाम है आत्मा।

नचिकेता—मेरा सत्याग्रह आज आपकी कृपा से सफल हुआ है प्रभो। मैं आपकी दया कभी नहीं भूल सकता।

एक जनवरी की कहानी

१ जनवरी ईस्वी सन् का प्रथम दिवस है। अतः आज के दिन आधुनिक युग में सर्वाधिक व्यापक रूप से मान्य इस्वी सन् के नये वर्ष की गणना प्रारम्भ होती है।

ईस्वी सन् का मूल रोमन संवत है। पहिले यूनान में ओलम्पियाद् संवत् था, जिसमें ३६० दिन का वर्ष माना जाता था। रोम नगर की प्रतिष्ठा के दिन से इसका श्रीगणेश हुआ तथा इसीलिए रोमन संवत कहलाया। ईस्वी सन् की गणना ईसामसीह के जन्म के ६ दिन बाद से प्रारम्भ होती है। रोमन सम्राट जूलियस सीजर ने रोमन सवत् की दिन संख्या में संशोधन करके ३६० के बदले उसे ३६५ १/४ दिन का कर दिया। इसके बाद ६वीं शताब्दी में पुन रोमन संवत् में डायोनिसियस द्वारा संशोधन किया गया, किन्तु फिर भी उसकी दिन संख्या में प्रतिवर्ष ज्योतिष की काल गणना के अनुसार २७ पल ५५ विपल का अन्तर पड़ता ही रहा। सन् १७३६ में जब पल विपल का अन्तर बढ़ते-बढ़ते ११ दिन हो गया तो पाश्चात्य संसार में इसके संशोधन की तीव्र आवश्यकता महसूस की गई और अंत में पोप ग्रेगरीको ने आज्ञा निकाली कि 'इस वर्ष २ सितम्बर के पश्चात् ३ सितम्बर को १४ सितम्बर कहा जायगा।" इतनी ही आज्ञा पर्याप्त नहीं थी तथा आगे चल कर पुनः काल-गणना में भेद पैदा होता, अतः सोच विचार के बाद इस आज्ञा के साथ यह आज्ञा भी जारी की गई कि वर्ष गणना में पल विपल में फिर से आगे चल कर काल गणना पीछे न पड़ने देने के लिए जो ईस्वी सन् ४ की संख्या से विभाजित हो उसमें फरवरी माह में २६ दिनों की गणना कर हर साल पल विपल की गणना में पैदा होने वाले फर्क को हर चौथे वर्ष दुरुस्त कर लिया जाय। इसी अवसर पर वर्ष का प्रारम्भ सबसे पहली बार २५ मार्च से हटा कर १ जनवरी कर दिया गया तथा तभी से १ जनवरी अंग्रेजी कलैंडर का प्रथम दिवस बना हुआ है। यद्यपि अनेक जगह वर्षों का आरम्भ १ अप्रैल आदि स्थानीय तिथियों से भी होता है। इटली, डेनमार्क, हालैंड ने काल गणना में पोप का यह संशोधन उसी वर्ष स्वीकृत कर लिया तथा अन्य देशों में इस आदेश को सर्वमान्य करने में प्रयत्न जारी रहे तथा जर्मनी और स्वीजरलैंड ने सन् १७५६ में, इंग्लैंड ने १८३६ में और फ्रांस ने १८५६ जनवरी में इसे स्वीकार किया।

बिल्ली

[श्री 'सौमित्र']

देखो भैया बिल्ली आई
मुंह में अपने चूहा लाई॥
चूहे का है इसका खाना।
देख आदमी होय रवाना॥
तोता इससे अति डरता है।
चूहा इसे देख मरता है॥
कभी कभी मिल जाता दूध।
जिसे देख खुश होती खूब॥
खूब मजे से उसको पीती।
चूहों को खाकर ही जीती॥

—★—

बच्चे तमाशे न देखें

उत्तर प्रदेशीय विधान सभा में विरोधी दल के एक सदस्य मियां अख्तर मुहम्मद खां ने इस आशय का प्रस्ताव उपस्थित करने की सूचना दी है कि १२ वर्ष से कम उम्र के बालक-बालिकाओं को सिनेमा देखने से विरत रखा जाय। प्रस्ताव पर सम्भवत. ११ जनवरी को विचार होगा।

कल के भारतीय प्रदेश में

[पृष्ठ ६ का शेष]

होता है कि मुस्लिम लीग के कायदे आजम के मार्ग से हट जाने के कारण ही उसकी स्थापना हुई है। ममदोत के अतिरिक्त प्रभावशाली व्यक्ति मुमताज दौलताना, व इफ्तिखारुद्दीन हैं। मलिक खिज्र हयात खां तिवाना के विषय में भी समाचार मिले हैं। तिवाना संयुक्त पंजाब का मुख्य मंत्री रह चुका है और अभी भी पंजाब में उसका भारी प्रभाव है। इसके अतिरिक्त पाकिस्तानी कम्यूनिस्ट दल ने भी चुनाव लड़ना तय किया है। मियां सुहरावर्दी की अवामी लीग भी जोर लगा रही है और उसे बिना बसे हुए अथवा ठीक ढंग से न बसे हुए लोगों का समर्थन प्राप्त है।

लन्दन में होने वाले प्रधान मंत्री सम्मेलन में काश्मीर का प्रश्न सम्मिलित न किए जाने के कारण मियां लियाकत अली ने अपना लन्दन जाना स्थगित कर दिया है। पाकिस्तान चाहता है कि अलग हटने तथा रूसी गुट में मिलने की धमकी देकर वह अन्य राष्ट्रों को भारत पर दबाव डालने के लिए बाध्य करदे। इस दृष्टि से वह आज की अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का पूरा पूरा लाभ उठाकर अपना उल्लू सीधा करना चाहता है।

किन्तु यदि लियाकत अली खां इस समस्या का अन्त सचमुच में ही चाहते हैं तो समझ में नहीं आता कि उन्हें कौन रोक रहा है। डिक्सन ने अपनी रिपोर्ट में यह स्पष्ट कह दिया है कि काश्मीर के मामले में पाकिस्तान अपराधी है और उसने अन्तर्राष्ट्रीय नियम को भंग किया है। किन्तु पाकिस्तान ने इस बात पर डिक्सन को खूब गालियां दी थीं। वास्तविकता यह है कि श्री लियाकत अली जिस प्रकार भी हो काश्मीर को हड़पना चाहता है। उनके सम्मुख न्याय का प्रश्न नहीं, और निकृष्ट स्वार्थ का प्रश्न है।

———

(पृष्ठ १० का शेष)

सरदार के शुभ्र खादी वस्त्रों से सभी परिचित हैं। पर बहुत कम लोग यह जानते होंगे कि सन् १९३२ के बाद सरदार ने जो भी वस्त्र पहने थे, सब मणिबेन के काते सूत के थे।

सरदार कठोर अनुशासन के पाबन्द थे। प्रतिदिन वे चार बजे उठते थे। मणिबेन तीन ही बजे उठती थीं और वहां चोकर तीस मिनट नियमित रूप से सूत कातती थी।

स्नान, खानपान, भेंट मुलाकातें, पत्र व्यवहार आदि सरदार के सभी कार्यों में मणिबेन के प्रबंधक हाथ उनकी सहायता करते थे।

मणिबेन ने कठोर संन्यासिनी के से नियम पाले हैं। अपने शरीर की सजावट की ओर उन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया। फिर भी, १ औरंगजेबरोड के भवन का प्रत्येक कमरा मणिबेन की कलाकारिता का प्रत्यक्ष प्रमाण दे रहा है।

लुटे जीवन की अवलम्ब-रेखा 'जीवनी'

सरदार के जीवन के विषय में जितना विषद ज्ञान मणिबेन को प्राप्त है, उतना किसी और को नहीं। अपने महान् पिता एवं इतिहास के प्रति मणिबेन का कर्तव्य है कि वह अपने इस ज्ञान से संसार को लाभ पहुँचायें। यदि वे सरदार की जीवनी लिखें तो उससे जहां साहित्य और इतिहास को एक अमूल्य निधि प्राप्त होगी, वहां उस ममता मयी पुत्री का भी संतप्त मन शान्ति प्राप्त कर सकेगा।

———

जेमिनी की
मंगला
१० वां संयुक्त सप्ताह
रिट्ज़ तथा खन्ना में
अत्यन्त मनोरंजक तथा उत्तेजक चित्र

हमारी अध्ययनरुचि बदल रही है!

बम्बई के पुस्तक प्रकाशकों का कहना है कि भारतीय जनता के विद्या-व्यसन मे युद्ध के बाद से बड़ा अन्तर पड़ गया है। लोगों की अध्ययन की अभिरुचि बहुत बदल गई है। युद्ध के बाद से लोगों ने उपन्यास, साहित्य और कविता के अध्ययन में पहले से बहुत कम रुचि दिखाई है और वैज्ञानिक तथा टैकनिकल पुस्तकों के अध्ययन की ओर उसका रुझान बहुत बढ गया है।

रोमांचकारी या सामाजिक उपन्यासों, नाटकों, कला व साहित्य की पुस्तकों की बिक्री बहुत तेजी से घटी है, जबकि विज्ञान और टैकनोलाजी की पुस्तकें हाथों हाथ बिक जाती हैं। उपन्यासों की बिक्री के घटने का कारण, जो स्वाधीनता प्राप्ति के बाद खास तौर से घटी है, यूरोपीय लोगों का भारत से विदा हो जाना है।

विदेशी पत्रिकाओ के एक बड़े विक्रेता का कहना है कि युद्ध के बाद से भारत में विदेशी पत्रिकाओं की मांग बहुत बढ गई है। चीन, तिब्बत और नेपाल की घटनाओं के बाद से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, विशेषकर इन देशों के इतिहास व राजनीति की पुस्तकों की बहुत बिक्री हो रही है।

गत दो-तीन वर्षों मे साम्यवादी साहित्य की मांग भी बहुत बढ़ी है। कुछ साम्यवादी साहित्य भारत में ही प्रकाशित हुआ, कुछ बाहर से मंगाया गया है। सोवियत पुस्तकें १९४२ से भारत में आने लगी हैं और उनमें से बहुतों का भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है।

फ्रांसीसी और जर्मन भाषाओं की पुस्तकों की बिक्री अब प्रायः जरा भी नहीं है, जबकि युद्ध से पर्व उनकी काफी मांग थी क्योंकि उस समय यूरोपीय लोगों की भारत में काफी संख्या थी।

व्यावहारिक मनोविज्ञान की पुस्तकों के भारत के सबसे बड़े प्रकाशक का कहना है कि गत कुछ वर्षों में इस विषय की पुस्तकों की मांग बहुत बढ़ी है। डेल कार्नेगी और नेपोलियन हिल सबसे अधिक लोकप्रिय लेखक हैं।

युद्ध समाप्त के बाद से धर्म और योग की पुस्तकों की भी लोकप्रियता बढ़ी है। शिक्षा-सम्बन्धी पुस्तकों के एक मुख्य प्रकाशक का कहना है कि प्राचीन साहित्य की पुस्तकों की मांग पर्याप्त होते हुए भी हाल में ही कुछ घट गई है। शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों में से भी अर्थशास्त्र की पुस्तकों की मांग सबसे अच्छी है, किन्तु इतिहास और जीवन का अध्ययन छात्रों ने एक तरह से छोड़ सा दिया। ब्रिटेन की चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकों की मांग बहुत है और विलायत से आते ही वे बिक जाती हैं।

ब्रिटेन से किताबों के आयात पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है और अमेरिका से भी टैकनीकल और शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों के आयात के लिए विशेष रूप से डालर दिये जाते हैं।

अंग्रेजी उपन्यासों में से, पीटर चेनी, सिडनी होर्लर और बर्कले ग्रे द्वारा रचित "कालिन्स क्रायम क्लब" के जासूसी उपन्यास सबसे अधिक बिकते हैं। डौनफोर्ड येट्स, अप्टन सिन्क्लेयर और टायलर काल्डवेल के उपन्यासों की भी खासी मांग है।

राजनीतिक पुस्तकों में से पं० नेहरू की पुस्तकें, विन्स्टन चर्चिल का "द्वितीय विश्वयुद्ध का इतिहास" और जान गुंथर की "रूजवल्ट इन रिट्रोस्पैक्ट" पुस्तक बहुत खपती हैं।

टैकनिकल विषयों की पुस्तकों के एक प्रमुख आयातकर्त्ता का कहना है कि सबसे अधिक मांग कृषि की पुस्तकों की है और दूसरा स्थान रेडियो व इलैक्ट्रिकल इंजिनियरिंग का और तीसरा मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पुस्तकों का है। इनके बाद अगला स्थान रसायन विज्ञान (कैमिस्ट्री) और कन्स्ट्रक्शन व बड़ी इंजीनियरिंग की पुस्तकों का है। इस आयातकर्त्ता का यह भी कहना है कि टैकनिकल पुस्तकों में ब्रिटेन की अपेक्षा अमेरिका की पुस्तकें ज्यादा पसन्द की जाती है।

विदेशी पत्रिकाओं के एक प्रमुख आयातकर्त्ता का कहना है कि अमरीकी पत्रिकायें ब्रिटिश पत्रिकाओं की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय हैं। लोकप्रियता की दृष्टि से प्रथम पांच स्थान पाने वाली पत्रिकायें अमरीकी ही हैं। इनमें से दो चालू विषयों की, दो विविध विषयों की तथा एक वैज्ञानिक विषयों की पुस्तक है।

साम्यवादी साहित्य के विक्रेता यद्यपि यह बताने के लिए तैयार नहीं हैं कि उनकी कितनी पुस्तकें बिकती हैं। फिर भी उनका कहना है कि उनके यहां सबसे ज्यादा मांग राजनीतिक पुस्तकों की और उसके बाद उपन्यासों की है। साम्यवादी राजनीतिक साहित्य में से भी सबसे अधिक मांग दो पुस्तकों की है। एक मास्को की मार्क्स-एंजिल्स लेनिन इन्स्टीट्यूट द्वारा प्रकाशित स्टालिन की जीवनी और दूसरी 'सोवियत् रूस की साम्यवादी पार्टी का इतिहास।' सोवियत उपन्यासों में से सबसे अधिक लोकप्रिय इल्या एरनबर्ग का उपन्यास "दि स्टौर्म" है। हाल में ही चीन से भी साम्यवादी साहित्य आने लगा है।

१९४९-५० में विदेशों से ७७००-००० रुपये की पुस्तकें व मुद्रित सामग्री भारत आई और ३८,००,००० रुपये की पुस्तकें भारत से विदेश भेजी गईं।

शान में सुरैया और रहमान

दो नये चित्र : 'मुकद्दर' और 'शान'

इस सप्ताह पुरानी और नई दिल्ली के सिनेमाघरों में दो नये चित्रों का प्रदर्शन आरम्भ हुआ। इसमें से एक बम्बई टाकीज कृत 'मुकद्दर' है और दूसरा कुलदीप पिक्चर्स कृत 'शान'।

'महल' और 'मशाल' जैसी कृतियों के निर्माता अशोक कुमार और एस० बाचा की नई कलाकृति 'मुकद्दर' का दिल्ली की जनता ने उनके पिछले चित्रों के समान ही स्वागत किया है। 'मुकद्दर' की भूमिका में— नलिनी जयवंत, जीवन, इफ्तिखार, सेम्पसन, किशोर, राधा कृष्ण और ईलीदे गोमिया आदि ने कार्य किया है। इसके गीत राजा मेंहदी अली खां भरत व्यास और ब्रजेन्द्र गौड़ के लिखे हैं और संगीत 'महल' कि ख्याति प्राप्त स्वर्गीय खेमचन्द प्रकाश और भोलानाथ ब ह का है। निर्देशन अरविन्द सेन ने किया है।

शान

कुलदीप पिक्चर्स की इस नयी कलाकृति में संगीत साम्राज्ञी सुरैया के अतिरिक्त रहमान, मनोरमा, सप्रू, अमर, डेविड और नर्तकी कुक्कू ने अभिनय किया है। दिग्दर्शक जयन्त देसाई हैं जो इससे पहले, तानसेन, सन्त तुलसी दास, कादी, हरहर महादेव और भक्तराज जैसे सुप्रसिद्ध और 'बाक्स आफिस हिट' चित्रों का निर्देशन कर चुके हैं। उत्तर भारत में 'शान' के वितरक दिल्ली के रावजी पिक्चर्स लिमिटेड हैं।

कश्यप का 'आराम' आधे से अधिक तयार

'बड़ी बहिन के ख्यातिप्राप्त निर्माता निर्देशक डी० डी० कश्यप ने २० अक्टूबर १९५० को अपने निजी चित्र आराम का मुहूर्त किया। चित्र का शूटिंग वस्तुतः दीपावली के बाद आरंभ हुआ। विश्वस्त रूप से ज्ञात हुआ है कि चित्र का ५५०० फीट से अधिक भाग सम्पादित हो चुका है। इस भाग में तीन गीत भी हैं जिनके रिकार्ड भर के उन्हें चित्र के तैयार भाग में जोड़ा जा चुका है।

'आराम' के पात्रों को बड़ी सावधानी से चुना गया। भूमिका में, मधुबाला, प्रेमनाथ, देवआनन्द, दुर्गाखोटे, मनमोहन, कृष्ण, हीरालाल और बेबी तबस्सुम जैसे उच्चकोटि के कलाकार काम कर रहे हैं।

उर्दू के सुप्रसिद्ध कहानीकार श्री राजेन्द्रसिंह बेदी ने इस फिल्म के गीत लिखे हैं और संगीत का निर्देशन अनिल विश्वास कर रहे हैं। चित्रालेखन और ध्वनि आलेखन का कार्य क्रमशः प- ईश नायक और मिश्र को सौंपा है। आराम आगामी मार्च में मार्च तैयार हो जायगा। ि उत्तर प्रदेश में आराम' के अधिकार आज इंडिया फि ल्युन्स के क्लाक, कनाट दिल्ली को प्राप्त हो गये हैं।

रागिनी पुन भा

'शाहजहां और द फिल्मों की नायिका रागिनी के बाद पाकिस्तान में रह कल दिल्ली म है और बम्बई पहुँच कर कुछक भ में कार्य करने का है।

'आराम' का एक दृश्य

श्री पं. ब्रह्मदत्त भार्गव

श्री पं० ब्रह्मदत्त भार्गव बी एस सी एल एल बी एफ एम एस. (लन्दन) जनरल मैनेजर दि जनरल इन्श्योरन्स सोसायटी लि० अजमेर।

आपका जन्म जौलाई १९०४ में ब्यावर (अजमेर मेरवाड़) के एक अत्यन्त सम्भ्रान्त तथा प्रसिद्ध परिवार में हुआ था। म्योर सेन्ट्रल कालेज अजमेर से १९२४ में प्रथम श्रेणी में बी एस सी की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात आपने इलाहाबाद में लॉ क्लास ले ली और वहां से प्रथम श्रेणी में वकालत पास करके १९२९ में अपनी प्रेक्टिस आरम्भ कर दी। वकालत आपने ४ वर्ष तक की और इस थोड़े से समय में आपने इस कार्य में पर्याप्त ख्याति प्राप्त की। साथ ही साथ सामाजिक कार्यों में भी आपने उत्साहपूर्वक भाग लेना आरम्भ कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप १९२७ में आप ब्यावर म्यूनिसिपल कमेटी के सदस्य तथा १९२८ में उसके सीनियर वाइस प्रेसीडेंट निर्वाचित किए गए। १९२८ में आपने ब्यावर में एक अनाथालय की स्थापना की जो आज बड़ा लाभप्रद सेवा-कार्य कर रहा है।

पेशे से आप वकील थे परन्तु स्वभावतः आप कारोबार को अधिक पसन्द करते थे। यही कारण था कि वकालत करते समय भी आप प्रान्त की अनेक प्रमुख व्यापारिक संस्थाओं के बोर्ड आफ डायरक्टर्स में थे। बाद को अनेक मित्रों के आग्रह पर १९३१ में आप अजमेर की बीमा कम्पनी के 'जनरल' में काम करने लगे वहां अपनी कार्यकुशलता मिलनसारिता तथा सौजन्यपूर्ण व्यवहार के कारण आप शीघ्र ही कम्पनी के सेक्रेटरी, बाद को सरकारी जनरल मैनेजर तथा १९३ कम्पनी के जनरल मैनेजर नियुक्त किए गए। जनरल इन्श्योरेंस सोसायटी लि० को उन्नति में आपका पर्याप्त भाग रहा है। १९४७-४८ में आप बम्बई के इण्डियन लाइफ एश्योरेंस आफिसेस एसोसियेशन के प्रेसीडेंट चुने गये। आपने भारत सरकार द्वारा निर्मित इन्श्योरेंस एडवाइजरी कमिटी में भी कार्य किया है। १९४७ में देश विभाजन के समय आपने शरणार्थी भाइयों की प्रशंसनीय सेवा की। इस अवसर पर आप द्वारा संगठित हिन्दू सहायक समिति द्वारा ३०० शरणार्थियों को दो माह तक बराबर भोजन दिया गया तथा पर्याप्त संख्या में उनको कम्बल आदि वस्त्रों से भी सहायता की गई। इस समय आप अजमेर के प्रथम श्रेणी के आनरेरी मजिस्ट्रेट वहां के भारत स्काउट्स एण्ड गाइड्स के स्टेटचीफ कमिश्नर तथा दो दर्जन से अधिक लोकोपकारी संस्थाओं के जिनमें आर्य समाज, श्री सावित्री गर्ल्स इण्टरमीडिएट कालेज, सरवना हस्पताल, स्काउट मूवमन्ट आदि के भी सदस्य है तथा जिम्मेदार पदाधिकारी हैं।

१९५१ की समस्याएं

[पृष्ठ ४ का शेष]

के हल के बिना दूसरा हल नहीं हो हो सकता। वास्तव में ये सब एक ही महान प्रश्न के विविध रूप हैं। सुरक्षा का ही प्रश्न लें। देश की सुरक्षा के लिए आधुनिक शस्त्रास्त्रों से सज्जित विशाल तथा सुदृढ़ सैन्य चाहिये। इस प्रकार शस्त्रास्त्र हमें अन्य देशों से खरीदने पड़ेंगें। किन्तु अर्थ की समस्या के कारण वे शस्त्रास्त्र पर्याप्त मात्रा में नहीं खरीदे जा सकते। साथ ही जितनी विशाल सेना होगी, उतने ही अधिक धन तथा अन्न की उसके लिए आवश्यकता पड़ेगी। अर्थ और अन्न दोनों की समस्या इसमें आया है। दूसरी ओर यदि सुरक्षा की दृष्टि से सैन्य विस्तार होगा, तो अनेकों लोगों को सेना में काम मिलेगा तथा सेना से सम्बन्धित विभाग व्यापार को प्रेरणा देंगे और उस क्षेत्र में बेकारी घटेगी तथा आर्थिक स्थिति अच्छी हो सकेगी। इस ढंग से अन्न की स्थिति सुधारने के व्यापक प्रयत्न किए जा सकते हैं। मूल ... प्रश्न भी अंशतः आर्थिक और अंशतः चरित्र सम्बन्धी है।

इसी प्रकार इन प्रश्नों में से किसी भी एक को ठीक प्रकार से हल करने का यदि प्रयत्न किया जाय तो शेष प्रश्नों पर भी उसका अनुकूल प्रभाव पड़ता है, यह दिखाई देती है। यद्यपि यह स्पष्ट है कि सब से अधिक महत्व के प्रश्न अर्थ तथा चरित्र-सम्बन्धी हैं।

अतः यह भी स्पष्ट है कि इन समस्याओं के अन्त के लिए जहां प्रत्येक प्रश्न को हल करने की आवश्यकता है, वहां उनके हल करने के लिए इस प्रकार के उद्योग की भी आवश्यकता है, जो सभी समस्याओं को प्रभावित करे। इसी प्रकार की व्यवस्थित योजना को सफलतापूर्वक कार्यान्वित कर पाने से ही हम पुनः हरे पैदावों की ओर लौट सकेंगे।

१९५१ का वर्ष अनेक दृष्टियों से मह- । यदि अपने मार्ग के संबन्ध में क गंभीरता से विचार नहीं प्रश्न वर्ष के अंत तक अति भयं- रख कर हमारे राष्ट्र जीवन को दुःखी तथा संकटापन्न बना इन्हें हल करने में हम कुछ ए तो हमारी स्थिति सुध- और आगे के वर्ष हमें ऊपर देखेंगे। किन्तु इस सफलता महत्वपूर्ण बातों की आवश्य- व्यवस्थित तथा व्यावहारिक ९ पारस्परिक सहयोग। के सहयोग चुनाव जीतने के लिए दो दलों का सहयोग नहीं, जीवन का युद्ध जीतने के लिए राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति का सहयोग है। दुर्भाग्य से दोनों को ही प्राप्त करने में भारत सरकार आज तक असफल रही है। क्या हम आशा करें कि वह भविष्य में प्राप्त कर सकेगी? १९५१ का वर्ष हमारे लिए जो कुछ भी लाया हो किन्तु वह एक ऐसी पुस्तक भी साथ लाया है जिस पर जो कुछ चाहें लिख सकते हैं।

———

दुमदार दोहे

श्री 'गुस्ताख'

किसो लन्दन कान्फ्रेंस कूं, 'लियाकत' ने बायकाट।
स्वान पुच्छ को ना मिटै, तीन जनम में ठाट॥
अन्त टेढ़ी रहे।

नेहरू लन्दन हूं चले, सूनौ छांडि स्वगेह।
'चर्चिल' पै उनको भयौ, निहचै अधिक सनेह॥
पुरानी दोस्ती।

हू मन्त्रिन में बैठि गयो, जो पटेल को भार।
राज्य मिल्यो 'भोपाल' कू, 'राजा' कूं दरबार॥
मजे की बात है।

देखि कोरिया की दशा, परेशान ट्रूमैन।
मारि मारि करि बाढ़ रहे, उद 'माओ' के नैन॥
चैन कैसेहुं नहीं।

'डेमोक्रेटिक ग्रुप' हैं, 'टंडन' हैं हैरान।
कृपलानी इत सोचते, मारि लियो मैदान॥
सामने कोउ ना।

★

चम्बल तट पर बांध योजना का विकास

[पृष्ठ १२ का शेष]

जब राजस्थान का एकीकरण हुआ और इस परिवर्तनकाल में— जैसा सभी परिवर्तन कालों में होता है— असामाजिक तत्वों ने सिर उठाया तो चम्बल द्वारा धौलपुर और उसके आस-पास के इलाको के मैदानों में जल प्रवाह से काट-काट कर बनाये गये गहरे गर्त और असमान धरातल वाले ऊंचे नीचे ऊबड़ खाबड़ भूखंडों में चोर, डाकू, लुटेरों ने अपने अड्डे बनाये और आज जब राजस्थान की शान्ति और कानून व्यवस्था दृढ है और सारा देश खाद्य पदार्थों के उत्पादन में स्वावलम्बी बनने जा रहा है, तो चम्बल भी फिर राजस्थान के भाल पर रजत टीका बन कर चमक रही है।

तीन विद्युत उत्पादन बांधे में

चम्बल पर बनाये जाने वाले राणा प्रताप बांध ११० फीट ऊंचा और शिखर पर ३५०० फीट चौड़ा होगा, जिसके कारण ६० अरब क्यूबिक जल एकत्र होगा। वहां से १५ फीट व्यासवाली २ बड़ी सुरंगों में से जल सवा मील आगे बिजली घर से जायगा, उससे ३७,००० किलोवाट बिजली पैदा की जायेगी। इस योजना में लगभग ७॥ करोड़ के खर्चे का अनुमान है। इस स्थान पर मजदूरों और कर्मचारियों के निवास के लिए एक बस्ती बनाई गयी है और कोटा से वहां तक सड़क का तथा आवश्यक भवनों का निर्माण चल रहा है। एक छोटे अस्पताल, डाकघर, पाठशाला तथा मनोरंजन के साधनों की व्यवस्था भी योजना में शामिल है।

कोटा से १० मील की दूरी पर दूसरा बांध १४० फीट ऊंचा और शिखर पर १,२८० फीट चौड़ा होगा जो ३ अरब क्यूबिक फीट पानी संग्रहित करेगा। इसकी लागत लगभग ६॥ करोड़ होगी। लगभग ३३,००० किलोवाट बिजली इससे पैदा होगी। आवश्यक पैमाइश तथा अन्य प्रारंभिक कार्य चालू हैं।

कोटा का सिंचाई बांध इस बांध से १५ मील परे होगा। ऊपर वाले बांध के टरबाइनों को गति प्रदान करता हुआ यह जल बह कर यहां एकत्र होगा और नहरों द्वारा सिंचाई के कार्य में लाया जायगा। बांध ७५ फीट ऊंचा और २००० फीट लम्बा होगा। बांध की दीवार में जल-प्रवाह के लिए ३१ मोरियां होंगी, जिन्हें आवश्यकता के अनुसार खोला और बन्द किया जा सकेगा। मोरियां ५० फीट चौड़ी और २८ फीट ऊंची होंगी। बांध के दोनों पार्श्व में निकाले जाने वाली नहरों से ३,००,००० एकड़ भूमि में सिंचाई की जा सकने का अनुमान है। इस बांध से कुछ आगे एक छोटे बिजलीघर द्वारा ७,५०० किलोवाट बिजली भी पैदा की जा सकेगी। इस योजना का पैमायशी काम समाप्त हो चुका है। राजस्थान सरकार इसी वर्ष इन योजनाओं पर ६० लाख रुपया खर्च कर रही है।

समुद्र और नदी दोनों ही मानव जाति विश्व वनस्पति के कल्याण की प्रकृति की महान् योजना के अंग हैं। आज तक जो चम्बल का जल समुद्र में व्यर्थ बेकार जाता रहा। अब राजस्थान के हित अधिक उपयोगी सिद्ध होकर प्रकृति की वास्तविक आकांक्षा को पूर्ण कर सकेगी और चम्बल चंचलता से अचलता की ओर अग्रसर होकर सकीर्ण रूप सागर की भांति गम्भीर और प्रशस्त हो जायगा।

———

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्य न पलायनम्

वर्ष १७] दिल्ली, रविवार ८ माघ सम्वत् २००७ [अङ्क ४०

फिर काश्मीर का प्रश्न

काश्मीर का प्रश्न रह रह कर फिर उठ आता है। राष्ट्रमण्डल-सम्मेलन के अवसर पर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री श्री लियाकतअली ने इस पर फिर से विचार करने का आग्रह किया और इसके परिणामस्वरूप अनौपचारिक रूप से सही, काश्मीर का प्रश्न फिर संसार के सामने आ गया। पाकिस्तान के निर्माता ब्रिटिश राजनीतिज्ञों के सहयोग का शायद पाकिस्तान को विश्वास था। इसमें संदेह नहीं कि काश्मीर से भारतीय व पाकिस्तानी सेनाओं को हटाने तथा राष्ट्रमण्डलीय सेनाओं को वहां रखने का प्रस्ताव पेश भी किया गया। अनेक ब्रिटिश राजनीतिज्ञ उदासीनता का भाव बना कर भी पाकिस्तानी मांग का समर्थन करते रहे।

इस प्रस्ताव का स्पष्ट अर्थ यह था कि काश्मीर के संबंध मे पाकिस्तानी और भारत दोनों की कानूनी स्थिति एक-सी है। दोनों को ही इस प्रदेश से निकल जाना चाहिये और तब संयुक्तराष्ट्र संघ या राष्ट्रमण्डल अपने निरीक्षण में वहां जनमत ले। भारत इस स्थिति को स्वीकार नहीं कर सकता था और पं० नेहरू ने दृढ़तापूर्वक इस स्थिति को मानने से इन्कार कर दिया। काश्मीर-नरेश ने भारत में सम्मिलित होने की प्रार्थना की और भारत सरकार के उसे स्वीकार करते ही काश्मीर भारत का एक प्रदेश बन गया। पाकिस्तान आक्रमणकारी था और यद्यपि उसने राष्ट्रसंघ की आंखों में धूल झोंकने का यत्न किया, किन्तु अन्त में सत्य छिपा न रह सका और राष्ट्रसंघ की ओर से नियत मध्यस्थ श्री डिक्सन ओवन ने यह स्वीकार कर लिया कि पाकिस्तान आक्रमणकारी है। आक्रमणकारी और गृह स्वामी की स्थिति को किस तरह एक स्वीकार किया जा सकता है। यदि आज भारत लाहौर पर आक्रमण कर दे, तो क्या पाकिस्तान विवाद की शांति के लिए क्या अपनी सेनाएं लाहौर से हटाने के लिए तैयार हो जायेगा? यदि पाकिस्तान का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जाय, तो आक्रमण को कभी अपराध नहीं ठहराया जा सकता और इस तरह संसार में अव्यवस्था फैल सकती है।

काश्मीर की समस्या वस्तुतः इतनी नहीं उलझती, यदि आदर्शवादिता और उदारता के नाम पर आज से सवा तीन वर्ष पूर्व भारत सरकार की ओर से एक भूल न की जाती। काश्मीर नरेश के भारत संघ में सम्मिलित होने की प्रार्थना को स्वीकार करने के साथ ही काश्मीर भारत संघ का एक अविभाज्य अंग बन गया था, ठीक उसी तरह, जिस तरह अन्य रियासतें भारत संघ का एक अविभाज्य अंग बन गयी थीं। ब्रिटिश सरकार की हस्तांतरण योजना के मूल में यह निहित था कि रियासतों के राजा संघ मे सम्मिलित हो सकते हैं। काश्मीर नरेश के अतिरिक्त पं० नेहरू के शब्दों में काश्मीर की प्रजा का बहुमत भी शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में भारत संघ में मिलने को उत्सुक था। इसलिए इस प्रश्न का अन्तिम निर्णय हो गया था। जब किसी दूसरे राज्य के लिए जनमत की शर्त नहीं रखी गई थी, तब काश्मीर के लिए क्यों रखी जानी चाहिए थी? स्वयं भारत या पाकिस्तान में मिलने वाले प्रांतों के लिए (सीमाप्रान्त को छोड़ कर) असेम्बली सदस्यों से पूछा गया था। आज भी काश्मीर की धारा सभा पूछा जा सकता है किंतु, पं० जवाहरलाल नेहरू आवेश में आकर जनमत संग्रह की प्रतिज्ञा कर गये और यही कारण है कि यह समस्या इतनी लम्बी और जटिल हो गई है। उस समय आवेश में की गई एक भूल आज भारत के लिए जंजाल बन गई है। इस प्रश्न को सं० राष्ट्रसंघ में भेजकर दूसरी भूल की गई। पाठकों को स्मरण होगा कि सरदार पटेल ने कहा था कि यदि यह मामला सं० रा० संघ में न जाता, तो काश्मीर में भी हैदराबाद की भांति पुलिस कार्यवाई कर दी जाती।

काश्मीर के प्रश्न के साथ ही एक वैधानिक प्रश्न खड़ा हो गया है। केन्द्रीय सरकार का प्रान्तों पर, जिन्हें अब 'राज्य' कहकर बहुत कुछ स्वतन्त्र कर दिया गया है, कितना अधिकार हो। हम इन पंक्तियों में एकात्मक केन्द्रीय सरकार की उपयोगिता का अनेक बार समर्थन कर चुके हैं। रा० स्व० संघ के प्रमुख श्री गोलवलकर ने अपने एक भाषण में इस महत्वपूर्ण प्रश्न को उठा कर फिर समस्त राष्ट्र का ध्यान इधर खींचा है। वस्तुत आज के असाधारण संकट में राष्ट्र के विभिन्न अंगों पर केन्द्रीय सरकार का पर्याप्त अधिकार आवश्यक है। काश्मीर के सम्बन्ध में भी इसी दिशा में प्रयत्न करना चाहिए, नहीं तो अव्यवस्था, अशान्ति और अराजकता की आशंका है।

★

जनगणना मे जैनों की पृथकता

नई जनगणना आगामी महीने हो रही है। यह स्वतन्त्र भारत की प्रथम जनगणना है। ब्रिटिश सरकार जनगणना को न्याय, औचित्य और यथार्थता के आधार पर नहीं कराती थी। उसकी अपनी शासन नीति थी—फूट पैदा करके शासन करो। इसलिए हिन्दुओं को अधिकतम भागों में विभक्त करके दिखाना उसकी प्रमुख नीति थी। बहुतसी हिन्दू जातियों को वह आदिमवासी और दलित मान लेती थी और इस तरह हिन्दुओं के बल को कम करना उसकी प्रधान नीति थी। २ २॥ करोड़ दलितों व आदिमवासियो के स्थान पर ८ करोड़ आदिवासी व दलित गिने गये थे, यद्यपि उनके रीतिरिवाज हिन्दू ही थे और दलितों की संख्या भी बहुत कम थी। अब भारत स्वतन्त्र है। उसके सामने हिन्दुओं का बल कम करने का कोई प्रश्न नहीं है। उसे इसकी आवश्यकता भी नहीं है, किन्तु यह देख कर खेद होता है कि वर्तमान सरकार भी हिन्दुओं के बहुमत को कम करने और उसे विभक्त करने की नीति पर चल रही है। जैन सम्प्रदाय हिन्दू धर्म का उसी तरह एक अंग है, जैसे शैव, शाक्त, आर्यसमाजी आदि हैं। इसलिए जैनों को हिन्दू धर्म से पृथक् लिखने की परिपाटी का हम विरोध करते हैं। पाठकों को स्मरण होगा कि पिछले दिनों अनेक जैन संस्थाओं ने जैनों को हिन्दुओं से पृथक् मानने का विरोध किया था। किन्तु न जाने किस कारण से पं० नेहरू ने कुछ जैन नेताओं की बात मानकर जैनों को हिन्दुओं से पृथक् गिनने का निश्चय कर लिया। यदि एक बार यह सिद्धान्त स्वीकार कर लिया, तो हिन्दू धर्म के विभिन्न सम्प्रदाय भी अपने को हिन्दुओं से पृथक् मानने का आन्दोलन करने लगेंगे। यह न केवल हिन्दू जाति के लिए बहुत अहितकर होगी, बल्कि भारत सरकार के सामने भी एक गम्भीर समस्या खड़ी हो जायगी। दलितों के सम्बन्ध में भी अब पृथक्वादी नीति को छोड़ना चाहिए।

★★

तृतीय विश्वयुद्ध की ओर

कोरिया के युद्ध ने विश्वशान्ति को खतरे में डाल दिया है और उसे सुलझाने के जो जो प्रयत्न किये गये हैं, वे सब अब तक असफल सिद्ध हुए हैं। अमेरिका और चीन दोनों का दुराग्रह इस युद्ध को लम्बा किये जा रहा है। अमरिका यदि चीन के सम्बन्ध मे यह तथ्य स्वीकार कर लेता कि आज चांगकाई शेक की सरकार चीन पर शासन नहीं कर रही, माओ त्से तुंग की सरकार है, तो स्थिति इतनी अधिक उलझने न पाती। दूसरी ओर साम्यवादी चीन राष्ट्रसंघ के निर्णयों को और एशियाई राष्ट्रों के अनुरोध को ठुकराकर स्थिति का निरंतर विषमतर बनाता गया है। राष्ट्रमण्डली देशों ने एक बार फिर चीन से युद्ध बन्द करने का अनुरोध किया था, किन्तु समस्त आशाओं के विपरीत साम्यवादी चीन ने उसे फिर ठुकरा दिया। इससे स्थिति और भी अधिक उलझ गई है। चीन के इस दुराग्रह के पीछे न केवल चीन का सैनिक बल है, बल्कि उसे रूस के पूर्ण सहयोग का भी आश्वासन है। और यही कारण है कि चीन का यह नवोदित राष्ट्र आज सारे संसार के सामने खम ठोक कर खड़ा हो गया है, जिससे विश्वशान्ति खतरे में पड़ गई है। यदि चीन को अपने भौतिक बल का दर्प न होता तो इस युद्ध की समस्या सुलझ जाती। पं० नेहरू घोर आशावादी हैं और इसलिए वे आज भी राष्ट्रमण्डली प्रस्ताव पर चीन के इन्कार को सर्वथा इन्कार नहीं मान रहे, किन्तु पिछले कुछ सास मास से चीन जिस नीति पर चल रहा है, उसे देखते हुए यह आशा नहीं है कि वह बिना भय-प्रदर्शन के किसी भी शान्ति-प्रस्ताव को स्वीकार कर लेगा और इस भय-प्रदर्शन का अर्थ है तृतीय विश्व युद्ध का सूत्रपात। आज की परिस्थिति में यह अनिवार्य होता जा रहा है।

जनतंत्र का ढोंग

पाठक इस अंक मे अन्यत्र श्री किशोरलाल मशरूवाला का लेख पढ़ेंगे। वनस्पति घी पर प्रतिबन्ध के पक्ष मे संसद् के अधिकांश सदस्य थे। प्रान्तीय सरकारों में से अधिकांश सरकारें भी वनस्पति घी पर प्रतिबन्ध के पक्ष में थीं। किन्तु श्री ठाकुरदास भार्गव ने अपना विधेयक वापस ले लिया। क्यों? सिर्फ इसलिए कि प्रधानमंत्री पं० नेहरू ऐसा नहीं चाहते थे। केन्द्र और प्रान्तों मे बहुमत की उपेक्षा के इस ज्वलंत उदाहरण का उल्लेख करके श्री मशरूवाला कहते हैं कि यह सारी व्यवस्था एक ऐसे शासन-

साम्यवादी सैनिक की दीक्षा-प्रणाली

● ले० अलबर ए० हुई बाम

होची मिन्ह के हरेक अनुचर को भर्ती होते ही तीन से छः महीनों तक के लिये हर रोज कम से कम तीन घन्टों तक लगने वाली कक्षा में शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। यह यूनिट राजनैतिक कमिसार अर्थात् नायक द्वारा चलाई जाती है जो "सिपाही का व्यक्तित्व" "टोंकिन में साम्राज्यवादी पापों के असली अर्थ," "प्रतीकार का इतिहास" "सेना में राजनैतिक कार्य" "नागरिक जनता में प्रचार" और "दुश्मन के अधिकृत क्षेत्र की जनता में प्रचार" जैसे भारी नामकों को शिक्षण के विषय चुनता है।

सन्ध्या समय इस पद्धति में थोड़ा सा संगीत जोड़ दिया जाता है। लोगों को एकत्रित करके सामुदायिक गाने, नाटक खींचना और विभिन्न खेल सिखाये जाते हैं। इसके अलावा एक घन्टा (अवधि) ऐसा होता है जिसमें अपनी तथा दूसरों की आलोचना की जाती है और राजनैतिक विषयों पर जोरों की बहस चला करती है। इस सारी कार्रवाई में असाम्यवादी देशों को कोसने का अवसर प्राप्त किया जाता है।

रंगरूट सेना में भर्ती होने के बाद के तीसरे महीने से लेकर साल के अन्त तक की अवधि के लिये एक माध्यमिक अवस्था में पहुँचता है। इसमें भी पहले की ही तरह कमिसार द्वारा पाठ्य-विषय पढ़ाया जाता है, जिसमें "लेनिनवाद और मार्क्स द्वारा वर्णित साम्यवादी सिद्धांत की प्रारम्भिक बातें," "विश्व की राजनैतिक स्थिति," "नयी शक्तियों का आन्तरिक राजनैतिक संगठन," "वियत्नाम का संगठन," "हिन्द-चीन के साम्यवादी दल का इतिहास," "भौतिकवाद तर्क-विद्या का परिचय" और "भौतिकवाद का इतिहास" जैसे विषय सम्मिलित होते हैं।

इस कक्षा की सम्भावं सूचनाओं तथा आलोचना के अध्ययन, वाद विवाद और विद्यार्थियों के भाषणों में व्यतीत होती हैं। विद्यार्थी लोकतन्त्रात्मक संसार के विचार बिल्कुल नहीं सुनते।

मार्क्स अध्ययन समूह

सिपाही को इतनी अवधि में साम्यवादी दल अर्थात् कम्यूनिस्ट पार्टी की सदस्यता के लिये अच्छी तरह योग्यता प्राप्त कर लेनी चाहिये। इसके बाद वह तीसरी मंजिल की ओर बढ़ता है, जिसकी अवधि अनिश्चित होती है। इसके सन्ध्याकालीन सामुदायिक मनोरंजन में अधिकाधिक सिद्धान्त और वाद विवाद के अतिरिक्त यूनिट राजनैतिक कमिसार के निर्देशन में कार्लमार्क्स अध्ययन समूहों का काम चला करता है।

प्रतिभाशाली लोग विशेष स्कूलों में भेज दिये जाते हैं, जहां पर नियमों का कठोरता से पालन किया जाता है। इनमें से किसी भी स्कूल में न पढ़ने वाले सिपाही को कदाचित ही तरक्की मिलती है।

तीन स्कूलों के स्तर — नये रंगरूटों के लिये स्कूल (प्रारम्भिक) एन० सी० ओ० एस० के लिये (मध्य-स्थित) और सैनिक कालेज (उन्नत) विद्रोही अधिकृत राज्य-क्षेत्र के विभिन्न स्थानों में होते हैं। उन्नत अवस्था में पहुँचने पर सिपाही या तो अपूर्ण और अकुशल हुआ मिलता है या उसे भावी अधिकारी औपचारिक रूप में चुन लिया जाता है, और तब से आगे राजनीति और सैनिक विज्ञान पर अधिकाधिक जोर दिया जाता है। इसमें मुख्य दृष्टिकोण यह रहता है कि वह राजनैतिक कमिसार या एक यूनिट नायक की नियुक्ति के लिये आवश्यक योग्यता प्राप्त कर सके।

उस सिपाही पर क्या बीतती है जो किसी न किसी कारण से एक ऐसे क्रम की प्रामाणिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने से रह जाता है?

वह आपसे आप ही साम्यवादी दल की पूर्ण सदस्यता से वंचित हो जाता है। ऐसे भी कई लोग होते हैं, जो साम्यवाद को अपनाने की विशेष इच्छा नहीं रखते। असफल व्यक्ति से भी कुछ न कुछ काम लेना पड़ता है, ताकि वह यह अनुभव कर सके कि उसके लिये भी जीवन में कोई स्थान है। ऐसे आदमी को बचाने का तरीका ढूंढना पड़ता है और इसके परिणामस्वरूप डेमाक्रेटिक फ्रंट अर्थात् लोकतन्त्रात्मक दल स्थापित किया गया है, जो स्वतन्त्रता साम्यवादी नहीं है किन्तु प्रत्येक श्रेणी में एक सैनिक सभा की स्थापना की व्यवस्था करते हुए प्राप्त साम्यवादी संगठन की न्यूनता पूरी करता है।

एक कार्यक्रम अध्ययन और शारीरिक कार्य के लिये तैयार किया जाता है। वे विषय कभी-कभी सिपाही की प्रारम्भिक राजनैतिक शिक्षा जैसे ही होते हैं, किन्तु वे अक्सर न्यूनतापूरक होते हैं जिनमें "लोकतन्त्रात्मक अर्थ व्यवस्था", "लोकतन्त्रात्मक राजनीति", लोकतन्त्रात्मक सैनिकवाद", "युद्ध क्षेत्र में अनुशासन", और "सेना पंक्तियों के अन्दर अनुशासन" जैसे विषयों से सम्बन्धित व्याख्यान सम्मिलित रहते हैं। यह लोकतन्त्र अवश्य है, लेकिन साम्यवादी नमूने का होता है।

लोकतन्त्रात्मक अर्थ व्यवस्था

जब लोग सक्रिय सेना में न लगे हों, तो उन्हें "लोकतन्त्रात्मक अर्थ व्यवस्था" के अन्तर्गत अपने अध्ययन के एक आवश्यक भूमि पर काम करना या यातायात कर्मियों का दुभाषिया अथवा खास नमूनों के निर्माण में सहायता पहुँचानी पड़ती है। उनसे जापान द्वारा बाद् निर्मित सिनेमों के लिये भेज संग्रह में भी सहायता ली जाती है। सिपाही को "लोकतन्त्रात्मक राजनीति" के अन्तर्गत इस बात के लिए सिखाया पढ़ाया जाता है कि सेना के अन्दर और दुश्मन के क्षेत्र को नागरिक जनता में किस तरह प्रचार किया जाये। "लोकतन्त्रात्मक सैनिकवाद" के अन्तर्गत युद्ध कौशल, प्रशिक्षण और युद्ध-क्षेत्र-प्रोग्राम की अवस्थाओं को सुलझाया जाता है।

वियत मिन्ह "प्रशिक्षा मन्त्रालय" कभी कभी अनुशासन व्यवस्था के अनुसार बड़े पैमाने पर अभ्यास अर्थात् कवायदें आयोजित करता है, जिन्हें "राजनैतिक कमिसारों के राजनैतिक शिक्षा तथा सैनिक मंडल की कवायद" और "देशिक प्रगति में अभ्यास" जैसे लम्बे नामों से पुकारा जाता है।

स्कीम का विवरण

हिन्द-चीन के साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति लेकर राजनैतिक शिक्षा स्कीम को आम रूप रेखा तैयारी करती है। तब यह स्कीम "प्रशिक्षा मंत्रालय" के राजनैतिक केन्द्र में पहुँचाई जाती है, जहां पर "राजनैतिक शिक्षण (सेना)" नामक एक विशेष विभाग होता है। वहां पर स्कीम का विवरण तैयार करके प्रचार और शिक्षण समिति के पास भेजा जाता है, जो उन्हें पलटनों, उप-पलटनों और कम्पनियों की राजनैतिक समितियों को प्रस्तुत कर देती है।

इस प्रकार डेमाक्रेटिक फ्रंट के कार्य का संगठन और विकास किया जाता है, किन्तु इसमें अभी पूर्ण सफलता नहीं पा सकी है।

जनता की तस्वीर पेश करती है, जिसमें जनतन्त्र का ढोंग है, सार नहीं।" इस समस्त स्थिति से वे इतने खिन्न हैं कि वे यहां तक कहते हैं कि "मौजूदा दल निर्देशित लोकशाही सामान्य जनता के सर्वोदय और विकास के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकती है। 'हमारा लोकतंत्र इस आधार पर चलना चाहिये कि सब सदस्य अपना स्वतन्त्र मत दे सकें। हमारे संगठन की प्रणाली इतनी कठोर नहीं होनी चाहिए कि 'सदस्य अपनी न्यायबुद्धि के अनुसार चल न सकें और उनकी आन्तरिक आवाज पर ताला लग जाय।"

कोरा में कामावाली का [illegible] करने वाले [illegible] के साथ

स्वतंत्रता प्राप्ति का श्रेय सारे देश को है

किसी दल-विशेष को नहीं

लेखक— श्री बलराज मधोक

शताब्दियों की अटोजहद के पश्चात् भारत का एक बड़ा भाग स्वतन्त्र हो चुका है। हर एक भारतीय के मन में इसके लिये हर्ष और गर्व होना स्वाभाविक ही है। परन्तु इसी में समाधान मान लेना उचित नहीं। अपनी स्वतन्त्रता को पूर्ण करने के लिए और उसकी रक्षा के लिये सचेत रहने के लिए यह आवश्यक है कि भारतीयों के मनों में अपने गत स्वतन्त्रता संग्राम का स्पष्ट चित्र रहे, ताकि वे उसके नायकों के जीवन से स्फूर्ति लेते हुए भारत की स्वतन्त्रता को पूर्ण और सार्थक स्वराज्य में परिणत कर सकें।

स्वतन्त्रता प्राप्त होने के पश्चात् भी स्वतन्त्रता दिवस मनाने की मुख्यतः यही पृष्ठभूमि होनी चाहिये। परन्तु खेद की बात है कि स्वतन्त्रता के पिछले तीस वर्षों में स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में स्वतन्त्रता-दिवस पर या अन्य अवसरों पर जब कभी भी कोई समारोह हुआ, उसमें इस मौलिक बात की ओर ध्यान नहीं दिया गया। देश में आज के सत्तारूढ़ दल और उससे प्रेरणा पाने वाले लेखकों, वक्ताओं और समाचारपत्रों ने ऐसे अवसरों को केवल गांधीवादी कांग्रेस के गुणगान करने का ही साधन समझा है। गांधीजी के कांग्रेस में आने के पहिले के कांग्रेस नेताओं तथा अन्य देशभक्त व्यक्तियों व संस्थाओं का, जिन्हों ने देश के स्वतन्त्रता संग्राम में योग दिया, उनकी दृष्टि में कोई अस्तित्व ही नहीं है। उनके द्वारा केवल एक ही राग अलापा जाता है कि गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस ने भारत को स्वतन्त्रता दिलाई।

यह प्रचार भ्रान्तिपूर्ण तो है ही, अपने ढंग के अनेक देशभक्त महापुरुषों तथा संस्थाओं के प्रति अकृतज्ञता का भी सूचक है। इसलिये यह आवश्यक हो गया है कि भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाले विभिन्न व्यक्तियों, संस्थाओं तथा उनके द्वारा चलाए गये आन्दोलनों का विवेचन व मूल्यांकन किया जाय, ताकि आज के भारतीयों के मनों में उन सबका उचित स्थान रहे।

भारत का स्वतन्त्रता संग्राम तो उसी दिन से शुरू हुआ, जिस दिन विदेशी मुस्लिम आक्रान्ताओं ने अपने देश के विभिन्न भागों पर अपना अधिकार जमाना शुरू किया। भारत के विभिन्न भागों में कतिपय देशभक्तों ने स्वतन्त्रता के युद्ध को किसी न किसी रूप में चलाये रखा और अन्त में अठारवीं शताब्दी में मुस्लिम सत्ता भारत से लगभग खतम हो गई। परन्तु उससे अपना स्वतन्त्रता संग्राम समाप्त नहीं हुआ, क्योंकि स्वराज्य की पूर्ण रूपेण स्थापना होने से पहिले ही देश में अंग्रेजों का कुचक्र चलना शुरू हो गया। उसके विरुद्ध भी भारी आन्दोलन चलता रहा। परन्तु १८५७ के स्वतन्त्रता युद्ध में पराजय होने के पश्चात् कुछ देर तक सारे देश में अंग्रेजों का दबदबा इतना उग्र हो गया कि सारे देश में हीन भावना और पराजय वृत्ति (degected mentality) फैलने लगी। इसको दूर करने और अंग्रेजी सत्ता को समाप्त करने के लिये एक और स्वतन्त्रता संग्राम चलाना अनिवार्य हो गया। इस लेख में केवल ब्रिटिश राज-विरोधी स्वतन्त्रता आन्दोलन का ही विवेचन किया गया है।

१८५७ के युद्ध के पश्चात् देश में अंग्रेजों के विरुद्ध रोष का भाव तो अवश्य था, परन्तु उनके कुशासन के कारण साधारण जनता के मनों में से वह शनैः शनैः कम होने लगा। अंग्रेजी शिक्षा दीक्षा में पड़े हुए बहुत से भारतीय मन से उनके दास बन गये और उनके द्वारा सारे देश में शारीरिक दासता के साथ २ मानसिक दासता भी फैलने लगी। इस अवस्था में स्वतन्त्रता के युद्ध को पुनः चालना देने के लिये सबसे प्रथम आवश्यकता इस मानसिक दासता को दूर करके भारत के लोगों में भारत के भाग्य (destiny) और भारतीयता के लिये फिर से आदर व विश्वास का भाव उत्पन्न करने की थी। इस काम को करने का बीड़ा सबसे पहले महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा प्रवर्तित आर्य समाज ने उठाया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती वर्तमान युग के पहिले भारतीय थे जिन्होंने भारत की मूलभूत कमजोरी को समझा और उसको दूर करने का काम शुरू किया। उन्होंने देखा कि भारतवासियों के मनों से निज गौरव का भाव नष्ट हो रहा है और वे अंग्रेजों को देवता मानकर उनके राग, और रहन सहन, रीति रिवाज इत्यादि को अपनाने लगे हैं। इसको नष्ट करने के लिये उन्होंने भारतीय वैदिक धर्म व संस्कृति का ठीक व उज्वल रूप भारतीय जनता के सामने इतने विश्वास और आग्रह से रखा कि भारत की शिक्षित समाज को उनकी बात सुननी पड़ी। इसके साथ ही साथ अंग्रेजों के कुशासन से चकाचौंध हुए भारतीयों के सामने उन्होंने स्वराज्य की सिंह गर्जना —

न आर्यस्य दास भाव

को दोहराया। जिस समय भारत में जगह २ अंग्रेजी राज की बरकतों की चर्चा चल रही थी उन्होंने घोषणा की कि विदेशी राज्य चाहे वह कितना ही अच्छा क्यों न हो, स्वराज्य का स्थान नहीं ले सकता। भारत के वर्तमान युग के स्वतन्त्रता संग्राम का श्रीगणेश महर्षि दयानन्द की इस सिंह गर्जना से हुआ।

ऋषि दयानन्द का कार्य उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज के सदस्यों ने जारी रखा। लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, भाई परमानन्द, श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन तथा आज के अनेक अन्य नेताओं के लिए स्वामी दयानन्द ही स्फूर्ति का प्रथम केन्द्र थी और हैं। आर्यसमाज के बाहिर भी अनेक महापुरुषों ने स्वामी दयानन्द से स्फूर्ति पाई। स्वर्गीय महादेव गोविन्द रानाडे स्वामी दयानन्द को अपना राजनैतिक गुरु मानते थे। स्वर्गीय गोपालकृष्ण गोखले श्री रानाडे को अपना गुरु मानते थे। और महात्मा गांधी श्री गोखले को। इस प्रकार स्वामी दयानन्द के विचार देश के सभी नेताओं का आज तक मार्गदर्शन करते आ रहे हैं। प्रत्यक्ष रूप में भी उत्तरीय भारत में तो आर्यसमाज स्वतन्त्रता की भावना उत्पन्न करने वाली सर्वप्रथम संस्था थी और १९२०-२१ तक सारा हिन्दू समाज मार्गदर्शन के लिये इसकी ओर ही देखता था।

स्वामी दयानन्द का शुरू किया हुआ सांस्कृतिक तथा मानसिक पुनर्जागरण का कार्य स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द तथा कई अन्य महापुरुषों ने देश के विभिन्न भागों में जारी रखा। इसी भावना का प्रचार श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा कई अन्य विख्यात साहित्यकारों ने अपने राष्ट्रीय साहित्य के द्वारा किया। इन सब का राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने और स्वातन्त्र्य संग्राम को चलाने में बड़ा हाथ है।

यह नवचेतना क्रान्तिकारियों के द्वारा उग्र रूप में प्रकट हुई, ताकि विदेशी शासकों को इसका प्रत्यक्ष आभास मिल सके। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्रपाल, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, अरविन्द घोष, वीर सावरकर, श्यामजी कृष्ण वर्मा, आदि के अनुयायी हैं। उनसे स्फूर्ति ग्रहण करके अनेक वीर देश की स्वतन्त्रता के लिए मरने और मारने के लिये आगे बढ़े। जब मदनलाल धींगरा ने लन्दन में कर्जन वायली का वध किया तब अंग्रेजों ने पहली बार यह अनुभव किया कि भारत में भी स्वतन्त्रता-आन्दोलन चल रहा है। इसलिये क्रान्तिकारियों का देश को स्वतन्त्रता दिलाने में बहुत बड़ा हाथ है। उनकी अवहेलना करना या उनकी ओर उदासीनता का भाव दिखाना बहुत कृतघ्नता है।

राष्ट्रीय चेतना और स्वतन्त्रता की भावना को साधारण जनता के मनों में उत्पन्न करने का श्रेय महात्मा गांधी को है। उन्होंने सारे भारतीयों के मनों में दासता के विरुद्ध बेचैनी पैदा कर दी।

परन्तु उस बेचैनी को वे एक सुसंगठित व सुदृढ़ रूप नहीं दे सके। उनके द्वारा चलाये गये सत्याग्रह आन्दोलनों ने जनता में हलचल तो पैदा कर दी परन्तु [illegible] क नहीं क्योंकि सत्याग्रह की शक्ति जिन गुणों पर आश्रित है वे साधारण जनता में होने कठिन ही हैं। इसलिये उनके आन्दोलन उद्देश्य को प्राप्त करने में असफल रहे।

स्वतन्त्रता के लिये मानसिक बेचैनी को संगठित व सशक्त रूप देने का कार्य राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ तथा नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने किया। भारत में संघ की संगठित शक्ति और भारत के बाहिर नेताजी की आजाद हिन्द फौज और उसके प्रभावस्वरूप भारतीय स्थल व जल सेना में तथा पुलीस में फैली हुई विरोध की भावना ने अंग्रेज शासकों को दहला दिया। उन्होंने समझा कि अब भारत में स्वतन्त्रता की भावना केवल मानसिक बेचैनी और सत्याग्रहों से आगे बढ़ कर उनको हिंसात्मक चुनौती देने की स्थिति तक पहुंच चुकी है।

यह जान कर भी वे शायद कु समय तक ब्रिटिश सेना के सहारे भारत पर राज्य करने का प्रयत्न करते। परन्तु उनके घर की दशा तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति ने उन्हें सम्मानपूर्वक पीछे हटने के लिये बाधित किया। परन्तु क्योंकि देश की राजनैतिक मंच पर वास्तविक शक्तिरहित गांधीवादी कांग्रेसियों का कब्जा था इसलिये जाते जाते वे उन्हें पाकिस्तानियों द्वारा गृह-युद्ध का भय दिखला कर देश का बटवारा कर गये। इसलिये महात्मा गांधी और उनकी कांग्रेस को जहां देश की साधारण जनता में स्वतन्त्रता की भावना पैदा करने का

[शेष पृष्ठ २४ पर]

मुनाफा कहां जाता है ?

आंकड़ों से पता चलता है कि पिछले कुछ वर्षों के दरमियान में ज्वाइंट स्टाक कम्पनियों की चुकाची पूंजी में कुछ वृद्धि हुई है। परन्तु इसका यह मतलब नहीं है कि उद्योगों से जो मुनाफा हुआ है वह वापस उद्योगों में लगा दिया गया है। असलियत में सन् १९४७ से केपिटल मार्केट [पूंजी बाजार] में मन्दी का दौर चल रहा है। अगस्त ४७ से दिसम्बर ४८ तक जो नयी कम्पनियां खुली हैं उनकी चुकाची हुई पूंजी उस पूंजी से करीब १२० करोड़ रुपया कम है, जो इस दरमियान बन्द हो जाने वाली कम्पनियों में लगी हुई थी। इसके बावजूद भी सरकार की ओर से जो आंकड़े जारी किये गये हैं उनमें कहा गया है कि इस दरमियान करीब १००० नयी कम्पनियां खोली गयीं और चुकाची पूंजी में करीब ४० करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है।

इसका यही मतलब निकलता है कि चुकाची पूंजी के रूप में वह बोनस दे दिया गया है जिसका दिखावा केवल बहियों में किया गया है। बम्बई के वस्त्रोद्योग की चुकाची पूंजी में १९४७-४९ के दरमियान में करीब ९ करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है। दूसरे उद्योगों में भी कुछ कम या ज्यादा मात्रा यही में हुआ है। परन्तु ४० करोड़ की वृद्धि केवल काल्पनिक है और यह यही बताती है कि सरकार के आंकड़े अविश्वसनीय हैं।

केन्द्रीय और राज्य सरकारों ने जो कर्ज कार्यक्रम शुरू कर रखा था उसमें भी यह मुनाफा नहीं गया है। हकीकत तो यह है कि पिछले तीन सालों में भारत सरकार ने जितनी रकम चुकाची है उससे बहुत कम रकम वह कर्ज के रूप में ले पायी है। अगर युद्ध काल से इसकी तुलना की जाय तो साफ मालूम हो जायगा कि सरकार की कर्ज लेने की व्यवस्था कितनी गड़बड़ हो गयी है, क्योंकि उस समय उसने १७० करोड़ रुपये से अधिक का कर्ज उठा लिया था। इस दरमियान भारत सरकार ने जितना रुपया चुकाया है वह कर्ज से ८० करोड़ के करीब ज्यादा है।

चुकाची पूंजी और सरकार के कर्ज में मुनाफे का रुपया न जाने से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उन व्यक्तियों ने जो कुछ रुपया बच सका है अब इसे किसी और तरफ लगाना शुरू कर दिया है। कहां ? इस प्रश्न का उत्तर कौन देगा ?

★

वन कन्या नहीं राजमहर्षी शकुंतला

भाषा की समस्या उतनी उलझी नहीं जितना लोग समझते हैं। हिन्दी में सबकी मातृभाषा है क्योंकि भारतमाता सबकी माता है। यह सभी भाषाओं में

बोलती है। सभी भाषाओं के अलंकार मुहावरे चित्र कल्पनाएं एक हैं। हिन्दी में कुछ भी परकीय नहीं। अब हिन्दी का वह स्वरूप नहीं रहेगा जो अब तक रहा है। अब उसमें मराठी, गुजराती, कन्नड़, बंगला सबका प्रतिनिधित्व होगा, अब वह अपनी ही भाषा नहीं, सबकी भाषा होगी। उसका स्वरूप निश्चित रूप में बदलेगा, इससे घबराने की जरूरत नहीं क्योंकि यह उसका विकास है। हिन्दी अब कण्व की वनकन्या शकुंतला न रह सकेगी, अब वह राजमहिषी शकुंतला बन चुकी है। हिन्दी वालों के लिए यह खुशी की बात ही है।

—श्री दिवाकर

★

अंग्रेज योगाभ्यासी

ब्रिटेन में जिन लोगों ने योगाभ्यास किया है, सर पाल ड्यूक्स उनमें प्रमुख हैं। आजकल आप लोग द्वारा स्नायुओं को वश करने का प्रयोग प्रदर्शित कर रहे हैं। आप पेट की मांस पेशियों और स्नायु [illegible] हैं और उन पर [illegible] से छोटे बोर की गोलियां चलायी जाती हैं, पर वे खाल को पार नहीं कर पातीं।

★

लोकतन्त्र भारतीय है

लोग लोकतन्त्र की बातें करते हैं। भारत में पिछले ५००० हजार वर्षों से हम लोकतन्त्र का प्रयोग करते आ रहे हैं। लोकतन्त्र पश्चिमी देशों की ही बपौती नहीं। लोकतन्त्र के क्षेत्र में भारत की अपनी विशेष देन है। पश्चिम के देशों को भारत से सीखना होगा कि अपने ही सुख से रहना सब कुछ नहीं। सुख में रहने का जो अधिकार हमें है, हमें दूसरों के लिए भी स्वीकार करना होगा।

—श्री दिवाकर

★

लार्ड रूथरफोर्ड

लार्ड रूथरफोर्ड न्यूजीलैंड में, १८७१ में पैदा हुए थे। उन्होंने ब्रिटेन में अपनी शिक्षा जारी रखी थी। ब्रिटेन का वार्षिक औद्योगिक मेला उनके जीवन से महत्वपूर्ण सम्बन्ध रखता है, क्योंकि इसी मेले के सौ वर्ष पुराने मौलिक रूप की बदौलत उन्होंने छात्रवृत्ति प्राप्त करके अध्ययन के लिए कैम्ब्रिज में प्रवेश किया था। वह छात्रवृत्ति १८५१ की प्रदर्शिनी की बचत में से दी गई थी। वह कैम्ब्रिज में सबसे पहले १८९५ में आये थे और उन्होंने सर 'जे० जे०' थामसन के अन्तर्गत काम करते हुए गैस में से बिजली दौड़ाने के प्रभावों का अध्ययन किया था। १८९८ में २७ वर्ष की आयु में वह पदार्थ विज्ञान के प्रोफेसर के रूप में मांट्रियल [कनाडा] के मैकगिल विश्व विद्यालय में चले गये थे। वहां पर उन्होंने रेडियो-सक्रियता के बारे में मुख्य बातें प्रकाशित की थीं। पांच वर्ष पीछे उनको रायल सोसाइटी का एक फेलो चुना गया था। बाद में वह इसके एक प्रतिष्ठित अध्यक्ष बन गये थे। यह पद एक ब्रिटिश वैज्ञानिक के लिए सबसे ऊंचा गिना जाता है

१९०७ में वह इंग्लैंड वापस आ गये थे। पहले वह मैनचेस्टर विश्वविद्यालय में लगे थे जहां उन्होंने ऐसी परीक्षाएं की जिनसे अणु की वर्तमान जानकारी विश्व के सामने आई इस अपूर्व कार्य के बदले में उनको नोबेल पुरस्कार मिला था। विज्ञान की एक शाखा, रसायन शास्त्र, पर उन के अनुसन्धानों ने बहुत गहरा प्रभाव डाला था। इसके बाद उन्हें कैम्ब्रिज स्थित कवेण्डिश लेबोरेटरी [प्रयोगशाला] का निर्देशक नियुक्त किया गया था।

उन्होंने अपने जीवन में सामाजिक और वैज्ञानिक दोनों ही तरह के सम्मान प्राप्त किये थे। १९१४ में उनको सर का खिताब दिया गया था और १९३१ में न्यूजीलैंड में अपनी जन्मभूमि, नेलसन, नगर के बैरन रूथरफोर्ड बन गये थे। उनकी स्मृति में छात्रवृत्तियां जारी करने लिए अब एक लाख पौंड की एक निधि की अपील निकाली गई है।

★

चूहे पकड़ने वाला परिवार

लन्दन में एक परिवार का १२० साल से पेशा है चूहे पकड़ना। जहां कहीं भी चूहे होते हैं, इस परिवार के लोग बुलाये जाते हैं और वे चूहे पकड़ने में हमेशा सफल होते हैं और चूहे पकड़ने के इस परिवार के हथियार हैं—एक कुत्ता और एक सीटी। उस सीटी से जो आवाज निकलती है, वह चूहों की 'मैंसलहज' से बहुत मिलती-जुलती है। चूहे सीटी बजते ही समझते हैं कि यह किसी मैंसा-

- कल्पवृक्ष, चन्दन, वृक्ष और वर्षा सब अपने जीवन केवल परमार्थ के लिए ही है। वृक्ष खुद फल नहीं खाता। बादल स्वयं पानी नहीं पीता। इसी प्रकार साधु-सन्त भी अपने भोगविलास के लिए नहीं, बल्कि परोपकार के लिए ही शरीर धारण करते हैं।

हुए झुकिया की पुकार है, वे निकल आते हैं। इसी तरह यह बात सुनकर चूहों पर ऐसा असर करती है कि वे उसे ढूंढते हुए चले आते हैं। इस साहब परिवार के लोगों की ईमानदारी भी इतनी मशहूर है कि बड़े-बड़े बैंक, दुकानदार और व्यापारी इन्हें अपनी चाबियां दे देते हैं। और साहब रात में दुकान में कुछ चूहों को धोखा देकर किसी ऐसी जगह ले जाते हैं, जहां उन्हें मेज से अलग कर सके और सवेरे चाभी सही सलामत वापस कर देते हैं।

★

कम्पोस्ट किस प्रकार बनाये जा

सबसे उत्तम कम्पोस्ट तथा बीज बनाने का ढंग:—

एक छिछला गड्ढा बनाएं, जो १८ फीट चौड़ा, १० फीट लम्बा, २।। से ३२ फीट गहरा हो। लम्बाई तथा चौड़ाई आवश्यकतानुसार बढ़ाई या घटाई जा सकती है, परन्तु गहराई बढ़ाई नहीं जा सकती है। गड्ढे की मिट्टी उसके तीनों किनारों पर रखा जाय और एक किनारा को समतल छोड़ दिया जाय। इस किनारे पर दिन भर का गोबर तथा कूड़ा [illegible] रखा जाय। जब जमा होने के बाद कम्पोस्ट बनाने का दैनिक कार्य आरम्भ किया जाय। गड्ढे दूसरे किनारों पर चार और जगह छोड़ कर पूरे गड्ढे में पहले कूड़ा करकट बिछा देना चाहिए। उसके बाद गोबर को हाथ से पूरे पर पतला करा बिछा देना चाहिये। फिर एक तह कूड़ा का देना चाहिए। इस तरह दो कूड़े की तह के बीच में एक तह गोबर का होना चाहिए। प्रत्येक दिन उसके ऊपर तह पर एक तह कूड़ा होना आवश्यक है, ताकि गोबर को धूप तथा हवा के सीधे प्रभाव से बचा सके। कूड़ा की तह तीन इंच तथा गोबर का तह एक इंच मोटी होनी चाहिए। प्रत्येक तीसरे, चौथे दिन तह पर थोड़ा पानी छिड़क देना चाहिए। जब तह को ऊंचाई जमीन की सतह से एक फुट ऊंची हो जाय तब पूरा भाग भी देकर तीन चार इंच मिट्टी से मोटा छाद बना कर लीप देना चाहिये, जिसमें वर्षा का पानी बाहर निकल जाय दूसरा गड्ढा बना कर इसी प्रकार भरना चाहिये। सात या आठ सप्ताह के बाद पहला गड्ढा भी खाद से भरा हुआ है, उसमें खाद तैयार हो जायगा।

[शेष पृष्ठ २१ पर]

[illegible] प्रदेश में

लन्दन में शतरंज की चाल : मिश्र के प्रधानमन्त्री का वक्तव्य : स्वतन्त्र पख्तूनिस्तान का निश्चय : 'गुलाम काश्मीर' में नया दल : राजनीतिक दमन प्रारम्भ

लन्दन में हुई काश्मीर चर्चा में कोई नई बात नहीं निकली। राष्ट्रमण्डल के प्रधान मन्त्रियों ने पिसे पिसाये आटे को फिर से पीसा। आशा थी कि शायद श्री लियाकत अली खाँ कोई नये प्रस्ताव करेंगे, किन्तु अभी तक ऐसा कोई समाचार प्राप्त नहीं हुआ। यह स्पष्ट है कि श्री लियाकत ने [illegible] में कोई कसर नहीं रखी है। अन्त तक भी कोई ऐसा मार्ग जो पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री के गले उतर जाये नहीं निकल सका है। अन्य प्रधान मन्त्रियों ने भी इस चर्चा में भाग लिया। इनमें सबसे प्रमुख आस्ट्रेलिया के श्री मैंज़ीज़ हैं।

राष्ट्रमण्डल का सम्मेलन समाप्त हो गया। किन्तु भारत को पूर्णतः अपने पक्ष में खींचने और काश्मीर के प्रश्न पर पाकिस्तान से समझौता कर लेने का ब्रिटिश दांव अभी पूर्णतः सफल हुआ नहीं दीखता। अन्तिम प्रयत्न श्री एटली के निवास स्थान, चेकर्स, में हुए जहां पं० नेहरू उनके साथ [illegible] रहे थे। श्री लियाकत अली खां वहां मोटर द्वारा पहुँचे। स्पष्ट है कि काश्मीर के प्रश्न पर ब्रिटेन तथा पाकिस्तान एक हैं। श्री एटली इस प्रश्न को मिठास से हल करने के प्रयत्न में थे क्योंकि उन्हें पता है कि इस अंग्रेजी मिठास और मुस्कराहट का भारत के प्रधान मन्त्री पर कितना प्रभाव होता है। किन्तु इसका भी कोई [illegible] परिणाम नहीं निकला प्रतीत होता है।

× × ×

पाकिस्तान अन्य मुस्लिम देशों को अपने पक्ष में करने के लिए उनमें अति-शय प्रचार कर रहा है। इस प्रकार के प्रचार पर किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती, किन्तु मुख्य बात यह है कि यह प्रचार भारत को मुस्लिम-विरोधी बताने पर ही आधारित है। विश्व के सभी मुस्लिम देशों में पाकिस्तान घोर भारत विरोधी प्रचार कर रहा है। कुछ लोग इसके शिकार बन भी जाते हैं इसका एक उदाहरण पाकिस्तानी पत्रों में प्रकाशित हुआ मिस्र के पाकिस्तान स्थित राजदूत का पाकिस्तान के अनुकूल वक्तव्य है। प्रसन्नता की बात है कि मिस्र स्थित भारतीय राजदूत द्वारा मिस्र के विदेशमन्त्रालय का ध्यान इस ओर आकर्षित किए जाने पर कैरो से एक विज्ञप्ति प्रकाशित कर यह घोषित कर दिया गया है कि काश्मीर के प्रश्न पर मिस्र पूर्णतः तटस्थ है और उसकी दृष्टि में भारत व पाकिस्तान दोनों मित्र हैं। कराची स्थित मिस्री राजदूत ने भी उस प्रकार के किसी वक्तव्य को असत्य बताया है।

× × ×

भारतीय पत्रकार प्रतिनिधि मंडल से अपनी भेंटमें वफ्द दल के नेता और मिस्र के प्रधान मन्त्री श्री नहसपाशा ने कहा है, "भारतीयों को समस्त भारत का एक रूप में विचार करना चाहिए न कि भारत तथा पाकिस्तान के रूप में, हमें मतों को एक ओर हटा देना चाहिये भारत वा पाकिस्तान को एक दूसरे के अधिक निकट आकर अपने मतभेदों को दूर करना चाहिये क्योंकि यही एक मार्ग है जिससे स्वतन्त्रता दृढ़ हो सकती है।" उन्होंने कहा कि मिस्र दोनों को मित्र मानता है और यह समझता है कि दोनों के मध्य की समस्याएं शान्तिपूर्वक सुलझाई जा सकती हैं।

× × ×

पंजाब विश्वविद्यालय पत्रकार सभा के सम्मुख भाषण देते हुए अफगानिस्तान के नई दिल्ली स्थित राजदूत डा० नजीबुल्लाखाँ, ने पख्तूनिस्तान की समस्या को कोरिया के ही समान विश्व-शान्ति के लिए घातक बताया। उनके कथन के अनुसार यदि अभी तक पख्तू-निस्तान और पाकिस्तान के बीच कोई युद्ध आरम्भ नहीं हुआ है तो इसका कारण यह है कि अफगानिस्तान ने पख्तूनों को लगातार धैर्य तथा शांति से काम करने की सलाह दी है। उन्होंने बताया कि गत तीन वर्षों से पाकिस्तान पख्तूनों पर भीषण अत्याचार कर रहा है, जिसमें सामूहिक हत्या, आकाशी डकैती और स्त्रियों तथा बच्चों पर बम वर्षा करना सम्मिलित है। यह मानवीय व्यवहार और अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का निरादर है। अफगानिस्तान के विरुद्ध प्रचार में पाकिस्तान निकृष्ट और गालियों से भरी हुई भाषा का प्रयोग करता रहा है। अन्त में उन्होंने पाकिस्तान को चेतावनी दी कि यदि पख्तूनों की भावनाएं भड़काई गईं और उनको स्वतन्त्र नहीं रहने दिया गया तो वे सशस्त्र संघर्ष भी प्रारम्भ कर सकते हैं जो कि स्वयं पाकिस्तान के ही अस्तित्व को संकट में डाल देगा।

× × ×

अफगान पत्र प्रतिनिधि मण्डल के साथ आये हुए तीन पख्तून नेताओं ने कल [illegible] में बताया कि कामचलाऊ आज़ाद पख्तूनिस्तान सरकार की स्थापना हो गई है। ईपी का फकीर उसका अध्यक्ष है। इस प्रकार का केन्द्रीय कार्यालय [illegible] के निकट [illegible] में है। इन पख्तून नेताओं के नाम, जोकि एक गैर सरकारी अफगान पत्र प्रतिनिधि मण्डल के साथ भारत आये हैं, क्रमशः श्री मिरजान सेवक, श्री अलीउद्दीन रम-जान और श्री करम अब्दुल कादिर खाँ हैं। एक भेंट में उन्होंने बताया कि केन्द्रीय कार्यालय में एक राष्ट्रीय सभा भी स्थापित हो गई है। उन्होंने यह भी बताया कि पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त की सरकार द्वारा लगभग १२००० पठान बन्दी बनाये हुए हैं।

× × ×

अधिकार-प्राप्ति का सांक्रामक रोग जिस तरह पाकिस्तान पर फैलता जा रहा है, उसका एक और उदाहरण मिलता है। पाकिस्तान द्वारा दबाये हुए जम्मू तथा काश्मीर के भाग में पहले केवल 'आज़ाद काश्मीर' सरकार थी। फिर उसी के दो प्रमुख व्यक्ति चौधरी अब्बास तथा सरदार इब्राहीम ने अपने अपने दल स्थापित किये। हाल ही में समाचार मिला है कि उस क्षेत्र के निवा-सियों के हितों की रक्षा के नाम पर एक

[शेष पृष्ठ २२ पर]

श्री लियाकतअली के विविध रूप

कुमाऊं प्रदेश की देहाती स्त्रियां

★ श्री श्रीमती सरलादेवी

जब से देश में यातायात के यांत्रिक साधनों का प्रसार नहीं हुआ था, तब तक अपनी प्राकृतिक परिस्थितियों व कुमाऊं के पहाड़ स्वभावतः देश के अन्य भागों से अलग बने हुए थे। एक दूसरे के बीच पारस्परिक व्यवहार नहीं के बराबर था। पहाड़ के लोग अपने रस्म-रिवाजों और रहन-सहन में अन्य देशवासियों की अपेक्षा तिब्बती लोगों से अधिक मिलते-जुलते थे।

देश में कभी-कभी जो लड़ाइयां होतीं, उनकी वजह से उनमें हारने वाले सिपाही भाग कर अपने साथियों और अपने घरों से अलग पड़ कर, इन पहाड़ों की ओर चले आते और उनमें छिप कर रहने लगते। इस प्रकार महाराष्ट्र, गुजरात और बंगाल से अनेक पराजित लोग पहाड़ों में पहुंचे। पर वे लोग सिपाही थे, किसान नहीं थे। लड़ना-झगड़ना जानते थे, तलवार चलाना जानते थे, लेकिन हल चलाना नहीं जानते थे। ऐसी हालत में यह स्वाभाविक था कि पहाड़ों के निवासियों को सीधे-सादे समझ कर वे लोग उन्हें दबाने लगते। वे नवागंतुक लोग उनसे काम कराने लगे और उनके मालिक बनने लगे। फलतः पहाड़ों का स्वावलम्बी समाज धीरे धीरे शोषण पर आधारित समाज में परिवर्तित हो गया। पहाड़ों के असली और स्वतन्त्र निवासी अब अपनी ही जन्मभूमि में पराधीन बन कर अछूत और हरिजन माने जाने लगे।

सिपाही जब अपने लड़ाई के पेशे से अलग हो जाते हैं, तो वे स्वभावतः दूसरों की तरह अपनी भी गृहस्थी बनाना चाहते हैं। मगर अपने घरों से से अत्यन्त दूर के क्षेत्रों में पहुंच जाने के कारण उनके सगे-सम्बन्धी उनके घरों पर ही छूट गये थे। अब वे अपने स्वजनों और परिवारों से हीन थे। उनकी शादियां हों, तो कैसे कहां हों?

ऐसी विषम स्थिति में पहाड़ी, स्त्रियों के साथ इन लोगों की शादियां होने लगीं। पर इन स्त्रियों को वे लोग नीची निगाह से देखते थे। उनके संबन्ध में उनके मन में कोई ऊंचे भाव नहीं थे। ऐसे सम्बन्धों की बुनियाद केवल उपयोगितावाद थी। इसके लिए पहाड़ी स्त्री के रूप में उन्हें एक साधन मिल गया। पहाड़ी गांव में अनेक हो जाने के बाद आदमी स्त्री के हाथ का बनाया भात नहीं खाता है, न अपनी मां के हाथ का और न अपनी पत्नी के हाथ का। यह है संक्षेप में कुमाऊं प्रदेश की पहाड़ी संस्कृति की बुनियाद। वहां के सवर्ण मनुष्य उत्पादक और परिश्रमी जीवन से घृणा करते हैं। वे अपने घर की स्त्रियों के प्रति उपेक्षा रखते हैं। मजदूरों और श्रम दूसरों से कराने में वे अपनी इज्जत समझते हैं। इसका सारा बोझ अंत में बेचारी स्त्रियों को उठाना पड़ता है। फलतः आजकल पहाड़ों में हर प्रकार का किसानी काम स्त्रियों को ही करना पड़ता है। पहाड़ी आदमी कोरे निखट्टू बन गये हैं। प्राकृतिक परिस्थितियों की वजह से उनमें एक प्रकार का घुमक्कड़ स्वभाव भी जड़ पकड़ गया है। वे लोग घूमने-फिरने में ही दिन बिता देते हैं। इसलिए रास्ते में जगह जगह जहां छोटे छोटे पड़ाव मिलते हैं, वहां वे लोग दिन में बैठकर चाय, हुक्का और चरस पीते हैं और रात को वहीं डेरा डाल देते हैं। स्त्रियों की कमाई खाते हुए भी स्त्रियों के प्रति उपेक्षा भाव उन लोगों के हृदय से दूर नहीं होता।

अभी एक दो पुश्तों से पहाड़ में आबादी बहुत बढ़ रही है। मगर इसके साथ साथ आबाद जमीन उसी अनुपात में नहीं बढ़ रही फलतः पहाड़ी पुरुषों को रुपये कमाने के लिये नीचे के समतल देश में आना पड़ता है। अपने स्त्री बच्चों को वे पहाड़ में ही छोड़ जाते हैं और कभी कभी उनसे मिलने के लिये आ जाते हैं। इससे पहाड़ी समाज की अवनत अवस्था और भी अवनत होने लगी है। अजीब शहरी रिवाज देहाती जीवन में घर करने लगे हैं। इसके साथ-साथ यातायात की बढ़ती हुई सहूलियतों से देहाती संस्कृति में एक और विचित्र परिवर्तन हो रहा है। मोटर की सड़कों के किनारे के पड़ाव छूने के बाद

[शेष पृष्ठ १२ पर]

युवतियों की ऐश्वर्यपूर्ण रेल गाड़ी

चीन की राजधानी पेकिंग से चीन-सागर के बन्दरगाह सिंतसिन तक जाने वाली रेल ही दुनिया में ऐसी है जिसमें सारा काम महिलाएं करती हैं। गार्ड, टिकिट कलेक्टर, वेटर, कम्बल देने वाली, चाय पानी की व्यवस्था करने वाली, तथा सामान उठाने वाली सब महिलाएं हैं। केवल रेल का ड्राइवर ही आदमी है। उसके स्थान पर भी शीघ्र ही महिला नियुक्त कर दी जावेगी।

मंचूरियन रेलवे पर महिलाओं को बड़ी संख्या में रेल चलाने का कार्य सिखलाया जा रहा है। संख्या अभी गुप्त रखी गई है।

प्रेस ट्रस्ट के एक संवाददाता का, जिसने इस रेल में यात्रा की हुई है, कहना है कि सिंतसिन से पेकिंग जाने वाली यह रेल पूर्ण स्वच्छ तथा सुविधाओं से पूर्ण है। सभी डिब्बे विशाल तथा होटल के कमरों की भांति सुसज्जित हैं। नवयुवतियां रेलवे वेशभूषा में चाय, सिगरेट, केक आदि वस्तुयें मांगे जाने पर देती हैं। वस्तुओं की कीमत अत्यन्त साधारण है।

प्राय. प्रति १५ मिनट के पश्चात दो युवतियां आकर डिब्बा साफ कर जाती हैं। अन्त में एक युवती एक अपील पढ़ती है, जिसमें स्वच्छता के गुणों पर जोर दिया गया होता है तथा यात्रियों से रेल को साफ रखने के लिये कहती है।

यात्रा की समाप्ति पर सामान उठाने वाली युवतियां आकर सामान उतरवाने में सहायता करती हैं। इस कार्य की कोई भी कीमत नहीं ली जाती।

चीन की कुछ विराट रेल व्यवस्था में सिंतसिन से पेकिंग जाने वाली रेल ही केवल ऐश्वर्यपूर्ण रेलवे लाइन है। चीन की रेल व्यवस्था अभी उन्नति के मार्ग पर है। यह कार्य तेजी के साथ विशेषतः कोरिया व अन्य स्थानों में युद्ध सामग्री व सेना भेजने के लिये किया जा रहा है।

सिनेमा का बुरा प्रभाव

स्त्रियों या पुरुषों पर?

उत्तर प्रदेश विधान परिषद् में श्री अख्तर मोहम्मद ने प्रस्ताव पेश किया था कि १५ वर्ष से कम बालक-बालिकाओं के लिये सिनेमा वर्जित कर दिया जाय। श्री गर्ग ने सुझाव दिया कि स्त्रियों को भी सिनेमा देखना वर्जित कर दिया जाय क्योंकि वही छोटे बच्चों को ले जाती हैं जिन्हें फिर आदत पड़ जाती है। श्रीमती शांतिदेवी ने कहा कि 'स्त्रियों के सिनेमा देखने पर प्रतिबन्ध लगा तो सिनेमाघर ही बन्द हो जायेंगे। स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों पर सिनेमा का बुरा प्रभाव पड़ता है। वे अधिक शौकपेशा लड़कियां चाहने लगते हैं।

दहेज प्रथा पर बलि

कोयम्बटूर (मद्रास) में एक २० वर्षीय, हिन्दू देवी ने अपने कपड़ों पर मिट्टी का तेल छिड़क कर, और आग लगा कर आत्म हत्या [illegible] की है। लड़की की सगाई जिस युवक के साथ हुई थी, उसे की तरफ से लड़की के माता पिता से दहेज में बहुत अधिक धन मांगा गया था। लड़की के माता पिता यह रकम देने में असमर्थ थे, और लड़की भी उन्हें विपदा में डालना नहीं चाहती थी। इसलिए उसने इस तरह अपने जीवन का अंत करके इस झगड़े को ही समाप्त कर दिया। लड़की [illegible] दिन को अपने मकान की दूसरी मंजिल पर आत्महत्या की और जब घर वाले तथा मुहल्ले के लोग उसे बचाने गये, वह मर चुकी थी।

अन्न पूर्ण भण्डार

नई दिल्ली में सहायक खाद्य पदार्थों की प्रदर्शनी के बाद अखिल भारतीय महिला खाद्य परिषद् ने एक नया प्रयास आरम्भ किया है। यह प्रयास एक भोजनालय के रूप में, जिसका नाम "अन्नपूर्णा" रखा गया है, आरम्भ किया गया है। इस भोजनालय में चाय के अतिरिक्त खाने-पीने की ऐसी वस्तुएं मिला करेंगी, जो केवल सहायक खाद्य पदार्थों से बनी होंगी। यह भोजनालय देश में अपने ढंग का सबसे पहला है। इसका उद्घाटन नई दिल्ली में १२ फरवरी को श्री, एस० के० पाटिल, द्वारा, किया गया है।

इस अवसर पर श्रीमती लीलावती मुंशी ने बताया कि लोगों की धारणा है कि बिना राशन वाले पदार्थों से तैयार किया हुआ भोजन राशन वाले खाद्य पदार्थों से तैयार किये हुए भोजन से अधिक व्ययसाध्य होता है। परन्तु हमारी परिषद् यह सिद्ध कर देना चाहती है कि यह धारणा गलत है। इस भोजनालय में एक २ आने में चाय तथा अन्य खाद्य पदार्थ, आठ आने में उत्तम जलपान और इससे कुछ अधिक मूल्य में पूरा भोजन मिल सकेगा।

लचीला टब

अमेरिका में वस्त्र धोने के लिये एक नवीन प्रकार के लचीले टबों का निर्माण हुआ है जो घरों में स्वयं चालित धोने की मशीनों में सिकुड़ जाता है और पानी को निचोड़ कर बाहर फेंक देता है। इस लोच टब का निर्माण प्राकृतिक रबड़, धातु के चूर्ण तथा रासायनिक पदार्थों के मिश्रण से हुआ है, जिसके कारण यह टब लचीला और न घिसने वाला बन गया है। इसका रंग हल्का नीला तथा यह गन्धहीन है। अमरीका अमर एक रबड़ कम्पनी ने ढालने की विशेष विधि से एक ही ढंग वाले टबों का निर्माण किया है।

कहानी

● श्री सुदर्शनकुमार गोस्वामी

हलकू ने देखा शहर से आने वाली सड़क पर एक नवयुवक साइकिल पर चढ़ा आ रहा है। कुछ दूर तक समतल मार्ग पर साइकिल आसानी से चलती रही, परन्तु उसके बाद कुछ चढ़ाव आने पर नवयुवक को ताकत से भी काम लेना पड़ा। दाएं बाएं झुक-झुक कर वह पैडल मार रहा था, फिर भी साइकिल बहुत धीरे धीरे चल पा रही थी। चढ़ाव समाप्त हुआ और समतल मार्ग में साइकिल फिर सरसराने लगी। नवयुवक में पर्याप्त उत्साह दिखलाई पड़ रहा था। झूमता-झामता साइकिल चलाता और आस पास भी देखता जाता था। साइकिल जब हलकू के सामने से निकल गई, तब वह भी अपनी लड़की को बुला कर कुल्हाड़ी साथ में ले, उसी तरफ लकड़ी काटने चल दिया।

सड़क के दाहिनी ओर सपाट मैदान दूर-दूर तक फैले थे। पृष्ठभूमि में पर्वतमाला दिखलाई पड़ रही थी। सड़क के किनारे ऊँचे-ऊँचे इमली के वृक्ष खड़े थे, मानों उन खेतों के रखवाले हों, जिनकी मेंड़ पर खड़े होकर वे उन्हें रखा रहे थे। बाईं ओर पहाड़ियों का सिलसिला दूर दूर तक चला जा रहा था। नवयुवक की आँखें कुछ खोजती हुईं उसी पहाड़ियों के सिलसिले को देख रही थीं। कुछ देर उसी प्रकार साइकिल चलाने के बाद उसकी निगाह एक ऐसे स्थान पर पड़ी, जहाँ एक पहाड़ी खत्म होती थी और दूसरी शुरू। दोनों पहाड़ियों के बीच एक दर्रा सा बन गया था। एक बैलगाड़ी सहूलियत से निकल सके, इतना अर्ज था।

नवयुवक ने उसे देखा और प्रसन्नता की झलक उसके चेहरे पर चमक गई। उसने उसी दर्रे की ओर साइकिल का हैंडिल मोड़ दिया। जगह का ठीक निरीक्षण करने के लिए एक बार चारों ओर सतर्क निगाह से देख लिया। कुछ दूर तक साइकिल खड़खड़ाती चली, परन्तु एक तो चढ़ाव दूसरे बीच-बीच में पत्थर पड़े थे। विवश होकर नवयुवक को साइकिल से उतर कर पैदल चलना पड़ा। दर्रा एक फर्लांग के करीब लम्बा था। थोड़ी ही देर में नवयुवक दर्रे के उस तरफ पहुँच गया। यहाँ भी नवयुवक को दूर-दूर तक फैले हुए खेत और उनके पीछे पर्वत श्रेणी दिखाई दी। पहाड़ी के नीचे खड़ा होकर नवयुवक जहाँ से सम्पूर्ण दृश्य को देख रहा था, वहीं कई झाड़ियाँ थीं। इधर उधर पेड़ भी उग आए थे। एक स्थान पर पेड़ों की कटी हुई लकड़ियों का ढेर भी दिखाई दे रहा था। इसी से मालूम पड़ता कि यहाँ मनुष्यों का आवागमन था। नवयुवक ने कुछ देर खड़े होकर विचार किया और फिर साइकिल को दो झाड़ियों के बीच डाल कर एक तरफ की पहाड़ी पर, जो काफी ऊंची दीख रही थी, चढ़ चला।

सीधी पहाड़ी पर उत्साही नवयुवक जैसी जैसी सुविधा देखता, पैर ऊपर रखता और चढ़ता चला जाता। कुछ मिनटों में ही वह पहाड़ी की चोटी पर था। ऊँचाई पर पहुँचने के बाद चारों तरफ की वस्तुएँ कितनी छोटी और कितनी दूर तक की दिखाई देती है, यह तो ऊँचाई पर पहुँचने वाला ही जान सकता है। किसी भी वस्तु को हस्तामलकवत् देखना हो तो उससे ऊपर उठना ही चाहिये। नवयुवक ने चारों तरफ देखा और एक गहरी सांस ली। एक बार कलाई पर बंधी हुई घड़ी की तरफ देखा और फिर झाड़ियों के बीच पड़ी हुई साइकिल को देख कर चारों ओर देखने लगा। पायजामें के जेब से रुमाल निकाला और मुँह पोंछ कर एक लम्बे से साफ पत्थर पर बैठा और फिर लेट गया। कुछ देर थकान उतार कर वह चारों ओर फिर देखने लगा, तब उसके होंठ हिल रहे थे। कुछ समय और इसी प्रकार बीता! उसके बाद नवयुवक ने एक डायरी निकाली और पेन से उस पर लिखने लगा। बीच-बीच में वह प्रायः घड़ी की ओर भी दृष्टिपात करता जाता था....।

'ठक' 'ठक'...'ठक'...'ठक'.....' की अनवरत आवाज ने नवयुवक का ध्यान आकर्षित किया। उसने उस ओर निगाह उठाई, जिधर से वह आवाज आ रही थी। एक अधेड़ वय का पुरुष लकड़ी काट रहा था। पास ही एक लड़की झाड़ियों में से बेर बीन रही थी। ये वे ही हलकू और उसकी लड़की थे, जिसने नवयुवक को मार्ग में देखा था। लड़की की निगाह झाड़ी से उठ कर ऊपर पहाड़ी पर गई तो, उसने उस नवयुवक को देखा— 'दद्दा रे, देखिये उसको जा बैठी पहाड़ियों।

हलकू ने लकड़ी काटना छोड़ कर ऊपर की ओर देखा। उस समय नवयुवक भी उन लोगों की तरफ ही देख रहा था। हलकू ने उसे देखा लेकिन वह वही साइकिल वाला नवयुवक है यह उसके ध्यान में न आया। पहाड़ी की पृष्ठभूमि ने नवयुवक में अजीबपन भर दिया था। हलकू ने देखा एक इकहरे बदन का नवयुवक कमीज और पायजामा पहिने लम्बे घुंघराले बाल और गले में रंगीन रुमाल हाथ में डायरी लिए बैठा है। आज पहले हलकू ने पहाड़ी पर ऐसा किसी व्यक्ति को न देखा था। उसने रामदुलारी से कहा कि वह नवयुवक और गाँवों का नहीं है। रामदुलारी ने और जिज्ञासा की, तो बोला— 'शहर से आओ हुये। अपन कों का!' और काम में लग गया। लेकिन दुलारी की समझ में यह नहीं आरहा था कि वह कहां आया किस लिए! डायरी लिये वह किताब समझ रही थी और फिर पढ़ कर देखकर उसने मन में कहा कि पढ़ने लिखने को तो स्कूल बने हैं। और फिर घर में भी आदमी पढ़ सकता है। शहर यहाँ से कुछ दूर पड़ता था। कुछ देर सोचकर दुलारी ने बोली — 'दरोगा के पाहुने तो नाहीं'

हलकू ने कहा— 'हूं' है......।'

शहर से कोई यहाँ इस प्रकार आ सकता है, यह उनकी कल्पना से बाहर की चीज थी। हलकू ने उस तरफ से ध्यान हटा कर काम शुरू किया। हलकू और दुलारी को देख लेने के बाद नवयुवक ने फिर लिखना आरम्भ कर दिया था।

कुल्हाड़ी चलाने में हलकू के पैर में कुछ चोट आ गई तो, दुलारी को लेकर जल्दी घर चला आया। उसके गांव में थानेदार का घर ही प्रतिष्ठित है और पास के सभी गाँवों के लिए यही एक थाना है। इसलिए थानेदार का रोब भी गांव वालों पर है।

हलकू घर आ रहा था। रास्ते में दरोगा जी मिले तो 'राम राम' कर ली। दुलारी ने याद दिलाया तो पूछ लिया 'सरकार के घरे पाहुने आए हैं का?' हलकू दरोगा जी के यहाँ कभी२ कुछ सौगात मेहमानों के आने पर दे आता था। जिससे दरोगा जी प्रसन्न रहते थे। बोले— 'नहीं तो हलकू। कैसे पूछा?' स्वर में जिज्ञासा थी। तभी हलकू को याद आया साइकिल वाला नवयुवक और फिर दोनों में एकता स्थापित करते देर न लगी। दरोगा जी ने पूछा तो हलकू ने आद्योपान्त नवयुवक की चाल-ढाल और कार्यकलाप बता दिए। दरोगा जी के कान खड़े हुए। शंकास्पद व्यक्तियों पर निगाह रखने का ऊपरी अधिकारियों से आदेश आ चुका था। हलकू से बोले— 'जरा दफ्तर चलो!'

दफ्तर पहुँच कर उन्होंने अपने मातहत को बुला भेजा। फिरदूमल ने दरोगा जी का हुक्म सुना तो दौड़ता आया और दरवाजे के अन्दर आकर बूटों की एड़ी आपस से मिलाकर सलाम झाड़ दी। दरोगा जी बोले — 'फिरदूमल! जरा हलकू का बयान सुनो?'

हलकू ने वही वृत्तान्त फिर से दुहरा दिया, जिसका सार निकलता था कि एक नवयुवक पहाड़ी पर बैठा कहीं कौतूहल देखकर कुछ नोट कर रहा था। एक नोटबुक उसके हाथ में थी। हलकू ने उसे पहिले कहीं नहीं देखा था। नवयुवक पहाड़ी का [illegible] हलकू को [illegible] नवयुवक क्या नोट कर रहा था। परंतु नवयुवक की चारों ओर फिरती हुई सतर्क निगाह को वह देख सका था और वही सब उसने फिरदूमल के सामने दुहरा दिया।

फिरदूमल ने सुना और कुछ देर को गम्भीर विचार में पड़ गया। कुछ देर बाद गंभीर बोला — 'हुजूर, चलना चाहिए'।

हलकू को वहीं बैठने का हुक्म हुआ और दोनों अन्दर के कमरे में चले गए। यहीं पर गुप्त मंत्रणाएं हुआ करती हैं। बैठने के बाद फिरदूमल मुस्कराया और फिर गम्भीर होकर बोला — 'मामला संगीन है।'

'कोई पाकिस्तानी जासूस मालूम देता है।' फिरदूमल ने समझाया।

विदेशी जासूसों का जाल भारतवर्ष में फैला हुआ है यह बात पुलिस विभाग को अच्छी तरह मालूम हो चुकी थी। स्थान स्थान पर इसके प्रमाण मिल रहे थे।

'लेकिन पहाड़ी पर क्या करेगा?' दरोगा जी मामले की तह में जाना चाहते थे। लेकिन बात समझ में न आ रही थी। उनकी बुद्धि कुंठित सी हो गई थी। फिरदूमल बोला— 'हुजूर! मामला [illegible] है। लम्बे बाल, कमीज, पाजामा और रंगीन रुमाल डाले हैं, इससे वह मुसलमान ही होगा। घड़ी में देखकर वह कुछ सोचता था और नोट बुक में देखता व लिखता था। मैं कहता हूं घड़ी में ट्रान्समीटर जरूर है और वह जरूर पाकिस्तान से कुछ बात कर रहा होगा।' फिरदूमल निश्चय पर पहुँच चुका था और उसके चेहरे पर उसका उल्लास नजर आ रहा था। प्रमुख कुछ उज्ज्वल भविष्य की आशा उसे दिखाई देने लगी थी।

'घड़ी में ट्रान्समीटर!' दरोगा जी को आश्चर्य हुआ तो फिरदूमल बोला— 'वाह, क्या आपने नहीं सुना? पिछली लड़ाई में जर्मनी के जासूसों के पास हाथ घड़ी में ट्रान्समीटर थे।'

'अच्छा तो फिर?' दरोगा जी आगे क्या कदम उठाना चाहिए यह सोच रहे थे। 'फिर क्या? चलिए उसे पकड़ा जाय।'

दरोगाजी चार सिपाही, फिरदूमल और हलकू को साथ लेकर उस पहाड़ी पर आए। परन्तु वहां कोई न मिला।

[शेष पृष्ठ २० पर]

लेखक

कुलपति नरेन्द्र निर्जन सा... के लिए अपने घर से निकले। पर सुरम्य गुफा के तट पर शि... ष्यों को शिक्षा दान देने ... लघु प्रयास विराट गुरुकुल के ... में परिवर्तित हो चुका था। रा... पाल और राघवेन्द्र आचार्य ... के प्रमुख शिष्यों में से थे। गुरुकु... की सम्पूर्ण शिक्षा समाप्त ... यह दोनों विद्यार्थी गुरु के प्रेरण... मय सन्देश के साथ जीवन... में प्रवेश करते हैं, तथा जीव... और जगत की समस्याओं ... समाधान ढूंढने की ओर अग्रस... होते हैं। राघवेन्द्र आचार्य ... सम्पर्क में आकर आशीर्वाद ... ओर प्रवृत्त होता है। इधर राज... पाल अनेक प्रकार की मानसिक उथल-पुथल के पश्चात् राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की आवश्यकता का अनुभव करता है तथा ए... चित्तता से उसी कार्य में ल... जाता है। राजपाल अपने ... सहपाठी आनन्द के सम्पर्क में आता है, जो साम्यवादी विचार-धारा से पूर्णतया प्रभावित है। इस प्रकार दोनों ही अपने निर्दिष्ट मार्ग की ओर बढ़ रहे हैं। राघवेन्द्र आचार्य के अधिक सम्पर्क में आता है इसी बीच उसका परिचय एक मुस्लिम महिला जैबुन्निसा से हो जाता है जो उसकी ओर कुछ आकर्षित होने का ढोंग रचती है। राजपाल के प्रयत्नों से सीता उच्छृं-खल कम्यूनिस्ट युवकों के फन्दे से छूटती है।

[गताङ्क से आगे]

[१२]

राघवेन्द्र अपनी सफलता पर मुग्ध था। राजनीति, धर्म और प्रेम। राजनीति और प्रेम ही उसका जीवन था। कुलपति नरेन्द्र—अब वह उन्हें भूल चुका था।

'बेगम आप बहुत लायक हैं।' उसने कहा

खानसामा ने बीच में ही आकर भोजन की सूचना दी। जैबुन्निसा ने कहा—'चलिये मि० राघवेन्द्र खाना खा लें।'

'शुक्रिया, आज मेरा उपवास है।'

'उपवास! आप तो मजहब को नहीं मानते?'

'लेकिन कांग्रेस को तो मानता हूं और बापू के सिद्धांत को तो!' उसने बड़ी गम्भीरता से उत्तर दिया।

\+ × ×

'रमजान, अब तो अपने मालिक के पास चलें।' जैबुन्निसा ने बिस्तर पर बैठते हुए कहा।

'बहुत खूब बीबी, कब चलना होगा?'

'एक बात है रमजान! तूने देखा आचार्य को! कितनी दौलत है उसके पास! कितना ... है उसका।' और उसने एक क्षण विचार किया अपने उस इकरार पर जो उसने पाकिस्तान के सम्बन्ध में मेजर से किया था। 'क्या मैं अपने वतन की थोड़ी भी मदद कर सकती हूं!'

'शादी की भी कोई बात है बीबी!' रमजान ने अपना अधेड़ सिर हिलाते हुए कहा! आखिर जन्म जात संस्कार कहां जाते!

'और पाकिस्तान जाने के बाद उस की जायदाद का क्या होगा? जैबुन्निसा आकाश की ओर देख रही थी!

जैबुन्निसा ने निश्चय किया वह शादी करेगी आचार्य से और मुहब्बत अपने वतन पाकिस्तान से!

और मेजर! उसका मालिक—'वह तो वतन का शहीद है!'

रात करवटें बदलते निकल गई और सुबह होते ही जैबुन्निसा ने देखा, मोटर खड़ी है आचार्य की!

'बेगम साहिब, आपकी दावत है है आज, ठीक ग्यारह बजे!' राघवेन्द्र ने कहा।

'कोई नई बात है?' जैबुन्निसा ने पूछा।

राघवेन्द्र ने मुस्कराते हुए कहा—'कोई नई नहीं मेरा साथ खाना खाने में कोई नई बात होना जरुरी है? आज उनका विचार है कि सब एक साथ खाना खायें, और भी कई लोग आयेंगे!'

वह रात की बात स्मरण कर एक बार निराश हो गया पर जैबुन्निसा की मुस्कराहट ने उसे अपने आपको भुला दिया था!

'जरूर! जरूर! मैं आ जाऊंगी।

मोटर चली गई। जैबुन्निसा ने सोचा राघवेन्द्र! राघवेन्द्र को अब दूर करना पड़ेगा! आचार्य और राघवेन्द्र! आचार्य के पास धन था, इज्जत थी! और राघवेन्द्र! राघवेन्द्र अधपढ़ोल युवक!

[१३]

जब से सीता का राजपाल से परिचय हुआ था, वह मानने लगी थी कि व्यक्तित्व भी कोई वस्तु है। मानव की प्रतिभा सम्पन्न आकृति को देख कर उस के नेत्र गड़ जाया करते थे। वह ढूंढना चाहती थी जीवन की इस अर्द्ध-साधना को। साम्यवाद की सामाजिक व्यवस्था और समस्या के हल में उसे कुछ शंका हो चुकी थी—पर अभी भी वह भारतीय दर्शन और आध्यात्म को श्रद्धा एवं श्रेष्ठ दृष्टि से नहीं देख पाती थी। उसके ऊपर होने वाले आठ वर्षों के संस्कार और वातावरण में उसकी शुभ्र आत्मा प्रकाश की लौ का अनुभव तो करती थी किन्तु स्वीकार करने में संकोच था। यह बात नहीं थी कि उसने राजपाल को देखते ही अपने मन में परिवर्तन कर लिया हो किन्तु उसका संकुचित बुद्धि वैचित्र्य अन्य सिद्धान्तों को अपनाने के पक्ष में न था। वह अपने सिद्धांतों का प्रतिपादन तो किसी भी स्थिति में करती ही थी किन्तु अन्य वादों के भिन्न सत्य को अस्वीकार करने की मूर्खता का प्रवेश उसमें न हो पाता था।

'मि० आनन्द'—सीता ने पूछा, 'आपके सिद्धान्तों का विषय क्या है? मानव या समाज?'

'क्या अर्थ?

'यह कि जिन बातों का प्रतिपादन कर आप या आप के साथी जन्म चलने वाली संस्थाओं के विषय में कुछ आश्चर्य-जनक दोष निकाल कर, जनता को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, उनके मूल में मनुष्य का अस्तित्व है या समाज का?'

'दोनों का ही! क्या आप व्यक्ति से भिन्न समाज और समाज से भिन्न व्यक्ति के अस्तित्व पर विश्वास रखती हैं?' आनन्द हंस पड़ा।

प्रश्न टेढ़ा था। वस्तुतः सीता इस प्रश्न की अपेक्षा नहीं कर रही थी। बात समझ में नहीं आई—'इसे तो कभी आपके गुरु राजपाल जी ही इसका समाधान करना पड़ेगा।' उसने कहा। वह आनन्द के जीवन में परिवर्तन को देख कर, उसका मूल कारण राजपाल के विचारों को ही समझती थी।

आनन्द ने देखा सीता के प्रश्नों की पृष्ठभूमि में उसके ही सिद्धान्तों की ध्वनि है। उसे आश्चर्य था, और आश्चर्य तो उसे स्वयं पर भी हुआ। अभी तक किसी भी मार्ग को वह श्रेष्ठ तथा लाभदायक नहीं समझता था या यह कहिये कि उसने कभी समझने का प्रयत्न भी नहीं किया था पर राजपाल, उसे यदि कोई प्रभावित कर सका था तो वही! सत्य और शील का मूर्तिमान स्वरूप! उसने देखा राजपाल में जीवन की उमंग है—और यथार्थता भी! केवल कल्पना नहीं! उसका विषय था—समाज का वास्तविक नेतृत्व, निस्वार्थ वृत्ति से। समाज के व्यक्तियों का निर्माण, एकाग्रता से पूर्ण और द्वेष, भेदभाव और ईर्षा से रहित 'और फिर अब हमारा समाज संसार के सब प्रयोगों को अनुभव में उतार कर रद्दी की टोकरी में फेंक चुका है तो फिर दूसरों के प्रयोगों पर विश्वास!' हमें बहुत सोच विचार कर कदम रखना चाहिये—आनन्द भी अब तो अनुभव कर रहा था।

और विचारों के साथ उसे भी एक धुन हो गई थी अपने विचारों का प्रचार! किन्तु कोरे प्रचार में ही उसका विश्वास नहीं था।

फिर सीता! समाज से बहिष्कृत नवयुवती! उसे रात्रि का वह दृश्य याद था। पर क्या वह उससे इसलिये प्रेम न करे कि वह पतित हो गई और बिना विचारे! नहीं! यदि वह उसे पुनः भारतीय समाज में दीक्षित न कर सका तो क्या होगा उसका परिणाम वह जानता था।

उसे विश्वास था सीता अपने भूले हुए मार्ग पर पुनः लौट सकती है। और व्यक्ति, व्यक्ति के परिष्कार से ही तो समाज उन्नति की ओर अग्रसर हो सकता है।

और कभी कभी सीता, आनन्द के इस परिवर्तन में आश्चर्यभरी दृष्टि से एकटक पया देती थी। दोनों में आत्मीयता भी किस की ... होती है।

सम्पादक के नाम पत्र

हमारे पाठक क्या कहते हैं ?

राजस्थानी सैनिकों से अन्याय

भारतीय सेना ही वह आधार है, जो राष्ट्र को बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार के खतरों से बचा कर उसकी शांति कालीन योजनाओं को कार्य में परिणत करने का अवसर दे सकता है। पर दुर्भाग्यवश आज भारतीय सेना के एक महत्वशाली अङ्ग के साथ अन्याय किया जा रहा है। वह महत्वशाली अङ्ग है, नवनिर्मित रियासती संघ।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पूर्व भारतीय सेना का निर्माण वर्गगत विशेषताओं के आधार पर होता था और अब स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय विधान के अनुसार जातिगत और वर्गगत विशेषाधिकारों की समाप्ति कर दी गई और सभी जातियों और वर्गों को सेना में नौकरी आदि का समान अवसर दिया गया। इस प्रकार सेना के जातिगत वर्गीकरण की समाप्ति कर दी गई, पर अभी तक अंग्रेजों के समय के जातिगत आधार पर निर्मित नाप-तोल का स्तर ज्यों का त्यों बना हुआ है। इसी पुराने स्तर के अनुसार राजस्थान की सेना की छंटनी की जा रही है और जो सिपाही ५ फीट ६ इंच से कम ऊंचाई वाला या सीने में ३४ इंच से और वजन में १२० पौंड से कम है उसे निकाला जा रहा है। अन्य स्थानों के सैनिकों के ऊपर तो यह उपर्युक्त शर्तें लागू नहीं, फिर राजस्थानी सैनिकों पर ही यह जुल्म क्यों किया जा रहा है ? राजस्थान में इसके पूर्व दो बार एक युद्ध के पश्चात् और दूसरा रियासतों के विलीनीकरण के समय सेना की छटनी हो चुकी है। अब बचे हुए सिपाही हर प्रकार से पूर्ण दृढ़ और योग्य हैं। फिर भी उनको डाक्टरी परीक्षा के आधार पर निकाला जा रहा है। राजस्थान के कुछ भागों (गोडवाड मेवाड) के सिपाहियों के नाप-तोल का स्तर भी गोरखों और डोगरों के बराबर ही है। इस आधार पर इन परीक्षित, दृढ़ और वीर सिपाहियों को सेना से निकालना क्या उनके साथ नैतिक अन्याय नहीं है ?

जब रियासतें संघों में विलीन हुई थीं तब भी नौकरीपेशा व्यक्तियों को यह आश्वासन दिया गया था कि उनकी सेवाओं का पहले की भांति ही आदर किया जायगा। आज सेना के सिपाहियों को बड़ी निर्दयतापूर्वक निकाला जा रहा है।

डाक्टरी परीक्षा का बहाना लेकर अधिकांश सिपाहियों को बहुत ही हल्के नेत्र-रोग के कारण अयोग्य ठहराया गया है; जिन सिपाहियों के नेत्रों में यह नगण्य रोग बताया गया है वे विशेषकर आर्मर्ड-कोर के हैं, जो अब तक सीमान्त प्रदेश की बालुकामयी भूमि पर कुशलतापूर्वक कार्य कर चुके हैं। रेगिस्तान में आर्मर्ड कोर में कार्य करने से ट्रोकोमा जैसे साधारण रोगों का हो जाना स्वाभाविक है। इसी को बहाना बनाकर सरकार को इन युवा सिपाहियों के जीवन के साथ खिलवाड़ तो नहीं करना चाहिये।

अब तक जिन सिपाहियों को सेना से निकाल दिया गया है, उनको वचन के बावजूद कहीं भी नौकरी नहीं मिली है।

अधिकांश सेना के सिपाही जब सेना में नौकरी करते थे, तब उनकी भूमि पर दूसरे कृषक काम करते रहे। सरकार के कानून के अनुसार अब वे सिपाही उन कृषकों से अपनी भूमि नहीं छुड़ा सकते। ऐसी दशा में उनके जीवन का एक मात्र आधार कृषि का अधिकार भी उनसे छिन गया।

सरकार के अन्य विभागों की भांति ही सेना विभाग में भी अब अनियमितता और सुस्ती से कार्य होने लग गया है। यही कारण है कि दो और तीन वर्ष पूर्व सेना से अवकाशप्राप्त व्यक्तियों को अभी पेन्शन और मंहगाई का भत्ता आदि मिलना प्रारम्भ नहीं हुआ। मंहगाई के भत्ते में तो अभी तक पूर्ण असमानता ही दिखाई पड़ रही है। केन्द्र के नीचे सेना के आ जाने के पश्चात भी बहुत सी रियासतों की सेनाओं को अन्य प्रान्तीय सेनाओं के समान मंहगाई भत्ता अब तक नहीं मिलता है।

यदि सरकार व्यय में कमी करने के कारण ही इन सिपाहियों को निकाल रही है तो दूसरी ओर वह सेना और पुलीस में दैनिक नई भर्ती क्यों करती जा रही है ?

—मंत्री जोधपुर
भू. पू. सैनिक संघ

जनगणना और आर्यसमाज

फरवरी में होने वाली जनगणना में जो लोग किसी जाति या जन्मजाति को नहीं मानते, वे हिन्दू नहीं माने जायेंगे, उनके लिये ० शून्य लिखा जायगा जैसे आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज और राधा स्वामी, इनको हिन्दू भी नहीं लिखा जायगा।

यह आशय है, एक लेख का जो मैंने काशी में निकलने वाले सन्मार्ग में पढ़ा है। मुझे मालूम नहीं कि यह कहां तक ठीक है ? क्या आर्यसमाजी अपने को आर्य नहीं लिखा सकेंगे ? क्या आप अपने पत्र द्वारा सार्वदेशिक व आर्य-प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों का ध्यान इधर खींचेंगे। समय बहुत थोड़ा है। आर्य जनता को वास्तविक स्थिति से सूचित करना चाहिये।

—एक आर्यसमाजी

भ्रष्ट साहित्य पर प्रतिबन्ध

श्री सीताराम टण्डन ने हिन्दी में बढ़ते हुए भ्रष्ट साहित्य की ओर हिन्दी-संसार का ध्यान 'नवजीवन' द्वारा खींचा है। वे कहते हैं—

"हिन्दी भाषा के एक लेखक हैं, श्री कुंवर कामताप्रसाद कुशवाहा 'कान्त'। खून का प्यासा, रक्त मंदिर, दानव देश आदि में तो कुछ घटनाओं का ऐसा अश्लील वर्णन है कि भाई-बहनों के सामने तो आप उस पुस्तक को रख नहीं सकते।

"कुछ दिन पहले मैं पटने से प्रकाशित उपन्यास 'घेरे से बाहर' पढ़ रहा था। इसके लेखक हैं श्री द्वारकाप्रसाद एम० ए०। घटनाओं का अश्लील वर्णन करने में आप कुशवाहा से भी बढ़े हुए हैं। सारा उपन्यास पढ़ जाइए। आपको यह मालूम होगा जैसे आप 'काम-शास्त्र' की पुस्तक पढ़ रहे हैं, जिसे उपन्यास का रूप दे कर लिखा गया है। सारे उपन्यास में चुम्बन, आलिंगन, विवाहित जीवन की सुखमय रातें, जवानी के घृणित रोमांस आदि के अलावा कुछ है ही नहीं।

"जनता की कामवृत्तियों को इस प्रकार के वर्णन से उत्तेजना ही प्राप्त होती है, सुधार की बात तो दूर रही, स्वयं भी वैसा ही करने की इच्छा बहुतेरे सीख सकते हैं। जनता को तो एक साधन चाहिए। उसे अपने मनोरंजन के लिए कुछ चाहिए, चाहे उसे अच्छा मिले या बुरा। वह अपना अच्छा-बुरा सोच ही नहीं सकती।

"प्रेमचन्द ने सेवासदन में वेश्याओं का वर्णन किया है, उन वेश्याओं का, जिनका जीवन ही घृणित है, जहां हर समय उसी प्रकार के कर्म हुआ करते हैं, परन्तु वह वर्णन एक ऐसे दृष्टिकोण को ले कर किया गया है जिसके पढ़ने पर मनुष्य के हृदय में कोई भी कुविचार कहीं पर भी स्थान नहीं पाता। यह है है उस महान जनवादी कलाकार 'प्रेमचंद' के दृष्टिकोण की महत्ता, और एक दृष्टिकोण यह है जिसमें बुराई की नंगी तस्वीर इतने आकर्षक रूप में रखी जाती है कि मनुष्य बुराई को हटाना नहीं चाहता बल्कि उसके चटकीले रंगों को देख कर स्वयं उनकी ओर बढ़ने के लिए हाथ फैलाता है।"

मैंने भी 'घेरे के बाहर' पुस्तक पढ़ी है। मेरा तो विचार है कि इससे भ्रष्ट पुस्तक मैंने नहीं पढ़ी। मुझे तो आश्चर्य है कि बिहार के सरकारी अधिकारियों ने इस पुस्तक पर प्रतिबन्ध क्यों नहीं लगाया ? पुस्तक के प्रकाशक और लेखक दोनों को कानूनी तौर पर संभवतः दण्ड दिया जा सकता है। बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रामवृक्ष शर्मा बेनीपुरी से मैं अनुरोध करूंगा कि वे साहित्य और जनता की सेवा के नाम पर इस दिशा में यथोचित प्रयत्न करें।

—केवलकृष्ण

रे० स्टेशनों पर राष्ट्रपति के चित्र

रेलवे बोर्डने स्टेशनों पर राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के चित्र को लटकाने का निश्चय कर लिया है। बम्बई के कलाकार श्री नागेश्वर राव को इसके लिए २००० चित्र तैयार करने का आदेश दे दिया गया है। यह कदाचित् इसलिये हुआ है कि रेलवे बोर्ड ने राष्ट्रपति का चित्र लगाने के बाद की स्थिति पर विचार नहीं किया है। आगामी निर्वाचन में राजेन्द्र बाबू के राष्ट्रपति न चुने जाने पर (परमात्मा ऐसा न करे) स्टेशनों पर लटके हुए उनके चित्रों को किस माल गोदाम में रखा जायगा, इसका विचार तो रेलवे बोर्ड ने कर ही लिया होगा।

— विमलकान्त

हिन्दी में तार

पिछले दिनों हिन्दी साहित्य-सम्मेलन में १२ वर्ष तक हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी को जारी रखने का बहुत विरोध किया गया था। यों भी समस्त हिन्दी-संसार इस प्रश्न पर क्षुब्ध है और उसका क्षोभ उचित है, किन्तु क्या विरोध और रोष प्रकट करने मात्र से हिन्दी को हम राष्ट्रभाषा बना सकेंगे ? क्या सरकारी अधिकारियों को गाली देकर ही हमारे कर्त्तव्य की इति श्री हो जायगी ? क्या हमारा स्वयं कोई कर्त्तव्य नहीं है ? हिन्दी में तार देने की व्यवस्था सरकार ने बहुत से नगरों में कर ली है, किन्तु कितने हिन्दी प्रेमी हैं, जो इस व्यवस्था का उपयोग करते हैं ? जितनी जल्दी और जितनी अधिक संख्या में हिन्दी तारों का प्रयोग बढ़ जायगा, उतनी जल्दी हम हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में समर्थ हो जायंगे। क्या हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रान्तीय व स्थानीय शाखाएं नागरिकों को हिन्दी में तार देने की प्रेरणा करेंगी। इस व्यवस्था का पूर्ण लाभ उठाकर ही हम सरकार को हिन्दी की दिशा में अगला कदम उठाने के पात्र हो सकेंगे।

— कृष्णचन्द्र

विशेषज्ञों को दण्ड दो

केन्द्रीय सरकार ने पूर्व निर्मित मकानों का कारखाना बन्द कर दिया है। मालूम हुआ है कि पिछले महीनों में जो मकान इस कारखाने में बनाये गये थे, वे सब तड़क गये हैं और उनमें बड़ी बड़ी

[शेष पृष्ठ २२ पर]

जासूस

[पृष्ठ १२ का शेष]

...कर उधर की छान बीन का कोई परिणाम न निकला। क्या किया जावे ? कुछ समझ में न आता था। दो एक सिपाही शहर की तरफ भी भेजे। शहर के थाने में भी सूचना भेजी। परन्तु कुछ हाथ न लगा। हलकू से दरोगा ने कहा कि अगर वह नवयुवक फिर दीखे तो एक दम खबर दी जावे। सिपाहियों को सड़क पर पहरा देने का हुक्म हुआ।

दो एक दिन बाद ज्योंही हलकू लकड़ी काटने आया उसकी निगाह ऊपर को गई। देखा वो नवयुवक ऊपर ही चढ़ा चला आ रहा था। हलकू ने दुलारी से कहा—'तू लनक इवे बैठी रहिए। मैं अभी आऊत हों।' और गांव की तरफ चल दिया। हलकू चला गया परन्तु दुलारी वहां बैठी न रही जहां झाड़ी में हलकू उसे बैठे रहने को कह गया था। वह उठी और बेर खाती खाती पहाड़ी पर कुछ चढ़ गई। वह वही रास्ता था, जिस पर होकर नवयुवक ऊपर चढ़ गया था। बेर बीनते बीनते उसकी निगाह एक लाल-सी वस्तु पर पड़ी। वह उसने उठा ली। वह उस नवयुवक की डायरी थी जिसे वह ऊपर चढ़ते समय गिरा गया था, आज उसके हाथ में एक बड़ा कोरा सा सफेद कागज था, जिसमें उसका ध्यान लग रहा था। वह डायरी लेकर लौट आई और हलकू की प्रतीक्षा करने लगी। आज उसे एक नवीन खोज कर लेने का आनन्द हो रहा था।

हलकू ने सूचना दी तो दरोगा जी और फितूरमल सब सिपाहियों को लेकर आ पहुँचे। पहिले छिपकर उसे देखने का निश्चय हुआ। सिपाहियों को हुक्म मिला तो उन्होंने पहाड़ को चारों ओर से घेर लिया। दरोगा जी और फितूरमल जहां से नवयुवक ऊपर चढ़ा था उसके ठीक दूसरी तरफ से ऊपर चढ़े और घने वृक्षों की ओट से उसे देखने लगे। नवयुवक के हाथ में लम्बा सा सफेद कागज देखा तो फितूरमल ने दरोगा जी से धीरे से कहा 'वह देखो आज तो हाथ में नकशा भी है।' नवयुवक उस समय चारों ओर बड़े ध्यान से देख रहा था। कुछ चिन्ता के भाव चेहरे पर दिख रहे थे। उसने अपनी सब जेबें टटोलीं और जब डायरी न मिली तो जल्दी से नीचे उतरने लगा। उतरने के पहिले उसने एक बार चारों ओर और देख लिया। फितूरमल ने दरोगा जी से कहा—'देखा, कितनी सतर्कता से चारों ओर देख रहा है।'

ज्यों ही उसने कुछ कदम रखे कि दरोगा जी और फितूरमल अपनी अपनी पिस्तोल ताने चिल्ला उठे—'खबरदार। एक पैर भी आगे न रखना।' नवयुवक ने घूम कर देखा तो सकपका गया। मामला क्या है कुछ समझ में न आया। एक और हुक्म हुआ—'हैन्डस्-अप' और उसने अपने हाथ ऊपर कर दिए तो कागज नीचे गिर पड़ा। फितूरमल ने लपक कर कागज उठा लिया। कुछ रेखाएं उस पर खिंची हुई थीं और कई जगह बिन्दु के चिन्ह बने हुए थे। इसके बाद उसके कपड़ों की तलाशी ली तो कुछ महत्व की चीज न मिली। नवयुवक चिढ़कर बोला—'आखिर इस सबका मतलब क्या है ?'

'सब समझ में आ जायगा। डायरी कहां है ?'

'पता नहीं, कहीं गिर गई होगी...'

'क्या ? पता नहीं। सीधे बताओगे कि फिर ..... '

फितूरमल ही उससे जवाब सवाल कर रहा था जब कि दरोगा जी पिस्तोल ताने खड़े थे। नवयुवक अपने बारे में कुछ कहने को होता तो फितूरमल उसे डांट देता और चुप रहने को कहता।

'मैं सब समझता हूं। तुम्हारे कहने की कोई आवश्यकता नहीं।' फितूरमल को अपनी धारणा में पूर्ण विश्वास था। लेकिन कोई पुष्ट प्रमाण न मिल रहा था। जब कुछ हल न हुआ तो शहर के थाने में ले चलने का निश्चय किया।

पहाड़ी के नीचे वाली सड़क पर बस सरविस चलती थी। दूसरी बस आई तो उसमें बैठकर दरोगा जी और फितूरमल नवयुवक को कड़ी निगरानी में शहर कोतवाली ले आए। वहां पुलिस इन्सपेक्टर उपस्थित थे। फितूरमल ने उन्हें पूरा मामला समझाया। उन्होंने नवयुवक को बुलाकर पूछताछ शुरु की।

इन्सपेक्टर ने पूछा—'क्या तुम जासूसी कर रहे थे ?'

नवयुवक कुछ बोलने ही वाला था कि फितूरमल ने कहा —

'साहब, यह क्या बतलायेगा। मैं आपको सब बतला ही चुका हूं।' नवयुवक ने कहा—'इन्सपेक्टर साहब ! ये हजरत मुझे कुछ बोलने ही नहीं देते। मुझे फिजूल यहां तक ले आए हैं और मुझे हैरान होना पड़ा बह ब्याज में .. '

फितूरमल—'यह तो इन्सपेक्टर साहब अच्छी तरह समझते हैं। अब ठीक ठाक बतला दो .. '

इन्सपेक्टर ने फितूरमल को एक दम चुप रहने की आज्ञा दी और नवयुवक को आगे बोलने को कहा, नवयुवक ने बयान दिया तो मालूम हुआ कि उसका नाम रामचरन शर्मा है और वह कालेज में B A का विद्यार्थी है। छुट्टियों के दिनों में प्राकृतिक सौन्दर्य देखने का शौक उसे पहाड़ी पर ले जाता है जहां वह कविता करता और चित्र भी बनाता है। कभी किनारे में बैठकर नदी को देख कर ध्यान लगाने का अभ्यास भी कर लेता है। वह लम्बा कागज, जिसे फितूरमल किसी शहर का नकशा बता रहा था, पहाड़ी के नीचे के मैदान की रूपरेखा था और उसमें बने बिन्दु हलकू और दुलारी की आकृतियां बनाने के स्थान थे। फितूरमल के कहने पर जब रामचरन की घड़ी को देखा गया तो वह साधारण घड़ी ही सिद्ध हुई उसमें ट्रान्समीटर का नाम निशान न था। 'आपकी डायरी क्या हुई ?' इन्सपेक्टर ने पूछा। 'न जाने कहीं रास्ते में गिर गई या क्या हुआ पता नहीं। चारों तरफ मैं उसे ही खोज रहा था कि मुझे इन लोगों ने पकड़ कर यहां ला बैठाया। मेरी साईकिल भी वहीं पहाड़ पर पड़ी हुई है।...'

इतने में एक आदमी हांफता हुआ आया और दरोगा जी से बोला—'सरकार ! जो किताब दुलारी खोजने पर मिली ती। कछु काम की हुइवे जा समझ के हुते ले आयो।'

'लेकिन हलकू ! तू आया कैसे ?' पैदल तो इतनी जल्दी आ नहीं सकता। दरोगा जी ने डायरी ले ली। झाड़ी में हलकू को साईकिल पड़ी दिख गई थी और वह भी इस मामले से सम्बन्ध रखती है वह समझ कर वह उसे लेता आया था।

साइकिल का प्रचार गांव में भी हो चुका था और हलकू को साइकिल चलाना आता था। यह दरोगा जी को मालूम था। उन्होंने डायरी और साइकिल का हाल इन्सपेक्टर को बतलाया। डायरी लेकर इन्सपेक्टर ने देखा तो उसमें कविताएं लिख रही थीं और राजनीति संबन्धी कोई बात उसमें न लिख रही थी। रामचरन ने बताया कि डायरी में ही उसका परिचयपत्र भी रखा था। इन्सपेक्टर ने उसे देखा तो रामचरन को एक भला व्यक्ति मानने में कोई आपत्ति न रही। रामचरन की सचाई पर विश्वास हो गया तो इन्सपेक्टर दरोगा पर बिगड़ उठे — 'शरीफ आदमियों को इस प्रकार परेशान किया जाता है। . ..

दरोगा खड़ा बगलें झांकने लगे। बोले— 'वे, फितूरमल ने ही सब सोच निकाला....'

'अरे! इसके सिर में तो फितूर ही फितूर भरा रहता है। .. ... '

फिर इन्सपेक्टर रामचरन से बोले— 'मुझे अफसोस है कि आपको फिजूल परेशानी उठानी पड़ी। मैं अपने मातहतों की गलती के लिए क्षमा चाहता हूं।'

रामचरन — 'तकलीफ तो कुछ नहीं हुई। आज का दिन बाकी रह गया। यह तो अच्छा ही हुआ कि साइकिल और डायरी यहीं आ गए हैं। वरना उन्हें ढूंढने जाना पड़ता। अच्छा तो अब इजाजत दीजिए।'

जब रामचरन साईकिल पर बैठकर चला तब फितूरमल और दरोगा जी के चेहरे उतरे हुए थे और इन्सपेक्टर को उनकी बुद्धिपर तरस आ रहा था।

भारत और नेपाल के सम्बन्ध—२

१९४७ की ६ दिसम्बर को स्वतन्त्र भारत का प्रथम राजदूत हिज् एक्सी लैंसी विंग कमांडर सरदार सुरजीत सिंह मजीठिया नेपाल के दरबार में पहुँचे। वे बड़े सुयोग्य, अनुभवी और पौराणिक ब्राह्मणों, रईस मिजाज क्षत्रियों, अभिमानी ठाकुरों और विश्वविख्यात योद्धाओं के देश नेपाल के लिए अत्यन्त उपयुक्त व्यक्ति थे।

१० दिसम्बर को भारतीय राजदूत ने हनुमान ढोक दरबार हाल में अपना प्रमाण पत्र पेश किया। उनके भाषण से उनकी सरकार और उनके देशवासियों के नेपाल की सरकार और नेपालवासियों के प्रति सच्ची भावना का परिचय मिलता था। उन्होंने कहा कि "मैं भारत के प्रथम राजदूत की हैसियत से सदा यथाशक्ति प्रयत्न करता रहूँगा कि भारत और नेपाल के बीच उस बन्धुभाव के संबंध को जिन पर भौगोलिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों की छाप है। अतीत काल से चले आये हैं और निकट के बन्धन दृढ़ होते चले जायें। मुझे इस बात की पूरी आशा है कि नेपाल और भारत के बीच अनेकों बातों की समानता है कि हम दोनों अपने अपने देशों को सुख और शांति के लिए यत्न करते हुए दुनिया के सब देशों का एक संघ बनाने के लिए औरों को भी मार्ग दिखा सकेंगे। यह हमारी इच्छा है और यही हमारा सतत् प्रयत्न रहेगा कि आपके तथा अन्य राष्ट्रों के सहयोग से हमारे अपने अपने राज्यों की शक्तियां सेवा, स्वतन्त्रता और न्याय के ही काम आयें।

नरेश ने अपने उत्तर में जो कि मुख्य सेनापति द्वारा पढ़कर सुनाया गया कहा कि—

"हमें विश्वास है कि राजदूतों के आदान प्रदान से जिसका प्रारम्भिक अपने देश की ओर से श्रीमान के आगमन से हुआ है और जैसा कि आपने ही कहा कि हम दोनों में बहुत समानता है निस्सं-देह हमारे और आपके बीच मित्रता और बंधुता के संबंध में और दृढ़तया अभिवृद्धि होते जायेंगे।"

उसी दरबार में नेपाल महाराज (प्रधान मंत्री) ने कहा कि

"इससे बढ़कर हर्ष और अनुकूलता की क्या बात हो सकती है कि ऐसे पड़ोसी देश से कूटनीतिक संबंध स्थापित हो मित्रता और बन्धुत्व की भावना के भी ऊपर अतीत काल से सांस्कृतिक बंधनों से बंधा हो।" नेपाल और भारत की मित्रता बड़ी पुरानी है और मैं आशा करता हूँ कि ज्यों ज्यों हम हाथ में हाथ डाले उन्नति के मार्ग पर बढ़ते जायेंगे यह मित्रता की ओर बढ़ती जायगी। मैं अपनी ओर से श्रीमान को आश्वासन देता हूँ कि हमारी ओर से यही प्रयत्न होगा कि यह घनिष्ठता और बढ़ती जाय।"

सरदार मजीठिया ने दोनों देशों के बीच निकटता के संबंध बनाये रखने की दिशा में सराहनीय कार्य किया। ८ जून सन् १९५१ को वे वापिस चले गये।

भारत के वर्तमान राजदूत सर चन्द्रेश्वरप्रसाद नारायणसिंह ने ३ जुलाई १९४९ को अपने प्रमाण पत्र पेश किये। वे बिहार के भूमिधार परिवार से हैं और बड़े विद्वान। वे पटना विश्व-विद्यालय के वाइस चांसलर भी रह चुके हैं।

भारतीय दूतावास

नेपाल का भारतीय दूतावास दूसरी श्रेणी के दूतावासों में सर्वप्रथम माना जाता है। इस दूतावास का वार्षिक व्यय ३ लाख रुपया है जिसमें से २५ प्रतिशत राजदूत प्रथम सचिव (फर्स्ट सेक्रेटरी) रजिस्ट्रार के वेतनों पर व्यय होता है। भारतीय दूतावास निम्न कार्य करता है।

भारतीय सेना के अवकाश प्राप्त (रिटायर्ड) गुरखा सैनिकों को पैंशन बांटना। ७००० से ऊपर भू० पू० गोरखा सैनिक काठमांडू में भारतीय दूतावास से १२ लाख रु० सालाना पैंशन प्राप्त करते हैं।

२. भारतीय सेना के मृत गोरखा सिपाहियों की विधवाओं, बच्चों और आश्रितों के दावों का फैसला करना या उनके मामलों को भारत सरकार के पास भेजना।

३. वह चुंगी लौटाने का प्रबंन्ध करना जो माल विदेशों से नेपाल के लिये आता है पर बन्दरगाह पर भारत सरकार उस पर चुंगी लेती है।

४. भारत या विदेश से नेपाल पहुँ-चने वाले माल और सवारी की जांच पड़ताल करना पहाड़ों से प्रतिवर्ष २५-गोरखा सिपाही अपनी पैंशन लेने गोरख-पुर आते हैं। गोरखपुर के गुरखा डिपो के खजाने से ७० लाख के लगभग रुपया प्रतिवर्ष पैंशन के रूप में दिया जाता है। इसी डिपो और इसकी घरवी-लिंग शाखा के द्वारा भारत सरकार गुरखा रेजीमैंटों की लगभग २५ हजार रंगरूट भर्ती करती हैं आजकल भारतीय सेना में १२ स्थायी और ६ अस्थायी रेजीमैंटें है।

भारत और नेपाल की ६०० मील तक सीमा मिलती है। इतनी सीमा के होते भी आपस में आज तक झगड़ा नहीं हुआ और इस प्रकार दोनों देशों के बीच किसी प्रकार की "सीमान्त समस्या" नहीं है। रक्त की दृष्टि से नेपाल के ८० प्रतिशत निवासी उसी जाति के हैं जिसके भारतवासी और ८० प्रतिशत लोग हिन्दू धर्म को मानते और हिन्दुओं के ही देवी देवताओं को पूजते हैं। हिन्दुओं की ही भांति नेपाली भी दश-हरा, होली, दिवाली आदि हिन्दू त्योहारों को उसी उत्साह और भक्ति के साथ मनाते हैं।

भारत ब्रिटेन और नेपाल तीन शक्तियों के बीच हुए जुलाई १९४७ के समझौते अनुसार नेपाल सरकार ने भरत सरकार को १२ बटालियनों तक गुरखा सैनिक भर्ती करने की आज्ञा दे रखी है। रंगरूटों की शिक्षा के लिए भारत सरकार के सेना विभाग ने गोरखपुर और घम (दार्जिलिंग) में शिक्षण केन्द्र खोल रखे हैं। इनके अतिरिक्त आसाम राइ-फल्स अन्य टुकड़ियों में भी गोरखे भर्ती किये जाते हैं।

भारतीय सेना की सब कमी अंफसरों में गोरखों को भारतीयों के समान स्थान मिलता है। भारत के स्वतन्त्र होने में पश्चात् कई नेपाली कई रेजीमेंटों के सेनापति तक बना दिये गये हैं और कई अन्य महत्वपूर्ण पदों पर हैं। निर्धा-रित परीक्षाओं को पास करके कोई भी नेपाली नागरिक भारतीय सेना के किसी भी उच्चतम पद को प्राप्त कर सकता है।

हाल ही में भारत सरकार ने नेपा-लियों के निम्नलिखित देशीय नौक-रियों (सर्विसिज) के द्वार भी खोल दिए हैं।

१. इंडियन फॉरेन सर्विस
२. इण्डियन आडिट एंड अकाउंट सर्विस
३. मिलिटरी अकाउंट्स सर्विस
४ इंडियन रेलवे अकाउंट् सर्विस
५. इंडियन कस्टम्स सर्विस
६. इण्डियन इनकम टैक्स सर्विस
७. ट्रांसपोर्ट एण्ड कामर्शियल डिपार्टमैंट आफ रेलवेज
८, इस्टेब्लिश मैंट डिपार्टमैंट ऑफ स्टेट रेलवेज

(क्रमश,)

[पृष्ठ ८ का शेष]

गड्ढे में जो चार फीट जगह एक ओर छोड़ दी गयी थी उसमें खाद कुदाल से काट-काट कर एक तरफ से भरना चाहिये। बड़े-बड़े टुकड़ों को तोड़ देना आवश्यक है। काम समाप्त होने पर गड्ढा का दूसरा हिस्सा खाद से भर जायगा और और चार फीट जमीन गड्ढे में खाली ही बच जायगी। फिर खूब पानी देकर पहले की तरह मिट्टी से ढंक कर, सात-आठ सप्ताह तक छोड़ देना चाहिए। उस गड्ढे को खोदने पर [सब मिला कर साढ़े तीन या चार मास बाद] खूब मिला हुआ तथा सड़ा हुआ उत्तम खाद पाया जायगा।

★

सम्राट् अशोक के धर्म शिला लेख

२० दिसम्बर की सायंकाल नालिन्द कालिज में अध्यापकों तथा छात्रों की एक बड़ी सभा में इतिहास भूषण डा० देवसहाय त्रिवेदी ने एक भाषण में कहा कि अशोक के धर्म के सम्बन्ध में प्रचलित कई कल्पनाएं बिलकुल गलत तथा आधारहीन हैं। उसके समय के अन्यान्य शिला लेखों से यह सिद्ध होता है कि वह बौद्ध धर्म का नहीं बल्कि वैदिक [हिन्दू] धर्म का अनुयायी था।

सभा के अन्त में कई अध्यापकों द्वारा प्रश्नों के उत्तर में उन्होंने कहा—कि अशोक के शिला लेखों में स्थान-स्थान पर स्वर्ग की कामना प्रकट की गई है। उसके लेखों में हिन्दुओं के पवित्र चिन्ह राम, श्री स्वास्तिक आदि भी पाये गये हैं। भारतीय मानव धर्म के निर्देशक जैसे गजसिंह आदि चित्र भी अशोक के स्तम्भों पर तथा स्तूपों पर पाये जाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि अशोक बौद्ध धर्म का नहीं बल्कि आरम्भ के वैदिक धर्म का अनुयायी था और उस ने मनुस्मृति, महाभारत और धर्मशास्त्र आदि नियमों का ही पालन किया था उसका धर्म सभी देश और सभी काल और सभी लोगों के लिए उचित है। हि० स०

मातृ प्रेम :—

कुछ समय हुआ हिमालय पर्वत पर कुछ हाथियों का झुन्ड रहता था, उसका सरदार एक सफेद हाथी था। उसकी माता अन्धी थी। हाथी झुन्ड के साथ रहता था, तथा अपनी माता के लिये कुछ हाथियों के द्वारा भोजन सामग्री भेज दिया करता था। लेकिन वह हाथी उसे बीच ही में खा जाते। सरदार को जब यह पता चला तो वह अपनी माता को लेकर एक तालाब के किनारे रहने लगा। एक राजदूत एक समय भटक कर उधर आ निकला। हाथी ने झट उस आदमी को सूंड से उठा पीठ पर बैठा ठीक रास्ते पर छोड़ दिया। उसने राजा से जाकर सब हाल सुनाया। राजा ने हाथी को पकड़वाया। हाथी ने सात दिन तक कुछ नहीं खाया आठवें दिन राजा खुद हाथी को भोजन देने गया उस समय हाथी रोते २ सूंड से राजा के पैर रगड़ने लगा। राजा बुद्धिमान् था, इस लिये समझ गया कि इसे माता पिता का वियोग हो गया है। इधर हाथी मां के लिये रोता था उधर उसकी मां हाथी के लिये रोती थी। राजा ने कुछ शिकारियों को फिर भेजा। उन्होंने वहां पर अन्धी हथिनी को भूख प्यास से तड़पते देखा और उसको कुछ भोजन देकर साथ में ले चले। जब हाथी ने अपनी माता को आते देखा तो एक झटके से सांकल तोड़ दी और अपनी माता से मिलकर खूब रोया। हे बाल बन्धुओ, हमको भी चाहिये माता से प्रेम रखें। माता अपने पुत्रों से बहुत अधिक प्रेम करती है, हमको भी उस बदले को चुकाना चाहिये।

ध्वनि-तरंगों से कपड़ा धुलेगा

ध्वनि तरंगें साबुन का स्थान ग्रहण कर सकती हैं। ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने अनुसंधान किया है कि यदि ध्वनि तरंगों के नीचे धागे को रखा जाय तो उसका मैल बिना साबुन के उससे साफ हो जायगा।

इन ध्वनि तरंगों का दबाव इतना जोरदार पड़ता है कि यदि कपड़े को ठीक ढंग से संभाल कर न रखा जाय तो वह फट जायगा। किन्तु वैज्ञानिकों का विचार है कि इस कमी को शीघ्र दूर किया जा सकेगा।

यह ध्वनि तरंगें एक बिजली की मशीन से उत्पन्न की जासकेंगी। इस मशीन का नाम 'प्रोबेब" यंत्र है। यह आकार में इतनी छोटी होती है कि लोग इसे अपनी जेब में रख सकते हैं।

★

क्या आप जानते हैं ?

केवल एक मिनट में

संसार में ६० बच्चे जन्म लेते हैं।

दुनियां में ७६ व्यक्ति मर जाते हैं।

इंग्लैंड की जनता ८३३३ प्याले काफी पी जाती हैं।

भारत में १२ आदमी मरते हैं।

साधारण मनुष्य के हृदय में ६२ धड़कनें होती हैं।

पशु पक्षियों की आयु

भिन्न भिन्न पशु पक्षी कितने समय तक जीवित रह सकते हैं—

ह्वेल मछली	२०० वर्ष
कछुआ, मगर,	१०० ,,
हाथी, बाज	१०० ,,
कौआ और तोता	६० ,,
हंस और गिद्ध	५० ,,
सिंह और ऊंट	४० ,,
घोड़ा	४० ,,
गाय	२५ ,,
मोर और सूअर	२४ ,,
कबूतर	२० ,,
बकरी और कुत्ता	१४ ,,
मुर्गी	१४ ,,
बिल्ली	१३ ,,

★

जरा हंसिये

मास्टर साहब (गुस्से में होकर) नालायक कहीं के! काम कुछ भी नहीं करते। मैं तुम्हें मारते मारते उल्लू बना दूंगा।

लड़का—हां जरूर बना दीजिये साहब, उल्लू बनने पर याद तो नहीं करना पड़ेगा।

× × ×

जज—तुमने इसके पूर्व कई अपराध किये हैं। अब की बार तुम्हें क्या सजा मिलनी चाहिये।

कैदी—हुजूर मैं तो आपका स्थायी ग्राहक हूं और फिर पकड़ में भी जल्दी ही आजाता हूं। कुछ तो रियायत होनी ही चाहिये।

× × ×

मोहन—कहो सोहन, तुम्हें मेरी कविता कैसे लगी?

सोहन—कुछ नहीं, मामूली थी।

मोहन—मां मूली थी, तो क्या बाप गाजर था।

× × ×

राशनिंग आफिसर ने एक ग्रामीण से पूछा "तुम्हारी उम्र कितनी है?"

"साहब ४० साल नौ माह का हूं।"

"फार्म पर ४० ही लिखी हुई है।"

"ठीक है साहब मैं नौ माह पेट में भी तो रहा वह नहीं लिखी होगी।"

★

अपनी देववाणी सीखिये

ओ३म् असतो मा सद्-गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय । मृत्योर्मा अमृतं गमय ।

कर्तव्यं, न अधिकारः

श्री वासुदेव शास्त्री

अद्यत्वे सर्वत्र समाजविघातकतत्त्वानां बाहुल्यं दृश्यते । तत्र अधिकाराणां लोलुपता महीयसी समाजविघातिका । अद्य यदपि, भ्रष्टाचार, उत्कोचः अनावश्यकलाभ, चौर्यविक्रय लोभश्च परिलक्ष्यते, तस्य मूलं अधिकार-लोलुपता । शोषणमूले तु अधिकाराणां अस्त्येव बाहुल्यम् । श्रमिका स्वनिर्माणयां (फैक्ट्री में) धनव्ययं कुर्वन्ति, तस्मात् लाभोऽपि महान् जायते । ते धनिकाश्च "अस्माभिः धनं व्ययितं, अतः सर्व एव लाभः अस्माकीन" इति कथयन्ति । भूस्वामिनोऽपि समग्रे अन्ने स्वकीयमेवाधिकारं मन्यन्ते । इत श्रमिकाः कथयन्ति यदि "वयं परिश्रम एव न कुर्म तर्हि कथं वस्त्रं, अन्नं अन्यदपि वस्तुजातं भवितुं शक्नोति अतः लाभेऽधिकोऽधिकारः अस्माकीनः" इति । यदि कदाचित् तेषामधिकारस्य रक्षा न भवति तर्हि ते कार्यं न कुर्वन्ति, कथयन्ति च तत्कार्ये रोधः [हड़ताल] अस्माकं अधिकारः । अयं रोगः अत्रैव न विरमति, किन्तु अध्यापक-विद्यार्थिषु, स्त्री पुरुषेषु सेवक-स्वामिषु चापि दृश्यते ।

अधिकाराणां कथनद्वारा स्वार्थसिद्धिं ते कुर्वन्ति । अहन्तु मन्ये स्वार्थस्यैवापरं नाम अधिकार । अधिकारस्य [स्वार्थस्य] बाहुल्येनाद्य मानवेषु असंतोषः । असंतोषस्तु नाशस्य कारणम् । पुनरपि लोक अधिकारप्राप्तिद्वारैव शान्तिं सन्तोषं च वांछति ।

एतस्य समाधानं तु विद्यते किन्तु लोक. तस्मिन् नाचरति । समाधानं अधिकाराणामपेक्षया कर्तव्यस्य प्रथमता अस्ति ।

भारतीयेषु शास्त्रेषु तु अधिकारस्य चर्चापि कुत्रचिद् न दृश्यते, कर्तव्यस्य तु उपदेशः सर्वत्र अस्ति । समाजस्य येऽपि अवयवा: सर्वेषां कृते कर्तव्यस्यैवोपदेश । यदि सर्वे स्वकर्तव्यमेव आचरन्तु तदा असंतोष कदापि न भवेत् ।

गीतायान्तु भगवता श्रीकृष्णेन उपदिष्टम् कर्मण्येवाधिकारस्ते ।

अर्थात् कर्तव्यस्यैव आचरणमधिकार । अधिकारस्तु कर्तव्यद्वारा प्राप्तं फलमात्रं भवति, नाधिकारस्य स्वतन्त्रा सत्ता । कर्तव्यपालनद्वारा अधिकारप्राप्ति स्वत एव जायते । अद्य अस्माभिः कर्तव्यं विस्मृतं, अधिकारश्च अभिलषाम, परं कर्तव्यरहितेन अधिकारेण तु हानिरेव भवति ।

पेरिस में भारतीय राजदूत सरदार पटेल के देहावसान पर शोक प्रकट कर रहे हैं ।

दो सुभाषित

धैर्यं यस्य पिता क्षमा च
जननी शान्तिश्चिरं-
गेहिनी सत्यं सूनुरयं दया च
भगिनी भ्राता मनःसंयम ।
शय्या भूमितलं दिशोऽपि
वसनं ज्ञानामृतं भोजनम्
एते यस्य कुटुम्बिनो वद सखे
कस्माद्भयं योगिनः ॥

धैर्य जिसका पिता, क्षमा माता, चिर शांति ही गृहलक्ष्मी, सत्य ही पुत्र, दया बहन, मन का संयम भाई, भूमितल ही शय्या, दिशाएं वस्त्र और ज्ञानामृत ही जिनके भोजन हैं—ये कुटुम्ब जिनके हैं, उन योगियों को भला भय किससे हो सकता है ।

× × ×

गात्रं संकुचितं गति विगलिता
भ्रष्टा च दन्तावलिः
दृष्टिर्नश्यति वर्धते बधिरता
वक्त्रं च लालायते ।
वाक्यं नाद्रियते च बान्धवजनै
भार्या न शुश्रूषते
हा कष्टं पुरुषस्य जीर्णवयस-
पुत्रोऽप्यमित्रायते ॥

वृद्ध पुरुष का शरीर संकुचित हो जाता है, चाल टेढ़ी-मेढ़ी हो जाती है, दांतों की पंक्तियां भ्रष्ट हो जाती हैं, दृष्टि नष्ट हो जाती है, बहिरापन बढ़ जाता है, मुंह से लार टपकने लगती है, बन्धुजन वचनों का आदर नहीं करते और पत्नी भी सेवा नहीं करती । अहह ! वृद्ध व्यक्ति का पुत्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करने लगता है ।

[पृष्ठ ६ का शेष]

श्रेय देना उचित है वहां देश के विभाजन का पाप भी कांग्रेस के सिर पर है ।

इस प्रकार देश के वर्तमान स्वतन्त्रता संग्राम का विवेचन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत की स्वतन्त्रता असंख्य ज्ञात तथा अज्ञात देशभक्तों, क्रान्तिकारियों, साहित्यकों, सन्तों, सैनिकों तथा स्वयंसेवकों के प्रयत्नों व बलिदानों का फल है, इसलिये भारत का स्वतन्त्रता दिवस मनाते समय केवल कांग्रेस का गुणगान करने की बजाय उन सब का स्मरण करना और उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करना आवश्यक भी है और उचित भी ।

वीर अर्जुन साप्ताहिक का मूल्य

वार्षिक	१२)
अर्धवार्षिक	६॥)
एक प्रति	चार आना

दुमदार दोहे

[गुस्ताख]

रुकि न सके, 'लियाकत' गये, लन्दन आखिर कार ।
रूठे, आपुही मनि गये, ऐसे पानीदार।
हमारे साजना ।

'श्री प्रकाश' से कह दिया, करो 'खोज' तुम यार ।
पुरखन हूं अब ना कियो, कभी अब लौं 'व्यापार' ॥
करोगे तुम कहा ।

राजस्थान मिनिस्टरी, कोड़ी 'हीरा लाल' ।
शास्त्री जी के भाग्य पर, हम कूं बहुत मलाल ॥
'व्यास' जी की कसम ।

'आइजन होवर' बनि गये, सेनापति सर्वोच्च ।
स्टालिन के मैन अब, देंगे आइ दबोच ॥
योरुपी चीं पड़े ।

कद फांद फिर शुरू की, 'सफर' ने इस बार ।
कान खड़े कर 'भार्गव', करन लगे उपचार ॥
जाय ना हाट छुटि ।

कोटा में अब कै पकी, अपनी अपनी खीर ।
कांग्रेसिन तें कम नहीं, कछु हिन्दी के वीर ॥
वीर पर क्यों रहें ।

अन्तर्राष्ट्र परिस्थिति, है अतिशय गम्भीर ।
विश्व शांति कूं है रही, मनुहुं प्रसव की पीर ॥
नर्स कोउ ठीक ना ।

देश-विदेश का घटनाचक्र

कोरिया

कोरिया युद्ध में चीनी तथा उत्तरी कोरियाई सेनाओं की प्रगति जारी है, यद्यपि वह मद्धिम पड़ चुकी है। जनरल मेकार्थर ने अपनी सेनाओं को सोन्ग प्रदेश में और थोड़ा पीछे हटा कर प्रायद्वीप के एक ओर से दूसरी ओर तक सीधी रक्षापंक्ति स्थापित की है। यह रक्षापंक्ति कितने समय तक टिक सकेगी, यह कहना कठिन है, किन्तु चतुर क्षेत्रों में यह विचार है कि जनरल मेकार्थर ने पुनः युद्ध करने की वही प्रणाली अपनाई है, जो उन्होंने इस युद्ध के प्रारम्भिक दिनों में की थी, जब उत्तरी कोरियनों को रोकनेके लिए अमरीकी सेनायें प्रेसीडेण्ट ट्रूमेन के आदेश पर कोरिया में उतरी थीं, उस समय भी राष्ट्रसंघीय सैन्य बल कोरिया में विरोधी के मुकाबले अल्पसंख्यक तथा हीन था। अतः जनरल मेकार्थर ने तब तक धीरे धीरे पीछे हटते हुए अपनी शृंखला को टिकाये रखा, जब तक कि निर्णायक धावा मारने के लायक बल तथा योजना पूर्ण नहीं हो गये। आज चीनी शक्ति के सम्मुख आ जाने पर पुनः वह तब तक अपनी शक्ति को सुरक्षित रखते हुए युद्ध को लम्बा करने के मार्ग पर चल रहे हैं, जब तक चीन के विषय में निश्चय नहीं हो जाता और यदि महा युद्ध का निश्चय हुआ तो चीनी शक्ति को तोड़ने के लिए योजना पूर्ण नहीं हो जाती।

•राष्ट्र संघ

कोरिया और चीन को लेकर लेक सक्सेस में विभिन्न प्रकार की तरंगें उठ रही हैं। संघ का युद्ध विराम रेखा-सम्बन्धी दूसरा प्रस्ताव भी कम्यूनिस्ट चीन ने ठुकरा दिया। अभी तक चीन अपनी मांगों से तिल भर भी नहीं झुका है। प्रस्ताव को उसने दम लेने का एक बहाना बताया है। उसे स्वीकार करते हुए अपने द्वारा भेजे गये नए प्रस्ताव में उसने पुनः अपनी मांगों को दुहराया है।

चीन की इस अस्वीकृति ने राष्ट्र संघ के विरुद्ध शस्त्र उठाये। इस बल प्रयोग से घबड़ा कर यदि राष्ट्रसंघ चीन की समस्त मांगें स्वीकार कर लेता है, तो राष्ट्र संघ अपने आप ही अपने को मार डालता है। यदि बल द्वारा ही इस बल का विरोध करना चाहे तो स्वयं राष्ट्र संघ के पास कोई बल है नहीं। उसके सदस्य राष्ट्रों का बल ही इस प्रकार के किसी भी निर्णय को कार्यान्वित होने में सफल बना सकता है। किन्तु उसका अर्थ होता है तृतीय विश्व युद्ध, जिससे सभी भयभीत हैं और चाहते हैं कि कोई शान्तिपूर्ण हल निकल आये। देखें ऊँट किस करवट बैठता है।

राष्ट्रमंडल सम्मेलन

राष्ट्रसंघ को इस कोने में से निकालने के लिए एक द्वार हाल ही में लन्दन में हुए राष्ट्रमंडलीय प्रधान मंत्री सम्मेलन ने खोला है। इस सम्मेलन के अनुसार विश्व की महाशक्तियों को एक मेज के दोनों ओर बैठकर निपटारा कर लेना चाहिए और इस प्रकार विश्व युद्ध की विभीषिका को टालना चाहिए। प्रेसीडेण्ट ट्रूमेन की स्टालिन तथा माओ त्से तुंग से बात चीत होने की सम्भावना पर विश्व के प्रमुख कूटनीतिक क्षेत्र विचार कर रहे हैं। यह सम्भावना यदि कुछ भी क्रियात्मक रूप में परिणित हुई तो विश्व पर मंडराती हुई महायुद्ध की विभीषिका उस समय टल जायगी।

काश्मीर

लन्दन की चर्चामें अनौपचारिक रूप से काश्मीर पर भी चर्चा हुई। कुल मिलाकर तीन बैठकें हुईं, जिनमें पं० नेहरू श्री लियाकत अली, व श्री एटली के साथ २ अन्य प्रधान मन्त्रियों ने भाग लिया। आस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री श्री मैंजीज ने इस चर्चा में अधिक सक्रिय भाग लिया।

उक्त चर्चा से काश्मीर के गतिरोध का तो कोई हल नहीं निकला, किन्तु पाकिस्तान की मनोवृत्ति और भी स्पष्ट हो गई। श्री लियाकत अली किसी भी प्रकार से काश्मीर पर अधिकार करना चाहते हैं। लन्दन में काश्मीर पर दो बैठकें हुईं। अन्तिम चर्चा चेकर्स में श्री एटली के निवासस्थान पर हुई। किन्तु पं० नेहरू ने पाकिस्तान की किसी भी अन्यायपूर्ण मांग को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। फलस्वरूप खीझ कर पाक प्रधानमन्त्री ने भारत पर आक्रमण करने में आन्तरिक चर्चा-संबन्धी गुप्तता को भंग करने में भी किसी प्रकार का संकोच नहीं किया। श्री लियाकत ने यह भी बताया कि जब तक सुरक्षा परिषद् काश्मीर के प्रश्न को नहीं उठाती वे पं० नेहरू से नहीं मिलेंगे।

आगरा का समाचार है कि वहां गत सप्ताह डाकुओं का एक सम्मेलन हुआ।

सम्मेलन करना चाहिए डाकुओं को लखनऊ में या नई दिल्ली में। कवि सम्मेलन भी यदि साथ रख लेते तो और भी अच्छा था।

× + ×

अब्दुल कयूम खां का कहना है कि अब हम काश्मीर के लिए हथियार उठायेंगे।

मियां खलीफा कबायलियों की पिटाई के समय कहां पड़े थे, आप?

× × ×

भारत सरकार का कहना है कि जनगणना के अधिकारी आपकी आयु बता सकेंगे।

अच्छा तो यह था कि चुनावों से पहले नेता लोग उनसे अपनी जन्मकुंडलियां बनवा लेते।

× × ×

अशोक मेहता ने बताया है कि आगामी चुनावों में सोशलिस्ट पार्टी २००० उम्मीदवार खड़े करेगी।

अपने राम की राय में तो एक सिंधी रायटर वालों से अधिक लग गई या यह भी हो सकता है कि श्री मेहता ने पार्टी के पैसे को जमानतकी जब्ती ही में लगाने का निश्चय कर रखा हो।

× × ×

एक समाचार से पता चला है कि दिल्ली पुलिस के सिपाही साइकिलें चुराते पकड़े गये हैं।

अब तो दिल्ली के पुलिसमैन हैं समझदार, जो नौकरी के बाद पार्ट-टाइम में भी काम करते हैं।

× × ×

बिहार सरकार का कहना है कि नेताओं को चुनाव-गणना की शिक्षा दी जायेगी।

अभी क्या जल्दी है। अभी तो काफी दिन पड़े हैं, और हटा लेना २४ साल बाद।

× × ×

पाकिस्तानी पत्रों में बताया गया है कि लन्दन जाते समय बरार के युवराज ने अपने गले में तावीज बांधा है।

क्योंकि मियां भेड़ की पूंछ पकड़ कर लन्दन जा रहे थे, ऐसा न हो कहीं से बैरंग ही लौट आयें या न भी लौटें।

× × ×

भारत सरकार का कहना है कि ८ करोड़ की बचत के लिए २ हजार आदमियों की छुटनी की जायेगी।

कीजिये साहब, लेकिन अच्छा तो यही था कि २ हजार मुर्गियां न मार कर १०-२० मुर्गे मार दिये होते।

× × ×

जमींदारी उन्मूलन बिल पर बोलते हुए एक समाजवादी ने कहा कि अंग्रेजों को भारत छोड़ने का मुआवजा क्यों नहीं दिया?

चर्चिल सोचता होगा कि इस कांग्रेस से तो साम्यवादी ही भले रहते, नकद न मिलता तो पौण्ड पावना ही हथिया लेते।

× × ×

महाराजा बड़ौदा का कहना है कि सरकार ने हमें देश निकाला दे दिया है।

क्योंकि आप लोगों का दिल लंदन में ही सीता देवियों की तलाश में लगता था।

× × ×

उत्तर प्रदेश जमींदारों का कहना है कि अब हम सरकार को कोर्ट में चुनौती देंगे।

उसके बाद, जब इलेक्शन आता ही है तो रहे-सहे वोट समाजवादियों को देकर वोट से चुनौती देना।

× × ×

आगरे के पास के एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी की नाक काटने का कारण यह बताया कि वह अपनी सुन्दरता का असर लोगों पर न डाल सके।

महिलाओं को सदाचारी रखने की सूझ तरक्कीके लिए महिलाओं का उसका कृतज्ञ होना चाहिये।

× × ×

राजाराम शास्त्री की राय में जमींदारी उन्मूलन बिल किसानों को कंगाली की ओर ले जा रहा है।

और वह खुशहाली समाप्त हो रही है, जो जमींदारों ने उन्हें दी थी।

—पारस्कर

मद्रास का फिल्म निर्माण-केन्द्र किधर?

भारत में इस समय फिल्म निर्माण के प्रधानतः तीन केन्द्र हैं— बम्बई, कलकत्ता और मद्रास। बम्बई में जहां प्रायः ९८ प्रतिशत हिन्दी फिल्म तैयार होते हैं, विगत कुछ समय से एक विशेष तरह के फिल्म तैयार हो रहे हैं। हिमांशु-राय की बम्बई टाकीज़ को छोड़ कर (कुछ समय पूर्व तक) बम्बई के फिल्म-निर्माताओं का सदा से एक मात्र उद्देश्य पैसा बटोरना रहा है। उन्हें इस बात की कभी चिन्ता नहीं रही कि वे जिस ढंग की फिल्मों का निर्माण करते हैं उनका दर्शक वर्ग, विशेषतः बच्चों के चरित्र पर कैसा प्रभाव पड़ता है। केदार शर्मा और किशोर साहू को छोड़ दें, तो इनके प्रायः सभी फिल्मों की कहानियां एक दूसरे से मिलती जुलती होती हैं। बे सिर पैर की कहानियां होते हुए भी इनके फिल्म कामुकतापूर्ण गीतों के बल पर सफल हो रहे हैं। कलकत्ता एक मात्र ऐसा केन्द्र है, जो प्रारम्भ से आर्थिक हानि उठा कर भी कलात्मक चित्रों का निर्माण कर रहा है। एक समय था, जब कलकत्ता के फिल्म कलापूर्ण होने के साथ साथ आर्थिक दृष्टि से भी सफल होते थे। वह सहगल का युग था। न्यू थियेटर्स, जो कहानी और अभिनय-कला की दृष्टि से आज भी 'छोटा भाई' जैसे उत्कृष्ट फिल्म तैयार करने की क्षमता रखता है, सहगल-बोराल-पंकज की त्रिमूर्ति के बल पर संगीत की दुनियां पर भी छाया हुआ था। सहगल के जाने के साथ ही न्यू थियेटर्स का हिन्दी फिल्मों का निर्माण भी नगण्य हो गया है। आज वह दो-एक वर्षों में भी मुशकिल से एकाध हिंदी फिल्म तैयार कर पाता है और वे कलापूर्ण होते हुए भी सहगल जैसे अमर गायक के अभाव में और बम्बई के फिल्मों से दर्शकों की बिगड़ी हुई रुचि के कारण सफल नहीं हो पाते।

मद्रास ने अभी हाल में 'चन्द्रलेखा' के निर्माण से हिन्दी फिल्मों के निर्माण-क्षेत्र में पदार्पण किया। 'चन्द्रलेखा' की कहानी पुराने फिल्मों जैसी थी, किन्तु निर्माता ने इसे फिल्मी दुनियां के सर्वथा आधुनिक टैक्नीक और साधनों का प्रयोग करके प्रस्तुत किया। फलतः इस फिल्म को अभूतपूर्व आर्थिक सफलता प्राप्त हुयी। 'निशान' में यद्यपि कुछ भयंकर टेक्नीकल भूलें थीं, किन्तु 'चन्द्रलेखा' की अपेक्षा उसे अधिक संवारा हुआ फिल्म कहा जा सकता है। अभिनय की दृष्टि से यह चित्र पहले से सफल था और रंजन के रूप में हिन्दी फिल्म जगत को एक नया चमकीला रत्न प्राप्त हुआ था।

किन्तु अब यह केन्द्र भी न केवल बम्बई के मार्ग पर चलता दिखाई देता है, उससे भी दो-चार कदम आगे बढ़ जाना चाहता है। 'मंगला' के रूप में उसकी नयी भेंट को कभी प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता। 'मंगला' के निर्माण से उसका निर्माता, जो 'चन्द्रलेखा' के बाद 'निशान' में कुछ ऊंचा उठा था, एक दम नीचे आ गिरा है। पवित्र भारतीय संस्कृति में पश्चिमी स्वच्छन्दता को घुसेड़ने के प्रयत्न को यदि क्षम्य मान लिया जाय, तब भी इसमें दिखाये गये अनेक दृश्यों को सभ्यता की दृष्टि से क्षम्य नहीं कहा जा सकता। निर्माता ने मनोरंजन के नाम पर जी भर कर उन शब्दों का प्रयोग कराया है, जो सभ्य संसार में सर्वथा अनुचित समझे जाते हैं। कुछ स्थलों पर तो इन शब्दों ने फिल्म के विषय में सारे कुतूहल को ही समाप्त कर डाला है। नायिका का नायक से यह कहना कि 'मैं भी तुम्हारे बेटे की मां बनकर उससे तुम्हें कोड़े लगवाऊंगी' एक क्षण के लिए दर्शकों को हंसा भले ही दे, किन्तु इससे शुरु में ही फिल्म का सारा रहस्य खुल जाता है और दर्शक के मन में अगले दृश्यों के लिए कोई विशेष उत्सुकता नहीं रहती। इसी प्रकार सहवास और चुम्बन के दृश्य हैं, जो किसी भारतीय फिल्म में न केवल पहली बार दिखलाये गये हैं, जिन्हें दिखलाने का एक मात्र उद्देश्य कामशास्त्र के विक्रेताओं की भांति लोगों को इस फिल्म की ओर आकृष्ट करना है।

किन्तु इन कुछेक कामोत्तेजक स्थलों के अलावा सारे फिल्म में कुछ भी नहीं और यही कारण है कि फिल्म अधिक समय तक लोगों का आकर्षण नहीं बना सका है।

हम वासन से अनुरोध करना चाहते हैं कि यदि वह कलकत्ता जैसे कलापूर्ण और परिष्कृत रुचि के चित्रों का निर्माण नहीं कर सकते, तो 'चन्द्रलेखा' और 'निशान' जैसे मनोरंजन-प्रधान और वीरता पूर्ण दृश्यों से परिपूर्ण चित्रों का ही निर्माण करें, बम्बई की नकल करके और उससे भी आगे बढ़ निकलने के प्रयत्न में जनरुचि को और अधिक न बिगाड़ें। इस प्रकार की प्रवृत्तियों से निर्माता लोग कुछ समय तक लाभ उठा सकते हैं, किन्तु ज्यों-ज्यों भारतीय दर्शक शिक्षित होते जायंगे त्यों-त्यों उनकी रुचि स्वयं इन फिल्मों से हटती जायगी और तब ये निर्माता कला की दौड़ में उसी प्रकार नहीं खड़े हो सकेंगे, जिस प्रकार एक बैलगाड़ी मोटर के साथ दौड़ में खड़ी नहीं हो सकती।

★

हमारी सोल एजेन्सियां

देहली के एजेन्ट—रमेश बुक्स कम्पनी चांदनी चौक, देहली। ग्वालियर—यूनियन मेडिकल हाल डोंडीखाना चौकी लश्कर। पूर्वी पंजाब— लक्ष्मी मेडीकल हाल, अम्बाला छावनी। अलवर, बीकानेर तथा भरतपुर के एजेन्ट — यू० दास को० होपसकर्स बीयर, रेज टाकीज अलवर।

बैद्यनाथ च्यवनप्राश का निर्माण आयुर्वेदीय मत से सर्वाङ्गपूर्ण है इसमें दुर्लभ अष्टवर्ग और विशुद्ध मशालेपन के प्रयोग की गारंटी है।

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि:

कलकत्ता पटना झांसी नागपुर

स्थानीय एजेन्टस — बिक्री के द्र कूचा घासीराम के बाहर चांदनी चौक देहली।

स्वास्थ्य संबंधी उपयोगी पुस्तकें

श्री रामेश वेदी लिखित निम्न पुस्तकें मंगवा कर अपना इलाज आप कीजिये।

लहसुन प्याज—दूसरा संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण। मूल्य २॥) रु०। हमें विश्वास है कि इसे पढ़ कर आप तपेदिक काली खांसी निमोनिया जैसे नामुराद रोगों पेट और दूसरे रोगों का केवल लहसुन से ही सफलता पूर्वक इलाज करना जान जायेंगे।

तुलसी—संशोधित व परिवर्द्धित संस्करण। मूल्य २॥)। हर भारतीय घर में बोये जाने वाले तुलसी के पौदे से छोटे मोटे सैकड़ों रोगों का इलाज करने की विधियां। पहले जमाने में क्षय तथा दूसरे असाध्य रोगियों को तुलसी के बगीचों में रख कर ठीक करने के रहस्य भी वेदी जी ने इसमें बताये हैं।

सोंठ—तीसरा सचित्र संस्करण। मूल्य १॥)। रसोई में प्रतिदिन काम आने वाली सोंठ और अदरक से छोटे मोटे प्राय सब रोगों का इलाज करने के विस्तृत तरीके।

देहाती इलाज—दूसरा सवर्द्धित संस्करण। मूल्य १) घर बाजार और देहात में सब जगह सुगमता से कठिन रोगों का भी इलाज करने की क्रियात्मक विधियां। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रेरणा से यह पुस्तक लिखी गई है।

मिर्च काली सफेद, और लाल मिर्च के गुण व उपयोग। मूल्य १)।

शहद—दैनिक भोजनों में और विविध रोगों में शहद को प्रयोग करने के विस्तृत तरीके असली तथा नकली शहद की पहिचान आदि जानने के लिए और शहद के सम्बन्ध में पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए यह पुस्तक आज ही मंगाइये। विद्यार्थियों गृहस्थों, फार्मेसियों वैद्यों डाक्टरों आदि के लिए यह बहुत काम की पुस्तक है। मूल्य २)।

एजेण्टों की सब जगह आवश्यकता है। सूची पत्र मुफ्त मंगाइये।

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १७] दिल्ली, रविवार २२ माघ सम्वत् २००७ [अङ्क ४१

चीन आक्रान्ता घोषित

सुरक्षा परिषद् में संयुक्त राज्य अमेरिका का कम्यूनिस्ट चीन को कोरिया में आक्रान्ता घोषित करने का प्रस्ताव भारी बहुमत से स्वीकृत हो गया। भारत और बरमा ने सोवियत संघ तथा उसके पक्ष के अन्य राष्ट्रों के साथ साथ विरुद्ध मत दिया। इस प्रस्ताव की स्वीकृति से पूर्व ही १२ एशियाई तथा अरब राष्ट्रों के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति की दृष्टि से इस प्रस्ताव की स्वीकृति के बहुत व्यापक परिणाम हो सकते हैं। पेकिंग ने कुछ दिन पूर्व भारतीय प्रतिनिधि के द्वारा राष्ट्र संघ के सदस्यों को यह सूचित कर दिया था कि कोरिया में उसे आक्रान्ता घोषित करने का अमरीकी प्रस्ताव यदि स्वीकार किया गया तो किसी भी प्रकार की शान्ति चर्चा का मार्ग बन्द हो जायगा। इसका सीधा सादा अर्थ यह होता है कि कोरिया का युद्ध जिसकी लाठी उसकी भैंस वाले सिद्धान्त से ही निर्णीत हो सकेगा। शान्ति-वार्त्ता का मार्ग बन्द हो जाने के पश्चात् चीन वहां पूर्ण रूप से बल प्रयोग द्वारा राष्ट्र संघीय सेनाओं को उखाड़ फेंकने का प्रयत्न करेगा।

दूसरी ओर चीन को आक्रान्ता मानने के पश्चात राष्ट्र संघ की सेनाओं का भी यह कर्त्तव्य हो जाता है कि उसको न केवल कोरिया के बाहिर ही धकेलें वरन् यदि वह युद्ध करता है तो चीन की मुख्यभूमि पर आक्रमण करके उससे भी उसी प्रकार शस्त्र परित्याग कर आत्म समर्पण करने के लिए कहें जिस प्रकार कि उन्होंने उत्तरी कोरियनों से कहा था। चीन पर इस प्रकार का आक्रमण विश्वयुद्ध का प्रथम अध्याय होगा।

किन्तु दूसरी ओर सिद्धान्त का प्रश्न बड़ा विषम था। यदि राष्ट्र संघ दक्षिणी कोरिया पर उत्तरी कोरिया को आक्रांता घोषित कर सकता है और इस प्रकार के आक्रमण से रक्षा करने तथा आक्रान्ता को दण्ड देने के लिए अपनी सेनायें भेज सकता है तो क्या कारण है कि कम्यूनिस्ट चीन को सेनाओं के उत्तरी कोरिया की ओर से युद्ध में भाग लेने और दक्षिणी कोरिया तक में प्रवेश कर लेने की स्थिति में उसे आक्रांता घोषित न करता। इसी तर्क के आधार पर संयुक्त राज्य अमेरिका तथा उसके समर्थकों का कथन है कि चीन को आक्रांता घोषित करना अथवा न करना संयुक्त राष्ट्र संघ के आधारभूत सिद्धांत को प्रभावित करता है।

चीन को आक्रांता घोषित न करने के विषय में रूसी दल को छोड़ कर शेष राष्ट्रों का विचार सैद्धांतिक दृष्टि से नहीं व्यावहारिक दृष्टि से अधिक था। कोई भी देश आज युद्ध नहीं चाहता। किन्तु कई बार ऐसे प्रसंग उपस्थित हो जाते हैं जब युद्ध न चाहते हुए भी हमें लड़ना पड़ता है। ऐसी स्थिति में बुद्धिमान मनुष्य कुछ झुक कर भी संघर्ष के प्रसंग को टालने का प्रयत्न करता है। चीन को आक्रांता घोषित करने का व्यावहारिक दृष्टि से अर्थ क्या होता है यह हम ऊपर लिख चुके हैं। परमेश्वर न करे, यदि वैसी स्थिति उत्पन्न हुई और रूस ने चीन की सहायता पर कमर कसी तो इस महा युद्ध की ज्वाला से कौन सा देश जलने से बचेगा यह कहना कठिन है। फिर संसार के दुर्बल राष्ट्रों की स्थिति तो और भी खराब होगी।

किन्तु झुकने की एक सीमा है। संघर्ष किसी सिद्धांत पर ही होता है। यदि संघर्ष टालने के लिए सिद्धांत का ही खून कर दिया गया तो यह संघर्ष से भी बुरी स्थिति है। बल प्रयोग के द्वारा एक देश का दूसरे देश को अपने आधीन करने का प्रयास यदि आक्रमण है तो जो भी ऐसा करे वह आक्रांता है। उत्तरी कोरिया अपेक्षाकृत निर्बल है और चीन एक महान शक्ति है ये तथ्य वस्तुस्थिति में परिवर्त्तन नहीं करते। न्याय किसी से भयभीत नहीं होता और जो भयभीत होता है वह न्याय नहीं है। न्याय की दृष्टि में सबल अथवा निर्बल का कोई भेद नहीं। यदि राष्ट्र संघ को जीवित रखना है तो इस सिद्धांत पर किसी भी प्रकार का समझौता घातक होगा। यदि चीन आक्रांता है तो उसे आक्रांता ही स्वीकार किया जाना चाहिये।

किन्तु अब आक्रान्ता घोषित कर देने के पश्चात राष्ट्रसंघ का उत्तरदायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है। यह अवसर द्वेष और क्रोध से समस्या पर विचार करने का नहीं है। गत महायुद्ध की मारी हुई मानवता अब तक तड़प रही है। उसे पुनः एक महायुद्ध की ज्वाला में प्रवेश कराना, केवल क्रोध, घृणा अथवा द्वेष के कारण, एक गुरुतम पाप होगा। विश्व की महाशक्तियों के नेताओं का इस प्रश्न पर अत्यन्त गम्भीरता, सावधानी तथा उदारता से विचार करना नितान्त आवश्यक है। आक्रान्ता घोषित कर के जहां सिद्धान्त रक्षा की गई है वहां अभी भी चर्चा के लिए स्थान है। चर्चा द्वारा यदि आक्रान्ता पीछे हट जाता है तो एक विश्व संकट टल जाता है और राष्ट्रसंघ का उद्देश्य भी सफल हो जाता है।

सब से अन्त में हमें दो शब्द भारत सरकार से कहने हैं। भारत ने इस समस्या का शान्तिपूर्ण हल निकालने का भारी प्रयास किया है। उसका फल केवल राष्ट्रसंघ द्वारा चीन को आक्रान्ता घोषित कर देने मात्र से मिट्टी में नहीं मिल जाता। यथार्थ में भारत जैसे तटस्थ राष्ट्रों के शान्ति सम्बन्धी प्रयत्नों की जितनी आवश्यकता अब है उतनी कभी नहीं थी। ऐसी स्थिति में राष्ट्र संघ के इस प्रस्ताव को "दुर्भाग्यपूर्ण" कह कर बैठ रहने और अब तक किये धरे पर पानी फेर देने से काम नहीं चलेगा। उसे अपने प्रयत्न जारी रखने चाहिए।

★

अहमदाबाद अधिवेशन

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का अहमदाबाद अधिवेशन कई दृष्टियों से विचारणीय है। श्री अलगूराय शास्त्री ने अपने भाषण में इस बात पर जोर दिया कि कांग्रेस को साम्प्रदायिकता का विचार छोड़ देना चाहिये। पं० नेहरू ने इसका विरोध करते हुये अपने भाषण में बताया कि साम्प्रदायिक एकता स्थापित करना यह कांग्रेस का आधारभूत सिद्धांत है। इस को छोड़ा नहीं जा सकता। यदि कांग्रेस ने इसको छोड़ा तो मैं जी-जान से इसका विरोध करूंगा।

जहां तक हम समझ सकते हैं श्री शास्त्री जी के कथन का भाव यह है कि स्वतन्त्र भारत में भिन्न-भिन्न संप्रदायों की दृष्टि से विचार न करके सबको एक समान मान कर सबके साथ समान व्यवहार होना चाहिये। हमें इस बात में कोई अनौचित्य दिखाई नहीं देता। इसके विपरीत आज देश को इसकी नितान्त आवश्यकता है। इसके विरोध में पं० नेहरू का साम्प्रदायिक एकता की दुहाई देना इस बात की ओर संकेत करता है कि वे अभी भी भारत में विभिन्न सम्प्रदायों को स्वीकार करते हैं और कांग्रेस की उसी नीति के समर्थक हैं, जिस पर साम्प्रदायिक एकता के नाम पर वह अपने जीवन काल में चली है और जिसे सीधी भाषा में मुस्लिम तुष्टीकरण नीति कहा जाता है।

कांग्रेस की इस नीति ने देश के जीवन में जितने कांटे बोये हैं उतने शायद अन्य किसी कारण से नहीं उत्पन्न हुए। साम्प्रदायिक एकता के नाम पर ही बहुसंख्या के हितों का नाश कर थोड़े से लोगों के प्रसाधन के प्रयत्न हुए। इस मार्ग से चलने पर पं० नेहरू द्वारा घोषित अमरफल तो आगे आयेगा या नहीं किन्तु भयानक कांटों से क्षत विक्षत देश का जीवन लड़खड़ा उठा है यह अवश्य दिखाई देता है। और मार्ग का कहीं अन्त दिखाई नहीं देता।

यदि हमने जीवन भर भूल की है तो इसका यह अर्थ नहीं होता कि आज भी उस भूल को ही सत्य मान कर चलें, और उत्तर की ओर के किसी बिन्दु पर पहुंचने के लिए दक्षिण की ओर यह कहते हुए बढ़ते चले जायं कि इसी मार्ग से चलने से उस बिन्दु पर पहुँच सकेंगे। यदि यह भी मान लिया कि सारी पृथ्वी का चक्कर लगा कर और अनन्त कष्ट उठा कर उस बिन्दु पर कभी पहुंच भी सके तो क्या वह प्रशंसा के योग्य होगा। विश्व के लोग हसेंगे और मूर्ख बतायेंगे।

आज स्वतन्त्र भारत में सम्प्रदायों के रूप में विचार करना राष्ट्रीयता की नींव को कच्चा रखना है। सभी व्यक्ति समान हैं अत सभी के साथ समान व्यवहार होना आवश्यक है। साम्प्रदायिक आधार पर किसी को भी सुविधायें देना पाप है। कांग्रेस ने अपने जीवन में यही सबसे बड़ी भूल की है। किन्तु अब कांग्रेस में भी लोग इस भूल को समझने लगे हैं। श्री शास्त्री जी ने इसी लोकमत को प्रकट किया था। किन्तु दुर्भाग्यवश उस पर पूरा ध्यान नहीं दिया गया। किन्तु राष्ट्र के जीवन मरण के इन प्रश्नों पर लोकमत की उपेक्षा करके कांग्रेस अधिक दिन नहीं चल सकेगी।

दूसरा जो अन्य महत्वपूर्ण प्रस्ताव है, वह एकता सम्बन्धी है। कुछ दिन पूर्व ज्ञात हुआ था कि कांग्रेस अध्यक्ष वर्तमान परिस्थिति में देश के सभी दलों को एक करने का प्रयत्न करेंगे। किन्तु अहमदाबाद में यह देशव्यापी एकता की कल्पना सिकुड़ कर कांग्रेस को पुराने कांग्रेसियों तक ही रह गई। इस बात से कोई भी इन्कार नहीं करेगा कि आज देश व्यापी एकता की कितनी आवश्यकता है। यदि कांग्रेस प्रामाणिकता से यह प्रयत्न करती तो उसका प्रयास स्तुत्य होता। किन्तु कांग्रेस के अधिकांश नेताओं को कांग्रेस से आगे दिखाई ही नहीं देता। जैसे अपनी आवाज को वे देश की आवाज समझते हैं, वैसे ही कांग्रेस को वे देश मानते हैं। इसीलिए व्यवहार में उनका राष्ट्र कांग्रेस और राष्ट्रीयता कांग्रेसियत है।

———

शेख अब्दुल्ला का कूटनीतिक चक्र

प्रजा परिषद के दमन का दौर दौरा

शेख अब्दुल्ला की नेशनल कान्फ्रेंस ने दो मास पूर्व जम्मू और काश्मीर के लिए एक संविधान परिषद् बुलाने की जो घोषणा की थी उससे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण वैधानिक प्रश्न खड़ा हो गया है। सम्भव है उसका आगे चलकर कोई गम्भीर परिणाम निकले।

शेख अब्दुल्ला की इच्छा

शेख अब्दुल्ला और नेशनल कान्फ्रेंस ने संविधान-परिषद् के चुनावों के लिए दौड़ धूप प्रारम्भ करदी है। एक वक्ता के अनुसार इस परिषद् का कार्य केवल संविधान तैयार करना ही नहीं, वरन् 'नवीन काश्मीर योजना' के आधार पर भारत या पाकिस्तान के साथ मिलने के प्रश्न को तय करना, न कि भारत के साथ रहने के निर्णय को दुहराना, जैसा कि प्रधान मन्त्री नेहरू समझते हैं। राजा के भविष्य का निर्णय, और जमींदारों को क्षतिपूर्ति देने के विषय में निश्चय आदि प्रश्न भी उसको सुलझाने हैं। इन सबके विषय में शेख अब्दुल्ला और उनके साथियों का मत स्पष्ट है। वे भारत के साथ पूर्णतः मिलने के विरोधी हैं और काफी अंशों में स्वतन्त्र-काश्मीर का संगठन करना चाहते हैं। महाराजा को वे बिलकुल नहीं चाहते, और न जमींदारों को किसी प्रकार की क्षतिपूर्ति देने के पक्ष में हैं।

नई अड़चन

पर उनके मार्ग में सबसे बड़ी बाधा यह उपस्थित हो रही है कि संविधान परिषद् बुलाने का अधिकार है राज्य के वैधानिक प्रमुख युवराज कर्णसिंह को जो अपने पिता महाराजा हरीसिंह के स्थान पर रीजेंट की हैसियत से काम कर रहे हैं। युवराज अपने वंश के अधिकारों पर अपने हाथों कुठाराघात करना नहीं चाहते और न यह चाहते हैं कि उन लोगों का भाग्य निर्णय भी औरों के हाथ में रहे जो कि पूर्णत: भारत में विलीन होकर भारत के संविधान के अन्तर्गत शामिल होने के इच्छुक हैं। शेख अब्दुल्ला के कहने से भारत सरकार के कुछ मन्त्री युवराज पर अपनी अनुमति देने के लिए बहुत दबाव डाल रहे हैं।

बहुत सम्भव है कि निकट भविष्य में ही कोई सनसनीपूर्ण घटना घटित हो जाय।

मुस्लिम बहुल जिले काश्मीर में

यद्यपि संविधान परिषद् का भविष्य अभी संदिग्ध है पर शेख अब्दुल्ला और उनके साथी जोर शोर से चुनाव आंदोलन में लगे हुये हैं जम्मू प्रांत से काट कर नये बनाये गये राजौरी और डोडा के मुस्लिम बहुल जिलों का दौरा करते हुये उन्होंने अपने विश्वस्त साथियों को बतलाया कि यह दोनों जिले शीघ्र ही काश्मीर प्रांत में मिलाये जाने वाले। उनके भाषणों का एक मात्र सार था प्रजा परिषद् का विरोध।

प्रजा परिषद् का दमन

यद्यपि सरकार की कोप दृष्टि से जनता बहुत त्रस्त है फिर भी कहीं कहीं वह दमन का विरोध कर ही उठती है। जम्मू जिले के इग्गी नामक एक स्थान की सभा में, जहां जम्मू का जिलाधीश और प्रांत का गवर्नर भी उपस्थित थे, प्रजा परिषद् के विरुद्ध नेशनल कान्फ्रेंस की एक सभा में एक कार्य कर्ता द्वारा अशिष्ट भाषा का प्रयोग किये जाने पर एक व्यक्ति ने इसके विरुद्ध आवाज उठाई। इस पर वक्ता इतने आप से बाहर हो गये कि उसके मुंह पर चांटा मार दिया। श्रोता इसको सहन न कर सके और वक्ता महोदय की इतनी मरम्मत की कि जिलाधीश और गवर्नर को भी वहां से भागना पड़ा। इसके बाद अब नेशनल कान्फ्रेंस की सभायें पुलिस के पहरे में होती हैं।

इसके विपरीत प्रजा परिषद् अपना साधारण काम भी नहीं कर सकती। कुछ ही दिन पूर्व प्रजा परिषद के मंत्री श्री श्यामलाल शर्मा ने राजौरी जिले का दौरा किया था और वहां पर परिषद् की शाखा खोली थी। इस 'अपराध' में वहां की शाखा के प्रधान को उनसे उन का ठेका छीन लेने की धमकी दी गई और मंत्री का कपड़े का 'कोटा' बन्द कर दिया गया। इस प्रकार की यह एक ही घटना नहीं है, दूसरे जिलों में भी इसी प्रकार का दमनचक्र चल रहा है।

प्रजा-परिषद् के दो प्रस्ताव

१७ जनवरी १९५१ को जम्मू, काश्मीर प्रजा परिषद् की कार्य कारिणी ने दो बड़े महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये। पहला यह है कि परिषद् का संविधान परिषद् के विषय में, जब तक कि वह राज्य के वैधानिक प्रमुख की ओर से प्रत्यक्ष न बुलाई जाय, कोई मत नहीं है। प्रजा परिषद सदा से भारत से मिलने के प्रश्न को दुबारा छेड़ने के विरुद्ध रही है।

दूसरे प्रस्ताव में उसने जम्मू काश्मीर सुरक्षा एक्ट की धारा २० को उठाने की मांग की जिसके द्वारा सरकार अपने विरोधियों का दमन कर रही है और जिसके कारण प्रजा परिषद् स्वतन्त्रता-पूर्वक चुनावों की तैयारी नहीं कर सकती।

एक लघु कथा

बोल कृष्ण बलदेव की....

श्री शिवप्रसाद शास्त्री

भारतवर्ष में धर्म प्रधान जनता में धर्म शास्त्रों, रामायण और महाभारत की कथा का बड़ा प्रचार है। हरिद्वार हिन्दुओं का एक पवित्र तीर्थ है, अतः वहां भी नित्य-प्रति कथा वार्ता हुआ करती है। अनेक सज्जन स्वयं भी आप सभा जोड़ कर बैठ जाते हैं। श्रद्धालु श्रोता गण उन्हें भी प्राप्त हो ही जाते हैं।

मैं भी कई वर्षों तक हरिद्वार में रह चुका हूं। उस समय के कथा-वाचकों में एक शास्त्री जी की कथा मुझे बड़ी रोचक प्रतीत होती थी। शास्त्री जी अपने श्रोताओं में बीसवीं सदी की सभ्यता के क्षीर सागर में नहाये पश्चिमी अलंकार सज्जा से सुसज्जित भद्र पुरुषों और गुलामी की बेड़ियों से जकड़ी भारत की रमणी कहाने में लज्जा का अनुभव करने के कारण कम से कम बाह्य वेष-भूषाओं में पश्चिमी 'लेडी' बनने की व्यर्थ चेष्टा करनेवाली विलासिनियों को देख कर 'सबे मूल प्रकृति केते ढंग पसारे के, जैन्टिल मैनों मनेच्छुप्र' सभ्यता को अभाव के'।' और 'कोट'च, बूट'च, घड़ी, बूटीच' आदि भव्य श्लोकों का चटपटा संपुट लगा दिया करते थे।

उनसे कुछ दूरी पर एक महात्माजी जो वेदान्त की त्रिवस्था में पहुंचे हुए थे, 'पंचदशी की कथा' किया करते थे, परन्तु वह तो पांचवीं दशा के समीप पहुँचे, लोगों के ही काम की थी। अतः अपने राम को उसमें कोई रुचि नहीं थी।

आगे एक रामानन्दी शाखा के महात्माजी हारमोनियम के मधुर स्वर पर राम चरित्र मानस की कथा करते थे। उनके सभास्थल में जनता की संख्या अच्छी रहती थी। क्योंकि कुछ तो उनकी कथाशैली ही सुन्दर थी, कुछ उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक था। उज्ज्वल गौरवर्ण, प्रशस्त उन्नत ललाट पर इधर-उधर केसरिया चन्दन और बीच-बीच में श्वेत और रक्त ऊर्ध्व त्रिपुण्ड, कृष्ण और दीर्घ दाढ़ी अजानु विलम्बी चोला श्रोताओं को उनकी ओर श्रद्धा से नत-मस्तक कर देते थे। महात्मा जी के भक्तों में महिलाओं की संख्या अधिक रहती थी। श्रोताओं की ओर मुख किये एक रामचन्द्र जी का सुन्दर चित्र रखा रहता, जिसकी शोभा गुलाब के हार से चौगुनी हो जाती थी। वहीं एक रजत पत्रों से आच्छन्न चौकी पर मुरादाबादी थाल रखा रहता, जिसमें श्रद्धालु भक्त अपनी 'प्रत्यक्ष श्रद्धा' उपस्थित करके महात्मा का 'हार्दिक आशीर्वाद' प्राप्त करते।

अस्तु ऐसे स्वर्गीय और पावन स्थल की मेरे जैसा व्यक्ति क्यों उपेक्षा करता? अन्यथा महात्मा जी की पीयूषवर्षिणी स्वर माधुरी से कानों को वंचित रखने महान पाप उठाना पड़ता। मैंने भी जाकर एक कोने में आसन जमा लिया। पता लगा कि उन दिनों श्रीमद्-भागवत की कथा हो रही थी। कथा आरम्भ होने पर जब स्वामी जी 'साष्टांग' झूम कर 'श्रीकृष्ण बलदेव की जय' बोले तो सम्पूर्ण श्रोता वर्ग ने भी गम्भीर स्वर में 'जय' की ध्वनि को गुंजा दिया।

लगभग १॥ घन्टे भर यह अपूर्व चर्चा हुई। इस प्रकार लग-भग एक सप्ताह तक नियमित रूप से मैंने इस सुअवसर से लाभ उठाया। आठवें दिन मेरे एक मित्र और मिल गये। एक अद्भुत दृश्य दिखाने का लालच दे कर उन्हें भी साथ लिया। नियत समय पर कथा स्थान पर पहुँच गये। महात्माजी आसन पर विराजमान थे। उसी समय एक श्रद्धालु युवक ने आगे बढ़ कर एक कटोरे में दुग्ध मिश्रित जल से उनके दाहिने चरण को धोया। उसके बिन्दुओं की छिड़क सर्वांग शरीर को पवित्र किया। पुनः एक अनेक प्रकार के पुष्पों से गूंथा हार पास में दूसरी ओर रखे श्रीकृष्णजी के चित्र को, एक उसी प्रकार का रामचन्द्रजी के चित्र को पहना कर, पीछे चमकते सुवर्ण सूत्रों गुम्फित चित्र विचित्र पुष्पों वाला हार स्वामीजी के गले में डाल दिया। पीछे एक कटोरी में रखा केसर और कपूर-मिश्रित चन्दन स्वामीजी और श्रोताओं के मस्तक पर लगाया। सम्पूर्ण आगन्तुक व्यक्ति उसकी श्रद्धा को देख कर धन्य २ कह रहे थे। इतना कर चुकने के अनन्तर वह भद्र पुरुष स्वामीजी के पास ही भूमि पर बैठ गया। पुनः कथा आरम्भ हुई। श्रीलालाजी आनन्द में झूमने लगे। भाल पर लक्ष्मी देवी के कटाक्ष बरसने लगे। आज उनकी कृपा कुछ अधिक हो रही थी। कुछ महिलाओं ने स्वर्णालंकारों की भेंट भी चढ़ाई। आज स्वामी जी का स्वरोल्लास अपूर्व था। श्रोताओं और स्वामी जी की चेतना एक मय हो रही थी। मस्ती और हर्ष में दोनों ही अपनी सुधबुध भूले हुए थे। तभी कोई प्रकरण समाप्त हुआ और स्वामी जी ने श्रोताओं की ओर दृष्टि करके झूमते हुए कहा, 'बोल श्री कृष्ण बलदेव की....।' जय कहनेके पूर्व ही दृष्टि ज्यों ही थाल की ओर घूमी कि बस हाथ से करताल छूट गई।

सब श्रोता लोग चकित होकर 'क्या हुआ क्या हुआ' कहके उठे तो देखा कि थाल खाली पड़ा है और निकट बैठे भक्त राज का कहीं चिन्ह भी नहीं।

(१)

(१) गत वर्ष गणराज्य के प्रथम समारोह पर डा० राजेन्द्रप्रसाद की सवारी।

दाईं ओर

(२) भारतीय गणराज्य की प्रथम वर्षगांठ पर राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद सैनिकों का अभिवादन स्वीकार कर रहे हैं।

नीचे

(३) आधुनिक युग में टैंकों की महत्ता के अनुरूप ही जलूस में टैंक दस्ते को सबसे आगे स्थान दिया गया।

(२)

(३)

नीचे बाईं ओर

(४) मोटर और टैंक के युग में घोड़ों की अपनी ही शान है। अब दूसरा स्थान घुड़सवार सैनिकों को मिला।

नीचे दाईं ओर

(५) रेगिस्तानी जहाजों का यह काफला देश की कई सौ मील लम्बी मरुस्थली सीमा की रक्षा करता है। ऊँटों का यह 'जैसलमेर रिसाला' विशेष रूप से महोत्सव में भाग लेने जैसलमेर से दिल्ली लाया गया है और जलूस में इसको तीसरा स्थान प्रदान किया गया है।

(४)

(५)

विद्यार्थी और राजनीति

★ श्री आचार्य काका कालेलकर

राजनैतिक आन्दोलन में विद्यार्थियों का शरीक होना मुनासिब है या नहीं? यह सवाल करीब पचास वर्ष हुए हम सुनते ही आ रहे हैं। इतना वासी सवाल आज भी अनेक जगह पूछा जाता है, यह हमारी सनातनी वृत्ति का नमूना है।

जब देश परतन्त्र था और उसे आज़ाद करने के लिए सबों की सब तरह की शक्ति काम में लाना ज़रूरी था और आज़ादी की नैया बचाने के प्रयत्न में एक एक जन महत्व का था तब इस सवाल का अर्थ अलग था। परतन्त्र देश की राजनीति अलग होती है। स्वतन्त्र देश की राजनीति के माने ही अलग होते हैं।

परतन्त्र देश की राजनीति का अर्थ है, क्रांति। उस स्थिति में युद्ध काल के कानून से नियम राष्ट्रीय जीवन को लागू किये जाते हैं। उन दिनों हम कहते थे कि जब घर में आग लगी हो, तब पानी लाकर उसे बुझाने का धर्म या कर्तव्य किसका है और किसका नहीं ऐसे शास्त्रार्थ की चर्चा छेड़ने कोई ठहर नहीं सकता। छोटे-बड़े सब घर बचाने के काम में लग जाते हैं। देश की परतन्त्रता चाहे जितनी पुरानी क्यों न हो, उसे हटाने का काम उसी प्रकार की, आग के लगे की, तेज़ी से ही करना चाहिये। स्वतन्त्रता के उपासक कहेंगे कि अब देश आज़ाद हुआ है, अब विद्यार्थियों को कहना अनुचित होगा कि अपनी पढ़ाई बरबाद करके भी देश सेवा के राजनैतिक कामों में लग जाओ।

जो लोग गरीबों के उद्धार की सोचते हैं वे कहेंगे कि अंग्रेज़ तो गये, दिल्ली के किले पर हमारा तिरंगा झंडा आ गया, लेकिन गरीब लोगों को परदेशी शेर खा जाय या स्वदेशी भेड़िया खा जाय इसमें उसके लिये फरक क्या हुआ? आज तक हम जिस आज़ादी के लिए लड़े वह हमारी मध्यम वर्ग की आज़ादी थी। हम स्वावलंबन लड़े। अब हम वही आज़ादी गरीबों तक पहुंचाना चाहते हैं। धर्म युद्ध अभी शुरू हो रहा है। अंग्रेज़ों का जुल्म दूर करना कुछ तो आसान था। गरीबों को अब हमारे ही स्वार्थी लोगों के जुल्म से बचाना आसान नहीं है। देश के हज़ारों और लाखों लोग भूख के शिकार हो जायं यह हम कैसे बरदाश्त कर सकते हैं? अगर हमारे हृदय में मानवता है तो हम वही आज़ादी का युद्ध आग के वेग से आगे चलायेंगे। और उसमें देश के नवयुवकों को अपना बलिदान देने के लिए ज़रूर बुलायेंगे।

बात सही है। तो भी अब गरीबों के उद्धार का रास्ता पहले के जैसा नहीं है। गरीबों के हाथ में वोट याने मत देने का अधिकार आ गया है। वे स्वयं अपने शासनकर्ता को पसंद कर सकते हैं। इसलिये गरीबों का उद्धार राजसत्ता तोड़ने से नहीं, लेकिन प्रत्यक्ष प्रजा की सेवा से, कौशल्य के प्रचार से और प्रजामत में परिवर्तन करने से हो सकेगा। अब अगर हम राजसत्ता को कमज़ोर करेंगे तो सारा राष्ट्र ही कमज़ोर हो जायेगा।

जहां जनतन्त्र है वहां चुनाव के दिनों में वोट देना राजनैतिक प्रवृत्ति है। वोट संगठित होने पर देश में चाहे जो क्रांति कर सकता है। हमारे राष्ट्रीय विधान के अनुसार जिस किसी को नागरिक के हक मिले हैं वह राजनैतिक व्यक्ति है। उसका वोट देना राजनैतिक प्रवृत्ति में शरीक होना है। देश में जितने भी पक्ष, उप-पक्ष हैं उनके सिद्धांत और उनके कार्यक्रम समझ लेना और उनमें तुलना करके अपनी पसंदगी के अनुसार वोट देना हरेक नागरिक का कर्तव्य है। जो युवक नागरिक की योग्यता पा चुके हैं और फिर भी विद्यार्जन कर रहे हैं उनको कौन कहेगा कि तुम विद्यार्थी हो इसलिये वोट न दो? सरकारी कर्मचारी और फौज के सिपाही भी अपनी इच्छानुसार वोट देने के अधिकारी हैं। कोर्टों के द्वारा जिन्हें सजा हुई हैं और जो जेल भुगत चुके हैं ऐसे लोगों में भी चन्द लोग अपने नागरिक के हक खोते नहीं।

ऐसी हालत में विद्यार्थियों को कोई नहीं कहेगा कि तुम विद्यार्थी हो इसलिये चुनाव में शरीक होना और वोट देना तुम्हारे लिये योग्य नहीं है।

हर एक नागरिक को राजनैतिक सिद्धांतों का और व्यवहार का अच्छा ज्ञान होना ही चाहिये। विद्यार्थी काल में ही राजनीति का पूरा अध्ययन अच्छी तरह से हो सकता है। उस ज्ञान की पूर्णता के लिये हम विद्यार्थियों को स्कूल और कालेज के दिनों मे बनावटी पार्लमेंट चलाने का अवसर भी देते हैं।

इस तरह विद्यार्थियों के लिए राजनीति से और उसके आंदोलनों से परिचित रहना आवश्यक है। और मतप्रदान के रूप मे देश की प्रत्यक्ष राजनीति में शरीक होना उनका केवल अधिकार नहीं, धर्म भी है।

अब बाकी का सवाल इतना रहता है कि राजनतिक आन्दोलनों मे और चुनाव की धूमधाम में विद्यार्थी शरीक हों या न हों? इसका जवाब स्पष्ट है। विद्यार्थी जब तक विद्यार्थी हैं और विद्यार्थी रहना पसन्द करते हैं, तब तक उन्हें अपना सारा समय अध्ययन में ही देना चाहिये। एकाग्रता के बिना पढ़ाई हो नहीं सकती। लेकिन अगर किसी विद्यार्थी को ऐसा लगे कि देश बरबाद हो रहा है, समाज में घोर अन्याय चल रहा है, मुझे तो मिटाने के लिए राजनीति में कूदना ही चाहिये, तो मैं ऐसे विद्यार्थी को उसकी उम्र कुछ भी हो, उसे कहूंगा कि पहले पढ़ाई छोड़ दो, विद्यार्थी न रहो, उसके बाद अपनी शक्ति-बुद्धि पूरी लगा कर आन्दोलन में शरीक हो जाओ।

जो लोग विद्यार्थी भी रहना चाहते हैं और आन्दोलनों में शरीक भी होना चाहते हैं, उनमें एक भी निष्ठा स्थिर नहीं रह सकती। वे न पढ़ाई के प्रति ईमानदार रह सकते हैं, न आन्दोलन के प्रति। जब जी-जान से आन्दोलन करना पड़ता है, तब वे पढ़ाई की ढाल आगे करते हैं, और पढ़ाई कच्ची होती है, तब वे आन्दोलन को इसका कारण बताते हैं। इसमें पढ़ाई और आन्दोलन दोनों बिगड़ जाते हैं, और दोनों के प्रति अन्याय करने वाले नवयुवक के चारित्र्य का तेज भी बिगड़ जाता है। इसलिए जब तक विद्यार्थी की हैसियत मंजूर है, तब तक समय शक्ति और ध्यान अथवा अवधान का प्रधान हिस्सा पढ़ाई को देना चाहिए और आन्दोलनों से दूर रहना चाहिए। जब ऐसा करना असह्य हो जाय, तब पढ़ाई को बाकायदा छोड़ कर सारी शक्ति आन्दोलन की ओर लगानी चाहिये और फिर उसके लिए पछताना नहीं चाहिये। इस निर्णय में औरों की सलाह मान कर निर्णय करना, पछताने पर औरों को दोष देते रहना कितना भी स्वाभाविक हो, तेजस्विता के लिए अनुकूल नहीं है।

जब देश में परराज्य था तब उस काल की सरकार चाहती थी कि विद्यार्थी तो क्या, कोई भी नागरिक राजनैतिक बातों में दिलचस्पी न ले। स्वराज के दिनों में हमारी सरकार यही चाहेगी कि कि देश-सेवा की उज्ज्वल परंपरा अबाधित रहे। हमारे विद्यार्थी अगर राजनीति से परहेज रखने लगेंगे तो हमें स्वराज्य की सेवा करने के लिये और परदेश में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये समर्थ व्यक्ति कहां से मिलेंगे? हिन्दुस्तान कोई छोटा देश नहीं है। एक प्राचीन और भव्य संस्कृति का वह प्रतिनिधि है। प्राकृतिक समृद्धि और लोकसंख्या दोनों दृष्टि से भी भारत एक समर्थ देश है। हमारी लोकसंख्या आज बोझा रूप ही प्रतीत होती होगी। लेकिन लोकशिक्षा के और कौशल्य के रूप में प्रकट होगी। ऐसे राष्ट्र के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रणाली द्वारा ही सारी दुनिया की राजनीति का प्रत्यक्ष अनुभव भी कराना होगा। समाज-सेवा, अन्याय-निवारण और विश्वव्यापी सहयोग, तीनों के द्वारा जो शिक्षा दी जाती है वही सच्ची शिक्षा है। उसी शिक्षा में राजनैतिक आंदोलन भी पाठ्य क्रम का एक हिस्सा बन जाता है। डाक्टरी शिक्षा में जिस तरह बीमारों की प्रत्यक्ष चिकित्सा की जाती है, और नश्तर लगाये जाते हैं उसी तरह समाज सेवा के और संघर्ष मिटाने के प्रत्यक्ष-प्रयोग द्वारा ही शिक्षा पूर्ण होगी फिर तो यह सवाल ही नहीं उठेगा कि विद्यार्थी राजनैतिक आंदोलन में शरीक हों या नहीं।

★

क्या सभ्यता विनाशोन्मुख है ?

★ श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

दूर अस्त जाय जहाँ सूर्य नहीं पहुँच सके। मनुष्य जाति के पुरानी से पैसे हुए इतिहास में विचारशील लोगों ने कई बार यह प्रश्न 'उठाया और उसके उत्तर देने का यत्न भी किया। प्रश्न उठाने का तात्पर्य यह होता है कि यदि उस समय की सभ्यता को विनाश से बचाने का कोई उपाय हो सके तो वह किया जाय। समय-समय पर दूरदर्शी चिकित्सकों ने सभ्यता में लगे हुए रोगाणुओं के इलाज प्रस्तुत किये हैं ! परन्तु यह आश्चर्य की बात है कि जब एक बार किसी जाति के शरीर में क्षय के कीटाणु प्रविष्ट हो जाते हैं, तब वह जाति चाहे सभ्य हो या असभ्य, उसका विनाश से बचना कठिन हो जाता है। महाकवि कालिदास ने कहा है—

'नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण'

जैसे गाड़ी के पहिये की अरायें क्रम से ऊपर और नीचे जाती और आती है, इसी प्रकार इस पृथ्वी की जातियां मानों किसी विधान से बंधी हुई हैं, आकाश में चढ़ती और पाताल में गिरती रहती है।

एक बार मनुष्य जाति के विस्तृत इतिहास का सिंहावलोकन करके देखिये, आपको सभ्यताओं के उत्थान और पतन का क्रम विधि के विधान के समान निश्चितरूप से चलता हुआ दिखाई देगा। [illegible] प्राचीन इतिहास को छोड़ देते हैं और [illegible] का निरीक्षण करते हैं, तो हम ईरान, यूनान और रोम की सभ्यताओं को [illegible] की तरह चमकता और कुछ देर तक चमक कर अन्त में हवा के प्रचण्ड झोंकों के सामने विलुप्त होते देखते हैं। दारा का साम्राज्य क्या कभी नष्ट होने वाला प्रतीत होता था ? सिकन्दर जब अफ्रीका और एशिया की जातियों को पद-दलित करता हुआ भारत की सीमाओं में प्रविष्ट हुआ, तब क्या कोई सोचता था कि एक दिन यूनान की उत्कृष्ट सभ्यता और संस्कृति को ग्रहण लग जायगा। रोम के शासक तो एक समय 'वासुधैककुटुम्बक' अर्थात् समुद्र पर्यन्त पृथ्वी के मालिक बन गये थे। क्या जूलियस सीजर और उसके उत्तराधिकारियों को कभी यह कल्पना भी हो सकती थी कि एक दिन राज्य, शक्ति, कला, साहित्य और दर्शनरूपी चार खम्भों पर खड़ा हुआ, रोमन साम्राज्य मिट्टी में मिल जायगा ?

दूर क्यों जायें, महाभारत के संग्राम से पूर्व के समय की भारतीय विभूति किसी अन्य देश से कम नहीं थी। उस समय की संस्कृति, सभ्यता और विभूति का वर्णन पढ़ कर विश्वास भी नहीं होता कि आज से इतना समय पूर्व यह सब कुछ हो सकता था। कुछ लोग तो इसे कपोल-कल्पित और असम्भव ही मानते हैं, परन्तु यह यदि सर्वांश में नहीं तो अधिकांश में अवश्य सत्य था और यह भी सत्य है कि सृष्टि के नियमों के प्रभाव से वह सब कुछ नष्ट हो गया और अनेक शताब्दियों के लिये हमारे देश पर गहरा अन्धकार छा गया।

सभी जातियों के उत्थान और पतन के इतिहास को पढ़ने से एक बात मन पर स्पष्ट रेखाओं में अंकित हो जाती है। कुछ विचारक मानते हैं कि मनुष्य अपने मन को चारों ओर की परिस्थितियों से सर्वथा अलग अलग करके स्वतन्त्र विचार कर सकता है। इतिहास का अनुशीलन बताता है कि बात इससे विपरीत है। मनुष्य के दार्शनिक, धार्मिक और नैतिक विचारों पर समय का बहुत गहरा प्रभाव रहता है। इसका एक प्रबल प्रमाण यह है, जब कोई जाति अभ्युदय की ओर जा रही होती, तब उसके विचारों की विचार शैली प्राय एकसी हो जाती है। उस जाति के विचारकों को यह अनुभव होने लगता है कि संसार वस्तुतः उन्नति की ओर जा रहा है। वह यह भी मानने लगते हैं कि मानव जाति को उन्नति की चरम सीमा तक पहुँचाने के लिए जिस सभ्यता और संस्कृति की आवश्यकता है उसके प्रतिनिधि हम हैं। इस कारण संसार के सम्मसिद्ध नेता भी हमी हैं। इतिहास में जब किसी भी जाति का सितारा चढ़ा है, तभी उसमें ऐसे दार्शनिक और कवि उत्पन्न होते रहे हैं जो अपनी जाति के नेतृत्व का बलपूर्वक समर्थन करते रहे हैं। १९ वीं सदी में पश्चिम का भाग्य चमक रहा था, योरुप के व्यापारी और साहसिक पुरुष भूमण्डल पर छा गये थे, प्रतीत होता था कि मानों जाति कुछ ही वर्षों में यूरोपियन जातियों की मानसिक और राजनैतिक दासी बन जायगी। उस समय यूरोप में विकासवाद ने जन्म लिया। विकासवाद की मौलिक भावना यह थी कि सृष्टि में निरन्तर जो विकास हो रहा है, उसकी सबसे बढ़िया और परिष्कृत उपज योरुप की जातियां हैं, जो अपनी सभ्यता का वरदान देकर मनुष्यमात्र को विकास की ऊंची से ऊंची चोटी तक पहुँचायेगी। १९ वीं शताब्दी का अंत होते होते यूरोप की जातियों की नेतृत्व की होड़ चरम सीमा तक पहुँच गई। अंग्रेज विचारकों की सम्मति बन गई थी कि ऐंग्लो सेक्सन जाति विकास का सर्वोत्कृष्ट नमूना है, जो जर्मन तत्ववेत्ता सिद्ध करने लगे थे कि संसार के नेतृत्व का अधिकार केवल जर्मन को है। फ्रेंच लोग अपनी प्रभुता का दावा सदा ही करते रहे हैं। इस प्रकार पाश्चात्य सभ्यता २० वीं सदी के प्रारम्भ में उस स्थान पर पहुंच गई थी, जहां भारतीय सभ्यता को हम महाभारत युद्ध से पूर्व पहुँचा हुआ पाते हैं। भारत के नेताओं की उस समय की मनोवृत्ति को बहुत संक्षेप में जानना हो तो दुर्योधन के निम्न लिखित वाक्य का अभिप्राय समझना पर्याप्त है —

'सूच्यग्रम् नैव दास्यामि बिना युद्ध न केशव।'

हे केशव। मैं युद्ध के बिना पाण्डवों को भूमि का उतना भाग भी देना नहीं चाहता, जितना सूई के अग्रभाग से छेदा जा सके। २० वीं शताब्दी के प्रारम्भ में यूरोप की मनोवृत्ति भी वही हो गई थी। जब किसी जाति में यह मनोवृत्ति उत्पन्न हो जाये, तब समझ लो कि वह उन्नति की चोटी से गिरावट की खाई की ओर जाने लगी है। अत्यन्त अभ्युदय के कारण जो मनोवृत्ति उत्पन्न होती है, वह उन प्रवृत्तियों को पैदा कर देती है, जिनसे जातियों का पतन अनिवार्य हो जाता है। जब सृष्टि नियम के अनुसार प्राकृतिक उन्नति के सूर्य पर क्षीणता और विनाश के बादल छाने लगते हैं, तब उस जाति के विचारक इस प्रश्न पर विचार करने लगते हैं कि क्या हमारी सभ्यता विनाशोन्मुख है ? यदि है तो उस विनाश से बचने का उपाय क्या है ? आज पाश्चात्य जगत उस स्थिति में आ गया है कि उसके विचारक इन प्रश्नों पर विचार करने के लिए बाधित हो गये हैं।

मैंने अभी कहा था कि इस समय पाश्चात्य सभ्यता की लगभग वही दशा है, जो महाभारत के समय भारतीय सभ्यता की थी। जब रोग एक-सा है तो, उसका निदान और उपाय भी एक-सा होना चाहिए। महाभारत के युद्ध में शस्त्रों और अस्त्रों का आदान प्रदान आरम्भ होने से पहले भगवान् कृष्ण ने सभ्यता रूपी रोग के कारणों का बहुत सुन्दर विवेचन किया था। वह विवेचन यद्यपि व्यक्ति विषयक है, परंतु वह लागू होता है राष्ट्रों पर भी। भगवान् ने कहा—

ध्यायतो विषयान्पुंसः
सगस्तेषूपजायते,
संगात् संजायते कामः
कामात्क्रोधोऽभिजायते ।
क्रोधाद्भवति सम्मोहः,
सम्मोहात् स्मृतिविभ्रम ।
स्मृति भ्रंशाद् बुद्धिनाशो,
बुद्धि नाशात् प्रणश्यति ॥

आजकल की आर्थिक भाषा में उसका अभिप्राय यह होगा कि जब मनुष्य विषयों के सुखों को अपना ध्येय बतलाते हैं, तब उनकी आवश्यकतायें बढ़ जाती हैं, आवश्यकताओं के बढ़ जाने से औरों के साथ प्रतिस्पर्धा उत्पन्न होती है। तीव्र प्रतिस्पर्धा का राष्ट्रों के संघर्ष के रूप में परिवर्तित होना अवश्यंभावी है। यही युद्ध है। युद्ध करने वालों की बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि के नष्ट हो जाने से चाहे वह व्यक्ति हो या जाति, उसका सर्वनाश हो जाता है।

यह सांसारिक अभ्युदय के आरम्भ होने से लेकर सर्वनाश तक का क्रम संसार के इतिहास में हम भूमण्डल के भिन्न भिन्न भागों में जातियों के उत्थान और पतन का जो निरन्तर अभिनय देखते हैं, उसका संचालन इसी क्रम के अनुसार होता है। जाति अपनी सभ्यता का परिष्कार लेकर उठता है। जाति के वीर पुत्र बुद्धि और साहस के [illegible] विजय प्राप्त करते और चारों ओर [illegible] जाते हैं, जिससे जाति की [illegible] बढ़ जाती हैं। मस्तक में अभिमान भर जाता है और हृदय में यह लालसा उत्पन्न होती है कि हम संसारभर को अपने आधीन करके विश्व की विभूति का उपभोग करें। जब यह लालसा उत्पन्न हो जावे, तब समझो कि उस जाति के अध पतन और विनाश का प्रारम्भ होने वाला है।

महाभारत के युद्ध से पूर्व व्यास मुनि ने अपनी जाति की यह दशा योग की दृष्टि से देख ली थी, तभी तो उन्होंने कहा था— "ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष न च कश्चिच्छृणोति मे । धर्मादर्थश्च कामश्च, कस्मात् धर्मो न सेव्यते।" मैं हाथ उठा कर यह घोषणा करता हूँ, परन्तु मेरी बात कोई सुनता नहीं है कि, जब सांसारिक विभूति और सुख धर्म से ही प्राप्त हो सकते हैं, तो मनुष्य धर्म का सेवन ही क्यों नहीं करते। व्यास मुनि ने अपनी जाति की रक्षा का एक-मात्र यही उपाय समझा था कि लोग प्रकृति सेवा छोड़ कर धर्म के मार्ग का अनुसरण करें।

[शेष पृष्ठ २२ पर]

भारत में वैज्ञानिक गवेषणा

१९५० का वर्ष भारत में आयोजित वैज्ञानिक गवेषणा की प्रथम दशाब्दि समाप्ति और वैज्ञानिक गवेषणा के क्षेत्र में एक नये युग के आरम्भ का द्योतक है। युद्धोत्तर काल में वैज्ञानिक गवेषणा की विस्तृत सुविधाएं उपलब्ध कराने के के लिए वैज्ञानिक तथा औद्योगिक गवेषणा परिषद् ने भारत के विभिन्न भागों में निम्न ११ गवेषणा-शालायें स्थापित करने की योजना बनाई।

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला पूना, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला नयी दिल्ली, ईंधन गवेषणा शाला डिग्वारिह, केन्द्रीय शीशा और चीनी मिट्टी गवेषणा शाला कलकत्ता, राष्ट्रीय धातुशोधन प्रयोगशाला जमशेदपुर, केन्द्रीय खाद्य टैक्नोलोजिकल गवेषणाशाला मैसूर, केन्द्रीय औषधि गवेषणाशाला लखनऊ, केन्द्रीय चमड़ा गवेषणाशाला मद्रास, केन्द्रीय भवन गवेषणाशाला रुड़की, केन्द्रीय सड़क गवेषणाशाला नयी दिल्ली, केन्द्रीय विद्युत रासायनिक गवेषणाशाला कराईकुडी। इनमें से प्रथम सात गवेषणाशालाएं स्थापित हो चुकी हैं और उन्होंने कार्य करना आरम्भ कर दिया है। अन्य गवेषणाशालाओं का निर्माण और उनके लिए आवश्यक साज सामान जुटाने का कार्य भी तीव्रता से किया जा रहा है।

ये राष्ट्रीय प्रयोगशालायें ज्ञात औद्योगिक प्रणालियों में सुधार करने में सहायता देंगी जिससे उत्पादन में अधिक वृद्धि हो सके। साथ ही ये नयी प्रणालियों का विकास करेंगी, जिससे देश में नये उद्योग स्थापित किये जा सकें।

प्रयोगशालाओं के आधुनिक भवन इस प्रकार से बनाये गये हैं कि आवश्यकता पड़ने पर उनके कार्य स्थान में सरलता से ही वृद्धि हो सकेगी और भवनों का नक्शा भी नहीं बदलना पड़ेगा। जहां तक भारत का सम्बन्ध है, इन प्रयोगशालाओं की एक विशेषता यह है कि इनमें प्राइवेट प्लांट की सुविधाएं उपलब्ध की गयी हैं, जिनसे प्रयोगशालाओं में किये जाने वाले अनुसन्धान उन व्यक्तियों को भी सुगमता से ही प्रदर्शित किये जा सकते हैं, जो उनका व्यावसायिक लाभ उठाना चाहते आशा है कि इन प्रयोगशालाओं के भवनों और यंत्र आदि साज सामान पर ७ करोड़ रुपये से अधिक व्यय होगा।

★

भारत में डाकखाने

कोई भी विदेशी यात्री भारत के नगरों में डाक, तार और टेलीफोन की आधुनिक प्रणाली को देख कर यह नहीं कह सकता कि भारत में संचार साधनों की समस्या कितनी गम्भीर है। इस समस्या को समझने के लिए इस बात का ध्यान रखना होगा कि विभाजन के पश्चात् भी, भारत का क्षेत्रफल १०,६६,४१२ वर्गमील और जनसंख्या लगभग ३२ करोड़ है। अधिकांश लोग गांवों में रहते हैं। १,२०,४८० गाव ऐसे हैं, जिनकी संख्या ५००० या इससे अधिक है, और १६,१७८ ऐसे हैं, जिनकी संख्या २००० या इससे अधिक है। बहुत से गांवों में पक्की सड़कें नहीं हैं, इसलिए वहां बैलगाड़ी से डाक भेजनी पड़ती है। पहाड़ी प्रदेशों में कहारों या हरकारों द्वारा डाक भेजी जाती है। भारत की संचार सम्बन्धी समस्यायें एक देश की नहीं, महाद्वीप की समस्यायें हैं। यहां अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंचने के लिए पत्र को लगभग २,७०० मील और तार को २,८६८ मील चलना पड़ सकता है। इसकी उन्नति तब तक सम्भव नहीं, जब तक इसके रक्त संचार के लिए धमनी रूपी संचार साधनों की समुचित व्यवस्था न हो जाए।

भारत में नियमित डाक-प्रणाली की व्यवस्था सबसे पहले १७६६ में हुई थी। १५ अगस्त १९४७ को भारत में कुल डाकखानों की संख्या २४,२८९ थी। तब से ३१ मार्च १९५० तक ११,२५१ नये डाकखाने खोले गये। अप्रेल १९५० में यह निश्चय किया गया कि ३१ मार्च १९५१ तक २,००० जनसंख्या वाले समस्त गांवों में डाकखान खोल देने चाहिए। इसका अर्थ था एक वर्ष में ४,८०० नये डाकखानों की स्थापना। इनमें से लगभग ३ ४००० डाकखाने अब तक खोले जा चुके हैं।

★

तार-प्रणाली

डाक प्रणाली के साथ ही तार-प्रणाली में भी उन्नति हुई है। ठीक सौ वर्ष पहले बंगाल में पहली बार तार-मार्ग बनाया गया था। इस समय देश में लगभग ७ लाख मील लम्बा तार-मार्ग है। ८९ विभागीय तारालय और लगभग १९,० ० ऐसे कार्यालय हैं जहां से तार भेजे जाते हैं। परन्तु भारत के विस्तार और जनसंख्या को देखते हुए भारत की तारप्रणाली सन्तोष-जनक नहीं कही जा सकती। बहुत से नगर और गाव अब भी ऐसे हैं, जहा तार पहुँचाने की कोई व्यवस्था नहीं है।

★

असैनिक उड्डयन

विस्तार और उत्तम जलवायु के कारण भारत वायु परिवहन के लिए बहुत सुन्दर क्षेत्र हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत के असैनिक उड्डयन में पर्याप्त उन्नति हुई है। इस समय भारत में दस भारतीय वायु-परिवहन कम्पनियां हैं, जो दिन में और रात में, भारत में और भारत से बाहर, ४- वायु मार्गों पर, जिनकी लम्बाई लगभग २५,८००० मील है, वायुयान चलाती हैं।

इस समय असैनिक उड्डयन विभाग ६१ हवाई अड्डों का प्रबन्ध कर रहा है। देश के आन्तरिक और बाह्य वायु-मार्गों पर आवश्यक उत्तम संगठन के लिए तथा हवाई अड्डों की उन्नति के लिए एक दीर्घकालीन योजना बनाई गई।

★

पार्लमेण्टरी पद्धति

लोग ब्रिटिश पार्लमेंटमें अच्छे से अच्छे मेम्बर चुन कर भेजते हैं। मेम्बर और तनख्वाह लिये जाते हैं इसलिए उन्हें वहां लोक-कल्याण के लिए ही जाना चाहिये? मतदाता सुशिक्षित माने जाते हैं, इसलिए हमें मानना चाहिये कि वे मेम्बरों के चुनाव में भूल नहीं करेंगे। ऐसी पार्लमेंट को अर्जियों की या दूसरे किसी तरह के दबाव की जरूरत नहीं होनी चाहिए। इस पार्लमेंट का काम इतना सरल होना चाहिए कि दिनोंदिन उसका तेज ज्यादा दीखे और लोगों पर उसका प्रभाव बढ़े। इसके बजाय इतना तो सब कबूल करते हैं कि पार्लमेंट के सदस्य ढोंगी और स्वार्थी होते हैं। हर-एक अपना ही स्वार्थ साधने की दृष्टि रखता है। केवल डर के कारण ही पार्लमेंट कुछ काम करती है। आज जो किया गया है, उसे कल रद्द करना पड़ता है। एक भी काम आज तक पार्लमेंट ने अन्तिम रूप में पूरा किया हो, ऐसी कोई मिसाल देखने में नहीं आती। बड़े-बड़े सवालों की चर्चा जब पार्लमेंट में चलती है, तब उसके मेंबर हाथ-पांव फैला कर लेट जाते हैं या ऊंघा करते हैं। उसके मेम्बर इतना ज्यादा बोलते हैं कि सुनने वाले ऊब जाते हैं। एक महान् अंग्रेज लेखक कार्लाइल ने उसे 'दुनिया की बातूनी' नाम दिया है। मेंबर जिस दल के होते हैं, उस दल के पक्ष में बिना सोचे-विचारे अपना मत देते हैं। वे ऐसा करने के लिए बंधे हुए हैं। अगर उनमें से कोई स्वतन्त्र मत दे, तो उसकी शामत आई समझो। जितना समय और पैसा पार्लमेंट बरबाद करती है, उतना समय और पैसा अगर कुछ अच्छे आदमियों को मिले, तो ब्रिटिश प्रजा का उद्धार हो जाय। यह पार्लमेंट तो केवल प्रजा का खिलौना है और वह खिलौना प्रजा को भारी खर्च में डाल देता है। ये मेरे निजी विचार हैं, ऐसा आप न समझना। कुछ बड़े अंग्रेज विचारकों के भी यही विचार हैं। एक मेंबर ने तो यहां तक कह दिया कि पार्लमेंट धर्मनिष्ठ मनुष्य के लायक नहीं रही। दूसरे मेंबर ने कहा कि पार्लमेंट तो 'बेबी' (बच्चा) है। बच्चे को आपने कभी हमेशा बच्चा रहते देखा है? आज ७०० वर्ष बाद भी यदि पार्लमेंट बच्चा हो तो वह बड़ी कब होगी?

—म० गांधी

★

वैदिक साहित्य

वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता आदि भारतीय राष्ट्र की सभ्यता का सार सर्वस्व हैं। मानव धर्म का तत्व इन ग्रन्थों में है। भारत की सभ्यता को जीवित-जाग्रत् रखने के लिये इन ग्रन्थों के प्रकाशन की बड़ी आवश्यकता है। यह तो स्वतन्त्र भारत के लिये आवश्यक कार्य है। अवश्य और शीघ्र होना चाहिये। मैं तो भारतीय सभ्यता का उपासक हूं। इसलिये मैं तो चाहता हूं कि वैदिक भारतीय साहित्य सुबोध और सरल रीति से मुद्रित होकर जनता के सामने आये।

— सरदार पटेल

★

करने के पहले सोच समझ लो।

— ईसप

मनुष्य ही पथ से विपथ होता है।

— राबर्ट ,बर्न्स

हर मनुष्य भूल कर सकता है किन्तु मूर्ख लोग अनवरत भूल करते हैं।

— सिसेरो

जब तक मनुष्य चिन्ता करता है तभी तक वह दयनीय बना रहता है।

— समार्जो

विपत्ति को न सहन कर सकना ही मनुष्य के लिए सबसे बड़ी विपत्ति है।

— बायस आफ प्रीन

सुख में तो सभी पहचानते हैं परन्तु दुख में कोई बात तक नहीं करता।

— नेपोलियन

पहली असफलता प्रायः वरदान सिद्ध होती है।

— ए० एल० आल्व

प्रत्येक असफलता सफलता की ओर एक कदम है।

— आर० ए० विलसोन

कल के भारतीय प्रदेश में

काश्मीर हड़पने की चालें : लियाकती लीग के सिवा अन्य कोई दल नहीं : पख्तूनिस्तान पर मत संग्रह की मांग : राज्यभाषा अरबी हो : पुनर्वास में कठिनाइयां

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री श्री लियाकतअली खां ने काश्मीर के प्रश्न को लेकर भारत के विरुद्ध पुनः विषैला प्रचार वेग से प्रारम्भ कर दिया है। लन्दन से ही वे प्रत्येक घटना व परिस्थिति का भारत पर कीचड़ उछालने में लाभ उठा रहे हैं। सम्मेलन के पश्चात् तो उन्होंने युद्ध अथवा अशांति की धमकी भी दी है। उनका एक ही अर्थ है कि या तो विश्व के राष्ट्र काश्मीर पाकिस्तान को दिला दें, अन्यथा वे जैसे भी बनेगा, स्वयं लेने का प्रयत्न करेंगे।

× × ×

लन्दन से लौटने पर एक पत्रकार सभा में काश्मीर विषयक प्रश्न पर प्रकाश डालते हुए श्री लियाकतअली ने कहा था कि पाकिस्तान के सामने दो ही रास्ते हैं, उनमें से एक सुरक्षा परिषद् में इस मामले को आगे बढ़ाना है। दूसरे के विषय में उन्होंने कहा कि वे सम्वाददाताओं को कुछ नहीं बतायेंगे। "यदि सुरक्षा परिषद् को संसार में शान्ति बनाये रखने में रुचि है" उन्होंने कहा, "तो उसे अपना मस्तिष्क काश्मीर समस्या पर दृढ़ता तथा शीघ्रता से लगाना चाहिये, और मुझे विश्वास है कि सुरक्षा परिषद् संसार में शान्ति बनाये रखना चाहती है।"

× + ×

श्री लियाकतअली का लन्दन जाना जितना नाटकीय था, लौटना उतना ही कूटनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण भी था। लौटने से पूर्व उन्होंने लन्दन में मिश्र के विदेश मन्त्री से भेंट की और इस भेंट के लिए अपना लौटने का कार्यक्रम स्थगित कर दिया। यह बताता है कि श्री लियाकतअली खां इस भेंट को कितना महत्व देते थे। लौटते हुए मिश्र की राजधानी कैरो के हवाई अड्डे पर भी उन्होंने प्रमुख मिश्री नेताओं से चर्चा की। यह चर्चा महत्वपूर्ण विषयों पर हुई बताई जाती है।

× × ×

श्री लियाकतअली ने काश्मीर की शतरंज जीतने के लिए सभी मोहरों की एक साथ चाल चली है। अशान्ति की धमकी देकर उन्होंने राष्ट्र-संघ की उस मनोवृत्ति का लाभ उठाने का प्रयास किया है जो कोरिया में चीनी सेनाओं के आक्रमण से विश्व-युद्ध का वर्तमान संकट टालने के लिए चीन के सामने विवश भाव धारण कर उसने प्रदर्शित की है। श्री लियाकत समझते हैं और कोरिया का उदाहरण उनके सामने है, कि राष्ट्र संघ कभी भी यह नहीं चाहेगा कि वर्तमान तनाव के दिनों में विश्व के किसी भी कोने में युद्ध हो, क्योंकि सूखी हुई घास के किसी भी कोने में लगने वाली आग के सारे क्षेत्र में फैल जाने की संभावना रहती है। अत: वे समझते हैं कि युद्ध की विभीषिका टालने के लिए राष्ट्र संघ भारत पर दबाव डाल कर उनके पक्ष में फैसला कराने का प्रयत्न करेगा।

× × ×

रूसी गुट से मिल जाने की धमकी वे पहिले ही दे चुके हैं। अमेरिका द्वारा संसार के प्रत्येक देश को रूस के चंगुल से बचाने की आकुलता और विश्व के किसी भी भाग में कम्यूनिज्म के विस्तार को रोकने की तत्परता को समझते हुए, इस प्रकार के विचार प्रकट किये गए हैं। राष्ट्रमण्डल के प्रधानमंत्रियों के सम्मेलन में इस प्रश्न पर इतनी जिद करने का अर्थ भी यही था कि वे यह अपेक्षा करते थे कि ब्रिटेन उनकी सहायता करेगा और ब्रिटेन के प्रभाव से अन्य देश भी पं० नेहरू पर दबाव डालेंगे। किन्तु श्री एटली लम्बी रस्सी छोड़ने के सिद्धांत को मानते हैं और आवश्यकता से अधिक बेचैनी प्रकट न करने की ब्रिटिश चरित्र की विशेषता उनमें कूट-कूट कर भरी हुई है। वे चतुर राजनीतिज्ञ की भांति एक मूर्खता भरे प्रश्न पर भारत को अपने साथ से खोना नहीं चाहते। किन्तु श्री लियाकतअली की बेचैनी के कारण हैं। कराची की कुर्सी में कीलें चुभने लगी हैं और उन्हें ठोकने के लिए उन्हें काश्मीर का हथौड़ा चाहिए, जिससे वे आराम से बैठ सकें।

× × ×

लन्दन की कलुषित चाल को तेज करने के लिए श्री लियाकत ने लौटते लौटते एक चाबुक और लगाया है। मिश्र में स्थित अंग्रेजी सेनाओं को लेकर मिश्र तथा ब्रिटेन में तनाव बढ़ गया है। जहां एक ओर शाह फारूक ने ब्रिटिश सेनाओं को मिश्र से हटाने की आवाज उठाई है, वहां श्री बेविन ने उन्हें न हटाने की घोषणा की है। इससे मिश्री जनता में ब्रिटेन के प्रति भारी क्षोभ है। मिश्र को संसार के अन्य राष्ट्रों की सहानुभूति अपने पक्ष में चाहिये, पाकिस्तान को काश्मीर के प्रश्न पर मुस्लिम देशों का समर्थन। ऐसा प्रतीत होता है कि यह सौदा हो सकता है या नहीं, यह देखने के लिए ही श्री लियाकत ने अपना प्रवास स्थगित कर मिश्री विदेशमंत्री से भेंट की और मार्ग में कैरो पर भी मिश्री नेताओं से चर्चा की।

× × ×

इस एक चाल में भी पाकिस्तान के प्रधान मंत्री ने दो शिकार करने का प्रयत्न किया है। ब्रिटेन इस समय कोई सिरदर्द मोल लेना नहीं चाहता। यदि पाकिस्तान मिश्र के प्रश्न को इस्लामी बन्धुता का आधार लेकर सभी मुस्लिम देशों का प्रश्न बनाने का प्रयत्न करता है तो श्री एटली व बेविन के लिए एक अच्छा खासा सिरदर्द पैदा हो सकता है। दूसरे पाकिस्तान के इस प्रलोभन में आकर मिश्र यदि इस्लाम के आधार पर गठन को स्वीकार कर लेता है, तो पाकिस्तान की काश्मीर विषयक मांग को ही नहीं "अखिल विश्व इस्लाम संघ" की पाकिस्तानी योजना को भी बल मिलता है। इसकी संभावना होने पर ब्रिटेन यह प्रयत्न करेगा ही कि पाकिस्तान मिश्र को अपना समर्थन न दे। उस स्थिति में काश्मीर के प्रश्न पर ब्रिटिश समर्थन पर सौदा किया जा सकेगा। ब्रिटेन पर और अधिक दबाव डालने के लिए उन्होंने यह भी बता दिया है कि राष्ट्रमंडल से पाकिस्तान का बाहर निकलना कितनी साधारण बात है। संक्षेप में श्री लियाकत ने अपने विचार में घोड़ा ऐसे स्थान पर रखा है जहां से वह विचर उठता है, किसी मोहरे को मारता है।

× × ×

श्री लियाकत अली की काश्मीर विषयक बेचैनी के कारण हैं। पाकिस्तान में बढ़ता हुआ उनका विरोध और मुस्लिम लीग के भवन के टूटते हुए खम्भे यह बता रहे हैं कि यदि इसे रोकने में वे सफल न हुए तो वे इस ऊंचाई से नीचे आ पड़ेंगे। पख्तूनिस्तान का आंदोलन, पूर्वी बंगाल की समस्या, विरोधी दलों की बढ़ती हुई संख्या, सभी उनके लिए सिरदर्द हैं। कराची में उनकी गद्दी के नीचे एकत्रित होने वाली इस ज्वालामुखी की आग को आज तक उन्होंने भारत का विरोध, हिन्दुओं पर अत्याचार, काश्मीर पर आक्रमण आदि मार्गों से निकाला है। आज पुनः वे काश्मीर के प्रश्न को इतना उग्र बना देना चाहते हैं जिससे पाकिस्तान में सभी का ध्यान उस ओर बंट जाये।

× × ×

कराची पहुंचने के पश्चात शीघ्र ही श्री लियाकत अली खां, मुस्लिम लीग के अध्यक्ष के रूप से आगामी चुनाव सम्बन्धी दौरा करने के लिए पंजाब पहुंच गए हैं। आपने पूछे जाने पर यह भी बताया कि पाकिस्तान में मुस्लिम लीग के अतिरिक्त अन्य कोई दल नहीं है। कुछ ही दिन पूर्व लाहौर में चुनाव सम्बन्धी अपने भाषण में श्री जहांगुद्दीन ने भी ऐसा ही भाव प्रकट किया था। इससे पता चलता है कि पाकिस्तान में हवा किस ओर बह रही है।

× × ×

स्वतंत्र पख्तूनिस्तान की राष्ट्रीय सभा के नेता श्री जहीरुद्दीन रमजानी ने बताया है कि पाकिस्तान के वायु आक्रमणों के फलस्वरूप पख्तूनिस्तान क्षेत्र के लगभग २५ गांव पूर्णतः नष्ट हो गए और १२०० व्यक्ति मरे अथवा घायल हुए। उन्होंने यह भी बताया कि इन अत्याचारों की स्मृति को बनाये रखने के लिए मरे हुओं को अलग दफनाया गया है। ये संख्यायें इस बात की ओर संकेत करती हैं कि पख्तूनिस्तान का आन्दोलन कितना उग्र होता जा रहा है और पाकिस्तान उसके बलपूर्वक दमन के लिए कितनी दूर जा रहा है। श्री रमजानी ने पाकिस्तानी अधिकारियों को चुनौती दी है कि वे पख्तूनिस्तान के प्रश्न पर जनमत संग्रह करायें। किन्तु पाकिस्तान में इस प्रकार के समाचारों का प्रकाशन पूर्णतया बन्द है।

× × ×

"आधारभूत सिद्धान्त समिति" के विवरण में संशोधन सुझाने वाली पूर्व बंगाल मुस्लिम लीग की उप समिति ने अन्य संशोधनों के साथ साथ "अरबी" को पाकिस्तान की राज्य भाषा बनाने का सुझाव रखा है जिसे कि प्रान्तीय लीग ने स्वीकार कर लिया है। इस विषय में थोड़ा सा आश्चर्य हो सकता कि उप समिति ने एक ऐसी भाषा क्यों सुझाई जिसे पाकिस्तान का कोई भी भाग नहीं बोलता। श्री मुअज्जम हुसेन, जिसने प्रस्ताव उपस्थित किया था, ने बताया कि "आधारभूत सद्धांत समिति" ने मुसलमानों के लिए कुरान का अध्ययन अनिवार्य करने का प्रस्ताव किया है, इसका सीधा अर्थ यह होता है कि

[शेष पृष्ठ २२ पर]

नारी समाज पर एक विहङ्गम दृष्टि

★ श्री बद्रीनाराम नेमा 'विशारद'

करुणा, दया, प्रेम, स्नेह, उपकार, साहस, त्याग, श्रद्धा, सेवा आदि अनेक सद्गु खान स्त्रियां हैं। इस-लिए जिस समाज में स्त्रियों को दबाया जाता है, उसका पतन अवश्यम्भावी है। वर्षों से भारतवर्ष के रीति रिवाजों ने नारी की प्रगति को दबाया और कुचला है, पर अब देश के स्वतन्त्र होने के साथ ही एक अवसर आया है कि अब उन्हें पूर्णाधिकार मिले और वे समाज में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकें।

अबोधता और परदा

वर्तमान युग नारी-जागरण का है। नगरों और बड़े बड़े शहरों में जहां सभ्य और शिक्षित समाज का बोलबाला है, नारियों की उतनी शोचनीय नहीं, जितनी कि गांवों में बसने वाली नारियों की है। लड़की जब पितृ गृह से ससुराल जाती है, तो शायद मर के ही बाहिर निकलती हो। घर की चहार दिवारी में ही उसका जीवन सचिहित है। उसे पुरुषों ने लक्ष्मी के आसन पर आसीन कर बन्दिनी बना दिया है। छोटी छोटी लड़कियां ससुराल चली जाती हैं और शीघ्र ही उनके निर्बल कन्धों पर गृहस्थी का बोझ डाल दिया जाता है। वे सन्तानोत्पत्ति की मशीन बन जाती हैं। उनका जीवन, नीरस और गतिशून्य हो जाता है। वे अत्याचार और शोषण की शिकार होती हैं।

प्राचीन समय में स्त्रियों को शिक्षित किया जाता था, उन्हें युद्ध विद्या, संगीत कला, नृत्य और चित्रकला में दक्ष किया जाता था, जिससे वे पुरुषों को अवसर आने पर उचित सहयोग प्रदान कर सकती थीं।

महिला वर्ग के लिए आज भी ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जो उसके दैनिक जीवन में उपयोगी सिद्ध हो। गृह विज्ञान, पत्नी के कर्त्तव्य, शिशु-पालन प्रारम्भिक चिकित्सा, हवाई हमले से बचाव के उपाय इत्यादि की शिक्षा गृहस्थ आश्रम में पदार्पण करने के आरम्भ में आवश्यक है। देश के उत्थान के लिए हमारी गृहिणियों को स्त्री स्वभाव सुलभ कर्कशपन का त्याग और अनुचित छुआछूत की संकीर्ण भावना का त्याग कर सुगृहिणी बनने का संकल्प करना चाहिये।

परदा की प्रथा स्वास्थ्य के लिए हानिकर है और इससे समाज को विशेष लाभ नहीं। फलत यह सर्वथा हेय एवं त्याज्य है। दिन दूना और रात चौगुना बढ़ता हुआ क्षय-रोग इसी की देन है। स्त्रियों को प्रकाश और वायु का उपयोग स्वतन्त्रता पूर्वक करने देना चाहिये।

धर्मभीरुता

स्त्रियां स्वभावत धर्मभीरु होती हैं। वे पुत्र और पति की मंगल कामना के लिए, परलोक के भय से, आत्मोद्धार की लालसा से, धर्म का आवरण, भगवान का भजन, दान पुण्य, अतिथि सत्कार, देव दर्शन, तीर्थ यात्रा, संत-दर्शन आदि का आयोजन करती रहती है। आजकल देखने में आता है कि धर्म क्षेत्रों में भी व्यभिचार और धोखा धड़ी का बाजार गर्म रहता है और भोली भाली मां, बहिनें इस भ्रष्टाचार का शिकार बनती हैं। स्त्रियां परपुरुष मात्र से यदि दूर रहें तो सर्वोत्तम होगा। उन्हें अपने पति ही में परमेश्वर को प्राप्त करना चाहिए। दान दक्षिणा भी योग्य व्यक्ति को देनी चाहिए क्योंकि जिससे साधु और ढोंगी भिखारियों की बाढ़ आ गई है।

नारी और ललित कला

महाराष्ट्र और बंगाल को निकाल देने पर शेष प्रान्तों के गृहस्थ आश्रम रसहीन हैं। वर्तमान शिक्षित समाज को मनोरंजनार्थ या तो क्लबों में टेनिस शतरंज, या ताश की शरण लेना पड़ती है या चलचित्रों द्वारा वह कमी पूरी की जाती है। इसलिए यह आवश्यक है कि घर की रानियां साज संगीत, नृत्य और चित्रकला में रुचि रखें तथा उन्हें यथासामर्थ सीखें, जिससे उनके जीवन एवं धार्मिक व्रत, तेवहार रुचिकर हो कर घर स्वर्ग बनें और गृहस्थ सुखी हों।

नारी और उच्छृङ्खलता

स्त्रियों को सादगी और शील का भंडार होना चाहिये, पर शहरों में आज-कल नारियां ही जहां देखिये तहां चका-चौंध पैदा करती दृष्टिगोचर होती हैं। वे नाज नखरों से पूर्ण फैशन की गुलाम और स्त्रियोचित लज्जा से वंचित दीख पड़ती है। ये पति के आश्रम में रहना नहीं चाहतीं। उनमें निम्न कोटि के हास्य-विनोद की मात्रा अधिक से अधिकतर और अधिकतम दीख पड़ रही है, जो हमारी आर्य सभ्यता से पतित अवस्था है। भोगों में शान्ति नहीं है। शान्ति है त्याग और उत्तम विचारों के मनन करने में। भारतवर्ष किसी समय जगद्गुरु था, केवल हमारी आध्यात्मिक शक्ति के बल पर। नई रोशनी की महिलाओं को बजाय शृंगार, बाजार हाट, और मनो-रंजन के अतिरिक्त इतना भी समय नहीं मिलता कि वे रामचरित मानस, भगवत गीता आदि सद्ग्रन्थों का अध्ययन कर, सीता, उर्मिला आदि देवियों के आदर्श अपने जीवन में उतारें और हमारे गण-तन्त्र भारतवर्ष को रामराज्य में परिवर्तित करने में योग देवें।

★

विवाहित स्त्रियां और नौकरी

पिछले दिनों दिल्ली विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने निर्णय किया था कि महिला अध्यापिकाएं तभी तक शिक्षण कार्य करें, जब तक कि वे अविवाहित रहें। विवाह करने के उपरान्त किसी महिला अध्यापिका की सेवा स्थायी न रहे। यदि कोई विद्यालय किसी विवाहित अध्यापिका को रखता भी है, तो उस पर [स्थायी सेवा के नियम नहीं लागू होंगे। इसका कारण यह बताया जाता है कि विवाहित स्त्रियां मातृत्व की जिम्मे-वारी और अध्यापन कार्य एक साथ नहीं निभा सकतीं। एक अध्यापिका के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उसने तीन वर्ष सरदियों में, जब कि पढ़ाई का जोर रहता है, गर्भ या प्रसव के कारण विद्यालय से अवकाश ले लिया। केवल विद्यालयों में शिक्षण का ही प्रश्न नहीं, अन्य भी सरकारी या गैर सरकारी दफ्तरों में विवाहित स्त्रियों की समस्या पैदा होती रहती है। दिल्ली की अध्यापिकाओं ने विश्वविद्यालय के इस निश्चय के विरुद्ध घोर असन्तोष प्रकट किया था।

हमारी प्रार्थना है कि अर्जुन की वे विवाहित पाठिकाएं, जो आजीविका के लिए कोई स्थिर कार्य करती हैं, अपने अनुभवों के द्वारा इस समस्या पर बहुत संक्षेप से प्रकाश डालने की कृपा करें।

— सम्पादक

★

व्यभिचारिणी स्त्री को पति की सम्पत्ति अधिकार नहीं

१६ जनवरी को मद्रास हाईकोर्ट ने एक मुकदमे का फैसला सुनाते हुए बताया कि व्यभिचारिणी स्त्री अपने पति की सम्पत्ति का चाहे वह सम्पत्ति हाल हासिल हो अथवा संयुक्त परिवार की, हकदार नहीं हो सकता है। हाई-कोर्ट के पूरे बेंच ने एक विधवा स्त्री द्वारा किये गये अपील को खारिज कर दिया। उक्त विधवा स्त्री ने अपने आवे-दनपत्र में मत कि सम्पत्ति में हिन्दू स्त्रियों को अधिकार-सम्बन्धी कानून (१६३७) की ३ (२) वीं धारा के अनु-सार उन्हें अपने पति की सम्पत्ति में पूरा अधिकार है तथा उनका व्यभिचार उन्हें सम्पत्ति के अधिकार में बाधक नहीं होगा।

न्यायाधीशों ने अपने फैसले में बताया कि उक्त कानून किसी भी तरह से हिन्दू कानून के निश्चय को रद्द नहीं करता है कि एक स्त्री, जो व्यभिचारिणी है, अपने पति की सम्पत्ति की अधिकारिणी नहीं हो सकती है। उन्होंने बताया कि इस कानून की तीसरी धारा में हिन्दू कानून के नियम के विरुद्ध कोई बात नहीं है। हिन्दू कानून के नियम के अनु-सार कुलीन स्त्री ही अपने पति की सम्पत्ति की अधिकारिणी हो सकती है।

● रूस में जिन स्त्रियों के ५ अथवा ६ सन्तानें होती हैं उन्हें 'मातृत्व पदक' प्रदान किया जाता है, जिनके ७ से ६ तक सन्तानें होती हैं 'उन्हें मातृत्व-गौरव पदक' दिया जाता है, और जिन्हें दस या अधिक सन्तानें होती हैं वे 'वीरमाता' पदकसे विभूषितकी जाती हैं। क्या भारत की कम्यूनिस्ट लड़कियां इससे शिक्षा लेंगी?

काली वेणी को बहुमत

अमेरिकनों का सौंदर्य-प्रेम आयु के अनुसार विभिन्न है। युवक इसके रंग के बालों की युवती (ताम्रकेशिनी) पसंद नहीं करते, पर अधेड़ उसे चाहते हैं। काले केशों वाली को ४७ प्रतिशत, २६ प्रतिशत ताम्रकेशिनी को तथा स्वर्णके-शिनी के लिए उपासकों की संख्या केवल १२ प्रतिशत है।

तक्षशिला में प्राप्त म० बुद्ध की उत्कृष्ट मूर्ति [सीमाप्रान्त]

तक्षशिला के विश्वविद्यालय के पवित्र ध्वंसावशेष (सीमाप्रांत)

हमने पाकिस्तान में क्या छोड़ा

हमने पाकिस्तान में अरबों रु० की भूमि, आलीशान इमारतें, तथा अन्य सम्पत्ति ही नहीं छोड़ी। वह फिर भी अर्जित की जा सकती है। पर अपनी और सम्भवतः मानव की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के अवशेष स्मारक भी हम पाकिस्तान में छोड़ आये हैं, जिनका मूल्य रुपयों और अशर्फियों में आंका नहीं जा सकता। क्या इस कलंक का निवारण भारत कर सकेगा ?

गुरु नानक की पवित्र स्मृति में निर्मित गुरुद्वारा पंजा साहिब (पश्चिमी पंजाब)

मोहं जोदड़ो-संस्कृति के काल की एक गुहा [सिंध]

२००० वर्ष पूर्व मोहं जोदड़ो नगर के ध्वंसावशेष [सिंध]

बब्बी की भीख

★ दीनदयाल 'दिनेश'

बब्बी के पेट में कल से अनाज का एक कण भी नहीं गया था। उसके शरीर में भड़की हुई भूख की ज्वाला पानी के छींटों से कम होने की बजाय और भी बढ़ते ही जाती थी। बाजार के प्रत्येक आदमी के सामने वह अपना हाथ फैला चुका था परन्तु उस पर दया दिखाने वाला मानों इस दुनिया में पैदा ही नहीं हुआ। आज के उसके हाथ पर पैसा रखने के लिए कोई भी तैयार नहीं था।

पाल लगाए बैठे हुए सेव-चिवे की दुकान वालों की तरफ उसने दिन भर में कई बार देखा होगा······कितनी ही बार देखने से टाल भी दिया होगा। तेल से तलने की चटपट आवाज और गरम पकौड़ियों की सुगन्ध से उसके मुँह में बार-बार पानी आ जाता था। रस भरे फलों के ढेरों की ओर देख कर उसका मन दुखी भी होता था। बाजार के लिए आई मजदूर स्त्रियों को अपने बच्चों के खाने के लिए आतुरता से खाने की चीजें खरीदते देख कर उसका मन उदास हो जाता था। बाजार में पैसों के लेन देन की खन-खन आवाज से उसके कान सुन्न पड़ गये थे। साग-सब्जियों के ढेर पर जबरदस्ती मुँह मार कर खाने वाले ढोरों की ओर देख कर उसे अपनी असमर्थता पर शर्म आती थी······गुस्सा आता था।

बच्चे, बूढ़े, जवान, मर्द, गरीब, धनी, स्त्री, पुरुष······सभी के सामने वह हाथ पसार चुका था। सभी ने उसे निराश कर दिया था। लोगों के हृदय पसीजें इसका उसके पास कोई भी साधन नहीं था। मांग-मांग कर जमा किया हुआ उसका वह बहुरंगी वेष! उसके कारण वह अजीब सा दिखाई देता था। वह हाथ-पैर से मजबूत था। उसके जैसे हट्टे कट्टे जवान को कौन भिक्षा देगा! बाजार में घूमने वाले उसके अनेक व्यवसाय बन्धु ······भिखारियों को थोड़ी बहुत प्राप्ति होती ही है बब्बी को यह दिखाई देता था। उसे अपने आप पर बहुत तरस आता था। दूसरे भिखारियों से ईर्ष्या होने लगी थी। किसी की आँखें नहीं, किसी के पांव टूटे हुए, किसी का चेहरा जन्म से कुरूप, किसी का सारा शरीर फोड़ों से भरा हुआ, परन्तु बब्बी स्वस्थ था। उसका मन कहता—परमेश्वर को क्या मुझे ही स्वस्थ शरीर देना था? मैंने ऐसा कौन सा अपराध किया था कि मुझे असमर्थता का एक भी चिन्ह परमात्मा ने नहीं दिया? यह नहीं तो कोई गुण ही दिया होता, गले को कुछ मीठा कर देता जिससे मैं गा कर ही भिक्षा मांगता। आखिर उसने मुझे भिखारी की ही कोख से क्यों पैदा किया? इस तरह के कई प्रश्न उसे विचलित कर देते थे।

पैसों के बदले में उसे दुकानों की ओर से हमेशा उपदेश मिला करता—'काम करो।' उस पर इस उपदेश का कोई असर नहीं होता। वह सोचता—क्या काम सचमुच करना चाहिये? क्या प्रत्येक को काम करना चाहिए? क्या संसार में सभी काम करते हैं? गर्मी, वर्षा और ठंड में घूम घूम कर भिक्षा मांगना क्या काम नहीं है? अपने इस कठिन जीवन से भी क्या काम कोई आराम की चीज है? अपनी माँ मांगती थी, बाप भी भीख ही मांगते थे, भीख मांगना, यह धंधा हमारे कई पीढ़ियों से चला आ रहा है, तो क्या यह काम नहीं है?

अपने बाप दादों से चले आये इस······मांगना······धंधे पर बब्बी को अभिमान था। इस धंधे की प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए ही उसने अपने दूसरे भिखारी बन्धुओं की तरह कभी भी चोरी नहीं की थी। अपना धंधा जब नहीं चलेगा तब निरुपाय हो कहीं काम कर लेंगे, यही उसका अंतिम निर्णय था।

उसका निश्चय था, जब यदि काम करना ही पड़ा तो किसी होटल में करूंगा। पिछले दिनों चारों ओर से निराश हो उसने मजबूरन एक होटल में कप-बसी साफ करने का काम मांगा था। होटल वाले ने उसे विश्वास दिलाया था कि उसे नौकरी मिलेगी। तब उसके स्वप्न में कप-बशी, प्लेटस मिठाई, नमकीन और चाय दिखाई देने लगी थी। परन्तु जब होटल वाले ने उसकी जाति के बारे में पूछा तो उसने उत्तर दिया ······'भिखारी' और वह नौकरी उसे नहीं मिली। भविष्य में भी होटल की नौकरी उसे नहीं ही मिलेगी बब्बी को विश्वास हो गया। जब उसे चारों ओर निराशा ही निराशा दिखाई देती, तब तो वह मन में, 'एक होटल में नौकर हूं' कल्पना कर अपने आपको समझा लिया करता था।

एक-दो दिन भूखे पड़ा रहना उस का नया अनुभव नहीं था। भूख तो उसे सताती ही थी, परन्तु वह अभ्यास के कारण अटल रहता था। वह स्वयं भूखा रह कर अपनी सात या आठ वर्ष की छोटी बहिन रम्मू की भूख हमेशा मिटाता रहता था। परन्तु आज उसकी परिस्थिति कुछ और ही थी। दोनों ने ही दो दिन से कुछ नहीं खाया था।

रम्मू ने ही दो दिन से कुछ नहीं खाया है ख्याल आते ही उसकी तबियत तिल-मिलाने लगती थी।

बाजार में भीख मांगने के साथ-साथ वह रम्मू को भी ढूंढ रहा था। उसे विश्वास था कि रम्मू कहीं कहीं भीख मांगती होगी। कड़ी धूप से उस का चेहरा कुम्हला गया होगा। भूख के कारण वह एक दम म्लान हो गई होगी। भटकते-भटकते शायद बुरी तरह थक भी गई होगी। अपने खोये हुए पैसों को फिर से जमा किये बिना रम्मू उसके सामने आने में कुछ हिचकती होगी। तीन-चार बार रम्मू की भर्राई हुई आवाज उसके कानों में पड़ी उसने अपने चारों तरफ निगाह डाल कर देखा। उसे रम्मू नहीं दिखाई दी। एक बार बब्बी को रम्मू के ही जैसे मुरझाये हुये चेहरे की झलक दिखाई दी। वह उस तरफ बढ़ा, परन्तु आदमियों की भीड़ में उसे निराश होना पड़ा। वह सोचने लगा कल शाम की बात को······

कल शाम को रम्मू सड़क के किनारे खड़ी थी। सड़क से किसी सेठ की बारात गुजर रही थी। उस बारात में गैस-बत्तियों की जगमगाहट, कीमती कपड़ों की चमक, सोने चांदी के गहनों की झलक, बारातियों की आपस की हंसी-खुशी की बातें, अंग्रेजी बाजा बजाने वालों की तान—देखते देखते वह अपने आप को भूल सी गई थी। फिर अचानक उसे कुछ याद आया और वह बब्बी के पास दौड़ आयी, उस समय रम्मू के चेहरे पर के खुशी के भाव बब्बी को बहुत ही भाये। उसी समय बब्बी ने रम्मू से, उसे भीख में मिले हुए पैसे मांगे। रम्मू ने अपनी कमर में बंधे पैसों को निकालना चाहा, तब ऐसा लगा मानों रम्मू को बिच्छू ने डस लिया हो। दिन भर के जमा किए हुए पैसे न जाने कहाँ गिर गये थे। बारात के के उस सुन्दर नजारे को देख वह अपने आपको भूल चुकी थी, शायद उसी समय कहीं गिर गये। और उसी समय बब्बी ने अपने मजबूत हाथ को रम्मू के कोमल गाल पर दे मारा। दोनों ही रात भर बिना खाये सो रहे। सुबह जब बब्बी ने उठ कर देखा तो रम्मू वहां कहीं नहीं थी।

परन्तु आज जैसे जैसे दिन चढ़ता आता वैसे वैसे बब्बी को अपने किये पर पश्चाताप होने लगा। उसे तो भूख बुरी तरह सता ही रही थी परन्तु उस रम्मू का क्या हाल होगा यह सोच कर और भी व्याकुल हो उठता था।

सूर्यास्त हो चुका था। अंधेरा होने लगा था। रम्मू का अभी तक कहीं कुछ पता नहीं था। बब्बी पश्चाताप में डूबा, सड़क के किनारे खड़ा हुआ था।

उसका एक व्यवसाय बंधु सड़क के किनारे चित बैठा अपने पेट पर हाथ मारता हुआ राम राम चिल्ला रहा था। आने-जाने वाले उसकी झोली में एक २ पैसा फेंकते जा रहे थे।

उस भिखारी को केवल दो शब्दों के चिल्लाने भर से ही कई पैसे मिल जाते हैं, यह सोच बब्बी भी उस भिखारी की तरह चिल्लाने लगा। राम-राम की चिल्लाहट ने उसकी पैसे पाने में कोई सहायता नहीं की, परन्तु कुछ देर के लिए अपनी उस भूख की भयंकर ज्वाला को भूल गया। इस समय उसे कुछ अच्छा-सा लगने लगा, मानो उसके विचलित मन को शान्ति, समाधान, सुख देने वाला अंध स्थान राम-नाम के ही रूप में उसे मिल गया हो।

वह राम-राम में डूब सा गया। उसी समय उसके कानों में आर्त आवाज आई—"भैया"। रम्मू का वह मुर्झाया हुआ चेहरा देख बब्बी के आंखों में पानी भर आया। रम्मू ने भी धीमी आवाज में धीरे कहा—"सब मिला कर तीन ही आने जमा हुए।"

बब्बी को लगा कि अब तक जो आंसू उसने रोके रखे थे, अब बाहर निकलना ही चाहते हैं। वह रम्मू को क्या उत्तर दे उसे कुछ भी सूझ नहीं रहा था, यदि वह बोलने का प्रयत्न करता भी तो वह बोल नहीं सकता था।

दिन भर भटकते हुए रम्मी ने तीन आने जमा किये थे। बब्बी के पास भी अब चार-पांच पैसे दिखाई दे रहे थे। राम-नाम से विशेष आर्थिक लाभ उसे नहीं हुआ।

इतने में सड़क पर कुछ आदमियों की भीड़ आते दिखाई दी। उस भीड़ को देखते ही दोनों को कल की बारात याद आ गई और दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। वह भीड़ धीरे-धीरे नजदीक आ रही थी। उस भीड़ से निकली हुई आवाज उन दोनों के कानों में पड़ी—'राम-नाम सत्य है।'

बब्बी को ऐसा लगा मानो कोई आकाश से बोल रहा हो ··· यह शरीर यह धन, ऐश्वर्य सारा संसार, जीवन का इतना संघर्ष सब झूठा है, केवल एक राम नाम ही सच्चा है और उसी राम-नाम पर यह पैसा निछावर है।

उस मृत शरीर के ऊपर से पैसे फेंके जा रहे थे। बब्बी ने यह दृश्य देखा और एक क्षण में सिंह की भांति झपटकर

[शेष पृष्ठ १७ पर]

जमींदारी विनाश और भूमि व्यवस्था कानून

★ श्री चरणसिंह, सभासचिव

हमारे हजारों पाठक जमींदारी उन्मूलन कानून से प्रभावित होंगे। उनकी जानकारी के लिए यह संक्षिप्त कानून प्रकाशित किया जा रहा है —

जमींदारी विनाश और भूमि व्यवस्था कानून विधान मंडल से स्वीकृत हो चुका है। राष्ट्रपति के हस्ताक्षर भी हो गये हैं वह शीघ्र से शीघ्र लागू कर दिया जायगा। कानून के मोटे-मोटे नियम इस प्रकार हैं।

१. यह कानून म्युनिसिपैलिटी, नोटीफाइड एरिया, छावनी व टाउन एरिया की सीमाओं के अन्दर, जैसा कि वह ७ जुलाई सन् १९४९, जिस दिन जमींदारी उन्मूलन व भूमि व्यवस्था बिल असेंबली में पेश हुआ था, को थीं, बिल्कुल लागू नहीं होगा। सरकारी इलाके में, उन क्षेत्रों में जो नवम्बर सन् १९४९ तक बनारस, रामपुर तथा टिहरी गढ़वाल की रियासतों के नाम से प्रसिद्ध थे, बनारस जिले के 'कसवार' राज्य में, देहरादून जिले के 'जौनसार बावर' के इलाके में और उस रकबे में जो मिर्जापुर जिले में कैमूर पहाड़ी के दक्षिण में स्थित है, यह कानून उन संशोधनों के साथ यथाशीघ्र लागू कर दिया जायगा जैसा कि गवर्नमेंट आवश्यक समझेगी और जैसा बाद में निश्चय करेगी।

२. जमींदार काश्तकार का नाता प्रायः एकदम समाप्त हो जायगा, अर्थात् किसान और राज्य के बीच में कोई मध्यवर्ती नहीं रह जायगा। किसान का सीधा सम्बन्ध अपनी सरकार से होगा।

३. हर प्रकार की जमींदारी अर्थात् छोटी व बड़ी, निजी हो या पुण्यार्थ अथवा धर्मार्थ संस्थान व वक्फ की, ताल्लुकदारी और मातहतदारी, आला मिल्कियत व अदना मिल्कियत, अवध की इस्तमरारी पट्टेदारी तथा बनारस कमिश्नरी की दवामी काश्तकारी, सब पूर्ण रूप से लोप हो जायेंगी। विभिन्न प्रकार के इन जमींदारों के, जो इस कानून में मध्यवर्ती कहे गये हैं, सब स्वत्व व अधिकार राज्य में निहित हो जायेंगे।

४. इस कानून के लागू होने पर रहननामे दखली सादे रहननामे हो जायेंगे और ठेकेनामे खतम हो जायेंगे। रहन और ठेका देने वाले की ऐसी जमीनें जो रहन करने या ठेका देने के दिन उसकी सीर या खुदकाश्त थीं फिर अपनी पुरानी मौरूसत अख्तियार कर लेंगी।

५. प्रत्येक व्यक्ति की वह भूमि जो वास्तव में उसके हल के नीचे है, उसके बाग व आबादी में स्थित निजी पेड़ तथा अन्दर पेड़ सहित निजी कुएं और मकान उसके उपयोग में यथापूर्व बने रहेंगे और किसी दूसरे व्यक्ति का उन पर कोई अधिकार नहीं होगा। मेंड़ों पर खड़े हुए पेड़ दोनों ओर के खेतों के किसानों की सामलात मिल्कियत होंगे।

भूमिधर

६. प्रत्येक व्यक्ति—

(क) उस भूमि का जिसका वह मध्यवर्ती हो और जो वास्तव में उसकी जोत में हो या जिसमें उसका बाग लगा हो।

(ख) जो अवध का इस्तमरारी पट्टेदार हो।

(ग) जो शरहमुअइन काश्तकार या माफीदार हो। तथा

(घ) जो (१) दाखिलकार काश्तकार (२)मौरूसी काश्तकार या किसी मध्यवर्ती की सीर के दवामी या (३) इस्तमरारी पट्टेदार में से कोई हो और जिसे अपने खाते को मुन्तकिल करने का अधिकार भी हासिल हो।

(ङ) स्वतः ही अर्थात् सरकार को बिना कुछ अदा किये भूमिधर बन जायगा।

सीरदार

७. निम्नलिखित व्यक्ति सीरदार कहलायेंगे—

(क) अवध में विशेष शर्तों वाला काश्तकार।

(ख) काश्तकार साकी तुल मिल्कियत। प्रत्येक ऐसा मध्यवर्ती भी उस सीर की जमीन का, जो उसके अपने हिस्से से ज्यादा उसके पास है, साकीतुल मिल्कियत काश्तकार माना जायगा।

(ग) दाखिलकार काश्तकार।

(घ) मौरूसी काश्तकार।

(ङ) काश्तकार रियायती लगान।

(च) वह व्यक्ति जो कानून लगान सन् १९२६ की धारा ३०।२। के आधीन निकाली हुई विज्ञप्ति द्वारा पाव आस्थानों या पाव के बागों में गैर दखिलकार काश्तकार करार दिया गया हो।

(छ) बनारस कमिश्नरी वाले दवामी या शरहमुअइन काश्तकारों को छोड़कर राज्य भर के उन काश्तकारों के जो लावारिस मर गये या जिन्होंने स्तीफा दे दिया या अपना खाता छोड़ दिया, शिकमी काश्तकार।

(ज) कामदार।

(झ) २५० रुपया से ज्यादा मालगुजारी देने वाले ऐसे व्यक्तियों को जो स्त्री, नाबालिग, पागल, जड़ या अल्पवयस्क न हो अथवा जो अंधेपन या शारीरिक दुर्बलता के कारण खेती करने में असमर्थ न हो या जो सेना में नौकर हों, सीर के काश्तकार, तथा वह लोग उक्त २५० रुपया से बड़े मालगुजारों की सीर में या किसी भी छोटे या बड़े मालगुजार की खालसा जमीन में, अर्थात् ऐसी जमीन में जिसमें सीर न हो, न बाग लगा हो और जो धारा ६ [ग] व [घ] तथा उपरोक्त खंड क] से [छ] तक में वर्णित किसी काश्तकार के खाते में शामिल न हो।

(१) सन् १३५६ फसलीके कागजात में अध्यासीन (काबिज या बिला तसफिया लगान) दर्ज हो और कानून लागू होने के दिन काबिज भी हो, या

(२) जहां कानून मालगुजारी सन् १९०१ के चौथे अध्याय के मातहत कागजात ठीक किये गये हों या बस्ती गोंडा, गोरखपुर, सहारनपुर, व गाजीपुर जिले के उन इलाकों में जहां ऐसे अधिकारी द्वारा कागजात संशोधित किये गये हों जिसे राज्य सरकार ने विशेष रूप से इस उद्देश्य के लिए नियत किया हो, इस कानून के लागू होने के दिन काबिज हो अथवा जिनके वापसी दखल के मुकदमे कानून लागू होने के दिन विचाराधीन हों।

(ञ) वह व्यक्ति जो १ मई सन् १९५० को उस जमीन पर खेती करता था जो वास्तव में उसको ठेकेनामे के जरिये खेती करने के उद्देश्य से ही दी गई हो।

(ट) ब-कदर ३० एकड़ वह ठेकेदार जो ठेका देने वाले की ऐसी जमीन में खेती करता हो जो ठेका देते समय सीर या खुदकाश्त न हो।

(ठ) ऐसी जमीन के मुरतहिन दखली जो रहन के समय राहिन की सीर व खुदकाश्त न हो, यदि वह इस कानून के लागू होने के ६ महीने के अन्दर मौरूसी दर अथवा पड़ते के लगान का पांच गुना सरकार के खजाने में दाखिल कर दे।

(ड) सीर का दवामी व इस्तमरारी पट्टेदार जिसको हक इन्तकाल हासिल नहीं है।

(ढ) ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जिसको गांव सभा ने खाली या अन्य भूमि सीरदार के रूप में उठा दी हो।

८ अ जिस दिन सीरदार अर्थात् उपरोक्त धारा ७ में लिखित व्यक्ति ने अपने मुकर्रिरा लगान का, परन्तु जहां मुकर्ररा लगान पड़ते अर्थात् मौरूसी दर के लगान के दूने से भी अधिक है वहां मौरूसी दर के लगान के दूने का, जहां लगान मुकर्रिरा नहीं है वहां पड़ते अर्थात् मौरूसी दर के लगान का, दस गुना यकमुश्त, या कानून लागू हो जाने के बाद धारा ७ ।ड। में वर्णित सीरदार को छोड़कर अन्य सीरदार ने

प्रगति पथ पर

प्रगति - पथ पर रे तरुण ! तेरा सफल अभियान होगा !
भावना जब साधना होगी, तभी कल्याण होगा !!

छोड़ कटुता कूप उसमें भर रहे संघर्ष ज्वाला,
मनुजता का निगलता है विषमता का व्याल काला।

आज प्राची के क्षितिज पर दीखता है लाल तारा,
दहकती चिनगारियों से जल रहा है विश्व सारा।

भव्य - भारत भूमि पर क्या, प्रलय की बिजली गिरेगी ?
दिव्य - सात्विक वृत्तियों पर स्वार्थ की छाया फिरेगी ?

सृजन का सन्देश देकर, प्रलय का आह्वान होगा,
भावना जब साधना होगी, तभी कल्याण होगा !

मातृ - मन्दिर के पुजारी, जाग ! स्वर्णिम प्रात आया,
अरुण - रवि निज प्रखरता में जागरण - सन्देश लाया।

बढ़ तपस्वी कण्टकों में, खिल उठेंगे सुमन सुन्दर,
दूर मंजिल, हो रहा क्यों त्रस्त आकुल, छांह लख कर !

बाट तेरी जोहते हैं, विश्व के ये नयन सारे,
प्राण पाना चाहते हैं, साधना ही के सहारे।

देखने आलोक - स्वर्णिम, विकल कवि का गान होगा।
भावना जब साधना होगी, तभी कल्याण होगा॥

—('आह्वान' से)

★★

४ किश्तों में बराबर जुला, जिनमें से दूसरी तीसरी व चौथी किश्त प्रत्येक आगामी पहली १ जुलाई व जनवरी को या उसके पूर्व छमाही बार वाजिब उल अदा होगी, अदा दिया है या भविष्य में जिस दिन पूरी रकम अदा देगा, उसी दिन से भूमिधर हो जायगा ।।

(ब) उपरोक्त रुपया देने का अधिकार राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन किये जाने वाले दिनांक से ३ महीने के बाद समाप्त हो जायगा।

९. यदि कोई व्यक्ति किसी ऐसे खाते के हिस्से के सम्बन्ध में भूमिधर हुआ है जो उसके पास दूसरे या दूसरों के साथ में जो सीरदार है, शामिलात रूप से चल रहा है, तो उक्त भूमिधर खाते में अपने हिस्से का बटवारा करा सकता है।

अधिवासी

१० निम्नलिखित व्यक्ति, यदि वह अपने क्षेत्रपति, जमींदार या काश्तकार असली, की अनुमति से भूमिधर न बन गये हों, अधिवासी कहलायेंगे।

(क) बाग भूमि से भिन्न किसी का ऐसा शिकमी काश्तकार जो उपरोक्त धारा ७।६। की परिभाषा में न आता हो या जिसके विरुद्ध कानून लगान सन् १९३९ की धारा १७१ के आधीन बेदखल हुए काश्तकार असली ने कानून लगान। संशोधन। सन् १९३९ की धारा २०।६। के आधीन वापसी जमीन की डिगरी या हासिल न कर लिया हो।

(ख) २५० रुपया तक के हर प्रकार के (अर्थात् खेती करने में समर्थ अथवा असमर्थ) तथा २५० रुपया से ऊपर परन्तु खेती करने में असमर्थ, मालगुजारी की सीर का ऐसा काश्तकार जो स्वामी या इस्तमरारी पट्टेदार न हो।

(ग) उपरोक्त ।खंड। में वर्णित सीर में, तथा धारा ६। ग। ब। घ। तथा धारा ७ के खंड। क। से। छ। तक में वर्णित किसी काश्तकार की जमीन या खाते में, जो व्यक्तिः

१. सन् १३५६ फसली के कागजात में अध्यासीन। काबिज या बिला तकसिया लगान। दर्ज हो और कानून लागू होने के दिन काबिज भी हो, या।

२. जहां कानून मालगुजारी सन् १९०१ के चौथे अध्याय के मातहत कागजात ठीक किये गये हों या बस्ती, गोरखपुर, गोंडा, सहारनपुर, व गाजीपुर जिले के उन इलाकों में जहां ऐसे अधिकारी द्वारा कागजात संशोधित किये गये हों जिसे राज्य सरकार ने विशेष रूप से इस उद्देश्य के लिए नियत किया हो, पहिली जुलाई सन् १६ के दिन या उसके उपरान्त काबिज हो अथवा इस कानून के लागू होने के दिन जिसके वापसी दखल के मुकदमें विचाराधीन हो या जो कानून लागू होने के ६ महीने अन्दर नालिश वापसी दखल दायर कर दे।

असामी

११ निम्नलिखित व्यक्ति 'असामी' कहलायेंगे।

क. किसी मध्यवर्ती बाग का गैर दखलकार काश्तकार।

ख. बाग भूमि का शिकमी काश्तकार।

ग ऐसा व्यक्ति जिसको किसी दूसरे व्यक्ति ने अपने सीर या खुदकाश्त भरण पोषण के लिये दे रखी हो।

घ वह ठेकेदार जो ठेका देने वाली सीर या खुद काश्त की जमीन में काश्त करता हो पांच वर्ष के लिए या ठेके की शेष अवधि के लिए, दोनों में से जो भी कम हो।

ङ. वह शिकमी काश्तकार जिसके विरुद्ध कानून लगान सन् १९३९ की धारा १७१ के आधीन बेदखल हुए काश्तकार असली ने कानून लगान। संशोधन। सन् १९४७ की धारा २७ की उपधारा। ३। के आधीन वापिसी जमीन की डिगरी या हुक्म हासिल कर लिया हो।

च. उपरोक्त धारा के आधीन जो लोग खरीदार कहलायेंगे, तथा धारा ६ । स। ब। ग। के अधीन जो लोग भूमिधर कहलायेंगे उनकी भूमि के मुरतहिन दखली।

छ पशुचर भूमि का या ऐसी भूमि का, जिस पर पानी हो और जो सिंघाड़ा या किसी दूसरी उपज पैदा करने के काम में आती हो अथवा ऐसी भूमि का जो नदी के तल में हो और कभी कभी खेती के काम आती हो, गैर दखलकार काश्तकार।

ज. ऐसी भूमि का काश्तकार, जिसके विषय में राज्य सरकार ने गजट में विज्ञप्ति द्वारा घोषित कर दिया हो कि वह उन स्थायी या अस्थिर खेती के क्षेत्र का भाग है, और

झ ऐसे प्रत्येक व्यक्ति जिसे इस कानून के अनुसार किसी असमर्थ भूमि पर या सीरदार ने अपनी जमीन लगान पर उठा दी हो।

१२. जंगल काटने व जमीन की उपज इकट्ठी करने, मछली पकड़ने व पशु चराने व ठेके या इकरार नामे जो ८ अगस्त सन् १९४६, अर्थात् जिस दिन जमींदारी उन्मूलन प्रस्ताव एसेम्बली में स्वीकृत हुआ था, केवल हुए वे कानून के लागू होने के दिन से मन्सूख समझे जायगे।

१३ पहली जुलाई सन् १९४८, जब कि जमींदारी उन्मूलन कमेटी की शिफारिशें प्रकाशित हो गईं थीं, के बाद किया हुआ कोई ऐसा मुहायदा इकरार नामा या अन्य कार्य सही नहीं माना जायगा जिसके द्वारा किसी मध्यवर्ती की मालगुजारी या काश्तकारी का लगान (अर्थात् भावी भूमिधर या सीरदार की मालगुजारी) कम या मुआफ हो जाता हो, हां, यदि अदालत के हुक्म से किसी काश्तकार का लगान घटा दिया गया है तो दूसरी बात है, परन्तु यदि अदालत ने लगान पहले के लगान से भी कम कर दिया है तो किसान को पहले का लगान देना ही होगा।

१४ पहली जुलाई सन् १९४८ के बाद किये गये बैनामे या हिबेनामे के आधार पर कोई मध्यवर्ती अधिक पुनर्वासन अनुदान का अधिकारी नहीं होगा और नं० ७ जुलाई सन् १९४९ के बाद बैनामा या हिबेनामा सही माना जायगा परन्तु यह दोनों प्रतिबन्ध उस बैनामे पर जो किसी पुण्यार्थ संस्थान व वक्फ के हक में किया गया हो और जिस पर राज्य सरकार की ओर से कोई आपत्ति न की गई हो, तथा उस नीलाम पर जो किसी डिगरी के इजराय में हुआ हो लागू नहीं होंगे।

१५. अनुदान का हिसाब लगाने के लिए ८ अगस्त १९४६ के दिन या उसके बाद किया हुआ कोई वक्फ न्यास या निबन्ध (सिवाय उसके जो पूर्णतः पुण्यार्थ प्रयोजन के लिए हो और जिस पर राज्य सरकार अपनी ओर से कोई आपत्ति न उठाए) सही नहीं माना जायगा। वैसे, ऐसी जायदाद का वह अनुदान जो वक्फ आदि न होने की दशा में दिया जायगा, मुतवल्ली, न्यासी या निबन्ध के मेनेजर को दी।

—क्रमशः

[पृष्ठ १२ का शेष]

फेंके हुए पैसों को चुनने लगा। रम्मू भी उसमें शामिल हो गई।

वह भीड़ वहां से चली गई सड़क पर पड़े हुए उस भिखारी की राम-राम अभी भी चालू ही थी। रम्मू बब्बी के पास खड़ी हो चुने हुए पैसों को देख रही थी। बब्बी के दोनों हाथों की मुट्ठियां पैसों से भरी थी। वह चुपचाप उस भीड़ को ताक रहा था बब्बी ने चाहा कि वह अब फिर राम-राम कहना शुरू कर दे। किन्तु उसे ऐसा लगा मानो उसके अन्तकरण में कोई जोर-जोर से चिल्ला रहा हो··· "मरा-मरा।

सरदार की आखिरी बीमारी

★ श्री मणिबहन पटेल

स्वर्गीय सरदार पटेल की सेवा में अपना समस्त जीवन अर्पित करने वाली आदर्श पितृभक्त पुत्री मणिबेन पटेल का यह लेख भारत के महान् नेता के अन्तिम दिनों की झांकी देगा।

डाक्टर जब जरूरत से ज्यादा सावधान रहने के लिये कहते अथवा प्रवास करने की, किसी समारम्भ में जाने की या बोलने की मनाही करते, तब मैं उन्हें पू० बापू (सरदार वल्लभभाई) के सामने ही कह देती कि आप सब हाथ मलते बैठे रहेंगे और समय आने पर ये तो चले ही जायेंगे। ऐसा ही हुआ भी। करीब एक महीने से कोई न कोई डाक्टर बापू के पास हाजिर ही रहते थे। हृदय-रोग का आखिरी हमला हुआ, तब डा० नाथूभाई और डा० गिल्डर आये। वे बेचारे एक महीने से मेहनत कर रहे थे। उन्हें इस बात की चिन्ता थी कि अगर हृदय-रोग का भारी हमला हुआ, तो फिर कोई इलाज कारगर नहीं होगा। और उन्हें जिसका डर था, वही हुआ। पू० बापू इतने कमजोर हो गये थे कि ऐसे भारी हमले के सामने टिकने की उनमें ताकत ही नहीं रह गयी थी। हृदय-रोग का पहला हमला १९४८ में हुआ, तब तो उनमें शक्ति का अच्छा संग्रह था। लेकिन आखिरी एक वर्ष में उनका शरीर घिसता ही जाता था और अन्तिम तीन-चार सप्ताहों में तो उन्होंने बहुत बड़ी वेदना भोगी। कैसी भी वेदना पर कभी उफ न करने वाले बापू जब आखिरी दस-बारह दिन में पीड़ा असह्य हो गयी, तब दुःख के उद्गार निकालने लगे। पू० बापू जब कहते कि 'डाक्टर, यह तो मौत का सौदा है, बहुत पीड़ा होती है,' तब गिल्डर और नाथूभाई कहते, 'बापू, आपने तो विलायत में बिना क्लोरोफार्म के आपरेशन कराया था। जरा धीरज रखिये, हिम्मत रखिये, ठीक हो जायगा।' बापू कहते, 'तब तो जवानी थी।'

इस बार की बीमारी सख्त थी। और शरीर की शक्ति तो पिछले साल से घटती ही जा रही थी। मैंने तो इसकी ज्यादा आशा ही नहीं रखी थी कि बापू इस बीमारी में से उठ सकेंगे। आखिरी पखवाड़े में पू० बापू को जो बेचैनी थी, उसे देख कर मुझे आगाखां महल में पू० बापू को आखिरी दिनों में होने वाली बेचैनी का वह वर्णन बार-बार याद आता, जो बहन सुशीला ने अपनी पुस्तक 'आगाखान महल में २१ मास' में किया है। उन दिनों डाक्टर गिल्डर से मैंने दो-तीन बार कहा था कि मुझे तो भारी बेचैनी की ही याद आया करती है। भाई शंकर ने तो मुझे दो-चार कहा था कि 'मुझे विश्वास है, बापू अच्छे हो जायंगे।' एक दिन मुझे जरा ज्यादा उदास देख कर डाक्टर ढंडा ने कहा, 'तुम्हें निराश नहीं होना चाहिए। बापू की हालत नाजुक तो है, लेकिन वे अच्छे हो जायंगे।' लेकिन मेरा मन नहीं मानता था। मुझे ऐसा लगता था कि ये सब लोग मुझे झूठी हिम्मत बंधाने की कोशिश कर रहे हैं। बापू कभी डा० से कहते, 'यह तो मौत का सौदा है,' कभी भजन की एकाध पंक्ति बोलते, 'जीवन जब सुकाई जाय', 'मंगल मंदिर खोलो'। फिर डाक्टर से कहते, 'बहुत भजन गाये, बहुत सुने भी।' ये सब उद्गार मुझे आने वाली घटना की आगाही जैसे लगते थे। कभी-कभी उन का मेरी तरफ देखना ऐसा मालूम होता था कि मुझे यों ही लगा करता था कि अब ये नहीं बचेंगे। डा० से कहते, मैंने 'तो माना था कि हार्ट ट्रबल (हृदय रोग) है, इसलिए किसी दिन अचानक इस दुनिया से चले जायंगे। लेकिन यह बहुत भारी पीड़ा हो रही है। आखिरी तीन हफ्तों में उन्होंने अतिशय दुःख सहन किया। तीसरी तारीख को तो खुद बापू ने डाक्टर से कहा— 'नर्स का बन्दोबस्त कीजिये। रात-दिन जागरण करके यह बीमार हो जायेगी।' रात की और दिन की नर्स आईं, लेकिन मुझे चैन नहीं था। रात को बापू उठ बैठते या मुंह से कोई पीड़ा-सूचक उद्गार निकालते कि मैं एकदम से खड़ी हो कर उनके पास पहुंच जाती। तब वे मेरी तरफ देख कर कहते, 'सो जा बेटी, सो जा! बीमार पड़ जायेगी।' सिर्फ आखिरी दो रातों में ये उद्गार नहीं निकले। डाक्टर जब उन्हें सो जाने के लिए कहते, तो वे मेरी तरफ देख कर कहते— 'सोने की तो जरूरत इसी को है।' मैं रात-दिन उनका दुःख देखा करती थी। अखीर - अखीर में तो मेरा दिल कहता— 'भगवान्, या तो उन्हें अच्छा कर दे, या वे जिस पीड़ा से छूट जायं तो अच्छा। उनका दुःख देखा नहीं जाता, तब भोगने वाले को कितनी पीड़ा होती होगी।' कपड़ों पर कहीं से पानी का एक छींटा भी गिर जाय तो, जो सहन नहीं कर सकते थे और तुरन्त कपड़े बदल लेना चाहते थे, उन्हें कपड़े बिगड़ने का पता भी न चले, यही बात अशुभ की सूचक थी। डाक्टर से कहते, 'यह तो एक एक अंग टूटने लगे।'

ईश्वर की कृपा थी कि उनका जी किसी बात में लगा नहीं रह गया था। मुझे डर था कि जाते-जाते वे कहीं मेरी चिन्ता न करें। आखिरी दिनों में नींद लाने वाली दवा का भी असर नहीं होता था। आधी मूर्छा और आधी जागृति की हालत में उनके दिमाग में विचार चलते रहते थे और उद्गार निकलते रहते थे, लेकिन वे सब काम के बारे में थे। वे आखिर तक देश की ही चिन्ता करते रहे। बस, एक आखिरी रात में खास कुछ नहीं बोले, रात को तीन बजे हृदय रोग का हमला हुआ। कोरामीन का इंजेक्शन दिया गया। और आक्सिजन के तम्बू के बजाय रबर की नली नाक के पास रखी। हम सब ने आशा छोड़ दी। भाई शंकर दिल्ली वगैरा जगहों पर टेलीफोन करने लगे कि अब नहीं बचेंगे। प्राण निकल रहे हैं। रामेश्वरदासजी ने बाहर दो ब्राह्मणों को गीतापाठ करने के लिये बैठा दिया। अन्दर गोपी मेरी चारपाई पर बैठ कर गीता पढ़ने लगी। उसने करीब साढ़े सात बजे सारी गीता का पारायण खतम किया और बापू की नब्ज वापिस आने लगी। आंखों में भी फिर से तेज आने लगा। थोड़ी देर में तो वे जागृत हुए। पीने के लिये पानी मांगा, मैंने गंगाजल में शहद मिला कर फीडिंग कप से पिलाया, तो कहने लगे, 'यह तो मीठा है।' एक-एक घूंट करके करीब दो औंस पानी पिलाया होगा। श्वास लेने में उन्हें तकलीफ होती थी। उठ बैठने के लिए बार-बार हाथ फैलाते और मैं जब कहती कि लेटे रहिए, तब हाथ वापस रख देते थे। एक-दो बार ज्यादा तकलीफ हुई, तब उठ कर बैठ भी गये। ९-१५ को बेड पेन मांगा। फिर प्राण जाने लगे। नर्स ने तो ऐसी मौतें देखी थीं, इसलिए वह समझ गई और उसने तुरन्त डाक्टर को बुलाया। नाथ भाई कमरे के बाहर किसी के साथ खड़े थे। अन्दर आ कर उन्होंने देखा तो हाथ में नब्ज नहीं मिलती थी। आंखों में से तेज चला गया था। छाती पर कान रख कर देखा तो श्वास धीमा पड़ता जाता था। ९-३० को प्राण छूट गये। मेरी हृदय की धड़कन खूब तेज हो गई। जाते हुए देह की जितनी हो सके, उतनी सेवा करना मैं चाहती थी। नाथू भाई ने डाक्टर गिल्डर को भी बुलाया। लेकिन निश्चित घड़ी आ गई थी। अब किसकी चलती? नब्ज जो चली गई थी, फिर एक बार वापस आई। तब नाथू भाई को ऐसा लगा कि पू० बापूजी शुक्रवार के दिन गये और आज शुक्रवार है। इसलिये यह सम्भव है कि बापूजी के अवसान के समय तक यानी पांच बजे तक का समय निकल जाय। ज्यादा आशा तो थी ही नहीं। नब्ज जब वापस आई तब भाई शंकर सबको खबर देने लगे कि चेतन फिर आने लगा है। लेकिन यह तो कुछ देर के लिये धोखा था। फिर तो सबको अन्तिम समाचार देने पड़े। डाह्याभाई, भानुमती और बाबा को साढ़े तीन बजे ही फोन करके बुला लिया था। मोरारजी भाई और खेर साहब करीब चार बजे आ गये थे। दूसरे सगे-सम्बन्धियों को खबर दी।

कुछ देर में तो बिड़ला भवन लोगों से भर गया। मृत देहको स्नान कराना था, इसलिये सबको बड़ी मुश्किल से बाहर किया। बुधवार तक तो टब बाथ लेने के लिये डाक्टर से इजाजत मांगते थे। तब तो वह न हो सका। लेकिन अब डाक्टर, नर्स और डाह्याभाई ने मिलकर उन्हें टब में स्नान कराया। इस बीच में मैंने साफ चद्दर और गिलाफ चढ़ाकर बिस्तर बिछा दिया और अपने सूत की गुंडी तैयार की। स्नान कराने के बाद मेरे सूत की धोती पहनाई, कुरता पहनाया और पू० बापू के सूत की, जो कि उन्होंने सन् ४० में काता था, खादी का चद्दर के बराबर का टुकड़ा था वह ओढ़ाया। यह टुकड़ा मैं पू० बापू का कुरता सिलाने के लिये बम्बई ले गई थी। लेकिन ईश्वरेच्छा कुछ और ही थी। धोती और कुरता पहनाकर बाहर लाकर चारपाई पर सुलाया, तब मैंने यह चद्दर उन्हें ओढ़ाई, माथे पर तिलक किया और मेरे सूत की गुंडी गले में पहनाई। फिर दरवाजा खोल दिया। घनश्यामदासजी, भाई शंकर की पत्नी और दोनों लड़कियां तथा ईश्वरलाल ये बस साढ़े बारह बजे विमान से आनेवाले थे। इसलिए तब तक उनके कमरे में ही, जहां उन्होंने प्राण छोड़े थे, रहने दिया। उन लोगों के आ जाने के करीब आधे घंटे बाद उन्हें बाहर बरामदे में, जहां वे सोफा पर बैठते थे, चारपाई पर लोगों के दर्शन के लिये रखा गया।

उस के बाद का वर्णन तो अखबार में आ गया है। चौपाटी पर अग्निसंस्कार करने के बारे में कुछ चर्चा चली थी। मैंने कहा कि सोनापुर ही ठीक है। कई लोगों को यह पसन्द नहीं आया। लेकिन मैं मानती हूं कि सोनापुर का निर्णय ही ठीक था।※ (ह० सेवक से)

※ श्री नरहरि भाई के नाम लिखे गये दो पत्रों का महत्वपूर्ण भाग।

घटना-क्रम

गणराज्य का प्रथम वर्ष

जनवरी

२६. भारत सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक प्रजातन्त्र घोषित।

२८. दिल्ली में सर्वोच्च न्यायालय आरम्भ।
संसद्-सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण।

३०. संसद में राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र-प्रसाद का भाषण।

३१. राज्यों को दिये जाने वाले आयकर भाग पर देशमुख पंचाट प्रकाशित।

फरवरी

३. संसद् द्वारा राष्ट्रपति के भाषण की स्वीकृति।

४. भारत-पाकिस्तान सीमा के सम्बन्ध में न्यायाधिपति बागे न्यायाधिकरण का पंचाट।

२०. कलकत्ते में श्री शरचन्द्र बोस की मृत्यु।

२४. संसद् द्वारा 'निरोधात्मक नजरबंदी विधेयक' पारित।

२८. संसद में केन्द्रीय बजट उपस्थित।

मार्च

६. पटना में डा० सच्चिदानन्द सिंह की मृत्यु।

अप्रैल

१. रियासती सेना, डाक-विभाग, आयकर आदि पर केन्द्रीय सरकार का अधिकार।

८. दिल्ली में अल्पसंख्यक संबंधी नेहरू-लियाकत करार पर हस्ताक्षर।
डा० एस० पी० मुकर्जी और श्री के० सी० नियोगी द्वारा पदत्याग।

१२ सुरक्षा-परिषद् द्वारा कश्मीर के मध्यस्थ पद पर सर ओवेन डिक्सन की नियुक्ति।

१८. अन्तर्राष्ट्रीय बैंक द्वारा भारत को १ करोड़ ८५ लाख डालर का तीसरा ऋण।

मई

३. चन्द्र नगर का भारत संघ में सम्मिलन।

४. केन्द्रीय मंत्रिमंडल में परिवर्तन।

१०. योजना आयोग के सलाहकार बोर्ड की स्थापना।

१८. कलकत्ते में अल्पसंख्यक मंत्रियों का अधिवेशन।
दिल्ली में भारत-पाकिस्तान रेलवे-सम्मेलन।

१४. अरब-सागर में नौसेना और वायु-सेना का सम्मिलित अभ्यास।

२४. भारतीय राजदूत सरदार पाणिक्कर द्वारा चीनी जन-गणराज्य के राष्ट्रपति, माओत्से तुंग, के सम्मुख प्रमाण-पत्र उपस्थित।

२५. भारत और पाकिस्तान द्वारा कश्मीरी युद्धबंदियों का विनिमय।

२६. श्री देशमुख, श्री श्रीप्रकाश और श्री अजितप्रसाद जैन द्वारा अपने-अपने पद के लिये शपथ ग्रहण।

जून

२. श्री बी० एन० राव सुरक्षा परिषद् के अध्यक्ष-पद पर।
प्रधान मंत्री नेहरू का वायुयान द्वारा इण्डोनेशिया को प्रस्थान।

८. दक्षिण अफ्रीका के विरोधी रुख के कारण भारत द्वारा गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने से इन्कार।

१२. हैदराबाद में लोकप्रिय मंत्रियों द्वारा पद ग्रहण।

२६. १९५० के 'निरोधात्मक नजरबन्दी अधिनियम' से धारा १४ निकालने के लिए राष्ट्रपति द्वारा एक अध्यादेश प्रकाशित।

जुलाई

११. कलकत्ते में चीनी जन-गणराज्यीय शिष्टमंडल का आगमन।

१२. श्री राजगोपालाचार्य द्वारा मंत्री-पद के लिए शपथ ग्रहण।

१६. कोरिया समस्यासम्बन्धी श्री नेहरू की अपील का श्री स्टैलिन द्वारा उत्तर।

२०. दिल्ली में कश्मीर सम्बन्धी वार्तालाप आरम्भ। सर ओवेन डिक्सन और भारत तथा पाकिस्तान के प्रधान मंत्रियों का वार्तालाप में भाग।

अगस्त

६. आसाम के मुख्य मंत्री श्री गोपीनाथ बार्दोलोई की मृत्यु।

६. संसद् द्वारा 'निरोधात्मक नजरबन्दी अधिनियम' की धारा १४ समाप्त।

१५. भारतीय स्वाधीनता का तृतीय वार्षिक समारोह।

१६. उत्तरी आसाम में भूचाल।

२२. राष्ट्र-संघीय मध्यस्थ द्वारा काश्मीर समस्या के समाधान के लिए किये जाने वाले प्रयत्नों की असफलता की घोषणा।

सितम्बर

२. श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन नासिक कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित।

६. चीनी-जनगणराज्य के राजदूत जनरल युआन चुंग हसीन का भारत में आगमन।

१७ भारत सरकार द्वारा इजराइल को मान्यता।

२०. नासिक में कांग्रेस का ५६ वां अधिवेशन।

२५ कश्मीर के सम्बन्ध में सर ओवेन डिक्सन का प्रतिवेदन प्रकाशित।

३०. भारत-अफगान मैत्री संधि पर हस्ताक्षर।

अक्टूबर

२५. पेकिंग द्वारा तिब्बत पर आक्रमण की घोषणा। भारत सरकार द्वारा तिब्बत आक्रमण पर आश्चर्य और खेद प्रकट करते हुये पेकिंग को पत्र।

नवम्बर

७. नेपाल के राजा द्वारा काठमांडू में भारतीय दूतावास में शरण ग्रहण।

११. नेपाल के राजा का नई दिल्ली में आगमन।

१२. नेपाल में विद्रोह।
पेकिंग द्वारा तिब्बत में युद्ध-बंदी आदेश की सूचना।

१४. संसद् का तीसरा सत्र आरम्भ। राष्ट्रपति द्वारा १९५१ के अंत तक सामान्य निर्वाचनों के होने की घोषणा।

२७. दिल्ली में परामर्श के लिये नेपाली दूतों का आगमन।

२८. युद्ध न करने की घोषणा के सम्बन्ध में नेहरू-लियाकत पत्र-व्यवहार प्रकाशित।

दिसम्बर

२. राष्ट्रसंघीय द्वारा दक्षिण अफ्रीका में जाति-क्षेत्र अधिनियम को रोक देने की सिफारिश।

५. श्री अरविन्द की मृत्यु।

५. भारत और सिकिम के मध्य नयी सन्धि।

१५. सरदार पटेल की मृत्यु।

१८. दिल्ली में वित्तसम्बन्धी मामलों पर भारत-पाकिस्तान वार्ता आरम्भ।

२१. संसद में प्रधान मंत्री नेहरू द्वारा नेपाल को भेजा गया सुधार सम्बन्धी ज्ञापन उपस्थापित।

जनवरी १९५१

१. भारत द्वारा जर्मनी के साथ युद्ध की स्थिति समाप्त करने की घोषणा। भारतीय चाय के भाव के बदले चीन से चावल लेने का निश्चय।

२. भारत और नेपाली दूतों के मध्य एकमत्य।
प्रधान मंत्री श्री नेहरू का लन्दन को प्रस्थान।

४. लन्दन में राष्ट्रमंडलीय प्रधान मंत्रियों का सम्मेलन आरम्भ।

१०. उत्तर प्रदेशीय विधान सभा द्वारा जमींदारी-उन्मूलन विधेयक पारित।

११. दिल्ली में विश्वविद्युत सम्मेलन आरम्भ।

१२. राष्ट्रमंडली प्रधान मंत्रियों का सम्मेलन समाप्त।

१२. अफगानिस्तान के प्रधान मंत्री का दिल्ली में आगमन।

१७ प्रधान मंत्री श्री नेहरू की पेरिस यात्रा और यूरोपस्थित भारतीय राजदूतों से वार्तालाप।

१८. फ्रांस के प्रधानमंत्री श्री प्लिवेन्ही से प्रधान मंत्री श्री नेहरू की भेंट।

१९. ठक्कर बापा का निधन।

२४. राष्ट्रपति द्वारा जमींदारी बिल पर हस्ताक्षर।

२५. इलाहाबाद हाईकोर्ट द्वारा जमींदारी कानून को स्थगित करने की आज्ञा।

[गतांक से आगे]

[१६]

'आनन्द, मनुष्य में नैतिकता का अभाव, दूसरे अर्थ में धर्म या कर्तव्य का अभाव, उसे कभी समाज की वास्तविक सेवा नहीं करने देता ! सेवा को बात छोड़ दो—राजनीति उसके बिना मनुष्य के व्यक्तिगत गुण दोषों की चेरी बन जाती है।'

राजपाल आनन्द को कुछ धर्म के विषय में समझा रहा था।

'तो क्या यह आजकल दिखाई देने वाला धर्म इसी कर्तव्य भावना का रूपान्तर है ?' आनन्द ने पूछा।

'क्यों नहीं, मन्दिर में जाकर दर्शन करने का अर्थ परमात्मा को देखना नहीं है, किन्तु उस मूर्ति में उस सत्य, शिव, सुन्दर के स्वरूप का अनुभव करना है, जो चिरंतन है। वह तो चेतन शक्ति का एक प्रतीक है किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि कोई यदि इस कारण से सहमत न हो तो धार्मिक नहीं है। यह मनुष्य की उस अवस्था की ओर संकेत है, जब उसे मार्ग दर्शन के लिये साकार चाहिये था।'

आनन्द को राजपाल की बात समझ में नहीं आई। उसके जिज्ञासु नेत्र राजपाल की ओर देखते ही रह गये कि राजपाल ने थोड़े से में ही यह क्या कह दिया !

'ठीक है, उदाहरण के लिए देखो, अभी भी अपने समाज में छुआछूत का भूत घुसा हुआ है किन्तु हम में से बहुतों ने उसको मिटा कर क्या अधर्म किया ? बोलने की भाषा में धर्म कुछ विशेष अनुशासित और बंधा हुआ पंथ दिखाई पड़ता है, पर वास्तविक धर्म पंथ विशेष नहीं है। धर्म का स्वरूप तो व्यापक है।'

आनन्द अब कुछ कुछ समझ रहा था।

'तो क्या विवाह भी धर्म के अंतर्गत आता है ?'

'हां, क्योंकि यह मनुष्य का स्वभाव है। स्त्री पुरुष का आकर्षण स्वाभाविक एवं नैसर्गिक है। विवाह का संस्कार कर पुरुष और स्त्री के स्वभाव की पूर्ति-प्रकृति के गुणों की पूर्ति द्वारा की जाती है और उसकी व्यवस्था है भी आवश्यक ! विवाह को मिटा कर अन्य सभ्य कहलाने वाले राष्ट्रों ने अनैतिक जीवन का अनुभव किया और उसका परिणाम निकला विनाश ! स्त्री और पुरुष समाज के दोनों अंगों के जीवन को राष्ट्रोपयोगी बनाने का नैतिक मार्ग ! जीवन की प्रत्येक अवस्था में धर्म रहेगा ही—उस का रूप भले ही भिन्न हो सकता है।

आनन्द ने कुछ अनुभव किया अपने विषय में—लीला के विषय में ! उसे यह सत्य स्वीकार करना पड़ा।

'पर क्या विवाह अनिवार्य भी है ?' आनन्द ने पूछा।

'अनिवार्य नहीं है, यह मैं मानता हूं कि अविवाहित रहने की अवस्था में समाज में नैतिकता बनाये रखने के लिये उसे भी कुछ धर्मों को मानना पड़ेगा।' राजपाल ने कहा।

'धर्म का एक दूसरा स्वरूप आध्यात्मिक भी तो है ?' आनन्द ने पूछा।

'हां, किन्तु आर्य धर्म की यही विशेषता है कि उसने अध्यात्म के उस क्षेत्र तक उड़ान लगाई है, जहां वास्तविक को ठेस नहीं पहुंचती ! दोनों ही अवस्थाओं में इति आत्मघातक सिद्ध नहीं हो सकती, यह समय ने अपने आप बतला दिया !

कुछ क्षणों के लिए दोनों मौन हो गये।

'अस्तु, यह सब अनुभव से समझ आ जाता है। एक अन्तरंग मित्र के नाते क्या मैं तुमसे पूछ सकता हूं कि तुम्हारा और लीला का प्रेम हृदय की अनुभूति से हुआ और क्या जो मैंने सुना है सब सच है ?

आनन्द अवाक रह गया ! वह क्या उत्तर दे, उसकी समझ में नहीं आया। उसके भावों से अनायास ही टपक रहा था ! किन्तु वह मूक था !

वे दोनों बातों बातों में नगर से बहुत दूर निकल आये थे। विषय की गहनता में उन्हें समय और स्थान का ध्यान नहीं रहा था।

आनन्द ने राजपाल को लीला पर घटी दुर्घटना कह सुनाई। उसे समाज की इस दयनीय स्थिति पर दुख था, किन्तु उस दुख का परिणाम उसे केवल भावुक नहीं बना देता था—किन्तु कर्मशील भी।

उसने कहा—यह सब मुझे पहिले ही नहीं मालूम हुआ, कोई बात नहीं। वह तो मेरा केवल अनुमान था, पर सच निकला। तुम निश्चिन्त रहो—चलो वापिस चलें। घर पहुंचने तक कुछ न कुछ व्यवस्था हो जायेगी।

× × ×

'मकान की व्यवस्था तो हो ही जायेगी।' आनन्द ने राजपाल से विदा लेते हुए पूछा।

'अवश्य, और कल ही तुम्हें यह स्थान छोड़ देना चाहिये।

राजपाल ने देखा, दूर से कोई धुंधली सी आकृति उसके द्वार से बढ़ी चली आ रही है। वह सोच रहा था स्त्री ! और क्यों ? निकट आने पर उसने देखा लीला ! उसने केवल लीला को दो ही बार देखा था, फिर भी वह शीघ्र ही पहिचान गया।

'नमस्ते लीला जी'— राजपाल ने कहा।

'नमस्ते !'

और आनन्द के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा, लीला यहां इतनी रात क्यों आई ?

'कैसे कष्ट किया इतनी रात, क्या भाई आनन्द को ढूंढने के लिये।' राजपाल ने विनोद करते हुए कहा।

लीला के नेत्र आनन्द के नेत्रों से मिलकर भूमि की ओर झुक गये। उसने कुछ भी नहीं कहा।

'लीला ! आनन्द ने कहा—भाई राजपाल बड़े विनोदी हैं। बुरा न मानना।' लीला मानो लज्जा से गड़ गई।

और राजपाल ने अनुभव किया समर्पण ! उसके विचार दोनों को अपनी मानसिक-तराजू पर तौल रहे थे।

'बहुत दिनों से इच्छा थी कि आपके दर्शन हों, इसलिए मैंने सोचा कि इससे अच्छा अवसर और कौन सा होगा' लीला ने उत्तर दिया।

'स्वागत ! तो आप मुझे घर न पाकर लौट रही थीं। चलिये, भाई आनन्द और आपका मेरी कुटिया में स्वागत है। मैं स्वयं आपके यहां आने का विचार कर रहा था, किन्तु कार्य वश न आ सका। क्षमा का प्रार्थी हूं।'

और आनन्द ने हंसते हुए कहा—भाई राजपाल क्षमा का कोटा तो अब बन्द कर दिया गया है—वह तुम्हें मिल नहीं सकती।

तीनों ने हंसते हुए राजपाल के घर प्रवेश किया।

[१७]

आयु के अन्तिम दिवसों में यौवन की न थी चपलता, उत्साह और उन्माद

कुलपति नरेन्द्र निर्जन साधना के लिए अपने घर से निकले थे। पर सुरम्य यमुना के तट पर विद्यार्थियों को शिक्षा दान देने का लघु प्रयास विराट गुरुकुल के रूप में परिणित हो चुका था। राजपाल और राघवेन्द्र आचार्य नरेन्द्र के प्रमुख शिष्यों में से थे। गुरुकुल की सम्पूर्ण शिक्षा समाप्त कर यह दोनों विद्यार्थी गुरु के प्रेरणाप्रद सन्देश के साथ जीवनक्षेत्र में प्रवेश करते हैं, तथा जीवन और जगत की समस्याओं का समाधान ढूंढने की ओर अग्रसर होते हैं। राघवेन्द्र आचार्य द्वये के सम्पर्क में आकर गांधीवाद की ओर प्रवृत्त होता है। इधर राजपाल अनेक प्रकार की मानसिक उथल पुथल के पश्चात् राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की आवश्यकता का अनुभव करता है तथा दृढ़ चित्तता से उसी कार्य में लग जाता है। राजपाल अपने पूर्व सहपाठी आनन्द के सम्पर्क में आता है, जो साम्यवादी विचारधारा से पूर्णतया प्रभावित है। इस प्रकार दोनों ही अपने निर्दिष्ट मार्ग की ओर बढ़ रहे हैं। राघवेन्द्र आचार्य देव के अधिक सम्पर्क में आता है, इसी बीच उसका परिचय एक मुस्लिम महिला जैतुन्निसा से हो जाता है जो उसकी ओर कुछ आकर्षित होने का ढोंग रचती है। राजपाल के प्रयत्नों से लीला उच्छृंखल कम्यूनिस्ट युवकों के फन्दे से छूटती है।

हां, वृद्ध जर्जर शरीर में भी जीवन का संचार कर देती है, तो यदि आचार्य उस अधेड़ अवस्था में विवाह का आयोजन कर रहे थे तो कोई आश्चर्य नहीं ! किन्तु गत कई वर्षों के संस्कार उन्हें बार-बार उन्हें रोक कर पुनः विचार करने को बाध्य कर देते थे।

एक दिन आचार्य ने निश्चय किया और सौविनी को बुला कर पूछा—

'बेटी शैला, मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया है कि तुम्हारी मां को संसार छोड़े लगभग उतने ही वर्ष हो गये, जितनी तुम्हारी आयु ! तुम्हारी मां स्वर्ग की देवी थीं। मैं उन्हें कभी नहीं भूल सकता — उनका गला भर आया। वे कुछ रुक गये। उन्हें अपनी पुत्री के सन्मुख अपने विवाह की बातें करते एक बार तो संकोच हुआ !

उन्होंने फिर कहना प्रारम्भ किया—

हां, तो मैंने आज तक जो सोचा और समझा, वह यह कि तुम भी अब विवाह के योग्य हो चली हो, और फिर

मेरे लिए यह घर निर्जन हो जायेगा। क्यों नहीं मैं दूसरा विवाह कर लूं। मेरी उम्र अभी कोई उतनी नहीं हुई कि समाज मुझे विवाह के अयोग्य कह सके।'

शैलिनी एकटक अपने पिता की ओर देख रही थी। उसे आश्चर्य हो रहा था। पिताजी उससे यह सब कुछ क्यों पूछ रहे हैं और इस अवस्था में वह उन्हें क्या उत्तर दे।

राजेन्द्र ने बीच में ही कहा — 'दादा, इसमें पूछने की क्या बात है! घर चलाने के लिए जीवन साथी की बहुत आवश्यकता है। मेरी समझ में इसमें एकदम और सोच-विचार की कोई बात नहीं है। क्यों न शैलिनी!'

पर शैलिनी मौन थी। कुछ आशायें थीं अवश्य, पर यौवन के प्रथम चरण ने उसके मुंह पर पट्टी बांध दी थी। वह क्या कहती!

आचार्य ने कहा — 'हां, तो एक नई मिसाल के रूप में बेगम जेबुन्निसा से मैंने शादी करने की सोची है। क्यों न राजेन्द्र!'

शैलिनी और राजेन्द्र दोनों ही एक साथ आश्चर्य चकित हो उठे।

'जेबुन्निसा' — राजेन्द्र की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। उसने — कहा —'ठीक है।'

बात समाप्त हो गई। वह सीधा अपने कमरे में जाकर सो गया और शैलिनी सोच रही थी, पिता जी को क्या हो गया है, जो विवाह कर रहे हैं उससे, जिसके विषय में उसे पूर्व से ही घृणा है। उसके पाठशाला का समय हो रहा था। वह पढ़ने चली गई।

आचार्य ने अपने विवाह की अनुमति अपने लड़कों से ले ली थी। अब उनका मन प्रसन्न था। 'प्रेम— ऐसे प्रेम को समाज रोक नहीं सकता, जिसमें एक राष्ट्रीयता की पुष्टि हो। हिन्दू मुस्लिम समस्या को सुलझाने के लिए यही मार्ग सबसे सरल है'— आचार्य सोच रहे थे।

शैलिनी ने अपनी पढ़ाई समाप्त करने के पश्चात् राजपाल से पूछा— 'मास्टर जी, मेरा एक प्रश्न है? क्या आप उसका उत्तर देंगे?'

'क्यों नहीं, क्या तुम्हारा प्रश्न इतना कठिन होगा शैलिनी, कि मैं उत्तर न दे सकूं?' राजपाल ने विनोद करते हुए पूछा।

'कठिन तो नहीं है, पर आने क्यों मैं आप से ही उसकी विवेचना सुनना चाहती हूं।'

'प्रयत्न करूंगा कि उत्तर दे सकूं, पूछो।'

शैलिनी ने पूछा— 'क्या संसार में राजनीतिज्ञों के लिए धर्म के सिद्धांत जानना आवश्यक नहीं है?'

प्रश्न यथार्थ में शैलिनी का होने वाले किसी आघात का प्रतिक्रियात्मक रूप था। प्रातःकाल से ही वह इन्हीं विचारों में लीन थी। 'धर्म क्या है? उसका मनुष्य से क्या सम्बन्ध है? आदि'...

राजपाल ने उत्तर दिया— 'धर्म के नियम प्रत्येक को मानना अनिवार्य हैं, चाहे कोई राजनीति का धुरंधर विद्वान हो या साधारण गृहस्थ और जहां इन सिद्धांतों के अनुरूप आचरण करना समाप्त हो गया, वहां समझ लेना चाहिए कि वह समाजपतन की ओर जा रहा है।'

शैलिनी का भी यह मत था, किन्तु शैलिनी के धर्म की परिभाषा और राजपाल के धर्म की परिभाषा में अंतर था।

'तो यह धर्म क्या है? रूढ़िबद्धता या प्रकृति का स्वभाव कर्त्तव्य?' शैलिनी ने पूछा।

'धर्म रूढ़िबद्ध दिखने लगा है, क्योंकि वह शाश्वत है— क्योंकि वह सत्य है, चिरन्तन है।'

राजपाल गत चार वर्षों से शैलिनी के स्वभाव का अध्ययन कर रहा था किन्तु आज का प्रश्न उसके लिये बिलकुल नवीन था। इतनी गम्भीरता उसने पहिली बार ही देखी थी। किशोर अवस्था का भोलापन आज उसमें नहीं था।

वह संसार की गहराई को खोजना चाहती थी। वैसे उसकी जिज्ञासु वृत्ति से तो वह परिचित था ही। उसकी मुखाकृति से उसे भास हो रहा था कि उसके हृदय में कोई गहरी चोट है।

'बात यह है मास्टर जी!' शैलिनी मानों कभी कुछ छिपाना जानती ही न थी — 'पिताजी क्या विवाह करने जा रहे हैं, बेगम जेबुन्निसा से। वे मुस्लिम महिला हैं और पिताजी तो पहिले पूरे वैष्णव थे। कुछ तो उनका विश्वास धर्म की बातों से हटता जा रहा है। स्वदेश सेवा यही उनका धर्म है और वे कहते हैं 'धर्म तो राजनीति में बाधक है।' क्या धर्म वास्तव में बाधक है?' शैलिनी ने बहुत बड़ी बात बड़े सुन्दर शब्दों में राजपाल से कही। राजपाल का भावुक हृदय शैलिनी में अपनी बहिन की प्रतिमा देखता था! राजपाल की कोई सगी बहिन नहीं थी, किन्तु उस स्वर्गीय सुख का अनुभव वह आज कर रहा था। राजपाल ने कुछ सोचते हुये उत्तर दिया —

'शैलिनी, धर्म के रूप को समझने के पश्चात् ही, धर्म के विषय में किसी प्रकार की धारणायें बनानी चाहिये। मैं समझता हूं कि जब हमारे देश के नेताओं ने इस सिद्धांत की रचना की उस समय की स्थिति में हिन्दू और मुस्लिम समाज के समन्वय का प्रश्न चल रहा था। इसलिये उनका द्वन्द्वात्मक कुचिन्तन सुलझाने के लिये एक नवीन ढंग के समाज की खोजना की गई और धर्म को अनेक ने अपने अपने प्रति कोष-से देखा। धर्म के सिद्धांतों के मूल को हेय समझ लिया। मेरी दृष्टि में इन नेताओं ने सबहृदयों के चक्कर में आकर वास्तविक मानव धर्म — आर्य धर्म को नहीं पहिचाना, जिसके बिना मनुष्य का जीवन निष्प्राण और शून्य हो जाता है, और उसी का परिणाम है कि व्यक्ति अपने गुण भूल कर अपनी पुरानी असभ्य स्थिति में जाने का प्रयत्न कर रहा है। 'धर्म राजनीति में बाधक है' — का नारा लगाकर अधर्म और अनीति का प्रतिपादन हो रहा है। आज मनुष्य का अपने समाज के प्रति, अपने स्वयं के प्रति कोई कर्तव्य शेष रहा है जो उसे सत्य की ओर अग्रसर कर सके? मैं इस विवाह को अनुचित इसलिये समझता हूं कि इसमें आचार्य के आदर्श जीवन के स्थान पर वासना की दुर्गन्ध आ रही है। उन्हें समाज की इस अवस्था पर अपना कर्तव्य केन्द्रित करना चाहिये था और आदर्शवत होकर इन अनुचित प्रेम व्यवहारों को समुचित रूप दे देते, किन्तु उनके धैर्य का बांध टूट गया। फिर एक बात और है — विवाह कहते हैं समाज के द्वारा अनुमोदित और स्वीकृत प्रेम-व्यवहार को। क्या समाज यह अपेक्षा रखता था उनसे? इसीलिये यह अधर्म है। इसीलिये यह अनैतिक है और इसीलिये राजनीति के नाम पर व्यक्ति के जीवन का नग्न रूप है।'

सम्पादक के नाम पत्र

हमारे पाठक क्या कहते हैं ?

क्या नाना फड़नवीस सुभाष बाबू से मिले थे ?

नाना फड़नवीस और सुभाष की भेंट के सम्बन्ध में दिल्ली के दैनिक 'नेताजी' के समाचार से अनेक लोग चकित हुए होंगे। अनेक इतिहास पढ़ने वाले पुस्तकों की छानबीन करने लगे होंगे। विद्वानों के सन्मुख यह समस्या उठ खड़ी हुई होगी कि इतने दिन बाद नाना फड़नवीस कैसे 'जिन्दा' हो उठे।

इस सम्बन्ध में आश्चर्य बातें यह हैं कि दिल्ली के उक्त 'नेताजी' पत्र को मरे हुए व्यक्तियों को जिन्दा कहने की लत है। यह बराबर नेताजी श्री सुभाषचन्द्रबोस के सम्बन्ध में भी तरह तरह के समाचारों से प्रमाणित किया करता है कि नेताजी अभी जीवित हैं। नाना फड़नवीस के सम्बन्ध में भी उसी प्रकार का उसका प्रयास रहा है।

किन्तु नाना फड़नवीस को जिलाने में सहयोगी ने कमाल कर दिया, क्योंकि उनकी मृत्यु सन् १८०० ई० में हुई। सम्भवतः सहयोगी का अभिप्राय नाना साहब धूधूपन्त पेशवा से है। पर उसे यह पता नहीं कि नाना साहब और नाना फड़नवीस दो भिन्न व्यक्ति थे। इस से उसके ऐतिहासिक ज्ञान का परिचय मिलता है।

— एक पाठक

●

महान कलाकार की जयन्ती मनाओ

आगामी माघ की शुक्ल दशमी (१८ फरवरी) को हिन्दी के अमृत पुत्र प्रसाद की जन्म तिथि है। अपनी बहुमुखी प्रतिभा से उन्होंने हिन्दी के काव्य और गद्य साहित्य को एक महत्वपूर्ण मोड़ और नवीन दिशा दी है। काव्य और उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध आदि सभी क्षेत्रों को उनकी लेखनी के पारस-स्पर्श से सौष्ठव और गरिमा प्राप्त हुई।

हमारा देश अब तक सूर, तुलसी जैसे कवि मनिषियों की स्मृति को भी राष्ट्रपर्व नहीं बना सका, जिसे हमारी अवहेलना का ही मूर्त रूप कहा जा सकता है। ऐसी स्थिति में आधुनिक साहित्यकारों के स्मृति पर्वों के सम्बन्ध में क्या कहा जाय, जिनकी कृतियों से अभी समय का प्रभाव टकरा ही रहा है।

वस्तुतः इनके स्मृति अर्चना का भार अभी दीर्घ काल तक उनके उत्तराधिकारी साहित्यकारों तथा मर्मज्ञ पाठकों पर ही रहेगा।

प्रसादजी के साहित्यिक अग्रजों और अनुजों की संख्या कम नहीं है। उनके पाठकों का संसार भी छोटा नहीं, अतः साहित्यिक, साहित्य संस्थाएं हिन्दी के पाठक, शिक्षक, विद्यार्थी, पत्र-पत्रिकायें आदि इस उत्सव का ऐसा आयोजन कर सकते हैं, जो उपयोगी और व्यापक हो।

विश्वास है कि प्रसाद जयन्ती के पुण्य-पर्व को आनन्द और उत्साह से मनाने में देश भर के साहित्यिक और साहित्य संस्थायें योग देंगी। सम्भाव्य कार्यावली की रूप रेखा हो सकती है —

१ — प्रसाद के काव्य का पाठ,

२ — उनके नाटकों का अभिनय,

३ — उनके व्यक्तित्व का स्मरण और विश्लेषण।

४ — उनके साहित्य का मूल्यांकन,

५ — युगों के सांस्कृतिक विकास को उनकी प्रतिभा और जीवन दर्शन के योगदान के सम्बन्ध में विचार विनिमय।

६ — उनकी कृतियों को अन्य प्रांतीय भाषाओं में रूपान्तरित करने की योजनाएं।

७ — उनकी स्मृति में रंगमंच की स्थापना।

८ — पत्रिकाओं द्वारा प्रसाद संबंधी विशेषांकों का आयोजन।

— महादेवी वर्मा

●

फिल्मी गानों का नशा

आज जब अपने पाठकों में से बहुतों को और उनके छोटे छोटे बच्चों को फिल्मी गाने गाता देखता हूं तो वर्तमान युग के सिनेमाई प्रेम और मतवालेपन से भरे हुए गानों के विरुद्ध विद्रोहपूर्ण भावना उठे बिना नहीं रहती। कहीं भी छोटे मोटे शहर या कस्बे में चले आइये, सवेरे सवेरे मुर्गे की बांग की तरह मुर्गे का यह गाना कितना लोकप्रिय है—

तेरा मुर्गा कुंकड़ूं कूं बोले—
तेरी मुर्गी का मनवा डोले ! !

धन्य हो इस गाने के रचयिता !

वह देखिये-बिचारे रिक्शा वाले को कांटा कहां से लग गया ? क्या ही मस्ती में झूमता गा रहा है—

कांटा लागो रे सजनवा—
मोसे राह चलो न जाय !
उठ मां ! राह चली न जाय !

आइए साहब, होटल में देखिये— होटल वाले ने रेकार्ड लगा रखा है।

हमको भी ले चलना बाबू दिल की
मोटर कार में फिफ्टी की रफ्तार में !

अब आइये मार्डन गाना सुनिये—

दिन रात सुबह शाम !
मेरे दिल से निकले हाय-हाय !
खिड़की में आजा तोहें
मां की कसम, तोहें बाप की कसम !
मेरे दिल का कहीं फटे न एटम बम !

ओहो ! वह देखिये छोटा-सा बच्चा गा रहा है—

"मार कटारी मर जाना !"
"जवानी की रेल चली जाय रे !"

क्या ही नई रागिनी छेड़े अलमस्त कालिज का स्टूडेन्ट चला आ रहा है ! नर्गिस या कामिनी कौशल की कोई तसवीर मिल जाय तो पट्टा पढ़ाई लिखाई छोड़ कर बम्बई की फुटपाथ पर अलख जगाता बैठ जाय। आहिस्ता से उसके दिल की बात तो पूछिये उसकी जिन्दगी की एक बड़ी साध है ! क्या है उसकी साध ? आशा है कि इस जन्म में नहीं तो उसके अगले जन्म में ही एक रेहाना, सुरैया, कानन, शान्ता आप्टे आदि तारिकाओं में से कोई एक भी अभिनेत्री भले एक ही दिन लिए क्यों न हो उसको जोरू के रूप में मिल जाय ! ब्रह्मवेला में उठकर ही 'मोरे द्वार खुले हैं—'आने वाले कब आवोगे,' की टेर लगी है भगवद्भजन के समान ही यह गाना हमें सुनने को मिलता है तो सारी राष्ट्रीयता, सारी भावुकता, सारा साहित्यिक विचार किसी गड्ढे में डूब मरने के लिए शर्म से चल्लू भर पानी ही ढूंढने लग जाता है। घर घर में व्यभिचार और अनाचार के विषाक्त सन्देश पहुँचा कर कितना उपकार किया जा रहा है भारत पर। धन्य हो गीतकारो ! तुम धन्य हो तुम्हारी सर्वतोमुखी प्रतिभा को भी धन्य है।

—रामाधार व्याकुल

●

काश्मीर की विधान परिषद और भारत

साढ़े तीन वर्षों से हम प्रतिदिन केवल यही सुन रहे हैं कि काश्मीर की समस्या का हल इस सप्ताह हो रहा है अथवा अगले सप्ताह होगा इत्यादि इत्यादि— वस्तुत. हल का प्रश्न ही पैदा नहीं होता, काश्मीर प्रजा तथा राज्य अधिकारियों द्वारा भारत में सम्मिलित किया जा चुका है तो यू० एन० ओ० द्वारा निर्णय की क्या आवश्यकता ? पर जो होना था सो हो चुका—हमने एक नहीं सैकड़ों भूलें की हैं युद्ध विराम जैसी भयंकर भूल करके अपनी सेना को अपना इलाका वापस लौटाने से रोक कर शत्रु को प्रोत्साहन दिया— यू एन ओ के मुवस्सों को बुलवा कर अपनी नीति का स्वयं दूसरों द्वारा उपहास करवाया, दूसरों की इच्छा न होने पर भी स्वयं संधि पैक्ट द्वारा बर्बरता को प्रोत्साहित किया— हम ने क्या भूल नहीं की ? अब सुना जा रहा है कि भारत ने शेख को काश्मीर में विधान परिषद् बुलाने का अधिकार दे दिया है—और शेख साहिब ने भी इसकी तैयारी के बारे में घोषित किया है। इस घोषणा के अनुसार विधान परिषद् को तीन फैसले करने होंगे।

१ काश्मीर को किस इकाई में शामिल किया जाये—भारत, पाकिस्तान अथवा स्वतन्त्र घोषित किया जावे और अगर सम्मिलित होना है तो किस आधार पर व किन शर्तों पर ?

२. महाराजा काश्मीर का वैधानिक अस्तित्व भी माना जाये अथवा नहीं।

३ जिन जमीन्दारों से जमीनें ली हैं, उन्हें जीवन-निर्वाह के लिए कुछ धन दिया जाये अथवा नहीं—

भारतीय विधान के अनुसार जब तक जम्मू काश्मीर विभाग रियासत की शक्ल में रहेगा तब तक वैधानिक प्रमुख का होना अत्यावश्यक है क्योंकि बिना वैधानिक प्रमुख के रियासत रियासत नहीं कहला सकती। फिर तो उसे किसी भाग में समा जाना चाहिये, जैसे बड़ौदा इत्यादि और फिर वैधानिक प्रमुख की इच्छा बिना विधान परिषद बुलाई नहीं जा सकती, इसलिए उसे अधिकार ही क्या है कि वैधानिक प्रमुख के बारे में कुछ फैसला करे थवा विधान बनाए और फिर जब भारतीय विधान भारत के उच्च कोटि के विद्वान्, बुद्धिमानों द्वारा प्रयत्नपूर्वक बनाया गया है भारत पर लागू है देश के चालीस करोड़ व्यक्तियों को मान्य है और इसके साथ साथ काश्मीर भारत का महत्वपूर्ण अंग भी है तो वहां अलग विधान अथवा विधान परिषद की क्या आवश्यकता ? और अगर भारत को यह विश्वास हो कि शेख संविधान परिषद् बुला कर जनतन्त्र के नियमों के अनुसार काश्मीर को भारत के हस्तगत कर देगा तो फिर वैधानिक प्रमुख और शर्तों के बारे में प्रश्न उठाने की क्या आवश्यकता ? इससे प्रतीत होता है दाल में अवश्य कुछ काला है—और यह डर बवंडर की भांति उठ कर जब तक सारे देश को आप्लावित कर दे, उससे पहिले हमें चेत जाना चाहिये— मैं यह नहीं कहना चाहता कि भविष्य में क्या होगा, किन्तु अगर रियासत स्वतन्त्र हुई या इसके साथ केवल कुछ शर्तों द्वारा मैत्री की गई—तो कवचहीन शरीर की भांति शत्रु की तलवार के नीचे रहना होगा, जबकि विदेशी सत्ता सशस्त्र सिद्ध खड़ी हों।

—द्वारकानाथ वर्मा

अपनी देववाणी सीखिये

अस्मदीयं भारतीयं गणराज्यम्

★ श्री धर्मदेवो विद्यावाचस्पति ★

१ सदाऽमरं स्याद् गणराज्यमेतत्
सं प्राप्यंते ऽनन्तदयालु देव. ।
स्वातन्त्र्यमेतस्य सदा स्थिरं स्याद्
दयान्महेश खलु शक्तिमित्यम् ॥

२ एतत्समृद्धं सबलं सदा स्याद्
क्षुद्भ्याऽध्यनावृष्टिभयाविहीनम् ।
लोका समस्ता सुखिनो भवन्तु
देवेशभक्ता मुदिता सुशक्ता ॥

३ चरित्रवन्त पुरुषा असक्ता
पतिव्रता स्युर्महिला प्रशस्ता ।
सज्ज्ञानवन्त सकला प्रहृष्टाः
शिष्टा न दुष्टा क्वचिदेव दृष्टाः ॥

४ प्रीतिर्भवेत्सर्वजनेषु शुद्धा
बुद्धा भवेयुर्बहवश्च वृद्धा ।
तपोधना मार्गनिदर्शका स्यु -
र्न येषु जिह्मं ह्यनृतं न माया ॥

५ न तस्करा स्युरवृजिनो न केचिद्
नाज्ञा न मर्यादिरता मनुष्या ।
समे स्वकर्तव्यपरा नरा. स्यु
सौहार्दवन्तोऽमलबुद्धिमन्त ॥

६ विद्या सुविज्ञान कलासु सम्यक्
समुन्नतं स्यात्सकलासु राज्यम् ।
न चक्षुषा द्रष्टुमपीह दुष्टा.
शक्ता भवेयु शुभराष्ट्रमेतत् ॥

७ विश्वस्य नेतृत्वमिदं विदध्यात्
आध्यात्मिकं ज्ञानमिदं प्रदद्यात् ॥
शान्तेश्च साम्राज्यमिदं प्रतन्यात्
दयालुदेवो दुरितानि छिन्द्यात् ॥

केचित् समाचाराः

दिल्लीप्रान्तीय - हिन्दी साहित्य-सम्मेलनस्य तत्वावधाने मुगलाधिपानां 'लालकिला' इति नाम्ना प्रख्याते दुर्गे गणराज्यमहोत्सवस्य विराट् समारोह. अभूत । प्रथमे दिवसे कविसम्मेलनस्य कार्यक्रम आसीत् । द्वितीये दिवसे स्त्री-पुरुषकलाकारै संगीतनृत्यकलयो सुन्दरं प्रदर्शनं कृतम् । तृतीये दिवसे 'पाषाण' नाटकस्य अभिनयेन जनता आह्लादिता ।

संयुक्त राष्ट्रसघस्य राजनीतिकसमिति त्रिगतसप्ताहत्रयेण कोरिया-चीन-युद्धस्य प्रश्नं विचारयति, किन्तु सदस्यानां तीव्रमतभेदस्य हेतुना न कमपि निश्चयं कर्तुं शक्नोति । अमरीकादेश साम्यवादिनं चीन आक्रामकं घोषयितुं प्रस्तौति, अन्ये अनेका देशा अस्मिन् प्रस्तावे विश्वयुद्ध सभाव्य अस्य विरोधं कुर्वन्ति । एषु विरोधिषु देशेषु भारतस्य प्रमुखं स्थानमस्ति ।

प्रतिदशवर्षानन्तरं भाविनी जनगणना भारतवर्षे फरवरीमासस्य नवम तिथे. प्रारप्स्यते ।

संस्कृतज्ञानां दुर्दशा

निम्नलिखितं पत्रं इन्द्रप्रस्थीयसंस्कृत परिषन्मन्त्री श्री धर्मदेव. राष्ट्रपतिं श्री राजेन्द्रप्रसादं प्रति प्रेषितवान्—।

गीर्वाणवाणीनिपुणा भवन्त—
स्तथापि तस्यास्तु दशास्त्यवद्या ।
स्वतन्त्रदेशेऽपि न मानमस्या
भाध्यापका· सन्ति सुमानभाज· ॥
प्रोत्साहन नैव च दीयतेऽस्या
अध्यापनायाप्यधिकारिवर्गैं ।
वेनाल्पसंख्या. खलु सन्ति छात्रा
येऽस्याः समभ्यासरता नितान्तम् ॥
इमामवस्थामति शोचनीयां
श्रीमन्त इद् दूरयितुं समर्था. ।
अध्यापनं स्यादनिवार्यरूपे—
वास्या व्यवस्था खलु तादृशी स्यात् ॥
येऽस्याः सुशिक्षानिरता बुधास्ते
मानं समेभ्योऽप्यधिकं लभेरन् ।
सुसंस्कृतेस्ते हि यत. प्रसारे
कृतप्रयत्ना अनवद्यविद्या ॥
ये केऽपि चाऽस्ये प्रतिबन्धका स्यु-
स्तस्या विकासे सकला निवार्याः ।
समुच्छ्रितं येनं पदं प्रशस्ता
लभेत भाता सुरभारतीयम् ॥

सुभाषितम्

बालसखित्वमकारणहास्यं
स्त्रीषु विवादमसज्जनसेवा ।
गर्दभयानमसंस्कृतवाणी
षट्सु नरो लघुतामुपयाति ॥

बच्चों के साथ दोस्ती, बेकार हंसना, स्त्रियों से विवाद करना, दुर्जनों की सेवा, गदहे की सवारी, अशुद्ध बोलना-इन छ. दोषों से मनुष्य लघुता प्राप्त करता है ।

★

पेड़ों की कहानियां

मनुष्य की बुद्धि ने पेड़ों के सम्बन्ध में कई तरह की कहानियों की कल्पना की है। उनमें से कुछ यहां दी जाती हैं—

बरगद के जटायें क्यों होती हैं ?

विश्वामित्र एक बहुत बड़े ऋषि हो गए हैं। एक बार उन्होंने तपस्या शुरू की। बिना खाये-पिये वर्षों बिता दिये। उनके सिर के बाल बड़ी बड़ी जटायें बन कर उनके चारों ओर फैल गये। उनकी इस तपस्या से इन्द्र बहुत डरा। कहीं भगवान इन से खुश हो कर इनको इन्द्र न बना दें, इसलिए इन्द्र ने बहुत जोर से पानी बरसाया कि जिससे वे बह जायें। परन्तु उनकी जटाओं में जो वर्षों से गर्द भरी थी, वह बह कर नीचे आ गई, जिस से जटायें जमीन के साथ मिल गईं और विश्वामित्र अटल तपस्या में लीन रहे। बाद को वे ही बट वृक्ष के रूप में प्रकट हुए।

बेर के कांटे क्यों होते हैं ?

एक बार जब श्रीकृष्ण जी गोकुल से मथुरा जाने लगे, तब गोपियां कतार की कतार उनका रास्ता रोक कर खड़ी हो गईं। वे बड़े-बड़े आंसू गिराने लगीं और उनका पीताम्बर पकड़ कर खींचने लगीं। पर कृष्णजी न माने, चले ही गए। उनके जाने के बाद भी गोपियां उसी प्रकार खड़ी रहीं और आंसू बहाती रहीं। बाद को वे ही रास्तों में बेर के वृक्षों के रूप में प्रकट हुईं, जो अब भी जाने वालों को उलझाती हैं।

जामुन काली क्यों होती है ?

इन्हीं गोपियों में एक गोपी थी, जो कृष्ण को बहुत प्यारी थी। वह बिलकुल सूख गई थी। उधर से एक ऋषि निकले। उन्होंने अपने कमण्डल से एक चुल्लू पानी ले कर उस पर छिड़क दिया। तब वह जामुन का पेड़ बन गई। यह जामुन और कुछ नहीं, उसी के बड़े-बड़े आंसू थे, जिनमें कृष्ण की श्याम मूर्ति झलकती थी।

बांस में पोर क्यों होते हैं ?

बांस शुरू से ही एक पेड़ था और उसमें पोर न होते थे। उसकी छड़ी बना कर अध्यापक लोग लड़कों को पीटा करते थे। एक बार शिव-पार्वती उधर से निकले और बांस को मना किया कि वह मास्टरों के हाथ में छड़ी न बने। पर बांस न माना। इस पर शिवजी ने अपने त्रिशूल से बांस को बुरी तरह पीटा, जिससे उसके तमाम शरीर में पोर बन गए।

संसार की सबसे बहुमूल्य पुस्तक

संसार की सबसे बहुमूल्य पुस्तक जिसकी एक प्रति का मूल्य इस समय १ लाख पौंड है, शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है और तब इसकी प्रत्येक प्रति २५ शिलिंग (लगभग १६।।=) में उपलब्ध हो सकेगी।

इस पुस्तक का नाम 'मिन्ट' है और इसके लेखक अरब के लारेन्स हैं। इसमें शाही हवाई बेड़े के अनुभवों का वर्णन है। इसकी १२ प्रतियां एक अमेरिकन प्रकाशक ने अत्यधिक मूल्य रख कर छापी थी जिससे किसी को यह पुस्तक सुलभ नहीं हो सकी।

★

तोतली

छोटी-सी बालिका थी,
गर्वीली मनिनि थी,
सुन्दरतम कौतुकी थी,
अटपटी कौमुदी थी,
बिजली की ज्योत्सना थी,
बारिश की लहरिया थी,
कर्त्ता की कर्मण्यता थी,
आंखों की पट-निधि थी,
अम्बुज की गर्जना थी,
केशों की कामनीयता थी,
चेहरे की कमलिनी थी,
पर, फिर भी तोतली थी।

—परमेश्वर दयाल जैन

★

जरा हंसिये

एक किसान ने एक मियांजी से पूछा—'अरे मियां जी कहां जा रहे हो ?'

मियांजी—'नक्खा (शहर) देखने।

किसान—'वहां से मेरी ज्वार और मुझे देख आना।'

× × ×

शिक्षक ने विद्यार्थी से कहा—

'क्यों जी किसकी फिराक में खड़े हो ?'

विद्यार्थी—'किसी की फ्राक में नहीं, मैं तो अपनी चोली कमीज में खड़ा हूं।'

× × ×

मास्टर साहब ने छुट्टियों के बाद लड़कों से पूछा—'क्यों जी चीन देख कर आये हो ?'

एक विद्यार्थी—'मास्टर साहब मैं न जा सका। क्योंकि मेरे पिताजी ने कहा कि वहां भी लड़ाई चल रही है फिर कभी देख आना।'

× × ×

संसार में ३३०००० जुड़वां बच्चे हर साल पैदा होते हैं।

★

कहां ?

गोकुल के गोपाल कहां हैं ?
कहां अयोध्या के श्री राम ?
बलदाऊ बलराम कहां हैं ?
कहां बन्धु लक्ष्मण अभिराम ?
है जानकी कहां मिथला की ?
कहां उर्मिला है गुणधाम ?
कौशल्या केकयी कहां हैं ?
कहां जनक दशरथ बलधाम ?
वह सावित्री, सत्यवान वह,
कहां आज दमयन्ती ?
पांडव कहां ? भीम अर्जुन,
कहां द्रोपदी और कुन्ती ?
नन्द बाबा है कहां और वह,
कहां आज यशुदा रानी ?
राधा कहां ? कहां है कुब्जा ?
कहां रुक्मिणी कल्याणी ?

—श्यामकुमार

★

क्या आप जानते हैं

दो वर्ष पूर्व साइबेरिया [रूस] में एक तारा गिरा और वह बिखर गया। उसमें से लोहे के टुकड़े भूमि पर गिरे, जिसके कारण हजारों एकड़ भूमि में गढ़ा पड़ गया है। सब से बड़ा टुकड़ा ३९८ पौंड का था।

× × ×

अमेरिका में एक ऐसी मशीन बनाई गयी है, जो मकान में लगी रहने पर चोरों का फोटो उतार लेती है।

× × ×

मास्को का सोवियट भवन जब बन जायगा तो संसार का सबसे ऊंचा महल होगा। इसकी ऊंचाई होगी १३०० फुट।

× × ×

इंग्लैंड में सैकड़े पीछे ९३ व्यक्ति जिंदा रहते हैं, जबकि भारत में सात प्रतिशत व्यक्ति ही बच पाते हैं।

× × ×

इंगलैंड में शायद ही कोई बुखार से मरता है, जबकि भारत में सिर्फ मलेरिया से १९ लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष सदा के लिए सो जाते हैं।

× × ×

संसार में प्रतिदिन एक लाख ५० हजार व्यक्ति जन्म ग्रहण करते हैं।

× × ×

संसार में प्रतिदिन एक लाख आदमी मर जाते हैं।

★

भावी साहित्यिक

[श्री सुरेशकुमार 'सुमन']

ये भावी युग के साहित्यिक
इन पर आशा लगी पल-पल।
ये भावी कवि हैं भारत के
जननी के हैं सुयश धवल।

मेघदूत की सजल कल्पना
ने इनसे पाया जीवन,
कण्व तपोवन की शकुन्तला
को गति देते ये नूतन.

'उत्तर रामचरित' से अगणित
अभिनव ग्रंथ रचाएंगे,
जिनको लख कर करुणा रो दे
ऐसे भाव सजाएंगे;

कितनी ही 'कादम्बरियों' का
गद्य बिखरता जाएगा;
अश्वघोष औ' भास सरीखा
गीति - काव्य लहराएगा,

संस्कृत, लैटिन, फ्रेंच, आइरिश
पर भी इनकी छाप विमल।
ये भावी युग के साहित्यिक
इन पर आश लगी पल-पल।

ये रवीन्द्र हैं, ये बंकिम हैं
शरद् चन्द्र ये अजर-अमर,
'सुजला-सुफला शस्य-श्यामला'
भू-शिल्पी ये सुघर - सुघर;

प्रेमचन्द्र - से कथाकार ये
तनिक ठहर बन जाएंगे,
टॉलस्टाय, चेखव दोनों को
फिर जो मात दिलाएंगे;

आलोचक होने के इनमें
अंकुर बढ़ते जाते हैं,
गहन मनन करते रहते ये
निश्चित ध्येय बनाते हैं,

किसको नहीं सुभातीं इनकी
मुखमुद्राएं सरल - सरल !
ये भावी युग के साहित्यिक
इन पर आश लगी पल-पल।

ये ही तो सम्पादक होंगे
ऐसे जिनका नाम अमर,
काट-छांट कर उचित रूप में
देंगे फिर छपने मैटर;

फेरेंगे हिम-सी चादर पर
ये ही सोने का पानी,
जिसके अचल में ईस लेंगे
नगर - नगर, पुर अभिमानी;

युग स्रष्टा ये, युग-द्रष्टा ये
ये युग के उल्लास प्रबल
ये भावी युग के साहित्यिक
इन पर आश लगी पल-पल।

★

क्या सभ्यता विनाशोन्मुख है?

[पृष्ठ ७ का शेष]

परन्तु यहां पहुँच कर मुझे कुछ रुक जाना चाहिये। बहुत से श्रोता शायद भगवान् कृष्ण के किये हुए विवेचन से तो सहमत हों, परन्तु व्यास मुनि की बताई हुई औषधि को अंगीकार नहीं करेंगे। वह कहेंगे कि धर्म नाम की वस्तु का मनुष्य की अशान्ति अथवा उन्नति से कोई सम्बन्ध नहीं, उल्टा धर्म ने तो मनुष्य जाति में सदा लड़ाई झगड़े ही पैदा किये हैं। योरप और एशिया की जातियों के इतिहास धार्मिक युद्धों से भरे पड़े हैं। आज भी भारत में धर्म ही आपसी वैमनस्य का कारण बना हुआ है, ऐसी दशा में हम यह कैसे मान लें कि धर्म कैसे बने। युद्ध बन्द हो जायगा तो मनुष्य जाति सर्वनाश से बच जायगी।

इस आपत्ति के उत्तर में मैं धर्म के विषय पर लम्बा व्याख्यान न देकर धर्म की व्याख्या व्यास मुनि के शब्दों में ही करूंगा। व्यास मुनि कहते हैं :

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं,
श्रुत्वा चैवावधार्यताम्
आत्मनः प्रतिकूलानि,
परेषां न समाचरेत् ॥

धर्म का रहस्य सुनो और सुनकर उसे हृदयंगम् करलो। वह यह है कि जो तुम्हारी अपनी आत्मा को प्रिय है उसे दूसरों के लिये भी प्रिय समझो। अर्थात जिसे तुम अपने लिये हितकर समझते हो उसी को दूसरों के लिये भी हितकर मानो और जो तुम्हें स्वयं बुरा लगता है, यह निश्चय रखो 'वह दूसरों को भी बुरा लगेगा। बस यही धर्म का रहस्य है। मनु ने कहा है "न लिंगं धर्मकारणम्" किसी वेश भूषा में या किसी पूजन के ढंग में अथवा किताब या ईंट पत्थर में धर्म नहीं है। असली धर्म वह है, जो मनुष्य को यह सिखाता है कि उसे दूसरों से वैसा व्यवहार करना चाहिये जैसे व्यवहार की वह स्वयं इच्छा रखता है क्योंकि सब मनुष्य विधाता की दृष्टि में समान हैं। सभी सभी धर्मों के आचार्यों और प्रचारकों ने सिद्धान्त रूप से मनुष्य जाति की समानता और एकता का उपदेश दिया है परन्तु दुःख की बात है कि उनके अनुयायियों ने असली धर्म को छोड़ दिया, उसकी छाया को पकड़ लिया और क्योंकि छाया एक असत्य वस्तु थी इस लिये आपस में लड़ने, झगड़ने लगे।

इस थोड़े से समय में मैंने दो प्रश्नों का उत्तर देने का यत्न किया है। मूल प्रश्न यह था कि सभ्यता क्या विनाश पथ पर है? इस प्रश्न को मैंने यह रूप दे दिया है, वर्तमान सभ्यता क्या विनाश पथ पर है? वर्तमान सभ्यता से मेरा अभिप्राय पाश्चात्य सभ्यता से है। मेरा उत्तर यह है कि हां, वर्तमान सभ्यता पूरे वेग से विनाश की ओर जा रही है। दूसरा प्रश्न यह है कि क्या धर्म उसे विनाश के गढ़े में गिरने से बचा सकता है? इसका उत्तर केवल हां या ना में नहीं दिया जा सकता। शायद वह अणुबम की सभ्यता उस कोटि तक पहुँच गई है जहां उसका एक बार विनाश होना आवश्यक है। यदि गिरावट का रास्ता रोकने के लिये धर्म आवेगा तो वह भी अणुबम से उड़ा दिया जावेगा। परन्तु यह बात सत्य है यदि मनुष्य जाति उस विशुद्ध रूप में धर्म को स्वीकार करे जिसकी घोषणा व्यास मुनि ने की थी, तो सामान्यरूप से मनुष्य जाति और मानवीय सभ्यता की रक्षा अब भी हो सकती है।

— (अ० भा० रेडियो के सौजन्य से)

[पृष्ठ ९ का शेष]

अरबी यहां की राज्यभाषा हो। उसने स्पष्ट किया कि यदि पाकिस्तान की राज्यभाषा का चुनाव शुद्ध प्रजातांत्रिक आधार पर होना है तो बंगाली भाषा को जिसे पाकिस्तान की ६० प्रतिशत जनता बोलती है, प्रथम स्थान मिलना चाहिए। उर्दू पाकिस्तान के किसी भी भाग की भाषा नहीं है और इसीलिये इसे सिन्धी, पंजाबी और पुश्तू से अच्छा स्थान नहीं दिया जा सकता। "यह केवल अरबी के पक्ष में ही हो सकता है कि हम लोग विश्व भर के इस्लामी संगठन के हित में अपनी प्रादेशिक भाषाओं का आग्रह छोड़ दें," उसने कहा। तर्क अकाट्य है। यदि प्रजातांत्रिक आधार पर चुनाव करना है तो बंगाली को स्वीकार किया जाना चाहिए। यदि इस्लामी संगठन के आधार पर चुनना है, तो राज्यभाषा अरबी होनी चाहिए, उर्दू नहीं।

× × ×

पाकिस्तान की अवामी मुस्लिम लीग के प्रेसिडेंट श्री हसन सुहरावर्दी ने कराची में भाषण करते हुए कहा कि श्री लियाकतअली यदि पूर्व बंगाल को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं तो पूर्व बंगाल भी उन्हें सन्देह की दृष्टि से देखता है और उन पर उसका कोई विश्वास नहीं है। श्री सुहरावर्दी को यह सन्देह है कि केन्द्रस्थ पाकिस्तान सरकार जान बूझ कर पूर्व बंगाल को उन्नत नहीं होने देती। इसके उदाहरण देते हुए उन्होंने बतलाया कि पूर्व बंगाल के व्यापारियों को डालर वाले देशों से लाइसेंस नहीं मिलते। अर्थाभाव से ५५०० प्राइमरी स्कूल बन्द हो गये हैं। कई महीनों से अध्यापकों को वेतन नहीं दिया गया है। इनका वेतन एक चपरासी के वेतन का तृतीयांश होता है। हाई स्कूल और कालेज की शिक्षा का सारा प्रबन्ध समाप्त हो गया है। केन्द्र से जो आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए वह बरसों से नहीं मिली है। पाकिस्तान की 'बेसिक प्रिंसिपल्स कमेटी' की योजना से पूर्व बंगाल बहुत ही असन्तुष्ट है। उसकी यह धारणा हो गयी है कि पाकिस्तान के अन्य प्रांतों में पूर्व बंगाल के प्रति सन्देह और विरोध उत्पन्न करना ही इस कमेटी का मूल हेतु था। पूर्व बंगाल की पाकिस्तानी फौज पाकिस्तान के अन्य प्रांतों से आती है, इस बात का भी पूर्व बंगाल को बड़ा खेद है। श्री सुहरावर्दी कहते हैं कि पूर्व बंगाल अपने यहां अपनी ही सेना रखना चाहता है। ब्रिटिशों ने बंगाल के वीरत्व को जान-बूझ कर दबा रखा था। वही नीति पाकिस्तान की है।

× × ×

पूर्वी बंगाल में हिन्दुओं के पुनः संस्थापन का प्रश्न बड़ी उपेक्षा से देखा जा रहा है। जब कि पाकिस्तान के समाचार पत्रों में उनके पुनर्वास के अतिशयोक्तिपूर्ण समाचार प्रकाशित हो रहे हैं, प्राप्त सूचनाओं के अनुसार उन्हें बसने के लिये किसी भी प्रकार की सुविधा प्राप्त नहीं है। इसके अतिरिक्त परिस्थिति इसी प्रकार की है जो उन्हें वहां बसने के लिए हतोत्साहित करे। अनेकों हिन्दुओं ने यह शिकायत की है कि उनके मकान और जमीन उन्हें नहीं लौटाये गये हैं। लूटी गयी सम्पत्ति का केवल एक नगण्य सा अंश प्राप्त हुआ है, टूटे सन्दूक, लकड़ी के बक्स, दरवाजे और खिड़कियों के टुकड़े, तथा अन्य रद्दी के छोटे-छोटे ढेर आदि कुछ स्थानों पर खुले में अरक्षित ढंग से पड़े हैं, जिन में से लोग अपना सामान छांट कर ले जायें। मूल्यवान वस्तुओं में से कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ।

हिन्दू कर्मचारियों को नौकरियां फिर से नहीं मिल रहीं। बहुत ही थोड़े लोगों को उनकी पुरानी नौकरी फिर से मिली है। यह भी ज्ञात हुआ है कि पूर्वी बंगाल के लेबर कमिश्नर ने एक आदेश निकाल कर सबको यह कहा है कि भविष्य में खाली होने वाले सभी स्थानों पर मुस्लिम कर्मचारी नियुक्त किए जांय। जिन हिन्दुओं ने अपने कारखाने उनके बूते के बाहिर की कठिनाइयों के कारण बन्द कर रखे हैं, उन्हें सरकार की ओर से सूचना प्राप्त हुई है कि यदि वे अपने कारखाने एक मास में नहीं खोल देंगे तो सरकार उन पर अधिकार करके उन्हें दूसरे लोगों को उठा देगी।

भारत की उत्तरी सीमा की रक्षा की समस्या

★ डा० रामसुभगसिंह, एम० पी०

ऐसा समझा जाता रहा है कि हिमालय के रहते भारत की उत्तरी सीमा सुरक्षित है। अब तक हिमालय से भारत की बड़ी रक्षा होती रही है। देश के विभाजन के पूर्व हिमालय के ही कारण संयुक्त भारत को केवल अपनी पश्चिमोत्तर एवं उत्तरी-पूर्वी सीमाओं की ही रक्षा करनी पड़ती थी। पश्चिमोत्तर सीमा के ही प्रवेश द्वारों से होकर ग्रीक, अफगान, मंगोल तथा मुगल आदि भारत आये। बर्मा की ओर से अहम आदि जातियों न उत्तरी-पूर्वी सीमा की लुशाई और नागा पहाड़ियों को पार कर आसाम में प्रवेश किया। नेताजी सुभाषचन्द्र बसु की सेनाओं ने भी उसी ओर से आसाम में प्रवेश कर भारत की अंग्रेजी सरकार को ध्वंस करने का असफल प्रयास किया था। पर देश की विशाल उत्तरी सीमा पर हिमालय बड़ा ही मजबूत संतरी था। देश के विभाजन के पश्चात् भारत की पश्चिमोत्तर सीमा की अब हमें पाकिस्तानियों से रक्षा करनी है।

देश की उत्तरी सीमा अब लद्दाख से आसाम तक है। चीन, तिब्बत तथा नेपाल में घटित हाल की राजनीतिक एवं सामरिक घटनाओं के फलस्वरूप अब इस उत्तरी सीमा का महत्व अत्यधिक बढ़ गया गया।

भारत की उत्तरी सीमा के ही समीप रूस एव चीन की भी सीमायें हैं। यों तो इस सीमा को पार कर भारत पर कोई विशाल आक्रमण नहीं हुआ है, पर पहली सदी में भी यूची ने काश्मीर पर आक्रमण किया था जिसके फलस्वरूप उत्तरी भारत में कुशान साम्राज्य की स्थापना हुई थी।

तिब्बत की ओर से भारत पर पहला आक्रमण ६२७ ई० में एक चीनी सेनापति द्वारा किया गया था। अंग्रेजी शासन काल में भारत की ओर से हिमालय को पार कर श्री यंगहसबैंड ने तिब्बत पर आक्रमण कर सन् १९०४ में ल्हासा पर कब्जा कर लिया। पर वह कब्जा स्थायी नहीं हो सका।

रूस और चीन का भय

अंग्रेजों को रूस तथा चीन से भय बना रहता था। वे नहीं चाहते थे कि भारत की सीमाओं से रूस तथा चीन की सीमाएं संलग्न रहें। इसी हेतु अंग्रेज अफगानिस्तान और तिब्बत को अपने प्रभाव क्षेत्र में लाये।

श्री यंगहसबैंड द्वारा तिब्बत पर आक्रमण किये जाने के पश्चात् वहां की राजनीति में सन् १९१४ तक उथल-पुथल होती रही। सन् १९१४ में तिब्बत की समस्या को हल करने के निमित्त ब्रिटेन, तिब्बत और चीन के बीच शिमला में एक सम्मेलन हुआ। शिमला सम्मेलन के अनुसार तिब्बत के दो भाग किये गये। पहले भाग पर चीन की पूर्ण प्रभुत्व सत्ता मानने तथा दूसरे भाग पर नाम के लिये चीनी सत्ता स्वीकार करने का निश्चय किया गया। इस प्रकार तिब्बत का दूसरा भाग एक स्वतन्त्र देश सा हो गया।

चीनी सरकार ने शिमला-सम्मेलन के निश्चय को स्वीकार नहीं किया। पर ब्रिटेन और भारत शिमला सम्मेलन के ही निश्चय को अब तक मानते आ रहे हैं। विश्व के अन्य देशों ने भी तिब्बत की उसी अवस्था को स्वीकार कर लिया।

भारत-नेपाल सन्धि

तिब्बत के अतिरिक्त भारत की उत्तरी सीमापर नेपाल, सिक्किम और भूटान भी हैं। नेपाल की सभ्यता एवं संस्कृति भारत की ही भांति है। सन् १७७९ में एक भारतीय ने राजपूताना से आकर नेपाल में अपना शासन स्थापित किया। उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में नेपालियों ने अंग्रेजों का मुकाबला किया पर १८१६ में उन्हें कुछ झुककर अंग्रेजों से सुगौली की सन्धि करनी पड़ी। तत्पश्चात् नेपाल तथा भारत की अंग्रेजी सरकार के बीच मित्रवत सम्बन्ध स्थापित हो गया। स्वतन्त्र होने पर भारत की नयी सरकार ने गत वर्ष एक सन्धि कर नेपाल से अपना सम्बन्ध और सुदृढ़ कर लिया। सिक्किम और भूटान पहले ही भारत के प्रभाव क्षेत्र में रहे हैं और आज भी हैं।

नई परिस्थिति

तिब्बत, नेपाल, सिक्किम और भूटान से मैत्री पूर्ण सम्बन्ध रहने के कारण उत्तरी सीमा की ओर से भारत को कोई भय नहीं था। पर अब चीन की अवस्था में परिवर्तन होते ही तिब्बत की राजनीति पर उसका प्रभाव पड़ा। दलाईलामा की सरकार को हटा कर चीनियों ने वहां पंचम लामा के नेतृत्व में अपने पक्ष की एक दूसरी सरकार स्थापित करने के हेतु तिब्बत पर आक्रमण कर दिया है। शनैः शनैः चीनियों के दबाव से तिब्बती सेना पीछे हट रही है और यह सुनने में आने लगा है कि तिब्बत की राजधानी ल्हासा को छोड़ कर दलाई लामा कहीं अन्यत्र चले गये।

भारत और तिब्बत के बीच व्यापारिक सम्बन्ध है। ल्हासा में एक भारतीय प्रतिनिधि रहते हैं। भारत से तिब्बत जाने वाले व्यापारिक मार्ग तथा ल्हासा स्थित भारतीय प्रतिनिधि के वासस्थान की रक्षा का दायित्व भारतीय सैनिकों पर है, इसी हेतु ग्यातुंग में कुछ भारतीय सैनिक रखे जाते हैं।

सन् १९१४ के शिमला-सम्मेलन में ही भारत और तिब्बत के बीच सीमा निर्धारित करने का प्रश्न उपस्थित हुआ था। फलस्वरूप एक सीमा निर्धारित की गयी, जो मैक मोहोन लाइन के नाम से विख्यात है, पर चीन उस सीमा को नहीं मानता, क्योंकि चीनी सरकार ने शिमला सम्मेलन के निश्चयों को स्वीकार नहीं किया था।

मैक मोहोन लाइन से भारत तिल भर नहीं हटेगा

ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठ सकता है कि यदि सम्पूर्ण तिब्बत पर चीनियों का कब्जा हुआ तो, तिब्बत स्थित भारतीय सेना का क्या होगा? क्या उस सेना को वहां रखने के लिए भारत सरकार दृढ़ता दिखलाएगी? और क्या चीनी मैक मोहोन लाइन को भारत और तिब्बत के बीच की सीमा के रूप में स्वीकार कर लेंगे?

इन प्रश्नों के सम्बन्ध में भारत सरकार का रुख स्पष्ट है। अन्य बातों के लिए भारत सरकार तिब्बत में लगाव मोल नहीं लेगी। मैक मोहोन लाइन से अपनी सीमा एक इंच भी पीछे नहीं हटने देगी।

हिमालय उत्तर का एकमात्र प्रहरी नहीं

इसके लिए अब इस प्रश्न पर विचार करना है कि हिमालय किस हद तक भारत की उत्तरी सीमा पर प्रहरी का काम कर सकेगा। यह प्रश्न बड़े महत्व का है। अब तक हिमालय अजेय समझा जाता था। पर काश्मीर में १२-००० फुट की ऊंचाई पर भारतीय सैनिकों ने जो जौहर दिखलाया है तथा चीनी जेनरल लिउ पोचेङ्ग की सेना ने तिब्बत पर आक्रमण करने के लिए जिन कठिन मार्गों को पार किया है उससे यह आशंका होने लगी है कि अब हिमालय भारत की उत्तरी सीमा का एक मात्र प्रहरी नहीं रह सकेगा। हां, इतना है कि अपनी उत्तरी सीमा की रक्षा करने में हिमालय से भारत को बड़ी सहायता मिलेगी। पर लद्दाख से लेकर आसाम तक के उसके बीच बीच के दर्रों पर, जिनसे होकर तिब्बती अब तक भारत में आते जाते रहे हैं, भारत को मजबूत सैनिक टुकड़ियां रखनी पड़ेंगी। उन दर्रों तक यातायात के मार्ग दुरुस्त करने पड़ेंगे ताकि आवश्यकता पड़ने पर आवश्यक सामान आसानी से उन तक भेजे जा सकें।

अपनी उत्तरी सीमा की रक्षा के लिए भारत को नेपाल, सिक्किम तथा भूटान के साथ घनिष्ठ मैत्री रखनी पड़ेगी। आज नेपाल की समस्या का सफल सुलझाव रक्षा की दृष्टि से भारत के लिए बड़े महत्व का है। तिब्बत पर चीनी प्रभाव स्थापित होने के साथ-साथ भारत को उसी मात्रा में नेपाल को अपनी ओर और अधिक आकर्षित करना चाहिये।

सिक्किम और भूटान भारत के प्रभाव क्षेत्र में हैं। उनकी रक्षा, यातायात तथा वैदेशिक सम्बन्ध का दायित्व आज भारत के जिम्मे है। पर भारत को इतने से ही सन्तोष नहीं करना चाहिये। अपनी उत्तरी सीमा की सुदृढ़ रक्षा के लिए भारत को अपनी जनता के साथ साथ नेपाल, सिक्किम, तथा भूटान की जनता को भी जाग्रत और जागरूक करते जाना चाहिये ताकि वे समझें कि भारत की रक्षा में ही उनकी भी रक्षा निहित है।

राजभाषा हिन्दी और हिन्दी साहित्य सम्मेलन

★ श्री देवदूत विद्यार्थी

हिन्दी संसार के लिए यह अवश्य गर्व की बात है कि हिन्दी राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित की गई है। लेकिन गर्व की यह भावना ऐसे प्रयत्नों के लिए प्रेरक होनी चाहिए जो हिन्दी को इस ईर्ष्याजनक गौरवमय पद के अनुरूप, योग्य और सक्षम बनाने में सहायक हो सके। देश स्वतन्त्र हो गया है तो बदली हुई परिस्थिति में भारत के नागरिकों को जिस तरह अपने को इस दुर्लभ स्वतन्त्रता के स्वागत, सत्कार, सदुपयोग और सुरक्षा की नई जिम्मेवारियों के लायक बनाने की कोशिश में लग जाना है, उसी तरह हिन्दी भाषियों, हिन्दी भक्तों और हिन्दी लेखकों को भी हिन्दी के नये पद की दृष्टि से उसके विकास और संपुष्टि के काम में पूर्वाधिक प्रयत्न का प्रमाण देना है। साथ ही यह भी ध्यान में रखना है कि यह प्रयत्न अत्यधिक नम्रता और सेवाभाव से परिपूर्ण हो। राष्ट्र ने हिन्दी भाषा को सर्वोच्च स्थान पर बिठाया है तो हिन्दी भाषी उस गरिमा की अपनी अनुभूति को हिन्दी साहित्य की सर्वांगीण उन्नति के प्रयत्नों द्वारा ही व्यक्त करें—यही उनके योग्य होगा। और अगर अहिन्दी भाषा-भाषी नेता या विद्वान उन्हें धैर्य और नम्रतापूर्वक अपना कार्य करने का उपदेश दें तो उससे बुरा मानने के बदले उसे सहर्ष स्वीकार करें। ऐसा नहीं करना एक मनोवैज्ञानिक भूल होगी जो राष्ट्र भाषा के हिन्दी भाषी हिमायतियों और अहिन्दी भाषा-भाषी समर्थकों के बीच एक खाई खोदने वाली साबित होगी।

बावजूद १५ साल की शर्त के, उसके पहले भी राज्य कार्य में हिन्दी का उत्तरोत्तर व्यवहार करने का उपबन्ध भारतीय संविधान में रखा गया है। उस उपबन्ध को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने के लिये अहिन्दी भाषियों का हार्दिक सहयोग और समर्थन नितान्त आवश्यक ही नहीं, वांछनीय भी है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन इस दिशा में निर्माण कार्य द्वारा आवश्यक उपाय करे। अहिन्दी प्रदेशों में एक राष्ट्र भाषा और राज भाषा की आवश्यकता और उपयोगिता के सम्बन्ध में काफी जागरूकता पैदा हो चुकी है। राजभाषा हिन्दी के अहिन्दी भाषा-भाषी समर्थकों और प्रचारकों में कल्पना और योग्यता की कमी भी नहीं है। आजादी और विदेशी भाषा की गुलामी साथ साथ नहीं चल सकतीं—यह अहिन्दी भाषियों को बतलाने की आवश्यकता नहीं है। संविधान में हिन्दी को पूर्णतः राजकीय व्यवहार में लाने के सम्बन्ध में १५ साल की शर्त जहां अहिन्दी भाषियों को हिन्दी भाषा में दक्षता प्राप्त कर लेने का अवसर देने को है वहां हिन्दी को काफी योग्य और समुन्नत बना देने के लिये भी है। अहिन्दी भाषा-भाषी हिन्दी-प्रेमी ही नहीं, हिन्दी के प्रबल समर्थक बनें और उन्हीं की आवाज राजभाषा हिन्दी की वकालत करने में सर्वोपरि हो, इसी के लिए कोशिश होनी चाहिये और ऐसा ही वातावरण पैदा करना चाहिये। इस सम्बन्ध में हिन्दी भाषियों का सरकार को कोसते रहना सर्वथा अनुचित है।

अंग्रेजी का अब तक हमारे जीवन के हर क्षेत्र में बोलबाला रहने से देश की सब भाषाओं की दुर्गति हो गई थी। अब अंग्रेजी के हटने के साथ साथ सब भाषाओं को अपना योग्य स्थान लेने और पनपने का अवसर आया है। यह ख्याल कि अंग्रेजी के हटने से उसका पूरा स्थान हिन्दी को मिल गया है या मिल जायेगा गलत समझ है। वास्तव में अंग्रेजी ने जो स्थान अब तक ले रखा था वह अब प्रादेशिक भाषाओं को प्राप्त होना है। हिन्दी भाषियों को यह बात साफ समझ लेनी चाहिये और अहिन्दी भाषा-भाषियों को इसका विश्वास दिलाना चाहिये कि हिन्दी भाषा भाषी यह नहीं चाहते कि हिन्दी किसी रूप में प्रादेशिक भाषा का स्थान ले। राष्ट्र के हित में हिन्दी की आवश्यकता और उपयोगिता अन्तर्प्रान्तीय व्यवहार और संघ शासन के राजकीय प्रयोजनों के माध्यम के रूप में है। इस पर सब एक मत हैं और अहिन्दी भाषा भाषियों का इस सम्बन्ध में सशंकित होना अनावश्यक है।

अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी साहित्य सम्मेलन शिष्ट मण्डल भेजे तो उसका उद्देश्य हो वहां के विद्वानों और संस्थाओं से सम्पर्क बढ़ाना और वहां की भाषा साहित्य और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करना। हिन्दी भाषा और साहित्य का गुणगान करके या अहिन्दी भाषियों को राष्ट्रीय धर्म का उपदेश देने के लिए शिष्टमंडल भेजना अनावश्यक है। इससे अवांछनीय प्रतिक्रिया पैदा होने की सम्भावना है। अगर भिन्न-भिन्न प्रादेशिक भाषाओं और साहित्य से हिन्दी भाषियों का परिचय बढ़ाने की दिशा में सम्मेलन की तरफ से कुछ ठोस काम हो सके तो, उसका अहिन्दी भाषियों पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ेगा। प्रादेशिक भाषाओं के उच्च साहित्य को नागरी लिपि में और उसका अनुवाद हिन्दी में प्रकाशित करना एक दूसरे सिरे से राष्ट्रीय एकता को पुष्ट करने का महत्वपूर्ण काम है। राष्ट्रीय हित की दृष्टि से क्या ही अच्छा हो, अगर सम्मेलन इस ओर भी विशेष ध्यान दे।

हिन्दी के रूप के प्रश्न को लेकर गैर समझी की अब गुंजाइश नहीं रह गयी है। हिन्दी भाषा-भाषी अपनी शिक्षा और संस्कृति के लिए शुद्ध और संस्कृत-निष्ठ हिन्दी अनिवार्य समझते हैं, तो इससे अहिन्दी भाषा-भाषियों को कोई शिकायत नहीं हो सकती, नहीं होनी चाहिये। जहां तक राजभाषा हिन्दी के रूप का सवाल है, वह संविधान ३५१ वें अनुच्छेद के अनुसार भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों को व्यक्त करने वाली भाषा होनी चाहिये, जिसकी समृद्धि में सब प्रादेशिक भाषाओं के रूप, शैली और पदावली का उपयोग किया जा सकता है। सम्मेलन हिन्दी के इस व्यापक और उदार रूप को स्वीकार करने में अपने को असमर्थ पावे तो उसे स्पष्ट कर देना चाहिये कि उसका अस्तित्व और उसके प्रयत्न उस हिन्दी के विकास के लिये हैं जो विधान की ८ वीं अनुसूची के अनुसार अन्य प्रादेशिक भाषाओं की तरह एक प्रादेशिक भाषा है। राजभाषा हिंदी की सेवा में तो तमाम अहिंदी भाषियों का अपने पत्रम् पुष्पम् के साथ आह्वान करना होगा कि वे उसे किसी खास प्रदेश का न मान कर सारे देश का मानें और उसे संवारने, सजाने और आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर समझें।

राजभाषा हिन्दी अब केवल हिन्दी भाषियों की ही चिन्ता का विषय नहीं रह गयी है, गर्वे चाहे प्रांतीय दृष्टि से हो चाहे राष्ट्रीय दृष्टि से उसके प्रति हिंदी भाषियों की जिम्मेवारियां बढ़ गयी हैं। राजभाषा हिन्दी भारतीय संघ शासन की भाषा के रूप में आज सारे देश की दिलचस्पी का विषय बन गयी है। इस तथ्य को स्वीकार नहीं करना एक संकुचित मनोवृत्ति को प्रकट करना होगा जो सर्वथा हानिकारक है। हिन्दी को राजभाषा का स्थान तो प्राप्त हो ही गया है। आज की स्थिति में अहिंदी प्रांतों में राजभाषा के प्रसार और केन्द्रीय राजकीय प्रयोजन में हिन्दी का अधिकाधिक व्यवहार कराने का काम अहिंदी भाषा भाषियों पर छोड़ देना ही योग्य है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कर्णधारों और उसके कार्यकर्ताओं को हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में दत्तचित्त हो लग जाना चाहिये। हिन्दी एकमात्र अपनी बोलने वालों की संख्या के बल पर ही नहीं, पर अपनी उपयोगिता और श्रेष्ठता के बल पर भी अपने गौरवमय पद की पात्र है। अहिन्दी भाषा भाषी इस बात को स्वीकार करके इसे अपनायें और इसकी अभिवृद्धि में योग दें यही हिन्दी भाषा भाषियों की कामना होनी चाहिए और इसी के लिये पूरी कोशिश होनी चाहिए।

★

फिल्मों की लम्बाई पर से प्रतिबन्ध हटा

बम्बई सरकार के डायरेक्टर आफ पब्लिसिटी द्वारा जारी किए गए एक प्रेस-नोट में कहा गया है—

सिनेमेटोग्राफ (द्वितीय संशोधन) एक्ट, १९५९ के लागू हो जाने पर, १ सितम्बर १९५९ को बम्बई सरकार द्वारा जारी किया गया नोटिफिकेशन रद्द हो गया है। इस नोटिफिकेशन के अनुसार सिनेमा लाइसेन्सों में एक ऐसी शर्त रखी गयी थी जिससे सरकार की बगैर पूर्व स्वीकृति के कोई भी लाइसेंस प्राप्त व्यक्ति किसी भी प्रदर्शन में कोई भी फीचर फिल्म जिसकी कुल लम्बाई ११,००० फीट से अधिक हो या कोई ट्रेलर जिसकी कुल लम्बाई ४०० फीट से अधिक हो, प्रदर्शित नहीं कर सकता था, फिर भी इस सम्बन्ध में समस्त संदेहों को दूर करने के निमित्त बम्बई सरकार ने एक नोटिफिकेशन जारी करके १९५९ का नोटिफिकेशन रद्द कर दिया है।

राशन की मात्रा डेढ़ छटांक कम कर दी गई। —भारत सरकार

अच्छा किया आपने। अपने राम ने भी अपने मेहमानों को लिख दिया है— चाहें तो चिट्ठी की नकल आप भी कर लें—

घर मेरे पर-कोई न आना,
या साथ बांध कर खाना लाना।
मैं भगा चुका हूं अपने घर से,
चूहों तक की सन्तानों को।
लिख दी चिट्ठी मेहमानों को।

× × ×

न पेकिंग जा रहा हूं, न मास्को। — नेहरू जी

मैं तो कराची जा रहा हूं।

× × ×

चुनावों से पहले कांग्रेस तोड़ देनी चाहिये। —गोविन्दसहाय

आप लोगों का दम सलामत रहा तो घोषणा की आवश्यकता ही न पड़ेगी।

× × ×

भूतपूर्व सैनिक ग्रामों में आकर बसें। — करियप्पा

उन्हें चाहे सैनिक बना लें या स्वयं किसान बन जायें। रही जमीन की बात, न हो तो कुछ दिन पानी में ही खेती कर लिया करें।

× × ×

रायबरेली के उपचुनाव में कांग्रेसी उम्मीदवार पिट गया। —एक समाचार

कांग्रेस को चाहिये कि आने वाले चुनावों में गांठ के पूरे खड़े करे ताकि जमानतों की जब्ती के पैसे तो उम्मीदवार स्वयं दे दें।

× + ×

जन-कांग्रेस के नेता त्रिलोकीसिंह पर ईंटों की भ्रष्टाचारी का अभियोग चलाया जावेगा। —चन्द्रभानु गुप्त

ठीक है— तू खोल मेरी, मैं खोलूं तेरी।

× × ×

यूरोपियन देशों को शांति के लिए जल्दी नहीं करनी चाहिए। — नेहरू जी

बल्कि शांति कैसे प्राप्त की जाती है, इसके लिए उन्हें सीधे काश्मीर चले जाना चाहिए। किराये के पैसे भारत से दिला दिये जायेंगे।

× × ×

चीन भारत से मैत्री चाहता है। — सुंग

इसलिए बेचारा हाथ बढ़ाता-बढ़ाता तिब्बत तक आ गया है।

× × ×

भारतीय लोग 'युद्ध-दिवस' मनाया करें। —डा० अम्बेदकर

लेनिन और स्टालिन से फुर्सत भी मिले। भारतीय जनता की राय में 'गांव का जोगी जोगिया आन गांव का सिद्ध' वाली युक्ति बिल्कुल सच है।

× × ×

कपड़े के दाम बढ़ा दिये गये हैं। —भारत सरकार

बहुत ठीक, न सस्ता होगा, न कोई खरीदेगा और न मांग बढ़ेगी। दवाई होनी भी ऐसी चाहिये, बीमारी न जाय तो बीमार ही चला जाय। दूसरे जब अन्न के बढ़ चुके थे तो कपड़ा ही क्यों पीछे रहे। किसी चलते-फिरते शायर ने क्या अच्छा ही कहा है—

बढ़ चुके थे अन्न के,
थी वस्त्र की बारी।
चलती सदा संभल कर,
है सरकार हमारी।

× × ×

हुआ बन्द नहरियों का,
एक बक काम।
आठ से आठ तक,
बस करो आराम।
घट जायेगी पेट की,
सारी बीमारी।
चलती सदा संभल कर,
है सरकार हमारी। — पाराशर

★

अनंत पथ पर — सामाजिक उपन्यास, लेखक श्री वासुदेव आठले, प्रकाशक भारत प्रकाशन (दिल्ली) लीमिटेड, मूल्य दो रुपया चार आना।

आधुनिक युग विचार-प्रधान अथवा चरित्र प्रधान उपन्यासों का युग है। घटना प्रधान उपन्यास साहित्य की उच्च-कोटि में नहीं आते। प्रस्तुत उपन्यास में दोनों ही विशेषतायें हैं। वह चरित्र-प्रधान भी है और विचार-प्रधान भी। कथावस्तु भी अपने साथ-साथ पाठक को आगे बहाती हुई ले चलती है। गोपाल बाबू के घर में प्राचीनता और आधुनिकता दोनों बसती हैं। वे स्वयं आधुनिक ढंग से शिक्षित, किन्तु गम्भीर प्रकृति के व्यक्ति हैं। उनकी पत्नी प्रमीला एक आधुनिक शिक्षित नारी है। उसके हृदय में अनेकों महत्वाकांक्षाएं हैं। उनकी छोटी बहिन विमला एक सरल हृदया बालिका है, अपनी भाभी से प्रभावित। देवी चाची पुराने ढंग की स्त्री का अच्छा रूप हैं, जो थोड़ा प्रेम और आदर करने वाले के लिए सब कुछ कर देती है, किन्तु उनकी आयु को सम्मान न देने वाले को अच्छा नहीं समझती। प्रमीला के कारण घर का सारा वातावरण अंग्रेजी ढंग का है, और इसी को वह तथा विमला प्रगतिशील जीवन समझती हैं।

किन्तु गोपाल के सहपाठी अनिल कुमार के प्रवेश के साथ ही जीवन की दो प्रणालियों और दृष्टि कोणों में संघर्ष होता है। एक ओर भारतीय ढंग और दूसरी ओर आधुनिक पश्चिमी प्रणाली। महत्वाकांक्षा प्रमीला की बुद्धि को ढक लेती है और व्यक्तिगत स्वार्थों से प्रेरित मोहन बाबू इस मनोवैज्ञानिक दुर्बलता से लाभ उठाने में पूर्ण चतुर है। प्रमीला को आगे कर जहां एक ओर पांडेजी अपनी समझ के अनुसार मजदूरों का संगठन करना चाहते हैं, वहां मोहन बाबू अपने नेतृत्व का विकास अपने स्वार्थ के लिए करते हैं। अनिल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्यकर्ता है। उसके प्रयोग के वर्णन के रूप में लेखक ने प्राचीन भारतीय विचार तथा कार्य-प्रणाली का वर्णन करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचार धारा का अच्छा परिचय दिया है। अनिल के रूप में एक यथार्थ रूप में समाज सेवी का चरित्र चित्रित किया गया है। उसे केवल एक ही आकांक्षा है, देश को पुनः उन्नत और समर्थ कैसे बनाया जा सकता है। अन्य कोई आकांक्षा नहीं, किसी से द्वेष नहीं। उसका निष्कपट एव प्रेमपूर्ण व्यवहार उसके विरोधियों में भी उसके प्रति आदर एवं श्रद्धा उत्पन्न करता है। प्रमीला व विमला में परिवर्त्तन का उत्तरदायी वही है। गोपाल बाबू भी उससे प्रभावित होकर अपनी दिनचर्या में परिवर्त्तन करते हैं। पांडेजी उससे प्रभावित हैं। केवल मोहन बाबू का कोप उसके ऊपर बना रहता है।

विमला का चरित्र बड़ा ही हृदयस्पर्शी है। कोमल हृदया नवयुवती किसी से भी सरलता से प्रभावित हो जाने वाली है। किन्तु अनिल उसे दृष्टि देता है, उसके जीवन में एक क्रांति करता है, उसके अन्त:करण में छिपे हुए भारतीय नारी के परम्पराजन्य संस्कार को जगाता है। एक बार दृष्टि आते ही उसे मोहन बाबू का वास्तविक रूप और अपना कर्तव्य दिखाई देने लगता है। अनिल को वह प्रेम करती है, किन्तु उसके कार्य में रोड़ा बनना नहीं चाहती। गांधी हत्या और संघसत्याग्रह के प्रसंगों पर अनिल की कारावास यात्रा उसके भावुक अन्त करण को छा जाती है। और अनिल, अनिल विमला के अन्तःकरण को पढ़ लेता है। स्वयं उसके हृदय में भी उसके लिए स्थान है। किन्तु अपने आदर्श की प्राप्ति में उसे विमला को लेकर गृहस्थी चलाने का अवकाश नहीं। यदि वह ऐसा करता तो, उसका जीवन अत्यन्त सुखी होता, किन्तु इस सुख की चिन्ता करने का भी उसे अवसर नहीं। मुन्नी (विमला) के देहान्त का समाचार पाकर वह कहता है— "मेरी तो यह धारणा है कि मुन्नी जहां कहीं भी गई है, मेरे लिए ठहरी है और मेरे वहां पहुंचने तक ठहरी रहेगी। इस विषय में इससे अधिक नहीं सोच सकता। मेरे इस जीवन का कार्य दूसरा है।"

उपन्यास प्रत्येक दृष्टि से सुन्दर बन पड़ा है। गृहस्थ और सामाजिक जीवन के सुन्दर चित्र दिखाई देते हैं। राजनीतिक आन्दोलन भी इसकी कथावस्तु और चरित्र-विकास में अपना स्थान रखते हैं। भाषा सरल, सुबोध तथा स्पष्ट है। छपाई भी सुन्दर है। किन्तु प्रूफ पढ़ने में छोड़ी गई भूलें बहुत बुरी तरह खटकती हैं। यदि अगले संस्करण में ये भूलें सुधर सकीं तो अच्छा होगा। आज के उपन्यास - साहित्य में ये उपन्यास अपने ढंग का प्रथम ही प्रतीत होता है।

उद्यम, घरेलू मितव्यय विशेषांक— सम्पादक श्री वाडेगांवकर, मूल्य एक रुपया आठ आने, प्राप्ति स्थान "हिन्दी उद्यम", धर्मपेठ, नागपुर।

"उद्यम" वैसे ही हिन्दी जगत में अपने ढंग का उपयोगी पत्र है। किन्तु इस मितव्यय विशेषांक में तो प्रत्येक पाठक की जानकारी के लिए पर्याप्त सामग्री का संकलन किया गया है। आज के मंहगाई के युग में एक साधारण मध्य वर्ग के गृहस्थ को अपने परिवार का पोषण करना एक महान् समस्या बन गया है। फिर यदि कहीं विधाता ने उसके ऊपर अपनी कृपा दृष्टि कर दी तब तो और भी मरण है।

इस परिस्थिति से बचने के दो ही मार्ग हैं, एक तो अपनी आय बढ़ाने का प्रयत्न करना और दूसरे अपने प्रत्येक पैसे का पूरा पूरा लाभ उठाना। पहिला मार्ग तो बहुत बार काम नहीं दे पाता किन्तु दूसरे मार्ग का उपयोग प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति सफलतापूर्वक कर सकता है। दैनिक जीवन के लिए जिन पदार्थों की सेवायें हमें चाहिए उनको कम से कम व्यय करके हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं यही इस प्रकार के विचार का मुख्य लक्ष्य है। भोजन, कपड़े, औषधि, नित्योपयोगी अन्यान्य वस्तुएं ही हमारी आय का अधिकांश ले जाती हैं। व्यवस्थित ढंग से चलने पर इनमें से प्रत्येक में किस प्रकार व्यय कम किया जा सकता यह जानना प्रत्येक गृहस्थ के लिए आवश्यक है।

"उद्यम" के इस अंक में इस दृष्टि से पर्याप्त उपयोगी सुझाव दिए गए हैं। अनिवार्य व्यय में किस प्रकार बचत की जा सकती है, खरीदे हुए प्रत्येक पदार्थ का अधिकतम लाभ किस, प्रकार उठाया जा सकता है, और हमारी दृष्टि से बहुत सी निरर्थक वस्तुओं का भी उपयोग किस प्रकार किया जा सकता यही इस अंक की सामग्री है। अंक में सभी प्रकार के परिवारों की दृष्टि से सामग्री संग्रहीत करने का प्रयत्न किया गया है। आज की मंहगी औषधियों के स्थान पर अनेकों घरेलू औषधियां सुझाई गई हैं जो बहुत बार हमारी सहायता कर सकती हैं। संक्षेप में अंक व्यवहारिक दृष्टि से पूर्णतः उपयोगी है। प्रत्येक गृहस्थ यदि इस अंक को एक प्रति अपने यहां रखे और इसमें दिये गए सुझावों में से कुछ पर आचरण करे तो उसे वास्तव में अपनी एक महान समस्या को सुलझाने में कुछ सहायता मिल सकेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

★

प्रदर्शनी में पश्चिमी जर्मनी का स्टाल ।

यह मकान ७०० रुपये में बन सकता है और इसकी छत दस आदमियों का बोझ मजे से सहार सकती है ।

३०० टन कोयला प्रति घण्टे ढोने वाला प्लान्ट ।

स्वीडन में एक बड़े खम्भों पर बिजली के तार का ताना-बाना ।

ओखला (दिल्ली का) यमुना बांध ।

पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा, मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिए अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, देहली में छपवा कर प्रकाशित किया ।
सम्पादक — कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

खाँसी, जुकाम, दमा व हृदकम्प को दूर करता है।
च्यवनप्राश

वीर-बच्चा
बच्चों के लिये सर्वोत्तम पुष्टई
दुबले पतले बच्चों को मोटा ताजा और नीरोग रखने के लिये
VEER-BACHHA
A TONIC FOR CHILDREN
बिड़ला लैबोरेटरीज़
कलकत्ता

बन्दरछाप काला दन्तमञ्जन
स्थापना
१९११
गाँधी एण्ड कम्पनी

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १७] दिल्ली, रविवार २९ माघ सम्वत् २००७ [अङ्क ४२

हिन्दू कोड बिल

संसद के इस अधिवेशन का आरम्भ ही हिन्दू कोड बिल से हुआ। संसद के सदस्यों में इस बिल पर गंभीर मतभेद है। यहां तक कि अहिन्दू सदस्य श्री नजीर अहमद तक ने इस को अवैधानिक बताया। श्री नजीर अहमद पहिले भी एक-बार इस कोड के विरुद्ध सब से लम्बा भाषण दे चुके हैं।

सुधार से लेकर इसे वापिस लेने तक सभी प्रकार के मत विभिन्न वक्ताओं ने प्रकट किए। किन्तु दो बातें इस विचार से स्पष्ट हो गईं। एक तो यह कि संसद में इस बिल का विरोध करने वालों की संख्या अधिक है। यह बात सदस्यों के भाषणों से पता चलती है। और दूसरे सरकार इसे स्वीकार कराने पर तुली हुई है। श्री अम्बेदकर के भाषण में यह स्पष्ट दिखाई देता है! किन्तु दोनों पक्षों को देखने के पश्चात यह अवश्य प्रतीत होता कि यदि सदस्यों को अपना स्वतन्त्र मत देने दिया गया तो इसका इस रूप में स्वीकृत होना कठिन है।

जहां तक हिन्दू कोड बिल का सम्बन्ध हम सरकार के इस दुराग्रह को और प्रधानमन्त्री की उस धमकी को जो गत बार संसद के अधिवेशन में उन्होंने दी थी कि हिन्दू कोड बिल की स्वीकृति पर उनकी सरकार का रहना अथवा न रहना निश्चित है, नहीं समझ सकते। त्यागपत्र की अथवा विश्वास का विषय बनाने की धमकी किसी एक विषय पर किसी परिस्थिति में उचित हो सकती है। किन्तु हिन्दू कोड बिल जैसे विषय के सम्बन्ध में इस प्रकार का दुराग्रह सर्वथा अनुचित है।

संसद का अभिप्राय यही है कि सरकार राज्य नियमों को जनप्रतिनिधियों की सम्मति, अनुमति एवं स्वीकृति से बना सके। यही प्रजातान्त्रिक प्रणाली का मूल तत्व है। जनता की स्वतन्त्र इच्छा अथवा जन प्रतिनिधियों का स्वतन्त्र मत ही इसमें अपेक्षित है। वह मत ही सबके ऊपर शासन करता है, और अपने विरुद्ध आचरण करने वालों का नियमन करता है।

किन्तु संसद को उसकी इस स्वतन्त्र स्थिति से शासनकर्ता की इच्छाके अनुकूल आचरण करने वाली, उसके पत्रों पर मोहर लगाने वाली स्थिति में यदि धकेल दिया गया तो प्रजातन्त्र की हत्या हो जाती है। यह स्थिति तो स्वेच्छाचारिता की स्थिति है, प्रजातन्त्र का मखौल है।

जहां तक हिन्दू कोड बिल का सवाल है हम उस पर किसी भी प्रकार के समझौते के विरुद्ध हैं। समाज के जीवन से सम्बन्धित, आधारभूत प्रश्नों पर समझौता सदा ही अनर्थकारी होता है। यदि सरकार को यह बिल पास करना ही है तो वह और वे जिस तरह से भी हो सके इसे देश पर लादने पर तुले हैं तो यह जिस स्थिति में है उसी स्थिति में पास होना चाहिये। उस स्थिति में अंग्रेजों के काल के कई कानूनों के समान जनता में इसका विरोध करने का भाव प्रबल होगा और वह स्वयं इसके भविष्य का निर्णय कर देगा।

यदि प्रजातन्त्र की भावना की रक्षा करनी है और जनता के मत के अनुकूल आचरण करना है, तो इसे वापिस ले लिया जाना चाहिये। कितना भी अच्छा यह क्यों न हो, प्रश्न अच्छे और बुरे का नहीं, जनता के मत का है। शासन के सूत्रधारों को पूर्ण अधिकार है, यदि वे इसे देश के हित में अच्छा समझते हैं तो, वे इसके विषय में प्रचार करें, जनता को बतायें, उनकी शंकाओं का समाधान करें और प्रश्नों का उत्तर दें तथा इस प्रकार जनमत को इसके अनुकूल बनायें। किन्तु वे यह स्मरण रखें कि यह केवल उनके व्यक्तिगत अधिकारों के अन्तर्गत आता है शासन-सम्बन्धी अधिकारों में नहीं। इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि अन्य लोगों का, और विशेषकर इसके विरोधियों का, गला घोंटा नहीं जायगा। उन्हें भी अपना मत प्रकट करने का पूर्ण अधिकार तथा सुविधा रहेगी। जनमत की इस रगड़ में देश एक वास्तविक निष्कर्ष पर पहुंच सकेगा।

किंतु किसी प्रकार का समझौता ऐसी स्थिति में स्थायी रूप से, हानिकारक होता है। हिन्दुकोडबिल का प्रश्न उसकी एकाध धारा के रहने अथवा न रहने का प्रश्न नहीं, यह एक सिद्धान्त का प्रश्न है। सिद्धान्त के विषय में कम बुराई चुनने का मार्ग सदा हानिकारक है। गलत सिद्धांत स्वीकार कर लिए जाने पर जनता विरोध करती है, किन्तु थोड़ी बुराई कम कर दो, थोड़ी रहने दो, की युक्ति से लाभ के साथ की थोड़ी बुराई सदा के लिए घर करके बैठ जाती है।

हम यहां पर इस बिल के पक्ष विपक्ष में कुछ नहीं कहते, न इसकी अन्य किसी प्रकार से आलोचना करना चाहते हैं। हमारा तो सीधासादा कथन प्रधानमन्त्री और डा० अम्बेदकर से यह है कि किसी प्रकार की द्वेष भावना ला कर राज्य-नियमों की रचना करना शासक के पद को कलंकित करना है। यदि सरकार यह समझती है कि हिन्दू कोडबिल हिन्दुओं के लिए आवश्यक है तो वह आगामी चुनाव में इसके लिए देश का समर्थन ले। वह प्राप्त होने पर नवीन संसद को पूर्णाधिकार होगा कि इस प्रकार के किसी भी राज्य नियम को मान्यता दे। जिस तन्त्र ने हिन्दू समाज को सहस्रों वर्ष से जीवित रखा है वह इतना दुर्बल नहीं हुआ कि वर्ष दो वर्ष भी इस समाज को संभाल न सके और हिन्दू कोडबिल जैसे राज्यनियम की अविलम्ब आवश्यकता हो।

बिल का विरोध करने वालों में संसद के सदस्यों से यही अपेक्षा है कि वे किसी भी प्रकार की समझौता मनोवृत्ति का परिचय न दें। बुराई यदि बुराई है तो उसे पूरी तरह दूर किया जाना चाहिए, थोड़ा या बहुत नहीं। सिद्धान्त यदि उचित है तो उसे पूर्णत: स्वीकार किया जाना चाहिये। कुछ अच्छा और कुछ बुरा का घोल सदा ही बुरा होता है।

★

दिल्ली घण्टाघर की दुर्घटना

सात फरवरी को सहसा ही चांदनी-चौक के घंटा घर का ऊपरी भाग ढह पड़ा और दिल्ली के प्रमुख बाजार में एक भयानक दृश्य उपस्थित हो गया। लाल पत्थर के बने हुए उस घटाघर की घड़ियों के ऊपर का आठ फुट भाग बिखर कर नीचे आ पड़ा। फलस्वरूप नीचे खड़े हुए अथवा निकलने वाले व्यक्ति मलबे के नीचे दब गये और दूर खड़े हुए लोग उचटते हुए पत्थरों से घायल हो गए। अब तक ९ व्यक्तियों का देहान्त हो चुका , जिनमें पांच तो वहीं मर गए थे और चार अस्पताल में जाकर। घायलों की संख्या और भी अधिक है। प्राप्त समाचारों से ज्ञात हुआ है कि घटाघर के गिरने के कुछ ही क्षण पूर्व उसके नीचे से एक भरी हुई ट्राम निकली थी। यदि ये कुछ क्षण का अन्तर न पड़ता तो दुर्घटना कितनी बड़ी होती, यह कहना कठिन है।

चांदनी चौक में सब प्रकार का यातायात स्थगित कर दिया गया है। पत्थरों के गिरने से प्रकाश और ट्राम के तार टूट गये हैं। सरकार की ओर से इस दुर्घटना की जांच हो रही है। किन्तु अभी तक निश्चित कारण अज्ञात है। वैसे इस घंटाघर के नीचे होकर दिल्ली का प्रधान नाला बहता , और कुछ दिन ही पूर्व धसकने के कारण यह आधा इंच टेढ़ा हो गया था। अभी भी इसकी स्थिति संशयात्मक ही है। एक पी० डब्ल्यू डी० के अधिकारी के अनुसार संभवत: इसे पूरा गिराना ही पड़ेगा। किन्तु सरकार इस विषय में सन्देहरहित कदम उठावेगी यह आशा है। भविष्य में पुन किसी दुर्घटना की सम्भावना छोड़ने से तो यही अच्छा है कि उसे पूरा गिरा दिया जाय।

★

ऋतुराज का शुभागमनम

ऋतुराज बसन्त का आगमन का पर्व उपस्थित है। किन्तु हमारे जीवन को यह आनन्दित नहीं कर पा रहा। कहते हैं कि खेतों में सोना बिखरा हुआ दिखाई देता है। वृक्षों में नई कोपलें आती हैं, कोयल की कूक सुनाई देती है। वातावरण सुहावना हो जाता है। किन्तु दिल्ली की इस महानगरी में तो कोई परिवर्तन दिखाई नहीं देता। न कहीं सरसों का पीलापन है, न कोयल की कूक। सुहावने पन का तो पता ही नहीं। वृक्षों पर धूल चढ़ी हुई है। प्रत्येक मनुष्य भाग रहा है, यन्त्रवत। प्रकृति की ओर ध्यान देने का उसे अवसर ही कहां है!

वास्तव में हमारा आज का जीवन कितना यन्त्रवत हो गया है यह देख कर आश्चर्य होता है। प्रकृति से हम दिन प्रति दिन दूर हटते आ रहे हैं। और दुर्भाग्य से इस प्रतिगमन को ही प्रगति का नाम दिया जाता है। प्राचीन भारतीय जीवन में प्रकृति का बहुत बड़ा स्थान था। इसलिए प्रतिवर्ष बसन्त आकर आनन्द बिखर जाता था। आज प्रकृति केवल थोड़े बहुत धनी व्यक्तियों के मन बहलाव की वस्तु रह गई है। जन साधारण को अपने जीवन में प्रकृति की ताज़ा का आनन्द लेने का अवकाश नहीं। अत: बसन्त भी डरा सा आता है और चुपचाप निकल जाता है। और जीवन की कृत्रिमता से दुखी तथा खिन्न मन को कहीं सात्विक आनन्द के दो क्षण नहीं मिल पाते।

★

देशोद्धार के लिए राष्ट्रीय चरित्र की आवश्यकता

सर संघचालक श्री गुरुजी का भाषण

आजकल देश के सामने अनेक समस्याएं हैं उनके विषय में लोग भिन्न-भिन्न प्रकार से विचार करते हैं और उनके पूर्ण करने के लिए नाना प्रकार के कार्य हमारे सम्मुख दिखाई देते हैं। परन्तु इन सभी विषयों में कोई विचार प्रकट करना मैं अपनी कक्षा के बाहर समझता हूं क्योंकि इस बार मैं केवल संघ की शाखाओं का कार्य देखने के लिए ही प्रवास कर रहा हूं। यद्यपि आज सर्वसाधारण व्यक्ति के मन में सत्ता का विचार आता है। सत्ता याने राजनीति। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विषयों के विषय में ही लोग सोचते हैं।

राजनीति का रोग

आजकल समाज में बढ़ती हुई स्वार्थ भावना के शिकार और अकर्मण्य लोग भी राजनीति की ही बातें करते हैं यह समाज की अवस्था का द्योतक है। शरीर के दुर्बल और रोगग्रस्त अंग की ओर व्यक्ति का ध्यान विशेष रूप से दौड़ता है। भोगलालसा और विषय लोलुपता के शिकार दुर्बल वासनाओं में अधिक प्रवृत्त होते हैं, पौरुषपूर्ण मनुष्य उनमें इतना रस नहीं लेते। हमारे इतिहास में छत्रपति शिवाजी जैसे महापुरुषों के उदाहरण इसके साक्षी हैं।

दृढ़ मनोवृत्ति

संघ के जन्मदाता ने किसी प्रकार की दुर्बल मनोवृत्ति, प्रतिष्ठा कामना या नेतृत्व की अभिलाषा से इस पवित्र कार्य को प्रारम्भ नहीं किया। अपनी जय-जयकार कराने अथवा पुष्पमालाओं द्वारा स्वागत करने का अवसर उन्होंने आजीवन किसी को नहीं दिया और न ही कोई ऐसा करने का साहस कर सका। उन्हीं के चरण, जिन्हों पर चलते हुए अपने पौरुष शील कार्य में नैतिक दुर्बलताओं को कोई स्थान नहीं। यद्यपि देश में आजकल ऐसे महाभागों की भी कमी नहीं जिन्हें भाषण देते हुए किसी को तालियों से, किसी को महिलाओं की उपस्थिति और किसी को अपने जय-जयकारों से ही स्फूर्ति आती है।

डाक्टरजी की साधना

पूजनीय डाक्टर साहब ने अपने बचपन से ही देशभक्ति का साक्षात्कार करते हुए अपने व्यक्तित्व का विकास किया। अपनी असाधारण प्रतिभा, उग्र और प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा अनुभव पूर्ण नेतृत्व के कारण ही उन्होंने भारत के तत्कालीन उग्र क्रांतिकारी तथा प्रखर प्रचारवादी आन्दोलनों में अग्रणी होकर काम किया। पत्र चलाए तथा आधुनिक प्रचार तन्त्र का भी सफल अभ्यास किया। परन्तु सभी कार्य प्रणालियों का क्रियात्मक परीक्षण करने के पश्चात् उन्होंने संघ की वर्तमान रचनात्मक, विधायक, ऐक्यमय, राष्ट्रीय संगठन-प्रणाली को प्रचलित किया।

हमारी तथाकथित प्रगति सन् १९२९ से पहिले के इतिहास में आत्म विस्मृति की जो लहर दिखाई देती है अपनी मातृभूमि, अपने राष्ट्र और अपने समाज के प्रति अपनेपन, पूज्यभाव की कल्पना तथा सर्वस्व तक अर्पण करने की भक्ति भावना का सर्वथा अभाव हो जाने के कारण जो भ्रान्त धारणाओं का बवण्डर दीख पड़ता है वह भारत में अंग्रेजों की कूटनीतिक धूर्तता और अराष्ट्रीय प्रचार के सफल हो जाने का परिणाम है। 'हम सब एक से संस्कार वाले एक संस्कृति की छाया में पले, इस मातृ भूमि, हिन्दुओं की भूमि 'हिन्दुस्थान' के पुत्र हैं तथा एक ही हिन्दुराष्ट्र अथवा भारतीय राष्ट्र के घटक हैं' इस सत्य शाश्वत भावना को भुलाकर अंग्रेजों ने हमें सिखाया कि हम भी अमरीका (जो अभी तक अपने को राज्य समूह ही कहता है, राष्ट्र एक नहीं) की तरह नया राष्ट्र बना रहे हैं। अपने राष्ट्र की विधायक कल्पना और अनुभूति को तिलांजलि देकर कुछ हमारे अपने ही लोगों ने देश 'हम एक नवीन राष्ट्र का रूप ले रहे हैं' इत्यादि भ्रान्त प्रचार प्रारम्भ किए। राष्ट्रीयत्व की किसी प्रकार की विधेयात्मक कल्पना के अभाव में ब्रिटिश विरोधवाद ही इन लोगों का राष्ट्रवाद बन गया।

भ्रांत धारणा

खेद है कि उक्त भ्रांत धारणाओं का प्रचार कर भारत की दासता की कड़ियों को मजबूत करने का काम करने के लिए कुछ तथाकथित भारतीयोंने ही कार्य किया और आज भी कर रहे हैं। भारत के दुर्भाग्यवश, जिस प्रकार प्राचीन काल में मुसलमानों और ईसाइयों के धर्म और राज्य को भारत में प्रतिष्ठित कराने वाले अनेक भारतवासी ही हुए उसी प्रकार अंग्रेजों को भी ऐसे ही अनेक दास मिल गये और वह आज भी सच्ची राष्ट्रीयता का विरोध करते हुए उनका प्रचार कर रहे हैं। इस परकीय संस्कार—दासता का उत्कृष्टतम रूप तब सामने आता है, जब कि एक ऐसे 'बड़े महानुभाव' द्वारा कहे गये, "अंग्रेज चले गये, अब राष्ट्र नाम की कोई चीज नहीं," इन शब्दों पर विचार किया जाय। ये संस्कार हमने ग्रहण किए। फिर अपनी माता को माता कहने में भी लज्जा का अनुभव प्रारम्भ हुआ। मेरे प्रवास में एक स्थान पर कुछ सज्जन मिलने के लिए आये हुए थे। इसी प्रकार की चर्चा में एक एक ने कहा कि यदि हम हिन्दू करके जीवित न रहे, तो 'क्या मनुष्य के रूप में जीवित नहीं रहेंगे?' मैंने कहा, 'मनुष्य ही क्यों, और एक कदम आगे बढ़िये, पशुरूप में जीवित रहेंगे। और भी यदि आगे बढ़े तो, यदि प्राण निकल भी गए तो भी पदार्थ के अविनाशी होने के कारण, अविनाशी रूप से रहेंगे।' ऐसे विचित्र संस्कार लोगों पर हो गये हैं।

अपने ग्रह देखो

महानता और विशालता के भ्रम में इसी प्रकार के अनेकों विचार दिखाई देते हैं। राष्ट्र की उपेक्षा कर समस्त संसार, सारी सृष्टि, की चिन्ता की जाती है। चारों ओर ब्रह्मांड भर में क्या हो रहा है, इसी की चिन्ता। एक लघु-कथा स्मरण आती है कि एक ज्योतिषी मार्ग में चलते-चलते सभी ग्रह उपग्रहों की स्थिति देखता हुआ चल रहा था। शनि कहां है, बृहस्पति कहां है, शुक्र कहां है, इत्यादि। इनके देखने में संलग्न रहने के कारण मार्ग न देख पाने से वह एक सूखे कुएं में गिर पड़ा। उसकी चीख पुकार सुन कर कुछ देर बाद उस मार्ग से जाने वाले कुछ लोगों ने उसे निकाला। उन लोगों द्वारा यह पूछे जाने पर कि तुम किस प्रकार गिर पड़े थे, उसने बताया कि मैं आकाश के सभी ग्रहों को देखता हुआ चल रहा था, इससे गिर पड़ा। इस पर उनमें से एक ने कह दिया, 'महाराज, जरा अपने भी ग्रह देख लेते।' आज भी इसी प्रकार चलने वाले दिखाई देते हैं।

राष्ट्र भाव

राष्ट्र यह अपने अनुभव में आने वाली सद् और सत्य भावना है जिसे अपने जीवन में देख सकते हैं। यह शुद्ध एवं पवित्र भाव जब सामने खड़ा हो जाता है तब मनुष्य उसकी सेवा करने की पात्रता जीवन में प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। फलस्वरूप स्वाभाविक रूप से समाज सेवा की, समाज में बन्धुता की भावना उत्पन्न हो जाती है। जब समाज भाव जागृत होता है तो स्वार्थ भाव नष्ट हो जाता है। राष्ट्र के प्रति पूज्य भाव उत्पन्न होता है। यदि पूजा की वस्तु का उपभोग मैं कर लूंगा तो मेरे आराध्यदेव के प्रति घोर पाप होगा, यह समाज नष्ट हो जायगा, यह दृष्टि प्राप्त होती है।

दुनिया इतनी बड़ी है कि वह ध्यान में नहीं आती। विशालता के ग्रहण करने की पात्रता सर्व साधारण क्या बड़े बड़े लोगों में नहीं हुआ करती। दुनिया की बातें करने से लोगों में कुछ श्रद्धा उत्पन्न होती है, बस इसीलिए वे बातें की जाती हैं। वैसे देखें तो मुंह से दुनियां की बातें निकलती हैं किन्तु हृदय से क्षुद्र स्वार्थ भी नहीं निकलता। जिसने सारे संसार को अपना घर समझ लिया हो, समस्त चराचर से तादात्म्य प्राप्त कर लिया हो उसी के मुख में दुनियां की बातें शोभा देती हैं।

आज की दुर्दशा

ऐसी स्थिति में अपने स्वार्थ के अतिरिक्त और कुछ उसे दिखाई नहीं देता। उसके लिए वह दल बनाता है, फिर सत्ता प्राप्ति की लालसा करता है। ऐसे लोग चारों ओर दिखाई देते हैं, क्योंकि राष्ट्र की कोई कल्पना नहीं। राष्ट्र की आराधना नहीं तो फिर अपनी ही आराधना। मनुष्य या तो राष्ट्र सेवी हो सकता है या निजसेवी। आज समाज में व्याप्त अनेकों दुर्गुणों का कारण क्या है? केवल एक कारण, अंग्रेजों के काल से राष्ट्रभाव को हम लोगों ने हृदय से निकाल डाला, यह ही एक कारण है। गौतम बुद्ध का इतना महान आन्दोलन था, किन्तु नष्ट हो गया, क्योंकि राष्ट्रभाव के रूप में कोई वास्तविक आधार नहीं था। आज भी वही स्थिति है। यदि कोई अन्तर है तो इतना ही कि उस काल में ५०० साल तो कम से कम भारतवर्ष ठीकठाक रहा, आज तो ५ वर्ष भी नहीं।

वास्तविक राष्ट्र सेवा

यह मेरा राष्ट्र है, मैं इसकी सेवा करूंगा, यह उत्कृष्ट भाव आवश्यक है। राष्ट्र के प्रति सर्वस्वार्पण की वृत्ति आवश्यक है। मान, माला, जयजयकार कुछ नहीं चाहिए। नींव के पत्थर के समान राष्ट्र के मन्दिर को उसकी नींव में बैठ कर हम खड़ा रखेंगे। कलश पर बैठने में क्या बड़प्पन है। कलश पर तो

[शेष पृष्ठ २६ पर]

श्री अम्बेदकर

आप हिन्दू कोड बिल पर तुले हुए हैं।

श्री गुरु जी

"दृढ़ राष्ट्रीय चारित्र्य के बिना राष्ट्रोद्धार असम्भव है।"

श्री कृपलानी

आपने प्रजातन्त्रीय मोर्चे को भंग करना अस्वीकार कर दिया।

श्री चर्चिल

श्री एटली

ब्रिटेन के इन दो पुराने पहलवानों में पुनः दंगल होने जा रहा है।

श्री बी० एन० राव

आपने भारत की ओर से कोरिया विषयक समझौता समिति में स्थान अस्वीकार कर दिया।

श्री चाऊ-इन लाई

चीनी जनवादी सरकार के प्रधान-मन्त्री ने राष्ट्र संघ के प्रस्ताव को अवैधानिक कहा है।

श्री गास्परी

इटली के प्रधानमन्त्री श्री प्रेस डेण्ट ट्रूमैन से भेंट करने को आने वाले हैं।

रिश्वत और चोरबाजार

● श्री हरदेव सहाय

रिश्वत न्याय की दुश्मन है। बढ़ी हुई रिश्वत के कारण निर्धन, कमज़ोर और शरीफ़ आदमियों को बहुत कष्ट है। उनकी सच्ची बात भी नहीं सुनी जाती। पर रिश्वत देने वाला अपनी झूठी बात भी सिर चढ़ा देता है। ईमानदार और रिश्वत न लेने वाले सरकारी अधिकारी की न इज्जत है न ही पूछ। पर रिश्वतखोर मौज उड़ाते हैं। चोर बाजार के कारण चीजें महंगी तो हो गई हैं, चीजों का मिलना भी कठिन होता जा रहा है। रिश्वत और चोरबाजार बन्द करने के लिये सरकार ने तरह २ के कानून बनाये हैं। हजारों आदमियों को इस काम पर लगा रखा है। पर न रिश्वत बन्द होती है न चोरबाजार ही बन्द हुआ। दिन २ रिश्वत और चोरबाजार बढ़ता ही जा रहा है। देश के बड़े २ नेता इन दोनों बुराइयों को दूर करने के लिये नैतिकता का उपदेश देते हैं। पर राई बराबर भी असर नहीं हुआ। रिश्वत दिये बिना कोई काम नहीं बनता। चोरबाजार तो जीवन का सहारा ही बन गया। शायद ही कोई व्यापारी होगा, जो चोरबाजारी न करता हो। साधारण गृहस्थी भी पेट भरने के लिये चोरबाजार से चीजें खरीदने पर मजबूर हैं। कुछ वर्ष पहले प्रायः लोग चोरी करने से शरमाते थे, डरते थे, पर आज ११ प्रतिशत आदमी चोरी से खरीदा हुआ अन्न या चोरी से खरीदी हुई चीजें बरतते हैं।

नैतिक पतन

जनतन्त्र या स्वराज्य को वही जातियां स्थायी तथा दृढ़ रख सकती हैं, जिनका नैतिक स्तर ऊंचा हो, जो ईमानदार हों, जिनका अपने खून पसीने की कमाई पर विश्वास हो। अमरीका, रूस इत्यादि संसार के स्वतन्त्र देशों में रिश्वत है ही नहीं, या नाममात्र को है। ईमानदार लोग पैसे की परवाह नहीं करते। उनका ध्यान अपनी और अपने देश की इज्जत की ओर रहता है। पर रिश्वतखोर और बेईमान आदमी को न अपने देश की परवाह है न धर्म की, न अपनी इज्जत का ख्याल। उसका एकमात्र ख्याल है पैसा उसके लिए वह अपने देश की स्वतन्त्रता तक को बेचने के लिए तैयार हो जाता है। यदि हमने और हमारी सरकार ने रिश्वत और चोरबाजार को बन्द नहीं किया, तो हमारा नैतिक पतन तो होगा ही, प्राप्त की हुई स्वतन्त्रता से भी हाथ धो बैठेंगे। अतः हर उचित कोशिश से चाहे वह किसी भी राजनैतिक, धार्मिक पार्टी से सम्बन्ध रखता हो, मन्त्री हो, प्रधानमन्त्री हो, गवर्नर हो या चपरासी, किसान हो या व्यापारी, निर्धन हो या धनवान, सबको अपने तथा अपने देश के लाभ के लिए रिश्वत और चोरबाजार को बन्द करना होगा। रिश्वत और चोरबाजार कुछ ही आदमियों को पकड़ने या जेल भेजने से बन्द नहीं होगा। इन्हें खत्म करने के लिये कुछ बुनियादी उपाय और सिद्धान्त बनाने आवश्यक हैं। जिनमें से कुछ निम्नलिखित हो सकते हैं—

रिश्वत

१ चपरासी, पुलिस, के सिपाही, पटवारी इत्यादि जिनका जनता से प्रायः सम्बन्ध पड़ता है, उन्हें बहुत कम तनख्वाह मिलती है। गुजारा नहीं होता। रिश्वत लेने पर मजबूर हैं। इन्हें इतना वेतन मिलना चाहिये जिससे उचित निर्वाह कर सकें।

२. राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, गवर्नर इत्यादि अपने जीवन को सीधासादा बनायें। देश के प्रति आदमी की दैनिक आमदनी को दृष्टि में रखते हुये ९०० रुपये से अधिक वेतन न लें। भत्ते और सफर खर्च द्वारा रुपया ऐंठने का यत्न न करें।

३. निर्धन और धनवान चपरासी और गवर्नर के रहन सहन में आज तो ज़मीन आसमान का अन्तर है। वह जल्दी से जल्दी मिटाया जावे।

४. सिफारिश से कोई नौकरी न मिले। लियाकत और काम के अनुसार नौकरियां दी जावें। पिछड़ी हुई जातियों और उन गांव वालों को जिन्हें उच्च पढ़ाई के साधन नहीं, रियायत मिलें।

५. जो सरकारी नौकर वेतन से अधिक खर्च करते हों उन पर विशेष निगाह रखी जावे। हरएक सरकारी नौकर से वेतन, निज की आमदनी तथा खर्च का वार्षिक हिसाब लिया जावे।

६. ईमानदार तथा परिश्रमी नौकरों से उन्नति इत्यादि के मामले में विशेष सलूक किया जावे।

७ रिश्वत के वर्तमान कानून को बदल दिया जावे। सबूत का भार रिश्वत की शिकायत करने वाले पर नहीं, रिश्वत लेने वाले पर हो। गांव पंचायतें और सरकारी अर्ध सरकारी मान्य संस्थायें

[शेष पृष्ठ २१ पर]

ऋतुराज वसन्त

कविराज चन्द्रमोहन करण
वैद्यभूषण विद्यावाचस्पति

विश्वम्भर की विश्वविपिन को गुंजायमान करने वाली वीणा की झनकती झंकार में बार-बार तुम्हें नमस्कार हे ऋतुराज, शिशिर के गर्भ में हिमेन्त के मर्म में, रिक्त वनविटपों तथा लताराशि, कुञ्ज निकुञ्जों में गुप्त सुप्त वह हास, विलास, नूतन उल्लास, सुमनों का मन उदास, आज तुम्हारी दयादृष्टि-कृपावृष्टि के प्रसाद से भगवती प्रकृति देवी के इस विपन्न प्राङ्गण में "खिल उठी" दीन दु:खी। विश्व की चिर मौनता! तुम्हारे शुभागमन से दीन हीन तरु, कुञ्ज लता, आज वैभवशाली बनने लगे, तुम धन्य हो हे निर्धनों के धन?

सुरसरि कलकल, छल छल, निर्मल अंचल से तुम्हारी अमर कीर्ति गा रही है! प्रकृति प्रियम्वदा पीतवसन ओढ़े तुम्हारे स्वागत को कृताञ्जलि कृत नतमस्तक खड़ी है। उषा का अरुण अंचल, रवि की किरण चंचल, नील नभ का निर्मल अन्तस्तल तुम्हारे शुभागमन से प्रफुल्लित हो उठे हैं तुम आये बालभानु की मञ्जु मुस्कान में, प्रकृति वधू के मानव पुष्पोद्यान में 'पद्माक्ष' 'हिमन्त' में इस वासन्ती विलास का बोध कराता, मुस्काता आपके सुमनों से विश्व का मंगल वरदान मनाने लगे!

तुम अपनी अनन्त रसराशि ले अवतीर्ण हुये मेरे विश्व सदन में मधुर मधुर भार अमृतोपहार देने, शिशिर की कर्कशा निशाओं में निष्ठुर पाले से म्रियमाण प्राणों में नवजीवन संचार कराने तुम आये हे नाथ, मेरे दीनदुखी विश्व को मंगल वरदान देने तुम महादानी हो हे ऋत्वीश? तुम्हें गिरि निर्झर की हा हा कार में, वीणा की झंकृत झंकार में, भौंरों की मधुर गुंजार में बारबार नमस्कार?

ऊषा मणिकंचनथाल ले किरण किशोरियों सहित देव मार्ग में तुम्हारा स्वागत नृत्य मना रही है। विश्वविपिन में मंजुल भ्रमरों का मृदुगुंजन अभिनन्दन करती, मन्द पवन का लीलागमन प्रेम पुलकन तथा सुरभि संचार विश्व में मृदु स्पन्दन ला देता?

आ आलोक, निखिल विश्व में आलोक मेरे प्रियतम, इन वासन्ती पुष्पों में मुकुलित हुई मेरी विश्व व्यापी वेदना, मेरी चिर मौनता आज इन कुसुम कलियों में प्रेम पुलकन ला देती। आ मेरे प्रियप्राणवसन्त, दीन दु:खी जग के परित्राण वसन्त, भावी जीवन के आधार वसन्त, प्रकृति प्रियम्वदा के उपहार वसन्त, नव सृष्टि के निर्माण वसन्त! धन्य हे मेरे ऋतुपति। तुम्हारे आगमन से दीन दुःखी विश्व की विपत्ति दूर हो गई। संकुचित हृदकमल मुस्करा उठे। कुसुम कलियों में भृङ्गों की मृदु गुञ्जार, नवल वधू की पैंजनियों की सी झंकार, सकुचाये हृदय कमलों के द्वार खोल देते हो हे प्रियतम तुम प्रकृति के, अनन्त, अनादि कन्त हो! विश्व कर्ता की सृष्टि में यह तुम्हारी अनुपम नृत्य लास के लिए क्रीड़ा विलास की परम्परा न जाने कितने असंख्य युगों के चक्र से चली आती है हे अनन्त वसन्त!

आ सर, सर, सर इन सरसों के पुष्पों में यह तुम्हारी परम् पुनीत तथा भव्य भावना कितना रहस्यमय गीत गा रही है। "अजर अमर निर्जर वात्स्य सत्य प्राण अमर" तुम धन्य हो हे कुसुम वसन्त! तुम्हें बार बार विश्व वीणा की झनकती झंकार में, गिरिनिर्झरों की हा हाकार में, मञ्जुल मधुकरों की मधुर गुंजार में, वीर योधाओं की चतु टंकार में, सौभाग्यवती पतिव्रता के पोडश शृङ्गार में नमस्कार, हे अनन्त वसन्त!

तुम धन्य धन्य ......!

गीत

श्री कमल साहित्यालंकार

आई मधु ऋतु रानी, कहते आई मधु ऋतु रानी!

धरती ने लेकर अंगड़ाई, पूजा फूल चढ़ाये।
नये सुरों में नये तराने, भौरों ने हैं गाये।
आम्र मंजरी ने मुसकाकर कोयल की दीवानी।
...आई मधु ऋतु रानी।

छू न सकी पर कोकिल की लय दिल के स्वप्न रंगीले।
दर्द भरे पल कह न सके दो दिन सुख से हंस भी ले।
इस ऋतु में भी सूख न पाया, इन नयनों का पानी।
...आई मधु ऋतु रानी।

कोई आंखें सींच न पाया आंसू से मरुथल को।
आज न बन पाया अब मेरा बना सकूं क्या कल को।
सतरंगी लपटें लिखती हैं मेरी मर्म कहानी।
...आई मधु ऋतु रानी।

★

जापान का पुनः शस्त्रीकरण

★ श्री 'नीरस योगी' ★

सुरक्षा परिषद् ने चीन को आक्रांता घोषित कर बुद्धिमानी से काम नहीं लिया है। इस घोषणा के पश्चात् शान्ति प्रयास सदैव के लिए समाप्त हो गये हैं। विश्व आज दो सैनिक शिविरों में बंट गया है। एक आग की छोटी-सी चिनगारी किसी भी समय महान् विस्फोट कर सकती है। आने वाली आपत्ति की सम्भावना से प्रत्येक देश अपने विरोधी को घृणा, आशंका व भय की दृष्टि से देखता है। युद्ध पिपासु राष्ट्र अपने को शान्तिप्रिय बताते हैं और अपने विरोधियों को शान्ति भंजक आक्रांता कह कर पुकारने में उन्हें तनिक भी संकोच नहीं होता है।

यूरोप व एशिया के वह भाग जहां आज भी आप गत महायुद्ध की विभीषिका का अनुभव कर सकते हैं, फिर युद्ध की ओर अग्रसर हो रहे हैं। साम्यवाद को रोकने के लिये अमरीका ने पश्चिमी यूरोप में रक्षा पंक्ति कायम की है। युद्ध दलित इन राष्ट्रों की जनता को जीवन की सुविधाओं के स्थान पर हथियार बांटे जा रहे हैं। केवल यूरोप ही नहीं, एशिया की पवित्र भूमि पर भी युद्ध की लपटें फैल रही हैं। प्रशान्त क्षेत्र में भी अमरीका साम्यवादी गुट के विरुद्ध जापान का शस्त्रीकरण करना चाहता है। चीन में मार्शल च्यांग की सरकार का पतन होने के पश्चात् अमरीका की योजनाएं कुछ रुक-सी गई हैं। केवल जापान पर ही अमरीकी शासन है। अतएव अमरीका वहीं पर अपनी रक्षा पंक्ति कायम करना चाहता है। गत महायुद्ध की समाप्ति के पश्चात् से जापान के साथ आज तक शान्ति सन्धि नहीं हो सकी है। आगामी युद्ध की सम्भावना से अमरीका इस गुत्थी को सुलझाने के लिये प्रयत्नशील है। इस कार्य के लिये श्री जान फोस्टर डलेस को विशेष दूत बना कर भेजा गया है। अमरीका की नीति धन देकर दबाव डालने की है। इस नीति का समय-समय पर विरोध किया गया है। कामन्वैल्थ सम्मेलन के पश्चात् तो यह खाई और भी चौड़ी हो गई है।

अमरीका जापान को अपनी नीति के अन्तर्गत लाना चाहता है। उसके द्वारा प्रस्तुत शान्ति सन्धि के सिद्धांत आपत्तिजनक हैं। प्रश्न उठता है कि क्या वह चीन, रूस और अन्य साम्यवादी देशों द्वारा स्वीकार किये जा सकते हैं, यदि नहीं तो क्यों? चीन अपने गुलामी के दिनों को भुला नहीं सका है। अभी उसके घाव हरे हैं। वह अच्छी तरह जानता है कि पूर्व में जापानी शक्ति का अर्थ है, बर्बरता का सजीव उदाहरण। अब रहा केवल रूस व उसके द्वारा प्रभावित देश। रूस ने अभी हाल में अमरीका को एक नोट भेजा है। इसमें उसने जोर दिया है कि प्रशान्त युद्ध के विजेता चार बड़े राष्ट्रों द्वारा ही जापान से शान्ति-संधि की जा सकती है। इससे स्पष्ट है कि सुदूरपूर्व कमीशन द्वारा बनाई गई योजना का रूस विरोध नहीं करेगा। अमरीका भी यही चाहता है, परन्तु साथ ही यह भी प्रतीत होता है कि जापान की रक्षा, अमरीका का महत्वपूर्ण स्थानों पर अधिकार और युद्ध ऋण के सम्बन्ध में समझौता न हो सकेगा। अमरीका ने इस विषय में सोच कर कदम उठाया है। वह चाहता है कि रूस व चीन भी उसका साथ दें। रूस व चीन के विरोध की दशा में अमरीका उनकी उपेक्षा भी कर सकता है, क्योंकि इस सन्धि के साथ ही उसका भाग्य बंधा हुआ है। अमरीका की सुरक्षा जापान पर निर्भर है।

प्रश्न उठता है कि अमेरिका के साथी देशों का इस सन्धि के विषय में क्या मत है? प्रत्येक देश इस सन्धि को आशंका की दृष्टि से देखता है, क्योंकि इसे रूस व चीन का सहयोग प्राप्त नहीं है। राष्ट्रमण्डलीय देशों की भी यही सम्मति है। रूस की नीति इस सम्बन्ध में पीछे रहने की नहीं है, वह परिस्थिति का लाभ उठाना चाहता है। कुछ मास हुए लेकसक्सस में रूसी प्रतिनिधि ने कहा था कि जापान के अन्तर्गत महत्वपूर्ण स्थानों पर अमरीका का ही आधिपत्य नहीं रहने दिया जायगा। इस कथन की सत्यता को केवल इतने ही अंश में स्वीकार किया जा सकता है कि बिना रूस की सहमति प्राप्त किये इस दिशा में कदम उठाना मूर्खता होगी।

घटनाओं पर दृष्टिपात करने पर यह प्रतीत होता है कि महत्वपूर्ण स्थानों के सम्बन्ध में समझौता हो जाने पर और युद्ध ऋण छोड़ देने पर भी रूस अमरीकी नीति पर समझौता न करेगा। इस प्रकार अमरीका के लिए जापान को पुनशस्त्रीकरण करने में कठिनाई पड़ेगी। कोरिया में निरन्तर हार होने के कारण भी अमरीका घबरा गया है और शीघ्र ही इस कार्य को पूरा करना चाहता है। रूस ने जर्मनी के पुनःशस्त्री करण को ठुकरा दिया है। जापान के सम्बन्ध में उसकी नीति में परिवर्तन के लक्षण प्रतीत नहीं होते हैं। वह तो समस्त विश्व में साम्यवाद का विस्तार चाहता है। पुनशस्त्रीकरण की योजना इस कार्य में बाधक है। अब प्रश्न उठता है कि क्या शान्ति-सन्धि के लिए जापान का पुनशस्त्रीकरण रोक दिया जाय? रूस गत महायुद्ध में जर्मनी के द्वारा किये गये आक्रमण को भूला नहीं है। १९०४ में मंचूरिया में जापान द्वारा बार निकोलस की फौजों की हार को भी रूस के सर्वेसर्वा स्टालिन शायद ही भुला सकें। यह हार निकोलस की हार नहीं थी, रूस की महान शक्ति की हार थी। आज फिर उसकी पुनरावृत्ति साम्यवादी नहीं चाहते हैं। इसी प्रकार आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड अपने-अपने विषय में चिन्तित हैं। भले ही वह ऊपरी मन से मौन हैं। भारत की इस सम्बन्ध में नीति शान्ति प्रयास की है। नेहरू जी ने हाल में प्रत्येक देश के शस्त्रीकरण का विरोध किया है, क्योंकि इससे सदैव के लिए शान्ति प्रयास रुक जाते हैं।

जापान व जर्मनी की आत्मा का सब प्रकार का हनन किया गया है। रूस इससे अनभिज्ञ नहीं है। वह परिस्थिति का पूरा लाभ उठाना चाहता है। आज शक्ति ही जीवन है। नीति के अनुसार वह सब प्रकार प्राप्त करनी चाहिये। जर्मनी की भांति जापान के पुनशस्त्रीकरण के सम्बन्ध में भी जनता ही निर्णय करेगी। कोई भी योजना उन पर थोपी नहीं जा सकती है। जापान का विधान शस्त्रीकरण का विरोध करता है। जनरल मैकार्थर अमरीकी लाभ के लिए इसमें परिवर्तन चाहते हैं। अमरीका अपने लाभ के लिए आर्थिक सहायता देकर भी शस्त्रीकरण चाहता है। यह भी अवांछनीय है।

प्रत्येक तथ्य को सत्य की दृष्टि से देखना होगा। केवल यह कह देना कि यदि जापान का शस्त्रीकरण नहीं किया गया, तो वह छुलपकर कर लेगा पर्याप्त न होगा। आज जापान को अपनी सीमा पर रूस से भय है। एक जापानी मन्त्री ने अभी हाल में, कहा था कि युद्धोत्तरकालीन जापानी साहित्य में कामुकता और साम्यवाद की भरमार है। कामुकता तो प्रो० माल्थस के अनुसार युद्ध पीड़ित राष्ट्र में बढ़ती ही है। साम्यवादी फैलने का कारण बेकारी व भूख का भय है। जापान भी इन कारणों का अपवाद नहीं है। वह परतन्त्र है। अमरीका का उस पर अधिकार है। जापान का शस्त्रीकरण करना वह अपना धर्म समझता है। केवल जनता ही इस को ठुकरा सकती है, क्योंकि जनता की आवाज को कोई भी नमस्य नहीं मानता है।

जापान का आर्थिक ढांचा पुनशस्त्रीकरण के व्यय को बड़े पैमाने पर सहन नहीं कर सकता है। उसके समस्त उपनिवेश छीन लिये गये हैं। उसकी औद्योगिक शक्ति समाप्त हो चुकी है। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण भी उसके बजट से बड़ी मात्रा में युद्ध के लिए धन नहीं दिया जा सकता है। जर्मनी में इस प्रश्न पर मतदान होने पर समाजवादी डैमोक्रेट दल की विजय हुई और ७१ प्रतिशत जनता ने पुनशस्त्रीकरण का विरोध किया। पराजय का प्रतिशोध, पड़ोसियों की बर्बरता, आर्थिक हीनता इन राष्ट्रों को युद्ध के लिए खड़ा नहीं कर सकती है। हम इन देशों पर अमरीका का आधिपत्य नहीं चाहते, तब भी उनको मानवता के नाते जीवन-यापन की सुविधायें प्राप्त होनी चाहियें।

जापान के सम्बन्ध में अपने उत्तरदायित्व की दुहाई देने वाले अमरीका के विषय में इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि इसमें उसका भी स्वार्थ निहित है। चीन की मुख्य भूमि पर साम्यवादी प्रभाव हो चुका है, अतएव शक्ति के सन्तुलन के लिए भी जापान का पुनशस्त्रीकरण आवश्यक है। प्रशान्त क्षेत्र में अमरीकी स्थिति सुदृढ़ नहीं है। उसे खाली छोड़ देने पर उसकी समस्या विषम हो जायेगी। जैसा कि श्री डलेस ने घोषणा की है कि वह आक्रमण की अवस्था में जापान को मिला कर रखना चाहते हैं। अमरीकी सहायता जापान को चाहिए या नहीं यह तो वहां की जनता ही निर्णय करेगी। यदि अमरीका ने अपना निर्णय वहां पर थोपना चाहा तो अतिरिक्त विस्फोट की सम्भावना भी है क्योंकि जापान पराजित अवश्य हुआ है, परन्तु उसकी आत्मा अभी मरी नहीं हैं। उसमें शक्ति है और वह जीवित रहना जानती है।

———

"मेरे पति की आत्मा तो उसी दिन शरीर छोड़ गई थी, जिस दिन जापान की पराजय हुई थी। अब तो केवल मृत्यु दण्ड एक व्यवहार है। उन्होंने इसकी इच्छा व्यक्त की थी। हम उनके परिवार के सदस्य भी मृत्यु की कल्पना करते हैं, क्योंकि मनुष्य की मृत्यु तो केवल एक बार ही होती है। युद्ध न्यायालय का निर्णय कोई विशेष महत्व नहीं रखता है, जबकि हम यह सोचते हैं कि युद्ध के कारण हमारी तरह अनेकों परिवार सतप्त हैं।

—श्रीमती काट्सुको तोजो

जिस राष्ट्र में ऐसी वीर पत्नियां विद्यमान हैं, वह कभी मर नहीं सकता है।

असली हस्तिनापुर का अभी तक पता नहीं

अब तक यद्यपि नौ हस्तिनापुरों की खुदाई हो चुकी है, किन्तु अभी तक पांडवों के हस्तिनापुर का पता नहीं है। भारत के पुरातत्व विभाग ने जहां खुदाई की थी वहां उसे एक के नीचे एक इस प्रकार ९ हस्तिनापुरों का पता चला। यह कोई अद्‌भुत बात नहीं है, क्योंकि एक हस्तिनापुर के उजड़ने के बाद दूसरा उसी के अवशेष पर उसी स्थल पर बसाया गया है। यही बात बिहार में नालंदा की खुदाई में भी पाई गई, वहां एक के नीचे एक करके तीन नालंदा मिले थे। हस्तिनापुर की खुदाई में पुरातत्व विभाग को अनेक मोहरें, प्राचीन सिक्के तथा खड्‌ग एवं अन्य अस्त्रशस्त्र मिले हैं, जो ढाई हजार वर्ष से भी पूर्वकाल के समझे जाते हैं। अनेक प्राचीन बुद्ध मूर्तियां तथा कुछ मिट्टी के बर्तन भी मिले हैं, जिन पर सोने का कलापूर्ण काम तथा लाल और नीले रंगों की विचित्र चित्रकारी है। वहां दो अद्‌भुत स्तम्भ भी मिले हैं, जो एक दूसरे से बारह फुट दूर स्थित हैं और ४० फुट ऊंचे हैं तथा जिनका व्यास दो-दो फुट का है और उनमें से एक के शिखर पर कुछ मानव अस्थि-अवशेष भी पाये गये हैं। एक स्थान पर दो स्वस्तिक भी प्राप्त हुए। ये सभी वस्तुएं ढाई से तीन हजार वर्ष पूर्व की हैं और पांडवों का काल लग-भग पांच हजार वर्ष पूर्व का समझा जाता है। अतएव पांडव कालीन हस्तिनापुर के अनुसंधान के प्रयत्न अभी जारी हैं।

चन्द्रलोक की यात्रा के लिए एक नव वर्षीय लड़के ने सबसे पहले टिकट खरीदा है। ब्रिटिश अन्तर्ग्रह यात्रा संघ के अध्यक्ष, श्री वेलेन्टीन क्लीवर ने भविष्यवाणी की है कि अगले ३०-४० वर्षों में चन्द्रलोक की यात्रा सम्भव नहीं होगी, यह कहानी एक समचार पत्र में 'अभी टिकट खरीदो' शीर्षक से छपी है। फिलिफ हरलाम नाम के उक्त लड़के ने उस समाचार को लिखा—मैं उस राकेट पर जाना चाहूंगा। कृपया बताइये मुझे टिकट कहां मिलेगा। मैं अभी रुपया नहीं दे सकता पर तीस वर्ष बाद मैं ऐसा कर सकूंगा क्योंकि तब मेरी उम्र ३९ वर्ष की होगी।

●

रेल-किराये बढ़ाना अनावश्यक

कुछ दिन पूर्व एक एक समाचार में ऐसा संकेत किया गया था कि शायद रेलवे मन्त्री अपने नये रेलवे-बजट में रेल-किराये कुछ बढ़ा देने का प्रस्ताव करेंगे। वैसा करने के अन्य कारणों में यह बतलाया गया था कि यात्रियों की संख्या बढ़ती जाने के कारण अतिरिक्त गाड़ियां चलाना आवश्यक हो गया है, परन्तु इन अतिरिक्त गाड़ियों पर रेलवे विभाग को कुछ लाभ होने की सम्भावना नहीं है, इसलिए शायद किराया बढ़ाना पड़े। रेलवे बोर्ड की १९४९-५० की वार्षिक रिपोर्ट देखने से रेलवे अधिकारियों का यह भय सत्य नहीं जान पड़ता। इस रिपोर्ट में सन् १९५० में न केवल यात्रियों की संख्या बढ़ी बतलाई गई है, यह भी बतलाया गया है कि उनसे समस्त आय में भी वृद्धि हुई। इनके लिए अतिरिक्त गाड़ियां चलाने के कारण रेलों को बड़ी लाइनों पर ७६६१ और छोटी लाइनों पर ५२२६ मील प्रतिदिन अधिक चलना पड़ा। तिस पर भी प्रति यात्री प्रति मील पीछे रेलवे को केवल ००३ पाई की आय कम हुई। सब मिला कर आय की यह न्यूनता वर्ष भर में दो लाख रुपये से कुछ कम रहती हैं। इस राशि को अरबों के हिसाब-किताब में रेलवे बोर्ड सुगमता से पूरा कर सकता है। इतने से के लिए उसे यात्रियों का रेल-किराया बढ़ाना नहीं चाहिये।

●

पाकिस्तान की शर्त

लेकसक्सेस में सर जफरुल्ला खां ने बतलाया कि 'पाकिस्तान इस शर्त पर भारत के साथ काश्मीर के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष वार्ता करने के लिए तैयार करने हैं कि भारत पहले काश्मीर से अपनी सब सेनाएं हटा ले,' क्या इसके लिए नेहरू जी तैयार हैं? यदि नहीं, तो फिर सुरक्षा-समिति में भारत की ओर से प्रत्यक्ष वार्ता के सुझाव रखने का अर्थ ही क्या? इस तरह की वार्ता में तभी सफलता मिल सकती है, जब दोनों पक्ष समझौता के लिए उत्सुक और वार्ता के लिए राजी हों। केवल एक पक्ष के कहने से ऐसा नहीं हो सकता और ऐसे सुझाव का न दूसरे लोग समर्थन ही कर सकते हैं, क्योंकि किसी को प्रत्यक्ष वार्ता करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। राष्ट्रसंघ ने दो बार यह सलाह दी कि 'भारत, पाकिस्तान और दक्षिणी अफ्रीका एक साथ मिल कर अपने झगड़े निबटा लें,' पर दक्षिणी अफ्रीका इसे बराबर टालता ही रहता है। ब्रिटिश प्रधानमन्त्री मिस्टर एटली ने पार्लमेंट में बतलाया कि 'वे अब भी दोनों में समझौता कराने के प्रयत्नशील हैं।' जब उनसे पूछा गया कि 'दोनों में से वे आक्रमक किसको मानते हैं,' तब उन्होंने उत्तर दिया कि 'किसी को भी नहीं।' यद्यपि सर ओवन डिक्सन ने एक प्रकार से काश्मीर के मामले में पाकिस्तान को आक्रमक मान लिया है, पर सुरक्षा समिति का वही रुख होगा, जो मिस्टर एटली ने व्यक्त किया है। अमेरिका में नेहरू जी के विरुद्ध प्रचार बढ़ता ही जा है। वहां के एक प्रसिद्ध पत्र 'क्रिश्चियन मानीटर' ने काश्मीर का मामला न सुलझाने में नेहरू जी को ही सर्वथा दोषी बतला कर अपनी 'ईसाई उदारता तथा निष्पक्षता' का परिचय दिया है। संभवतः अगले सप्ताह सुरक्षा-समिति में इस प्रश्न पर विचार होगा। देखना है कि उसमें भारत अपना पक्ष किस तरह रखता है। —सन्मार्ग

●

भाषा का प्रश्न

नेहरूजी को ज्ञात होना चाहिए कि वे स्वयं जिस भाषा का प्रयोग करते हैं वह हिन्दी नहीं है। उनकी भाषा उत्तरप्रदेश की साधारण जनता की भाषा नहीं है। उनकी भाषा उर्दू है, जिसे कचहरी में रहने वालों के सम्पर्क में रह कर उन्होंने सीखा है। हिन्दी उर्दू के झगड़े की चर्चा करते समय क्या उन्हें उर्दू-ए-मुअल्ला का ध्यान नहीं रहता? मौलवी लोग या स्वयं मौलाना आजाद जिस उर्दू का प्रयोग करते हैं, उसे उर्दू के उपासक होने पर स्वयं नेहरू जी भी सांगोपांग समझने का दावा नहीं कर सकते।

हम यह नहीं कहते कि हिन्दी में विदेशी शब्दों को प्रविष्ट ही नहीं होने दिया जाय। हिन्दी में विदेशी स्रोत से आये हुए सहस्रों शब्द विद्यमान हैं। आगे भी विदेशी शब्द आते रहेंगे और उनका स्वागत होगा, किन्तु इधर-उधर की बातें कर छद्मरूप से उर्दू का प्रचार करना ठीक नहीं। नेहरूजी को ज्ञात होना चाहिये कि भाषा की दिशा में स्वयं पूज्य बापू को भी निराश होना पड़ा था। नेहरू जी भाषात्मक निर्णय देने का कष्ट न करें। —स्वदेश

●

अहमदाबाद अधिवेशन विफल

कांग्रेस महासमिति के अहमदाबाद अधिवेशन में नेहरू जी द्वारा पेश किया गया ऐक्य प्रस्ताव पास हो गया, किन्तु इससे यह आशा करना कि कांग्रेस में अब दलबन्दी एवं फूट घटेगी और सभी कांग्रेसी कार्य-कर्त्ता लगन के साथ संगठित रूप से वर्तमान राष्ट्रीय संकट का मुकाबिला करने में दत्तचित्त हो जायेंगे, व्यर्थ है। स्थिति क्या है? यह इस एक बात से ही स्पष्ट हो जाता है कि आचार्य कृपलानी ने नेहरू जी के उस प्रस्ताव का समर्थन करने से इन्कार कर दिया, जिस में कांग्रेस में ही नये दल बनाने की निन्दा की गयी है। जनतान्त्रिक मोर्चा भंग करने के लिए आचार्य कृपलानी को समझाने का प्रयास भी विफल हो गया है। अर्थात् अधिकारारूढ़वर्ग के सम्बन्ध में विक्षोभ कलुष जरा भी नहीं घटा है। ऐक्य प्रस्ताव पास होने का महत्व औपचारिक से अधिक नहीं है। जब कांग्रेस में रहने वाले प्रमुख दल का यह हाल है तो जो दल कांग्रेस से पृथक हो गये हैं, उनके लौटने की क्या आशा की जा सकती है। अन्य राजनीतिक दलों का सहयोग प्राप्त करने का प्रश्न ही नहीं होता, जब इस सम्बन्ध में कोई निश्चित योजना उपस्थित ही नहीं की गयी। ऐसी स्थिति में यही कहना पड़ता है कि कांग्रेस महासमिति का अहमदाबाद अधिवेशन विफल रहा। — आज

●

महिलाओं का कार्यक्रम

एक महान कमी या गलत वृत्ति पढ़े लिखे कई एक पुरुषों की भांति अधिकांश शिक्षित महिलाओं में भी यह दिखाई देती है कि पश्चिम का अन्धानुसरण इनके द्वारा किया जाता है। शिक्षा का सबसे बुरा असर ही यही हुआ था और उसी का कुपरिणाम क्यों हमें भुगतना पड़ा कि थोड़ी भी अंग्रेजी शिक्षा पाई और रहन-सहन जीवन में पश्चिम का अंधा अनुसरण होने लगा। इससे हमारी गुलामी का काल ज्यादा लंबा हुआ और आज भी यह स्थिति है कि राजनैतिक स्वाधीनता के बाद हम अपनी सामाजिक व सांस्कृतिक स्वाधीनता से अभी काफी दूर हैं। महिला वर्ग में पश्चिमी रहन-सहन का उतना अन्धानुसरण तो नहीं दिखाई देता, किन्तु समानाधिकार आदि की मांग के पीछे वहां की परिस्थिति की एवज वहां के वातवरण और वहां के अन्धानुसरण का प्रभाव ज्यादा काम कर रहा है। बंगलौर में महिला सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री रमण ने ठीक ही कहा है कि स्त्रियां जिस क्षेत्र में भी चाहें आगे बढ़ने का प्रयत्न करें। किन्तु पश्चिम का अन्धानुसरण न करें। — लोकवाणी

●

[illegible] के भारतीय प्रदेश में

पंजाब के चुनाव : काश्मीर चुनाव जीतने का हथियार : पख्तूनिस्तान : बादशाह खाँ : समझौता भंग करने का आरोप

पश्चिमी पंजाब इस समय चुनाव का अखाड़ा बना हुआ है। पाकिस्तान बनने के पश्चात वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनाव होने का यह पहिला ही अवसर है। यद्यपि श्री लियाकत अली खां ने 'मुस्लिम लीग के अतिरिक्त अन्य दल कहां हैं' कह कर प्रश्न टाल दिया किन्तु लीग के विरोधी उसका जोरदार मुकाबला करने के लिए कमर कस रहे हैं। ममदोत के खान और श्री सुहरावर्दी ने संगठित मोर्चा बनाने का यत्न किया है और उन्होंने अपने दलों को मिला कर "जिन्ना अवामी मुस्लिम लीग" खड़ी की है। यह स्पष्ट है कि पंजाब में मुस्लिम लीग बदनाम है। ममदोत लिखता है "पाकिस्तान के कोने कोने में लोग आज मुस्लिम लीग से घृणा करते हैं। वे यह अनुभव करते हैं कि जो संगठन उन्होंने बनाया था वह कुछ थोड़े से स्वार्थी और सत्तालोलुप व्यक्तियों के हाथ की कठपुतली बन गया है। ऐसे लोगों के साथ उनकी कोई सहानुभूति नहीं है, और इसीलिये वे उस से अलग हो रहे हैं।" प्रतीत होता है कि मुस्लिम लीग को नये दल के कड़े विरोध का सामना करना पड़ेगा, यद्यपि यह कहना भी कठिन है कि वह हार ही जायगी।

× × ×

काश्मीर के विषय में जिस प्रकार के भाषण तथा प्रचार सीमाप्रांत के प्रधान मन्त्री खान अब्दुल कयूम खां कर रहे हैं और जिस प्रकार का संकेत श्री लियाकत अली ने यह भाव प्रकट कर दिया है कि वे अन्य निश्चय के विषय में कुछ नहीं कहेंगे उस पर सिविल एण्ड मिलिटरी गजट ने पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री को यह राय दी है कि वह कश्मीर के सम्बन्ध में जनता के समक्ष स्पष्ट चित्र रखें और उसे वास्तविकता बतायें। यदि वे युद्ध के नारे चुनाव जीतने के लिए हैं तो वे उपाय एक घातक 'बूमरेंग' भी सिद्ध हो सकता है क्योंकि युद्ध के लिए जान बूझ कर भड़काई हुई भावनाएं उस सरकार से उन वायदों की पूर्ति मांग सकती हैं जिसे देने के लिए वह बिलकुल तैयार न हो। यह भी सम्भव है कि लोगों की आज की मन. स्थिति में यह मांग केवल मौखिक रूप तक ही सीमित न रहे। सरकार को परेशान करने के लिए कुछ लोग इसका पूरा-पूरा लाभ उठा सकते हैं। ऐसी स्थिति में जो आज जनता को बहका रहे हैं वह अपने आप को गहरे पानी में पा सकते हैं।

× × ×

इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है कि पाकिस्तान सरकार काश्मीर के प्रश्न को लेकर भारत के विरुद्ध विषैला प्रचार कर रही है। जेहाद के नारे लगाये जाते हैं और काश्मीर छीन कर लेने की प्रतिज्ञाएं कराई जाती हैं। हाल ही में इस प्रकार का समाचार भी प्रकाशित कराया गया था कि कुछ कबीलों के सरदारों द्वारा काश्मीर पर पुनः चढ़ाई करने की स्थिति में पाकिस्तान की सहायता करने का वचन दिया गया है। इस समाचार में कहां तक सचाई है, यह तो ज्ञात नहीं, किन्तु किसी भी बहाने से क्यों न हो, पाकिस्तान कबाइलियों को इस ओर एक लैम्पपोस्ट के रूप में आने देगा, यह बहुत सन्देहात्मक है। पाकिस्तान की पख्तूनिस्तान सम्बन्धी नीति से जिस प्रकार का असंतोष कबाइली क्षेत्र के लोगों में है, उसे देखते हुए यह सम्भव नहीं दिखाई देता। हां, इस प्रकार के समाचारों का प्रचार-महत्व पर्याप्त है, इसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता।

× × ×

पख्तूनिस्तान का आन्दोलन जहां एक ओर बल पकड़ता जा रहा है वहां पाकिस्तान से क्षुब्ध होकर उस क्षेत्र की जनता का रोष भी बढ़ता जा रहा है। हाल ही में सीमाप्रान्त की राजधानी पेशावर में हुई गड़बड़ी इस तथ्य को प्रकट करती है। खान अब्दुल कयूम खां की ठीक नाक के नीचे इस प्रकार की गंभीर घटना होना इस बात का प्रमाण है कि जनमत उग्र रूप धारण करता जा रहा है। पाकिस्तान इस आन्दोलन को दबाने के लिए यथेष्ट बल प्रयोग कर रहा है किन्तु यह धीरे धीरे गति पकड़ता जा रहा है काबुल रेडियो के अनुसार ७० लाख पख्तूनों ने बादशाह खां में अपनी श्रद्धा प्रकट की है।

× × ×

बादशाह खान के आश्रम को भी पाकिस्तान सरकार नीलाम कर रही है। उनकी शेष सारी संपत्ति तो पहिले ही नीलाम की जा चुकी है। यह आश्रम ही केवल शेष था। ये आश्रम सीमान्त गांधी के कार्य का केन्द्र रहा है। उनकी गिरफ्तारी के समय ही उनकी समस्त सम्पत्ति के साथ साथ इस पर भी सरकार ने अधिकार कर लिया था। पख्तूनिस्तान आन्दोलन की उग्रता को दबाने के जोश में सारी सम्पत्ति के पश्चात इसे नीलाम कर दिया गया है।

× × ×

पख्तूनिस्तान सम्बन्धी कुछ समाचारों को भारतीय पत्रों में प्रकाशित हुआ देख कर पाकिस्तान सरकार ने भारत सरकार पर यह आरोप लगाया था कि इस प्रकार के समाचारों के प्रकाशन द्वारा उसने अप्रेल समझौते को भंग किया है। भारत सरकार ने इस आरोप को निराधार बताते हुए कहा है कि उसने किसी प्रकार का प्रकाशन नहीं किया। किन्तु भारतीय समाचार पत्रों को वह इस प्रकार के प्रकाशन से नहीं रोक सकती। फिर भारतीय पत्रों ने भी कभी इस सिक्के का एक ही पहलू लोगों के सामने नहीं रखा। उन्होंने दोनों पक्षों के समाचार समान रूप से प्रकाशित किए हैं। ऐसी स्थिति में पाकिस्तान का आरोप पूर्णत निराधार है।

★

इतिहास दुहरा रहा है

★ अमरचन्द्र पाण्डेय 'विशारद' [illegible]

आज से लगभग ५०० वर्ष पूर्व की बात है। भारतीय सम्राट दुर्योधन की राजसभा लगी हुई थी दुर्योधन ने दु:शासन को आदेश दिया—

"पाण्डवों के अन्त:पुर से द्रोपदी को केश पकड़ कर सभा में लाओ और उसे भरी सभा में नग्न कर दो, कोई भी व्यक्ति हस्तक्षेप न करे।"

दु:शील दुश्शासन ने वैसा ही किया। द्रोपदी केश पकड़ कर लाई गई और उसकी साड़ी खींची जाने लगी।

दुर्योधन की उस सभा में भीष्म-पितामह, आचार्य द्रोण, सभी पाण्डव उपस्थित थे किसी ने भी इस दुराचरण के विरुद्ध—विदुर को छोड़ कर—आवाज नहीं उठाई। सभी किसी अज्ञात बन्धन में जकड़े थे।

द्रोपदी आर्त स्वर में अपनी लज्जा-रक्षा के लिए पुकार रही थी, सब ओर से निराश होने पर उसने श्रीकृष्ण को पुकारा —

"प्रपन्नां पाहि गोविन्द
कुरुमध्येऽवसीदतीम्।"
—महाभारत सभापर्व, ६७

"हे गोविन्द! कौरवों के फंदे में मुझ प्रपन्ना की रक्षा कीजिए।"

अपने विज्ञान कौशल से श्रीकृष्ण ने द्रोपदी का चीर इतना बढ़ा दिया कि पता न लग सका कि

सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है,
सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।

× × ×

आज से लगभग ३ वर्ष पूर्व की बात है। भारत की स्वर्गीय वसुन्धरा काश्मीर पर पाकिस्तान ने आक्रमण कर दिया। उस स्वर्ग भूमि के विस्तृत भाग पर दस्युओं ने अपना आधिपत्य स्थापन कर लिया। काश्मीरियों के साथ अत्याचार किए गए, उनको अपमानित किया गया—

"कितनी द्रुपदसुता के बाल खुले,
कितनी कलियों का अंत हुआ!"

काश्मीर की जनता त्राहि-त्राहि पुकार उठी। काश्मीर नरेश ने भारत सरकार के विलयन-पत्र पर हस्ताक्षर कर, काश्मीर को बचाने की अपील की!

कौरवों की सभा में द्रोपदी का चीर हरण किया जाने लगा और द्रोपदी आशा की दृष्टि से चारों इधर उधर देखने लगी। अंतत भारत ने—श्रीकृष्ण के देशे भारत ने—काश्मीर की रक्षा का प्रयत्न किया। द्रोपदी की खींची जाती हुई साड़ी बढ़ाने का प्रयत्न किया गया।

मामला संयुक्त राष्ट्रों की सुरक्षा परिषद् में पेश किया गया किन्तु वहां पर राष्ट्रों के प्रतिनिधि उसी प्रकार मौन थे जिस प्रकार कौरवों की सभा में बड़े बड़े धर्माचार्य और ज्ञानवृद्ध।

आज द्रोपदी की साड़ी न तो उसके द्वारा पूरी पहिनी ही गई है और न वह बढ़ ही रही है। श्रीकृष्ण की सन्तान के हाथ उसे थामे हुए हैं और दुःशासन के अवतारभूत पाकिस्तानी सैनिक उसे खींचने को ताक में हैं। बेचारी द्रोपदी—काश्मीर—दुविधा में पड़ी बिलख रही है। बिलख इसलिए रही है कि श्रीकृष्ण के पुत्र आज अविवेक के रोग से—मानसिक पथ भ्रष्टता की बीमारी से ग्रस्त हैं। अपना पथ स्वयं नहीं निश्चित कर सकते। फिर भी इतिहास दुहरा रहा है।

निकेतन
देहरादून।

भारत और नैपाल के सम्बन्ध (२)

★ श्री सूर्यप्रसाद सक्सेना

इस लेख का पूर्वार्ध २१ जनवरी १९४० में प्रकाशित हो चुका है और उत्तरार्ध यहां प्रस्तुत किया जाता है। —सं०

नेपाल और भारतीयों के परस्पर विवाह सम्बन्धों पर भी किसी प्रकार की रोक नहीं है और बड़ी स्वतन्त्रतापूर्वक दोनों में शादी विवाह होते हैं। नेपाल नरेश की दोनों रानियां भारतीय घरानों की हैं। एक राजकुमारी का विवाह सीकर (जयपुर) के राजकुमार से हुआ है। नेपाल नरेश की माता भी एक पंजाबी महिला थी। वर्तमान प्रधान मन्त्री की एक बहिन, छः लड़कियां और दो पुत्र भारत में ब्याहे हैं। अभी हाल में ही उनकी एक पोती का विवाह काश्मीर के युवराज कर्णसिंह से और दूसरी का जैसलमेर के राजा से हुआ है।

लगभग ३० भारतीय नेपाल सरकार के विभिन्न विभागों में ऊंचे पदों पर हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारी और आर्थिक मामलों में नेपाल की ओर से भारत ही सब दायित्व संभालता है। भारत सरकार ही नेपाल सरकार और नेपाली व्यापारियों के लिए विदेशों से डालर और स्वर्णिम बन्दोबस्त करती है।

भारतीय व्यापारियों की लगभग १० करोड़ की पूंजी नेपाल में लगी हुई है।

नेपाल से मशीनरी, सोना, चांदी, जवाहिरात भारत में लाने पर किसी प्रकार की पाबन्दी नहीं है।

नेपाल से भारत को प्रतिवर्ष ६० हजार मन घी, ४० लाख मन चावल, ३० लाख रु० की लकड़ी (१९४८-४९) १० लाख की खालें और करीब १ लाख की जूट का निर्यात होता है।

नेपाल सरकार की ओर से भारतीयों पर किसी भी प्रकार की चल और अचल सम्पत्ति के खरीदने पर कोई रोक नहीं है। सरकार उनके स्वामित्व अधिकार को [प्रोप्राइटी राइट] को पूर्णतः स्वीकार करती है।

भारतीय व्यवसाइयों और व्यापारियों पर नेपाल राज्य की सीमा में कहीं पर भी अपना व्यापार धन्धा करने पर कोई पाबन्दी नहीं है। किसी प्रकार का आयकर, बिक्री कर, लाभ कर इत्यादि कोई कर नहीं है अतः किसी प्रकार की जांच पड़ताल भी नहीं होती और कोई भी नेपाल की भूमि पर कमाया हुआ कितना भी धन भारत में ले जा सकता है।

नेपाल के विरुद्ध दूषित प्रचार करने वाले साहित्य को छोड़ कर भारत में छपी हुई किसी भी पुस्तक पैम्फलेट इत्यादि के नेपाल में बेचने या जनता में बांटने पर कोई प्रतिबन्ध या रुकावट नहीं है।

महात्मा गांधी, श्री जवाहरलाल नेहरू सरदार पटेल, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद, वीर सावरकर और भाई परमानन्द सदृश भारतीय नेताओं की जीवनियां और फोटो काठमाण्डू में भारी संख्या में बिकते हैं।

नेपाल सरकार ने बिना किसी आर्थिक लोभ के भारत सरकार को उसकी सबसे बड़ी बांध योजनाओं में से एक कोसी योजना के निर्माण की आज्ञा दे रखी है। यह बहु मुखी योजना जब पूर्ण हो जायगी तब भारत के लिए बहुत लाभदायक होगी। पहले तो इस से विनाशकारी बाढ़ों पर काबू पा लिया जायगा, बेकार पड़ी हुई भूमि में सिंचाई होने से खेती हो सकेगी, 'अधिक अन्न उपजाओ' में सहायता मिलेगी और बिजली उत्पन्न हो कर उद्योग धन्धे चलाये जायेंगे।

नेपाल सरकार और उदार नेपालियों ने भारत की शिक्षा संस्थाओं को निम्न सहायता दी है।

[अ] बनारस हिंदू विश्व विद्यालय को २ लाख रुपया महाराजा चन्द्र शमशेर जंग बहादुर राणा द्वारा आयुर्वेदिक कालेज के लिए और एक लाख रुपया महाराजा जुद्ध शमशेर जंग बहादुर राणा द्वारा संस्कृत और भारतीय संस्कृति के लिए।

[ब] भोसले सैनिक स्कूल को २० हजार रुपया महाराजा पद्म शमशेर जंग बहादुर राणा द्वारा।

[स] माइकेल मैडीकल कालेज को १ लाख रुपया महाराजा वीर शमशेर जंग बहादुर के पौत्र जनरल सूर द्वारा।

[ड] लखनऊ विश्वविद्यालय को २५ हजार रुपया महाराजा मोहन शमशेर जंग बहादुर राणा द्वारा।

[य] प्रयाग विश्वविद्यालय को ६००० रु० वार्षिक नेपाल सरकार द्वारा एशियाटिक कलचर की शिक्षा के लिए।

भारत ने संयुक्तराष्ट्र संघ के एशिया और सुदूरपूर्व के लिए आर्थिक कमीशन (ई० सी० ए० एफ० ई०) की सदस्यता के लिए प्रस्ताव रखा था। एक नेपाली प्रतिनिधि उस बैठक में भाग लेने आमन्त्रित किया गया भी था।

भारत सरकार नेपाल सरकार को बिना किसी शर्त के १० लाख रुपया प्रतिवर्ष देती है। नेपाल द्वारा प्रथम महायुद्ध में ब्रिटिश साम्राज्य को यह राशि प्रथम महायुद्ध के पश्चात् अंग्रेजों ने देनी प्रारम्भ की थी। स्वतन्त्र भारत ने भी उसे जारी रखा।

इसी प्रकार द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् (१९४२) भी नेपाल की महायुद्ध में सेवाओं के लिए भारत के कोष से अंग्रेजों द्वारा १० लाख रुपया सालाना की एक और राशि दी जाने लगी थी। १९४६ में बिना किसी शर्त के २ करोड़ ३० लाख की एक इकट्ठी राशि नेपाल सरकार को दी गई थी।

भारत सरकार ने नेपाल में भारतीय सेना के पैंशनरों, निकाले गये सैनिकों और मृत सैनिकों की विधवाओं, बच्चों और आश्रितों की सहायतार्थ एक २६ लाख रुपये का कोष कायम किया है और इस विषय में परामर्श देने के लिए एक छोटी सी समिति भी बनाई है जिसके नेपाल के भारतीय राजदूत भी एक सदस्य होते हैं।

लगभग एक लाख गुरखा पैंशनर १ करोड़ रुपये के लगभग पैंशनों के रूप में भारत से प्राप्त करते हैं।

भारत के कालिजों और विश्वविद्यालयों में नेपाली विद्यार्थियों के प्रवेश पर किसी प्रकार की पाबंदी नहीं है।

भारतीय विश्वविद्यालयों में बी० ए० तक नेपाली भी एक विषय रक्खा गया है।

भारत सरकार नेपाली विद्यार्थियों को भारत के कालेजों और विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्तियां देती हैं।

कोई भी नेपाली भारत के किसी भी भाग में बिना पास पोर्ट के आ जा सकता है, किसी भी सार्वजनिक उत्सव में भाग ले सकता है और किसी भी ऐसी संस्था का पदाधिकारी भी बन सकता है।

नेपाली लोग भारतीय कम्पनियों, बैंकों, मिलों और अन्य उद्योगों के शेयर खरीद सकते हैं।

इनसे कमाई हुई आय पर भारत के आय कर नियमों के अनुसार कर लगाया जाता है। भारत में नेपालियों की २० करोड़ से अधिक की पूंजी लगी हुई है।

लगभग ६० लाख गोरखे भारत में स्थायी रूप से बस गये हैं। बसे हुये नेपाली या गोरखों को भारत में पूर्ण नागरिक अधिकार और कानून का संरक्षण प्राप्त है। उनको मत देने का भी पूर्ण अधिकार है और केन्द्र अथवा राज्यों की विधान सभाओं के चुनावों में भी वे खड़े हो सकते हैं। इस समय भी अरिमर्दनपुर गुरुंग दार-जीलिंग, भारत की संसद के सदस्य हैं।

नेपाली लोग भारत में जमीन और जायदाद खरीद सकते हैं और भारतीयों की भांति उन्हें भी स्थानीय कानून के अन्तर्गत उसके बेचने गिरवी रखने और बांटने का पूरा पूरा अधिकार है।

मिट्टी का तेल सीमेंट और अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त भारत नेपाल को नमक, १९०० टन कपड़ा और प्रतिवर्ष २,१२,९०० गैलन पेट्रोल (१९४९-५०) देता है।

समय समय पर नेपाल सरकार की प्रार्थना पर भारत सरकार विभिन्न विषयों पर परामर्श देने अपने विशेषज्ञ भेजती रहती है।

अतः यह सब देखने से पता चलता है कि दोनों देश भौगोलिक, सांस्कृतिक, जातीय, धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से कितने एक दूसरे से संबद्ध हैं। यह संबंध आज के नहीं इनका आधार है सदियों पुराना समान धर्म समान् संस्कृति और समान सामाजिक जीवन।

आज दोनों देशों के बीच संधि और व्यापारी समझौते हैं तथा परस्पर हित दोनों को एकसूत्र में बांधे हुये हैं।

वीर अर्जुन साप्ताहिक का मूल्य

वार्षिक	१२)
अर्धवार्षिक	६॥)
एक प्रति	चार आना

साहित्य रत्न परीक्षोपयोगी लेख—

कर्म भूमि का आलोचनात्मक परिचय

★ श्री गणपतलाल अग्रवाल 'गिरीश'

हिन्दी साहित्य के उपन्यास क्षेत्र में स्वर्गीय प्रेमचन्द जी का स्थान अद्वितीय है। आपने उपन्यासों की धारा बदल कर उनमें जीवन सम्बन्धी विभिन्न घटनाओं का समावेश किया। प्रेमचन्द जी के पूर्व के उपन्यासों में मनोरंजक विषयों को अधिक महत्व दिया जाता था। उनमें समालोचयोगी दृष्टिकोण का सर्वथा अभाव था। किन्तु प्रेमचन्द जी के आगमन से वे सभी अभाव विलुप्त हो गए। प्रेमचन्द जी ने अधिकांश रूप में दलितों, शोषितों और पीड़ितों को निहारा। उनके निराशा जनक वातावरण को सुदृढ़ एवं आशामय बनाया। उनके उपन्यासों में हमें अछूत समस्या, किसान और जमींदार समस्या, तथा धनी और निर्धन समस्या का विस्तृत दिग्दर्शन मिलता है। 'कर्मभूमि' उपन्यास उनकी इसी भावना का प्रतीक है। इसमें अछूतोद्धार एवं घर तथा बाहिर की समस्याओं का समाधान मिलता है। किसानों का क्रूरता के प्रति किया गया संघर्ष उपन्यास के कलेवर को अधिक उज्ज्वल बना देता है।

कर्मभूमि के विभिन्न अंगों पर दृष्टिपात करने पर:—

कथा वस्तु

सेठ समरकान्त काशी के धनी पुरुष हैं। उनके इकलौते पुत्र का नाम अमरकान्त है। लाला समरकान्त ने दो विवाह किए थे। प्रथम पत्नी से अमरकान्त और दूसरी से नैना उत्पन्न हुई थी। अमर और नैना के बीच अटूट प्रेम का स्रोत प्रवाहित था। जब आठवीं कक्षा में अमरकान्त पढ़ता था उसी समय लाला जी ने अमर को धन के लालच में पटकने के लिए विवाह कर दिया। अमर की पत्नी सुखदा एक पढ़ी लिखी एवं चतुर स्त्री थी। लाला समरकान्त की दुकान पर काले खां नामक एक गुंडा चमादि लाकर कम मूल्य पर बेच जाता था। अमर को इस प्रकार से धन बटोरने की अपने पिता जी की पद्धति अच्छी मालूम नहीं हुई। लाला जी भी उसे प्रति दिन धन का प्रेमी बनने को कहते थे। सुखदा भी अमर को श्वसुर के कथनों पर चलने को कहती थी। किन्तु अमर के लिए वह कुमार्ग था और उस पर चलना उसे अन्याय लगता था।

कुछ दिनों बाद अमर के एक लड़का भी हो जाता है। अब उस पर पिता जी के बड़े कटे वाक्यों का और अधिक प्रहार होता था। अन्त में मामला यहाँ तक बढ़ता है कि उसे घर छोड़ना पड़ता है। अब वह किराये के मकान में रहता है। सुखदा अध्यापन का कार्य तथा अमर कपड़ा बेचने का कार्य कर दोनों गृहस्थी की सीढ़ी को संभल कर पहचानते हैं। इसी समय अमर एक पठानिन के घर कभी कभी चला जाया करता है जोकि उसके पिता जी से ५) रु० मासिक पाती है। उसकी लड़की का नाम सकीना है। अमर को सुखदा के डांट भरे वाक्यों से सकीना के स्नेह-संचित वाक्य कहीं अच्छे लगते थे किन्तु लोक लाज के कारण और समाज की संकुचित मर्यादा से ऊब कर वह देहात में चला जाता है। वहां मुन्नी नामक स्त्री से उसका परिचय होता है। यह स्त्री एक बार अमर के देखते-देखते दो गोरों को मार चुकी थी। अन्त में जज के समक्ष इसने मार्मिक हृदयोगारों से मृत्यु दण्ड को भी असफल बना दिया था। तभी से अमर मुन्नी को निकट समझने लगा था। वह देहात से ही पत्नी और नैना को पत्र व्यवहार करता रहता है। इधर अमर के जाने के पश्चात डा० शान्तिकुमार और सुखदा ने अछूतों को मन्दिरों में प्रवेश कराने में महान उद्योग किया। अन्त में धर्माधिकारियों को अछूतों को अपनाना पड़ा। अमर को इस घटना का पता लगने पर उसने सुखदा को धन्यवाद दिया। सुखदा ने इसके अतिरिक्त शहर की दशा पर एक विहंगम दृष्टि डाली। सुखदा ने निराश्रितों को आश्रय देने के लिए म्यूनिसपल बोर्ड से जमीन मांगी जो कि अनधिकारवश नैना के श्वसुर धनीराम के बंगले के लिए तैयार हो रही थी। शहर में इससे असन्तोष फैला। सुखदा, शान्तिकुमार आदि जेल गये और समरकान्त पठानिन सकीना ने भी उनका अनुकरण किया पर मांग पूरी न हुई।

इधर ग्राम में फसल नष्ट हो गई। सरकार ने किसानों का लगान क्षमा नहीं किया और लगान वसूल करने में शीघ्रता करने लगी। अमर का मित्र सलीम आई. सी. एस. पास करने के बाद इस कार्य पर नियुक्त हुआ। उसने अमर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। मुन्नी भी अमर के साथ जेल गई। जेल-जीवन भी कष्टपूर्ण था। वहां काले खां ने अमर के कार्यों पर स्वयं दृष्टि डाली और अमर की सहायता में ही उसने अपने प्राणों की बाजी लगा दी। इधर सरकार की कठोर नीति और किसानों की करुण आहों से द्रवित हो सलीम ने भी जेल का अनुगमन किया। इधर शहर में भी संघर्ष की बागडोर नैना ने संभाली और अपने प्राणों की आहुति देकर सबकी मांगों को पूर्ण किया। बोर्ड से स्वीकृति मिली, सभी को जेल से रिहाई मिली। अन्त में लाला जी और अमर के विचारों में साम्य हुआ। अब कहीं भी असंतोष और अन्याय नहीं होता था।

उक्त कथावस्तु का प्रवाह आदि से अन्त तक बड़ी रोचकता के साथ हुआ। कुछ घटनायें तो इतनी महत्वशाली हुईं कि नायक को उनका पता तक न चला। जैसे मन्दिर प्रवेश और बोर्ड से जमीन की मांग। उपन्यास में सर्वत्र रोचकता ही दृष्टिगोचर होती है। काले खां और नैना की मृत्यु अवश्य कुछ क्षुब्ध किए देती है, किन्तु इनकी मृत्यु से नायक के प्रयत्न का फल अच्छा बना। जिस उत्सुकता के साथ कथावस्तु का प्रारम्भिक भाग देखा जाता है, उसी उत्सुकता से उसका अंत दृष्टिगोचर होता है। उपन्यास में यही गुण होना अधिक महत्व रखता है।

ओ बसन्त क्या लेकर आया ?

पीड़ामय इक करुण कहानी, साज रही है वही पुरानी।
मानव के उर की पहचानी, हंसती सी जैसे अनजानी॥
यौवन में भी रोना पाया —
ओ बसन्त क्या लेकर आया ?

आज अर्थ ही मापदण्ड है, जिससे जीवन खण्ड-खण्ड है।
रोटी की ज्वाला प्रचण्ड है, स्वार्थ जर्जरित सृष्टि खण्ड है॥
विषमता ही ने अलख जगाया—
ओ बसन्त क्या लेकर आया ?

भयभीत हुई पीली सरसों, खेतों में कैसी कांप रही।
आशंका से भर श्वेत कली, पत्तों में कैसी झांक रही॥
चहुँ ओर आतंक सा छाया—
ओ बसन्त क्या लेकर आया ?

कुसुमों में कुछ गंध नहीं है, पिक स्वर में माधुर्य नहीं है।
भावों में उल्लास नहीं है, राका में सौन्दर्य नहीं है॥
यह कैसा श्रृंगार बनाया —
ओ बसन्त क्या लेकर आया ?

स्वामी अर्थ दास है मानव, यह तो मानव में दानव है।
मानव जयी विजित हो दानव, तब ही तो मानव, मानव है॥
क्या मानवता का युग आया —
क्या बसन्त यह लेकर आया ?

वे सुख सपने लौट सकेंगे, बिछुड़े साथी मिल पायेंगे।
पृथ्वी पर ही स्वर्ग बनेंगे, मधुर-मधुर आलिंगन होंगे॥
क्या बसन्त नव यौवन लाया ?
ओ बसन्त क्या लेकर आया ?

— "राही"

समरकांत

आप अमर के पिता हैं। लक्ष्मी की अनन्य उपासना करना आपका मुख्य ध्येय है "चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय" वाली कहावत आपके चरित्र पर पूरी उतरती है। आप अमर को धन के लोभ में पटकना चाहते हैं, किन्तु अंत में असफल रहते हैं। आपके स्वभाव में क्रोध की प्रधानता है। आपके व्यवहार से अमर घर को त्याग देता है। आप एक बार मन्दिर प्रवेश में भी बाधक सिद्ध हुए, किन्तु अन्त में स्वीकृति भी आप ही ने दी। बोर्ड के अन्याय से द्रवित हो कर आप भी जेल गये। यह घटना आपके चरित्र को अधिक उज्ज्वल करती है। जो मनुष्य प्रारम्भ में हठी और स्वेच्छाचारी था, तथा जिसे गरीबों की दशा से अनभिज्ञ रहना पसन्द था, वही जब अंत में गरीबों के अधिकारों को लड़ने के लिए जेल में तपस्या करता है, तब उसके चरित्र में एक निखार आ जाता है। उपन्यास के इस पात्र का चरित्र निर्धन और धनी के समन्वय का सच्चा प्रतीक है। अपने पूर्व के जीवन की अपेक्षा पश्चात की घटनायें इसके चरित्र में सार्थक सिद्ध होती हैं।

अमरकांत

आप कर्मभूमि के नायक तथा समर कान्त के सुपुत्र हैं। पिताजी के कथनों पर केवल न्याय और सत्य को दृष्टिगत रख कर ही आप ध्यान नहीं देते थे। पिता ही नहीं आपकी पत्नी भी सदैव धन कमाने का परामर्श देती थी। आप सदैव पत्नी के व्यवहार से असंतुष्ट रहा करते थे। फलत एक बार आपने सकीना के प्रेम को स्वीकार कर अपने ध्येय को पलट दिया था। कुछ दिनों बाद आपका शरीर ग्रामीण किसानों की सेवा के सदुपयोग में आने लगा। गांव की सभी समस्याओं को दूर किया और उन्हें आधुनिक सभ्यता का पाठ पढ़ाया। किसानों के हित के लिए आपने अपने जीवन को जेल में झोंकने तक की चिन्ता न की। कितना एक मोह, आपका, किसानों के जीवन से लगा हुआ था। अंत में अपने दृढ संकल्प में सफल हुए।

वस्तुत: कर्मभूमि में पदार्पण कर आपने अपने जीवन को सफल बनाया। अपनी युवावस्था में ऐश्वर्य को लात मार कर तथा कष्टों को झेलकर दूसरों को सुख देना कितना भव्य आदर्श उपस्थित करता है। अतः संघर्षमय वातावरण में आशा और स्थायी सुख का संचार कर आपने अन्य पात्रों से अपने जीवन को कहीं ऊंचा उठाया।

सुखदा

सुखदा अमर की पत्नी है। इसने भी अपने पति की भांति अपने जीवन को जनसेवा के कष्टों में डाल दिया। इसकी गोद में एक नन्हा बच्चा था, फिर भी इसने हरिजनों को मन्दिर प्रवेश करवाया। बोर्ड से निराश्रितों के घर बनाने के लिए जमीन के लिए लड़ी, जेल यात्रा की और सदैव दीनों के हितों के लिए उन्मुख रही। इसके अतिरिक्त जीवन में इसने अध्यापन कार्य भी किया, कितना परोपकार था। इसने अपने वैभव की मर्यादा तोड़ी और स्त्री होते हुए भी वह साहसिक कार्य कर दिखाया, जिसे करते मनुष्य तक सहम जाते हैं। सुखदा का चरित्र उपन्यास में सर्वत्र ही उज्ज्वल है।

मुन्नी

देहात में क्रांति कर, तथा सत्यासत्य का निरीक्षण करने वाली मुन्नी भी अपने गुण की बेजोड़ थी। इस में उपदेशात्मक गुण अपार था, जो प्रभावशाली भी था। इसका उदाहरण दो गोरों की हत्या व जज के सन्मुख दिया गया बयान है। अमर के साथ यह भी गांव की प्रत्येक समस्या को सुलझाती थी।

अमर के साथ इसने भी जेल यात्रा की। जेल में भी कई परिश्रमी कामों को करने से यह कभी मुंह नहीं मोड़ती थी। इस प्रकार जीवन को परोपकारी बनाने में मुन्नी भी एक आदर्श पात्र है।

इनके अतिरिक्त डा० शान्तिकुमार, पठानिन, काले़खां, रेणुका, सलीम और नैना भी कर्मभूमि में अभिनय करने वाले सफल अभिनेता हैं। इन सभी पात्रों ने जेल यात्रा की और जिस मांग के समर्थक सुखदा और अमर थे उसी मांग को दृढ़ करने वालों में इन पात्रों का प्रभाव हाथ है। कालेखां ने तो परोपकार में अपने प्राण तक समर्पित कर दिए। नैना का बलिदान भी कम नहीं था। उसी ने अपने प्राणों की आहुति देकर कर्मभूमि यज्ञ को सफल बनाया जिसका सुखद फल सभी ने भोगा। कितनी निस्वार्थ भावना नैना ने दिखलाई। अमर को बहिन होते हुए इसने अमर की इच्छा पूरी करने में प्राण गवाकर भाई के तथा समाज पर होने वाले अत्याचारों की बाढ़ को रोका।

सलीम व शान्ति कुमार ने भी अपने तन, मन, धन से त्यागी बन कर्मभूमि में विजय पाई। इस प्रकार सभी पात्रों का चरित्र उपन्यास में आद्योपान्त सुन्दर हुआ है।

कथोपकथन

कर्मभूमि में कथोपकथन पूर्ण रूप से चित्रित हुआ है। अमर और समरकान्त के बीच जो वार्तालाप है उसमें भी एक समस्या अन्तर्हित है। उनके बीच में वाद विवाद होता है धन कमाने पर, सुखदा उचित परामर्श देती है पर अमर एक नहीं मानता है और सुखदा के तीक्ष्ण व्यंग्यों से परास्त हो जाता है। जज के समक्ष मुन्नी का बयान उपन्यास में मुख्य स्थान रखता है। उसका कथन बड़ा ही शिक्षाप्रद एवं बुद्धिमत्तापूर्ण था। इसके अतिरिक्त संघर्षमय वातावरण में तो सभी पात्रों ने कथोपकथन को चरम सीमा तक पहुँचा दिया है।

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास कथोपकथन की दृष्टि से भी खरा उतरा है। भाषा इसकी बोलचाल की है। पर संस्कृतनिष्ठ शब्द भी पर्याप्त हैं। मुहावरे एवं व्यंग्यात्मक वाक्यों की भरमार है। संवाद अवश्य कुछ बड़े हैं किन्तु उपन्यास के उद्देश्य में बाधक नहीं है। इस प्रकार समाज के स्वरूप को निखारने वाला, धनी-निर्धन, मजदूर-पूंजीपति, किसान-जमींदार व अछूतों के वैषम्य को निर्मूल करने वाला यह उपन्यास प्रेमचन्द जी की सफल रचना सिद्ध हुआ है।

भारतीय शौर्य की गौरवमयी कथायें

परमवीर चक्र प्राप्तकर्ताओं की अद्भुत वीरता

प्राणों पर खेलकर कर्त्तव्य की रक्षा

भारतीय गणराज्य के शुभावसर पर जिन चार वीरों को परमवीर चक्र प्रदान किया गया है उनकी वीरता इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जायगी। देश अपने सम्मान की रक्षा में अपने प्रत्येक सपूत से यही अपेक्षा करता है। ये कथायें प्रत्येक व्यक्ति की नसों में उष्ण रक्त दौड़ा देने की क्षमता रखती है। इसी लिए इस सप्ताह "वीर अर्जुन" के पाठकों के समक्ष हम जीवित कथाएं लेकर उपस्थित हो रहे हैं

तीन नवम्बर १९४७ को मेजर सोमनाथ शर्मा की कम्पनी को श्रीनगर घाटी के बेदगांव नामक गांव में शत्रु से लड़ने के लिए जाने की आज्ञा दी गई। वे अपने लक्ष्य स्थान पर तीन नवम्बर को पौ फटते ही पहुंच गये और उन्होंने गांव के दक्षिण में मोर्चा जमा लिया। ११ बजे शत्रु के प्रायः ७०० सैनिकों ने उनके मोर्चों पर तीन इंची मार्टर तोपों, मझोली और हल्की मशीनगनों व राइफलों से हमला कर दिया। शत्रु-दल की संख्या बहुत अधिक होने और मोर्चों पर तीन ओर से विध्वंसकारी गोलाबारी होने के कारण कम्पनी में भारी जन-हानि होने लगी।

मेजर सोमनाथ शर्मा ने पूर्ण रूप से यह अनुभव किया कि स्थिति अत्यन्त गम्भीर है और यदि होम होकर श्रीनगर जाने वाले मार्ग की रक्षा के लिए सैन्य-सहायता आने तक शत्रु को रोका नहीं गया तो श्रीनगर और हवाई अड्डे के लिए भारी खतरा पैदा हो जायगा। इसलिए वे बड़ी वीरता के साथ अपनी कम्पनी को शत्रु से डटकर लड़ते रहने के लिए प्रेरित करते रहे। इसके लिए वे खुले मैदान में हो कर अपनी टुकड़ियों के पास दौड़-दौड़ कर जाते थे, जिससे वे शत्रु की भारी गोलाबारी के बीच पड़ कर अचूक निशाना बनने के संकट का सामना करते रहे।

लगातार आगे बढ़ते हुए शत्रु पर गोलाबारी करने के लिए वे अपनी टुकड़ियों का डट कर नेतृत्व करते रहे। उन्होंने शत्रु की धुआंधार गोलाबारी के बीच में बिलकुल खुले आगे बढ़ने का खतरा उठा कर हवाई चिन्ह फैलाये, जिससे कि वायुयान अपने लक्ष्य का ठीक-ठीक पता पा सकें।

यह अनुभव करके कि सैनिकों के हताहत होने के कारण उनकी हल्की मशीनगनों की कार्रवाई का जोर घट रहा है, वह अफसर जिसके बायें हाथ पर पलस्तर चढ़ा हुआ था, स्वयं हल्की मशीनगनों में गोलियां भर-भर कर तोप-चियों को देने लगा। एक मार्टर गोला उसके गोला बारूद के बीच में आकर गिरा, जिसके धड़ाके के कारण वह वीर-गति को प्राप्त हो गया।

मेजर सोमनाथ शर्मा की कम्पनी अपने मोर्चे पर डटी रही और जब बचे-खुचे सैनिक बिलकुल घिर से गये तो वे पीछे हट आये। उनकी स्फूर्ति-संचारक वीरता के कारण शत्रु छः घंटों तक अटका पड़ा रहा और इस अवधि में और सैनिकों ने आकर इस होम में शत्रु का बढ़ाव रोकने के लिए मोर्चे जमा लिए।

उनकी वीरता, दृढ़ता और नेतृत्व के कारण उनके सैनिकों में ऐसी उत्ते-जना पैदा हुई कि यद्यपि संख्या में शत्रु-सैनिक सात गुने थे, फिर भी वे छः घंटों तक लड़ते रहे, जिसके एक घंटे पहले ही इस वीर अफसर की मृत्यु हो चुकी थी।

मेजर सोमनाथ शर्मा ने साहस और शौर्य का ऐसा उदाहरण उपस्थित किया है, जिसकी समता भारतीय सेना के इतिहास में कदाचित् ही मिलती है। अपनी मृत्यु के कुछ क्षण पहले ही उन्होंने ब्रिगेड के प्रधान केन्द्र में जो सन्देश भेजा था, 'शत्रु हमसे केवल ५० गज की दूरी पर है। उसकी संख्या हमसे कहीं अधिक है। हम पर विध्वंसकारी गोलाबारी हो रही है। मैं एक इंच भी पीछे न हटूंगा, बल्कि अन्तिम सैनिक तक और अन्तिम गोली तक बराबर लड़ता रहूंगा।'

●

६ फरवरी १९४८ को तैंधर की दूसरी चौकी में नायक जदुनाथ सिंह सं० २७९७२ एक अगली टुकड़ी की चौकी का नेतृत्व कर रहे थे जिसे, शत्रु के आक्र-मण के पूरे जोर का सामना करना पड़ा था। अत्यन्त विषम परिस्थितियों के बीच इस छोटी सी चौकी की रक्षा के लिए केवल ९ सिपाही थे। इस चौकी पर अधिकार करने के लिये शत्रु ने रह रहकर भीषण हमले किये। उसके आक्रमण की पहली भयानक लहर चौकी के किनारे तक आ पहुंची। बड़ी बहादुरी और श्रेष्ठतम नेतृत्व प्रदर्शित करते हुए नायक जदुनाथसिंह ने अपने सैनिकों का इस प्रकार नियोजन किया कि शत्रु को हड़-बड़ाकर वापस हटना पड़ा।

नायक जदुनाथसिंह के चार सैनिक घायल हो चुके थे, लेकिन उन्होंने पुनः उच्च कोटि के नेतृत्व का परिचय दिया और अपने क्षत विक्षत सैनिकों को शत्रु के दूसरे हमले का सामना करने के लिए फिर संगठित कर लिया। उन्होंने ऐसी शान्त चेतना और साहस से काम लिया कि उसके सैनिक फिर आ डटे और शत्रु के अगले आक्रमण का सामना करने के लिये कटिबद्ध हो गये। शत्रु पहले से भी अधिक संख्या में और अधिक दृढ़ता के साथ चढ़ आया। यद्यपि शत्रु की तुलना में इस चौकी के सैनिकों की संख्या कुछ भी नहीं थी, फिर भी नायक जदु-नाथसिंह के वीर नेतृत्व में उन्होंने मोर्चा जमाया। चौकी का हर एक सैनिक घायल हो गया। नायक जदु-नाथ सिंह की दाहिनी बांह घायल हो गई थी, फिर भी उन्होंने स्वयं आगे बढ़ कर तोपची की स्टेनगन सम्हाल ली। शत्रु सैनिक चौकी की दीवारों पर पहुंच चुके थे। पर नायक जदुनाथ सिंह ने फिर असाधारण योग्यता और उच्चतम वीरता से काम लिया। अपनी व्यक्तिगत रक्षा की तिलभर भी परवाह न करके शान्त चित्त हो कर बड़े साहस के साथ उन्होंने अपने सैनिकों को लड़ने के लिए उत्साहित किया। उन्होंने स्वयं गोला-बारी की ऐसी प्रलय मचा दी जिसके कारण निश्चत रूप से सिर पर मंडराती हुई पराजय विजय में बदल गयी और शत्रु दल अपने हताहतों को मिट्टी में लुढ़कता हुआ छोड़कर किंकर्तव्य विमूढ़ होकर उल्टे पांव भाग निकला। इस प्रकार असीम वीरता और असाधारण नेतृत्व तथा दृढ़ता के द्वारा नायक जदु-नाथ सिंह ने दूसरे हमले से भी चौकी की रक्षा की।

अब चौकी के सारे सैनिक बिलकुल घायल हो चुके थे। शत्रु ने चौकी पर अधिकार करने की ठान कर उतनी ही संख्या में अपनी तीसरी और अन्तिम चढ़ाई की। घायल नायक जदुनाथसिंह तीसरी बार शत्रु लोहा लेने के लिए सचमुच बिलकुल अकेले ही सन्नद्ध हो गये और अटूट साहस तथा दृढ़ता के साथ वे अपने संगर से बाहर आ गए। अपनी स्टेनगन से गोलियां बरसाते हुए उन्होंने अकेले ही आगे बढ़ते हुए शत्रु पर धावा बोल दिया। अचानक ऐसी परिस्थिति उपस्थित होने पर शत्रु दल छिन्न-भिन्न हो कर भाग निकला। लेकिन इस तीसरे आक्रमण में सिर और छाती में ही गोलियां लगने के कारण नायक जदुनाथ सिंह वीरगति को प्राप्त हो गये। इस प्रकार आगे बढ़ते हुए शत्रु से अकेले ही जूझ कर इस अप्राप्त-कमीशन अफसर ने महानतम वीरता तथा आत्म-त्याग का कार्य किया जिसके द्वारा उसने नौशेरा की रक्षा करने की लड़ाई में चरम संकट की घड़ी में अपनी टुकड़ी को ही नहीं, बल्कि सारी दूसरी चौकी को शत्रु के हाथों में नष्ट होने से बचा लिया।

●

आठ अप्रैल १९४८ को इंजीनियर दल के द्वितीय लेफ्टिनेंट राने घने पहाड़ी क्षेत्र में होकर नौशेरा से राजौरी जाने वाली २९ मील सड़क पर सुरंगों और मार्ग में डाली गई रुकावटों को साफ करने वाले दल के नेता थे।

उस दिन दक्षिणी नदपुर के पास प्रातःकाल ११ बजे जब द्वितीय लेफ्टि-नेंट राने अपने दल के साथ काम प्रारम्भ करने के लिए टैंकों के पास प्रतीक्षा कर रहे थे, उसी समय शत्रु ने उस क्षेत्र में मार्टर तोपों से भयंकर गोलाबारी शुरू

लान्सनायक करमसिंह परम वीर चक्र के विजेता

स्वर्गीय लान्सनायक जदुनाथसिंह के पिता

कर दी। सुरंग-सफा दल के दो व्यक्ति मारे गये और पांच घायल हो गये, जिन में स्वयं द्वितीय लेफ्टिनेंट भी थे। उन्होंने तुरन्त अपने दल का पुन: संगठन करके टैंकों को मोर्चे पर जमाने का काम प्रारम्भ कर दिया। सारे दिन वे शत्रु की मशीनगनों और मार्टर तोपों की भीषण गोलाबारी के बीच में अपने टैंकों के पास डटे रहे।

तीसरे पहर प्राय. ४॥ बजे बड़वाली पहाड़ी पर अधिकार कर लेने के बाद यद्यपि वे जानते थे कि अभी उस क्षेत्र से शत्रु बिलकुल हटा नहीं है, फिर भी उन्होंने अपने दल को आगे बढ़ाया और टैंकों के लिए मार्ग तैयार करना शुरू कर दिया। उस रात वे शत्रु के बिलकुल सामने उसकी मशीनगनों की बौछार के बीच में १० बजे तक जुटे रहे।

६ अप्रैल को प्रात: ६ बजते ही उन्होंने फिर काम प्रारम्भ कर दिया और तीन बजे तक लगे रहे जबकि टैंकों के लिए आगे बढ़ने का मार्ग तैयार हो गया। जब बख्तरबन्द गाड़ियों का दस्ता आगे बढ़ा तो वे स्वयं सबसे आगे की मार्ग दर्शक गाड़ी में बैठ कर चले। आध मील आगे जाने पर ही उन्हें चीड़ के वृक्षों से तैयार की गई सड़क-रोक का सामना करना पड़ा। वे तुरन्त उतर पड़े और सड़क रोकने वाले पेड़ों को बारूद से उड़ा दिया। बख्तरबन्द गाड़ियों का दल आगे बढ़ता गया। ३०० गज आगे चल कर फिर उसी प्रकार के सड़क-रोक को हटाना पड़ा। तब सायंकाल के प्राय. पांच बजने वाले थे। सड़क पहाड़ के चारों ओर सर्पगति से चक्कर लगाती हुई जा रही थी। आगे चल कर एक पुलिया को उड़ा कर सड़क-रोक तैयार किया गया था। पूर्व इसके कि वे अपना काम प्रारम्भ करते, शत्रु ने मशीनगनों से गोलियां बरसाना प्रारम्भ कर दिया। अदम्य साहस और नेतृत्व से काम लेते हुए उन्होंने एक दूसरा मार्ग तैयार कर डाला और दल फिर आगे बढ़ चला। अब रह-रह कर सड़क-रोक सामने पड़ने लगे। लेकिन वे उन्हें बारूद से उड़ा-उड़ा कर मार्ग साफ करते रहे। उस समय सायंकाल के ६। बज चुके थे और तेजी से अन्धेरा होता जा रहा था। मार्ग दर्शक गाड़ी के सामने चीड़ के पांच बड़े-बड़े वृक्षों से तैयार किया गया दुरूह सड़क रोक आ पड़ा, जिसके चारों ओर सुरंगें बिछी थीं, और मशीनगनें गोलियां बरसा रही थीं। द्वितीय लेफ्टिनेंट राने ने सड़क-रोक को हटा कर फेंकने का दृढ़ निश्चय करके सुरंगों को नष्ट करना प्रारम्भ कर दिया। लेकिन बख्तरबन्द गाड़ियों के दलपति ने स्थिति को समझ कर अपने दल को एक सुरक्षित स्थान में हटा लिया।

१० अप्रैल १९४८ को द्वितीय लेफ्टिनेंट राने ने शत्रु की मशीनगनों की बौछार के बीच में ही प्रातःकाल पौने पांच बजे टैंकों के एक दस्ते की सहायता से अपना काम प्रारम्भ कर दिया। केवल अपने दृढ़ संकल्प के बल पर ही उन्होंने ६॥ बजे तक सड़क रोक का सफाया कर डाला। सड़क के अगले १००० गज के हिस्से में सड़क-रोक और बारूद से ढहाई गई किनारे की चट्टानें भरी पड़ी थीं। इसके अतिरिक्त सारे क्षेत्र पर शत्रु मशीनगनों से गोलियों की बौछार कर रहा था। लेकिन घायल होने पर भी इस अफसर ने प्रशान्त साहस और अनुकरणीय नेतृत्व के साथ अपनी जीवन रक्षा की नितान्त अवहेलना करके भीम प्रयत्नों द्वारा १०॥ बजे तक सड़क को साफ कर दिया।

बख्तरबन्द दल आगे चल पड़ा और सड़क से हट कर तवी नदी के तल पर पहुंच गया। लेकिन द्वितीय लेफ्टिनेंट राने गोला बारूद के दस्ते के लिए मार्ग साफ करते रहे। दिन के दो बजे तक टैंक चिंगस पहुंच गये। द्वितीय लेफ्टिनेंट राने ने यह अनुभव किया कि सड़क को खोलना बड़े महत्व का कार्य है और वे रात के ६ बजे तक बिना भोजन और बिना विश्राम काम में लगे रहे।

११ अप्रैल १९४८ को उन्होंने फिर प्रातःकाल ६ बजे ही अपना कार्य प्रारंभ कर दिया और ११ बजे तक चिंगस वाले बाकी सड़क को बिलकुल साफ कर दिया। उस दिन वे रात के १० बजे तक काम में जुटे रहे और सड़क साफ करते रहे।

●

तिथवाल क्षेत्र में १३ अक्तूबर सन् ४८ को शत्रु ने बटालियन की 'ए' कम्पनी पर हमला किया, जिसकी एक बाहरी चौकी के दलपति लान्स नायक करमसिंह थे। भारी गोलाबारी के बाद शत्रु ने इस चौकी को अपना लक्ष्य बनाया। यद्यपि लान्स नायक करमसिंह की अपेक्षा शत्रु के पास दसगुने सैनिक थे, फिर भी वे अपने मोर्चे पर डटे रहे और शत्रु के हमले को विफल कर दिया। उनका एक सिपाही घायल हो गया। थोड़ी देर बाद शत्रु फिर चढ़ आया। लान्स नायक करमसिंह ने इस हमले को कुछ देर रोका। इसके बाद यह देख कर कि उनके पास गोला बारूद की कमी पड़ रही है, उन्होंने पीछे हटने का निश्चय किया। एक दूसरा सैनिक और स्वयं वे घायल हो गया। शत्रु के पास सैन्य सहायता का भारी जमघट था, इसलिए उन्हें सहायता पहुँचने की कोई आशा नहीं थी।

भीषण गोलाबारी के बावजूद लांस नायक करमसिंह अपने मुख्य मोर्चे पर सफलता के साथ पहुँच गये। अपने तीसरे साथी की सहायता से वे अपने दोनों घायल सैनिकों को साथ लेते आये। रास्ते में, जो हमारी सुरंगों से बिछे क्षेत्र में होकर गुजरता था, उन्हें शत्रु के साथ हथगोलों से लड़ कर आना पड़ा। इस प्रकार अपने अनुकरणीय कार्य और साहस के द्वारा उन्होंने पहले दो हमलों को विफल कर दिया और शत्रु की दो टुकड़ियों का बिलकुल सफाया कर दिया।

यद्यपि लान्स नायक करमसिंह घायल थे, फिर भी मुख्य मोर्चे पर पहुँचते ही वे अपने दल में जाकर डट गये। शत्रु ने फिर ऐसी धुंआधार गोलाबारी की कि नायक करमसिंह के प्लाटून के सारे बैंकर ढह गये और सारी खुली रेंगू खाइयां पट गई। शत्रु जिधर भी आया वहीं लान्स नायक करमसिंह आगे बढ़ कर उससे लोहा लेते रहे। वे एक बैंकर से दूसरे बैंकर को दौड़ कर जाते थे, अपने घायलों को हटाते थे और बाकी सैनिकों में उत्साह फूंकते थे। इसी समय नायक करमसिंह के फिर गोली लगी और वे घायल हो गये। लेकिन वह वीर अप्राप्त कमीशन अफसर इससे जरा भी विचलित न हुआ। वह बराबर लड़ता, घायलों की देखभाल करता और सैनिकों में, जिनकी संख्या तेजी से घटती जाती थी, जोश भरता रहा। दोपहर तक शत्रु चार हमले कर चुके थे, पर लांस नायक करमसिंह बराबर मोर्चा सम्हालते रहे।

तीसरे पहर प्रायः १ बजे शत्रु ने पांचवां धावा बोल दिया। इस बार वह ऐसी ठान आया था कि दो शत्रु सैनिक ठीक उस खाई के बाहर आ पहुँचे, जहां करमसिंह डटे हुए थे। चूंकि वे दोनों रेंगू-खाइयों के बीच में थे, इसलिए उन पर गोली नहीं चलाई जा सकती थी। लेकिन करमसिंह उनके लिये सेर के सवा सेर सिद्ध हुए। वे अपनी खाई से बाहर कूद पड़े और किर्च भोंक कर दोनों शत्रुओं का काम तमाम करके आनन फानन फिर अपनी खाई में आ पहुँचे। कोई समझ भी न पाया कि क्या से क्या हो गया? इससे शत्रु के पैर उखड़ गये और इस आक्रमण में भी उसे मुंह की खानी पड़ी।

शत्रु ने दो बार फिर हमला किया पर उसे वैसे ही उलटे पांव भागना पड़ा। प्राय ७ बजे सांयकाल लड़ाई समाप्त हुई, जबकि शत्रु करीब दो या तीन हजार गोले दाग चुका था और आठ बार आक्रमण करके हर बार पीठ फेर कर भाग चुका था। सारी लड़ाई भर लान्स नायक करमसिंह युद्धभूमि पर छाये रहे और उन्होंने कर्तव्य परायणता का अनुपम आदर्श उपस्थित कर दिया। वे अपने साथियों में स्फूर्ति का संचार करने वाले और शत्रु को दहला देने वाले सिद्ध हुए।

जमींदारी विनाश और भूमि व्यवस्था कानून

★ श्री चरणसिंह, सभासचिव

[पिछले अङ्क का शेष]

१६. प्रत्येक मध्यवर्ती को प्रतिकर दिया जायगा, जो उसकी 'पक्की निकासी' का आठ गुना होगा। इसके अतिरिक्त प्रत्येक मध्यवर्ती को जो दस हजार रुपया तक मालगुजारी देता है, निम्न-लिखित अनुसूचि के अनुसार पुनर्वास अनुदान भी दिया जायगा।

मालगुजारी की रकम	पक्की निकासी का गुणक
२५ रु० तक	२०
२५ रु० से ५० रु० तक	१७
५० रु० से १०० रु० तक	१४
१०० रु० से २५० रु० तक	११
२५० रु० से ५०० रु० तक	८
५०० रु० से २००० रु० तक	५
२००० रु० से ३५०० रु० तक	३
३५०० रु० से ५००० रु० तक	२
५००० रु० से १०००० रु० तक	१

१७. ठेकेदार का प्रतिकर उसके मध्यवर्ती के प्रतिकर में ही शामिल होगा, परन्तु किस ठेकेदार को कितना मिलना चाहिये, वह प्रत्येक मामले में अदालत यथाविधि फाइसा से करेगी।

१८. जिस मध्यवर्ती को जितना लगान मिलता है, गत १० साल की खतौनी के इन्दराज के आधार पर निकाली हुई सायर की जितनी सालाना औसत आमदनी होती है, तथा गत ४० साल के औसत से जितनी जंगलों की सालाना आमदनी होती है, उसके जोड़ में से मालगुजारी, अबवाब, कृषि आय कर, यदि वह मध्यवर्ती कुछ आय कर देता हो, तथा कुल आमदनी का १५ प्रतिशत बतौर प्रबन्ध व्यय और लगान की ऐसी बकाया, जो वसूल न हो सकती हो, काट कर जितना मुनाफा बचता है, वह उसकी पक्की निकासी कहलायेगी।

१९ प्रतिकर नगद दस्तावेजों, बाण्डों के रूप में अथवा अंशतः नकद और अंशतः दस्तावेजों के रूप में जैसा भी राज्य सरकार निश्चय करे, दिया जायगा।

२०. मध्यवर्ती का जो भी प्रतिकर तय हो जाय, उस पर कानून लागू होने के दिन से बेबाक होने तक अढ़ाई रुपया प्रतिशत प्रतिवर्ष ब्याज मिलेगा।

२१. यदि कानून लागू होने के दिन से ६ महीने के अन्दर किसी मध्यवर्ती का प्रतिकर अदालत द्वारा तय नहीं हो जाता है तो, उसके प्रार्थनापत्र देने पर सरकार उसको अन्तरिम प्रतिकर दे सकती है, जो बाद में तै हुए प्रतिकर में से काट लिया जायगा।

२२. कौन मध्यवर्ती और वह कितने प्रतिकर और पुनर्वास अनुदान का अधिकारी है वह हिसाब सन् १३५७ फसली के कागजात माल, (खेवट आदि) के इन्दराज के आधार पर लगाया व दिया जायगा और राज्य सरकार प्रतिकर या पुनर्वासन् अनुदान देने की अपनी जिम्मेदारी से सर्वथा मुक्त हो जायगी। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति जिसे उक्त कागजात के इन्दराज या उक्त अदायगी पर आपत्ति हो अपना अधिकार अदालत दीवानी से साबित करा सकेगा।

२३. प्रतिकर, व अनुदान का हिसाब लगाने के लिये प्रत्येक व्यक्ति अलग एक इकाई माना जायगा। परन्तु प्रतिबन्ध यह है कि अगस्त सन् १९४६ को या उसके बाद हिन्दू संयुक्त कुटुम्ब में कोई बटवारा क्यों न हो गया हो, कानून के लागू होने के दिन यदि पिता जीवित हुआ तो वह पुत्र पौत्रादिक क्रम वाली संतति के साथ संयुक्त कुटुम्ब की सम्पत्ति के सम्बन्ध में एक ही इकाई माना जायगा।

२४ जहां प्रतिकर पाने का अधिकारी वक्फ, ट्रस्ट या निबन्ध हो या वह नाबालिग हो किसी कानूनी नाका-बलियत के आधीन हो या हीन इयाती अथवा अन्य किसी प्रकार से सीमित स्वाम्य वाला हो, वहां सरकार उस व्यक्ति के लिये और उसकी ओर से प्रतिकर किसी बैंक में जमा कर देगी। परन्तु उस व्यक्ति को कानून के अनुसार अपने प्रतिकर का उपभोग करने में कोई बाधा नहीं होगी।

२५. जहां वक्फ, ट्रस्ट या निबन्धः

क पूर्णत. पुण्यार्थ या धर्मार्थ है वहां आय की उसकी पक्की निकासी में से वह धनराशि काटकर जो धारा २४ के अनुसार बैंक में जमा है, ढाई रुपया प्रतिशत् के हिसाब से ब्याज के बराबर है, शेष रकम उसको सदैव वार्षिक वृत्ति के रूप में दी जाती रहेगी।

ख. बिल्कुल पुण्यार्थ या धर्मार्थ ही प्रयोजनों के लिये नहीं है वहां उसको धारा १६ के अनुसार पुनर्वास अनुदान मिलेगा। जो धारा २४ के आधीन बैंक में जमा कर दिया जायगा, या

ग. अंशत: पुण्यार्थ या धर्मार्थ है और अंशतः दूसरे प्रयोजनों के लिये हैं वहां जितनी आय जिस उद्देश्य के लिये उपयोग होती है उसके हिसाब से वार्षिक वृत्ति दी जायगी और अनुदान बैंक में जमा हो जायगा।

गांव समाज और गांव सभा

२६. प्रत्येक क्षेत्र या मंडल के लिये जिसमें एक गांव या एक से अधिक गांव भी हो सकते हैं एक 'गांव समाज' स्थापित होगी जिसके वह सब व्यक्ति सदस्य होंगे जो उस मंडल में रहते हों या वहां भूमि-धर सीरदार अधिवासी या असामी के नाते भूमि रखते हों।

२७. इस कानून के लागू हो जाने पर राज्य सरकार किसी समय भी गजट विज्ञप्ति द्वारा घोषणा कर सकेगी कि निर्दिष्ट किए जाने वाले दिनांक से —

क. किसी खाते या बाग के अन्तर्गत भूमि को छोड़ अन्य सभी भूमि, चाहे वह किसी योग्य हो या नहीं।

ख. गांव की सीमाओं के भीतर स्थित सब जंगल.

ग. खाते, बाग या आबादी में अथवा खेतों की मेड़ों पर स्थित पेड़ों को छोड़कर अन्य सभी पेड़,

घ. सार्वजनिक कुंए,

ङ. मीनालय,

च. ऐसे हाट बाजार या मेले जो किसी मध्यवर्ती की सीर या खुदकाश्त की भूमि अथवा उसके बाग, अवध के इस्तमरारी पट्टेदार की भूमि या बाग तथा शहर मुअइयन या माफीदार की भूमि से भिन्न भूमि में लगते हों, व

छ- तालाब, पोखर, निजी नाव घाट, पानी की नालियां, रास्ते और आबादी के स्थल जो मंडल में स्थित हों और इस कानून के आधीन उत्तर प्रदेश राज्य में निहित हो गये थे, उस मंडल के लिए संस्थापित गांव समाज में निहित हो जावेंगे। किन्तु प्रतिबन्ध यह है कि यदि राज्य सरकार की राय में किसी गांव में उस भूमि का क्षेत्रफल जिसमें खेती न होती हो, गांव समाज की साधारण आवश्यकता से अधिक हो, तो राज्य सरकार को अधिकार होगा कि उक्त भूमि के किसी भाग को गांव समाज में निहित न करे और उसका जैसा आवश्यक समझे प्रबन्ध करे।

२८. गांव समाज की ओर से उक्त भूमि व सम्पत्ति का प्रबन्ध व नियन्त्रण पंचायत राज कानून के अधीन स्थापित गांव सभा करेगी। गांव सभा के कार्य व कर्त्तव्य निम्नलिखित होंगे।

क. कृषि का विकास और उन्नति।

ख. जंगलों और पेड़ों की रक्षा, रखाव और विकास।

ग. आबादी के स्थलों और गांव के रास्तों का रखाव और विकास।

घ. हाटों, बाजारों और मेलों का प्रबन्ध।

ङ. सहकारी खेती का विकास।

च. पशु पालन का विकास।

छ. खेतों की चकबन्दी।

ज. घरेलू धंधों के विकास।

झ. मीनालयों, कुओं और तालाबों का रखाव तथा विकास।

ञ. अन्य ऐसे विषय व कार्य जो राज्य सरकार निवत करे।

२९ बावजूद इसके जो ऊपर लिखा गया है राज्य सरकार को अधिकार होगा कि वह चाहे तब जंगलात, हाट, बाजार, मेलों, निजी नावघाट और पानी नालियों को गांव समाज से लेकर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अधिकार में दे दे।

३० प्रत्येक गांव पंचायत, जो गांव सभा की ओर से ऐसे कार्यों का सम्पादन और कर्त्तव्य का पालन करेगी जो इस कानून की ओर से उसे दिया जाय, अपने अधिक्षेत्र के प्रत्येक मंडल के लिए एक समिति स्थापित करेगी जो भूमि का प्रबन्ध और बन्दोबस्त करेगी।

३१. उपरोक्त समिति में गांव पंचायत के ऐसे सब सदस्य होंगे जो उस मंडल के हों जिसके लिये समिति स्थापित की गई हो, किन्तु यदि ऐसे सदस्यों की संख्या दस से कम हो तो गांव सभा के ऐसे सदस्य, जो तत्सम्बन्धी मंडल के हों, गांव समाज के सदस्यों में से इतने सदस्य चुन लेंगे, जिन्हें मिला कर समिति के सदस्यों की संख्या दस हो जाय।

खातेदारों तथा गांव सभा के मौलिक अधिकार

३२. इस कानून के अनुसार तीन प्रकार के खातेदार होंगे भूमि पर, सीरदार व असामी।

३३. भूमिधर को अधिकार होगा कि अपनी भूमि की चाहे से का विचार अर्थात् खेती करे, मकान राजपाल को लगावे, आटे को चक्की ... बनावे आदि, आदि।

३४ सीरदार को केवल करने को भांति खेती करने का, जिसके ... उद्यान करण, पशु-पालन, मत्स्य ... व कुक्कुट पालन भी आते हैं, का अधिकार होगा। यदि वह भूमि का खेती से भिन्न कोई उपयोग करता है तो गांव सभा उसको बेदखल कर सकेगी।

३५. भूमिधर को अपनी भूमि के मुन्तकिल, हस्तांतरित, करने का पूर्ण अधिकार होगा अर्थात् वह अपनी भूमि बेच सकेगा, हिबे कर, अर्थात् दान में दे सकेगा, वसीयत में दे सकेगा, तथा आड़, बन्धक, आदि सब कुछ कर सकेगा। यह अधिकार उसको सनद हासिल करने के दिन से ही हासिल होगा, परन्तु अदालत में ऐसा हस्तान्तरण इस कानून के लागू होने के उपरान्त ही मान्य होगा। हस्तांतरण के इस अधिकार पर दो प्रतिबन्ध हैं।

अ कोई भूमिधर ऐसा बैनामा या हिबैनामा नहीं कर सकेगा जिसके परिणाम स्वरूप पुण्यार्थ संस्थाय से भिन्न

कोई व्यक्ति इतनी भूमि का अधिकारी हो जाता हो, जिसमे से मिल कर उसके परिवार, अर्थात् वह व्यक्ति उसकी पत्नी या पति, उसकी नाबालिग संतान तथा यदि उक्त व्यक्ति स्वयं नाबालिग हो तो उसके माता पिता की समस्त भूमि ३० एकड़ से बढ़ जाये, यदि करता है तो वह हस्तांतरण पूर्ण रूप से अमान्य होगा और दे या दिये की हुई कुल भूमि गांव सभा के कब्जे में चली जायगी, तथा

ग. कोई भूमिधर अपनी भूमि को रहन दखली अर्थात् इस प्रकार का बन्धक न कर सकेगा, जिससे दिए गए या दिए जाने वाले रुपये की सुरक्षा, अदायगी के लिये बन्धक, रहन, की हुई भूमि में मुरतहिन, बन्धकी, को कब्जा दिया जाता हो या भविष्य में दिया जाने वाला हो, यदि करता है तो ऐसा रहन नामा बैनामा समझा जायगा और उस पर उक्त खण्ड ख में वर्णित निर्देश लागू होंगे ।

३६. उन दशाओं को छोड़, जिनकी व्यवस्था नीचे की दी हुई धारा ३७ में की गई है, किसी भूमिधर या सीरदार को किसी भी काल के लिए अपने खाते की भूमि पट्टे पर देने का अधिकार नहीं होगा। यदि इस नियम का उल्लंघन किया जाता है और पट्टेदार की कुल भूमि का क्षेत्रफल, उस भूमि को मिला कर जो उसे पट्टे पर दी गयी है, तीस एकड़ से अधिक नहीं होता है तो वह उसका सीरदार हो जायगा । उपरोक्त कुल भूमि का क्षेत्रफल तीस एकड़ से अधिक होता है तो पट्टेदार उस भूमि का सीरदार समझा जावेगा और उस पर पूर्वोक्त धारा ३५ । ख । के निर्देश लागू होंगे ।

परन्तु कोई ऐसी व्यवस्था, जिसके द्वारा खेतीबारी के कामकाज में सक्रिय सहायता का सहयोग देने के बदले किसी व्यक्ति को भूमि की उपज में हिस्सा मात्र पाने का अधिकार प्राप्त हो, 'पट्टे' की परिभाषा में नहीं आवेगी।

३७. ऐसा भूमिधर या सीरदार जो

क. अविवाहित, परित्यक्ता या विधवा स्त्री हो,

ख. पितृहीन नाबालिग हो,

ग. पागल या जड़ हो,

घ. ऐसा व्यक्ति हो, जो अन्धेपन या शारीरिक निर्बलता के कारण खेती करने में असमर्थ हो,

ङ. किसी स्वीकृत संस्था में अध्ययन करता हो और २५ वर्ष से अधिक आयु का न हो,

च. भारत की स्थल सेना, नौ सेना में भर्ती हो, अथवा

छ. कैदी या नजरबन्द हो,

अपना कुल कोई खाता यदि उसका कोई भाग पट्टे पर दे सकता है।

३८. कोई भूमिधर या सीरदार अपनी भूमि किसी अन्य भूमिधर या सीरदार से बदल सकता है। परन्तु दो यह प्रतिबन्ध होंगे कि बदले में मिली भूमि में वही अधिकार होंगे, जो बदले में दी गयी भूमि में थे, तथा ऐसा कोई तबादला विनिमय जिसके परिणाम स्वरूप दोनों में से किसी फरीक की भूमि ३० एकड़ से अधिक हो जाय, सही नहीं माना जावेगा ।

३९. तबादले की दशा को छोड़कर किसी सीरदार को अपनी भूमि मुन्तकिल हस्तान्तरित करने का अधिकार नहीं होगा। अर्थात् वह अपनी भूमि न बेच सकेगा, न ही दे कर सकेगा, न वसीयत कर सकेगा और न आड़ बन्धक आदि कर सकेगा। यदि करता है तो हस्तान्तरण बिलकुल व्यर्थ और बेअसर होगा और भूमि पर गांव सभा को कब्जा करने का अधिकार होगा।

४०. यदि कोई भूमिधर या सीरदार मर जाय तो उसके खाते में उसके स्वत्व का उत्तराधिकार नीचे लिखे क्रम से होगा ।

क. पुत्र पौत्रादिक क्रम में वंशज, किन्तु प्रतिबन्ध यह है कि पिता से पूर्व मरे हुए पुत्र के पुत्र या पुत्रों को, वे चाहे कितनी भी नीची पीढ़ी में हों, वह हिस्सा उत्तराधिकार में मिलेगा जो मृत पुत्र को यदि वह जीवित होता मिलता ।

ख. विधवा पत्नी,

ग पिता,

घ. विधवा माता,

ङ. दादा,

च. विधवा दादी,

छ पुत्र तथा पौत्रादिक क्रम के वंशजों में से किसी की विधवा ।

ज. विधवा सौतेली माता ।

झ. अविवाहित पुत्री ।

ञ. नवासा ।

ट भाई अर्थात् मृतक के पिता का पुत्र ।

ठ. अविवाहिता बहन।

ड. भतीजा अर्थात मृतक के पिता के पुत्र का पुत्र ।

ढ. दादा का पुत्र ।

ण. भाई का पौत्र ।

त. दादा का पौत्र,

४१. ऐसी भूमि का उत्तराधिकार, जिसका भूमिधर खेती से भिन्न उपयोग कर रहा हो, अपने अपने धर्म शास्त्र के अनुसार पहुँचेगा ।

४२ प्रत्येक भूमिधर और सीरदार को अपने खाते की तकसीम कराने का अधिकार होगा। परन्तु बटवारे की नालिश में उन सहखातेदार, जिसने पूर्वोक्त धारा ३७ के अधीन खेती करने में असमर्थ होने के कारण अपना हिस्सा दूसरे को उठा दिया हो, अथवा जिसने अपने हिस्से के सम्बन्ध में ही भूमिधरी अधिकार प्राप्त किए हों, के हिस्से को छोड़ कर अलग निकाल देने के बाद शेष खाते या खातों का कुल क्षेत्रफल साढ़े छः एकड़ या दस बीघे से अधिक नहीं बैठता है, तो अदालत खाते को सहखातेदारों में नीलाम कर देगी ।

यदि बटवारे का परिणाम यह होगा कि कोई खाता दस बीघे से कम का बन जावेगा तो अदालत को अख्तियार होगा कि चाहे नालिश खारिज कर दे या गांव सभा से कुछ भूमि, यदि उसके पास खाली पड़ी हो, दिलवा कर खाता बांट दे ।

४३. सीरदार अपनी भूमि को छोड़ दे या दो साल तक खेती के काम में न लावे तो वह खाली भूमि समझी जावेगी और उस पर गांव सभा कब्जा कर लेगी परन्तु ऐसा सीरदार यदि नाबालिग, पागल या जड़ है, तो गांव सभा उसकी ओर से भूमि किसी आसामी को उठा सकेगी ।

४४. भूमि का उपयोग करने, उसका हस्तान्तरण करने तथा उसे पट्टे पर देने के सम्बन्ध में आसामी पर वही पाबन्दियां लागू होंगी, जो सीरदार पर लगी हैं। परन्तु उसे तबादला करने या बटवारा कराने का कोई अधिकार नहीं होगा । भूमि का उपयोग न होने पर वह क्षेत्रपति के पास चली जावेगी ।

४५. मियाद खत्म होने पर, रहन या भरण-पोषण बेबाक होने पर भूमि में खेती असंभव हो जाने पर, असमर्थ क्षेत्रपति की नाकाबिलियत दूर हो जाने पर या वह स्वयं खेती करना चाहे उस दशा में तथा बकाया लगान की डिगरी के इजराय में आसामी अपने खाते से बेदखल किया जा सकेगा ।

४६. लावारिस भूमिधर या सीरदार की भूमि की मालिक गांव सभा होगी ।

४७. गांव सभा को अधिकार होगा कि उस भूमि को जो गांव सभा में निहित हुई हो तथा खाली भूमि अथवा उस भूमि को, जो इस कानून के आधीन उसके पास आई हो, किसी व्यक्ति को सीरदार के रूप में उठा दे ।

४८ उपरोक्त धारा ४७ के आधीन किसी व्यक्ति को सीरदार के रूप में भूमि उठाते समय गांव सभा निम्न लिखित तारतम्य का पालन करेगी —

क. सहकारी फार्म, यदि उस गांव में कोई स्थापित हो ।

ख. ऐसा खातेदार जो स्वत नहीं परन्तु लगान का दस या बारह गुना देकर भूमिधर हुआ हो ।

ग. उपरोक्त खंड (ख) में वर्णित भूमिधर से भिन्न भूमिधर या सीरदार ।

घ. उस मंडल में रहने वाला भूमिहीन मजदूर ।

ङ. कोई दूसरा व्यक्ति ।

किन्तु प्रतिबन्ध यह है कि उन दशाओं में जहां खंड (ख) और (ग) लागू होते हैं, ऐसे खातेदार को केवल उतनी ही भूमि मिलेगी, जितनी उसके पास की कुल भूमि के क्षेत्रफल को साढ़े छः एकड़ या दस बीघे कर देने के लिए पर्याप्त हो ।

४९ यदि ८ अगस्त १९४६ के बाद किसी मध्यवर्ती ने ऐसी भूमि, जो सार्वजनिक पड़ाव, श्मशान या कब्रिस्तान, तालाब, रास्ता या खलिहान थी, अपनी जोत में कर ली या किसी व्यक्ति को काश्तकारी या बागदारी पर उठा दी, तो गांव सभा नालिश द्वारा उस भूमि को अपने दखल में ले सकती है । ऐसी भूमि का काश्तकार भूमिधर बन गया है, तो उसका रुपया वापिस कर दिया जायेगा ।

कुलपति नरेन्द्र निर्जन साधना के लिए अपने घर से निकले थे। पर सुरम्य शुक्ला के तट पर विद्यार्थियों को शिक्षा दान देने का लघु प्रयास विराट गुरुकुल के रूप में परिणित हो चुका था। राजपाल और राघवेन्द्र आचार्य नरेन्द्र के प्रमुख शिष्यों में से थे। गुरुकुल की सम्पूर्ण शिक्षा समाप्त कर वह दोनों विद्यार्थी गुरु के प्रेरणाप्रद सन्देश के साथ जीवनक्षेत्र में प्रवेश करते हैं, तथा जीवन और जगत की समस्याओं का समाधान ढूंढने की ओर अग्रसर होते हैं। राघवेन्द्र आचार्य दुबे के सम्पर्क में आकर गांधीवाद की ओर प्रवृत्त होता है। इधर राजपाल अनेक प्रकार की मानसिक उथल-पुथल के पश्चात् राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की आवश्यकता का अनुभव करता है तथा दृढ़ चित्तता से उसी कार्य में लग जाता है। राजपाल अपने पूर्व सहपाठी आनन्द के सम्पर्क में आता है, जो साम्यवादी विचारधारा से पूर्णतया प्रभावित है। इस प्रकार दोनों ही अपने निर्दिष्ट मार्ग की ओर बढ़ रहे हैं। राघवेन्द्र आचार्य दुबे के अधिक सम्पर्क में आता है, इसी बीच उसका परिचय एक मुस्लिम महिला जेबुन्निसा से हो जाता है जो उसकी ओर कुछ आकर्षित होने का ढोंग रचती है। राजपाल के प्रयत्नों से लीला उच्छृंखल कम्यूनिस्ट युवकों के फन्दे से छूटती है। उधर आचार्य दुबे द्वारा जेबुन्निसा से विवाह करने का विचार शैलिनी राघवेन्द्र व राजपाल को पता चलता है।

[गताङ्क से आगे]

[१७]

बात बहुत लम्बी थी। राजपाल पर उसका आघात भी हुआ था, फिर भी उसने शैलिनी को समझाते हुए संक्षेप में कह डाली। उसके मत से हिन्दू-मुस्लिम विवाह अधर्म नहीं था, किन्तु क्या उनका प्रेम एक-दूसरे के संस्कारों से साम्य था और क्या समाज उसका अनुमोदन कर रहा था। क्या इस प्रकार की परम्परा में समाज अपना मार्ग निश्चित कर सकता है? राजपाल व्यथित हो उठा! पर इसका कारण भी राजपाल जानता था — उनके ऊपर होने वाले संस्कार, जिनमें नैतिकता को मजहब के संकुचित विचारों में मान कर उसकी अवहेलना की गई। समाज क्या कहेगा? और देश का भविष्य कैसा है? मुझे क्या करना उचित है, क्या नहीं? आदि प्रश्नों को उठाने की शक्ति इस अनैतिक प्रकृति के कारण प्रायः उनमें से नष्ट हो गई। राजपाल को आचार्य पर क्षोभ था — अपने समाज पर भी और अपने देश के भविष्य पर भी।

शैलिनी भी दुःखी हो उठी।

'तो क्या यह उचित है कि पिताजी को मैं इस मार्ग पर अग्रसर होने न दूं।' उसके नेत्र डबडबा आये। 'क्योंकि मेरा भी तो धर्म है, समाज सम्वर्धन—समाज रक्षण,' उसने धीरे से कहा।

राजपाल शैलिनी के स्वभाव से परिचित था। उसमें समाज के लिए एक टीस थी, वह भी अपने समाज के लिए सब कुछ करने को तत्पर थी। उसका मन प्रसन्न हो उठा। उसने कहा— 'नहीं, तुम्हें अभी केवल इतना ही करना है, जिससे पिताजी के जीवन में और कोई परिवर्तन हो जावे। समाज के एक व्यक्ति के अनैतिक होने का अर्थ होता है सम्पूर्ण समाज को सचेत होकर उस नैतिकता के संक्रामक रोग से अपने-आप बचाना।'

शैलिनी अब अपने आंसू नहीं रोक सकती थी, वह रो रही थी।

और राजपाल कह रहा था — 'बहिन, तुम चिंता क्यों करती हो। तुम्हारा भाई राजपाल तुम्हें दुखी नहीं देख सकता।'

राजपाल जब लौटा तो उसका हृदय कुछ भारी था — वह कुछ विचार कर रहा था।

× × ×

राघवेन्द्र ने जब से सुना कि आचार्य का विवाह, उसकी कल्पना की मूर्ति बेगम से निश्चित हो गया है वह अपने आपको सम्हालने में असमर्थ था। गुरुकुल से विदा होकर जब उसका अनुभवहीन मन नगर की चारदीवारी में पहिली बार भटका था, तो उसे आश्चर्य हुआ था। आश्चर्य और कौतूहल के बीच नगर से आत्मीयता भी हो गई थी। उसे 'असतो मा सद् गमय, तमसो मां ज्योतिर्गमय. मृत्योर्माऽमृतं गमय' के सिद्धान्त अब फीके दिखाई पड़ रहे थे— आचार्य नरेन्द्र के सिद्धांत अब अलौकिक समझ में आ रहे थे। वह भोगना चाहता था सुख। आनन्द, चरम आनन्द अब उसका लक्ष्य नहीं था।

यौवन के कौतूहलस्मित प्रश्न का उत्तर कैसे मिला, बेगम में! वह खोज रहा था सुख, और उसने अनुभव किया, बेगम — सुख की अतृप्त प्यास! और आचार्य उसके आदर्श! उसे उन पर श्रद्धा थी, प्रेम था और उनकी देशभक्ति पर अभिमान भी।

'पर उसमें सुख लूटने की शक्ति नहीं है,' राघवेन्द्र विह्वल हो उठा। जेबुन्निसा कितनी मोहक है? क्या प्रेम इसी को कहते हैं,' राघवेन्द्र ने सोचा। 'यह प्रेम तो नहीं है, आचार्य की वासना और मदान्धता का स्वरूप हो सकता है।' और अब तो उसे उनकी देश सेवा में भी शंका हो उठी। 'और कांग्रेस! वह अब कांग्रेस के विरुद्ध नवीन मोर्चा निर्माण करेगा। कांग्रेस अब कुछ ही लोगों की सम्पत्ति है!' उसको दुःख-दर्द से भरी कल्पनाओं ने उसे हताश कर दिया था, वह सोचने में असमर्थ था।

× × ×

उसने निश्चय कर लिया था कि वह अब वहां नहीं रहेगा। अब उसे वह स्थान छोड़ते हुए दुःख नहीं था। इतने दिनों के सम्पर्क से उसके भी अपने कुछ मित्र थे — वह अब निस्सहाय नहीं था।

'पर क्यों नहीं, एक बार बेगम से मिल लूं।' राघवेन्द्र ने सोचा — 'यद्यपि उसने मुझसे विश्वास घात किया है तो भी मैं तो उससे प्रेम करता हूं।' राघवेन्द्र अपनी इस निर्बलता पर स्वयं दुखी था।

'नहीं, वह अब किसी से नहीं मिलेगा।' उसने कहा, और उसने दो पल विचार किया। फिर राघवेन्द्र किसी को न मिल सका।

और दूसरे दिन जब आचार्य ने देखा — राघवेन्द्र का कमरा सूना है, वे ठहाका मार कर हंस पड़े। उन्हें उस असफल प्रेमी पर क्षोभ था।

और जब बेगम ने सुना, वह कह उठी — 'चलो कांटा अपने-आप टूट गया।'

पर शैलिनी के हृदय में दुःख था, राघवेन्द्र पर साथ ही इस प्रकार में अनेकों लक्ष्य-हीन युवकों पर।

[१८]

राजपाल के द्वारा आनन्द को जीवनयापन के पर्याप्त साधन सुलभ हो गये थे। वह भी अपनी रुचि के अनुकूल अपने कार्य को सुचारु रूप से पूर्ण करने में व्यस्त हो गया था!

लीला ने जब से पार्टी से त्यागपत्र दिया था, उस क्षेत्र में काफी सनसनी थी। कामरेड मोहन और उसके साथी इस सब का भेद आनन्द और उसके मित्र राजपाल को ही देते थे। पर लीला के जीवन की पृष्ठ भूमि अब बदल चुकी थी। वह भारतीय जीवन दर्शन के विभिन्न अंगों का अध्ययन किया करती थी और उन पर मनन भी। उसे मानो अपने प्राचीन मार्ग पर अग्रसर होते हुए प्रसन्नता थी! उसका स्वस्थ मानस अब उतना चपल नहीं था—वह किसी पूत भावना से जीवन में परिवर्तन करने को तत्पर थी!

राजपाल के इस व्यावहारिक जीवन के कारण उसका समाज के उस वर्ग में पूर्ण सम्मान था जो शासन की वर्तमान स्थिति से असन्तुष्ट और संत्रस्त था किन्तु वह यह सब जानते हुए भी अपना कोई विशेष दल निर्माण नहीं करना चाहता था। 'देश की वर्तमान स्थिति में व्यक्ति का महत्व समष्टि के महत्व से कभी भी मूल्यवान नहीं हो सकता' यह मानो उसकी भूमिका थी।

शैलिनी के द्वारा आचार्य के विवाह का समाचार सुन कर वह कुछ व्यथित हो गया था। उसे समान रूप से आनन्द और लीला के विषय में भी चिन्ता थी!

वाणी-वन्दना ★

लेखक—
[कमलाकर 'साहित्यरत्न']

देवि मैं वर मांगता हूं।
वन्दना को मैं तुम्हारी बीन का स्वर मांगता हूं।
नव कमल की पुलकियों में विमल नीराजन तुम्हारा,
मृदु चरण-राजीव छूले भावना ने कर पसारा,
दूर हो उरतम किरण सी स्मिति मनोहर मांगता हूं।
देवि मैं वर मांगता हूं।

शान्त मानस-स्वप्न-शतदल पर शरद की चन्द्रिकी सी,
अब तुम उतरो चितिज से एक स्वर्गिक रागिनी सी,
अधर पर अपने सरसतम राग निर्झर मांगता हूं।
देवि मैं वर मांगता हूं।

ध्वनित मेरे कण्ठ से हो हृदय शत-शत कोटिजन का,
भाव-पट पर नृत्य हो जग दुःख सुख विद्युत मिलन का,
मौन नश्वर बीन पर मैं स्वर अनश्वर मांगता हूं।
देवि मैं वर मांगता हूं।

किन्तु 'लीला के जीवन में परिवर्तन कर उसे भारतीयता की ओर अग्रसर करने में आनन्द का क्या हाथ है और आचार्य एक कलुषित विचारों की आड़ में अपनी वासना तृप्त करना चाहते हैं फिर भी समाज का अनुमोदन लीला और आनन्द के प्रेम संस्कारों को दृढ़ करने के लिये आवश्यक है।'

× × ×

'भाई आनन्द, तुम्हारे प्रेम व्यवहार को समाज सांस्कृतिक रूप देना उचित समझता है और इसीलिये मैंने तुम्हें बुलाया है,' राजपाल ने स्वीकृति अपेक्षित दृष्टि से आनन्द की ओर देखते हुए कहा।

'क्यों, क्या आपको भी इस विषय में कुछ शंका है भाई राजपाल!'

'शंका नहीं आनन्द! आज विवाह का जो सार है उसमें पुरुष और स्त्री के अनुमोदन के लिये कोई स्थान नहीं है। हमारे यहां विवाह सांस्कृतिक बन्धन है, उसका सामाजिक रूप भी है और व्यक्तिगत भी। इसलिए इस विषय में तुम्हें लीला से सलाह कर लेना उचित है और अपने परिवार से भी।'

आनन्द सब कुछ समझते हुए समझना नहीं चाहता था। व्यक्तिवाद के संस्कार उसकी आकांक्षाओं पर समाज की मुहर लगते नहीं देखना चाहते थे! किन्तु उसने समाज शास्त्र अध्ययन किया था और राजपाल, वह उससे क्या कहे। उसने झिझकते हुए कहा—

'तो क्या फिर हमें उन्हीं पुरानी बातों की शरण लेनी पड़ेगी?'

'नहीं, आनन्द! तुम इसे समझने में जल्दी मत करो! नवीनता प्राचीनता का प्रारूप है और इस शाश्वत सृष्टि में जो जो कला प्राचीन है वह आज नवीन, और आज जो नवीन दिखाई पड़ रहा है वह कल प्राचीन हो जावेगा। हमें केवल प्राचीनता से घृणा नहीं करनी चाहिये। आज का युवक मानो प्राचीनता का शत्रु है किन्तु क्या कभी उसने विचार किया कि उसका जन्म उसी प्राचीनता में हुआ है।'

बात विचित्र सी ही थी। आनन्द बात से सहमत तो अवश्य था, किन्तु उसे लीला के विषय में शंका थी। 'समाज की जिस उन्मुक्त अवस्था में वह पली हुई है, क्या वह भी इस प्रकार के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेगी? फिर पिता जी, वे तो देवता हैं।

कुछ क्षण रुक कर राजपाल ने पुनः कहना प्रारम्भ किया—

'तो सम्भवतः तुम यह विचार कर रहे हो कि लीला अनुमोदन देगी अथवा नहीं! यदि आत्म-विश्वास है तो पूछने में कोई भय नहीं होना चाहिए और प्रेमविवाह का विचार है तो मैं इससे सहमत नहीं हूं क्योंकि विवाह यदि नैतिक स्तर के अनुरूप नहीं हुआ तो वह प्रेम का परिहास ही होगा! राजकीय बंधन उनमें उस आत्मीय प्रेम का स्फुरण नहीं कर सकते!'

'नहीं, मैं भी इस प्रेम विवाह को अनुचित समझता हूं। प्रेम हृदय की अनुभूति है। उसके लिए हृदय में शाश्वत प्रेमांकुर होना आवश्यक है। खैर मैं अनुमति ले लूंगा।' बात बदलते हुए आनन्द ने कहा—'आज नगर में आचार्य दुबे के विवाह की बड़ी धूम है, सुना है उसमें पंडित और मौलवी दोनों ही बुलाये गये हैं।'

'हां, यह भी एक समस्या है। मैंने आज एक बात और सुनी है कि राघवेन्द्र भी बेगम से प्रेम करता था और अपनी असफलता पर क्षुब्ध हो कर वह कहीं चला गया है। सुना है वह प्रतिक्रियावादी बन गया है।'

'आपको कैसे मालूम!'

'रोशिनी के द्वारा मुझे कुछ ऐसा ज्ञात हुआ है!'

'हां, कुछ शंका अवश्य की जा सकती है। राघवेन्द्र उन महत्वाकांक्षी युवकों में से है जो कुछ भी कर सकता है,' आनन्द ने कहा।

'किन्तु हमें तो समाज का उत्तरदायित्व अनुभव करना चाहिए। इस संक्रमण अवस्था में हम प्रत्येक में अपनी आत्मीयता के दर्शन करें और उसी एकात्मता से समाज की रक्षा कर सकें। चेतन शक्ति का आशीर्वाद हमारे साथ है।' राजपाल ने कहा।

क्रमशः

शरीर-रचना और गुण-भेद

★ श्री रघुवीरशरण दिवाकर

पुरुष और स्त्री दोनों ही मनुष्य हैं और दोनों में नैसर्गिक व प्राकृतिक सम्बन्ध है। एक तरह से दोनों मनुष्य के आधे अंग हैं। पुरुष स्त्री की कमी पूरी करता है और स्त्री पुरुष की कमी पूरी करती है, पूर्ण मनुष्य की निष्पत्ति दोनों के संयोग में ही है। शिव जी के विषय में हिन्दुओं की जो यह मान्यता है कि उनका आधा शरीर पुरुष रूप है और आधा शरीर स्त्री रूप है, वस्तुस्थिति की दृष्टि से असत्य भी हो पर यह चिरन्तन सत्य उससे बहुत ही सुन्दरता के साथ प्रकट होता है कि स्त्री और पुरुष दोनों मनुष्य के आधे आधे अंग हैं और दोनों का संयोग ही पूर्ण मनुष्य की प्रतिष्ठा या स्थापना है। अनेक देवों व देवियों की कल्पना तथा सीता-राम, लक्ष्मी-नारायण व राधा-कृष्ण आदि की युगल रूप में प्रतिष्ठा भी यही दृष्टि-कोण प्रकट करती है। वैज्ञानिकों की यह धारणा कि आदि काल में सृष्टि के प्रारम्भ में एक ही व्यक्ति पुरुष और स्त्री दोनों होता था अथवा एक ही मनुष्य के शरीर में पुरुषत्व और स्त्रीत्व के सब गुण होते थे और आपस में ही वे एक दूसरे के पूरक भी होते थे, सत्य हो या न हो पर उससे भी यही भाव व्यक्त होता है। पुरुष और स्त्री के विभिन्न शारीरिक अंगों व अवयवों के सूक्ष्म निरीक्षण, परीक्षण व अध्ययन से आज का शरीर विज्ञान भी ऐसी मान्यता रखता है कि वस्तुतः पुरुष और स्त्री के शरीर पूर्णतः समान हैं, दोनों के सब अंग व अवयव एक से हैं, कोई भी मूल अन्तर वहां नहीं है सिर्फ अन्तर इतना ही है कि पुरुष के कुछ अंग विशेष उन्नत व विकसित हुए हैं और स्त्री के कुछ दूसरे अंग विशेष उन्नत व विकसित हुए हैं, यह भी इसी सत्य का प्रतिपादन करता है कि पुरुष और स्त्री मनुष्य के ही दो रूप हैं, उनमें कोई मौलिक अन्तर या कोई विरोध नहीं है। ऐसी भी कुछ घटनाएं हाल ही में, हुई हैं और जिनपर अविश्वास करने के लिए हमारे पास कोई कारण नहीं है। एक स्त्री में धीरे धीरे परिवर्तन हो कर वह एक पुरुष बन गई है। युरोप में एक स्त्री ने पुरुष होकर अपने पति से तलाक लिया और फिर एक स्त्री से शादी की और उससे कई बच्चे हुए, यह घटना तो कल की ही है। इस तरह की घटनाएं भी यही सत्य सिद्ध करती हैं कि पुरुष और स्त्री मूलतः एक हैं, अभिन्न हैं। हां बाह्य दृष्टि से उनके विकास की दिशाएं अलग अलग हैं। शरीर-रचना या लिंगभेद की दृष्टि से दोनों में भिन्नता है ही तभी तो एक मनुष्य पुरुष है और दूसरा स्त्री।

कुछ विशेषज्ञों का मत है कि स्त्री और पुरुष की शरीर-रचना में जो भिन्नता है उसके कारण मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी दोनों के विकास में अन्तर पड़ा है। इस मत के अनुसार समाज व्यवस्था, अर्थ व्यवस्था, राज्यव्यवस्था आदि अन्य बाह्य परिस्थितियों को स्त्री और पुरुष के शारीरिक अथवा मनोवैज्ञानिक या मानसिक विकास के अन्तर का श्रेय उतना नहीं है जितना शरीर-रचना-भेद जन्य सम्पूर्ण स्वभाव व प्रकृति के मूल आधारभूत भेद को है। इसका अर्थ यह है कि समान वातावरण में भी अथवा ऐसी स्थिति में भी जिसमें स्त्री और पुरुष के अपने अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए समान सुविधाएं हों, दोनों के व्यक्तित्व का निर्माण एक-सा होना असम्भव है। वहां पुरुष और स्त्री के व्यक्तित्व में पाये जाने वाले भेदों या अन्तरों को मौलिक जन्मगत तथा उनके शरीर-रचना विशेष से सम्बन्धित या अपेक्षित माना गया है, कृत्रिम या बाह्य-परिस्थिति जन्य नहीं। इस विषय में काफी खोज भी की गई है। बचपन से ही लड़के ज्यादह फुर्तीले, उग्र, तोड़ फोड़ करने वाले, गंदे, अवज्ञाकारी उद्दंड, होते हैं जब कि लड़कियां प्रायः शांत कम उग्र कम तोड़-फोड़ करने वाली अधिक स्वच्छ और आज्ञाकारी तथा कम उद्दंड होती हैं। पुरुष अधिक उद्यमी, जोशीले, प्रगतिवादी, शक्तिशाली, स्वातन्त्र्यप्रिय साहसी व व्यवसायी होते हैं, जबकि स्त्री में स्थिरता, सरलता, रूढ़ि प्रियता, सहानुभूति, धैर्य तथा शांति की क्षमता अधिक होती है। स्त्री में स्मरण शक्ति अधिक है, पुरुष में विचार-शक्ति की प्रधानता है। इस तरह भिन्न-भिन्न विशेषज्ञ अपनी अपनी खोज से अलग अलग परिणामों पर पहुँचते हैं। यूं सूक्ष्म विश्लेषण करें तो उनके परिणामों में परस्पर विरोध भी दिखाई देगा और ऐसी हालत में मूल-अमूल का, कृत्रिम और प्राकृतिक का अथवा अंतरंग और बाह्य का अलग-अलग रूप में देखना कठिन ही नहीं असंभव है। साथ ही जिन गुण भेदों के सम्बन्ध में मतैक्य है, उनमें भी ऐसी सीमा निर्धारित करना दुःसाध्य है, जिसके एक ओर स्वभाव हो और एक ओर विभाव या जो प्राकृतिक और कृत्रिम के ठीक मध्य में हो।

यही कारण है कि इस मत के विरुद्ध कुछ विद्वानों का ऐसा मत भी है कि स्त्री-पुरुष में शरीर रचना की दृष्टि से अन्तर होते हुए भी गुणों की दृष्टि से कोई मौलिक अंतर नहीं है, जो कुछ अन्तर दिखाई देता है, उसका कारण हजारों वर्षों से चले आते हुए संस्कार तथा परिस्थितियों की वह विषमता है, जिसके कारण स्त्री और पुरुष को विकास के लिए समान रूप से सुविधाएं नहीं मिल पाती हैं। आज के युग के प्रायः विद्वान इस दूसरे मत को ही मान्य करते हैं। अनेक विशेषज्ञों ने मानव प्रकृति का गंभीर अध्ययन करके यह निर्णय किया है कि वास्तव में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से स्त्री और पुरुष मूलतः एक हैं, विकास विभिन्नता परिस्थितियों का कार्य है। बहुत सम्भव है कि स्त्री पुरुष की समानता या स्त्री के उत्कर्ष की उत्कट भावना जो, वर्तमान युग की एक मुख्य विशेषता है, व्यक्त या अव्यक्त रूप से इस अनुसन्धान की तह में अपना काम कर रही हो, पर यह निश्चित है कि पहले मत के स्थान की उसने पूर्ति नहीं की है तो, उस मत की अपूर्णता को इसने अवश्य दूर किया है। दोनों ही विचारधाराओं के लिए एक कृत्रिम आधार सुलभ है, जहां दोनों ही सिद्धांत बहुत पास-पास ही दिखाई नहीं देंगे, बल्कि एक पूर्ण सत्य का दिग्दर्शन करते हुए भी दिखाई देंगे

सचमुच शरीर रचना व परिस्थिति का मिल कर स्त्री और पुरुष के गुण व स्वभाव पर इस रूप में प्रभाव पड़ता है कि मनुष्य के रूप में दोनों में जो समान मानवीय गुण विद्यमान हैं, उनमें से कुछ का अपेक्षाकृत अधिक विकास स्त्री में हो पाता है और कुछ का पुरुष में, गुण सभी दोनों में रहते हैं, पर उनमें से कुछ में तरतमता आ जाती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि मानसिक या मनोवैज्ञानिक दृष्टि से दोनों का वैदिक जीवन समान है, पर एक रूप नहीं है। फिर दोनों स्त्री और पुरुष को परिस्थितियां समान हों, यह भी तो सम्भव नहीं है। पुरुष पिता है, स्त्री माता है, यह भेद परिस्थितियों में परिवर्तन लायेगा और काफी दूर तक। जो परिस्थितियां कृत्रिम हैं या जिनका आधार प्रकृति नहीं है, उनमें समानता लाई जा सकती है, पर प्रकृति जन्य भेदों के आधार पर जो परिस्थितियों में भेद अनिवार्य रूप से होगा ही। इस तरह शरीर रचना का भेद परिस्थितियों में भी भेद करता है। और फिर इन परिस्थितियों के असर से स्त्री-पुरुष के विकास में अंतर पड़ता है। यहां दोनों विचारधाराएं एक दूसरे से मिलती हुई दीखती हैं।

पुरुष पिता की अपेक्षा निश्चय ही स्त्रीमाता का सम्मान से कहीं ज्यादह

[शेष पृष्ठ २० पर]

बालकों के अपराध की रोकथाम

★ श्री गोवर्धनदास मेहता

छात्र—मुझे बतलाइये कि आजकल भारत में बालकों के अपराधों में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि क्यों होती जाती है?

अध्यापक—समस्त देश में फैली हुई चरित्रहीनता, अनैतिक वातावरण, माता-पिता की लापरवाही, अशिक्षा, अज्ञानता तथा बुरी संगति ही ऐसे कारण हैं, जिनसे हमारे देश के होनहार बालक अज्ञानवश अपराध करने पर उतारू हो गये हैं। जहां बालकों को स्वतन्त्र देश के योग्य नागरिक बनना चाहिए, वहां वे चोरी करना, जेब कतरना, शराब पीना आदि खराब आदतों के शिकार हो रहे हैं।

छात्र—तो हमारी सरकार इन अपराधों को रोकने के लिए कोई कदम क्यों नहीं उठाती?

अध्यापक—हमारी सरकार के सामने एक नहीं, हजारों महत्वपूर्ण समस्याएं हैं, जिनका समाधान उसे करना है, फिर भी बालकों के अपराध की रोकथाम के लिए सरकार बराबर प्रयत्न करती रही है तथा भविष्य में केन्द्रीय धारा सभा द्वारा एक बिल भी पास किये जाने की आशा है। लेकिन तुम्हें यह समझ लेना चाहिए कि बिल पास कर देने मात्र से बालकों के अपराध की समस्या हल नहीं हो सकती। इसके लिए तो ऊपर बतलाए गये कारणों को दूर करना जरूरी है।

छात्र—इस दिशा में विभिन्न प्रान्तों (अब राज्यों) में क्या व्यवस्था कर रखी है?

अध्यापक—भारत में अभी बालकों के अपराध के मामले को सुलझाने की तरफ लोगों का ध्यान बहुत कम गया है और जब तक लोग सरकार को उसके कर्तव्य का ज्ञान नहीं कराते, तब तक उसके कानों पर कठिनाई से जूं रेंगती है। बम्बई सरकार ने १९२४ में बाल-कानून पास किया था, जिसका संशोधन १९४८ में किया गया, वहां १० रिमाण्ड-गृह हैं तथा अपराधी बालकों की देखरेख के लिए पर्याप्त परीक्षा अधिकारी हैं। इस प्रकार के ५४ अधिकारियों की नियुक्ति बम्बई-सरकार ने की है तथा १९० व्यक्ति स्वेच्छा से यह कार्य कर रहे हैं और ७ को गैर-सरकारी संस्थाओं ने नियुक्त किया है। बम्बई में ११ सर्टिफाइड स्कूल और १२ संस्थाएं ऐसी हैं, जो बालकों की देख-भाल करती हैं। इस दिशा में अन्य किसी प्रान्त ने इतना कार्य नहीं किया। हां, मद्रास ने १९२० में बाल-कानून पास किया था और ५ बाल-अपराध की अदालतें और ६ सर्टिफाइड स्कूल कायम किये थे। मध्यप्रदेश की सरकार ने बाल-कानून १९२८ में पास किया था और ३२ परीक्षा-अधिकारी तथा एक सर्टिफाइड स्कूल कायम किया था। पश्चिमी बंगाल ने यह कानून १९२२ में पास किया था। पूर्वी पंजाब की धारासभा के सामने यह कानून विचारार्थ पेश है तथा उत्तर-प्रदेश की सरकार इस उद्देश्य का एक बिल तैयार कर रही है। आसाम बिहार या उड़ीसा से इस प्रकार के बिल की कोई सूचना अभी तक प्राप्त नहीं हुई है।

छात्र—क्या यह व्यवस्था संतोषप्रद कही जा सकती है?

अध्यापक—कदापि नहीं। जिन प्रान्तों ने बाल-कानून पास कर लिया है, वे भी उसे ठीक से लागू नहीं कर रहे। सारा कार्य बड़े बड़े नगरों तक सीमित है, जबकि भारत की आत्मा ग्रामों में निवास करती है। जिन व्यक्तियों को परीक्षा अधिकारी नियुक्त किया गया है, उनमें आवश्यक ट्रेनिंग का अभाव है तथा बाल-अपराध की अदालतों के मजिस्ट्रेटों में आवश्यक योग्यता की कमी है। सर्टीफाइड स्कूलों में कोई कार्य नहीं हो रहा तथा बच्चों की देख-रेख का प्रबन्ध नगण्य है। इसका उचित उपाय यही है कि बाल-अपराध की समस्या को हल करने के बकसां तरीके सब स्थानों पर अपनाये जायें, जिनमें पारस्परिक सामञ्जस्य हो।

छात्र—मैंने सुना है कि बाल-अपराध के निवारण के लिए मद्रास सरकार ने एक क्रान्तिकारी बिल बनाकर जनता की सम्मति के लिए प्रसारित किया है। क्या आप मुझे उस बिल की मोटी-मोटी बातें बता सकेंगे?

अध्यापक—तुमने जो कुछ सुना, बिल्कुल ठीक है। मद्रास-सरकार ने ८ फरवरी १९५० को ही इस बिल को प्रकाशित किया है, जो वास्तव में एक क्रान्तिकारी कदम है। बिल का उद्देश्य बाल-अपराधियों की शिक्षा, भलाई एवं चरित्र-निर्माण है और उसमें बालकों द्वारा भीख मांगने और धूम्रपान करने पर रोक लगा दी गई है। इसके अनुसार प्रत्येक जिले में एक या एक से अधिक बाल-अपराध के मामलों की सुनवाई के लिए अदालतें कायम की जायेंगी। इनकी सुनवाई के लिए बालकों से प्रेम रखने वाले एवं मानवता के पुजारी मजिस्ट्रेटों को नियुक्त किया जायगा। स्त्री और पुरुष दोनों मजिस्ट्रेट नियुक्त होंगे और उन्हें बाल-मनोविज्ञान, बाल ट्रेनिंग और बाल-संरक्षण की परीक्षा पास करना अनिवार्य होगा, जो माता-पिता या संरक्षक बालकों पर क्रूर दमन करेंगे, जिसके कारण वे अन्धे और बहरे हो जायें, तो उन्हें ६ मास की कैद या २०० रु० तक जुर्माना अथवा दोनों भुगतना पड़ेगा। जो दुकानदार १६ वर्ष से कम आयु के लड़कों को बीड़ी, सिगरेट या अन्य धूम्रपान की वस्तुएं बेचेंगे, उन्हें एक मास की कैद या १०० रु० जुर्माना देना पड़ेगा, जो माता-पिता या संरक्षक किसी बालक को दांव लगाने या व्यापारिक खरीद के लिए उकसायेंगे, उन्हें भी सजा दी जायगी। इसी प्रकार जो लोग बालकों से भीख लेकर उसे गिरवी रखेंगे या जवान लड़कियों को फुसलायेंगे, उन्हें भी दो से तीन वर्ष तक की सजा दी जा सकेगी। बालकों के मामलों को निपटाने वाले मजिस्ट्रेट कानून के अन्तर्गत जो सजा निर्धारित होगी, उसे देंगे तथा शारीरिक सजा भी दे सकेंगे। महिला मजिस्ट्रेट लड़के अपराधियों को शारीरिक दण्ड नहीं दे सकेंगी और इसी भांति पुरुष-मजिस्ट्रेट लड़की अपराधियों को शारीरिक दण्ड नहीं दे सकेंगे, इन बाल-अदालतों में जो कार्यवाही होगी, उसकी रिपोर्ट अखबारों में छापने पर भी सरकार ने रोक लगाई है। सम्वाददाता बाल-अपराधी का नाम, पता, स्कूल आदि का कोई नामोल्लेख न कर सकेगा, जिससे वह अपराधी जनता में पहिचाना न जा सकेगा। वह न पहिचाना जाए, इसी के लिए उसके चित्र को भी प्रकाशन पर रोक लगा दी गई है। इसका पालन न करने पर दो मास की कैद या जुर्माना अथवा दोनों देना पड़ेगा। बाल अपराधियों को विशेष गृहों या बोर्डिंग स्कूलों में रखा जायगा, जहां उन्हें शिक्षा दी जायगी तथा सही रास्ते पर चलने की ट्रेनिंग दी जायगी।

छात्र—आपने मद्रास-सरकार के ताजे बिल के बारे में जो प्रकाश डाला, उससे मुझे बड़ी खुशी हुई तथा मेरे उन सभी साथियों को खुशी होगी, जो हृदय से चाहते हैं कि देश में बाल-अपराधों में कमी हो और आर्य बालक राम, कृष्ण, गांधी, नेहरू के आदर्शों पर चलकर भारत को महान् बनायें। आपने अभी तक यह नहीं बतलाया कि विदेशों में बाल-अपराध की समस्या है या नहीं और यदि है तो वहां उसके हल करने के लिए क्या प्रयत्न किये जा रहे हैं?

अध्यापक—बाल-अपराध की समस्या जिस प्रकार भारत में है, उसी प्रकार संसार के अन्य देशों में। इतना अवश्य है कि उसके रूप अलग अलग हैं तथा कहीं वह ज्यादा है और कहीं कम। ब्रिटेन में ८ से १७ वर्ष तक के बालकों को 'बाल-अपराधी' माना जाता है और इन पर विशेष बल-अपराध की अदालतों में मुकदमे चलाये जाते हैं। जजों में से मजिस्ट्रेटों की एक सूची छांट ली जाती है और वर्तमान नियमों के अनुसार प्रत्येक तीन वर्ष में दो या तीन व्यक्ति चुने जाते हैं। बड़े नगरों की इन अदालतों में एक मजिस्ट्रेट महिला अवश्य होनी चाहिए। अदालतों का शासन 'गृह-कार्यालय' से संचालित होता है। १९१० में इस शासन में प्रगतिशीलता लाने के लिये सलाहकार समितियां बनाई गई थीं। पहिले बाल-अपराधियों को उनके अपराध की गम्भीरता के अनुरूप सजा दी जाती थी, लेकिन अब यह विचार दृढ़ होता जाता है कि सजा की अपेक्षा उनके भविष्य के उत्तम नागरिक बनने पर अधिक ध्यान दिया जाय। इसी भांति अमेरिका व योरोपीय देशों में भी शिक्षा व सुधार पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। अमेरिका में बाल-अपराधियों के अन्तर्गत अधिकतम आयु २१ वर्ष है। १८ वर्ष की आयु तक अपराधियों पर बाल-अपराधी अदालतों के नियम लागू होते हैं, लेकिन १८ से २१ वर्ष तक बाल-अपराधी-अदालतों तथा सामान्य अदालतों दोनों के नियम लागू होते हैं। लोगों की राय यही है कि बाल-अपराधी अदालतों के नियम सामान्य अपराधी अदालतों, के नियमों से एकदम स्वतन्त्र होना चाहिए। विशेष मजिस्ट्रेटों के अलावा अमेरिका में बाल-अपराधों के मामलों की सुनवाई व फैसलों के लिए पंच नियुक्त किये जाते हैं। जहां अपराधी कोई लड़की होती है, वहां अदालत किसी योग्य महिला-पंच से परामर्श करती है। अमेरिका में सलाहकार समितियां नहीं हैं, क्योंकि वहां सामाजिक संस्थाएं इस दिशा में बड़ा कार्य करती हैं। ब्रिटेन व अमेरिका दोनों देशों ने बाल-अपराधियों के सुधार पर ही जोर दिया है। सजा की अपेक्षा उनके चरित्र निर्माण को प्रमुखता दी जाती है। उन्हें सुधार-गृहों में भेज कर इस प्रकार सुधारा जाता है कि वे भविष्य में अपराध न करें। कुछ प्रगतिशील लोग यह भी कहते हैं कि बाल-अपराधियों को उनके घर पर ही रख कर सुधारा जाय। लेकिन इसमें सफलता के लिए परिवारों का सहयोग आवश्यक है।

छात्र—बाल-अपराधियों को अन्य अपराधियों की भांति क्यों सजा नहीं दी जा सकती? सजा और सुधार की बातें तो मुझे बड़ी उलझन में डाल देती हैं। अत. आप सरलता के साथ इस इस गुत्थी को समझाइये।

अध्यापक—जो भी अपराध करे, उसे सजा अवश्य मिलनी चाहिए, क्योंकि अपराधी को सजा न मिले तो समाज में अनुशासन-हीनता आ जाय। पहले जमाने में तो 'जैसे को तैसा' का सिद्धांत

[शेष पृष्ठ २४ पर]

काश्मीर में वैधानिक संकट

युवराज कर्णसिंह अब्दुल्ला के इशारे पर चलने को तैयार नहीं

सार्वजनिक व राष्ट्रीय हितों का महत्वपूर्ण प्रश्न

युवराज कर्णसिंह ने संविधान-परिषद् के चुनाव सम्बन्धी घोषणा पर हस्ताक्षर करना अस्वीकार कर दिया है—जब तक कि वह न केवल राज्य के भारतीय संघ में प्रवेश, वरन उसको स्वयं पदच्युत करने और जनता, विशेषकर हिन्दुओं की विशाल सम्पत्तियों को जब्त करने पर विचार करने के लिए बुलाई जा रही है।

पृष्ठ भूमि

राज्य द्वारा संघ प्रवेश का अनुसमर्थन जनमत संग्रह द्वारा करने की नई दिल्ली की अनावश्यक वचनबद्धता तथा राष्ट्रसंघ की आक्रांता को घोषित करने तथा उसे दबाने में असफलता के पश्चात्, हमारे लिए उचित मार्ग यही था कि अपनी शिकायत को दलबन्दी में फंसे हुए राष्ट्र संघ से वापिस ले लेते और राज्य के संघ-प्रवेश को ही पूर्ण मान लेते। हमने दोनों में से कुछ भी नहीं किया। काश्मीर में वर्तमान संकट का यही कारण है।

तीन मास पूर्व विकराम की खोज के अवसर पर उत्पन्न स्थिति पर विचार करने काश्मीर नेशनल कांफ्रेन्स का एक सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में "राज्य के संघ-प्रवेश को अनुसमर्थन प्रदान" करने व इस प्रकार राज्य के भविष्य सम्बन्धी भारी अनिश्चितता को सदा के लिए दूर करने का निर्णय हुआ। पं० नेहरू, जिन्होंने इस सम्मेलन में भाषण दिया, ने इस विचार का स्वागत किया।

संघ-प्रवेश काश्मीर सरकार द्वारा पूर्ण वैधानिक रीति से किए जाने—और उसे जनमत के नेताओं का प्रकट समर्थन प्राप्त हो जाने के पश्चात, अनुसमर्थन बेकार था। तो भी काश्मीर तथा भारत की जनता ने इस निर्णय को इस आशा से ही स्वीकार कर लिया था कि वह उचित तथा औपचारिक कृत्य होगा। किन्तु राज्य में पीछे से उत्पन्न हुई बातों ने इसे विषम बना दिया है।

अब्दुल्ला की चालबाजियां

कान्फ्रेन्स से भिन्न जनमत को दबाने के लिए काश्मीर सुरक्षा कानून की ६० वीं धारा का खुल कर प्रयोग हुआ है। किन्तु इससे भी अधिक आश्चर्यकारी अब्दुल्ला की कान्फ्रेन्स का चुनाव आन्दोलन है। केवल "अनुसमर्थन" के स्थान पर उन्होंने चार नई चीजें और खड़ी कर दी हैं। उसके समर्थक संघ-प्रवेश के अनुसमर्थन की चर्चा नहीं करते वे तो स्वयं संघ प्रवेश के प्रश्न को ही उठाते हैं। शेख अब्दुल्ला के भाषणों में अनुसमर्थन का उल्लेखमात्र भी नहीं होता। उसके भाषणों का सार [illegible] कि यह एक ऐसा विषय है जिस पर जनता ही निर्णय दे सकती है। वे स्वयं जनता का निर्णय क्या चाहते हैं, यह वे नहीं फरमाते।

यहीं पर समाप्ति नहीं है। संविधान परिषद् के उद्देश्यों को विस्तृत करके उनमें राजा के पद को भी सम्मिलित कर लिया गया है। भारतीय संविधान की उपेक्षा करके, जो काश्मीर के राजा को उनके पद पर प्रतिष्ठापित करता है, नेशनल कान्फ्रेन्स ने राजा के पद को चुनाव का विषय बनाया है। एक ऐसे देश में जहां निजाम भी बना हुआ है, नेशनल कान्फ्रेन्स एक ऐसे राजा को पदच्युत करने का प्रयत्न कर रही जिसका एकमात्र अपराध उसका हिन्दू होना है।

यद्यपि हमारा संविधान सम्पत्ति के अधिकार को मानता है और राज्य द्वारा उसके लिए जाने पर क्षति पूर्ति दी जाने का आश्वासन देता है, काश्मीर कांफ्रेंस वैधानिक डकैती को भूमि सुधार का भ्रामक नाम देकर, खुलेआम यह प्रचार कर रही है कि लोग उन लोगों को चुन कर भेजें, जो "कोई क्षति पूर्ति नहीं" का समर्थन करें।

और अन्त में उसने यह भी कह दिया है कि संविधान-परिषद्, जो कि आरम्भ में संघ-प्रवेश का अनुसमर्थन करने के लिए बुलाई जा रही थी, काश्मीर के संविधान की रचना करेगी। लोग आश्चर्य से पूछते हैं कि भारत के अन्य प्रांतों से भिन्न संविधान की काश्मीर को क्यों आवश्यकता है? वे पूछते हैं कि काश्मीर भारत का एक अंग है या नहीं है। कांफ्रेंस की इस घोषणा ने लोगों को चौंका दिया है और इस से काश्मीर में एक असाधारण वैधानिक संकट उपस्थित हो गया है।

वर्तमान स्थिति

युवराज कर्णसिंह ने संविधान परिषद् के चुनाव सम्बन्धी घोषणा पर हस्ताक्षर करना अस्वीकार कर दिया है—जब तक कि वह न केवल राज्य के भारतीय संघ में प्रवेश, वरन् उसको स्वयं पदच्युत करने और जनता, विशेषकर हिन्दुओं की विशाल सम्पत्तियों को जब्त करने पर विचार करने के लिए बुलाई जा रही है।

गत कुछ दिनों से शेख अब्दुल्ला नई दिल्ली के देवताओं पर दबाव डाल रहा है कि वे युवराज कर्णसिंह को उसकी ताल पर नाचने को बाध्य करें। स्पष्ट है कि नई दिल्ली ने वे अनुग्रह अभी तक किया नहीं है। एक संसद् के सदस्य महोदय ने सर्वसाधारण प्रतिक्रिया को अपने शब्दों में प्रकट करते हुए कहा— "अब्दुल्ला की इच्छा के अनुसार संगीत हो और न्याय हम उठावें, यह ऐसी स्थिति है, जो शीघ्र स्पष्टीकरण मांगती है।"

★

सम्पादक के नाम पत्र

हमारे पाठक क्या कहते हैं ?

भविष्य के नेता ?

महोदय,

शिक्षा संस्थाओं का कार्य समाप्त होने वाला है। विद्यार्थियों को उत्तीर्ण होने के पश्चात् किसी स्कूल या कालिज में प्रवेश पाना होगा, जिसमें कि वह आगे विद्याध्ययन कर सके। परीक्षायें पास होना सरल है, परन्तु प्रवेश पाना उतना ही दुष्कर है। प्रत्येक स्थान पर उन्हें यह कह कर टाल दिया जाता है कि स्थान नहीं है। किसी शिक्षा संस्था में तो उनकी फिर परीक्षा ली जाती है और उन्हें यह कहकर प्रवेश नहीं किया जाता है कि वह उत्तीर्ण नहीं हो सके हैं। ब्रिटिश शासन में बंगाल में इतिहास के विद्यार्थियों ने 'दो अमली' शासन का अध्ययन किया है। इसे भी यदि इसी नाम से पुकारा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। अच्छा हो कि विद्यार्थियों की एक ही पाठशाला में परीक्षा ली जावे। सरकार द्वारा पूर्ण रूप से संचालित शिक्षा संस्थाओं में तो यह अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है। मेरी छोटी बहिन को तो इसी कारण अध्ययन छोड़ना पड़ा कि उसे प्रवेश नहीं मिल सका। मुझे इस का दु:ख नहीं है कि मेरी बहिन आगे अध्ययन न कर सकी क्योंकि मेरे सहस्रों विद्यार्थी भाई बहिन प्रतिवर्ष दिल्ली में ही शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। खेद केवल इतना ही है कि यह सब स्वतंत्र भारत में होता है जहां कि नेता विद्यार्थियों को देश के 'आगामी नेता' का बाना पहनाने से नहीं चूकते हैं।

किसी किसी स्कूल में तो पहले भावना बता कर प्रवेश बन्द कर दिया जाता है, परन्तु बाद में अनुमति दे दी जाती है। इसे हम शिक्षा में 'काला बाजारी' ही कह सकते हैं।

इस वर्ष प्रायः १००० बालक बालिकायें सदैव के लिये शिक्षा से वंचित हो गये हैं। अच्छा है अधिकारी इस विषय में शीघ्र ध्यान दें और प्रत्येक विद्यार्थी के लिये समुचित प्रबन्ध करें।

—एक विद्यार्थी

★

राजस्थान सरकार इस ओर भी ध्यान दें

'राजस्थान सरकार राजस्थानियों को शिक्षा में अग्रसर करने के लिए जगह २ विद्यालय खोलने में लगी हुई है, परन्तु खेद है कि वहां पर विद्यार्थियों के चरित्र गठन का ख्याल नहीं रखा जा रहा है, जो शिक्षा का एक प्रमुख अंग है, उसका एक प्रमुख उदाहरण अभी राजस्थान की कुछ स्कूलों को देखने पर मेरे सम्मुख आया कि प्रधान अध्यापक विद्यालय के प्रमुख कार्यालय में बैठे २ बीड़ी आदि पीते रहते हैं व उनके पास अन्य शिक्षक एवम् बालकिशोर विद्यार्थी बैठे रहते हैं। इससे उनके प्रारम्भिक जीवन पर एक बहुत बुरा असर पड़ता है। दूसरी बात यह है कि विद्यालय के अन्दर हा विद्यालय के समय में शिक्षक एवंम विद्यार्थी आन्तरिक खेल यथा "तास" "केरम" आदि खेलते रहते हैं इससे पढ़ाई आदि में बड़ा नुकशान रहता है। तीसरी बात यह है कि प्रधान अध्यापक एवम् अन्य शिक्षक भौतिकवाद और देकर रूसी साम्यवाद का प्रचार करते हैं एवम् साथ ही साथ समाज में चरित्र निर्माण करने वाली संस्थाओं की बुराई करते हैं।

इसलिए मैं सरकार से अनुरोध करूंगा कि इन बातों पर ज्यादा ध्यान देकर चरित्र निर्माण पर बल देकर एवम् देश के भावी नवयुवकों का शुद्ध जीवन बनाकर देश को परम वैभव पर पहुंचाने में सहयोग दें।

—रामस्वरूप गुप्ता

★

भारतीय सेना के प्रधान सेनापति जनरल करियप्पा द्वारा किया गया। जनरल करियप्पा ने इस अवसर पर भाषण देते हुए कहा कि हमें आजकल देश-भक्ति की भावना से परिपूर्ण इस प्रकार के चित्रों की आवश्यकता है।

फिल्मों के सेंसर-शुल्क की वृद्धि

सेंसर निर्माताओं में असन्तोष

भारत सरकार ने जो फिल्मों का सेंसर-शुल्क १० रुपये प्रति हजार फीट से बढ़ा कर ४० रुपये प्रति हजार फीट कर दिया है, उस पर विचार विमर्श करने के लिए भारतीय फिल्म निर्माता संघ की एक विशेष बैठक इसी सप्ताह को हुई, जिसमें संघ ने इस ७०० प्रतिशत की वृद्धि के प्रति असन्तोष व्यक्त करते हुए विरोध करने का निश्चय किया। एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री के. एम. मोदी ने स्थिति का स्पष्टीकरण करते हुए बताया फिल्म-उद्योग की आर्थिक दशा सभी के समक्ष प्रत्यक्ष है कि इसे कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। करों का अंकुश पहले से ही काफी अधिक है, इतना सब स्पष्ट होने पर भी भार को बढ़ाना सर्वथा अनुचित है। इसका परिणाम यह होगा कि उद्योग को भारी धक्का पहुँचेगा। कर वृद्धि के विषय में जो पहले सरकार ने फिल्म-उद्योग से परामर्श किया था वह १० रुपये प्रति हजार फीट तक शुल्क को बढ़ाने का था, परन्तु सरकार ने अपने उस समझौते की भी अवहेलना करके उसे ४० रुपये प्रति हजार फीट तक बढ़ा दिया।

सेंसर शुल्क के विषय में जो सूचना एवं ब्राडकास्ट विभाग के मन्त्री श्री आर. आर. दिवाकर ने कहा था कि इस वृद्धि से कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता क्योंकि पहले निर्माताओं को प्रत्येक राज्यों को अलग अलग सेंसर शुल्क देना पड़ता था और अब एक साथ ही देना होगा। इस कथन की आलोचना करते हुए श्री मोदी ने कहा—"यह बात ठीक नहीं है, क्योंकि एक राज्य के बोर्ड से फिल्म पास हो जाने के बाद केवल मैसूर तथा हैदराबाद को अतिरिक्त शुल्क फिल्मकी जांच के लिए देना पड़ता था, क्योंकि ये रियासतें उस समय स्वतन्त्र नरेशी राज्य थे, वरना अन्य प्रांतों में फिल्म की जांच के लिये अतिरिक्त शुल्क देने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। इसके अलावा जो सरकार का लक्ष्य है कि बोर्ड का खर्चा इस शुल्क से निकाला जावे वह भी उचित नहीं क्योंकि यदि इसी प्रकार निश्चय होने लगे तो फिर आम कर (जनरल टैक्स) का कोई महत्व नहीं रहेगा।

बैठक में कुछ सदस्यों ने सरकार तथा फिल्म बोर्ड के प्रति असहयोग प्रदर्शित करने का भी सुझाव रखा परन्तु अन्त में यही निश्चय किया गया कि इंडियन मोशन पिक्चर प्रोड्यूसर्स एसोसियेशन, बंगाल साउथ इंडियन फिल्म चेम्बर आफ कामर्स के प्रतिनिधि संयुक्त होकर सरकार से मिलें और उसके समक्ष अपनी कठिनाइयों को रखें।

सोवियत फ़िल्में

सुप्रसिद्ध रूसी फिल्म निर्माता मो-वी० पुदोकिन ने, जो कि आजकल भारत का भ्रमण कर रहे हैं, मद्रास में एक वक्तव्य देते हुए इन धारणाओं का खण्डन किया कि रूस में फिल्मोद्योग को रूसी सरकार के दबाव में कार्य करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि हमारी कला में यदि किसी चीज का प्रभाव है तो वह है सोवियत जनता की इच्छा और हमारा लक्ष्य।

'बुजदिल' का निर्माण-कार्य प्रायः समाप्ति पर

'आरजू' के प्रसिद्ध प्राप्त शाहिद लतीफ के निर्देशन में 'बुजदिल' का निर्माण समाप्ति पर है। इस फिल्म में निम्मी, किशोर साहू, प्रेमनाथ, कन्हैयालाल और कुक्कू अभिनय कर रहे हैं।

'बुजदिल' की कहानी इस्मत चुगताई ने लिखी है और संगीत श्री सचिन देव बर्मन का है।

झांसी की रानी का मुहूर्त

ऐतिहासिक फिल्मों के प्रसिद्ध निर्माता सोहराब मोदी के नये फिल्म 'झांसी की रानी' का मुहूर्त गत मास

फिल्म डिविजन बंद

भारत सरकार ने अपने फिल्म डिविजन द्वारा सिनेमा-प्रेमियों को कई सुन्दर भेंटें दी हैं। ज्ञात हुआ है कि डिविजन द्वारा निर्मित फिल्मों से अभी आय न होने के परिणामस्वरूप अब इसे बन्द कर देने का निर्णय किया गया है।

फ़िल्मों की लम्बाई पर से रोक हटी

बम्बई सरकार ने राज्यभर में ११००० फुट से अधिक लम्बी फिल्मों के प्रदर्शन पर लगाई गई पाबन्दी को हटा लिया है। बम्बई सरकार ने यह निर्णय भारत सरकार की ओर से लागू सिनेमेटोग्राफ कानून १९४० के दूसरी बार (संशोधित) के अन्तर्गत उठाया है।

स्मरण रहे, जेमिनी स्टूडियो की फिल्म 'मंगला' का प्रदर्शन इसी प्रतिबन्ध के कारण बम्बई में रुक गया था और श्री एस० एस० वासन ने इसके विरुद्ध अदालत में मामला तक दायर किया था।

रिश्वत और चोरबाजारी

[पृष्ठ १ का शेष]

रिश्वत की बाबत जो शिकायत करें, वह मान्य हो। जिस सरकारी नौकर के विरुद्ध शिकायत हो उसे सर्वप्रथम दूर तबदील कर दिया जाय।

८. मन्त्रियों, एसम्बली मैम्बरों इत्यादि के रिश्तेदारों को यदि नौकरियों में लिया जावे, तो उनको अपने प्रान्त में न रखा जावे !

९. प्रथम श्रेणी के सरकारी नौकरों को उनके अपने प्रान्त में नहीं, अन्य प्रांत में ही लगाया जाये। पटवारी इत्यादि को भी दूसरे जिले या तहसीलों में। घर पर या रिश्तेदारों के निकट नहीं।

१० रिश्वत के विरुद्ध जनमत तैयार करने के लिए मन्त्री, गवर्नर, डिप्टी कमिश्नर ही नहीं, तहसीलों के अधिकारी भी अन्य कार्यों के साथ रिश्वत के विरुद्ध प्रचार करें। जिन सरकारी नौकरों के विरुद्ध रिश्वत की शिकायत हो, सर्वप्रथम उन्हें चेतावनी देकर दूसरी जगह बदल दिया जावे।

११. जो लोग रिश्वत की दलीलें करते हैं, उनके लिए एक विशेष काली-सूची तैयार कराई जावे। सब सरकारी अधिकारियों को आज्ञा दी जावे कि इन से न मिलें। खुफिया विभाग इन पर विशेष निगाह रखें।

चोर-बाजार

जब तक कन्ट्रोल का वर्तमान तरीका जारी रहेगा, चोरबाजार बन्द नहीं हो सकता। आज बड़े से बड़ा ईमानदार भी चोरबाजार से चीजें खरीदने में मजबूर हैं, क्योंकि कन्ट्रोल करने वाले उच्चाधिकारी कन्ट्रोल करने से पहले जनता की सम्मति नहीं लेते। न ही इस बात पर दृष्टि रखते हैं कि उनके बनाये कन्ट्रोलके तरीकेसे जनताको आवश्यक चीजें मिल जायेंगी। कितने ही सरकारी अधिकारी जिन्हें न व्यापार का अनुभव, न साधारण मनुष्य के जीवन का, मनमाने अनुचित तरीके से कण्ट्रोल कर देते हैं। जिससे लोगों को कपड़ा तथा अन्य आवश्यक चीजें ही कहां, पेट भरने के लिए अन्न भी नहीं मिलता। राशन के इलाके में शायद ही कोई ऐसा घर होगा, जो चोरबाजार से अन्न नहीं खरीदता हो। बड़ी लम्बी कैद, माल जब्ती तथा बदनाम करने से बाजार बन्द न होगा। चोरबाजार बन्द करने के लिए सजा देनी चाहिये। पर कुछ ऐसे बुनियादी उपाय करने होंगे, जिनसे चोरबाजार हो ही नहीं या कम। कुछ उपाय निम्नलिखित हैं।

१ कण्ट्रोल करने से पहले सरकार जनता को कण्ट्रोल करने का कारण तफसीलवार बतावे, तथा सम्मति ले। बिना कण्ट्रोल किए भी काम चल जाए तो कन्ट्रोल न हो। यदि कण्ट्रोल करना आवश्यक ही हो तो कण्ट्रोल के तरीके बनाने में जनता के प्रतिनिधियों से सहयोग प्राप्त किया जावे। तरीके बनाने के समय यह ध्यान रखा जावे कि कम से कम चोरबाजारी हो।

२ जहां तक हो सके अन्य आवश्यक वस्तुएँ एक साल के गुजारे से अधिक अन्न या कोई चीज भी न रखी जावे। सबके लिए अन्य आवश्यक चीजों का जमा रखना अपराध हो।

३. चीजें ले जाने ले आने में पूरी-सहूलियत हो।

४. चोरबाजार और कन्ट्रोल की असफलता का मुख्य कारण है, भिन्न दो चीजों के भाव का संतुलित रहना। जैसे इन दिनों ज्वार का भाव १३ रु० प्रतिमन। पर बाजरा, जिसके पैदा करने में अधिक परिश्रम और धन खर्च होता है, उसका कन्ट्रोल भाव ८ रु० प्रति-मन। तेल के बीज भी मंहगे हैं। यदि खेती की उपज की चीजों के भाव का संतुलन न रखा गया, तो कन्ट्रोल ही असफल होगा, किसान कन्ट्रोल की चीजों को न बोकर बिना कन्ट्रोल की चीजों की खेती करेगा। जिससे अन्न का उत्पादन घट जायेगा। अन्न की अवस्था और अधिक खराब हो जायेगी।

५. आज जिस तरीके से कन्ट्रोल किया जा रहा है, उससे साधारण दुकानदार तथा जनता को नहीं, बड़े-बड़े पूँजीपतियों को ही लाभ है। जो लोग अधिकारियों तक पहुंच सकते हैं, उनकी चीजें महंगी बिकती हैं। एक ही तरह का कपड़ा एक मील का १२ आने गज बिकता है दूसरी का रुपया। सरकार कन्ट्रोल के ऐसे तरीके ही अपनाये, जिसमें बड़े बड़े पूंजीपतियों का दखल ही न हो। बड़े-बड़े पूंजीपतियों तथा सरकारी अधिकारियों का अपवित्र गठबंधन तोड़ने की पूरी कोशिश हो।

६. चोरबाजार की जिम्मेवारी केवल व्यापारियों पर ही नहीं है, रसद-विभाग के सरकारी अधिकारियों पर अधिक है। चोरबाजार करने वाले व्यापारी के साथ-साथ रसद-विभाग के जिस सरकारी अधिकारी के सुपुर्द उसकी देखरेख का काम था, उसे भी पकड़ा जावे।

७ निकट और पड़ौसी प्रान्तों में चीजों का भाव समान हो। चोरबाजार पकड़ने की नीति भी भिन्न-भिन्न न रखी जावे। जैसे आज पंजाब में धान का चावल नहीं बन सकता, पर राजस्थान में कोई रुकावट नहीं। पंजाब की मण्डियों में बाजरे के कन्ट्रोल भाव की शर्त होने के कारण बाजरा नहीं आता, पर राजस्थान में खुला बिकता है।

८. मन्त्रियों, एसेम्बली के मेम्बरों, कांग्रेस अधिकारियों, सरकारी नौकरों के रिश्तेदारों को कन्ट्रोल दिपो या परमिट न दिया जावे। दिया जावे तो उस इलाके में नहीं, जहां उसका प्रभाव हो

९ जीवन की आवश्यक चीजें यथा-समय पहुंचाने की पूरी-पूरी कोशिश की जावे।

१०. लोगों में कण्ट्रोल करने और चोरबाजार न करने के प्रचार का प्रबन्ध हो, कण्ट्रोल के कारण जो लोग बेकार हो जावें। रोजगार देने की कोशिश की जावें।

[पृष्ठ २१ का शेष]

जाता था, लेकिन बाद में यह सोचा गया कि सजा शिक्षात्मक और सुधारात्मक होनी चाहिए। मृत्युदण्ड के बारे में मतभेद चल रहे हैं। आलोचकों का कहना है कि किसी व्यक्ति के हत्यारे को मार डालने से दो व्यक्तियों की जानें जाती हैं। सजा के सम्बन्ध में कानूनी शक्तियों में वादविवाद जारी हैं, जिनकी उलझन में मैं तुम्हें डालना नहीं चाहता। लेकिन जहां तक बाल-अपराधियों को सजा देने का सम्बन्ध है, वहां तक सभी सिद्धांतवादियों और व्यवहारवादियों का इस बात में एक मत है कि बाल-अपराधियों की समस्या को हमें अन्य अपराधियों की समस्या से भिन्न प्रकार हल करना चाहिए। यदि हमने बाल-अपराधियों को जेल में बन्द कर दिया तो वे पक्के चोर, डकैत, बदमाश बन जायंगे और समाज के लिये अभिशाप होंगे। बालक जो अपराध करते हैं, उनके लिए केवल उन्हीं को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। माता-पिता, कुसंगति, परिस्थिति आदि के वशीभूत होकर वे अपराध कर बैठते हैं। इसलिए उन्हें जो सजा दी जाय, उसमें शिक्षा एवं सुधार का प्रमुख स्थान होना चाहिये।

छात्र—बाल-अपराध के विषय में मैं अभी तक कोरा ही था। आज आपने मुझे जो बातें बतलाई, उनसे मैं इस समस्या को भली भांति समझ गया हूं। भविष्य में भी आप इसी प्रकार मुझे नये-नये विषय समझाने की कृपा करेंगे।

चोरी का माल बरामद कराने वाले को

१०१) रु० इनाम

मैं रूपलाल उर्फ भंवरलाल पिता बंशीलालजी ब्राह्मण सुखवाल, पलाना कलां तहसील मावली डिस्ट्रिक्ट उदयपुर हाल शहर उदयपुर राजस्थान का निवासी हर खास व आम को सूचित करता हूं कि मेरे मकान वाके पलानाकलां में मेरी अनुपस्थिति में माह सितम्बर सन् ५० में चोरी हुई जिसकी इत्तला पुलिस स्टेशन मावली पर की जाने पर तफ्तीश से चन्द मुलजिमान गिरफ्तार किये जाकर कुछ माल मशरूका भी बरामद किया गया और मुकद्दमा नम्बर २०० २००७ एकस्ट्रा मजिस्ट्रेट मावली में जेरदफा नम्बर ४५७।३८० ताजीरात हिन्द पेन्डिंग है।

माल मशरूका की फहरिस्त पुलिस स्टेशन पर सूचना के साथ प्रस्तुत कर दी गई जो नीचे लिखे अनुसार है।

बटन जोड़ी १, हक की चूड़ियां ४, अंगूठियां पांव की २, तोड़ा जोड़ी १, कुल सामान चांदी का २८९ रु० आठ आना का है। इसके अलावा १० मन जव तथा एक कागजों का बस्ता जिसमें मेरे चकनामी रामपुरिया रठाना व पलाना की जमीन को आबादान करवा कुए खुदवाये जिसके चन्द हिसाबाती कागजात के अतिरिक्त इस जमीन के आसामियान उदा, रामा, पी० गुमाना, नना वल्द भेरा, एकलिंग वल्द कसना, व होडियान सा डोडियां के वास व खटिकान की मेरी माफी की जमीन व हक सिजारी वास्ते काश्त सुपुर्द की उसके चन्द इकरारात आदि के अलावा गरासियान के चन्द मुतफर्रिक व बाहमी लिखा पढ़ी के कागजात मुतल्लिक गामेटा व दीगर कारगतियें वगैरा भी शामिल थे। अतिरिक्त इसके मेरे मौजूदा निवास के मकानात वाके पलाना का जुज जो श्री अर्जुनलालजी पोरवाड के यहां पहिले से रहन है उस रहन के मुतल्लिक खुद अर्जुनलालजी व उनके बड़ाओं के हाथ की बाहमी लिखा-पढ़ी के चन्द कागजात व ७५ रु० के नोट भी शामिल थे।

अब आसामियान के इकरारात चोरी हो जाने का हाल लोगों को मालूम हुआ तो कुछ लोग मेरे आसामियान को नाजायज फायदा उठाने के लिए फुसला कर मेरी माफी की जमीन की खडम व हर किस्म के दरख्तान को रहन वह, वगैरह के जरिये मुन्तकिल कराना चाहते हैं।

इसलिये हर खास व आम को यह जानकारी कराना उचित समझ आगाह किया जाता है कि उपरोक्त लिखे अनुसार मवाजियात में माफी की जमीन मय दरख्तान फलदार व दिगर खडम भोग सहित मेरी बपोती की होने से जरिये मिसल नम्बर ४।१.२००३ सिजारियान के मुकाबले में साहित रह चुकी है और सिजारियान का कुल या जमीन पर किसी भी किस्म का कोई हक न पहिले था और न अब है। इसलिये ऐसी स्थिति में जो कोई भी मेरी उपरोक्त जमीन का या उसके अंश का या दरख्तान को उन आसामियान से कि जिनको मुन्तकिल करने का कतई मजाज नहीं है मुन्तकिल करावेगा वह नाजायज होगा और मुन्तकिल कराने वाला भी कोई लाभ नहीं उठा सकेगा क्योंकि गैर मजाज शख्स को इस प्रकार मुन्तकिल करने का कोई हक हासिल नहीं है।

इसी तरह मकान के गेनावटियान वगैरह भी गेनावट के मुताबिक दस्तावेजात के गायब हो जाने से लाभ उठाने के प्रयत्न में है। इसी तरह गरासियान भी दस्तावेजात के गायब हो जाने का लाभ उठाने की सम्भव है कि कोशिश करे।

लिहाजे इन कुल वजूहातों को मद्दे नजर रखते हुए मुन्दरजा सदर माल मशरूका पता चलाना अति आवश्यक समझ कर हर खास व आम को जरिये हाजा सूचित किया जाता है कि यदि कोई शख्स बाद मुश्तहरी नोटिस इस चोरी के इकावा माल का चाल कर दस्तावेजात व दीगर कागजात का पता लगा बरामद करावेगा वह इस पुरस्कार को पाने का अधिकारी होगा और मुझे भी सम्भावित हानि से बचावेगा।

देशोद्धार के लिये राष्ट्रीय चरित्र की आवश्यकता

[पृष्ठ ९ का शेष]

कोने भी बैठते हैं। वह क्या उसका भाव बताते हैं? नींव में बैठना ही वास्तविक सेवा है। ये समस्त विपरीत संस्कार धुल जायें, राष्ट्रभाव का आविर्भाव हो, इस बात की नितान्त आवश्यकता उस क्रांतिदर्शी राष्ट्रपुरुष ने अनुभव की। सभी कार्यों का सांगोपांग अनुभव कर उन्होंने देखा था कि उनमें संस्कार भ्रष्ट करने की सामर्थ्य बहुत थी, किन्तु निर्माण करने की बिलकुल नहीं।

विचित्र राष्ट्रीयता

इस प्रकार की संस्कार भ्रष्टता के अनेकों उदाहरण हैं। कितने ही वर्ष पूर्व यहां एक गीत गाया जाता था —

बन्दे हिन्दुस्थान।
बन्दगी हिन्दुस्थान।
साहब जी हिन्दुस्थान।
गुडमोर्निंग हिन्दुस्थान।

ऐसा क्यों? इसी लिए कि यदि यह सब नहीं रखा गया तो यह नाराज हो जायगा। यानी नाराजी का विचार कर राष्ट्रीयता की कल्पना। और इतनी विशालता के पश्चात भी चार भाषा-भाषी एक साथ बैठ कर कार्य नहीं कर सकते। पचासों वर्ष तक कार्य करने के पश्चात भी भिन्नता के विचार घटे नहीं, बढ़े ही हैं क्योंकि प्रणालियाँ ही ऐसी हैं जो संस्कारभ्रष्ट कर सकती हैं, निर्माण नहीं।

साधना का मार्ग

सामान्य मनुष्य केवल श्रवणमात्र से किसी बात को नहीं समझता। श्रवण, मनन एवं आचरण करना होने के पश्चात ही वह बात उसके जीवन में आ पाती है। "ब्रह्म" शब्द को हम सभी जानते हैं, किन्तु ब्रह्म को कौन जानता है? ऐसा तो युग युग में कोई एकाध पुरुष होता है। शेष सब के लिए तो साधना का—तपस्या का—मार्ग है। अपने सारे जीवन को एक महान अनुशासन में बांध कर तपस्या करना। इस प्रकार अपने ऊपर एक संस्कार करना, वह अपने जीवन में गहरे से गहरा बैठ कर जीवन से एक रूप हो जावे। ऐसे दृढ़ संस्कार निर्माण करने की अपनी प्रणाली है।

दिन प्रति दिन कार्य करेंगे, दृढ़ता पूर्वक, निस्वार्थ भाव से। अपना समय देने के बदले में हमें क्या मिला? कोई इतना भी तो नहीं कहता कि मैं रोज जाता हूं, मुझे शिक्षक ही बना दो संघ में सबसे बड़ी गौरव की बात है कि मैं स्वयंसेवक हूं, पद नहीं। मुख्य शिक्षक से सर संघचालक तक सभी के अभिमान का विषय स्वयंसेवकत्व ही है। इसीलिए सब कुछ हम स्वयं ही करते हैं, अपने ही पैसे निकाल कर देते हैं। यह अभ्यास दिन प्रतिदिन करते हुए हमें पता चलता है कि जो कुछ मेरे पास है, वह सब कुछ देकर, लगा कर, मैं राष्ट्र की सेवा करूंगा। एक-एक निकाल कर देते जाने की आदत बढ़ती जाती है, इस प्रकार की यह अनुपम पद्धति है।

समानता का आधार

दूसरी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात और है। एक भूमि पर, एक आकाश के नीचे, छोटे बड़े का भेद-भाव छोड़ कर, स्वयंसेवकत्व के समान अधिष्ठान पर, शरीर से शरीर, मन से मन रगड़ कर भिन्नता के सभी विकार निकालते हुए, एकात्मता, आसेतु हिमाचल एकात्मता जाग्रत करने की यह उद्गम भावना, वह इस कार्य का आधार है। सब कुछ राष्ट्र का है, शरीर, बुद्धि, उसी की है, जिसका है उसी को समर्पण। अपना नहीं, अपने लिए कुछ रखना भी नहीं। जो अपना नहीं वह यदि अपने पास रखा तो पाप है। फिर जो राष्ट्र ने दिया उसको राष्ट्र को न दे कर अपने पास रखना यह तो घोरतम पाप है, ऐसी एक महान भावना जागृत करना। सब की समानता के आधार पर एक अनुशासन जीवन जाग्रत करना। अनुशासन ही यथार्थ में प्रत्येक व्यक्ति का राष्ट्र के प्रति कर्तव्य है।

अनुशासन क्या

शारीरिक दृष्टि से जो होता है उसको ही लोग अनुशासन कहते हैं। किन्तु यह अति प्राचीन काल से चला आता हुआ एक शास्त्रीय शब्द है! एक महान संयम का पाठ, मन को काबू में रखने का पाठ, वह अपना और मैं, मन के सभी विकारों पर प्रभुत्व स्थापित करना—यही अनुशासन है। कदम से कदम मिला कर चलना तो अनुशासन का तुच्छ रूप है। एक दूसरे के संघर्ष में आने वाले जितने विचार मन में आते होंगे उनको धो डालने वाला अनुशासन है। साथ चलेंगे, एक सा आचरण करेंगे, उसका अभ्यास, शरीर के द्वारा मन को काबू में लाने का प्रयास, उसके सारे विचारों पर संयम रख कर, एक सूत्रबद्धता उत्पन्न कर के एक मार्ग से चलें यह उत्पन्न करने की पद्धति अनुशासन है।

आज की स्थिति

शाखा की पद्धति से सब प्रकार के भेदभावों को हजम कर एक जीवन निर्माण करने का सफल अभ्यास संघ ने किया है। आज देश की स्थिति क्या है? एक ओर शुद्ध राष्ट्र भक्त हैं। एक ओर अपना देश, समाज कुछ न समझने वाले और एक ऐसी स्थिति में कभी इधर कभी उधर, केवल दस्तखत करने की पात्रता वाली बहुत बड़ी संख्या, और एक ओर आधुनिक विचार के अन्तर्गत परकीय विचार लाने वाली और परकीय दासता का आवाहन करने वाली वृत्तियाँ दिखाई देती हैं। इनमें कभी न कभी संघर्ष होने वाला है। उस संघर्ष का निर्णय राष्ट्र के पक्ष में हो यही आवश्यक है। उसके लिये एक सुदृढ़, सूत्रबद्ध, विजेता के नाते अजेय राष्ट्र जीवन निर्माण करना नितान्त आवश्यक है।

कर्तव्य

संसार अपने स्वार्थ को पहचानता है। 'डेमोक्रेसी' होनी चाहिए यह अमरीकी अथवा ब्रिटिश साम्राज्यवाद का नारा है। दूसरी ओर 'लिबरेशन' के नाम पर साम्राज्यवाद का दूसरा नारा है। चारों ओर संसार में पशुभाव, आसुरी भाव से भरे हुए लोगों के सम्मुख खड़े होकर क्या हम उन्हें तत्वज्ञान समझायेंगे? सड़क के मध्य में खड़े सांड को क्या सड़क के नियम समझाये जाते हैं? संसार शक्ति जानता है दुर्जनों का निग्रह, सज्जनों का संरक्षण करने वाले सामर्थ्य को ही संसार पहचानता है। उस सामर्थ्य से सम्पन्न, तेजस्वी राष्ट्र की पूजा के लिए समर्पित जो यह अपना कार्य है उसे पूरा करने के लिए चलें। यह शाखा का कार्य ऐसा कार्य है। कोई भी कार्य दो बातों पर चलता है। प्रत्यक्ष ध्येयवाद और उसे यथार्थ रूप देने वाली कार्य-प्रणाली यानी मंत्र और तंत्र। वह शुद्ध तंत्र ही उस महापुरुष ने हमारे सम्मुख रखा है। उसके स्वयं सेवक बनने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है। उसकी कुछ पात्रता प्राप्त करके बतायें, तेजस्वी जीवन बनायें, तो आज के अपमानित राष्ट्र-जीवन को बदल कर सौभाग्ययुक्त बनाने का सौभाग्य हमें प्राप्त हो सकता है,

राज० नं० इ० पा० ४६१

प० दुर्गादास शर्मा, मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिए अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, देहली मे छपवाकर प्रकाशित किया।

अर्जुन
साप्ताहिक

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १७] दिल्ली, रविवार २१ फाल्गुन सम्वत् २००७ [अङ्क ४५

भारत सरकार का नया बजट

किसी देश का बजट उसकी आर्थिक स्थिति का दर्पण होता है और भारत सरकार का नया बजट भी देश की आर्थिक स्थिति का एक चित्र हमारे सामने रख देता है। यद्यपि अर्थमन्त्री ने इस बजट को २५ करोड़ ६१ लाख रुपये की बचत के रूप में चित्रित किया है और यह आश्वासन दिया है कि देश की आर्थिक स्थिति बहुत स्थिर है, तथापि बजट पर एक सरसरी सी दृष्टि डालने से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि वास्तविक स्थिति इसके विपरीत है। वस्तुतः भारत सरकार को नये बजट में ४॥ करोड़ रुपये का घाटा था, और उसे पूरा करने के लिए ३१ करोड़ १५ लाख रुपये के नये कर लगाये गये हैं। असलियत तो यह है कि इससे कर बहुत अधिक बढ़ गये हैं। रेलवे मन्त्री ने २०-२५ प्रतिशत किराये बढ़ा कर करीब ११ करोड़ रुपये की अधिक आय का अनुमान किया है। इस तरह कुल कर-वृद्धि ४० करोड़ रुपये के करीब होती है। और यह भारी कर-वृद्धि तब का गया है, जब कि देश में महगाई के बढ़ते हुए चक्र में भारतीय नागरिक बुरी तरह फंसा हुआ है। यह कर-वृद्धि इस बात का प्रमाण है कि देश की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है।

यह ठीक है कि कर लगाने ही हों, तो अर्थमन्त्री ने करों को समझ बूझ कर लगाया है। डिब्बों में बिक्री कर को छोड़ कर, प्राय शेष कर जीवन के लिए अनिवार्य व्ययों को नहीं बढ़ावेंगे। कारपोरेशन कर व आय कर में अतिरिक्त कर का बोझ सम्पन्न वर्ग पर ही पड़ेगा। इससे ८॥ करोड़ रुपये की आय बढ़ेगी। विशेष समझौतों द्वारा अनिर्दिष्ट आयात पर ५ प्रतिशत की वृद्धि कुछ उपभोग्य पदार्थों तथा मिट्टी के तेल पर व्यय-वृद्धि अवश्य करेगी, किन्तु मूंगफली, काली मिर्च रद्दी-रुई और कपड़े के निर्यात करों से देश की जनता पर भार न पड़ कर विदेशों की जनता पर पड़ेगा। पाकिस्तानी खरीदार को विनिमय दर के कारण जितना लाभ पहुंचता, कपड़े के सम्बन्ध में अब उसमें कुछ लाभ कम ही होगा। तमाखू पर नये कर लगाये गये हैं, इसका असर छोटे से बड़े सभी वर्गों पर पड़ेगा, किन्तु तमाखू जीवन के लिए अनिवार्य वस्तु नहीं है।

किसी भी सरकार के लिए नये कर लगा कर अपने खर्च का संतुलन असंभव नहीं है, किन्तु सब से आवश्यक बात तो यह है कि अपनी आय के अनुसार खर्चों को सीमित किया जाय। हमें अर्थ मन्त्री श्री देशमुख से सबसे बड़ी शिकायत यह है कि उन्होंने व्यय कम करने की ओर खास ध्यान नहीं दिया। शासन व्यय में गत वर्ष की अपेक्षा करीब ४ करोड़ रु० का व्यय बढ़ा दिया गया है। शासन-व्यय के ५६ करोड़ को बहुत सरलता से ४५ करोड़ रु० तक कम किया जा सकता था, किन्तु इसके लिए आवश्यक था कि मन्त्री स्वयं बलिदान करते। वे दरिद्र भारत के प्रतिनिधि बन कर १०००-१५०० रु० में काम चला सकते हैं और उनका अनुसरण और कर्मचारी कर सकते हैं। वेतनों से अधिक कमी मार्ग व्यय और अन्य भत्तों में की जा सकती है। बड़े-बड़े विशेषज्ञों के नाम से होने वाले शोषण में भी कमी की जा सकती हैं। हमारा दृढ़ विश्वास है कि इस प्रकार का कदम देश की आर्थिक स्थिति के सुधार की ओर बहुत लाभकर होता।

आज देश की सब से बड़ी आर्थिक आवश्यकता है महंगाई को कम करने की। पदार्थों के मूल्य स्तर जब तक कम नहीं होंगे, तब तक देश के समस्त आर्थिक चक्र में कोई सुधार नहीं होगा और श्री चिन्तामणि देशमुख के बजट में बहुत बड़ा दोष है कि उन्होंने महंगाई कम करने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

परन्तु इस आलोचना के बावजूद हम अपने पाठकों से यह अनुरोध करना चाहते हैं कि देश के आर्थिक अभ्युत्थान में प्रत्येक नागरिक का सहयोग अनिवार्य है। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह राष्ट्र की उन्नति में अपना भाग अदा करे। देश पर आज शरणार्थियों के कारण करीब १० करोड़ रु०, अन्न संकट की सहायता पर २३ करोड़ रु० का बोझ है। पाकिस्तान के शत्रुतापूर्ण व्यवहार और अन्तर्राष्ट्रीय संकट के कारण सेना व्यय पौने दो अरब रु० से अधिक है। यह भार उठाने में हम सब का सहयोग आवश्यक है।

★

पाकिस्तान से व्यापारिक समझौता

भारत और पाकिस्तान में परस्पर फिर व्यापारिक समझौता हो गया और दोनों देशों में व्यापारिक पदार्थों का यातायात फिर प्रारम्भ हो जायगा। वस्तुत समझौता और दोनों देश—ये शब्द ही हृदय में एक दुख पैदा कर देने वाले हैं। भारत एक देश था और सब दृष्टियों से स्वावलम्बी था। उसके दो कृत्रिम भाग कर दोनों को परावलम्बी कर दिया गया है। ये दोनों भाग एक दूसरे के बिना जीवित नहीं रह सकते और कम से कम आज भारत को अमरीका से गेहूं मांगना पड़े, जब कि उसके समीप के कल तक के अपने ही प्रदेश से गेहूं मिल सकता है, यह उचित नहीं है। यह ठीक है कि पाकिस्तान के अदूरदर्शी अधिकारी भारत से झगड़ा करने की अपनी दुर्नीति पर आग्रह करते रहे हैं। अपने रुपये की दर बढ़ा कर उन्होंने न केवल भारत की क्षति की है, किन्तु स्वयं भी करोड़ों रुपये की क्षति उठाई है। आज भारत ने उनकी बात मान कर व्यापारिक समझौता कर लिया है। इसमें भारत को अपमान या पराजय का कड़वा घूंट पीना पड़ा है। यदि यही करना था, तो आज से ६ मास पूर्व भी किया जा सकता था। पाकिस्तानी रुपये की दर न स्वीकार करने के हठ पर हम कायम न रह सके और आज पाकिस्तान को अपनी विजय की डींग हांकने का मौका मिल गया। हमारा ख्याल है कि यदि भारत कुछ और समय तक प्रतीक्षा कर सकता, तो पाकिस्तान को ही झुकने के लिए विवश होना पड़ता। उसकी अपनी आर्थिक व्यवस्था शिथिल हो रही थी, किन्तु देश और दुनिया की बदलती हुई परिस्थितियों में भारत सरकार ने कुछ झुक कर भी समझौता करने का निश्चय किया। सम्भवत इसका कारण देश का अन्न वस्त्र-संकट है। राशन कम करने की नौबत आ गई, हमारे कपड़े के कारखाने बन्द होने लगे, हमारी कपड़े की विदेशी मंडियां दूसरों के हाथों में जाने का खतरा पैदा हो गया। कपड़े के हजारों मजदूर बेकार होने लगे, जनता के कष्ट सहन की सीमा समाप्त हो गई। अन्तर्राष्ट्रीय संकट ने खतरों की सम्भावना और समीप ला दी। ऐसी विषम परिस्थितियों में भारत को पाकिस्तान का हठ स्वीकार करके भी उससे समझौता करना पड़ा। यदि पाकिस्तान की ओर से इस समझौते का पालन ईमानदारी से किया जाय, तो यह बहुत लाभकारी हो सकता है, क्योंकि एक महान् देश के दोनों खण्ड एक दूसरे के पूरक हैं। परन्तु पिछले अनुभव से भारत सरकार यह शिक्षा अवश्य लेगी कि व्यापारिक संतुलन बिगड़ने न पावे। ऐसा न हो कि हम माल देते जावें और पाकिस्तान माल रोक ले।

———

चैक नेताओं का दमन

चेकोस्लावाकिया के भू० पू० विदेश-मंत्री डा० क्लीमेण्टस को गिरफ्तार कर लिया गया है। उनके बहुत से पुराने साथी भी गिरफ्तार कर लिये गये हैं। इन लोगों पर गुप्तचरी, विश्वासघात और नयी सरकार स्थापित करने का अभियोग है। गत ६ मास के अन्दर कम्यूनिस्ट दल से १,६९,५४४ सदस्य निकाल गए हैं। यह घटना इस बात की सूचक है कि चेकोस्लावाकिया के कम्यूनिस्ट शासन से वहां की जनता का एक बहुत बड़ा भाग संतुष्ट नहीं है। रूस जिस तरह अपनी अंगुलि के संकेत पर बलकान राष्ट्रों को नचाना चाहता है, वैसा करने के लिए वहां के सब नागरिक उद्यत नहीं हैं। रूस को भय है कि यूगोस्लेविया की तरह अन्य बलकान देश भी रूस से स्वतन्त्र न हो जावें। इसलिए बलकान राष्ट्रों के कम्यूनिस्ट दलों में बराबर शोधन होता है, लोग निकाले जाते हैं, उन पर मुकदमे चलाये जाते हैं। विचार-भेद सहन न करना कम्यूनिस्टों की प्रमुख विशेषता है। चेकोस्लोवेकिया की उक्त घटना से उन भारतीयों को शिक्षा लेनी चाहिए, जो नागरिक स्वाधीनता के लिए कम्यूनिस्टों का समर्थन करते हैं।

———

एशियाई क्रीडा-प्रतियोगिता

नयी दिल्ली के राष्ट्रीय क्रीडांगण में ४ मार्च से ११ मार्च तक प्रथम एशियायी क्रीडा प्रतियोगिता का समारोह होगा। इसमें एशिया के ११ देश अपने ६०० के लगभग खिलाड़ी प्रतिनिधि भेज रहे हैं। जिन देशों को निमंत्रण भेजा गया उनमें केवल पाकिस्तान ने ही इस समारोह में भाग लेने से इंकार किया। भारत द्वारा इस समारोह के आयोजित किये जाने के कारण पाकिस्तान की इंकारी समझ में आ सकती है। इस आयोजन को अपने यहां आयोजित कर भारत सरकार ने शान्ति और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की दिशा में एक नया कदम उठाया है। आजकल की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति जिस प्रकार की है, उसमें परस्पर मैत्री, सद्भावना और सहयोग की अत्यधिक आवश्यकता है। इतने देशों के सैकड़ों खिलाड़ी, नव-युवकों के एकत्र होने पर परस्पर जिस वातावरण का निर्माण होगा, वह अवश्य ही देशों में मैत्री भावना में वृद्धि करने वाला ही होगा। हम एशिया के विविध देशों से आने वाले उत्साही खिलाड़ियों का दिल्ली में आने पर स्वागत करते हैं।

———

भारत सरकार का नया बजट

१९५० ५१ की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करते हुए श्री देशमुख ने ७.११ करोड़ रुपए की बचत होने की सूचना दी है, जबकि वर्ष के आरम्भ में ७१ लाख रुपए की बहुत का अनुमान था। संशोधित अनुमान के अनुसार ३८७.२१ करोड़ रु० की आय और ३७१.२८ करोड़ रु० का व्यय हुआ जब कि बजट में ३३८.२९ करोड़ की आय और ३३७.८८ करोड़ का व्यय होने का अनुमान था। संशोधित अनुमान के अनुसार ज्ञात हुआ है आय और व्यय में क्रमशः ४८.९२ करोड़ और ३३.४ करोड़ रु० की वृद्धि हुई।

वित्त मन्त्री ने बताया है कि करों के वर्तमान स्तर के हिसाब से आगामी वर्ष में अनुमानतः ३९९.८३ करोड़ रुपए का राजस्व तथा कुल व्यय ३७४.४३ करोड़ रुपए होगा और इस प्रकार ५.४४ करोड़ रुपए का घाटा होगा। राजस्व में सीमा शुल्क से १४१.२२ करोड़ रुपए आय कर द्वारा १२७.०५ करोड़ रु०, रेलवे से ७.२९ करोड़ रु० और डाक तार से २ करोड़ रुपए प्राप्त होने का अनुमान है।

आगामी वर्ष के कुल ३७५.४३ करोड़ रुपये के अनुमानित व्यय में से प्रतिरक्षा सेवाओं पर १८०.०२ करोड़ रु० और असैनिक व्यय की मद में १९५.४१ करोड़ रुपये व्यय होंगे। प्रतिरक्षा सेवाओं की मद में से सेना पर १३० करोड़ रुपये, नौसेना पर ९.११ करोड़ रुपए, वायु सेना पर २४.४८ करोड़ रुपये और अप्रभावशाली सेवाओं पर १२.५३ करोड़ रुपये व्यय होंगे।

असैनिक व्यय की मद में चालू वर्ष में १९९.८१ करोड़ रुपए के व्यय की तुलना में आगामी वर्ष १९५.४१ करोड़ रु० के व्यय का अनुमान है। इस प्रकार इस व्यय में ४ ४ करोड़ रुपए की कमी होने की सम्भावना है। वास्तव में कमी तो १२.७१ करोड़ रुपए की है किन्तु "अधिक अन्न उपजाओ" तथा विकास योजनाओं के राज्यों को दिए जाने वाले अनुदान, जो पहले पूंजीगत व्यय की मद में डाले जाते थे, अब राजस्व बजट में डाले जा रहे हैं। यह रकम ८.३१ करोड़ रु० है। चालू वर्ष में इस मद में ३५.०७ करोड़ रुपए की व्यवस्था थी, जबकि आगामी वर्ष में २५ ३२ करोड़ रु० के व्यय का अनुमान है। यह कमी खाद्य सम्बन्धी आर्थिक सहायता तथा वसूली पर दिए जाने वाले कमीशन में कमी कर दिए जाने के कारण हुई है।

१९५० ५१ में पूंजीगत व्यय का संशोधित अनुमान ८३ करोड़ रुपये का है, जब कि मूल बजट में ६२ करोड़ रु० का था। व्यय में वृद्धि का कारण यह था कि राज्यीय सरकारों को अनुमानित से अधिक ऋण देना पड़ा, और पाकिस्तान के विश्व बैंक का सदस्य बन जाने के कारण विभाजन सम्बन्धी समझौते के अनुसार, उसके सदस्यता शुल्क का २ करोड़ ६२ लाख रुपया देना पड़ा।

वित्त मन्त्री ने कहा है कि आगामी वर्ष पूंजीगत व्यय के लिए कुल ७७ करोड़ रु० की और राज्यों को दिए जाने वाले ऋणों के लिए ६२ करोड़ १२ लाख रुपए की व्यवस्था की गई है। पूंजीगत बजट की मुख्य मदें इस प्रकार हैं: रेलें (१५ करोड़ ६२ लाख), डाक और तार (५ करोड़ ४५ लाख); औद्योगिक उन्नति योजनाएं (१० करोड़ ५६ लाख) सरकारी व्यापार योजनाएं (१३ करोड़ ६८ लाख) आदि।

भारत-पाक व्यापारिक समझौता

भारत और पाकिस्तान के बीच जो व्यापारिक समझौता हुआ है, वह २६ फरवरी, १९५१ से ३० जून सन् १९५२ तक के लिए है। इस समझौते के अनुसार पाकिस्तान से भारत आने वाली मुख्य चीजों के नाम इस प्रकार हैं—पटसन, रुई और कच्चा चमड़ा। बदले में भारत से पाकिस्तान जाने वाली मुख्य चीजों के नाम इस प्रकार हैं—कोयला, लोहा, कपड़ा और सीमेंट।

इस समझौते के अनुसार पाकिस्तान ३० जून १९५१ के पहले ही भारत को १० लाख गांठ पटसन ले जाने की अनुमति देगा और उसके पश्चात् जुलाई १९५१ से जून १९५२ तक और २५ लाख गांठ पटसन ले जाने की अनुमति देगा। भारत को आगामी ४ मास में शीघ्रता से पटसन देने के लिए पाकिस्तान ने स्वीकार कर लिया है कि वह पाकिस्तान पटसन बोर्ड के पास के २॥ लाख गांठ पटसन को निश्चित मूल्य पर जिसके बारे में समझौता हो गया है, बेच देगा और अन्य देशों को भेजे जाने वाले पटसन को सीमित कर देगा।

रुई के सम्बन्ध में यह तय किया गया है कि हमारे देश की मिलें पाकिस्तान में स्वतन्त्रता पूर्वक जहां चाहें कपास खरीद सकती हैं, क्योंकि पाकिस्तान से रुई लाने के लिए अभी कोई भाव निर्धारित नहीं किया गया है। ऐसी आशा है कि इस

[शेष पृष्ठ २२ पर]

नये करो का प्रस्ताव

अर्थमन्त्री ने घोषित किया कि करों में की गई नई वृद्धि से ३१.१५ करोड़ की आय होगी।

१. कारपोरेशन टैक्स में १ पैसे की वृद्धि
२. आय कर तथा सुपर टैक्स पर ५ प्रतिशत सर चार्ज। इससे ६ करोड़ की आय होगी।
३. आयात,सूची की समस्त वस्तुओं पर ५ प्रतिशत सर चार्ज। विशेष समझौतों की वस्तुओं पर नहीं लगेगा।
४. मूंगफली के निर्यात पर प्रति टन ८०) कर लगेगा।
५. बीयर, स्प्रिट, एलकोहलिक शराब का आयात कर १०० से १५० प्रतिशत बढ़ा दिया गया है। इससे ४० लाख की आय होगी।
६. मोटर स्प्रिट (पेट्रोल) के आबकारी कर ५ प्रतिशत की वृद्धि।
७. काली मिर्च व रद्दी रुई के निर्यात कर में वृद्धि होगी। इससे एक करोड़ की आय होगी।
८. सूती वस्त्र पर से निर्यात कर १९४९ में हटा लिया गया था और केवल मोटे तथा मध्यम किस्म के वस्त्र के निर्यात पर ही लागू था। अब भारतीय कपड़े पर १० प्रतिशत निर्यात कर लगेगा। इससे २॥ करोड़ की आय होगी।
९. मिट्टी के तेल के आबकारी कर में ५ प्रतिशत की वृद्धि की गई है।
१०. तम्बाकू के कर में परिवर्तन होगा, जिससे १३ करोड़ की आय होने की आशा है।
११. दिल्ली में बिक्री कर लागू होगा, इससे १ करोड़ की आय होगी।
१२. दो आने की दस सिगरेटों पर एक पैसा तथा २॥ आने की १० सिगरेटों पर दो पैसा सर चार्ज होगा।

पहिली अप्रैल से रेल भाड़े में वृद्धि हो रही है। ('नवभारत टाइम्स' के सौजन्य से)

१९५१-५२ का बजट

आय		नये प्रस्तावित कर
तटकर	१४१,२२	८,७५
उत्पादन कर	७१,६३	१३,१५
निगम कर (कारपोरेशन टैक्स)	३०,७८	२,२५
अन्य आय कर	१२६,५७	६,००
अफीम	२३५	
ब्याज	१६७	
शासन प्रबन्ध	८४२	
मुद्रा व टकसाल	१२३२	
नागरिक निर्माणकार्य	१४२	
अन्य आय स्रोत	११,६१	१,००
डाक तार विभाग	२००	
रेलवे की आय	७२६	
अन्यों को आय कर से कमी	४०५३	
कुल आय	३९९,८३	३१,१५

व्यय	
आय में से सीधा खर्च	१४५८
सिंचाई	२७
ऋण में	३७,३१
शासन व्यय	५६,०२
मुद्रा और टकसाल	२,६६
नागरिक निर्माण	१३,३८
पेंशने	७,३५
शरणार्थी निवास	३,८६
अन्यमद में सहायता	२५,३२
अन्य खर्च	५०
राज्यों को सहायता	१५,४३
असाधारण मदें	१०,३७
रक्षा व्यय	१८०,०२
विभाजन के पूर्व के भुगतान	२,७५
कुल खर्च	३७५,४३
बचत	२५,९२

कांग्रेस अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमदास टंडन तथा आचार्य कृपलानी के बीच चल रही सहयोग वार्ता का अभी कोई निश्चित परिणाम नहीं निकल सका है।

कांग्रेस कार्यकारिणी ने आपके विरुद्ध अनुशासन भंग का आरोप लगाया है।

श्री गोपालास्वामी आयंगर ने रेलगाड़ियों का किराया बढ़ाने की मांग प्रस्तुत की है।

वित्त मन्त्री श्री चिन्तामणि देशमुख ने संसद के समक्ष अपना प्रथम बजट पेश किया है।

चीन-स्थित भारतीय राजदूत श्री पाणिक्कर ने त्यागपत्र देने का विचार स्थगित कर दिया है।

स्तालिन - चर्चिल का वाक् युद्ध

काश्मीर के प्रधानमन्त्री शेख अब्दुल्ला ने संयुक्त राष्ट्र संघ के काश्मीर सम्बन्धी प्रस्ताव को ठुकरा दिया है।

पाकिस्तान से व्यापारिक संधि

श्री व्यास एम० ए०

इस समय कराची में भारत तथा पाकिस्तान के मध्य एक व्यापारिक सन्धि हुई है और उसके परिणामस्वरूप शीघ्र ही भारत तथा पाकिस्तान में फिर से व्यापार चालू होने की सम्भावना है। यह व्यापार स्थगित क्यों हुआ था? उसके स्थगित होने का परिणाम क्या हुआ तथा अब यह फिर चालू क्यों किया जा रहा है? इत्यादि प्रश्न साधारण व्यक्ति के मन में उठते हैं।

सितम्बर १९४९ में पाकिस्तान ने अपने रुपये का मूल्य भारत के रुपये की तुलना में बढा दिया। परिणामस्वरूप पाकिस्तान से १०० रुपये का माल खरीदने पर भारत सरकार को लगभग १४४ रुपये देने पड़ते थे। भारत सरकार ने पाकिस्तानी रुपये के उस बढाए हुए मोल को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और कहा कि पुराने दर पर ही पाकिस्तानी माल का भुगतान किया जायगा। पाकिस्तान सरकार ने उसे अस्वीकार कर दिया। उस प्रकार से भारत तथा पाकिस्तान में व्यापारिक गतिरोध अथवा आर्थिक युद्ध आरम्भ हुआ। उसका दोनों देशों के आर्थिक ढांचों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा।

भारत पाकिस्तान से मुख्यतः जूट (पटसन) तथा कपास लेकर उसे कपड़ा तथा कोयला देता था। अत इस व्यापारिक गतिरोध के परिणामस्वरूप पाकिस्तान के सामने यह दो समस्याएं मुख्य रूप से आईं —

(१) कोयला तथा कपड़ा बाहर से मंगाने का प्रबन्ध करना।

(२) जूट तथा कपास की खपत के लिये भारत के अतिरिक्त अन्य ग्राहक ढूंढना।

(१) कपड़ा तो पाकिस्तान अन्य देशों से मंगा सकता था, परन्तु पाकिस्तान में जिस प्रकार के कपड़े की अधिक मांग होती है वह भारत में ही बनता है। परिणामतः पाकिस्तान मे अधिकांश भारतीय कपड़ा ही सिंगापुर तथा इंगलैंड की मंडियों में से होकर पहुंचने लगा। पाकिस्तान ने भारतीय कपड़ा अधिक मूल्य देकर भी खरीदा।

कोयला समुद्र पार से मंगाना कठिन होता है। परन्तु पाकिस्तान ने अधिक मूल्य देकर पोलैंड से कोयला मंगाने का प्रबन्ध किया। कुछ कोयला पाकिस्तान पहुंचा भी, परन्तु वह उसकी आवश्यकताओं की दृष्टि से अपर्याप्त था। विवश हो कर पाकिस्तान ने कई रेलगाड़ियें बन्द कर दीं।

(२) पाकिस्तान ने अपनी कपास तो बेच दी, परन्तु जूट के लिए उसे और कोई खरीदार नहीं मिला। प्रत्येक देश जूट का बना बनाया माल (बोरियें आदि) तो चाहता था, परन्तु कच्चा माल खरीदने को कोई तैयार नहीं था। कारण यह जितने जूट के कारखाने भारत में हैं उनका लगभग आठवां भाग ही बाकी सारे संसार के देशों में हैं। कुछ देशों ने अन्य कारखानों में थोड़ी बहुत अदला बदली करके जूट से माल बनाना शुरू किया, परन्तु उनकी जूट की मांग भारत की तुलना में बहुत ही कम रही।

भारतीय कारखानों की जूट की कुल खपत लगभग ६५ लाख गांठें हैं। इसमें से लगभग २० लाख गांठें तो भारत खुद पैदा करता था और बाकी की ४५ लाख के लगभग गांठें पाकिस्तान से खरीदता था। परन्तु व्यापारिक गतिरोध के बाद भारत ने जूट में आत्म निर्भर होने की योजना बनाई। तीन वर्षों में ही जूट का उत्पादन लगभग तिगुना हो गया। यह निम्नलिखित आंकड़ों से स्पष्ट है —

वर्ष	उत्पादन
१९४७–४८	१७ लाख गांठें
१९४८–४९	२० „ „
१९४९–५०	३१ „ „
१९५०–५१	४५ „ „

इस प्रकार से पाकिस्तानी जूट की भारत को अब उतनी आवश्यकता नहीं–जितनी कि पहले थी। जो थोड़ी बहुत आवश्यकता है भी, वह किसी न किसी प्रकार से पूरी हो जाती है। पूर्वी बंगाल के किसान को अपनी जूट के दाम चाहिएं। यदि उसकी सरकार उसे वह दाम नहीं दिला सकती तो वह अपना तथा अपने परिवार का पेट पालने के लिए कैसे भी और कहीं भी उसे बेचता है। प्रतिवर्ष पर्याप्त मात्रा में जूट चोर बाजारी से पाकिस्तान से भारत पहुंचता है। दोनों ओर की सरकारें इसे देख कर भी अनदेखा कर देती हैं। न उनमें उसे रोकने की इच्छा है और न सामर्थ्य ही।

इधर कुछ समय से पूर्वी पाकिस्तान मे सरकार के प्रति असन्तोष तथा रोष भावना बढ रही है। इसका मुख्य कारण पाकिस्तान का भारत से उपर्युक्त व्यापारिक युद्ध है। पाकिस्तान का सारा जूट पूर्वी पाकिस्तान में ही पैदा होता है। पूर्वी पाकिस्तान की सारी समृद्धि एवं उसका आर्थिक ढांचा जूट के व्यापार पर ही आधारित है। अब जूट के न बिक सकने तथा उचित दाम न मिलने के कारण किसानों तथा साधारण जनता में असंतोष बढ रहा है। वास्तव में इस व्यापारिक युद्ध का सारा परिणाम पूर्वी पाकिस्तान को ही भुगतना पड़ रहा है वहां का प्रत्येक व्यक्ति हृदय से चाहता है कि भारत के साथ व्यापार फिर से चालू हो।

अब पाकिस्तान इस सन्धि द्वारा एक ओर तो अपना फालतू जूट जोकि अभी तक बिक नहीं सका, भारत को बेच देगा और उसके बदले में कोयला तथा कपड़ा, जिनकी कि उसे अत्यन्त आवश्यकता है खरीद लेगा। दूसरी ओर पूर्वी बंगाल में फैल रहा असंतोष भी कुछ दब जायगा। परन्तु भारत को इस सन्धि से कुछ भी लाभ दिखाई नहीं देता। भारत अपनी जूट तथा कपास की आवश्यकता वैसे भी पूरी कर लेता है तथा अपना तैयार हुआ माल भी अन्य देशों में बेच रहा है।

इस विषय में यह स्मरण रहना चाहिए कि पाकिस्तान ने अपने रुपये का मूल्य केवल भारत को हानि पहुँचाने तथा भारत के जूट उद्योग को नष्ट करने के लिए ही बढाया था। यह उसकी भारत के विरुद्ध आर्थिक युद्ध की घोषणा थी। भारत ने उस चुनौती को स्वीकार किया तथा अपनी जूट तथा कपास की उपज को बढा कर पाकिस्तान की आशा को दुराशा में बदल दिया। सौभाग्य से अब हम संकट काल को लगभग पार कर चुके हैं। एक दो वर्षों में ही भारत अपने जूट तथा कपड़ा के उद्योग के लिए पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल पैदा कर सकेगा। अब पाकिस्तान भारत से संधि करना चाहता है। क्यों? क्योंकि अब वह स्वयं विपत्ति में फंस गया है। पूर्वी बंगाल मे दिन प्रति दिन असन्तोष बढता जा रहा है तथा कोयले के बिना यातायात में भीषण अव्यवस्था फैल रही है। पूर्वी बंगाल में बढ रहा असन्तोष उसे पश्चिमी पाकिस्तान से स्वाधीन हो कर भारत मे मिल जाने की भावना को बल दे रहा है। पूर्वी पाकिस्तान की जनता समझने लगी है कि वह पश्चिमी पाकिस्तान का एक उपनिवेश मात्र है तथा उनका राजनैतिक तथा सामाजिक जीवन ही नहीं, अपितु आर्थिक जीवन भी कराची से संचालित होता है। भारत यह सब कुछ समझता है, परन्तु फिर भी अपने पड़ौसी राष्ट्र को इस विपत्ति में से निकालने को उत्सुक है। अभी भारत सरकार को कदाचित पाकिस्तानी मनोवृत्ति का पूर्ण परिचय प्राप्त नहीं हुआ। एक उदाहरण यहां पर अयोग्य नहीं होगा। अभी-अभी जब कि अमेरिका भारत को २० लाख टन अनाज भेंट स्वरूप देने के

[शेष पृष्ठ २० पर]

गीत

बटोही, ठंडी सांस न ले!
कंटीले पथ पर बढ़ता जा पांव सब छिल ही जायं भले!
बटोही, ठंडी सांस न ले!
झेलते आंधी वर्षा घाम-
निरन्तर बढना तेरा काम।
मिले या मिले नहीं विश्राम पेड़ की शीतल छांह तले।
बटोही, ठंडी सांस न ले!
आंच में अब प्यारे, कुछ और,
राख मत बन कंचन की ठौर!
परीक्षा तब होगी पूरी खरा कंचन होकर निकले!
बटोही, ठंडी सांस न लें!
रह गई मंजिल तेरी पास!
अरे, अब मत ले गहरे सांस!
टिकाये रख अपना विश्वास अरे ओ हिम्मत के पुतले!
बटोही, ठंडी सांस न ले!
लक्ष्य अब रहता थोड़ी दूर—
तभी दुख आते हैं भरपूर!
अंधेरा बढ ही जाता है सूर्य उगने से कुछ पहले!
बटोही, ठंडी सांस न ले!

—रामेश्वर 'तरुण'

कांग्रेस-सरकार और व्यापक असंतोष

★ श्री रामनारायणसिंह संसद् सदस्य

मैं देखता हूं कि गवर्नमेंट की तरफ से यह बिल लाया गया है और गवर्नमेंट में जवाहरलालजी, हमारे राजाजी और किदवई साहब ऐसे ऐसे पुराने साथी, पुराने देशभक्त, ऐसे २ बड़े धुरन्धर देशभक्त इस काम में लगे हुए हैं और उनकी तरफ से यह बिल आया है। एक तरफ तो हम देखते हैं और दूसरी तरफ यह देखते हैं कि सारे देश में क्या हो रहा है और जो बिल लाया गया है, उस पर सोचते हैं तो वही हालत हो जाती है जैसा कि तुलसीदास जी ने कहा है "भइ गति सांप छुछुंदर केरी"। सभापतिजी, क्या ऐसी है कि छुछुंदर एक जीवधारी है, उसकी शक्ल सूरत चूहे की तरह होती है। सांप भूख से उसको पकड़ लेता है। लेकिन पकड़ने के बाद मालूम होता है कि यह छुछुंदर है और चूहा नहीं है और छुछुंदर के पकड़ने के बाद होता क्या है कि अगर छुछुंदर को निगल जाता है तो सांप का पेट फट जायगा और वह मर जायगा और अगर जब सांप छोड़ देता है तो सांप अंधा हो जाता है। इसी तरह की 'भई गति सांप छुछुंदर केरी' हालत हमारी है। आज हमारे सामने, जिन्होंने इस सरकार के जन्म देने में काम किया, सारे जीवन का प्रति पल देश के उद्धार करने में लगाया, लाया है प्रिवेंटिव डिटेंशन बिल।

सभापतिजी, इसी भवन में जब अंग्रेजों का राज्य था, आपकी जगह पर दूसरे लोग सभापति का काम करते थे। हम में से बहुत से लोग उस समय बहस करने वालों में होते थे। मैं भी एक था। ऐसे कानून, ऐसे नियम, जब अंग्रेज बनाना चाहते थे तो हम लोग कहते थे कि कोई सभ्य सरकार ऐसे कानून नहीं बना सकती। आज हम, कांग्रेस वाले, वही कानून बना रहे हैं। तो क्या आज मेरे मुंह है, हमारी सरकार के मुंह है, यह कहने के लिये कि यह सभ्य सरकार है? हम लोगों को सोचना है, हमको इस पर विचार करना है कि आज कम्युनिज्म और सब इज्म हमारे देश में जो आ रहे हैं और बढ़ रहे हैं वह कैसे हैं।

सभापतिजी, मैं सरकार से कहता हूं, आज यह हमारी सरकार कही जाती है, कि आप तो कहते हैं कि हैदराबाद में ८ जिलों में कम्युनिज्म फैल गया है। वह दिन दूर नहीं है कि आप, हम, राजाजी सब कोई देखिए, सोचिये, विचार करिये और कोई रास्ता निकालिये नहीं तो यह जानिये कि सारा देश कम्युनिस्ट हो जायगा और आठ जिले ही कम्युनिस्ट नहीं रहेंगे।

(डिप्टी स्पीकर : दवा क्या है?)

हां, बताता हूं कि दवा क्या है। तो यह होने जा रहा है कि सारा देश कम्युनिस्ट हो जायगा। आपको सोचना होगा कि इस देश में कम्युनिस्ट कैसे फैल रहा है। क्या आप नहीं जानते, जवाहरलाल जी नहीं जानते, राजाजी नहीं जानते कि सारे देश में असन्तोष की अग्नि भभक रही है। सारे देश में और हर व्यक्ति के हृदय में असन्तोष है। और, सभापति महोदय, मुझे तो डर है कि कहीं मैं भी कम्यूनिस्ट हो जाऊं तो कोई ताज्जुब नहीं। आज मैं सारे देश में असन्तोष देख रहा हूं। अभी मैं आ रहा हूं चितौड़गढ़ से, राजपूताने में मैं गया था। वहां मैंने सुना कि भुखमरी के कारण दो गौओं में आम तौर पर लूट हो गयी। आप कंट्रोल रखे हुए हैं। कंट्रोल से देशमें शायद किसी को लाभ नहीं पहुँचता सिवाय पुलिसमैनके। और यह बात पन्तजी ने बहुत अच्छीकही यह जो बिल लागू होगा, ब्लैकमारकेटियरों के लिए, तो यह ब्लैकमारकेटियर जो लाख दो लाख दे देगा पुलिस वाले को, और वह पकड़ा नहीं जायगा। मैं तो अपने को बधाई दूंगा, आपको बधाई दूंगा, सरकार को बधाई दूंगा, जिस दिन कि ब्लैकमारकेटियर सब कोई इसमें पकड़ लिए जायेंगे। लेकिन पकड़ेगा कौन? सबसे बड़ा ब्लैक मारकेटियर तो वही है जो उनको उत्साहित करा कर ब्लैक मारकेटिंग कराता है। मैं इसका उपाय बताऊंगा, और उपाय बता कर बैठूंगा। लेकिन पहले तो यह सोचना है कि यह कम्युनिज्म पैदा कैसे हुआ। यह सारे देश में जो असन्तोष है, वह इसका कारण है। और असन्तोष आया कहां से?

(श्री किदवई— बिहारसे)

बिहार से भी आया है और यू० पी० से भी और किदवई साहब जहां सेंट्रल गवर्नमेंट में काम कर रहे हैं, वहां से भी आया है। असन्तोष की अग्नि सारे देश में भभक रही है। इस असन्तोष के पहले यह हुआ कि चाहे वह प्रान्तीय सरकारें हों या केन्द्रीय सरकार हो, उनका जो काम हुआ, वह बेढंगा है। जब आज राजाजी कहते हैं कि कम्युनिज्म का प्रचार न हो तो मैं पूछता हूं कि इन्होंने कितना काम किया है, और इनके आने से पहले कितना काम किया गया है कि करप्शन बन्द हो। मैं कहता हूं कि जितना काम अभी हो रहा है, इनमें न्याय का तो कहीं नाम नहीं है। इसी अन्याय के कारण असन्तोष फैला हुआ है।

अब उपाय की बात कहता हूं। उसके पहले आप लोगों को यह तो पता लग जाय कि क्या कुछ लोग यहां से मास्को ट्रेनिंग के लिए भेजे गये थे और वह यहां प्रचार करते हैं? उन लोगों को तो आप पकड़ करके जो कुछ आप चाहें कीजिए, या उनको बाहर ही भेज दीजिए तो अच्छा। मैं अपने देश में कम्युनिज़्म नहीं चाहता।

जिस तरह से आप के देश में यह फैल रहा है तो उसमें बाहर से आने वाले लोग कारण नहीं हैं, यहीं के लोग हैं। और इस सम्बन्ध में मैं संक्षेप से कहता हूं कि यह जो गवर्नमेंट आफ इण्डिया है और जो प्रान्तीय सरकारें बनी हैं, वही इसका कारण है। कम्युनिज्म प्रचार करने वाले —यही लोग लीडर हैं। और कम्युनिज्म पैदा करने के लिए यही उत्तरदायी हैं।

यह जो हम लोग कभी-कभी कह देते हैं कि कांग्रेस की सरकार है, और हमारे कांग्रेस के आदमी सरकारी काम कर रहे हैं, तो राजाजी से पूछिये कि कम से कम यह बारह घंटे काम करते होंगे तो उसमें कै घंटे कांग्रेस लाइन पर सोचते हैं। बारह घंटे के अन्दर के कांग्रेस के आदमियों से बात करते हैं। बारह घंटे के अन्दर गांधीजी के सिद्धान्त, अहिंसा, समता, इसके बारे में कितनी देर सोचते हैं। और साहब, मैं तो समझता हूं कि इनके सामने न कांग्रेस का ध्येय है, न कांग्रेस की नीति है, न पालिसी है, बल्कि इनके सामने तो वही ब्यूरोक्रैसी है।

जिनके जरिये वह भी जेल में भेजे गये थे, मैं भी भेजा गया था, वही ब्यूरोक्रैसी आप उनके सामने रात-दिन मौजूद है और वह जैसा कहती है, वह उसके मुताबिक करते हैं। तो क्या ऐसी सरकार को कांग्रेस सरकार कहा जाय? कांग्रेस सरकार के मानी तो यह होने चाहिये कि वह गांधीजी के सिद्धान्त पर चलने वाली हो, और कांग्रेस के आदमी सब काम करने वाले हों, तो उसे मैं कांग्रेस सरकार कह सकता था।

मेरा कहना है कि यह बिल तो आप वापिस लीजिये, अगर आपको संसार में अपने को सभ्य कहलाना है। हां, अगर असभ्य कहलाना है, तो दूसरी बात है। क्या इस हमारे देश में जितनी सरकारें होंगी, सारी की सारी असभ्य हो कर रहेंगी। असभ्य होकर, शैतान होकर रहना है, तो चाहे कीजिये, लेकिन अगर सभ्य कहलाना है, तो बिल को वापिस लीजिये।

आज जो सरकार में हैं, चाहे प्रांतीय या केन्द्रीय। मंत्री लोग जब बाहर निकलते हैं, तो उनके साथ पुलिस का पहरा होता है। भला बताइये, पहले जब हमारे राजाजी या जवाहरलाल जी चलते थे, तो उनके पीछे जनता की भीड़ चलती थी, और उनकी पूजा होती थी। लेकिन अब इन लोगों को डर है

"निवारक नजरबन्दी बिल का संसद् में विरोध करते हुये श्री रामनारायणसिंह ने हिन्दी में जो भाषण किया, उसे कांग्रेस सरकार के संचालकों ने अच्छा माना या बुरा, यह कहना तो कठिन है। किन्तु यह बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि उस भाषण में जरी चेतावनी दी गई थी। वह सर्वथा समयानुकूल और आवश्यक थी। "श्री रामनारायणसिंह जब संसद में बोल रहे थे, तब भी कुछ सदस्य उनकी बातों का उपहास कर रहे थे। और वे शायद बाहर जाकर भी यही कहेंगे कि एक सच्चे आदमी ने कुछ बेतुकी बातें की थीं। परन्तु मुझे श्री रामनारायणसिंह के अकृत्रिम शब्दों में एक विपत्ति की ध्वनि सुनाई दी। उनका शब्द साधारण जनता का शब्द था।

"जिसे कवि लोग भगवान के शब्द के नाम से पुकारा करते हैं। शक्ति के आसन पर बैठे हुये लोग जनता के शब्द को उपहास्य समझा करते हैं और उसकी उपेक्षा कर देते हैं, परन्तु वस्तुतः संसार के इतिहास की एक अटल सचाई उस शब्द में अन्तर्हित रहती है। वह सचाई यह है कि जिस शासन यन्त्र पर से साधारण जनता का विश्वास और भक्तिभाव उठ जाता है, वह चिरस्थायी नहीं रह सकता। उसमें परिवर्तन होना अवश्यम्भावी है।

— इन्द्र विद्यावाचस्पति

कि अगर इन लोगों के साथ गार्ड नहीं रहेगा, तो उनकी रक्षा नहीं हो सकेगी और वह मारे जायेंगे।

मैं तो चाहता हूं कि जैसे यह लोग बिना गार्ड के चलते थे, वैसे चलें। अगर मारे जायेंगे, तो मारे जायं, इन के बिना हिन्दुस्तान का काम रुकेगा नहीं।

(मि० डिप्टी स्पीकर: आप बोलते हैं कि उनको बलिदान देना चाहिए।)

मैं नहीं चाहता कि वे बलिदान हों, लेकिन अगर पुलिस की रक्षा के बिना वह बलिदान हो जांय, तो हो जायं, बलिदान हो जाना इनका धर्म है। ऐसे जीवन की जरूरत नहीं, कि अगर वह चलें तो उनके साथ पुलिस चले, गार्ड चले। तो साहब यह तो सब आप को छोड़ना होगा, और जितने अंगरेजों का रंग-ढंग है, वह सब आपको छोड़ना होगा जैसे पहले हमारे राजाजी चलते थे, वैसे चलें। मैं सिर्फ राजाजी के ही लिए नहीं कह रहा हूं, सारे देश में जितने मन्त्री कहलाते, सरकार कहलाते हैं, उन सब के लिए मैं यह कह रहा हूं और यह जो अंग्रेजों का नया रंग ढंग हमारे बीच में आ गया है, उसको छोड़ें और समाज के साथ मिल जांय।

वह लोग समाज के साथ काम करें घर घर में घूमें, लोग क्या कह रहे हैं, उसको सुनें। प्राचीन काल में भी हमारे यहां ऐसा होता था, राजा और मन्त्री लोग भेष बदल कर आम लोगों के बीच में जाते थे, और आम लोग क्या कहते हैं, उनको सुनते थे और उसी के मुताबिक अपनी नीति निर्धारित करते थे। आज अब अंग्रेजों की तरह आप लोग मन्त्री बने हैं, सरकार बने हुए हैं, तो क्या वह देश के लिए नवाब बनकर बैठे हैं।

कम्यूनिज्म कैसे मरेगा

दूसरी बात जो मुझे कहनी है वह यह है कि अगर आप चाहते हैं कि कम्यूनिज्म हमारे मुल्क में न आये और अगर आप चाहते हैं कि कम्यूनिज्म खत्म हो जाय, तो उसका उपाय यह है कि राजा जी और जितने मन्त्री लोग हैं, सबका वेतन पांच सौ रुपये कर दिया जाय और जितने सरकारी अफसर हैं, उन लोगों का वेतन भी पांच सौ कर दिया जाय और जो अफसर पांच सौ में राजी न हों, उन सबको निकाल बाहर किया जाय। साथ ही साथ पार्लियामेंट के मेम्बरों का भी एलाउन्स घटा दिया जाय, सबका एक सा हो, जितना उन्हें मिले, हमें भी मिले। और जैसे मैंने आप लोगों से पहले भी कहा था, देश में रुपया इस समय पानी की तरह बह रहा है, इस वास्ते मेरा दिल चाहता है कि इस सरकार के हाथ में एक पैसा न दिया जाय, और न इसको कोई अधिकार मिले और न एक पैसा मिले, ऐसा मेरा दिल चाहता है। तो आप आज पांच सौ वेतन कीजिये। इस समय जब राजा जी और किदवई साहब कांग्रेस में यह कहते थे कि पांच सौ रुपये से अधिक वेतन न लेना चाहिये, तो आज उनका देश के सामने और दुनिया के सामने क्या मुंह है। मैं कहता हूं कि पांच सौ रुपये से अधिक वेतन पाने वाले को डूब मरना चाहिए, मेरा यह सब कहने का मतलब यह है कि आज सरकार का क्या खर्च है, उसको कम कर दिया जाय, एकदम कांग्रेस के सिद्धान्त के मुताबिक। और सब सरकारी अफसरों का भी वेतन कम कर देना चाहिये और जहां जहां अधिक हो. सरकारी खर्चा कम किया जावे, तो मैं कहता हूं कि इस तरह की घोषणा अगर आज की जाय, तो कल से कम्यूनिज्म मरने लगेगा और दो चार दिन में बिल्कुल मर जायगा। अच्छा यह तो खर्च करने की बात हुई। और जैसा मैंने पहले कहा था, आज डिटेनशन का बिल पास करते जाइए।

आज पास करो और कानून का पहाड़ बनाओ। उसको लागू करने के लिए पलटन भर्ती करो। लेकिन उससे कम्यूनिज्म दबने का नहीं है, यह जानी हुई बात है। आज मैं आपको इसका उपाय बतला रहा हूं। लेकिन जो कुछ तरह से कम कर दीजिये। उसके बाद मैं एक बात कहता हूं आप लोगों से। आज तीन वर्ष हो गये हैं हमारी सरकार को बने हुए। अगर इस बात का सारे देश में प्रचार रहता कि जितनी प्रान्तीय सरकारें हैं और केन्द्रीय सरकार है, या जितने मंत्री हैं वह पूरे ईमानदार हैं और वह लोग देश का दुःख दूर करने के लिए कोशिश कर रहे हैं तो मैं कहता हूं सभापति जी, कि हमारा यश फैलेगा और आज हमारे देश की परिस्थिति बदल सकती है। लेकिन केन्द्रीय सरकार के बारे में तो मैं नहीं कहूंगा, कारण यहां की तो गड़बड़ बातें कभी कभी सुनने में आती है लेकिन प्रान्तों में तो, मैं अधिक नहीं कहूंगा, तमाम बात आप जानते हैं, वहां तो कहीं कहीं मालूम होता है कि लूट हो रही है। प्रान्तीय मिनिस्टरों का नाम मैं नहीं लेना चाहता हूं लेकिन लूट हो रही है, कई जगहों का हाल मैं जानता हूं। वहां तो यहां तक होता है कि अगर आप किसी मिनिस्टर के कहने के अनुसार उसकी पार्टी न दो तो आपको जेल भेज देंगे और वहां कौल कर लिया जाएगा कि अब तुम्हारी पार्टी में रहेंगे, बस जेल से छोड़ दिया जाएगा मेरे पास नजीरें हैं, मैं उसके बिना नहीं बोलता।

(श्री महावीर त्यागी-ऐसा कौनसे प्राविन्स में हो रहा है साहब?)

सभापति जी, जितने इस तरह के मिनिस्टर हैं उनका पता लगाइए, जल्द ही पता लग जायगा, उसमें देर नहीं होगी। उन सब मिनिस्टरों को जेल भेज दीजिये आप प्रिवेन्टिव बिल नहीं बल्कि ऐसा बिल पास कीजिये, जिस किसी मन्त्री के बारे में कुछ गड़बड़ सुनी आप उसको जेल भेजिये। प्रान्तीय सरकारें और केन्द्रीय सरकार में बिल्कुल जिनके बारे में शक शुबहा न हो ऐसे आदमी मंत्रिमंडल बनायें, जिसमें सारे देश में इतना हो जावे कि ऐसे ईमानदार मन्त्री बने हैं और यही काम करेंगे। मैं कहता हूं कि ईमानदारों के साथ काम हो तो लोगों के बीच में विश्वास पैदा होगा। सभापतिजी, आपको बहुत फिक्र थी कि हैदराबाद के आठ जिलों में कम्यूनिज्म फैल रहा है। वहां सरकार की तरफ से उपदेशक भेजे जायं और अच्छा हो आप ही हों उपदेशकों के नेता। लोगों के बीच में आप प्रचार करें। लोगों को इतना प्रसन्न करें कि जहां कम्यूनिज्म का नाम भी सुनें तो डर न जायें यहां तक कि जहां वह कम्यूनिस्ट का नाम सुनें तो स्वयं उन लोगों को सजा दें। आपको कोई काम न करना पड़े।

(श्री किदवई . वालोलेंस ?)

आप वायोलेन्स के सरदार बन कर वायोलेन्स की बात करते हैं? जनता को इतना खुश किया जाय, जनता को इतना सुखी किया जाय, जनता में इतना विश्वास पैदा किया जाय कि वह समझें कि सरकार हमारी है, सरकार हमारे लिए काम कर रही है। तो इस तरह से अगर जनता में विश्वास पैदा कर दें फिर और जो पहले कहा है उस तरह से खर्च कम हो, वेतन कम हो, तो काम चल सकता है। करप्शन तो दूर करना ही पड़ेगा, सारे मिनिस्टरों को इन्साफ करना ही पड़ेगा। अगर यह सब कहते हैं, और यही जरिया है, तो कम्यूनिज्म दूर हो सकता है। राजाजी, शायद आज आप जानते होंगे कि आपके लिये मेरे दिल में कितनी भक्ति है, मैं तो जानता ही हूं, लेकिन मैं कहता हूं कि प्रान्तीय सरकार और केन्द्रीय सरकार जितने कार्य कर रही है, बिल पास करना, और जो कुछ भी आप कर रहे हैं, उसके जरिये कम्यूनिज्म को निमंत्रण दे रहे हैं। आपकी नीति झगड़े को देश में फैला रही है। और वह आयेंगे और आपके रोके नहीं रुकेंगे अगर जो उपाय मैं करता हूं उसको तैयार नहीं हैं तो। नहीं तो कम्यूनिज्म आज खत्म होता है हमारे देश से। लेकिन खर्च कम हो, मंत्रियों का वेतन कम हो। एक रोज मैं यहां बोल रहा था पांच सौ रुपया वेतन के बारे में तो हमारे ठाकुरदास भार्गव जी ने कहा था कि कैसे चलेगा पांच सौ में। मैंने जवाब दिया था कि पांच सौ में इसके लिए सारा देश गुरु है। देश में कितने हैं हजार में, लाख में जिनकी माहवार आमदनी पांच सौ की है। वह कैसे चल रहे हैं। आप आप कहते कहते हैं कि कैसे चलेगा? राजाजी जब जेल में थे तो कैसे चलता था, मैं भी जब जेल में था तो कैसे चलता था। यह सब कहने की बात है। खर्च कम कीजिये, ईमानदारी के साथ काम कीजिये और जहां गड़बड़ मन्त्री हों या और सरकारी आदमी हों, उनको अलग कीजिये। तभी कम्यूनिज्म बन्द होगा, इस बिल से ही बन्द होने का नहीं है।

हम लोग जिस जगह जाते हैं, अगर देश में जाते हैं तो आप लोगों की शिकायतें सुनते सुनते हमारी देह छिदी जाती है। जहां जहां जाते हैं वहां सरकार की शिकायत सुनते हैं। हमें तो ताज्जुब है कि यह सरकार कैसे टिकी हुई है। मैं तो कहता हूं कि आज आपको कोई उपाय सोचना पड़ेगा। अब तक सरकार एक चीज थी और जनता दूसरी चीज थी, लेकिन अब जनता और सरकार को आपस में एकदम हिलमिल हो कर एक हो जाना चाहिए और राजाजी जैसे पहले हम लोगों के साथ मिलते थे वैसे ही मिलें। और जनता के साथ बात करें। मैं कहूंगा कि इसका यही उपाय है। आप सरकार का नाम भी बदल दीजिये। सरकार के माने शैतानी हुकूमत के सिवा और कुछ नहीं हो सकते। अब सरकार नाम को ही हटा दीजिये। अगर देश के प्रबन्ध को करने के लिए कोई समाज हो तो उसका नाम सेवक मंडल रखना चाहिए, और मंत्री को सेवक मंत्री कहना चाहिये। जैसे आप कम्युनिज्म को दूर करना चाहते हैं, वैसे ही इस सरकार शब्द को भी दूर कीजिये। सरकार के

[शेष पृष्ठ २० पर]

रूस में अखबारी पर्दा

★ श्री हैरी श्वार्ट्स

१९५० के शुरू में ही मास्को स्थित विदेशी दूतावासों को मालूम हुआ कि जो सोवियट पत्र और पत्रिकाएं उन्हें मिलती रही थीं उन में से लगभग तीस का आना बन्द हो जायगा। यहां तक कि सोवियट सरकार की आज्ञाओं के रजिस्टर जैसी महत्वपूर्ण पत्रिका, मध्य एशिया के खास खास समाचार पत्र और मुख्य विज्ञान विषयक विवरणिकाओं का मिलना भी रोक दिया गया। इस कार्य से क्रैमलिन ने बाह्य जगत के लिए सोवियट रूस की घटनाओं और प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के साधन और भी कम कर दिये। शान्तिकाल में जानकारी के साधनों का इतना अभाव कभी न था।

इस कार्यवाई ने उनकी ऐसी कुचालों को चरम सीमा तक पहुँचा दिया। जून १९४७ में युद्धकालीन गोपनीयता के नियम फिर से बनाये गये और कड़े कर दिये गये। इन से बहुत सी आर्थिक और सैनिक अनधिकृत बातों का प्रगट करना सैनिक न्यायालयों द्वारा विचारणीय अपराध बना दिया गया है। उसका दण्ड बीस साल तक की कैद है, जो सुधार श्रम शिविरों में काटनी पड़ती है। सेन्सर की कड़ी व्यवस्था पहले से ही यह निश्चित कर देती है कि असावधानी से ऐसी कोई भूल न हो जाय। सुरक्षा के यह सब उपाय होते हुए भी सोवियट सरकार ने पिछली गर्मियों में यह वांछनीय समझा कि विदेशियों को जो कुछ प्रकाशन प्राप्त होते हैं उनकी संख्या और भी कम कर दी जाय।

विदेशियों के लिये बन्दीगृह मास्को

इन सब बाधाओं की गुरुता इस बात में है कि युद्ध के उत्तर काल में सोवियट रूस ने और साम्यवादी विदेशियों के लिए अपने विस्तृत प्रदेशों के बारे में प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर लेने के साधनों को तो बिल्कुल समाप्त ही कर दिया है। अनुमति पत्र केवल कूटनीतिक वर्ग को और कुछ थोड़े सम्वाददाताओं और व्यापारियों को ही मिलते हैं। जिन लोगों को प्रवेश करने भी दिया जाता है, उनकी यात्रा की सुविधायें सीमित हैं और कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में जाना तो बिल्कुल मना है। मास्को में भी जो, कि विदेशियों के लिए बन्दीगृह के समान है, साधारण नागरिक से सम्पर्क एक ऐसे नियम से रोक दिया जाता है जिसके अनुसार मामूली बातचीत भी केवल सोवियट सरकारी मामलों के बारे में ही हो सकती है।

ऐसी अवस्था में बाह्य संसार को रूस के बारे में जानकारी उसके समाचार पत्रों और पत्रिकाओं से ही प्राप्त हो सकती । पर बजाय इसके कि वे ऐसी खिड़की का काम दें जिससे हमें सोवियट की वास्तविकता की झलक मिल सके, एक कागजी पर्दा बन गये हैं। इन में जो कुछ भी प्रकाशित होता हैं उस पर अपना पूरा नियन्त्रण रख कर क्रैमलिन बहुत कुछ तो छिपा लेता है और सोवियट जीवन के जिन अंगों को वह प्रकाश में आने भी देता है उनका रूप विकृत कर देता है।

६००० पत्र-पत्रिकाएं

यह बात नहीं है कि समाचार पत्रों या पत्रिकाओं की कमी हो। करीब ९,०-०० समाचार पत्र और १००० पत्रिकायें सोवियट यूनियन में प्रकाशित होती हैं। उनकी समस्त ग्राहक संख्या ३,००,००० से ऊपर ही होगी। समाचार पत्र जगत में प्रवदा और इज्वेस्तिया जैसे बड़े बड़े पत्र भी हैं जिनकी ग्राहक संख्या कई लाख है और सारे देश में फैली हुई है। फिर छोटे छोटे स्थानीय पत्र भी हैं जो कस्बों और देहातों में प्रकाशित होते हैं। पत्र पत्रिकायें केवल रूसी भाषा में ही नहीं वरन अन्य मुख्य अल्प संख्यकों की भाषाओं में भी निकलती हैं। किसानों और मजदूरों के लिए, स्थल और जल सैनिकों के लिए, युवक युवतियों के लिए, दस वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए लेखकों और रेलवे कर्मचारियों सभी के लिए पत्र पत्रिकायें हैं।

पर इन सारे प्रकाशनों की विभिन्नता केवल ऊपरी ही है, वह सब एक ही स्वर से बोलते, एक ही लकीर पीटते हैं, और एक ही उद्देश्य की पूर्ति करते हैं और वह है सोवियट शासन के लिए प्रचार।

लेनिन ने लिखा था 'समाचार पत्र केवल एक सामूहिक प्रचारक और संगठित आन्दोलनकारी ही नहीं हैं, वह एक सामूहिक व्यवस्थापक भी है।' स्टालिन ने समाचार पत्रों की यह कह कर परिभाषा की है कि 'वह एक मात्र साधन है जिसके द्वारा कोई दल श्रम जीवी वर्ग से प्रति दिन और हर समय उसकी भाषा में बातचीत कर सकता है।'

अपने आन्तरिक जीवन की बातों को गुप्त रखना अथवा विकृत करना सोवियट शासन के लिए कोई नई बात नहीं है। उदाहरणार्थ आर्थर कोइसलर ने १९३०-१९३० के अकाल के युग में यूक्रेन में अपने रहने की बात बताई है जब कि उन्हें इस पर महान आश्चर्य हुआ था कि प्रति दिन प्रकाशित होने वाले स्थानीय पत्रों में उस समय की देशव्यापी भूख के विषय में एक शब्द भी नहीं मिलता था। और यह उस समय की बात है जब विदेशियों को सोवियट रूस में यात्रा की अपेक्षाकृत अधिक स्वतन्त्रता और सुविधा थी। आज वह सुविधा नहीं है और पत्रों के ऊपर नियन्त्रण कहीं अधिक है।

सैन्य शक्ति और युद्ध के उपकरण

सोवियत् समाचार पत्रों में सोवियट सैन्यबल अथवा उसकी स्थिति के विषय में कुछ भी प्रकाशित नहीं होता है। जब सेना का समाचारपत्र 'रेड स्टार' सेना के किसी विशिष्ट अंग के बारे में कुछ लिखता है, तो वह साधारणतया उस अंग का नाम छिपा कर 'अमुक बटालियन' कह देता है।

उस देश के अनुसार सोवियत् में कभी सैन्यबल के विस्तार, उसकी रूपरेखा अथवा उसके किन्हीं विशिष्ट कार्यों के बारे में प्रकट वाद-विवाद नहीं होता। सोवियत शस्त्र अथवा उनके टैक्निकल ब्यौरों के बारे में बहुत ही कम सूचना मिलती है। जिन सोवियत हवाई जहाजों, टैंकों अथवा युद्धास्त्रों की तस्वीरें छपती भी हैं वे काफी दूर से ली हुई होती हैं।

अणु शक्ति और उससे सम्बन्ध रखती हुई बातें तो विशेष रूप से गोपनीय रखी जाती हैं। सोवियट में हुआ गत वर्ष का अणु शक्ति विस्फोट सोवियत रूस के समाचारपत्रों में तब तक नहीं निकला था, जब तक कि प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन की घोषणा ने क्रैमलिन को वक्तव्य निकालने पर विवश न कर दिया। शांतिपूर्ण कार्यों के लिए अणु-शक्ति के उपयोग की दिशा में रूसियों ने क्या किया है ? सोवियत के वैज्ञानिक हाइड्रोजन बम पर कब से कार्य कर रहे हैं ? या वे उस पर कार्य कर भी रहे हैं, अथवा नहीं ? इन या इन्हीं तरह के अन्य प्रश्नों का उत्तर हमें प्रवदा, इज्वेस्तिया अथवा अन्य किसी प्रमुख सोवियत प्रकाशन में नहीं मिलता।

आर्थिक शक्ति और वैदेशिक व्यापार

उत्पादन, संग्रह, निर्यात और आयात के सभी आंकड़े गोपनीय समझे जाते हैं। सोवियत सरकार के आर्थिक विवरण, जो कि त्रैमासिक रूप में प्रकाशित होते हैं प्रधानतया प्रतिशत की संख्याओं पर आधारित होते हैं। जिनके अर्थ अस्पष्ट होते हैं। क्योंकि जिन मूल बातों से उनका सम्बन्ध होता है, वे अधिकतर अज्ञात रहती हैं। पिछले वर्ष सोवियत रूस ने कितना इस्पात, तांबा अथवा कितनी कपास पैदा की ? उसके कारखानों ने कितने औजार, रेफ्रिजरेटर, जूते या मोजे तैयार किये ? सामूहिक रूप से चलने वाले खेतों पर कितने घोड़े या ट्रैक्टर हैं ? पारसाल साम्यवादी चीन के साथ सोवियट के व्यापार का विस्तार और रूप क्या था ? ऐसे विषयों पर सोवियत के लेखकगण हमें मुख्यतः अनभिज्ञ ही छोड़ देते हैं। गुप्त रखने की यह चेष्टा इस हद तक ले जाती है कि विदेशी व्यापार के अभ्यासी को अपनी प्रामाणिक विवरण पत्रिकाओं में स्विटजरलैंड सरीखे किसी विदेश के व्यापार के आंकड़े छोड़ देने पड़ते ।

[शेष पृष्ठ १८ पर]

दिल्ली में दस वर्ष—ले० राजेन्द्रलाल हांडा। प्रकाशक—प्रगति प्रकाशन, १४ बी०, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली। साइज डिमाई अठपेजी। पृष्ठ संख्या लगभग १०२। सजिल्द का मूल्य तीन रु० आठ आने।

श्री राजेन्द्रलाल हांडा की यह पुस्तक यद्यपि हिन्दी साहित्य में एक नई वस्तु है, परन्तु वह हिन्दी के नये लेखक नहीं हैं। 'हेमन्त' नाम से उनकी रचनाएं कई वर्ष अनेक हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। उनकी प्रस्तुत पुस्तक भी साप्ताहिक 'वीर अर्जुन' में धारावाही लेख-माला के रूप में गत वर्ष प्रकाशित हो चुकी है, इसलिए वह 'अर्जुन' के पाठकों के लिए सर्वथा नयी नहीं है। परन्तु लेखक ने इन लेखों को पुस्तक रूप में प्रकाशनार्थ तैयार करते हुए इनमें अनेक ऐसे परिवर्तन कर दिये हैं कि जो पाठक इन्हें 'अर्जुन' में पढ़ चुके हैं, उनके लिए भी इस पुस्तक को पुनः पढ़ना आवश्यक हो गया है।

पुस्तक की आलोचना करने से पूर्व हम श्री हांडा के विषय में यह बतला देना अति आवश्यक समझते हैं कि उनके दो आंखें, दो कान, एक मस्तिष्क और एक हृदय भी है, और वे अपने इन अंगों से पूरा काम लेते हैं। ये अंग प्रकृति ने दिये तो अन्य भी सभी प्राणियों को हैं, परन्तु वे सब इन से श्री हांडा की भांति काम नहीं लेते। वरना, दिल्ली की १०-१२ लाख की आबादी में से अकेले हांडाजी को 'दिल्ली में दस वर्ष' का यशस्वी लेखक बनने का सौभाग्य प्राप्त न होता।

यों तो दिल्ली नगरी अपनी ऐतिहासिकता के लिए प्रसिद्ध है, और उसकी ऐतिहासिक घटनाओं को लेखबद्ध करने के लिए अनेक लेखकों ने अपनी लेखनी के जौहर दिखलाये हैं, परन्तु यदि हम ऐसा कहें तो निश्चय ही अत्युक्ति न होगी कि दिल्ली ने गत दस वर्षों में जितने परिवर्तन देखे, उतने उसने इस दशाब्दी से पहले की पचास दशाब्दियों में भी नहीं देखे होंगे। दिल्ली में परिवर्तन तो आज भी हो रहे हैं, परन्तु उनको देखने के लिए हांडाजी की आंख और कागज पर लिपि-बद्ध करने के लिए हांडाजीकी लेखनी चाहिए। दिल्ली की पन्द्रह लाख आबादी नित्य प्रति अपनी आंखों के सामने घटित होते हुए परिवर्तनों को प्रत्यक्ष देख कर भी यह नहीं समझ सकती कि इन परिवर्तनों का मूल्य ऐतिहासिक है।

हांडाजी की 'दिल्ली में दस वर्ष' प्रकाशित होने से पूर्व, वर्तमान इतिहास पर हिन्दी भाषा में रचना करने के लिए अपवाद रूप से ही शायद किसी लेखक ने अपनी लेखनी उठाई हो। हांडाजी ने हिन्दी में यह नया कार्य किया है और अंग्रेजी की 'सत्य कहानी से सदा अधिक आश्चर्यजनक होता है' कहावत को प्रत्यक्ष सत्य सिद्ध कर दिखलाया है। 'दिल्ली में दस वर्ष' पढ़ते हुए कहीं कहीं तो उपन्यास और मूर्तों की कहानी से भी अधिक आनन्द आता है। इन थोड़े-से पृष्ठों में लेखक ने दिल्ली के इतने अधिक और विविध नाटक कागज के रंगमंच पर उपस्थित कर दिये हैं कि शायद ही कोई पाठक ऐसा बचेगा जिसे उनमें अपनी रुचि की वस्तु नहीं मिल जायगी। दिल्ली की सामाजिक, साहित्यिक, राजनीतिक, भौतिक, भौगोलिक, निजी और सार्वजनिक आदि सभी क्षेत्रों को बर्बाद इस पुस्तिका में आ गई हैं। तिस पर विशेषता यह है कि लेखक ने दिल्ली के गत दस वर्षों का इस पुस्तक में निरा वर्णन ही नहीं किया, अपनी सहृदयता और सहानुभूति से उन वर्णनों को सजीव भी बना दिया है। दिल्ली के ईंटों और पत्थरों और गली कूचों तक को उन्होंने संवेदनाशील हृदय प्रदान कर दिया है।

जो पाठक दिल्ली के निवासी नहीं हैं, उनको तो इस पुस्तिका में बहुत कुछ नया पढ़ने को मिलेगा ही, दिल्ली-निवासियों का इससे और भी अधिक मनोरंजन होगा। उन्हें इसका एक एक अध्याय अपने ही घर की एक एक आपबीती कहानी जान पड़ेगी।

मनोरंजन और ज्ञान-वृद्धि के अतिरिक्त इस पुस्तक का साहित्यिक दृष्टि से भी बहुत ऊंचा स्थान है। जैसा कि हमने ऊपर संकेत किया है, हिन्दी में इस विषय की अन्य पुस्तकें अपवाद रूप से ही कोई होंगी। कोई व्यक्ति ऐसा नहीं, जिसके चारों ओर नित्यप्रति ऐसी घटनाएं घटित न होती रहती हों, जिनका मूल्य भविष्य में ऐतिहासिक सिद्ध हो सकता है। परन्तु उन घटनाओं का मूल्य आंक कर उन्हें अपने सम-कालिक और उत्तर कालिक बन्धुओं के लिए लेख-बद्ध करके अमर बना देना विरले ही सहृदय व्यक्तियों का कार्य होता है। श्री राजेन्द्रलाल इस दृष्टि से बहुत सफल लेखक सिद्ध हुए हैं।

—राम गोपाल

आलोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियां आनी आवश्यक हैं।

—संपादक

उपदेश मञ्जरी—ले० ऋषि दयानन्द। प्रकाशक—आर्य प्रकाशन मण्डल, लाजपतराय मार्केट, दिल्ली। मूल्य २)

इस पुस्तक में ऋषि दयानन्द के उन १२ व्याख्यानों का संग्रह है, जो उन्होंने आज से ७२ वर्ष पूर्व पूना में दिये थे। ऋषि दयानन्द ने हजारों पाठों का साहित्य लिखा, किन्तु इससे कहीं अधिक उन्होंने भाषण दिये और वे उस समय व्याख्यानों को लिपिबद्ध करने की प्रथा न होने के कारण आज हमारे लिए अप्राप्य हैं। सिर्फ पूना में दिये गये १२ व्याख्यान लिखे गये थे, वे ही इस पुस्तक में संग्रहीत हैं। यह पुस्तक वर्षों से आर्य जगत के लिए अप्राप्य थी। प्रकाशक ने बढ़िया कागज व छपाई के साथ इसे सुलभ कर बहुत प्रशंसनीय कार्य किया है। पुस्तक का मोटा टाइप हिन्दी कम पढ़े लिखों और बूढ़ों के लिए सुविधाजनक होगा। स्वामीजी ने आत्मकथा के सम्बन्ध में जो एकमात्र भाषण दिया था, वह भी इसी पुस्तक में है। भूमिका लेखक स्वा० श्रद्धानन्द के शब्दों में ये व्याख्यान सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका का काम देंगे और आर्य नर-नारियों को संजीवन बूटी का काम देंगे।

हमारा देश—भास्करलाल विद्वांस और रसिकलाल पारिख। प्रस्तावक—वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स लि०। ३ राउण्ड बिल्डिंग कालबादेवी रोड, बम्बई। मूल्य ४)।

प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी का रूपान्तर है, जिसमें भारत के अर्थ-तन्त्र-सम्बन्धी नीतियों नक्शे दिये गये हैं। विविध खनिज द्रव्य या कृषि पदार्थ कहाँ कहाँ और कितने कितने उत्पन्न होते हैं, देश का स्वास्थ्य, शिक्षा आदि कैसे हैं, उनकी विभिन्न देशों से क्या तुलना है, आदि अनेक अर्थशास्त्रीय दुरंगे चित्रों से भारत के सम्बन्ध में बहुत जानकारी प्राप्त हो सकती है। देश के विभाजन से उत्पन्न स्थिति स्पष्ट करने के लिए भी कुछ चित्र दिये गये हैं।

प्राणि-शास्त्र (त्रैमासिक)—संपादक— श्री अमर एम० एस० सी० प्रकाशक— अ० भा० प्राणिशास्त्र परिषद्, नं० २ हुसैनगंज, लखनऊ। मूल्य १२), प्रस्तुत अंक का मूल्य १०)।

हिन्दी साहित्य में और संभवतः किसी भी भारतीय भाषा में यह अपने किस्म का प्रथम पत्र है। इस पत्र में विविध पशु-पक्षियों का विस्तृत वर्णन दिया जाता है। प्रस्तुत अंक में सर्पों की उत्पत्ति, प्राचीन हिन्दुओं का मत्स्य ज्ञान, प्राणि शास्त्र एक विज्ञान, रक्त की रचना और उसके पदार्थ, हमारे पक्षी, ड्रग टिड्डिम आदि गवेषणाएं और सुन्दर लेख इस अंक में हैं। बहुत से पक्षियों की तिरंगी, दुरंगी तस्वीरें आर्ट पेपर पर दी गई हैं। वस्तुतः यह पत्र न होकर स्थायी साहित्य की एक महत्वपूर्ण वस्तु बन गया है। हिन्दी साहित्य के इस अभाव को दूर करने के लिए प्रकाशक और सम्पादक दोनों बधाई के पात्र हैं। प्रायः प्रत्येक लेख की भाषा क्लिष्ट है, किन्तु शास्त्रीय विषय की विवेचना के कारण यह तो अनिवार्य था। सर्वसाधारण इसे न भी खरीदें, तथापि हिन्दी के विद्वानों, पुस्तकालयों धनीमानी सज्जनों को इस पत्र का ग्राहक बन कर हिन्दी साहित्य के अभाव की पूर्ति के इस प्रशंसनीय प्रयत्न में सहायता देनी चाहिए।

इतालीय सांस्कृतिक समाचार पत्रिका

अमेरिका, ब्रिटेन व रूस के विदेश-कार्यालयों की भांति इटली के बम्बई-स्थित कार्यालय ने इतालीय सांस्कृतिक पत्रिका प्रकाशित करनी शुरू की है। इसके प्रथम अंक में इटली भारत-सांस्कृतिक सम्बन्धी नामक सुन्दर लेख है। इतालियन विश्वविद्यालयों में भारतीय विद्यार्थियों के लिए कुछ पाठ्यक्रमों की जानकारी भी उपयोगी है। यह पत्रिका निःशुल्क वितरित की जाती है।

साहित्य का आदर्श स्वरूप

प्रेयसी का गान नहीं, माता की सृजन शक्ति

★ राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद

कण्टकाकीर्ण जीवन

इस बात से आज कोई इन्कार नहीं कर सकता कि हमारे देश में साहित्य सेवियों का जीवन अत्यन्त कण्टकाकीर्ण रहा है। जब तक हमारे देश में विदेशियों का राज्य था हमारे साहित्यकारों को अनेक प्रकार की कठिनाइयां झेलनी पड़ीं। स्वतंत्र होने के पश्चात इस बारे में स्थिति में कुछ सुधार अवश्य हुआ है। किन्तु आज भी वैसी स्थिति नहीं है जैसी अच्छे साहित्य सृजन के लिये होनी चाहिये। यद्यपि हमने यह निश्चय कर लिया है कि हमारा सार्वजनिक जीवन, सभी राजकाज हमारे देश की भाषाओं में ही कुछ वर्षों के बाद चलेगा किन्तु आज भी हमारे यहां के शिक्षा शास्त्रियों, शिक्षितों और शिक्षार्थियों के मन से अंग्रेजी भाषा का यह मोह नहीं छूटा जो अंग्रेजी राज्य-काल में उसके प्रति पैदा हो गया था। जान में या अनजान में हमारे यहां के बहुसंख्यक शिक्षितों के मन में यह भाव घर किये हुए है कि हमारी अपनी भाषाओं में वैसा उच्च कोटि का साहित्य न तो है और न हो सकता है जैसा कि अंग्रेजी में है और इस भावना के कारण आज भी उनका लगाव अपनी भाषाओं के साहित्य से कुछ अधिक नहीं है। हमारे साहित्यिकारों को जो आर्थिक कठिनाइयां सहनी पड़ी हैं और सहनी पड़ रही हैं उनका एक कारण यही मनोवृत्ति है, क्योंकि इसके कारण हमारे यहां उनकी कृतियों का शिक्षित वर्ग में वैसा प्रचार नहीं होता जैसा कि अन्य देशों में वहां के साहित्यकारों की कृतियों का होता है।

इस कथन से मेरा यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि हमारे देशवासियों को अन्य भाषाओं के साहित्य से, विशेष कर अंग्रेजी के साहित्य से, प्रेम न करना चाहिए। इसके विपरीत मैं तो यह मानता हूं कि अंग्रेजी भाषा का ज्ञान बहुत जरूरी है और इसका साहित्य भी बहुत बड़ा और व्यापक है। किन्तु साथ ही मैं यह अवश्य कहना चाहता हूं कि अन्य भाषाओं के साहित्य का स्वाद हम तभी पहचान या जान सकेंगे जब हम ने अपनी भाषाओं के साहित्य के स्वाद को जान लिया हो। अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए और बातों के साथ-साथ हमारे लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपनी भाषाओं के साहित्य से प्रेम करना सीखें और उनके अध्ययन में यदि अधिक नहीं तो कम से कम उतनी दिलचस्पी अवश्य रखें, जितनी कि हमारे बहुत से लोग आज कल विदेशी साहित्य के अध्ययन में रखते हैं।

निजी और सामूहिक लाभ

हमारी वर्तमान अर्थ व्यवस्था में व्यवसाय समाज सेवा के हेतु से न किया जाकर अपने निजी लाभ के लिए किया जाता है, जिसका परिणाम बहुधा यह होता है कि निजी लाभ की वेदी पर सामूहिक कल्याण की बलि दे दी जाती है। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि विचारों की अमूल्य रत्न-पिटरी को प्रकाशक लोग गरीब साहित्यिक से कौड़ियों के दाम खरीद लेते हैं और स्वयं उससे बहुत लाभ उठाते हैं। समाज के अन्याय और विषमता को दूर करने का मार्ग यही है कि लोग सहकारिता और सर्वोदय के सिद्धांत को अपनायें। आपने यही सिद्धांत अपनाया है और इसलिए आप और भी बधाई के पात्र हैं।

क्रांतियों के अन्य मार्ग देशों में सुझाये गये हैं, किन्तु हमारे देश में सुदूर पुरातन काल से सामूहिक और वैयक्तिक जीवन में सुख और शांति स्थापित करने का मार्ग यही ठीक ठहराया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन का चरम उत्कर्ष इसी बात में मानें कि उसके अपने जीवन से सब मानवों का जीवन सुरभिमय और सुखमय हो जाय। मेरी समझ में इसलिए ही हमारे देश में अहिंसा के आदर्श को उतनी महत्ता दी गयी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने इसी आदर्श की आवाज उठा कर सुप्त भारत वासियों की नसों में फिर नव जीवन, नव स्फूर्ति और नव सृजनात्मक शक्ति का सञ्चार कर दिया। अपने-अपने हितों की रक्षा के लिए और समाज की रचनात्मक सेवा के लिए इसी मार्ग का अपनाना है।

साहित्यिक कृतियों से नवनिर्माण

मुझे पूरा विश्वास है कि यदि आप अपनी कृतियों का सृजनात्मक और सहकारिता के इस सिद्धांत के प्रति वफादार रहें तो आप सचमुच ही अपनी कृतियों को भारत के नवनिर्माण और यहां की जनता के दुःख-दारिद्र्य को दूर करने का प्रबल अस्त्र बना देंगे। भगवान ने आपको ऐसी शक्ति प्रदान की है कि आप उसके द्वारा अपने अन्य भाई-बहिनों की समस्याओं को ऐसे सुस्पष्ट और सजीव शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं, कि वे उनको ठीक-ठीक पहचान लें और साथ ही आप उनको वह प्रेरणा और वह दिग्दर्शन प्रदान कर सकते हैं, जिससे ज्योति और उत्साह पाकर वे अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए कटिबद्ध हो जायें। हमारे देश में करोड़ नर-नारियों का जीवन आज निरक्षरता पूर्ण और विपत्तिमय है और हमारी स्वतन्त्रता का तब तक कोई अर्थ न होगा, जब तक वे अपने जीवन को सफल और सार्थक न कर सकें। इस महान् कार्य के संपादन के लिए आज हमारे देश को प्रत्येक व्यक्ति के श्रमदान की आवश्यकता है। जो राजनीतिज्ञ हैं, वे राजनीतिक दृष्टि से उस दशा को सुधारने का प्रयास कर रहे हैं। किन्तु न तो राजनीतिज्ञ और न पत्रकारों के हाथ में यह बात है कि वे जनता के हृदय में ऐसी स्फूर्ति, ऐसा उत्साह और ऐसी लगन पैदा करदें कि जनता इन समस्याओं को शीघ्रातिशीघ्र सुलझाने में अपनी पूरी शक्ति लगा दे। जनता के हृदय में यह भावना पैदा करने का काम साहित्यकों का है। आज हमारे लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि साहित्य प्रेयसी का गान न हो कर प्रसवीनी माता की सृजनात्मक शक्ति हो, वह उपभोग की वस्तु न हो कर रचना का साधन हो।

हमारे साहित्यकारों में से अनेकों ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के दिनों में बड़ा महान कार्य किया था और उनमें से अनेकों ने उन दिनों ऐसी कृतियां कीं, जिनसे जन जीवन में स्वतन्त्रता के लिए उन्माद पैदा हो गया और लाखों ही व्यक्ति स्वतन्त्रता युद्ध में अपने जीवन को बलिदान करने को प्रस्तुत हो गये।

आज हमें दूसरे प्रकार के साहित्य की आवश्यकता है। ऐसे साहित्य की जो जनता के सामने इस बात को रखे

[शेष पृष्ठ २० पर]

कुछ विद्वानों का कहना है कि सर्व-प्रथम मानव सृष्टि हिमालय पर हुई। पृथ्वी का जो भाग सबसे पहले समुद्र-गर्भ से बाहर आया वहीं आदि-सृष्टि सम्भव है। आदि सृष्टि चाहे हिमालय में हुई हो या अन्यत्र, किन्तु प्राचीन संस्कृत साहित्य में यक्ष-गन्धर्व-किन्नर-देव और स्वर्ग आदि लोकों का वर्णन हिमालय में ही किया गया है।

परन्तु साथी चितीश अपने सहज कवि स्वभाव के कारण हिमालय के अन्य तीन लोकों का वर्णन किया करता है।

वह कहा करता है—'हिमालय के तीन लोक हैं—वन लोक, पुष्प लोक, और हिमलोक। नगाधिराज के पाद प्रान्त से ले कर कटिभाग तक वन लोक है। यह लोक १० हजार फीट की ऊंचाई तक पहुंचते पहुंचते समाप्त हो जाता है। १० हजार फीट की ऊंचाई के बाद पुष्प लोक शुरु होता है। इस लोक की परिधि बहुत छोटी है किन्तु जैसा नयनाभिराम दृश्य हिमालय के इस लोक में दृष्टिगोचर होता है वह प्रकृति का अद्भुत चमत्कार है। इस लोक में पांव रखते ही रंगबिरंगे फूलों के प्राकृतिक वैभव का अनोखा दरबार मन को आह्लाद से भर देता है। प्रकृति की एकान्त-सुषमा इतनी मनोहारी होगी—यह इतनी ऊंचाई पर पहुँचने से पूर्व ज्ञात ही नहीं होता। इस पुष्पलोक के बाद शुरू होता है हिमलोक, जो कण्ठभाग से आरम्भ हो कर गिरिराज के मस्तक पर होता हुआ ऐन शिखर तक पहुँच जाता है। १४ १५ हजार फीट की ऊंचाई से प्रारम्भ होने वाला और २१ हजार फीट से भी अधिक ऊंचाई तक चलता चला जाने वाला यह लोक असली 'हिमालय' है। बारहमास हिम से ढके इस शाश्वत हिम प्रदेश के कारण ही हिमालय (हिम + आलय) नाम सार्थक होता है।'

अब विचार करने पर पाता हूं कि कि साथी चितीश ने हिमालय की अनेक यात्राओं के पश्चात् जिस सत्य का अनुभव करके इस त्रिलोकी का वर्णन किया है, भू पृष्ठ विशारदों और हिमालय के विशेषज्ञों ने भी वही बात कही है। दोनों में केवल कहने के ढग का अन्तर है। भूगोल शास्त्र के जानने वालों ने भी हिमालय के तीन भाग किये हैं पहला भाग है—'शिवालक रेंज'—जिसे हम हिन्दी में उपगिरि कह सकते हैं। दूसरा भाग है—'आउटर रेंज'—जिसे बहिर्गिरि कहा जा सकता है। तीसरा भाग है—'ग्रेट सेन्ट्रल हिमालयाज'—जिसे सुमहान् हिमवन्त या अन्तर्गिरि कहा जा सकता है। इन तीन विभागों को लगभग वही व्यवस्था है जो साथी अपने इन तीनों लोकों का वर्णन करते हुए किया करता है।

जोंगरी का मैदान

सो सिक्किम के सघन वन को लांघते हुए, सवा तेरह हजार फीट ऊंचे जोंगरी के मैदान में पहुंच कर हम इस त्रिलोकी के पुष्पलोक में प्रविष्ट हो गये। मीलों तक फैले इस उपत्यका मैदान में छोटी छोटी घास की चटाई बिछी हुई है और रंग-बिरंगे फूल छाये हुए हैं।

वहां से एक साथ नजर आने वाली कांचनजंगा शृंखला की तीन चोटियों—नरसिंह, पान्डिम और कंचनजंघा के प्रती कस्वरूप तीन छोटे छोटे मन्दिर बने हुए हैं। थोड़े से पत्थरों को गुम्बदाकार रख कर एक वैसा ही चौथा मन्दिर कबरू के शिखर के लिए बना है। यहीं से इन चारों मन्दिरों के द्वारा चारों चोटियों के हिम देवों की उपासना की जाती है। इधर के लोगों का ख्याल है कि हिमालय के प्रत्येक ऊंचे शिखर पर एक देवता रहता है और यदि उस शिखर पर आरोहण करते हुए कोई व्यक्ति बर्फ में फिसल कर या अन्य किसी दुर्घटना से मर जाये तो समझा जाता है कि अमुक हिम-देव उस पर कुपित हो गये या ऐसे दुस्साहसी व्यक्ति को देवता के चरणों में बलि होना पड़ा। ये शिखर दुर्लंघ्य भी इसीलिए बनाये गये हैं कि कोई उन देवताओं की एकान्त लीला-स्थली में पांव न रख सके। इन हिम देवों की पूजा के लिए सिक्किम की महारानी प्रतिवर्ष जोंगरी तक जाती हैं और इन मन्दिरों में ही उन महान और अदृश्य हिम देवों की आरती उतारी जाती है ताकि प्रजा में सुख और शांति रहे।

इसी मैदान में सिक्किम महाराज की चमरगायें और पकसोम के लामा के घोड़े निर्द्वन्द्व चरते और विचरते हैं। इन पशुओं को चराने के लिए इस सुनसान और निर्जन स्थान में केवल एक आदमी रहता है।

जोंगरी से आगे बढ़ने पर हिम की संहारक शक्ति के प्रत्यक्ष दर्शन हुए। पर्वत की अधित्यका में जो छोटे-छोटे पौधों का जंगल है वह समस्त का सारा पत्तों से शून्य है। बर्फ से ढके हुए ये पौधे ठूंठ बन कर खड़े हैं। अगली वसन्त ऋतु में फिर इन पर पत्ते आयेंगे और शरत्कालीन तुषार-पात फिर इनकी हरियाली को लूट लेगा।

छु और ब्रक छु

अब आगे उतरना पड़ेगा। उतार, उतार, लगातार तीन मील तक उतार। और इन तीनों मीलों में लगभग तीन हजार फीट नीचे उतर कर हम फिर पुष्पलोक से वनलोक में आ गये। सामने सूखा सिक्कम पर आज यात्रा में पहली बार चीड़ और देवदार का जंगल दृष्टिगोचर हुआ। इस सघन वन में थोड़ी-थोड़ी दूर पर मिलने वाली जलधाराओं को जूते और जुराब उतार कर किसी तरह पार किया। थोड़ी देर में ही पांव ठिठुर गये। इसी तरह एक दो तीन-चार धाराएं लगभग मील भर के फासले में पार करने के पश्चात् सामने आ गयी हहराती, शोर मचाती और चट्टानों से टकराती प्रेक छु (छु = नदी)। अब इसे कैसे पार करें?

नीमा ने नदी के ऊपर की ओर दूर तक जाकर देखा कि शायद पानी कम हो और नदी पार की जा सके। किन्तु ऐसा स्थान कोई नहीं मिला। घण्टेभर तक किसी प्रकार नदी पार करने की तरकीब सोचते रहे, किन्तु कामयाबी नहीं मिली। अन्त में नीमा ने निराश होकर अपना फैसला दे दिया—"अब आगे जाने का कोई मार्ग नहीं है, इसलिए लौटना होगा।"

सबके मन में निराशा छा गई। क्या हमारी यात्रा यहीं समाप्त हो जायगी? हम तो पश्चिम के आरोहण का स्वप्न लेकर आये हैं और अभी पंडिम हमसे दूर है। सामने ही उसका २१ हजार फीट ऊंचा शिखर कभी कभी बादलों के हटने पर चमक उठता है और हमें अपनी ओर खींचता है। कैसा अ[illegible]न्य आकर्षण है उसका! केवल एक या दो दिन की यात्रा के बाद हम उसके चरणतल में पहुंच जायेंगे। मंजिल के इतना पास आकर वापस होना पड़ेगा इससे बढ़ कर दुःख की और क्या बात होगी? हमारे होशियार और सधे हुए कुलियों ने सब कुछ अच्छी तरह सोच-समझ कर देख लिया है कि [illegible] पार [illegible] नहीं बन सकता, [illegible] प्रयत्न करना बेकार है।

अन्त में, जब गाइड और सब कुली 'बस हो चुकी नमाज मुसल्ला उठाइये' की मनोदशा में थे और वापस चलने की तैयारी कर चुके थे, [illegible] साथी चितीश ने मेरी ओर देख कर [illegible] समेत समस्त कुलियों को सम्बोधित करते हुए कहा—"अरे, तुम शेरपा होकर इस छोटी-सी नदी से हार मान जाओगे? मनुष्य यदि मन में [illegible] कर ले तो क्या नहीं कर [illegible]?"

"तो फिर क्या करें?"

"करो क्या, जिस [illegible] हो, पुल बनाओ। मनुष्य [illegible] सकता है—तुम [illegible] बना सकते हो।"

"[illegible] न बने, तो?"

"बिना प्रयत्न किये न [illegible] कहना व्यर्थ है। परन्तु यदि [illegible] भर प्रयत्न करने के बाद भी पुल न [illegible] और कल तक नदी को पार करने [illegible] और कोई उपाय नहीं सूझा, तो [illegible] यहां से लौट जा सकता है, परन्तु आज नहीं। आज तो यहां रह कर [illegible] बनाना ही होगा।"

और देखा कि वह [illegible] जैसा काम कर गया। गाइड और [illegible] जोश से उछल पड़े—"हां, आज हम पुल बनाएंगे। शेरपा के नाम पर कलंक नहीं आने देंगे।"

यही ऐसा स्थान है, जहां संसार का बड़े से बड़ा प्रलोभन काम नहीं आता। काम आता है केवल आत्मविश्वास, और स्वभाव से ही मनोविज्ञान के अभ्यासी चितीश ने अपनी सूझ से वही आत्मविश्वास इन भोले और हिम्मती लोगों में भर दिया।

एक पड़ाव से विदा होने का दृश्य

आखिर उसी घने जङ्गल में वर्षा से बचने के पेड़ों के नीचे घास बिछा कर समतल करके तम्बू गाड़ दिये गये। दोनों 'दीदियों' (स्त्री शेरपा) ने रसोई का प्रबन्ध सम्हाल लिया और जितने पुरुष थे, वे सबके सब जी-जान से पुल बनाने में लग गये।

नदी के सबसे छोटे पाट वाले ऐसे स्थान को चुन कर, जिसके इस पार और उस पार ऐसी चट्टानें हों, जो पुल का आधार बन सकें, वे सातों शेरपा जंगल में चले गये और अपनी कुल्हाड़ियों और कुल्हाड़े की सहायता से इतने लम्बे-लम्बे वृक्षों के तने काट गिराये, जो नदी की चौड़ाई को व्याप सकें और उन्हें अपने कन्धों पर लाद कर नदी के किनारे ले आये।

वर्षा के कारण ठंड बढ़ गई थी। शरीर को काटने वाली तीव्र हवा चल रही थी। वर्फानी नदी की धारा के ऊंची ऊंची चट्टानों से जूझने से उठने वाली फुहारों के कारण अब तट पर खड़ा होना भी कठिन हो गया, तब हम सब तो तम्बुओं में चले गये और गरम कम्बलों की गर्मी से अपने को गरमाने लगे, किन्तु साथी क्षितीश वहीं डटा रहा और कुलियों के काम में हिस्सा बंटाता रहा।

स्थिति पर समग्ररूपेण विचार करने के पश्चात् हमारे दिल में पुल के बन सकने की कोई आशा नहीं थी। [illegible] के लगभग परिश्रम के पश्चात् भी जब सफलता का कोई समाचार नहीं मिला और सूर्य अस्ताचल की ओर जाने लगा, तब हमने समस्त प्रयत्नों की व्यर्थता पर मन विक्षुब्ध हो उठा और गहरी निराशा का वातावरण चारों ओर फैल गया। अचानक साथी क्षितीश ने आकर [illegible] समाचार सुनाया— 'पुल बन गया है'—और उन अनपढ़ शेरपा लोगों की [illegible] इंजीनियरिंग की चमत्कारक [illegible] का वर्णन करते हुए जब उसने विस्तार से बताया कि किस-किस प्रकार [illegible] से यह पुल बन सका [illegible] तो हम सब [illegible] से [illegible], लोहा का [illegible] दूसरा [illegible]।"

यहां से मार्ग फिर बड़ा [illegible] है। दूर दूर [illegible] बहुत दूर कुछ साफ नहीं दिखता। [illegible] से आगे लगातार चढ़ाई है और [illegible] हजार फीट की ऊंचाई पर [illegible] पीछे छूट जाते हैं। फिर ओंगरी जैसा मैदान आता है। यहां [illegible] लगातार चढ़ने वाला यह मैदान धीरे-धीरे ऊंचा होता जाता है और अन्त में हिमशिखरों से [illegible] दिखाई में विलीन हो जाता है। शीतकाल में सारा का सारा मैदान एक विस्तृत हिमनद का रूप धारण कर लेता होगा, यह यहां की [illegible] जमीन और हिमनद से कटी हुई है चट्टानों को देखने से स्पष्ट हो जाता है।

ओंगरी के मैदान में सिक्किम महाराज की चमर गायों को चराने वाला बूढ़ा एक चमरगाय को दुह रहा है।

१४॥ हजार फीट की ऊंचाई पर सुंगमोथँग की झील

थांगशिंग के आगे का रास्ता हिम शिखरों की छाया में चलता है। दोनों तरफ हिमनद हैं। थांगशिंग का अर्थ है लकड़ी का मैदान (थांग—मैदान, शिंग—लकड़ी)। यह आखिरी स्थान है जहां लकड़ी मिल सकती है। हिमदग्ध ठूंठ कहीं-कहीं चट्टानों में खड़े पड़े हैं। कुलियों ने इन ठूंठों की सूखी लकड़ियों को एक-एक करके बीनना शुरू किया और अपने सामान के अलावा जितना बोझ उठाया जा सकता था, उतना लकड़ियों का बोझ अपने साथ रख लिया।

ओंगलाथंग का विशाल गल

दायें हाथ को ओंगलाथंग हिमनद करने का उत्साह नहीं होता। कैलास और मानसरोवर की यात्रा करते हुए तिब्बत में जैसा अनुभव होता था, वैसा ही अनुभव यहां भी हो रहा है। यह मैदान भी तिब्बत के मैदानों जैसा ही उजाड़, बंजर और सुनसान है। न कुछ करने को जी चाहता है, न चलने को। फिर भी चलते जाते हैं। सबकी आकृतियों पर रुलाई बरस रहा है। हमारी अपेक्षा कुली अधिक प्रसन्न हैं किन्तु बात-बात पर हसने के उनके मौजी स्वभाव में भी अब अन्तर आ गया है।

हम पर ऊंचाई का असर होना शुरू हो गया है।

के हिमनद से निकलने वाली जलधार मिल जाती है। इसी नदी ने सुरोंग में हमें बिना पुल के पार नहीं होने दिया था। यहां इसकी पतली-सी नीलाभ-रजत रेखा को देख कर एक दिन पहले की इसकी उग्रता पर हसी आई, आश्चर्य हुआ। नक्शे में इस स्थान का नाम सुंगमोथंग और झील का नाम 'छो' लिखा हुआ है। यह स्थान पड़ाव के लिये आदर्श है। पानी तो निकट है ही, कुछ मील पीछे लौट कर लकड़ी भी और बटोर कर लाई जा सकती है। इसके अलावा सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि तीन ओर पर्वतों और चौथी ओर ओंगलाथंग हिमनद की ऊंची दीवार की ओट होने के कारण यहां तीव्र वात्या से भी बचा जा सकता है।

यहीं पड़ाव क्यों न डालें? हम सब के सब थक गये हैं। कुली भी और दिनों की अपेक्षा अधिक श्रम क्लिन्न हैं। किन्तु हमारे पास इस सारी यात्रा के लिए केवल एक मास का समय है। ५ सितम्बर को दिल्ली से चले थे और ५ अक्तूबर तक हमें दिल्ली वापस पहुंच जाना चाहिए। क्षितीश को एक मास से अधिक का अवकाश मिल नहीं सकता। हम सब उसके कारण बंधे हुए हैं। उसी हिसाब से हम राशन की व्यवस्था करके चले हैं। दार्जिलिंग से चले हुए हमें ९ दिन हो चुके हैं। गेजिंग और यकसोम में हमें अपने कुलियों के लिए राशन जुटाने और उसे ढोने के निमित्त कुलि-

आखिर-प्रेक छू पर पुल बन गया और हम एक-एक करके नदी के पार पहुंच गए।

है। तीन ओर ऊंचे हिमशिखरों से घिरा है। जब हम हिम के इतने निकट पहुंच गये थे कि सूर्य के प्रकाश में उसकी ओर बिना ऐनक पहने देखने से आंखों में चकाचौंध लगती थी। दूरबीन से इस हिमनद की ओर जो देखा तो पता लगा कि आंख से इसका जितना हिस्सा दीखता है उससे यह कम से कम तिगुना बड़ा है।

हम इस हिमनद के पार्श्व में से होकर चल रहे हैं। हवा हलकी और सूखी है। चाय पीने के बाद भी गला सूखा जा रहा है। गले को तर करने के लिये पानी पीने की इच्छा नहीं होती। सिर न जाने क्यों भन्ना-सा रहा है। तीव्र वात्या के दंश से बचने के लिए हमने गर्म कनटोप ओढ़ लिये हैं। मन में अटपटा-सा लग रहा है। किसी से बात

दूर से जिस मैदान का अन्त हमें निकट ही दृष्टिगोचर होता था, कई घंटे चलते-चलते हो गये किन्तु उसका अन्त नहीं आया। इतनी ऊंचाई पर आकर हवा के हलका हो जाने और उसमें धूलि-कणों के अभाव से मैदान की अभ्यस्त आंखें धोखा खा जाती हैं और पथ की दूरी का अनुमान गलत निकलता है।

ओंगलाथंग की छाया में चलते चलते ही १ १॥ मील के अन्तर से दो "माने" (मणि दीवारें) आये। मन में सन्तोष हुआ कि यहां तक तो मनुष्य के पहुंचने का निशानी मौजूद है।

फिर चढ़ाई, फिर उतराई। फिर १४,-१२० फीट की ऊंचाई पर सुन्दर झील—तीन ओर पर्वतों से घिरी। इसी झील के एक किनारे से प्रेक छू नदी निकलती है जिसमें कुछ फर्लांग बाद ही ओंगलाथंग

साथी रतन सुरोंग के सघन वन में एक चट्टान पर बैठा है।

रिक कुली करने के लिए एक-एक दिन अधिक ठहरना पड़ा। एक दिन ग्रेक हू के पुत्र ने ले लिया। हिसाब के अनुसार हमें २० तारीख तक "बेस" कैम्प बना लेना चाहिए था। पर आज २१ तारीख हो गई और पड़ाव अभी दूर है। थक-लोम के बाद हम प्राय: डबल पड़ाव करते आये हैं, फिर भी विलम्ब हो गया है। हिमालय गणित का हिसाब नहीं चलने देता।

सुंगमोयेंग से आगे

और मध्याह्नोत्तर तीन बजे के लग-भग—जबकि ऐसी यात्रा में इससे पूर्व ही पड़ाव पर पहुँच कर तम्बू गाड़ देने चाहिएं—हम सुंगमोयेंग से आगे चल पड़े।

झील के किनारे-किनारे एक पांव की पगडण्डी पर सम्हल-सम्हल कर पांव रखते हुए, दोपहर के बाद की हवा के थपेड़ों से झील की लहरों की चंचलता देखते हुए और उन चंचल लहरों में गिर कर विलीन हो जाने के भय से अपने आपको बचाते हुए लगभग एक मील तक हम आगे बढ़े। झील समाप्त हो गई—गिरने के भय से मुक्ति मिलने के कारण मन की सजगता कुछ कम हुई और पांव निश्चिन्त होकर आगे बढ़ने लगे। पर यह आगे बढ़ना भी क्या कोई आसान बात है। कदम-कदम पर सांस फूलता है। दस-बारह कदम चलने के पश्चात् विश्राम के लिए ठहरना पड़ता है। कुलियों को इस बात की चिंता है कि कहीं पड़ाव पर पहुँचने से पहले शाम न हो जाय इसलिए वे भी बोझ कर जल्दी-जल्दी चले जा रहे हैं, पर उन्हें भी हर दस बारह कदम बाद ठहरना पड़ता है। मेरा तो बुरा हाल है।

कैसी जान-लेवा चढ़ाई है! दृष्टि को विश्राम देने के लिए कहीं हरियाली का नाम तक नहीं है। चोटी की ओर देखता हूं तो मन में आतंक छा जाता है—हरे राम, अभी इतना चढ़ना और शेष है! ज्यों-ज्यों चढ़ते जाते हैं त्यों-त्यों शिखर और दूर होने लगता है। आगे-आगे शेरपा कुली, पीछे-पीछे हम।

ऊंचाई का सबसे अधिक असर मुझपर हुआ है। छाती में होने वाली पीड़ा तीव्र हुई है। मेरे लिये एक कदम भी आगे चल सकना दूभर है। परन्तु जिस किसी तरह से भी हो, आगे तो चलना ही पड़ेगा, क्योंकि इसके सिवा और कोई उपाय नहीं है।

साथी रतन और जितीश के लगातार हौसला बंधाते रहने से चलता तो गया परन्तु मेरे मन और शरीर पर कैसी बीत रही थी इसे केवल मैं ही जानता हूं। दस बारह कदम के बाद जब मैं विश्राम के लिये बैठता तो फिर वहां से उठने की इच्छा नहीं होती थी। फिर चाहे संसार भर की शक्ति और प्रलोभन का ही क्यों न प्रयोग किया जाय। साथियों की स्नेह-सहानुभूति और उत्साह-सूचक वाक्यावलि को ही इसका श्रेय प्राप्त है कि वे मुझे किसी प्रकार शिखर तक ले आये।

शिखर के पास पहुँचकर देखा कि हम लोंगलायंग हिमनद के तल से ऊपर चढ़ आये हैं और यहां से नद का जो विस्तृत दृश्य दिखाई देता है उससे पता लगता है कि यह दूर से जितना निर्दोष और मासूम दिखता था वास्तव में वैसा नहीं है। इसमें स्थान-स्थान पर सैंकड़ों फीट गहरी दरारें पड़ी हुई हैं और किले की दीवारों जैसी बड़ी-बड़ी बर्फ की दीवारें बनी हुई हैं। पर्वत के भंगुर उपकण्ठ से चलते-चलते जब इनकी ओर दृष्टि पड़ती है तो मन भयाक्रान्त हो जाता है।

किन्तु मेरा मन तो इस भय की अवस्था से भी आगे पहुँच गया है। शारीरिक थकान के कारण सृष्टि की किसी भी चीज के प्रति, यहां तक कि अपने जीवन के प्रति भी, एक महान् विरक्ति पैदा हो गयी है। जो होना हो, हो। लोंगलायंग के हिमनद की बगल में और चारों ओर दृश्यमान महान हिम-देवों के चरणों में यहीं इस शिखर पर बैठे बैठे मुझे प्रस्तर समाधि में विलीन हो जाना मंजूर है, किन्तु अब आगे मैं एक कदम भी नहीं चल सकता।

सहसा चढ़ाई समाप्त हो गयी और शिखर के दूसरी ओर नजर पड़ते ही देखा कि उतार पर एक कटोरानुमा झील है और आगे लगातार उतार है। इस दृश्य-परिवर्तन से मनोवृत्ति में भी परिवर्तन हो गया और जीवन का मोह फिर आगे खींच ले चला।

झील के बायें तट से होते हुए हम लगभग समतल मैदान में पहुँच गये। यहां ग्रेक हू अनेक छोटी छोटी धाराओं में लतथा होकर फैल गई है। सूरज डूब रहा है। कुछ क्षणों के बाद ही सारा प्रदेश अन्धकारमग्न हो जायगा। नदी की रेत में अपने आदमियों के पदचिन्हों को खोजता हुआ मैं अपने साथियों के साथ यथाकथंचित् धीरे-धीरे बढ़ा जा रहा था किंतु अन्धकार के कारण परेशानी रही थी।

सामने देखा — एक बड़ी चट्टान के ऊपर ५-६ पत्थरों को ऊपर नीचे रख कर नीमा (हमारा गाइड) रोशनी लिए खड़ा है ताकि हम दूर से पड़ाव की ओर उस तक पहुंचने के पथ को पहचान सकें।

यह पेमार्थंग है। यही है हमारा बेस कैम्प। इस स्थान की ऊंचाई १५॥ हजार फीट है। दार्जिलिंग से लगभग ७२ मील दूर — अपनी यात्रा के १० वें दिन हम यहां पहुँच सके हैं।

———

(पृष्ठ ११ का शेष)

कि कृषि, उद्योग, व्यवसाय, शिक्षा के क्षेत्रों में वर्तमान विज्ञान का सहारा लेकर प्रत्येक व्यक्ति सामूहिक उद्योग में जुट जाय।

रचनात्मक कार्यों के प्रति उदासीनता हटाई जाय

मैं समझता हूं कि आज हमारे समाज में रचनात्मक या सृजनात्मक कार्यों के प्रति जो उदासीनता है, उसका कारण बहुत कुछ हद तक यही है कि आज साहित्य में इस बात की गूंजती हुई प्रतिध्वनि कि हमारे देश को, मानव जाति को यदि सुखी होना है, तो उसके लिए यह आवश्यक है कि घर-घर में, ग्राम-ग्राम में, नगर-नगर में सब लोग आकुल हो कर हर प्रकार के रचनात्मक कार्य में उसी तत्परता लग जांय, जिस तत्परता के साथ वे स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए स्वतन्त्रता संघर्ष में कूद पड़े थे।

मैं समझता हूं कि हमारी वर्तमान समस्याओं के मुकाबले में स्वतन्त्रता प्राप्त एक कम कठिन कार्य था। उस समय हमें केवल कुछ विदेशियों की सत्ता अपने देश से मिटानी थी, पर आज हमें लगभग ३५ करोड़ व्यक्तियों को सुशिक्षित करना है, अच्छे-अच्छे घर-बार देने हैं, पर्याप्त भोजन की व्यवस्था करनी है और उनके जीवन को आनन्द और संगीत से भरना है। इस कार्य के लिए हमें अपनी आर्थिक उत्पादन की शक्ति को तो गुना बढ़ा लेना है, और यह काम तभी हो सकता है, जब हमारे देश में प्रत्येक व्यक्ति अपने को सरकार पर आश्रित न समझ कर अपनी शक्ति उत्पादन, सृजनात्मक और रचनात्मक कार्यों में लगा दें। इस महान यज्ञ में स 'हित्यकार ही प्रधान आहुति डाल सकते है, और आशा कि डालेंगे।

यही प्रगतिशील साहित्य होगा

मैं इस प्रकार के साहित्य को प्रगतिशील साहित्य मानता हूं। आज कल कुछ लोग गतिशील साहित्य का दर्जा ऐसे साहित्य को देते हैं, जिसमें वर्तमान समाज के अन्दर में होने वाले श्रेणी-संघर्ष का वर्णन होता और जो तथाकथित शोषित वर्गों को अन्य वर्गों से संघर्ष के लिए प्रेरित करता है। मेरा विचार है कि भारत ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में सामाजिक शोषण के अन्त करने की एक नयी रीति का आविष्कार किया। आज भारत में सामाजिक और राजनीतिक सत्ता उन लोगों के हाथ में है, जो इस बात में विश्वास करते हैं कि समाज शोषण-हीन, वर्ग-हीन होना चाहिए और उसमें प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी भेदभाव के बिना ऐसी सब सुविधायें प्राप्त होनी चाहिये, जिससे अपने जीवन का पूरा-पूरा विकास कर सके। जब हमने संसार की एक महान शक्ति का अहिंसात्मक क्रिया-शीलता द्वारा केवल मुकाबिला ही नहीं किया, बल्कि स्वराज्य प्राप्त भी कर लिया, तो अब इस रचनात्मक समय में आपस में श्रेणी संघर्ष को हिंसात्मक रूप दिये बिना नव समाज का सृजन, जिसका ध्येय सर्वोदय है करना आसान होना चाहिये। इसमें साहित्यिक यथेष्ट सहायता दे सकता है, और इसलिए मैं मानता हूं कि हमारे देश में जिस साहित्य की आवश्यकता है, वह केवल ऐसा ही साहित्य है, जिसमें सृष्टि और रचना की पुकार भरी हो।

★

[१]

'अरे ! अभी तक यहीं बैठे हो ?' संध्या की सिन्दूरमयी, आभा में सन्यासी ने आश्चर्य से पूछा— 'संभवतः मैंने आज सवेरे भी तुम्हें यहीं बैठे हुए देखा था। क्यों ?'

कुछ दूर से आये हुए ये शब्द कौशल के कानों में गूंज कर रह गये। उसकी जागृत-स्वप्नमयी मानसिक शक्तियों तक पहुंचे भी नहीं। उसने एक कषाय-धारी गेरुए सन्यासी को सामने अवश्य देखा, पर उसे यह सब छाया-छाया-सा प्रतीत हो रहा था। सन्यासी उसके पास आकर खड़ा हो गया और अपना हाथ उसके शीश पर रखा।

'युवक, तुम कौन हो ?' उसने फिर पूछा, पर कौशल अभी तक उत्तर देने के लिए सचेत न था। सन्यासी कहता गया— 'तुम बड़ी देर से यहां बैठे हो, तुम्हारा घर कहां है ? तुम शहरी, जान पड़ते हो ? यहां क्यों बैठे हो ?'

सन्यासी के इत्यादि-इत्यादि प्रश्नों को सुन कर युवक ने कुछ कहने के लिए, अभिवादन करने के लिए उठना चाहा, पर वह शिथिल हो गया था। सन्यासी ने उसे बिठा दिया और स्वयं उसके पास बैठ गया।

'उफ् !' कौशल ने एक ठंडी सांस लेकर कहा। मानो अपने सर से कुछ बोझ हलका किया। उसके दिल में एक प्रलयंकारी ज्वार-भाटा उठ रहा था। वह जीवन से ऊबा बैठा था। सुबह टहलते-टहलते वह यहीं आकर बैठ गया, उसे पता न था। उसे कहां जाना चाहिए, यह याद ही न था। वह व्यग्र था, पर भूखे-प्यासे होने के कारण शिथिल था। उसे सारा संसार काटने को दौड़ रहा था, वह एकान्त चाहता था।

सन्यासी ने एक बार ध्यान से उसे देखा। वह दुःखित था। यह प्रत्यक्ष था कि उसने सन्यासी के पिछले सारे प्रश्नों में से एक पर भी ध्यान नहीं दिया था। सन्यासी ने क्या पूछा और, उसे याद न रहा। वह पागल तो नहीं हो गया था, पर मस्तिष्क की व्यग्रता, शरीर की शिथिलता ने उसे पागल बना दिया था।

'युवक,' सन्यासी ने अब फिर से अपने प्रश्नों को दुहराया— 'तुम कब से यहां बैठे हो ? और किस चिन्ता में ? कहां से आये .....?'

'इन सारी बातों का उत्तर' कौशल ने रुक कर कहा— 'मैं एक साथ कैसे दे सकूंगा, स्वामी जी !'

कौशल के क्षीण शब्दों में भावुकता की कुछ हलकी-सी झलक थी। वह यह नहीं चाहता था कि सन्यासी को उसकी अन्तर्वेदना का कुछ भेद मालूम हो जावे, फिर भी कुछ कसक ही ऐसी थी, जो छिपाई नहीं जाती थी। संसार को ओर निष्काम आंख से देखने वाले सन्यासी से वह भेद छुप भी नहीं सकता था।

नया धारावाहिक उपन्यास

शान्ति

★ श्री वीर बहादुर

'तुम कुछ उदास हो, क्यों ?' सन्यासी ने कहा— 'मैं कुछ सहायता कर सकता हूं।'

'सहायता !' कौशल ने एक ठंडी सांस लेकर कहा— 'मेरी सहायता कोई नहीं कर सकता। मुझे स्वयं ईश्वर से भी आशा नहीं है। मैं किसी प्रकार भी किसी से सहायता की आशा नहीं कर सकता और न तो कोई सहायता करने में समर्थ ही है।'

'ओः !' मुस्करा कर सन्यासी ने कहा— 'कम से कम एक युवक को ऐसा सोचना ठीक नहीं। मनुष्य क्या नहीं कर सकता है और फिर ईश्वर ! वह तो सर्व-शक्तिमान् है।'

'मनुष्य सब कुछ कर सकता है ?' कौशल ने कहा— 'किन्तु जो बातें उसके वश के परे हैं, जिनका होना असम्भव है, जिसकी सम्भावना की हम कल्पना भी नहीं कर सकते, वह मनुष्य नहीं कर सकता। कैसे कर सकता है ?'

'मनुष्य कर सकता है।' सन्यासी ने दृढ़ होकर कहा— 'और नहीं तो, ईश्वर कर सकता है !'

'ईश्वर कर सकता है।' कौशल ने ठंडी सांस लेकर अन्यमनस्क भाव से कहा— 'ईश्वर कर सकता है !'

'ईश्वर कर सकता है।' सन्यासी ने फिर दुहराया।

'मुझे शांति चाहिये, मैं चाहता हूं, ईश्वर मुझे शांति दे। किन्तु मैं जानता हूं, मुझे शान्ति नहीं मिल सकती।' कौशल ने उकता कर कहा — 'क्योंकि अशान्ति का कारण दूर करना असाध्य है।'

'तुम आज दिन भर क्या सोचते रहे ?' मुस्करा कर सन्यासी ने पूछा।

'यह तो मैं भी नहीं बता सकता।' कौशल ने कहा—'एक चिन्तित मनुष्य क्या सोचता है ! मस्तिष्क में एक अशान्ति का समुद्र उमड़ पड़ने पर कोई क्या सोचता है ? मधु-मक्खियों के छत्ते पर ढेला लगने पर मधु-मक्खियां भन्ना उठती हैं, तितर-बितर हो जाती हैं, ठीक उसी प्रकार मेरे मस्तिष्क को आप एक छत्ता, और मेरी विचार-धाराओं को मधु-मक्खियां समझिये।'

'किन्तु उनके भन्ना उठने से मधु-मक्खियों का क्या काम बनता है ? कुछ नहीं। तुम जाओ। स्थिर होकर अपनी अशान्ति दूर करने का प्रयत्न करो। एक सप्ताह में यदि तुम दूर न कर सको, तो मेरे पास आना। दूर उस पहाड़ी पर मेरी कुटी है।' साधु कह के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना चला गया।

कौशल अभी तक बैठा रहा। उसका मन इस वातावरण से और वार्तालाप से कुछ हलका अवश्य हुआ, पर विशेष रूप से नहीं। कुछ देर तक वह सन्यासी की बात पर सोचता रहा। सूर्यदेव की स्वर्णमयी किरणें अब छिप चुकी थीं, आकाश में रंगीन रेखाओं के अतिरिक्त अब कुछ भी अवशेष न रहा। वह अब उठने लगा। किन्तु पिछले तीस घण्टों से इस अगाध चिन्ता में न तो उसे भूख लगी, न प्यास। कुछ खाया-पीया नहीं। उसे उसकी सुध न रही। दुर्बलता के कारण नेत्रों के सामने अंधेरा छा गया। लड़खड़ा कर फिर गिर गया। अन्धकार में उठा, किन्तु उसे ऐसा मालूम हुआ, कि बिना सहारा दिये वह चार पग भी चल नहीं सकता। वह मन मार कर वहीं बैठा सा बैठ गया।

'नहीं-नहीं ऐसा नहीं हो सकता !'

पाठकों से—

कहने के लिए यह एक कपोल कल्पित कहानी है, आख्यान है, उपन्यास है, जो कुछ नाम आप उचित समझें। पर मेरे लिए उससे भी कुछ अधिक है। यह मानसिक वेदनाओं का संग्रह है, जिसे मैंने सन् १९४९ की शरद्-ऋतु में लिखा था। इस कहानी की अवधि कार्तिक की अमावस्या से पूर्णिमा तक समाप्त हो जाती है। यदि देश, राष्ट्र, महान व्यक्तियों के अतिरिक्त, सर्व साधारण का भी इतिहास होता है, तो यह एक इतिहास भी है, जिसका प्रधान अंग केवल मानसिक वेदना है। उन्हीं वेदनाओं के संग्रह का यह केवल बहाना मात्र है। भारत हृदय की मूक व्यथा के इस वर्णन में मैंने किसी पर आक्षेप न लगाने का प्रयत्न किया है। मुझे अपनी भावनाएं, अपनी व्यथा प्यारी थी, किसी को दूषित कहना या अपशब्द कहना नहीं। मैंने आदि से अन्त तक यही प्रयत्न किया है। —लेखक

कुछ देर बाद वह प्रयास करते हुए उठा — 'ऐसा कभी नहीं हो सकता।' उसके हृदय में एक मानसिक उत्तेजना और उद्वेग का प्रबल उद्गार हुआ। जैसे मरता हुआ जीव अपनी सारी शक्ति लगा कर प्राण रक्षा को दौड़ता है, ठीक वैसे ही वह उठा। आवेश में लगभग सौ गज तक लड़खड़ाता और गिरता-पड़ता आगे बढ़ा, झुलक कर सड़क के बीच में पड़ गया। उसके आगे वह नहीं जा सका। सुनसान सड़क पर आठ बजे रात को अंधेरे में संज्ञाहीन! जिस प्रकार महासागर के मध्य में भग्नावशेष जलयान का नाविक कुछ टूटी लकड़ियों के सहारे डूबता-तिरता रहता है, निस्सहाय जीवन आशा खोये हुए; ठीक उसी प्रकार कौशल पड़ा था। तीन मील के बाद ही नयी दिल्ली का जन-समूह आज दीवाली मनाता होगा। एक जगमगाती, जिन्न और सुनसान दीवाली। भूले-भंगे अमल-वासियों की आज अपनी पूजा होती होगी। झिलमिलाते हुए दीपक भी जलते होंगे, और अज्ञान बच्चों की फुलझड़ियां भी छुटती होंगी। किन्तु उन लाखों मनुष्यों में से एक को भी पता नहीं था कि समाज में ही थोड़ी दूर पर एक अनाथ-सा हृदय पड़ा है।

'ओः! मुझे भी यही डर था।' आकर सन्यासी ने कहा — 'न जाने मुझे बार-बार तुम्हारा ध्यान क्यों आता रहा। युवक, तुम अब तक घर नहीं जा सके।'

कौशल कुछ लज्जित हुआ। क्या मैं इतना कायर और शक्ति हीन हो गया हूं। किन्तु सचमुच ही वह कल से इतना शिथिल हो गया था। चेतना तो उसे हो गयी, किन्तु वह चलने-फिरने योग्य न था। सन्यासी ने उठाया।

'आपको ···' कौशल ने हांफते हुए कहा — 'मैंने बहुत कष्ट दिया।'

'तुम बहुत क्षीण हो गये हो।' सन्यासी ने मानों अपनी भुजाओं का सहारा देते कहा — 'मुझे पहले भी ऐसा ही प्रतीत होता था, इसीलिए मैं फिर आ गया। तुम जीवन से निराश हो गये हो ··· ···'

'हां,' कौशल ने कहा — 'किन्तु मुझे अभी जीना चाहिए। कुछ दिन और ···। मैं अभी मरना नहीं चाहता। ···'

'तुम्हारा घर तो है ··· ?'

'घर है, सब कुछ है, ओः! अभी मरना नहीं चाहता ···'

'चलो तुम्हें घर पहुँचा दूं। या मेरी कुटी में चलो,' सन्यासी ने मुस्करा कर कहा — 'जहां तुम्हें अच्छा लगे।'

'एक ही दिन में ··' कौशल ने सर को कन्धे पर झुकाते हुए कहा — यह क्या हो गया!'

'युवक!' सन्यासी फिर मुस्कराया — 'यदि तुम इतने अधीर हो जाओगे तो भारतवर्ष के निस्सहाय दीन-दुखियों की अधीरता का क्या ठिकाना होगा? तुम्हें तो ईश्वर ने सब कुछ दिया है। तुम अधीर व्यक्तियों को धीरज दे सकते हो। चिन्ता छोड़ो, बोलो कहां चलोगे?'

सन्यासी के सहारे कौशल उठा और घर की ओर चलने लगा। सहारा पाने पर कुछ बल और साहस भी आया। दोनों ने लगभग एक मील रास्ता पार कर लिया।

'पहाड़गंज, बारहखम्भे, पहाड़गंज, बारहखम्भे' अन्धेरी रात में तांगा वाला पास से निकला उसने इन दो बच्चों को देख कर कहा।

'तांगा' कौशल ने पुकारना चाहा, परन्तु क्षीण शब्द, अधरों तक आकर ही रह गये। जीवन में इतनी शक्ति-हीनता उसने कभी भी अनुभव नहीं की थी। दो एक बार क्वार के महीने में नोआखाली के मच्छरों के कारण वह ज्वर से पीड़ित भी हो चुका था, किन्तु इतना निस्सहाय और दुर्बल नहीं हुआ था। उसे महा ग्लानि हुई। किन्तु वह विवश था। चुप हो गया। सन्यासी ने ही तांगे वाले को बुलाया। दोनों बैठे और बारहखम्भे ग्राम की ग्राम में तांगे ने पहुँचा दिया।

चारों ओर दीवाली का प्रकाश। सुन्दर दीपावली। किन्तु आज की दीवाली, इस वर्ष की दीवाली, कितनी फीकी थी। इसलिए नहीं कि कौशल उदास था, इसलिए नहीं कि निर्धन हिन्दुओं के पास तेल भी जलाने को नहीं था, और न खरीदने के लिए उनके पास पैसा था, या पैसा होते हुए भी वस्तुएं उपलब्ध नहीं थीं, या बहुत मंहगी थी, वरन् इसलिए कि आज अखिल भारतवर्ष में हिन्दुत्व का अस्तित्व सर्वथा अमावस्या ही थी, क्या मानसिक, क्या सामाजिक, क्या आर्थिक, और क्या धार्मिक। इन लौकिक दीपकों की टिमटिमाहट में उतनी ज्योति कहां थी? कौशल का बंगला सुनसान अन्धकार में पड़ा था। निशान्त, नीरव। सन्यासी के साथ कौशल घर आया।

'युवक'! सन्यासी ने कहा — 'तुम अकेले रहते हो यहां'?

'इस समय ·····' तांगे से उतरते हुए कौशल ने कहा – 'मैं अकेला हूं ···'

सन्यासी के सहारे वह बैठक की ओर बढ़ा। केवल उसका भूखा प्यासा कुत्ता ही अपनी मालिक की राह देखते चुपचाप बैठा था। दौड़कर आया और कौशल का पांव चाटने लगा। इन मूक जानवरों में भी कितना आकर्षण होता है। कौशल का मन कुछ हल्का हुआ। साधु के साथ बैठक में गद्दे पर बैठ गया। बिजली का प्रकाश फैला।

'हलो,' कौशल ने फोन उठाया। '····· ···'

'विमल, विमल बाबू' कौशल ने पूछा — 'तुम्हारा नौकर है,' जरा भेज दो'। 'नहीं, नहीं'। 'हां, अभी फौरन'। 'कुछ नहीं, ठीक है। 'जल्दी करो'।

कौशल विस्मित तो उतना ही था, और शक्तिहीन भी; किन्तु आराम से बैठने, और घर पहुँच जाने पर उसे कुछ ढाढस हुआ। मन्दों में बल भी आ गया। आंख उठाई तो आलमारी पर कुछ सूखे फल दिखाई दिये। हाथ बढ़ा कर खींचा।

'लीजिये'! कौशल ने कहा — 'आप की क्या सेवा करूं',।

'खाओ'। सन्यासी ने कहा — 'शिष्टाचार की कोई बात नहीं। हम संन्यासी है, नहीं रहने पर मांग कर खाने की हमें आदत है'।

'फिर भी'।

'तुम खाओ'। संन्यासी ने कहा — 'भी मजेस करो'।

कौशल ने एक दो मुनक्कों को मुंह में रखा। नीची निगाहों से उसने अनिश्चित भाव से सर उठाया। सन्यासी ने पहली बार बिजली के उज्ज्वल प्रकाश में कौशल की आंखों को ध्यान से देखा। वे कुछ सुन्दर थीं। इसका गुलाबी मुख कुछ मलिन अवश्य हो गया था, परन्तु उसमें एक अलौकिक सुन्दरता थी। ऐसा मालूम होता था, वह कुछ दिन पहले बीमार था। उसके होंठ सूखे थे, परन्तु चित्ताकर्षक थे।

'युवक'! संन्यासी ने कहा — 'तुम बीमार थे'।

'शायद' कौशल ने कहा।

विमल बाबू का नौकर आ पहुंचा।

'अच्छा' संन्यासी ने कहा — 'अब मुझे आज्ञा दो'। सामने की दीवार घड़ी पर नव बजते देख कर फिर कहा — 'देर हो रही है'

'इस समय आप कैसे जा सकते हैं'? कौशल ने आंखें उठा कर कहा। उसमें एक प्रकार की असाधारण कृतज्ञता टपक रही थी — 'आज आप मेरे अतिथि हैं'।

क्रमशः

कस के भारतीय प्रदेश में

काश्मीर की समस्या : इब्राहीम भी बोले : अनाज सम्बन्धी घात : अपना मुंह शीशे में : इस्लामीकरण का नया अध्याय

काश्मीर सम्बन्धी आंग्ल-अमरीकी प्रस्ताव पर अभी तक कराची में कोई अधिकृत मत प्रकट नहीं किया गया है। वैसे पाकिस्तान के पत्र-जगत का झुकाव इस प्रस्ताव को अस्वीकार करने की ओर है। तो भी प्रतीत होता है कि कराची इसे पूर्णतः अस्वीकार नहीं करेगा, न पूर्णतः स्वीकार ही। सम्भवतः भारत की प्रतिक्रियाओं के अधिकृत रूप से प्रकट हो जाने की प्रतीक्षा की जा रही है जिससे अपनी प्रतिक्रियायें प्रकट करते हुए भारत पर चोट करने का एक अवसर और प्राप्त किया जा सके।

× × ×

सुरक्षा-परिषद् की बैठक से कुछ ही समय पूर्व तथाकथित "आजाद काश्मीर" सरकार के भूतपूर्व अध्यक्ष, सरदार इब्राहीम ने एक मनोरंजक सुझाव रखा है कि भारत-पाकिस्तान के सभी झगड़ों का हल निकालने के लिए, जिनमें काश्मीर भी सम्मिलित है, नेहरू-लियाकत मिलन अथवा भारत-पाक सम्मेलन हो। उनके अनुसार सुरक्षा-परिषद् काश्मीर समस्या के सम्बन्ध में कुछ अधिक नहीं कर सकेगी, इसलिए नहीं कि वह करना नहीं चाहती, वरन् इसलिए कि उसके कार्यों की एक सीमा है और वह अपने निर्णयों को बलपूर्वक मनवा नहीं सकती। अतः उनका सुझाव है कि भारत-पाकिस्तान को आपस में ही काश्मीर समस्या को हल कर लेना चाहिये।

× × ×

जहां तक भारत-पाक चर्चा का प्रश्न है, भारत ने अपनी स्थिति सदा स्पष्ट रखी है। पाकिस्तान का काश्मीर में पदार्पण स्पष्ट रीति से आक्रमण है। यदि पाकिस्तान का काश्मीर प्रवेश न्याय संगत होता, तो पहिले ही दिन कराची ने अपनी सेनाओं और शासक-वर्ग को डंके की चोट काश्मीर भेजा होता। किन्तु उसने तो कबाइली लुटेरों की आड़ में अपने सैनिक भेजे। सुरक्षा परिषद् में प्रथम बार काश्मीर के प्रश्न के उपस्थित होने पर उसने कहा था कि काश्मीर में पाकिस्तान की कोई सेनायें नहीं हैं। काश्मीर-कमीशन के आने पर ही उसने बहाना निकाल कर यह स्वीकार किया कि पाक सेनाएं काश्मीर में हैं। सर ओवन डिक्सन के अनुसार भी पाकिस्तान ने काश्मीर में सेनायें भेज कर अन्तर्राष्ट्रीय नियम को तोड़ा है। तब से आज तक स्थिति में कोई अन्तर नहीं हुआ। क्या मियां लियाकत अभी भी अपना कदम वापिस लेने का विचार करते हैं?

× × ×

पाकिस्तान की ओर से यह विचार खुले रूप में प्रकट किया जा रहा है कि काश्मीर के झगड़े के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका को भारत को अनाज नहीं देना चाहिये और यदि वह देवे ही तो उसका मूल्य लेकर दे। उस पत्र का कथन है—"यदि एक डाकू अपना आखिरी पैसा खर्च कर एक बन्दूक मोल लेता है और तब सड़क के किनारे बैठ कर, उस घातक अस्त्र को हाथ में लिए हुए, रोटी के लिए चिल्लाता है, क्या वह मानवता की पुकार कहला सकती है?" उस पत्र में उस भूमि का भी जिक्र किया गया है, जिस पर भारत आत्म निर्भरता के लिए अनाज के स्थान पर जूट तथा कपास की खेती करा रहा है। तर्क यह दिखाई देता है कि चूंकि भारत काश्मीर को पाकिस्तान को सौंपने को तैयार नहीं है, अमेरिका को २० लाख टन अनाज द्वारा भारत को सहायता नहीं करनी चाहिये, और यदि उसने ऐसा किया, तो वह "पाकिस्तान के विरुद्ध एक अमित्रवत् व्यवहार" माना जायेगा।

× × ×

जहां तक भारत के सुरक्षा व्यय का प्रश्न है पाकिस्तानियों को चाहिए कि जरा अपना मुंह शीशे में देख लें। उनके प्रधानमंत्री मियां लियाकतअली खां कभी यह कहते हुए नहीं थकते कि वे अपने सुरक्षा सम्बन्धी बजट को कम करने के बजाय अपने लोगों को भूखा मारना पसन्द करेंगे। पाकिस्तान अपनी आय का बहुत बड़ा भाग सुरक्षा कार्यक्रम पर व्यय कर रहा है। ऐसी स्थिति में भारत की ओर उंगली उठाना 'उल्टा चोर कोतवाल को डांटे' के समान है।

× × ×

जहां भारत द्वारा जूट व कपास में आत्मनिर्भर होने के प्रयत्न का प्रश्न है, वहां यह ध्यान रखना चाहिये कि यह पाकिस्तान की नीति का ही परिणाम है। यदि भारत अपने यहां जूट तथा कपास का उत्पादन बढ़ाना छोड़ दे, तो इस बात की क्या गारंटी है कि पाकिस्तान भारत को ये दोनों पदार्थ सदा देता रहेगा और वह भी उचित मूल्य पर। फिर पाकिस्तान अपने यहां जो जूट तथा कपड़े के मिल स्थापित कर रहा है, उनके विषय में क्या कहना है? जब वे मिल स्थापित हो जायेंगे, तब भारत को अपने मिलों के लिए कपास और जूट कहां से मिलेगा? क्या पाकिस्तान का यह विचार है कि जब तक वह अपने यहां इस उद्योग का विकास नहीं कर लेता, तब तक भारत इसका माल खरीदता रहे और इस प्रकार अपने उद्योग को चौपट कर डाले?

× × ×

इन सब के अतिरिक्त भारत के लोगों को यह तथ्य अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि पाकिस्तान में इस प्रकार के लोग भी हैं जो दूसरों से यह आग्रह करने में भी किसी प्रकार की लज्जा अनुभव नहीं करते, कि वे संकट के समय में भी भारत की सहायता न करें। इस प्रकार के अनेकों अनुभव भारत के लोगों को हुए हैं। यदि पाकिस्तान की प्रत्येक समय पर भारत की पीठ में छुरा भोंकने का अवसर खोजने की नीति रही तो भारत के लोगों को इस स्थिति पर गंभीरता पूर्वक विचार करना पड़ेगा। इस स्थिति का एक ही इलाज हो सकता है कि विभाजन की भूल को ठीक किया जाय। यदि ऐसा प्रसंग आया तो वह पाकिस्तान के लिए ही सब से बुरा दिन होगा। पाकिस्तान में अधिक गंभीर विचार वाले लोगों को इस पर विचार करना चाहिए।

× × ×

पाकिस्तान सरकार ने छः व्यक्तियों का एक कानूनी कमीशन नियुक्त किया है कि वह यह मालूम करे कि 'वर्तमान कानून में क्या सुधार किए जांय जिससे उन्हें उद्देश्य सम्बन्धी प्रस्ताव के सिद्धान्तों के अनुकूल बनाया जा सके।' चूंकि पाकिस्तान का संविधान अभी भी बनना शेष है, यह घोड़े के आगे गाड़ी बांधने के समान है। इसके अतिरिक्त उद्देश्य सम्बन्धी प्रस्ताव में कहा गया है कि "इस्लाम के अनुसार प्रजातंत्र, स्वतंत्रता, समानता, सहिष्णुता और सामाजिक न्याय के सिद्धान्तों का पूर्ण-पालन किया जायगा।" सम्भवतः इस कमीशन का कार्य यह है कि वह देखे कि वर्तमान कानून इन इस्लामी सिद्धान्तों के कहां तक अनुकूल हैं। दूसरी एक महत्व की बात यह है कि इस कमीशन में एक भी सदस्य अल्पसंख्यकों का नहीं है, यद्यपि पूर्वी बंगाल की आबादी का एक चौथाई अंश हिन्दू हैं। शायद इसी प्रकार पाकिस्तान अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा करना चाहता है।

—★—

रूस में अखबारी पर्दा

[पृष्ठ ६ का शेष]

पोलिट्ब्यूरो के अन्दर दलबन्दी

उन देशों में जहां तानाशाही है और जहां एक छोटा-सा दल सारे महत्वपूर्ण निर्णय करता हो, ऐसी बातों की महत्ता और अधिक बढ़ जाती है। इस पर छोटे से शासक वर्ग के कार्य और इनके वाद-विवाद बड़े ही घने रहस्य के आवरण में ढके रहते हैं। दलबन्दियों का और विचारों की भिन्नता का अनुमान तो हम पिछली तानाशाहियों के इतिहास और १९२० और उसके बाद के सोवियट सरकार के दृष्टि (पर्ज) से कर सकते हैं, पर प्रवदा और इसके छोटे-छोटे साथी तो ऐसा दिखाते रहते हैं, मानो सोवियट रूस की सभी बातें स्वयं स्तालिन ही सोचते हैं और उनके पोलिट्ब्यूरो के सहकारी बिना किसी बहस के और बिना असहमत हुए झट मान लेते हों।

पर बहुधा या तो कोई चीज छप जाती है या छपने से रह जाती है, जिससे नेपथ्य में होने वाली बातों का कुछ आभास मिल जाता है। उदाहरणार्थ, १९४९ के पहले ही महीनों में सोवियट के उच्च पदाधिकारियों की सूची में निकोलाई वोजेन्सेन्स्की का नाम नहीं आया। उसके बाद वह फिर कभी नहीं छपा। इस प्रकार पोलिट्ब्यूरो से उनका निकाला जाना मालूम हो सका, यद्यपि निकाले जाने का कारण उनकी भविष्य की कथा और वह भी कि वह जीवित भी हैं या नहीं, अब तक रहस्य ही बना हुआ है।

बहुत से पर्यवेक्षकों ने हाल में एक रूसी चित्रकार के बनाये हुए पोलिट्ब्यूरो के अधिवेशन के चित्र को परीक्षा में इस अभिप्राय से बड़ा श्रम किया, जिस से उसमें भिन्न भिन्न व्यक्तियों को जहां और जिस रूप से बैठे हुए दिखाया गया है, उससे उन्हें उनके पारस्परिक महत्व का और दल-बन्दियों का अन्दाज लग जाय।

भिन्न भिन्न वर्गों के जीवन स्तर में अन्तर

सोवियट समाचार पत्रों को १० हजार रूबल (अथवा बढ़ाए हुए सरकारी विनिमय के अनुसार २॥ हजार डालर प्रतिमास कमाने वाले और सामूहिक खेती करने वाले 'लखपति' किसानों के विवरण में लेख प्रकाशित करना बहुत प्रिय है। पर वह सब जानते हैं कि साधारणतया सोवियट जीवन स्तर बहुत नीचा है। कभी कभी पत्रों में ऐसे लेखों का भी उल्लेख हो जाता है जिन पर काम करने वालों को उसकी साल भर की मेहनत की कमाई हुई भी नहीं मिलती।

सोवियट यूनियन में एक दूसरे से भिन्न बहुत से आर्थिक वर्ग हैं जिनके जीवन स्तरों में बड़ा अन्तर है। एक एक पर जो वर्ग है उसकी तुलनात्मक-औसत क्या है? इन विषम जीवन-स्तरों में आपस में कितना अन्तर है? प्रत्येक वर्ग का विस्तार कितना है? आय और मजदूरी का वितरण किस प्रकार है? रहने के मकानों की हालत क्या है? वर्तमान और सामाजिक विषमतायें, कहां कहां पारिवारिक पक्षपात और उससे सम्बद्ध शक्तियों के कारण वंशानुगत होती जा रही हैं? विभिन्न प्रदेशों में भिन्न भिन्न वर्गों के स्वास्थ्य के साधनों का प्रबन्ध कैसा है?

हम यह जानते हैं कि सोवियट सरकार इन विषयों पर पर्याप्त नियंत्रण रखती है और इनके सम्बन्ध में बहुत से आंकड़े जमा करती है। पर इनके विषय में सूचना गुप्त रखी जाती है और ऐसी बातें प्रकाशित की जाती हैं, जो वास्तव में तो अपवाद होती हैं पर उन्हें उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। शायद ही संसार में कहीं और इतनी सूचना इकट्ठी की जाती हो और दैनिक जीवन के विषय में परिचित कराने के लिए इतना कम उपयोग किया जाता हो।

जनता में असन्तोष और विरोध

अधिकतर सोवियट समाचार पत्र इस प्रकार लिखते हैं, मानों रूस में प्रत्येक स्त्री पुरुष और बच्चा शासक का उत्साही समर्थक और स्तालिन का पुजारी हो। वे इस प्रकार के उदाहरण सामने रखते हैं जैसे सोवियट के उच्चतम सदस्यों के पिछले निर्वाचन में शासक वर्ग के पक्ष में ९९.७२ प्रतिशत वोटों की प्राप्ति। फिर भी समय समय पर सत्ताधारी राष्ट्रवादियों, बेवरहार के विश्वासियों और ऐसे लोगों की, जो अब तक पूंजीवादी विचारधारा, कुलक (जमींदार) आदि से व्याधित हैं, निन्दा होती ही रहती है।

लाखों गुलाम मजदूरों के विषय में किये गये आरोपों का घृणा के साथ प्रतिवाद किया जाता है। पर इसके विरुद्ध प्रमाण हैं 'वापस न लौटने वाले' हजारों सोवियट के लोग, जिस में ऐसे लोग भी हैं, जो पहले सोवियट रूस के प्रायः सभी पदों पर और सभी क्षेत्रों में रह चुके हैं।

सरकारी रूप से सोवियट की विभिन्न जातियों विषयक नीति संसार में सब से अधिक उदार घोषित की जाती है, जिसके परिणामस्वरूप वहां रहने वाली भिन्न भिन्न जातियों में परस्पर सौहार्द और सहयोग है। पर यह सरकारी रूप से मान लिया गया है कि तातारों और दूसरी जातियों ने पिछले महा युद्ध में आक्रमणकारी जर्मनों का स्वागत किया और सोवियट शासन को उखाड़ फेंकने की कोशिश की।

इन सबसे पता लगता है कि एकता और उत्साह के इस बाहरी रूप के पीछे बहुत से लोग हैं, जिन्हें अपने स्वामियों के विरुद्ध गहरा असन्तोष है। यह समूह कितना बड़ा है, इसकी शिकायतें कैसी हैं, और इसके ध्येय और उद्देश्य क्या हैं, ये सब बहुत ही महत्वपूर्ण बातें हैं। पर इनके विषय में हमारी जानकारी बहुत ही कम और असन्तोष प्रद है।

अज्ञान से साम्यवाद का प्र

सोवियट यूनियन के विषय में इस अनभिज्ञता का परिणाम घातक है। सोवियट की वास्तविकता का अज्ञान साम्यवाद के प्रचार के फैलने में सहायता देता है जो सोवियट यूनियन को धरती पर स्वर्ग के रूप में चित्रित करता है। इस अनभिज्ञता के कारण इसका प्रतिवाद और भी कठिन हो जाता है। इस बात की सफलता फ्रांस और इटली जैसे उन्नत देशों में साम्यवादी दलों के बल से ही प्रमाणित होती है।

इससे भी अधिक ध्यान देने योग्य बात तो यह है कि जिन्हें अमेरिका और उसके मित्र राष्ट्रों की नीति निर्धारित करनी है, उन्हें सोवियट यूनियन के विषय में बहुत कम विश्वसनीय जानकारी है। सैन्य विषयक, आर्थिक और राजनैतिक योजनाओं के बारे में अन्दाज अनुमान, अटकल और अफवाहों पर भरोसा करना पड़ता है। इतनी अस्थिर नींव पर आश्रित नीतियों के भ्रामक और त्रुटिपूर्ण होने की भारी आशंका होती है। कौन कह सकता है कि अभी कितने अप्रिय आश्चर्य हमें नहीं होने जा रहे हैं? और हमारे नेता पहिले से ही उनके लिये किस प्रकार तैयार हो सकते हैं।

—न्यूयार्क टाइम्स से

यदि मैं भी कवि होता—

[सुश्री जगदीशवती टाका]

यदि मैं भारत का साधारण-सा कवि होता, तो अपनी नवीन चेतना के गीत गाता, भारतीय साहित्यकारों को हमेशा आर्थिक प्रहारों के चपेटों के बार-बार शिकार होने पर भी निराश न हो कर नई जिन्दगी का साज बजाता। मैं अपने उस कंकाल हृदय से निकली हुई आवाज को शक्ति प्रदान कर भारत-वासियों को कह उठता —

'हम कौन थे, क्या हो गये,
और क्या होंगे अभी है।
आओ विचारें आज मिल कर
यह समस्यायें सभो।'

और मेरी इस आवाज पर भारत की भिन्न-भिन्न जनता आशा का प्रदीप लिए आगे बढ़ती। मेरी कविता में कवियों की छायावादी प्रवृत्ति नहीं होती, बल्कि मैं अपनी कविता में ललकार उठता —

'क्रान्ति धात्रि कविते जाग उठ
आडम्बर में आग लगादे,
पतन पाप पाखंड जले
जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।'

मानव जीवन की भावनाओं को मैं बहुत ही सुन्दर तरीके से चित्रित करता। मेरी कविता में प्रेम के तराने नहीं होते, बल्कि जीवन की स्वर लहरी होती, मेरी कविता उन धनी स्वार्थियों का गुणगान नहीं करती, जो समाज के सबसे अधिक शोषक हैं। मेरी कविता ऐसे स्वार्थी लोगों को छोड़ कर सच्ची जनता का पक्ष लेता और पीड़ाओं से ओत-प्रोत टूक टूक कलेजे से कहती —

'वह आता,
दो टूक कलेजे के करता,
पछताता,
पथ पर आता,
पेट-पीठ दोनों मिल कर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक,
मुठो भर दाने को भूख मिटाने को
मुंह फटी पुरानी झोली-सा फैलाता।'

मेरी वाणी जन-जन के लिए होती। वह कला मुट्ठी भर लोगों को न रिझा कर कोटि-कोटि की समस्या समाधान करती। कला जीवन का संदेश लिए आगे बढ़ती। मेरी कविता का नायक इस ढोंगी समाज के प्रति एक भारी विद्रोह कर बैठता, वह समाज के उन ठेकेदारों को साफ शब्दों में कहता और उन पूंजीपतियों को, जिन्होंने समाज का ठेका ले रखा है ललकारता —

कोई भी नर ब्याज खोर भी,
भर काला खा सकता है।
सूरज के साखी होत भी,
सौ के दो सौ कर सकता है।
पर इस समाज की नजरों में,
वे करते कोई पाप नहीं।
कानून उन्हें क्यों रोके,
जब उसका सुद का कुछ नाप नहीं

जहां तक नारी का प्रश्न है मेरी कविता सिर्फ यही कह कर नहीं रुक जाती कि.—

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल में दूध और आंखों में पानी"

बल्कि मेरी कविता उन्हें आगे बढ़ने को ललकारती, उन्हें अपनी प्रेरणा देती कि वे नारियों और उसी के समान उनका कंगाल वर्ग एक साथ मिलकर स्वर्ग तक को अपने भूखे नंगे बच्चों के दूध के लिये ललकारने के लिए बाध्य कर देती —

हटो पंथ से मेघ तुम्हारा,
स्वर्ग छूने हम आते हैं।
वत्स-वत्स ओ वत्स तुम्हारा,
दूध खोजने हम जाते हैं।

इस प्रकार मेरी कविता देश के दीन हीन कंगालों में एक जोश पैदा कर देती। मेरी कविता समाज की उन मूक वाणी अबलाओं को एक नवीन वाणी चेतना प्रदान करती, मेरी काव्य साधना सिर्फ साहित्यक घेरे में ही बन्दी न रह कर जनता का एक सच्चा पथप्रदर्शक सिद्ध होती, मेरा काव्य उनका एक हथियार होता जो हमेशा समाज के ठेकेदारों और ढोंगी समाज के प्रति विद्रोह कर बैठता, मेरी कविता का नेतृत्व यही होता —

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल पथल मच जावे।
एक हिलोर इधर से आये,
एक हिलोर उधर से जावे।
प्राणों के लाले पड़ जाये,
त्राहि त्राहि नभ पल में छावे।

कवि के हाथों में समाज की बाग-डोर होती है। वह नये देश का नया निर्माता है। मैं इसी लक्ष्य का ध्यान रखते हुए नव निर्माण के तराने गाता देश के तूफान देश की शान्ति, देश की हलचल, देश का दर्द सभी कुछ मेरी वाणी के स्वर बनकर गूंज उठता। इसी प्रकार पर नये २ लक्ष्य के लिये जिन्दगी की पगडंडियों को पार करता हुआ भविष्य की ओर बढ़ चलता।

जानने योग्य बातें

● हाल में ही जेकोस्लोवाकिया के एक वैज्ञानिक ने १६ करोड़ वर्ष पहले के एक जन्तु की हड्डी पाई है। इसे वेस्ट क्रांटबक के एक कारखाने में काम करने वाले बच्चे गेंद खेलने के व्यवहार में ला रहे थे।

● सन् १९४३ में स्याम में चार्ल्स स्वैब नामक एक चित्रकार जापानियों द्वारा बन्दी बना लिया गया था। एका-एक उसे यह ज्ञान हुआ कि उसे पुत्री हुई है और कल्पना द्वारा उसका चित्र बनाने लगा। उसने पुस्तकों के बाहरी पन्नों को उखाड़ा और रंग तैयार किया। इसके बाद अपने बालों कूंची तैयार की और अपनी पुत्री का चित्र बनाया। तारीफ तो यह है कि उसका वह चित्र हू-बहू उसकी पुत्री का ही था।

● चश्मे का आविष्कार सन् १३ सौ के लगभग हुआ था।

● मास्को में अधिकतर औरतें ही डाक बांटने का काम किया करती हैं। घर घर जाकर बूढ़े लोगों को पेंशन के रुपये भी वे ही पहुंचाती हैं।

अमेरिका में सोना बनाने के प्रयोग

कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के रसायनशास्त्रियों ने सोना बनाया है परन्तु यह सोना टिकाऊ नहीं होता। सोना प्लेटिनम, रेडियम और हेलियम के समिश्रण से बनता है, परन्तु धीरे धीरे लुप्त हो जाता है। फिर भी वैज्ञानिक का कहना है कि यह भौतिक विज्ञान-सम्बन्धी अनुसन्धान मे बहुत सहायक होगा।

★

दिन में मनुष्य की लम्बाई घट जाती है

दिन में काम करने से मनुष्य के शरीर की लम्बाई घट जाती है और निद्रा के बाद उसकी असली लम्बाई फिर लौट जाती है। यह अनुसंधान केलीफोर्निया के वैज्ञानिकों ने किया है।

जरा हंसिये

पुत्र — (माता से) मां! आज मैंने स्कूल में पढ़ा है कि 'आज का काम कल पर मत छोड़ो'।

माता — ठीक है बेटा!

पुत्र — अच्छा माता! आलमारी में जो मिठाई धरी है, उसे कल के लिए क्यों छोड़ूं? आज ही खतम कर डालूं।

× × ×

मैजिस्ट्रेट — जो व्यक्ति अदालत में शोर मचायेगा, वह तुरन्त बाहर निकाल दिया जायगा।

मुजरिम — (शोर मचाकर) हजूर, मैं शोर मचा रहा हूं, मुझे बाहर निकल जाने की आज्ञा दीजिए।

— कुमारी बालवंती

मूर्खता

मुख, सुख, ये दो भाई,
देखी जल में निज परछाई।
देखा उन्होंने दो लड़के,
चल रहे नदी के नीचे।
कूद पड़े वे दोनों जल में,
गहरा था पानी सरिता में।
बस लाशें उनकी नदी पर निकलीं,
क्या मूर्खता बुद्धि से जीत सकती?

— चैनसुख भंवर

★

विज्ञान के करिश्मे—

अगर तुम बिजली तैयार करना चाहो तो उसको सब से अच्छी तरकीब मैं बतला सकता हूं! वह यह है —

एक शीशी में गंधक का पानी मिला हुआ तेजाब भर दो, उसमें एक कार्क की डाट लगा दो, इस डाट में दो छेद पतले व १ चौड़ा करो। २ छेदों में से कोयले की बत्तियां अन्दर डालो व बीच वाले में से जस्ते की प्लेट डालो। उन दोनों को एक २ तार से बांधो और दोनों तारों को मिलाकर एक कर लो, और जस्ते की प्लेट से एक अलग तार बांधो, कोयले की सलाखों वाला तार और यह तार मिलाने से ही बिजली बनेगी। उस बोतल के तेजाब में थोड़ा सा लाल कसीस या कुएं में डालने वाली लाल दवा मिला दो, तब बिजली की करेंट अच्छी रहेगी 'इस सैल से तुम बल्ब जलाओ चाहे तार भेजो''

नोट — कोयले की सलाखें और जस्ते की प्लेट, टार्च के खराब सैल से मिल सकती हैं "सैल का खोल जस्ते का होता है और बीच की सलाख जो ऊपर पीतल की होती है अन्दर कोयले की होती है"

आचार्य चाणक्यस्य सूत्राणि

आचार्यचाणक्य भारतवर्षस्य महान् कुशलो राजनीतिज्ञ शासकश्चासीत्। शास्त्राणाम् अगाध पाण्डित्यं, विशाल देशस्य शासनस्य महान् अनुभव—एतद् गुणद्वयं नेतरस्मिन् कस्मिंश्चित् प्राचीने भारतीयराजनीतिज्ञे युगपद् दृश्यते। तस्यैव मन्त्रित्वकाले सैल्यूकसो नाम यवनाधिप. पराजयं अलभत स्वांच कन्यां चन्द्रगुप्ताय विवाहे ददौ। अस्मै नंदस्थाने चन्द्रगुप्तमौर्यं भारतसम्राजःपदे प्रतिष्ठापयामास। असौ सूत्रेषु महत्सत्यं अस्माकं भारतीयानां कृते अलिखत्। तस्य अर्थशास्त्रं अद्यतनेभ्यः राजनीतिज्ञेभ्योऽपि महदाश्चर्यकरमुपयोगि च विद्यते। तस्य महतोनीतिज्ञस्य अस्य आचार्यस्य कानिचित् सूत्राणि अत्र दीयन्ते।

"प्रकृतिसम्पदा अनायकमपि राज्यं नीयते।"

प्रजा (प्रकृतिः) उन्नता सम्पन्ना भवेत्चेत्, तदा नायकहीनमपि राज्यं संचाल्यते।

"प्रकृतिकोपः सर्वकोपेभ्यो गरीयान्"

प्रजाकोप. राज्ञे सर्वकोपेभ्य. महान् हानिकारकः।

"नीतिशास्त्रानुगो राजा"

यः नीतिशास्त्रमनुसरति स एव राजा कथनीय

"दण्डेन प्रणीयते वृत्ति"

दुष्ट' शत्रु' आततायी वा दण्डेन शाम्यति।

"पुरुषकारमनुवर्तते दैवम्"

दैवं भाग्यं पुरुषार्थिनमनुसरति।

"कार्यान्तरे दीर्घसूत्रता न कर्तव्या"

इतस्कार्यप्रारम्भे आलस्यं न कर्तव्यम्।

"न चलचित्तस्य कार्यावाप्तिः"

यस्य चित्तं चंचलं, स कदापि न कार्यं सफलयति।

"चतुष्पथिकालव्यतिक्रमो न कुर्यात् सर्वकृत्येषु"

सार्वजनिकहितकार्येषु एकस्य क्षण स्यापि विलम्बो न कार्य

"सिद्धस्य कार्यप्रकाशनं कर्तव्यम्।"

यावत् कार्यं न सिध्यति तावत् तस्य प्रकाशनम् अनुचितम्।

"यः कार्यं न पश्यति सोऽन्धः"

य स्वकीयकार्यं स्वयं न पश्यति, स्वाननुचरान् विश्वसिति सोऽन्धः।

"नास्ति भीरोः कार्यचिन्ता"

यः सदा स्वकार्ये भीरु. भवति, न एकमपि कार्यं करोति।

"यः स्वजनं तर्पयित्वा शेषं भुंक्ते स, ऽमृतभोजी।"

यः शासकः अधिकारी च स्वाम्यः प्रजाभ्य' भोजनं वस्त्रादिकं च दत्वा स्वयं भुंक्ते, अमृतभोजी।

संविधानस्य संस्कृतेऽनुवादः

सर्वशक्तिसम्पन्नस्य लोकतन्त्रात्मक गणराज्यस्य भारतस्य नवीनं संविधानं सम्प्रति संस्कृत भाषायामपि अनूदितप्रायं विद्यते। डा० मंगलदेव लक्ष्मणनामानौ द्वौ विद्वासौ शास्त्रिणौ संविधानस्य अनुवादं अकुरुताम्। प्रथमः काशीनगर्यां वसति, द्वितीय पूनानगर्याम्। अस्मिन् अनुवादकार्ये केवलं पंचदश सहस्ररूप्याकाणां व्ययोऽभूत्। मार्चमासस्यान्तेऽयं अनुवाद प्रकाशयिष्यते।

सुभाषितम्

चलं वित्तं चलं चित्तं
चलं जीवति यौवने।
चलाचलमिदं सर्वं
कीर्तिर्यस्य स जीवति।

[पृष्ठ ८ का शेष]

माने शासन के हो जाते हैं। पर अब वो शासन नहीं चलेगा।

कल एक भाई ने कहा था कि दुनिया में हिन्दुस्तान की मर्यादा बहुत बढ़ रही है। अरे भाई, दुनिया में तो हिन्दुस्तान की मर्यादा बढ़ गई है, लेकिन हमारे घर में क्या हो रहा है। सारे हिन्दुस्तान में घर घर में असन्तोष है। तो आप लोग जो दुनिया में हिन्दुस्तान की प्रतिष्ठा चाहते हैं वह बड़ी खुशी की बात है, लेकिन प्रतिष्ठा होनी चाहिए आपकी हरएक के हृदय में। आपकी यह ख्वाहिश होनी चाहिए कि देश में हर एक आदमी सुख रहे। हमारे देश में राम-राज्य की बात आती है। मैंने कहा कि आप लोगों की शिकायतें सुनते सुनते मुझे बड़ा दुःख होता है, पर अब तक आप लोग बने हुए हैं मैं आपको धर्मानुकूल कोई उपाय करने को कहता हूं। हमारे देश में कैसे राज्य हुआ करता था। एक बार धोबी ने टीकाटिप्पणी की रामचन्द्रजी के कार्य की

तो रामचन्द्रजी ने अपनी स्त्री को वनवास दिया। पर हमारे मन्त्रियों की लोग रात दिन बुराई करते हैं पर वह गद्दी नहीं छोड़ रहे हैं। हमारे देश में तो गजीर है। उसको ले करके अगर आप काम करें और देश की सेवा करना आरम्भ करें तो कम्युनिज्म नष्ट हो जायगा। लेकिन जो कार्य आप कर रहे हैं उससे ऐसा नहीं होगा। तो इस बिल से कुछ होने वाला नहीं है। इस वास्ते मैं हृदय से कहता हूं कि राजाजी आप इस बिल को वापिस कीजिये और काम कीजिये और चलिये देश में उस तरह काम कीजिये, जैसा कि मैंने उपाय बतलाया है, जिसमें देश सुख हो और आप का नाम बरकरार रहे।

[पृष्ठ ६ का शेष]

अप विचार कर रहा था, तो हमारे इस पड़ोसी राष्ट्र को मानो बुखार सा चढ़ रहा था। वह अपने अमरीकी दूतावास तथा देशीय समाचार पत्रों द्वारा अमरीका को ऐसा करने से रोकने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रहा था। उसमें उसे कुछ सफलता नहीं मिली। इसके लिए भी कदाचित हमारी सरकार ने पाकिस्तान सरकार से समवेदना एवं सहानुभूति प्रगट की ही होगी।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि जैसे भारत सरकार पाकिस्तान से अन्य विषयों में नरमाई तथा ढिलाई की नीति को अपना रही है, उसी प्रकार से आर्थिक क्षेत्र में भी भारत के लिए हानिकर नीति को अपना रही है। उसका प्रमाण पाकिस्तान से यह व्यापारिक सन्धि है। जब तक यह लेख पाठकों के हाथ में पहुँचेगा तब तक कदाचित इस व्यापारिक समझौते के विषय में विस्तृत घोषणा हो चुकी होगी।

———

संसद में क्या देखा, क्या सुना

सरकार ने सन् १९४७ से पश्चिमी बंगाल में शहरी विस्थापित व्यक्तियों को १ करोड़ ९९ लाख रुपये के ऋण दिये हैं। इन ऋणों को पाने वालों में ६६०८ छोटे व्यापारियों को ४५ लाख ४८ हजार रुपये, ८६१ बड़े व्यापारियों को ३० लाख, लगभग एक हजार डाक्टरों व वकीलों को ९ लाख ४२ हजार, ३६०० विद्यार्थियों को १३ लाख ३ हजार, तथा १६८३ कारीगरों को १ लाख ४९ हजार रुपये के ऋण दिये गए हैं। इसके अलावा १ करोड़ ३७ लाख ९४ हजार रुपये के ऋण कृषक-परिवारों को दिए गये। —श्री अजितप्रसाद

●

भारत सरकार ८ करोड़ ३७ लाख रुपए की लागत पर एक स्विस फर्म की सहायता से मशीनी औजार बनाने की एक फैक्ट्री स्थापित करना चाहती है। इस फैक्ट्री में खराद व सूराख करने वाली मशीनों जैसे बड़े मशीनी औजार बनाये जावेंगे। इससे देश की वर्तमान मशीनी औजार फैक्ट्रियों पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा। —श्री गाडगिल

●

जुलाई दिसम्बर सन् १९५० में ३२३३०३ रुपये के मूल्य के ७८७८२ आयात लाइसेंस जारी किये गये थे, जब कि जनवरी-जून सन् १९५० में २,९९ ४९ रुपये के मूल्य के ४०८१९ लाइसेंस जारी किये गए थे। जुलाई-दिसम्बर सन् १९५० के लिए जारी किए गये १४९८३ निर्यात-लाइसेंसों के मूल्य की जानकारी उपलब्ध नहीं है क्योंकि निर्यात-लाइसेंस प्रायः मात्रा के आधार पर जारी किये जाते हैं।

जुलाई-दिसम्बर सन् १९५० में एक अकेले आयात लाइसेंस की अधिकतम धन-राशि ९ करोड़ ३९ लाख रुपये थी। यह लाइसेंस नकली रेशम के धागों के आयात के लिए था।

जनवरी-जून सन् १९५१ में निर्यात-व्यापार से होने वाली आय का अनुमान २ अर्ब ३० करोड़ रुपया है जब कि व्यापारिक आयातों पर होने वाला व्यय अनुमानतः २ अर्ब ३० करोड़ है। इन अनुमानों में आयात तथा निर्यात व्यापार के सभी विषय सम्मिलित हैं। —श्री मेहताब

●

नवम्बर सन् १९५० की समाप्ति तक १७ करोड़ ९ लाख रुपये सिन्दरी की रासायनिक खाद फैक्ट्री पर व्यय हो चुके हैं, तथा यह अनुमान है कि इस फैक्ट्री द्वारा उत्पादन कार्य आरम्भ करने से पूर्व उस पर ९ करोड़ ९ लाख रुपये और व्यय होंगे।

पेनिसिलिन, गन्धक तथा मलेरिया निरोधक औषधियों के उत्पादनार्थ एक फैक्ट्री पर, जो लगभग दो वर्ष में उत्पादन-कार्य आरम्भ करेगी, ३ लाख २ हजार रुपये व्यय किये गये हैं। अभी उस पर ३ लाख ४७ हजार रुपए और व्यय होने का अनुमान है। —श्री गाडगिल

●

टायरों के मूल्य में १९ प्रतिशत वृद्धि का कारण आयातित रबड़ के भावों में वृद्धि है। टायर उद्योगपतियों को उपलब्ध देशी रबड़ के अलावा आयातित रबड़ की कुछ मात्रा का भी उपयोग करना पड़ता है। भारत में लगभग १० करोड़ रुपये के मूल्य के टायर एक वर्ष में बनाये जाते हैं। भावों में वृद्धि के कारण उनके मूल्य में १ करोड़ ९ लाख रुपये की वृद्धि होगी। —श्री मेहताब

●

धनाभाव के कारण भारत सरकार की किसी भी विकास योजना को रद्द नहीं किया गया। किन्तु जहां पर आवश्यक समझा गया है वहां पर योजनाओं के क्रियान्वित करने के लिए उचित व्यवस्था की गई है। —श्री देशमुख

शासन विभाग से न्याय विभाग को पृथक करने की योजनायें मध्य भारत, हैदराबाद, मद्रास के कुछ जिलों, उत्तर प्रदेश, मध्यदेश और बिहार में क्रियान्वित की जा रही है। बम्बई सरकार ने भी इस दिशा में प्राथमिक कार्य किया है। —गृहमंत्री

●

[पृष्ठ ४ का शेष]

वर्ष की फसल से १ लाख गांठ से अधिक कपास नहीं प्राप्त हो सकेगी। इतनी मात्रा प्राप्त करने में भी सन्देह है। आगामी वर्ष में भी पाकिस्तान में रुई खरीदने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया है। लेकिन इस फसल से कम से कम ४ लाख गांठ रुई भारत को दी जावेगी।

जहां तक अनाज का सम्बन्ध है, इस वर्ष पाकिस्तान से हमें कोई लगभग ढाई लाख टन अनाज मिलेगा जिसमें थोड़ा गेहूं होगा और शेष चावल होगा। आगामी वर्ष में पाकिस्तान ने फसल अच्छी होने पर—१॥ लाख टन चावल और २॥ लाख गेहूं देने का वचन दिया है।

इनके बदले भारत पाकिस्तान को जून १९५१ के अन्त तक ६ लाख टन कोयला और जुलाई १९५१ से जून १९-५२ तक १९ लाख टन कोयला देगा।

इस समझौते की एक विशेषता यह है कि दोनों देशों ने कुछ चीजों के आयात और निर्यात के लिए चीजों की एक लम्बी सूची तैयार की है जो बिना किसी लाइसेन्स के एक दूसरे देश से खरीद कर दूसरे देश को लाई जा सकती हैं। इस सूची में ऐसी चीजें हैं जिनका व्यापार सीमावर्ती क्षेत्रों में होता है। अन्य चीजों के व्यापार के सम्बन्ध में, दोनों देशों ने स्वीकार कर लिया है कि वे उन चीजों के सम्बन्ध में आयात निर्यात की वैसी ही सुविधाएं देंगे जैसे सुलभ तथा दुर्लभ मुद्रा क्षेत्र वालों को प्राप्त हैं।

———

आकाशवाणी प्रकाशन लि० जालन्धर की

अनुपम भेंट

गीता-अमृत मू०— पांच आना

लेखक— स्वामी सत्यानन्दजी

भूमिका— श्री गुरू जी

संघ वस्तु भण्डार की पुस्तकें

जीवन चरित्र परम पूज्य डा० हेडगेवार जी	मू० १)
,, ,, गुरूजी	मू० १)
हमारी राष्ट्रीयता ले० श्री गुरूजी	मू० १॥)
प्रतिबन्ध के पश्चात् राजधानी में परम पूज्य गुरूजी	मू० ॥=)
गुरूजी पटेल - नेहरू पत्र व्यवहार	मू० ।)

डाक व्यय अलग

पुस्तक विक्रेताओं को उचित कटौती

संघ वस्तु भंडार, ४६ ई कमलानगर देहली ६

बांझ स्त्रियों के लिये

सन्तान पैदा करने का लासानी नुस्खा

मेरी शादी हुए पन्द्रह वर्ष बीत चुके थे। इस समय के बीच मैंने सैकड़ों इलाज कराये लेकिन कोई सन्तान पैदा न हुई। सौभाग्यवश मुझे एक वृद्ध महापुरुष से निम्न लिखित नुस्खा प्राप्त हुआ। मैंने उसे बना कर सेवन किया। ईश्वर की कृपा से नौ मास बाद मेरी गोद में बालक खेलने लगा। इसके पश्चात् मैंने जिस सन्तान हीन को इसका सेवन कराया उसी की आशा पूरी हुई। अब मैं इस नुस्खे को सूची-पत्र द्वारा प्रकाशित कर रही हूं ताकि मेरी निराश बहनों की आशा पूर्ण हो।

औषधि तत्व ये हैं—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नेपाल गवर्नमेन्ट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारी दक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम से कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कटियारी सफेद की जड़ (यानी सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घन्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनावें। इसके सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति—गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातः काल और सायंकाल एक एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट—औषधि तत्व के अन्दर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अन्दर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

मेरी सन्तान हीन बहनो,

आप इसे ये गुप्त औषधि न समझें। यदि आप बच्चे की माता बनना चाहती हैं, तो इसे बना कर जरूर सेवन करें। मैं आप को विश्वास दिलाती हूं कि इसके सेवन से आपकी अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। यदि कोई बहन इस औषधि को मेरे हाथ से ही बनवाना चाहें तो पत्र द्वारा सूचित करें। मैं उन्हें औषधि तैयार करके भेज दूंगी। एक बहन की औषधि पर पांच रुपये बारह आने। दो बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने और तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आना खर्च आता है। महसूल डाक चौदह बारह आने इससे अलग है।

नोट—जिस बहिन को मेरे पर विश्वास न हो वह मुझे कृपा के लिये हरगिज न लिखें।

रतनबाई जैन (४४) सदर बाजार थाना रोड, देहली।

स्वास्थ्य सबंधी उपयोगी पुस्तकें

श्री रामेश वेदी लिखित निम्न पुस्तकें मंगवा कर अपना इलाज आप कीजिये।

लहसुन प्याज—दूसरा संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण। मूल्य २॥) रु०। हमें विश्वास है कि इसे पढ़ कर आप तपेदिक, काली खांसी, निमोनिया जैसे भयंकर रोगों, पेट और दूसरे रोगों का केवल लहसुन से ही सफलता पूर्वक इलाज करना जान जायेंगे।

तुलसी—संशोधित व परिवर्द्धित संस्करण। मूल्य २॥)। हर भारतीय घर में बोये जाने वाले तुलसी के पौधे से छोटे मोटे सैकड़ों रोगों का इलाज करने की विधियां। पहले जमाने में क्षय तथा दूसरे असाध्य रोगियों को तुलसी के बगीचों में रख कर ठीक करने के रहस्य भी वेदी जी ने इसमें बताये हैं।

सोंठ—तीसरा संवर्द्धित संस्करण। मूल्य १॥)। रसोई में प्रतिदिन काम आने वाली सोंठ और अदरक से छोटे मोटे प्रायः सब रोगों का इलाज करने के विस्तृत तरीके।

देहाती इलाज—दूसरा संवर्द्धित संस्करण। मूल्य १) घर, बाजार और देहात में सब जगह सुगमता से कठिन रोगों का भी इलाज करने की क्रियात्मक विधियां। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रेरणा से यह पुस्तक लिखी गई है।

मिर्च—काली, सफेद, और लाल मिर्च के गुण व उपयोग। मूल्य १)।

शहद—दैनिक भोजनों में और विविध रोगों में शहद को प्रयोग करने के विस्तृत तरीके, असली तथा नकली शहद की पहिचान आदि जानने के लिए और शहद के सम्बन्ध में पूरा जानकारी प्राप्त करने के लिए यह पुस्तक आज ही मंगाइये। विद्यार्थियों, गृहस्थों, कार्यकर्त्ताओं, वैद्यों, डाक्टरों आदि के लिए यह बहुत काम की पुस्तक है। मूल्य २)।

एजेन्टों की सब जगह आवश्यकता है। सूची पत्र मुफ्त मंगाइये।

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

भारतीय संसद् ने निवारक प्रतिबन्ध विधेयक पास कर दिया।
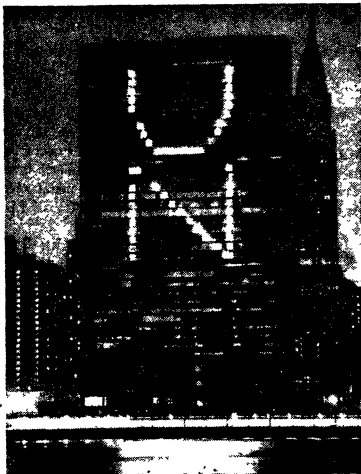
संयुक्त राष्ट्र संघ का भव्य भवन

अमेरिका में उत्पादन की दिशा में क्रान्तिकारी परिवर्तन

पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा, मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिए अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली में छपवा कर प्रकाशित किया।

डॉ० हेडगेवार

दिल्ली रविवार
२६ चैत्र सम्वत् २००८
DELHI 8th APRIL 1951
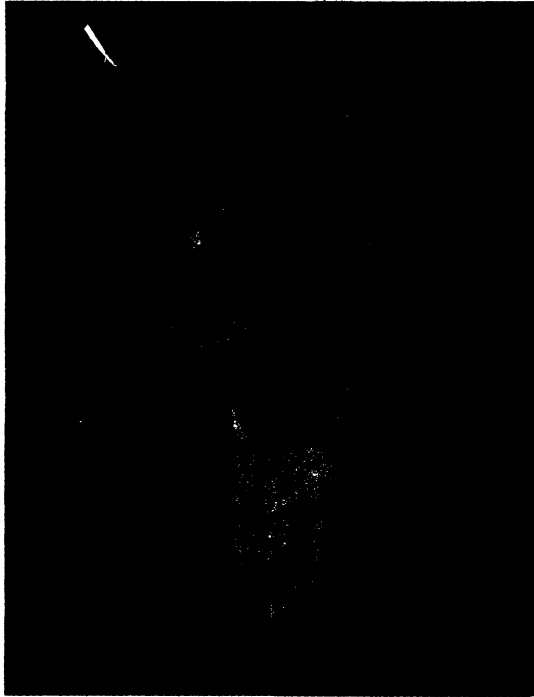
४
आना

वार्षिक मूल्य	१२)
अर्ध वार्षिक मूल्य	६॥)
विदेशों में	१ पौंड

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १७] दिल्ली, रविवार २९ चैत्र सम्वत् २००८ [अङ्क ५०

भारत में विदेशी राजनीतिज्ञों का संघर्ष

पिछले दिनों देश में मानवता, विश्व शांति और सांस्कृतिक उत्थान के नाम पर अनेक सम्मेलन किए गये। ये सम्मेलन विविध संस्थाओं द्वारा किए गये और; उन उन संस्थाओं की छाप उन पर स्पष्ट थी। मानवता, विश्वशांति और सांस्कृतिक उत्थान ऐसे विषय हैं, जिन पर किसी को मतभेद नहीं होना चाहिए। सभी नागरिक मानवता का विकास चाहते हैं, विश्वशांति के लिए उत्सुक हैं और सांस्कृतिक उत्थान के अभिलाषी, किन्तु देश में किये गये ये सम्मेलन परस्पर विरोधी थे। दिल्ली का सांस्कृतिक-सम्मेलन भारतीय संस्कृति के नाम पर किया गया, जिसमें कांग्रेसी नेताओं का प्रमुख भाग था। राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद, श्री श्रीप्रकाश और श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी के सांस्कृतिक उत्थान पर सुन्दर भाषण विचार-शील और मननीय अवश्य थे, किन्तु आज देश में बढ़ती हुई पश्चिमी विचारधारा और विदेशी जीवन-क्रम को बदलने में यह सम्मेलन क्या करेगा, सरकारी नेता इस दिशा में क्या सहयोग देंगे, यह सब कुछ अस्पष्ट और अनिश्चित ही रहा। शायद इस दिशा में कोई निश्चित कार्यक्रम इसके आयोजकों के सामने था भी नहीं। केवल संस्कृति के नाम का मोह था।

दूसरा सम्मेलन साम्यवादियों द्वारा शांति-सम्मेलन के नाम से किया गया था। यह सम्मेलन स्पष्टतः राजनैतिक अभिप्राय से किया गया था, और यही कारण था कि भारत सरकार ने इस सम्मेलन को दिल्ली में होने नहीं दिया। तीसरा सम्मेलन भी बम्बई में हुआ था। यह वस्तुतः रूस-विरोधियों का आयोजन था और पहले आन्दोलन के उत्तर में किया गया था। इसे भी भारत सरकार ने दिल्ली में नहीं होने दिया।

जब कि पहला सम्मेलन विशुद्ध भारतीय समस्या तक सीमित था, शेष दोनों राजनैतिक उद्देश्य से किये गये थे। एक में रूसी विचारधारा का समर्थन करते हुए अमेरिका को गालियां दी गई थीं, तो दूसरे में रूसी साम्राज्यवाद को। भारत विदेशी राजनीति से पृथक नहीं रह सकता और प्रत्येक नागरिक को विदेशी राजनीति के सम्बन्ध में अपना मत रखने और उसका प्रचार करने की स्वाधीनता है। इन सम्मेलनों के आयोजक यदि अपने-अपने विचार प्रकट करते हैं, तो किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। किन्तु हमें संदेह है कि भारत को विदेशियों के राजनैतिक संघर्ष का अखाड़ा बनने देना कहां तक युक्तियुक्त है। कम्यूनिस्ट पार्टी का मूल केन्द्र मास्को है। यह पार्टी मास्को के संकेत पर चलती है और भारत को रूस का अनुवर्ती बनाने को उद्यत है। दूसरी ओर अमेरिका के प्रभाव में देश को लाने के इच्छुक भी हमारे देश में कम नहीं हैं। ये दोनों प्रवृत्तियां देश के लिए घातक हैं। इन सबके मूल में विदेशियों का प्रभाव काम कर रहा है और हममें राष्ट्रीयता की कमी का सूचना देता है। देश के अधिकांश पत्र भी आज दो भागों में विभक्त हो गये हैं। कुछ तो अन्धाधुन्ध रूस के समर्थक हो गये हैं और कुछ उसके कट्टर विरोधी। यह प्रवृत्ति क्या आगे बढ़ने देनी चाहिये? अपने देश को सर्वोपरि मान कर—सब समस्याओं का मूल केन्द्र मान कर विदेशी राजनीति के निर्धारण की प्रवृत्ति की अपेक्षा विदेशी राजनीतिज्ञों के प्रभाव में पड़ कर विचार करने की प्रवृत्ति न सन्देह खतरनाक है। आज विशुद्ध राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार करने की आवश्यकता है। हम प्रत्येक प्रश्न पर विशुद्ध भारत की दृष्टि से विचार करें, तभी हम निश्चित पथ का अनुसरण कर सकेंगे।

विदेशी राजनीतिज्ञों और उनके प्रभाव में चलने वालों को संस्कृति के नाम पर अपने अपने प्रचार की खुली छूट किसी भी दशा में नहीं दी जानी चाहिए। भारत की अपनी संस्कृति है, अपने हित हैं, अपना दृष्टिकोण है। वह अपनी नीति का निर्धारण स्वयं करेगा। उसे आज यदि कोई राष्ट्र अपने स्वार्थ का साधन बनाना चाहेगा, तो भारत को यह सहन नहीं करना चाहिए।

★★

रूसी साम्राज्यवाद का विरोध

यह शायद प्रथम अवसर है, जबकि रूस और उसके प्रभाववर्ती अन्य साम्यवादी देशों के असंतुष्ट तत्त्व एक साथ मिल कर साम्यवादी शासन के विरुद्ध एक सम्मेलन कर रहे हैं। न्यूयार्क में १४ अप्रैल को एक सम्मेलन किया जायगा, जिसमें बलगेरिया चैकोस्लावेकिया, हंगरी, लिथुआनिया, पोलैंड और रुमानिया के भूतपूर्व प्रमुख शासन अधिकारी अपने देशों में वर्तमान सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक स्वतन्त्रताओं के अस्तित्व तथा उनकी मुक्ति पर विचार-विनिमय करेंगे। इस आयोजन को 'स्वातन्त्र्य संघर्ष' नाम दिया जायगा। रूस ने जिन देशों पर साम्यवादी शासन थोप दिया है, वहां असन्तोष की अग्नि धीरे-धीरे सुलग रही है और वहां के पुराने जननेता रूसी साम्राज्यवाद को समझने अवश्य लगे हैं। यही कारण है कि वहां की नई सरकारों को अत्यधिक दमन का आश्रय लेना पड़ा है। चैकोस्लावेकिया के परिवर्तन इसी के प्रमाण हैं। प्रायः सभी चैक राजदूतों ने त्याग-पत्र दे दिये हैं। वस्तुतः रूस का शासन एकतन्त्री शासन है, जिसमें जनता को विचार-स्वातन्त्र्य का अधिकार नहीं है। इसलिए वहां असन्तोष का होना स्वाभाविक है। हिटलर और मुसोलिनी की भांति स्टालिन भी इस असन्तोष का पूर्ण दमन करता है। लेकिन अब सब असन्तुष्ट तत्त्व पहली बार मिल कर कुछ करना चाहते हैं। अन्य भी अनेक स्वातन्त्र्य-आन्दोलन विदेशों में बैठ कर प्रारम्भ किये गए थे। इसलिए यह असम्भव नहीं, कि आज न्यूयार्क में जो नया आन्दोलन जन्म ले रहा है, कालान्तर में वह शक्ति प्राप्त कर ले।

पूंजीवाद ही नहीं

साधारणतः काला बाजार और नफेखोरी के लिए पूंजीवाद और उद्योगपतियों को बदनाम करने की प्रवृत्ति आज इतनी बढ़ गई है कि ऐसा कहते समय हम किसी तर्क की आवश्यकता भी नहीं समझते। हम यह मान कर चलते हैं कि पूंजीवाद ही सब रोगों का मूल कारण है और किसान, मजदूर आदि सदा निर्दोष रहते हैं। उद्योग व्यापार संघ के अधिवेशन में इस धारणा का विरोध किया गया। कृषि सबसे प्रधान ग्रामोद्योग है, जहां पूंजीपति का कोई भाग नहीं है, किन्तु आज किसान अपनी फसल का अधिकतम मूल्य उठाने के लिए आतुर है। देश के अन्न संकट की उसे कोई चिन्ता नहीं, बजार में अन्न लाने की सरकारी योजनाओं का वह घोर विरोधी है। वह मनमाने दाम वसूल करना चाहता है। यदि आज अनाज सस्ता हो जाय, तो भारत का आर्थिक संकट कुछ टल सकता है, किन्तु किसान को इसकी चिन्ता नहीं। भारत के उद्योगपतियों की इस बात में काफी सचाई है। आज तो समस्त राष्ट्र का ही नैतिक धरातल गिरता आ रहा है। क्या अमीर और क्या गरीब, सभी अपने-अपने स्वार्थ में रहते हैं। यह नैतिक धरातल कब ऊंचा होगा, यही आज की प्रधान समस्या है।

सरकारी नियन्त्रण नीति

राष्ट्र के नैतिक पतन के लिए सबसे प्रधान कारण सरकार की नियन्त्रण नीति है। जब किसी वस्तु को नियन्त्रणबद्ध किया जाता है, उसका स्वाभाविक प्रवाह ही नहीं रुक जाता, प्रत्येक व्यक्ति में उसके संग्रह की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। सरकारी कर्मचारियों की ऊपरी आमदनी का द्वार खुल जाता है। परमिट लेने के लिए होड़ होती है और फिर चांदी बरसने लगती है। ज्यों ज्यों परमिट के लिए अधिकाधिक खर्च किया जाता है, त्यों त्यों वह खर्च निकालने के लिए माल भी महंगा किया जाता है। म० गांधी तो देश में बढ़ती हुई अनैतिकता को रोकने के लिए ही आज के कण्ट्रोल को समाप्त कर देने के पक्ष में थे। किन्तु दूसरी ओर जीवन के लिए अनिवार्य वस्तुओं के अत्यन्त दुर्लभ हो जाने का भय है, इसलिए अनाज की आवश्यक मात्रा कंट्रोल के मातहत रख कर चीनी की भांति शेष अनाज को कण्ट्रोल से बाहर कर देने की नीति को अपनाना चाहिए। पदार्थ के अधिक उत्पादन पर ध्यान दिया जाय, पदार्थों के यातायात पर कम से कम बन्धन लगाए जावें, सुखी व्यापारिक प्रतिस्पर्धा को उत्तेजन दिया जाय और एक आवश्यक मात्रा तक गरीबों को अनाज राशन में अवश्य दिया जाय, तभी महंगाई के चक्र से छुटकारा मिल सकेगा।

भारत को चुनौती

सं० राष्ट्र संघ की सुरक्षा समिति ने काश्मीर सम्बन्धी जो निर्णय किया है, उसे पं० नेहरू ने भारत को चुनौती के रूप में स्मरण किया है और इस चुनौती को स्वीकार कर लिया है। प० नेहरू राष्ट्र संघ के बहुत समर्थक रहे हैं और उसे विश्व शान्ति में सहायक के रूप में देखने वाले रहे हैं। इसी भावना से ही उन्होंने काश्मीर का प्रश्न वहां भेजा भी था। किन्तु राष्ट्रसंघ के नेताओं ने स्वार्थ और पक्षपात की जो नीति अपनाई है उससे संघ की प्रतिष्ठा को धक्का हो लगा है। पं० नेहरू जैसे शान्तिप्रेमी का विश्वास खोकर संघ ने अपनी स्थिति को दुर्बल कर दिया है। परन्तु दूसरी ओर यह भी देखना कम मनोरंजक और महत्त्वपूर्ण न होगा कि भारत सरकार संघ की चुनौती कैसे स्वीकार करती है?

———

हमारे अर्थशास्त्री क्या कहते हैं ?

देश की आर्थिक उन्नति कैसे हो ?

पिछले सप्ताह दिल्ली में उद्योग व्यापार मण्डल का वार्षिक अधिवेशन हुआ था। इसमें आर्थिक प्रश्नों पर विचार प्रकट किये गये। मण्डल के अध्यक्ष श्री तुलसीदास किलाचन्द तथा अन्य अर्थशास्त्रियों के विचार संक्षेप से नीचे दिये जाते हैं —

उपयुक्त वितरण तथा उत्पादन वृद्धि सम्बन्धी राष्ट्र की मुख्य समस्याओं का सामना करने के लिए नियन्त्रण तथा मुक्त अर्थ व्यवस्था का साथ साथ होना आवश्यक है। देश की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मूल्य-नियन्त्रण (कन्ट्रोल) तथा अन्य कन्ट्रोलों में, जिनसे उत्पादन वृद्धि में बाधा पड़ती है, ढील की जानी चाहिये, तथा उत्पादन वृद्धि के लिए अनुकूल स्थिति उत्पन्न की जानी चाहिये, जिससे सामग्रियों की कमी का जिसके फलस्वरूप कन्ट्रोल लगाये गये तथा कन्ट्रोलों से सामग्रियों की कमी पैदा हुई नापाक चक्र भंग हो सके।

तीन या चार व्यक्तियों की एक समिति को वर्तमान कन्ट्रोल कार्रवाइयों का सिंहावलोकन करना चाहिये, तथा सरकार जिन कन्ट्रोलों को बनाये रखना चाहती है, उन्हें एक सुविधापूर्ण तरीके से एक सीधे तथा समझ में आने योग्य तरीके से लागू किया जाना चाहिए।

देश की कर व्यवस्था पर वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करने के लिए एक उच्च अधिकारयुक्त कर जांच समिति का होना आवश्यक है, जो यह जांच करे कि क्या आवश्यक आय प्राप्ति के लिए तथा सरकार व करदाता के बीच सन्तुलन बनाये रखने के लिए वर्तमान प्रणाली सबसे अच्छी है।

हमारी कृषि नीति में ऐसे तरीके से परिवर्तन किया जाय, जिससे हमें कृषि अन्य सामग्रियों के आयात पर निम्नतम व्यय करना पड़े, परन्तु साथ ही कच्चे माल की कमी के कारण उत्पादन में होने वाली कमी को रोका जाय।

केन्द्रीय सरकार के लिए यह आवश्यक है कि वह राज्य सरकारों को सूचित करे कि उनका प्राथमिक कर्त्तव्य यह है कि वे अपनी आर्थिक स्थिति को सुव्यवस्थित रखें। राज्य सरकारों की परम्परा-विरोधी नीतियां, विशेषतः कर निर्धारण सम्बन्धी नीतियां रोकी जाय, क्योंकि उनसे केन्द्रीय सरकार की नीतियों तथा इरादों पर पानी फिर जाता है।

सरकार तथा विशेषतः हमारे लोकप्रिय नेताओं को देश को समृद्ध बनाने के लिए जनता में जोश उत्पन्न करना चाहिये।

कोरियाई युद्ध के आरम्भ होने के पश्चात् पश्चिमी देशों ने अपने पुनः शस्त्रीकरण तथा सामग्री संग्रह कार्यक्रमों को बढ़ाया है। इससे मूल रासायनिक पदार्थों, अलौह धातुओं तथा इस्पात जैसी आवश्यक सामग्रियों के विदेशी साधनों पर भारत की निर्भरता को बाधा पहुँचती है। अतः भारत को इस सामग्रियों के उत्पादन के लिए सभी सम्भव तरीके खोजने चाहिये, क्योंकि ऐसी आवश्यक सामग्रियों के लिए विदेशों पर निर्भर बने रहना न तो आर्थिक दृष्टि से मितव्ययितापूर्ण है और न ही राजनीतिक दृष्टि से उचित है।

सितम्बर सन् १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष में ६६ करोड़ रुपये की बचत पर औद्योगिक उत्पादन में लाभ व हानि तथा निकट भविष्य में सम्भावित आयातों की दृष्टि से विचार किया जाना चाहिये। अब भी हमारी स्थिति इतनी मजबूत नहीं है कि इस आवश्यक अन्न, कच्चा सामग्रियों तथा मशीनों की आयात वृद्धि के भार को वहन कर सके। यदि यह देखा जाय कि अन्न की फसलों के बजाय व्यापारिक फसलों का उत्पादन अधिक मितव्ययी है, तो हमें देश में व्यापारिक फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहन देने में हिचक नहीं करनी चाहिये।

सरकार को चाहिये कि वह आयातित सामग्रियों तथा देश की सामग्रियों के नियंत्रण मूल्यों में, जैसे पाकिस्तान की आयातित रुई व भारत की अपनी रुई के मूल्य में असमानता के प्रश्न पर ध्यान दें, तथा भारत में उत्पादित सामग्रियों के मूल्य पर से नियंत्रण उठाए। भारत पाकिस्तान व्यापार समझौते के पश्चात् कच्ची पटसन व पटसन की सामग्रियों के मूल्य पर से नियंत्रण उठाने से यह प्रकट हो गया है कि भारत सरकार कन्ट्रोलों के लिए ही कन्ट्रोल नहीं लगाना चाहता। आवश्यक सामग्रियों का उपयुक्त वितरण आवश्यक है, परन्तु कड़े नियंत्रणों को जारी रखते हुए केवल इस मुद्दे पर जोर डालने से ही उत्पादन-वृद्धि की आधारभूत समस्या हल नहीं हो सकती।

दुहरी अर्थ-व्यवस्था का प्रयोग, जिसमें एक मुक्त मार्केट तथा साथ ही नियन्त्रित वितरण मार्केट हो, उतनी सामग्रियों पर लागू की जानी चाहिये, जितनी पर सम्भव हो सके तथा जिन पर इस समय कन्ट्रोल लागू है। नियन्त्रित तथा मुक्त अर्थ-व्यवस्था के साथ-साथ रहने से लोगों में आवश्यक सामग्रियों का उपयुक्त वितरण भी हो सकेगा, तथा साथ ही उत्पादन वृद्धि भी होगी।

प० नेहरू का भाषण

"आज समय है जबकि इस देश को यह समझ जाना चाहिए कि वह आत्यन्त संकटकाल में रह रहा है। यह ऐसा संकट है, जो अविलम्ब ही समाप्त होता दिखाई नहीं देता। बड़ी विचित्र बात यह है कि हमारे यहां लोग इस संकट के प्रति जागरूक नहीं। सरकार की तीव्रतम आलोचना करते हुए भी इस चीज को महसूस नहीं किया जाता।"

"मुझे आशा है कि योजना आयोग इसी भावना से प्रेरित होकर अपनी समस्याओं को सुलझाएगा और कोई ऐसी योजना तैयार करेगा, जिसके अनुसार काम करते हुए सब व्यक्तियों व सब दलों में एकता पैदा हो जायगी और उसके बाद सब लोग मिलकर आगे बढ़ सकेंगे।"

यह कौन कहता है कि नियंत्रण अपने आप में अच्छी चीज है और उसे जारी रखना चाहिए। लेकिन मेरी यह पक्की राय है कि मेरी सरकार ने एक घातक कदम उस समय उठाया, जबकि कपड़े पर से नियन्त्रण उठा लिया गया। इसके बड़े खतरनाक परिणाम निकले। मैं अब फिर इन खतरों का सामना करने को तैयार नहीं। यदि कहीं उन चीजों की पुनरावृत्ति हो गई तो हमारा समूचा सामाजिक सन्तुलन लड़खड़ा जायगा। इसलिए नियन्त्रण हटाने के सवाल पर गौर करते हुए हमें उससे उत्पन्न दुष्परिणामों का ख्याल रखना होगा।

प्रधान मन्त्री का धन्यवाद करते हुए श्री घनश्यामदास बिड़ला ने कहा कि व्यापारी वर्ग सरकार की सहायता करने में और किसी भी वर्ग से पीछे न रहेगा। मगर हमें यह नहीं बताया गया कि सरकार हमसे क्या आशा रखती है। मुझे आशा है कि योजना आयोग इसे स्पष्ट कर देगा।

उद्योग व व्यापार मण्डल फैडरेशन ने एक प्रस्ताव द्वारा अधिक कृषि उत्पादन की मांग की। प्रस्ताव में सरकार व जनता पर अधिक से अधिक अन्न उत्पादन बढ़ाने पर बल देते हुए यह सुझाव रखा गया कि उत्पादकों में पूरी शक्ति के साथ उत्पन्न करने की भावना पैदा करने के लिए उन्हें इस बात का पूरा अवसर व क्षेत्र दिया जावे कि कन्ट्रोल में निर्धारित भाव से फालतू अन्न को वे खुली मंडी में बेच सकें।

निजी उद्योग पर सर श्रीराम

सर श्रीराम ने औद्योगिक उन्नति पर प्रस्ताव पेश किया। प्रस्ताव में सिफारिश की गई कि सरकारी योजनायें तथा नीतियां मुख्यतया निजी उद्योग की उन्नति सहायता व उत्साह देने के लिए निर्देशित होनी चाहिएं, क्योंकि यह सबसे अधिक सस्ता व अच्छा रहेगा तथा लोगों के रहन सहन के मापदण्ड को शीघ्र ऊंचा उठा सकेगा।

फैडरेशन ने यह सुझाव रखा कि सरकार समाज व वास्तविक आधार पर औद्योगिक व श्रमिक कानून पर पुनर्विचार द्वारा कर की छूट देकर तथा उत्पादन में बाधक कन्ट्रोल को हटा कर औद्योगिक उन्नति व विस्तार के लिए पूंजी को आकर्षित करे।

प्रस्ताव पर बोलते हुए सर श्रीराम ने इस बात से इन्कार किया कि उद्योगपति काला बाजारी के लिए उत्तरदायी है। क्या सरकार ने कभी भी भारत के सबसे बड़े उद्योग कृषि के प्रश्न पर गौर किया है। कृषि में काला बाजारी के लिए उद्योगपति कैसे उत्तरदायी हो सकते हैं। कपड़ा उद्योग का ६० प्रतिशत उत्पादन का वितरण राज्य सरकारों व उनके नुमाइन्दों के हाथों में है। यदि कपड़े में काला बाजारी है तो इसके लिए न तो उद्योग और न वितरण प्रबन्ध ही दोषी है। इस काला बाजारी का उत्तरदायित्व राज्य सरकारों पर है।

भारतीय रुपये की कीमत के पुनः निर्धारण के प्रचार का उल्लेख करते हुए आपने सरकार से कहा कि वह इसे दबाये। भारत न केवल कच्चे माल का अपितु बने बनाये माल का भी निर्यात करता है। पुनर्मूल्यन से भारत की निर्यात सामग्रियां महंगी हो जायेंगी। और भारतीय उत्पादन विदेशी उत्पादन के साथ मुकाबला नहीं कर सकेगा।

आपने इस आरोप का खण्डन किया कि उद्योगपति हड़ताल पर हैं तथा कहा कि उन्हें इस बात पर प्रसन्नता है कि अर्थ मन्त्री ने कम से कम यह मान लिया है कि पूंजी लगाने वाले ऐसी स्थिति में नहीं है। गत चार वर्षों में कठिन आर्थिक स्थिति होने पर भी व्यक्तिगत उद्योगों में लगाई गई पूंजी से यह पता लगता है कि यह आरोप सत्य नहीं है। दूसरी ओर सरकार ने अपने हिस्से का काम नहीं किया है।

सर श्रीराम ने उद्योगों के संमुख उपस्थित कच्चे माल की कमी की समस्या का भी उल्लेख किया तथा कहा कि सरकार अधिक से अधिक कच्चे माल का देश में उत्पादन कराए।

[शेष पृष्ठ २२ पर]

संघ के संस्थापक डा० हेडगेवार

★ श्री बलराज मधोक

भारतीय जीवन, परम्परा और आदर्शों को अक्षुण्ण रूप में आगे बढ़ाने और उनके आधार पर राष्ट्रीय जीवन के पुन. निर्माण में योग देने वाले महापुरुषों में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के निर्माता और आद्य सरसंघचालक डाक्टर केशव बलीराम हेडगेवार का स्थान अपना ही है। उनके जीवन काल में उनके देशवासी उनके महान कार्य का ठीक मूल्यांकन नहीं कर पाये। कारण उनका काम नींव बनाने का था, बीज डालने का था, जिस को आज का नारों और ऊंचे ऊंचे दावों पर पलने वाला भारत सम्भवत समझने में भी असमर्थ था। परन्तु ज्यों-ज्यों उस बीज से निकले हुए पेड़ की टहनियां व पत्तियां चहुँ ओर फैल कर भारतीय जनों को अपनी शीतल तथा जीवनमयी छाया का लाभ पहुंचाती जाती हैं, उसके बीज और उसको लगाने वाले महान् कलाकार का महत्व लोगों की समझ में आने लगा है। परन्तु उसका ठीक ठीक मूल्यांकन तो उस समय हो सकेगा, जब कि वह बीज उनकी कल्पना के भव्य स्वरूप को प्राप्त होगा। परन्तु वे लोग भी, जो हिन्दू राष्ट्र के उस भव्य भविष्य की ओर आंखें लगा कर देख रहे हैं, डाक्टर हेडगेवार के जीवन से स्फूर्ति लेकर उसमें अपना थोड़ा बहुत योग तो दे ही सकते हैं। इसीलिये यह आवश्यक है कि डाक्टर साहिब के जीवन का अध्ययन किया जाय।

केशव का जन्म आज से इकसठ वर्ष पहले वर्ष प्रतिपदा के दिन नागपुर के एक साधारण ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पूर्वज बहुत काल पहिले आन्ध्र देश के तेलंगाना भाग से आकर नागपुर में बस गये थे। इसलिये उनके यहां तेलगु और मराठी दोनों भाषाएं चलती थीं।

उनका बाल्यकाल कोई बहुत सुखी नहीं था। जब वे अभी दस वर्ष के भी नहीं हुए थे, उनके माता और पिता एक ही दिन प्लेग से स्वर्ग को सिधार गये। तब उनके पालन पोषण का भार उनके स्नेह भ्राता ने संभाला। उस समय वे नागपुर के नील सिटी हाई स्कूल में पढ़ते थे। उन्हीं दिनों देश में बंग भंग विरोधी आन्दोलन चल रहा था। बंकिम बाबू का वन्दे मातरम गीत राष्ट्रीय गान के रूप में भारतीयों के मनों में जगह-जगह नई उमंग और उत्साह भर रहा था। बाल केशव, जिसके मन पर अति अल्प आयु में ही शिवाजी के जीवन चरित्र ने बहुत प्रभाव डाला था, अपने स्कूल में वन्दे मातरम आन्दोलन के मुखिया बन गये। वन्देमातरम के मधुर परन्तु ओजस्वी गान से स्कूल की दीवारें और दरवाजे गूंजने लगे। स्कूल को सरकार से मदद मिलती थी। इसलिए हेड मास्टर को भय होने लगा। उसने बाल केशव को स्कूल से निकाल देना ही उचित समझा।

नागपुर से आप योतमाल के राष्ट्रीय स्कूल में गये। परन्तु वह स्कूल भी शीघ्र ही सरकार की ओर से बन्द करवा दिया गया। इसलिये उन्हें अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिये पूना जाना पड़ा। वहां के राष्ट्रीय हाई स्कूल में इन्होंने स्कूल की शिक्षा समाप्त की और फिर नागपुर लौट कर अध्यापन कार्य से अपना जीवन-निर्वाह करना शुरु किया।

परन्तु इससे उनकी सन्तुष्टि नहीं हो सकती थी। उनके अन्दर देश-सेवा की जो ज्वाला भड़क रही थी, उसने उन्हें कलकत्ता, जो उस समय क्रांतिकारी देश-भक्तों का केन्द्र था, जाने पर बाधित किया। उनका उद्देश्य एक तो वहां के नेशनल मेडीकल कालेज से डाक्टरी की उच्च शिक्षा प्राप्त करना था और दूसरे बंगाल के देशभक्तों तथा क्रांतिकारियों से सम्बन्ध बढ़ाना। वहां पर उनका विख्यात देशभक्त बाबू श्यामसुन्दर चक्रवर्ती तथा अमृत बाजार पत्रिका के विख्यात सम्पादक बाबू मोतीलाल घोष से निकट सम्बन्ध हुआ। साथ ही व बहुत से अन्य क्रांतिकारियों के निकट सम्पर्क में आये और उन्होंने उनकी कार्य पद्धति का भली प्रकार अध्ययन किया। परन्तु वे स्वय वहां अधिक काम न कर पाये क्योंकि उनके नील हाई स्कूल के रिकार्ड के कारण कलकत्ता पहुँचते ही सी आई डी उनके पीछे लग गई थी। तो भी कलकत्ता के ६ वर्ष देश की समस्याओं को समझने और उनको सुलझाने के लिए चलने वाले भिन्न भिन्न आन्दोलनों को समझने की दृष्टि से उनके लिये बहुत लाभदायक सिद्ध हुए।

डाक्टरी की परीक्षा पास करके आप बाद में नागपुर लौटे। उनके बन्धु बान्धवों ने सोचा कि अब तो घर का कष्ट कट जायगा। परन्तु केशव के मन में और ही विचार थे। वे डाक्टरी करने की बजाय सार्वजनिक जीवन मे लीन हो गए। १९१९ से १९२९ तक उन्होंने विभिन्न राजनैतिक तथा सार्वजनिक आन्दोलन तथा संस्थाओं में अपना समय लगाया। १९२० के असहयोग-आन्दोलन में आपको पकड़ लिया गया और आप पर अभियोग चलाया गया।

परन्तु ज्यों ज्यों वे सार्वजनिक जीवन में आगे बढ़े, त्यों उन्हें इसकी निरर्थकता और देश की वास्तविक समस्याओं की दृष्टि से निरुपयोगिता का अनुभव हुआ। उन्होंने देखा कि सभी लोग फाड़ फाड़ कर राष्ट्रीयता और स्वराज्य की रट लगाते हैं, परन्तु किसी के सामने भी न राष्ट्रीयता की समस्त कल्पना है और न स्वराज्य का चित्र। उन्होंने अनुभव किया कि जो राष्ट्रहित की बड़ी बड़ी बातें करते हैं, वे अपने छोटे निजी स्वार्थों के लिए अपने भाइयों का गला घोटने में आनन्द मनाते हैं। और इससे बढ़ कर उन्हें क्षोभ और हैरानी इस बात से हुई कि जिनका भारत के सिवाय कोई दूसरा ठिकाना नहीं और जिनकी संख्या मध्य प्रान्त में ९६ प्रतिशत से भी ऊपर है,

[शेष पृष्ठ २० पर]

स्व० डा० हेडगेवार के प्रति

हम सभी का जन्म तव प्रतिबिम्ब-सा बन जाय,
औ अधूरी कामना चिर पूर्ण बस हो जाय।

बाल्य जीवन से लगा कर अन्त तक को दिव्य झांकी,
मूक आजीवन तपस्या जा सके किस भांति आंकी।
धीर सिन्धु अथाह, विधि से भी न नापा जाय,
चाह है उस सिन्धु की हम बूंद ही बन जायं।

एक भी पल जन्म में अपने नहीं विश्राम पाया,
रक्त के प्रत्येक कण को हाय पानी-सा सुखाया।
आत्म-आहुति दे बताया देशमुक्ति उपाय,
एक चिनगारी हमें उस यज्ञ की छू जाय।

थे अकेले आप लेकिन बीज का था भाव पाया,
जो दिया निज को, अमर वट सब भारत में उगाया।
राष्ट्र ही क्या अखिल जग का आसरा हो जाय,
और उसकी हम टहनियां पत्तियां बन जायं।

आपके दिल की कसक से वेदना जाग्रत हमारी,
वाचि देही, वाचि डोली, मन्त्र रटते हैं पुजारी।
बढ़ रहे हम आपका आशीस स्वर्णिम पाय,
जो सिखाया आपने प्रत्यक्ष हम कर पाय।

साधना की पूर्ति फिर क्षणमात्र में हो जाय,
हम सभी का जन्म तव प्रतिबिम्ब सा हो जाय।

नव वर्ष प्रतिपदा—सम्वत २००८

आज वह विक्रम कहां है ?

★ श्री हरवंश एम० ए० साहित्यरत्न

आज नव वर्ष-प्रतिपदा का मंगलमय पर्व है—इन शब्दों में कितना माधुर्य है, तथा हृदय को उल्लसित करने की कितनी महान शक्ति है। अपने उस गौरवशाली अतीत की स्मृति मात्र से कोटि कोटि भारतीयों के वक्षस्थल गर्व से फूल उठते हैं, ग्रीवाएं स्वाभिमान से उन्नत हो जाती हैं। तथा अपने पूर्व पुरुषों के स्नेह से स्पन्दित इनका छोटा-सा भावुक हृदय एक बार उस स्वर्णयुग - प्रणेता, हूण-शक-प्रभृति दुष्ट दल-विजेता, नव-संवत्सर-जन्मदाता, सुख शान्ति, न्याय, धर्मनीति-निर्माता, सर्वाधिक प्रतापी प्रजावत्सल, सम्राट-श्रेष्ठ वर वीर विक्रमादित्य के पुण्य स्मरण से पुलकित हो कर नृत्य कर उठता है।

आज उस वैभवशाली अतीत को सहस्राब्दियां बीत चुकी हैं। तब से अब तक हमारी वसुन्धरा अपने अन्नदाता अंशुमाली के चारों ओर दो सहस्र सात (२००७) चक्कर लगा चुकी है, तथा उसी के साथ इस भरतभूमि का भाग्य चक्र भी न जाने कितनी बार घूम चुका है।

पुण्य भूमि भारत की विशाल ऐतिहासिक परम्परा में एक वैभव का युग आया था। रामकृष्ण की इस जन्मस्थली पर पुनः 'रामराज्य' का निर्माण हुआ। आसेतु हिमाचल फैले हुए इस महान देश को समस्त प्रजाओं का हृदय सम्राट वीरवर विक्रमादित्य, क्षात्रतेज के उज्ज्वल रुधिर से सम्पन्न अपनी प्रबल भुजाओं में राज्य-दण्ड धारण कर रहा था। इस महान युग-पुरुष के अन्त:स्थल में क्षात्र तेज के साथ साथ ब्रह्मतेज का भी प्राचुर्य था। उसी की सभा में महाकवि कालिदास की मधुर, काव्यरस - पूर्ण, कान्त कमनीय कविताएं भी गूंजती थीं, देश-देश के विद्वानों मनीषियों तथा महापुरुषों को सादर वन्दन कर, जय जय मुद्राएं भेंट करने वाला, परमशीलसम्पन्न साहित्य-रस-प्रेमी, काव्यानन्द में निमज्जित हो कर साहित्य सुधापान करने वाला, ललितकला-प्रेमी, रसज्ञ-हृदय, वही विक्रमादित्य इस पुण्य भू भारत का प्रतापी सम्राट् था। यही आजानुबाहु, विशाल वक्षस्थल वाला, चौड़े मस्तक तथा लौह सदृश बलवान भुजाओं वाला, युद्धभूमि में स्वयं ढाल तथा खड्ग ले कर रिपुदल रुधिर से धरणी की पिपासा को शान्त करने वाला, जब तब अरि-मुण्डों को तलवार के अद्भुत वारों से तथा अपने प्रचण्ड धनु से फेंके हुए तीक्ष्ण सायकों से उड़ाने वाला, भीमार्जुन की परम्परा में उत्पन्न हुआ, अपनी चतुरंगिणी सेना सहित रणस्थली में राष्ट्र ध्वज को गगन में उत्तोलित कर विजय का डंके बजाने वाला, क्षात्र-तेज का भी अनाधृष्य अनतिक्रम्य, तथा दुर्लंघ्य परम उच्चादर्श है।

विक्रम में केवल शारीरिक विक्रम ही नहीं, उसमें एक विद्याप्रेमी सरस हृदय भी था। सम्राट् विक्रमादित्य में बल तथा बुद्धि दोनों का सुन्दर समन्वय था, शरीर तथा हृदय दोनों आदर्श थे, मन तथा मस्तिष्क दोनों उच्च थे। उसका चरित्र शक्ति तथा परम शील दोनों का अद्वितीय समन्वय था। संसार जिन दो श्रेष्ठ तत्वों (शक्ति तथा शील) का समन्वय केवल सिद्धान्त मात्र में भी न कर सका, वह इस देश में विक्रमादित्य ने अपने प्रत्यक्ष जीवन में प्रमाणित कर दिखाया।

सम्राट् विक्रमादित्य का परम सुहृद तथा महामन्त्री कविप्रवर कालिदास केवल एक कवि मात्र ही नहीं था, उसकी मधुर वाणी की सार्थकता केवल कविता 'कामिनी' का घूंघट खोलने में ही नहीं है, वह इस काव्यकला का सदुपयोग सम्पूर्ण राष्ट्र को जागृत करने में, जनगण को अन्तश्चेतना प्रदान करने में करता था। उसकी कला केवल कला ही नहीं थी। उसकी कला जीवन के लिए, सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए, राष्ट्र के उत्कर्ष एव प्रकर्ष के लिए थी।

हमारे राष्ट्रीय जीवन को चतुर्युगी में असंख्य महापुरुषों का प्रादुर्भाव हुआ है। किन्तु भारतीय जनता ने सतयुग में सत्यधर्म प्रतिपालक सत्य हरिश्चन्द्र को, त्रेता में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी को, द्वापर में महाभारत प्रणेता, श्री कृष्णचन्द्रजी को तथा आधुनिक युगों में अपने महान् पराक्रम से हूण शकादि आततायियों को परास्त कर भारत की सीमाओं को सुदृढ़ बनाने वाले भारत के कोटि-कोटि जन गण को सुख समृद्धि तथा आत्म-विश्वास का जीवन प्रदान करने वाले, सत्य न्याय की सजीव, मूर्ति, स्वर्ण युग-प्रणेता, नव संवत्सर चलाने वाले महान् सम्राट विक्रमादित्य को जितना सम्मान प्रदान किया है, उतना कदाचित ही किसी और को दिया हो। हम उन महान् विभूतियों को, अपने महान पराक्रमी पूर्व पुरुष को नमस्कार करते हैं, जिन्होंने अपने हृदय की ज्योति को प्रदीप्त कर प्रखर प्रकाश पुंज से भारत का दुःख दैन्य तथा दास्य भस्मीभूत कर दिया। हम अपनी इस वीरप्रसू मातृभूमि को वन्दन करते हैं, जिसने ऐसी विभूतियों को जन्म प्रदान किया।

× × ×

इतिहास का वह सुनहला पृष्ठ अब भूत में विलीन हो चुका है, वह हमारे उज्ज्वल अतीत की एक कहानी मात्र रह गया है। आज हम अपने वर्तमान की ओर भी दृष्टिपात करें। उस युग और आज के युग में २००८ वर्ष कालावधि का एक महान अंतर है। क्या हम उस स्वर्णकाल की स्मृति में प्रतिवर्ष संवत्सर मनाते हुए आगे बढ़ रहे हैं? क्या अवन्ति की सेनाओं के हृदय में अहर्निश जलने वाली ज्वेय अग्नि अभी हमारे अन्तर में प्रदीप्त है? क्या आगे बढ़ने की अतृप्त आकांक्षाएं हमें विकल बना रही हैं? नहीं, कदापि नहीं! एक असीम वेदना के साथ हमें स्वीकार करना पड़ता है कि उस स्वर्णकाल की तुलना में हम २००८ सीढ़ी ऊपर उठने की अपेक्षा नीचे ही आ गिरे हैं। क्या २००९ का संवत्सर हमारे लाखों देश बन्धुओं के प्राणों से खेल खेलने नहीं आया था? क्या संवत्सर के शुभ पर्व पर देश के पश्चिमोत्तर में वही नृशंस अत्याचार तथा अमानुषीय जघन्य कृत्य नहीं चल रहे थे, जो हूण शकों के समय में थे? क्या भारतीय ललनाओं का सतीत्व हरण नहीं किया गया? क्या भारत की भावी फुलवाड़ी को सजाने वाले छोटे छोटे दुध मुंहे बच्चों को भालों की नोकों पर उछाल उछाल कर नहीं मारा गया? क्या हमारे देश की असंख्य बहुबेटियों को बर्बरों के बलात्कार तथा अपमान का शिकार नहीं बनना पड़ा?—क्या उसी वर्ष में हमारी आसेतु-हिमाचल फैली हुई मातृभूमि के खंड खंड न हुए? क्या विक्रमादित्य द्वारा स्थापित भारत की स्वाभाविक सीमाएं हम कायर वंशजों के हाथों नष्ट न हुई?

क्या पश्चिमोत्तर के नृशंस तथा बर्बर पशुओं ने हमारे देश के करोड़ों बन्धुओं के घर बार, पत्नी, पुत्र, संपत्ति आदि छीन कर उन्हें विपत्ति के इस पार नहीं धकेल दिया है? क्या आज उन लाखों करोड़ों पीड़ितों की महा शून्य में विलीन होती हुई आर्त ध्वनि हमारे कर्ण पटों को फाड़ नहीं डालती?

हमारे देश की जो असूर्यम्पश्या ललनाएं आज तक शत्रु के पंजे में पड़ी पाकिस्तान, काश्मीर, अफगानिस्तान, तुर्की, इराक ईरान तथा मिस्र तक के देशों में अत्यन्त हृदय विदारक घोर यातनाएं सह रहीं हैं। क्या उनके करुण क्रन्दन तथा आर्त चीत्कारों से हमारा वज्र का हृदय फट नहीं जाता? ...??
...??? हा हन्त ???

क्या आज की वर्ष प्रतिपदा पर हमें सम्राट विक्रमादित्य के ओजस्वी शब्द सुनाई नहीं देते! हमारे अन्तर में वह महान केसरी दहाड़ कर कह रहा है—"जिसने भी भारतीय प्रजा के खून से हाथ रंगे हैं, जिसने भी भारतीय ललनाओं के सतीत्व से खेल किया है, उसे अपने खून से इन अपराधों का प्रायश्चित करना पड़ेगा।" क्या हम विक्रम की वाणी सुनेंगे? क्या हम अपने हृदय में प्रतिशोध का ज्वालामुखी लेकर शत्रु की उद्दण्डता का नाश कर सकेंगे?

आज पुन. वर्ष प्रतिपदा हैं, किन्तु आज वह विक्रम कहां है? आज पुनः नव संवत्सर है, किन्तु आज वह संवत्सर-प्रणेता कहां है? आज पुन हमारी सदा वत्सला मातृभूमि नरपशुओं के आतंक से विक्षुब्ध है, किंतु आज वह दस्यु दल विजेता कहां है? आज वह स्वर्ण-युग प्रणेता कहां है? आज वह पराक्रम का पुंज कहां है? आज वह विक्रम कहां है! हा वह विक्रम कहां है? ...??...

———

हमारे सामाजिक चरित्र का एक दृश्य

अफसर बाजी

★ श्री गोपीनाथ तिवारी एम ए

नये नये बाजों के समान नई नई बाजियां भी जन्म ले रही हैं। पतंग बाजी सबने देखी है, यारबाजी की बदनामी भी सुनी है। चौपड़बाजी जुआबाजी, शराबबाजी, बटेरबाजी की चर्चा भी सुनी है। पर अब सुना अफसर-बाजी का भी जोर है।

मेरे एक परिचित हैं। तीन वर्ष में बड़े व्यापारी बन गये हैं, प्रतिमास में हजारों के वारे न्यारे कर देते हैं। तीन चार वर्ष पूर्व मक्खी मारते थे और आज मोंछें मारते हैं। तोंद फूल चली है। रूप निखर आया है। आंखों में लालिमा रहने रहने लगी है। वे मुझ से मिलने आये। देखकर मैं दंग रह गया। मैंने एक ही प्रश्न किया— बन्धुवर! यह सब कैसे हुआ? बड़ी कृपा है लक्ष्मी-देवी की?

वे बोले मुस्कराते हुए, हंसी से मुझे स्नान कराते हुए, मानो मुझ पर बड़ी कृपा हो रही है—साथी हम तो मजबूर हैं। यहां रेलों का कूड़ा करकट खरीदने आये। ५२ हजार का खरीदा हुआ है। पर रेल, अधिकारियों से नहीं, उनसे जिन्होंने रेलवालों से खरीदने का परमिट "कोटा" ले था लिया है। यह सब लोहा सोना बनेगा। हां आजकल सुपारी मिल जाती हैं। एम. एलओं की कृपा से नहीं, अफसर बाजी की दया से क्यों? क्या मैं गलत कह रहा हूं?

मेरे दाहिने कंधे को झकझोरते हुए मानों मेरे कंधों में कुछ बल नहीं, बोले, अंग्रेजी राज्य में इस धंधे ने जन्म लिया था और अब यह जवान हो गया है। बड़ा सुन्दर बड़ा स्वरूपवान। इसकी एक एक अदा पर फिदा हूं। रुपये की बखेर करता हूं। इसकी बड़ी तब यह शुभ दिन देखा। भगवान इसे चिरंजीव बनावे।

यह कह कर उन्होंने आंखें मूंद दोनों हाथ जोड़े और आंखें खोल कर कहने लगे—आज व्यापार करना आग से खेलना है, तलवार की धार पै धावनो है। जरा चूके नहीं कि हड्डी पसली टूटी। ईमानदारी और व्यापार में आग पानी की शत्रुता है, बिल्ली चूहे की दुश्मनी है। भी ईमानदार हो, व्यापार करना चाहे तो उसे चाहिए अफीम या जहर की पुड़िया लेकर इस मैदान में कूदें, क्योंकि शीघ्र ही बच्चों पर अफीम प्रयोग करनी पड़ेगी। सरकार जितना प्रतिशत लाभ देती है, उससे अधिक तो अफसरबाजी में लग जाता है।

मैंने कहा—वही पहेली। पर यह अफसर बाजी है क्या? मेज पर कुहनी टेक बड़े शान्त मुख से अग्रवाल महाशय बोले— अधीर न बनो। अफसरों से बातें करने का ढंग भी सीखना पड़ा है। उसी का प्रयोग कर रहा हूं। सब बातें एक एक कर समझाऊंगा।

इसी समय नौकर पान ले आया। मैंने पूछा सिगरेट मगाऊं क्या? बोले— तुम जानते हो, मैं सिगरेट नहीं पीता। तुम मेरे सहपाठी हो, बालबन्धु हो। कुछ छिपाऊंगा नहीं। मैं आदतन सिगरेट नहीं पीता। यह कह कर झट जेब में से नेवीकट का डिब्बा निकाल बोले "पर रखता सदा पास हूं। जानते हो? क्यों? अफसर बाजी के लिए। जहां अपने काम से संबन्धित क्लर्क या अफसर मिले, बड़ी लपाक से खोलता हूं। धन्य भाग, ईद का चांद निकल आया। किस शुभ मुख को देख कर आज उठा था। लीजिये, लीजिये, पीजिये। तब मैं भी एकाध कश खींच लेता हूं।

तुरन्त एक चांदी की डिबिया जेब से निकाल बोले—ये मगही पान हैं। सुगन्धित और खुशबूदार तम्बाकू भी इसी की दराज में है। अकेले मैं कभी इसे नहीं खाता। चांदी के वरक समेत एक पान ६ पैसे को पड़ता है। ये भी उन्हीं खुदाओं-अफसरों-माई बापों के लिए हैं।

इसी समय नौकर ने आकर कहा— बहू जी पूछती हैं, चाय बनेगी। मैंने कहा 'हां'। वे तुरन्त बोले—नहीं मैं चाय नहीं पीता। यह पेट खराब करती है। मैंने तुरन्त कहा— अफसरबाजी में भी नहीं? कोट के रेशमी रूमाल से सुगन्ध उड़ाते बोले—वहां सब जायज है। घर में चाय का एक बर्तन न मिलेगा। दूकान के पास में एक हलवाई है। उसको बड़ी दया है। हमारा पर्चा पाकर वह तश्तरियों में नमकीन तो भेजता ही है, कप और चाय भी लगा कर भेज देता है। यह काम दूसरे-तीसरे दिन होता रहता है। पर अपने लिए कभी नहीं मांगता। बाबू लोग दुकान पर आते रहते हैं। वे जानते हैं, आने पर पेट-पूजा होगी। मैं जानता हूं, यह देवता को प्रसाद चढ़ा रहा हूं।

सन्ध्याकालीन भास्कर पश्चिम दिशा के घर में शयन को जा रहे थे। लज्जा से मुख लाल था। दिन भर भूले रहे थे उस उपनायका को। पक्षियों ने विरह में रोना और शोर मचाना आरम्भ किया और तभी सड़क पर शोर मचते मैंने सुना। मैंने कहा — मैटिनी शो समाप्त हुई। वे बोले — कौन-कौन से खेल चल रहे हैं? मैंने चारों खेलों के नाम गिना दिये। बोले — वे सब तो देख चुका हूं? मैं उनके मुंह की ओर देखने लगा। बोले — आप समझ रहे हैं, मैं सिनेमा बाजी में भी उस्ताद हूं। हां, हू भी और नहीं भी। मेरे लिए सिनेमा अनिवार्य सा हो गया है। अपनी मर्जी से नहीं, पत्नी की इच्छा से नहीं, तब भी मुझे प्राय. सिनेमा देखने जाना ही पड़ता है।

मैं बोला — कोई नौकर नहीं है क्या? दुकान पर बहुत परिश्रम करते होंगे। अत शाम को सिनेमा जाते होंगे आप!

वे बड़े जोर से हंसे, अरे नहीं समझे। नौकर तो दस-पन्द्रह हैं मजदूर और दलाल अलग। परिश्रम तो अवश्य करता हूं। वह परिश्रम होता है दफ्तर के बाबुओं के घर जा कर उनके बच्चों के लिए मिठाई देने में। त्योहार की मिठाई पहुंचाने में, साहबों को तोहफे देने में और दफ्तर में धक्के खाने में।

मैंने व्यंग कसके कहा — मोटर में जाते होंगे? कोई कार तो होगी! बड़ी गम्भीरता से बोले, कार आज तीन रखलूं। ऐसी नहीं, पर न रखने में भी मसलहत है। तुमसे क्या कहूं? बिक्री कर, आय कर, सुपर कर, राक्षस मुंह बाये सदा खड़े रहते हैं। उनसे बचने का यह सरल मार्ग है। मैं तो केवल थोड़ा सा कर देता हूं, चौथाई भी नहीं देता। कैसे? सब माल बिना लिखा-पढ़ी के दलालों द्वारा बिकता है। कई मुहरें बना रखी हैं। केवल कन्ट्रोल द्वारा प्राप्त माल का ब्योरा रखता हूं और उसी पर कर भी देता हूं। अभी एक स्टेशन पर मेरा माल भी पकड़ा गया। मैंने हामी भी न भरी कि माल मेरा है। चार-पांच हजार की तो हानि हुई। पर इस तरह लाभ अधिक है। एक छोटी सी दुकान ले रखी है। गोदाम कई जगह बना रखे हैं। कोई अफसर आता है, तो पहले तो बादाम-हलवों से तर करता हू और फिर-फिर कहता हूं— आप ही देखिये साहब। मेरी छोटी सी दुकान है। मेरी आय ही क्या हो सकती है। किसी प्रकार शाक-पात से बच्चों का पेट पालता हू। अब तो समझे — यदि कार रख लूं तो हाकिम गले पर सवार हो जायेंगे। बैंक अकौंउट देख लीजिये — बस मूर्खें ही मूर्खें। रुपया कई सौ जमा है।

पर, हांकार की जरूरत होती है, तो उधार ले आता हूं या किराये पर टैक्सी ले लेता हू। वह भी तब, जब

[शेष पृष्ठ १६ पर]

हिन्दी साहित्य और शिक्षा मन्त्री

भारत के शिक्षा मन्त्री मौ० आज़ाद ने पिछले दिनों जो वक्तव्य हिन्दी के सम्बन्ध में दिया था, उसके उत्तर में निम्नांकित वक्तव्य श्री मैथिलीशरण गुप्त, श्रीमती महादेवी वर्मा और श्री सियारामशरण ने दिया है :—

शिक्षामन्त्री की इस बात से किसी को विरोध नहीं हो सकता कि 'किसी भाषा में अपने क्षेत्र से बाहर स्वीकृति प्राप्त करने के लिए ऐसी रचनाएं होनी अनिवार्य हैं, जो मानवीय ज्ञान और संस्कृति में योग देने वाली मान्य हों,' परन्तु मंत्री महोदय के इस दृष्टिकोण से सहमत नहीं हुआ जा सकता कि 'अगर हम संस्कृत तथा तामिल को प्राचीन भाषाओं के रूप में छोड़ दें तो हम को इस कटकर सत्य को स्वीकार करना पड़ेगा कि भारतीय भाषाओं में बंगाली तथा उर्दू ही किसी सीमा तक विश्व-मान्यता प्राप्त कर सकी।' वास्तव में बंगाली साहित्य का महत्व भी उनकी दृष्टि में केवल रवीन्द्रनाथ ठाकुर तक ही सीमित है।

उर्दू का प्रश्न जिस प्रकार इस भाषण में उपस्थित किया गया है, वह अप्रासङ्गिक ही नहीं, पक्षपातपूर्ण भी है। 'उर्दू ने तीन सौ बरस से कम समय में जो प्रगति की है, वह अभूतपूर्व है। उर्दू ने आकस्मिक उन्नति की है और उसमें प्राचीन संस्कृत भाषाओं के महान कवियों के समकक्ष कवि हुए हैं।' यहां हमारा यह अभिप्राय नहीं है कि उर्दू भाषा में श्रेष्ठ साहित्य नहीं है, उसके लिए हमको गर्व भी हो सकता है, परन्तु एक मात्र उर्दू में विश्व साहित्य में स्थान पाने की योग्यता है; यह बात अनायास ही जनता को चौंका देने वाली है। अभी हाल तक उर्दू-हिन्दी का वाद-विवाद चलता रहा है। लेकिन अब जब सभी भारतीय विद्वानों तथा समस्त जनता ने एकमत से एक बात स्वीकार कर ली है, उस समय इस प्रकार का स्वर सुनाई पड़ना कितने भ्रम और सन्देह को दृढ़ करता है। हम इस प्रकार के वाद-विवाद में पड़ना नहीं चाहते कि वास्तव में 'मीर अनीस महाकवि बाल्मीकि होमर, तथा फिरदौसी के स्थान ग्रहण कर सकते हैं और सौदा, मीर, तथा गालिब की प्रगीतियां किसी भी आदर्श से विचार करने पर महान उतरेंगी, परन्तु शिक्षा मंत्री ने यह नहीं बताया कि उनका अनुवाद कितनी विदेशी भाषाओं में अब तक हुआ है, क्योंकि उनके अनुसार विश्व-साहित्य में स्थान पाने का एक मात्र यही मापदंड है। जहां तक हाली महोदय और सर सैयद अहमद खां का प्रश्न है, भारत के ही नहीं, पश्चिमी विद्वान भी जान चुके हैं कि ये महोदय हिन्दी भाषा के कितने बड़े साम्प्रदायिक द्वेषी हैं। उस युग के शासक वर्ग की सहानुभूति उर्दू भाषा के प्रति किन कारणों से थी यह आज हमारे सामने स्पष्ट है और हमारी भारत सरकार के शिक्षा मंत्री के लिए जनता के मन में उन कटु स्मृतियों को जगाना कहां तक उचित हो सकता है?

इस भाषण से मन्त्री महोदय के मन के अनेक भ्रमों का परिचय मिलता है। वे आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य पर जिस प्रकार उनकी सांस्कृतिक तथा साहित्यिक परम्पराओं से अलग करके विचार करते हैं, वास्तव में वह उचित पद्धति नहीं है। कोई भी जीवित साहित्य अपनी प्राचीन परम्पराओं से सदा बंधा रहता है। क्या चासर, शेक्सपियर तथा मिल्टन की भाषा आधुनिक अंग्रेज़ी के समान है? फिर भी तामिल को प्राचीन भाषा मात्र स्वीकार करने का क्या अर्थ है? आधुनिक हिन्दी की साहित्यिक प्रवृत्ति को अवधी, व्रज तथा राजस्थानी साहित्य से कैसे अलग किया जा सकता है? क्या वे स्वयं कह सकते हैं कि वली, सौदा तथा मीर की भाषा और आधुनिक उर्दू में किसी प्रकार की भिन्नता नहीं है? भाषा और साहित्य के सभी विद्वान समस्त भारतीय भाषाओं के इतिहास को मध्य युग से क्रमबद्ध स्वीकार करते हैं। इन समस्त भाषाओं के मूल्यांकन के लिए न तो उनकी प्राचीन सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की अवहेलना की जा सकती है और न उनकी विकसित परम्परा की उपेक्षा ही की जा सकती है।

इस प्रकार राजनीतिक प्रतिनिधियों का हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बिना उचित विशेषज्ञों की राय लिये वक्तव्य देना न शोभन है, न राष्ट्र की दृष्टि से उचित ही है। हमारे शिक्षा मन्त्री को जानना चाहिए कि संस्कृत के साथ पाली प्राकृत और अपभ्रंश के साहित्य की इस देश में एक अविच्छिन्न परम्परा है। उनके अपने अन्य भाषाओं में अनूदित होने के मापदण्ड के अनुसार भी इस साहित्य में विश्व साहित्य में स्वीकृत होने की योग्यता है और महत्वपूर्ण बात जिसकी ओर उनका ध्यान आकर्षित किया जा सकता है, वह है कि इस साहित्यिक परम्परा पर समस्त भाषाओं का समान अधिकार है। किसी देश की विभिन्न सांस्कृतिक परम्पराओं से उसके भाषा और साहित्य को अलग विच्छिन्न रूप में नहीं देखा जा सकता। यह तो साहित्य और संस्कृति के साधारण विद्यार्थियों के सामने भी स्पष्ट है।

फिर मन्त्री महोदय जैसे विद्वान के मन में इस प्रकार का भ्रम क्यों है? भारतीय चिन्ताधारा का स्वाभाविक स्रोत इन्हीं प्राचीन भाषाओं से आधुनिक भाषाओं में प्रवाहित हो रहा है। इस धारा का हमारी आधुनिक भाषाओं में गतिशील इतिहास निहित है। इस सत्य को विकृत कहने से जनता के सामने बहुत बड़ा भ्रम उपस्थित हो सकता है।

इस प्रसंग में अन्य भाषाओं के साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी के विषय में जो दृष्टिकोण उन्होंने उपस्थित किया है, वह उनके जैसे उत्तरदायी व्यक्ति के लिए अपेक्षित नहीं। पहले तो आज की खड़ी आने वाली हिन्दी को ब्रजभाषा और अवधी से भिन्न मान कर उन्होंने भ्रम निवारण का प्रयत्न किया है कि स्वतः भ्रम फैलाने का प्रयास, यह हमें स्पष्ट नहीं है। प्रादेशिक हिन्दी भाषाओं के व्यापक साहित्य को हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत स्वीकार न करना कहां तक उचित है? व्याकरण की भिन्नता के आधार पर हिन्दी भाषा की व्यापक परम्परा को अवधी, व्रज और राजस्थानी साहित्य से किस प्रकार अलग किया जा सकता है? हिन्दी भाषा और साहित्य की यही तो विशेषता रही है कि वह इस विस्तृत प्रदेश की सजीव भाषाओं से प्राण और प्रेरणा लेता रहा है। जो इसको केवल दिल्ली और मेरठ के आसपास की बोली का साहित्यिक रूप मानते हैं, वे स्वयं बड़ी भूल करते हैं और जनता के सम्मुख उसको फैलाने के अपराधी हैं। हिन्दी साहित्य समस्त प्रादेशिक भाषाओं के साहित्य से सम्बद्ध। उनकी प्रेरणाधाराओं के प्रति जागरूक है और इसलिए वह उनकी विचार धारा का प्रतिनिधित्व करता है। राष्ट्र भाषा के रूप में उसकी स्वीकृति से उसकी अभिव्यक्ति और शब्दशक्ति का क्षेत्र अधिक व्यापक हो गया है। इसके अतिरिक्त भारतीय जीवन के सांस्कृतिक तत्वों का समन्वय मध्य युग से ही हिन्दी साहित्य में हुआ है। शिक्षा मन्त्रीजी कहते हैं कि ब्रजभाषा और अवधी के १६ वीं और १७ वीं शती के साहित्य की प्रगति

[शेष पृष्ठ १८ पर]

लेखक— श्री वीर बहादुर

नगर के बाहर म्लान मुख, क्लान्त शरीर एक नवयुवक को प्रातःकाल से सायंकाल तक एकाकी बैठा देखकर एक संन्यासी उसके प्रति आकृष्ट होता है। किसी प्रकार सहारा देकर वह उसे उसके घर पहुँचाता है। युवक को शान्ति की खोज है। घर पर पहुँचने पर संन्यासी को वास्तविकता ज्ञात होती है। पूर्वी बङ्गाल के अत्याचारों की शिकार वह नवयुवती भी हुई है जिसको यह नवयुवक प्रेम करता है। उससे इसका सम्बन्ध निश्चित हो चुका था। इसके पिता उस सम्बन्ध मे खोज करने के पहिले ही कलकत्ता जा चुके थे। प्रतिदिन आने वाले नवीन समाचारों से युवक की स्थिति बिगड़ती हुई देख संन्यासी ने उसे लेकर पूर्वी बंगाल जाना निश्चित किया। वैसे पीड़ित सहायता तथा सेवा कार्य के लिए उस ओर जाने का विचार वह पहिले ही कर रहा था। अत ऐसे ही एक दल के साथ वे रवाना हो गए। दूसरी ओर नवयुवक के पिता डा. सुरेश ने कलकत्ते से दो-चार परिचितों को साथ लेकर एक कार में नोवाखाली की ओर प्रस्थान किया।

[गतांक से आगे]

[५]

रात में ड्राइवर कार के पास ही सोया। दिन भर की थकावट के बाद उसे गहरी नींद लग जानी चाहिए थी, परन्तु वह फिर भी जगा था। लगभग बारह बजे उसकी आंख झपकने लगी तो कार की ओर से उसे कराहती हुई कुछ ध्वनि सुनाई दी। वह चुप था। सुन रहा था कि एकाएक घर में से एक युवक आया।

'बिरादर' उस युवक ने कहा— 'माल' क्यों सड़ा रहे हो।

'माल' ड्राइवर ने कहा—'माल' तो कुछ नहीं है।

'मुझसे छुपाने की क्या आवश्यकता है ?' उस युवक ने कहा— 'यहां कोई डर नहीं। माल निकालो और इस रात के सुनसान समय में कुछ हवा खिलाओ। यहां कोई डर नहीं।'

ड्राइवर भौंचक्का रह गया। अपनी घबड़ाहट छुपाने के लिए वह ऊंघता रहा। जमींदार का युवक कार के पास गया। और उसने वह बोरी निकाल ली, जिसको ड्राइवर को अभी शाम को 'सौगात' मिली थी। और ड्राइवर को सचमुच अभी तक उस बोरी की ओर देखने का अवसर ही न मिला था। न तो उसके ध्यान में भी यह बात आई कि कोई मनुष्य महा-राक्षसों से बढ़कर इतना अत्याचार कर सकता था। दूसरे कार में बैठे सभी आदमी अपनी अपनी विपत्ति की ही दावाग्नि में जल रहे थे। किसी ने भी बोरी की ओर ध्यान न दिया था। ड्राइवर ने देखा कि युवक बोरी को घसीट कर उसके पास लाया। और उसे खोल दिया। ड्राइवर ने अपनी आंख बन्द कर ली, क्योंकि दूर बरामदे में चिराग जल रहा था।

'बिरादर सोते क्यों हो। उस युवक ने कहा— 'यह माल कब से हाथ लगा है।'

ड्राइवर ने कुछ नहीं कहा। उसके समझ में कुछ नहीं आया। उसे जीवन में इस प्रकार का 'तोहफा' कभी नहीं मिला था। इतिहास और उपन्यासों में भी इस प्रकार के 'तोहफे' का कहीं बयान नहीं। वह स्वयं इस 'तोहफे' को देख कर घबरा जाते। और वह 'तोहफा' क्या सचमुच उसकी आंखों के सामने पड़ा था। मानवता के दमन का 'तोहफा' घृणित राक्षसों का 'तोहफा।'

'बिरादर' युवक ने कहा— 'माल' अच्छा है। 'हिफाजत' करो इसकी, नहीं तो खराब हो जायेगा।'

ड्राइवर उठा और उस पर एक दुपट्टा फैला दिया।

'मैं जरा गौर से देख रहा था, इस नू मुस्लिम की सूरत पे परदा क्यों कर दिया, बिरादर।'

'हमारा बनाने वाला भी तो परदे में है।' ड्राइवर ने सोच लिया कि यहां हृदय की कसक पर धूल ही डाल देना चाहिए। 'खूब, खूब, बिरादर।' युवक ने कहा— 'क्या मुझे इस माल पर अखितयार नहीं।'

'आपके लिए माल की क्या कमी है

'करम खुदा की' युवक ने उत्तर दिया —अमीर कायम रहे, एक क्या पन्द्रह करोड़ माल मेरे इर्द गिर्द है।'

मुझे इसकी 'हिफाजत' करने में सहायता दो।'

'अच्छी बात है' कह कर युवक भीतर चला गया।

ड्राइवर ने 'तोहफे' का मुंह खोला। नाक का कोना कट गया था, खून बह के अपने आप सूख गया था। ललाट खुरच गया था। और उस पर भी रक्त बह कर सूख गया था। गर्दन पर बंधी गांठों को खोला तो मुंह पर का बंधा हुआ कपड़ा खुल गया। मुंह में फिर भी कुछ कपड़े के टुकड़े ठूंसे हुए थे। उनको निकाल दिया।

'उफ मरने दो मुझे।' कराहता हुआ शब्द निकला।

'देवी, घबराओ नहीं' ड्राइवरने चुपके से कहा — 'धीरज रक्खो।' 'तोहफे' ने आंख खोला और ड्राइवर को देख कर चिल्ला उठी— मरने दो मुझे, मरने दो मुझे।'

'क्या सीता, दमयन्ती और पद्मिनी इतना अधीर हुई थीं ?' ड्राइवर ने कहा — 'यही तो धीरज का समय है। मेरे रहते तुम्हारा कौन बाल बांका कर सकता है। धीरज रक्खो। मैं तुम्हारा सेवक हूं। और तुम मेरे लिए अपनी के समान ही आदरणीय हो।'

'तुम !' आंखें बन्द करते हुए 'तोहफे' ने कहा।

ड्राइवर ने पीठके पास हाथ ले जा कर उसके हाथों में बंधी रस्सियों को काट दिया। हाथ भी मुक्त हो गये। और इसी प्रकार पैर भी। 'तोहफे' की मुश्कें खुल गयी। बोरी में बन्द 'तोहफा।'

युवक एक साड़ी लिए हुए और दूसरे हाथ में तश्तरी में कुछ चावल लिए आ गया।

'लो !' आते ही उसने कहा।

'कोई चोली भी ला दो' ड्राइवर ने कहा — 'माल तो बहुत हाथ लगा होगा। कंजूसी क्यों करते हो।'

'गहने, कपड़े और बर्तन और जानवर' युवक ने कहा — 'आजकल किसी बात की कमी नहीं। जितना मांस चाहो, जितना चावल चाहो सब कुछ मिल जायेगा। छः बरस तक युद्ध में कभी पूरा नहीं पड़ता था। इन काफिरों के पेट में सब समा जाता था। और आज हम सब चीज के मुख्तार हैं, आजकल कबाब और मछली भर-पेट मिलती हैं। हर एक के पास मनमाना माल और अनाज जमा है। करम खुदा की है। फकत बिटोर कर जमा करना है। तुम्हारे लिए, बिरादर, जो चाहो सब मिल जायेगा।'

'केवल एक चोली चाहिये' ड्राइवर ने कहा— 'बाकी मुबारक हो आपको।' युवक घर में चला गया।

'बहन साड़ी पहन लो।' ड्राइवर ने कहा — 'शर्माओ नहीं हमारी मां-बहिनों का भी यही हाल हुआ होगा, कौन जानता है।'

ड्राइवर की आंखों में आंसू आ गया। वह दूसरी ओर चला गया। वह फूट-फूट कर रोना चाहता था। उसका हृदय आंखों से बह कर निकलना चाहता था, परन्तु वह चुप था। कुछ देर बाद आंखें पोंछ कर और कुछ ढाढस करके फिर आया। युवती कपड़े से शरीर ढक चुकी थी और चादर और जिस बोरी में 'पारसल' बनी थी और 'तोहफे' की के रूप में ड्राइवर को मिली थी, उनको अलग कर दिया। आंखें नीची थीं, परन्तु उसमें कितना आंसू था, उसने किसी को नहीं दिखाया।

'माल तो अच्छा है, बिरादर' दीपक के प्रकाश में जमींदारजादे ने चोली ला कर ड्राइवर को देते हुए कहा — 'कब मिला आपको, किसने दिया ?'

'बस करम खुदा का है, इनायत आप लोगों की।'

'मालूम होता है, इस माल को आप खुद रक्खेंगे। जमींदारजादे ने मुस्कराकर कहा — 'निकाह हो चुका।'

'चोली तो बड़ी अच्छी आये।' ड्राइवर ने इन कसकमयी बातों को टालने के लिए कहा — 'खूब ?'

'और साड़ी ?' दूसरे ने उत्तर दिया — 'कसम खुदा की, आजकल काइ' का खजाना टूट पड़ा है। आप जैसी चोली या साड़ी चाहे चुन सकते हैं। मेरे हरम में चलिए ? कसम खुदा की, इस तारों भरी रात को मजा आएगा। कसम मेरी कि [न चलो। यह माल तुम्हारा भग तो नहीं जायेगा। खैर फिक्र न करो, बन का गीदड़ जावेगा किधर। भग भी गयी तो सुबह नोआखाली का हर जर्रा छान डालूंगा।'

'आओ, मेरी जान।' साहबजादे ने अपनी मदमाती आंखों को फेर कर

[शेष पृष्ठ २२ पर]

वायु शक्ति का अर्थ और विकास

केप्टेन श्री एच एन. चटर्जी

"जिस प्रकार गवेषणा, प्रयोग, उत्पादन, संगठन और कुशल चालन विमान-दल को शक्तिशाली बनाने के साधन हैं, उसी प्रकार परिज्ञान, विचार, आलोचना, परिगणन और सामरिक महत्व की वस्तुओं का परिचिन्तन वायु शक्ति को सुदृढ़ बनाने के साधन हैं"

—स्टीफेन टी० पोसोनी

विज्ञान के युग में कल का "श्रेष्ठ" आज का 'निकृष्ट' है। विज्ञान के आविष्कारों और अनुसन्धानों से वायु शस्त्रास्त्रों में जितनी उन्नति हुई है, उतनी भूमि-युद्ध में काम आने वाले शस्त्रास्त्रों में नहीं। दूर पर मार करने और भार वहन की क्षमता रखने के कारण, वायु-शस्त्र एक नई शक्ति—वायु शक्ति—का व्यक्त रूप है।

मूलतः वायु शक्ति तीन बातों पर निर्भर है—वायु-उद्योग, वायु वाणिज्य और वायु सेना। भौगोलिक स्थिति, जनसंख्या का विस्तार, राष्ट्रीय सरकार का आचरण और उड्डयन के प्रति उसकी नीति भी इनमें जोड़ दी जानी चाहिए। इसलिए वायु शक्ति किसी राष्ट्र के विमान बल में निहित राष्ट्रीय शक्ति का ही एक भाग है, जो वायुयान कारखानों की क्षमता, सामरिक महत्व के हवाई अड्डों की संख्या, और विशाल मात्रा में सामग्री परिवहन की क्षमता का निर्देशक है।

चलत्व, प्रवेशक्षमता और घात-प्रतिघात में क्षिप्रता, बचाव एवं तीव्रता वायुशक्ति की विशेषताएं हैं। वायुशक्ति वस्तुतः में आग्नेय शक्ति ही है, और इसका कार्य वही है जो आग्नेय अस्त्रों का होता है। अन्तर केवल इतना है कि, इससे निशाना ठीक और अधिक दूर पर लगाया जा सकता है।

वायुशक्ति की एक मुख्य विशेषता यह भी है कि यह एक आधार क्षेत्र से एक लक्ष्य या एक ही वस्तु के कई लक्ष्यों को बेध सकती है तथा एक ही आधार से विस्तृत क्षेत्र के विभिन्न लक्ष्यों को बेध सकती है जो केन्द्रीय नियन्त्रण में अत्यन्त अल्पव्ययसाध्य सिद्ध हो सकती है।

वायुशक्ति का मुख्य लक्ष्य शत्रु राष्ट्र के महत्वपूर्ण उद्योगों को नष्ट भ्रष्ट करके उसे युद्ध बन्द करने के लिये बाध्य करना है। केसाब्लेन्का—सम्मेलन में इसके लक्ष्य की व्याख्या इस प्रकार की गई थी— "जर्मनी की सैनिक औद्योगिक और आर्थिक प्रणाली को विश्रृंखलित और नष्ट भ्रष्ट करना तथा जर्मन लोगों के उत्साह को इतना भंग कर देना कि वे सशस्त्र प्रतिरोध के योग्य ही न रहें।

वायुशक्ति के प्रभाव से ही यूरोप पर आक्रमण सम्भव हो सका और जापान में सेना उतारी जा सकी। द्वितीय महायुद्ध में वायुशक्ति का प्रभाव विशेष रूप से दृष्टिगोचर हुआ। इस समय स्थल जल और नभ युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए वायुशक्ति में श्रेष्ठ होना आवश्यक है।

इस समय हम असीम उन्नति के द्वार पर खड़े हैं। जेट, राकेट, रेडार, गाइडिड मिजिल, चालकरहित वायुयान, ब्रह्मांड-किरण आदि वैज्ञानिक प्रगति के जिस अंग की ओर हम देखते हैं, उधर ही नवीन और विशाल क्षितिज दिखाई पड़ता है।

वायुशक्ति ने सामरिक महत्व की सीमाओं का मूल नष्ट कर दिया है। इसने देश और काल की माप के नये पैमाने बनाये हैं। पंक्तिबद्ध युद्ध की पुरानी प्रणाली के स्थान पर, विस्तृत क्षेत्र में विद्युत गति से युद्ध करने की प्रणाली का आरम्भ किया है। १०,००० मील की दूरी पर बम फेंकना सम्भव हो सका है और निकट भविष्य में पृथ्वी के हर भाग में परमाणु, कीटाणु और रासायनिक युद्ध वायु के माध्यम से किये जा सकेंगे।

वायु शक्ति हमारी पीढ़ी में आविर्भूत हुई है, परन्तु वह राष्ट्रों के भाग्य की विधाता है।

जिस प्रकार शस्त्रास्त्र बदलते रहते हैं और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियां परिवर्तित होती रहती हैं, उसी प्रकार युद्ध की प्रणाली भी बदलती रहती है। भविष्य के किसी भी युद्ध में या किसी राष्ट्र की प्रतिरक्षा में वायुशक्ति का महत्व सबसे अधिक होगा, इसलिए भावी सुरक्षा और शांति के लिए इसके लिए इसके आधार पर सामरिक महत्व की समुचित योजना बनाना आवश्यक है।

अफसर बाजी

[पृष्ठ १ का शेष]

कि अफसर के बीबी बच्चों को सिनेमा दिखाने ले जाता हूं या उन्हें उनके घर से अपने घर लाता हूं। मेरे लड़का कोई नहीं, पर एक दिन आप देखेंगे, सन्ध्या समय दो तीन अफसरों का परिवार घर पर मूल्यवान दावत खा रहा है। किस उपलक्ष में? मेरे लड़के के जनेऊ उपलक्ष में। ऐसे उत्सवों की कल्पना करना कठिन थोड़े ही है। बादाम और किशमिश का बोलबाला रहता है दावत में। मैं पक्का ही बनियां हूं। पिता जी को पता चल जावे तो हाथ का छुआ न खावें। पर यहां तो अफसरबाजी के चक्कर में सब कुछ करना पड़ता है। मांसाहारी भोजन सब बढ़िया होटल से मंगा कर कहता हूं—घर पर तैयार कराया है। कुछ बढ़िया ड्रिंक का भी दौर चलता है।

मैंने कहा— 'और तुम।'

बिना झिझक के बोले—'वैसे तो न पीता हूं, न खाता हूं। पर साथ तो निभाना ही पड़ता है और आज इसके बिना काम भी नहीं चल सकता। अपना उद्देश्य तो अपने प्रभुओं को प्रसन्न करना है।'

दावत के बाद सिनेमा का कार्यक्रम। छुट भइयाओं को तो दूसरे तीसरे दिन सिनेमा दिखाना पड़ता है। शाम के समय बहुधा कोई न कोई क्लर्क दुकान के सामने से गुजरेगा। मैं दिल की बात जान जाता हूं। पुकार कर हलवाई को आवाज देता हू, फिर सिनेमा ले जाता हूं। क्लर्क भी दो चार नहीं, पचासों हैं। कभी किसी को, कभी किसी को, कहता हूं, मिस्टर सिनेमा चलें। वे कहेंगे—क्यों कष्ट उठाते हैं आप! मैं मन में कहता हूं—हरामजादे, नहीं तो इधर आया ही क्यों था? ऊपर से कहता हूं—मैं यह भी न कर सकूं। आपके अहसानों से दबा हूं।

कुछ क्लर्क दोस्त बन जाते हैं। वे सीधे कह देते हैं—चलो, सिनेमा। दिवाली आई, दिवाली मनाई गई, अफसरों के घरों में मिठाई, कपड़े भेजे, क्या क्या नहीं भेजा? उनके विवाह या जनेऊ पर हमारे यहां से कोई बढ़िया साड़ी या सोने का गहना तोहफे में जायेगा। दावत में हमें भी निमन्त्रण मिलता है। वहां दूसरे काम के अफसरों से मेल बढ़ता है। यह क्षेत्र बढ़ता ही जाता है। तुम समझते हो यह रुपया फूंक रहा हूं? नहीं, यह तो अग्रिम व्यापार में लगाता हूं। इनवेस्टमेंट है। उनके जमाई हमारे घर भी दावत खाने आते हैं। उनके जमाई हैं और हमारे नकद जमाई। भेंट में क्या देते हैं, इसका अनुमान कीजिये। बस, इसी 'अफसर बाजी' से खुदा राजी हुआ है और बाजार में बाजी जीती है।

सियारामशरण गुप्त—संपादक—डा० नगेन्द्र। प्रकाशक—गौतम बुक डिपो, नई सड़क दिल्ली। मूल्य ४)।

पिछले दो वर्षों में गौतम बुक डिपो ने हिन्दी-साहित्य पर बहुत सा काव्य, नाटक अथवा उत्कृष्ट आलोचनात्मक साहित्य एक साथ हिन्दी संसार के सामने उपस्थित करके सचमुच उसकी बहुत सेवा की है। इसी दिशा में यह एक नया कदम है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुज सियारामशरण गुप्त भी हिन्दी कवियों में अपना एक स्थान रखते हैं। उन्होंने १७ काव्य तथा अनेक उपन्यास, ११, कहानियां तथा कई निबन्ध लिखे हैं। प्राचीन आदर्शों के उपासक होते हुए नवीन में से भी ग्राह्य को लेने को वे उद्यत रहते हैं, रवीन्द्र और गांधी की उन पर अमिट छाप है, प्रगतिवादी होते हुए भी वे भारतीय आदर्शों को छोड़ नहीं सके हैं। उनके निजी जीवन में दुःख और तपस्या का बहुत भाग रहा है, इसने उन्हें सात्विक और संवेदनशील बना दिया है। इसका उनके साहित्य पर प्रभाव पड़ा है, जिससे वह बहुत करुण और सजीव हो उठा है। उनकी निष्कलुष आत्मा और सरल हृदय ने नारी को रमणी की बजाय माता, बहन, पुत्री आदि के रूप में देखना अधिक पसन्द किया है। एक उत्कृष्ट कवि होने के साथ साथ वे अच्छे उपन्यास लेखक कहानीकार व निबन्ध लेखक भी हैं। ऐसे उत्कृष्ट साहित्यकार के सम्बन्ध में एक अच्छे ग्रन्थ का प्रकाशन न होना हिन्दी साहित्य का अपमान था। डा० नगेन्द्र द्वारा सम्पादित ग्रन्थ प्रकाशित करके प्रकाशकों ने एक अभाव की पूर्ति की है।

प्रस्तुत पुस्तक में उनके जीवनवृत्त और व्यक्तित्व, ग्रन्थों, काव्यों, निबन्धों और उपन्यासों की आलोचना तथा कुछ प्रमुख ग्रन्थों का आलोचनात्मक परिचय है इन तीन खण्डों में विभिन्न विद्वान् लेखकों के १७ लेखों का संग्रह किया गया है। लेखकों में श्री मैथिलीशरण गुप्त, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डा० नगेन्द्र, श्री सूर्यकान्तसिंह दिनकर, श्री देवराज श्री गुलाबराय, श्री कन्हैयालाल सहल और श्री सत्येन्द्र आदि के नाम ग्रन्थ की उत्कृष्टता के प्रमाण हैं। इन लेखों से सियारामशरण के काव्य और कला का अच्छा परिचय विद्यार्थी को मिलता है।

पुस्तक का गेट-अप, छपाई, कागज और जिल्द भी कम आकर्षक नहीं है।

●

नेपाल के मोर्चे पर—ले० श्री विजयकुमार पुजारी। प्रकाशक—चंगमैन एण्ड कम्पनी, पुस्तक प्रकाशक, दिल्ली। मूल्य ॥)।

प्रस्तुत उपन्यास एक ऐसे दम्पती की कथा है, जो पिछले दिनों नेपाल में किये गये जन-युद्ध में कूद पड़े हैं। पत्नी पहले जाकर युद्ध का नेतृत्व करती है और उसके त्याग से प्रेरणा पाकर पति भी पीछे गुप्त रूप से युद्ध में कूद पड़ता है। वह राणा को गोली से मारा जाता है। उसकी पत्नी जब दूसरे मोर्चे से वापस आती है, तब पता चलता है कि मरने वाला उत्साही कार्यकर्ता वो उस युद्धनेत्री का पति था।

●

प्रभाकर व रत्न अनुमानित पत्र—सं० श्री भवानीशंकर त्रिवेदी, २८९ जी. टी. रोड शाहदरा, दिल्ली। मू० १॥)।

जून ५१ में होने वाली हिन्दी परीक्षाओं के लिए त्रिवेदीजी ने अनुमानित प्रश्नपत्र प्रकाशित किये हैं। त्रिवेदीजी को अध्यापन का अनुभव है। इन पत्रों के आवरण से ज्ञात होता है कि गत वर्ष ८०-९० फीसदी प्रश्न इन्हीं अनुमानित पत्रों में से पूछे गये हैं। प्रश्न पत्र परिश्रम से बनाये गये हैं और प्रायः सभी महत्वपूर्ण प्रश्न इनमें आ गये हैं, विद्यार्थी इनसे लाभ उठा सकते हैं।

—कृष्ण

●

जयदोल—लेखक श्री अज्ञेय, प्रगति प्रकाशन, १४ डी फिरोजशाह रोड नई दिल्ली। मूल्य ३)।

अज्ञेय जी का स्थान निस्सन्देह हिन्दी के अग्रणी कहानी लेखकों में है। उनकी रचनाओं की अपनी कुछ मौलिक विशिष्टतायें हैं, जिनके कारण उन्होंने हिन्दी साहित्य में अपना विशेष स्थान बना लिया है। कथानक का कभी-कभी सर्वथा अभाव होते हुए भी उनकी कहानियों में भावों की गहराई तथा परिस्थिति का सूक्ष्म निर्देशन इतना हृदयग्राही होता है कि पाठक पर उसका स्थायी प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। मनुष्य की विभिन्न मानसिक अवस्थाओं तथा अन्तर्द्वन्द्वों का चित्रण करने में वे बेजोड़ हैं। चिरकालीन मौन के पश्चात् अज्ञेय जी का यह कहानी संग्रह प्रकाश में आया है, यद्यपि इसमें संग्रहित प्रायः सभी रचनायें हिन्दी की पत्र पत्रिकाओं में स्थान पाती रही हैं। इस संग्रह की जयदोल, ग्रेंग्रीन, नागा पर्वत की घटना, ये दूसरे कहानियां विशेष रूप से पठनीय हैं। ग्रेंग्रीन कहानी में एक सामान्य भारतीय परिवार की एक सती साध्वी कर्तव्य परायण महिला की मानसिक निराशा तथा उदासीनता का चित्रण किया गया है। किस प्रकार एक नारी, जिसके हृदय और मन पर निराशा की गहरी छाया है। अपने कर्त्तव्य का पालन करती जाती है और अपने अन्तस के हाहाकार को जीवन पर्यन्त दबाये रहती है। यही कहानी अधिकांश मध्यम श्रेणीय परिवारों की होगी। जयदोल में आसाम के मुगलकालीन इतिहास की एक घटना का सजीव चित्रण है। लेखक अपने रचना कौशल तथा भाषा के सौष्ठव से पाठकों के समक्ष घटनाक्रम यथार्थ रूप में ला देता है। छपाई तथा गेटप भी पुस्तक के अनुरूप ही है। आशा है इसके पश्चात् अज्ञेय जी की लेखनी अबाध रूप से चलती रहेगी।

●

रश्मियां—लेखक श्री कुंजबिहारी गुप्त साहित्यालंकार। प्रकाशक—जवाहर बुकडिपो, मेरठ।

रश्मिया में संग्रहीत श्री कंटक की कविताओं में मानव-जीवन की उन निराशाओं तथा संघर्ष का चित्रण है, जिनका सामना आज के युग में प्रत्येक नर-नारी को करना पड़ रहा है। उनकी रचनाओं में सामयिक समस्याओं तथा उनसे उत्पन्न होने वाले वैयक्तिक तथा सार्वजनिक क्षोभ की प्रति ध्वनि है। अपने युग की परिस्थितियों का प्रभाव साहित्यकार पर पड़े बिना नहीं रहता, किन्तु आज का हमारा कविवर्ग भावनाओं की गहराई में उतरे बिना ही भावावेश तथा क्रांति के नारों में बह जाता है। लेखक ने यथासम्भव इस प्रवृति से दूर ही रहने का प्रयास किया है। आशा है कंटकजी की प्रतिभा धीरे-धीरे विकसित होगी।

—सुरेश

आसाम के राज्यपाल अपनी लड़की की खोई हुई अंगूठी की खोज में वहां की पुलिस खानातलाशी करा रहे हैं।

—एक समाचार

जिस काम को ऋषि कण्व शकुंतला के लिए नहीं करा सके, उसे आसाम के गवर्नर ने कर दिखाया। क्या समझे ?

× × ×

हमें अपने वायु-बल पर गर्व करना चाहिए।

—राष्ट्रपति

बेफिकर तो अपने राम भी थे, लेकिन अपनी नींद तो सिरुनी काटन हराम कर जाता है, कभी उसका कोई पत्ता भतोला और कभी आकाश में रेखा खींचने वाला अज्ञात वायुयान।

× × ×

आकाश में रेखा बनाने वाले विमान का कुछ पता नहीं चला, कहां से आया, कहां गया।

—हिम्मतसिंह

भोमाल जी, देवताओं का दिल दिल्ली देखने को ललचाया था, घूम फिर कर फिर वहां चल दिये।

× × +

मुझे ८) रु० जोड़े वाली धोती २०) रु० में बड़ी कठिनाई से दिल्ली में मिली।

—संसद में श्री गोयनका

आपको धोती-प्रेमी समझ कर दुकानदार ने दी यह भी गनीमत समझिये, अन्यथा पतलून प्रेमियों को खाली ही आगे हांक देते हैं।

× + ×

सरकारी ठेके और मालसप्लाई आदि करने वाले संसद के सदस्य नहीं हो सकेंगे।

—मवर समिति

लेकिन सदस्य होने के बाद तो कोई हर्ज नहीं न !

× × ×

रविशंकर शुक्ल (प्रधानमंत्री सी० पी०) ने कपड़े का कोटा एक लड़के को, ठेका दूसरे को, सरकारी खर्च पर पढ़ने के लिए अमेरिका तीसरे को भेजा है।

—एक दैनिक

फिरभी गनीमत है कि राजनीति में किसी को नहीं डाला और 'नवाबियों का सिलसिला' अगली पीढ़ी तक बन्द हो हो जायगा।

× × ×

राजस्थान के एक नेता स्टेनगन बेचते पकड़े गये हैं।

—एक सम्वाद

तब समझ लीजिये नेता ने राजनीति से संन्यास ले लिया। वरना स्टैनगन जैसी वस्तु आजकल कोई बेचता है।

× × ×

भूखे नंगे लोगों से सांस्कृतिक बातें करना वाहियात है।

—जयप्रकाश

बेशक उनको बताया जाय, चोरी उठाईगीरी, डाकेजनी और हड़तालें ऐसी होती हैं।

× × ×

फूलाभाई, केसूभाई सरकार की शुद्धि के लिए २१ दिन का अनशन कर रहे हैं।।

—एक शीर्षक

आप भी यदि देश में कोई ऐसा १९ २० दिन का 'अनशनवाद' चलादें, तो सरकार आपको भी खाद्य-विभाग में जगह देने को तैयार है।

× × ×

सिन्ध असेम्बली ने संदिग्ध लोगों को कराची से निकालने का कानून बनाया है।

—एक पाकिस्तानी पत्र

इसके लिए कानून की क्या आवश्यकता थी, बांधे से गुण्डे ही भगा देते।

× × ×

पाकिस्तान में बाजारू औरतों से मत न लिया जाय।

—महमूदा बेगम

अपने राम को तो बेगम साहब, यही आश्चर्य है कि पाकिस्तान में भी उन्हें बाजारू बनना पड़ रहा है, जहां कि घर और बाहर पाक ही पाक है।

× × ×

यू०एन० ओ० का फैसला भारत से जबर्दस्ती मनवाया जावे।

—मकब्ला

वह दिन मियां १५ अगस्त १९४७ को लद गये, जिस दिन आपको और आपके आकाओं की टोली यहां से लदी थी।

× × ×

उद्जन बम दो वर्ष में बनेगा।

—न्यूयार्क टाइम्स

तब तो १०-२ मैकार्थर को परिभाषा बम ही दे दो।

× × ×

च्यांगकाई शेक की सेना समुद्रों में डाकजनी कर रही है।

—एक समाचार

अभी उसे कम्युनिस्टों से लड़ने की तो आवश्यकता है ही नहीं जब तक अमेरिका लड़ रहा है, इतने 'खाली से बेगार भली।'

× × ×

पाकिस्तानी संसद के बाहर गिरी हुई गांधी जी की मूर्ति को अभी उस स्थान पर लगाने का कोई विचार नहीं।

—शहाबुद्दीन

है भी ठीक, भला गांधियों का क्या काम वहां तो किसी कासिम रजवी के भाईबन्द ही चाहिये। या डा० कुरैशी को यूं ही खड़ा कर दो।

× × ×

पटने के एक दैनिक में कोई कविजी गाते हैं।

आज फूलों की झड़ी बरसात रे !
हर गली गमगम पिकी गाती सदा
कुरमटों में डोलता, मधुमास रे।

बेकारी और भुखमरी के इस युग में कविजी यूं गाइये—

मन मेरा मुरग-सा बोलता है,
दिल के दरवाजे फटाफट खोलता है
आज राशन के बिना, मर रहा हूं चासरे
आज ओलों की झड़ी बरसात रे।

—पाराशर

संघ के संस्थापक डा. हेडगेवार

[पृष्ठ ५ का शेष]

वे वहां के ४ प्रतिशत मुसलमानों से भय खाते हैं और समझते हैं कि उनको राजी किये बिना उनका अपना और देश का उद्धार सम्भव ही नहीं। उन्हें यह सब कुछ देख और अनुभव करके दुख हुआ, परन्तु निराशा नहीं। उन्होंने निश्चय किया कि वे अपना बाकी जीवन समाज में फैली हुई मानसिक दुर्बलता और आपा धापी को दूर करने और विशुद्ध राष्ट्रीयता के आधार पर उसका संगठन कर के शक्ति निर्माण करने में लगायेंगे।

यह निश्चय होते ही इसको कार्यान्वित करने का प्रश्न आया। राष्ट्रीयता, संगठन और शक्ति नये शब्द नहीं थे। अनेक भन्य भक्त भी उनकी आवश्यकता बड़े जोरदार शब्दों में प्रकट कर चुके थे। परन्तु केवल इच्छा प्रकट करने से और भाषण देने से तो संगठन और शक्ति का निर्माण न होना था और न हुआ। इसलिए डाक्टर साहिब ने गहरा विचार कर के इस महान कार्य को सम्पन्न करने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसकी विशिष्ट कार्य पद्धति की रूपरेखा तैयार की।

१९२५ की विजय दशमी के पवित्र दिन डाक्टर साहिब अपने चन्द साथियों के साथ नागपुर के एक खुले मैदान में इकट्ठे हुए, कुछ देर खेले कूदे, कुछ देर बात-चीत की और फिर प्रार्थना कर के अपने-अपने घरों को लौटे। यह उस महान वृक्ष का, जोकि आज राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के नाम से देश में फलता-फूलता और बढ़ता जा रहा है, बीजारोपण था।

इस संघ की विचारधारा नई नहीं थी। भारत पददलित और पीड़ित है। इसको फिर से स्वतन्त्र कर के परम वैभव पर पहुँचाना हर एक भारतीय का कर्तव्य है। परन्तु भारतीय कौन है? वे सब लोग, जो इस देश में रहते हैं भारतीय नहीं। सच्चा भारतीय होने के लिए केवल इस देश में उत्पन्न होना पर्याप्त नहीं। इस देश के धर्म, संस्कृति, आदर्शों और मर्यादा के प्रति अपनत्व की भावना होनी भी आवश्यक है। इस भारत देश को मातृभूमि के साथ पुण्यभूमि भी मानना राष्ट्रीय होने के लिए आवश्यक है। जो ऐसा मानते हैं वही भारतीय है, वही हिन्दू है और उन्हीं पर इस राष्ट्र को उठाने का उत्तरदायित्व है वे इस उत्तरदायित्व को तभी निभा सकते हैं, जब कि उनमें निःस्वार्थ बुद्धि से देश और समाज की सेवा करने की भावना जागृत है। परन्तु केवल भावना से काम नहीं चलता। भावना के साथ शक्ति की आवश्यकता है और शक्ति संगठन व अनुशासन के द्वारा पैदा होती है, केवल नारों से नहीं। इसलिए देश के उत्थान के लिए आवश्यक है, देशभक्ति व राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने और संगठन का कार्य साथ-साथ चले, ताकि अल्प समय में ही देश में ऐसी शक्ति का निर्माण हो सके, जिसके आगे ठहरना देश के दुश्मनों के लिए सम्भव न हो।

परन्तु डाक्टर साहब की महत्व के देन है, इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए साधन रूपी संघ की कार्य पद्धति, जो कि समाज के साधारण व्यक्ति का आधार मान कर चलती है। समाज अथवा राष्ट्र व्यक्तियों का समूह है, इसलिए समाज के गुण, अवगुण शक्ति और चरित्र का मूल है, उसमें के व्यक्तियों के जीवन के गुण, अवगुण और चरित्र। इसलिए समाज को शक्तिशाली व चरित्रवान् बनाने के लिए एक एक व्यक्ति को चरित्रवान्, बलवान् और राष्ट्रभक्त बनाना आवश्यक है। यह काम संस्कारों के द्वारा ही हो सकता है। इसलिए ऐसी भावनाओं वाले चरित्रवान् बाल, तरुण अथवा वृद्ध नित्य-प्रति एक नियत समय के लिए किसी निश्चित स्थान पर एकत्रित हों। वहां खेल कूद, बातचीत इत्यादि से ऐसा वातावरण निर्माण करें, जिससे उन्हें स्वयं भी लाभ हो और नये आने वालों को भी। इस प्रकार नित्य मिलने से, नित्य संस्कार डालने से एक-एक साधारण और बचपने में ही बाल व्यक्ति को देश व समाज के हित के लिए निःस्वार्थ बुद्धि से काम करने वाले समाजसेवी में परिवर्तित करते जाना ही संघ शाखाओं का गुण है। जितना जल्दी और जितनी संख्या में इस प्रकार के लोग और उनकी संगठित शक्ति का निर्माण होगा, उतना ही भारत का उज्ज्वलकाल समीप आता चला जायगा।

डाक्टर साहिब ने अपनी देख रेख में इस कार्य को १५ वर्ष तक चलाया। आज उनका देहान्त हुए भी १० वर्ष हो चुके हैं। इन १५ वर्षों में संघ देश में एक ऐसी शक्ति का निर्माण कर पाया है, जिसका अनुभव अपने और पराये सभी कर रहे हैं, परन्तु अभी इसने वह स्वरूप धारण नहीं किया, जो कि हिन्दू राष्ट्र का भव्य और अखंड मन्दिर बनाने के लिए आवश्यक है। इसलिए डाक्टर साहिब का कार्य अभी अधूरा ही है। उनका जन्मदिन मनाते हुए भारत के हर नर-नारी को उस अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए अधिक वेग से काम करने का व्रत लेना चाहिये। हमारे राष्ट्र का भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल है, परंतु उसको निकट और निकटतम लाने की जिम्मेवारी डाक्टरजी के अनुयायियों, विशेष कर स्वयंसेवकों पर ही है।

देश-विदेश का घटनाचक्र

संसद् के बजट अधिवेशन में रियासती सचिवालय के ९ करोड़ ४२ लाख रुपये तथा परिवहन सचिवालयके ८ लाख ७४ लाख रुपये के अनुदान स्वीकार कर लिए गये। इस सप्ताह संसद् की कार्यवाहियों में सर्वाधिक उल्लेखनीय रियासत विभाग के मन्त्री श्री गोपालस्वामी आयंगर का वह भाषण है, जिसमें उन्होंने सदस्यों द्वारा रियासत सचिवालय पर किये गये आरोपों का उत्तर देते हुए कहा कि सम्मिलित या विलीन राज्यों के राजाओं के अपने राज्यों की पुनः स्थापना तथा राजनैतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए किये जाने वाले किसी भी प्रयत्न को सहन नहीं किया जावेगा, और सरदार पटेल ने रियासतों के पुनर्गठन का जो कार्य किया है, उसे नष्ट करने के लिए कोई व्यक्ति या संस्था जो भी कार्य करेगी, उसे भारत सरकार कड़ाई के साथ दबा देगी। राजाओं के संघ ने श्री आयंगर के उक्त वक्तव्य को निराधार बताते हुए अपने एक वक्तव्य में कहा है कि उनकी इस प्रकार की कोई योजना नहीं है। राजस्थान के कुछ सदस्यों ने सिरोही को राजस्थान में मिलाने की मांग की तथा कुछ सदस्यों ने विभिन्न राज्यों में लोकप्रिय मन्त्रिमंडल बनाने की मांग की। हैदराबाद शासन के सम्बन्ध में श्री पद्मजा नायडू द्वारा किए आक्षेपों के उत्तर में मंत्री महोदय ने बताया कि हैदराबाद सरकार कम्यूनिस्टों की शरारतपूर्ण कार्यवाहियों के विरुद्ध पूर्णतया सतर्क है और उसने तेलंगाना आदि स्थानों पर आतंकवादियों को पूर्णतया कुचल दिया है।

श्री नेहरू की काश्मीर यात्रा

प्रधानमन्त्री श्री नेहरू ने, जो काश्मीर में दो दिन के दौरे के लिए गये थे, अपने एक भाषण में आंग्ल अमरीकी प्रस्ताव का घोर विरोध किया। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना काश्मीर में तब तक रहेगी, जब तक काश्मीर को उसकी आवश्यकता है। संसार की कोई भी शक्ति उन को इस कार्य से नहीं रोक सकती। जम्मू और काश्मीर की चर्चा करते हुए आपने कहा कि जम्मू और काश्मीर सदा एक ही रहेंगे। श्री नेहरू ने यह भी कहा कि इन सब प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद हमारे संविधान सभा के चुनावों के काम में कोई बाधा नहीं पड़ेगी तथा हम संविधान सभा बुलाने के अपने रचनात्मक कार्य पर अमल करके रहेंगे।

पंजाब का संकट टला

पंजाब राज्य में चिरकालीन संभावित संकट टल गया। पंजाब असेम्बली कांग्रेस दल की एक बैठक में प्रधानमन्त्री श्री गोपीचन्द भार्गव के प्रति उपस्थित किया गया अविश्वास प्रस्ताव ३९ मत से विपक्ष में और ११ मत पक्ष में आने से अस्वीकृत कर दिया गया। सरदार प्रतापसिंह कैरों ने यह प्रस्ताव किया कि दोनों दलों के बीच के संघर्ष को मिटाने का कोई मध्यम मार्ग निकालने के लिए बैठक स्थगित कर दी जाय। किन्तु अध्यक्ष चौधरी कृष्णगोपाल दत्त ने इस प्रस्ताव को कार्यान्वित करने से स्पष्ट इनकार कर दिया।

चीनी अन्न का आयात

कुछ मास पूर्व भारत ने अमेरिका से २० लाख टन गेहूं उधार देने की प्रार्थना की थी। किन्तु अमेरिका में इस प्रार्थना के विभिन्न अर्थ लगाकर सहायता की इस मांग को राजनीति के क्षेत्र में घसीट लिया गया और अन्ततः यह बात टल गई। रूस पटसन के बदले में पचास हजार टन देने को तैयार हो गया। किन्तु भारत के लिये यह सर्वथा अव्यवहारिक था, इसलिए वह इस प्रस्ताव को स्वीकृत नहीं कर सका। इधर चीन ने बिना किसी शर्त के भारत को १० लाख टन अन्न देने का वायदा कर लिया है। इस प्रकार भारतीय-क्षेत्रों में चीनी सहायता स्वीकार करने पर ही विचार किया जा रहा है, ताकि चीन और भारत की घनिष्ठता बढ़ जाने से एशियायी राष्ट्रों की एकता की नींव पड़ सके।

भारतीय वायुसेना का वार्षिक अधिवेशन

गत सप्ताह राजधानी में भारतीय वायु सेना का १८ वां अधिवेशन धूमधाम से मनाया गया। जिसका स्वागत जन साधारण में भी काफी हुआ। इससे पता चलता है भारत सरकार अपने हवाई बेड़े को दृढ़ बनाने के लिये संलग्न है। इन्हीं दिनों एक अज्ञात वायुयान ने लम्बी धूम्ररेखा छोड़ते हुए आकाश में उड़ान की। भारतीय वायु सेना के अधिकारियों ने उसका पीछा किया और यह जानने का प्रयत्न किया कि वह वायुयान किस देश का हो सकता है। किन्तु यह जानने में अब तक पूर्णतया सफलता नहीं मिल सकी है।

शान्ति

[पृष्ठ १२ का शेष]

कहा— 'काफिर के हाथों से तुम्हें अब नजात मिल गयी। अब जिन्दगी चैन से बसर हुआ करेगी।'

'आपका हरम क्या अभी देखना चाहिये।' ड्राइवर ने इन बातों को हटा कर कहा—'आपका मुबारक हरम।'

'आइये, आइये, इसी वक्त, कसम खुदा के मजा आ जायेगा' उसने एक राक्षसी उद्वेग के साथ कहा— 'और कल अपने साहब के लिए जो कुछ चुनना हो, चुन लेना, सिर्फ दो को छोड़ कर। ये दोनों मेरे दिल की मलका बन चुकी हैं।'

ड्राइवर ने कई बार सोचा, क्या ये बीभत्स बातें सचमुच मैं सुन रहा हूं।' या यह कोई घृणात्मक स्वप्न है। उसने जोर से अपनी उंगलियों को दांतों से काटा। यह स्वप्न नहीं हो सकता? उस युवती की ओर देखा, वह अब भी गो-स्वरूप नीची आंखें किये बैठी थी। साहबजादे या गुण्डाजादे या जो कुछ कहिये, ड्राइवर का हाथ पकड़ के अपने घर के भीतर घुसी। ड्राइवर कुछ संकोच के साथ चला आने लगा।

मकान काफी बड़ा था। बीच में बड़ा आंगन और चारों ओर ईंट के बने कमरे, सामने बरान्दे। पश्चिम और उत्तर की ओर दो तल्ले कमरे थे और पूरब, दक्षिण की ओर एक तल्ला ही था। अंधेरी रात, आसमान में सृष्टि की सभी बुरी सारी घटनाओं के मूक साक्षी, नक्षत्र और तारिकायें आंखें मल-मल कर पृथ्वी की ओर देख रही थीं। उन्होंने इस चिर-कालीन भारत के प्रांगण में बहुत कुछ देखा है। वे आज रात को अत्याचारों की चरम सीमा तक पहुंचे हुए ये दृश्य भी देखेंगे। दो सप्ताह से प्रत्येक निशा में वे विविध आकाश से यह दृश्य भी देख रहे हैं। गगन में एक तारा टूट गया, जल कर राख हो गया। वह इन दृश्यों को सहन कैसे कर सकता था। उसकी राख अनन्त में मिल कर विलीन हो गयी।

मदिरा से मादकता आती है, परंतु यह मादकता मनुष्य को केवल शिथिल बना देती है, डाकू जब अपने प्रयास में सफल हो जाता है, तो उसे भी मादकता आती है, चोर को भी मादकता आती है, एक विचित्र प्रकार की, और व्यभिचारी को भी। जुआरी, लुटेरे, हत्यारे और पापियों को भी मादकता आती है। यह मादकता भिन्न प्रकार की होती है। मनुष्य का, इन मादकताओं के आने के उपरान्त, अंतिम नैतिक पतन हो जाता है। चोर जब तक डरता है, उसका सुधार हो जाता है, परन्तु जब वह चोरी के उन्माद में आ जाता है, उसका सुधार असम्भव हो जाता है। किन्तु जिन आततायियों और मजलूमाइयों को दिन रात मदिरा के उपरान्त भी, चोरी, डकैती, व्यभिचार के व्यसनों की मादकता रहती है, जिनको ये कुकर्म व्यापार समान हैं, जिनको वे अपनी विजय समझते हैं, उनका सुधार कठिन है। प्रत्येक व्यक्ति महाकवि वाल्मीकि तो होने से रहा। साहबजादे पर इन्हीं व्यसनों की एक मिश्रित मादकता इस समय छाई थी, नहीं तो, कोई चोर या व्यभिचारी किसी अपरिचित व्यक्ति को अपनी चोरी का परिचय देता है? इसके अतिरिक्त साहबजादे को भय किस बात का था? चारों ओर गुण्डाशाही उनके लिए क्यामत तक को स्थापित हो चुकी थी। अब तो केवल सौदागरों की आवश्यकता थी, जो 'जिन्दा माल' में तिजारत करें। हजारों वर्ष से गुलामी की प्रथा कायम रखी, उसमें तिजारत की। स्वर्गीय राष्ट्रपति लिन्कन को क्या पता कि यह कुप्रथा बीसवीं शताब्दी में नोआखाली में फिर प्रचलित की जायेगी। जिस प्रथा का अंत उसने अपनी जान गंवा के किया था, अपना रक्त देकर किया था, वह अब भी मिट न सकी। मिट कर फिर प्रचलित होने लगी।

'तशरीफ लाइये 'बिरादर'।' गुंडे-जादे ने कहा—'ये मुल्क नाचीज का हरम है। बहिश्त में भी ये मजे आने के नहीं। कहीं फिरदौस बर-रुये जमीन अस्त। हमीनस्तो! हमीनस्तो!! हमी-नस्त!!! बड़ी मुद्दत के बाद इन हूरों को जमा किया है। शहन्शाहों को भी ये मोयस्सर नहीं होगा।'

यदि युवक उन्माद में होता, यदि उसकी बुद्धि मांस के पुट्ठों को खा-खा कर बिल्कुल भ्रष्ट न हो गयी होती, वह यदि अपनी गुंडेशाही शान में पागल न हो गया होता, तो वह भलीभांति देख सकता था कि अर्ध-शिक्षित ड्राइवर की अन्तरात्मा में कितनी घृणा, कितना क्रोध और कितनी अशान्ति थी। ड्राइवर ने कमरे में द्वार पर खड़ा होकर देखा, उसकी आंखें फर्श पर ठहर न सकीं, वह वृक्ष की कलियों को देखने लगा कि वे कब टूटने वाली हैं?

'ढ़ाका में चौदह साल तक रहा,' गुण्डेजादे ने कहा—'कसम खुदा की एम० ए० पास करके आया। अफसरों के ख्वाबों को पढ़ा, दिल तड़पा करता था। वो नौजवानी सिर्फ मिजाजी नौजवानी थी। सड़कों पर टहलते हुए तीर खाते फिरे, जिगर टूटता रहा, मालूम होता था इन हसरतों को कफन में बांधकर ही कब्र में सो जाऊंगा। मगर अल्लाताला, शान निराली है तेरी, अरमान पूरे हुए, आज। तरसता होगा, तड़पता होगा जो नवाब भी पड़ा कब्र में, सुन सुनकर ये किस्सये तकदीर मेरा।'

'आली हरम का-मुआइना फरमाइये, बिरादर' साहबजादे ने ड्राइवर की ठुड्डी पर हाथ रखकर मदमाती आंखों से खुमार भरे शब्दों में कहा—'यह खाने करम किसने बिछाया है, खुदा ने। आओ मुझे देखना है मेरे मेहमान का दिल किस कली पर आकर रुकता है। आज इम्तहान है, तुम्हारे नाजुक ख्यालों का। आज इम्तहान है, तुम्हारी नुक्ताचीं निगाहों का।'

रात को दो बजे थे। तारे सब आसमान में कांप रहे थे। ड्राइवर खड़ा था। उसकी आंखें इन दीन आहत अबलाओं पर कैसे ठहर सकती थीं। जिनके हृदयों में । कौन कह सकता था क्या क्या ज्वालाएं थीं। लगभग बीस अबलायें, एक दो सोती हुई, एक दो रोती हुई, एक दो बैठी हुई, सिसकती हुई, मुरझाई हुई सब अपने जीवन के अन्तिम छोर पर बैठी थी। कुछ बालक भी थीं और एक । उस कोने में लुढ़की पड़ी थी। प्रत्यक्ष में शान्ति प्राप्त कर चुकी थी। सम्भवत उसकी आत्मा को शान्ति न मिली हो। वह बहुत तड़प चुकी थी, और तड़पते तड़पते ...।

'इनका आप क्या करेंगे?' ड्राइवर ने कहा। बड़ी कठिनाई से शब्दों को इकट्ठा किया।

'अभी तो बहारे अजल है' साहब-जादे ने कहा—'इसमे कुछ तो मुल्के अदम को जायेंगी, कुछ 'सौगात' बनेंगी और कुछ खास तौर से, वह महजबीं तो मुझे एक हजार रुपये का फायदा करायेगी। आप इनमें से जो चाहें ले जायें। मगर यार नफा करने पर मुझे न भूल जाना। इस वक्त तो मैं इनकी तादाद कम करना चाहता हूं। आप जितना चाहे ले जायें। मगर हैं ये सब बहुत जिद्दी। एक को तो मैंने उस कमरे में बन्द कर रक्खा है। मरने मारने पर तैयार थी। मगर यार, है वो चांद।'

'मैं इस वक्त थका हूं, सो जाऊं' ड्राइवर ने द्वार से बाहर आकर कहा— 'कल सुबह मैं आपका हरम मुवाफिक फिर देखूंगा, क्योंकि साहब के लिए चुनना मुझे ही पड़ेगा।'

'बेहतर है, बिरादर' गुण्डेजादे ने कहा—'तुम्हारे लिए खुदा कसम, जान हाजिर है। मगर एक तो उस कमरे में आज आठ दस दिन से दरवाजा बन्द किये बैठी है। आप मेरी उस दरवाजा तोड़ने में मदद कीजिये। मैंने देखा कि वह अपने आप दरवाजा न खोलेगी।''

'मुझे नींद आने लगी है बिरादर' ड्राइवर ने टालने की चेष्टा की।

'खैर!' गुण्डेजादे ने कहा—'तुम यार बिल्कुल मुर्दादिल दिख हो। तुमने कभी भी ख्वाबों की दुनिया में सैर नहीं किया। वह जो कमरे में बन्द पड़ी है, वह मेरी जान की मलिका बन चुकी है। सिर्फ एक बार मैं उसे हमआगोश कर पाया, फिर मैंने चाहा कि उसे सबसे अलग रखकर, दिल के शीशे मे उसकी मुहब्बत की शराब भरकर रोज पिया करूं। पर वह मरने मारने पर तैयार है। दरवाजा भी कम्बख्त यूं टूटने वाला नहीं। किसी लुहार को बुलाना पड़ेगा। सोचा तुम्हारी मदद से काम बन जाता।'

'इतनी जल्दी क्या है?' ड्राइवर ने कहा—'कल कोशिश कर लेना। आज तो मुझे आप इजाजत दीजिये।'

'फिर कल सही' गुण्डेजादे ने कहा— 'कोई बात नहीं। कम्बख्त मर थोड़े ही जायेगी। मैंने देखा है कि एक दो हफ्ते फाका करने से कोई काफिर औरत मरती नहीं। हां इसी अरसा में अच्छे को सदी का दिमाग ठीक हो जाता है, और समझ आ जाती है, जिद चली जाती है। सच तो ये है कि वे अपनी ताकत कुछ खो बैठती हैं, फिर उस वक्त आप जो चाहें करा सकते ।'

ड्राइवर धीरे धीरे मकान के बाहर आया। उसके हृदय की वेदना अपार थी, फिर भी चुप था। वह यही सोच रहा था कि किस प्रकार इन निस्सहाय अबलाओं की रक्षा की जाये।

(क्रमशः)

अर्जुनस्य प्रातज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १७] दिल्ली, रविवार ३ बैसाख सम्वत् २००८ [अङ्क ५१

अब्दुल्ला के मुँह में लगाम दो

अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से तो काश्मीर समस्या उलझ ही चुकी है अब उसको अन्दर से भी उलझाया जा रहा है। नेशनल कान्फ्रेंस के प्रधान और रियासत के प्रधान मन्त्री शेख अब्दुल्ला रियासत में ऐसी नीति पर चल रहे हैं, जो कि भारत और रियासत, विशेष कर वहां के रहने वाले हिन्दुओं के लिये घातक है। इस नीति के परिणाम स्वरूप काश्मीर के ८० हजार हिन्दुओं में से आधे के लगभग अपना घर-बार छोड़ कर भारत में आ चुके हैं। अब जम्मू के लोगों में भी आतंक फैला कर उसे हिन्दुओं से खाली कराने का प्रयत्न किया जा रहा है। शेख अब्दुल्ला द्वारा जम्मू के पास पेंथल ग्राम में दिया गया भाषण इस घातक नीति का ही परिचायक है।

शेख साहब ने रियासत के वैधानिक प्रमुख युवराज करणसिंह को धमकी दी है कि उसे भी अपने बाप की तरह रियासत से निकाल दिया जायगा। शेख साहिब के कथनानुसार युवराज का दोष यह है कि वे नेशनल कान्फ्रेंस के अतिरिक्त अन्य लोगों को भी मिलते हैं। वे लोग हैं प्रजापरिषद् के नेता। शेख साहिब ने प्रजा परिषद् और इसके वयोवृद्ध नेता पण्डित प्रेमनाथ डोगरा को भी जड़मूल से नष्ट कर देने की धमकी दी है।

युवराज करणसिंह का रियासत के वैधानिक प्रमुख होने ... विभिन्न विचारों के लोगों से मिलना-जुलना उचित भी है और आवश्यक भी। यदि शेख अब्दुल्ला इसे बुरा मानते हैं तो उन्हें पण्डित नेहरू को कहना चाहिए कि वे पहले राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद पर रोक लगायें कि वे कांग्रेसियों के अतिरिक्त किसी अन्य भारतीय को न मिलें।

प्रजा परिषद् जम्मू प्रांत की प्रमुख राष्ट्रीय राजनैतिक संस्था है। सहस्रों मुसलमान भी इसके सदस्य हैं। जम्मू प्रदेश में हिन्दू बहुसंख्या में होने के कारण इस संस्था में हिन्दुओं का बहुसंख्या में होना उतना ही स्वाभाविक है जितना कि नेशनल कान्फ्रेंस में मुसलमानों का बहुसंख्या में होना। प्रजा परिषद् की सभी मांगें—रियासत पर भारत का विधान लागू हो और इसको भारत की अन्य इकाइयों की तरह ही भारत का अविभाज्य भाग माना जाय—देशहित का द्योतक है। उनमें साम्प्रदायिकता कहां है?

परन्तु यदि शेख अब्दुल्ला रियासत को भारत से अलग एक स्वतन्त्र राज्य बनाने का स्वप्न देख रहे हैं, तो उनके द्वारा प्रजा परिषद् का विरोध समझ में आ सकता है क्योंकि प्रजा परिषद् रियासत के उन लोगों का जो रियासत को भारत का अविभाज्य अंग बनाना चाहते हैं, प्रतिनिधित्व करती है। परन्तु शेख साहिब को याद रखना चाहिये कि काश्मीर में स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने का उनका स्वप्न कभी फलीभूत नहीं हो सकता। इसके लिये प्रजापरिषद् ही क्या सारा भारत उनका विरोध करेगा। जम्मू व काश्मीर के भविष्य का निर्णय अब्दुल्ला या केवल रियासत के लोगों द्वारा ही नहीं किया जा सकता। काश्मीर भारत का अंग है और भारत के लोग ही काश्मीर के विषय में अंतिम फैसला कर सकते हैं।

इसलिये यह आवश्यक हो गया है कि शेख अब्दुल्ला को स्पष्टतया यह बताया जाय कि उसका रियासत में स्थान क्या है। यह ठीक है कि वे पण्डित नेहरू के मित्र हैं। परन्तु वैधानिक दृष्टि से वे उसी प्रकार महाराजा काश्मीर के प्रधान मन्त्री हैं, जिस प्रकार पं० नेहरू, राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद के। वे काश्मीर में अपने दल की तानाशाही स्थापित करना चाहते हैं परन्तु जब तक भारत एक प्रजातन्त्रीय देश है काश्मीर में भी उनकी तानाशाही नहीं चल सकती। इसलिए उनको अपने दिल में और कर्मों के हित में अपने मुंह पर अंकुश लगाना चाहिए। भारत सरकार का भी कर्त्तव्य है कि वह शेख साहिब के मुंह में लगाम दे। जम्मू की जनता में उनके विरुद्ध बढ़ते हुये रोष का उपचार करे। अन्यथा इसका फल भारत तथा जम्मू व काश्मीर रियासत दोनों के लिये बुरा होगा।

★

सतर्क होने की आवश्यकता

अमेरिका के एटर्नी जनरल ने घोषणा की है कि अमेरिका में सोवियत् रूस के लिए काम करने वाले जासूसों की और गिरफ्तारियां होने वाली हैं। ये जासूस कम्यूनिस्ट पार्टी के बड़े सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं और ये न केवल परमाणु निर्माणालयों में, वरन् दूसरे क्षेत्रों में भी घुसे हुए हैं। इटली के कम्यूनिस्ट नेता तोग्लियाती ने भी पिछले दिनों घोषणा की थी कि यदि रूस व इटली में युद्ध हुआ, तो इटली की ओर से हम रूस के विरुद्ध नहीं लड़ेंगे। अमेरिका और इटली में ही नहीं, अन्य देशों में भी कम्यूनिस्ट अपने देश से अधिक रूस को प्रेम करता है। जो बात अन्य देशों में है, वही भारत में भी सम्भव है। वस्तुतः जो दल प्रत्येक बात के लिए दूसरे देश का मुंह ताकता है, उससे प्रेरणा लेता है, उसकी देशभक्ति सदा संदिग्ध रहती है। आज जबकि हमारे देश में राष्ट्रीयता की उग्र भावना का अभाव है, तब ऐसे किसी व्यक्ति या दल के सम्बन्ध में सतर्क रहने की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है, जिसकी देशभक्ति संदिग्ध हो और कम्यूनिस्ट दल निःसन्देह ऐसा ही है।

संविधान का संशोधन

भारत सरकार देश के विधान में कुछ संशोधन करने जा रही है। आवश्यकता होने पर संशोधन अवश्य करना चाहिये। यह ठीक है कि आज देश में अनेक ऐसी समस्याएं पैदा हो गई हैं, जिनके समाधान के लिए संशोधन आवश्यक हैं। वेश्यायें किसी मुहल्ले से नहीं निकाली जा सकतीं, जमींदारी का उन्मूलन नहीं किया जा सकता, एक हाईकोर्ट के निर्णय के अनुसार तो हत्या तक के लिए प्रेरित करने वाले को विधान अपराधी नहीं मानता, स्पष्ट देशद्रोही कम्यूनिस्ट भी कानून की गिरफ्त में नहीं आते और साम्प्रदायिक योजना फैला कर पंजाब का वातावरण विषाक्त करने वाले मास्टर तारासिंह भी मुक्त हो जाते हैं। एक हाईकोर्ट मादक वस्तुओं का रखना भी नागरिक अधिकार मानते हैं। इन समस्याओं का समाधान होना ही चाहिये और भारत सरकार इस दिशा में ही आवश्यक संशोधन कर रही है। किन्तु हमें यह भय अवश्य है कि सरकार ऐसे संशोधन पेश कर दे जिससे वह नागरिकों के स्वातन्त्र्य का बिलकुल ही अपहरण कर दे। हमें बहुत जल्दबाजी में बिना पूर्ण विचार किए संविधान में कोई ऐसा संशोधन पेश नहीं करना चाहिये, जिसे फिर बदलने की आवश्यकता अनुभव हो। इसलिए हमारी सम्मति है कि सरकार के प्रस्तावित संशोधनों पर देश में पूर्ण विचार हो सके, इतना समय अवश्य दिया जाना चाहिए। केवल पार्लमेंट के सदस्य सरकार की हां में हां मिला सकते हैं। देश के विभिन्न दलों, विद्वानों और पत्रों में इन संशोधनों की खूब चर्चा होनी चाहिये और तब गहरे विचार मन्थन के बाद संविधान में कोई संशोधन करना चाहिये। संविधान देश का गम्भीर और पवित्र वस्तु है, उसे हलके मन से हमें नहीं लेना चाहिये।

बदनाम कानून

राष्ट्रपति ने पंजाब के इन्तकाल आराजी कानून को रद्द कर दिया। यह कानून आज से ५० वर्ष पूर्व अंग्रेज सरकार ने बनाया था। यों इसका उद्देश्य किसानों की भूमि को गैर किसानों के हाथ में जाने से बचाना था, किन्तु इसमें जमींदारी की जो व्याख्या की गई थी, उसी ने इसे अत्यन्त विषाक्त बना दिया था। कुछ मुस्लिम जातियों को जमींदार मान लिया गया था और उन्हीं के समान मध्यम या निम्न श्रेणी के हिन्दुओं को जमींदार नहीं माना गया था। सर सिकन्दर हयातखां और टीवाना परिवार तो जमींदार माने जाते थे और स्वयं हल चलाने वाला हरिजन जमींदार नहीं माना जाता था। इसका परिणाम यह हुआ कि पंजाब की भूमि हिन्दू ... नहीं सके। यदि जमींदार की यह पक्षपातपूर्ण व्याख्या नहीं होती, तो पश्चिमी पंजाब की तीन चौथाई जमीन पर हिन्दुओं का ही अधिकार होता। जमींदारों को वहां के सरकार जो सुविधाएं देती थी, उनका लाभ सम्पन्न मुसलमान उठा सकता था, अल्पाय निर्धन हिन्दू नहीं। ऐसे कानून का अंत आज से बहुत पहले से ही हो जाना चाहिये था। अब भी हो गया, तो इससे गरीब हरिजन तो लाभ उठा सकेंगे।

चित्रपटों में कुरुचिपूर्ण दृश्य

अमेरिकन तरुणों में मद्य पान की प्रवृत्ति वेग से बढ़ रही है, यह देख कर अमेरिकन फिल्म निर्माता संघ ने अपने आधारभूत नियमों में नये संशोधन किये हैं। भविष्य में मद्यपान चित्रों में बहुत कम दिखाया जायगा। आत्म-हत्या का भी औचित्य व समर्थन नहीं दिखाया जायगा, अपराधियों द्वारा अधिकारियों की हत्या कथा में अनिवार्य होने पर ही दिखाई जायगी, शृंगार के उत्तेजक दृश्य भी जन-मनोरंजन के लिए अनुचित माने गये हैं। दक्षिणी अफ्रीका के देहातों के सलाहकार बोर्ड के एक सदस्य ने भी यह सूचना दी है कि जिन सिनेमा खेलों में नायक नायिका को चुम्बन करते प्रदर्शित किया गया है,

काश्मीर

लेखक—

श्री द्वारिका खोसला

बच्चों को तो रेत के घर बनाते और उन्हें तोड़ते लोग देखा करते हैं, किन्तु सारे विश्व की शान्ति का भार ऊपर लेने वाली सुरक्षा-परिषद् इस प्रकार घरौंदे का खेल खेलेगी, यह कौन समझ सकता है। गत तीन वर्षों में काश्मीर पर सुरक्षा परिषद् ने कितने प्रस्ताव पास किये और फिर उनकी उपेक्षा की। अब आंग्ल-अमरीकी नया प्रस्ताव आया है, जिसमें पाकिस्तान की मांग का कि 'काश्मीर में संविधान सभा बुलाने की निन्दा की जाय, पंचायत सिद्धान्त मान लिया जाय और सीमा परिवर्तन की बात हटा दी जाय,' शांति समावेश कर लिया गया है। इस प्रस्ताव द्वारा 'डिक्सन रिपोर्ट' रद्दी की टोकरी में फेंक दी गयी है और कहा गया है कि राष्ट्र संघ ने नये प्रतिनिधि को असैनिकीकरण के सम्बन्ध में काश्मीर कमीशन के पहले दो प्रस्तावों के आधार पर बात कर तीन महीने के भीतर सुरक्षा-परिषद् को बतलाना होगा कि वह सेना हटाने का काम पूरा कर सकने या इसके लिए एक योजना पर सब पक्षों का मतैक्य प्राप्त कर सकने में समर्थ हुआ या नहीं। इसके बाद हेग स्थित अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय द्वारा दोनों पक्षों के परामर्श से एक या इससे अधिक पंच नियुक्त किये जायेंगे।

जब काश्मीर कमीशन, मिस्टर मेकनाटन, सर ओवनडिक्सन भारत पाकिस्तान में मतैक्य स्थापित कराने में असफल रहे, तब नया प्रतिनिधि ही इसमें कैसे सफल होगा? ब्रिटेन तथा अमरीका इसका अनुभव न करते हों, ऐसा नहीं। यह तो पंचनिर्णय की बात सबल बनाने के लिए भूमिका बांधी गयी है और भारत पर अप्रत्यक्ष रूप से दबाव डालने की कूटनीतिक चाल चली गयी है जिससे भारत को ऐसे चक्कर में फांस जाय कि वह या तो अमरीका के प्रति अपना आलोचनात्मक दृष्टिकोण छोड़ 'मित्र' बन जाय अथवा काश्मीर के सामरिक क्षेत्र को छोड़ने के लिए तैयार हो जाय।

सामरिक महत्व

भारत-पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के अतिरिक्त रूस, तथा चीन की सीमा पर स्थित होने के कारण काश्मीर एक अत्यधिक महत्वपूर्ण सामरिक केन्द्र है। यहां उन का लगभग आधा दर्जन देशों के विरुद्ध सैनिक कारंवाई चलाई जा सकती है। तृतीय विश्वयुद्ध में, जिसका मुख्य क्षेत्र एशिया के होने का अनुमान है, काश्मीर को गढ़ बना कर लड़ने वाले को पर्याप्त सुविधायें रहेंगी, सम्भवत: यही कारण है कि पाश्चात्य राजनीतिज्ञों ने उसे 'मित्र' हाथों में रखने की ठानी है। अधिक नहीं तो काश्मीर का गिलगित क्षेत्र वे अत्यन्त उपयोगी समझते हैं और इसे पाकिस्तानी पिट्ठुओं के हवाले कर देना चाहते हैं।

नेहरू बाज़ हारे

आंग्ल-अमरीकी इस दुश्चेष्टा का कारण भारत की ढुलमुल अन्तर्राष्ट्रीय नीति भी कही जा सकती है। सुरक्षा समिति के कुल ११ सदस्यों में से ८ ने प्रस्ताव के पक्ष में मत दिया और रूस व युगोस्लाविया तटस्थ रहे तथा भारत मामले से संबद्ध रहने के कारण मतदान से वंचित रहा। [illegible] के प्रतिनिधि ने भारत को बुरी तरह फटकारा और हर मामले पर गरजने वाला रूस मौन रहा। इस प्रकार लगभग सारी सुरक्षापरिषद् पाकिस्तान के पक्ष में रही और भारत जिसे नेहरू जैसे 'अन्तर्राष्ट्रीय' नेता प्राप्त हैं बाजी हार गया। नेहरू ने काश्मीर के मामले को राष्ट्र संघ में ले जाने के औचित्य पर अपनी समस्त प्रतिष्ठा की बाजी लगाई थी। किसी दूसरे लोकतन्त्र देश में ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर प्रधान मंत्री अपने पद से त्याग पत्र दे देते, किन्तु हमारे यहां नेहरू ने ऐसा नहीं किया और न साथ ही अपनी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर पुनर्विचार कर उसे ठीक करने का ही यत्न किया। अभी तक हमारी 'तटस्थ' नीति जिसका परिणाम सारे विश्व को नाराज कर लेना है, जारी है। अभी तक हम जमीन पर रहते हुए आकाश में उड़ने की बातें करते हैं और अपने से कई गुना प्रगतिशील देशों को शिक्षा दे रहे हैं। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हम काश्मीर के मामले पर सहानुभूति खो बैठे हैं और घर में तो

यह नहीं हुआ

अक्टूबर १९४७ में जब पाकिस्तानी सैनिकों के नेतृत्व में कबाइली काश्मीर पर चढ़ आये, भारतीय जनता में यह

[शेष पृष्ठ २१ पर]

उन पर प्रतिबन्ध लगाया जायगा। पर्दों पर चुम्बन क्रिया देखने से लड़कियां चुम्बन करना सीख गई हैं। विद्यार्थों में आज कुरुचिपूर्ण सिनमा के विरुद्ध जो भावना फैलने लगी है, किन्तु भारत के चित्रों में कुरुचिपूर्ण प्रदर्शन बढ़ते जा रहे हैं। क्या इस सम्बन्ध में शीघ्र कोई कारंवाई करके राष्ट्र के नैतिक पतन को रोकने के लिए सरकार प्रयत्न नहीं करेगी?

चुनाव संबंधी समस्याएं

यह स्मरण रखने की बात है कि हमारे आगामी चुनाव में जो मतदाता भाग लेंगे उनमें बहुत बड़ी संख्या में स्त्रियां, वृद्ध, अशक्त अथवा रोगी भी होंगे। यदि मतदान के लिए इन्हें दूर दूर के मतदान केन्द्रों पर जाना पड़ा तो निश्चय ही इन्हें बहुत कठिनाई असुविधा तथा कष्ट होगा। पहले तो ऐसा भी होता था कि चुनाव में खड़े होने वाले उम्मीदवार अपने खर्च पर मतदाताओं के आने-जाने की व्यवस्था करते थे और इस प्रकार उनका बहुत रुपया व्यय होता था। स्पष्ट ही इस प्रकार, धनी उम्मीदवार अन्य उम्मीदवारों की अपेक्षा लाभप्रद स्थिति में रहते थे। किन्तु आशा है कि आगामी चुनाव में उम्मीदवारों द्वारा मतदाताओं को मतदान केन्द्रों तक स्थानान्तरित किये जाने की व्यवस्था पर विधि द्वारा रोक लगा दी जायगी। इसके अतिरिक्त आगामी चुनाव इतने व्यापक स्तर पर होगा कि उम्मीदवारों को यदि यह व्यवस्था करने की छूट दी गई तो बहुत धन व्यर्थ में नष्ट होगा। इसलिए स्थानान्तरण की आवश्यकता को ही समाप्त करने के लिए ऐसा प्रबन्ध किया जा रहा है कि मतदान केन्द्र मतदाताओं के समीप ही हों।

मत दान केन्द्र

पिछले अनुभव से ज्ञात हुआ है कि चुनाव अधिकारियों का एक दल एक दिन में १,००० मतदाताओं से मतदान का कार्य सम्पन्न करा सकता है। इसलिए प्रति १००० मतदाताओं के लिए एक मतदान केन्द्र बनाने का विचार किया जा रहा है। इसके साथ ही यह भी व्यवस्था की जा रही है कि एक मतदान केन्द्र, अधिक से अधिक ४ वर्ग मील की परिधि में रहने वाले मतदाताओं के लिए हो और उन्हें मतदान के लिए ३ मील से अधिक दूरी से न आना पड़े। यह सब व्यवस्था करने का उद्देश्य यह है कि मतदाताओं को देश की सरकार के चुनाव के महत्वपूर्ण कार्य में कोई कठिनाई न हो।

परदे वाली स्त्रियां

जिन क्षेत्रों में मत देने वाली स्त्रियां परदा करती हैं वहां पुरुषों तथा स्त्रियों के लिये अलग-अलग मतदान केन्द्र होंगे, जहां परदे की प्रथा नहीं है वहां स्त्री तथा पुरुष मतदाताओं के लिए एक ही केन्द्र होगा। यथा सम्भव यह भी प्रयत्न किया जायगा कि स्त्री मतदाताओं को मतदान के विषय में समझाने के लिए स्त्री कर्मचारी उपस्थित रहें।

राज्यीय विधान सभा तथा लोकसभा के सदस्यों का चुनाव साथ ही होगा। इससे जहां एक ओर तो समय, खर्च तथा श्रम की बचत होगी वहां दूसरी ओर यह मतदाताओं के लिए भी सुविधा जनक होगा। प्रत्येक मतदाता को पहले विधान सभा के चुनाव के लिए मतदान पत्र दिया जायगा। जब वह अपना मत दे देगा तो फिर उसे लोक सभा के चुनाव का मतदान पत्र दिया जायगा, जो भरकर दूसरी जगह देना होगा। मतदान का कार्य अत्यन्त गोपनीय होगा और मतदान केन्द्र का प्रधान अधिकारी भी मतदान-पत्र का विवरण नहीं जान सकेगा। उचित तथा स्वतन्त्र चुनाव के लिए यह गोपनीयता अत्यन्त आवश्यक है।

अशिक्षितों की समस्या

चुनाव कार्य की एक और बहुत बड़ी समस्या है। मतदाताओं की बहुत बड़ी संख्या है और उनमें से बहुत से तो ऐसे हैं जो कलम तक पकड़ना नहीं जानते। ऐसे मतदाता यदि अपने मतदान पत्र भरने अथवा उन पर निशान लगाने में मतदान केन्द्र के कर्मचारियों की सहायता लेंगे तो चुनाव की गोपनीयता भंग होगी और बाद में हारने वाले उम्मीदवारों द्वारा यह भी आरोप लगाये जाने की आशंका है कि सरकारी कर्मचारियों ने अशिक्षित मतदाताओं को बहका कर मतदान-पत्रों को गलत भरवाया है। इस कठिनाई से बचने के लिए यह व्यवस्था की गई है कि मतदान-पत्रों के बक्सों पर उम्मीदवारों के ऐसे चिन्ह स्पष्ट रूप से बना दिए जायेंगे जिन्हें देख कर मतदाता उम्मीदवारों के विषय में जान सकें। मतदाता उन बक्सों में अपने मतदान-पत्र बिना, कुछ लिखे अथवा चिन्ह बनाए ही, डाल देंगे।

सुरक्षा, सुविधा, टिकाऊपन तथा मितव्ययता को ध्यान में रखते हुए मतदान के लिए लोहे का बक्स रखने का निश्चय किया गया है। मतदान पत्रों को ऐसा छपवाया जा रहा है कि उनमें

[शेष पृष्ठ २२ पर]

मेरी पहली कांग्रेस

★ श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

राजनीति की ओर मेरी बचपन से ही प्रवृत्ति थी। विद्यार्थी अवस्था में गणित और विज्ञान का विद्यार्थी होते हुए भी रिक्त समय में मैं गुरुकुल पुस्तकालय की इतिहास और राजनीति की पुस्तकों के गिर्द ही रहता था। समाचार पत्रों में देश की हलचलों का वृत्तांत पढ़ कर मेरा दिल उनमें भाग लेने को उछलता रहता था। अपनी छात्रावस्था की नोट बुकों को देखता हूं, तो मुझे स्वयं आश्चर्य होता है कि मैं उनमें स्नातक बनने के पश्चात् आनन्द मठ के ढंग की समिति बनाने के मन्सूबे लिखा करता था। बड़े भाई हरिश्चन्द्र जी की प्रवृत्ति मुझ से भी अधिक सार्वजनिक और राजनीतिक थी। फलतः यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि स्नातक बनने के पश्चात् कांग्रेस का जो पहला अधिवेशन हुआ, हम दोनों भाई उसे देखने के लिए कलकत्ता गए। हम दोनों ने पिताजी के सामने कांग्रेस देखने का विचार प्रकट किया, तो उन्होंने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन दिनों गुरुकुल में कृषि के उपाध्याय प्रो० महेशचरण सिन्हा एम० एस० सी० थे। प्रो० सिन्हा ने अमेरिका से विशेष आविष्कार करने के फलस्वरूप एम० एस० सी० की उपाधि प्राप्त की थी। वह कट्टर राष्ट्रीय विचारों के विद्वान थे और विदेशों में शिक्षा प्राप्त करने पर भी हिन्दी से प्रेम रखते थे। वे भी हम दोनों के मार्गदर्शक बन कर हमारे साथ कलकत्ते जाने को तैयार हो गये। इस प्रकार एक अनुभवी पथदर्शक के साथ हम दोनों भाई पहली राजनीतिक तीर्थ यात्रा के लिए चले।

हमें कलकत्ते जाकर कांग्रेस का अधिवेशन देखने का शौक तो था ही, उससे भी अधिक शौक था उन महापुरुषों के देखने का, जिनके नाम हम समाचारपत्रों में पढ़ते थे। उन दिनों दादाभाई नौरोजी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, गोपालकृष्ण गोखले, लाला लाजपतराय, पं० मदनमोहन मालवीय आदि नेताओं के नाम समाचारपत्रों में बहुत आते थे। वे सूरत शक्ल में कैसे हैं, उनके बोलने का ढंग क्या है? लोग उनका स्वागत कैसे हैं? ऐसे-ऐसे प्रश्नों

के ढेर के नीचे भी नहीं दबीं।

पहले उस समय की व्यक्ति-संबंधी स्मृतियों को अंकित करूंगा, फिर संस्था-सम्बन्धी। उस अधिवेशन का स्मरण होने पर जो चित्र बहुत स्पष्टता से आंखों के सामने आता है, वह बंगाल-केसरी सुरेन्द्रनाथ बनर्जी का है। उस समय सुरेन्द्रनाथ बनर्जी की ख्याति शिखर पर थी। वह देश के सर्वोत्कृष्ट वक्ता तो माने ही जाते थे, साथ ही अंग्रेजी नौकरशाही को पता बताने वाले वीर देश भक्तों के अग्रणी भी स्वीकार किये जाते थे। अपने पिताजी, आचार्य रामदेवजी से उनकी वक्तृत्व शक्ति की प्रशंसा सुन कर हमारे हृदयों में उनके देखने या सुनने की अत्यन्त उत्कट अभिलाषा उत्पन्न हो गई थी। फलतः जब उनके भाषण का समय आया, तब हम लोगों का हृदय उत्सुकता से उछलने लगा।

हमने देखा कि सुरेन्द्र बाबू का भाषण सुनने के लिए हम ही उत्सुक नहीं थे, पण्डाल के अन्दर और बाहिर जितने लोग उपस्थित थे, वे बंगाल के सिंह की गर्जना सुनने के लिए उतावले हो रहे थे। पण्डाल से बाहिर गये हुए प्रतिनिधि और दर्शक भी भाग-भाग कर पण्डाल में आने लगे, जब सभापति ने यह सूचना दी कि अब मि० सुरेन्द्रनाथ बनर्जी प्रस्ताव पर भाषण देंगे। इस सूचना के हो जाने पर भी कुछ लोग बाहिर रह गये थे, वे दो-तीन मिनट के अन्दर ही अन्दर पण्डाल में खिंच आये, क्योंकि वक्ता के पहले दो-तीन वाक्यों ने ही आकाश में गूंज कर चारों ओर सूचना दे दी कि बंग केसरी दहाड़ रहा है।

कहावत प्रसिद्ध है कि ऊंची दुकान फीका पकवान। परन्तु हम दोनों भाइयों ने उस समय यह अनुभव किया कि सुरेन्द्र बाबू की

श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

सम्बन्ध में दिया था। दूसरा महात्मा गांधी ने असहयोग का प्रस्ताव उपस्थित करते हुए अहमदाबाद की कांग्रेस में दिया था और तीसरा अमेरिका से लौटने पर ला० लाजपतरायजी ने गुरुकुल कांगड़ी में दिया था। उनकी विशेष चर्चा अपने-अपने स्थान पर आयेगी, यहां तो केवल इतना बतलाना अभीष्ट है कि वे चार भाषण मेरे ४० वर्षों के स्मृतिपट पर बहुत गहरी और स्पष्ट रेखाओं में खिंचे हैं।

बंग केसरी की वक्तृत्वकला की क्या विशेषतायें थीं?

पहली विशेषता यह थी कि वह जिस भाषा—अंग्रेजी में बोलते थे, उस पर पूरा अधिकार रखते थे। उन दिनों भारत का ज्ञान गुरु इंग्लैंड था। इंग्लैंड में वह युग ग्लैडस्टोनियन-युग के नाम से प्रसिद्ध था। ग्लैडस्टोन अपने समय का सबसे अधिक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ, और प्रभावशाली वक्ता था। उसकी भाषणशैली अपने ढंग की अलग ही थी—समालोचक लोग उसे डिमास्थनीज और सिसरो का उत्तराधिकारी कहते थे। सुरेन्द्र

जब सिलसिला उनके वाक्य बहते और उछलते हुए बढ़े चले जाते थे, तब ऐसा अनुभव होने लगता था कि मानो नौका पर बैठ कर आकाश में उड़ती हुई गंगा की लहरों पर तैर रहे हैं। कभी कभी तो श्रोताओं पर ऐसा उन्माद अधिकार कर लेता था कि वे प्रत्येक वाक्य के अन्त में तालियां बजा कर अपने भाव को सूचित करते थे।

यह मैंने कलकत्ते के उस अधिवेशन की बात लिखी, जो मेरे अनुभव का पहला अधिवेशन था। उसके पश्चात् भी मैंने कई बार सुरेन्द्र बाबू के भाषण सुने, परन्तु उस पहले भाषण का सा आनन्द नहीं आया। इसका शायद यह भी कारण है कि धीरे धीरे कांग्रेस की राजनीतिक रुचि दो ऐसे दलों में विभक्त होती गई, जिनमें से एक नरमदल के नेता सुरेन्द्र बाबू समझे जाते थे। और देश के नवयुवक दूसरे गरमदल के साथ सहानुभूति रखते थे। फलतः सुरेन्द्र बाबू के शब्दों का तेज मन्द होता जा रहा था—अथवा यों कह सकते हैं कि नवयुवक दल को उस में तेजी की कमी अनुभव होने लगी थी।

मैंने उस अधिवेशन में और भी अनेक महापुरुषों को देखा, और उनके भाषण सुने। उनमें से कोई भी मेरे हृदय पर विशेष रूप से अंकित नहीं हुआ।

कांग्रेस के उस अधिवेशन के सम्बन्ध में मेरी अन्य स्मृतियां बहुत अच्छी नहीं हैं। उस समय की कांग्रेस वस्तुतः बाबू कांग्रेस थी। कोट पैंट वाले वकीलों, डाक्टरों और धनी व्यक्तियों की उसमें प्रधानता रहती थी। पं० मदनमोहन मालवीयजी जैसे कुछ नेता अपनी वेषभूषा में दिखाई देते थे, परन्तु वे अपवाद थे, नियम नहीं। शेष सब प्रतिनिधि और दर्शक अपने बढ़िया से बढ़िया विलायती वेश में परिवेष्टित हो कर आते थे, और स्टेज

एक रहस्य का उद्घाटन

द्वितीय महायुद्ध की विजय का श्रेय

★ डा० गिरिराज कुमार

जिन दिनों योरुप का द्वितीय महायुद्ध चल रहा था और नित्य प्रति जर्मनी की विजय के समाचार आ रहे थे, राष्ट्र पर राष्ट्र पराजित हो रहे थे, फ्रांस घुटने टेक चुका था और डनकर्क जैसी पराजय का मित्रों को मुंह देखना पड़ा था, उस समय प्रतिक्षण इंगलैंड पर जर्मनी के सीधे आक्रमण की आशंका की जा रही थी। आशंका क्या, एक प्रकार से लोग इसे सुनिश्चित ही समझ रहे थे। किन्तु कई मास तक प्रतीक्षा करने पर भी वह आक्रमण नहीं हुआ और फिर वह कभी हुआ ही नहीं। लोगों ने इस पर अनेक प्रकार की अटकलें लगाईं, किन्तु बहुत दिनों तक वास्तविक रहस्य का भेद न खुला और वह एक रहस्य ही बना रहा।

लोगों का अनुमान था कि रेडियो से सम्बन्ध रखने वाला कोई ऐसा आविष्कार किया गया है अथवा कोई ऐसी किरण या रश्मि निकाली गई है, जिसके द्वारा शत्रु के वायुयानों को आकाश में ही नष्ट कर दिया जाता है। इस प्रकार के अनेक अनुमान किये जा रहे थे, किन्तु वास्तविक रहस्य का किसी को भी पता न था। २१ अगस्त १९४३ को मित्र राष्ट्रों की ओर से सम्मिलित वक्तव्य प्रकाशित कर इस रहस्य पर से आवरण हटाया गया। इस से एक वर्ष पूर्व भी २३ अप्रैल १९४२ को अमेरिका के युद्ध मन्त्री ने पत्र प्रतिनिधियों के सम्मेलन में प्रकट किया था कि अपने देश की समुद्री तट-पंक्ति पर ऐसे विद्युन्नेत्र सर्वत्र लगा दिए गए हैं, जो हमारे देश की ओर आते हुए शत्रु वायुयानों को सैंकड़ों मील की दूरी पर देख लेते हैं। इस नेत्र की दृष्टि में अन्धकार कोहरे अथवा बादलों से कोई रुकावट नहीं होती।

ब्रिटेन ने भी अपने समुद्री तटों पर पांच सौ से अधिक ये यन्त्र लगा रखे थे, जब कि उन दिनों उनके पास लड़ाकू विमानों की संख्या दो सौ से अधिक न थी। इन पांच सौ नेत्रों ने इंगलैंड को बचा लिया। सैंकड़ों मील दूरी से ये नेत्र शत्रु के बम वर्षकों को देख लेते थे, इनके द्वारा संचालित विमानभेदी तोपें, जिनका लक्ष्य अचूक होता था, आग बरसाने लगती थीं। ब्रिटिश लड़ाकू विमान भी मार्ग में ही उनसे जा भिड़ते थे और वे इंगलैंड के तट पर पहुंचने से पहले ही नष्ट कर दिये जाते। पीछे ये नेत्र कुछ छोटे आकार में मित्रराष्ट्रीय वमवर्षकों में भी लगा दिए गये थे, जिसका परिणाम यह हुआ कि ये बमवर्षक खोज खोज कर शत्रु की निर्माणियों और सैनिक महत्त्व के स्थानों को निश्चित रूप से नष्ट करने लगे। इस नेत्र के द्वारा वे अपने नीचे विस्तृत क्षेत्र को उसके पूरे सही विवरण-सहित विमान में बैठे ही बैठे एक चल चित्रपट के समान, अपने सामने लगे तेजोदृगरेख (रेडियोस्कोप) में देख सकते थे और इस प्रकार लक्ष्य स्थानों को प्रत्यक्ष देखे बिना भी उन पर अमोघ प्रहार किया जा सकता था। यही बात युद्ध पोतों की थी। उनमें भी ये नेत्र लगा दिए गये थे। तभी से जर्मनी की पनडुब्बियां नष्ट होने लगीं, शत्रु के बड़े बड़े युद्धपोत, वायुयानवाही पोत और युद्ध सामग्री ले जाने वाले जलयानों के बेड़े बड़ी शीघ्रता से समुद्र के गर्भ में समाने लगे। इसमें मित्र राष्ट्रों की हानि अपेक्षाकृत बहुत कम होती थी। क्योंकि उन्हें किसी प्रकार के साम्मुख्य की आवश्यकता प्राय नहीं पड़ती थी। किन्तु जर्मन सेनाओं का तो जीवन सूत्र ही इस से कट गया।
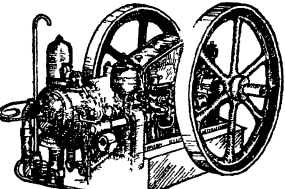
जिस समय हर हेस जर्मनी से स्काटलैंड चुपचाप अपने विमान में आया था, उस समय लंकाशायर में समुद्र तट पर लगे तेजोन्वेष ने उसे देख लिया था। जर्मनी के सर्वोच्च नेताओं में उस समय हेस का तीसरा स्थान था। तेजोन्वेष ने ५० क्रोशक की दूरी से इसके विमान को देख कर ही बता दिया था कि मेशर्शिमिट श्रेणी का एक विमान बड़े वेग से स्काटलैंड की ओर आ रहा है। तेजोन्वेष बराबर उसका पीछा करता रहा। जब विमान नीचे गिरने लगा, तब भी तेजोन्वेष ने सूचना दी कि हैमिल्टन के ड्यूक के राज्य से १२ क्रोशक की दूरी पर विमान नीचे गिर रहा है और अंत में एक वर्ग क्रोशक स्थान भी तेजोन्वेष ने बता दिया, जहां वह विमान पृथ्वी पर गिरा था। तेजोन्वेष की इसी सूचना के आधार पर अधिकारी लोग कुछ क्षण में ही उस कृषि क्षेत्र पर आ पहुंचे, जहां एक साहसी कृषक ने हर हेस को विमान से बाहर आते ही पकड़ लिया था।

यदि भारत सरकार ने हैदराबाद के सम्बन्ध में कासिम के गुप्त आवागमन को रोकने के लिए भारत के पश्चिमी समुद्र तट पर तेजोन्वेष से काम लिया होता, तो सम्भवत: हैदराबाद में आरम्भित कार्यवाही की आवश्यकता ही न होती। यह कासिम ही था, जो विदेशों से शस्त्रास्त्र ला-ला कर हैदराबाद में विद्रोहियों को दे रहा था। बहुत प्रयत्न करने पर भी हमारे वायुयान इसके विमानों को नहीं रोक सके। कारण था तेजोन्वेष का अभाव।

द्वितीय महायुद्ध के समय प्रशान्त महासागर में पर्ल हार्बर पर विनाशकारी जापानी हवाई आक्रमण की बात प्राय: सभी जानते हैं। इसके सम्बन्ध में एक रहस्य का पता १९४५ में लगा। पर्ल हार्बर का यह विनाश बचाया जा सकता था। समुद्र तट पर लगे एक तेजोन्वेष ने आक्रमणकारी जापानी विमानों के पर्ल हार्बर की ओर आने की सूचना उस समय दे दी थी, जब ये विमान १३० क्रोशक (मील) दूर थे। बात यह थी कि इस तेजोन्वेष पर काम करने वाला व्यक्ति लाकार्ड, जो आते हुए आक्रमणकारी वायुयानों का पता लगाने में सिद्धहस्त था और उसका साथी इलियट जो प्राप्त सूचनाओं के अनुसार स्थान आदि निर्देश का काम करता था, उस समय अपना काम पूरा कर जाने को तैयार बैठे थे और ले जाने वाले लद्दू-वाही (ट्रक) की प्रतीक्षा कर रहे थे। यन्त्र ज्यों का त्यों अभी खुला था, क्योंकि इलियट भी विमानों को खोजने की प्रक्रिया लाकार्ड से सीख लेना चाहता था। जिस समय वह इलियट को सिखाने के लिए यन्त्र को समायुक्त (एडजस्ट) कर रहा था, इसी समय प्रात ७-२ पर अचानक उस यन्त्र के तेजोदृगरेख में वायुयानों का बहुत बड़ा व्यूह द्वीप से १३० मील की दूरी पर पर्ल हार्बर की ओर आता हुआ दिखाई दिया। उसने ७-२० तक इसकी सूचना अपने अधिकारी ले० टेलर को दी। उसी समय दुर्भाग्य से कुछ अमरीकी वायुयान भी उधर आने वाले थे। टेलर ने समझा कि ये वे ही वायुयान हैं और तेजोन्वेष की सूचना पर कोई ध्यान न दिया। इस असावधानी का जो फल हुआ, वह "पर्ल हार्बर दुर्घटना" के नाम से प्रसिद्ध है। यदि तेजोन्वेष के संकेत पर कार्य किया गया होता, तो घटनाओं का क्रम कुछ और ही होता और सम्भव था कि जापान पर परमाणु बम डालने की आवश्यकता ही न पड़ती। कुछ भी हो, इस दुर्घटना से इतनी शिक्षा तो अवश्य मिली कि तेजोन्वेष जैसे सब काम करने वाले यन्त्रों से प्राप्त छोटी से छोटी सूचना

[शेष पृष्ठ २० पर]

संसद में क्या देखा, क्या सुना

अधिक से अधिक ५ वर्ष के भीतर अन्तर्प्रदेशीय माल यातायात चुंगी को पूर्ण रूप से भंग कर दिया जायेगा। यह चुंगी राजस्थान, मध्य भारत, सौराष्ट्र तथा हैदराबाद की सरकारों द्वारा माल लाने तथा बाहर भेजने के लिये ली जाती है।

चुंगी की यह प्रथा धीरे धीरे खत्म की जायगी ताकि इससे जो हानि हो सरकारें उसे पूरा कर दें।

मध्य भारत में इस चुंगी की कमी को बिक्री कर से पूरा करने के लिये कदम उठा लिये गये हैं। राज्य में आने वाली बहुत-सी वस्तुओं पर से आयात कर हटा लिया गया है और इन चीजों पर बिक्री कर लिया जाता है। हैदराबाद सरकार भी धीरे-धीरे चुंगी की दर कम कर रही है। राज्य में आयात की हुई आम वस्तुओं पर चुंगी २५ प्रतिशत तक हटा दी गई है। राज्य में आने वाले अनाज पर यह चुंगी ४० प्रतिशत घटा दी गई है। इसे और कम करने पर विचार किया जा रहा है।

—श्री आयकर

●

१९५१ में सरकारी अन्न के गोदामों से ४० लाख टन अनाज निकाले जाने की आशा है जब कि कुल अन्न वसूली केवल ३५ लाख होगी। इसका अभिप्राय यह हुआ कि २५ लाख टन अनाज की कमी पूरी करनी है।

बिहार, पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा और बम्बई में १११९४२० एकड़ भूमि में जूट की खेती की जा रही है।

—श्री मुंशी

●

वह टेलीफोन का सामान जिसके लिये कुछ समय पूर्व आर्डर दिया गया था, अब प्राप्त हो गया है और शीघ्र ही उसका प्रयोग किया जाने लगेगा।

—श्री किदवई

●

सरकार ने विजगापट्टम और कलकत्ता में जहाजी शिक्षा के दो केन्द्र खोले हैं। यहां जहाजियों को व्यापारिक नौ-सेना के लिये तीन मास की मुफ्त शिक्षा दी जायेगी। इस समय इन जहाजों पर प्रति तमाही लगभग ८० जहाजी शिक्षा पा रहे हैं।

सरकार प्लेटफार्म के टिकटों का मूल्य दो आने से घटा कर १ आना करने का विचार नहीं कर रही है। सरकार से अनेक व्यक्तियों ने इन टिकटों के दाम घटाने की मांग की है।

—श्री सन्थानम

●

सरकार को बुन्देलखण्ड तथा विन्ध्य प्रदेश से पता चला है कि वहां डाकुओं ने एक व्यक्ति के नाक और कान का एक भाग काट लिया और दूसरी जगह एक व्यक्ति की आंखें सुई चुभा कर फोड़ दी गई।

विन्ध्य प्रदेश के चीफ कमिश्नर ने डाकू विरोधी कार्यवाही को तेजी से चलाने के लिए विशेष कदम उठाये हैं। प्रभावित क्षेत्रों में वहां की विशेष सशस्त्र पुलिस चक्कर लगा रही है।

सभी पुलिस थानों में विशेष पुलिस तैनात कर दी गई है और उन्हें स्वयं चलने वाले शस्त्र दे दिये गये हैं।

—श्री आयंगर

●

भारत सरकार इस समय देश के प्रमुख बन्दरगाहों के लिए समान केन्द्रीय कानून बनाने पर विचार कर रही है। इसमें बम्बई, कलकत्ता, तथा मद्रास शामिल नहीं है।

ट्रावनकोर कोचीन के उन विभागों का स्तरीकरण करने पर विचार किया जा रहा है, जिन्हें केन्द्र में मिला दिया गया था। यह कांग्रेस शीघ्र ही समाप्त हो जायेगी।

—श्री आयंगर

●

१९४९-५० में रेलवे का फालतू सामान १०७ लाख रुपये के मूल्य का था। जब १९४८-४९ में यह माल ११२ लाख का था।

इस माल से १९४९-५० में ८९ लाख ५० हजार तथा १९४८-४९ में १२० लाख रुपया प्राप्त हुआ। १९४९-५० में जो सामान खोया या कम पाया गया उसकी कीमत २५८६००० थी और १९४८-४९ के खोए सामान की कीमत ३२८००० रुपये थी।

—श्री संथानम्

●

भारत और जापान के बीच एक व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर हो चुके हैं। यह समझौता १ वर्ष के लिए जुलाई १९५० में लागू हुआ था।

इस समझौते के अन्तर्गत ५१० लाख पौंड के व्यापार का अनुमान है। १२५ लाख पौंड का आयात तथा २५ लाख पौंड का निर्यात किया गया। जापान से नया समझौता करने के लिए टोकियो में बातचीत हो रही है।

जापान से व्यापार करने के प्रश्न पर जापानी मिशन से बातचीत की गई थी। यह मिशन हाल ही में दिल्ली आया था।

— श्री करमाकर

●

मेरे कहने पर मिशन इस प्रश्न पर विचार करने को तैयार हो गया है कि कुछ जापानी विशेषज्ञ भारत भेजे जांय जो उसके घरेलू उद्योग धन्धों का संगठन करें।

श्री महताब

●

भारत की कपड़ा मिलों में ब्रिटेन का १५ करोड़ रुपया लगा हुआ है। भारत के कपड़ा उद्योग में किसी अन्य देश का रुपया नहीं लगा हुआ है, अमरीका या किसी अन्य देश का भी नहीं।

— श्री महताब

●

१९४९ तथा १९५० में ईरान, बाहेरिन, रासतारा, सुमात्रा, सिंगापुर, हिन्देशिया आदि से पेट्रोलियम की २७८८१३० टन तथा २९४६१८१ टन की वस्तुओं का आयात किया गया।

— उत्पादन मन्त्री

●

गत तीन वर्षों में ८८ औद्योगिक योजनाओं को अन्तिम रूप दिया गया। इनमें २३ ६० करोड़ रुपया व्यय होना है। इस राशि में १० ४० करोड़ रुपया विदेशों का है। इन औद्योगिक योजनाओं में साइकलें, कपड़ा बनाने की मशीनें, सीने की मशीनों तथा ग्रामोफोन की सुइयां, बिजली का सामान, कच्ची फिल्में, ऊन, वनस्पति, खेल का सामान फोटोग्राफी का सामान आदि बनाने की भी योजनायें हैं।

इन योजनाओं में विदेशों को भाग लेने की आज्ञा इस शर्त पर दी गयी है कि ऐसी कम्पनियों पर भारतीयों का ही नियंत्रण रहेगा और अधिकांश लाभ उन्हीं के हिस्से में आयेगा। इन उद्योगों में भारतीयों को शिक्षा दी जायगी। इन कम्पनियों के सामने निर्माण के निश्चित कार्यक्रम होंगे। विदेशियों को भारतीय फर्मों से पूर्ण सहयोग करना होगा और उन्हें टेकनिकल सहायता देनी होगी।

— उद्योग मन्त्री

●

३१ मार्च १९५१ तक मजदूर अदालतों में ४१५ अपीलें की गईं। इनमें से १७० अपील मजदूरों ने की थीं तथा २४५ मालिकों ने।

— उद्योग मन्त्री

बर्नस्थित राजदूत के निवासस्थान के लिए १९४९ में एक भवन खरीदा गया था। १९५०-५१ में उसमें कुछ परिवर्तन तथा मरम्मत की जायगी। इसके लिए १ लाख रुपया स्वीकार किया गया है।

खराब मौसम के कारण दिसम्बर १९५० से पूर्व काम आरम्भ नहीं किया गया। आशा है अप्रैल १९५१ तक यह काम पूरा हो जायगा।

भवन सहित इस भूमि का क्षेत्रफल ३०१२ गज वर्ग है। २८४७१५ रुपये में खरीदा गया है।

— डा० केसकर

●

सरकार सिन्दरी में गन्धक बनाने के प्रश्न पर गम्भीरता से विचार कर रही है। इस तरह गन्धक बनाने की भी योजनायें तैयार की जा गयी हैं और उनका निरीक्षण किया जा चुका है। हाल ही में दिल्ली में रसायन कार्यालयों का एक सम्मेलन हुआ था। इसमें प्रस्ताव किया गया था कि इसके लिए फैक्ट्री का निर्माण किया जाय।

भारत ने ५००००० टन लोहा तथा इस्पात आयात करने का निश्चय किया था। किन्तु इस बात में सन्देह है कि वह इससे आधे का भी आयात कर सकेगा या नहीं।

१९५० में यूरोपियन देशों से ८५ प्रतिशत लोहा तथा इस्पात मंगाया गया। कोरिया युद्ध आरम्भ होने के बाद से अमेरिका में इसका मूल्य ८० प्रतिशत तथा जापान में १०० प्रतिशत बढ़ गया। ब्रिटेन में उसका मूल्य २५ प्रतिशत से ८० प्रतिशत तक बढ़ गया।

भारत में ही लोहे और इस्पात का उत्पादन बढ़ाने का प्रयत्न किया जा रहा है। किन्तु सरकार के पास लोहे का कारखाना बनाने के लिए धन नहीं है। जब धन हो जायगा तो पहला कारखाना मध्यप्रदेश में लगाया जायगा।

— उद्योग मन्त्री

शरद् ऋतु में प्रातःकालीन शय्या त्याग

★ मू० लेखक — ले हन्ट

★ अनु० भवानीलाल भारतीय

इटली निवासी एक कवि ने कीड़ों मकोड़ों पर एक कविता लिखी है। उस कविता का आरम्भ वह इस प्रकार करता है कि ये कष्टदायक और घृणित जानवर हमारे क्रोधभाजन बनने के लिए ही उत्पन्न हुए हैं और यह तो निश्चय है कि ईसाई स्वर्ग के ये अधिकारी नहीं हैं। हम उत्तर के निवासी शायद इस प्रकार धार्मिक विश्वास से मतभेद प्रकट करें, परन्तु यह तो घर पर पड़ी बर्फ के समान स्पष्ट है कि आदम को हजामत करने की आवश्यकता नहीं थी और जब हव्वा अपने रमणीक उद्यान से बाहर निकली तो उसका पांव तीन इंच मोटी बर्फ पर नहीं पड़ा था।

कुछ व्यक्ति कहते हैं कि शरद् ऋतु में प्रातःकाल उठना एक अत्यन्त सरल कार्य है। वे आपको कहेंगे, केवल चित्त की दृढ़ता की आवश्यकता है और काम पूरा हो जाता है। यह उतना ही सत्य है जितना कि किसी विद्यार्थी को स्कूल में बैंत खाने पड़ते हैं और कार्य समाप्त हो जाता है। परन्तु हमने अभी तक इस बात पर निश्चित रूप से विचार नहीं किया है। प्रातःकालीन शय्या त्याग के पहले इस बात पर विचार करना एक मनोरंजक मानसिक व्यायाम है। यह कम से कम आलस्य तो नहीं है, हां इसे आप पड़े रहना कह सकते हैं। यह उन लोगों के लिए एक सुन्दर उत्तर प्रस्तुत करता है, जो यह कहते हैं कि एक बुद्धिमान और सुशील मनुष्य के लिए शय्या पर पड़े रहना किस प्रकार सहनीय हो सकता है। कंधों को भली प्रकार कपड़ों से ढंके हुए और मस्तिष्क में शान्ति से विचार करते हुए यह कार्य भली प्रकार हो सकता है। आह, एक बुद्धिपूर्ण आधे घण्टे के समय को व्यतीत करने का यह एक सुन्दर तरीका है।

प्रातःकालीन शय्या त्याग के समर्थक व्यक्ति यदि अपने तर्क को अधिक युक्तिसंगत बनायें तो यह उन्हीं के लिए लाभप्रद हो सकता है। परन्तु उनका तर्क इतना अधिक गलत होता है और वे अपनी बात को इतनी कट्टरता से प्रस्तुत करते हैं कि एक देर से उठने वाला व्यक्ति यह चाहेगा कि जिस समय वह कड़ी ठंड में बिस्तर पर पड़ा हो, ये महाशय ठंड का मजा चखते हुए उसके बिस्तर के आस-पास चक्कर लगायें। ऐसे व्यक्तियों को देर से उठने के दोनों पहलुओं पर विचार करना चाहिए। गर्म बिस्तर में पड़े रहने का आन्तरिक पक्ष और शय्या के बाहर का पक्ष। यदि वे बिस्तर में पड़े पड़े विचारों का आनन्द नहीं ले सकें, तो यह उनकी गलती नहीं है, जो ऐसा कर सकते हैं।

विलम्ब से शय्या त्याग करने वालों की मनोवृत्ति की सावधानी से की गई जांच निम्न परिणाम घोषित करती है। एक देर से उठने वाला कहता है कि मैं रात भर खूब गर्म रहा और मेरी शरीर संचालन की क्रिया एक उष्ण रक्त वाले प्राणी के अनुसार रही। इस प्रकार की अवस्था से एक दम ठंड में निकल जाना एक विषम और अनालोच्य जल्दबाजी तो है ही, परन्तु यह इतनी अस्वाभाविक भी है, जितना कि गर्मी से आग से बर्फ में अचानक हो फेंक दिया जाना। मिल्टन कहता है कि ऐसे व्यक्ति का बिस्तर में से निकलने पर नारकीय दैत्यों से स्वागत होता है।

जब मैं उठने का सर्वप्रथम प्रयत्न करता हूं तो मुझे ऐसा ज्ञात होता है, वे पर्दे जो ठंडी हवा में रहे हैं, ठंड के कारण पत्थर की तरह कड़े हो गये हैं। मेरे आंखें खोलने के पश्चात् सर्व प्रथम वस्तु जो उन से मिलती है, वह मेरी सांस है, जो इस प्रकार निकलती है जिस प्रकार चिमनी में से धुआं निकल कर खुली हवा में मिल जाय। उसके बाद मेरी दृष्टि पार्श्व भाग को जाती है और देखती है कि खिड़कियों पर बर्फ जम गई है। इसका विचार करिये। उसके अनन्तर आता है। 'आज बहुत ठंड है, है न?' 'जी हां, बहुत ठंड है।' 'वास्तव में बहुत ठंड है क्यों है न?' 'जी हां, वास्तव में बहुत ठंड।' 'इस ऋतु को देखते हुये भी रोज से अधिक।' यहां नौकर की हाजिरजवाबी और उसकी प्रकृति की अच्छी परीक्षा हो जाती है और पूछने वाला उत्तर के लिए अत्यन्त उत्सुकता से बाट देखता है।' जी हां, साहब, आज रोज से अधिक ठंड है। (धन्य है इससे अच्छा और सत्यवक्ता नौकर नहीं हो सकता) परन्तु मुझे उठना चाहिए — अच्छा थोड़ा गरम पानी लाओ।' नौकर के जाने और गरम पानी के आने के बीच में एक सुन्दर विश्रान्ति आगई, जिसके कि बीच में उठने से कोई लाभ नहीं। गरम पानी आता है। 'क्या खूब गर्म है?' 'जी हां' — 'शायद हजामत बनाने के लिए खूब गर्म है, थोड़ा ठहरना चाहिए।' 'जी नहीं, यह काम देगा।' (कभी कभी सद्गुणों की क्षति हो जाती है और यही दुखदायी है) 'अच्छा कुर्ता — तुम मेरे कुर्ते को जरा सुखा लाओ, इस मौसम में फलालेन बहुत आर्द्र हो जाता है।' 'जो आज्ञा' यहां फिर पांच मिनट की अमूल्य विश्रान्ति-दरवाजे को खटखटाने की आवाज आती है। 'अच्छा, कुर्ता ले आए, बहुत अच्छा। मेरे मौजे— अच्छा होता जरा इन मौजों पर भी गरम स्त्री कर लाते।' 'जी, बहुत अच्छा।' यहां फिर एक विश्रान्ति। अन्त में अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु तैयार हो जाती है। अब मुझसे हजामत करने के अनावश्यक और आसुरी रिवाज पर सोचे बिना नहीं रह जाता। यह इतनी अमानवीय है। (यहां मैं थोड़ा सा दुबक जाता हूं) इतना गन्दा रिवाज। यहां मैं अपनी रजाई के एक ठण्डे कोने से हट कर गरम कोने में आगया)। कोई आश्चर्य नहीं कि फ्रांस की महारानी ने विद्रोहियों का इसलिए साथ दिया होगा कि वह पतनोन्मुख राजा उसका पति स्वयं उसकी ही तरह साफ चेहरे वाला था। सम्राट जूलियन ने अपनी दाढ़ी को पुन बढ़ाने में जितनी प्रतिभा खर्च की हो, उतनी शायद अन्य किसी लाभदायक कार्य में नहीं की। जरा कार्डिनल बेम्बू के चित्र की ओर देखो, माइकेल एन्जिलो, शेक्सपियर, फिल्चर, स्पेन्सर, चौसर एल्फ्रेड और प्लेटो के चित्रों की ओर देखो। मैं अपनी घड़ी की टिक टिक के साथ ऐसे नाम बता सकता हूं। तुर्कों की ओर देखो—एक वीर और गम्भीर जाति। बगदाद के खलीफा हारू' रशीद की बात सोचिए। आदरणीय मान्टेग्यू की बात सोचिए, जो अपनी माता का सच्चा पुत्र था। पारसी भद्र पुरुषों को देखो, जिनको उपनगरों में मिलते समय हम लज्जा महसूस करते हैं, परन्तु जिनकी वेशभूषा आकृति हमसे भी अधिक सुन्दर है। अन्त में स्वयं उस्तरे की ही बात सोचो—शीत की प्रत्येक अनुभूति से कितना उलटा है—कितना ठंडा, तेज धार वाला, सख्त उस गर्म वातावरण से बिलकुल विपरीत जो अपने माधुर्य से हमारी इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

इसके साथ साथ ठण्ड में अकड़ी हुई उंगलियां जो तुम्हारे अंग को क्षत करने में सहायक हो सकती हैं, ठिठुरता हुआ शरीर, ठंडा अंगोछा, उस पर भी यदि कोई कहता है कि इसमें कोई आक्षेपयोग्य बात नहीं है तो वह आक्षेप करने की अक्षमता ही प्रकट करता है।

[शेष पृष्ठ १८ पर]

प्रभाकर परीक्षोपयोगी लेख—

'शुक्ल' काल की हिन्दी गद्य धारा

★ डा० सुधीन्द्र एम० ए०

हिन्दी गद्य की वह धारा जो १९ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतेन्दु की छाया में निर्झर बन कर प्रवाहित हुई थी, वह बीसवीं शताब्दी के बीस वर्षों में किसी महावीर के प्रसाद से इतनी बलवती और प्रौढ़ हो गई कि उसमें अब कहानी और उपन्यास, नाटक और निबन्ध, आलोचना और अध्ययन गद्य के अनेक रस सरोवर भर उठे, वही गद्य की धारा अब ऐसे समतल क्षेत्र में आ पहुँची थी, जहां उसका विशाल जल-प्रवाह अनेक सुन्दर और सबल धाराओं के रूप में विभाजित हो कर फैल गया और उसने भारत के लोक जीवन के समस्त कोनों को आप्लावित कर दिया। ऐसे कई प्रतिभाशाली महारथी साहित्यकार हिन्दी के राजमन्दिर में अपने अपने सिंहासनों पर प्रतिष्ठित थे। जिनके हाथों से अनेक गौरवमयी निधियां समर्पित हुई थीं। प्रेमचन्द जैसे उपन्यास सम्राट, प्रसाद जैसे सर्वश्रेष्ठ नाटककार और रामचन्द्र शुक्ल जैसे धुरन्धर समालोचक इसी काल को गौरवान्वित करते हैं। भारतेन्दु जिस प्रकार अपने युग के नायक थे, द्विवेदी जी जिस प्रकार अपने युग के अभिनायक थे, उसी प्रकार यह त्रिमूर्ति अब हिन्दी के गद्य साहित्य का संचालन कर रही थी। भारतेन्दु जी सम्पादक के साथ साथ युग को सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा थे। द्विवेदी जी 'सरस्वती' के सूत्रधार होने के कारण हिन्दी सरस्वती के सूत्रधार बने थे। परन्तु इस युग में यह मुकुट किसे पहिनाया जाय। जिस युग में राजमुकुट मूर्छित हो रहे हों, उस युग में मुकुटधारी सम्राट कोई नहीं बन सकता, परन्तु प्रत्येक युग में एक व्यक्तित्व ऐसा होता है, जिस का प्रत्यक्ष काल में श्री रामचन्द्र शुक्ल का ऐसा व्यक्तित्व था। वे एक सम्पादक तो नहीं थे, जिसका प्रभाव साहित्यकारों पर होता है। परन्तु वे एक ऐसे विद्वान समालोचक थे कि जिन में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में सामयिक गद्य लेखकों को ही नहीं कवियों को भी प्रेरणा और प्रोत्साहन, आदेश और निर्देश मिलता था। वे अपने युग के एक सजग प्रहरी थे और इसी अर्थ में हम इस काल का संचालन श्रेय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को देकर इस काल का शुक्ल काल नामकरण कर सकते हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि प्रेमचन्द का कथा साहित्य पर प्रसाद का नाटक साहित्य पर था। किसी और व्यक्ति का कविता साहित्य पर एकच्छत्र आधिपत्य न था।

इस शुक्लकाल में गद्य साहित्य का ऐसा कोई अंग नहीं बचा, जिसमें समृद्धि न हुई हो। कथा कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध (भावात्मक, गद्य गीत, और विचारात्मक) तथा आलोचना और इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र और विविध विज्ञान के साहित्य की सृष्टि इस काल में हुई है। इस छोटे से लेख में इस समृद्ध निधि का केवल एक विहंगावलोकन ही हो सकता है—केवल उसकी प्रमुखधाराओं की रूप रेखा का निर्देशन हो सकता है।

कथा साहित्य — (क) कहानी

कहानी नामक जिस नूतन साहित्यिक वस्तु का श्रीगणेश द्विवेदी काल में हुआ था, वह अब इतनी समृद्ध हो गई कि भिन्न भिन्न विषय और शैलियां उसमें दिखाई देने लगीं। प्रेमचन्द की कहानियां विषय में लोक जीवन के निम्न वर्ग की होकर शैली में मनोवैज्ञानिक थीं। उन्होंने मानव जीवन के और मानव मन के अज्ञात पर्दों के भीतर झांका, यथार्थवाद का आदर्शवाद में समन्वय किया। प्रसाद जी ने कहानी में इतिहास के कई बिखरे पन्नों पर प्रकाश डालते हुए और कौशिकजी ने परिवार की समस्यायें सुलझाते हुए नई-नई दिशायें दिखाईं। श्री सुदर्शन, श्री चतुरसेन शास्त्री, श्री जैनेन्द्र, श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी आदि श्रेष्ठ कलाकार कहानी के क्षेत्र में हुए। स्त्री लेखिकाओं में सुभद्राकुमारी चौहान, कमलादेवी चौधरी, उषा मित्रा और होमवती देवी ने नेतृत्व किया। इस युग की कहानी मन के अन्तर्द्वन्द्व का उद्घाटन करती हुई जीवन के कोनों में झांकती है।

(ख) उपन्यास

'सेवासदन' के द्वारा प्रेमचन्दने जिस भवन का द्वार खोला, वह भवन था, भारत के समाज का। समाज का कोई ऐसा अंग, जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं था, जिस पर इस उपन्यासकार की दृष्टि न पड़ी हो। ग्रामीण जीवन का तो कोई उनसे बढ़ कर चित्रकार दूसरा नहीं हुआ। मध्यवर्ग, किसान और मजदूर के जीवन की कहानी कहने में तो वे भारतवर्ष के 'डिकेन्स' ही थे। प्रेमचन्द के उपन्यासों को गांधी युग के उपन्यास कहना चाहिये। उन्होंने कथा साहित्य में युगान्तर किया। विश्वम्भरनाथ कौशिक और चतुरसेन शास्त्री भी इसी प्रकार के उपन्यासकार हैं। श्री जैनेन्द्रकुमार के उपन्यासों में यथार्थवाद का तत्व प्रमुख है। चरित्र चित्रण में वे रवीन्द्र और शरत् के समन्वय हैं। वृंदावनलाल वर्मा तो एकमात्र ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं और हिन्दी के स्काट। इस काल के अच्छे उपन्यासकार में श्री प्रतापनारायण श्रीवास्तव, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, ऋषभचरण जैन और राजाराधिकारमण प्रसाद सिंह हैं।

नाटक

नाटक में युगपरिवर्तन किया, ऐतिहासिक नाटककार श्री जयशंकरप्रसाद ने। अतीत के गौरवमय जीवन, सभ्यता और संस्कृति का प्रसाद के नाटकों में मानों अवतरण हुआ है। इन्होंने भारतीय इतिहास के अन्धकार को आलोकित किया है। क्या भाव और क्या भाषा, अन्तरंग और बहिरङ्ग दोनों में इनके नाटक उदात्त और उज्ज्वल हैं। यद्यपि आज के दीन-दरिद्र मंच के लिए वे अगम्य भी हैं। श्री हरिकृष्ण प्रेमी ने मध्यकालीन इतिहास की चित्रधार पर अपने नाटकों के चित्रों में गांधीयुग के आदर्शों का रंग भरा। श्री उदयशंकर भट्ट भी प्रसाद के ही अनुयायी कहे जा सकते हैं। इस काल में कुछ भावात्मकरूपक भी लिखे गये प्रसाद की 'कामना' पर 'सुमित्रानन्दन पंत की ज्योत्स्ना' का आलोक फैला और एक नया कक्ष उद्घाटित हुआ। एक नूतन कक्ष और भी खुला 'एकांकी-नाटक' का इस युग में [illegible] से वृहद् नाटकों के स्थान पर अब पश्चिम की भांति हिन्दी में भी एकांकी नाटक लिखे गये। प्रसाद के 'एक घूंट' से प्यास न बुझने पर अनेक प्रतिभाशाली नाटककारों ने इस रस कलश को भरना आरम्भ किया। इसमें जो प्रतिभा दिखाई दी उससे गद्य का यह कक्ष सब से अधिक मनोमोहक हो गया। इस कक्ष में रामकुमार वर्मा और सुदर्शन भुवनेश्वर और भगवतीचरण, उपेन्द्रनाथ अश्क और उदयशंकर भट्ट, सेठ गोविन्ददास और हरिकृष्ण प्रेमी श्रेष्ठ एकांकी रूपककार रहे।

निबन्ध

भावात्मक गद्य की रसधारा को बहाने वाले हैं, श्री रामकृष्णदास वियोगी हरि, चतुरसेन शास्त्री, दिनेश नन्दिनी चोरडिया (डालमियां) माखनलाल चतुर्वेदी, हरिभाऊ उपाध्याय, शांतिप्रसाद वर्मा, महाराज कुमार रघुवीर सिंह, रामनाथ सुमन, बनारसीदास चतुर्वेदी, श्रीराम शर्मा आनन्द कौसल्यायन और महादेवी वर्मा संस्मरण लिखने में प्रसिद्ध हैं। हास्य और व्यंगपूर्ण गद्य लिखने में जी० पी० श्रीवास्तव, अन्नपूर्णानन्द, गुलाबराय, हरिशंकर शर्मा, बेढब और चगताई सिद्धहस्त हैं। विचारात्मक गद्य से तो इस काल के समस्त गम्भीर साहित्य को भरा हुआ देखा जा सकता है। साहित्यक कृतियों में रामचन्द्र शुक्ल का 'चिन्तामणि' एक निबन्ध कृति है, जिसकी समता ढूंढे नहीं मिलती। समालोचना ग्रन्थों में श्यामसुन्दर दास का 'साहित्यालोचन' और शुक्ल जी का 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' शिरोमणि हैं। इन्हीं के मार्ग दर्शन में अध्ययन और आलोचना का मार्ग कभी शून्य नहीं हुआ। इस काल की सबसे बड़ी देन विचार प्रधान साहित्य की कही जा सकती है, जो अब तक नगण्य थी। अनेक धुरन्धर विद्वानों ने शिक्षा की दृष्टि से समाज शास्त्र (राजनीति अर्थ शास्त्र इतिहास भूगोल आदि) भौतकी रसायनि की, वनस्पति की, प्राणि की आदि विद्याओं के अनुपम ग्रंथ लिखे गये।

समस्त उत्तरा पथ में हिन्दी की उच्चकोटि की पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित हो कर ज्ञान क्षेत्र का प्रसार और विस्तार करने की प्रेरणा देने लगी। सरस्वती के साथ साथ सुधा और माधुरी (लखनऊ) हंस (काशी), चांद (इलाहाबाद), और

[शेष पृष्ठ २० पर]

लेखक

विविध चित्रावली

[१]

[३]

[२]

[४]

[५]
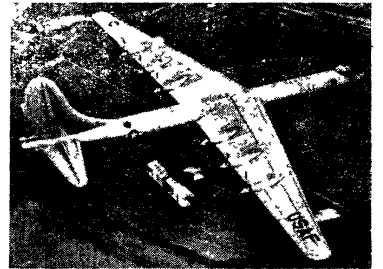
[१] अमेरिका के कालिजों और विश्व विद्यालयों में छात्रों को विदेशी भाषायें सिखाने के लिये वैज्ञानिक ढंग अपनाये गये हैं, जिनसे छात्र बिना विशेष प्रयास से ईयरफोन लगाकर कोई भी भाषा सरलता से सीख लेता है। प्रत्येक भाषा के लिए अलग-अलग बटन दबाना पड़ता है।

[२] इंगलैंड का १८ वर्षीय युवक एफ. जे ला, जो १९५१ का सर्वश्रेष्ठ बैडमिंटन खिलाड़ी घोषित किया गया है।

[३] इंगलैंड की राष्ट्रीय पशु अनुसन्धान-शाला ने पशुओं को चराने तथा उनके लिए घास आदि के उत्पादन की दिशा में असाधारण प्रगति की है। इस नवीन पद्धति के अनुसार थोड़े-थोड़े अन्तर पर भिन्न-भिन्न प्रकार की घास उगाई जाती है। पशु एक स्थान पर चरकर दूसरे स्थान पर चला जाता है। इस प्रकार मैदान बिलकुल साफ होने से पूर्व ही नई फसल उग आती है।

[४] अमेरिका की वायुसेना ने गत ४० वर्ष में वायुयान से कितनी प्रगति की है, इसका अनुमान इस नवनिर्मित बमवर्षक से लगाया जाता है। इस बमवर्षक में ४ जैट इंजिन हैं तथा इसकी गति ४२५ मील प्रति घण्टा है। चित्र में १९१२ का बना छोटा वायुयान भी दिखाया गया है। इसकी चाल केवल ७० मील थी। दोनों के पंख और वजन भी क्रमशः २३० और ३२ फीट तथा ४४७२ और १४॥ मन है।

[५] इंगलैंड के पुलिस अधिकारी स्कूलों में जा-जा कर छोटे बालकों को मोटर गाड़ियों की दुर्घटनाओं से बचने के लिये यातायात (ट्रैफिक) सम्बन्धी नियम समझाते हैं।

सम्पादक के नाम पत्र

हमारे पाठक क्या कहते हैं ?

हिरण्य कश्यप कौन है ?

'वीर अर्जुन' के होली अंक में श्री पुरुषोत्तमदास भट्ट का 'महापर्व होली का ऐतिहासिक महत्व' लेख पढ़ा, किन्तु उसमें प्रभावित करने वाली कोई नई वस्तु न थी।

आजकल के समाज को लेकर श्री पुरुषोत्तमदास ने होली की जो विवेचना की है, यदि वह निष्पक्ष होती तो उनका पक्ष श्लाघ्य हो सकता था। किन्तु हिरण्यकश्यप को साम्यवादी से तुलना करना एक बेतुकी बात थी। मैं साम्यवाद से कोई सम्बन्ध नहीं रखता, और इतना ज्ञान रखता हूं कि साम्यवाद के व्यावहारिक रूप में विरोधी विचारधारा को सहन नहीं किया जाता। परन्तु इतने ही से साम्यवाद और अत्याचार को पर्यायवाची ठहरा देना साम्यवाद से अन्याय होगा और अपने हेय विचारों का परिचय देना। मैं तो जहां तक सोचता हूं अत्याचार का आक्षेप साम्राज्यवाद पर अधिक उपयुक्त बैठता है और लेखक के शब्दों में वही उस युग में 'मनमानी करने वाला व सम्पूर्ण दुनिया पर अपना ही एकमात्र अस्तित्व कायम रखने में प्रयत्नशील है।'

— सत्यपाल

●

अध्यापक ध्यान दें

आपके लोकप्रिय पत्र वीर अर्जुन के ता० २१-३-५१ के अंक में मुख्य अध्यापक द्वारा सम्पादक के नाम पत्र देखा, उसमें मेरे ता० ११-२-५१ के पत्र की आलोचना करते हुए यह स्वीकार किया कि अध्यापक पाठशाला में बीड़ी पीते हैं, पर उसका कारण यह लिखा कि आज की राजस्थानी कांग्रेस सरकार भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी अयोग्य व्यक्तियों को मनमाने पैसे लुटाने के कारण हमको योग्यता के अनुसार पैसा नहीं मिलता है, इसलिए हम अपना समय व्यतीत करने के लिए बीड़ी पीते हैं। सरकार ठीक वैसी ही है, जैसा कि फरमाते हैं, परन्तु मैं उनसे प्रार्थना करूंगा कि उसके बुरे होने के कारण क्या हम भी वैसा ही करें ?

दूसरी बात अध्यापक महोदय ने तर्क करते हुए यह मानी है कि आज कांग्रेस के सारे अवगुणों से युक्त होने के कारण कांग्रेस का अस्तित्व नेहरू के साथ समाप्त हो जायगा। इसलिए वे रूसी साम्यवाद का प्रचार करते हैं। मैं अध्यापक साहब के इस कथन को मान सकता हूं, परन्तु मैं उनसे प्रार्थना करूंगा कि देश की स्थिति कितनी खराब हो, कांग्रेस कितनी ही बुरी हो, फिर भी हम अपने देश को गुलामी की जंजीर से जकड़ते हुए नहीं देख सकेंगे। फिर वे साम्यवाद के स्थान पर भारतीय संस्कृति का प्रचार क्यों नहीं करते ? इस संस्कृति में सत्यकाम, हरिश्चन्द्र जैसे पैदा हुए, जिसने स्वप्न में की हुई प्रतिज्ञा के अनुसार अपने राजपाट, स्त्री-बच्चे को ही नहीं त्यागा, बल्कि अपने कर्त्तव्य के लिए अपने-अपने मरे बच्चे को कर लिए बिना नहीं जलने दिया। प्रह्लाद जैसे बच्चे ने सत्य के लिए पिता से टक्कर ली, राजा राम ने प्रजा की इच्छा के लिए अपनी प्रिय सीता को त्याग दिया, जहां पर सम्राट दिलीप एक गाय की रक्षा के हेतु अपने शरीर देने को तैयार हुए।

— श्री रामस्वरूप गुप्त

●

किशनगढ़ की दुर्गति

भूतपूर्व किशनगढ़ स्टेट वर्तमान समय में जयपुर जिले का एकसब डिविजन है। इसकी राजस्थान में एक विशेष प्रकार की स्थिति है, इसकी चौड़ाई १० मील से कहीं भी ज्यादा नहीं है। और इसके सभी ग्राम अजमेर मेरवाड़ा की सरहद से थोड़े-थोड़े फासले पर खड़े हुए हैं। इस प्रकार की स्थिति की वजह से ही वर्मा सरकार ने इसे कस्टम से मुक्त करदिया और शास्त्री सरकार ने भी उसे निभाया, लेकिन आई० सी० एस० मन्त्रियों की अंतरिम सरकार ने बिना सोचे-समझे यहां कस्टम लागू कर दिया, जिससे जनता को अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। मुख्य निम्न लिखित है।

१. कस्टम की चौकी से बिना परमिट हासिल किए व बिना जमानत दाखिल किए एक ग्राम से दूसरे ग्राम को माल का आवागमन बंद हो गया है। इससे ग्रामवासियों को जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तुयें प्राप्त करने में कठिनाइयां पैदा हो गई हैं। यहां तक गाजर व मूलियों तक एक ग्राम से दूसरे ग्राम को लेजाने के लिए ४-५ मील दूर कस्टम चौकी पर जाकर परमिट हासिल करना पड़ता है।

२ कस्टम अधिकारी इस प्रकार के परमिट जारी करने में जनता को बड़े परेशान करते हैं। बिना घूंस दिये तो इस प्रकार का परमिट मिलना ही दुश्वार हो जाता है।

३. अजमेर मेरवाड़े के ग्राम पड़ोसी होते हुए भी उनके साथ का पुरातनी व्यापार प्रायः समाप्त हो गया है।

४. गांवों का कच्चा माल मदनगंज में आना और ग्रामवासियों की आवश्यकताओं का माल मदनगंज से गांवों में जाना बन्द हो गया है। मदनगंज जो राजस्थान का मुख्य केन्द्र है, प्रायः चौपट हो गया है जहां सैकड़ों गाड़ियों में रोज माल आता व जाता था, वहां सुनसान हो गया है।

५. एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल के आवागमन की कठिनाइयों की वजह से गांवों में और किशनगढ़ शहर में अनाज की समस्या जटिल हो गयी है। गांवों में राशन बन्द हो गया है। शहर में राशन कम कर दिया गया है।

किशनगढ़ सबडिविजन की सवा लाख आबादी की जनता के उपभोग में राजस्थान से बाहर से आने वाली वस्तुओं के कस्टम की आय सरकार को मिलती है, जो उसके खर्चे के मुकाबिले में कुछ भी नहीं है।

खास किशनगढ़ और अजमेर में सिर्फ सोलह मील का फासला है। जहां भूतपूर्व किशनगढ़ स्टेट ने अपनी राजस्थान क्या हिन्दुस्तान विख्यात मंडी मदनगंज को व्यापार में प्रोत्साहन देने के लिए कस्टम फ्री की नहीं, आक्ट्राई फ्री भी रखी और इस प्रकार अजमेर के मुकाबले में इसे प्रोत्साहन देने के सब साधन उपलब्ध किए, वहां वर्तमान राजस्थान सरकार ने इसे और प्रोत्साहन देने के बजाय उलटा चौपट कर दिया है। यदि अजमेर में पेट्रोल प्रति गेलन दो रुपया छः आना में मिल सकता है तो कौन १६ मील के फासले पर मदनगंज में १ रु० १० आना० ६ पाई में खरीद करेगा। यही हाल सब चीजों का हो गया है। राजस्थान के अन्दरूनी क्षेत्र में कस्टम से भले ही लोगों को दिक्कत न हो और व्यापार में इतना नुकसान न हो, पर सरहद और वह भी किशनगढ़ सब डिविजन को हर तरह बरबाद करना ही है।

जहां भारत सरकार इस ड्यूटी को राजस्थान व मध्यभारत पर से शीघ्र हटाने की व्यवस्था कर रही है, वहां राजस्थान ने किशनगढ़ में नई लगान शुरू किया है।

— चांदमल मेहता

●

मूक प्राणियों की बलि

धर्म के नाम पर आज भी हजारों मूक प्राणियों का वध होते हुए जब हम देखते हैं, तो बहुत ही दुःख होता है। बहुत से देवी के मंदिरों में धर्म के नाम पर अब भी पशुवध होता है। कलकत्ता व काशीपुर में तो यह बहुत ही प्रचुर मात्रा में होता है। अभी चैत के महीने में काशीपुर (नैनीताल) में चैती आठे का मेला लगता है, जिसमें हजारों बकरे, भेड़ें तथा छोटे चार-चार पांच ५ दिन के मेमने मृत्यु के घाट उतार दिये जाते हैं। यह सब कुछ अन्धविश्वास व झूठी श्रद्धा के कारण होता है। चार-पांच दिन तक हजारों पशुओं का वध बड़ी निर्दयता के साथ किया जाता है। यह सब कुछ केवल थोड़े से व्यक्तियों के स्वार्थ के कारण होता है। यही नहीं, मेले के अन्त में रात्रि के समय एक भैंसे का भी बलिदान किया जाता है। यह सब कालीदेवी को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। गाय व भैंसे तो हमारे देश की दूध की खान हैं और आज जब कि गौ वध को रोकने के लिए कानून बनाये जा रहे हैं, आवश्यकता है कि भैंस की हत्या पर भी प्रतिबन्ध लगाए जायं। किन्तु दुःख होता है कि जब हम धर्म के नाम पर उन लोगों को; जिनकी संस्कृति का आधार सत्य व अहिंसा है, भैंसों तक की हत्या करते हुए देखते हैं। हजारों छोटे छोटे मेम्नों, भेड़ों व बकरियों तथा बकरों का शोणित धर्म के नाम पर मन्दिर कहलाए जाने वाले स्थानों पर बहा दिया जाता है। आज आवश्यकता है कि इस प्रकार के दुष्कर्म बन्द हों। यह तभी हो सकता है जब कि कुछ बुद्धिमान व्यक्ति इस बात का बीड़ा उठावें कि धर्म के नाम पर पशुओं का वध हम कदापि नहीं होने देंगे।

हमारी सरकार का, जो धर्मनिरपेक्ष विश्व देश को उन्नतिशील बनाने के हेतु बनाती है, कर्त्तव्य है कि वह धर्म के नाम पर पशुओं का वध बन्द करने के लिये विधेयक बनावे।

—दर्शनलाल बंसल

राजस्थान व मध्यभारत में जागीरदारी समस्या

जमींदारी समस्या आज की महत्वपूर्ण समस्याओं में से एक है। इस विषय पर विभिन्न प्रकार के विचारों का हम स्वागत करेंगे।

★ श्री राजमल

राजस्थान तथा मध्यभारत की मध्यकालीन व्यवस्था का एक अवशेष-जागीरदारों की रोमांचकारी एवं रंगीली जाति अब समाप्त प्रायः है और शीघ्र ही अदृश्य होने वाली है। जागीरदारी प्रथा के समर्थक अब नहीं के बराबर हैं। सच तो यह है कि मध्यकालीन युग के अधिक शक्तिशाली अवशेषों, रियासतों के संघ बद्ध अथवा प्रान्तों में विलीन कर दिये जाने पर तो जागीरदारों को गम्भीरता पूर्वक काल की गति को पहिचान कर अपने सृष्टा राजाओं का पथानुगामी हो जाना चाहिए था।

मुसलमानों के आगमन ने देश की शासन व्यवस्था में एक नया परिच्छेद जोड़ा और प्रत्येक नये राजा ने अपने समर्थन के लिए अपने हिमायतियों के एक नये वर्ग को जन्म दिया। गुलाम वंश के प्रसिद्ध 'चालीस' सरदार तो राजाओं के बनाने बिगाड़ने में प्रभावशाली भाग रखते थे। बलबन, अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद तुगलक, अकबर तथा अन्य मुस्लिम बादशाह इस नये वर्ग की बढ़ती हुई ताकत के विरुद्ध बढ़े, किन्तु उनके शक्तिहीन उत्तराधिकारियों ने उनके कार्यों को प्रायः समाप्त कर दिया। फिरोजशाह तुगलक ने तो जागीरदारों को प्रोत्साहन देकर अपने साम्राज्य को छिन्न-भिन्न ही कर दिया था। इन सरदारों एवं जागीरदारों का पद कभी स्थायी नहीं रहा और हमेशा राजा के परिवर्तन के साथ ही इनके पदों में भी भारी परिवर्तन होते रहे और यही कारण था कि वे अपनी-अपनी स्थितियों में स्थायित्व लाने के लिए प्रायः विरोधी दल से मिल जाया करते थे और देश को पारस्परिक कौटुम्बिक युद्धों के दलदल में फंसा देते थे। प्रायः आवश्यकता पड़ने पर उन्हें अपने मालिकों को फौजें देनी पड़ती थीं और उनकी ओर से युद्ध भी करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त जागीरदारों में से अनेक जो आज भी अपने आपको प्राचीन राजपूत योद्धाओं के वंशज बताते हैं।

जागीरदारों के इस वर्ग के अतिरिक्त कुछ अन्य वर्ग के जागीरदार भी थे, जिन्हें नरेशों ने उनकी प्रशंसनीय सेवाओं के बदले में जागीरें प्रदान की थीं। कला और विद्या में असाधारण प्रतिभा का प्रदर्शन करने पर भी जागीरें दी जाती थीं। धार्मिक आचार्यों को एवं धार्मिक स्थानों को उनके उचित प्रबन्ध के लिए भी जागीरें मिलती थीं। राजघराने के के सरदारों को जागीरें उनके भरण पोषण के एवं उचित स्तर बनाये रखने के लिए भी प्रदान की जाती थीं। अनेक जागीरें विभिन्न व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली सेवाओं के लिए वेतन के बदले में दी गई थीं।

यह प्रथा जो मध्य युग में मुस्लिम बादशाही काल में अत्यधिक प्रचलित थी, राजपूताने के तत्कालीन हिन्दू राजाओं में भी अपना ली गई और आगे भी जारी रही। मध्यभारत में रियासतों का प्रादुर्भाव मरहठा साम्राज्य की उन्नति एवं पतन तथा उनके द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य की अधीनता स्वीकार करने के साथ ही साथ हुआ। मरहठों में जागीरें पेशवाओं के द्वारा अपने समर्थकों के लिए निर्मित की गई थीं।

ईस्ट इंडिया कम्पनी तथा इन नरेशों के बीच सन्धि सम्बन्ध स्थापित हो जाने के पश्चात् उनकी शासन व्यवस्था में स्थिरता आ गई तथा पारस्परिक झगड़े फिसाद, युद्ध संघर्ष, आदि समाप्त हो गये। इस नये परिवर्तन के साथ ही जागीरदारों ने भी एक स्थिरता की सांस ली और उनमें पीढ़ी दर पीढ़ी की प्रथा चल पड़ी।

इस समय इस भांति जागीरदारों के विभिन्न वर्ग हैं· जागीरदार, भोमियाचार इस्तमरार, तनख्वाहदार, नामकदार, रिसाला, मर्वीदान, खवास, पासवान्, हुजूरी, मुआफी, उदक, इनाम आदि। राजस्थान तथा मध्यभारत में इन्हें भिन्न नामों से अभिहित किया जाता है।

राजस्थान के १,२७,२३६ वर्ग मील के क्षेत्र में इस समय करीब ७७,११० वर्गमील क्षेत्र जागीरों के अन्तर्गत हैं, जब कि केवल ५०,१२६ वर्ग मील खालसा के। गांवों के हिसाब से राजस्थान के ३३,४१८ गांवों में से आधे से भी अधिक गांव राज्य के करीब १० हजार जागीरदारों के अधिकार में है। जागीरदार सरकार को करीब ४७,३८,२७८ रु० खिराज के रूप में देते हैं।

मध्यभारत में ४६,३६६ वर्गमील के क्षेत्र में से ८ ४४६ वर्ग मील क्षेत्र करीब १३२६ जागीरों के ४,२४१ गांवों में विभाजित हैं। जागीर क्षेत्र में, जिस से करीब ७३,८१,६७२ रु० की आय होती है, करीब ११,२४,२३२ व्यक्ति रहते हैं। वे सरकारी कर के रूप में ११,८७,०८७ रु० देते हैं।

उस समय से ही ये लोग राजस्व, शासन, न्याय, पुलिस आदि विभिन्न क्षेत्रों में निरंकुश सत्ता का निरन्तर उपभोग कर रहे हैं। वास्तव में कुछ काल पूर्व तो ये अर्द्ध स्वतन्त्र राजाओं की तरह रहते थे, जो स्वयं लगान वसूल करके उसका एक भाग राजा को देकर निश्चिन्त हो जाते थे और मन चाहे कार्य किया करते थे। वैभव एवं ऐश्वर्य में अपना जीवन यापन करते तथा विश्व-वद्य शानशौकत एवं सुसज्जा में डूबे रहते थे। अनेकों नियमों एवं प्रतिबन्धों के अपवाद वे थे और उन्हें अनेक विशेष अधिकार भी प्राप्त थे।

इस भांति अपने-अपने क्षेत्र में वे पूर्ण सत्ताधारी थे और राजा का अधिकार सीमा से परे था। उन्हीं के समान मध्यकालीन यूरोप में भी सरदारगण नरेशों से अधिक शक्तिशाली बन गये थे। इंगलैंड में विलियम प्रथम ने इस प्रथा में भारी सुधार किया, बाद में ट्यूडर नरेशों ने इसमें और भी परिवर्तन किया और धीरे-धीरे वहां से यह वर्ग प्राय: समाप्त हो गया। इंगलैंड के अतिरिक्त समस्त यूरोप में इस प्रथा को नष्ट करने के लिए एक के बाद अनेक विद्रोह एवं रक्त-क्रांतियां करनी पड़ी।

इतना ही नहीं, पुत्रों और फिर पौत्रों में भूमि के लगातार विभाजन के टुकड़े २ हो गये हैं और उसे बेकार कर दिया गया जिससे पैदावार की उन्नति में तो रुकावट आई ही है, उनमें आपस में भी संघर्ष एवं मुकदमे बाजी बढ़ी है।

अधिकतर जागीरदार नगरों में जा कर बस गये हैं और उनको जागीरों का प्रबन्ध उनके नौकरों के हाथों में चला गया है जो प्रजा पर किसी भी तरह का अत्याचार करने से नहीं चूकते हैं।

काश्तकार और जागीरदारों में आज प्रेममय सम्बन्ध नहीं है। उन्हें सर्वदा सताया एवं दबाया जाता है, जमीनों से बेदखल कर दिया जाता है, उनकी सम्पत्ति को गिरवीं रख दिया जाता है उन्हें गैर कानूनी लागबाग देने के लिए मारा पीटा जाता है, यहां तक कि कहीं कहीं तो किसी किसान को दाने दाने के लिए मुहताज कर दिया गया है।

और भी अनेक ऐसे कारण हैं जिन के कारण काश्तकारों एवं जागीरदारों के पारस्परिक सम्बन्ध बिगड़ते चले जा रहे हैं। जागीरी क्षेत्रों में काश्तकार से खालसा क्षेत्रों से अधिक लगान वसूल करना, भूमि की चकबन्दी न की जाकर

[शेष पृष्ठ १८ पर]

एक व्यंगचित्र

कामरेड

★ श्री जितेन्द्र कपूर ★

'सर्र''सर्र'''सर्र''सर्र' बुड्ढा झाड़ू दे रहा था, दो पल को उसकी आँखें घूमी और फिर परिचित लक्ष्य पा कर लौट आईं, और सामने मेज पर रुक गईं। काफी के कप में से उठती हुई धूम्र रेखाओं ने उन्हें बाँध लिया। मस्तिष्क पुन: अपना काम करने लगा।

दिसम्बर के ही महीने में काफी ठंड पड़ने लगती है, शायद बाहर के लोग इसका अनुभव करते हों, किन्तु उसके साथ कोई ऐसी बात नहीं थी। उसके लिये तो यह ठंड कुछ आनन्ददायी ही थी। हवा का एक झोंका जब काफी हाउस के दरवाजे, उसके चेस्टर, कोट और बुश कोवर से जूझता हुआ उसकी छाती के रोओं तक आ पहुँचता, तब चिनगारी छंभाले हुए सिगरेट के धुंए का गुब्बार और गहरी बनकुसई काफी की एक चुस्की उसके मार्ग में आ खड़े होते और उनका हल्का सा संघर्ष उसके अन्दर एक मधुर सिहरन भर देता। उसकी सिगरेट जोर से चमक उठती, काफी की चुस्की और गहरी हो जाती। मस्तिष्क खिलौना पाए हुए उत्साही बालक की तरह फिर अपने खेल में जुट जाता, विचारों के जुगनू चमक-चमक कर बिखर जाते।

× × ×

'कल रात का वह लोगों का रेवड़। हां, रेवड़ ही तो; गाय-भैंसों की तरह सींग में सींग अड़ाए, भेड़ों की तरह शोर करता, टिकिट चैकर को धकेलता अन्दर घुस आया, जैसे बकरियों ने अपना बाड़ा तोड़ दिया हो। सब एक ही स्वर में मिमिया उठे 'कामरेड आज़ाद की जय, कामरेड आज़ाद की जय', और फिर उस रेवड़ में से हंसों जैसी कुछ चपल सुन्दरियां निकल आईं। उन्होंने हारों में उलझी हुई अपनी उंगलियां और उनको सम्भाले हुए अपने हाथ आगे बढ़ा दिये। उसके चारों तरफ बरफ के गालों की तरह सुगन्ध बिखर गई। वह सुगन्ध गुलाब के फूलों या जूही की कलियों की न थी, उसमें कैमेलाइन हेयर टानिक, चार्लस क्रीम तथा क्यूटीकोरा पाउडर का ही वास था। वह आत्मविभोर हो उठा। उसके सामने कृष्ण और उसकी सोलह हजार गोपियों के चित्र घूम गये, और उसने लाल पीली चुनरियों और दूध दही की हीक से नाक सिकोड़ ली, मानों वह अवांछनीय दृश्य उस पर अपना प्रभाव भी डाल रहा हो। तभी एंजिन ने सीटी दी और गाड़ी सरकने लगी। रेवड़ में चें पें होने लगी और मिमियाहट एक बार फिर जोर से गूंज उठी, उसके होठों पर सगर्व मुस्कान खिल गई। हाथ 'पार्टी' के लहलहाते हुए झंडे की भांति उठे और बैठ गए, वह अपनी मुस्कान तथा शालीन हाथों की गति पर स्वयं ही रीझ उठा।

× × ×

फिर दूसरा जुगनू चमका, और एक और दृश्य सामने आया, अपनी कापी निकाली 'गाड़ी में लेट कर उसने मोहक अंगड़ाई ली, सूटकेस में से उसकी चिरस्त उंगलियां कागज पर दौड़ने लगीं। डिब्बे में बैठे हुए अन्य यात्री उसकी ओर श्रद्धा और आदर भरी दृष्टि से देख रहे थे। एकाध ने झांक कर उसकी कापी में भी देख लिया, और गर्व से उनके सर ऊँचे उठ गए। 'हमारा इतना सौभाग्य देश को प्रकाश देने वाला आलोक स्तम्भ, शब्दों के संसार का निर्माता हमारे साथ!' तब उनमें से कुछ ने उससे दांत निपोर कर बातें करने की चेष्टा की पर उसकी छोटी सी एक गुनगुनाहट ने सबको खामोश कर दिया। हर स्टेशन पर उसका स्वामिभक्त निजी सेक्रेट्री आता और बड़े ही लचकते शब्दों में पूछता, 'कामरेड, कुछ''''''' और उसका शालीनता से हिलता सिर देख कर अपने ही अन्दर कुछ भिंचा सा, गरदन झुकाए चला जाता,' उसकी इस निस्पृहता पर कम्पार्टमेंट के लोगों की श्रद्धा गले तक भर आती।

'सुबह सात बजे उसकी आंखें 'जय-जय के शोर से खुल गईं'। कुछ झुंझलाहट सी हुई उसे इस पर, पर परिस्थिति का बोध कर शांत हो जाना पड़ा। उसने फिर अंगड़ाई ली और उसमें कृत्रिम मोहकता लाने की चेष्टा की। लावस से भरी हुई उंगलियां अपने मुंह पर फेरी। बढ़ी हुई दाढ़ी के बालों की चुभन से उसे कुछ सुख ही मिला। फिर उसने बड़े ही स्वाभाविक रूप में बालों को कुछ और ऊबड़ खाबड़ कर लिया, कुरते की एक बांह अधमुड़ी सी कर ली और और चप्पल पहन कर बिस्तरा समेटने का उपक्रम सा करने लगा। इतने ही में चार पांच व्यक्ति अन्दर घुस आए और उनमें बिस्तरा समेटने की होड़ शुरू हो गई। वह विदेह की भांति एक ओर को हो गया और अपना हैंडबग उतारने लगा। इतने ही में वीणा के कुछ स्वर गुंजरित हो उठे। 'हलो आज़ाद!' उसकी भव्य दृष्टि पीछे घूम गई और होठों पर वही मुस्कान खिल उठी। 'वंदे मातरम् अली' उपस्थित लोग गद्‌गद् हो गए, अब फिर वही मिमियाहट, वही जयघोष, वही रेवड़। उसने कमल की पंखुड़ियों की तरह अपने हाथ जोड़ लिये और जन समूह में से वन केसरी की तरह निकल गया।'

'फिर होटल, आने जाने वालों का तांता, वह, उसका 'जनता जनार्दन' और उपेक्षा से भरे कुछ शब्द।'

× × ×

मस्ती कुछ और गहरी हो उठी, 'जब वह गांधी ग्राउंड में था। शांत वातावरण में उसके शब्द गिरक रहे थे, बीच-बीच में जयरव ताल दे उठता, 'कामरेड आज़ाद की जय, अवाम-जिकार जिन्दाबाद,' पीछे के कोने में समुद्र के उथले जल की भांति कुछ छप-छपाहट हो रही थी, या कभी २ मां की गोद में कोई बच्चा कुनकुना देता और फिर चुप हो जाता। कामरेड की भव्य दृष्टि जनता पर अवश्य टंटोल रही थी, पर उसका बहाव बच्चों की कुनकुनाहट और क्यूटीकोरा की सुगन्ध की ओर ही अधिक था।'

कुछ देर पश्चात् हल्की गुंजन के साथ वातावरण कुछ शांत हो गया, एक हजार एक नोटों का हार लिए दो कुलो-मल कलाइयां उसकी ओर उठ गईं, और पीछे से कुछ शब्द तिर उठे 'हां, हां अलका, झिझको मत, डाल दो गले में हार।' और उसके सम्मुख फिर परिचित शशी और नूतन अलका की छवियां नाच उठीं। उसके नयन दोनों में उलझ कर रह गए, मन कुछ निश्चय न कर सका।

× × ×

और अब वह नयन पसारे शशी और नयन झुकाए अलका दोनों को छोड़ कर यहां बैठा था। अब शशी उसकी उंगलियों में और अलका उसके होठों पर थी। बुड्ढा झाड़ू देता हुआ आगे बढ़ गया। शशी बुझ चुकी थी, उसने उसे जमीन पर फेंक दिया। अलका उसके होठों से होती हुई उर तक पहुँच आई और उसके उर को गर्मी और रक्त को सरसराहट देती हुई नीचे उतर गई। वह उठ खड़ा हुआ, और फिर वही मोहक अंगड़ाई उसकी बाहों से उतरती हुई अंतरिक्ष में विलीन हो गई, मुस्कान होठों में मचल कर होठों ही में सो गई और वह जूते चरमराता हुआ बाहर निकल गया।

बुड्ढे के हाथ की झाड़ू रुक गई। वह अब अपलक दृष्टि से बाहर देखता रह गया, और तब वेदना उसके आननत पर सिहर उठी, उसकी निगाहें घूम कर अपनी उंगलियों पर रुक गईं। एक उंगली में से झांकता हुआ लहू, लटका हुआ मांस और चिपकी हुई मिट्टी मिमिया रहे थे, 'कामरेड को को जय'' कामरेड की जय''।'

लेखक—
श्री वीरबहादुर

नगर के बाहर म्लान मुख, क्लान्त शरीर एक नवयुवक को प्रात काल से सायकाल तक एकाकी बैठा देखकर एक संन्यासी उसके प्रति आकृष्ट होता है। किसी प्रकार सहारा देकर वह उसे उसके घर पहुँचाता है। युवक को शान्ति की खोज है। घर पर पहुँचने पर संन्यासी को वास्तविकता ज्ञात होती है। पूर्वी बङ्गाल के अत्याचारों की शिकार वह नवयुवती भी हुई है जिसको यह नवयुवक प्रेम करता है। उससे इसका सम्बन्ध निश्चित हो चुका था। इसके पिता उस सम्बन्ध में खोज करने के पहिले ही कलकत्ता जा चुके थे। प्रतिदिन आने वाले नवीन समाचारों से युवक की स्थिति बिगड़ती हुई देख सन्यासी ने उसे लेकर पूर्वी बंगाल जाना निश्चित किया। वैसे पीड़ित सहायता तथा सेवा कार्य के लिए उस ओर जाने का विचार वह पहिले ही कर रहा था। अत: ऐसे ही एक दल के साथ वे रवाना हो गए। दूसरी ओर नवयुवक के पिता डा. सुरेश ने कलकत्ते से दो-चार परिचितों को साथ लेकर एक कार में नोआखाली की ओर प्रस्थान किया।

[गताङ्क से आगे]

[६]

कौशल के मुख पर एक प्रसन्नता की आभा! कैसी आभा थी इसका चित्रण शब्दों के द्वारा करना कुछ दुस्साध्य ही है। गद्दी के सोफे पर लेटे हुए उसका मुंह बिजली के प्रकाश में पीला-पीला दिखाई देता था। ज्वर तो अब नहीं था, परन्तु चिन्ता की एक रेखा कभी कभी उसके मुस्कान में भी खिंच जाती थी। रम्मू नौकरों के डब्बे में ऊंघ रहा था और संन्यासी बगल के सोफे पर पांव फैलाये बैठा।

'अब तुम्हें ज्वर तो नहीं?' सन्यासी ने पूछा।

'नहीं।' कौशल ने उत्तर दिया—'गाड़ी में जी ऊब रहा है।'

'तुम सो जाओ।' सन्यासी ने कहा—'बारह बजे हैं।'

'नींद नहीं आती।' कौशल ने अपना मुंह फेरते हुए उलट कर सन्यासी की ओर देखने की चेष्टा करते हुए कहा—'नींद आती ही नहीं।'

'चिन्तित होंगे?' संन्यासी ने पूछा।

'......' कौशल कुछ कहते-कहते रह गया। उसके सरल मुख पर बिखरी हुई आभा एक विवशता के रूप में परिवर्तित हो गयी। चिन्तित तो अवश्य था, परन्तु गाड़ी की चाल बढ़ाने में असमर्थ था।

'अब यात्रा समाप्त है' संन्यासी ने कहा—'गोवालन्दो ही उतर जायेंगे। तीन घण्टे की और बात है।'

'तीन घण्टे!' कौशल ने सांस लेकर कहा।

'तुम कह रहे थे, वहां तुम्हारे सम्बन्धी रहते हैं?'

'ठीक है, वहीं उतरेंगे। वहां से गांव जाने का प्रबन्ध हो जायेगा।'

'जानते हो मैं इतनी जल्दी दिल्ली से तुम्हारे साथ यहां क्यों आया। इस बात को अब मैं बतला देना चाहता हूं।'

'मैं आपका आभारी हूं, आपके बिना मुझे पिता जी के लौटने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। जाने को तब न देते।'

'तुम्हारे नाम शांति का एक पत्र आया था?'

'हां,' कौशल ने कहा।

'एक और आया था?' संन्यासी ने कहा—'तुम्हें एक और पहले मिल चुका था।?'

'हां।' कौशल ने बड़ी कठिनाई से कहा।

'उसमें लिखा था।'

कौशल ने चादर से अपनी आंखों को ढक लिया। उनमें आंसू भर गया था। संन्यासी ने समझ लिया कि पत्र में अवश्य ही उस करुणाजनक घटना का उल्लेख था।

'कौशल!' संन्यासी ने उसके पास आकर कहा—'तुम इतने चिन्तित क्यों होते हो? अपने पर भरोसा रक्खो। अब तो हम स्वयं ही वहां चलेंगे। चिन्ता छोड़ो।'

संन्यासी ने कुछ देर बाद, यथा समय कौशल को शांति का दूसरा पत्र भी दे दिया। कौशल ने कब पढ़ा। कैसे पढ़ा, और क्या-क्या हुआ। यह उसके हृदय की कोमल तंत्रियों के अतिरिक्त किसी को क्या पता। तीन घण्टे समाप्त हो गये।

'स्टेशन आ गया, कौशल।' संन्यासी ने रम्मू को बुलाते हुए कौशल से कहा—'चिन्ता छोड़ो।'

प्रातः काल की शीतल वायु में तारों भरे आकाश के नीचे कौशल गाड़ी से उतरा। ज्वर का क्रम कुछ बढ़ गया था। रम्मू ने सामान उतारा। वहां से तीन मील जाने के बाद कौशल के सम्बन्धी का घर आता। प्रातःकाल के इस सुनसान समय में कहीं न जाकर तीनों जने स्टेशन के कमरे में रुक गये। वहां रम्मू ने बिस्तर लगा दिये और लेट गया। उसे काफी थकावट आ गयी थी। अंग-अंग शिथिल हो रहा था। आंखें खोलना तक कठिन हो गया। उसने आंखें बन्द कर लीं। संन्यासी ने उसके ऊपर चादर डाल दी। ज्वर कुछ था, परन्तु अधिक नहीं।

कौशल सोता था या जगा, यह ठीक-ठीक कहना कठिन था। परन्तु, जब दो-तीन घण्टे बाद सूर्य का प्रकाश फैलने लगा तो वह उठा नहीं। संन्यासी इसी बीच में स्नान-ध्यान, पूजा पाठ शुरू हो गया। बैठ कर वह कौशल के उठने की प्रतीक्षा कर रहा था। रम्मू नींद में सोया था। छः बजे के लगभग भी जब कौशल नहीं उठा तो संन्यासी ने 'अमृत बाजार पत्रिका' खोल लेकर समाचार पढ़ना प्रारम्भ किया। नवाखाली में निशाचरी गुण्डाशाही रात्रि के चांद सितारे अब मन्द पड़ गये परन्तु गांवों में जाना अब भी कठिन था। फौज का प्रबन्ध अधूरा था। सब उधर से भाग ही रहे थे। गुंडों के अतिरिक्त कोई जाता ही न था वहां। सन्यासी समाचार पत्र के पन्नों को उलट पलट कर देखता जाता था और कभी कौशल की ओर भी देख लेता था। ऐसा मालूम होता था कि कौशल सो गया है। इसीसे वह उसको जगा नहीं रहा था।

किन्तु नींद उसे आई न थी। वह एक अमित अवस्था में शिथिल सा पड़ा था। वह कुछ सोच रहा था, परन्तु दुर्बलता के कारण सोचते-सोचते थक गया और मस्तिष्क में बिखरी हुई चिन्तायें फिर स्वप्न में बदल गयीं।

पूरब में संसार की सारी अरुणाई सूर्य के स्वागत के लिए आकाश को रंजित बना रही थी। स्वप्न चलता हो गया। कौशल उस पतली कच्ची सड़क के किनारे खड़ा-खड़ा, तालाब के उस पार पहाड़ियों के पीछे से अनन्त प्रकाश राशि का स्वागत करने लगा तब तालाब के मध्य में एक ऊपर उठी कमल की कली खिलने लगी।

'विकसित हो रही हो?' कौशल ने उच्च स्वर से कहा।

देखते नहीं, कमल कुञ्ज के आचार का आगमन हो रहा है।' कली ने कहा मुस्कराकर कहा—चांद-सितारों ने मुझे मुर्झा दिया था। मैं थिर सूख आप पड़ी थी।'

'और अब?' कौशल ने मुस्करा कर पूछा।

'सरोवर की ओर देखो, कुञ्जों में, वनों में, उद्यानों में देखो। समस्त

प्रकृति ही मेरे साथ स्वागत को उद्यत हो गयी है। निशा का वह अवसान हो गया। सभी में आनन्द का विकास हुआ।' कली ने रम्भा या उर्वशी सा मनोहर रूप धारण करके कहा। मधुर हंसी चारों ओर फैल गयी—'देखो प्राची के अमर सिंहासन पर स्वयं प्रकृति प्रभा के एकमात्र सम्राट आये। अभिवादन करो, खड़े क्यों हो?'

'क्यों नहीं?' कौशल ने अरुणाई लिए हुए भगवान सूर्य को नमस्कार करके कहा — 'मैं तुम्हारे साथ उनका क्यों नहीं स्वागत करूंगा, जिसके करों ने प्रभात में सजीवता का एकाएक संचार कर दिया।'

स्वप्न चलता गया। कौशल उड़ा। उड़ कर तालाब के पूर्वी किनारे पर आकाश में हंस की भांति आ कर अटक गया। स्वप्न में ऐसा प्रतीत हुआ कि वह सूर्य की सहस्रों किरणों के तार में उलझा लटका है। उसका पांव पीछे था और मुंह कमल की ओर।

'तुम इस पार आ गये?' विकसित कमल कली ने कहा — 'यहां क्यों आये?'

'देखती नहीं' कौशल ने कहा — 'मैं सूर्य किरणों के साथ हूं।'

'हूं!' कमलकली ने कहा—'किरणें तो पृथ्वी पर फैल गयी और तुम आकाश में, अभी तक आकाश में ही हो।'

'मैं भी आया,' कौशल ने मुस्करा कर कहा—'यहां अनन्त में कौन रुक सकता हूं।'

'नमस्कार, स्वामी जी।' कौशल ने देखा, उसे संन्यासी ने जगाया और उसने चादर से मुंह निकाल कर कहा—'क्या बजा है?'

'सात।' संन्यासी ने उत्तर दिया—'उठ बैठो और सुनो, तुम अपने सम्बन्धी के घर न जाओ।'

'क्यों?' कौशल ने पूछा।

'पता नहीं कि वहां से गांव में जाने का प्रबन्ध हो या नहीं! यहां कलकत्ते से कुछ स्वयंसेवक आये हैं। स्वामी निर्वाणानन्द की अध्यक्षता में वे अभी तो बसे उन हताहत गांवों में जा रहे हैं। क्यों न हम लोग भी उन्हीं के साथ चलें।'

'ठीक है।' कौशल ने कहा। इस समय उसे ज्वर भी नहीं था।

'तो तैयार हो जाओ।' संन्यासी ने कहा—'अब रेलगाड़ी आने में देर नहीं। हम भी उनके साथ चलेंगे।'

× × ×

'उठो,' डाक्टर सुरेश ने कहा—'दिन काफी चढ़ गया है, जल्दी मोटर तैयार करो!'

ड्राइवर को अब कुछ नींद-सी आने लगी थी। परन्तु साहब को सामने खड़ा देख कर तुरन्त उठ गया। अभी तक दूसरे आदमी सोये ही थे।

'आना बेकार रहा।' डाक्टर ने धीरे से कहा।

'सर्वथा बेकार न रहा। ड्राइवर ने चुपके से कहा।

'अब वहां बचा क्या है?' डाक्टर ने भी उसी मन्द स्वर से कहा—'जो दशा इस गांव की थी, वही अन्य गांवों की भी होगी। एक भी घर तो नहीं बचा है।'

'इस अर्थ में तो बेकार हुआ। ड्राइवर ने दुःखित हो कर कहा—'किंतु हमारे आने के पीछे दो चार निराश्रित में पड़ी अबलाओं को कुछ शांति मिल जावे, यही यथेष्ट है।'

'क्या हुआ होगा?' डाक्टर सुरेश ने कहा—'मेरे भाई के सारे कुटुम्ब का, आजकल वह इसी देहात में है।'

'यदि निकल गये हों, तो .... नहीं तो......।' ड्राइवर केवल सोच कर कांपकर रह गया—'मेरा भी सारा कुटुम्ब वहीं था। मैं अवश्य अपने गांव में जाऊंगा, मुझे चैन नहीं।'

'जान का डर है, ड्राइवर। वहां जाना मौत से खेलना है। वहां तो भेष बदले हो। वहां तुम्हारे गांव के गुण्डे अवश्य पहचान लेंगे?'

"तब भी मैं जाऊंगा" ड्राइवर ने कहा—"मैं डरता नहीं।"

'पर क्या तुम सोचते हो? वहां कोई तुम्हारा सम्बन्धी अब तक बैठा होगा? क्या तुम्हारा मकान सुरक्षित होगा। अगर वे भाग निकले होंगे तो फिर कभी मिल जायेंगे।"

'यहां तक आके वापस न जाइए, डाक्टर साहब।'

'तो चलने को तैयार हो जाओ।'

ड्राइवर ने मोटरकार को ठीक किया। डाक्टर साहब ने कार में एक युवती देखी, जो कल तक बोरी में बन्द थी।

'यह कौन है?' डाक्टर ने ड्राइवर पूछा।

'कल की बोरी में यही "सौगात" था। चुप-चाप बैठ जाइए।'

कार को चलते देख कर गुण्डेआदे भी आ गए—"क्यों बिरादर, चल दिए। क्या कुछ 'सौगात' ला दूं। या एक ही काफी है।'

'कैसी सौगात?' डाक्टर ने धीरे से ड्राइवर से पूछा।

'ये लोग निस्सहाय अबलाओं को सौगात, जिंदा माल और मुर्दा माल कह कर पुकारते हैं।' ड्राइवर ने धीरे से कहा, 'कल आपसे मैंने बताया तो था।'

'तुम्हारा साथी कार चला लेगा?' ड्राइवर ने सब कुछ समझ कर पूछा और ड्राइवर की ओर देखने लगा।

'हां।'

'तो जितना 'जिन्दा माल' इस कार में आप भर लो। तुम्हारा साथी कार को चला ले जाएगा और हम पैदल चले जायेंगे या कोई और सवारी कर लेंगे।'

ऐसा ही हुआ। रोती हुई स्त्रियों को, मुंह में कपड़ा ठूस कर, बुर्का उठा कर, गुंडेआदे ने ड्राइवर का इशारा पाते कार में भर दिया, जितनी समा सकीं भर दिया।

'बेटा समझ-बूझ लिया है न?' गुंडेआदे के पिता ने कहा कहीं हम फंस न जाय।'

'बेफिक्र रहिए अब्बा जान! ये माल को वहां ले जायेंगे जहां इनका पता भी न चलेगा और दाम मिलेगा। ये लोग दिल्ली से आए हैं। ये माल सीधे पंजाब चला जाएगा।'

'मुझे तुम्हारी अक्लमन्दी पर भरोसा है।'

'अच्छा मेरा मेहनताना।' गुण्डेआदे ने कहा, 'मुझे आप लोगों से काफी उम्मीद है।'

'दो सौ रुपए ले लो। मेरा पता नोट कर लो, रफीक मंजिल, अनारकली लाहौर। मैं वहां पहुंच कर आप को और भेज दूंगा। सफर में रुपया ज्यादा साथ न लिया।' डाक्टर ने सब समझ कर कहा।

'ये क्या?' गुंडेआदे के पिता ने बेटे को गोलमाल करते देख कर कहा, 'तुम हमारे मिहमानों से रिश्वत लेते हो यहीं ये कभी न होगा। हमें क्या कमी है।'

'शुक्रिया!' कह कर ड्राइवर ने एक बनावटी कृतज्ञता से गुण्डेआदे के पिता को देखा। डाक्टर सुरेश को पता न चला कि क्या कहें। उन्होंने चुपचाप बातों में न फंसने के लिए एक सिगरेट जलाया। —क्रमशः

....

हमारी आदिम जातियां—लेखक श्री भगवानदास केला तथा श्री अखिल विनय। प्रकाशक श्री भारतीय ग्रन्थमाला दारागंज, इलाहाबाद मूल्य ३॥)।

प्रस्तुत पुस्तक में पांच भागों में भारत की उपेक्षित जातियों का परिचय है। प्रथम भाग में आदिम जातियों पर विश्लेषणात्मक विचार हैं, जो उपेक्षित मानवता, आदिम जाति, सभ्यता का स्तर, आदिम जातियों की भाषाएं के अन्तर्गत विभक्त हैं। इस भाग का सबसे सुंदर भाग संगठन और स्वाधीनता आन्दोलन सम्बन्धी है। द्वितीय भाग पृथक-पृथक प्रान्तों की आदिम जातियों के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत किये गये हैं। संथाल, गोंड, भील, नागा, कोया, टोडा इत्यादि की वंशोत्पत्ति और विकास पर विवेचन है। तीसरे भाग में दरिद्रता, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक स्तम्भों के अन्तर्गत आदिम जातियों की अनेक समस्याओं पर विस्तार से विचार किया गया है। चतुर्थ भाग में विभिन्न प्रान्तों की सरकारों द्वारा आदिम जातियों सम्बन्धी सुधार कार्य दिया गया है। पांचवें भाग में संस्थाएं और कार्यकर्त्ताओं का परिचय प्रदान किया गया है। परिशिष्ट में लोकगीतों के नमूने, जातीय विश्लेषण, नेतृत्व शास्त्रियों की विचारधारा, राज्यवार जनसंख्या जोड़ दी गई है।

प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी में नव और उपेक्षित विषय का प्रतिपादन करती है। इसमें आदिम जातियों के सम्बन्ध में सर्वथा नवीन सामग्री सरल भाषा में व्यक्त की गई है। लेखक द्वय ने स्थान-स्थानपर घूम कर सब सामग्री का संग्रह किया है। इन पिछड़ी हुई जातियों के सम्बन्ध में अभी कितना अधिक कार्य करना है, इसका ज्ञान इस आइने में हो सकता है।

— रामचरण महेन्द्र

●

खण्डित काश्मीर—मूल अंग्रेजी के लेखक श्री बलराज मधोक। हिन्दी अनुवादक—श्री बालमुकुन्द सोभी। प्रकाशक हिन्द प्रकाशन लि०, जयपुर। पृष्ठसंख्या १८०। साइज डबल क्राउन सोलह पेजी। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) रु०।

"काश्मीर आज भारतीय समस्याओं में एक ज्वलन्त समस्या बना हुआ है। परन्तु यह समस्या खड़ी क्योंकर हुई, जिसकी पृष्ठभूमि क्या है, उसका वर्तमान रूप क्या है और उसका सम्भवित हल क्या हो सकता है, इत्यादि प्रश्नों का उत्तर देने वाली एक भी पुस्तक, जहां तक हम जानते हैं, अब तक प्रकाशित नहीं हुई। श्री बलराज मधोक प्रथम व्यक्ति हैं, जिन्होंने इन प्रश्नों पर पुस्तक रूप में सुसंगत विचार किया है। जब काश्मीर पर पाकिस्तानियों ने आक्रमण किया तब वह श्रीनगर में ही एक कालिज में अध्यापक थे और इस कारण काश्मीर के भूगोल, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र और सामाजिक स्थिति आदि का उन्हें भली भांति परिचय है और अतएव वह इस विषय पर अधिकारपूर्वक लिख सके हैं।

ऊपर जिन प्रश्नों का हमने संकेत किया है, उनका और उसी प्रकार के अन्य प्रश्नों का इस पुस्तिका में भलीभांति विवेचन किया गया है। लेखक ने जम्मू और काश्मीर का संक्षेप से इतिहास लिखकर यह भी बतलाया है कि आज काश्मीर के नाम से जिस प्रदेश को एक भौगोलिक अथवा राजनीतिक इकाई माना जा रहा है, वह एक क्योंकर बनी और उसे एक मानने वालों का दावा भी कई दृष्टियों से कितना परस्पर विरोधी है।

इस पुस्तक से पाठकों को काश्मीर की समस्या की पृष्ठ भूमि, उसकी गत पांच-वर्ष की कहानी और उसके वर्तमान रूप का पूर्ण परिचय तो मिल ही जायगा, इसकी एक बड़ी विशेषता यह है कि लेखक ने इसके लेखन में निजी विचारों का प्रकाशन इतना नहीं किया, जितना कि सब प्रश्नों का वस्तुस्थिति की दृष्टि से निष्पक्ष विवेचन किया है। एक दृष्टि से यह हिन्दी का "खण्डित काश्मीर" मूल अंग्रेजी पुस्तक से भी अधिक उपयोगी है। मूल पुस्तक प्रकाशित होने के पश्चात संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा कौंसिल में काश्मीर के झगड़े पर जो कुछ हुआ, उसका परिचय देने के लिए एक अतिरिक्त अध्याय पुस्तक में जोड़ दिया गया है। यह अंग्रेजी पुस्तक में नहीं था। इस कारण अंग्रेजी की अपेक्षा हिन्दी पुस्तक अधिक उपयोगी हो गयी है।

—रामगोपाल विद्यालंकार

●

अमर गांधी—ले० श्री प्रकाशलाल बी० ए०। प्रकाशक—जीवनमन्दिर, ५३/३ राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली। मूल्य २) रु०।

म० गांधी का यह संक्षिप्त चरित्र है। इसमें सरल भाषा में गांधीजी के जीवन की सब घटनायें दी गई हैं। पिछले २५ पृष्ठों में विविध विषयों पर गांधी जी के विचार दिये गये हैं। छपाई और टाइप ऐसा है कि मामूली पढ़े लिखे लोग भी इसे बिना किसी कठिनता के समझ सकते हैं।

विधान-परिषद ने नागरी लिपि में जिन रोमन अंकों को स्वीकार किया है, उन्हें इस पुस्तक में स्वीकार किया गया है। सब अंक रोमन व नागरी दोनों में दिये गये हैं। ऐसी पुस्तक हमारे देखने में यह पहली ही है।

●

प्रबन्ध पारिजात—संपादक—पं० कृष्णदत्त भारद्वाज। प्रकाशक—कपूर एन्ड सन्स, ११८० लाजपतराय मार्केट, दिल्ली। मूल्य २)।

प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए लिखी गई है। इसमें महापुरुषों के जीवन चरित्र, कुछ साहित्यिक कलाकार तथा अन्य ३०-३५ विषयों पर लेखों का संग्रह किया गया है। विद्यार्थी इनसे कुछ लाभ उठा सकते हैं। कुछ लेखकों में प्रत्येक लेख के साथ साहित्यिक भूमिका लिखने की प्रवृत्ति है, जो अब कुछ पुरानी सी पड़ रही है। निबन्धों के संग्रह विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान को बहुत बढ़ा देते हैं। इसलिए इनका उपयोग लाभकारी है। पुस्तक की छपाई सफाई अच्छी है।

●

गुलदस्ता— (मासिक पत्र) संपादक श्री मूलचन्द जी राजपाल। प्रकाशक गुलदस्ता कार्यालय, ३६३८ पीपल मंडी आगरा। मूल्य एक प्रति १)। वार्षिक मूल्य १०) रु०।

अंग्रेजी में ऐसे अनेक सुन्दर सुन्दर पत्र मिलते हैं, जिनमें विविध पत्र पत्रिकाओंके लेखों, उपन्यासों और पुस्तकों को सार भाग में पाठकों के सामने प्रस्तुत किया जाता है। इन पत्रों से पाठक को विविध विषयों की जानकारी थोड़े से समय में और थोड़े व्यय से हो जाती है। ऐसे अंग्रेजी पत्रों की लोकप्रियता भी वहां कम नहीं होती। हिन्दी में यह नया प्रयत्न इसी दिशा में किया गया है। प्रस्तुत अंक में २१ लेख हैं, जिनमें कहानियां, जीवन निर्माण सम्बन्धी लेख तथा स्वास्थ्य-सम्बन्धी विविध लेख हैं। अनेक लेख पठनीय और मननीय हैं, लेखों का चुनाव सुन्दर हुआ है। पत्र का बहिरंग और कागज छपाई भी आकर्षक है। हमें आशा है कि हिन्दी संसार इस नये प्रयत्न का स्वागत करेगा।

●

अमेरिकन इतिहास की रूपरेखा—प्रकाशक—यूनाइटेड स्टेट्स इन्फोरमेशन सर्विस, नई दिल्ली। मू० ॥) आने।

यह सचमुच आज के सबसे अधिक सम्पन्न और प्रभावशाली राष्ट्र सं० रा० अमेरिका के इतिहास की रूपरेखा है। नयी दुनिया का इतिहास पिछली ४ सदियों से ही प्रारम्भ होता है, किन्तु इतने समय में ही आज वह संसार का सम्पन्न प्रभावशाली देश बन गया है। प्रस्तुत पुस्तक में समस्त अमेरिकन इतिहास को इन सात विभागों में विभक्त किया है—औपनिवेशिककाल, स्वतन्त्रता की प्राप्ति, राष्ट्रीय शासन का संगठन, पश्चिम की ओर विस्तार और प्रादेशिक मतभेद, प्रादेशिक संघर्ष, विस्तार और सुधार का युग और अमेरिका और आधुनिक संसार। इसके पढ़ने से समस्त अमेरिकन इतिहास आंखों के सामने आ जाता है। लेखनशैली सरल व मनोरंजक है। हिन्दी अनुवाद भी बहुत सुन्दर हुआ है।

इस पुस्तक की एक बड़ी विशेषता है, इसका बहिरंग। बड़े-बड़े साइज के १२ रंगीन चित्र हैं और इकरंगे चित्रों की संख्या तो बहुत अधिक है। इन चित्रों से ही अमेरिकन इतिहास परम्परा तथा रहन-सहन आदि का बहुत सा ज्ञान हो जाता है। सारी पुस्तक आर्ट पेपर पर छपी है। छपाई बहुत सुन्दर है। इसका मूल्य प्रचारार्थ बहुत ही कम रखा गया है।

— कृष्ण

❀❀❀

राजस्थान व मध्यभारत में जागीरदारी समस्या

[पृष्ठ ११ का शेष]

लगान को निश्चित न करना, लगान वसूली का अवैज्ञानिक एवं अनियमित तरीका जो अनाज के रूप में कटाई बटाई तथा कूता के द्वारा वसूल किया जाता है, गैर कानूनी लागबागों की वसूली तथा बेगार प्रथा आदि के कारण भी दोनों में आपसी सम्बन्ध नहीं सुधर पा रहे हैं।

इस सबसे आज काश्तकार में बेहद बेचैनी, बेहद असंतोष तथा बेहद हलचल पैदा हो गया है और इस सबका एक मात्र हल केवल यही है। मध्यकालीन युग के इन अवशेषों को शनैः शनैः समाप्त कर दिया जाय और यह एक अवश्यम्भावी बात है जो अब किसी तरह टाली नहीं जा सकती है।

भारत की विभिन्न रियासतों में इस प्रथा के समाप्त करने पर विचार किया है तथा हैदराबाद एवं काश्मीर में तो इस सम्बन्ध में कानून भी बना दिये गए हैं अथवा बन रहे हैं। राजस्थान तथा मध्यभारत संघों ने भी इस ओर कदम उठाया है। भारत सरकार ने इन रियासती संघों में इस सम्बन्ध में स्थिति की जांच करने के लिए एक समिति का निर्माण किया जिसने एक प्रश्नावली के द्वारा विभिन्न वर्गों एवं व्यक्तियों के मत पूछ कर सरकार के समक्ष इन संघों में से जागीरदारी प्रथा को समाप्त करने के सम्बन्ध में सुझाव उपस्थित किये हैं।

किन्तु इस सबका यह अर्थ नहीं है कि सभी जागीरदार प्रतिक्रियावादी हैं। उनमें से कुछ तो अवश्य दूरदर्शी हैं जो समय के साथ चल सकते हैं और राजस्थान, मध्य भारत तथा भारत के हित में अपने रूढ़िबद्ध अधिकारों को तिलांजलि दे सकते हैं। वे भी यह समझ गए हैं कि परिवर्तन अवश्यम्भावी है। वे अपनी जागीरों को छोड़ने के लिए तैयार हैं बशर्ते कि उनको उचित मुआवजा मिले। वे जानते हैं कि यदि इस समय वे प्रतिरोध करेंगे तो वह समय दूर नहीं है जब कि उन्हें सम्पूर्ण से भी हाथ धोना पड़ेगा और कुछ नहीं मिलेगा।

किन्तु मुआवजे का प्रश्न विचारणीय है क्योंकि उसके कारण रियासती संघों के सामने विषम आर्थिक समस्या उत्पन्न हो जायेगी। इन संघों की आर्थिक अवस्था सीमित है। इनका जन्म अभी हाल ही में हुआ है और विशेष तौर पर राजस्थान संघ का। उनके सामने अनेक प्रश्न हैं—एकीकरण की समस्या पूरी नहीं हुई है और फिर औद्योगिक क्षेत्र में भी वे उन्नत नहीं हैं। यदि मुआवजा दिया गया तो उनके सीमित आर्थिक साधनों पर वह एक भारी बोझ आ पड़ेगा और इसके लिये उन्हें ऋण लेना होगा, जो आज की परिस्थितियों में एक सरल कार्य नहीं है। केन्द्रीय सरकार ने विकास योजनाओं के लिए ऋण लिया है और फिर भूमि का राष्ट्रीयकरण करने में तो सैकड़ों करोड़ रुपए की आवश्यकता पड़ेगी जिसका मिलना आज असम्भव जान पड़ता है।

और फिर जब आज मुद्रास्फीति अपनी पराकाष्ठा पर है, यह उचित नहीं होगा कि और अधिक धनराशि देश में प्रसारित की जाय। इससे आज की परिस्थितियों में, न केवल हमारी आर्थिक नीति पर कुप्रभाव पड़ेगा, बल्कि साथ में बाजार में भी एक हलचल पैदा हो जायगी, जिससे व्यापार को भारी हानि पहुंचने की आशंका उत्पन्न हो सकती है।

एक मुश्त नकद धन देने के बजाय ऋण पत्र देने का सुझाव भी आज की परिस्थिति के अनुकूल नहीं हो सकता है, क्योंकि इनसे इन संघ की आय पर ब्याज का भारी बोझ लदा रहेगा।

आगे बढ़ने से पहले हम यह जान लें कि जागीरें उनके मालिकों को प्रायः नकदी के बदले में प्रदान की गई थीं। जागीरदार इनके बदले में इनसे राजस्व, न्याय, शासन, पुलिस व्यवस्था आदि सभी प्रकार के अधिकारों का उपभोग किया करते थे। साधारणतया इन जागीरों में उक्त नकदी से कहीं अधिक आय होती है। फिर भी जागीरदार अपनी प्रजा की भलाई के लिए तथा राष्ट्र हितकारी योजनाओं पर प्रायः एक पाई भी व्यय नहीं करते हैं या करना नहीं चाहते हैं। इनके विपरीत वे एक प्रतिक्रियावादी नीति को बल दे रहे हैं।

इसलिये इस समस्या का एक वैकल्पिक हल भूतपूर्व राजस्थान की भांति जागीरदारों से राजस्थान तथा मध्यभारत में इनके सभी न्याय, राजस्व, पुलिस, शासन, व्यवस्था आदि के अधिकारों को जहां कहीं वे हैं, छीन लेना है। इन सब अधिकारों को छीन लेने के बाद उन्हें सरकार सीधे अपने-अपने अन्तर्गत ले ले और स्वयं उन पर अधिकार करे। इस भांति सरकार और काश्तकार के बीच एक सीधा सम्पर्क स्थापित हो जायेगा। सरकार स्वयं लगान वसूल करे तथा लगान वसूली, शासन व्यवस्था आदि में जो खर्च हो वह रकम भी जागीरदार के लिए स्वीकृत नकदी में से वसूल कर ली जावे और साथ में राष्ट्रहितकारी तथा शिक्षा प्रसार, औषधि व्यवस्था, सड़क निर्माण आदि योजनाओं के लिए भी, जिनका उत्तरदायित्व जागीरदार पर है और जिसे वह अब तक टालता आ रहा है, आवश्यक खर्चा काट लिया जाय। इस सब का अनुमान जागीरदार की आय के ५० प्रतिशत के निकट है। शेष उसे दिया जाय। इस ५० प्रतिशत धन में से भी १० प्रतिशत प्रतिवर्ष कम कर दिया जावे। इस भांति ५ वर्ष की अवधि के बाद जागीरदारी प्रथा स्वयं ही समाप्त हो जावेगी।

कुछ मामलों में जहां जागीरें बहुत छोटी हैं, यह सब खर्चा ५० प्रतिशत से अधिक हो सकता है, किन्तु उचित यह होगा कि सरकार इस अधिक खर्चे को स्वयं ही बर्दाश्त करे, क्योंकि आखिर आगे चल कर उसे ही तो यह सब व्यय उठाना है।

यह सब तो उनसे सम्बन्ध रखता है, जो स्वयं लगान वसूल करते हैं और उसका एक भाग कर के रूप में सरकार को दे देते हैं। जहां तक तनख्वाहदारों, भोमियों, इस्तिमरारदार तथा अन्य इसी वर्ग के जागीरदारों का सम्बन्ध है, जिन्हें भूमि सेवाओं के बदले मिली हुई हैं, उनकी भूमि पर सरकार अधिकार करले और यदि आवश्यकता हो तो उन्हें सरकारी सेवा में वेतन पर रख लिया जाय। उदक, पुण्यार्थ आदि इसी तरह की जो जागीरें हैं, वे बिलकुल समाप्त कर दी जावें। उन पर सरकारी अधिकार हो जाय, और उनके बदले में नकदी मिलें। इनामों के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जाना चाहिये।

वैंकटाचारी कमेटी ने जागीरों को समाप्त करने के सम्बन्ध में १० या १२ वर्ष की अवधि की सिफारिश की है, किन्तु इतनी बड़ी अवधि इन रियासती संघों की, विषम आर्थिक अवस्था को देखते हुए उचित नहीं कही जा सकती है, क्योंकि इसका इनके सीमित कोष पर उल्टा ही प्रभाव पड़ेगा।

जागीरदार इस वर्ष में उससे घटते हुए मुआवजे के अतिरिक्त पुनर्वास के लिए भी धन राशि मांग रहे हैं, जो अनुचित ही नहीं अवांछनीय भी है।

जागीरी क्षेत्रों के किसानों की अवस्था खालसा क्षेत्रों के किसानों के समान करदी जाय और उन्हें वे सब अधिकार प्राप्त हों, जो खालसा के किसानों को प्राप्त हैं। जागीरों के शीघ्रातिशीघ्र नियमित बन्दोबस्त तथा लगान बन्दी को बढ़ावा दे तथा उनमें खालसा की तरह लगान, अनाज के बजाय नकदी में वसूल किया जाय। किन्तु उसके लिए यह आवश्यक है कि जागीरों में पटवारी प्रथा को चालू किया जावे, ताकि काश्तकार अपने आपको सुरक्षित समझें तथा खालसा के किसानों के समान उनका अधिकार आदि में विश्वस्त होने की आशा में संतुष्ट रहें।

जागीर क्षेत्रों के किसानों का खालसा के किसानों के समान ही वर्गीकरण किया जाय और इसके चार वर्ग बनाये जा सकते हैं।

यदि जागीरों में ऐसी व्यवस्था उत्पन्न करदी जावेगी तो किसान के लिए जागीरदार का रहना या समाप्त हो जाना कोई महत्व नहीं रखेगा। इससे जागीरदार और काश्तकार के बीच संघर्ष के सभी बीज समाप्त हो जायेंगे और शनैः शनैः यह वर्ग स्वयं समाप्त हो जायगा।

...◎..

[पृष्ठ ६ का शेष]

कवि थामसन, जो अपनी कविता की पुस्तक में कहता है।

'मिथ्या ऐश्वर्यशालिनी शरत ऋतु! क्या मनुष्य अब भी नहीं जगेगा?'

स्वयं दोपहर तक बिस्तर में पड़ा रहता था, क्योंकि उसके कथनानुसार उठने में कोई उद्देश्य नहीं है। वह जल्दी उठने के लाभ की कल्पना कर सकता था, साथ ही वह शान्ति से पड़े रहने के आनन्द को भी कल्पना कर सकता था, और यदि मुझे यह कहने की आज्ञा दी जाय तो उपरोक्त कविता का वाक्य उसने ग्रीष्म ऋतु में लिखा था, सर्दी की ऋतु में नहीं। हमें विलंब से उठने की युक्ति को वैयक्तिक चरित्र के अनुपात से जांच लेना चाहिए। एक व्यापारी शायद कुछ अधिक कमाने के लाभ से जल्दी उठे, परन्तु यह एक विद्यार्थी के लिए काफी नहीं हो सकता एक अभिमानी व्यक्ति शायद कह सकता है—यदि मैं उठूं नहीं तो मेरी भाई भावना की तुष्टि किस प्रकार हो? परन्तु एक अधिक नम्र व्यक्ति इस भ्रांतिपूर्ण धारणा को अपनी शैया के प्रति आदर भाव दिखा कर हटा देगा और सन्तुष्ट हो जायगा। एक यान्त्रिक पुरुष बिना किसी हिचकिचाहट के अविलंब शय्या त्याग कर देगा, वैसे ही जैसे कि बैरोमीटर का पारा वायुभार से गिरता चढ़ता रहता है। एक बुद्धिमान शय्या-प्रेमी को यदि स्वास्थ्य और आयु वृद्धि का लोभ दिया जाय तो भी वह इसे बिना शास्त्रार्थ के स्वीकार नहीं करेगा। वह हमसे सर्दी की मौसम में देर से उठने के कारण पैदा होने वाले कुपरिणामों के लिए प्रमाण और मांगेगा, वह शरीर के तापक्रम में स्थायित्व, सोते पड़े रहने की स्वाभाविक प्रवृत्ति और उन जानवरों के वर्ष में से अधिकांश महीनों में सोते रहने के उदाहरण देकर अपनी बात को तर्क सगत सिद्ध करेगा। जहां तक आयु के लंबे होने का सवाल है वह यह पूछेगा कि क्या लम्बा होना ही सर्वश्रेष्ठ होता है और क्या जीवन की छोटी छोटी स्ट्रीट ही कहां की सुन्दरतम वीथि है?

राजधानी है !

श्री उमाराम चौधरी 'विशारद'

क्या आपको मालूम है कि देहली हिन्दुस्तान की, कराची पाकिस्तान की, काबुल अफगानिस्तान की, तेहरान ईरान की, नानकिंग चीन की, इस्तम्बूल टर्की की, अंकारा एशियाटिक टर्की की, उर्मची सीक्यांग की, उलनबटार हो तो मंगोलिया की, टोकियो जापान की, सेऊल कोरिया की, रिंहकिंग मंचूरिया की, रंगून बर्मा की, कोलम्बो लंका की, काठमाण्डू नेपाल का, बैंकाक स्याम की, क्वालालम्पुर मलाया की, बटेविया जावा की, मनीला फिलीपाईन की, रावाल प्यूक्विटेन की, पोर्ट डरविन आस्ट्रेलिया का, तेल-अवीव इस्राईल की और मास्को रूस की राजधानी है।

बर्लिन जर्मनी की, रोम इटली की, बुडापेस्ट हंगरी की, बर्न स्विट्जरलैंड की, वीयना आस्ट्रिया की, बेलग्रेड यूगोस्लेविया की और सोफिया बलगेरिया की राजधानी है।

बुखारेस्ट रोमानिया की, तिराना अलबानिया की, पेरिस फ्रांस की, ब्रुसेल्स बेलजियम की, कोपेन हेगन डेनमार्क की, हेग हालैंड की, ओसलो नार्वे की, स्टॉकहाम स्वीडन की, वॉर्सा पोलैंड की, मेड्रिड स्पेन की, रीगा लटेविया की, कोनास लिथुवानिया की, लिस्बन पुर्तगाल की और लन्दन ग्रेट ब्रिटेन की राजधानी है।

नासाऊ बेलिफास्टिक द्वीप समूह की, बेलेटा मालटा द्वीप की, डब्लिन आयरलैंड की, ओटावा कनाडा की, वाशिंगटन यू. एस. ए. की, मेक्सीको मेक्सीको की, पनामा पनामा स्टेट्स की राजधानी है। जार्ज टाउन ब्रिटिश गायना की, पारामेरिबो डचगायना की, केयन फ्रेंच गायना की, केरकस वैनेजुएला की, बकोटा कोलम्बिया की, और क्वीटो इक्वेडोर की राजधानी है।

ब्यूनिस आयर्स अर्जेन्टाईना की राजधानी है। मांटी वीडियो उरुग्वे की, असन्सीयन पैरेग्वे की, रियोडिजेनीरो ब्रेजिल की, सेन्टीयागो चीली की और केपटाउन केप कोलोनी की राजधानी है। पीटर मेरिट्सबर्ग नैटाल की, ब्लोयम फॉन्टीन ऑरेंज फ्रीस्टेट की, प्रीटोरिया ट्रांसवाल की, नैरोबी केनिया का और एडिस अबाबा ऐबिसीनिया की राजधानी है।

काहिरा मिश्र की, आक गोल्ड कोस्ट की, फ्रीटाउन सियरालियोनी की, मोनरोविया लाईबेरिया की और फ्रेंच अफ्रीका की राजधानी है। वलींगटन न्यूजीलैंड की, डुनियन दक्षिण रोडेशिया की, लियोपोल्डविले बेल्जियन कांगो की और खार्तूम एंग्लो-मिश्री सूडान की राजधानी है।

प्रचार के लिए बालकों का उपयोग

स्टालिन की नई प्रचार योजना के अनुसार विद्यार्थियों को राजनीतिक पत्र लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। लोग हिटलर के जमाने की उस बात को अभी नहीं भूले हैं, जब बच्चों को अपने मा बाप के ऊपर भी जासूसी करने की ट्रेनिंग दी जाती थी। साम्यवादी भी उनकी नकल कर रहे हैं और युवकों के दिमागों को अपने दूषित प्रचार से बिगाड़ रहे हैं। साम्यवादी आजकल पूर्वी जर्मनी में विद्यार्थियों को राजनीतिक पत्र लिखने को प्रोत्साहित कर रहे हैं। साम्यवादियों के आदेशानुसार स्कूल के शिक्षक विद्यार्थियों को पश्चिमी जर्मनी में रहने वाले मित्रों, सम्बन्धियों और अजनबियों को पत्र लिखने को प्रोत्साहित करते हैं। ये पत्र साम्यवादियों की प्रशंसा और पश्चिमी राष्ट्रों की बुराई से भरे होते हैं। साम्यवादी नियंत्रण में पूर्वी जर्मनी में हो रहे पुनर्निर्माण की प्रशंसा की जाती है और लोगों से साम्यवादी नियंत्रण में जर्मनी की एकता प्राप्त करने का अनुरोध किया जाता है।

दो वर्ष में यांत्रिक मनुष्य का निर्माण

कुछ कठिनाइयों पर विजय पाने के पश्चात् केवल दो वर्ष के भीतर एक यांत्रिक मानव तैयार हो सकता है, जो साधारण बुद्धि वाले मनुष्य की भांति लगभग सभी काम कर सकेगा। इस प्रकार का यांत्रिक मानव बनाने का दावा एक अंग्रेज डाक्टर ग्रे वाल्टर ने किया है। इस समय आपकी अवस्था ३८ वर्ष की है और आप मस्तिष्क तथा स्नायु-तंतु विशेषज्ञ हैं।

डा० ग्रे वाल्टर ने एक यांत्रिक कछुआ बनाया है, जो सामान्य प्राकृतिक कछुवे से दसगुना अधिक बुद्धिमान है। इस कृत्रिम कछुवे के नसें बना दी गई हैं, जिनमें होकर बिजली का प्रवाह होता है और उसका सारा शरीर एक अद्भुत विद्युत्-यंत्र द्वारा नियन्त्रित है। यह कछुआ असली कछुवे की भांति आदेशों का पालन करता है। उसे सर्दी और गर्मी सताती है और अन्य जीव जन्तुओं की भांति वह घात-प्रतिघात करता है।

डा० वाल्टर का कथन है कि यांत्रिक मानव के बनाने में कई हजार पौंड व्यय होंगे तथा अनेक इंजीनियरों को पूरा समय देकर काम करना होगा। यह मनुष्य की घरेलू टहल असली मनुष्य से अधिक योग्यता पूर्वक कर सकेगा।

इस यांत्रिक मनुष्य के मानवी मस्तिष्क जैसा न्यूरानिक एक मस्तिष्क भी होगा। वह बिजली की सी तेजी से जोड़-बाकी, गुणा-भाग आदि कर सकेगा; वह शब्द लिपि लिखने में वास्तविक मनुष्य से भी आगे रहेगा; अन्य बहुत यांत्रिक कामों को भी वह अधिक तेजी से कर सकेगा। संक्षेप में वह लगभग सर्वांगपूर्ण घरेलू नौकर होगा। हास्य-विनोद में भी भाग ले सकेगा।

इस यांत्रिक मनुष्य के निर्माण में इस समय एक अड़चन आ रही है कि इसको अपने घर रखने वाले लोगों की ओर से कोई संकेत नहीं मिल रहा। और न इसके बनाने के लिए धन ही प्राप्त हो रहा है।

बादल क्यों गरजते हैं ?

श्री अमरचन्द्र पाण्डेय, विशारद

एक समय की बात है कि प्रजापति के तीन पुत्र; देव, मनुष्य और असुरों ने, अपने पिता के आश्रम पर ब्रह्मचर्य रूप तप का साधन किया। जब इन तीनों की साधना पूर्ण हो गई तो देवों ने प्रजापति से निवेदन किया कि आप हमें उपदेश कीजिये।

प्रजापति ने कहा—'द' और उनसे पूछा 'तुम लोग समझ गए क्या?'

इस पर देवों ने कहा—'समझ गए। आपका तात्पर्य है कि हम लोग 'दमन' करें।'

इसको सुनकर प्रजापति ने कहा—'तुम ठीक समझे हो।'

देवों के पश्चात् मनुष्य का बार था। उन्होंने भी प्रजापति से उपदेश देने की प्रार्थना की।

तब प्रजापति ने कहा—'द' और उनसे पूछा—'क्या तुम समझ गए?'

मनुष्यों ने कहा—हे पिता, हम समझ गए, आपने हम से कहा है कि 'दान करो'।'

प्रजापति बोले—तुम ठीक समझे।

अन्त में असुरों का बार आया और उन्होंने प्रजापति से कहा—आप हमें उपदेश करें।'

वे बोले—'द' और उनसे पूछा—'क्या तुम समझ गए?'

'हां, समझ गए' असुरों ने कहा—'आपने हम से दया करने को कहा है।'

प्रजापति ने कहा— 'तुम ठीक समझे'। भोग प्रधान देवों को इन्द्रिय दमन का, संग्रह प्रधान मनुष्यों को दान करने का, और क्रोध हिंसा प्रधान असुरों को जीवों पर दया करने का उपदेश करती हुई प्रजापति की वह अनुशासनात्मक वाणी आज भी मेघगर्जन के रूप में द-द-द देती ध्वनि कर रही है। अतः बादल गरजते हैं।

★

लोह पुरुष पटेल

श्री प्रेमचन्द रावत 'निरंकुश'

लोह पुरुष को प्यारे बच्चो,
कहता तुम्हें कहानी।
इसी दिसम्बर पन्द्रह को,
वह लोह गया सेनानी।

भारत मां का मधुर लाडला,
बिछुड़ गया है आला।
आज हमारे दुर्दिन आये,
जिसने हमें रुलाया।

जिसने भारत के जीवन में,
नई भावना लादी।
भारत मां वह सूख सूख कर,
आज होगई आधी!

कुछ दिन पहले छोड़ गये थे,
हमें पोप अरविन्द।
नहीं मिटे पलकों के आंसू,
अब भी रोता हिन्द!

इसके बल से दुश्मन मन में,
दांत पीस रह जाते।
उसके डर से उनके सपने,
खाई में दह जाते।

बिना रक्त का क्रांति दूत वह,
झुके राज रजवाड़े!
सभी दलों के बने हुए थे,
पहले युद्ध अखाड़े।

बच्चो! तुम भी उस पटेल से,
बनो वीर सेनानी!
देख तुम्हारी गौरव गाथा,
धरिका उतरे पानी।

जिसकी अमर आज फहरती,
जग की धवल पताका।
आज अंधेरी बनी हमारी,
इस जीवन की राका।

हम बच्चों की यही विनय है,
तुम हे अमर नामी!
दुख में डूबे परिवारों को,
हिम्मत दो हे स्वामी!

★

बिहार के जेल विभाग के कर्मचारियों को वेतन के जो नोट मिले, सब के सब नकली निकले। —प्रेस ट्रस्ट

या तो बिहार की समझदार सरकार ने यह सोचा होगा कि बाजार से भी चीजें इन्हें नकली खरीदनी हैं तो नोट भी नकली ही ठीक रहेंगे। या नोट कैदियों से ही बनवाने आरम्भ कर दिये होंगे।

× × ×

राजस्थान में पुराने कागजों और सनदों की खोज हो रही है। — हि० स०

कुछ तो रहने दो गरीबों के पास।

× × ×

कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव की जांच हो। — आचार्य कृपलानी

दिल की निकालने के लिए तो एक बार फिर चुनाव कराओ।

× × ×

लखनऊ में राशन का एक दुकानदार 'पुत्रक' की सहायता से कम तोलता है। —एक पत्र

सरकार को चाहिए कि उसे तुलाई मन्त्री बना दे।

× × ×

चुनावों के समय आम जन्तुओं को रिहा कर दिया जायगा। — कयूमखां

यह आपकी बदकिस्मती की शुरूआत होगी मियां।

× × ×

मौरीपुर का हवाई अड्डा लियाकतअली ने अंग्रेजों को सौंप दिया। — एक समाचार

इसीलिए तो शायद अकबरखां हाथ पैर मार रहा था कि क्या पता वे हजरत किसी दिन पाकिस्तान भी अंग्रेजों को दे दिला कर १-२-३ हों यहां से।

× × ×

उत्तर प्रदेश में विवाहित कैदियों को आसवाबं रखने की आज्ञा दी जावेगी। — राज्य सरकार

मकान-समस्या और खाद्य समस्या से परेशान भाई लाभ उठा सकते हैं।

× + ×

सरकार मसूरी और नैनीताल के अतिरिक्त फिर खोलेगी। — एक शीर्षक

चुनावों तक तो सरकार निःशुल्क] कर दे तो कैसा रहे।

× × ×

६२ वर्ष के बूढ़े और ६० वर्ष की बुढ़िया का विवाह वासना के एक काजी ने करा दिया। — एक सम्वाद

अब इनको मधुमास मनाने के लिए सीधा पाकिस्तान के किसी कब्रिस्तान में में चले जाना चाहिए।

× × ×

पश्चिमी पंजाब के चुनावों की गुन्डागर्दी की जांच कराई जाय। — सुहरावर्दी

गुन्डागर्दी की तारीफ में क्या परिभाषा है मियां, न जानते तो हो कयूमखां से पूछिये सरहद जाकर।

× × ×

जनता की सेवा के इच्छुक कांग्रेस छोड़ दें। — डा० घोष

यदि आप सभी लोग कुछ दिन जनता की सेवा करना छोड़ दें तो और भी अच्छा है।

× × +

संविधान में परिवर्तन होगा। — एक शीर्षक

जितना सरकार में दुर्भाग्य उतना ही या अधिक।

× × ×

मि० जिन्ना की बहिन फातिमा नजरबन्द बना दी गईं। — एक दैनिक

मियां जिन्ना को भी शायद आज यही दिन देखना पड़ता। वह तो शुरुआत लेने से पहले ठंड ही ठंड में चल दिये।

× × ×

पाकिस्तान की हवाई शक्ति को बताना देश के हित में उचित नहीं। — लियाकतअली

पाकिस्तान की जनता अपनी हवाबाज सरकार का विश्वास जरा कम करती है, मियां।

+ × ×

पाकिस्तानी पंजाब का प्रधानमन्त्री एक बी० ए० पास बन गया। — 'डॉन'

हजारी बनना पाकिस्तान के सभी नियम बदलने पड़ेंगे।

× × ×

नूतन वर्ष

[श्री रजनीकांत व्यास]

दूर क्षितिज-तट पर ये किरणें,
क्यों सहसा मुस्काईं ?
मन्द पवन भी आज न जाने—
क्यों सहसा इठलाईं ?

यह नूतन प्रभात आया है,
और पुरानी रात गई।
किंतु आज तक समझ न पाया,
कौन पुरानी कौन नई ?

जग की सीमाएं लांघित कर,
नव वर्ष सदा हम तक आता।
आशा अथवा अन्धकार –
कुछ देता और चला जाता !

कौन वर्ष है जिसमें अब तक,
मानव ने सुख-सांस भरी।
और कौन से सम्वत्सर में—
गा पाया निज स्वर लहरी ?

वर्ष सदा आते-जाते हैं,
पर न चितायें चुकीं कभी।
आशा और निराशा की—
रेखायें अब तक मिटी कभी !

आज हृदय में सुख-दुःख की,
संयुक्त घटाएं छाईं।
नई-पुरानी स्मृतियां भी,
सहसा नयनों में आईं।

★

[पृष्ठ ७ का शेष]

जालसाजी करना सम्भव न हो सके।

विशाल कार्य

सम्पूर्ण भारत में १७ करोड़ से अधिक मतदाता हैं जिनके लिए लगभग २२ करोड़ मतदान-पत्र छापने होंगे, लगभग १,७१,००० मतदान केन्द्रों की व्यवस्था करनी होगी तथा लगभग १८ लाख मतदान के बक्से बनवाने होंगे। इन आंकड़ों से स्वयं स्पष्ट है कि सफलता पूर्वक चुनाव कार्य करने के लिए कितनी व्यवस्था तथा श्रम की आवश्यकता है। प्रत्येक मतदान केन्द्र के लिए एक प्रधान अधिकारी, कम से कम दो या तीन क्लर्क, दो या अधिक चपरासी तथा सुरक्षा के लिए पुलिस आदि की आवश्यकता होगी। इतनी सब आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए यह सम्भव नहीं है कि किसी भी राज्य में मतदान कार्य एक ही दिन में समाप्त हो सके। एक केन्द्र में कार्य सम्पन्न हो जाने के बाद चुनाव दल दूसरे केन्द्र पर चला जावेगा। जिस क्षेत्र में जिस दिन चुनाव होगा उसमें उस दिन स्थानीय छुट्टी मानी जायगी।

चुनाव विधेयक

चुनाव के विषय में, संसद में इस समय जो विधेयक विचाराधीन है उसके अनुसार चुनाव के क्षेत्र में चुनाव के दिन कोई भी राजनीतिक दल सभा तथा प्रदर्शन आदि नहीं कर सकेगा। इसके अतिरिक्त, विधेयक में ऐसी सब व्यवस्था करने के सुझाव भी हैं जिससे उचित तथा स्वतन्त्र चुनाव के कार्य में किसी प्रकार की बाधा न पड़ सके।

चुनाव के इस महान कार्य की वास्तविक सफलता प्रत्येक व्यक्ति के आचरण पर निर्भर है। आगामी चुनावों के लिए वर्तमान सरकारों, अधिकारियों, राजनीतिक दलों, उमीदवारों तथा उनके साथियों, और सबके अधिक से अधिक सहयोग तथा प्रयत्न पर ही इतने महान कार्य की सफलता निर्भर है।

—★—

रजि० नं० ई० पी० ४६१

वीर अर्जुन

४ आना

मद्यपान-निषेध और हमारी सरकारें

★ आचार्य काका कालेलकर

मद्यपान-निषेध हमारी संस्कृति का प्रधान अंग है। मद्यपान-निषेध की नीति कुछ धर्माचार्यों ने हमारे सिर पर लादा नहीं है। वह सारे राष्ट्र का निर्णय था। हमारे पूर्वज किसी समय मद्यपान के काफी रसिक थे। यहां तक कि यह इतिहासकारों ने सुर असुर का अर्थ ही किया है कि शराब पीने वाले जो सुर, शराब नहीं पीने वाले ईरान के फारसी लोग सो असुर। यज्ञ में सोम का व्यवहार होता था, जिसे पी कर इंद्रदेव भी बकने लगते थे। श्रीकृष्ण के आत्मीय-जन यादव लोगों ने शराब पी कर गृह-युद्ध चलाया और वे आत्मनाश तक पहुँचे। माध्वी, गौड़ी इत्यादि अनेक तरह की शराब का पूरा पूरा अनुभव लेने के बाद ही हमारी जाति ने पश्चात्ताप किया और तय किया कि मद्यपान महा पाप है। मद्यपान करने वाले की सोहबत करना भी पाप है। पांच-दस धर्माचार्यों की नसीहत के कारण नहीं, किन्तु मद्य-पान से होने वाली फजीहत के गहरे अनुभव से सारी जाति ने संकल्प किया कि मद्यपान का त्याग ही करना चाहिये।

जब हमारे यहां पठान मुगलों का राज हुआ, तब उनके धर्म की भी नसीहत थी कि शराबखोरी खराब है। राजा लोगों की बात दूसरी है। बादशाह लोगों का काम कायदा चलाने का होता है, स्वयं पालने का नहीं। पठान और मुगल लोगों के राज्य काल में उनके कारण हमारे देश में शराबखोरी बढ़ी थी, ऐसी तवारीख की गवाही नहीं है। जब अंग्रेज आये तब परिस्थिति बदल गई। लोकमान्य तिलक के शब्द में कहें तो अंग्रेज लोग 'पीढ़ जाद शराबखोर हैं।' हमारी संस्कृति के अच्छे हिस्से का रक्षण करना उनका काम नहीं था। उन्होंने शराबखोरी रोकने की जगह उसके जरिये अपनी आमदनी बढ़ाने का सोचा। शराब पर टैक्स लगाया। वह ऐसी खूबी से बढ़ाते गये कि शराबखोरी बढ़ती जाय और आमदनी का साधन भी बढ़ता जाय।

जब गांधीजी ने स्वराज्य-आंदोलन अपने हाथ में लिया, तब कांग्रेस के राजनैतिक कार्यक्रम में जानबूझ कर उन्होंने एक सामाजिक और एक नैतिक ऐसे दो कार्यक्रम उसमें जोड़ दिये। वे जानते थे कि इनके बिना स्वराज्य टिक नहीं सकता। सामाजिक कार्यक्रम था अस्पृश्यता-निवारण तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता का। और नैतिक कार्य-क्रम था शराबबंदी का।

अंग्रेजों ने हमारे देश में टेम्परन्स का—परिमित पान का—कार्यक्रम चला कर देखा। लेकिन हमारे देश के नेताओं ने और संस्कृति के रक्षकों ने उसे मंजूर नहीं किया। मद्यपान निषेध ही हमारी राष्ट्रीय नीति रही।

अब अंग्रेज तो चले गये। हमारा स्वराज्य हुआ। लेकिन मालूम होता है कि अंग्रेजों के शागिर्दों के हाथ में हमारा राज्य पहुँच गया। हमारी सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक नीति का पालन करने वाली सरकार ही 'स्वराज्य-सरकार' का नाम धारण कर सकती है। अगर मद्यपान की सर्व स्वीकृत नीति का पालन हमारी सरकारें नहीं कर सकतीं तो अपनी कमजोरी कबूल करके वह खामोश बैठें। हम उनके प्रति दया भाव रखने के लिये तैयार हैं। लेकिन जब ये सरकारें मद्यपान निषेध के विरुद्ध लोकमत का संग्रह करने के लिये तैयार होती हैं, तब उन्हें साफ साफ कहना चाहिये कि खबरदार! आप भारतीय संस्कृति के प्राणस्वरूप तत्वों के साथ खिलवाड़ न करें। जिनमें ताकत है, उत्साह है और राष्ट्रीय नीति को सफल करने का कौशल है, उन्हें मद्यपान-निषेध का कार्यक्रम जोरों से आगे चलाना चाहिये। जिनकी यह शक्ति नहीं है, वे जाहिर करें कि स्वयं कमजोर हैं। जब तक उनकी जगह लेने वाले मजबूत लोग तैयार नहीं हुये हैं तब तक वे भले ही अपने ढंग से राज्य चलावें। किन्तु भारतीय संस्कृति के इस शुभ तत्व के खिलाफ आन्दोलन न करें।

हां, स्वराज्य सरकार को पैसे की जरूरत होती है। शराब के द्वारा सरकार की आमदनी काफी बढ़ती है। गांधीजी कहते थे कि 'अनीति को बढ़ाकर धन पाना और उस धन के द्वारा देश में शिक्षा का प्रचार करना यह उल्टा धन्धा है।" देश में अनीति के कई प्रकार हैं, जिनको थोड़ा बहुत उत्तेजन देने से सरकार की आमदनी काफी बढ़ सकती है। किसी अर्थशास्त्री ने कहा था कि देश की आधी लोकसंख्या गुलाम बन करके अपने को बाकी के लोगों को बेच डाले तो राष्ट्र की आमदनी एकदम बढ़ जायेगी। आजाद मनुष्य की कोई कीमत नहीं होती। गुलाम की कीमत होती है और वह काफी होती है। तो क्या इस तरह से हम राष्ट्रीय आमदनी बढ़ावें?

सरकार की आमदनी बढ़ाने का एक अच्छा तरीका अभी तक किसी के ध्यान में नहीं आया है। हमारे देश में मन्दिर, मसजिद, गिरजाघर और कब्रस्तान की संख्या कम नहीं है। इनके पीछे देश

[शेष पृष्ठ २३ पर]

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १७] दिल्ली, रविवार १० वैशाख सम्वत् २००८ [अङ्क ५२

बड़ौदा नरेश की पदच्युति

कुछ ही दिवस पूर्व सहसा ही यह समाचार प्रकट हुआ कि भारत सरकार ने महाराजा बड़ौदा को गद्दी से हटा दिया और उनके समस्त विशेषाधिकार छीन लिए। उनके स्थान पर उनके ज्येष्ठ पुत्र युवराज फतेहसिंह को महाराजा घोषित कर दिया।

जहां तक बड़ौदा के भूतपूर्व महाराज सर प्रतापसिंह गायकवाड़ के व्यक्तित्व तथा अधिकारों का प्रश्न है, हमें उसमें कोई रुचि नहीं है। राज्यतन्त्र भारत से समाप्त हो गया है और अब कोई भी बुद्धिमान् व्यक्ति इसका समर्थन नहीं करता। किन्तु केवल राजा या महाराज होने के कारण ही कोई व्यक्ति दण्ड का पात्र नहीं बनता। प्रजातन्त्र की भावना तो प्रत्येक नागरिक को समान दृष्टि से देखती है और उसके कार्यों की अच्छाई और बुराई पर ही उसे सम्मान अथवा दण्ड का पात्र समझती है।

जहां तक इस विषय में प्रकाशित तथ्यों का प्रश्न है, हम यही जानते हैं कि राज्य मंत्रालय सचिव श्री गोपाल स्वामी आयंगर तथा भूतपूर्व महाराजा बड़ौदा नरेश में कुछ विवाद चला था। राज्य मन्त्री ने कुछ आरोप लगाये थे और गायकवाड़ ने उनको निराधार बताया था। एक स्वतन्त्र पत्रकार के नाते आज भी जब हम दोनों पक्षों के वक्तव्यों को देख कर किसी तथ्य पर नहीं पहुंच पाते। और हम जब यह समझते हैं कि जब एक पत्रकार होते हुए हमारी यह स्थिति है कि कोई चित्र स्पष्ट नहीं है, तो सर्व साधारण जनता की स्थिति क्या होगी।

भूतपूर्व महाराजा बड़ौदा का यह कथन है कि उनके राज्य को उनकी सहमति के बिना ही बम्बई प्रान्त में मिला दिया गया। राज्यमन्त्री और राज्य सचिव का कथन है कि उनकी इस प्रकार की मांग संविधान को चुनौती है। सीधी बात यह है कि राज्य के विलीनी करण के समय महाराजा तथा भारत सरकार ने किसी समझौते पर हस्ताक्षर किये होंगे। उस समझौते में यदि महाराजा ने यह बात मान ली हो कि बड़ौदा के विलीनी करण और भावी व्यवस्था के सम्बन्ध में उन्हें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं होगी, और आज वे इस प्रकार की आपत्ति कर रहे हों तो यह कहीं अधिक अच्छा होता कि राज्यमंत्रालय उस पत्र को जनता के सामने रखता किन्तु ऐसा कुछ भी करने के स्थान पर उसने महाराजा की मांग को 'संविधान को चुनौती' मात्र ही कहा है, जो एक अस्पष्ट सी बात है।

प्रजातन्त्र पद्धति की यह विशेषता है कि जो नियम बनाये जाते हैं, वे सबके ऊपर समान रूप से लागू होते हैं। जनता पर उनका जितना बन्धन होता है उतना ही सरकार पर भी। किन्तु सरकार स्वयं नियम बनाने वाली होने के कारण प्रायः अपनी सुविधा के लिए उन्हें तोड़ भी दिया करती है। इस प्रवृत्ति के वहां और भी अधिक बढ़ जाने की सम्भावना रहती है, जहां प्रजातन्त्र शासन प्रणाली लागू तो अवश्य हो, किन्तु किसी बलवान विरोधी दल का अभाव हो। अपनी सुविधा के लिए मान्यताओं अथवा नियमों का सत्तारूढ़ दल द्वारा तोड़ा जाना प्रजातंत्र को नहीं तानाशाही को जन्म देता है और किसी भी व्यक्ति की तानाशाही से किसी दल की तानाशाही बहुत भयंकर होती है, फिर वह कोई भी क्यों न हो।

हमें भय है कि भारत का वर्तमान सत्तारूढ़ दल इसी मार्ग पर चल रहा है। यदि स्थिति यही रही तो देश में एक भयंकर तानाशाही खड़ी हो जायेगी, जो अपनी मनमानी करेगी और प्रजातन्त्र का नाम लेकर अपने से भिन्न विचार रखने वाले प्रत्येक नागरिक को कुचलने का साहस करेगी। यही भयानक प्रवृत्ति धीरे-धीरे बढ़ रही है।

जहां तक हम सब जानते हैं भारत में वास्तविक राजनीतिक एकता स्थापित करने के लिए सभी देशी राज्यों का विलयन वहां के शासकों की सहमति से स्वर्गीय सरदार वल्लभ भाई ने किया था। इसके बदले में उन्हें कुछ वार्षिक धन राशि तथा विशेषाधिकार दिये गये थे। जिन्हें संविधान में भी मान्यता दी गयी थी। इस प्रकार की मान्यताओं को इतनी सरलता पूर्वक उठा कर फेंक देना यही सूचित करता है कि सत्तारूढ़ दल और सरकार उनके प्रति अपना कोई नैतिक उत्तरदायित्व नहीं समझते। वे तो आगामी चुनाव में मत चाहते हैं। जो उन्हें मत देगा और उनकी कुर्सियां सुरक्षित बनाये रखने में सहायक होगा, उसकी सब बुराइयां भी क्षम्य होंगी, किन्तु जो विपरीत विचार करेगा उसे कुचल दिया जायगा।

गायकवाड़ को पदच्युत करने से यह ध्वनि निकलती है कि कांग्रेस सरकार देशी नरेशों को वार्षिक धन राशि और विशेषाधिकार इसलिए नहीं दिये हुए हैं कि वे भारतीय संविधान के अनुरूप है। वरन् वह तो यह समझती है कि वह तुम्हें इतना पैसा देते हैं। तुम हमें मत दो और दूसरों से दिलवाओ। जो हमें मत नहीं देगा, हमारे स्वर में स्वर मिला कर नहीं बोलेगा, और हमारी सहायता नहीं करेगा उससे सब कुछ छीन लिया जायेगा।

गायकवाड़ को पदच्युत करने का प्रश्न केवल एक देशी नरेश को पदच्युत करने का प्रश्न प्रतीत नहीं होता। यदि उसने अपराध किया हो उसे अवश्यमेव दण्ड मिलना चाहिये। अपराधी चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो दण्ड भागी होना चाहिये। यही प्रजातन्त्र की भावना है। किन्तु अभी तक इस विषय में जो कुछ प्रकाश में आया है, वह किसी भी प्रकार के अपराध को सिद्ध करने के लिए पूर्णतः अपर्याप्त है। अत हम सरकार से अनुरोध करेंगे कि शीघ्र ही इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश डाल कर वह अपनी स्थिति को स्पष्ट करे।

★

एक तीर से दो शिकार

हाल ही में भारत सरकार के संवाद संवहन मंत्री श्री रफीअहमद किदवई ने मंत्रीमंडल से त्याग पत्र देने की धमकी दी। बताया जाता है कि यह धमकी उनकी झूठी धमकी थी। त्यागपत्र के प्रमुख कारण, जो प्रकाश में आये हैं, वह बताए जाते हैं कि उड़ीसा के गवर्नर के पद पर श्री मेनन की नियुक्ति तथा बड़ौदा महाराजा का शासक पद से अपदस्थ किया जाना, यह दोनों ही महत्वपूर्ण निर्णय मंत्रि मंडल के बिना पूछे ही क्यों किए गए। इन संवादों में कोई सत्यता हो या न हो, किन्तु इतना अवश्य है कि इसी समय कांग्रेस दल और डेमोक्रेटिक फ्रंट का एकता के लिये विशेष और महत्वपूर्ण प्रयत्न प्रारंभ हुए थे, यहां तक कि पं० नेहरू स्वयं उन वार्ताओं में सक्रिय भाग ले रहे थे। कांग्रेस दल और डेमोक्रेटिक फ्रंट की एकता का प्रयत्न इसके सिवाय अन्य क्या हो सकता था कि दोनों गुटों के लोग परस्पर बैठ कर अपने स्वार्थों को सिद्ध करने के लिए कुछ व्यापारियों जैसे समझौते करते। निश्चय ही किदवई-कृपलानी गुट के स्वार्थ कुछ बड़े चढ़े हैं अन्यथा वे क्यों अपना डेमोक्रेटिक फ्रंट अलग से बनाते! वैसे तो किदवई पं० नेहरू के ही परम मित्र माने जाते हैं और स्वयं पं० नेहरू अपनी बात मनवाने अथवा पलड़ा भारी रखने के लिए समय समय पर त्याग पत्र के शस्त्र का प्रयोग करते रहे हैं इस समय श्री किदवई ने कांग्रेस दल तथा डेमोक्रेटिक फ्रंट की एकतावार्ता को किदवई-कृपलानी स्वार्थों की दृष्टि से प्रभावित करने के लिए ही त्याग-पत्र के अस्त्र का प्रयोग किया हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यही कारण है कि सर्व साधारण क्षेत्रों में यह चर्चा चल पड़ी है कि श्री किदवई का त्यागपत्र मंत्रि मंडल की किसी नीति या त्रुटि को लक्ष्यकर छोड़ा गया ऐसा तीर है, जो अनायास एकता-वार्ता को भी बेध कर किदवई-कृपलानी को कुछ अधिक प्राप्त करा देने में सहायक होगा। देखें ऊंट किस करवट बैठता है।

ईरान की समस्या

★ श्री नीरस जोगी

विश्व में प्रति दिन नवीन समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं। ईरान भी इनके प्रभाव से अछूता नहीं रह सका है। उत्तर में रूस की सीमा समीप होने के कारण वहां सदैव ही साम्यवादी हलचलों का भय बना रहता है। तेल उत्पादन का प्रमुख स्थान होने के कारण आंग्ल अमरीकी गुट इस पर से अपना अधिकार समाप्त नहीं करना चाहता है। १९०१ में ईरान में तेल का पता लगा था। तब विलियम नामक नामक एक ब्रिटिश नागरिक ने तत्कालीन शाह पर दबाव डाल कर ४००० पौंड वार्षिक पर देश के ४।५ भाग में तेल निकालने का अधिकार प्राप्त कर लिया था। ब्रिटेन का स्थानीय तेल उद्योग पर ५६ प्रतिशत अधिकार है। यह अधिकार १९९३ में समाप्त होगा। आज राष्ट्रीयकरण की मांग उठाये जाने पर स्थिति भिन्न हो गई है। ब्रिटेन अपने स्वार्थों को अक्षुण्ण रखना चाहता है वह इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रत्येक बाधा का विरोध करेगा।

तेल की राजनीति में विदेशी शक्तियों के साथ ईरान की भी रुचि है। वह तेल उद्योग का राष्ट्रीयकरण इसलिए चाहते हैं कि देश का धन बाहर न जा सके। राष्ट्रीयकरण की दशा में देश के उद्योग पर स्थानीय सरकार का हाथ होगा और इस प्रकार राष्ट्रीय सम्पत्ति बढ़ेगी। जनरल अली रजमारा की हत्या भी राष्ट्रीयकरण का विरोध करने के कारण की गई है। उनका हत्यारा धर्मान्ध मुस्लिम संघ का था। जो कि विरोधी दलों में से एक है। साम्यवादी उन्हें इस कारण घृणा करते थे कि उन्होंने अजरबेजान में साम्यवादी तूदेह दल को पूरी तरह दबाया था। जमींदार उनके कृषक सुधारों के विरोधी थे। मजलिस उनके द्वारा किए गए समझौते के विरुद्ध थी जिसके अनुसार ईरान को ४ लाख पौंड अब आंग्ल ईरानी तेल कम्पनी से मिलता।

जनरल रजमारा एक सैनिक थे। उनके साथ ईरान की कोई बड़ी राजनैतिक शक्ति न थी। केवल शाह का ही उन्हें समर्थन प्राप्त था। इसी कारण गत वर्ष सेना से उन्हें प्रधान मंत्री बनने के लिए बुलाया गया था। केवल जनता के निम्न वर्ग व मध्य वर्ग ने ही उनकी नियुक्ति का स्वागत किया था। श्री रजमारा आने वाली साम्यवादी आपत्ति से अपरिचित न थे। वह जानते थे कि शक्तिशाली जनता ही साम्यवाद का विरोध कर सकेगी। इसी कारण वह दोनों बड़ी शक्तियों में सन्तुलन बनाये हुये थे। उनके कार्यकाल में ईरान को आंग्ल अमरीकी गुट से कम ही खतरा था। एक देशभक्त होने के नाते उनसे यह आशा नहीं की जा सकती थी कि वह देश को रूस के हाथों सौंप देंगे, अपितु इसके विपरीत वह रूस व पश्चिमी शक्तियों के मध्य सन्तुलन बनाये हुए थे।

ईरान की सैनिक कमजोरी को देखते हुए एक अनुभवी सैनिक के नाते व पश्चिमी राष्ट्रों की उचित सहायता के अभाव में वह दोनों गुटों से सम्बन्ध बनाये हुए थे। आज जब कि उत्तर से रूस अपनी सेनायें भेजने की धमकी दे रहा है, अमरीका कूटनीतिक चाल चल रहा है और ब्रिटेन तेल कूपों को छोड़ना नहीं चाहता है तब ईरान एक उचित नेता की खोज में है, जो कि देश को आपत्ति से बचा सके। जनरल की मृत्यु से ईरान ने एक प्रगतिशील नेता को दिया है।

ईरान समस्या को केवल तेल की समस्या समझना मूर्खता पूर्ण भूल होगा, आज की जागृति तो आन्तरिक विद्रोह का एक चिन्ह है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का सहारा पाकर यह समस्या भयंकर रूप धारण कर रही है। गत १५० वर्षों में ईरान में बड़ी शक्तियों का संघर्ष सदैव ही रहा है। परन्तु मुख्य कारण ईरान के शासक वर्ग की मूर्खता स्वार्थ व निर्णय न करने की अक्षमता ही है। अनेकों वर्षों से ईरान में सन्तुलन का अभाव रहा है।

आज वहां एक समस्या को पुनर्जीवित किया जा रहा है। अमरीका ब्रिटेन के तेल स्वार्थों को समाप्त कर देना चाहता है। वह जनता के ब्रिटेन के प्रति बढ़ते हुए क्षोभ से लाभ उठाना चाहता है। राष्ट्रीयकरण अमरीका की विजय है। तब भी उसे एक भय अवश्य हो गया है। वह अबादान इत्यादि तेल क्षेत्र की घटनाओं से समझ गया है कि जनता की शक्ति क्या है। वह वहां पर हुई साम्यवादी हलचलों से परेशान है। अमरीका की सप्त वर्षीय योजना इन देशों में एक प्रकार से व्यर्थ ही सिद्ध हुई है। यदि आज ईरान की जनता ब्रिटेन को उसके स्वार्थों से वंचित करदे तब भी यह आशा कम की जाती है कि अमरीका वहां पर अपना अधिकार कर लेगा। तब भी अमरीका ब्रिटेन के स्वार्थों का अन्त होते देख कर प्रसन्न है। अमरीकी राजदूत श्री ग्रेडी की हलचलें पिछले दिनों कुछ अधिक बढ़ गई हैं।

ब्रिटेन भी ईरान की समस्या से कम परेशान नहीं है। उनकी अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति दिन प्रतिदिन विषम होती जा रही है। ईरान के तेल उद्योग के राष्ट्रीयकरण में उसे साम्यवादी भालू की गंध आती है। उसे प्रतीत होता है कि उसका मित्र अमरीका विद्रोही हो गया है। ब्रिटेन सोचता है कि यदि अमरीका इस विषय में मौन रहे तो वह किसी न किसी रूप में रूस से निपट लेगा।

रूस की ललकार

द्वितीय महायुद्ध के समाप्त होने पर ब्रिटेन को ईरान में अपने तेल उद्योग के विषय में खतरा पैदा हो गया। रूस ने प्रथम बार जनता से अजर बेजान में तेल की दासता के विरोध में प्रदर्शन कराये। वह तेल पाने को उत्सुक था। अतएव १९४६ में बाकी बचे हुए ।/५ भाग में उसने नर्म शर्तों के साथ तेल निकालने की योजना प्रस्तुत की। यदि यह योजना मान ली जाती तो २० वर्षों में इस भाग पर राष्ट्र का अधिकार हो जाता और ईरान के कारीगरों को काम मिलता।

ब्रिटेन ने दबाव डाल कर इस योजना को अस्वीकार करा दिया। जिस किसी ने भी इस योजना का विरोध किया उसे पूरी तरह दबा दिया गया। देश के राजनैतिक नेता ब्रिटेन की इस नवीन उलझन का लाभ उठाना चाहते थे उन्होंने तेल उद्योग के राष्ट्रीयकरण की मांग की। रूस तब से ले कर आज तक इस विषय में जागरूक है। अभी हाल में उसने अली रजमारी की हत्या के पश्चात् अपनी ईरानी सीमा के लिये जनरल शटेमन की नियुक्ति की है। इस दिशा में अब यह स्पष्ट हो गया कि यदि अबादान क्षेत्र में ब्रिटिश नागरिकों की हत्या होने के कारण ब्रिटेन ने अपनी सेनायें दक्षिण से ईरान में भेजीं तब रूस की सेना में उत्तर से अवश्य घुस आयेंगी।

अमरीका ने भी ब्रिटेन के स्वार्थों को गहरा आघात पहुँचाया है। उसने मध्यपूर्व के समस्त देशों में अपने पैर फैलाने शुरु कर दिये हैं। १९४९ में ईरान पूंजीवादी देशों में तीसरे नंबर पर तेल का उत्पादन करता था। यदि ईरान में ब्रिटेन का एकाधिकार समाप्त हो गया तो अमरीका का तेल उत्पादन में प्रथम स्थान हो जावेगा।

तेल का साम्राज्य

ईरान में प्रति वर्ष ३४ लाख गेलेन तेल का उत्पादन किया जाता है। १९३७ में यह उत्पादन केवल ७ लाख गेलेन था। प्रायः ४० वर्षों से ब्रिटेन बिना किसी बाधा के तेल निकाल रहा है। तेल के उत्पादन का आश्रय ले कर उसने आंग्ल ईरानी कम्पनी के रूप में समानान्तर सरकार स्थापित कर ली है।

समस्या का रूप समझने के लिये हमें देश के आर्थिक व सामाजिक अर्धविकसित ढांचे को देखना होगा। भूमि जो कि जीवन यापन का मुख्य साधन है, बड़े बड़े जमींदारों के अधिकार में है। मुख्य खनीज तेल है जिस पर ब्रिटेन का अधिकार है अतएव जनता का एक बड़ा भाग या तो भूमि रहित है या काम रहित।

युद्ध के पश्चात् श्रमिक वर्ग में एक जागृति उत्पन्न हो गई है। इस कारण देश की राजनैतिक काया में एक महान् परिवर्तन की अपेक्षा की जाती है। अब सामन्तशाही का अधिकार प्रायः समाप्त हो रहा है और श्रमिक वर्ग संगठित होते जा रहे हैं। इस प्रकार देश के आन्दोलन का नेतृत्व श्रमिकों के हाथों में आ रहा है। इस सन्तुलन के अभाव के कारण आज तक जनता पर अनेकों अत्याचार किये गये हैं—

१. जनता व सरकार के मध्य एक चौड़ी खाई है। कर्मचारियों को उचित वेतन समय पर नहीं दिया जाता है।

२ राजधानी व प्रांतों के मध्य एक बड़ी असमानता है। देश की समस्त राजनैतिक शक्ति केन्द्र में एकत्रित है।

३. शहरी व ग्रामीण जनता के रहन सहन के स्तर में एक महान अन्तर है। ग्रामवासी अत्यन्त पिछड़ी अवस्था में हैं।

४. भ्रमण करने वाली जातियां सदैव नागरिकों को आतंकित करती रहती हैं। भूतपूर्व शाह रिजा ने उन्हें बसाना चाहा था। जनता के एक बड़े भाग का उन्हें समर्थन भी प्राप्त था, परंतु विरोधी शक्तियों के कारण उन्हें १९४१ में सिंहासन त्याग देना पड़ा।

५ धन का असमान वितरण। बड़ी मात्रा में जनसंख्या निर्धन है। केवल कुछ जमींदार ही समृद्ध हैं।

६. पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित लोगों व वहां की जनता में एक महान् अन्तर है। इसी कारण तूदेह दल को कार्यवाही करने का अवसर मिलता है।

आज ईरान का प्राचीन राजनैतिक ढांचा समाप्ति पर है। आज की दशा का मूल कारण तेल ही नहीं है। तेल के राष्ट्रीयकरण की दशा में भी जनता का विरोध शान्त न होगा। तेल तो एक गौण विषय है। प्रमुख विषय तो ईरान की जागृति है।

वेतन में ३० प्रतिशत कटौती किये जाने पर मजदूरों ने हड़ताल करदी है। शोषित वर्ग जिसे साम्यवादी कह कर पुकारा जाता है, उसे तब अवसर प्राप्त हुआ है। उसने एक घोषणा निकाली है कि 'हम मजलिस से प्रार्थना करते हैं कि वह ब्रिटिश शोषकों तथा उत्पीड़कों के विरुद्ध मजदूरों के हितों की रक्षा के लिये तुरन्त कारवाई करे।'

[शेष पृष्ठ ६१ पर]

डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद मैसूर की एक विज्ञान शाला का निरीक्षण कर रहे हैं।

दिल्ली के प्रसिद्ध व्यापारी लाला शंकरलाल का देहान्त हो गया।

हैदराबाद के उच्च न्यायालय ने हैदराबाद के कुख्यात रजाकार नेता कासिम रजवी को शाहुल्ला हत्याकाण्ड के अभियोग से मुक्त कर दिया है।

मैसूर के महाराज राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद को डाक्टर आफ ला की उपाधि से सम्मानित कर रहे हैं।

प्रधान मन्त्री श्री नेहरू को डाक्टरों ने विश्राम की सलाह दी है, किन्तु ऐसे समय में ही मन्त्रीमंडल में मतभेद का प्रश्न उपस्थित हो गया है।

भारत की प्रसिद्ध महिला नेत्री श्रीमती हंसा मेहता को संयुक्त राष्ट्र की मानवीय अधिकार समिति का अध्यक्ष चुना गया है।

रियासत सचिवालय के श्री वी. पी. मैनन को उड़ीसा का गवर्नर नियुक्त किया गया है।

संक्रमण अथवा क्रान्ति

श्री भूपालसिंह गुप्ता

संसार परिवर्तन शील है। इसका अर्थ यह नहीं है कि संसार के चराचर, सूर्य वायु इत्यादि सृष्टि में आमूलाग्र परिवर्तन होता है, वे तो प्रकृति तथा उससे भी ऊपर ईश्वरीय सत्य अटल सिद्धांतों के अनुसार चलते रहते हैं। उनमें न कोई परिवर्तन कर सकता है और न हो सकता है। हां, कई जातियों के धर्मशास्त्रों में सृष्टि के प्रलय अथवा कयामत की प्रस्तावना अवश्य की गई है। परन्तु उसके अतीत के इतिहास न मिलने के कारण और उसका आधार आज के वैज्ञानिकों के क्षेत्र के परे होने के कारण उसे अभी तक कल्पनामात्र ही समझा गया है। और तभी तक यदि इसी प्रकार समझ भी लिया जाये, तो हमारे प्रस्तुत विषय में कोई हानि नहीं होगी। हमारा तात्पर्य उक्त परिवर्तन से इतना है कि संसार के व्यावहारिक स्वरूप में निरंतर परिवर्तन होता रहता है, जिसका साक्षी सृष्टि का इतिहास है और काल जिसका आधार है।

इस काल की जिसको अंग्रेजी में कहा जाता है, गतिविधि को कोई रोक नहीं सकता, 'टाइम एन्ड टाइड वेट फार नन' 'यह कहावत सत्य ही है। फ्रास का बजट एक विशेष तिथि व समय तक वहां की असेम्बली को पास करना होता है। उसमें यदि देर हो गयी तो वे अपने असेम्बली भवन की घड़ी की सुइयों को रोक देते हैं और 'बजट उन्होंने यथा समय में पास कर लिया,' इसमें वे समाधान मान लेते हैं। परन्तु इससे क्या वे संसार की अन्य घड़ियों को भी रोक देते हैं, या अपनी उसी घड़ी को उसी प्रकार वहीं से आगे चलने देते हैं, नहीं। तुरन्त ही असेम्बली भवन के बाहर के संसार की घड़ियों से अपनी रोकी गयी घड़ी को मिलाना पड़ता है।

यह कि काल अपनी गति पर अटल रहता है। उसकी यह गति 'प्रगति' रहती है और सृष्टि मात्र को उसकी गति के साथ सापेक्ष रहना रहना पड़ता है। जो नहीं रह पाते' उन्हें नष्ट होना पड़ता है। अर्थात् 'तत्व अविनाशी है' सिद्धान्त के अनुसार वे नष्ट तो नहीं होते, परन्तु उनके आज व्यावहारिक स्वरूपों में मूलतः, सम्पूर्ण परिवर्तन हो जाता है, जिसे लौकिक भाषा में विनाश, मृत्यु, पतन आदि नाम दिये गये हैं, इन्हीं अर्थों में संसार परिवर्तनशील है। संसार का इतिहास इन्हीं परिवर्तनों की लम्बी कहानीमात्र है। काल की गतिविधि की गणना भिन्न देशों में भिन्न नामों से की गयी है, भारतीय काल गणना शास्त्र में इसे युगों से सम्बोधित किया जाता है। युगों का यह काल खंड यद्यपि गतिशील है तो भी वह गति एक विशेष अवधि होती है, जिसे भिन्न-भिन्न नाम दिये गये हैं। सतयुग, द्वापर, त्रेता कलियुग इत्यादि इत्यादि।

इस इतिहास पर थोड़ा दृष्टिपात करने से पता चलेगा कि उक्त कथन कितना सत्य है। बड़े बड़े चक्रवर्ती साम्राज्य बने और नष्ट हो गये। धर्म-निष्ठ अशोक का एक छत्र साम्राज्य भी उसकी गति के साथ टिक नहीं सका। नैपोलियन, सिकन्दर और हिटलर सरीखे योद्धाओं के गर्भ भी चूर हो गये। नवीन ही इतिहास लीजिये, अंग्रेजों के साम्राज्य पर सूर्य कभी अस्त नहीं होता, यह भी असत्य हो गया। चर्चिल के शब्दों में 'आवर इम्पाइर इज विदरींग अवे' क्या अर्थ रहता है। व्यक्ति के जीवन में राजा से रंक और रंक से चक्रवर्ती सम्राट् हुए हैं। बाल से वृद्ध होना अनिवार्य रहता है और प्रत्येक को एक न एक दिन उस अविनाशी भूमाता के साथ आत्मसात होना होता है। अर्थात् प्रत्येक देश, समाज, व्यक्ति सभी को कालचक्र को परिधि के अंदर अपने स्वतन्त्र ढंग से चाहे क्यों न हो, भ्रमण करना पड़ता है।

फिर प्रश्न उठता है कि जब प्रत्येक का अपना समय और परिधि निश्चित है तो फिर संसार में इतना संघर्ष क्यों? वास्तविकत संसार का इतिहास इन्हीं संघर्षों का इतिहास है, यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति और समाज की परिधि समान है, परन्तु प्रत्येक का समय स्वतन्त्र होने के कारण प्रत्येक स्वाभाविकत अपने समय अर्थात जीवन को लम्बा करना चाहता है। फलत यह संघर्ष आयुष्य के सरवाइविल का संघर्ष है, अत इस जीवन की लम्बाई की घुड़दौड़ में प्रत्येक आवश्यकतानुसार दूसरे को नष्ट करके भी अपने घोड़े को आगे ले जाना चाहता है। योग्यतमावशेष के सिद्धान्तानुसार योग्यतम ही दीर्घकालीन जीवन प्राप्त करता है। अत 'जीवो जीवस्य जीवनम्' का अर्थ एक जीव दूसरे जीव को खा कर ही जीवित रह सकता है' लगाया है राष्ट्रों, समाजों व व्यक्तियों के परस्पर संघर्ष फिर चाहे वे आर्थिक सामाजिक व राजनैतिक हों इसी 'स्वत्व' जीवन रक्षा के लिये हुये हैं, और होते हैं।

इस प्रकार जब संघर्ष स्वाभाविकत अवश्यम्भावी हो जाता है तो प्रश्न उठता है कि इसमें विजयी कौन और किस आधार पर होता है। यह प्रश्न ही अत्यन्त महत्व का है। प्रत्येक समाज के जीवन के अपने अपने सिद्धान्त होते हैं जिन्हें वह सत्य अटल समझता है और इस कारण छोड़ने को तैयार नहीं रहता। इतना ही नहीं, उनकी सत्यता प्रमाणित करने के लिये वह प्रत्यक्ष बल प्रयोग कर दूसरे पर लादना भी चाहता है। मेरे जीवन के सिद्धान्त सृष्टि अन्त प्रयन्त काल की गति के सापेक्ष सत्य प्रमाणित हों, यही लक्ष्य प्रत्येक का रहता है। भिन्न भिन्न मतों, समुदायों व पन्थों का निर्माण का यही कारण है। इतिहास बताता है कि महापुरुष आये, सिद्धान्त रचे, पन्थ चलाये और चले गये। ये पन्थ कुछ तो उनके जीवनकाल में ही, कुछ ठीक उनके जीवन के साथ ही, और कुछ अपना कुछ समय ले कर चमक चमक कर कालचक्र के गाल में अन्तर्लीन हो गये।

इस प्रकार भिन्न भिन्न समय पर भिन्न २ विचारों व मतों की प्रबल झंझावात चला करते हैं। उनके वेग के साथ विशाल सामुद्रिक यान, पेड़, भवन सभी भूमिसात हो जाते हैं। यह झंझावात नवीन होने के कारण अति वेगवान रहता है और इस कारण उसकी गति के समक्ष पुराने पेड़ों व भवनों का टिका रहना असम्भव ही होता है। परन्तु जो उसके समक्ष भी टिका रहता है, वह उस पर श्रीकृष्ण के गोवर्धन पर्वत के समान विजयी होता है और इन्द्र के समान उन झंझावातों का मानमर्दन होता है। इसीलिए तो हिमालय के बारे में कहा है।

'खड़ा हिमालय बता रहा है
डरो न आंधी पानी में।'
'डटे रहो अपने पथ पर
सब कठिनाई तूफानों में।'

जिसका पथ निरन्तर सत्य का रहता है उस पर डटने वाला हिमालय के समान विशाल व अनन्य रूपेण खड़ा रहेगा। यह तर्क शास्त्र शुद्ध है ही।

ऋतुओं के परिवर्तनानुसार शरीर रक्षा के हेतु जिस प्रकार गरम सरद वस्त्र धारण किये जाते हैं उसी प्रकार सारिक इतिहास में अपने स्वत्व की रक्षार्थ समय की गति के सापेक्ष समाज के बाह्यस्वरूप में स्वेच्छा से परिवर्तन को जो कि अपरिहार्य रहता है, संक्रमण कहते हैं और उसके विपरीत उस समय के आक्रमणकारी प्रवाह में अपने सामाजिक जीवन स्वत्व को समूल प्रवाहित कर देना फिर चाहे वह इच्छा से हो अथवा अनइच्छा से हो क्रान्ति कहलाती है। जिस पथ से यह क्रान्ति लागू होती है, उसी पथ से उस समाज की मृत्यु हो जाती है। इसलिए भारती समाज में संक्रमण को स्वाभाविक मानते हुए पवित्र तथा श्रेय माना है और क्रान्ति को गीता के अनुसार ('स्वधर्मे निधनम् श्रेय पर धर्मो भयावहः') कहा गया है। साधारण लोक भाषा में क्रांति रिवोल्यूशन शब्द का अर्थ अवैधानिक मार्गों से शक्ति के बल पर सत्ता हथियाने से लगाया जाता है।

परन्तु हमारा तात्पर्य यह नहीं है। कारण संक्रमण अथवा क्रान्ति का निर्णय साधनों से नहीं, अपितु साध्य से ही लगाया जा सकता है। यद्यपि यह सत्य है कि शांति मय साध्य के लिए शांति पूर्ण ढंगों का अवलम्बन करना उचित रहता है, तो भी अन्य मार्ग न रहने पर उक्त ढंग से सत्ता, प्राप्त कर यदि समाज का मूल जीवन स्वत्व पूर्ववत रहता है, तो वह क्रान्ति नहीं संक्रमण होगा। वास्तविकत ऐसे संक्रमण भारतीय समाज में अनेकों बार हुए हैं यही कारण है कि श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सब व्याह मोह छोड़ कर रणक्षेत्र में गाण्डीव उठाने का उपदेश दिया और उसे ही धर्म बताया।

क्रांति व संक्रमण दोनों में से सदा का चुनाव उस समय करना होता है जो समाज स्वेच्छा से संक्रमण अवस्था धारण कर प्रबलतर हो प्रशान्ततापूर्वक क्रान्ति से संघर्ष करता है, वह न केवल अपने जीवन के तत्वों की रक्षा में समर्थ होता है अपितु अपने सिद्धान्तों की सत्यता को ऐतिहासिक कसौटी पर प्रमाणित कर विश्व कल्याण से सहायक होता है।

भारतीय हिन्दू समाज उसी सहस्रों वर्षों के आंधी और तूफानों में से निकलता हुआ आज भी संसार में विद्यमान हैं। जब कि, 'यूनान मिस्र रूमा सब मिट गए जहां से' इसका अर्थ ही यह है कि यह समाज मानवीय जीवन के शास्त्र शुद्ध चिर तन शिला तो की दृढ नींव पर अधिष्ठित है। एक बार यहां बुद्ध की अहिंसा ने समस्त भारत को ही नहीं, समस्त एशिया को व्याप्त कर लिया। परन्तु वह एकांगी होने के कारण अपने जन्मस्थान में ही फल फूल न सका। एक शंकराचार्य ने उसकी जड़ों को हिला दिया। इस्लाम की लहर ७०० वर्षों तक इसके साथ टकराती रही। कभी अकबर के प्रेम और औरंगजेब के क्रोधानल द्वारा उस पर कटुप्रहार किए गए। परन्तु उसने संघर्ष नहीं छोड़ा। राणा प्रताप, शिवाजी, गुरु और छत्रसाल लड़ते ही रहे। उस लहर की भी कल पूर्णतया नहीं खुलती, परन्तु भाग्य ने कुछ साथ न दिया। फिर एक नवीन लहर आई और वह थी पश्चिमी सभ्यता के आवरण में ईसायत की। वह भी यहां के दयानन्द, विवेकानन्द तिलकआदि सामने टिक न सकी।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

काश्मीर के झगड़े का इतिहास

★ श्री दीवान द्वारका खोसला

१९४७

अगस्त १२—काश्मीर नरेश द्वारा यथास्थित समझौते की पेशकश।

अगस्त १६—पाकिस्तान सरकार द्वारा यथास्थित समझौता स्वीकृत।

सितम्बर २०—पाकिस्तानियों द्वारा काश्मीर में उत्पात आरम्भ।

अक्टूबर २२—कबाइली दस्तों का आक्रमण।

अक्टूबर २६—काश्मीर का भारत संघ में सम्मिलित होना तथा सैनिक सहायता की याचना करना।

अक्टूबर २७—काश्मीर में भारतीय सेना की प्रथम टुकड़ी का श्रीनगर वायुयान अड्डे पर उतरना।

नवम्बर २—उत्तरी रियासतों को मिला कर पाकिस्तान द्वारा तथाकथित 'आजाद' काश्मीर सरकार की स्थापना।

दिसम्बर ३०—संयुक्तराष्ट्रसंघ चार्टर की धारा ३५ के अंतर्गत काश्मीर के मामले को सुरक्षा-परिषद् में ले जाने की भारत द्वारा घोषणा।

१९४८

जनवरी १५—सुरक्षा - परिषद् में काश्मीर पर विवाद; तथा अध्यक्षों द्वारा त्रिजन राष्ट्रसंघ-कमीशन की नियुक्ति का प्रस्ताव।

फरवरी—सुरक्षा-परिषद् में विवाद जारी व गतिरोध।

अप्रैल १८—सुरक्षा - परिषद् का सुझाव कि पाकिस्तान अपने नागरिकों को काश्मीर से वापस बुला ले और राष्ट्र संघ का त्रिजन काश्मीर-कमीशन जब कबाइलियों को हट जाने की पुष्टि कर दे, तो भारतीय सेना की संख्या भी घटा कर इतनी कर दी जाय, जो शांति व व्यवस्था मात्र के लिए अनिवार्य हो।

अप्रैल २१—भारत व पाकिस्तान के विरोध के बावजूद भी प्रस्ताव पास हो जाना।

अगस्त १३—काश्मीर - कमीशन द्वारा युद्ध-विराम तथा संधि की शर्तों के सुझाव पेश करना।

१९४९

जनवरी १—नये वर्ष के सुप्रभात में भारत तथा पाकिस्तान द्वारा काश्मीर में युद्ध-विराम के आदेश।

मार्च २१—जनमत गणना प्रशासक के लिए एडमिरल निमिट्ज के नाम पर भारत तथा पाकिस्तान में सहमति।

जुलाई २६—विराम रेखा के लिए भारत-पाकिस्तान में सैनिक समझौता।

सितम्बर २०—काश्मीर कमीशन द्वारा समझौता प्रयासों में असफल रहने तथा सुरक्षा-परिषद् में रिपोर्ट पेश करने की घोषणा।

अक्टूबर १६—पाकिस्तान द्वारा विराम रेखा संधि भंग करना।

१९५०

फरवरी ७—सुरक्षा-परिषद् में समझौते के प्रयासों के विफल होने की घोषणा।

मार्च १४—काश्मीर कमीशन तोड़ नये मध्यस्थ की नियुक्ति का सुरक्षा-परिषद् में प्रस्ताव। इसके साथ भारत-पाकिस्तान को पांच मास के भीतर काश्मीर में असैनिकीकरण का आदेश देना।

अप्रैल २—पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री मियां लियाकत का दिल्ली आगमन, किन्तु काश्मीर पर बातचीत तक करने से इन्कारी।

अप्रैल १२—आस्ट्रेलियन जज सर ओवन डिक्सन की मध्यस्थपद पर नियुक्ति।

सितम्बर—सर डिक्सन द्वारा राष्ट्रसंघ में रिपोर्ट पेश करना, जिसमें पाकिस्तान को अन्तर्राष्ट्रीय कानून भंग कर आक्रांता होने के लिए दोषी ठहराना।

अक्टूबर २७—जम्मू - काश्मीर राष्ट्रीय सम्मेलन द्वारा राज्य के लिए संविधान परिषद् आयोजित करने की घोषणा।

१९५१

जनवरी १—लियाकतअली द्वारा लन्दन राष्ट्रमण्डलीय प्रधानमंत्री सम्मेलन में काश्मीर पर विचार का आवेदन।

जनवरी ४—राष्ट्रमंडलीय प्रधानमंत्रियों द्वारा काश्मीर पर अनौपचारिक वार्ता की स्वीकृति।

जनवरी १६—काश्मीर में राष्ट्रमंडलीय दस्तों के रखने के सुझाव भारत द्वारा अस्वीकृत।

जनवरी २६—लेक सक्सेस से घोषणा कि भारत-पाकिस्तान से सीधी वार्ता के लिए काश्मीर का प्रश्न राष्ट्रसंघ से वापिस लेगा।

फरवरी २१—सुरक्षा - परिषद् में आंग्लअमरीकी नया प्रस्ताव, जिसमें नये मध्यस्थ की नियुक्ति का सुझाव। यह मध्यस्थ असैनिकीकरण, राष्ट्रसंघीय सेना या स्थानीय सेना बना सारे अथवा कुछ प्रदेश की जनमतगणना की संभावनाओं के सम्बन्ध में भारत-पाकिस्तान से बातचीत कर तीन मास के भीतर रिपोर्ट पेश करेगा। मतभेद के मामले हेग स्थित अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय से निर्णय कराने का प्रावधान भी तथा काश्मीर की संविधान परिषद् के आयोजन की आलोचना।

मार्च २—भारतीय प्रतिनिधि श्री बेनेगल नृसिंह राव द्वारा नये प्रस्ताव की चीड़फाड़ व उसे ठुकरा देना।

मार्च २१—नये प्रस्ताव की शब्दावलि में कुछ संशोधन।

मार्च ३०—भारत के प्रतिवाद करने पर भी उक्त प्रस्ताव स्वीकृत।

अप्रैल ३—भारत के प्रधानमन्त्री पं० नेहरू तथा काश्मीर के मुख्यमन्त्री शेख अब्दुल्ला द्वारा पंच निर्णय के प्रस्ताव को अस्वीकार करने की पुनर्घोषणा।

—————

[पृष्ठ ११ का शेष]

६११, पुरुष ३३,०४४३, स्त्रियां ७,८३, ४४३। सन १९५१ में कुल जनसंख्या ३,१७,१३३, वृद्धि ३०.० प्रतिशत।

हिमाचल प्रदेश—क्षेत्रफल १०, ६०० वर्गमील, सन १९२१ में कुल जनसंख्या ९,८६,४३७, पुरुष ५,१६,३१७; स्त्रियां ४,७३,१२०। सन १९५१ में कुल जनसंख्या ९,३५,३२३, वृद्धि ५.८ प्रतिशत।

कच्छ—क्षेत्रफल ८,४६१ वर्गमील, सन १९२१ में कुल जनसंख्या ५,६७, ८२५। पुरुष २,७३,६६३, स्त्रियां २,९४, ४६२; सन १९४१ में कुल जनसंख्या ५,००,८००; वृद्धि १३.४ प्रतिशत।

मणिपुर—क्षेत्रफल ८६२० वर्गमील, सन १९५१ में कुल जनसंख्या ५,७३, ०५८; पुरुष २,८४,७४७, स्त्रियां २,९४, ३११। सन १९४१ में कुल आबादी ५,१२,०६९, वृद्धि १२ १ प्रतिशत।

त्रिपुरा—क्षेत्रफल ४०४६ वर्गमील; सन १९५१ में कुल जनसंख्या ६,४९, ९३०, पुरुष ३,३६,६१२, स्त्रियां ३,०३, ३१८; सन १९४१ में कुल जनसंख्या ५,१३,०१०, वृद्धि २६.७ प्रतिशत।

विन्ध्य प्रदेश—क्षेत्रफल २४,६०० वर्गमील, सन १९५१ में कुल जनसंख्या ३५,७७,४३१, पुरुष १८,२४,६१०, स्त्रियां १७,४२,८२१। सन १९४१ में कुल जनसंख्या ३३,२३,०११; वृद्धि ६.७ प्रतिशत।

'स' भाग के राज्यों का योग—कुल क्षेत्रफल ६८,२६६ वर्गमील; सन १९५१ में कुल जनसंख्या ९९,९५,१०७; पुरुष ५२,२६,४५७, स्त्रियां ४७,६६, ६५०। सन १९४१ में कुल जनसंख्या ८३,८५,२४०, वृद्धि १९.२ प्रतिशत।

'द' भाग के राज्य

अंडमान नीकोबार—क्षेत्रफल ३,-१४३ वर्गमील, सन १९५१ में कुल जनसंख्या ३०,९६३; पुरुष १९,०३६; स्त्रियां ११,९२७, सन १९४१ में कुल जनसंख्या ३३,७६८। कमी ८.३ प्रतिशत।

सिक्कम—क्षेत्रफल २७४५ वर्गमील; सन १९५१ में कुल जनसंख्या १,३५,-१४६; पुरुष ७०,९६१; स्त्रियां ६४,-६८५, सन १९४१ में कुल जनसंख्या १,२१,५२०; वृद्धि ११.२ प्रतिशत।

देशभर का योग

क्षेत्रफल ११,३८,८१४ वर्गमील; सन १९५१ में कुल जनसंख्या ३५,६८,-६१,६२४, पुरुष १८,३३,८४,८०७; स्त्रियां १७,३५,०६,८१७। सन १९४१ में कुल जनसंख्या ३१,४८,३०, १६०, वृद्धि १३.४ प्रतिशत।

शरणार्थियों की जनसंख्या

आसाम में २,७३,८२४, बिहार में ७८,६४१, बम्बई में ३,४१,०८१, मध्यप्रदेश में १,२०,८८६, मद्रास में ३,३२६; उड़ीसा में २०,९२६, पंजाब में २४,६८,-४६१; उत्तर प्रदेश में ४, ७५,८२२, पश्चिम बंगाल में २१,१०,८९६, हैदराबाद में ४,०३५, जम्मू और काश्मीर में विशेष अवस्थाओं के कारण जनगणना नहीं की गई। मध्य भारत में ६८,४२७; मैसूर में ७,८६१, पटियाला संघ में ३,८०, १५६, राजस्थान में ३,१२,७४२, सौराष्ट्र में ६०,५२५; त्रावणकोर कोचीन में ३२४, अजमेर में ७१,८२४, भोपाल में १७,९३३; बिलासपुर में १८०, कुर्ग में ११, दिल्ली में ५,०९,७६७; हिमाचल प्रदेश में ५,२४८; कच्छ में ११,९९१, मणिपुर में १,२८०, त्रिपुरा में १,००,-२५१, विन्ध्य प्रदेश में १४,६२६, अंडमान नीकोबार में १२४५ और सिक्कम में ३६, देश भर में शरणार्थियों की कुल संख्या ७४,७३,२७८ है।

—★—

काश्मीर व आसाम के कबीले क्षेत्रों को छोड़ कर शेष भारत में १८,३३,८४; ८०६ पुरुष और १७,३५,०६,८१७ स्त्रियां हैं।

गत १० वर्षों में भारत की जनसंख्या में १३.४ प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

भारत का क्षेत्रफल ११,३८,८१४ वर्गमील है।

शरणार्थियों की कुल संख्या ७४,-७३,२७८ है।

जंगल के जानवर—२

वन का असली राजा बाघ

★ श्री विराज

शेर कहने से केसरी या बबरशेर का अभिप्राय होता है, जिसके मुख गर्दन और कन्धों पर शानदार बाल होते हैं और देह के शेष चमड़े पर किसी प्रकार की धारियां या चित्तियां नहीं होतीं। उसका मुख भी कुछ बड़ा भारी और देखने में बहुत कुछ मनुष्य के मुख से मिलता सा है। उसकी यह गौरवपूर्ण देह रचना ही उसे वन का सम्राट कहलवाती है, नहीं तो वन का असली कुल सम्राट तो बाघ है, जिसकी गर्दन पर बाल नहीं होते और देह के चमड़े पर काले रंग की धारियां होती हैं। इसका मुख कुछ छोटा, देखने में क्रूर और भयंकर तथा देह अधिक गठा हुआ होता है। साधारणतया लोग शेर और बाघ दोनों के ही लिये शेर शब्द का व्यवहार करते हैं।

शेरों को खा डाला

हिमालय के वनों में एक समय शेर काफी संख्या में पाये जाते थे, परन्तु आज इन विशाल विस्तृत वनों में शेरों का चिन्ह भी शेष नहीं रह गया है। अब उनके स्थान पर विशालकाय धारीदार बाघ पाये जाते हैं। पर्यवेक्षकों का कथन है कि बल बुद्धि और कौशल में बाघों ने सिंहों को परास्त करके मार दिया और खा डाला। निश्चय ही बाघ सिंह से अधिक शक्तिशाली होता है और संभवतः फुर्ती में भी कम नहीं होता।

यह शेर की अपेक्षा क्रूर भी अधिक होता है। शेर के बारे में यह समझा जाता है कि वह प्राणियों पर अकारण आक्रमण नहीं करता। परन्तु बाघ भूखा न रहने पर भी प्राणियों पर आक्रमण करके उन्हें मार देता है।

विशाल पंजे

बाघ के मुख्य शस्त्र दांत और पंजे हैं। इनकी अगली टांगें जिन्हें हाथ या बांह कहना चाहिये, गोलाई में १६ इंच तक मोटी होती हैं अर्थात् साधारणतया मनुष्य की जांघ जितनी मोटी। इनके अन्दर संसार की कठोरतम हड्डी होती है और मजबूत पेशियों और स्नायुओं से यह कन्धे के साथ जुड़ी होती है। इस बांह के अग्रभाग पर बाघ का विशाल पंजा होता है। इसकी आरपार लम्बाई ८ इंच होती है। यदि पूरे कद का व्यक्ति अपने हाथ की सब अंगुलियां फैला कर अपना पंजा देखे तो उससे कुछ थोड़ा सा बड़ा बाघ का पंजा होता है। अनेक बार जंगल में घूमते हुए हमने सीली रेतीली भूमि पर बाघ के पंजों के बढ़िया स्पष्ट निशान देखे हैं और बहुत बार वे इतने बड़े होते थे कि हमारे साथियों में से किसी का भी पंजा उनको ढांप नहीं पाता था। परन्तु बाघ के पंजे में हमारे पंजों की भांति लम्बी कमजोर अंगुलियां नहीं होतीं, बहुत छोटी और मोटी अंगुलियां होती हैं, जिनके आगे डेढ़ से दो इंच तक लम्बे घुमावदार अटूट और पैने नाखून होते हैं। इनसे वह घोड़े बैल या भैंस का चमड़ा उतनी ही सरलता से फाड़ सकता है जितनी सरलता से हम पीले संतरे का छिलका उतार लेते हैं।

अब यदि आप कल्पना करना चाहते हैं, तो अपनी छाती या पेट पर अपना पूरा पंजा फैला कर रखिए, क्योंकि और सारे शरीर में इतना बड़ा स्थान दूसरा नहीं है और कल्पना कीजिए कि प्रत्येक अंगुली के आगे मजबूत और पैना नाखून लगा हुआ है, जो मांस के अन्दर सीधा ११ इंच गहरा जा सकता है। तब आपको अनुमान हो सकता है कि बाघ का पंजा क्या चीज है।

प्रचंड शक्ति

यह सत्य है कि मनुष्य की देह के लिए तो इतना बड़ा पंजा होना ही पर्याप्त है। उसके लिये यह विचार करना व्यर्थ है कि ये पांच डेढ़ इंची छुरे मांस में जल्दी से घुसेड़ दिये जाते हैं या धीरे धीरे घोड़े भैंस और हाथी जैसे जन्तुओं से भी तो बाघ के इन्हीं पंजों से जूझना होता है। उस समय बाघ अपनी प्रचंड शक्ति और बिजली की सी तीव्रता से काम करता है। बाघ के पंजे की चोट मशीनी हथौड़े की चोट के समान भयंकर होती है। हाथी या भैंस के जिस भी अंग पर यह दानवी पंजा पड़ जाता है, वहीं से रक्त के सोते झरने एक साथ फूट निकलते हैं। भयंकर पीड़ा के साथ रक्त की कमी भी अभागे पशु को निर्बल बना देती है।

वैसे यदि कभी बाघ जंगली भैंसे के सींगों या हाथी की सूंड की मार में आ जाय, तो बच नहीं सकता पर बाघ भी इस बात को खूब समझता है इसलिए ऐसा अवसर कभी कभी ही अपवाद स्वरूप ही आता है।

बाघ के पंजों से भी अधिक भयंकर उसके कीले,' किनारों के चार दांत होते हैं। आवश्यकता पड़ने पर वह इनसे भी काम लेता है और ये जहां एक बार गड़ जाते हैं, वहां से पाव आध सेर मांस उखाड़ पाने के अतिरिक्त अपना विष भी वहां छोड़ते जाते हैं।

प्रकृति की देन

प्रकृति ने अपना सारचक्र बड़ी बुद्धिमत्तापूर्वक घुमा रखा है। कब कहां किस चीज की जरूरत है यह उससे पल भर भी छिपा नहीं रहता और फिर वह वस्तु अभीष्ट स्थान पर पहुंचा ही जाती है। उदाहरण के लिये देखिये प्रकृति सब प्राणियों को उन्हीं रंगों में रंग देती है जैसी जगहों में वे रहते हैं जिससे उन्हें छिपने आदि की सुविधा हो और वे सरलतापूर्वक अपना जीवन धारण कर सकें। शेर खुले मैदानों और चट्टानों में रहना पसन्द करता है अतः उसका रंग वैसा ही भूरा बन गया है। ध्रुव प्रदेश के भालू सफेद होते हैं वहां के भेड़िये भी सफेद होते हैं क्योंकि उन्हें सफेद बर्फ पर ही छिप कर रहना होता है। बाघ दलदलों के पास ऊंची घास के वनों में रहना पसन्द करता है अतः उस के भूरे शरीर पर धारियां दी गई हैं। इसी प्रकार चीता अधिक समय पेड़ों की छाया में रहता है जहां धूप और पत्तों की छाया से चित्तियां सी बनी होती हैं। अतः उनमें छिप कर रहने के लिये चीते के शरीर पर चित्तियां बनी हैं। यही कारण है कि जब कभी हमारी वन में इन पशुओं से भेंट होती है तो पहली ही दृष्टि में इन्हें देख पाना संभव नहीं होता। बाघ जब घास दबा कर भूमि पर बैठ जाता है तब वह बिल्कुल भूमि जैसा ही जान पड़ता है।

जब मनुष्य से सामना होता है

साधारणतया जंगल में बाघ का सामना उन ग्वालों से होता है जो नित्य प्रति अपने पशुओं के चराने के लिए आते हैं। यदि जंगल में मनुष्य शोर मचाते या बातें करते जांय तो बाघ सामने नहीं आता पर जब वह भूखा होता है तो किसी पशु को पकड़ने के लिए झपटता है। तब कभी ऐसा होता है कि पशुओं का रक्षक घबरा जाता है और जान बचा कर भागता है। जब बाघ मनुष्य को भागते देखता है तो समझ जाता है कि वह डर रहा है। तब वह और किसी पशु पर आक्रमण न करके सीधा मनुष्य को ही आ दबोचता है। एक बार मनुष्य को मार चुकने के बाद बाघ मनुष्य के बलाबल से परिचित हो जाता है और फिर वह मनुष्य को देख लेने के बाद कभी जीवित नहीं छोड़ता। बाद में तो उसका साहस यहां तक बढ़ जाता है कि वह गांवों में आकर लोगों को पकड़ ले जाता है। कारण यह है कि मनुष्य को मारना और सब प्राणियों की अपेक्षा सरल होता है।

यदि बाघ पहले से ही नरभक्षक न हो और उसे देख कर मनुष्य डर कर भागे नहीं तो बाघ यदि रास्ता बचा कर जा सकता होगा तो अवश्य रास्ता बचा कर चला जायगा। दो टांगों पर सीधे खड़े हो कर चलने वाले' इस प्राणी से पहले पहल सभी जंगली प्राणी डर जाते हैं।

(शेष पृष्ठ २० पर)

अजय दुर्ग कलंगा : कप्तान बलभद्रसिंह

[पृष्ठ ४ का शेष]

जाता बराबर किले पर गोलाबारी कर रहा था। उसको भारी क्षति पहुँची। परन्तु ३०० गोरखों के ऊपर इसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। वे अविचलित भाव से अपने नियत स्थानों पर डटे रहे। पराभव और पराजय की मनोवृत्ति ने एक-क्षण के लिए भी उन पर अधिकार नहीं किया। वे 'मरो या मारो' इस निश्चय और संकल्प के साथ लड़ रहे थे।

मेजर जनरल जिलेस्पी युद्ध की गति को अत्यन्त आश्चर्य और विषाद से देख रहा था। उसकी अपेक्षा और आशा के विपरीत लड़ाई जा रही थी। उसने अब स्वतः सेना का कमान अपने हाथ में लिया और किले पर आक्रमण करने का विचार किया। इस आक्रमण में गोरों की एच. एम. ५२३ वीं पलटन और इंगलिश पलटन भी थी। गोरी सेना हौसला बांध कर टेकड़ी पर चढ़ रही थी। स्वतः जिलेस्पी तलवार घुमा-घुमा कर सैनिक शक्ति और उत्साह का संचार कर रहा था। चढ़ती हुई गोरी सेना तलहटी तक पहुँच गई। नेपाली वीरों ने उनकी गोलाबारी का बन्दूकों से स्वागत किया। गोरे सैनिक जहां पहुंचे थे, वहीं मरने लगे। जब गोरे सैनिकों ने सीढ़ी लगा कर चढ़ना आरम्भ किया। किले से आने वाली गोलियों की बाढ़ और तेज हो गई। ब्रिटिश सेना के लिए एक कदम आगे बढ़ना सम्भव नहीं रहा। एक गोरखे की गोली ने मेजर जिलेस्पी को भी अपना निशाना बनाया। ले. अबीक्रमा ने भी अपने सेनापति का अनुसरण किया। कलंगा किला अजेय रहा। गोरखों के इस विक्रम और पराक्रम को देख कर अंग्रेज चकित थे। ३०० सैनिक ३००० से अधिक का मुकाबला कर रहे थे। नेपालियों के इस प्रचण्ड तेज को देख कर अंग्रेज सेनानी सोच में पड़ गए।

कुमुक पहुँची

मेजर-जिलेस्पी के मरने के बाद कर्नल मावेल के हाथ में सेना का कमान आया। उसने किले पर इस रूप में चढ़ाई करने से कोई लाभ नहीं देखा। नुकसान और पराजय सामने दीख रही थी। अतः पीछे हट जाने में ही उसने इस समय अपनी भलाई देखी। उसने दिल्ली को जल्दी से जल्दी कुमुक भेजने को लिखा। पर्वती किले को गिराने लायक युद्ध-सामग्री भी विशेष रूप से मंगाई।

किले का घेरा फिर डाला गया। ब्रिटिश तोपें पुनः आग उगलने लगीं। कुछ घण्टों के बाद पैदल सेना की सहायता से किले पर धावा बोला गया। इस चढ़ाई में भारतीय सैनिकों की संख्या अधिक थी। किले से इसका उचित और जोरदार जवाब दिया गया। ब्रिटिश सेना फिर एक बार पीछे लौटने को बाध्य हुई। कलंगा किला अजेय और अभेद्य सिद्ध हुआ। बलभद्रसिंह और वीर गोरखों की वीरता और उनका रणकौशल आज भी विजयी रहे।

पानी का अभाव

परन्तु भाग्य नेपाली वीरों के प्रतिकूल था। किले में पानी समाप्त हो गया। किले के अन्दर पानी युक्तिपूर्वक बाहर से आता था। वह स्थान इस समय ब्रिटिश सेना के अधिकार में था। नालपनि की टेकड़ी के झरनों से पानी आता था। इसके दोनों ओर ब्रिटिश छावनियां पड़ी हुई थीं। अंग्रेजों ने गोरखों को पानी पहुँचने का मार्ग बन्द कर दिया।

पानी का समाप्त होना किले वालों के लिए एक भारी विपत्ति थी, मगर विपत्ति सदा अकेली नहीं आती। ब्रिटिश तोपें बराबर भीषण गोलाबारी कर रही थीं। किले की दीवारें गिर रही थीं। सैनिक बराबर गिर रहे थे। घराशायी सैनिकों की जगह लेने वाले दूसरे सैनिक नहीं थे। सैनिकों की संख्या बराबर इस कारण कम हो रही थी। दूसरी ओर जख्मियों की कराह कानों में सुनाई पड़ रही थी। स्त्रियां और बच्चे सूखे कण्ठों से 'पानी-पानी' चिल्ला रहे थे। शूरवीर नेपाली सैनिकों को दोहरी लड़ाई लड़नी पड़ रही थी। ब्रिटिश तोपों के सामने वे छाती खोल कर खड़े हो सकते थे। पर बीमारों, घायलों, बच्चों और स्त्रियों को 'पानी-पानी' कहते हुए मृत्यु की ओर जाते हुए चुपचाप कैसे देख सकते थे? परन्तु इस कठोर विपत्ति में भी वे अविचलित रहे, डिगे नहीं। आत्मसमर्पण करने का मन में विचार तक न आने दिया।

अद्भुत चमत्कार

पर इस युद्ध का अन्तिम चमत्कार दिखाई देना शेष था। साहस और शौर्य मालूम होता था मूर्तिमान होकर प्रकट हुआ है। किले में ७० सैनिक रह गए थे। ३० नवम्बर का दिन था। तोपों की गोलाबारी का किले से बन्दूकों द्वारा जोरदार गोलाबारी द्वारा बराबर जवाब दिया जा रहा था। थोड़ी देर के लिए बन्दूकों की मार से ब्रिटिश सेना चकित रह गई। इतने में किले का लोह दरवाजा खुला। ७० वीर गोरखे बिजली के समान किले से बाहर निकले। हाथों में इनके नंगी चमकती तलवारें थीं। कन्धों पर बन्दूकें थीं। कमर की पट्टी से कुकरी या खुखरी बंधी हुई थी। मस्तक पर चन्द्रांकित शिरोभूषण था। वह दल रणवीर कैप्टेन बलभद्रसिंह के नेतृत्व में कौंधती बिजली के समान बाहर आया। उनके इस साहस को देख कर अंग्रेज स्तब्ध रह गए। यह क्या हो रहा है, वे यह सोच भी न पाए। इससे पहले कि तोपों पर पलीता चढ़ाते म्यान से अपनी तलवारें निकाले वीरों की वह टोली ब्रिटिश सेना को मध्य से चीरती हुई पार हो गई। आश्चर्य तो यह कि वीरों की इस टोली में से कोई भी जख्मी नहीं हुआ। किसी के खून तक न आया। किसी का एक भी बाल बांका नहीं हुआ। ब्रिटिश सेनापति ने सचमुच इस साहस और शौर्य एवं पराक्रम के इस आश्चर्यजनक कृत्य को अपनी आंखों के सामने से होते देख कर दांतों तले अंगुली दबा ली। कैप्टेन वीर बलभद्रसिंह ब्रिटिश सेना के घेरे से निकल कर पहाड़ों ही पहाड़ होता हुआ पंजाब पहुँचा और फिर वहां से लाहौर में पंजाब केसरी रणजीतसिंह की सेवा में पहुँचा।

किले के अन्दर जब अंग्रेज पहुंचे। तब उन्होंने वहां जो दृश्य देखा, उसको देख कर वे चक्कर में पड़ गए। किला क्या था, कब्रस्तान था। सब ओर प्रेत ही प्रेत दिखाई देता था। इनमें स्त्रियां और बच्चे भी नजर पड़ते थे।

स्त्रियां भी लड़ीं

किले के अन्दर की स्त्रियों ने भी लड़ाई में भाग लिया और अन्तिम सांस रहने तक वे लड़ीं। इसकी साक्षी अंग्रेज इतिहासकारों ने दी है। कैप्टेन बंसीटार्ट ने लिखा है :—

किले पर चढ़ाई करने के समय स्त्रियां पत्थर फेंकती हुई देखी गईं और निर्भीकता और साहस के साथ अपने को खतरों के स्थानों में फेंक करती हुई दिखाई दीं।

अंग्रेजी सेना को भी इस लड़ाई में भारी नुकसान पहुँचा। सेनापति मेजर जनरल जिलेस्पी मारा गया। इसके अतिरिक्त ३१ अफसर और ७२१ सैनिक मारे गए। पर अंग्रेजों को इस बात का सन्तोष था कि पहले की पराजयों का कलंक धुल गया। आर. सी. विलियम नामक, तात्कालिक ऐतिहासिक ने इस लड़ाई का वर्णन करते हुए और गोरखों की वीरता की प्रशंसा करते हुए यह कह कर अपने मन को सन्तोष दिया है कि इसका अन्त पहले मिली हारों को धोने और विजय दिखाने के साथ हुआ।

आज नेपाल और भारत जब एक दूसरे के अधिकाधिक निकट आ रहे हैं, कलंगा किले की लड़ाई और वीर बलभद्रसिंह का अपितु शौर्य और अतुल पराक्रम दोनों को और भी अधिक समीप लायगा।

लेखक— श्री वीर बहादुर

नगर के बाहर से क्लान्त तथा म्लान मुख कौशल मे रुचि लेते ही सन्यासी को शान्ति की कथा ज्ञात होती है। कौशल की वाग्दत्ता नोवाखाली मे घिर गई है। कौशल के पिता पहिले ही उधर जा चुके थे। किन्तु कौशल की दशा देख कर तथा जनसेवा के उद्देश्य से सन्यासी उसे लेकर उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्र की ओर रवाना हो गया। कौशल के पिता डा० सुरेश कलकत्ता से वेष बदल कर देहात मे पहुँचते हैं और एक गुण्डे के यहा ही ठहरते हैं जिस के यहा अनेक युवतियाँ बन्द थी। शान्ति भी कोठे के किवाड अन्दर से लगा कर कितने ही दिनों से उसी घर मे पडी थी। वहा उन्होंने चतुराई से कुछ स्त्रियों को निकाला। उधर सन्यासी कौशल को ले कर उस क्षेत्र मे आ पहुँचा।

[गतांक से आगे]

'बिरादर!' गुण्डेजादे के पिता ने सुरेश का हाथ पकड़ कर कहा—'बच्चे की बात का बुरा न मानना। हम अपने मेहमान से कभी रुपया न लेंगे। ये रुपये आप रख लीजिये। और जो कुछ हम आप की खिदमत कर सकते हैं, कम है। आइन्दा कभी जरूरत हो, तो आप जमाअतों में इज्जत मआब जनाब मौलवी, आलिम, फाजिल, जुमा मस्जिद के मारफत अपनी सारी जरूरियात हमें लिख भेजें। हम जितना 'माल' हो सकेगा आपको नजराना देंगे। हमारा ऐन मकसद सिर्फ ईमान की खिदमत करना है। उस खिदमत के सिले में जो कुछ अल्ला-ताला हमें देगा, हम उसे ही अपनी बड़ी मजदूरी समझते हैं। आप से रिश्वत या कीमत हम नहीं चाहते।'

'शुक्रिया' ड्राइवर की तरह डाक्टर सुरेश ने शुक्रिया कहा। उसकी कठिनाई दूर करने के लिए ड्राइवर फिर बीच में बोल पड़ा—'गुस्ताखी माफ हो! हम आपके एहसानों को ताउम्र याद रक्खेंगे। हम हजरत जनाब उल्ला साहब के पास गये थे। पर अफसोस है कि सारी अच्छी और काम की चीजों पर 'कब्जा' पड़ गया था। वे कहने लगे कि… .।'

'मुझे अफसोस है कि शहरों में हमारे भाई इस तरह कब्जा कर जाते हैं। और आप सिर्फ मुझे खबर कर दें, मैं आपकी हरवक्त मदद को तैयार हूँ।'

कार में स्त्रियों को भर कर ड्राइवर के साथी ने कार चलाना शुरू कर दिया। अमल, पोधा, डाक्टर सुरेश और ड्राइवर पैदल चलने लगे। जल्दी करने के लिए लोग कार के पीछे लटक गये और कार धीरे धीरे आगे बढने लगी।

'कार को जाने दो कोमिला, हम पैदल चलेंगे।' डाक्टर ने कहा।

'ठीक है। पर कुछ दूर आगे चल के।' ड्राइवर ने कहा—'नहीं तो गुण्डे शक करेंगे।'

ज्यों ही लोग थोड़ी दूर गये।

'गजब हो गया, हुजूर' एक गुण्डा दौड़ा दौड़ा आया। 'वे रात के सब मेहमान सारे के सारे काफिर थे।'

'काफिर!' गुण्डेजादे के पिता ने कहा।

'बकता है,' गुण्डेजादे ने कहा।

'नहीं, छोटे साहब! ये सब नकली बिरादर थे। कहीं कोई पंजाबी बिरादर भी बंगाली में बात कर सकता है। मैंने ड्राइवर को उस तुर्की टोपी वाले से कानाफूसी करते सुना।'

'दूर तो नहीं गये होंगे। अभी लारी से उनका पीछा करो! इस नोआखाली के दलदल में से कमबख्त निकल न जायें! फिर बुरा होगा। शेरों के दरम्यान से काफिर गीदड़ भग कर जावेगा किधर! पकड़ो।' कहकर गुण्डेजादे ने दस गुण्डों को लारी में बैठा कर तुरन्त सुरेशादि का पीछा करना प्रारम्भ किया।

'ड्राइवर!' सुरेश ने कहा—'एक लारी पीछे से कीचड़ उछालती बड़ी तेजी से आ रही है। जान पड़ता है, कोई हमारा पीछा कर रहा है।'

आप पिस्तौल सम्भाल लीजिये, !

'फिर' सुरेश ने कहा—'पिस्तौल तो सम्भाल लूंगा, पर उसके बाद! चारों ओर पानी है, किधर जाओगे। कहीं सवाल हुआ तो।'

'यहां सुनसान है! एक बार युद्ध करने से मैं भी नहीं घबराता क्यों अमल, क्यों पोधा!' ड्राइवर ने कहा।

'बेशक!' अमल ने कहा—'यदि दो को सुरधाम पहुँचा कर मैं स्वयं मर भी गया तो भी अफसोस न रहेगा। जीवन में इस शिकारी घटना को देख कर केवल यही जी चाहता है इन शिकारियों का सर्वनाश कर दूं।'

'युद्ध करने से पहले, बचाव का भी कुछ उपाय सोचो!' सुरेश ने कहा।

'डाक्टर साहब!' ड्राइवर ने कहा—'बचाव की चिन्ता में पड़े तो युद्ध क्या होगा? और फिर बचाव क्यों? सब कुछ राख में मिल जाने के बाद भी क्या हमें प्राणों का कुछ मोह शेष है?'

'तो सम्हल जाओ! लारी समीप आगई!' सुरेश ने कहा!

'हम तैयार हैं!' कह कर ड्राइवर ने कार को रुकवा दिया।

नारे लगाते हुए गुण्डे भी पहुंच गये। कार को एक पेड़ की आड़ में कर के चारों ओर तितर-बितर होकर सुरेश ड्राइवर, अमर और पोधा बैठ गये।

ज्योंही गुण्डे समीप आए, ड्राइवर ने तुरन्त दो गोलियां फौरन चला दीं। एक सफल रही। गुण्डों के पास अन्य हथियारों के साथ एक राइफल भी थी गुण्डेजादे के पास। उसने गुण्डों को ललकारा पर सुरेश ने ठीक एक निशाना एक आगे आते हुए गुण्डे पर ताक कर मारा। वह चिल्ला कर वहीं लेट गया। एक अच्छा युद्ध प्रारम्भ हो गया।

प्रभात की बेला थी यह सुरेशादि के लिए अच्छा था, क्योंकि इस समय बहुत कम लोग इधर उधर आजा रहे थे।

गुण्डेजादे ने सोचा कि इन लोगों को इस प्रकार मारा न जा सकेगा। वह और गुण्डों की सहायता के विषय में सोचने लगा। पर उस समय गुण्डों की एका एक भीड़ एकत्रित कर लेना कहा सम्भव था। 'तुम लोग काफिरों से निपटो' गुण्डेजादे ने कहा—मैं अभी लारी भर के मुश्टण्डे पचास आदमियों को लाता हूं।'

'वाह!' एक गुण्डे ने कहा—हम लोग यहां बेमौत मरें और आप लारी लेकर एसे चले जायँ। हमें क्या पड़ी है। फायदा तो आप को हो, और जान हम गवायें।'

'मगर' गुण्डाजादा कहने लगा—'कोई और सूरत भी तो नहीं इन काफिरों से निपटने की, तुम्ही बताओ!'

'आप के पास राइफल है। आप इनसे मुकाबिला कीजिये मैं कस्बे से आदमी लाने जाता हूं।' एक गुण्डे ने कहा, 'कहिये।'

बात गुण्डों के पसन्द आई, पर गुण्डेजादे को नहीं। वह मौत से कांप रहा था। उसे लालच ने और डर ने इन लोगों का पीछा करने पर विवश किया था, पर अब युद्ध करके अपनी जान को खतरे में बिल्कुल डालना नहीं चाहता था।

एकाएक एक गोली गुण्डेजादे के पांव में लगी, ड्राइवर का भी निशाना ठीक था। फिर क्या था? गुण्डे छुटाने लगे, भागने लगे। गुण्डेजादे को लारी में डाल दिया गया। और लारी उलटे पांव लौटी।

'ये क्या शोर गुल था?' गांव के कुछ गुण्डे लारी को वापस जाते देख कर और कुछ बन्दूक की आवाज सुन कर, वहां आकर डाक्टर सुरेश से पूछने लगे। डाक्टर ने समझा अब तो बिल्कुल बचने की आशा नहीं।

'देखिये बिरादर!' ड्राइवर खूब समझता था कि अब क्या करना चाहिये - 'अब तक साहबजादे साहब काफिरों को ही लूटते थे, अब हमें भी लूटने लगे। एक हजार में मैंने चार औरतों को खरीदा था। कुछ रफीक साहब ने खरीदा था, कुल दस पहले हमारे पास थीं क्योंकि

हम इस माल को पंजाब ले जाना चाहते थे। पर साहबज़ादे ने कीमत लेने के बावजूद भी हमको पीटा, धमकी दी और हसीना को, जिससे हमारा सारा नुकसान पूरा होता और कुछ फायदा होने की उम्मीद थी, छीन भी लिया। क्या मुहाजिरों के साथ आप बिरादर वाली सलूक करते हैं।'

'साहबज़ादे और उनके वालिद की शिकायतें बढ़ गई हैं।' गांव के गुण्डे ने कहा—'उन्हें लूटने का ऐसा चस्का लगा है कि वे काफिर और बिरादर में फर्क ही नहीं समझते। आप लोगों का काफी नुकसान हुआ।'

'काफी तो नहीं।' ड्राइवर ने कहा—'हां नुकसान ज़रूर हुआ। देखिये तो सही हम कहां से आये हैं। मगर यहां आकर भी कुछ फायदा न हुआ, तो ······!'

'अभी माल आपके पास है' 'एक ने कहा —'कम नहीं है।'

यही नोआखली है, जिसके प्रत्येक वर्गमील में एक सहस्र से भी अधिक जन-संख्या थी। चारों ओर धान के लहलहाते खेत, रोती सरिताएं, अश्रुपूर्ण नारियलियां, मन मारे पंछी। जगह-जगह जली झोपड़ियों की राख। एक विप्लव था। वहां कोई व्यापार नहीं था। कुछ काम नहीं। डाक्टर सुरेश सर नीचा किये अपने गांव की ओर नहीं, श्मशान की ओर, वह अब श्मशान बन चुका था, बढ़े चले आ रहे थे। गुण्डों की भीड़ अठखेलियां कर रही थी, जैसे श्मशान के कुत्ते। कभी डाक्टर अपनी आंख उठा कर,. तत्काल ही नीचे दृष्टि कर लेते थे। चारों ओर असहनीय कष्टपूर्ण हृदय विदारक दृश्य। जिस ओर दृष्टि जाती उधर ही कोई भयानक दृश्य अवश्य था।

'अब हमें कौन पहचान सकता है, यहां, ड्राइवर' डाक्टर ने खिन्न हो कर कहा — 'चलो अपने गांव में चलें। वहां दो मुट्ठी राख के अतिरिक्त रखा ही क्या है।'

'अगर कोई गुंडा पहचान ले ?'

'तो कर ही मैं क्या करूंगा ?' डाक्टर ने कहा — 'मेरे लिए अब संसार में कोई विशेष काम नहीं। तुम लोग स्टेशन चले जाओ। शायद वहां कोई गाड़ी मिल जाये।'

'अमल और पोचा' ड्राइवर ने कहा — 'तुम दोनों जाओ शाम तक हम भी आ जायेंगे। यदि गाड़ी मिली तो।'

'हां, तुम लोग जाओ' डाक्टर ने भी कहा।

अमल और पोचा स्टेशन चले गये। लगभग दो मील था वहां से। और वहीं दो तीन मील की दूरी पर डाक्टर का गांव भी था। पहले विमल का गांव पड़ता था। वहां भी जाना था। क्योंकि दिल्ली से आते हुए विमल के पिता का साथ कलकत्ता में ही छूट गया। वे आवश्यक काम से वहीं रह गये। अतएव डाक्टर ने इसी गांव के भीतर से, जहां कभी विमल का घर था, जाने का विचार कर गांव में प्रवेश किया।

लूट-खसोट और हत्याकांड समाप्त हो चुका था। जली हुई झोपड़ियों और लूटे हुए मकानों के खंडहर ! अब वहां लूटने के लिए क्या रह गया था ? मरने के लिए कौन रह गया था ? गांव के भीतर से गुंडों की घूमती हुई भीड़ की आंख बचा कर चले आ रहे थे। मगर कब तक आंख बचा सकते थे। इतना तो अच्छा था कि गुंडे लूट-खसोट के माल और बिना परिश्रम का धन पाने पर अन्धे हो रहे थे। नहीं तो बहुत देर पहले ही कोई उनको पहचान लेता। दूसरे बचपन में डाक्टर सुरेश कुछ पहचाने भी नहीं जाते थे। परन्तु अब आंखें धोखा कैसे खा सकती थीं ? डाक्टर और ड्राइवर एक भीड़ से जा मिले, एक बड़े से मकान के सामने। सब कुछ लुट जाने के बाद भी इस मकान में कुछ काम की चीजें थीं। किवाड़ें, जंगले, आलमारियां, चारपाइयां और क्या-क्या। गुंडे लड़के, गुंडे जवान, गुंडे बूढ़े और दो चार गुंडा स्त्रियां भी प्रसन्नता पूर्वक इसमें से कुछ न कुछ उठा-उठा कर ले जा रहे थे। कोई किवाड़ उखाड़ कर ले जा रहा था, कोई आलमारी और कोई ईंट ही।

'काफ़िर के पेट में कितना सामान था, एक स्त्री ने कुछ बर्तन लेजाते हुए दूसरे से कहा।

'सात दिन से कुछ न कुछ रोज लूटते हो जा रहे हैं।'

'खां साहब ने कहा, आज जो कुछ ज़रूरी चीजें हों, लूट लो, नहीं तो शाम को तेल आ जावेगा और उसी को छिड़क कर मकान फूंक दिया जावेगा।'

'चलो।' स्त्री ने कहा — 'मगर नेक आदमी था।'

'नेक था तो क्या ?' दूसरे ने कहा—'सुना नहीं शहीद साहब ने क्या कहा था ? काफिर कभी नेक नहीं होता। हमारा फर्ज़ कुफ्र को दूर करना है। एक काफिर के मरने से दुनिया में एक कुफ्र कम होता है। और उस हुजूर के जनाब में कुफ्र दूर करने वाले को जन्नत नसीब होती है।'

'हम सभी जन्नत में जावेंगे, तब।'

'जन्नत जाने की सरल तरकीब यही है' स्त्री ने कहा— 'सुना नहीं कल शहीद साहब की तकरीर ?'

'और क्या कहा शहीद साहब ने ?'

'कहा— मेरे अज़ीज़ भाइयो और बहिनो, आज दुनिया में कुफ्र छाता चला आता है। और हमारी जान, माल, इज़्ज़त आबरू खतरे में है। उठो, बेदार हो जाओ। यही मौका है, अब तुम अपना मुंह हुजूर के सामने रौशन कर सकते हो। यही मौका है, अब तुम अपने आमालों से दुनिया में अपनी नस्लों के सामने बेहतरीन नज़ीर पेश कर सकते हो और अगली दुनिया में मौज उड़ा सकते हो। बस·······।' कहते कहते स्त्री एक दूसरी स्त्री से टकरा गई।

'कमीनी, अन्धी हो गयी है।'

'अन्धी मैं कि तू '

कुछ देर मैं मैं तू तू हुआ और बेचारी उसी में उलझ गई। डाक्टर सुरेश ड्राइवर के साथ यों ही आगे बढ़े, एक चालीस-वर्षीय पुरुष मिला। मुंह पर कुछ उदासीनता छाई थी।

'आप ?' पुरुष ने डाक्टर सुरेश को पहचान लिया। यही शान्ति के पिता थे। ड्राइवर के बगल में खड़ा हो गया।

'आप बचे हैं !' डाक्टर ने उसके लूटे हुए घर की ओर चलते हुए कहा।

'नहीं,' शान्ति के पिता शैलेन्द्र ने कहा— 'मैं तो एक सप्ताह पहले मर गया। ये मैं केवल अपनी छाया हूं। आत्मा में अशान्ति है, अतएव प्रेत की भांति घूम रहा हूं। सब कुछ खोकर, अब क्यों जीता रहूंगा।'

एक नीरवता छा गयी। तीनों बढ़े जा रहे थे, किन्तु कहां। कुछ दूर जाने पर शैलेन्द्र का मकान आगया। उसमें क्या रक्खा था ? सब कुछ लुट गया था। प्राण इसलिए अभी पास था, कि उसके पास अब कुछ नहीं था। सब कुछ लुट गया और साथ ही साथ उसका संस्कार भी लुट गया। घर में आये। एक चारपाई भी नहीं थी, जहां बैठते।

'और लोग !' डाक्टर ने पूछा। परन्तु इसके उत्तर में शैलेन्द्र की आंखों में उमड़ती हुई नदी के अतिरिक्त और क्या था।

डाक्टर शान्ति के बारे में पूछना चाहते थे। उन्हें अभी वे दिन याद थे, जब एक सन्ध्या को, पिछली गर्मियों के दिनों में, शैलेन्द्र ने धान के खेतों की मेंड़ पर, शान्ति के विवाह की बात की थी। दहेज में क्या देंगे, क्या नहीं देंगे, शैलेन्द्र के सामने यह प्रश्न था ही नहीं। जो कुछ चाहो मांग लो। डाक्टर सुरेश को वह संध्या याद आने लगी। सभी चुप बैठे थे।

आज से १५ दिन पहले यदि डाक्टर सुरेश यहां आये होते तो क्या होता ? क्या क्या नहीं होता ? संसार की सारी अनमोल वस्तुओं से उनका स्वागत होता। शैलेन्द्र के मन की अभिलाषा पूरी हो जाती। उसके बाद उसके जीवन में कोई और कामना नहीं रह जाती। उनके जीवन की यही एक अभिलाषा थी— डाक्टर सुरेश को अपना सम्बन्धी बनाना।

यदि शैलेन्द्र के द्वार पर भूखा भिक्षुक ब्राह्मण भी आ जाता, तो उसे एक मुट्ठी चावल नहीं मिल सकता था।

देर तक तीनों आदमी बैठे रहे। क्या कहें। कहने और सुनने के लिए आजकल नोआखाली में कुछ था ही नहीं। जिसके पास आंखें थीं वह देखता था। वहीं कुछ पूछने की आवश्यकता थी ही नहीं। शैलेन्द्र के घर के और आदमी कहां थे ? क्या हुए ? शान्ति कहां थी ? क्या हुई ? यह सब पूछना ही व्यर्थ था। अपने इस नवीन अवसाद, नवीन पाप, नवीन विपदा, नवीन संहार का, किस मुंह से कोई शैलेन्द्र से कुछ पूछने का साहस करता। अपने विनाश की कथा शैलेन्द्र कैसे सुना सकता था।

उसे वह दिन खूब याद था, जब कुछ दिन पहले गुण्डों का सरदार आया और उसके डर से ही शैलेन्द्र ने विपदा टालने के लिए पांच हजार रुपया दिया। पर देखते देखते उसका सारा धन लूट लिया गया। उसके साथ धोखा हुआ, नहीं तो वह कब का नोआखाली से भाग गया होता। पर गुण्डे धोखा न देंगे, यह शैलेन्द्र की सरल प्रकृति का ही भ्रम था। उसने कभी भी अविश्वास नहीं किया था। पिछली सारी घटनायें उसके मन में अब तक गूंज रही थीं।

धान के हरी भरी फसल को विनाश करने की धमकी देकर धन लिया, घर फूंकने की धमकी देकर प्रतिज्ञा की कि धन लेने पर घर न फूंका जावेगा। गुण्डों की प्रतिज्ञा। प्राणों की धमकी देकर घर लूट लिया। फिर प्रतिज्ञा की—स्वयं गुण्डों के सरदार ने—कि यदि शैलेन्द्र अपना धर्म छोड़ देगा तो उसके कुटुम्ब के अन्य लोगों की जान बचाने की छुट्टी मिल जावेगी। शान्ति के प्राण का मोह करके शैलेन्द्र ने यह भी किया। फिर गुण्डों ने कुटुम्ब के अन्य लोगों को मार डाला। शैलेन्द्र ने केवल शान्ति को सुरक्षित रखने के लिए, गुण्डों ने जो कहा सब कुछ मान लिया। पर वे सब गुण्डों की प्रतिज्ञायें थीं और गुण्डों की शर्तें। (क्रमशः)

अपनी देववाणी सीखिये

सेनानी मैकार्थरः

गते मासे इंगलैण्ड देशीयैः राजनीतिज्ञैः आन्दोलितं यत् कोरियादेशे क्रियमाणे युद्धे संयुक्तराष्ट्रसंघीयसेनानां अध्यक्ष जनरलो मैकार्थर· पश्चिमाखीयः वस्तुतस्तु नीतिः विश्वशान्त्यैऽहितकारिणी। तस्य नीतिः युद्धक्षेत्रं विस्तारयिष्यति। गतेषु दिनेषु जनरल मैकार्थरः चीनदेशस्य साम्यवादि शासनं भर्त्सितवान् यदि स साम्प्रतमपि स्वकीयां युयुत्सां न शमयति तदा तत्रापि आक्रमणं संभाव्यते। तेन च समस्तचीनस्य सैनिकशक्तिरूपेण संभावित कृत्यः। विरामसंधि प्रस्तुवन्नसौ चीनदेशजनकथयत् विरामसंधि कारियायुद्धमवकम्भ्येव भविष्यति, राष्ट्रसंघे साम्यवादि चीनस्य स्वीकृति फारमोसाधिकारः आदि प्रश्ना विरामसंधे विषया न सन्ति। जनरल मैकार्थरस्यदं वक्तव्यं अखिल राजनीतिज्ञेषु क्षोभं चकार। ते युद्धक्षेत्रं विस्तारयितुमनिच्छुका आसन्। भारतवर्षस्यापि मतमेतदेव अमेरिका देशे साम्यवादिनः प्रतिविरोधभावनाऽत्यन्तं तीव्रा, परन्तु स स्वसहयोगिनामन्यदेशानां, विशेषतः इंगलैण्डस्योपेक्षां कर्तुमसमर्थः। अतः एकदा अकस्मादेव ट्रूमैनाभिधेय. तस्य राष्ट्रपतिः, यस्तत्र प्रधान सेनापतिरपि अस्ति, जनरल मैकार्थरं पदच्युतं चकार। एतेन समाचारेण सर्वः संसारस्तब्धोऽभूत्। केचित् हर्षमन्वभवन्, केचित् मैकार्थर पतने निजापमानं चीनस्य च विजयमपश्यन्, केचित् कोरियायुद्धं अग्रे न प्रसरिष्यतीत्याशां चक्रुः। केचिदामेरिकावासिनोऽत्यन्तं क्रुध्वा सन्तः ट्रूमैनमपदस्थं चिकीर्षवः तिष्ठन्ते। ते मैकार्थरं सम्मानयितुमुत्सुकाः सन्ति।

अमेरिका देशस्यायं सेनापतिः मैकार्थरः गते महायुद्धे प्रभूतं यशो लेभे। जापानविजयस्य श्रेयस्तस्मै एव दीयते। स एव युद्धमनु जापानस्य प्रमुख शासकपदमारुरोह। मैकार्थरपतनेन कोरियास्थितौ सुधारो भविष्यत्येव, अत्रापि न कश्चिन्निश्चयः। राष्ट्रपतिःट्रूमैनो युद्धाद्भीतः इत्यालोचकान् निरुत्तरयितुमघोषयत् यत्तस्य कोरिया नीतावस्यपि परिवर्तनं माभूत्। कस्यापि आक्रमणमसह्यम्।

मैकार्थरस्य स्थाने श्री रिजवे सेनापतिपदमलंचकार। यदि स विजयते तर्हि जना मैकार्थरं विस्मरिष्यन्ति, परं यदि सः युद्धे विजयश्रियं न लभते तर्हि मैकार्थर ट्रूमैनमवाप्य राष्ट्रपतिपदमपि अलंकर्तुं शक्नोति।

पंचप्रदीप — लेखक श्रीमती शान्ति एम० ए०, प्रकाशक — भारतीय ज्ञानपीठ काशी, मूल्य २)।

इधर कुछ दिनों से जितनी हिन्दी कवियित्रियों की कवितायें निकलती रही हैं, उनमें श्रीमती शान्ति एम० ए० का अपना विशिष्ट स्थान है। शांति जी के भावों में जितनी गहराई है, उतनी ही उनकी तीव्र अभिव्यक्ति भी है, आशा, निराशा, शोक, राग, दुख-सुख की भावनाओं को प्रकृति के माध्यम से सजीवता से चित्रित करने में वे सिद्धहस्त है। कवियित्री के हृदय की वेदना और उल्लास स्वतः ही कविताओं में फूट पड़ी प्रतीत होती है। इस संग्रह में उनकी कतिपय सुन्दर कविताओं का संग्रह है, जिनमें से अधिकांश आल इण्डिया रेडियो से प्रसारित होती रहीं। पुस्तक का प्रकाशन तथा गेट-अप भी आकर्षक है।

●

कल्याणी कैकेई — प्रकाशक — गुप्ताजी प्रकाशन नया बाजार ग्वालियर, मूल्य ४)

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने रामायण महाकाव्य के एक परिच्छेद को अपनी नवीन ऐतिहासिक कल्पना के आलोक में देखा है और कुछ ऐसे तथ्य उद्घाटित किये हैं, जिनको पढ़ कर आज का पाठक विचार संघर्ष में उलझ जाता है। रामचरित मानस के उन पाठकों को जिन्होंने राम कथा को मस्तिष्क के स्थान पर हृदय के रस में डुबो कर ही अधिक देखा है, यह सब घटनायें निराधार सी प्रतीत होंगी। फिर भी लेखक का प्रयत्न सराहनीय है, क्योंकि उसने पाठकों को नई दिशा की ओर सोचने के लिए प्रेरित किया है, साथ ही मर्यादा पुरुषोत्तम राम के गौरव को भी किसी प्रकार कम नहीं होने दिया है। राष्ट्रहित की दृष्टि से कैकेयी ने अपने कर्तव्य का किस तत्परता से पालन किया है, यही लेखक ने अपने काव्य में दिखाने का प्रयास किया है और कैकेयी को पाठकों की श्रद्धा का पात्र बनाया है।

—सुरेश

●

तन्दुरुस्ती (आरोग्यता) कैसे रहे — लेखक डाक्टर गुरदित्तसिंह, पृष्ठ १२० मूल्य २) रु० प्राप्ति स्थान — गीता प्रेस, देहरादून।

इस छोटी सी पुस्तक में विद्वान लेखक ने अपने लम्बे अनुभव के आधार पर आरोग्यता के सहज व सस्ते उपाय बिलकुल जनसाधारण की भाषा में प्रस्तुत किये हैं। इसकी बड़ी खूबी यह है कि इसमें आरोग्यता, आहार इत्यादि के विषय में आज का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इतनी सरलता और पारिभाषिक शब्दों की सहायता के बिना रखा गया है कि इसे हर कोई सरलता से पढ़ सकेंगे। बालक पढ़ और समझ सकता है। ऐसी पुस्तिका की भारत में आज विशेष आवश्यकता है।

—[illegible] अशोक

●

श्री महालक्ष्मी पञ्चांगम् — रचयिता — श्री पं० गंगाप्रसाद जी ग्वालियर। मू० १)

प्रस्तुत पंचांग ग्वालियर के ज्योतिषाचार्य श्री गंगाप्रसाद जी ने सायनिक विधि से तैयार किया है। तिथि, नक्षत्र, योग करण का घट्यादि क्रम ग्वालियर के अक्षांश पर ग्रह लाघवीय मतानुसार दिया है और ग्रहों के उदय, अस्त, वक्री, मार्गी, अष्टमी, पूर्णिमा के स्पष्ट ग्रह आदि सूक्ष्म गणित से बनाकर दिये गए हैं। प्रत्येक पक्ष में राजनैतिक सामाजिक, व्यापारिक मुहूर्त तथा प्राकृतिक घटनाओं का उल्लेख भी किया गया है। पंचांग की छपाई कागज आदि की दृष्टि से ऐसे पंचांग बहुत कम निकलते हैं। राशि क्रम से फल आदि दिये गए हैं, फलित ज्योतिष पर विश्वास करने वाले इसमें अवश्य रुचि लेंगे।

●

वीर अर्जुन साप्ताहिक का मूल्य

वार्षिक	१२)
अर्धवार्षिक	६॥)
एक प्रति	चार आना

कश्मीर मेल

[पृष्ठ १० का शेष]

धीरे अपनी निद्रा भरी आँखों को खोलने का प्रयत्न किया।

"२ बजा चाहते हैं।" "आप सोए नहीं"। "सोया था, किन्तु अब तो नींद खुल गई है। बाहर यह दृश्य हृदय सुहावना है।" यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं आपके पास आ बैठूं। क्योंकि मेरी आंखों से भी नींद उचाट हो गई है। "बड़ी खुशी से" और मैंने उसके लिए स्थान बना दिया।

मेरी साथ की खिड़की में अपनी सुन्दर और मुलायम कुहनिया को टेककर वह भी रात की चांदनी का आनन्द लेने लगी। "आप उपन्यास लिखते हैं या गीत भी" उसने चांद की ओर देखते हुए मुझ से प्रश्न किया।

"जो दोनों, गीत मुझे अधिक भाते हैं।"

"मुझे भी गीत बहुत अच्छे लगते हैं, मेरी माता जी को गीतों से बहुत लगाव था। "तो क्या—?" और मैंने वाक्य अधूरा ही छोड़ दिया। पिछले ही साल वह स्वर्गगामिनी हुई'—उन्होंने उदासी से कहा।

'मनुष्य जीवन का क्या भरोसा है, इन विषयों में सन्तोष करना ही पड़ता है।' इसी समय गाड़ी एक छोटे से स्टेशन को पार कर गई। एक बूढ़ा आदमी हरी लैम्प लिए खड़ा था। यह कौन सा स्टेशन था' और उसने गर्दन बाहर निकाल कर देखा तो उस की गरम कलाई मेरे हाथ से छू गई। 'सराय बंजारा' आप अपना उपन्यास समाप्त करने कश्मीर क्यों जा रहे हैं? क्योंकि इसका दृश्य समूह कश्मीर की सुन्दर वादियां हैं। इसके अतिरिक्त उपन्यास लिखने के लिए शान्ति और एकान्तता की आवश्यकता है और बड़े नगरों में यह मिलना कठिन है। मुझे कवियों और विद्वानों से मिलकर बड़ी प्रसन्नता होती है और मुझे मेरा गर्व है अन्य लेखकों से मिलकर बहुत शान्ति और आनन्द प्राप्त होता है।' आप अपनी धर्म पत्नि को साथ नहीं लाए। उसने तनिक झेंप कर कहा। 'वास्तविकता यह है कि मेरा विवाह नहीं हुआ, अब सोचता हूं विवाह कर लीलूं।' उसी समय एक भारी धक्का प्रतीत हुआ मानों कोई भारी वस्तु मेरे ऊपर गिरी। और मैं मूर्छित होगया। जब मेरी आंख खुली तो सुरेश की ध्वनि मेरे कानों में पड़ी।

'प्रेम अब, अब कैसा है! मैं कहां हूं सुरेश? मूर्छा के कारण मेरी आंखों के आगे अंधेरा सा छा गया 'तुम अम्बाला के हस्पताल में हो, अधिक बोलने का प्रयत्न मत करो' दूसरी बार जब मेरी आंख खुली तो सुरेश के अतिरिक्त कई संबंधियों को देखकर चकित रह गया। फिर धीरे धीरे भूली हुई बातें स्मरण आती गई। २८ जनवरी को वह चांदनी रात, सुन्दर आशा। रेलवे प्लेटफार्म और दो जन ऊपर की सीट पर बैठे हुए। 'दूसरे यात्री कहां हैं, आशा कहां है, सुरेश! मैंने पागलों की भांति चिल्ला कर कहा। 'शोक, सब लोग स्वर्ग सिधार गये। ईश्वर की कृपा कि तुम्हारे प्राण बच गए। आशा तुम्हारी भुजाओं में जकड़ी हुई थी। किन्तु जलाद मोह की मारी ने उसका सिर चिकनाचूर कर दिया। मैं फिर मूर्छित होगया।

अब भी कभी कभी चांदनी रातों को आशा और वे अपरिचित क्षण याद आते हैं। जो कुछ पल ही साथ देकर मुझे एकाकी छोड़ गए। कश्मीर मेल अब भी उसी भांति सन्नाटे को चीरता हुआ गुजर जाता है, किन्तु आशा कौन जानता है वह कहां चली गई?

———

बच्चों की पढ़ाई का नया ढंग

लन्दन के एक मोहल्ले में अवस्थित एक अजायबघर की सैर करने बच्चे अपनी मर्जी से आते हैं। यह नए ढंग का अजायबघर श्रीमती माली हैरिसन नामक एक महिला द्वारा चलाया जाता है। वहां पर उसने एक नया शिक्षा ढंग प्रचलित किया है जिससे बच्चे आपसे आप कहने लगे हैं कि खिलना पढ़ना सेल

उन्होंने लन्दन काउन्टी कौंसिल के जेफरी म्यूजियम (अजायबघर) की अध्यक्षता बनने पर दैनिक प्रयोग की चीजों के अजायबघर सोलहवीं से बीसवीं शताब्दि तक के भिन्न युगों के ढंगों के अनुसार सजा लिया। पहले पहल जब वह वहां गईं तो बच्चे स्कूल टोलियों के रूप में अजायबघर देखने आते थे किंतु उसने इसे एक ऐसा केन्द्र बना दिया, जहां आप से आप तथा अकेले तीन सौ बच्चे हर रोज आते जाते हैं।

इस अजायबघर में स्कूल के विद्यार्थियों की टोलियां आती हैं। उन्हें वहां की चीजों के सम्बन्ध में स्वयं जानकारी पैदा करने का ढंग बतलाया जाता है। वे केवल पांच मिनट की बातचीत में अजायब घर का अभिप्राय समझ जाते हैं। इसके बाद हरएक बच्चा इच्छानुसार इधर उधर रखी चीजें देखने निकल जाता है। फिर उसे एक पर्चा मिलता है, जिससे वह भरता है। श्रीमती हैरिसन और उसके साथी कामकाजियों ने जानकारी कराने वाली बातें लिख कर ऐसे पचास भिन्न चीजों के पर्चे तैयार कर लिए हैं, जिन्हें पढ़ कर बच्चा कई प्रश्नों का उत्तर लिखता है। उदाहरणार्थ, पुराने समय की किसी महिला का चित्र देख कर वह उस नारी के युग का पहनावा, रहन-सहन, साजो सामान तथा प्रसिद्ध लोगों का हालचाल स्वयं पता लगाता है।

इस प्रकार अनेकों पूरे चित्र एक जगह एकत्रित करने पर बच्चे के लिये सामाजिक इतिहास बताने वाली एक सकेत माला उसी के हाथों तैयार हो जाती है। यह जेफरी म्यूजियम के कार्य का केवल एक रूप है, किन्तु इससे पाठकों को उस सारे ढंग की जानकारी हो जाती है, जो बालक को उसी के अनुभव के सहारे शिक्षा प्राप्त करने का एक मार्ग दिखलाता है।

इस अजायबघर में एक चित्रशाला बनी हुई है जिसमें बच्चे जब चाहें तब पेंसिल से रेखाचित्र बना और तूलिका से चित्रकारी कर सकते हैं। किन्तु वहां एक अध्यापक रहता है जो सिखाने की अपेक्षा उन्हें सहायता दिया करता है। इनके अतिरिक्त शनिवार के प्रात बर्तन बनाने की कक्षा लगती है और कठपुतलियां बनाने और नचाने के ढंग भी सिखाये जाते हैं।

बच्चे इस अजायबघर में शिक्षा के अतिरिक्त कई तरह के काम धन्धे भी सीख जाते हैं। वे फिल्मों में दिखाई जाने वाली चीजें देखकर उनका इतिहास जान लेते हैं और बड़े होने पर बड़ी बड़ी दुकानों पर सजावटी कामों के लिये नियुक्त कर लिये जाते हैं, जैसे एक मामूली लड़का सात वर्षों तक नियमित रूप से अजायब घर की यात्रा करने के कारण लन्दन के एक विशाल स्टोर में आजकल काम करता है।

इस प्रकार निरे बुद्धू बच्चे तक सुधरने और अपने व्यक्तित्व का विकास करने लगते हैं।

इस प्रकार इस अजायबघर में बच्चे खुशी से आते हैं और बिना पुस्तकें पढ़े ही बहुत कुछ जान जाते हैं।

बाल समाचार

● यार्कशायर की मार्गरेट फेहर नामक सोलह वर्षीय किशोरी ने इंगलिश चैनल को तैरते हुए पार करने का इरादा किया है। आजकल वह चैनल के विशेष तैराक बी० ई० एच० टेम के निर्देश में तैरने का अभ्यास कर रही है।

● केंट में लड़कों के टेन्डरडेन टाइगर्स नामक एक साइकिलिंग टोली में विषम साइकिल परीक्षा अर्थात् ऊंची नीची भूमि पर साइकिल चलाने का एक नया ढंग प्रचलित किया गया है। टोली के सोलह वर्षीय कप्तान टामी हार्टन के मतानुसार इस नये ढंग के अन्तर्गत लड़के तीन मील के एक ऐसे मार्ग पर साइकिल चलाते हैं, जिनमें उन्हें चक्करदार जंगली पथों, ऊबड़-खाबड़ धरती, असम रेतीली कंकड़ पगडंडियों, बर्फानी ढालानों, सड़क मोड़ों, लकड़ी के कुन्दों के ऊपर से गुजरना और मार्ग में पेड़ों की डालों के नीचे बड़ी बड़ी झुकना पड़ता है, किन्तु वे साइकिल से नीचे धरती पर अपने पैर नहीं रख सकते। रुकने तथा पैर टिकाने वाला चालक अपने नम्बर खोता और असफल गिना जाता है। ऐसी एक बेढंगी साइकिलिंग दौड़ अभी हाल में हुई थी, जिसमें सफल लड़कों ने इनाम प्राप्त किये और जिसे हजारों लोग देखने गये थे।

स्कूली बच्चों की स्वास्थ्य रक्षा

इस वर्ष प्रारम्भिक एवं माध्यमिक स्कूलों में पढ़ने वाले लगभग ८० ००० अमेरीकी बच्चों को दोपहर का सन्तुलित तथा पौष्टिक भोजन सरकार द्वारा मिलेगा। जो बच्चे इस भोजन का मूल्य नहीं दे सकते हैं। उनसे दाम नहीं लिए जाएंगे परन्तु जो मूल्य देने की क्षमता रखते हैं उनसे कुछ मामूली सा मूल्य लिया जायगा।

इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले ४८ राष्ट्रों के गैर सरकारी तथा सरकारी स्कूलों की कुल संख्या ६८ ०० है। इस साल के कार्यक्रम में कोलम्बिया, अलास्का हवाई प्वेरटोरी को निक्रो और वरजिन द्वीप भी सम्मिलित हैं। यह योजना राष्ट्र के बच्चों के स्वास्थ्य एवं कल्याण के लिए १९ वर्ष पूर्व प्रारम्भ की गई थी।

प्रार्थना करने पर कृषिविभाग ऐसी चीजें भी देता है जिनका बच्चों के भोजन में प्रायः अभाव रहता है, विशेषत- प्रोटीन तथा विटामिन सी'। गत वर्ष पनीर, मूंगफली से तैयार किया मक्खन (पीनट बटर), सन्तरे का शुद्ध रस, डिब्बों में बन्द टमाटर तथा डिब्बों में बन्द फल और शाक सब्जियां कृषि विभाग ने दी थीं।

१९७१ में ६९ प्रतिशत भोजन में प्रोटीन की कोई एक चीज फल शाक-सब्जी, मक्खन, रोटी तथा शुद्ध दूध का एक गिलास दिया गया। कुछ स्कूलों में घर से लाए हुए भोजन के साथ लगभग आधा सेर शुद्ध दूध अथवा थोड़ी सी अन्य वस्तुएं और दी गईं और इस प्रकार आवश्यक आहार तत्वों की कमी पूरी की गई।

हमारी स्वतंत्रता

हम स्वतन्त्र हैं हम स्वतन्त्र हैं
अगणित शीश चढ़े बलि मां के
अगणित दीप बुझे जीवन के—
आर्य भूमि थी परवश दीन
क्षत विक्षत, खिन्न थी दुख मलीन
अन्धकार से उठ एक दिन।
हम स्वतन्त्र हैं हम स्वतन्त्र हैं।

सह न सके मां के बंधन जब
दहक उठा मन चन्दन तब,
आग उठी झांसी की रानी
जाग उठा यौवन का पानी
गंगा की निर्मल छाया में
हम स्वतन्त्र हैं हम स्वतन्त्र हैं।

मुक्त सांस है मुक्त हास है
जीवन का नूतन विकास है
अगणित बलिदानों की प्रतिमा यह
अखंडित भारत की सुषमा यह
विजय नहीं यह मूक हास है
हम स्वतन्त्र हैं हम स्वतन्त्र हैं।

—नन्दकुमार शास्त्री

जरा हंसिए

एक रेल के डिब्बे में कुछ यात्री यात्रा कर रहे थे उनमें रेल के ऊपर वाद विवाद उठ खड़ा हुआ।

एक ने कहा— आगे के डिब्बों में कभी नहीं बैठना चाहिए।

दूसरा बोला— ये रेल बनाने वाले लोग पागल हैं इन्हें आगे डिब्बे ही न लगाने चाहिए।

× × ×

एक बार एक सिख रेल में यात्रा कर रहा था, जब वह टट्टी में गया तो उसका बटुआ नीचे गिर पड़ा जब स्टेशन आया तो उसने यह बात गार्ड से कहा।

गार्ड ने कहा— तुमने जंजीर क्यों नहीं खींची?

सिख बोला— साहब! खींची तो थी पर हर बार उसमें से पानी निकल आता था (अर्थात उसने पाखाने के नल की जंजीर खींची थी)।

★

वन का असली राजा बाघ

[पृष्ठ १२ का शेष]

बाघ से युद्ध

पुराने साहित्य और इतिहास में बाघों और शेरों से बड़े-बड़े वीरों के खाली हाथ युद्ध करने के वर्णन मिलते हैं। महाराज भरत जिनके नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा बचपन में ही बाघिनी के देखते-देखते उसके बच्चों के दांत गिना करते थे। इसी विषय को आधार मान कर एक कलाकार ने एक चित्र भी बनाया है जिसमें दांत गिनते हुए भरत के एक ओर दया की याचना करती हुई बाघिन तथा दूसरी ओर एक ओर कुटी के साथ खड़ी हुई शकुन्तला चित्रित की गई है। दोनों सुन्दरियां शिशु की वीरता को कुतूहल के साथ देख रही हैं। कथाकार और कलाकार का कौशल धन्य है। कहानी और चित्र बहुत ही सुन्दर बन पड़े हैं। महाराज भरत का शौर्य बहुत ही समुचित रूप में प्रदर्शित हुआ है। पर काश कि कथा-लेखक और चित्रकार अपने-अपने कार्य में प्रवृत्त होने से पहले एक बार देख लेते। बाघ न ही सही, भुस से भरी हुई बाघ की खालों को ही देख लेते और यह जान लेते कि बाघिन से बढ़ कर अपनी सन्तान से स्नेह करने वाली मां धरती-तल पर दूसरी नहीं है। चित्रकार ने बाघिन के पास दो सुन्दरियों का चित्रण करके तो हद ही कर दी। रात के अंधेरे में घर की छत पर बैठ कर बाघ तो दूर भेड़िये तक की कहानियां सुन कर जिनकी घिग्घी बंध जाती है, उन सुन्दरियों का अभयहीन भाव से बाघिन के पास चित्रण बाघिन को कुछ बिल्ली का सा रंग दे देता है।

इसी प्रकार नूरजहां के पहले पति शेर अफगान और कुछ राजपूत सरदारों के भी शेरों और बाघों से लड़ने की कहानियां प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि शेर अफगान का तो यह नाम ही इस लिये पड़ा था कि वह खाली हाथ शेर को मार चुका था। कहानियों में यह भी वर्णन मिलता है कि इन पराक्रमी वीरों के जूतों के आगे छुरे लगे होते थे। जब बाघ आक्रमण करता था तो ये वीर शिरोमणि बाघ के अगले दोनों पैरों को पकड़ कर नीचे से पैर का जूते वाला छुरा उसके पेट में मारते थे जिससे वह मर जाता था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ये कहानियां केवल खुशामद बाघ की शक्ति स्फूर्ति और उसके आक्रमण करने के ढंग के बारे में पूर्ण अज्ञान पर आधारित हैं।

सैंडो का बाघ से युद्ध

यूरोप के प्रसिद्ध पहलवान और व्यायामशास्त्री सैंडो ने भी एक बार एक बाघ से युद्ध का प्रदर्शन किया था। इस प्रदर्शन को देखने के लिये जनता बड़ी उत्सुक थी। परन्तु रिहर्सल के समय सैंडो बाघ को बुरी तरह पछाड़ चुका था इसलिये असली प्रदर्शन के समय बाघ लड़ने को तैयार नहीं हुआ और कठघरे के एक कोने में बैठा रहा। इस पर सैंडो ने उसे खींच कर कठघरे के बीच में डाल दिया पर बाघ उठ कर खड़ा न हुआ।

सैंडो की शक्ति पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं। पर यह न बतलाना अन्याय होगा कि यह बाघ बरसों से सरकस में खेल दिखाने के काम लाया जाता रहा था और यह उन्हीं बाघों में से एक था। जिनके मुंह में सरकस के खेल दिखाने वाले अपने सिर भी रख दिया करते हैं। यही कारण था कि इस बाघ को पराजित करने के बाद भी सैंडो ने किसी जंगली बाघ से लड़ने का प्रयास नहीं किया। यदि सैंडो का सारा शरीर लोहे से भी मढ़ा होता तो भी जंगली बाघ मुकाबले के लिये बाधित किये जाने पर अपने आपको बाघ ही सिद्ध कर देता।

कुछ और रोचक बातें

बाघ साधारणतया पेड़ पर नहीं चढ़ता। पर पर्यवेक्षकों का कथन है कि शिकारियों द्वारा सब ओर से घेर लिये जाने पर उसे पेड़ पर चढ़ते हुए भी देखा गया है। परन्तु उसका अर्थ केवल यही है कि किसी बहुत सी शाखाओं वाले पेड़ पर एक शाखा से दूसरी शाखा पर कूदते हुए वह कुछ दूर तक चढ़ जा सकता है। नियम यही है कि बाघ पेड़ पर नहीं चढ़ता।

बाघ बहु विवाह में विश्वास रखता है। हमारे रियासती नरेशों की तरह वह भी बीसियों बाघिनें अपने साथ रखना पसन्द करता, पर क्योंकि बाघिनें पैसे के जोर से नहीं मिल पातीं इसलिये बीसियों न सही पर एक समय में दो-दो बाघिनों के साथ देखा जा सकता है। और वे बाघिनें भी आजकल के धनिकों की बी० ए० एम० ए० पास पत्नियों की तरह आपस में लड़ती नहीं, आनन्द से रहती हैं। पर बाघ को बहु विवाह का शौक उठती जवानी में ही होता है।

बाघ और केसरी = बबर शेर = प्रायः पत्नियां परस्पर बदलते रहते हैं। अर्थात् एक ही शेरनी या बाघिन शेर की भी पत्नी बन जाती है और बाघ की भी। आजकल के विलासी धनिकों के लिये यह परीक्षण भी कर देखने को बुरा नहीं है।

—— —

(पृष्ठ ७ का शेष)

काश्मीर हमारा अविभाज्य अंग है। उसकी समस्या को वहां के लोग क्या तय करेंगे? इसमें विचार करने का प्रश्न ही क्या है? यदि ऐसा ही है तो विचार भारतीय जनता करेगी। मान लो, किसी के पैर में चोट लगी और वैद्यों ने उपाय बताए। तो पैर को काट देना चाहिये या नहीं, यह निर्णय क्या पैर करेगा? पैर में कांटा लगने पर कांटा निकालने का निर्णय क्या पैर करेगा? यह निर्णय शरीर का हृदय और मस्तिष्क करता है। आत्मनिर्णय का (Self Determination) का प्रश्न उठाना है राष्ट्र को मुर्दा बनाने के समान है। यदि हमने राष्ट्र की भलाई और स्वरूप का विचार कर कदम उठाना हो, तो काश्मीर भारत में कभी का मिल गया होता।

संयुक्तराष्ट्र संघ को हमारे नेताओं ने आलौकिक कर्तव्य के कारण खड़ा किया हुआ पड़ोसी देश अधिक उपकारक दिखाई देता है। वहां के हवाई अड्डे, बारूद आदि युद्ध की तैयारी के क्षेत्र और सामान उनके हाथ में है। फिर न्याय क्या अन्याय क्या? मीठे शब्द प्रयोग मूर्ख बनाने की कला मात्र है, वह विदेशियों को आती है।

राजनीति

राष्ट्र को सम्मान मिले, यह विचार रखना पाप नहीं, न रखना पाप है। पर वह सम्मान कैसे मिलेगा। राजनीतिक पद्धति से मिलता तो चांगकाई शेक अच्छा रहता। हमारे देश में राजनीति खेलने वाले क्यों गिरे जा रहे हैं।

राजनीति में आपसी फूट भावी मृत्यु की घंटी को आमन्त्रण मिलता है। शक्ति के बिना कभी सम्मान नहीं मिलता। बड़े बड़े ग्रंथ लिखने वाले भाग्यकर्ता हुए हैं, पर उसके कारण देश को सम्मान नहीं मिलता।

नेहरू व अमरीका

अमेरिका में पं० नेहरू गये थे। सुना है कि उनका ईश्वरोचित स्वागत हुआ। बड़े आनन्द की बात थी। हमारे देश का कोई भी प्रतिनिधि कहीं जाये, तो उसका सम्मान होना तो आनन्द की बात है। पर थोड़े ही दिनों में उन्हीं (प्रधानमन्त्री) के बारे में प्रत्येक अमरीकी पत्र ने कटु आलोचनाएं लिखीं। सारा प्रदर्शन मिथ्या था। इतने नीचे स्तर के काम संसार में होते हैं कि उसमें न्याय अन्याय का प्रश्न ही व्यर्थ है।

जीवन प्रणालियां

आज भोगपूर्ण पेटभरू प्रणालियां ही चारों ओर चल रही हैं। डिमाक्रेसी चलाई, इसमें भी प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हो गई। व्यक्तिवाद चला, कुछ लोग श्रीमान हो गये, बाकी दरिद्र ही रहे। समाजवाद चलाया, हिटलर-मुसोलिनी पैदा हो गये, उसी से स्टालिन पैदा हो गए, जो संसार को लाल बनाना चाहते हैं, ध्वज से नहीं, मनुष्य के रक्त से!

संसार के ये सारे विचार ऐतिहासिक जीवन के योग पर आधारित हैं। आज मानव के अन्दर के पशुत्व का विस्तार किया जाता है और मानवता का गुण पीछे छोड़ दिया जाता है। इस क्रिया को पुरःगामिता और प्रगति कहते हैं। वास्तव में आज मनुष्य को पशु बनाने की प्रगतिशील प्रतिक्रिया (Progressive Animalisation of man) तेजी से चलता है।

पक्षों से दूर

हमें पक्षों से दूर ही रहना है। लोग पूछते हैं, आपकी पार्टी क्या है? हम दो चार लोग आपस में बैठ कर, चाय-पार्टी कर लेते हैं, इतना ही पार्टी है। किसी विशिष्ट वस्तु विशिष्ट समय में रख कर काम करने में पक्ष का निर्माण होता है। अंग्रेजों को देश से निकाल बाहर करने का उद्देश्य सामने रख कर कांग्रेस का संगठन हुआ। अंग्रेज चला गया, अब कांग्रेस बिखर रही है, क्योंकि उसका उद्देश्य तात्कालिक था, स्थायी नहीं। तात्कालिक प्रसंग को लक्ष्य बना कर समाज को एकत्रित करना प्रसंग हटने पर समाज को पुनः बिखेरता है। इससे समाज की शक्ति क्षीण होती है और फिर प्रसंग आने पर समाज में खड़े होने की शक्ति नहीं रहती। हमें स्थाई चिरंतन सामर्थ्य के लिए ही प्रयत्न करना चाहिये। वह प्रकट होने पर सारी समस्याएं हल होंगी, वह प्रकट न हुआ, तो कोई समस्या कभी हल न होगी।

[शेष पृष्ठ २२ पर]

'निपट थोथे प्रचार' का नाम ही सोवियत संघ है!

★ श्री बालसहाय

इस प्रकार युग में प्रचार के विभिन्न साधनों में सिनेमा का भी अपना विशेष प्रभावशाली स्थान है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि प्रचारकला में अत्यन्त दक्ष सोवियत रूस अब सिनेमा को भारत में अपने प्रचार का माध्यम बना रहा है। अभी वर्ष प्रतिपदा के दिन से नागपुर में 'सोवियत सिने उत्सव' मनाए गए जो प्रायः सप्ताह भर तक नागपुर के विभिन्न छविगृहों में सोवियत फिल्मों का प्रदर्शन करते रहे।

दिनांक ८ अप्रैल को नागपुर के श्री टाकीज में प्रातःकाल प्रायः ९॥ बजे 'Land Reclamation" (भूमि पुनरुद्धार) नामक चित्र विशेष समारोह के साथ प्रदर्शित किया गया। जिसके लिए 'सोवियत सिने उत्सव' के संयोजकों ने, मन्त्रियों, जन-नेताओं तथा नगर के प्रायः सभी सभ्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को अतिथि रूप में निमन्त्रित किया था। पर्याप्त संख्या थी दर्शकों की! ऐसे स्थलों एवं प्रसंगों पर प्रायः कभी न दीख पड़ने वाले राष्ट्रीय स्वयं-सेवक संघ के सरसंघचालक श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर अर्थात श्री गुरु जी भी दर्शकों की गैलरी में अपने कतिपय सहयोगी कार्यकर्ताओं के साथ बैठे हुए दिखाई दे रहे थे। यह भी कम उल्लेखनीय बात नहीं कि इस चित्र को देखने के एक दिन पूर्व ही श्री गुरुजी वर्ष प्रतिपदा के उत्सव के निमित्त एकत्रित प्रायः ४००० स्वयंसेवकों के समक्ष भाषण देते हुए दुनिया के प्रचारतन्त्र पर टिप्पणी करते हुए कहा था—"अभी सोवियत चित्र रूस से आया है, वह कितना प्रचारतन्त्र है, घर-भेदी ही प्राप्त करने की कला है। पहले ईसाई आते थे, प्रचार के भोंडे प्रयोग करते थे। वैसा ही पूर्वीय गुट (Eastern Bloc) का यह तन्त्र है। जो लोग राष्ट्र-जीवन भूल गए हैं, जिनका दृष्टि क्षीण है, वे अच्छी शिकार बनाते हैं।"

कथानक

"Land Reclamation" चित्र में दिखाया गया था कि सोवियत संघ में विज्ञान के सहारे जनता तथा कम्युनिस्ट पार्टी के सहयोग से सोवियत सरकार ने किस प्रकार ऊसर, पर्वतीय, रेतीला तथा अनुपयुक्त भूमि को खुदाई, जुताई, बुवाई एवं सिंचाई की विभिन्न योजनाओं को सामूहिक खेती के रूप में, भारी भरकम लौह यन्त्रों का उपयोग करते हुए, लहलहाते खेतों तथा फले हुए बगीचों में परिवर्तित कर दिया है, जो ढेरों खाद्यान्न तथा फलों की उत्पत्ति करते हैं।

ऐसे चित्र देख कर, भारत जैसे देश की बुभुक्षित, अर्धनग्न जनता की सोवियत सरकार के प्रति सहानुभूति एवं आदर होना सहज-स्वाभाविक है, क्योंकि भारत में न तो पर्याप्त खाद्यान्न ही होता है और न उसको उत्पन्न करने के लिए ऐसी (जैसी चित्र में दिखाई गयी थीं) या इन से मिलती जुलती कोई योजनाएं ही कार्यान्वित की जाती हैं। यदि किसी देश की सरकार योजनापूर्वक अपने यहां के अभावों को दूर करने के लिए प्राणपन से जुट जाती है, तो उसका वह कार्य प्रशंसनीय है। हां, जो सरकारें नहीं करतीं, वे अवश्य मूर्ख हैं।

चित्रपट देखते समय हमें यह बात कभी न भूलनी चाहिए कि आदमी से आदमी का छाया चित्र (फोटो) अधिक सुन्दर व आकर्षक दिखाई देता है। इसी प्रकार चित्रपटों में प्रदर्शित कार्यकलाप मूल से भिन्न ही होते हैं।

निपट थोथा प्रचार

बताया गया था कि सोवियत सिने उत्सव का उद्देश्य सोवियत संस्कृति से परिचित कराना है। किन्तु चित्र देखने पर प्रतीत हुआ कि उसका उद्देश्य मार्शल स्टालिन तथा सोवियत सरकार के प्रति आदर उत्पन्न कराना था क्योंकि मार्शल स्टालिन तथा सोवियत सरकार का आवश्यकता से अधिक बार यों ही बीच बीच में उल्लेख किया जाता था। देश-काल-परिस्थिति के अनुसार योजनाएं बनाना और उन्हें कार्यान्वित करना सरकार की अपनी नीतियां और कार्य होते हैं जो स्पष्टतः राजनीति की रचना में आते हैं। 'Land Reclamation' (भूमि पुनरुद्धार) चित्र सोवियत-संस्कृति का द्योतक न हो कर सोवियत-संघ की सरकार के कार्यकलापों का प्रचार मात्र है। और प्रचार भी ऐसा जिसमें वस्तु-स्थिति का ज्ञान होने के लिए यत्किंचित भी स्थान नहीं है। चित्र में खेती और सिंचाई करते हुए लोग तो दिखाए गए हैं, किन्तु उनके चेहरों पर न तो श्रम ही दिखाई देता है और न उनके हाथ पैर अथवा कपड़े ही मिट्टी या कीचड़ में सनते हैं। इससे प्रगट है कि खेतों में कार्य करते हुए लोगों का यह चित्र न होते हुए चित्र के लिए कार्य का अभिनय करते हुए लोगों का यह चित्र है जो 'निपट थोथा प्रचार' ही है।

आदर्श रूस नहीं—हालैंड है

जहां तक "Land Reclamation (भूमि के पुनरुद्धार करने) का है सोवियत सरकार ने सोवियत संघ के लिए उपयुक्त एवं आवश्यक कार्य कर दिखाया है, इसमें तो कोई सन्देह नहीं है; किन्तु इस कार्य को करके सोवियत संघ ने दुनिया के सामने कोई आदर्श उपस्थित कर दिया है ऐसा मानना उचित नहीं है सोवियत प्रचार की आंधी के प्रभाव में आकर हमें हालैंड को भुला नहीं देना चाहिए जिसने बिना किन्हीं भारी-भरकम यन्त्रों का सहारा लिये ही समुद्र के गर्भ से भूमि का Reclaim (उद्धार) करके बताया है और जहां आज उत्तम खेती और घनी आबादी बसी हुई है। निश्चय ही, जब सोवियत संघ या अन्य कोई देश Land Reclamation (भूमि पुनरुद्धार करने) की कल्पना तक नहीं कर सकते थे, तभी आज से बहुत वर्षों पूर्व, हालैंड ने इस सम्बन्ध में अपना अद्भुत अपूर्व आदर्श विश्व के समक्ष उपस्थित कर दिया था।

सिने-कला

जहां तक सिने कला का प्रश्न है, वह अत्यन्त उत्कृष्ट थी, किन्तु यह उत्कृष्टता सोवियत संघ की अपनी कोई विशेषता या खोज नहीं है। इस कला के विकास का श्रेय तो यूरोप को है जिस से प्रेरणा लेकर यदि सोवियत सिने-कला योरोपीय सिने-कला के समकक्ष पहुंच जाने के लिए हाथ पैर मार रही हो या पहुंच रही हो पहुंच गई हो तो हम उनके इस प्रयास का अभिनन्दन ही करते हैं।

सोवियत सिने-उत्सव ने सोवियत-संस्कृति को तो एक बड़ा भारी प्रश्न ही बना कर उपस्थित किया है कि वह क्या है क्योंकि चित्र में उसका दिग्दर्शन नहीं किया गया, हां इतना अवश्य है कि इस चित्र से लोगों की वही पुरानी धारणा अवश्य पुष्ट हो जाती है कि 'निपट थोथे प्रचार' का नाम ही सोवियत संघ है।

———

(पृष्ठ ४ का शेष)

ब्रिटेन का मत

ब्रिटेन चाहता है कि राष्ट्रीयकरण की अपेक्षा ईरान को मजलिस व सीनेट सरमरल योजना को स्वीकार कर ले। इस योजना के अनुसार ईरान की सम्पत्ति के लिये बड़ी मात्रा में धन प्राप्त हो जायेगा। श्री मारिसन ने कामन्स सभा में घोषणा की है कि यदि ईरान में इसी प्रकार की स्थिति रही तो ब्रिटेन अपने हितों की रक्षा करने में पीछे नहीं रहेगा। यदि ब्रिटिश नागरिकों को इसी प्रकार मारा गया तो ईरान दक्षिणी ईरान में अपनी सेनाएं भेज देगा। प्रधान मन्त्री हुसैन अला का कहना है कि इस दिशा में कदम उठाये जाने पर ईरान की स्थिति और भी गम्भीर हो जायगी क्योंकि रूस भी उधर से अपनी सेनायें वहां भेज देगा। अबादान की घटना के लिए वह ब्रिटिश आंग्ल-ईरानी कम्पनी को ही जिम्मेदार मानती है। उसका आरोप है कि कम्पनी ने मजदूरों के हितों का पूर्ण तरह शोषण किया है।

आज स्थिति स्पष्ट है। यदि ईरान में ब्रिटेन ने कोई अवांछनीय कदम उठाया तो अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति और भी विषम हो जायगी। इसका परिणाम क्या होगा यह तो भविष्य के गर्भ में निहित है तब भी घटनाओं को देखते हुए कहा जा सकता है कि ईरान बर्बादी से न बच सकेगा।

[पृष्ठ २ का शेष]

का काफी जमीन और धन रुका हुआ है। इन संस्थाओं को आमदनी भी काफी होती है। अगर कानून बनाया जाय कि मन्दिर, मसजिद, गिरजाघर सायनेगाग और कब्रस्तान सब पर एक टैक्स लगाया जाय, पक्षपातरहित सब पर टैक्स लगाया जाय और उसकी आमदनी से देश में बुनियादी तालीम जारी की जाय तो काफी धन मिल सकेगा। टैक्स लगाने के लिये तीन चार बातें ध्यान में रखना होंगा। (१) मंदिर, मसजिद, पीर या साधु की कबर आदि स्थान कितनी जमीन रोकते हैं? (२) वे कितने पुराने हैं? (३) उनकी आमदनी कितनी है? (४) और कितने लोग उस स्थान की रक्षा को हामी हैं? इन बातों का हिसाब करके कमीबेश टैक्स लगाया जाय। जिस स्थान का कोई हामी नहीं हो उसकी रक्षा का ख्याल छोड़ देना चाहिये और उसे कुदरत के हाथ सौंप देना चाहिये।

ऐसा कानून करने से सरकार की आमदनी अवश्य बढ़ेगी। जनता को अच्छी शिक्षा, आसानी से मिलने लगेगी और पवित्र स्थान के नाम जो जमीन की अव्यवस्था है, उसमें कुछ न कुछ व्यवस्था दाखिल होगी।

अनीति की आमदनी से राष्ट्रव्यापी शिक्षा का प्रबन्ध करने की अपेक्षा धर्म की आमदनी से उसे सम्पन्न करना सब तरह से श्रेयस्कर है।

हमने कहा तो सही कि मद्यपान-निषेध की नीति हमारी जाति के ऐतिहासिक अनुभव के फलस्वरूप बनी हुई है। मद्यपान निषेध हमारी संयम प्रधान संस्कृति का प्राण है। लेकिन हमें भूलना नहीं चाहिए कि इस प्राण की सच्ची रक्षा सरकार मारफत नहीं होने की। इसके लिए अखण्ड जन जागृति की आवश्यकता है। चरित्र सम्पन्न लोक-हितैषी सज्जन जब अखण्ड आन्दोलन चलायेंगे, उपदेश और आचरण के द्वारा संयम और चारित्र्य शुद्धि का आदर्श जब हम अखण्ड प्रज्वलित रखेंगे, तभी मद्यपान-निषेध की सफलता हमें मिलेगी। ऐसे राष्ट्रीय प्रयत्न में जो कुछ भी बाधा बाधाएं आती हैं, उनके निवारण का काम सरकार का है। किन्तु यह बिल्कुल नामुमकिन है कि लोग सोते रहें, शिथिल रहें और सरकार ही कानून पुलिस जेल और जुरमाना के डण्डे से हमारी संस्कृति का रक्षा करती जाय।

अमेरिका में हूवर के जमाने में वहां की सरकार ने मद्यपान निषेध की नीति चला कर देखी, सरकार ने अपनी सारी शक्ति लगाई, अधिकांश लोगों को यह नीति पसन्द नहीं आई, लोग खुले-आम कानून को भंग करने लगे और कानून का तोड़ना वह दुरी की बात गिनी जाने लगी। नतीजा यह हुआ कि सरकार को अपनी नीति छोड़ देनी पड़ी और सारा राष्ट्र फिर से पानग्रस्त हो गया।

अगर सरकार के कर्मचारी और नेता मद्यपान निषेध के समर्थक न रह तो अकेला कानून कुछ नहीं कर सकेगा। कड़े कड़े कानून किए, शराबी लोगों को पकड़ने के लिए पुलिसों की संख्या बढ़ायी, नये नये मुकद्दमे चलाने के लिए नए नए कोर्ट स्थापन किये और जगह-जगह जेल भर दिये तो उस हम मद्यपान निषेध की प्रवृत्ति नहीं कहेंगे। मद्यपान निषेध के बहाने लोगों को परेशान करने का और उसके जरिये लाभ उठाने का वह एक तरीका साबित होगा।

सरकार को चाहिए कि वह समाज का नैतिक नेतृत्व धारण करे और लोगों में जीवन शुद्धि का उत्साह पैदा करे।

रजि० नं० ई० पी० ८६१

पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा, मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिए अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली में छपवा कर प्रकाशित किया।
सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

रोग से डरने की आवश्यकता नहीं !

* प्रो रामचरण महेन्द्र एम ए

प्रकृति हम बीमार नहीं पड़ने देना चाहती। साधारणतः जो लोग प्रकृति साहचार्य बनाये रहते हैं और उसके मामूली नियमों का भी पालन करते हैं, वे बीमार नहीं पड़ते। बीमार पड़ने पर भी प्रकृति हमारी गलतियां सुधारने की चेष्टा करती है।

रोग प्रकृति की वह क्रिया है, जिससे शरीर की सफाई होती है। रोग हमारा मित्र हो कर आता है। वह यह बताता है कि हमने अपने शरीर के साथ बहुत अन्याय किया है, अनेक कीटाणुओं को स्थान दे कर विष एकत्रित कर लिया है। रोग उस आन्तरिक मल का प्रतीक या बाह्य प्रदर्शन मात्र है। यह प्रकृति का संकेत मात्र है, जो हमें बताता है कि हमें अब अपनी गलतियों में सावधान हो जाना चाहिए। शरीर में स्थित गंदगी विष विजातीय तत्व, या अप्राकृतिक जीवन से सावधान हो जाना चाहिए। रोग शरीर शोधन की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है।

साधारण पढ़े लिखे या मूढ़ व्यक्ति रोगों से बुरी तरह भयभीत हो जाते हैं। वे उसके कारणों को समझने की चेष्टा नहीं करते। प्रकृति यदि अपनी ओर से बीमारियों को ठीक करने की व्यवस्था भी करती है, तब भी वे उसके कार्य में रोक लगा देते हैं। देखा है कि अत्यधिक दवाई और इन्जेक्शन इत्यादि का प्रयोग हानिकारक सिद्ध हुआ है।

रोगों का कारण

स्मरण रखिये रोग बिना कारण के कभी उत्पन्न नहीं होते। शारीरिक या मानसिक विकार उत्पन्न होते ही सर्वप्रथम आप यह मालूम कीजिये कि शरीर में किन किन कारणों से रोग के कीटाणु उत्पन्न हुए ? प्रकृति के किस नियम की आपने अवहेलना की है ? रोग का वास्तविक कारण समझ लेना चिकित्सा की आधार शिला है।

'रोग प्रतिकार के रूप में प्रकट होता है और यह पहले विषम अवस्था का अन्त कर देता है। रोग मनुष्य के शरीर में इसलिए होता है कि उसके लिए रोग की आवश्यकता है। रोग स्वास्थ्य लाभ करने का एक उपाय है। रोग के द्वारा जब शारीरिक विकार बाहर निकल जाते हैं, तो मनुष्य स्वस्थ हो जाता है। बाहर हम जिस रोग को देखते हैं वह रोग का लक्षणमात्र है। मान लीजिए, किसी व्यक्ति को जुकाम हो गया, अथवा फोड़ा निकल आया तो हम इसी को रोग मान लेते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा की दृष्टि से यह रोग नहीं है वरन् रोग के लक्षणमात्र हैं। रोग से शरीर की विकृत अवस्था का पता चलता है।'

रोग हमारा मित्र

रोग के प्रति हमें अपने दृष्टिकोण को बदलना होगा। हम रोग को शत्रु नहीं, मित्र मानें। अर्थात् निराशावादी बनने के स्थान पर आशावादी बनें। हमें यह विश्वास रखना चाहिये कि रोग हमें पूर्ण स्वस्थ कर देगा, संचित विकार निकाल देगा, शरीर के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। यह मानसिक परिवर्तन प्राकृतिक चिकित्सा का सहकारी है। जो व्यक्ति अपने रोगों से मुक्त होने के लिए जितना ही आशावादी बनेगा, सुखद कल्पनाओं और मधुर आशावाद विचारों से अपना मन भरा रहेगा, उसे रोग एक मित्र प्रतीत होगा। शरीर से हट जाने पर भी रोग सूक्ष्म रूप से अन्तःकरण में विद्यमान रहता है।

डा० क० लक्ष्मण के शब्दों में, 'आत्मा के अन्तर्भूत आनन्द को भूल जाना ही रोग है, जिसके कारण मन में इच्छाओं को उदय होता है।' आत्म-विस्मृति ही रोग है। आजकल के बहुत से मानसिक एवं शारीरिक रोगों का कारण एक यह भी है कि मनुष्य सत् तत्व की रक्षा न कर असत् एवं विजातीय तत्वों का संचय होने देता। डा० फ्रायड के अनुसार अनेक स्नायविक एवं शारीरिक रोग मनुष्य के चेतन और अचेतन मन की रहस्यमयी गुफाओं में होते हैं। पहिले मन रोगी होता है, रोग चेतना पर आता है, वासनाओं और विचारों में प्रभाव दिखाता है और अन्त में स्थूल शरीर में नाना रूपों में प्रकट होता है। एक रोगी की सर्वप्रथम मानसिक अवस्था विकृत हो जाती है। दूषित अन्तःकरण, विकृत मन और अशुभ भावनाएं रोगों का कारण है।

प्रकृति वही है, जो आदिकाल से थी। उसके सम्पूर्ण नियम अटल हैं, उन्हें तोड़ने में क्या राजा क्या रंक—दोनों ही को समान रूप से सजा मिलती है। वे अटूट अपरिवर्तनीय और चिर सनातन हैं। प्रकृति विरुद्ध जाकर हम नए रोगों की उत्पत्ति कर रहे हैं। प्रकृति की गोद में विचरण करने से आदिम निवासी हमारी सभ्यता के अनेक रोगों से अपरिचित थे।

शरीर पर अत्याचार

यदि हम अपने आहार विहार में सजग रहें, तो कोई कारण नहीं कि हम अल्पकाल में ही मृत्यु के ग्रास बनें। किन्तु हम शरीर जैसे सूक्ष्म मशीन को

[शेष पृष्ठ २१ पर]

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार १७ वैसाख सम्वत् २००८ [अङ्क १

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति और हम

विश्व जिस अन्तर्राष्ट्रीय संकट की ओर आज तेजी से बढ़ रहा है, उसकी गम्भीरता को शायद हम अभी तक नहीं समझ रहे। अमेरिका ने जनरल मैकार्थर को कोरिया युद्ध से वापस बुला लिया है, इतने मात्र से चीन के भीषण युद्ध को टाला नहीं जा सकता, यह प्रतिदिन स्पष्ट होता जा रहा है। चीन और अमेरिका के मतभेद केवल कोरिया तक सीमित नहीं हैं, वे उससे भी गहरे और व्यापक हैं। चीन को जब तक संयुक्तराष्ट्र संघ ने आक्रान्ता घोषित किया हुआ है, वह किसी भी प्रकार के समझौते की भावना को दिखाने के लिए तत्पर नहीं होगा और आज की स्थिति देखते हुए तो यह भी संदेह है कि वह इस पर भी मान जायगा। अमेरिकन सरकार के प्रति चीन की कम्यूनिस्ट सरकार का क्षोभ स्वाभाविक है। अमेरिका आज तक चांगकाई शेक को संरक्षण दे रहा है, फारमोसा पर चीनी अधिकार में वही बाधक है। रूस जैसे शक्तिशाली राष्ट्र की सहायता के आश्वासन तथा अमेरिका द्वारा पोषित च्यांग सरकार के पराजय से उसका आत्मविश्वास बहुत बढ़ गया है। इसलिए जब तक विजय ही न हो जाय, चीन कोरिया से अपनी सेनाएं वापस बुलाने को तैयार न होगा और इस तरह पूर्व में युद्ध स्थिति के शीघ्र सुलझने की सम्भावना नहीं है। दक्षिण-पूर्वी एशिया में भी हम शान्ति की आशा नहीं कर सकते। यूरोप की स्थिति भी किसी तरह आशाजनक नहीं है। पेरिस में चार बड़े राष्ट्रों के उपविदेशमन्त्रियों की कान्फ्रेंस दो महीने से हो रही है, किन्तु विचारणीय कार्यक्रम का निर्धारण करने में भी उन्हें रत्तीभर सफलता प्राप्त नहीं हुई। इस सबके अध्ययन से हम इस परिणाम पर आसानी से पहुंच सकते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति बहुत गम्भीर है और विश्वव्यापी युद्ध को रोकने के बहुत प्रयत्न करने पर भी उसका हो जाना ही अधिक संभव है। कुछ देरी अवश्य हो सकती है।

अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति की इस गम्भीरता को ब्रिटेन ने खूब समझ लिया है और इसलिए उसने अपनी आर्थिक नीति में पर्याप्त परिवर्तन कर लिया है। युद्ध के बाद ब्रिटेन को जिस आर्थिक संकट में से गुजरना पड़ा, उसे अभी भलीभांति दूर भी नहीं किया जा सका था कि आज फिर समस्त ब्रिटेन दृढ़ निश्चय के साथ भावी संकट का मुकाबला करने के लिए तैयार होने लगा है। जनता के अपने आराम और भोग की वस्तुओं पर फिर अंकुश लगने लगा है। भोजन, वस्त्र, तमाखू, मनोरंजन तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं में यथोचित कमी की जाने लगी है। घोर तपस्या और कष्ट सहन के बाद जिन वस्तुओं में पिछले दो वर्षों से ही कुछ छूट दी गई थी, अब वह सुविधायें वापस ली जाने लगी हैं और समस्त देश भावी संकट का मुकाबला करने के लिए सन्नद्ध हो गया है। आज इंगलैंड के लिए निर्यात व्यापार बढ़ाना अनिवार्य है, इसलिए स्वयं साइकिलों, मोटरों तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं के उपभोग में संकोच करके भी निर्यात द्वारा वह राष्ट्रीय आय बढ़ाने के लिए कटिबद्ध हो गया है। बहुत सम्भवतः अपनी तैयारी के लिए ही वह अमेरिका को भी कोई ऐसा कदम न उठाने के लिए विवश कर रहा है, जिससे युद्ध एकदम भड़क जावे।

किन्तु इसके विपरीत हम भारतवासी हैं, जो अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति की गंभीरता से निश्चिन्त होकर अपने व्यक्ति, वर्ग या दल से ऊंचा उठ कर राष्ट्रीय दृष्टि से किसी प्रश्न पर विचार कर ही नहीं सकते। हमारी योजनाएं केवल कागज पर लिखी रह जाती हैं, उनके लिए देश में कहीं भी उत्साह नहीं है। विश्वव्यापी युद्ध देश को कितने संकट में डाल सकता है, इस ओर हम कभी सोचने का कष्ट ही नहीं करते, क्योंकि हम अपने देश का समस्त उत्तरदायित्व सरकार पर डाल कर और कष्ट होने पर उसे गाली देकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। आज देश की सबसे बड़ी आवश्यकता राष्ट्रीयता की उत्कट भावना है, जो तप, त्याग और कष्ट सहन के लिए भी समस्त राष्ट्र को कटिबद्ध कर देगी। हमें यह नहीं भूलना चाहिये, कि गंभीर अन्तर्राष्ट्रीय संकट बहुत अधिक सन्निकट है और उसका सामना समस्त राष्ट्र के परस्पर सहयोग और कष्ट सहन से ही किया जा सकता है।

★

स्वागत

करीब दो वर्ष के निरन्तर संघर्ष के बाद श्री जयनारायण व्यास राजस्थान का शासनसूत्र अपने हाथ में ले रहे हैं। इस अवसर पर हम उनका स्वागत करते हैं। वे जनता के प्रतिनिधि रहे हैं, उसके लिए सदा वे संघर्ष करते रहे हैं। विशेष रूप से पिछले दो वर्षों में तो वे राजस्थानी जनता की समस्याओं से, जो शास्त्री शासन के काल में उत्पन्न हुई हैं, बहुत अधिक परिचित हो चुके हैं। इसलिए यह आशा करना स्वाभाविक ही होगा कि वे यथासम्भव उन समस्याओं का सामना करने के लिये प्रयत्न करेंगे। हम आज की विकट परिस्थितियों से अपरिचित नहीं हैं, इसलिये नये शासन के आते ही सब कुछ बदल जायगा, ऐसी आशा जनता को भी न करनी चाहिए। जनतन्त्र में दलगत प्रतिस्पर्धा चलती है, किन्तु फिर भी हम राजस्थान के दोनों दलों से अनुरोध करना चाहते हैं कि यह असाधारण समय प्रतिस्पर्धा व विरोध का नहीं है न तो पदारूढ़ दल को अपनी स्थिति का उपयोग विरोधी दल को नीचा दिखाने के लिए करना चाहिये। और न दूसरे दल को ही आज की विकट परिस्थितियों का लाभ उठा कर शासन को अप्रिय करने के प्रयत्न का बदला लेना चाहिए। आज जनता कष्ट में है, उसका असन्तोष अतिरंजित रूप से बढ़ाने की नहीं, उसके कष्ट दूर करने के लिए रचनात्मक कार्य में सहयोग देने की जरूरत है। जो ऐसा करेगा, वह नये चुनावों में अपने लिए स्थान बना लेगा।

साढ़े सोलह करोड़ की कृषि मशीनें

युद्ध से पहले प्रतिवर्ष औसतन एक करोड़ रु० मूल्य की खेती-सम्बन्धी मशीनें विदेशों से आती थीं, किन्तु १९४९-५० में इनका मूल्य बढ़ कर साढ़े सोलह करोड़ रु० हो गया है। इसमें अधिकांश आयात ट्रैक्टरों (२० प्रतिशत) और डीजल इंजनों (३१ प्रतिशत) का था। सरकारी अनुमान के अनुसार अगले कुछ वर्षों तक देश को प्रति वर्ष १०-१२ हजार ट्रैक्टरों की और सिंचाई के काम के लिए लगभग २० हजार डीजल इंजनों की आवश्यकता रहेगी। लेकिन आज इतनी भारी रकम विदेशों में भेजना भी तो वांछनीय नहीं है। हम आज ट्रैक्टरों के फेर में पड़ गये हैं। यह न केवल अभारतीय हैं, किन्तु दूर दृष्टि से वह लाभकर भी नहीं हैं। ट्रैक्टर हमें सदा के लिए विदेशों के परवश कर देगा और ग्रामों के प्रमुख उद्योग कृषि को भी कलों का परवश बना देगा। यह जो विदेशी अर्थ शास्त्र है, जो भारत के लिए, जहां जनसंख्या को रोजी देने का प्रश्न कहीं अधिक व्यापक है, गम्भीर समस्याएं पैदा कर देगा। क्या इसी तरह कांग्रेसी सरकार गांधीवाद का अनुसरण करेगी?

छत्रपति शिवाजी

स्वातन्त्र्य की रक्षा और स्वराज्य की प्राप्ति के लिए भारत के जिन महान् नेताओं ने इतिहास में असाधारण स्थान प्राप्त किया है, उनमें छत्रपति श्री शिवाजी का स्थान महत्वपूर्ण है। अत्यन्त विकट परिस्थितियों में भी उन्होंने उस समय संसार में सबसे अधिक शक्तिशाली राज्य का मुकाबला कर स्वराज्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त की थी। इतिहास में इसके बहुत कम उदाहरण मिलते हैं। उनके शासन का मुख्य उद्देश्य प्रजापालन था। अत्याचार से जनता की मुक्ति का परम उद्देश्य लिए उन्होंने जो परम्पराएं कायम की थीं, उनका पालन यदि आगे भी होता रहता और महाराष्ट्र नेता राष्ट्रीयता की उस भावना को जीवित रखते, तो भारतवर्ष का इतिहास ही दूसरा होता। आज हम फिर स्वतन्त्र हैं, किन्तु हमें यह विस्मरण नहीं करना चाहिए कि यदि शिवाजी के जनहित के उद्देश्य को हम भूल गये, तो देश फिर संकटों में पड़ सकता है। एक गणना के अनुसार इस सप्ताह श्री शिवाजी की जयन्ती है। इस अवसर पर हमें उनके पावन चरित्र का संस्मरण करके उनकी शिक्षाओं से लाभ उठाना चाहिये।

गम्भीर समस्या

कुछ दिनों से देश के प्रायः सभी भागों से विद्यार्थियों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता की प्रवृत्ति के समाचार आ रहे हैं। अलीगढ़ के कुछ उद्दण्ड विद्यार्थियों द्वारा परीक्षा भवन के निरीक्षक की हत्या तो इस प्रवृत्ति की चरम सीमा का एक उदाहरण है। वहां के कालेज के अधिकारी विद्यार्थियों में अनुशासन की भावना उत्पन्न करने में असमर्थ हैं, इसलिए वह कालेज ही उत्तर प्रदेश की सरकार को सौंपा जा रहा है। ऐसे भीषण उदाहरण अन्यत्र नहीं पाये जाते हों, किन्तु इसमें संदेह नहीं कि आज का विद्यार्थी उच्छृंखल हो रहा है। जिस आयु में उसे संयम, विनय, अनुशासन और सुशीलता आदि गुणों का अभ्यास करना चाहिये, उसी जीवन में वह अविनय, असंयम, अनुशासनहीनता आदि दुर्गुणों को सीख रहा है। आज का विद्यार्थी कल का नागरिक है। यदि विद्यार्थी जीवन में देश के भावी नागरिकों ने उच्छृंखल अमर्यादित रहना सीख लिया, तो राष्ट्र का भविष्य, जिसका आधार ही संयम और अनुशासन है, अन्धकारमय हो जायगा, इसमें सन्देह नहीं हो सकता।

परन्तु मुख्य प्रश्न तो यह है कि आज विद्यार्थी क्यों उद्दण्ड और अनुशासन हीन हो रहा है ? वे कौन सी परिस्थितियाँ हैं, वह कौन सा वातावरण है, जो देश के भावी नागरिकों को उल्टे रास्ते डाल रहा है ? इस प्रश्न पर विचारकों व शिक्षा शास्त्रियों को अत्यन्त गम्भीरता से विचार करना चाहिए। उत्तर प्रदेश में विश्व विद्यालयों के उपकुलपतियों ने इस प्रश्न पर विचार भी किया है। यद्यपि हमें अभी तक मालूम नहीं हो सका कि वे किस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं। हमें संदेह है कि आज के हमारे समस्त समाज में अनैतिकता जिस तीव्रता से बढ़ रही है, उसका प्रभाव किशोर बालकों पर पड़ता है। जो भी हो, यह समस्या अत्यन्त गम्भीर है, जिसकी उपेक्षा खतरनाक होगी।

असयोग

'काश्मीरके भारतमें मिलने का निश्चय भारत के लिए महत्वपूर्ण विषय है और अब काश्मीर का प्रश्न भारत के लिए मौलिक बन गया है। काश्मीर का भारत में सम्मिलन दो राष्ट्रों के सिद्धान्त का खण्डन है। यह प्रश्न संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रस्तुत प्रस्ताव द्वारा पंचायत किए जाने का प्रश्न नहीं है। हमारी स्थिति यह है कि जब तक हमारी निश्चय पर विचार नहीं किया जाता, हम पंचायत के प्रस्ताव जैसी बातों पर विचार ही नहीं कर सकते।" इन शब्दों में भारत के उपविदेशमन्त्री श्री केसकर ने जो वक्तव्य दिया है, उसका प्रायः सभी भारतीय स्वागत करेंगे। विश्व शान्ति के समर्थक होते हुए भी अन्याय और [illegible] सिद्धान्त को स्वीकार [illegible] [illegible] है। [illegible] भारत [illegible] काश्मीर-सम्बन्धी राष्ट्रीय [illegible] तब तक स्थिर रहनी चाहिए, जब तक कि वह अपनी नीति न बदले। सुरक्षा परिषद् मध्यस्थ के लिए कोई भी नाम प्रस्तुत करे, उसमें भारत को कोई रुचि नहीं होनी चाहिए और न उसे किसी तरह का सहयोग ही देना चाहिए।

विद्यार्थी-प्रतियोगिता

संख्या ३

केवल ५ प्रश्नों का उत्तर दे कर ७५०) का पुरस्कार प्राप्त कीजिये!

कोई भी युवक या युवती भाग ले सकते हैं!

निम्नलिखित प्रश्नों के खाली स्थानों की पूर्ति कीजियेः—

१. हम सिनेमा के पैसे बचा कर विद्यार्थी प्रतियोगिता में भाग लेते हैं, क्यों कि इससे ————

(क) मस्तिष्क के सोचने की शक्ति बढ़ती है।

(ख) हमारे साधारण ज्ञान में वृद्धि होती है।

(ग) हमारा मनोरंजन होता है।

(घ) हमें आर्थिक लाभ की सम्भावना है।

(उपरोक्त में से एक उत्तर चुनिये)

२. [illegible] काम करने वाले ———— हों तो स्वामी को लाभ नहीं होता। (मंदे, आलसी, स्वार्थी, मूर्ख—में से एक)

३. देखा जाता है कि परीक्षाओं में अधिकतर लड़कियां प्रथम आती हैं। क्यों? ————

(क) वे सुन्दरता से लिखती हैं। (ख) उनके पास पढ़ने के लिये समय ज्यादा होता है। (ग) परीक्षक उन्हें ज्यादा नम्बर दे देते हैं। (घ) लड़के कुरूप होते हैं। (इन में से एक)

४. जिस व्यक्ति ने ———— का आविष्कार किया उसका उपकार हमें भूलना नहीं चाहिये।

५. उड़ीसा के गवर्नर ———— हैं।

(या) भारतवर्ष का सबसे बड़ा शहर ———— है।

पुरस्कार विवरण—

१. इस प्रतियोगिता में दो श्रेणियां रखी गई हैं। प्रथम श्रेणी का ५००) तथा द्वितीय का २००) पुरस्कार है। केवल प्रथम श्रेणी वाले सदस्य को एक अशुद्धि पर भी ५०) का अतिरिक्त पुरस्कार मिलेगा।

शुल्कः—प्रथम श्रेणी का सदस्य बनने के लिए १) तथा द्वितीय श्रेणी का ॥) उत्तर के साथ, मीनआर्डर द्वारा भेजना होगा। उत्तर सादे कागज पर लिख कर भेजें। प्रत्येक उत्तर के नीचे अपना पूरा पता, श्रेणी आदि भी लिखें। मनीआर्डर की रसीद भी उत्तर वाले कागज [illegible] ही चिपका दी जानी चाहिये, अन्यथा उत्तर स्वीकार नहीं किये जायेंगे। मनीआर्डर कूपन पर भी अपना पूरा पता व [illegible] का विवरण दें।

२. उपयुक्त शुल्क दे कर कोई भी व्यक्ति प्रतियोगिता का सदस्य बन सकता है। जो व्यक्ति जिस श्रेणी का सदस्य बनेगा वह उसी श्रेणी के पुरस्कार का भागी होगा। विद्यार्थी भवन के कार्यकर्ता इसमें भाग नहीं ले सकते। किसी का भी सही उत्तर न आने पर पुरस्कार कम-से-कम अशुद्धियों वाले को दिया जायगा। एक से अधिक सही उत्तर आने पर पुरस्कार बराबर २ बांट दिया जायगा। अवशेष राशि का उपयोग एक मासिक पत्रिका व उच्च कोटि का साहित्य प्रकाशित करने में किया जायगा। वह साहित्य प्रतियोगिता के सदस्यों को रियायती मूल्य पर दिया जायगा।

३. 'विद्यार्थी-भवन' में रखे हुए सीलबन्द लिफाफे के उत्तर से जिनका उत्तर मिल जायगा, उन्हें पुरस्कार दिया जायगा। वह उत्तर आम जनता की उपस्थिति में ३० मई को सायंकाल ६ बजे खोला जायगा।

४. सदस्यों को चाहिये कि वे अपने उत्तर शीघ्र ही "विद्यार्थी-भवन रानी बाजार, बीकानेर" के पते से भेज दें। उत्तर २८ मई तक पहुँच जाने चाहियें। सही उत्तर व पुरस्कार विजेताओं की सूची इसी पत्र में प्रकाशित होंगे।

५. प्रत्येक सदस्य को सम्पादक का निर्णय व उपरोक्त सारे नियम मान्य होंगे।

विशेष सूचनाः—ऐसी आशा की जाती है कि 'विद्यार्थी-भवन' मासिक का प्रथम अङ्क जून तक प्रकाशित हो जायगा। अतः उस अंक के लिये पुराने व नये लेखक सुन्दर २ कहानियां, लेख, चुटकुले, कविता व अन्य मनोरंजक सामग्री भेजें। प्रतियोगिता का भी पूरा विवरण, तथा सब तक के साथ (एक अशुद्धि वाले भी) विजेताओं के परिचय, चित्र, सम्मतियां व उद्गार आदि भी प्रकाशित होंगे। सभी सदस्य व विजेता उपर्युक्त सामग्री भेजें।

नोटः—पुरस्कार विजेताओं को सूचना भेजी जा चुकी है। पुरस्कार की रकम मनिआर्डर शुल्क काट कर १५ दिन के भीतर भेज दी जावेगी। स्थानीय विजेता स्वयं उपस्थित हो कर पुरस्कार लेने की कृपा करें।

पिछली प्रतियोगिता का परिणाम

ता० १८-४-५१ को सायंकाल ६ बजे विद्यार्थी भवन में प्रतियोगिता संख्या २ का उत्तर आम जनता की उपस्थिति में विद्यार्थियों द्वारा खोला गया। सही उत्तर इस प्रकार है—(१) खेलते (२) सूरजप्रकाश! सदैव साबुन से नहाया करो। (३) वजन, बदला, (४) आजकल फैशन है। (५) सिंह।

* पुरस्कार विजेता *

प्रथम श्रेणी, ५००) नकद

१. जगदीशप्रसाद C/o किसनलाल राधेश्याम डिगवोई

द्वितीय श्रेणी, २००) नकद

१. कुंवर सुमनसिंह, चौपासनी हाई स्कूल जोधपुर

तृतीय श्रेणी, १००) नकद

१. श्री रामप्रताप, पञ्चहुवार, डूंगर कालेज बीकानेर,

एक अशुद्धि, प्रथम श्रेणी १००)

९ विजेता—प्रत्येक को ११-)॥

द्वितीय श्रेणी ६०)

१२ विजेता—प्रत्येक को ५)

तृतीय श्रेणी, ४०)

१६ विजेता—प्रत्येक को २॥)

(स्थानाभाव से समस्त विजेताओं का विवरण न दिया जा सका—क्षमा करें)

कृपया अपने मित्रों को भी प्रतियोगिता के सम्बन्ध में बताना न भूलें—

विद्यार्थी-भवन, रानी बाजार, बीकानेर

भारतीय संस्कृति का स्वरूप

★ श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

लेखक

[१]

आजकल 'भारतीय संस्कृति' की चर्चा देश भर में सुनाई दे रही है। परंतु संस्कृति क्या वस्तु है? और भारतीय संस्कृति किस वस्तु का नाम है, इस विषय में देश के प्रमुख नेता और विचारक भी सहमत नहीं है। मार्च मास में दिल्ली के लाल किले में भारतीय संस्कृति-संगम का जो अधिवेशन हुआ था, उसमें देश के अनेक प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया था। राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने अपने उद्घाटन भाषण में भारतीय संस्कृति की जो व्याख्या की थी, उसमें आध्यात्मिक तत्वों को प्रधान रखा था। उनकी बात को स्वीकार करें, तो मानना पड़ेगा कि महात्मा गांधी ने जिन बातों पर बल दिया है; वही भारतीय संस्कृति के मूल तत्व हैं। स्वागताध्यक्ष डा० श्रीप्रकाश जी ने प्रतिदिन के रहन-सहन के नियमों को संस्कृति का अंग बतलाया। उनके भाषण को सुन कर मन पर यह प्रभाव पड़ता था कि शिष्टाचार और स्वास्थ्य सम्बन्धी नियम ही संस्कृति के बाधक हैं। उड़ीसा के गवर्नर श्री [illegible] की राय थी कि 'विनय' या 'नम्रता' ही संस्कृति है और हमारे प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू जी तो यही निश्चय नहीं कर सके कि संस्कृति नाम की कोई वस्तु है भी या नहीं और यदि है भी तो क्या है। यह तो उन्हें निश्चय ही था कि भारतीय संस्कृति अलग कोई चीज नहीं है।

जहां नेताओं में इतना मतभेद हो, वह बेचारे अनुयायी क्या करें? आश्चर्य और दुःख की बात तो यह है कि इन राजनीतिक नेताओं ने विद्वान लोगों को भी अपने साथ बहा लिया। वे लोग भी संस्कृति की विस्तृत और पूर्ण व्याख्या को छोड़ कर अपनी अपनी विश्वास-सीमाओं के घेरे में संस्कृति को ढूंढने लगे। किसी ने सूर्य नमस्कार को भारतीय संस्कृति का मुख्यरूप बतलाया तो किसी ने भारतीय संस्कृति को जीवनचर्या तक परिमित कर दिया। इस प्रकार जो सम्मेलन संस्कृति के सामान्य और भारतीय संस्कृति के विशेष विवेचन के लिए एकत्र हुआ था, वह सर्व-मत-सम्मेलन के रूप में परिणत हो गया, जिसका उद्देश्य यह प्रतीत होता था कि प्रत्येक वक्ता भारतीय संस्कृति के नाम पर अपने-अपने प्यारे सिद्धांत की उच्चता का बखान करे। संगम में एकत्र हुए महानुभाव उन प्रज्ञाचक्षुओं के समान प्रतीत होते थे, जो हाथी के भिन्न-भिन्न अंगों को छू कर हाथी के रूप के सम्बन्ध में झगड़ा करने लगे थे। कोई उसे स्तंभाकार बतलाता था तो कोई उसे छाज के समान कहता था। यही दशा संगम के व्याख्याकारों की भी है। सब अपनी अपनी भावना के अनुसार संस्कृति की व्याख्या कर रहे थे।

[२]

वस्तुतः संस्कृति का रूप बहुत विशाल है। संस्कृति सम्पूर्ण विविध भावनाओं का समूह है, जिसके अन्तर्गत ज्ञान, विश्वास, कला, सदाचार और मनुष्य के वह स्वभाव, रिवाज और गुण-अवगुण, जो उसने समाज के सदस्य की हैसियत से प्राप्त किये हैं, आ जाते हैं।

संस्कृति और सभ्यता में यह भेद है कि जहां संस्कृति एक आन्तरिक वस्तु है, वहां सभ्यता उसका बाहिर दिखाई देने वाला ही रूप है।

यों संस्कृति के कई अधिकार क्षेत्र हैं। कहा जाता है कि संस्कृति का एक संसारव्यापी रूप है। अनेक युगों के जीवन में सारे मनुष्य समाज ने समूहरूप से जो भावनाएं या जो आदर्श संगृहीत की हैं, उनके समुच्चय को विश्व की संस्कृति कह सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी भिन्न संस्कृति भी होती है, जो उसके अपने संस्कारों और परिस्थितियों का परिणाम होता है। इन दोनों के बीच में, संस्कृति का एक दृढ़ अधिकार-क्षेत्र है, जो राष्ट्रों तक परिमित है। प्रत्येक राष्ट्र अपनी एक विशेष संस्कृति रखता है, जो उसके अतीत इतिहास और वर्तमान परिस्थितियों का परिणाम है। किसी राष्ट्र की संस्कृति को आप पसन्द करें या न करें, परन्तु उससे इन्कार नहीं कर सकते। सम्भवतः आप को अपने देश की संस्कृति की अपेक्षा किसी दूसरे देश की संस्कृति पसन्द हो। आपको वैसी सम्मति रखने का अधिकार है, परन्तु आप इस सत्य से इन्कार नहीं कर सकते कि आपके राष्ट्र की भी एक अपनी संस्कृति है और दूसरे देश की भी। विशेष बात इतनी है कि

★ श्री [illegible] गुप्त 'साहित्यरत्न'

* संस्कृति क्या है?
* संस्कृति और सभ्यता में अन्तर

प्रधान काव्य का जन्म हुआ। द्विवेदी युग ने इन सब कविताओं की छायामात्र देखी तथा इन्हें उपहास का विषय बना लिया। द्विवेदी युग के इस उपहास को सहन कर छायारूपी कविता छायावाद के नाम से प्रकाश में आई।

जिस भांति साहित्यकारों ने कविता के भिन्न भिन्न लक्षण किये हैं उसी भांति छायावाद की भी अब तक अनेक परिभाषाएं हो चुकी हैं जो असमत तथा आक्षेपपूर्ण प्रतीत होती हैं।

१. जो समझ में न आवे उसे छायावाद कहते हैं।

२. रहस्यवाद का ही दूसरा नाम छायावाद है।

३. लाक्षणिक प्रयोग, अप्रस्तुत विधान और अमूर्त उपमानों को ले कर चलने वाली एक शैली।

४. प्रकृति में मानवीय भावनाओं का आरोप।

ये सारी परिभाषाएं अपने में अपूर्ण हैं।

कारण १ समझ व असमझ किसी भी वस्तु के मापदण्ड की कसौटी नहीं। जो एक वस्तु दार्शनिक के लिए सरल हो सकती है, वही वस्तु वैज्ञानिक के लिए

२. यदि रहस्यवाद का ही नाम छायावाद है तो फिर एक ही बात की दो भिन्न संज्ञाएं क्यों रखी गईं? दूसरे, यदि ठीक भी मान लिया जाय तो तात्पर्य यह है कि इसके अनुसार पंत जी को रहस्यवादी कवि मानना चाहिए, वास्तव में ऐसा करना पंत जी की कविता पर अन्याय करना है।

३. यदि लाक्षणिक प्रयोग, अप्रस्तुत विधान तथा अमूर्त उपमानों को लेकर चलने वाली शैली ही छायावाद है तो कबीर जी को जिनका सम्पूर्ण साहित्य इन तत्वों से ओतप्रोत है, छायावादी कवि मानना चाहिए। परन्तु ऐसा है नहीं।

४. प्रकृति में मानवीय भावनाओं का आरोप तीन प्रकार से किया जाता है —

(क) मानवेतर प्रकृति में मानवीय क्रियाओं का दिखाना। जैसे कमलों के पत्तों में तोते का दाना क्या चुगना।

(ख) प्रकृति में [illegible] भावनाओं का आरोप करना। 'पुलकि प्रकट करती धरित्रि'। यहां पृथ्वी में प्रसन्नता (मानवीय भावनाओं) का आरोप किया गया है।

(ग) प्रकृति में मानवीय भावनाओं का भ्रम अथवा आभास [illegible] 'मम्मा चुम्बी महाप्रसाद' में चुम्बन (मानवीय भावनाओं) का आभास है।

छायावाद की वास्तविक परिभाषा इस प्रकार कर सकते हैं—

"प्रकृति में आत्मा का छाया देखना, मानव एवं मानवेतर जीवन में तादात्म्य पाना, छायावाद है।" दूसरे शब्दों में, "प्रकृति में मानवीय भावनाओं के अनुभूतिमय चित्रण का नाम ही छायावाद है।"

> शशि किरणों से उतर उतर कर,
> भू पर काम रूप नभचर।
> चूम नवल कलियों का मृदु मुख,
> सिखा रहे थे मुसकाना।

श्राम नहीं है—

कर थक जाए, पग थक जाए,
ले अंगड़ाई दृग सो जाएं,
शिथिल अंग प्रत्यंग भले ही—
अविकल हो निद्रित हो जाएं,
फिर भी स्पन्दन जारी रखना
तेरा तो बस काम यही है।
हृदय, तुझे विश्राम नहीं है!

तू इस तन का भव्य विधाता,
रोम रोम का स्फूर्ति प्रदाता,
चर्म चक्षु से सदा अगोचर—
रह कर तू है [illegible] जाता।
[illegible] हे [illegible], ओ हृतम,
तेरे लिए विराम नहीं है।
हृदय, तुझे विश्राम नहीं है!

तुझ से जग की सभी प्रगति है
तेरी ऐसी बनी प्रकृति है।
'जब तक जीवन तब तक चलना—
तेरा तो जीवन ही गति है।'
तू सोने को रुका कहीं तो—
फिर जगने का काम नहीं है!!
हृदय, तुझे विश्राम नहीं है!

—श्री 'तपस्वी'

एक रेखा चित्र

अक्षय दीप : श्री बजरंगलाल लोहिया

★ श्री मरुधा

सुना है कि मिश्र के पिरामिडों में से एक को जब तोड़ा गया तो उसके अन्दर एक जलता हुआ दीप मिला था, लेकिन वह, पिरामिड के टूटते ही, बाहरी हवा के सम्पर्क से बुझ गया। विचित्र रहा होगा उस बाहरी हवा का चुम्बन ! जो उस दीप की लौ जलवंती पौध की तरह कुम्हलाई नहीं, बल्कि सदा को बुझ गई। उसके बाद दिल्ली का लाल किला देखते हुए एक निर्देशक ने फरमाया कि इस मुगल-कालीन इमाम में एक दिया बारह मास जलता था। लेकिन अंग्रेजों ने जब इस दीये की नींव खोदी तो वह बुझ गया और बस, सदा को बुझ गया। बाहरी हवा से छुटे हुए प्राणों में जान आती है, नींव खोदने में से नया स्रोत निकलता है, पर ये ऐतिहासिक दीप ऐसे बुझे कि अपने अगाध रहस्य तक को अपने साथ लेते गये।

अक्षय दीप की कल्पना विश्व के प्रायः सभी प्रसिद्ध कवियों ने की है। मनुष्य जब कल्पना करता है, तो उसे साकार भी मनुष्य ही करता है। मिश्र के पिरामिड तो चार हजार वर्ष पूर्व निर्मित हुए थे। लाल किला कुछ सौ वर्ष पुराना है उससे एक सदी पूर्व तानसेन हुआ है। वह दीपक राग गाता था तो दीपक जल उठते थे। लेकिन वे ही दीपक तो जल उठते होंगे जो अक्षय रहे होंगे और मनुष्य की चर्म आंखों से ओझल जल रहे होंगे ! ऐसी अवस्था में अक्षय दीप का अस्तित्व लाल किले में अवश्य रहा होगा, यह मेरा अडिग विश्वास है। यह अक्षय दीप यदि था तो मानव निर्मित कोई आश्चर्य घोषित क्यों न हुआ, इस पर किसी को आश्चर्य नहीं करना चाहिए- क्योंकि यह कोई आश्चर्य नहीं है। अक्षय दीप मानव की आत्मा के चरम रूप में जलता रहा है। जिसके रूप केशों ने तो संसार की सुन्दरतम श्रेष्ठ सुन्दरियों के रूप भी तुच्छ हो गये हैं।

अपनी इस अल्पायु में मस्ती की आवारागर्दी करते हुए बड़ी उत्कंठा से जहां कई एक बातों की खोज में रहा हूं, वहां इस अक्षय दीप की खोज भी मुझे रही है। ढाई वर्ष पहले जब, बिना किसी तैयारी और औपचारिक सूचना के मैं शांतिनिकेतन पहुंच गया था, वहां प्रथम दो अक्षय दीप मुझे मिले थे। एक थे आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी। दूसरे थे आचार्य क्षिति मोहन सेन। इन दोनों महानुभावों से की गई संक्षिप्त जो बातें हुईं थीं, वे तो मेरी निकृष्ट कोटि की स्मृति की किसी गांठ में ही कस कर बंधी रह गई हैं। लेकिन उन बातों से अधिक मुझे अक्षय दीपों के दर्शन हुए थे जहां मैंने दिल जम कर था।

तीसरा अक्षय दीप भी अचानक और हठात् शांतिनिकेतन से लौटते ही मुझे मिला हरिसनरोड के एक छोटे से होटल में। उनका परिचय भी उक्त दोनों नामों की तरह से अपने आप में अन्यतम नक्काशी का नमूना : श्री बजरंग लाल लोहिया।

लोहिया जी से प्रथम भेंट

पहली भेंट में लोहिया जी ने कहा, 'बात पीछे करेंगे। पहले नाश्ता कीजिए आप। और देखो, लोका, इन्हें रसगुल्ले खिलाओ और उसके बाद दो सिंघाड़े दे देना और तब चाय लाना।'

नाश्ता तो अपने चौके में अपनी पत्नी के हाथों का ही सर्वोपरि मानता आ रहा हूं विवाह की घड़ियों से। लेकिन उस होटल में वह नाश्ता इसलिए सुस्वादु हो गया था कि मैं एक खास दृष्टि से लोहिया जी को देख रहा था और उनसे निःसृत होती हुई उनकी कठोर साधना और अनवरत तपस्या की हल्की हल्की सुवास सूंघ रहा था। बात मुझे कुछ अधिक नहीं करनी थी। बातों में विश्वास तो आज भी मुझे नहीं है। जीवन में तीसरा अक्षय दीप सुलभ हुआ था, इससे मैं धन्य धन्य हो उठा था।

उसके बाद लोहिया जी से भेंट हुई ठीक दो वर्ष बाद। भाई धर्मवीर जी भारती साथ में थे, लोहिया जी थे, शिवनारायण शर्मा जी थे। मैं लोहिया जी को पहचान चुका था। पर वे अपनी धुन में थे। उनके हाथों चाय पी गई, सिगरेट और पान भी नसीब हुये। तब उन्होंने मेरा परिचय पूछा। मैंने कहा कि आपके हाथों रसगुल्ले पहले खा चुका हूं। इस बधाई पर अपनी सादगी की मुद्रा में वे लजा से गये।

बड़े प्रेम से मुझे रिक्शे पर बैठा कर लोहिया जी अपना संग्रह दिखाने ले गये। वहां से एकत्र कर वे सब पुस्तकें फतहपुर भिजवा देते हैं। एक अन्य अट्टालिका के कमरे में २००-२०० पुस्तकें इस तरह से रखी हुई जैसे मालगुदाम हो। लेकिन आपने अन्दर मुझसे ही कहा, 'देखो !' जैसे ये अमूल्य रत्न हों और कहीं सात समुद्र पार से चुरा कर लाये गए हों। मैंने उनके कहे अनुसार देखा। मोटी जिल्दें, सुनहरी जिल्दें पुरानी [illegible] हैं। एक नई दुनिया अद्भुत रत्न। लोहिया जी ने बताया, 'इसमें एक पुस्तक १९१० को प्रकाशित हुई यह पुस्तक भारत पर पहले फ्रेंच में प्रकाशित हुई थी, अब अंग्रेजी में अनुवादित हुई है। लेखक हैं पेरिस यूनिवर्सिटी के प्रधान प्रोफेसर। यह पुस्तक हालैंड में प्रकाशित हुई है भारत पर। और ये चार वोल्यूम हैं एक लेखक के विभिन्न भाषाओं के मुहावरों पर। यह है हिन्दी व्याकरण अंग्रेजी में वर्णित। उसे पलट कर मैं देखता रह गया।

और हठात् मेरे सामने देश के कुछ बड़े बड़े वे मन्दिर आकर मूर्तिमान हो जाते हैं जो इन्हीं दस-पन्द्रह वर्षों में बने हैं। दिल्ली, आगरा, इन्दौर, कलकत्ता आदि नगरों में जो कई एक एक-दम भव्य मन्दिर बने हैं। देश के बड़े-बड़े मारवाड़ियों ने देश की पूंजी से अनेक गम्भीर और हलके विवाद किए हैं। लेकिन इन सभी मारवाड़ी पूंजीपतियों एक एक आलीशान मन्दिर बनवा कर केवलमात्र एक शिष्टाचार अपने जीवन में कुछ निभा कर लिया है। लोहिया जी भी मारवाड़ी हैं। पक्के और कट्टर पंथी मारवाड़ी की तासीर अन्दर एक अंश जो उनमें विद्यमान है। कौन कह सकता है कि यदि वे भी अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से इस आर्थिक मृग-मरीचिका के चक्कर में आगे बढ़े होते तो वे भी आज विश्व प्रसिद्ध भारतीय पूंजीपति न हुए होते ! परन्तु नहीं, लोहिया जी ने अपने आत्मशोधन की सिद्धि एक नई क्रांतिकारी ढंग से की। उन्होंने अपनी समस्त बसन्त ऋतुएं और ग्रीष्म ऋतुएं फतहपुर के सरस्वती विद्यालय के निमित्त में व्यय की। कलकत्ता में बैठ कर बस आप चौबीसों घण्टे एक ही काम करते हैं। अलभ्य और अप्राप्य, दुर्लभ और असाधारण, बेशकीमती और अभाव की, आऊट आफ प्रिंट और आऊट आफ डेट, ओरीजिनल एडीशन और रेअर एडीशन, डायरेक्ट फ्राम लन्दन और डायरेक्ट फ्राम न्यूयार्क की पुस्तकें संग्रहीत करना और उन्हें फतहपुर भिजवा देना। है न एकदम अनोखे किस्म का मजा तीखा काम ! लेकिन जिसके लिए निष्ठा युक्त आत्मा चाहिए और पूर्ण विशुद्ध मस्तिष्क चाहिये। उधर देश के वे समस्त पूंजी के निर्जीव मंदिर हैं। इधर सरस्वती पुस्तकालय है।

कई वर्ष पहले 'राजस्थान रिसर्च' त्रमासिक के सम्पादन का भार कुछ पंक्तियों के लेखक पर था। तभी धीरे धीरे चलते हुए मैंने फतहपुर का सरस्वती पुस्तकालय भी देखा है और निवासी भी गया हूं और राजपूताने के प्रायः सभी बड़े नगर और कस्बे मैंने देखे हैं। फतहपुर के सरस्वती पुस्तकालय के पद चिन्हों पर चलने का वहां एक अत्यन्त शौक लिए आन्दोलन चल पड़ा है। सिवानी में तो सिवका जी ने विदेश यात्रा के बड़े जहाजों से भरी पुस्तकें जा जुटाई हैं। अन्यत्र भी सेठों ने दस-दस हजार की पुस्तकें जा रखी हैं। देश में और भी अनेक पूंजी सम्पन्न व्यक्ति अपना निजी पुस्तकालय बनाते रहे हैं।

इनके समतुल्य में एक संग्रह लोहिया जी का है जिसमें व्यर्थ कुछ नहीं है जो आभिजात्य नहीं है और जिसकी एक-एक पुस्तक जुटाने के लिए उन्होंने अपने अमूल्य श्वास प्रतिश्वास व्यय किये हैं। सबसे बड़ी बात लोहियाजी के मानसिक क्षितिज पर आपको राजनीति की कुछ दामिनी कल्पना कहीं मिलेगी। जी हां ! आज वह कौन देख रहा है कि अनेक स्थानों पर सागर का नीर जो अमरीकी साहित्य के रूप में एकत्र किया जा रहा है बड़े पैमाने पर।

जिस व्यक्ति ने यह अमूल्य साहित्य राशि संचित की है उसकी अन्तः प्रेरणा के आगे मैं खुद व खुद नतमस्तक हो गया।

कुछ लोगों का कहना है कि ऐसा अमूल्य ग्रंथ संग्रह राजपूताने के एककोने में नहीं फेंक देना चाहिये वह कलकत्ता में ही रहे। ऐसे लोकमोच तर्क सुन कर भी बात दिमाग में ठीक नहीं बैठ पाती है। गांधीजी ने जब अपना आश्रम सारी दुनिया से दूर वर्धा में ले जा कर बसाया था तो लोग नई दिल्ली और कलकत्ता भूल बैठे थे। उनके नामों का तर्क तो बाद करना था देश करना ही जिसे याद रह गया था। तीर्थ है तो अपने स्थान पर है। जिसे बद्रीनाथ धाम को जाना करनी है वह पहले कष्ट का दुःसह शारीरिक यातनाएं भोगने के लिए तैयार रहे।

शांतिनिकेतन का अपना वातावरण है। नई दिल्ली में नेहरू जी का अपना वातावरण है। वर्धा का अपना वातावरण था। लोहिया जी ने भी अपनी कठिन क्रियाओं के अनुरूप आडम्बरहीन वातावरण संपादित कर रखा है जो एक दम स्थापनीय है। संतों का परिचय देती हुई घुटनों से ऊपर की धोती, कुर्ते के ऊपर फतवा की तरह है

[शेष पृष्ठ १८ पर]

लोह के पेड़ हरे होंगे

महाकवि 'दिनकर'

लोहे के पेड़ हरे होंगे, तू गान प्रेम का गाता चल,
नम होगी यह मिट्टी जरूर, आंसू के कण बरसाता चल।

सिसकियों और चीत्कारों से जितना भी हो आकाश भरा,
कंकालों का हो ढेर, खप्परों से चाहे हो पटी धरा।
आशा के स्वर का भार पवन को लेकिन, लेना ही होगा,
जीवित सपनों के लिए मार्ग मुर्दों को देना ही होगा।
रंगों के सातों घट उंडेल, यह अंधियाली रंग जाएगी,
उषा को सत्य बनाने को पावक नभ पर छितराता चल।

आदर्शों से आदर्श भिड़े, प्रज्ञा प्रज्ञा पर टूट रही,
प्रतिमा प्रतिमा से लड़ती है, धरती की किस्मत फूट रही।
आवर्त्तों का है विषम जाल, निरुपाय बुद्धि चकराती है,
विज्ञान-यान पर चढ़ी हुई सभ्यता डूबने जाती है।
जब-जब मस्तिष्क जयी होता, संसार ज्ञान से जलता है,
शीतलता की है राह हृदय, तू यह संवाद सुनाता चल।

सूरज है जग का बुझा-बुझा चन्द्रमा मलिन-सा लगता है,
सबकी कोशिश बेकार हुई, आलोक न इनका जगता है।
इन मलिन ग्रहों के प्राणों में कोई नवीन आभा भर दे,
जादूगर! अपने दर्पण पर घिस कर इनको ताजा कर दे।
दीपक के जलते प्राण दिवाली तभी सुहावन होती है,
रौशनी जगत को देने को अपनी अस्थियां जलाता चल।

क्या उन्हें देख विस्मित होना, जो हैं अलमस्त बहारों में,
फूलों को जो हैं गूंथ रहे सोने-चांदी के तारों में।
मानवता का तू विप्र! गन्ध छाया का आदि पुजारी है,
वेदना-पुत्र! तू तो केवल जलने भर का अधिकारी है।
ले बड़ी खुशी से उठा, सरोवर में जो हंसता चांद मिले,
दर्पण में रच कर फूल, मगर, उसका भी मोल चुकाता चल।

काया की कितनी धूम-धाम? दो रोज, चमक, बुझ जाती है,
छाया पीती पीयूष, मृत्यु के ऊपर ध्वजा उड़ाती है।
लेने दे जग को उसे, ताल पर जो कलहंस मचलता है,
तेरा मराल जल के दर्पण में नीचे-नीचे चलता है।
कनकाभ धूल झड़ जायेगी, ये रंग कभी उड़ जायेंगे,
है सौरभ केवल अमर, उसे तू सबके लिए जुटाता चल।

क्या अपनी उनसे होड़, अमरता की जिनको पहचान नहीं,
छाया से परिचय नहीं, गन्ध के जग का जिनको ज्ञान नहीं।
जो चतुर चांद का रस निचोड़ प्यालों में ढाला करते हैं,
भट्ठियां चढ़ा कर फूलों से जो इत्र निकाला करते हैं।
ये भी जागेंगे कभी, मगर, आधी मनुष्यता वालों पर,
जैसे मुसकाता आया है, वैसे अब भी मुसकाता चल।

सभ्यता अंग पर क्षत कराल, यह अर्थ-मानवों का बल है,
हम रो कर मरते उसे, हमारी आंखों में गंगाजल है।
शूली पर चढ़े मसीहा को वे फूले नहीं समाते हैं,
हम शव को जीवित करने का छायापुर में ले आते हैं।
भींगी चांदनियों में जीता, जो कठिन धूप में मरता है,
उजियाली से पीड़ित नर के मन में गोधूलि बसाता चल।

यह देख नई लीला उनकी, फिर उनने बड़ा कमाल किया,
गांधी के लोहू से सारे भारत-सागर को लाल किया।
जो उठे राम, जो उठे कृष्ण, भारत की मिट्टी रोती है,
क्या हुआ कि प्यारे गांधी की यह लाश न जिन्दा होती है।
तलवार मारती जिन्हें, बांसुरी उन्हें नया जीवन देती,
जीवनी शक्ति के अभिमानी! फिर यह कमाल दिखलाता चल।

[illegible] के [illegible] हरे होंगे, [illegible] [illegible] बरसायेगी,
दिन की कराल दाहकता पर चांदनी सुशीतल छायेगी।
ज्वालामुखियों के कंठों में कलकंठी का आसन होगा,
जलदों से लदा गगन होगा, फूलों से भरा भुवन होगा।
निष्प्राण, यंत्र-विरचित, गूंगी मूर्त्तियां एक दिन बोलेंगी,
मुंह खोल-खोल सबके भीतर शिल्पी! तू जीभ बिठाता चल।*

---

* बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के उद्घाटन-समारोह के लिए विशेष रूप से रचित और उसी अवसर पर स्वयं कवि द्वारा अभिगीत कविता।

विज्ञान का शांतिकालीन उपयोग

★ प्रो॰ राजेश्वरप्रसाद शर्मा

आधुनिक न्यूक्लियर फिजिक्स (न्यूक्लियर फिजिक्स) की उत्पत्ति कुछ तीन प्रमुख आविष्कारों से हुई है जो १८९५ से १८९७ तक हुए थे। १८९५ में राण्टजेन ने एक्सरेज़ १८९६ में बिक्वेरल ने रेडियोएक्टिविटी (रश्मिक्रियता) और १८९७ में थामसन ने विद्युदणु (इलेक्ट्रान) का आविष्कार किया।

उक्त तीन आविष्कारों से मनुष्य जाति को तीन अनुपम वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। एक्सरेज़ द्वारा एक ओर जब रोग की रोक-थाम की जा सकती है। दूसरी ओर बड़ी-बड़ी मशीनों के ढके हुए (पुर्जों) में देखा जा सकता है कि भीतर कहीं पीलापन तो नहीं रह गया और इस प्रकार कई दुर्घटनाओं से उसका प्रयोग सुरक्षित हो जाता है। रश्मिक्रियता के आविष्कार ने कर्कार्बुद को चिकित्सा संभव कर दी है। विद्युदणु से अनेक काम लिये जा रहे हैं। विद्युत्तापक (इलेक्ट्रिक हीटर) से लेकर तेजोन्वेष (राडर) तक इसी का चमत्कार दिखाई देता है।

बिक्वेरल ने १८९६ में तेजोद्गिरण का आविष्कार किया था। यह भौतिकी का अत्यन्त महत्वशाली आविष्कार है। किन्तु इसने चिकित्सा विज्ञान में भी एक नये अध्याय को जन्म दिया है। रेडियम का चिकित्सीय मूल्य अब असंख्य है। बिक्वेरल ने जिन रश्मियों का आविष्कार किया है कर्कार्बुद की चिकित्सा के लिए वे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई हैं। और उन्हीं के कारण इसकी चिकित्सा सम्भव हो सकी है। शरीर के आभ्यन्तरिक भागों का चित्रण इसी के द्वारा सम्भव हुआ है। इन आविष्कारों ने चिकित्सा में इतना महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण किया है कि चिकित्सा-शास्त्र में इसकी एक शाखा अलग बन गई है जिसे रश्मिक्रियता (रेडियोलाजी) कहते हैं। रोगों के निदान और चिकित्सा इस शाखा का विषय है।

चिकित्सा के लिए कृत्रिम तेजोद्गिर, अब प्राकृतिक तेजोद्गिरक तत्वों की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं। अधिकांश साधारण तत्व अब तेजोद्गिरक बनाए जा सकते हैं और उनका कृत्रिम तेजोद्गिर अधिक समय तक नहीं रहता इसलिए शरीर के भीतर भी उसका उपयोग किया जा सकता है। अभी कुछ वर्ष हुए सिलाईघरों में काम करने वाली लड़कियों की घटनाएँ प्रकाश में आई हैं। इन लड़कियों के अन्दर तेजोद्गिरक पदार्थ की अधिक मात्रा पहुँच चुकी थी और जिसके कारण प्रत्यक्ष रूप से उनकी मृत्यु उनके सिर पर नाच रही थी। उस पर तेजोद्गिरण के धीमे प्रभाव की कोई आशंका न थी। वे वास्तव में घड़ियालों (डायल) पर चमकीले अंक लिखने का काम करती थीं। प्रत्येक अंक बनाने के लिए उन्हें लिखने की कूची को अपने अपने होंठों से लगाना पड़ता था, जिससे उसका कुछ भाग भोजिका हो जाय, कूँची पर रेडियम का बहुत ही स्वल्प अंश जाता है। क्योंकि चमकीली पदमणीकों पर ये धातु की अत्यन्त सूक्ष्म मात्रा काम में आती है। अर्थात् ४०,००० भाग रंगलेप (पेंट) में केवल एक भाग रेडियम होता है। किन्तु वर्षों काम करते करते प्रत्येक लड़की के भीतर इतना रेडियम पहुँच जाता है। जो अन्त में घातक सिद्ध होता है। इसमें प्रमुख ध्यान देने योग्य बात यह है कि रेडियम की क्रिया दीर्घकालिक होने के कारण यह घातक प्रभाव संचयी है। एक बार में किसी लड़की के अन्दर रेडियम की इतनी मात्रा नहीं जाती, जो उसे किसी प्रकार की हानि पहुँचा सके। किन्तु जितनी भी मात्रा एक बार में उसके भीतर पहुँचती है, वह दीर्घकाल तक सक्रिय बनी रहती है। इस प्रकार संचित होते होते यह मात्रा घातक बिन्दु तक आ पहुँचती है। रेडियम की अर्धायु १६९० वर्ष है, इसलिए मनुष्य के पूरे जीवन काल में भी यह अधिक क्षीण नहीं हो पाती। यदि इसकी अर्धायु स्वल्प होती और लड़की के भीतर पहुँचने के कुछ दिन पश्चात् ही यह नष्ट हो जाती तो लड़की को किसी प्रकार की हानि पहुँचने की कोई आशंका न रहती, क्योंकि रेडियम के शरीर में पहुँचने कुछ देर बाद ही तेजोद्गिरण समाप्त हो जाता।

जब तक यह ज्ञात नहीं हुआ कि रेडियम शरीर के अन्दर जाने पर घातक सिद्ध होती है, तब तक लोग इसका प्रयोग शरीर के भीतर भी करते रहे। आरम्भ में रोग में कुछ आराम प्रतीत होता है, किन्तु कुछ दिन पश्चात् शरीर के भीतर पहुँची हुई रेडियम की मात्रा घातक सिद्ध होती है और रोगी अच्छा होने की अपेक्षा मर जाता है। आजकल रेडियम का प्रयोग कर्कार्बुद की चिकित्सा में किया जाता है किन्तु इसी कारण से शरीर के भीतर इसका प्रयोग नहीं किया जाता और ज्योंही यह अपना काम कर चुकता है त्यों ही उसे हटा लिया जाता है।

अब नए कृत्रिम तेजोद्गिरण के आविष्कार से यह भय दूर हो गया है। ९२ तत्वों में से ८७ तत्वों को कृत्रिम रूप से तेजोद्गिर बनाया जा सकता है। इन सभी की अर्धायु रेडियम की अर्धायु से बहुत ही कम होती है। उनमें अनेक तो इतना शीघ्र नष्ट हो जाते हैं कि शरीर के भीतर उनका प्रयोग निर्भयता के साथ किया जा सकता है।

परमाणुओं की व्यापकता

संसार में जितने भी पदार्थ हैं वे सब परमाणुओं के बने हैं यह बात आधुनिक विज्ञान ने सिद्ध कर दी है। भारत के प्राचीन शास्त्रों में भी परमाणुवाद की चर्चा आती है। महर्षि कणाद ने अपने न्याय दर्शन में इसकी व्याख्या की है। भारत के लिए परमाणु सर्वथा नवीन नहीं है। विभिन्न परमाणुओं में विद्युदणुओं की संख्या भिन्न होती है। इस भिन्नता के कारण ही पदार्थों में भिन्नता पाई जाती है। प्रत्येक पदार्थ के ऊपरी स्तर पर कुछ मुक्त विद्युदणु भी होते हैं। विद्युदणु का आविष्कार अनेक उपयोगी आविष्कारों का कारण है। जिनमें दूरदर्श, तेजोन्वेष और अणुबम मुख्य हैं।

दूरदर्श (दुरबीन)

दूरदर्श के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए अमेरिका के विद्युत् प्रमंडल [रेडियो कारपोरेशन आफ अमेरिका] के प्रधान डेविड सारनाफ ने कहा था कि युद्ध की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए विज्ञान ने विद्युत् सन्देशन [रेडियो कम्युनिकेशन] के हाथों में विद्युदणु की उँगलियाँ लगा दी हैं और इन उँगलियों को स्पर्शेन्द्रिय की शक्ति भी प्रदान कर दी है। दूर किसी सुरक्षित स्थान पर बैठ कर मनुष्य विमानों, पोतों, नौध्वंसों [टारपेडोज] और आग्नेयास्त्रों तथा अन्य अनेक यन्त्रों का संचालन करने का जो स्वप्न देख रहा था वैद्युदणविकी के विकसित इस प्रयोग से वह बहुत कुछ पूरा हो गया है।

तेजोन्वेष का उपयोग

इसी प्रकार तेजोन्वेष का भी शान्तिकालीन उपयोग किया जा सकता है। विद्युत् के जितने भी आविष्कार हुए हैं। उनमें सर्वोच्च स्थान तेजोन्वेष को ही दिया जाता है। क्योंकि युद्ध काल में यह जितना उपयोगी सिद्ध हुआ है, उस से कहीं अधिक यह शान्ति के समय उपयोगी है। तेजोन्वेष के सिद्धान्त पर अब तक अनेक आविष्कार हुए हैं। यदि इनका प्रयोग यातायात के साधनों में किया जाय तो मनुष्य जाति का बहुत बड़ा उपकार हो सकता है। रेलों, वहित्रों, विमान और जलयानों की जितनी दुर्घटनाएं होती हैं वे प्रायः सभी इसकी सहायता से रोकी जा सकती हैं। यदि तेजोन्वेष लगा हो तो विमान न किसी से टकराएगा और न वायुयान का कोहरे में कारण उसे आगे बढ़ने या नीचे उतरने में किसी प्रकार की असुविधा होगी। रेलों का लड़ना बन्द ही जायगा वहित्रयानों से होने वाली दुर्घटनाएं एक बार्सी और समुद्र में जलयानों को कोहरे या अन्धकार के कारण किसी से टकरा कर डूबने की आशंका न रहेगी।

ज्योतिष और खगोल विद्या के लिए भी तेजोन्वेष का प्रयोग किए जाने की बहुत कुछ सम्भावनाएं हैं। अब भी अनेक बार इन यन्त्रों पर काम करने वालों को ऐसे समय जब आकाश में किसी पक्षी, विमान अथवा बादल के होने की सम्भावना नहीं होती विद्युत्तरंगें किसी वस्तु से टकरा कर परावर्तित होती हैं, इससे अनुमान किया जाता है कि वे किसी केतु [मीटियोर] या उल्का से टकरा कर लौटी हैं। क्योंकि आकाश उल्का और केतुओं से भरा पड़ा है जिनकी गति ७८ कोशक प्रतिक्षण है। ये प्रतिक्षण लाखों की संख्या में पृथ्वी के वायुमण्डल से टकराते रहते हैं इनमें रूपक [निकेल] तथा अन्य धातुओं से मिश्रित लोह विशेष रूप से होता है।

परमाणु बम

परमाणु बम के आविष्कार से यह तो सर्व साधारण को ज्ञात हो गया है कि परमाणु में प्रचण्ड शक्ति विद्यमान है वैज्ञानिकों को यह बात बहुत से ज्ञात थी। इस प्रचण्ड शक्ति को प्राप्त करने की रीति भी वैज्ञानिकों को ज्ञात हो गई है जिसके लिए विरधातु जैसी धातु भी उन्होंने खोज निकाली है। परमाणु बम में इसका ठीक-ठीक प्रयोग करने में उन्हें सफलता मिल गयी है। ऐसी स्थिति में क्या इस प्रचण्ड शक्ति का प्रयोग मानव जाति के नाश की अपेक्षा उसके हित के लिए नहीं किया जा सकता? विनाश के मार्ग को छोड़ कर मानव हित की दिशा में इस शक्ति का उपयोग होना आवश्यक है। यदि मनुष्य को सद्बुद्धि आ जाय तो न फिर कोयले की आवश्यकता रहेगी, न बिजली की, न वाष्प की और न मर्तेल (पेट्रोल) की। भिन्न-भिन्न कार्यों में ऊर्जा के उत्पादन के लिए इन वस्तुओं का उपयोग किया जाता है उस प्रत्येक कार्य में अणु शक्ति से कार्य हो सकेगा। ईश्वर मानव को सद्बुद्धि दे। जिस बुद्धि से उसने इस प्रचण्ड शक्ति का पता लगाया है उसी से वह इसका उपयोग भी मानव हित के लिए ही करे।

वेदों का अमर सन्देश

★ श्री प० दामोदर सातवलेकर

भूमण्डल का इसके स्वाधीन देश भारत है। जब से इतिहास का पता चलता है, तब से इस देश ने 'मानव-धर्म' का ही विचार किया और मानवता की ऊंचाई बढ़ाई है। इस देश की धार्मिक परम्परा का आधार वेदों का अमूल्य ज्ञान है। भारत वासियों की योग्यता बढ़ाने के लिए 'वेद' ही एकमात्र साधन है।

वेद का अर्थ ज्ञान है। पवित्र, शुद्ध, निष्कलंक, अभ्युदय, निःश्रेयससाधक, ज्ञानमय वेद है। वेदधर्म को अपनाना अनेक पद्धति चाहने वाले के लिए अत्यन्त आवश्यक है। जिस समय तक भारतवासियों ने वेद धर्म को अपनाया था, उस समय तक भारतवर्ष का तेज अखिल भूमंडल पर चमक रहा था, और जिस समय से भारतवासियों ने वेद सिद्धांतों को छोड़ कर मनमाने मतमतान्तरों को अपनाया, तब से भारतीय लोग विदेशियों से आक्रान्त हो कर अवनीति में पड़े हैं, यह इतिहास की साक्षी है।

वेद के सम्बन्ध में प्राचीन तथा अर्वाचीन काल के भारतीय विद्वान् ही नहीं, विदेशी विद्वान् भी वेद की प्रशंसा मुक्तकंठ से कर रहे हैं, यह वेद की विशेषता है। विदेशी विद्वानों की वेद विषयक यह सम्मतियां देखिये।'

(१) श्री वीकोरासडीपुर्वा अपनी पुस्तक मिथोलाजी आफ हिन्दूज (पृष्ठ ५३) में लिखते हैं —

वे उच्च विचार हमें तर्क से पर्याप्त यह समझाने के लिए काफी है कि वेद एक ही ईश्वर को मानता है, जो अजर अमर, अजन्मा, स्वयंभू और विश्व का प्रकाशक तथा स्वामी है।

(२) गाल्स स्टूकर का मत है कि —

'वेदान्त वह उच्च मत है जो कि पूर्वीय विचारधारा को प्रेम और प्राण प्रदान करती है।'

(३) प्रो० हिरेन, हिस्टोरिकल रिसर्चेस भाग २ (पृष्ठ १२७) में लिखते हैं —

'निःसंदेह वेद संस्कृत भाषा में सब से पुराने ग्रन्थ हैं। वर्तमान समय में जो वेदग्रन्थ हैं, उनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। संसार में केवल भारत ही ऐसा राष्ट्र है जिसे सबसे पुरानी भाषा और सबसे पुराने इतने श्रेष्ठ ग्रन्थ के लिए गौरव प्राप्त है। मानव उन्नति और प्रगति के लिए वेद अद्वितीय उच्च-कोटि के और एकमात्र ग्रन्थ हैं।'

(४) माननीय पोमस-मेरवी हिस्ट्री आफ एन्शियन्ट संस्कृत लिटरेचर (पृष्ठ ५२७) में लिखते हैं कि —

'ऋग्वेद में हमको के निर्विवाद के पुष्टि लेखों से भी प्राचीन समय का सच्चा और सुन्दर वर्णन हम देखते हैं। वेद होमेरिक काव्यों से भी अधिक पुराने ग्रन्थ हैं, जिसमें आदि काल के मानवों के विचारों का वर्णन है।'

(५) श्री मेक्सम्यूलर, अपनी पुस्तक, हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर (पृष्ठ ५१२) में लिखते हैं —

'संसार के इतिहास में वेद वह पूर्ती करते हैं, जो संसार की दूसरी कोई भी भाषा का साहित्य नहीं कर सकता। आदि आर्यों के जीवन सम्बन्धी जो अनेक ग्रन्थ हैं, उनमें ऋग्वेद का सर्व प्रथम स्थान हमेशा रहेगा।'

(६) धार्मिक तत्त्वज्ञान में वेदान्त से अधिक गूढ़ उदात्त और तत्त्वमय ज्ञान हिन्दुओं को कुछ भी प्रदान नहीं किया जा सकता।'

वैदिक काव्य कितने गूढ़ और पवित्र हैं, यह सिद्ध करने की आवश्यकता हुई तो यह सिद्ध करने के लिए यह काव्य ही बहुत है।'

भारतीय विद्वान तो मुक्त कंठ से वेद की प्रशंसा कर ही रहे हैं, श्रीशङ्कराचार्यादि सब आचार्य, सब शास्त्रकार सब धर्मप्रवर्तक मुक्त कंठ से वेद की प्रशंसा कर रहे हैं। इस शताब्दी के आचार्य श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ७५ वर्ष पूर्व वेद की ओर जनता का मन आकर्षित किया और वेदधर्म की जाग्रति के लिए इस युग प्रवर्तक आचार्य ने जो प्रयत्न किये वे इतिहास में सुवर्णाक्षरों से लिखे जावेंगे। दिव्य योगी श्री अरविन्द घोष जी के वेद के तत्त्वज्ञान के आविष्कार के सम्बन्ध में जो प्रयत्न हुए, वे निःसन्देह आधुनिक युग के आधुनिक लोगों का चित्त वेद की ओर आकर्षित करने के लिए विशेष कारणीभूत हुए हैं।

क्षणभंगुरता का प्रचार अवैदिक

इस समय २५ वर्ष का अनुभव भी क्षणभंगुर संसार,' 'दो दिन की दुनियां' ऐसे अशुद्ध विचार बोलता है! इस अशुद्ध विचार का एक भी शब्द चारों वेदों में नहीं है। वेदों में नहीं है। वेद में ध्रुववाद' देखिये —

यह द्युलोक स्थायी है, यह पृथ्वी ध्रुव है, ये पर्वत स्थिर हैं, यह सम्पूर्ण जगत ध्रुव है और प्रजाजनों का रक्षण करने वाला शासक भी ध्रुव है। इस तरह सम्पूर्ण विश्व को वेद 'ध्रुव' कहता है। पर इस समय के हिन्दू क्षणभंगुर के 'क्षणभंगुरवाद' में फंसे हैं। दुनिया की बीच क्षणभंगुरवाद ने भारत की अभ्युदय की धारा का नाश किया है।

"आनन्द से सचमुच ये सब भूत उत्पन्न होते हैं; आनन्द से ये सब भूत जीवित रहते हैं और अन्त में आनन्द में ये सब विलीन होते हैं।" इस तरह भूतों की उत्पत्ति के पूर्व आनन्द, भूतों की पालना में आनन्द और भूतों के अंत में भी आनन्द मानने वाली यह आर्य जाति जगत् मिथ्या का स्वीकार करके चिरविजय से वंचित रही और जबसे इसने जगत्-मिथ्यावाद को स्वीकार किया, तबसे स्वसंरक्षण के अपने कर्त्तव्य से भी विमुख होने के कारण, इस जाति का पराभव होता जाता है। दुःखपूर्ण जगत् पर कोई शासन करे इस विषय में यह जाति उदासीन रहती है, क्योंकि इसके विचार में यह जगत् दुःखमय और क्षण भंगुर अत पूर्णतया असार है। इस असार जगत का ग्रहण कोई करे तो करे, हमें उससे कोई सम्बन्ध ही रखना नहीं है। जगत्-मिथ्यावाद का हिंदुराष्ट्र पर बड़ा ही विनाशक परिणाम हुआ है।

यह विश्व पूर्ण है, क्योंकि पूर्ण से यह बना है, इसलिए अपूर्ण या दुःखदायी नहीं है। क्या पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश ये जैसे चाहिये, वैसे नहीं है? क्या ये स्वयं कभी किसी को दुःख दे रहे हैं? सच तो यह है कि यह विश्व सुख पूर्ण है। अतः विश्व सेवा से सर्वत्र आनन्द ही आनन्द प्राप्त करने का अनुष्ठान करना चाहिये। यही वेद एक यज्ञ अनुष्ठान है। यह न करते हुए वे लोग जग-त्याग करने लगते हैं और कष्ट भोग रहे हैं। वेद को अपनाने पर ये कष्ट नहीं रहेंगे।

नारी शक्ति की मान्यता

वैदिक धर्म में स्त्री अर्धांगिनी है, वेद पुरुष की शक्ति है। इसीलिए धर्मशास्त्रियों में गृहस्थाश्रम का महात्म्य सब आश्रमों से अधिक वर्णन किया है। सर्व आश्रमों का पालक गृहस्थाश्रम है। यज्ञ के लिए स्त्री-यजमान पत्नी-सहाय चाहिये और सुसंतान निर्माण करना यह गृहस्थ का ध्येय है।

वेद में ३५० ऋषियों के नाम आते हैं, वे सब ब्रह्मज्ञानी ऋषि हैं। इनमें एक भी संन्यासी नहीं, सबके सब गृहस्थी हैं। वेद का धर्म यति होने की प्रशंसा नहीं करता है, क्योंकि विश्व की स्थिति गृहस्थ धर्म पर है न कि यति धर्म पर। यदि सबके सब यति होंगे, तो ५० वर्षों में सब संसार जंगल होगा, परन्तु सब उत्तम गृहस्थी बनेंगे, तो यही संसार आनन्दधाम बनेगा। इसलिए वेद गृहस्थ प्रशंसा करता है। देवता भी पत्नी के साथ हैं, अग्नि की अग्नायी, इन्द्र की इन्द्राणी, वरुण की वरुणानी आदि सब देव सपत्नीक, सपुत्र, सगोत्रीय हैं।

पुत्रोत्पत्ति का यज्ञ

वेद के अनुसार स्त्री गर्भ धारण करती है और मनुष्य की वर्द्धित जीवन बिताने की सुविधा उत्पन्न करती है। जो स्त्री परमात्मा के अमृत पुत्र जीव को तथा उसके साथ आने वाले ३३ देवताओं को अपने गर्भ में ९ मास रखती और इनमें देवताओं को अपने अन्दर आश्रय स्थान देती है उसकी महत्ता क्या वर्णन की जा सकती है? पुरुष का यह भाग्य नहीं कि वह ३३ देवताओं का शरीर अपने अन्दर धारण करे। वेद की यह दृष्टि है। ऐसी पवित्र स्त्री को इन जगत्‌ वादियों ने पाप की खान बना दिया। इससे विचारों का अध पतन और अधिक कैसे हो सकता है? आज हिन्दू-समाज और हिन्दू स्त्रियां लड़की घर में उत्पन्न हुई, तो दुःख मानती हैं और पुत्र उत्पन्न होने पर आनन्द मानती हैं। वेद के समय में पुत्री का मान पुत्र से कम नहीं है।

पृथ्वी पर ही स्वर्ग

पृथ्वी पर स्वर्गधाम बनाने का कार्यक्रम वेद धर्म ने मानवों के सन्मुख रखा है—[१]ज्ञानी बनना, [२] रोग अपमृत्यु दूर करके नीरोग स्वस्थ दीर्घायुष्मान् बनाना, [३] जरा क्षीणता आदि रोगों को दूर करना, [४] निर्भयता प्राप्त करना, [५] काम पाप के कष्टों को दूर करना, [६] शोक-मोह के कारणों को दूर करना, [७] वर्षों य जीवन व्यतीत करना, [८] सदा आनन्द प्रसन्न रहना। ये स्वर्ग के लक्षण उत्तम राज्य शासन के लक्षण हैं।

इन राज्य शासनों में स्वराज्य नामक राज्य शासन का नाम आया है। यहां 'स्वराज्य' नहीं, परन्तु 'स्व राज्य' है। यहां 'स्व' की सरकारिता पर बल दिया है। राज्य' पर अर्थात् शासक शक्ति पर बल नहीं दिया गया। जहां राज्य शासक शक्ति का ही विचार किया जाता है वहां 'शक्ति का शासन शुरू होता है। वैसा होने से आसुरी वृत्ति बढ़ जाती है। इसलिए स्वराज्य का प्रत्येक घटक जो मनुष्य है, वह संस्कार सम्पन्न होना चाहिये, यह 'स्व' पर बल देने से ऋषियों ने अपनी योजना में सूचित किया है। हम अपने हाथ में शक्ति रखने के लिए राज्य नहीं कर रहे, परन्तु जनता में से प्रत्येक व्यक्ति को सुसंस्कारों से सम्पन्न करने के लिए राज्य कर रहे हैं।

वेदों का यही अमर सन्देश हमें अमरता प्रदान कर सकता है।

परीक्षोपयोगी लेख

पन्त और निराला

श्री भवानी शंकर त्रिवेदी

'पन्त की साहित्यिक धारा

श्रीयुत सुमित्रानन्दन पन्त को कवि भावों में क्रमिक विकास की श्रेणी, साथ ही उसमें स्पष्ट परिवर्तन भी लक्षित होता है। इस प्रकार हम पन्त की कविता को दो भागों में विभक्त करते हैं:

(१) छायावादी काव्य।

(२) प्रगतिवादी काव्य

पन्त जी की पूर्व युग की समस्त कृतियां छायावादी हैं। उसमें सर्वत्र सौंदर्य की सरस धारा प्रवाहित हो रही है। कल्पना के साथ काव्य का कला पक्ष और भाव पक्ष दोनों ही अपने चरमोत्कर्ष पर आ पहुँचे हैं। वीणा ग्रन्थि, पल्लव, गुंजन और ज्योत्स्ना आदि रचनायें भी इसी युग की हैं। इस युग की कविता के प्रत्येक पद में सौंदर्य और उसका सागर छलक रहा है। काव्य के अलंकारों की छटा अपने चरम विकास के साथ निखर रही है और कल्पना तो कुलांचें भरती हुई उत्तरोत्तर उन्नति पथ की ओर ही अग्रसर रही है।

शशि किरणों से उतर-उतर कर,
भू पर कामरूप नभचर,
चूम नवल कलियों का मृदु-मुख,
सिखा रहे थे मुसकाना।"

में प्रभात का कैसा हृदयग्राही वर्णन हुआ है।

'हास सरिता में सरोजों के खिले अधर के मधुरे मद्यों को मधुप से।

आदि कविताओं में प्रेम का कैसा चमत्कृत चित्र अंकित किया है। जुगनुओं के चित्र रेखा चित्र को देखिये।

'जगमग जगमग हम जग का मग,
ज्योति प्रतिपग करते जगमग,
चपल-चपल झुक झुक जल जल,
छिद्र उर कल पल हरते छल छल।"

इस प्रकार इस पूर्व युग की रचनाओं में कवि ने सौंदर्य में सने प्रेम के परम मनोहर रूप को अपनी पराकाष्ठा पर पहुंचा दिया है।

किन्तु पन्त जी का प्रकृति से युगान्त में आ कर पलटा खाया, युगान्त, युगवाणी और ग्राम्या में कवि ने छायावाद की छाया का छोड़ कर मानव की विकास भूमि, कठोर धरातल पर पग रखा है। उसमें दीन, दुःखी, दरिद्र, [illegible] आरम्भ किया। उसे पूंजी वादी व पूंजी-पतियों की शोषण नीति के प्रति एक रोष-सा होने लगा, इसीलिए वह कह उठा कि:—

गा कोकिल, बरसा पावक कण,
नष्ट भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन,
ध्वंस भ्रंस जग के जड़ बन्धन,
पावक पग धर आवे नूतन,
हो पल्लवित नवल मानव पन।'

इसी प्रकार पन्त जी ने सर्वत्र प्रगतिवाद के प्रति अपना प्रेम प्रकट किया है किन्तु साथ ही यहाँ यह भी ध्यान रखना चाहिये कि पन्त जी का प्रगतिवाद, रूसी साम्यवाद से प्रभावित न हो कर गांधी वाद पर ही अधिक आधारित है। गांधी जी जिस प्रकार नवीन और प्राचीन के समन्वय के पक्षपाती थे। पंत जी भी उसी प्रकार समन्वय को लेकर ही समाज का सुधार चाहते हैं।

इस प्रकार पन्त जी की काव्य धारा के दो विभिन्न रूप तो स्पष्ट हैं, साथ ही उसमें अवान्तर विभाजन भी स्पष्ट उन्होंने लिखा है कि मेरा विचार है कि वीणा से ग्राम्या तक मेरे सभी रूप को मैं प्रकृति सौंदर्य का प्रेम किसी भी रूप में वर्तमान है। पंत जी ने प्रकृति के प्रेम रूप को ही अपनाया है। वे उसके भयंकर रूप से दूर ही रहें। प्रकृति के प्रेम में पले हुए इस कवि ने आगे चल कर स्वामी रामतीर्थ और विवेकानन्द से प्रभावित हो कर अपने आपको दार्शनिकता की ओर उन्मुख कर लिया। वह जीवन और जगत की समस्याओं में उलझ गये।

"ठहर उधर जगती पल,
इधर-उधर मृत्यु कल-कल।"

इसमें मृत्यु के प्रति जिजीविषा का कैसा भयंकर प्रदर्शन हुआ है। किन्तु आगे चल कर उसका यह विराम भाव भी दूर हुआ। बात तो यह है कि जिस विरोध के कारण उसमें यह विरक्ति की प्रवृत्ति जागृत हुई थी, क्रमशः वह दूर हुई और उसका स्थान सौंदर्य ने ले लिया। किन्तु इस युग का सौंदर्य स्थूल बाह्य न हो कर सूक्ष्म और आन्तरिक सौंदर्य है। ऐन्द्रियता का इसमें कोई विशेष स्थान नहीं। इसके पश्चात् कवि अपने दूसरे युग में प्रविष्ट होता है। यहां उसकी कोमल कला और कल्पना कुशलता समाप्त हो गयी। वह एकदम दृढ़ और कठोर प्रगति के रूप में प्रकट हुआ। महायुद्ध की विभीषिकाओं से प्रभावित होकर ही उन्होंने गांधी जी के आदर्श समाजवाद को अपनाया है। पन्त जी के काव्य में लक्षित होने वाली ये सभी विविध प्रवृत्तियां आधुनिक कवि द्वितीय भाग में समाहित कविताओं में स्पष्ट दिखाई देती हैं। इस संकलन में एक प्रकार से कवि की समस्त काव्य प्रवृत्तियों का पूर्ण प्रतिबिम्बित होता है। इसी प्रकार कवि ने स्वयं लिखा है कि "मैंने कल्पनाओं को भिन्न-भिन्न विचारधाराओं से प्रेरणा मिली है कि उन सभी को स्वीकार करने की मैंने चेष्टा की।

पन्त के युगवाणी, ग्राम्या आदि उत्तर कालीन काव्यों में कला ने स्थान उपयोगिता ने ले लिया है, इसमें कुछ सन्देह नहीं। वे यथार्थ दृष्टिकोण के पक्षपाती हो कर कविता के उपासक हो गये। छायावाद की अभिव्यंजनात्मकता और कल्पना कुशलता उनकी उत्तर कालीन रचनाओं में लक्षित नहीं होती। पूर्वोक्त 'ग्राम कविता' शीर्षक कविता इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

निराला की साहित्यिक गतिविधि

निरालाजी का जन्म संवत १९५२ में जिला मेदिनीपुर बंगाल में हुआ। अतः आप जन्मजात बंगला भाषी हैं। संस्कृत, बंगला संगीत दर्शनादि का आपने गम्भीर अध्ययन किया है। आपकी रचनाओं में इन सब का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। निराला जी हिन्दी के युगान्तरकारी स्वच्छन्दवादी कवि हैं। हिन्दी साहित्य में प्रसाद जी ने जिन नवीन प्रवृत्तियों को पल्लवित किया था, उन्हें विकसित करने वालों में आप सर्व प्रमुख हैं। आधुनिक युग की रहस्यवाद-सम्बन्धी काव्य धारा के ये मुख्य स्तम्भ समझे जाते हैं। प्रसाद जी की भाँति दार्शनिकता तथा आध्यात्मिकता इनके काव्य की दो विशेषताएं हैं। भाषा और छन्द के बन्धन को तोड़ कर इनकी प्रतिभा ने एक अभिनव पथ को परिष्कृत किया है। मुक्तछन्द एवं मुक्तक छन्द की कविता के ये कुशल कलाकार हैं। हिन्दी में गीतिकाव्य की प्रणाली का प्रचार इन्हीं से हुआ है। गम्भीर दार्शनिकता और निराली प्रतिपादन शैली के कारण अनेक स्थलों पर इनके चित्र उलझे हुए एवं दुरूह हो गये हैं। किन्तु जहां भाषा सरल और कल्पना स्वाभाविक है, वहां इनके व्यक्तित्व एवं प्रतिभा का प्रभाव पर्याप्त स्पष्ट और आकर्षक है। इनके साहित्य पर बंगला व अंग्रेजी का प्रभाव है। रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द जी के दार्शनिक विचार आपकी दार्शनिक रचनाओं में सर्वत्र झलकते हैं। 'तुम और मैं', शीर्षक इनकी रचना अति गम्भीर और लोकप्रिय है। अमूर्त भावों को मूर्त रूप देने में ये भी प्रसाद जी के समकक्ष हैं। 'महाराजा शिवाजी का पत्र' 'गोस्वामी तुलसीदास' 'राम की शक्ति पूजा' आदि इनकी रचनाओं में प्राचीन संस्कृति के प्रति प्रेम प्रकट हुआ। 'भिक्षुक' 'विधवा' 'तोड़ती पत्थर' आदि इनकी रचनाएं प्रगतिवाद का रूप प्रकट करती हैं। कविताओं के अतिरिक्त कहानी उपन्यास और निबन्ध भी इनके मौलिक और संस्कृत हुए हैं। इनकी ये रचनायें हैं—

अनामिका परिमल, गीतिका, तुलसी दास, कुकुरमुत्ता, बेला, अणिमा, अपरा और नये पत्ते काव्य संग्रह हैं। अप्सरा, अलका, निरुपमा, प्रभावती उच्छृंखल, चोटी की पकड़, काले कारनामें, कौन्ती आदि उपन्यास हैं। लिली, सखी, चतुरी, चमार, सुकुल की बीवी आदि कहानीसंग्रह कुल्ली, भाट, बिल्लेसुर, बकरिहा आदि रेखा चित्र। प्रबन्ध पद्म, प्रबन्ध प्रतिमा, प्रबन्ध परिचय रवीन्द्र कविता कानन आदि आलोचनात्मक निबन्ध संग्रह। राणा प्रताप, भीष्म, प्रह्लाद, ध्रुव आदि जीवन चरित्र। महाभारत, श्री राम-कृष्ण-वचनामृत (प्रथम भाग) स्वामी विवेकानन्द जी के भाषण। देवी चौधरानी, आनन्द मठ, दुर्गेश नन्दिनी, युगलांगुलि या वात्स्यायन काम सूत्र तथा तुलसी रामायण की टीका व गोविन्ददास-पदावली (पद्य में) इनके अनूदित ग्रन्थ हैं। ये समन्वय और मतवाला नामक पत्रों के सम्पादक भी रहे। द्विवेदी जी से इन्हें पर्याप्त प्रोत्साहन प्राप्त होता रहता था। संवत् २००३ में काशी नागरी प्रचारिणी सभा में इनकी जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई गई थी। अत्यन्त भावुक और कर्मयोगी यह कवि आर्थिक संकटों के कारण जीवन से उदास हो कर अब शारीरिक और मानसिक शक्ति से शिथिल हो चुका है।

निराला जी स्वच्छन्द प्रकृति के कवि हैं और अपनी प्रकृति के अनुकूल ही कविता कामिनी को स्वच्छन्दता दे कर आपने उसका स्वाभाविक संगीतमय सौन्दर्य उद्भासित करने का प्रयत्न किया है। निराला जी के हम कई रूपों में दर्शन करते हैं। वे विचारों में अद्वैतवादी हैं, किन्तु इनका हृदय भक्ति और प्रेम का आगार है। अपनी कुछ रचनाओं में वे दार्शनिक विचारों की ओर उन्मुख जान पड़ते हैं। इनकी 'मैं और तुम' कविता इनकी दार्शनिक भावनाओं का परिचय देती है।

तुम गन्ध कुसुम कोमल पराग,
मैं मृदु गतिमय मलय समीर।
तुम स्वेच्छाचारी मुक्त पुरुष,
मैं प्रकृति प्रेम जंजीर॥
तुम शिव हो, मैं हूं शक्ति
तुम रघुकुल गौरव रामचन्द्र,
मैं सीता अचला भक्ति।

मनुष्य की सहज भावनाओं को उज्ज्वल स्थान देने का श्रेय निराला जी को ही है। हृदय में जब नये राग की लहर उठती है वह जैसे छलकती हुई पलकों और पलकों में छिप जाती है। स्नेह भरे नयनों की पलकें उठाकर वह प्रिय का मधुरासव पान करती है।

(शेष पृष्ठ ७० पर)

रोग से डरने की आवश्यकता नहीं !

[पृष्ठ ८ का शेष]

बहुत कम परवाह करते हैं। स्मरण रखिए, आपका शरीर एक अमूल्य खजाना है। यह एक से एक कीमती पुर्जों से बना है, इसमें ऐसी विचित्रतायें भरी हैं कि एक बार नष्ट होने पर उन्हें पुनः नहीं बनाया जा सकता।

शरीर के प्रति हमारे अत्याचार असंख्य हैं। नेत्र सूर्य की प्राकृतिक रोशनी में कार्य करने के लिए विनिर्मित हैं। किन्तु हम दिन में तो सोते हैं, रात में विद्युत की तेज रोशनी में पढ़ते हैं, सिनेमा देखते हैं। समय से पूर्व ही उन्हें बेकार कर देते हैं। दांतों से ऐसे अभक्ष्य पदार्थ खाते हैं, कभी गर्म, कभी अति शीतल चीजें चबा चबा कर उन्हें बेकार बना डालते हैं। पेट की बात ही न पूछिए। मिर्च, मसाले, बासी पूरी, कचौड़ी, मिठाई, खटाई, मद्य, मांस, चाय काफी न जाने कितने राजसी पदार्थ भक्षण कर हम अग्निमांद्यता के शिकार होते हैं, तम्बाकू खाना, पान बीड़ी, भांग, चरपरे तैलयुक्त गरिष्ठ पदार्थ पेट में भर कर असमय ही उनकी पाचन शक्तियां क्षीण कर देते हैं। मादक द्रव्य तो प्रत्यक्ष विष है। कौन नहीं जानता की चाय, काफी, कोको, चरस, शराब, चंडू चाय' आग बुरी है? शोक ! महाशोक ! जानते बूझते हम अपने पेट को बेकार करते हैं।

मनोविकारों का जाल

मन तथा मस्तिष्क के प्रति हमारे अत्याचार इससे भी अधिक बढ़े हुए हैं। राजसी और तामसिक आहार से वैसे ही विचार उत्पन्न होंगे। तामसी आहार से मन चंचल, कामी, क्रोधी, लालची और पापी बन जाता है। चाहे हम कितनी भी साधना एकाग्रता का अभ्यास करें, किन्तु तामसी आहार से स्वयं रोग शोक, दुःख दैन्य वेग से बढ़ते हैं और मनुष्य का पुरुषार्थ घटता है, सौभाग्य दूर भागता है, सामर्थ्य न्यून होती है।

मनोविकारों की उत्तेजना से दाहक रस बढ़ते हैं। मनोविकारों के द्वन्द्व से हमारी मानसिक सृष्टि तथा से सम्बद्ध ही कर रोगों की अनेकरूपता उत्पन्न करती हैं। मनोविकार हमारे रक्त में अनेक प्रकार के रसायनिक परिवर्तन किया करते हैं।

हमेशा किसी मनोविकार के वशीभूत रहने से अनावश्यक संघर्ष मन में चलता रहता है। भय, क्रोध, घृणा, ईर्षा, प्रतिहिंसा, क्षोभ, कामना इन पर नियंत्रण न होने से मनुष्य उद्विग्न चित्त बना रहता है। इच्छाओं की विभिन्नताओं के अनुसार मनोविकारों की अनेक रूपता का विकास होता है। प्रत्येक मनोविकार अपनी जटिलता उत्पन्न कर शारीरिक विकार का कारण बनता है। अप्राकृतिक अनहोनी कल्पनाएं, पुरानी दुःखद स्मृतियें, दूषित वासनाएं दाहक तत्वों की अभिवृद्धि किया करता हैं। अपने आप पर किए गए इन अत्याचारों के हम स्वयं जिम्मेवार हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि हम स्वयं ही रोगों को निमन्त्रित करते हैं और स्वयं ही उन्हें दूर भी कर सकते हैं।

संघ वस्तु भण्डार की पुस्तकें

जीवन चरित्र परम पूज्य डा० हेडगेवार जी	मू० १)
,, ,, गुरुजी	मू० १)
हमारी राष्ट्रीयता ले० श्री गुरुजी	मू० १।।)
प्रतिबन्ध के पश्चात् राजधानी में परम पूज्य गुरुजी	मू० ।=)
गुरुजी - पटेल - नेहरू पत्र व्यवहार	मू० ।)

डाक व्यय अलग

पुस्तक विक्रेताओं को उचित कटौती

संघ वस्तु भंडार, झण्डेवाला मन्दिर नई देहली १

वीर अर्जुन
सचित्र साप्ताहिक

४
आना

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार २३ बैसाख सम्वत् २००८ [अङ्क २

मध्य पश्चिम में दूसरा कोरिया

कोरिया ने पूर्व में जो अन्तर्राष्ट्रीय संकट उत्पन्न किया है, वह संयुक्त राष्ट्र संघ के अब तक के तमाम प्रयत्नों के बावजूद हल होने के बदले उलझता ही जा रहा है। यह ठीक है कि दृढ़ कोरिया की भूमि से आगे नहीं बढ़ पाया, किन्तु इतने से निश्चिन्तता किसी राष्ट्र को सान्त्वना प्राप्त नहीं कर सकते। कोरिया की सीमा में रहते हुए भी चीनी सेनाओं ने उत्तरी कोरिया की सहायता करके वस्तुतः युद्ध का क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय कर दिया है। इन दिनों कम्यूनिस्टों ने जो नया आक्रमण दक्षिणी कोरिया पर किया है वह किसी भी अमेरिकन सेनाओं को चीन पर आक्रमण के लिए विवश कर सकता है। यही कारण है कि आज अमेरिका, इंग्लैण्ड तथा रूस सभी अपने सैनिक व्यय बुरी तरह बढ़ा रहे हैं।

कोरिया की समस्या एक ओर सुलझने के बजाय उलझती जा रही है, दूसरी ओर मध्यपूर्व (भारत के लिए मध्य पश्चिम) में नया कोरिया बनने की सम्भावनाएं बढ़ती जा रही हैं। ईरान का तेल करीब एक शताब्दी से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के निर्माण में विशेष भाग लेता रहा है। इंग्लैण्ड ने वहां के तेल के व्यवसाय पर किस तरह प्रायः एकाधिकार कर लिया, इसकी चर्चा करने का यह उपयुक्त स्थान नहीं है, किन्तु इसने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को और भी अधिक उलझा दिया। ईरान की राजनीति रूस, अमेरिका और इंग्लैण्ड की चालों का केन्द्र बन गई। इंग्लैण्ड के विरुद्ध वहां प्रबल लोकमत खड़ा किया गया। ईरान की राजधानी में नित नये उपद्रव होने लगे। तेल कम्पनी में व्यापक हड़ताल हुई, कभी एक प्रधान मन्त्री मारा गया, तो कभी दूसरे प्रधानमन्त्री को त्यागपत्र देना पड़ा। तेजी से बदलते हुए घटनाचक्र का अन्तिम परिणाम यह हुआ है कि ईरान की संसद् ने तेल-व्यवसाय के पूर्ण राष्ट्रीयकरण का निश्चय कर लिया और वहां के शाह ने उस पर अपनी मुहर लगा दी। इस सम्बन्ध में इंग्लैण्ड ने जितने अभि-प्रयत्न किये उनका कोई परिणाम अभी तक नहीं निकला। यद्यपि यह निश्चय ईरानी संसद् ने किया है, तथापि यह सम्भावना की जा सकती है कि इंग्लैण्ड के विरोधी राष्ट्र का इसमें अप्रत्यक्ष हाथ अवश्य होगा।

इंग्लैण्ड की अरबों रु० पूंजी ईरान के तेल संशोधन व निकासी में लगी हुई है। इससे उसे करोड़ों रु० प्रतिवर्ष लाभ होता है। आर्थिक दृष्टि को छोड़ भी दें, तो सामरिक दृष्टि से भी तेल आज अनिवार्य आवश्यकता है। इस तेल के स्वामित्व से हीन इंग्लैण्ड एकदम पंगु हो जायगा, उसकी प्रतिष्ठा को तो गहरा धक्का लगा है। वह यों ही सरलता से अपना अधिकार छोड़ना नहीं चाहेगा। किसी भी स्थिति का मुकाबला करने के लिए उसने एक क्रूजर ईरान की खाड़ी में भेज दिया है। यों वह इस समस्या को बातचीत के सहारे हल करने का प्रयत्न करेगा। अरबों रु० की विदेशी पूंजी को किस प्रकार अदा किया जाय, यह भी एक विकट समस्या है। यदि कोई सूरत न निकली, तो यह असम्भव नहीं है कि ईरान का यह झगड़ा कोई विकट रूप धारण कर ले और यदि यह हो गया, तो रूस इस सम्बन्ध में उदासीन नहीं रह सकेगा और भारत के मध्य पश्चिम में नया कोरिया बनने की सम्भावना बहुत दूर की चीज नहीं कही जा सकती।

★★

उचित परामर्श

पिछले दिनों में दिल्ली में हिन्दुस्तानीय राष्ट्रीय मजदूर सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री खण्डूभाई देसाई ने देश के मजदूर वर्ग को एक सलाह दी थी कि आज देश की सबसे प्रधान आवश्यकता है उत्पादन में वृद्धि। और इसकी जिम्मेवारी जहां दूसरों पर है, वहां मजदूरों पर भी कम नहीं है। मजदूरों के लिए अपना जीवन अर्पित करने वाले श्री गुलजारीलाल नन्दा ने भी यही सलाह दी। उन्होंने कहा कि जब तक हमारे उद्योग धन्धे उत्पादन की मात्रा काफी नहीं बढ़ा लेते, तब तक उनके राष्ट्रीयकरण की चर्चा भी नहीं करनी चाहिए। पहले उत्पादनवृद्धि और फिर राष्ट्रीयकरण। वस्तुतः राष्ट्रीयता का यही तकाजा है। सरकारी धन्धे तो यों ही बहुत अधिक व्यय से चलते हैं और इसलिए यदि उत्पादन बढ़ाना हो, उसका लागत व्यय कम करना हो तो यह आवश्यक है कि उद्योगपतियों को प्रतिस्पर्धा द्वारा व्यय के कम करने और उत्पादन बढ़ाने का अवसर दिया जाय। इसके बाद फिर उद्योगों के राष्ट्रीयकरण पर विचार करने का समय आयगा। आज तो मजदूरों के लिए भी एक ही कर्तव्य है कि वह अपना उत्पादन बढ़ावें।

रवीन्द्र की स्मृति

कविवर रवीन्द्र इस सदी के उन महापुरुषों में थे, जिन्होंने भारत की कीर्ति विश्व भर में फैलाने में प्रमुख भाग लिया। उनकी साहित्य सेवा उनकी प्रतिभा, उनकी भारतीय विचारधारा और जीवन के प्रति भारतीय दृष्टिकोण ही नहीं, देश के प्रति उत्कट प्रेम ने सभी उनके जीवन को महान बना दिया था। उनकी जयन्ती इस सप्ताह आती है और यह प्रसन्नता की बात है कि भारत सरकार ने विश्व भारती के उनके सच्चे स्मारक को एक महान विश्वविद्यालय बनाने का निश्चय किया है और संसद् ने इसी सप्ताह इस सम्बन्ध में विधेयक पास कर दिया है। हम उनके दृष्टिकोण को अपना लें तो यह उनकी सच्ची स्मृति होगी।

अपमान असह्य है

प्रत्येक भारतीय पं० जवाहर लाल की उस घोषणा का स्वागत करेगा, जिसमें उन्होंने कहा है कि भारत अन्न के लिए परमुखापेक्षी है, वह दूसरों से अन्न की सहायता मांगने को विवश है। किन्तु इसके साथ ही मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि हम किसी ऐसी शर्त पर अन्न स्वीकार नहीं करेंगे, जो हमारे राष्ट्र के लिए अपमानजनक हो और जिससे हमारी आन्तरिक व अन्तर्राष्ट्रीय नीति में जरा भी बाधा आय। सचमुच यह घोषणा आज की अनिवार्य आवश्यकता थी। हमारा अन्न संकट का लाभ उठा कर कुछ राष्ट्र हम पर ऐसी शर्तें लादने का प्रयत्न कर रहे हैं, जो हमारे सम्मान के लिए घातक हैं। सम्मान की रक्षा करने का प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए पं० नेहरू की घोषणा का स्वागत प्रत्येक भारतीय करेगा, किन्तु इससे प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य और भी बढ़ जाता है कि वह अन्नसंकट दूर करने में पूर्ण सहयोग दे।

आचार्य कृपलानी और कांग्रेस

जब यह अंक पाठकों के हाथों में पहुंचेगा, तब तक आचार्य कृपलानी और उनका प्रजातन्त्रीय मोर्चा कांग्रेस से सम्बन्ध रखने न रखने का निश्चय कर चुका होगा। किसी संस्था में रहने या न रहने का प्रत्येक को अधिकार है। नीति के सम्बन्ध में अपने मतभेद रखने की भी स्वतन्त्रता प्रत्येक नागरिक को है, किन्तु हमें बहुत प्रयत्न करने पर भी यह बात समझ में नहीं आई कि आचार्य कृपलानी और श्री टण्डनजी में क्या मौलिक मतभेद है। दोनों कांग्रेस में फैले भ्रष्टाचार के विरोधी हैं दोनों सरकारी व्यय में आडम्बर के विरोधी हैं, दोनों आर्थिक नीति में गांधीवाद के समर्थक हैं। फिर इतने तीव्र मतभेद का आधार वैयक्तिक के अतिरिक्त क्या है, यह समझ में नहीं आता? आचार्य कृपलानी के दल में जो कांग्रेसी गये भी हैं, वे भी सभी दूध के धुले हुए नहीं हैं। उन पर भी वही आक्षेप लगाए जाते हैं। आचार्य कृपलानी आज भावावेश में बह गये हैं। रचनात्मक कार्यक्रम में अपना जीवन अर्पित करके तथा वैयक्तिक प्रतिस्पर्धा से ऊपर उठ कर यदि वे सरकार को रचनात्मक सुझाव देते, तो देश में उनका मान अधिक बढ़ जाता। फिर भी यदि कांग्रेस व सरकार उनके सुझावों को स्वीकार न करे, तो वे एक पृथक दल बना सकते थे। उनकी इसमें अधिक शोभा थी।

घातक निर्णय की चुनौती

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने हिंदी की रक्षा के लिए पंजाब सरकार के गत निर्णय को सत्याग्रह द्वारा चुनौती देने का निश्चय किया है, जिससे पंजाब दो साम्प्रदायिक भागों में विभक्त हो जाता है। हिन्दी और पंजाबी दोनों पंजाब की भाषाएं हैं किन्तु इसके आधार पर किसी तरह प्रान्त विभाजन न उचित है और न दूरदर्शितापूर्ण ही। इसके साथ ही आज कोई भाषा प्रत्येक नागरिक पर लादने को भी प्रवृत्त हानिकारक है। पंजाब के प्रत्येक नागरिक को अपना इच्छानुसार किसी भी भाषा में पढ़ने का अधिकार होना चाहिए। सिर्फ आवश्यकता यह है कि छोटे या बड़े प्रत्येक सरकारी नौकर के लिए दोनों भाषाओं का ज्ञान जरूरी हो ताकि जनता को किसी प्रकार का सरकारी कार्य में कठिनता न हो। इसके विपरीत यदि सरकार दो भाषाओं के आधार पर प्रान्तविभाजन करती है अथवा कोई भाषा नागरिक पर लादती है, तो यह अन्याय है और इस के विरुद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में हिन्दी भाषी विरोध करेंगे। आशा है, पंजाब सरकार अप्रिय स्थिति आने से पूर्व ही अपनी नीति में उचित संशोधन कर लेगी।

भारतीय संस्कृति का स्वरूप-(२)

★ श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

[५]

सत्यनिष्ठा

जब अंग्रेज पहले पहल भारत में आये और राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने लगे, तब उन्हें ऐसे भारतीयों से वास्ता पड़ा, जो शताब्दियों की दासता और विदेशियों के सम्पर्क के कारण बहुत गिर चुके थे, उनमें भारतीयता का लगभग अभाव हो गया था। उस समय अमीचन्दों और मीर जाफरों का जोर था। ऐसे निर्बल चरित्र वाले व्यक्तियों पर विजय पाना कुछ कठिन नहीं था। अंग्रेज जीत गये, और उन्होंने हारे हुए हिन्दुस्तानियों के विषय में बहुत बुरी सम्मति बनाई। लार्ड मैकाले और उसी दिमाग के अन्य अंग्रेजों ने सामान्य रूप से हिन्दुस्तानियों और विशेषतः बंगालियों के विषय में जो सम्मति बनाई, उसका मूल कारण उस समय का गिरा और गिरी हुई संस्कृति ही थी।

जब तक योरोप के लोग उस समय के वर्तमान भारत को देख कर भारतवर्ष और भारत वासियों के सम्बन्ध में राय बनाते रहे, वह भ्रम में ही रहे, और इस देश की संस्कृति के असली रूप को न समझ सके, परन्तु ज्योंही उन लोगों ने प्राचीन साहित्य और इतिहास में प्रवेश किया, त्यों ही उनकी सम्मति में परिवर्तन आ गया। जो परिवर्तन आया, वह प्रो० मैक्समूलर के 'भारत हमें क्या सिखा सकता है?' इस नाम की पुस्तक में स्पष्ट रूप से प्रतिपादित है, प्रो० मैक्समूलर ने जब वाल्मीकि रामायण पढ़ी और उसमें राम-सीता, लक्ष्मण और हनुमान के चरित्रों का चित्रण देखा, तब वह आश्चर्य में पड़ गये, और भारतवासियों की सत्यनिष्ठा के सामने उनका सिर झुक गया। ऋत और सत्य की जो व्याख्या वेदों में की गयी है, उस पर मैक्समूलर मुग्ध हो गये, और अपनी पुस्तक में भारतीय सभ्यता और संस्कृति की ऐसी सुन्दर व्याख्या की कि योरोप के लोग चमत्कृत हो गये।

यद्यपि मध्यवर्ती इतिहास में अनेक कारणों से सत्यनिष्ठा की निर्मल धारा मन्द हो गई, फिर भी भारतीय संस्कृति का स्थायी भाव कभी नहीं बदला। वह धारा प्राचीन, मध्य और अर्वाचीन समयों में से गुजरती हुई अनेक प्रकार के प्रभावों से प्रभावित होती रही, परन्तु वर्तमान काल तक भी भारतवासियों की मौलिक भावनायें उस सत्य द्वारा अनुप्राणित हैं, जिसका स्थूल रूप हमें वाल्मीकीय रामायण में चित्रित रामचरित में मिलता है। एक लम्बे वर्षों की दासता के पश्चात् यदि देश फिर स्वतन्त्र हुआ है तो वह सत्य की पुकार के कारण से ही हुआ है। महर्षि दयानन्द ने सिखाया था कि मनुष्य का सर्वप्रथम धर्म यह है कि वह सत्य के ग्रहण करने और असत्य का परित्याग करने के लिए सदा उद्यत रहे। महात्मा गांधी ने अपना समस्त जीवन सत्य की खोज में लगाया, और सत्य को ही अपना मार्गदर्शक बनाया। उन्होंने भारत की आन्तरिक हृदयतन्त्री पर टंकार दी। उसी का परिणाम यह हुआ कि भारतवर्ष संसार को शांतिमय क्रांति का चमत्कार दिखला सका।

[६]

हृदय की उदारता

भारतीय संस्कृति की दूसरी विशेषता है, उदारता। "वसुधैव कुटुम्बकम्" मनुष्य का असली परिवार मनुष्यमात्र है। "आत्मवत्सर्वभूतानि" सब प्राणियों को अपने समान समझो। यह हृदय की विशालता और उदारता ही मानो शरीरधारिणी बन कर मर्यादा पुरुषोत्तम राम में अवतीर्ण हो गई थी। वह नर्तिकाल के दुःख में हिस्सा बंटा सकते थे, दूसरों की निर्बलता को क्षमा कर सकते थे और शत्रु को भी अपनी गोद में बिठा सकते थे। वह वीर थे और वस्तुतः वीर पुरुष ही उदार भी हो सकता है। शत्रु में आये को अभयदान देना—यह हमारे प्राचीन धर्मशास्त्र का एक आवश्यक आदेश था। मध्यकाल में हमारी इस उदार भावना को बहुत ठोकरें लगीं, क्योंकि हमारे देश के क्षत्रियों की उदारता से धूर्त शत्रुओं ने अनुचित लाभ उठाया, परन्तु वहां ठोकर लगने का मुख्य कारण उदारता नहीं थी, अपितु असावधानता था। उसे कोई अच्छा कहे या बुरा—हृदय की उदारता हमारी संस्कृति का एक आवश्यक अंग है। जब कभी हमने उसका परित्याग किया है तभी दुःख उठाया है। हमारी जाति में जात-पात का जहर अनुदारता के कारण से ही हुआ। अनुदारता से कायरता उत्पन्न होती है। हमारा यह समझना कायरता का ही परिणाम है कि किसी विधर्मी के छूने से हमारा मन्दिर भ्रष्ट हो जायगा, या हमारी स्वाध्याय वेदी अपवित्र हो जायगी। होना तो यह चाहिए कि जो व्यक्ति हमारे सम्पर्क में आये वह पवित्र हो जाय, न कि यदि कोई हमें छू जाय तो हम अपवित्र हो जाय। ऐसी कायरता की भावना हमारी संस्कृति के मौलिक विचारों के प्रतिकूल है।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

संविधान के खिलवाड़ ठीक नहीं

किसी भी संविधान का मूल्यांकन उसके द्वारा दिए गए आधारभूत अधिकारों से किया जाता है। आधारभूत अधिकार संविधान की आत्मा होते हैं। जिनके अभाव में संविधान शून्य है, उठा कर एक ओर रख देने योग्य हैं।

जिस संविधान से आधारभूत अधिकारों का अपहरण कर लिया जाता है, वह फिर संविधान नहीं रहता।

निश्चय ही जो संविधान जनता के आधारभूत अधिकारों का संरक्षण एवं समर्थन करता है उसी संविधान का जनता भी संरक्षण एवं समर्थन करती है।

ज्ञात हुआ है कि भारत सरकार संविधान में कई संशोधनों पर विचार कर रही है। ये संशोधन एक संशोधक विधेयक में प्रस्तुत किये जायेंगे जिसके मई के अन्त तक, संसद् के स्थगित होने से पूर्व ही, स्वीकार कर लिए जाने की सम्भावना है।

दुर्भाग्यवश प्रमुख संशोधन आधारभूत अधिकारों से ही सम्बन्धित है!

लेखक

किया गया है। सार्वजनिक हितार्थों का विशिष्ट रूप ही प्रजातन्त्र कहलाता है। अतः आधारभूत अधिकारों में परिवर्तन के लिए [illegible] करना नैतिक ही नहीं, वैधानिक भी है। इसीलिए इसको डा० अम्बेडकर के शब्द में रख दिया गया

आधारभूत अधिकारों में परिवर्तन अनुचित

विषय की गम्भीरता

वैसे हम कोई विधान शास्त्री होने का दावा नहीं करते किन्तु हमारा स्पष्ट मत है कि आधारभूत अधिकारों का अपहरण अथवा इनकी काट-छांट संविधान के जीवन के साथ ही साथ देश की सार्वजनिक शांति से भी खिलवाड़ होगा। जिस प्रकार संविधान रूपी पौधे में, हाल ही रोपे जाने के फलस्वरूप जन-जीवन के आधारभूत अधिकारों के रसास्वादन की एक दो कोंपलें ही फूट पाई हों, उस पौधे को अपनी जड़ें गहरी जमा लेने के पूर्व ही उखेड़ कर उखाड़ देना ठीक उसी प्रकार होगा—जैसे कोई बालक नए रोपे हुए पौधे को झाड़-झाड़ उखाड़ कर देखता हो और पुन-पुन रोपता हो वह अधिकाई निरर्थक बहुलबुद्धिकापूर्ण होती है। संविधान के निर्माण और परिवर्तन को ऐसी अधिकाई का शिकार कदापि न होने दिया चाहिए। यह एक गम्भीर बात है जिसका गम्भीरता से विचार किया जाना चाहिये।

आधारभूत अधिकारों का महत्व

हमारा यह कहना नहीं है कि संविधान में परिवर्तन नहीं किया जा सकता, हम तो यह बतलाना चाहते हैं कि संविधान में ऐसा कोई परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिये जो प्रमुख आधारभूत अधिकारों का हनन करता हो। आधारभूत अधिकारों का उपभोग करना मानवीय जन-जीवन का अहम् निर्णय है जिसको संविधान की धाराओं में केवल लिपिबद्ध

यह अत्यन्त स्पष्ट है कि यदि देश की जनता को आधारभूत अधिकारों से वंचित किया गया—जो जनता के जीवन सिद्धान्त हैं, तो उसकी तीव्र प्रतिक्रिया यही होगी कि "अराजकता और अव्यवस्था फैल जायगी।"

तानाशाही के बीज

भाषण स्वातन्त्र्य के अधिकार की मान्यता देने वाली धारा १९ (१) (ए) के लिए दो संशोधनों का प्रस्ताव है जिनके समर्थन विदेशों से मैत्री सम्बन्धों अथवा सार्वजनिक शांति के हित में भाषण स्वातन्त्र्य पर प्रतिबन्ध लगाया जा सकता है।

यह कदापि वांछनीय नहीं है। प्रस्तुत संशोधन राज्यकर्ताओं को मनमाने अधिकार देने वाले हैं। वे अपने राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वियों पर यह कह कर कि उनके भाषणों से विदेशों के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों तथा देश की सार्वजनिक शांति के भंग होने की सम्भावना है, भाड़े प्रतिबन्ध लगा सकते हैं। यह जनतन्त्र नहीं है। यह स्पष्ट तानाशाही है, वर्तमान राज्यकर्ता, जो अपने राजनैतिक प्रतिद्वन्द्वियों के दमन करने के आदी हो गये हैं और जिसके एक नहीं अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए यह संशोधन प्रस्तुत कर रहे हैं, [illegible] [illegible] जो [illegible] [illegible] [illegible] नहीं [illegible] [illegible]

[शेष पृष्ठ २१ पर]

अपना सम्मान बेच कर भारत अन्न नहीं लेगा

पं० जवाहरलाल नेहरू

एक ओर तो हमें विस्तृत क्षेत्रों में अकाल की स्थिति होने तथा भूख से लोगों के मरने के अतिरंजित समाचार मिल रहे हैं। और दूसरी ओर स्थिति की गम्भीरता को कम बताने का प्रयत्न किया जा रहा है। सच बात इन दोनों के बीच में है। स्थिति काफी बुरी है। आज भारत में, विशेषकर बिहार तथा मद्रास में, ऐसे विस्तृत क्षेत्र हैं जहां खाद्य की कमी है, और लोगों को पर्याप्त मात्रा में अन्न नहीं मिल रहा। इससे लोगों का बराबर अल्प पोषण हो रहा है। इस समय वास्तविक अकाल की स्थिति अधिक व्यापक रूप में उत्पन्न हुई है, किन्तु फिर भी, अकाल का भूत निश्चय ही देश पर मंडरा रहा है।

तब फिर, हम, इस सम्बन्ध में क्या करने जा रहे हैं। हम सबको इस आपत्ति का सामना करने के लिए कमर कसनी होगी है। हम में से हर एक को समझ लेना चाहिए कि क्या हो रहा है और क्या होने वाला है। इस दुर्घटना से बचने के लिए हर व्यक्ति को अपना कर्त्तव्य करना आवश्यक है। आओ हम सब मिलकर अकाल के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दें।

यह राजनीतिक अथवा अर्थशास्त्र का प्रश्न नहीं है जिस पर किसी प्रकार का मतभेद हो सके। केवल बुद्धिहीन व्यक्ति ही इस स्थिति से राजनीतिक लाभ उठाने का यत्न करेगा। यदि हम इस मामले को एक साथ मिल कर नहीं निपटा सकते, तो निश्चय ही समझ लेना चाहिये कि हम लोग — स्त्री और पुरुष — बहुत ही क्षुद्र व्यक्ति हैं। जो किसी भी संकट का सामना नहीं कर सकते।

दूरस्थ देशों से अन्न मंगाने की हमने भरसक चेष्टा की है। हमने अपनी सामर्थ्य भर विदेशों का अन्न खरीदा है और इस मूल्यवान पदार्थ से भरे जहाज पर जहाज इस देश में पहुंच रहे हैं। किन्तु फिर भी पर्याप्त अन्न नहीं है और हम अधिक अन्न प्राप्त करने का यत्न कर रहे हैं। अमेरिका के प्रति जिसे अन्न का वृहत् भंडार रखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और जिसने अन्न के परिवहन के लिए हमें जहाज भी प्रदान किये हैं, चीन के प्रति जिसने स्वयं अपनी आवश्यकताओं की परवा न करके हमें अन्न भेजा है तथा अधिक भेजने जा रहा है, और रूस के प्रति जो आशा है, शीघ्र ही हमारे लिए गेहूं भेजेगा — हम विशेष रूप से आभारी हैं। जिन देशों ने जहाजों की जो सहायता हमें प्राप्त की है, हम उसका भी समुचित समादर करते हैं। हम विभिन्न देशों के भी आभारी हैं, जो इस कार्य में हमारी भरपूर सहायता कर रहे हैं।

असम्मानीय शर्तें अस्वीकार्य

किन्तु विदेशों से यह सब सहायता प्राप्त करते हुए भी हमने स्पष्ट कर दिया है कि इस सहायता का कोई राजनीतिक अभिप्राय न होना चाहिये, उसके साथ ऐसी कोई शर्तें न लगी होनी चाहिये, जो किसी स्वाभिमानी राष्ट्र के लिए अस्वीकार हों और उसके साथ इस प्रकार का कोई दबाव न रहना चाहिये, जिसका अर्थ हमारी घरेलू अथवा अन्तर्राष्ट्रीय नीति में परिवर्तन कराना हो। किसी ऐसी वस्तु के लाभार्थ भी, जिसकी हमें अत्यधिक जरूरत है, यदि हम अपने देश के स्वाभिमान अथवा कार्य-स्वातन्त्र्य को बेचने का किंचित भी प्रयत्न करें, तो हम उस महान दायित्व के सर्वथा अयोग्य सिद्ध होंगे जो हमें सौंपा गया है।

खतरे की बात

हमने विदेश से अन्न की सहायता ली है और आवश्यकताओं से विवश होकर आगे भी लेते रहेंगे। किन्तु मेरा यह विश्वास अधिकाधिक दृढ़ होता जा रहा है कि अन्न के लिए इस प्रकार विदेशों पर अवलम्बित रहना बहुत बड़े खतरे की बात है। यदि इस प्रकार सदा हम विदेशों पर आश्रित रहें, तो हम एक पूर्ण स्वतन्त्र राष्ट्र की भांति कभी कुछ न कर सकेंगे।

खाद्य सम्बन्धी आत्मनिर्भरता प्राप्त करके ही हम शान्ति कर सकते हैं और अपनी नीति को प्रभावशाली बना सकते हैं।

बचत वाले राज्य अन्न दे सकते हैं

आज भारत में ऐसे बहुत से क्षेत्र हैं, जहां अन्न की कमी है और उनमें से कुछ में दुर्भिक्ष की सी स्थिति है। साथ ही भारत के कुछ ऐसे भाग भी हैं जहां खाद्यान्न अधिकता से पैदा होता है। यदि समस्त भारत को मिलाकर विचार किया जाय तो खाद्यान्न की कमी इतनी अधिक नहीं है, जितनी कि समझी जाती है। समस्त भारत के खाद्यान्न को जुटा करके ही हम इस संकट का सामना कर सकते हैं। इस समय बचत वाले राज्यों या क्षेत्रों पर बड़ा भारी उत्तरदायित्व है क्योंकि जिन राज्यों या क्षेत्रों में खाद्य की कमी है, उन्हें बचत वाले राज्य ही अन्न दे सकते हैं। अब हमें केवल अपने ही विशेष राज्य के संकुचित दृष्टिकोण से इस समस्या पर विचार नहीं करना चाहिये और न हम पड़ोसी राज्य की वेदना भरी पुकार की उपेक्षा कर सकते हैं। अन्य मामलों की भांति इस मामले में भी भारत एक है और इसलिये हमें एक संगठित राष्ट्र की भांति अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिये।

अपराध व लज्जा की बात

हमें तत्काल अन्न प्राप्ति की आवश्यकता है, इसलिये हमें पहिले की अपेक्षा अधिक से अधिक अन्न प्राप्त करना होगा। इस समय यदि कोई व्यक्ति अन्न जमा करता है, या उसका सट्टा करता है वह अपराध और लज्जा की बात है।

बड़े आश्चर्य और दुःख के साथ मुझे यह पता चला है कि कुछ व्यक्ति अन्न प्राप्ति में रोड़े अटका रहे हैं और अन्न न देने के लिये जनता को भड़का रहे हैं। अन्न प्राप्ति प्रणाली में यदि कुछ दोष या त्रुटि है तो वे उसमें सुधार कर सकते हैं किन्तु प्राप्ति कार्य में बाधा डालना दुर्भिक्ष और मृत्यु को निमन्त्रण देना है। इसलिए अन्न प्राप्ति को प्राथमिकता देनी चाहिये।

सार्वजनिक निर्माण कार्य

कुछ क्षेत्रों में, विशेषकर बिहार और मद्रास के कुछ भागों में जहां अन्न की बहुत कमी है, बेरोजगारी बढ़ गयी है और लोगों की क्रय शक्ति घट रही है। इन क्षेत्रों में यदि अन्न उपलब्ध भी हो तो उसे खरीदने के लिये धन नहीं है। लोगों को काम दिलाने और उनकी क्रय शक्ति बढ़ाने के लिये इन क्षेत्रों में कुएं तालाब और सड़कें आदि सार्वजनिक निर्माण कार्यों का आरम्भ किया जाना आवश्यक है।

मनोवैज्ञानिक प्रभाव

इसका भौतिक प्रभाव अच्छा होगा, परन्तु मनोवैज्ञानिक प्रभाव उससे भी अधिक महत्वपूर्ण होगा। सबसे अच्छी बात यह होगी कि नई पीढ़ी के लोग इतने योग्य हो जावेंगे कि वे किसी भी कार्य को सरलता से कर सकेंगे। यदि वे अनुशासित और संगठित रूप से खाद्य उत्पादन और सहायता के कार्यों में जुट जावेंगे, तो राष्ट्र पर उसका बहुत प्रभाव पड़ेगा। ऐसा कार्य संगठन से ही हो सकता है।

हमारी 'अधिक अन्न उपजाओ' सम्बन्धी योजनाएं विशाल हैं। लोगों को भी अपनी छोटी छोटी योजनाएं बना कर पार्कों, बागों, सार्वजनिक संस्थाओं और निजी मकानों के आंगनों में अन्न उपजाने का प्रयत्न करना चाहिये।

शेष पृष्ठ १२ पर

अमेरिका हमें गेहूं देना चाहता है, किन्तु उसके बदले में………

शिवाजी उत्सव

सन १९९५ का प्रसग। स्वर्गीय लोकमान्य तिलकजी ने अखिल भारत मे श्री शिवाजी—उत्सव मनाने का आदेश दिया। किंतु शिवाजी के एक मरहठा होने के कारण विभिन्न प्रांतों के कुछ तत्कालीन लोगों ने उस बात का विरोध किया। इस पर विरोधियों का भ्रम निवारण करने के उद्देश्य से विश्ववंद्य कवि गुरुवर्य श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने उक्त कविता की रचना की। मूल कविता बगाली में है। उसका भावानुवाद यहा दिया जा रहा है—

"ज्ञात नहीं, कौनसी सुदूर शताब्दी के किस अप्रसिद्ध दिवस को, महाराष्ट्र के किस पर्वत शिखर पर, वन के सघन अंधकार में आसीन हे राजा शिवाजी! तेरे मस्तिष्क में यह भावना विद्युत्-द्युति सी चमक उठी कि—'खंडित, क्षुब्ध विच्छिन्न भारत को मैं एक धर्म राज्य सूत्र में बांध दूंगा'।

●

"उस दिन यह बंग प्रदेश अपनी सुषुप्तावस्था से जागृत नहीं हुआ। उसे यह संदेश सुनाई नहीं दिया। उसके प्रांगण में वह शंखनाद निनादित न हुआ। वह दौड़कर बाहर नहीं आया। अपने मृदुल, निर्मल, श्यामल उत्तरीय सिंधु का प्रान्तिक-जनसमूह संध्या समय में शान्त चित्त से अकसाते हुए पड़े रहे।

●

"तत्पश्चात् एक दिन, महाराष्ट्रप्रांत मे, तेरे खड्ग का नोक ने विद्युत् प्रकाश के समान जगमगाते हुए अक्षरों में, वह महामंत्र दिग्दिगांत में युग युग के लिये अंकित कर दिया। संध्या-प्रलय में पीत-पत्र के समान मुगलों का शिरस्त्राण उड़ गया। मरहठों की उस घनघोर गर्जना में निहित संदेश को बंगप्रदेश उस दिन भी न सुन सका।

●

"तत्पश्चात् झंझा से प्रक्षुब्ध रात्रि में दिल्ली के राजप्रासाद में सर्वत्र श्मशान सूनता छा गई। क्रमशः एक एक के प्रत्येक दीप का आलोक अंधकार में विलीन हो गया। शव लुब्ध गृद्धों की वीभत्स चीत्कार ने मुगल-महिमा की चिता रच दी। केवल मुट्ठी भर राख अवशेष रूप में शेष रही।

●

"उस समय इस बंग प्रदेशान्तर्गत बाजार हाट के किसी कोने में, वणिक-लक्ष्मी (अंग्रेज), अन्धकारपूर्ण सुरंग पथसे चुपके-चुपके, राजसिंहासन ले आई। बंग प्रांत ने अपने गंगोदक से उसका चुपचाप अभिषेक किया। वणिकों की तुला, देखते ही देखते राजदण्ड के रूप में परिवर्तित हो गई।

●

"उस समय हे भावुक मराठा वीर! तुम कहां थे? तुम्हारा नाम कहां था? तुम्हारी गैरिक ध्वजा कहां थी? वह उपेक्षा के कारण धूलिधूसरित हो रही थी। विदेशी इतिहास, चोर, डाकू कहकर अट्टहास के साथ तुम्हारा उपहास कर रहा था तुम्हारे पावन प्रयत्नों को सब लोग लुटेरों का निष्फल प्रयास, ही समझते थ!

"ओ इतिहास! ओ मिथ्याभाषी!! तुम अपनी कल्पना बन्द करो। विधि का अटल विधान, तुम्हारे लेखे पर अवश्य ही विजय पावेगा। जो अमर है, उसे तुम्हारी व्यंग्य वाणी दबा नहीं सकती।

सच्ची तपस्या को, कोई त्रैलोक्य में भी बाधा नहीं पहुंचा सकता, यह निश्चयपूर्वक जानें।

●

"हे राजतपस्वी वीर! (शिवाजी) तुम्हारी वह पवित्र भावना, विधाता के अक्षय भंडार में संचित की जा चुकी है। काल, उसका एक कण भी अपहरण नहीं कर सकता। तुम्हारा वह प्राणोत्सर्ग, स्वदेश-लक्ष्मी के मंदिर में की हुई वह प्रामाणिक साधना, किसी को भी ज्ञात नहीं, फिर भी वह भारत को, युग युग तक के लिये, एक अमूल्य धरोहर का रूप धारण कर चुकी है।

●

"जिस प्रकार वर्षा ऋतु में, पर्वतों के अंतस्तल से निर्झर फूट पड़ता है, उसी प्रकार राजयोगी! पर्वतों की गुफाओं में अप्रसिद्ध एवं अज्ञात रहकर, तुम अचानक ही प्रकट हुए। जिस पताका ने किसी समय, समस्त नभोमण्डल को व्याप्त कर लिया था, वही पताका इतने समय तक अदृश्य कैसे रह सकी, इसका आश्चर्य किस को विस्मृत हुआ

"बंग प्रदेश के प्रांगण में, तेरी जयभेरी का निनाद! यह अभूतपूर्व घटना देख, पूर्वीय भारत का शुष्क जैसा कवि भी उसी प्रकार विस्मित है!! तीन शताब्दियों की घनघोर तमिस्रा को भेद कर तेरा पुण्य प्रताप, आज नूतन किरणों के प्रकाश सा, प्राची को किस प्रकार पुनः आलोकित कर रहा है!!

"कितने शताब्दियों तक विस्मृति के गर्भ में रह कर भी सत्य कदापि नहीं मरता। उपेक्षित नहीं होता। अपमानित होने पर भी विचलित नहीं होता। आघातों में भी अटल-अविचल रहता है। जिसके सम्बन्ध में सब यही सोचते थे कि वह कभी का मृतप्राय हो चुका, वही सत्य, आज पूज्य अतिथि का वेश परिधान कर भारत के द्वार पर आ पहुँचा।

●

आज तुम्हारा वही मन्त्र, तुम्हारी वही विशाल दृष्टि, भविष्य की ओर एकाग्रता से निहार रही है। हे तपस्वी! तुम आज जो भी केवल अशरीरी तपो-मूर्ति धारण किये हुए हो, तो भी तुम महा शक्ति एवं कार्य ले कर आये हो।

●

"आज तुम्हारी ध्वजा नहीं। आकाश को निनादित कर देने वाला 'हर हर' का जयघोष नहीं। तुम्हारा सैन्य, अश्वदल, नाना शस्त्र, कुछ भी नहीं। केवल तुम्हारे पुण्यपावन नाम पर आवाहन करते ही बंग वासियों ने तुम्हें अपने हृदय सिंहासनों पर अधिष्ठित कर लिया है।

●

"तुम्हारा महत् पुण्य नाम, बिना युद्ध किये ही, बंग और महाराष्ट्र में एकता स्थापित कर देगा, इसकी कल्पना स्वप्न में भी किसी का नहीं थी। सुदीर्घ-काल तक अदृश्य रह कर, तुम्हारी तपस्या का तेज, अमरश्री के रूप में नूतन जीवन प्रदान कर रहा है। नूतन प्रभावें आ रहा है।

●

"हे धर्मराज! महाराष्ट्र प्रांत से एक दिन तुमने जब आवाहन किया था, उस समय एक राजा के नाते तुम्हें हमने पहिचाना नहीं। तुम्हारा सम्मान किया नहीं। उस भैरव रव के प्रति श्रद्धा व्यक्त की नहीं। तुम्हारे कृपाण की दीप्ति जब एक दिन बंग आकाश में चमक उठी तब उन घोर दुर्दिनों में उस ताण्डव-लीला का रहस्य, भय के कारण हम समझ न सके।

●

"हे अमर मूर्ति! आज तुम, समुज्ज्वल भाले से मृत्यु सिंहासन पर विराजमान हो। उस राजकिरीट की शोभा, उसकी दिव्य दीप्ति, कभी भी काल में लुप्त नहीं होगी। हे राजन्! सम्राट् के रूप में तुम्हें हमने आज पहिचाना। बंग-भूमि के आठ कोटि सुपुत्र आज राज-कर लेकर तुम्हारे सम्मुख खड़े हुए हैं।

●

"उस समय कथा श्रवण की नहीं; किन्तु आज तुम्हारा आदेश पाते ही मैं नतमस्तक होता हूं। तुम्हारा ध्यान कर अखिल भारत के जन जन, कंठ से कंठ, हृदय से हृदय लगा कर मिलेंगे। बैरागी के उत्तरीय की ध्वजा बना कर उसे फह-रायेंगे। 'भारत में एक धर्मराज्य स्थापित होगा'—इस महा वचन का हम आश्रय लेंगे।

●

"हे बंग वासियो! मरहठों के साथ शिवाजी की जय बोलो। 'शिवाजी महोत्सव' सम्पन्न करने के लिए मरहठों के साथ-साथ चलो। हे भारतवासियो! तुम भारत की पूर्व पश्चिम उत्तर-दक्षिण सभी दिशाओं से एकत्रित हो कर शिवाजी के पुण्य नाम के गौरव के आनन्द का अनुभव करो।"

भारतीय संविधान में संसद्

★ श्री गणेश वासुदेव मावलंकर

भारतीय संसद् के अध्यक्ष श्री गणेश वासुदेव मावलंकर का यह लेख संविधान के एक महत्वपूर्ण अंग पर प्रकाश डालता है। सामान्य पाठकों और विशेषत रत्न भूषण और प्रभाकर के छात्रों के लिए यह उपयोगी लेख होगा।

१९४६ में बनाई गई संविधान सभा ने बहुत सोच विचार कर जो संविधान बनाया वह गत वर्ष १९५० के २६ जनवरी से अमल में आ गया है, तथा हमारी संसद् ने इसके आधीन कार्य करना आरम्भ कर दिया है। भारत अब एक प्रभुत्व-संपन्न लोक तंत्रात्मक गणराज्य है, तथा न्याय, स्वाधीनता, समानता तथा भ्रातृत्व इसके आदर्श हैं।

वर्तमान संसद् अभी संक्रमण अवस्था में ही है और इस वर्ष नवम्बर-दिसम्बर में विधान-सभाओं के नये निर्वाचन देश में होने तक यही संसद् रहेगी। इस समय संविधान सभा ही संसद् के रूप में कार्य कर रही है। हमारे गणतंत्र का रूप संघीय है। इसमें एक केन्द्रीय विधान सभा होगी, जिसे संसद् कहा गया है तथा जिसके दो विभाग होंगे। पहले का नाम लोक सभा होगा, जिसमें वयस्क मताधिकार द्वारा निर्वाचित अधिक से अधिक ५०० सदस्य होंगे। दूसरा विभाग राज्य-परिषद् कहलाएगा, जिसके अधिक से अधिक २५० सदस्य होंगे। इनमें से कुछ तो भिन्न भिन्न विधान सभाओं द्वारा निर्वाचित होंगे और कुछ संविधान के अनुसार विशेष आधार पर नियुक्त किये जाएंगे।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक राज्य में एक विधान सभा होगी, जिसमें किसी में एक विभाग और किसी में दो विभाग होंगे।

राज्यों का उल्लेख संविधान की प्रथम अनुसूची के ए० बी० और सी० भागों में जिस प्रकार किया गया है, उसी के अनुसार उन्हें ए० बी० सी० राज्य कहते हैं। ए० भाग में वे राज्य हैं, जिनमें ब्रिटिश शासनकाल में विधान सभाएं थीं। बी० भाग में वे क्षेत्र, आते हैं, जिनमें देशी नरेश अब तक राज्य करते थे, जो अब भारत संघ का अंग बन गये हैं। बी० भाग की इकाइयां बनाने के लिए छोटी-छोटी अनेक रियासतें मिला दी गई हैं तथा जम्मू और काश्मीर, हैदराबाद तथा मैसूर आदि उसी भाग में अलग रखी गई है। सी० भाग में कुर्ग, अजमेर, कच्छ आदि वे क्षेत्र हैं, जिनमें पहले या अब सुविधा के लिए केन्द्रीय सरकार चीफ कमिश्नर द्वारा शासन करती रही है। ए० भाग के प्रत्येक राज्य में प्रधान गवर्नर होता है, तथा बी० भाग में राजप्रमुख।

केन्द्र व राज्य

भारत संघ में मिलने वाली विभिन्न इकाइयों के अधिकार और कर्त्तव्यों की योजना में केन्द्रीय इकाई और भारतीय इकाइयों के कर्त्तव्यों और अधिकार का विभाजन है। अखिल संघ के लिए व्यापक और महत्वपूर्ण विषय यथा सुरक्षा, यातायात, शिक्षा आदि सभी कई के स्वतन्त्र अधिकार-क्षेत्र के अंतर्गत हैं। जो विषय स्थानीय महत्व के हैं, यथा शांति और व्यवस्था, स्थानीय स्वायत्त शासन (लोकल सेल्फ गवर्नमेंट), शिक्षा, सफाई आदि प्रधानतः राज्यों के अधिकार क्षेत्र में हैं, भले ही वे राज्य ए० या बी० भाग के हों। कुछ विषय दोनों के ही अधिकार-क्षेत्र में आते हैं। यह इसलिए आवश्यक है कि एक से अधिक इकाइयों से सम्बन्धित विषयों का समन्वय हो सके और राज्यों का शासन समग्र संघ की शांति सुविधा और उन्नति के साथ-साथ चल सके।

राष्ट्रपति

केन्द्रीय शासन के प्रधान रूप में राष्ट्रपति के निर्वाचन का विधान है, जिनको कुछ विशेष संकटकालीन तथा शासन नीति के सम्पादन के हेतु ए० और बी० राज्यांशों से सम्बन्धित कुछ अधिकार प्राप्त हैं। राष्ट्रपति को सहायता और परामर्श देने के लिए एक मन्त्रिमण्डल होगा, जिसे वे केन्द्रीय विधान सभा के बहुसंख्यक दल में से चुनेंगे। मंत्रिमंडल संसद् के प्रति उत्तरदायी होगा और जब तक संसद् सदस्यों की बहुसंख्या का उस पर विश्वास रहेगा, तब तक वह कार्य करेगा।

न्याय की स्वतन्त्रता

संविधान में श्रेष्ठतम लोकतन्त्रीय पद्धतियों के प्रचलन की व्यवस्था की गई है। उसमें केन्द्रीय शासन को संसद् के प्रति उत्तरदायी बनाया गया है। किन्तु अदालतों की पूर्ण स्वतंत्रता भी निश्चित की है। न्यायाधीशों की स्वतन्त्रता तथा अधिकारपद की सुरक्षा के खास प्रबन्ध हैं। मंत्रिमंडल के प्रशासन पर उचित नियंत्रण रखने के लिए केन्द्रीय विधान सभा को चर्चा-मंडल का रूप दिया गया है तथा यह भी आदेश है कि प्रजा के न्याय और व्यावहारिक समानता की सुरक्षा के कारण सरकार की सब कार्रवाई कानून से चलेगी, किन्तु उस कानून के स्पष्टीकरण या अर्थ करने का अधिकार स्वतन्त्र अदालत पर ही छोड़ा गया है। ब्रिटिश इतिहास का विद्यार्थी जानता है कि उस देश में न्यायालयों ने ही स्वतन्त्रता का वितान बांधा। न केवल सरकार की, किन्तु संसद् की मनमानी पर इससे आवश्यक नियन्त्रण होता है। इससे सरकार की कार्रवाई कानून की सीमा में ही रहती है, क्योंकि कानून का अर्थ करने का अधिकार सरकार को नहीं वरन् वह एक तीसरे को ही प्राप्त है, जो सरकार से सम्बन्धित नहीं है तथा अपने स्वतन्त्र विचार प्रकट कर सकता है। देश के नागरिकों को संविधान में दिये गये मौलिक अधिकारों की रक्षा इसी प्रकार हो सकती है।

संसद् की अधिकार सीमा

यद्यपि केन्द्रीय विधान सभा, जिसे अब संसद् कहते हैं, सर्व प्रभुत्व सम्पन्न है, फिर भी उसे प्राप्त अधिकारों के प्रयोग में वह किसी विशेष सीमा के अन्दर कार्य कर सकती है। वैधानिक रूप में संविधान में संसद् परिवर्तन कर सकती है, परन्तु उसकी प्रणाली आदेशानुसार व सीमान्तर्गत ही होगी। उदाहरण के रूप में संसद् ऐसा कोई कानून नहीं बना सकती, जो संविधान में उल्लिखित मौलिक अधिकारों के प्रतिकूल हो। शायद आप कतिपय हाईकोर्टों के फैसलों से परिचित ही हैं, जो उन्होंने उन सुरक्षा कानूनों के बारे में दिये, जिनके द्वारा व्यक्तियों को बिना मुकदमा चलाये नजर बन्द करने की व्यवस्था थी। न्यायाधीश या जज इस लिए हटाए नहीं जा सकते तथा उनका भविष्य भी इससे कुछ खराब नहीं होता कि कोई मंत्री या विधान सभा उनके निर्णय से नाराज हो। जजों को सरकार की स्वेच्छा से हटाने के विरुद्ध विधान में संरक्षणात्मक आदेश है।

प्रजा के हित प्रशासन चलाने की सामान्य योजना के अनुसार संसद् प्रधानतः एक विधान सभा के रूप में कार्य करती है। वह कानून बनाती है, जिसकी सीमा के भीतर रह कर सरकार को अपना कार्य करना पड़ता है। किन्तु संसद् का केवल विधान बनाना ही काम नहीं है। वह स्वयं सरकार की कार्यवाही का कार्य अपने ऊपर नहीं लेती है, किन्तु उसे अन्य प्रकार से मार्गदर्शन कर सकती है तथा उस पर पूर्ण नियंत्रण रखती है।

वित्त सम्बन्धी विषयों पर संसद् का पूर्ण नियंत्रण होता है तथा उसकी स्वीकृति के बिना सरकार एक पैसा भी खर्च नहीं कर सकती, सिवाय उस समय जब कि कोई कानून से खर्चा करने का बोझ उस पर डाला गया हो। विनियोग कानून अप्रोप्रियेशन बिल के के रूप में और भी अधिक नियंत्रण करने की प्रथा है। संसद् द्वारा स्वीकृत सम्पूर्ण धन राशि तथा कुछ खास नियमों पर व्यय होने वाली राशि एक संचित कोष रूप रखी जाती है, जिसमें से संसद् की विभिन्न विषयों में पूरी स्वीकृति के बिना कुछ भी खर्च नहीं किया जा सकता। यह ध्यान में रखने की बात है कि वित्त अथवा धन-कोश के तात्पर्य में जनता पर कर लगाने की बात भी आती है, अत बजट को स्वीकृत करने का अधिकार लोक सभा को ही है, जिसमें सदस्यों का निर्वाचन सीधे वयस्क मताधिकार पर होता। राज्य परिषद् उसकी आलोचना कर सकती है, किन्तु इस सम्बन्ध में लोक सभा का निर्णय ही अन्तिम होता है।

और भी कई प्रकार हैं, जिनके द्वारा संसद् सरकार की कार्यपालिका पर अपना अधिकार और नियन्त्रण रखती है। जानकारी के लिए सदस्य मन्त्रियों से प्रश्न पूछ सकते हैं तथा प्रतिदिन प्रथम घण्टे में प्रश्नोत्तर ही चलते हैं, यहां तक कि इस समय का नाम प्रश्न समय ही पड़ गया है। बजट स्वीकृत करने से पूर्व सदस्य उसकी आलोचना करते हैं, जो दो प्रकार से होती है। प्रथम प्रकार समग्र बजट पर बहस का होता है, जहां वे सरकार की नीति की आलोचना कर सकते हैं, सुझाव रख सकते हैं, असन्तोष प्रकट कर सकते हैं और कटौती के प्रस्ताव कर सकते हैं तथा जिनके द्वारा वे विशिष्ट मांगों पर या विशिष्ट प्रश्नों पर बहस और टिप्पणी कर सकते हैं। इसके अलावा प्रत्येक मंत्रालय के साथ निर्वाचित सदस्यों की एक समिति होती है, जो वैसे तो सिद्धांत में सलाहकार के रूप में होती है, किन्तु नीति तथा खर्च पर अत्यधिक प्रभाव रखती है। एक अनुमान समिति अभी हाल में बनाई गई है, जो संसद् समिति के रूप में कार्य करती है। इसके अधिकार क्षेत्र का विकास होने की बहुत ही सम्भावना है। इसके द्वारा यह अपने प्रशासकार्य के अतिरिक्त सरकारी नीति में परिवर्तन करा सकेगी और व्यवस्था तथा व्यय पर नियंत्रण रखेगी। ये समितियां संसद् के सदस्यों को प्रशासन के विभिन्न अंगों से परि-

[शेष पृष्ठ १८ पर]

कहानी

★ देवकीनन्दन एम० ए०

''मुझे उपन्यास या कहानी न समझिये, हजारों दुखभरी घटनाओं में से एक घटना है, जिसका तनिक सा धुंधलापन शब्दों में समेट पाया है।'

माया ने पानी की बाल्टी गाय के आगे रख दी और स्वयं बेरी की छाया में बैठ कर विश्राम करने लगी। कल ही उसका भाई गणेश देहली से आया था। दसवीं कक्षा पास करने के पश्चात उसने बाप-दादे की भांति छोटी मोटी दूकान चलाने के स्थान में परदेश में भाग्य-परीक्षा की ठानी। भाग्य उसे देहली ले गया जहां वह किसी बैंक में नौकर हो गया। हर मास की तीसरी या चौथी तारीख को बूढ़ा डाकिया उनके दरवाजे पर दस्तक देता। ''गणेश का मनी आर्डर आया होगा'' यह कह कर माया का पिता हुक्का छोड़ द्वार की ओर लपकता।

फिर जो कुछ होता था माया को अच्छी तरह ज्ञात था। बूढ़ा डाकिया अपनी जेब से ऐनक की डिबिया निकालता जिसका गहरा नीला रंग अधिक प्रयोग से बिल्कुल उड़ चुका था। फिर चांदी की टूटी मुड़ी कमानियों वाली ऐनक को नाक के सिरे पर जमा कर एक नीले कागज पर कुछ लिखता और फिर कागज माया के हाथ में दे देता। चौधरी गुरदयाल पढ़े लिखे तो कुछ न थे परन्तु तहसील कचहरी के अनुभव होने के कारण हस्ताक्षर कर लेते थे। रुपये गिन कर चौधरी जी एक दुअन्नी बूढ़े डाकिये की ओर बढ़ाते और वह उसे मुस्करा कर स्वीकार कर लेता। वह दिन महीने का सुनहरा दिन होता था। दिन भर गणेश की योग्यता और आज्ञाकारिता के गुण गाये जाते विवाह के नातों पर ध्यान दिया जाता और शाम को खीर या हलवा बनता।

माया अपने विचारों के ताने बाने में ऐसी उदास थी कि उसे गरीब गाय का बिल्कुल ध्यान न रहा, जो पानी की बाल्टी समाप्त करके क्रोध में टांगें पृथ्वी पर पटक रही थी मानो कह रही हो ''आज केवल एक बाल्टी ही क्यों लाई हो, अभी मेरी प्यास नहीं बुझी।'' निर्दोष गाय की ध्वनि ने उसे चौंका दिया, जो सिर पर एक कुरूप बरतन रखे गोबर उठाने जा रही थी। माया बड़ी नम्रता से उठी, गाय के मस्तक पर प्यार से हाथ फिरा और फिर एक मंद गुनगुनाती हुई पानी लेने चली गई।

गणेश तीसरे पहर सो कर उठा तो सीधा बेरी की छाया में आ बैठा। उसके साथ वाली चारपाई पर माया खजूर के पत्तों से रंगी पिटारी बना रही थी। एक मिट्टी के बर्तन में हरे-पीले रंगे पत्ते पानी में भीगे पड़े थे। माया बड़े ध्यान से अपने काम में मग्न थी। उसकी सहेलियां दो पहर समाप्त कर अपने-अपने घर जा चुकी थीं। किन्तु वह आज इस सुन्दर पिटारी को समाप्त करना ही चाहती थी, जिसे वह भेंट रूप में अपने परदेशी भाई को देना चाहती थी। ''किस लिए बन रही है यह पिटारा?' गणेश ने पास बैठे हुए पूछा। 'तेरे लिए' और माया के भोले भाले मुख पर प्रसन्नता चमकने लगी। ''पगली कहीं की, यह पिटारी तो मैं अपने मैनेजर को दूंगा। अगले मास तरक्की होने वाली है।'' गणेश ने पत्तों वाला गिलास हाथ में घुमाते हुए कहा, ''ऊं हूं इतनी सुन्दर पिटारा मैं किसी को न देने दूंगी। इसमें तो तुम रुपये एकत्रित करना।' ''तेरे ब्याह के लिए?''

माया ने झेंप कर सूई गणेश के तलवे में चुभो दी। फिर दृष्टि झुका कर बोली। 'तुम्हारे अफसर के लिए मैं दूसरी पिटारी बना दूंगी।''

पश्चिमी पंजाब की सुहावनी सन्ध्या गणेश को बहुत प्यारी थी। देहली में जब शाम को वह अपने दफ्तर में बैठ रजिस्टरों और फाइलों में बड़ी बड़ी संख्याओं का जोड़ करता तो उसे अनायास अपने देश की याद आ जाती। लोहे की तिजूरियों की ध्वनियों से उसे भय प्रतीत होता था। विद्युत् के प्रकाश से उसकी आंखें जलने लगती थीं। आज वह फिर उसी दुर्भाग्य के वातावरण में बैठा था।

सूर्य की ज्योति कम होती जा रही थी। बेरी की छाया भी घनी हो गई थी। दोपहर को बन्द होने के पश्चात आटे की चक्की फिर चलने लगी थी। और उसकी किसी पक्षी की भांति 'कुक कुक' की ध्वनि वातावरण में गूंजने लगी थी। स्त्रियां काम काज में लग गईं और पुरुष कुओं और वृक्षों के नीचे दोपहर का भोजन खाने लगे। वातावरण बड़ा शान्त था। ऐसी शान्ति जो देहली के बाजारों और तंग व अन्धेरी गलियों में कभी देखने में नहीं आती। उसी समय गणेश के पिता व तहसील से लौटे हुए चले लिए पहुंचे और बड़े प्यार से बोले 'लो बेटा गणेश, अभी अभी मुंशी कर आया हूं, क्योंकि तुमने अपने पत्र में भुने हुए चनों का वर्णन किया था। तुम्हें याद है या नहीं? जो उससे तुम्हारी मां बहुत रोई थी'' और यह कहते चौधरी जी का हृदय भर आया।

माया ने दृष्टि काम से बिना हटाये ही कहा, 'भइया को गांव की 'पंजें'' भी तो बहुत याद आता है।' गणेश बड़े जोर से हंसा।'' सारी दिल्ली में हम इस मधुर फल का निशान भी नहीं मिलता।' उसने चने चबाते हुए कहा। माया के होठों पर हल्की सी मुस्कान उठी मानो कह रहा हो अगर दिल्ली में पंजें नहीं मिलती तो तुम्हें अपने गांव का ही झोंपड़ा भला' सूर्य पश्चिम में दम तोड़ रहा था। बेरी की डालियों में चिड़ियां चहक रही थीं। आकाश पर रंग बिरंग बादल तैरने लगे। उन युवकों की भांति जो यौवन में उच्च विचार पर लहराया करते हैं। गांव के चिन्तारहित युवक दूर खेतों की ओर सैर को निकल गये। गम्भीर स्वभाव वृद्ध हाथ में माला लिये मन्दिर में जा पहुंचे। घण्टियां बजने लगीं छोटे छोटे बच्चे मन्दिर के विशाल सहन में माता पिता सहित हर्षों की भांति भागने दौड़ने लगे। मन्दिर के कुएं पर नहाने वालों की भीड़ लगी है 'चलु-चलु' का मधुर ध्वनि आकाश व्यापी संगीत की भांति वातावरण में विलय हो रही थी। हर ओर शान्ति है, सन्तोष है और है परम सुख।

अन्धेरा धीरे धीरे बढ़ने लगा। कुएं, पीपल के फैले हुए वृक्ष पर, मन्दिर की दीवारों पर हर ओर अन्धेरे ने अपने तम्बू गाड़ दिये। नवयुवकों के जत्थे चौरे-चौरे लौटने लगे। मन्दिर के चौक में दरियां बिछ गईं। किसी ने ढोलक उठाली, किसी ने घुंघरू बजाने प्रारम्भ किये। एक प्रसन्नचित युवक ने हारमो-नियम पर गाना प्रारम्भ किया, ''भगवान् किनारे से लगा दे मोरी नइया'' मदिरा-वातावरण में बिखर गई जैसे पुष्पकाल आने पर सुन्दर सुन्दर फूल पगडंडियों पर बिखर जाया करते हैं। बूढ़े नशे में झूमने लगे। हर तरफ मोहकता की वर्षा, गाने वाले युवक की मधुर ध्वनियां जिन्द महल पर जादू छिड़क रही थीं। 'भगवान् किनारे से लगा दो मोरी नइया।'' एक कोने में बैठा गणेश देहली के जीवन का इस जीवन से समानता कर रहा था। एक दुःख व वियोग का घर और दूसरा शान्ति व सुख का। एक सभ्यता का केन्द्र किन्तु सुख शांति से वंचित। दूसरा सभ्यता से दूर किन्तु प्रसन्नताओं के समीप। एक वह लिपस्टिक और पाउडर से सजा हुआ, दूसरा अप्राकृतिक जीवन से दूर। एकदम कहीं दूर बन्दूक चलने की ध्वनि आई एक क्षण के लिए निस्तब्धता छा गई। फिर बन्दूकों की ध्वनि सी हुई। सरसराती हुई गोलियां भयावह शब्द करती हुई आकाश की ओर लपकी और फिर कहता टूट गई। एक साथ कई आदमियों के मुख से निकला ''अफरीदी लुटेरे' जहां कुछ क्षणों पूर्व मधुर संगीत गाए जा रहे थे, वह अब भयभीत ध्वनि और दबी दबी चीत्कार सुनाई देने लगी। हर ओर मृत्यु की प्रतिछाया हर ओर शैतान के भयावह किलकारियां, घबराहट और भय के वह कुछ क्षण गणेश को बहुत दीर्घ प्रतीत हुए। उसी समय पं० मुकुन्दलाल ने गरज कर कहा- ''यह समय घबराने और साहस तोड़ने का नहीं। अटक सिन्ध पार के अफरीदी हमारे धन और हमारी बहू बेटियों की लाज उतारने का अपवित्र विचार लेकर आये हैं। चारों ओर नवयुवको? तुम ग्राम के दरवाजे की रक्षा करो हमारे पास चार बन्दूकें हैं। गांव की हर दिशा की किसी सुरक्षित घर मोर्चा बना कर शत्रु का सामना करो। थोड़ी सी देर में सेना विभाजित हो गई।

गणेश ने अपनी आयु में ऐसी

[शेष पृष्ठ १७ पर]

सोवियत रूस में विविध धर्म

> इस लेख में एक रूसी लेखक ने उन आलोचकों को जवाब दिया है, जो यह कहते हैं कि रूस में धर्म की घोर उपेक्षा होती है। लेखक का कहना है कि आज भी वहां नागरिक अपने २ धर्म के मानने में स्वतन्त्र हैं, सिर्फ वहां विधान में किसी धर्म को स्वीकार नहीं किया जाता।

सोवियत संघ का विधान तमाम नागरिकों के लिए धार्मिक आचरण की स्वतन्त्रता की घोषणा करता है। सोवियत संघ के नागरिक को किसी धर्म को मानने या न मानने की आजादी है। यह मामला उसके अपने विश्वास और इच्छा से सम्बन्ध रखता है।

सोवियत संघ में चर्च को राजसत्ता से अलग कर दिया गया है। स्टेट की राजनीतिक गतिविधि में हस्तक्षेप करने का चर्च को कोई अधिकार नहीं है। न ही स्टेट चर्च के मामलों में दखल देती है। किसी भी चर्च को स्टेट की ओर से आर्थिक सहायता नहीं दी जाती। स्टेट की नजर में तमाम चर्च बराबर हैं— किसी भी चर्च या पंथ को सरकारी सुविधाएं प्राप्त नहीं हैं। धर्म के आधार पर स्टेट किसी नागरिक के साथ भेदभाव नहीं करती। सरकारी दस्तावेजों में (पासपोर्ट विवाह के लाइसेंस, पैदायश के सर्टीफिकेट आदि में) नागरिक के धर्म का उल्लेख नहीं किया जाता।

सार्वजनिक शिक्षा को स्टेट ने चर्च के हाथों से पूर्णतया ले लिया है और स्कूल को चर्च से अलग कर दिया है। सोवियत स्कूलों में किसी भी प्रकार की धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाती।

चर्च को स्टेट से अलग करने का यह मतलब नहीं है कि पादरियों और धर्म में विश्वास रखने वालों को नागरिक अधिकारों से वंचित कर दिया जाता है। तमाम चर्चों और धार्मिक मत मतान्तरों के पादरी अन्य तमाम नागरिकों के बराबर चुनाव सम्बन्धी तथा दूसरे अधिकारों का उपयोग करते हैं।

सोवियत विधान तमाम नागरिकों के, चाहे जिस धर्म को भी वे मानते हों, धार्मिक आयोजनों तथा संस्थाओं के रूप में संगठित होने और इन संस्थाओं की केन्द्रीय संचालन-संस्थाओं को बनाने तक के अधिकार की गारंटी करता है। इस तरह की केन्द्रीय संस्थायें अपने अनुयायियों की कान्फ्रेंसों तथा पादरियों की कांग्रेसों का आयोजन करती हैं, अपने पत्र और पुस्तकें प्रकाशित करती हैं, धार्मिक स्कूलों को चलाती हैं। चर्च-सम्बन्धी संस्थाओं का खर्च धर्म-प्रिय लोगों द्वारा अपनी मर्जी से दिए गए दानों से चलता।

सोवियत कानून धर्म-प्रिय लोगों के आजादी के साथ सार्वजनिक उपासना के आयोजन करने, चर्चों और मंदिरों को सजाने, चर्च में जाने तथा अन्य धार्मिक प्रथाओं का निर्वाह करने के अधिकार की रक्षा करता है। सोवियत स्टेट धार्मिक आयोजनों के लिये प्रार्थना घरों (चर्चों, मस्जिदों आदि) के निःशुल्क प्रयोग तथा चर्च की नाम-पटिका को लगाने की सुविधा प्रदान करती है। धार्मिक संस्थायें खुद अपने पूजा-घरों का भी निर्माण कर सकती हैं। धार्मिक स्कूलों के लिए केन्द्रीय और स्थानिक अधिकारी जगहों का प्रबन्ध करते हैं और धार्मिक पुस्तकों तथा पत्रों के प्रकाशन के लिए कागज या छापाघरों की सुविधा प्रदान करते हैं।

आजकल सोवियत संघ में निम्न धार्मिक संस्थाएं कायम हैं –

१. रूसी आर्थोडाक्स चर्च : मास्को तथा समूचे रूस के सत्तर वर्षीय धर्म-पिता अलेक्सी इसके अध्यक्ष हैं। १९०२ में आपने दीक्षा ग्रहण की थी। एक सलाहकार मण्डल—पवित्र सिनोद के साथ आप काम करते हैं। इस चर्च के अनुयायियों की संख्या सबसे ज्यादा है।

२ मुसलमानों का धर्म इसलाम। मुसलमानों का नियमन चार प्रादेशिक धार्मिक केन्द्रों के द्वारा होता है। सोवियत संघ के अधिकांश मुसलमान सुन्नी हैं। मुसलमानों का यह प्रमुख सम्प्रदाय है। शिया मुसलमानों की संख्या काफी कम है। प्रमुख रूप से वे काकेशिया-पार के इलाके में रहते हैं।

३. रोमन कैथोलिक चर्च : यह तीन पंथों में विभाजित है, जो एक दूसरे से अलग रहते हैं। एक तथाकथित वेवेदेन्स्की पंथ, दूसरा पंथ वह जो पादरियों को नहीं मानता, तीसरा वह जो रूसी आर्थोडाक्स चर्च के भूतपूर्व पादरियों को रखता और मानता है।

४. ज्यार्जियों का आर्थोडाक्स चर्च. धर्म-पिता कैथोलिकोस इसके अध्यक्ष हैं।

५ आर्मीनिया का (ग्रेगोरियन) चर्च. प्रधान धर्मपिता और तमाम आर्मीनियों के कैथालीकोस इसके अध्यक्ष हैं।

६ ईवेंजलीकल क्रिश्चियन बैपटिस्ट चर्च · इसमें ईवेंजलीकल क्रिश्चियनों, बैपटिस्टों और पेंटेकोस्टल चर्च के अनुयायियों की भूतपूर्व स्वतन्त्र संस्थायें संयुक्त हैं।

७ लूथर के अनुयायियों का चर्च : प्रमुख रूप से लाटविया तथा एस्तोनिया के समाजवादी प्रजातन्त्र में प्रचलित है।

८. बौद्ध धर्म के अनुयायी।

९ यहूदी सम्प्रदाय। इसका कोई संगठित केन्द्र नहीं है।

सोवियत संघ के मंत्रियों की परिषद् के अन्तर्गत रूसी आर्थोडाक्स चर्च तथा धार्मिक पथों की परिषदें कायम हैं। इन परिषदों की स्थापना धार्मिक संस्थाओं तथा सरकारी अधिकारियों और संस्थाओं के बीच सम्पर्क कायम करने के लिए की गई है। इसके अलावा वे परिषदें इस बात की भी देख भाल रखती हैं कि धार्मिक उपासना तथा आचरण की आजादी के कानून पर ठीक तरह से अमल किया जा रहा है या नहीं। धार्मिक संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत समस्याओं के बारे में कानूनों तथा नियमों का मसौदा तैयार करने का काम भी इन परिषदों के जिम्मे है।

धार्मिक आजादी की रक्षा के साथ-साथ सोवियत संघ का विधान तमाम नागरिकों के धर्म-विरोधी प्रचार करने के अधिकार को भी मानता है। धर्म-विरोधी प्रचार का लक्ष्य लोगों में विश्व को वैज्ञानिक दृष्टि से देखने की भावना का प्रचार करना है। धर्म विरोधी प्रचार के दौरान में धर्म प्रिय लोगों की भावनाओं पर आघात पहुंचाना सोवियत विधान में वर्जित है।

दुमदार दोहे

"गुस्ताख"

कभी वस्त्र की ना रहे, तीन माह परवाह।
लाला ठगिनी तें ठगे, हरे कृष्ण से शाह॥
बात ऐसी कहैं।

पुनः पांच पंजाब में, जीती लीग चुनाव।
'दौलताना' पै आ रहे, 'सुहरावर्दी' ताव॥
मगर बेकार सब।

'भार्गव' 'सच्चर' में भई, पुनः घर पटक, पार।
मगर 'भार्गव' ने पुनः 'सच्चर' दिये पछार॥
बैठि कच्चर गयो।

लियाकत ने जनतन्त्र को, कर दियो फक्काफोड़।
पाकिस्तानी बाज में, उपज्यो ज्यों ही कोढ़॥
आपरेशन कियो।

अब तें राशन ह्वै गयो, साढ़े चार छटांक।
अभी ब्लेक मार्केट की, अब तें दूनो धाक॥
मगर 'मुंजी' रहैं।

'अख्तर' भैया! सुगन तें सुने न तुम्हरे बैन।
सम्पादक जी के अबे, क्या कहूं छिड़े बैन॥
मार्फ़त अख्तर चले।

★

आँखें उन शब्दों पर रुक गईं। सम्भवतः वे अक्षर पर थे, परन्तु उसके मस्तिष्क स्थित उन कल्पनाओं को अक्षर नितान्त नश्वर थे। उसके नेत्रों में अब आंसू भी न रहे, जो उसके मन की व्यथा को बहा-बहा कर कुछ बाहर कर सकते। उसके मन में आशा की एक झिलमिलाती कणिका भी न रही, जो उसके इस निराशामय जीवन में कुछ चमक सकती। उसको इस वेदना के अथाह सागर में एक मानव नाविक का सहारा भी नहीं रहा, जिससे वह सागर पार कभी पहुँचने की आशा कर सकती।

आज का भी रवि अस्ताचल चला जायगा, दो घंटे में, चार घंटे में। परन्तु उसे इससे भी कोई शिकायत नहीं थी। वह जीवन के अन्तिम छोर पर थी। शायद उसे जब उसने दूसरे और चौथे दिन कौशल के पास पत्र लिखा, कुछ आशा रही हो, मगर आज उसके मन में शून्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। वह बहुत तड़प चुकी थी, अब वह तड़प भी नहीं सकती थी। वह बहुत सोच चुकी थी, अब सोच भी नहीं सकती थी। वे रातें बीत चुकी थीं, जब सोचते सोचते उसके शीश में पीड़ा हो उठती थी। अब वह चुपचाप बैठी थी। वह आशाओं की कलियां मुरझाई पड़ी थीं। वह संसार से मुँह मोड़ कर बैठी थी, जीवन-त्याग कर बैठी थी। परन्तु देखने में सजीव बैठी थी। जल कर बुझती सी आग बनी बैठी थी।

वह इन ग्यारह दिनों में ज्यों-ज्यों सूखती गई, उसके लिए नश्वर संसार का बाहर और भीतर सब कुछ सूखता गया। सबसे पहले अपने सुख और ऐश्वर्य का मोह सूख गया। एक सूख गया तो आत्मशक्ति भी सूख गई। जब से अनूठे सपने सूख गए। कुछ शेष नहीं रहा और आज जब वह शून्य सागर में अभी अभी डिलने लगी थी, तो अब उसके मन में क्या शेष रह गया था। चौथे दिन जब उसने कौशल को दूसरा पत्र लिखा था, वह सारी आशाएं खो चुकी थी और तबसे उसके जीवन में केवल एक ही अमर इच्छा रह गई थी। केवल एक ही। उसके अतिरिक्त वह अब संसार में कुछ और नहीं चाहती। वह अब किसी बात की इच्छा भी नहीं कर सकती थी। वह एक अमर अभिलाषा थी।

अमर तो थी, किन्तु न तो वह आशा ही रही, फिर अभिलाषा कहां से हो सकती थी। कुछ था अमर उसके हृदय में, क्या? वह न आशा थी, न इच्छा, चौथे दिन जब इस कमरे में उसने दूसरा पत्र लिखा, वह कितनी प्यासी थी दर्शन की। शून्य में मिलने के पहले क्या वह एक बार अपने प्रियतम को देख सकती है। उस दिन उसके हृदय में सब कुछ खो देने के पश्चात् भी यही एक अमर-अभिलाषा थी। इसी की अनुकम्पाओं से वह अंधेरे में और उजाले में अभी तक जीवित थी। वही अमर-अभिलाषा थी, जो न स्वयं मरती थी और न उसे मरने देती थी और अब उस आशा या अभिलाषा का केवल अमरत्व ही रह गया था, आशाएं नहीं और न उनका अस्तित्व।

यदि शान्ति में अभी सोचने की शक्ति होती, यदि वह सूख कर कांटा नहीं बन गई होती, यदि उसको विचार धाराएं आसानी से मन में बह सकतीं; तो वह क्या सोचती, वह केवल अब कल्पना ही की जा सकती है। जब वह मिट्टी की भांति एक बन्द अंधेरे कमरे में घृणात्मक राक्षसों के मध्य में जीवन के अंतिम छोर पर, निराहार, निर्जल ग्यारह दिन से पड़ी थी, तो अब वह क्या सोच सकती थी?

पृथ्वी की छाया निरन्तर में फैली होती है। चन्द्रमा की भी छाया होती है। राहु और केतु ये परछाइयां निरंतर में फैली पड़ती है। ठीक उसी प्रकार की एक छाया शांति के आंखों के सामने आशा के प्रकाश में थी। उसका अवन्त में कहीं एक बिन्दु था। अंतरिक्ष में बहुत दूर। परन्तु आज उसके आंखों के सामने नितान्त अंधकार था। वह आशा राहु-ग्रसित थी।

सूरज पृथ्वी की ओर मुँह करके मुस्करा रहा था। नोआखाली और टिपेरा में वह आज दो सप्ताह के बाद पहली ही बार इस प्रकार मुस्कराया था। उसकी मुस्कराहट छन छन कर नोआखाली के वायुमंडल में किरणों के सहारे चारों ओर बिखर रही थी। जिस प्रकार वैशाख की पहली घटाएं देख कर मोरनी अपना पर फड़फड़ा देती है ठीक है उसी प्रकार आज वह कुछ विकसित थी। सूर्य पृथ्वी पर आंखें गड़ाकर देख रहा था। प्रफुल्लित होकर देख रहा था। उसकी आंखें फौज के सिपाहियों पर मुस्करा रही थीं जो नोआखाली में इधर उधर घूम रहे थे। उसकी आंखें उन स्वयं सेवकों पर मुस्करा रही थीं जो आहत नर-नारियों की सेवा की इच्छा रखते हुए भी विवश थे। और उसकी आंखें उन बुद्धिहीन राक्षसों पर मुस्करा रही थीं जो अस्थायी लूट के माल पर जीवन बसर करते हुए, चारों ओर रक्त की नदियां बहा रहे थे।

× × ×

कौशल और सन्यासी कुछ स्वयं-सेवकों के साथ हमेशा पर साथ लिए नोआखाली के भीतर आ रहे थे। अभी तक उनका सामना किसी गुण्डे से नहीं पड़ा था। सच तो यह था कि इस समय तक नोआखाली के वातावरण में थोड़ा अन्तर आ गया था। दूसरी बात यह भी कि अब वहां न तो लूटनेके लिए धन रह गया था, न जलाने के लिए मकान और न मारने के लिए आदमी और पशु। और उसके बाद इन दिनों नोआखाली के प्रत्येक गुण्डे के घर में ईद मनाई जा रही थी। क्यों न ईद मनाते थे। इस समय उनकी सारी राक्षसी कामनाएं पूरी हो रही थीं। बाहर से आये आदमियों और स्वयं-सेवकों की ओर उनका ध्यान कम था। जिस प्रकार पेट भरा भेड़िया अपनी मांद में सोया रहता है उसी प्रकार वे गुण्डे सो रहे थे। परन्तु यदि सामने आ जावे तो हाथ साफ करने में भी नहीं हिचकते थे। एक और बात थी और वह यह कि कुछ समझदार, या चतुर गुण्डे अपनी सारी करतूतों को छुपाने की चेष्टा कर रहे थे।

'आप लोग अब क्यों तकलीफ कर रहे हैं?' घोड़े पर सवार, संगीन लिए हुए नोआखाली में घूमते हुए, एक पुलिस अफसर ने कहा—कहना नहीं होगा कि चार दिन पहले यही पुलिस अफसर गुण्डों को अपनी आंखों के सामने लूट-खसोट और हत्या करते हुए देख, बहुत प्रसन्न था। यदि उसका घर देखा जाए तो उसमें हजारों रुपये का लूट का सामान पड़ा है। वह कहने लगा—'अब तो यहां शान्ति है।'

'किस प्रकार की शांति है यहां?' एक स्वयं सेवक ने अचानक भाव से कहा—'हम यहां शान्ति ढूंढते हैं, किंतु कहीं भी पाते नहीं।'

'देखते हो कहीं गुण्डोंकानाम भी है यहां। अखबारों ने बात का बतंगड़ बना दिया।' अफसर ने कहा।

पुलिस अफसर चला आ रहा था कीचड़ भरी सड़क से। सन्यासी भी उससे बातें करने लगा। वह स्थानीय थाने का इन्स्पेक्टर था। देर तक बातें होती रहीं। लगभग एक मील तक सब आगे बढ़ गए। दूर वह गांव सामने से दिखाई पड़ रहा था। गांव, जहां कौशल को अभी अभी जाना था। जहां जाने में एक एक पल की देर वर्ष के समान हो रही थी। कौशल आगे था।

'सामने वह गांव है।' सन्यासी ने कहा—'हमें वहीं जाना है।'

'क्यों?' अफसर ने कहा।

'क्योंकि' सन्यासी ने कहा—'वहां एक मकान में… ।'

अफसर कुछ सोचने लगा।

'आप क्या हमारी सहायता करेंगे?' निर्मलानन्द ने कहा।

'क्यों नहीं?' अफसर ने कहा—'अगर अफवाह हो तो?'

'अफवाह?' कौशल ने उद्वेग में कहा—'मेरे साथ आइये। अभी अभी सब पता चल जायेगा।'

पुलिस अफसर सोचने लगा क्या करूं। वह भली भांति जानता था, कहां क्या हो रहा है। परन्तु चुप था। स्वयं सेवकों को अफसरकी ओर भी सन्देह था, अतएव यह निश्चित हुआ कि एक स्वयं सेवक, सन्यासी और कौशल ये तीन ही उस गुण्डे के घर पर अफसर के साथ जाएंगे। तीन आदमी सीधे थाने पर जायेंगे और बाकी वहीं बैठ कर पुलिस के आने की प्रतीक्षा करेंगे।

—क्रमशः

देवी

(पृष्ठ ११ का शेष)

भयंकर रात कभी नहीं देखी थी। बन्दूकों की दनदनाती हुई गोलियां वातावरण से गुजर रही थीं। गांवों पर श्मशान भूमि की सी निस्तब्धता छाई हुई थी। लोग भुस की कोठरियों, अनाज के खलियानों तथा अन्य ऐसे ही स्थानों पर छुपे बैठे थे। सब से अधिक महत्वपूर्ण दशा स्त्रियों की थी। उनमें से कई भय से मूर्छित हो गई थीं। वातावरण में मातृ पितृहीन आत्माएं तड़प रही थीं। "भगवान् तुम ही लाज रखने वाले हो।" कभी-कभी गांवों के विभिन्न मोर्चों से भय और दृढ़ संकल्पों में डूबी हुई ध्वनि वातावरण की अमानुषिक शान्ति को तोड़ देती थी।

गणेश एक मोर्चे पर बैठा सोच रहा था कि रक्तपूर्ण नाटक का अन्त न जाने कब होगा। इसी समय एक गोली सरसराती हुई उसके पास से गुजरी। ओंकाराम जो इस मोर्चे का वीर था बन्दूक चलाने में बड़ा प्रसिद्ध था। कारतूस भरते हुए बोला—"गणेश आज परमात्मा ही भली करें। अफरीदियों के पास नवीन ३०३की रायफलें हैं और यदि मेरा अनुमान असत्य न हो तो उनके पास एक स्टेनगन भी है।"

गणेश ने कम्पित ध्वनि में कहा—"जिले के अफसरों को कब तक सूचना मिल जायगी।"

ओंकाराम ने बन्दूक का घोड़ा दबाते हुए कहा—"कल प्रातः से पहले नहीं। ज्यों ही हम लोग मन्दिर से निकले थे, हमने एक मनुष्य को जिलाधिकारीके पास भेज दिया था। यह निर्दयी अफरीदी सबसे पहला काम यह करते हैं कि टेलीफोन और तार काट देते हैं इससे—"

अभी वाक्य ओंकाराम के मुंह में ही था कि उत्तर दिशा से एक गोली विद्युत वेग से आई और ओंकाराम के मस्तिष्क को चीरती हुई निकल गई। ओंचित गांव का वीर एक निर्जीव वस्तु की भांति पृथ्वी पर गिर पड़ा। गणेश रेंगता हुआ उसके समीप आया। ओंकाराम मर चुका था। उसके सिर से रक्त का स्रोत बह निकला था। हृदय की धड़कन समाप्त हो चुकी थी। वह अपने जीवन की नय्या को खेता हुआ मृत्यु के अन्धेरे समुद्र में आ पहुँचा था, जहां अन्धेरा है किन्तु अफरीदी लुटेरे नहीं। गणेश उसके समीप बैठा सोचने लगा, अब क्या होगा?

एक-एक करके निर्दयी अफरीदियों ने गांव के सब रक्षाकेन्द्र तोड़ दिए। फिर अमानुषिक ढंग से नारे लगाते हुए गांव में प्रवेश किया। रात का भयानक दृश्य उनके नारों की चीत्कारों से और भी भयानक हो गया था। कई घरों में आग की चिनगारियां प्रज्वलित हुईं। गणेश पागलों की भांति अपने घर की ओर भागा किन्तु रास्ते में एक पत्थर से ठोकर खाकर गिरा और गिरते ही मूर्छित हो गया। जब उसकी आंख खुली तो उसने अपने आपको गांव की चौपाल में पड़ा पाया। उसके सिरपर पट्टी बन्धी थी। रात के भयानक दृश्य उसकी दृष्टि के सामने घूम गए। चौपाल में जितनी चारपाइयां पड़ी थीं उन सब पर घायल पुरुष पड़े थे पट्टियों से बंधे हुए। उसी समय पुलिस का एक सिपाही अन्दर आया और गणेश को हिलते जुलते देख कर बोला—"आप तनिक लेटे रहिये, डाक्टर साहब स्त्रियों को देखने गए हैं।" थोड़े समय पश्चात डाक्टर साहब ने पुलिस कप्तान और कुछ प्रसिद्ध मनुष्यों के सहित अन्दर प्रवेश किया। यह लोग एक विशेष लारी में यहां पहुँचे थे किन्तु दुष्ट लुटेरे इनके आने से पहले ही भाग चुके थे। गणेश ने आंख में आंसू भर कर कहा—"डा० साहब मैं अपने घर वालों से मिलना चाहता हूं।

पुलिस कप्तान ने विश्वास देते हुए कहा "आप लेटे रहिए नहीं तो सिर के घाव के खुल जाने का भय है। गांव के बहुत से लोग भाग कर खेतों की ओर चले गए थे। अब वह धीरे धीरे वापिस आ रहे हैं। पुलिस के कई जत्थे इनकी खोज निकालने गए हुए हैं"। और फिर डा० साहब को सम्बोधन करते हुए बोले "शवों को ठिकाने लगाने का काम भी शीघ्र हो जाना चाहिए"।

तीसरे पहर का समय था, बेरी की घनी छाया घट घट घटती जा रही थी। एक मैली सी दरी बिछी थी जिस पर कुछ चिन्ताग्रस्त मनुष्य बैठे अश्रुपात कर रहे थे। तनिक परे खड़ी गाय, उदास उन लोगों की ओर देख रही थी।

माया के पिताजी ने भर्राई हुई ध्वनि में कहा "गरीब माया तुम्हें दिन-रात स्मरण करती थी।" और यह कह कर आंख के अश्रु पूंछ डाले। गणेश की दृष्टि के सामने वह दृश्य घूम गया जब दुष्ट अफरीदी उसके घर में घुसे होंगे। उन्होंने बैट्री के प्रकाश में माया को ढूंढ ही निकाला जो भय से पीली हुई छप्पर के पीछे छुपी खड़ी थी। उसके कुछ दूर उसकी अभागी मां एक कोने में दुबकी पड़ी थी। दुष्ट अफरीदियों ने आभूषणों से लदी एक सुन्दरी को देखा तो उनके मुखों पर अमानुषिक भाव चित्रित हो गए। माया समझ गई कि अब उसका जीवन और लाज दोनों खतरे में हैं। एक घायल पक्षी की भांति झपट कर दालान में घुस गई। दालान से दूसरे कमरे में पहुंची। वह दुष्ट अफरीदी उसके पीछे पीछे दौड़े। माया आगे आगे और

उसके पीछे उसकी मृत्यु। दौड़ती दौड़ती वह घर के कूएं तक आ पहुंची। फिर एक अन्तिम दृष्टि उन दीवारों पर डाली जहां उसकी मृत्यु की काली प्रतिछाया थिरक रही थी। और राम का नाम लेकर कूएं में कूद पड़ी। अफरीदी आश्चर्य और निराशा से एक दूसरे का मुंह ताकने लगे····। यह घटना उसकी अभागी मां ने अपनी आंखों से देखी थी। यह सब कुछ विद्युत वेग से हो गया। माया अपनी लाज बचाने के लिए हंसती-हंसती मर गई। दूसरे दिन उसका शव बाहर निकाला गया। उसके मुख पर मृत्यु का पीलापन था किन्तु ओठों पर विजेता की सी मुस्कान।

गणेश ने धीरे से कहा, "वह देवी थी वह सीधी स्वर्ग में जाएगी।" सब के नेत्रों से अश्रुओं की झड़ी लग गई, उस निर्जीव गाव के नेत्रों से भी उदासी झलक रही थी।

अपनी देववाणी सीखिये

मुञ्च अधुना कुम्भकर्णी निद्राम्

श्री यशोदानन्दन. शास्त्री

किञ्चिदुत्थाय पश्य! काल कुत्र गतः। युष्माकं शत्रुस्तव पृष्ठे छुरिकया प्रहारकरणाय कटिबद्धोऽस्ति। स्वल्पसमये एव सः तव नाशको भविष्यति। अधुनाऽपि बुध्यस्व। दर्शय किञ्चित्कार्यं कृत्वा। समयलाभं प्राप्नुहि। त्वं परोपकारे संलग्नः स्वात्मीयतां त्यक्तवान्, जनता जनार्दनस्य सेवायां लीन पवनपुत्रस्येव। परमनेन त्वं हास्यास्पदं गतः लोकेषु। प्रभूतं कृतं परेषां कृते भवद्भिः, किञ्चित् आत्मनः कृतेऽपि कृत्यं कार्यम्। तव परिश्रमेण स्वार्थिभिः महाप्रासादा. हस्तीकृता, , किन्तु तवात्र नास्ति किञ्चिदपि स्थानम्। प्रभूता. संख्या तव नाम्ना कुबेरतां गताः, किन्तु त्वमकिञ्चनो जात स्वार्थिनेतृणां मधुरवचनैः दृश्यमपसर, यतो ये मनुष्या मुखे मिष्टाः ते हृदि दुष्टा भवन्ति, अथवा मधुरवाचकाः प्रायो वञ्चका एव भवन्ति स्वमृगया हस्तीकरणाय।

मुञ्चाधुना कुम्भकर्णी निद्राम्, तदा किञ्चित् कार्यं कर्तुं शक्ष्यसि। अवलोकयतास्ते संसार तव मुखमधुनापर्यन्तम् यत्किञ्चितधूल्यादिना मलिनमभवत् रत्नम्, अपनय तस्यधूलिम्, दीपयस्व स्वमणिम्, तदा मूल्यार्हो भविष्यसि हट्टमार्गे। सन्ति तव मणेः परीक्षका अधुनापि संसारे, गुणज्ञाः अपि सन्ति, किन्तु भवितव्य परिचय तद्गुणानाम्। मन्दिरमठ गुरुकुलविहारादय तव कृपाशीर्वादेन उन्नतां गताः किन्तु तत्रापि श्वेव त्वं परिचरसि। किञ्चित् समाधत्स्व आत्मानम्। नास्ति अस्मिन् कस्याप्यन्यस्य कर। सर्वं तवैवास्ति। त्वं स्वप्ने मग्नोऽसि अतएव विगतज्ञानोऽसि त्वम्। त्वं सर्वेषां गरीयानपि जनै. मूर्खं इव परिभूयसे। समयमनुसर। अद्य कलियुगः अर्थात् (अर्थं लोपस्वाप्रधानसमय) तथा एव स्वाधिकारं लप्स्यसे सर्वम्। तदभावे भौनतामाजन्म बुभुक्षितो भविष्यसि। अयं कलियुगोऽपि कथ्यते, "संघे शक्तिः कलौ युगे"।

झटिति स्वसंघ संघटितं कुरु, शक्तिशाली च भव, नो चेद् विनंक्ष्यसि। "दैवोऽपि दुर्बलघातकः"। अधुना पर्य्यन्तं तवोपरि बहवः आक्रमणानि अभवन्। मृतास्ते मारकाः, किन्तु त्वममरोऽसि। तव वाणी चापि अमरवाणी भूत्वा स्थिरतां गता। कतिचिदाक्रमणकारिणः पादतले करणाय आयाता. किन्तु तेषां नामापि न ज्ञायते इदानीम्। आत्मानं दृढय नोचेत् शत्रुः सर्वथा इदानीमुपस्थत आस्ते। पुनस्त्वं कथमीर्षं त्वया यत् मया सूचना न लब्धा।

सगुण भक्ति में राम और कृष्ण काव्य

[पृष्ठ १० का शेष]

चार्य के 'पुष्टि मार्ग का है। प्रभु के अनुग्रह को पाना, कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करना आदि ही इन कवियों का उद्देश्य था। उपर्युक्त धारा से प्रभावित अष्टछाप के कवियों और रसखान आदि के नाम गिने जा सकते हैं। सूरदास इनमें सर्वश्रेष्ठ हैं।

(२) राधा वल्लभी सम्प्रदाय में राधाकृष्ण की युगल मूर्ति का शृंगारमय वर्णन अभीष्ट है। इस धारा में हित हरिवंश और ध्रुवदास आदि हैं। इनकी अपेक्षा राधा का रूप वर्णन अधिक मात्रा में किया गया।

(३) निम्बार्क मतानुयायियों में हरिदास, श्री भट्ट आदि प्रसिद्ध हैं। मीरा भी इस धारा से प्रभावित जान पड़ती हैं। इस मत के अनुसार राधा प्रकृति तथा कृष्ण पुरुष ब्रह्म हैं, ब्रह्मा विष्णु, महेश, सभी उनका ध्यान लगाते हैं।

(४) श्री चैतन्य महा प्रभु के कृष्ण नाम कीर्तन में गदाधर भट्ट का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

(५) इन भिन्न २ मतों के होने पर भी भावसमानता प्राय. अवश्य दिखाई पड़ती है। मुरली मुकुट का वर्णन गोपियों के साथ रास लीला, माखन चोरी आदि सभी कवियों के प्रिय विषय रहे हैं। कृष्ण का बाल रूप ही सब को पसन्द आया है। पुष्टि मार्ग की छाप सब पर पड़ी नजर आती है।

(६) कृष्ण को लीला-पुरुषोत्तम माना है, मर्यादा पुरुषोत्तम नहीं। महाभारत का लोक-रक्षक कृष्ण इन कवियों की कल्पना में घर नहीं कर सका। उसका वीर वर्णन न कर प्रेम वर्णन ही किया है। जिसका परिणाम रीति काल में देखने को मिलता है। रीति काल का कृष्ण भक्ति का नहीं, वह तो वासना की वस्तु बन गया है।

(७) कृष्ण कवियों में निर्गुणवाद का आभास भी जहां कहीं देखने को मिलता है। यद्यपि सगुणवादी ज्ञान पर नहीं वरन् भक्ति पर ही विश्वास करते हैं। अत उन में शुद्ध रहस्यवाद (जिससे अपार्थिव तथा अमूर्त रहस्यवाद भी कहा जाता है) तो नहीं आ सकता मगर जब मीरा कहती है—

> सूली ऊपर सेज पिया की,
> किस विधि सोना होय।
> गगन मंडल पर सेज पिया की,
> किस विधि आना होय॥

तो अपार्थिव रहस्यवाद न सही, परन्तु पार्थिव (सगुण या मूर्त) रहस्यवाद के दर्शन तो निसन्देह होते हैं। सूर साहित्य में भी कृष्ण और राधा को पुरुष प्रकृति का प्रतीक मान कर 'मुरली' को योग माया का रूप माना है। गोपियों में कृष्ण ऐसे विद्यमान हैं जैसे आत्मा में परमात्मा। ("यहां केवल रहस्यवाद का आभास है शुद्ध रहस्यवाद नहीं।)

(८) कृष्ण काव्यों में विविध शैलियां नहीं अपनाई गईं। केवल मुक्तक काव्य ही लिखे गए भक्ति भावना के आवेश में कवियों के उद्गार में गीत-काव्य में ही स्वाभाविक रीति से प्रस्फुटित हुए तन्मयता और तल्लीनता का भाव इन में प्रचुर दिखाई पड़ता है।

(९) भगवान और भक्तों में इनके प्रकार की कल्पना की गई है। सूर ने सखा भाव, मीरा ने 'माधुर्यभाव' अर्थात 'पति पत्नी भाव' को ही पसन्द किया तथा राधा के रूप में अपने को उपस्थित किया।

(१०) कृष्ण काव्यों में प्रधानतया दो रस ही सर्वप्रिय बने। (१) वत्सल रस (२) शृंगार रस। कृष्ण के बाल रूप वर्णन में जो सफलता सूर को मिली है, वह किसी अन्य को नहीं। कृष्ण का स्वाभाविक, मनोवैज्ञानिक, परन्तु मनोरंजक वर्णन करके 'सूर सूर' ही बन गए। बाल चपलता, गौएं चराना, माखन चोरी, चोटी न बढ़ने की चिन्ता, आदि दृश्य बड़े ही मनोहर हैं। "मैया मोरी मैं नहि माखन खायो" का एक पद ही सूर की कल्पना का ज्वलंत उदाहरण है। दूसरी ओर कृष्ण का सौन्दर्य, मुरली का गोपियों पर अत्याचार, रास लीला, राधा मिलन आदि संयोग शृंगार का बड़ा ही सरस वर्णन मिलता है परन्तु संयोग शृंगार की अपेक्षा वियोग शृंगार ही में सूर ने कमाल दिखाई है। कृष्ण बाही सूर, भक्त सूरदास की वाणी में गोपियों की मार्मिक उक्तियां भ्रमर गीत में पढ़ने योग्य हैं। इन दो रसों के अतिरिक्त भगवान का अनुग्रह पाने में 'शान्त रस' तथा कृष्ण की विचित्र लीलाओं में 'अद्भुत रस' भी देखा जा सकता है।

(११) भक्ति काल के पश्चात रीतिकालीन कवि बिहारी, देव, मतिराम पद्माकर ने भी कृष्ण और राधा का प्रेम वर्णन किया। मगर इस लौकिक प्रेम में अश्लीलता है। देव ने संयोग तथा बिहारी ने वियोग वर्णन में अवश्य निपुणता की है। घनानन्द ने भी वियोग का आन्तरिक वर्णन अच्छा किया है।

(१२) आधुनिक काल में भारतेन्दु के अतिरिक्त रत्नाकर का 'उद्धव शतक' अयोध्यासिंह उपाध्याय का 'प्रिय प्रवास,' गुप्त जी का 'द्वापर' और 'जयद्रथ वध', सत्यनारायण कवि रत्न का 'भ्रमर दूत' तथा वियोगी हरि के फुटकर गीत उल्लेखनीय हैं। गुप्त और उपाध्याय जी ने कृष्ण को पुरुष रूप में चित्रित किया। रत्नाकर में भावना पूर्ण कवि हृदय में समाज सुधार की छाप अवश्य नजर आती है। इस काल का शृंगार वर्णन सात्विक है।

प्रक्रिया:—

१. भाषा भक्ति कालीन तथा रीति कालिन कवियों ने ब्रज तथा आधुनिक कवियों ने खड़ी बोली और ब्रज भाषा का प्रयोग किया।

२. छन्द — आधुनिक काल में उर्दू के छन्द, गजलों का प्रयोग भी किया है। 'प्रिय प्रवास' में वार्णिक छन्दों का अनुकरण किया गया है।

कवित्त सभी हिन्दी के मात्रिक छन्दों में भी कविता की गई। मीरा के गीत तथा रसखान के सवैये मार्मिक बन पड़े हैं।

३. अलंकार-रस — रसों में केवल शृंगार रस--वात्सल्य रस की प्रधानता है। अलंकारों का प्रयोग यथास्थान सुन्दर किया गया है।

नन्ददास ने अलंकारों का प्रयोग अच्छा किया और 'जड़िया' की उपाधि से विभूषित भी हुआ।

भारतीय संविधान में संसद्

(पृष्ठ ८ का शेष)

चित बनाये रखने के लिए तथा होनहार परिश्रमी सदस्यों को भविष्य के लिए सुयोग्य मन्त्री बनने की शिक्षा देने की दृष्टि से भी आवश्यक है।

प्रतिदिन के कार्य में अहस्तक्षेप

यह विशेष रूप से ध्यान देने की बात है कि यहां इस प्रकार से सरकार पर नियन्त्रण रखे जाने के विधान हैं, वहां संसद् द्वारा स्वीकृत नीतियों के प्रतिदिन के प्रचलन में संसद् कोई हस्तक्षेप नहीं करती। कार्यपालिका को क्षेत्र मर्यादा में स्वतन्त्रता से तथा अपनी प्रेरणा से कार्य करने का अधिकार होता है। यह लोकतन्त्र की परम्परा के अनुकूल ही है तथा कार्य को ठीक ठीक चलाने के लिए यह आवश्यक है। कार्यपालिका पर प्रश्नों, सुझावों, प्रस्तावों आलोचनाओं आदि द्वारा जो नियन्त्रण रखा जाता है वह परोक्ष होते हुए भी महत्वपूर्ण है। प्रत्येक कार्य जनता के समक्ष आ जायेगा यही विचार एक प्रकार का अंकुश है। और फिर इसमें सारे मंत्रिमण्डल के या किसी एक मंत्री के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव उपस्थित करने का भी विधान है।

ब्रिटिश संविधान का अनुकरण

हमारा संविधान मुख्यतया अंग्रेजी संविधान के अनुकरण पर बना है। अत: हमने उनके आधारभूत सिद्धान्त और परिपाटियों को अपना लिया है। सर्व प्रथम तो यही है कि संसद सरकार के प्रभाव से बिलकुल स्वतन्त्र है। इसी से संसद् के स्पीकर की न केवल सम्मान वृद्धि हुई है वरन् संसद में सब कार्य क्षेत्रों में उनको सर्वोच्च अधिकार प्राप्त हुआ है। संसद् का सेक्रेटेरियट अथवा कार्यालय सरकारी नियन्त्रण के बाहर रह कर स्वतन्त्र रूप से कार्य करता है। ऐसे देश में स्पीकर प्रायः किसी वर्ग या दल से सम्बन्ध नहीं रखते। हमारी लोकतन्त्र प्रणाली के विकास [illegible] यह संभव नहीं है कि स्पीकर ब्रिटिश पार्लमेंट के स्पीकर की पूरी तरह बराबरी कर सके और वह स्थान पा सके जो ब्रिटिश स्पीकर ने पार्लमेंट के सर्वोच्च शक्ति प्राप्त करने के बाद १०० वर्ष के समय में पाया है। किन्तु स्पीकर मुख्य रूप से दल विशेष सम्बन्धी विवादों में भाग नहीं लेता। तथा इन विवादास्पद विषयों से भी अलग रहता है, जिनका संसद् में उपस्थित किये जाने की सम्भावना होती है। सरकार और विरोधी दल ऐसे दो पार्टी के सिद्धान्तों की ओर हम भी प्रगति कर रहे हैं। अपने देश में विधान सभा के सदस्यों की सुविधाएं और विशेषाधिकार ब्रिटिश पार्लमेंट के सदस्यों की बराबरी में ही पाये जाते हैं जैसे उन्हें बन्दी नहीं बनाया जा सकता उन्हें विचार व्यक्त करने का पूर्ण अधिकार है इत्यादि। यह ध्यान देने की बात है कि संसद भवन में सभी सम्बन्धित विषयों पर स्पीकर का सर्वोच्च अधिकार है।

किन्तु

अन्त में मुझे यही कहना है कि यद्यपि हमारा संविधान बहुत अच्छा है, उसमें वर्णित प्रणालियां तथा निर्वाचन विधान बहुत उत्तम हैं किन्तु ये सब हमारे साध्य के साधन मात्र हैं। यद्यपि साधनों के गुणों का विशेष महत्व होता है। किन्तु लोकतन्त्रीय व्यवस्था के मुख्य तत्व है मानसिक स्तर, चारित्र्य, सहिष्णुता समझौते की भावना, अवैयक्तिक दृष्टिकोण, मतभेदों को समझने की भावना, सलाह देने की तथा कहने की सामर्थ्य और अन्तिम किन्तु महत्वपूर्ण तत्व है सेवा की भावना से भरा हुआ प्रजा सम्पर्क। ये ही शक्तिशाली स्तम्भ हैं जिन पर भारत का लोकतन्त्रीय शासन दृढ़ता से ठहर सकता है।

साइकिल चलाते हुए।

अनाथ बच्चों का शहर

अमेरिका में शिकागो के समीप उन अनाथ बच्चों का एक शहर है, जिनके माता पिता दोनों अथवा उनमें से कोई एक इस संसार से चल बसा हो। इस शहर की व्यवस्था अमेरिका की एक धार्मिक संस्था (फ्रेटर्नल ओर्गनाइजेशन) करती है। यह शहर एक अत्यन्त सुहावने स्थान पर स्थित है, जहां बहुत छोटे छोटे बच्चों से लेकर हाई स्कूल में पढ़ने वाले १८ वर्ष की आयु तक के बच्चे निवास करते हैं।

यह शहर "मूसहार्ट" १९१३ में अनाथ बच्चों की सहायता के लिए बसाया गया था। यह स्थान इलिनौय राज्य में फाक्स नदी की घाटी में १२०० एकड़ भूमि पर स्थित है। आज शहर में लगभग १,००० बालक बालिकायें रह रही हैं। 'मूसहार्ट' एक आत्म निर्भर शहर है। इसके अपने ही खेतों में अन्न पैदा किया जाता है, कई और मशीनों की दूकानें हैं, एक सिलाई घर है जहां कपड़े तैयार किए जाते हैं। एक बेकरी, एक डेयरी (डिब्बों में फल बन्द करने की शाखा) और छोटी बड़ी दूकानें हैं जहां साधारण उपयोग की वस्तुएं हैं।

छोटे छोटे स्कूल तथा खेल समान आयु के बालक तथा बालिकाएं अलग अलग रहते हैं। विधवा माताएं भी अक्सर अपने बच्चों के साथ इसी शहर में आकर कोई काम काज करने लगती हैं।

शिशु ग्राम

दो वर्ष से कम आयु के बच्चों का लालन पालन "मूसहार्ट के अस्पताल में होता है। "शिशु ग्राम" छोटे बच्चों के रहने का स्थान है। वहां घरों में बच्चों की आयु से मेल खाती हुई छोटी कुर्सी मेज वगैरह हैं। बड़े बच्चे बड़े घरों में २०-२० साथ मिलकर रहते हैं।

हर निवास स्थान में एक महिला बच्चों को रहन सहन की शिक्षा देने के लिए होती है और उसे 'हाउस मदर' कहते हैं।

बच्चों के लिए नियमित रूप से चिकित्सा-सम्बन्धी सुविधाएं हैं। उनकी सहायता के लिए प्रशिक्षित सलाहकार हैं, जो उनकी कठिनाइयों का समाधान करने में तथा पेशा चुनने में सहायता देते हैं। बच्चों को [illegible] के आरम्भ होकर हाई स्कूल तक शिक्षा दी जाती है। इसमें [illegible] प्रत्येक बालक तथा बालिका को कोई ऐसा व्यवसाय भी सिखाया जाता है, जो स्कूल छोड़ने के पश्चात जीविका कमाने में सहायक सिद्ध हो। जो बच्चे 'मूसहार्ट' में शिक्षा प्राप्त करते हैं, उनमें से प्रायः आधों को कालेजों में पढ़ने भेजे जाते हैं। अमेरिका के बहुत से विश्वविद्यालय 'मूसहार्ट' के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां देते हैं। अन्य बालक अपने अपने व्यवसाय शुरू कर देते हैं। उक्त संस्था भी इस काम में उनकी सहायता करती रहती है।

बताओ तो जाने ?

[कुमारी उषा]

एक बगीचे में चार देवताओं के चार मन्दिर थे। चारों मन्दिरों के सामने एक एक कुआं था। एक व्यक्ति चारों मन्दिरों में फूल चढ़ाना चाहता था। उसने बगीचे से कुछ फूल तोड़े। उन को उसने कुएं के पानी में धोया। उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ, जब उसने देखा कि वे फूल दुगने हो गये हैं। उन फूलों में से उसने कुछ पहले मन्दिर में चढ़ा दिये। बचे हुए फूल दूसरे मन्दिर में चढ़ाने से पहले उसने फिर कुएं के पानी में धोये। वे फिर दुगने हो गये। अब उसने उतने ही फूल जितने कि उसने पहले मन्दिर में चढ़ाये थे। दूसरे में भी चढ़ा दिये। जो बाकी बचे, उन्हें उसने फिर कुएं के पानी में धोया और वे दुगने हो गये। उनमें उसने तीसरे मन्दिर में भी पहले और दूसरे मन्दिर इतने ही फूल चढ़ाये। यही चौथे मंदिर में किया। चौथे मन्दिर में पहले मन्दिर जितने फूल चढ़ाने के पश्चात् उसके पास एक भी फूल बाकी न रहा। बताओ उसने कितने फूल तोड़े और कितने कितने फूल चढ़ाये।

अद्भुत संसार

● संसार भर में दो हजार सात सौ बासठ भाषाएं बोली जाती हैं।

● तारों की संख्या जो आंखों से दिखाई दे सकते हैं, पांच हजार है।

● मनुष्य के शरीर में २१० हड्डियां होती हैं।

● मधुमक्खी एक ऋतु में एक लाख अंडे देती है।

● तोते, उकाब और कबूतर हजार फुट की ऊंचाई तक उड़ सकते हैं।

● संसार भर में पक्षियों की संख्या २० लाख है।

● वैज्ञानिकों को सेब की ८००० किस्मों का ज्ञान है।

● भारतवर्ष में नंगे पांव फिरने वालों की संख्या २१ करोड़ है।

● कोयले से इस समय तक ८०० से अधिक बहुमूल्य वस्तुएं तैयार हो चुकी हैं।

भूल सुधार

२६ अप्रैल सन् १९५१ के साप्ताहिक वीर अर्जुन में छपे पृष्ठ पर छपी विद्यार्थी प्रतियोगिता में तीसरी श्रेणी के विजेताओं में श्री रामप्रताप जी के पते के साथ डूंगर कालेज बीकानेर के स्थान पर विज्ञापनदाता की गलती के कारण डूंगर कालेज जयपुर छप गया है। कृपया पाठक ठीक पता नोट कर लें।

—विज्ञापन मैनेजर

जरा हंसिये !

बेटा—(मां से) मास्टर जी ने आज हमें कहा था कि कल का काम आज ही कर लेना।

मां — बहुत अच्छी बात है।

बेटा—तो जो कहूं तुम कल बनाओगी वे आज ही बना दो।

× × ×

तीन मूर्ख समुद्र के किनारे जा रहे थे। उनमें से एक ने कहा, यदि समुद्र में आग लग जाय तो मछलियां कहां जायेंगी। दूसरा बोला, पेड़ पर चढ़ जायेंगी। तीसरा बोला गाय-भैंस थोड़े ही हैं, जो पेड़ पर चढ़ जायेंगे।

—[illegible]

उत्तर

बगीचे से उसने १४ फूल तोड़े। धोने से वे २८ हो गये उनमें से १६ पहले मन्दिर में चढ़ा दिये। बचे हुए फूल धोने से २४ हो गये। उनमें से फिर उसने १६ फिर दूसरे मन्दिर में चढ़ा दिये। बचे हुए ८ फूल धोने से १६ हो गये। उनमें से फिर उसने १६ तीसरे मन्दिर में चढ़ा दिये। बचे हुये ८ फूल धोने से १६ हो गये। उसने १६ फूल मन्दिर में चढ़ा दिये। इस भांति चारों मन्दिरों में चढ़ाने के पश्चात् उसके पास एक भी फूल बाकी नहीं बचा।

बहती रेता — ले०—श्री गुरुदत्त वैद्य। प्रकाशक—भारती साहित्य सदन। मूल्य पांच रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक श्री गुरुदत्त जी का एक ऐतिहासिक उपन्यास है जिसकी कथा भारत में बौद्धमत के पतन और उत्कर्ष होने के काल से ली गई है। लेखक ने विभिन्न पात्रों के चरित्र चित्रण और कथानक द्वारा कुछ विचारों का तुलनात्मक अध्ययन उपस्थित किया है। वे हैं बौद्ध विचारधारा और आर्य विचारधारा तथा गणतंत्र और राजतन्त्र प्रणाली। इस विवेचन को प्रकट करना ही कथा का मुख्य उद्देश्य प्रतीत होता है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह प्रकट हुआ भी सुन्दर ढंग से है।

श्री गुरुदत्त जी उन लेखकों में से हैं जो केवल पुस्तक लिखने के लिए पुस्तक नहीं लिखते, वरन् अध्ययन और अनुभव से पुष्ट हुए जिनके कुछ अपने सुदृढ़ विचार हैं। पुस्तक के द्वारा लेखक अपनी इसी पूंजी को पाठकों को बांटने का यत्न करता प्रतीत होता है। इतिहास के पाठकों में कई लोग लेखक से भिन्न मत रख सकते हैं किन्तु निष्कर्ष से मतभेद रखने वाले थोड़े ही होंगे। बौद्धमत का अनात्मवाद और व्यक्तिवाद भारत के राष्ट्र जीवन में भारी कटुता उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी रहा है यह एक ऐतिहासिक सत्य है। इसी प्रकार के सिद्धान्तों पर आधारित किसी भी विचारधारा की वृद्धि से पुनः राष्ट्र-जीवन में वैसी ही कटुता फैल सकती है, लेखक संभवतः इसी तथ्य की ओर इंगित करता प्रतीत होता है। इसी प्रकार के कुछ इतिहास के निष्कर्षों के आधार पर ही कथावस्तु खड़ी है।

वर्तमान काल की 'डेमोक्रेसी' का रूप बौद्ध काल के गणतंत्रों में देखने के लिए मिलता है। आज इस गणतन्त्र-प्रणाली को सर्वश्रेष्ठ शासनप्रणाली माना जाता है। किन्तु लेखक ने बौद्ध काल के वैशाली के प्रसिद्ध गणतन्त्र के समृद्धि और पतन का दृश्य उपस्थित करते हुए पतन के कारणों की विवेचना की है। पढ़ते समय प्रतीत होता है कि बहुत सी बातें भारत की वर्तमान दशा पर ज्यों की त्यों लागू होती हैं। 'डेमोक्रेसी' पश्चिम के राष्ट्रों के इतिहास में अभी नवीन राजनीतिक प्रयोग है जिसको स्वरूप धारण किए थोड़ा ही समय हुआ है। किन्तु भारत बौद्धकाल में ही इस परीक्षण को भली भांति कर चुका है और उस समय प्राप्त हुए अनुभवों के कारण आगे चल कर इसे छोड़ दिया गया। लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में उन्हीं बातों को दर्शा कर पश्चिम का अन्धानुकरण करने के आज के काल में हमारे शासकों और विद्वत् समाज का ध्यान उन अनुभवों की ओर खींचने का प्रयास किया है। इसी प्रकार एकतंत्र के दोषों को उपस्थित करने वाला दूसरा पक्ष भी साथ ही चला है। राजा पर नियन्त्रण के अभाव में वह कितनी हानि पहुंचाने वाली स्थिति भी स्वीकार कर सकता है सुरहरि विक्रम इसका उदाहरण है। इसी लिए उस पर विद्वानों का नियन्त्रण परमावश्यक है। इसके साथ भारत का सांस्कृतिक एकता बनाये रखने की आग्रहक प्रवृत्ति चली है। उपन्यास के द्वारा श्री गुरुदत्त जी एक ऐसी राज-व्यवस्था की ओर संकेत करते हैं जो हमारे इतिहास में मिलती है और जिसमें प्रजातन्त्र तथा एकतन्त्र दोनों प्रणालियों के गुण हैं, किन्तु दोनों के दोष नहीं।

कथानक में बौद्ध और आर्य विचार-धारा का संघर्ष भी पठनीय है। इतिहास का यह पाठ भारत के राष्ट्र जीवन में अत्यन्त महत्व का है और आधुनिकता में में उसे भूलना देश के लिए घातक सिद्ध हो सकता है यही बात लेखक पाठकों के समक्ष उपस्थित करता प्रतीत होता है।

जहां तक कथावस्तु का सम्बन्ध है, कथा का प्रवाह सरल तथा रोचक है और वर्णनशैली सुन्दर है। किन्तु कथा की दो एक बातें खटकती प्रतीत होती हैं। लेखक के पूर्व कथन के अनुसार सभी पात्र कल्पित हैं। फिर उपन्यास के चरित्रनायक भानुमित्र के एक के स्थान पर तीन तीन विवाह कुछ समझ में नहीं बैठते। वास्तव में प्रभवा और राका के चरित्रों को यदि निकाल भी दिया जावे तो भी कथा के प्रवाह में कोई अन्तर नहीं आता। इस विषय में भानुमित्र की मनोवृत्ति ऐसी प्रतीत होती है कि जहां कोई सुन्दर लड़की दिखाई दे उसे अपनी ओर आकर्षित कर विवाह कर लो।

किन्तु इस प्रकार की दो एक बातों के होते हुए भी पुस्तक सुन्दर बन पड़ी है और पाठकों को मनोरंजन के साथ साथ विचार प्रदान करने वाली है। आशा है कि हिन्दीजगत इसे प्रेमपूर्वक अपनायेगा।

—केशव

शारीरिकोन्नति—लेखक और प्रकाशक—श्री पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य, अमृतधारा कार्यालय, देहरादून। मूल्य दो रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक स्वयं अनुभवी वैद्य और सफल चिकित्सक हैं। इस पुस्तक में उन्होंने अत्यन्त सरल भाषा में स्वास्थ्यरक्षा के नियम बताये हैं। मानसिक शक्ति, स्वास्थ्यप्रद भोजन, ब्रह्मचर्य और व्यायाम पर उन्होंने विचार किया है। मानसिक शक्ति के उपचार से साधारणतः मनुष्य अपने रोगों को दूर कर सकता है। अपनी मानसिक शक्ति कैसे बढ़ाई जाय, प्राणायाम कैसे किया जाय, स्वस्थ भोजन कैसे किया जाय, यह बताने के बाद लेखक ने व्यायाम पर विस्तार से विचार किया है। भिन्न भिन्न आसन और व्यायामों का सचित्र परिचय किसी भी पाठक के लिए बहुत लाभकारी है। १०० से अधिक चित्र दिये गये हैं। बीच बीच में यूरोप व भारत के अनेक रोगियों के उदाहरण से पुस्तक रोचक भी हो गई है। हमें आशा है कि अर्जुन के पाठक इस पुस्तक से अवश्य लाभ उठावेंगे।

श्री बद्री केदार यात्रा—(सचित्र) ले०—स्व० बुद्धिचन्द्रपुरी। प्रकाशक—श्री रामेश्वर पुस्तकालय, श्री गुरु श्रीचन्द्र का मन्दिर, पो० ओ० कनखल यू० पी०)

बहुत प्राचीन काल से बद्रीनाथ और केदारनाथ हिन्दुओं के तीर्थ माने जाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में इन तीर्थों विस्तृत परिचय देने के अतिरिक्त यात्रियों को बहुत सी ऐसी सूचनाएं दी गयी हैं, जो यात्रियों के लिए बहुत आवश्यक हैं। बीच-बीच में तीर्थों की झांकियां भी दी गई हैं। पुस्तक के प्रारम्भ में उत्तराखण्ड का नक्शा दिया गया है, जिसमें श्री बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, जमुनोत्री, कनखल, हरिद्वार, ऋषिकेश, लक्ष्मण झूला, टिहरी, कर्णप्रयाग, देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कालीमठ आदि ७४ स्थान दिखाये गये हैं। यह नक्शा बहुत अच्छा है।

वैदिक योगामृत—ले० स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक। प्राप्ति स्थान—सार्वदेशिक पुस्तकालय पटौदी हाउस, दरियागंज, दिल्ली तथा आर्यसाहित्यसदन, नई सड़क दिल्ली, पृष्ठसंख्या ५२। मूल्य १० आने।

पुस्तक में प्राचीन वैदिक उपासना पद्धति के अनुसार योगदर्शन में वर्णित सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पांच यमों का सरल भाषा में वर्णन किया है। साथ ही आत्मानिरीक्षण और ध्यान धारणा समाधि का भी वर्णन किया है। जिस से इस मार्ग पर चलने की इच्छा रखने वाले अध्यात्मवादियों के लिये पुस्तक और अधिक उपयोगी हो गई है। लेखक ने अहिंसा के प्रकरण में चिकित्सकों में रोगों तथा भयंकर जीवों पर किये गये अपने अहिंसा सम्बन्धी प्रयोगों की भी चर्चा की है। पुस्तक अध्यात्मप्रेमियों के काम की है।

—दिलीप

१. मधुमक्खी पालन—लेखक-श्री शम्भुनाथ सक्सेना, प्रकाशक-नूतन प्रकाशन मंदिर, मूल्य ॥=) पृष्ठ संख्या—३२।

२. हाथ से कागज बनाना—लेखक प्रकाशक और मूल्य वही। पृष्ठ संख्या—४१।

प्रस्तुत दोनों पुस्तकें ऐसे गृह-उद्योगों पर लिखी गई हैं जो भारत में भली प्रकार पनप सकते हैं पर अब तक उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। मधुमक्खी पालन के सम्बन्ध में विदेशी भाषाओं में तो काफी साहित्य पाया जाता है पर हिन्दी में अभी तक उसका अभाव ही है। प्रथम पुस्तक में मधुमक्खियों की किस्में, छत्ते, उनसे शहद निकालना, मधुमक्खियों का पालना आदि काफी सुन्दर ढंग से बताए गये हैं। चित्रों ने पुस्तक की उपयोगिता और बढ़ा दी है।

दूसरी पुस्तक में भारत के विभिन्न भागों में हाथ से कागज किस प्रकार बनाया जाता है, इसका विवरण है। साथ ही कागज बनाने की विधि भी समझाई गई है। पर चित्रों की कमी खटकती है।

यह दोनों गृहउद्योग ऐसे हैं कि यदि इन पर ध्यान दिया जाय तो विदेशों की भांति यहां भी बेकारी की समस्या कुछ हद तक दूर हो सकती है। शायद किसानादि भी इससे लाभ उठा सकते हैं। विशेष रूप से तो ये पुस्तकें हैं ही उन्हीं के लिए, पर इनकी भाषा जन साधारण की समझ से कुछ कठिन है। मूल्य भी कुछ अधिक प्रतीत होता है।

—[illegible]

मुद्राराक्षस नाटक की आलोचना

(पृष्ठ २ का शेष)

स्वार्थी, निर्दय, अलौकिक, नीरस, विरक्त जैसा प्रतीत होता है, परन्तु समस्त नाटक को पढ़ने के पश्चात पाठक इसी निष्कर्ष पर पहुंचेगा कि चाणक्य ऊपर से चाहे कितना ही निष्ठुर क्यों न हो परन्तु हृदय से अतीव सहृदय कुशल राजनीतिज्ञ और गुणग्राही व्यक्ति है। इसकी नीति का सार और सफलतासूत्र एकमात्र अपने विचार को अपने तक सीमित रखना है। राक्षस आदर्श, स्वामीभक्त, मित्र-प्रेमी, नीतिज्ञ, वीर व भावुक व्यक्ति है। यही कारण है कि चाणक्य सदैव इसके गुणों से आकृष्ट हो इसे चन्द्रगुप्त का मंत्री बनाना चाहता है। राक्षस भावुक होने के कारण स्वामी नन्द के विनाशोपरांत उसे स्मरण कर कई बार रोता है तथा भाग्य को कोसता है। चाणक्य अपने जीवन में एक मात्र पुरुषार्थ व अपनी बुद्धि पर ही विश्वास करता है। चन्द्रगुप्त के संबंध में प्रायः समालोचकों की यह भ्रांत धारणा बन गई है कि उसका अपना अस्तित्व तो इस नाटक में नितांत भी नहीं है वह तो चाणक्य के हाथ की कठपुतली है। परन्तु पर्वतेश्वर की श्राद्ध-क्रिया कर स्वयं लोभयुक्त हो निरपराधी को दोषी बनाने की विचारधारा बहुत निराली है इसकी वीरता और सैन्य-शक्ति का परिचय राक्षस को चाणक्य के यह बताने पर कि तुम अपनी शक्ति को क्यों न्यून समझते हो, देखो तुम्हें अपनाने के लिये चन्द्रगुप्त ने कितनी तैयारी की है। इसके अश्व हस्ति सदैव युद्ध सामग्री से सुसज्जित रहते हैं, इत्यादि से प्राप्त होता

रस

नाटक में प्रधान वीर और गौण करुण-रस का परिपाक अति उत्तम हुआ है। अंगुलिमुद्रा की प्राप्ति से लेकर चन्दनदास के नगर सेठ घोषित हो जाने तक नाटक में कौतूहलता का अखंड साम्राज्य है। अतः नाटक के प्रति किसी प्रकार दर्शकों के हृदय में अरुचि उत्पन्न नहीं होने पाती। रंगमंच पर समस्त नाटक में एक भी बूंद रक्तपात नहीं हुआ। अंत में सकुशल नायक अपने उद्देश्य में सफल हो जाता है। नाटक का अंत भरत-वाक्य से हुआ है। अतः यह सुखांत नाटक है। इसमें संस्कृत नाट्य-शास्त्र के नियमानुसार आवश्यक विदूषक पात्र का तो सर्वथा अभाव है। शृंगार रस नाम को भी नहीं आने पाता है।

अनुवादक

अनुवादक बलदेव शास्त्री ने मूल भावों को अक्षुण्ण बनाने का यथाशक्ति प्रयत्न तो किया है। परन्तु स्वाभाविक कवित्व शक्ति के अभाव के कारण अधिकांश पद्यों के अनुवाद में अस्पष्टता के साथ २ मूल भावों का पूर्ण संरक्षण नहीं हो पाया है। जैसे—"करी इस की सेवा करता" इत्यादि पद्य में "इच्छुक बढ़ा विस्तार" से यह स्पष्ट नहीं होने पाया कि स्वामी के अभ्युदय की आकांक्षा के कारण या सेवक निज-यश विस्तार के कारण आपत्ति में स्वामी का साथ नहीं छोड़ते। इसी प्रकार अन्यत्र भी मूल भाव स्पष्ट नहीं हो पाये हैं।

अतः अनुवादक आधुनिक युग का होता हुआ भी, जबकि भाषा प्रौढ़ावस्था में पहुंच चुकी है, हरिश्चन्द्र के समान सफल नहीं हो पाया है।

वीर अर्जुन साप्ताहिक का मूल्य

वार्षिक	१२)
अर्धवार्षिक	६॥)
एक प्रति	चार आना

a Clear Case for
SAFI
साफ़ी
से रक्त भी साफ़
और त्वचा भी साफ़
हमदर्द दवाखाना (ट्रस्ट) दिल्ली
SAFI
SAFI
A Hamdard PRODUCT

अर्जुन

सिन्ध का एक महान् भारतीय

★ श्री नादिग कृष्णमूर्ति

एक निर्धन युवक हैदराबाद (सिंध) में पुस्तकों की एक दुकान के आगे से गुजर रहा था। वह दुकान के भीतर घुसा और आलमारियों में करीने से सजा कर रखी पुस्तकों की ओर देखने लगा। अचानक उसकी निगाह रुक गई और उसका मन मचल उठा। उसने जो पुस्तक खरीदी, वह अब्राहम लिंकन की जीवनी थी। वह उसे घर ले गया और हब्शियों की स्वतन्त्रता के लिए उस महान् अमेरिकी प्रेसीडेंट द्वारा की गई अद्वितीय सेवाओं की चित्ताकर्षक कहानी को आद्योपान्त पढ़ डाला। लिंकन की जीवनी ने उसके कल्पना-संसार को जगा दिया। वह साहसपूर्ण कार्यों और समृद्धि के स्वप्न लेने लगा और उसके मन में भी अपने देशवासियों की सेवा की भावना जाग्रत हो उठी। वह युवक, जो गोविन्दराम वाटूमल के सिवाय और कोई न था, एक दिन अपने स्वप्नों को मूर्तरूप देने में सफल हो गया। आज गोविंदराम वाटूमल की गणना उन महान् व्यक्तियों में की जाती है, जो मनुष्य मात्र से प्रेम करते हैं। सुप्रसिद्ध वाटूमल कृत्वृत्तियों ने भारत और अमेरिका को एक दूसरे के निकट लाने में बड़ी मदद दी है।

गोविन्दराम वाटूमल, होनोलुलु (हवाई द्वीपसमूह) के सफल व्यापारियों में से हैं। उनका जन्म हैदराबाद (सिंध) में हुआ था, जो आज पश्चिमी पाकिस्तान का एक भाग है। उनके पिता वहाँ पानी की सप्लाई के ठेकेदार थे। जब गामा—वाटूमल के पिता उन्हें इसी नाम से पुकारा करते थे—आठ वर्ष का था, उनके पिता एक ऊँट से गिर कर अपंग हो गये। गोविन्दराम के भाई जमनादास की होनोलुलु में एक छोटी सी दुकान थी। वह अक्सर थोड़ी बहुत रकम घर भेज दिया करता था। इस छोटी सी रकम से और गोविन्दराम तथा उसकी चारों बहिनें, जो थोड़ा बहुत कमातीं, उससे घर का खर्च चलता था।

अपनी जवानी के दिनों में गामा को बड़ा कष्टमय जीवन बिताना पड़ा। उसे कमाना भी पड़ता था और साथ में पढ़ना भी। उसके भाई जमनदास ने उसे अपनी इन्जीनियरिंग की शिक्षा पूरी करने में मदद दी। इसके बाद गोविन्दराम को हैदराबाद में ३० रुपये मासिक पर नौकरी मिल गई।

१९१७ में जमनदास ने गोविन्दराम को एक पत्र लिखा, जिसने उसके भाग्य को बदल डाला। पत्र में लिखा था, "प्रिय गोविन्दराम, मेरी यहाँ किराये की छोटी सी दुकान है। मैं सहायक दुकान चलाना नहीं जानता, यदि तुम यहाँ आ जाओ और दुकान चलाने में मदद दो, तो इससे मुझे बड़ी सहायता मिलेगी। तुम्हारा, जमनादास।"

इस पत्र के मिलने के तीन महीने बाद गोविन्दराम अपने एक छोटे-से सूटकेस को लेकर उस भूमि पर जा उतरा, जहाँ वह भारतीयों की सेवा करने के अपने स्वप्न को पूर्ण रूप देने में सफल हो गया।

कुछ समय बाद गोविन्दराम ने स्थायी रूप में होनोलुलु में ही बस जाने का निश्चय कर लिया। वह इस विचार को लेकर नागरिकता का आवेदन-पत्र देने के लिए एक स्थानीय अदालत में पहुँचा। अदालत में उसकी भेंट एक महिला से हुई, जो बाद में उसकी जीवनसंगिनी बन गयी। एलन जेसप स्कूल में अध्यापन का कार्य करती थीं। वह वाटूमल की योजनाओं से बड़ी प्रभावित हुई और १९२२ में उसने वाटूमल से विवाह कर लिया। किन्तु एक गैर-अमरीकी से विवाह करने का परिणाम यह हुआ कि उसे अमेरिकी नागरिकता के अधिकारों से वंचित होना पड़ा। इससे पति-पत्नी को बहुत दुःख हुआ, लेकिन वे हतोत्साह नहीं हुए। वे कारोबार को सफल बनाने के लिए मिल कर प्रयत्न करने लगे। गोविन्दराम ने जिस ढंग से काम सम्भाला, उससे उसका बड़ा भाई बहुत प्रभावित हुआ और उसने दुकान का सब प्रबन्ध उसके हाथ में ही सौंप दिया। दस साल के अल्पकाल में ही वाटूमल की गणना होनोलुलु के सबसे बड़े खुदरा व्यापारियों में होने लगी।

वाटूमल की कारोबारी संस्थाओं में मालिकों और नौकरों के बीच कोई भेद भाव नहीं पाया जाता। वहाँ का वातावरण सौहार्द और समानता की भावना से परिपूर्ण है। वाटूमल प्रतिमास अपने कर्मचारियों को पार्टी दिया करते हैं और उस अवसर पर आपसी समस्याओं पर चर्चा की जाती है। कर्मचारियों को सभी प्रकार की सुविधाएं प्राप्त हैं। सवेतन छुट्टी के अलावा उनके लिए स्वास्थ्य के बीमे, बोनस और रिहायश की भी व्यवस्था है।

१९१७ में होनोलुलु में आने के बीस वर्ष बाद वाटूमल का कारोबार बहुत फैल गया और उनकी दुकान की शाखायें होनोलुलु में जगह-जगह स्थापित हो गईं।

[शेष पृष्ठ २२ पर]

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार ३१ वैशाख सम्वत् २००८ [अङ्क ३

हमारी आर्थिक स्थिति

भारत सरकार ने राष्ट्रीय आय का अनुमान करने के लिए जो समिति बनाई थी, उसकी रिपोर्ट के अनुसार १९४८-४९ में भारत की कुल राष्ट्रीय आय ८७ अरब १० करोड़ रु० और प्रति व्यक्ति आय २५५ रु० थी। राष्ट्रीय आय का यह अनुमान किसी देश की आर्थिक अवस्था का पूर्ण निर्देश करता है। प्रायः प्रत्येक देश में आर्थिक स्थिति के ज्ञान के लिए यह पता लगाने की चेष्टा की जाती है कि उसकी कुल आय कितनी है और उसके खर्च कितने हैं। इससे यह मालूम हो जाता है कि हम कितने पानी में हैं। इसके बाद स्थिति के सुधार के लिए योजनाएं बनाई जाती हैं। विभिन्न आर्थिक योजनाओं का आधार राष्ट्रीय आय सम्बन्धी वही आंकड़े होते हैं, जो उक्त समिति ने प्रकाशित किये हैं।

किसी देश की असली राष्ट्रीय आय का पता लगाना बहुत कठिन होता है। फिर भी अर्थशास्त्री अपनी ओर से कोई बड़ी भूल न रहने देने का प्रयत्न करते हैं। इसलिए उक्त समिति के आंकड़ों को पूर्ण सत्य न भी मानते हुए असत्य भी नहीं कह सकते। समिति के आंकड़े बहुत गम्भीर हैं। इनके अनुसार प्रति भारतीय की आय केवल २५५ रु० अर्थात् २१ रु० मासिक है और यह भी तब, जब महंगाई का आर्थिक चक्र बहुत तेज़ी से घूम रहा है और रुपये की कीमत आज चार आने से भी कम रह गई है। श्री राव ने आज से २० वर्ष पूर्व भी अनुमानित आंकड़े प्रकाशित किये थे, उनके अनुसार प्रत्येक भारतीय की आय ६५) रु० वार्षिक थी। यों ६५ और २५५ में पर्याप्त अन्तर है, किन्तु महंगाई को सामने रखें, तो यह संख्या ६२ हो जाती है, अर्थात् पहले से तीन रु० कम। रुपयों पैसों में यदि हम न देखें और जीवनोपयोगी पदार्थों की दृष्टि से देखें, तो युद्ध से पूर्व प्रति व्यक्ति को मिलने वाले अनाज और वस्त्र भी ४॥ मन और १६ गज से गिरकर ३॥ मन और ११गज से भी कम रह गये हैं। यह स्थिति किसी भी देश के लिए शोचनीय है। अंग्रेज़ सरकार के शासन में आर्थिक अवनति की जिस दिशा में देश गिरना प्रारम्भ हो चुका था, उसका निवारण आज हम स्वतन्त्र भारतीय भी यदि तीन चार वर्षों में नहीं कर सके, तो यह अशोभनीय होते हुए भी अस्वाभाविक नहीं है। सचमुच ब्रिटिश शासन की युद्धकालीन नीति ने भारत के आर्थिक चक्र को बहुत कमज़ोर कर दिया था। स्वातंत्र्य के साथ ही देश विभाजन की घातिनी नीति ने उसे बिलकुल झकझोर दिया। एक साथ अनेक भीषण समस्याओं ने आकर आर्थिक स्थिति को बहुत पंगु कर दिया। विदेशों से अपनी आर्थिक स्थिति की तुलना करें, तो स्थिति का और भी स्पष्ट आभास मिल जायगा। इंगलैंड, अमरीका आदि समृद्ध देश ही नहीं, एशिया के भी कई देशों में प्रति व्यक्ति आर्थिक आय यहां से बहुत अधिक है। पृष्ठ २१ पर पाठक इस सम्बन्ध में कुछ तुलनात्मक अन्तर भी देखेंगे।

देश की इस हीन आर्थिक स्थिति के लिए कौन उत्तरदायी है, यह बहुत विवादास्पद विषय है। प्रायः सभी वर्ग व संस्थाएं दूसरे पर इसका उत्तरदायित्व डालना चाहती हैं, किन्तु इससे स्थिति सुलझने की कोई सूरत नज़र नहीं आती। सच्चाई यह है कि आज सरकार, उद्योगपति, मजदूर किसान और ज़मींदार, व्यापारी और दुकानदार सबको एक साथ मिल कर ही यह निश्चय करना है कि हमारे राष्ट्र का आर्थिक स्तर किस तरह उन्नत हो और फिर उसके लिये अपना अपना काम शुरू करना है। दूसरे के कर्तव्य की अपेक्षा सभी अपना कर्तव्य देखें, तो समस्या हल हो सकती है, अन्यथा वह और भी उलझ जायगी।

सोमनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार

इतिहास अपने को दुहराता है, इस सत्य को सोमनाथ के पुनः जीर्णोद्धार ने सिद्ध कर दिया है। सोमनाथ किसी समय भारत के समृद्धतम मन्दिरों में एक था। ऐतिहासिक परम्परा के अनुसार महमूद गज़नी ने इस पर आक्रमण किया और उसकी अमूल्य सम्पत्ति को लूट लिया। गज़नी का आक्रमण भारतीयता पर गहरी चोट थी। सोमनाथध्वंस भारतीय पराजय का प्रतीक बन गया। भारतीय इतिहास में उसके बाद ऐसा काल आया, जो हमारे लिए उज्ज्वल नहीं रहा। मुसलमानों के शासन में हमने स्वतन्त्र होने की चेष्टएं की, हम सफल भी हुए, परन्तु पूर्ण सफलता से पूर्व ही पश्चिमी शक्ति द्वारा पदाक्रांत हो गये। १९४७ ई० में स्वतन्त्र होने पर भी जूनागढ़, जहां सोमनाथ का मन्दिर है, एक मुस्लिम शासक के हाथ में रहा। इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि उसके स्वतन्त्र होते ही हम भारतीय पराजय के प्रथम प्रतीक सोमनाथ ध्वंस के प्रतीकार में उत्साह दिखाते। यही कारण है कि सोमनाथ के जीर्णोद्धार में राष्ट्र ने इतना हर्ष प्रकट किया। इस सप्ताह उस मन्दिर में ज्योतिर्लिंग की स्थापना हो गयी है और निकट भविष्य में वहां एक भव्य मन्दिर तैयार हो जायगा। इस अवसर पर मन्दिर के प्रबन्धकर्त्ताओं से हम यह निवेदन करना चाहते हैं कि यदि अन्य मन्दिरों की तरह ही यह भी केवल पूजा का एक मन्दिर रहा, इसकी उपयोगिता केवल कुछ शैवों के लिए सीमित रह जायगी। इसी लिए इस मन्दिर को विशाल ज्ञान मन्दिर और भारतीय संस्कृति का केन्द्र बनाने की आवश्यकता है। किसी के एक सम्प्रदाय के पूजास्थान तक सीमित करने से इसका वह स्वरूप नहीं बन पायगा, जिसकी कल्पना में जनता ने उस समय परम उत्साह दिखाया था, जब सरदार पटेल ने जीर्णोद्धार के संकल्प को प्रकट किया था।

जन आन्दोलन का रूप दो

अन्न संकट देश की सर्वप्रधान समस्या है। अन्न के सुलभ होते ही देश की अधिकांश समस्याएं सुलझने लगेंगी। बेकारी, महंगाई, व्यापार, व्यवसाय का गिरना, बेईमानी, मुनाफाखोरी आदि बड़ी-बड़ी समस्याएं भी सुलझ जायेंगी। अन्न-संकट की इस गम्भीरता को सभी समझते हैं और यही कारण है कि आज इसे हल करने के लिए सभी दल और सभी नेता प्रतिदिन आन्दोलन करते हैं और सरकार भी इसी के लिए एक ओर विदेशों से अन्न की भिक्षा मांगती है, तो दूसरी ओर जनता से सहायता की अपील करती है, किन्तु सचाई यह है कि अन्न सम्बन्धी स्थिति में ज़रा भी सुधार होता नहीं दीखता। वस्तुतः अन्न-संकट की गुरु समस्या केवल सरकार के कुछ अधिकारियों के बस की बात नहीं, यह तो सम्पूर्ण देश के एक साथ मिल कर प्रयत्न करने से ही हल होगी। यदि आज जनता केवल सरकार को कोस कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ ले, तो उससे स्थिति में रत्ती भर भी सुधार नहीं होगा। पंजाब प्रान्तीय रा० स्व० संघ के चालक श्री हंसराज गुप्त ने उस दिन स्वयंसेवकों की एक सभा में स्वयं सेवकों से यही अपील की 'कि इन सब को अन्न संकट के सुलझाने का प्रयत्न करना चाहिए। हम अन्न का दुरुपयोग न करें और न करने दें। सप्ताह में एक दिन का अन्न बचा कर उसे अपने पीड़ित बान्धवों को दें।' वस्तुतः अन्न संकट निवारण को जब तक जन नेता जन आन्दोलन का रूप नहीं देंगे, तब तक यह समस्या हल नहीं होगी।

दुविधा में

अमेरिकन राष्ट्रपति मि० ट्रूमैन ने कोरिया युद्ध से जनरल मैकार्थर को वापस बुला कर रूस व चीन को प्रसन्न करने की जो चेष्टा की थी, उस पर अब मैकार्थर को वापस बुलाने से असंतुष्ट अमेरिकन जनता को खुश करने के लिए दिये गये भाषणों से पानी फेर दिया है। सचमुच अमेरिकन सरकार दुविधा में है। एक ओर ब्रिटेन नीति को नरम करने के लिए उस पर जोर डालता है, दूसरी ओर अमेरिकन जनता का एक बड़ा भाग तथा चीन का अपनी बात पर आग्रह उसे उग्र नीति अपनाने के लिए विवश करता है। यही कारण है कि वह कुछ निश्चयात्मक कदम उठाने से घबराता है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि कोरिया का युद्ध लम्बा होता जा रहा है। स्वयं अमेरिका के साथी राष्ट्रों में भी मतभेद पैदा हो रहे हैं। ब्रिटेन और अमेरिका भी सब प्रश्नों पर एक मत हैं। ब्रिटेन कम्यूनिस्ट चीन को स्वीकृत करने का समर्थन कर रहा है। यह स्थिति अमेरिका के प्रतिकूल ही फल पैदा करेगी।

तर्क शून्य स्थिति

आचार्य कृपलानी ने पहले प्रजातंत्री मोर्चे को भंग करके और फिर कांग्रेस के चुनाव बोर्ड से पृथक रह कर तथा फिर कांग्रेस से सम्बन्ध-विच्छेद की सम्भावना को पुष्ट कर अपनी स्थिति विचित्र और तर्कशून्य बना ली है। कांग्रेस की नीति से सहमत होकर भी वे उससे अलग हो रहे हैं, यह अब निश्चितप्राय है। किन्तु हमें संदेह है कि वे अलग रह कर भी कांग्रेस और देश का कुछ हित कर सकेंगे। उनके भी साथी प्रायः वही हैं, जो कांग्रेस संगठन में रह कर उसकी बुराइयों से अपने को मुक्त नहीं कर पाये। ऐसी स्थिति में वे कांग्रेस के असंतुष्ट वर्ग को उससे पृथक करने के सिवा अपने दल को कोई लाभ पहुँचा सकेंगे, इसकी सम्भावना बहुत कम है।

सोमनाथ : महमूद गजनी क्या विजयी होकर लौटा था ?

श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

भारतीय इतिहास के अनेक पन्ने धूमिल हैं। अनेक कोहरे से ढके हैं। जो प्रकाश में हैं भी वे अनश्रुतियों, किम्वदन्तियों और स्वार्थपूर्ण प्रचार और विभिन्न प्रेरणाओं के परिणाम हैं। भारतीय बालक को यही पढ़ाया जाता रहा कि महान् सिकन्दर भारत से विजयी हो कर लौटा। यदि उसकी थकी और प्रवासिनी सेना विद्रोह न करती तो महान् विजेता के चरण पाटलीपुत्र (पटना) भी अवश्य पहुंचते। यह भी पढ़ाया गया कि राजा पुरु (पोरस) से उसका युद्ध हुआ। पर सिकन्दर ने उसके साथ उदारता का बर्ताव किया और उसका राज्य उसको वापस देकर उसको अपना मित्र बना लिया। पर इतिहास-सूर्य की किरणें जब ग्रीक लेखकों के इस मिथ्या-प्रचार पर पड़ीं तो मालूम हुआ कि सिकन्दर की विजय-यश गीतों के गायकों ने वस्तुत: कभी न हुई लड़ाई को भीषण संग्राम बना कर वर्णन किया। पंचनद की लड़ाई में सिकन्दर आहत और पराजित हो कर भारत से वापस गया था, यह अब मान लिया गया है।

कलकत्ता की कालकोठरी की कहानी तो नई है। श्री अक्षयकुमार दत्त ने जब इसकी ऐतिहासिक सचाई पर शंका प्रगट की तो ब्रिटिश प्रचारकों ने आंखें तरेरीं। पर सत्य छिपा नहीं रहा। स्कूल की पुस्तकों से भी अब इसका नाम मिट गया।

इस्लामी प्रचारकों का मिथ्या प्रचार

परन्तु सोमनाथ के विषय में आज भी भ्रम चला आ रहा है।

प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो ने इस नगरी का वर्णन 'स्वर्णमूर्तियों की नगरी' करके किया है। फिर इसका यथार्थ इतिहास भी यदि स्वर्ण मूर्तियों की आभा और चमक में विलीन हो जाय, तो क्या आश्चर्य? परन्तु सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि आज जब सोमनाथ का प्राचीन गौरव पुन स्थापित किया जा रहा है, उसकी पुरानी महिमा पुन उद्घृत की जा रही है, उसमें पुन प्राण प्रतिष्ठा की जा रही है, उस समय भी इस मिथ्या इतिहास को दुहराया जा रहा है कि महमूद गजनवी ने सोमनाथ की मूर्ति को तोड़ा और अपार धन राशि और उसके चन्दन के द्वार लूट ले गया। सचाई यह है कि महमूद गजनवी पानी न मिलने से अपने प्राण बचाकर सोमनाथ से भागा। वहां उसको लड़ने का साहस ही नहीं हुआ। महमूद गजनवी की विजय की कथा को केवल इस्लामी प्रचारक ऐतिहासिकों ने लिखा है, और किसी ने भी नहीं लिखा। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में से एक अत्यन्त पवित्र स्थान—जहां धर्मराज युधिष्ठिर ने स्वतः अर्चना और वन्दना की, जिसके थोड़ी दूर पर ही भगवान कृष्ण ने अपने प्राणों का विसर्जन किया, एक आक्रान्ता द्वारा भ्रष्ट किया जाना और भारतीय अनुश्रुति में उसको स्थान न मिलना, क्या यह बात कल्पना की जा सकती है? क्या यह बुद्धि गम्य है? और तो और १२०२ में एक ईरानी कवि यात्रा करता हुआ वहां पहुँचा था। उसने सोमनाथ की मूर्ति को हीरों और रत्नों से जटित और भूषित देखा। यदि एक विदेशी आक्रान्ता द्वारा उसके आने से लगभग दो सौ साल पूर्व वह अपवित्र किया गया होता, मूर्ति खण्डित की गई होती, तो क्या उसका वह यात्री उल्लेख न करता? क्या यह घटना इतनी मामूली थी, जिसको मन्दिर से सम्बन्धित लोग इतनी जल्दी भूल जाते?

भारतीय काबा

प्रश्न यह है कि महमूद गजनवी का नाम फिर इसके साथ कैसे जुड़ा? 'तवारिख ए सोरठ' के लेखक का कहना है, कि इस्लाम के अनुयायी मानते हैं कि भारत का सोमनाथ लिंग पैगम्बर इब्राहम के जीवन काल में मक्का से लाया गया, परन्तु हिन्दुओं का विश्वास है कि यह शिवलिंग है या चन्द्र लिंग है, और इस कारण से यह सदा से अस्तित्व में है। रणछोड़ जी की यह बात गलत नहीं कही जा सकती। क्योंकि उनके प्रसिद्ध पिता अमर जी ने प्रभास पट्टन पर अधिकार किया था और दो बार १८२४ वि० १८४९ में उसके गवर्नर रहे थे। पेशे और संस्कृति दोनों दृष्टियों से उनका मुसलमानों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था। मुसलमानों में प्रचलित उपाख्यानों और दन्तकथाओं को वे जानते थे।

इससे प्रगट है कि सोमनाथ की इस भूल को भारत के इस्लामी संसार में प्रबल प्रचार द्वारा जीवित रखा गया। महमूद भी इधर इससे आकृष्ट हुआ और हिन्दुओं के अधिकार से भारतीय काबा का उसने उद्धार करने का बीड़ा उठाया। सोमनाथ पर हुई लड़ाई के विषय में महमूद गजनवी के दरबारी लेखकोंने मौन धारण कर रखा है। जैसलमेर के राव चारण के इतिहास में सोमनाथ के ध्वंस किए जाने और उसके लूटे जाने का कोई वर्णन नहीं। हां मुसलमान लेखक इसकी कल्पित लूट का वर्णन विस्तार से बराबर करते रहे। अलाउद्दीन खिलजी के जनरल अलफ खान और नसरत ने १३०२ में विजय किया था। उस समय प्रभास पट्टन पर भी उन्होंने आक्रमण किया। उस समय यह मन्दिर भी भ्रष्ट किया गया। अहमदाबाद के टांक राजपूतों के, जो मुसलमान हो गए थे, अधिकार में यह १३५३ वि० से १६२७ वि० सं० तक रहा। खिलजी और टांक मुस्लिम सुलतान के कारनामों को महमूद गजनवी के नाम के साथ जोड़कर इस्लाम के प्रचारकों ने महमूद गजनी को सोमनाथ का विजेता घोषित कर दिया। मुसलमान लेखकों ने सोमनाथ को इस्लामी गौरव और विजय तथा हिन्दू पराजय और लज्जा का प्रतीक माना।

प्रभास से पलायन

महमूद गजनवी प्रभासपट्टन से पराजित होकर भागा। यह उसका अपना ऐतिहासिक ही लिख गया है। इब्न-उल अमीर उसका दरबारी इतिहास लेखक था। उसने लिखा है कि महमूद प्रभासपट्टन से जल्दी में मरुहीन प्रदेश से होकर भागा। उदयपुर प्रशस्ति के अनुसार मालवा नरेश भोज ने तुर्कों को हराया। परन्तु महमूद का सामना और उसका प्रतिरोध राजा भोज ने नहीं, बल्कि गुजरात के राजा भीमदेव प्रथम ने किया था। राजा भीमदेव ने अत्यन्त रणचातुरी और कौशल का परिचय दिया। वह योजनापूर्वक पीछे हटता गया और महमूद को उसने सोमनाथ की विजय करने के लिए ललचाया। इससे उसका चाव बढ़ता गया और बढ़ते बढ़ते एकाकी किले में बन्द हो गया और मरुभूमि में आ पहुंचा, जहां उसकी सारी सेना नष्ट हो गई। जब प्राणों के लाले पड़े हों, पानी की बूंद बूंद के लिए सेना तरस रही हो, उस समय क्या लूट-पाट करने की शक्ति उसमें बाकी रह गई थी?

महमूद दोहरी आपत्ति में फंस

[शेष पृष्ठ २१ पर]

ब्रिटिश सरकार ने ईरानी तेल के सम्बन्ध में मध्यस्थ बनाने के लिए श्री रैड क्लिफ का नाम लिया है। पंजाब व बंगाल सीमा के विभाजन के पंच भी यही थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर श्री सुरेन्द्र शास्त्री पुनः निर्वाचित हुए हैं।

जगद्गुरु शंकराचार्य, जिनकी प्रकाण्ड विद्वत्ता ने समस्त देश में अपना डंका बजा दिया था। इनकी जयन्ती इसी सप्ताह मनाई गई।

राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद ने तैलंगाना के १८ कम्युनिस्टों की प्रार्थना को स्वीकार कर उनके प्राणदण्ड को आजीवन कारावास में बदल दिया है

अमेरिकन राष्ट्रपति श्री ट्रूमैन की गत ८ मई को ६७वीं वर्षगांठ मनाई गई।

चुनाव की दौड़ पर ७ महारथी

हमारा विशेष लेख

हमारी कुल राष्ट्रीय आय

— श्री अशोक

> इसी सप्ताह भारत सरकार की एक समिति ने राष्ट्रीय आय के सम्बन्ध में एक रिपोर्ट प्रकाशित की है। पर यह आय क्या होती है, इसे कैसे निकालते हैं, इसका इतिहास क्या है, हमारी प्रति व्यक्ति आय विदेशों की तुलना में कितनी कम है, आदि का संक्षिप्त परिचय इस लेख से मिलेगा।

डाक्टर वी० के० आर० वी० राव के शब्दों में किसी भी देश की राष्ट्रीय आय में हम उन समस्त वस्तुओं का सम्मिलित कर लेते हैं, जो कि एक निश्चित समय में बिक्री के लिए बाजार में प्राप्त हों। इसमें से जो वस्तुएं बाहर से आती हैं, वे निकाल दी जाती हैं। इसके साथ ही, हम, उनके बनाने में जितनी पूंजी व्यय होती है वह भी निकाल देते हैं। इस प्रकार शेष वस्तुओं का कुल मूल्य किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय आय कहलाती है। यदि हम अपनी राष्ट्रीय आय गेहूं के रूप में मापें तो कुल गेहूं में से अगले वर्ष का बीज का और अन्य व्यय निकाल कर शेष गेहूं हमारी राष्ट्रीय आय का परिचायक होगा।

किसी भी देश की राष्ट्रीय आय वहां के जनता के जीवन के मापदण्ड का काम देती है। साथ ही आय यह इस बात की भी परिचायक होती है कि देश आर्थिक तौर पर उन्नति कर रहा है या नहीं। यह अनुमान निश्चित परिणाम की ओर इंगित नहीं करता। यह सम्भव हो सकता है कि देश के थोड़े से लोग बहुत अमीर हों और शेष जनता अत्यधिक गरीब। इस देश में बढ़ती हुई राष्ट्रीय आय आर्थिक उन्नति की परिचायक नहीं हो सकती। फिर भी उस ओर एक इशारा अवश्य करती है।

पर राष्ट्रीय आय का पता लगाना कोई हंसी-खेल नहीं। देश के कुल उत्पादन का पता लगाना और फिर उसकी कीमत लगाना और तदनन्तर उसमें से उसका व्यय घटाना, किसी भी दशा में एक सरल कार्य नहीं। और फिर राष्ट्रीय आय का अनुमान एक लम्बे समय (साधारणतया एक वर्ष) के लिए लगाया जाता है और इस बीच वस्तुओं के मूल्य घटते-बढ़ते रहते हैं। इस प्रकार दिक्कत और बढ़ जाती है।

कैसे निकालते हैं ?

साधारणतया राष्ट्रीय आय मालूम करने के लिए तीन उपाय काम में लाए जाते हैं—

१. आय के हिसाब से—यह उपाय आय कर के आंकड़ों पर अवलम्बित है। इन आंकड़ों के साथ साथ आय कर न देने वालों की आय भी जोड़ दी जाती है। पर यह उपाय वहीं अधिक कारगर होता है, जहां आय-कर देने वालों की संख्या काफ़ी हो। इस कारण यह उपाय भारत के उपयुक्त नहीं।

२. उत्पादन के हिसाब से—इसमें हम कुल उत्पादन और सेवाओं (Services) की गणना करते हैं, जोकि वर्ष भर में प्रयुक्त होती हैं। पर भारत में इन चीजों के भी पूरे २ आंकड़े उपलब्ध नहीं यद्यपि हमें कृषि, खानों, जंगलों आदि के सम्बन्ध में आंकड़े प्राप्त हैं।

३. तीसरा उपाय उन दोनों उपायों का सम्मिश्रण है। डा० राव ने यही उपाय अपनाया है।

अब हम राष्ट्रीय आय को कुल जनसंख्या से विभाजित कर देते हैं तो हमें प्रति व्यक्ति की आय प्राप्त होती है। जैसे १९४८-४९ में भारत की राष्ट्रीय आय ८७१० करोड़ रुपये थी और अनुमानित जनसंख्या ३४ करोड़ १० लाख थी। इससे प्रति व्यक्ति की आय २५५ रु० होती है।

अतीत में प्रयत्न

भूतकाल में अनेकों व्यक्तियों ने राष्ट्रीय आय का पता लगाने की कोशिश की। इनमें सर्वप्रथम प्रयत्न दादाभाई नौरोजी का था। इसके पश्चात् अन्य व्यक्तियों ने भी हिसाब लगाये जैसा कि निम्न तालिका से स्पष्ट है—:

लेखक	वर्ष (जिसके लिए अनुमान किया	कुल आय (करोड़ रु०)	आय प्रति व्यक्ति
दादाभाई नौरोजी	१८६८	३४०	२० रु०
बारिंग बारबर	१८८२	५२०	२७ ,,
लार्ड कर्जन	१८९७-९८	—	३० ,,
वाडिया और जोशी	१९१३-१४	१०८७	४४ ५-६
फिंडले शिराज़	१९२२	१९८३	११६ रु०
डा० वी० के० आर० वी० राव	१९३१	१६८९	६५ ,,

इनमें से वाडिया और जोशी का अनुमान तो समस्त भारत के लिए है और शेष सब ब्रिटिश भारत के लिए हैं।

इन सब अनुमानों में डा० राव का अनुमान सबसे ठीक प्रतीत होता है। उन्होंने राष्ट्रीय आय का अनुमान तीसरे उपाय से लगाया है। उनके अनुमान की विभिन्न मदें १९३१ में नीचे लिखी थीं—

कृषि का उत्पादन	९६२ करोड़ रु०		
दूध, मांस, खालें और इत्यादि	२९८	,,	,,
मछली आदि का शिकार	३१७	,,	,,
आय कर के आधार पर आय	२१६	,,	,,
शेष आय	४·४	,,	,,
विभिन्न मदों से	७८	,,	,,
कुल योग	१६८९	०	०

कुल जनसंख्या से भाग करने पर प्रति व्यक्ति की आय लगभग ६२ रु० आती है। इसमें डा० राव ६ प्रतिशत की गलती के लिए स्थान रखते हैं।

इन सब अनुमानों में काफी अन्तर पाया जाता है। इसका एक कारण तो यह है कि सबने अपने २ दृष्टिकोण से अनुमान लगाया है। इस प्रकार जहां मि० शिराज कृषि के उत्पादन को ६० प्रतिशत स्थान देते हैं, वहां वाडिया और जोशी ७० प्रतिशत और फिर दादाभाई नौरोजी के २० रुपये और डा० राव के ६५ रु० में मूल्य बढ़ जाने में कोई विशेष अन्तर नहीं। फिर भी इन अनुमानों से एक बात स्पष्ट है कि भारत की राष्ट्रीय आय बहुत ही कम है। इन ६५ रुपयों में कोई व्यक्ति कठिनता से ही अपना भोजन व्यय निकाल सकता है।

डा० राव के आधार पर भारत के प्रसिद्ध पत्र 'ईस्टर्न इकानामिस्ट' ने आगे के कुछ वर्षों का निम्न लिखित अनुमान लगाया है।

वर्ष	आय प्रति व्यक्ति
१९३९-४०	६७ रु०
१९४२-४३	११२ ,, *
१९४५-४६	१३७ ,,
१९४७-४८	१६० ,,

(विभाजित भारत के लिए)

पर यदि हम इसके साथ मंहगाई का भी हिसाब लगाएं तो इन वर्षों में हमारी राष्ट्रीय आय क्रमशः ६०, ७०, ६३ और ६२ रु० रह जाती है। यह बात इससे भी स्पष्ट है जहां १९३९-४० में प्रति व्यक्ति को ४८८ पौंड अन्न प्रति वर्ष प्राप्त होता था, वहां यह मात्रा घट कर १९४७-४८ में केवल ३२७ पौंड रह गई। इसी समय में कपड़े की मात्रा १६ गज से घट कर ११ गज पर आ गई।

२५५ रु० प्रति व्यक्ति आय

'कामर्स' पत्र के अनुसार विभाजन के बाद हमारी आय प्रति व्यक्ति २१३ रु० है, जब कि राष्ट्र संघ के अनुसार यह आय ५७ डालर है। सन् १९४८-४९ के लिए) पर सबसे अधिक प्रामाणिक रिपोर्ट इस सम्बन्ध में है भारत सरकार द्वारा नियत राष्ट्रीय आय समिति की, जो अभी हाल ही में प्रकाशित हुई है। इस समिति के अनुसार १९४८-४९ में भारत की राष्ट्रीय आय ८७१० करोड़ रु० थी। उक्त वर्ष में अनुमानित जनसंख्या ३४ करोड़ १० लाख मान लेने पर प्रति व्यक्ति की आय २५५ रु० होती है।

इस कुल आय में से आय पर उपभोक्ताओं का खर्च अनुमानतः ६९०० करोड़ रु० है, जो राष्ट्रीय आय का लगभग ९३ प्रतिशत है। इससे प्रकट है कि हमारी आर्थिक स्थिति विकसित नहीं है।

कठिनाइयां

शुरु में वर्णित कठिनाइयों के इलावा समिति ने निम्न दिक्कतों का भी दिग्दर्शन कराया है—:इसके लिये पर्याप्त सरकारी आंकड़ों का अभाव है। वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य पैसे के रूप में लगाने के लिए कोई समान आधार नहीं है। भारत उत्पादन का काफी भाग बाजार में आता ही नहीं है। ऐसे उत्पादन का

[शेष पृष्ठ २२ पर]

* 'कामर्स' पत्र के अनुसार यह आय १४२ रु० है और डा० राव के अनुसार ११४२ रु०।

भारत के प्रथम महान् अर्थशास्त्री श्री दादाभाई नौरोजी जिन्होंने सर्वप्रथम राष्ट्रीय आय का अनुमान किया था।

सार्वजनिक जीवन के अनुभव

लखनऊ में भरतमिलाप

★ श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

(१)

विद्यार्थी अवस्था में हम कांग्रेस के समाचार बहुत अभिरुचि से सुना करते थे। बंगविच्छेद के पश्चात्, देश में क्रान्ति की लहर चली, उसने सामान्य रूप से सभी देशवासियों को और विशेष रूप से नवयुवकों को उत्तेजित कर दिया था। उन दिनों कांग्रेस में दो दल थे। एक माडरेट दल था, जिसे नर्म पार्टी के नाम से पुकारा जाता था। उसके नेता श्री दादा भाई नौरोजी, बा. सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, सर फीरोजशाह तथा श्रीयुत गोपालकृष्ण गोखले थे। दूसरा दल एक्सट्रीमिस्ट दल, या गर्मदल कहलाता था। इस के प्रमुख व्यक्ति लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, श्री अरविन्द घोष, डा० लाजपतराय आदि थे। हम लोग इन सब नेताओं के नाम और कारनामों को श्रद्धापूर्वक सुनते थे। व्यक्तिगत रूप से हम लोगों की सबसे अधिक श्रद्धा गोखलेजी में थी। उसके दो कारण थे। एक तो यह कि हमारे कुलपति जी का गोखले जी से निजी प्रेम था, और दूसरे यह कि वे स्वयं कई बार गुरुकुल आने का संकल्प प्रकट कर चुके थे, जब वे स्वयं न आ सके, तो अपने प्रतिनिधि श्री देवधर जी को भेजा था। व्यक्तिगत रूप में माननीय गोखले जी में अतुल श्रद्धा रखते हुए भी जब सूरत में नर्मों और गर्मों की टक्कर में कांग्रेस का भंग हुआ, तब हम लोगों के युवक हृदय गर्म दल की ओर झुक गये। उसका विशेष कारण यह भी था कि देश के सब नवयुवक हृदयों की भांति हम लोगों के अन्दर भी लोकमान्य तिलक के प्रति एक अद्भुत और गहरी भक्ति की भावना थी। वह भक्ति की भावना लौकिक घटनाओं से कुछ अस्पष्ट सी थी। लोकमान्य के प्रति हमारे हृदयों में ऐसी भक्ति थी, जैसी देवताओं में या प्राचीन महापुरुषों में होती है। लोकमान्य अपने समय की नई उन्नति के लिये उस कोटि के व्यक्ति हो गये थे, जिसमें राष्ट्र ने भीम और अर्जुन, प्रताप और शिवाजी को रखा हुआ है। शायद इसका यह भी कारण हो कि वे प्रायः जेल में रहने के कारण प्रायः परोक्ष रहते थे। लोग उन्हें प्रायः सुनते न थे, देखते थे। वह अपने जीवनकाल में ही मानो ऐतिहासिक व्यक्ति हो गये थे। यही कारण था कि जब हमने यह सुना कि सूरत में कांग्रेस अधिवेशन में नर्म पार्टी द्वारा नियुक्त गुण्डों ने लोकमान्य पर आक्रमण करने का विचार किया था, हमारा खून खौलने लगा, और नर्मदल के नेता देश के शत्रु प्रतीत होने लगे। कांग्रेस दो टुकड़ों में विभक्त हो गई। नर्म दल वालों ने कन्वेंशन की स्थापना कर ली, और गर्मदल वाले अलग संगठन बनाने की योजना बनाने लगे। सरकार को भारी मुंहमांगी मुराद मिल गई। आपसी झगड़े से लाभ उठा कर उसने लोकमान्य तिलक को और गर्म दल के अन्य कई नेताओं को जेलों में डाल दिया। उस समय हम लोगों को ऐसा अनुभव होने लगा, मानो नर्म दल के नेताओं ने ही सरकार की प्रेरणा करके लोकमान्य तिलक को कारागार में डलवाया है। अब तक देश के जीवित नेताओं में से हमारी सबसे अधिक श्रद्धा गोखलेजी में थी। वह सूरत के बाद ढीली पड़ने लगी और हम अन्दर ही अन्दर गर्मी के प्रवाह में बह गये।

(२)

यद्यपि हम लोग गंगा के उस पार, संसार से अलग अलग गुरुकुल के एकांत आश्रम में रहते थे, तो भी देश में चलने वाली विचार धाराओं से अलग नहीं थे, वे धारायें स्वयं गंगा को पार करके हमारे आश्रम में आती, और हमें प्रभावित रखती थीं। अनेकरूपधारी क्रान्तिकारी लोग गुरुकुल में आते और हम लोगों से मिलते जुलते थे, उनमें से कितने असली क्रान्तिकारी होते थे, और कितने खुफिया पुलिस वाले—यह निश्चय पूर्वक कहना तब भी कठिन था और अब भी कठिन है। प्रायः सभी क्रान्तिकारी हम लोगों की दृष्टि में सी० आई० डी० वाले बन जाते थे, और शायद अपनी धूर्तता के कारण सी० आई० डी० वाले क्रान्तिकारी बन कर विश्वास पात्र बने रहते थे। एक महानुभाव विशेष रूप से हमारे विश्वास पात्र बने हुए थे, वे तो महाराष्ट्र की ओर के एक अध्यापक। वह गणित के अगाध पण्डित थे, यों तो गणित के अध्यापक थे। परन्तु गणित के अपेक्षा बम बनाने की शिक्षा में अधिक समय व्यतीत करते थे। हम लोग उनके परम भक्त थे। एक दिन वह चार पांच छात्रों में खड़े हुए बम प्रयोग उपयोगिता पर उपदेश दे रहे थे। इतने में गुरुकुल के चिकित्सक डा० सुखदेव जी उधर आ निकले। वह ठहर कर बातें सुनने लगे। जब उपदेश समाप्त हो गया तो डाक्टर जी ने पूछा—'" " जी, यदि बम मारना अच्छा काम है तो आप बम क्यों नहीं मारते?' उत्तर मिला—'यदि हम बम मारता तो फिर सिखाता कौन?' इस पर सब लोग हंस पड़े।

यह थोड़ी सी प्रासंगिक बात मैंने इसलिये लिख दी, कि जीवन क्षेत्र में प्रवेश करते समय राजनीति के सम्बन्ध में मेरी जो मनोवृत्ति थी, उसका थोड़ा सा परिचय दे दूं। मेरे मन में राजनैतिक नेताओं से सबसे अधिक भक्ति-भाव लोकमान्य तिलक के लिये, और सबसे अधिक आदरभाव माननीय गोखले जी के लिये था।

जब कांग्रेस दो भागों में विभक्त हो गई, और गर्मदल के नेता जेलों में ठूंस दिये गये, तब राजनीतिक रंगस्थल प्रायः खाली हो गया। लिबरलों का फैडरेशन बन गया था, परन्तु जनता के साथ उसका कोई सम्पर्क नहीं था। लोकमान्य तिलक और अन्य राष्ट्रीय नेता लोहे की सलाखों में बन्द थे। राजनीतिक जीवन प्रायः शून्य हो गया था। उस शून्य को भरने के लिये श्रीमती एनीबेसेंट कार्यक्षेत्र में उतरीं। वह अब तक थियोसोफिकल सोसायटी की प्रधान होने के कारण धार्मिक नेत्री समझी जाती थीं। उनके राजनीतिक क्षेत्र कूदने से राष्ट्रीयता के प्रसुप्त अंगारे मानो जाग पड़े। श्रीमती बेसेण्ट ने होमरूल लीग की स्थापना करके कांग्रेस के अभाव की पूर्ति का प्रयत्न किया, जो बहुत कुछ सफल हो गया। देश में होमरूल आंदोलन खूब जोर से चला।

कुछ वर्षों तक ऐसी ही दशा रही। माडरेट लोग कन्वेंशन नाम की अपनी मित्रमण्डली से व्याख्यान देकर सन्तुष्ट होते रहे, और सरकार निश्चिन्त होकर दमन नीति का प्रयोग करती रही। सभी चीजों का किसी न किसी दिन अन्त होता है, नेताओं की जेलों का समय भी समाप्त होने लगा। अन्य नेता पहले ही छूट चुके थे, अन्त में लोकमान्य तिलक भी कारावास से मुक्त हो गये। उस समय यह चर्चा आरम्भ हुई कि घर की फूट को समाप्त करके राष्ट्रीय महासभा को फिर से जीवित किया जाय। इस आन्दोलन की मुखिया श्रीमती बेसेण्ट बनीं। कई महीनों तक बातचीत जारी रही, कई मान लीलायें हुईं, और आशा निराशा के उतार-चढ़ाव हुए। अन्त में निश्चय हुआ कि लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन किया जाय, जिसमें माडरेट, एक्सट्रीमिस्ट और होमरूल—ये तीनों दल सम्मिलित हों। इस समाचार को देश ने अत्यन्त हर्ष और उल्लास के साथ सुना। आशा और उत्साह की एक जबर्दस्त लहर उत्पन्न हो गई—क्योंकि कांग्रेस के भंग ने देश की नौका को मंझधार में डाल दिया था।

मेरे बड़े भाई हरिश्चन्द्रजी और मैं, भी पिताजी के साथ उस भरतमिलाप के दृश्य को देखने के लिए लखनऊ गये।

एक प्रतिभाशालिनी महिला

माताहरी या उषा की आंख

७ अगस्त १८७६ को हालैण्ड के एक परिवार में मार्गरीटा गद्रुई का जन्म हुआ। १८ वर्ष की अवस्था में उसने एक ४० वर्षीय कैप्टन कैम्पबेल मैक्लाउड से विवाह किया और १८८५ में पति सहित जावा पहुँच गयी। थोड़े ही दिनों बाद शराबी कैम्पबेल उसे पीटने लगा, जिससे त्रस्त हो वह पहले अपने मां बाप के पास और बाद में पेरिस पहुँची, जहां उसने अपने को नृत्यज्ञा दक्षिण भारतीय ब्राह्मण कन्या घोषित किया। उसने जावा में भारतीय नृत्य सीख लिया था। उसने अपना नाम बताया—"माता हरी" अर्थात् "उषा की आंख"। थोड़े ही दिनों में वह पेरिस के अनेक प्रमुख व्यक्तियों की प्रियतमा बन गयी। कीमत चुकाने पर उसके यहां कोई व्यक्ति भी आ सकता था। करोड़पति उसके चरण चूमते थे।

दो वर्षों बाद माताहरी बर्लिन गयी। उसने क्राउन प्रिंस को मुग्ध कर दिया और उसके साथ वाइकोलियां गयी। अन्त तक वास्तविक उसके कृपापात्र वे और कैसर के परराष्ट्र सचिव वानजैगो थी। वियना, रोम, माद्रिद और लन्दन में उसके नृत्य का प्रदर्शन हुआ। जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश, सब उसके लिये समान थे। जब उस पर मुकदमा चला, तब उसने कहा था—"मैं फ्रेंच नहीं। मुझे संसार के किसी भी कोने के व्यक्ति से दोस्ती करने का हक है, चाहे वह फ्रांस का शत्रु ही क्यों नहीं। मैं तटस्थ रही हूं।'

वह तटस्थ थी या नहीं, विवादास्पद है, पर उसके कार्य से बर्लिन को लाभ पहुँचा। उसने जर्मन सरकार से बहुत पैसे लिये। एक स्वेच्छा से ही वह जर्मन गुप्तचरों की दलाल बन गयी। वह बड़े बड़ों को मूर्ख बना जानकारी हासिल करती। लेकिन रेकार्ड में ऐसी कोई बात नहीं, जिससे पता चले कि उसे गुप्तचर कार्य में रुचि थी। उसके द्वारा एकत्र खबरें कुछ महत्व की हों, ऐसा भी नहीं, पर बर्लिन और पेरिस के बीच उसकी जो धूम थी, उसके आधार पर उस पर मुकदमा चलाया सरल था।

प्रथम महायुद्ध के प्रथम वर्ष में उसने कोई कार्य किया, ऐसा पता नहीं चलता। १९१९ में जब वह फ्रांस पहुँची तब उसके आगमन के पूर्व इटालियन खुफिया विभाग ने निम्नाङ्कित का तार फ्रांसीसी अधिकारियों को दिया—"नैपल्स में आगामी जहाज के मुसाफिरों की सूची का निरीक्षण करते समय हमने मार्सेलीज की प्रसिद्ध हिंदू नर्तकी माताहरी को देखा है, जो भारतीय नृत्य का प्रदर्शन करना चाहती है। उसने अपने को भारतीय न कह कर बर्लिनवासिनी बताया है। वह जर्मन भाषा बोलती है। पर उसका उच्चारण पौर्वात्य है।'

दोनों देशों के खुफिया विभाग की फाइलों में तार की प्रतिलिपि रख ली गयी और माता हरी को जर्मन भेद दिया माना गया। फ्रेंच गुप्तचर दिन रात उसके पीछे रहते, पर निष्परिणाम। किन्तु अन्त में उन्हें पता चला कि डच, स्पेनिश एवं स्वेडिश दूतावासों के पत्र डिसपैच करने की सुविधा उसे मिल गई है, यद्यपि इस बात का बहुत कम महत्व है, क्योंकि बहुत से साधारण आदमी यह काम करते हैं, पर चूंकि माता हरी गुप्तचर कहला चुकी थी, अतः उस पर दृष्टि रखी गयी। उसके द्वारा डिसपैच किये गये डच एवं स्वेडिश दूतावास के पत्र खोले गये, पर उन में कोई खास बात न थी, पर इन्हीं पत्रों के आधार पर उस पर मुकदमा चला।

उसको फ्रांस से निकलने की आज्ञा हुई पर उसने अस्वीकार किया। उसने घोषणा की कि वह जर्मन से दुखा नहीं, वह फ्रांस के साथ है और उसके खुफिया विभाग में काम करने को तैयार है। उसकी बात मानी गई और ६ बेल्जियन एजेन्टों के साथ उसे ब्रूसेल्स में जनरल मोरिस वान बिसिंग पर जाल बिछाने के लिये भेजा गया। बेल्जियन एजेन्टों में से एक थोड़े ही दिनों बाद फांसी पर जर्मनों द्वारा लटका दिया गया। ब्रिटिश गुप्तचरों ने कहा कि उसे एक औरत ने धोखा दिया।

दूसरी बार माताहरी हालैण्ड और इंगलैण्ड होती स्पेन के लिये चली। इंगलैण्ड में स्काटलैण्ड यार्ड के मिस्टर बासिल टामस ने उससे प्रश्न पूछे। उसने अपने को फ्रांस का गुप्तचर कहा। मिस्टर बासिल ने उसे मेड्रिड जाने छोड़ने की सलाह दी। वह स्पेन पहुँची जहां उसने जर्मन दूतावास के नौ-सलाहकार वान काले और सैनिक सलाहकार मेजर क्रान से संपर्क कायम किया। उन दोनों ने उसे मेड्रिड कार्य करने को कहा। उसने स्वीकार किया।

२४ जुलाई १९१७ को कोर्ट मार्शल के सम्मुख माताहरी हाजिर की गई। गुप्त कमरे में उस पर मुकदमा चला। उसने कहा कि उसने सालेसिया फ्रांस और इटली में सैनिक कार्यवाइयां देखी हैं, वान काले के साथ रात्रि बिताने के लिए उसे १० हजार मार्क मिले हैं और ऐसे ही कई आदमियों ने उसे द्रव्य दिया है। उसने कहा—'मेरी एक कृपा के लिये १० हजार मार्क मामूली बात थी।' उसने स्वीकार किया कि वह फ्रांस की भेदिया थी, पर वह कुछ कार्य न कर सकी। जब उसकी निगरानी में जुड़ें ६ बेल्जियन भेदियों का पता वह न बता सकी तो उसकी तकदीर पर मुहर लग गई। गवाही के लिये उसने अपने पुराने यारों को, जिन में फ्रांस के वैदेशिक मंत्री भी बुलाया था। किन्तु माताहरी को फांसी की सजा सुना दी गई।

१२ अक्टूबर को तिथि रखी गई और समय निश्चित हुआ प्रातःकाल पौने ६ बजे। उसने एक ग्लास शराब ली, तीन पत्र लिखे अपने शृंगार पर दृष्टि दौड़ाई और कहा—'अब मुझे मार सकते हो।'

तीन कतार सेना फांसी के स्थान पर आ जमी। उसके पास ही बिना पत्तियों का एक पेड़ खड़ा था। वह पेड़ से बांध दी गई। उसने आंख पर पट्टी बांधना स्वीकार किया। सैनिक तैयार हुए। मेजर मांसर्ड ने आज्ञा दी। गोलियों की बौछार हुई और माताहरी १२ गोलियों से बिंधा हो गई।

माताएं पढ़ती हैं और बच्चे खेलते हैं

[illegible] रोड के '[illegible]' महिला कालेज में हर साल गर्मियों में चार सप्ताह का पाठ्य क्रम चालू किया जाता है, जिस में मां बाप शिक्षा पाते हैं और बच्चों की देख भाल की जाती है। इस कालेज की संचालिका डाक्टर मेरी लेंगम्योर हैं, जिन्होंने इस पाठ्यक्रम को सफल बनाने में बहुत सहायता दी है। वह स्वयं चार बच्चों की मां है और बाल मनोविज्ञान की पंडिता हैं। उसके अनुभव इस पाठ्यक्रम की व्यवस्था के लिए बहुमूल्य सिद्ध हुए हैं।

इस पाठ्यक्रम में भाग लेने के लिए हर स्थान से हर आयु के और हर आर्थिक वर्ग के व्यक्ति आते हैं। कम आय वाले परिवारों की सहायता छात्रवृत्ति से की जाती है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है शिक्षकों को, माता पिता को और व्यावसायिक व्यक्तियों को कुटुम्ब और सामाजिक जीवन सम्बन्धी वैज्ञानिक तथा शिक्षण अनुसंधानों की जानकारी कराना।

१९४९ के साल में डाक्टर लेंगम्योर ने परिवारों को लिखा था 'हम तुम्हारे बच्चों को तुम्हारे पास, पर तुमसे अलग रहना सिखायेंगे। मैदान का मानचित्र भेज रहे हैं पढ़ने रहने का और अपने बच्चों के रहने का स्थान चुन लेना बच्चों के प्रिय खिलौने पहले से भेज देना जो उनके कमरे में लगा दिए जाएंगे ताकि वे अपने घर की याद न करें।

संस्था के शिक्षकों से डाक्टर लेंगम्योर ने कहा 'कुछ मां बाप को अपने बच्चों से अलग रहने की आदत मुश्किल से पड़ती है। यदि वे अपने बच्चों से तरह तरह के सवाल पूछें तो उसका यह मतलब नहीं है कि उन्हें तुम (शिक्षकों) पर विश्वास नहीं, या उनमें तुम्हारी मानवता की है। जैसे ही आदत पड़ जायेगी उनकी घबराहट भी दूर हो जायेगी।

बड़े लोगों की पढ़ाई सुबह साढ़े आठ बजे से शुरू हो जाती है। उनमें चरित्र विकास, पारस्परिक सम्बन्ध, परिवारों की आवश्यकताएं, शिशु कल्याण योजनाओं आदि विषयों पर चर्चा होती है।

बच्चों की दिनचर्या भी बना दी जाती है जो कि बच्चों की आयु के ऊपर निर्भर रहती है। खाने का समय खेलने का समय, मां बाप से मिलने का समय सब निश्चित रहता है। उन सब के अलग-अलग रहने के कमरे हैं और तरह तरह के खेल और किताबें हैं। खूब बड़ा मैदान है जहां बच्चे आनन्द से मिट्टी और पानी से खेलते हैं।

दिनचर्या का सबसे महत्वपूर्ण समय है। मां बाप से मिलने का घंटा। शुरू-शुरू में जब घंटा पूरा होने पर माताएं अपने बच्चों को छोड़ कर जाने लगती हैं, तो बच्चे चिल्लाकर रोते हैं, पर कुछ दिन बाद तो परवाह नहीं करते कि कब मां आईं और कब गईं। एक दिन जब एक माता अपनी छोटी लड़की से मिलने गई तो उसने देखा कि वह ट्राइसिकिल पर घूम रही थी। मां की ओर उसने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया और बोली कि मैं अब कोई बच्चा थोड़े ही हूं।

परीक्षोपयोगी लेख

कवि चूड़ामणि महात्मा सूरदास

★ श्री कृष्णकुमार रावत

महा कवि सूरदास को अष्टछाप के आठों कवियों में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। उनके जीवनकाल से ही भगवद्भक्त, साहित्यानुरागी, रसिक, कीर्तनकार और गायक सूरसागर के पदों से अपूर्व आनन्द प्राप्त कर रहे हैं। संस्कृत में जयदेव ने तथा लोक भाषा में विद्यापति ने राधा के सौन्दर्य को गुण-गाथा गाकर तथा कृष्ण को उसका प्रेमी बना कर जिस नवीन ढंग के कृष्ण-काव्य को आरम्भ किया था, और उस का मनोवैज्ञानिक धरातल पर पूर्ण विकास करने का श्रेय सूरदास को मिला है। ऐसे ही महाकवि की पुण्य जयन्ती इस अप्रैल आ रही है।

दुःख की बात यह है कि ऐसे महाकवि की जन्म तिथि, निधन-दिवस तथा उनके जीवन से सम्बन्धित अनेक घटनाओं के विषय में हिन्दी साहित्यकारों में मतैक्य नहीं है। एक ग्रन्थ में लिखा है कि वल्लभाचार्य सूरदास से आयु में दस दिन बड़े थे। यदि यह सच है तो सूरदास की जन्म-तिथि सं० १५३५ की वैशाख शुक्ल ५ होती है। उनका जन्म दिल्ली के पास स्थित एक ग्राम में सारस्वत ब्राह्मण के घर हुआ था। पिता का नाम रामदास था। अधिकांश भी सूर के जन्मान्ध होने का समर्थन करते हैं। कहते हैं कि वे बाल्यावस्था में ही विरक्त होकर घर से बाहर निकल पड़े, और अपने जन्म स्थान से थोड़ी दूर पर बने एक गांव में रहने लगे। भावप्रकाश द्वारा मालूम होता है कि वहां वे १८ वर्ष की उमर तक रहे। इस बीच उन्होंने गायन-विद्या का खूब अभ्यास कर लिया। लोगों को अवकाश के समय शकुन बताया करते थे, जिसके कारण वह थोड़े समय में अनेक व्यक्तियों द्वारा चाहे जाने लगे। १८ वीं वर्ष की अवस्था में वह भगवद्-भजन के लिए संपूर्ण वैभव को त्याग कर मथुरा तथा आगरा के बीच गऊघाट में रहने लगे।

सम्वत् १५६७ के लगभग सूरदास ने वल्लभाचार्य जी के सर्व प्रथम दर्शन किये। वल्लभाचार्य को इस अन्धगायक की विनयपूर्ण वाणी में ऐसा चमत्कार तथा प्रभाव दिखाई दिया कि उन्होंने तत्काल ही सूरदास को अपना शिष्य बना लिया। शिष्य होते ही सूरदास को वल्लभाचार्य के साथ गोकुल चले गये। थोड़े दिनों बाद गुरु और शिष्य दोनों गोवर्धन गये। गोवर्धन पहुँचने पर सूरदास परासोली में चन्द्रसरोवर के पास स्थायी रूप से रहने लगे। इस स्थान में उन्होंने हजारों नवीन पद बनाए, जो बाद में उनके संग्रहकारों द्वारा क्रम से सूरसागर के रूप संकलित कर लिए गए।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा की खोज — रिपोर्ट के अनुसार सूरदास द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या इस प्रकार है 'गोवर्धन लीला बड़ी, दशम स्कन्ध टीका, नाग लीला, पद संग्रह, सूरसागर सार, भागवत, सूरपचीसी, सूरदास जी के पद, श्याम सगाई, नल-दमयन्ती, एकादशी महात्म्य, राम जन्म, सूरसागर और साहित्य लहरी। यदि हम इन समस्त ग्रन्थों को उनकी रचनायें न मानें तो केवल सूरसागर ही सूरदास की कीर्तिरक्षा के लिए पर्याप्त है।

सूरसागर सूरदास जी के बहुत दिनों के श्रम का फल है। कहते हैं उन्होंने सवा लाख पदों की रचना की थी। सवा लाख का हस्तलिखित ग्रन्थ कांकरोली में रखा हुआ है। सूरसागर तथा भागवत् दोनों विषय समान होने से कई लोगों ने यह धारणा बना ली है कि सूरसागर भागवत का अनुवाद है। लेकिन सच तो यह है कि सूरदास ने भागवत का कथानक मात्र लिया है। रचना शैली सूरदास की अपनी ही है। सूरसागर के प्रथम ९ स्कन्धों में तरह-तरह की कथायें हैं। दशम स्कन्ध में बालक कृष्ण की लीलाओं का रोचक ढंग से वर्णन है। उद्धव की बद्रिकाश्रम यात्रा तथा हंसावतार की कथा ११ वें स्कन्ध में लिखी है। १२वें स्कन्ध में कल्कि अवतार, बौद्धावतार एवं परीक्षित के शरीर त्यागने की कथा है। प्रबन्ध काव्य नहीं है। सभी पद कोमल तथा गेय हैं। हरएक पद स्वतः पूर्ण है। विशेषता तो यह है कि भाषा कोई साहित्यिक या क्लिष्ट नहीं है। सीधी, सरल और बोलचाल की ब्रजभाषा है, जिसे सूर ने अपनी कुशल लेखनी द्वारा कलात्मक बना कर सदा के लिए अमर कर दिया है। यह सत्य है कि उन्होंने अपनी भाषा में गुजराती, पंजाबी, बुन्देलखण्डी, फारसी तथा संस्कृत आदि के शब्द अवश्य प्रयोग किये हैं, परन्तु उन्हें हिन्दी के सांचे में ढाल दिया है। यही नहीं, उनके साधारण से साधारण पद में रूपकातिशयोक्ति, विशेषोक्ति, विभावना और उपमा आदि अलंकारों का खूब प्रयोग हुआ है, परन्तु वह अलंकारों के बोझ से दबी मालूम नहीं होती।

सूर ने प्रमुखतः वात्सल्य, शृंगार तथा शान्त इन तीन रसों का वर्णन किया है। किन्तु उनके काव्य के विषय वात्सल्य और शृंगार ही माने जाते हैं। बाललीला का जितना विशुद्ध एवं कोमल चित्रण उन्होंने किया है, उसका अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। सूर ने केवल ललित लाड़ले और छछिया भर छाछ पर नाचने वाले बालकृष्ण को ही देखा है, गोपियों और भूपालों के बीच विभूषित लोक-व्यवस्था की रक्षा करने वाले कृष्ण की ओर झांका तक नहीं। उन्होंने न मालूम कितने पदों में भगवान् कृष्ण के बचपन की विभिन्न दशाओं का स्वाभाविक तथा मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। इस सम्बन्ध में सूर का यह पद देखिये —

> हरि अपने आगे कछु गावत।
> तनक तनक चरनन सों नाचत,
> मनहीं-मनहिं रिझावत।
> बांह उचाय काजरी धौरी,
> गैयन टेरि बुलावत।
> माखन तनक आपने कर लै,
> तनक बदन में नावत।
> कबहुं चितै प्रतिबिम्ब खम्भ में,
> लवनी लिये खवावत।
> दुरि देखत जसुमति यह लीला,
> हरखि अनन्द बढ़ावत।
> सूर श्याम के बाल चरित मैं,
> नित देखत मन भावत।

सूर ने अपने पदों में मातृ हृदय की बेचैनी, चिन्ता, अभिलाषा, वियोगावस्था तथा सरल व्यंजना का जो चित्र प्रस्तुत किया है, उससे न केवल संसारी मनुष्यों के ही बल्कि भक्तों के भी हृदय रसार्द्र हो उठते हैं। बाल-चापल्य एवं प्रत्युत्पन्नमति का जैसा सुन्दर उदाहरण सूर ने प्रस्तुत किया है, वैसा किसी भी साहित्य में शायद ही प्राप्त हो सके। माखन-चोरी के बारे में सूर का यह पद पढ़ते ही बनता है। ग्वालिन बड़े गर्व से कहती है :

> सूने निपट अंधियारे मन्दिर
> दधिभाजन में हाथ।
> अब कहि कहा बनै हो ऊतर
> कोऊ नाहिन साथ॥

बालकृष्ण हाज़िर-जवाबी में कम

[शेष पृष्ठ १४ पर]

प्राचीन भारत में प्रजातन्त्रवाद

श्री रामचन्द्र अग्रवाल

प्रजातन्त्रवाद क्या वस्तु है, यह चित्त को लुभाने वाली एक मनोहर कहानी है। लोकतन्त्रवादियों का एकमेव आशारूपी कुसुम है, जिसको किसी नाम से भी पुकारो, मीठी महक देगा। एकतन्त्रवादियों तथा साम्राज्यवादियों के लिए एक आतङ्क है, मानो एक सुधापात है। तानाशाही से पीड़ित जनता के लिए एक कस्तूरी है। राष्ट्रवादी भौंरों के लिये एक रसगान है। दीन-दुःखियों के लिए टिमटिमाता तारा है, पीड़ितों के लिए एक सहारा है और निराशावादियों की एकमेव आशा है। भूखे राष्ट्रीय नागरिकों के लिए ज्योतिस्तम्भ है। साम्राज्यों की सत्यासत्य रूपी नींव जांचने के लिए एकमेव कसौटी है। कवियों की उच्चतम कल्पना है, हुतात्माओं के बलिदानों का एक स्मारक है और देश की चिन्ता में तड़फ तड़फ कर मरने वाले नेताओं की एक अमर कहान

पाश्चात्य विद्वान लोकर के मतानुसार प्रजातन्त्रवाद एक ऐसे शासन का नाम है, जिसके कर्णधार ऐसे मनुष्य हों जो कि अधिक से अधिक लोकहित के लिए चिन्तित रहते हों। महात्मा बुद्ध भी ऐसा ही मानते हैं और कहते हैं कि धर्मानुसार न्यायकर्त्ता तथा लोकरञ्जन कर्त्ता ही केवल राजा हो सकता है। (रञ्जयेन इति राजा) मनुजी इस विचार की पुष्टि करते हुए हैं—

स्वभागभृत्या दास्यत्वे,
प्रजानां च नृपः कृतः।
ब्रह्मणा स्वामिरूपस्तु,
पालनार्थं हि सर्वदा॥

अर्थात् भगवान् ने यद्यपि राजा को बाह्यरूप से प्रजा का स्वामी बनाया है, तथापि वह वास्तव में सदैव लोकसेवक ही है और वह अपनी भृत्ति करों के रूप में जनता की भलाई के निमित्त कमाता है। अतः राजा अपने भले-बुरे कार्यों के लिए प्रजा के प्रति उत्तरदायी था। उसके निर्वाचन से जनता का सहयोग था, जैसा कि ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लेख मिलता है कि देवताओं को असुरों ने पराजित कर दिया। देवताओं ने कहा है कि हमारी इस कारण से पराजय हुई क्योंकि रण में हमारा नेतृत्व करने वाला कोई राजा नहीं, आओ राजा को चुनें। सारे मान गये (राजानं करवामहे इति तथेति)। चाणक्य भी उस निर्वाचन-प्रणाली का समर्थन करते हुए लिखते हैं कि लोगों ने मत्स्यन्याय से दुःखित होकर, जिसमें एक जीव दूसरे का भक्ष था, मनुजी को इस शर्त पर राजा चुन लिया कि वह लोगों की आन्तरिक अशान्त तथा बाहिरी आक्रमणों से रक्षा करेगा और लोग इसके बदले भूमि की उपज का छटा भाग तथा व्यापारिक वस्तुओं की विक्रय का दसवां भाग कर के रूप में प्रदान करेंगे। अतः स्पष्ट है कि राजा का निर्वाचन पहिले पहिल प्रजा के द्वारा होता था। यद्यपि राजा और प्रजा का परस्पर सम्बन्ध पुत्रवात्मक था तथापि वह अन्योन्य कर्त्तव्य और अधिकारों पर अवलम्बित था। वह जनता की ओर पूर्ण उत्तरदायी था और आवश्यकता पड़ने पर उसे राज्यच्युत करने का भी जनता को पूर्ण अधिकार था। परन्तु दैनिक कार्यों में जनता की इच्छा को राजा के सम्मुख रखने तथा तदनुसार कार्य करवाने के लिए मंत्रिपरिषद् का निर्माण हुआ।

वैदिककाल भारतीय गगन पर प्रजातन्त्रवाद की उषा प्रकट हो चुकी थी। लोगों ने उस दिव्य-ज्योति का अनुभव करना आरम्भ कर दिया था। भारत के इतिहास में यह वह समय था, जबकि ज्ञान के उच्चतम भण्डारों का आविर्भाव हो रहा था, सिंधु नदी के तट वेदों की यज्ञाग्नि से प्रदीप्त थे और सप्त सिन्धु देश की भूमि वेदों के अमर गान से गुंजायमान हो रही थी, तथा स्वेच्छाचारी पक्षी उस ध्वनि में विलीन होकर मधुर कल्लोल कर रहे थे। सहसा राज्य का लोकेच्छानुसार संचालन करने के लिए प्रजापति के विराट शरीर से सभा और समिति रूपी दो कन्याओं का जन्म हुआ। उल्लेख मिलता है—

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः।
वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्॥

अर्थात् वह सभा नहीं है, जहां कि वृद्ध पुरुष नहीं और वे वृद्ध पुरुष नहीं, जो कि सत्य नहीं बोलते। सभा में केवल विद्वानों को ही प्रवेश मिल सकता था, जैसा कि पांचाल सभा के प्रवेश पाने के नियमों और उसमें गौतम ऋषि की उपस्थिति तथा विदेह की सभा में याज्ञवल्क्य मुनि तथा गार्गि के वादानुवाद से प्रतीत होता है। डा० मुकर्जी के मतानुसार यह एक सर्वोच्च न्यायालय का कार्य करती थी। समिति की सम्मति राजा के निर्वाचन तथा शासन-सम्बन्धी अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए आवश्यक थी। युद्ध घोषणा और सन्धि आदि प्रश्न पर राजा को इनकी अनुमति लेनी पड़ती थी। दुस्तमिरित राजा को केवल इस कारण राज्यच्युत होना पड़ा, क्योंकि उसने समिति की इच्छा की बार-बार अवहेलना की।

रामायण का काल हमारे देश के इतिहास में सुवर्ण युग था। समस्त देश संगठन के अमर सूत्र में पिरोया जा चुका था और सार्वभौम राज्य की उत्पत्ति हो गई थी। प्रजातन्त्रवाद की ध्वनि मन्दाकिनी और सरयू नदियों के तटों को गुंजायमान कर रही थी। सहसा रामराज्य में एक अपूर्व घटना हुई। राम के द्वारा नहीं, बल्कि राजा राम के द्वारा सीता का निर्वासन! प्रेम और कर्त्तव्य के द्वन्द्व में अकस्मात कर्त्तव्य की विजय, लोकेच्छा की सफलता और लोकाराधना का अमर गान। इस विषय में उत्तर रामचरित में भी उल्लेख मिलता है—

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि,
आराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।

अर्थात् रामचन्द्र जी कहते हैं कि यदि मुझ को निजी सुख, प्रेम दया, और जानकी को भी लोकरंजन के हेतु छोड़ना पड़े, तो मुझे कोई दुःख न होगा।

अतः मन्दाकिनी की शीतल वायु में तथा प्रजातन्त्रवाद की हिलोरों में लीन होकर माता अनुपम सुख तथा आनन्द मंगल की चिरकालीन निद्रा का अनुभव कर रही थी कि सहसा महाभारतकाल में दुर्योधन, कंस और शिशुपाल आदि नृपों की क्रूरताओं से त्रस्त जनता की हृदय-विदारक तथा वेदनापूर्ण पुकार ने माता की इस सुखरूपी निद्रा को भङ्ग कर दिया। परन्तु शीघ्र ही अत्याचारों के नाशक तथा लोकमतोपासक श्री कृष्णजी की मीठी लोकेच्छारूपी बांसुरी की तान सुनाई दी, जिसने दुःखों को शांत करके जनता के चित्त को ढाढ़स दिया। श्रीकृष्णजी अपनी गणराज्य की कठिनाई का नारद से हल पूछते हैं और नारदजी श्रीकृष्णजी को संघ द्वारा नाश से बचाने के लिए गुप्त मन्त्रणा की सम्मति देते हैं। वेदव्यासजी स्वेच्छाचारी राजाओं को लोकमताधीन करने के लिए इस शपथ का महाभारत में निर्माण करते हैं—

प्रतिज्ञाञ्चाधिरोहस्व,
मनसा कर्मणा गिरा।
पालयिष्याम्यहं भौमं,
ब्रह्म इत्येव चासकृत्॥
यत्र च धर्मनीतीत्युक्तो
दंडनीति व्यपाश्रयः।
तमशङ्कं करिष्यामि,
स्ववशो न कदाचन॥

अर्थात् मन, कर्म और वाणी से यह शपथ लो कि मैं बार बार पृथ्वी और वेदों का पालन करूंगा। जो भी धर्म वेदों और दंडनीति शास्त्र में कहा गया है, मैं उसका पालन करूंगा और कभी भी स्वेच्छाचारी न बनूंगा।

बौद्धकाल में महाभारत के क्रूर और अत्याचारी नृपों के शासन के भग्नावशेषों पर गण राज्य की दिव्य मूर्तियों का निर्माण हुआ। एकतन्त्रवाद की अमोलवी शक्ति का अवसान हुआ और पुनः लोकतन्त्रवाद का पुनरुत्थान हुआ। बौद्धकाल में लिच्छवी, वैशाली, शाक्य, मल्ल, लिवि, कुरुक और विदेहादि गण-राज्यों के अनेक ज्वलन्त उदाहरण उपलब्ध हैं। डा० रहीस डेविड अपनी 'बुद्धिस्टिक इण्डिया' नामक पुस्तक में उस काल का वर्णन करते हैं जिस में गण-राज्यों में राजा, सेनानी और मन्त्रि परिषद् की लोक निर्वाचन की प्रणाली निहित है। डाक्टर जयसवाल भी लिच्छवी गण-राज्य के वाद-विवादों, परिषदों के नियमों और उनके प्रजातन्त्रात्मक कार्यों की बहुत अधिक प्रशंसा करते हैं। जब कौशलाधीश विदुरभ ने शाक्यों की सेना को परास्त कर दिया तो शत्रु को नगर समर्पण करने का निर्णय एक व्यक्ति द्वारा नहीं, बल्कि सभा के बहुमत द्वारा ही किया गया जिससे स्पष्ट है कि युद्ध-घोषणा और सन्धि करने जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नों पर सभा अधिकार स्वयं रखती थी। जब महात्मा बुद्ध से मगधेश अजातशत्रु ने लिच्छवी गणराज्य पर आक्रमण करने से पूर्व सम्मति मांगी, तो महात्मा बुद्ध ने उत्तर दिया कि गण-राज्य लोकमत का प्रतिबिम्ब होने के कारण अजेय हैं। अतः उसे आक्रमण का निश्चय छोड़ना पड़ा। इससे लोकमत की शक्ति तथा महात्माओं की राजाओं पर आध्यात्मिक शक्ति की छाप प्रकट होती है।

मौर्य काल की एक अपूर्व घटना! ग्रीक विजेताओं द्वारा पंजाब के गणराज्यों में जटित स्वतन्त्रतारूपी मोती की मालाओं का अपहरण और चाणक्य द्वारा उस स्वतन्त्रतारूपी हार की पुनः प्राप्ति, यूनानी आक्रान्ताओं द्वारा पद-दलित और खंडित माता की मूर्ति का जगत मन्दिर में पुनः सर्वाङ्ग पूर्ण गौरवान्वित स्थापना। डाक्टर मुकर्जी के मतानुसार मौर्य केन्द्रीय सरकार ने स्थानीय सरकारों, श्रेणियों और पंचायतों की स्वतन्त्रता को नष्ट नहीं किया। अतः मौर्य शासन एक निरकुंश, एकतन्त्र तथा क्रूर शासन नहीं था। कौटिल्य भी लोक-हितैषी राज्य के मधुर स्वर का इन शब्दों में मनोहर गान करते हैं।

आत्मनः सुखे सुखं राज्ञः
प्रजानां च सुखे सुखम्।
आत्मन· प्रियं हितं राज्ञ.
प्रजानां तु प्रियं हितम्॥

अर्थात् 'राजा को केवल अपनी भलाई ही प्रिय नहीं अपितु जनता की भलाई ही प्रिय है। राजा को अपने सुख में ही सुख नहीं बल्कि जनता की भलाई में ही सुख है।' महाराजाधिराज अशोक ने इन उच्च भावनाओं का दिशा-दिशा में सिंहनाद किया जैसा कि उनके शिलालेख में उल्लेख मिलता है।

[शेष पृष्ठ १४ पर]

मन्दिर में प्रतिष्ठित होने वाली दो देव-मूर्तियां

मन्दिर का वह रूप जिसमें वह बन कर तैयार होगा

सोमनाथ गिर-गिर कर खड़ा हुआ है!

★ श्री बालसहाय

प्रसिद्ध इतिहासकार अलबरूनी ने सोमनाथ मंदिर के प्रादुर्भाव का अपने इतिहास में अत्यन्त रोचक वर्णन किया है। वह लिखता है कि सोम (चन्द्रमा) प्रजापति की पुत्रियों से प्रेम करने लगा था। वह प्रजापति की पुत्री-रोहिणी को कम प्रेम करता था जिसका भान होते ही रोहिणी सोम से अप्रसन्न हो गई। सोम के इस पक्षपात के लिए प्रजापति ने उसे शाप दे दिया जिसके परिणामस्वरूप सोम के मुख पर श्वेत कुष्ठ के धब्बे पड़ गये। सोम ने घबड़ा कर प्रजापति से क्षमा याचना चाही।

यद्यपि प्रजापति शाप को वापिस नहीं ले सकते थे किन्तु उन्होंने सोम को उपाय बतलाते हुए कहा कि वह भगवान शंकर की आराधना करे।

प्रजापति के निर्देशानुसार सोम ने एक विशेष तथा अद्वितीय शिला से शिव लिंग बनाया जिसको उसने अपना नाम अर्थात् सोम-नाथ कहा और जिसकी प्रतिष्ठापना उसने अपने पूजा-गृह में कर दी। यही मंदिर सोमनाथ कहलाने लगा।

अलबरूनी के उपरोक्त कथन की पुष्टि में यद्यपि महाभारत में कोई उल्लेख नहीं मिलता तथापि यह निश्चित है कि ईसा के चार सौ अस्सी वर्ष पूर्व यह मन्दिर विद्यमान था।

सोमनाथ कहां है?

सौराष्ट्र प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर पर, जहां अरब सागर के गर्भ से इठलाकर उठती हुई लोल लहरें एक चाप के साथ ही चिरनिद्रा में निमग्न हो जाती हैं और जहां यह क्रम अविच्छिन्नरूप से निरन्तर चलता ही रहता है, भारत की अखंडता एवं एकात्मता की जीवनदायिनी भावना को अपने अंक में समेटे सोमनाथ खड़ा है।

सोमनाथ की कहानी सृष्टि और संहार के साथ ही आघातों की कहानी है। अधिकांश आघातों के पीछे भीषण रक्तपात, क्रूर विध्वंस तथा पैशाचिक लूट पाट की रोमांचकारी गाथाएं छिपी पड़ी हैं जो इतिहास के फड़फड़ाते पृष्ठों पर आरूढ़ होकर सोमनाथ से ही प्रश्न करती हैं—'सोमनाथ! तुम सबकर युद्ध और विनाश ही बने रहोगे? तुम क्यों हो विनाशों के मध्य भी अस्थाई शांति बन गये हो?'

सोमनाथ की समृद्धि

यद्यपि शांति और समृद्धि सोमनाथ से कोसों दूर रहीं हैं तथापि भारत के प्राचीन मन्दिरों में जितना प्रसिद्ध सोमनाथ है उतना संभवत अन्य कोई मन्दिर नहीं। प्रतिदिन सहस्रों यात्री इसके दर्शनार्थ आते थे। मन्दिर की व्यवस्था के लिए १०,००० गांवों की जागीर लगी हुई थी। प्रतिदिन २००० पुजारी मंदिर की पूजा किया करते थे। दर्शनार्थ आए हुए यात्रियों के क्षौर कर्म की व्यवस्था के लिए प्रायः २०० नाई रक्खे गए थे। मन्दिर के विशाल प्रांगण में प्रायः ५०० नर्तकियां ३०० वाद्यों की सुमधुर ध्वनि पर सम्मोहक नृत्य किया करती थीं। दूर बहुत दूर अवस्थित गंगाजी से नित्य जल लाकर मूर्ति को स्नान कराया जाता था। अपार धन राशि से भरपूर था मन्दिर।

मोहम्मद का आक्रमण

इतिहास के पृष्ठों में सोमनाथ मोहम्मद गजनी की लूट के लिए अधिक प्रख्यात है। इतिहासकार इब्न आसिर का कथन है कि मोहम्मद ने सोमनाथ पर सन् १०२३ के दिसम्बर मास में चढ़ाई की थी। उस दिन शुक्रवार था। प्रभास पट्टन के योद्धा नगर निवासियों से प्रथम दो दिन की मुठभेड़ में मोहम्मद को मैदान हाथ से जाता दिखाई दिया किन्तु तीसरे ही दिन उसकी सेना ने समस्त नगर निवासियों को सोमनाथ मन्दिर में जा घेरा। द्वार पर ही खूब जमा कटका। कुछ तो निश्चय ही बड़ी वीरता से लड़े किंतु अधिकांश देवता द्वारा बचाव आने के वृथा विश्वास के शिकार बन कर मोहम्मद के सैनिकों की तलवारों के घाट उतर गए। भीषण नर संहार हुआ मोहम्मद ने सोमनाथ पर अधिकार कर लिया। मूर्ति के उसने टुकड़े टुकड़े कर दिये और मंदिर को जी भर कर लूटा। इस नर संहार तथा लूट की गाथाएं प्रभास पट्टन के नगर निवासी आज भी परस्पर कहते, सुनते हैं।

लूट के माल से लदे हुए ऊंटों को लेकर ज्यों ही मोहम्मद ने अपनी पीठ फेरी कि भीमदेव प्रथम ने पुनः प्रभास पट्टन पर अधिकार कर लिया तथा मंदिर को नए सिरे से बनवा दिया। तत्पश्चात आक्रमण और ध्वंस के भीषण थपेड़ों में सोमनाथ बार बार गिर गिर कर खड़ा हुआ मानों प्रत्येक संहार उसके पुनरुज्जीवन का संदेश लेकर आया हो!

सरदार पटेल और सोमनाथ

अब पुनः सोमनाथ की प्रतिष्ठापना हो रही है। यह कितने हर्ष की बात है कि भारतीय भावना की एकात्मता का प्रतीक सोमनाथ, वर्तमान भारत की एकात्मता तथा दृढ़ता का शिल्पी स्व० सरदार वल्लभभाई पटेल के सद् प्रयत्नों के परिणामस्वरूप पुनरुज्जीवित हो रहा है।

एक बार सन् १९४८ में, जूनागढ़ के भारत में मिलने के पश्चात, जामनगर के जाम साहब के साथ सरदार पटेल सोमनाथ देखने गए थे वहां सोमनाथ की प्राचीन कीर्ति की स्मृति करते करते उनके मन में सोमनाथ को पुनर्प्रतिष्ठापन करने की कल्पना उत्स्फुर्त हुई। तत्पश्चात एक समिति बनाई गई जिसमें सर्व श्री मुंशी, गाडगिल, सामलदास गांधी, जिज्ञ महाराज बिड़ला इत्यादि सम्मिलित थे। आनन्द कृषि महाविद्यालय के श्री गोस्वामी की देख रेख में निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ। अब ११ मई १९५१ को भारत के राष्ट्रपति प्रातःकाल ९ बज कर ४० मिनट पर सदियों बाद सोमनाथ के मंदिर का पुनः उद्घाटन करेंगे।

निश्चय ही सोमनाथ की पुनर प्रतिष्ठापना स्वराज्य की अभिव्यक्ति है जो भारत की कोटि कोटि जनता को आत्म संतोष की मधुर आभा से प्रदीप्त कर रही है।

राजस्थान-पाकिस्तान सीमा

[श्री ओमप्रकाश गुप्त]

राजस्थान भारत का सीमान्त प्रदेश है जिसकी पाकिस्तान से लगती हुई लगभग ७०० मील लम्बी सीमा है। यह सीमा भारत की रक्षा-पंक्ति में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह कोई प्राकृतिक सीमा नहीं, बल्कि रेगिस्तानी प्रदेश में एक कृत्रिम सीमा है, जिसकी सुरक्षा की व्यवस्था को सक्षम बनाना कठिन परन्तु आवश्यक कार्य है। भारत पाकिस्तान की यह सीमा राजस्थान के पश्चिमी किनारे उत्तर से दक्षिण तक चली गई है। यह एक रेतीले वीरान प्रदेश में होकर गुजरती है जिसमें मीलों तक रेत ही रेत के सिवाय और कुछ दिखलाई नहीं देता, कहीं कहीं कटिदार झाड़ियां और रेतीली वनस्पति के पुंज दिखलाई पड़ते हैं। इसके आस पास के इलाके में पानी की कमी के कारण आबादी बहुत ही कम है, क्योंकि इस प्रदेश की सालाना वर्षा का औसत ५ से १० इंच के बीच रहता है। इसलिए यहां खेती-बाड़ी बहुत ही कम होती है तथा लोगों को जीवन-यापन करने का और कोई साधन नहीं है गंगानगर जिले में नहर आजाने के कारण खेती होने लगी है और आबादी काफी बढ़ गई है, वरना और दूसरे भागों में बस कम ही गांव व आबादी नजर आती है। रेतीला प्रदेश होने के कारण यहां पानी बहुत गहराई पर जाकर निकलता है, वो भी खारा! पीने योग्य मीठे पानी के कुंए कम ही निकलते हैं।

सुरक्षा की दृष्टि से इस इतनी लम्बी सीमा का प्रबन्ध बहुत ही कठिन कार्य है क्योंकि इस प्रदेश में आवागमन के साधन नहीं के समान हैं। केवल एक रेलवे लाइन इस सीमा को पार करती हुई सिन्ध को जाती है जिसपर इन दिनों आवागमन बन्द है। इस सीमा के निकट-तम दूसरी लाइनें बीकानेर डिवीजन में हैं जहां से इसकी दूरी अधिक नहीं रह जाती। सड़कें इस प्रदेश में हैं ही नहीं—एक तो उन्हें रेतीली भूमि में बनाना फिर उन्हें रेत से रक्षित करना कठिन कार्य है क्योंकि इस प्रदेश में साल के अधिकतर भाग में जोर की आंधियां आती हैं जो सारे मार्ग को रेत से ढक देती हैं और रेत को हमेशा साफ करने की जरूरत रहती है। राजस्थान के एकीकरण के पश्चात भारत सरकार ने इस ओर कुछ ध्यान दिया है। सीमा के नजदीक सैनिक दृष्टिकोण से कुछ सड़कें बनाने की योजना है जिनमें से कुछ पर कार्य शुरू हो चुका है। जैसलमेर को बीकानेर और जोधपुर से रेल से मिलाने की योजना भी विचाराधीन है और इस लाइन का सर्वे भी हो चुका है, देखें कब तक काम शुरू होता है। सैनिक दृष्टि-कोण से इस प्रदेश के आवागमन के साधनों को उन्नत करने की बहुत ही आवश्यकता है वरना समय पर यहां सैनिक कुमुक पहुँचाना बड़ा ही कठिन कार्य सिद्ध हो सकता है।

राजस्थान-पाक सीमा

इस सीमा प्रदेश में आने जाने का केवल एक वाहन रेगिस्तान का जहाज ऊंट है। इस प्रदेश में बसने वाले लोगों का यह मुख्यधन है और इसी जानवर से वे अपने बहुत से कार्य निकालते हैं। अच्छे किस्म के ऊंट बहुत ही चतुर और तेज चलने वाले होते हैं। पाकिस्तान की ओर से राजस्थान की ओर आने वाले लुटेरे ऊंटों पर चढ़ कर आते हैं और लूट मार कर इन्हीं पर सामान लाद ले जाते हैं। इस प्रदेश में ऊंटों वाली पुलिस और फौज ही कार्य कर सकती है।

इस सीमा के निकट तटस्थ भागों की रक्षा में एक सबसे मुश्किल कारण यह है कि पड़ोसी प्रदेश के भाई चारे के अलावा आपसी ईर्षा, द्वेष की भावना भी यहां के लोगों में कम नहीं है। दोनों ही ओर अलगाववादी ग्रुप मजबूत हैं। जागीरी, राजशाही और धार्मिक कठ-मुल्लों के अलावा पूंजीपति हो के तत्व, पुराना इतिहास जिन्हें देशद्रोही और विश्वासघाती कहता है और जो घोर स्वार्थी रहे हैं, उनके वंशज यहां सीमा-प्रदेश में हैं। उधर से आने वाले हमला वर इधर के लोगों के घरों में आश्रय पाते हैं और मौका पाकर भाग जाते हैं। आज के युग की संकटापन्न विभिन्न स्थितियों का कुप्रभाव भी यहां कम होने की बजाय ज्यादा है। अतः इस सीमा-प्रदेश में आवश्यकता है, केन्द्र की निगरानी व मजबूत शासन-व्यवस्था की, लोगों को आत्मरक्षा के साधन व विचार देने की।

सीमा के इतनी लम्बी होने, आवा-गमन के साधन न होने तथा प्रदेश के अधिकांश भाग के वीरान होने के कारण इन नित्यप्रति होने वाले हमलों को रोकना वास्तव में कठिन कार्य है और बहुधा ऐसा होता है कि सैनिक दस्तों के सीमा के निकट होते हुए भी लुटेरे पास के किसी निर्जन स्थान से भाग निकलने में सफल हो जाते हैं। सीमा पर होने वाले अपराधों को रोकने के लिए राजनै-तिक कार्यवाही की आवश्यकता है। सीमा से लगने वाले पाकिस्तान के इलाके—भावलपुर, खैरपुर और सिन्ध के अधिकारियों से यह तय होना चाहिये कि वे अपने क्षेत्र में अधिकारियों और जुर्म करने वालों पर कड़ी निगरानी रखें और अपराधियों को पकड़ कर सम्बन्धित अधिकारियों के सुपुर्द कर दें। सीमा के इस ओर पाकिस्तान की तरफ से होने वाले हमलों को रोकने के लिए पाकि-स्तानी अधिकारियों की सख्त कार्यवाही के बिना उनको बन्द करना सम्भव नहीं दीखता।

पिछले दिनों तक इस प्रदेश की रक्षा के लिए भारतीय सेना के दस्ते तैनात किये हुए थे, परन्तु अब उनको वहां से हटाया जाकर उनकी जगह राज-स्थान की नवनिर्मित आर्मड् कांस्टेबुलरी के दस्तों को तैनात किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य आंतरिक सुरक्षा के कार्य को करना होगा। इस आर्मड् कांस्टेबु-लरी के सिपाही जो नये से नये हथियारों से सुसज्जित हैं, सामरिक दृष्टि से उपयोगी स्थानों पर नियुक्त रहेंगे, जिनका कार्य सीमा की सुरक्षा करना ही नहीं, बल्कि सीमा पर होने वाले अपराधों का पता लगाना और उनका रोकना भी होगा। इसके लिए गश्ती दल भी रहेगा, जिसका कार्य सारी सीमा पर घूम कर हमलावारों का पता लगाना होगा। राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रयत्नों में राजस्थान सरकार का यह प्रयत्न सराहनीय है।

लेखक— श्री वीर बहादुर

[गतांक से आगे]

अफसर इस बात पर सहमत हो गया और कौशल आदि तीनों उसके साथ उस गांव में लगभग आधे घण्टे में पहुँच गये। वही मकान जहां डाक्टर सुरेश ने रात को समय बिताया था। अफसर ने आस पास के चार पांच सिपाहियों को भी बुला लिया। यों तो गुंडा और गुंडाजादा दोनों ही इसके मित्र थे, परन्तु न जाने कब क्या हो जावे। द्वार पर पहुँचते ही पहले पहल वही रात वाले गुण्डेजादे साहब आये।

'ओह इन्सपेक्टर साहब, तशरीफ लाइये, आइये।' उनके साथ के आदमियों को देख कर गुण्डाजादे साहब कुछ ठिठके, परन्तु काफी मजे हुए खिलाड़ी थे। बैठक में सबको बुला लिया। आजकल बैठक खूब सजा रहता है, 'हरम की जियारत' के लिए सिपाही इस 'गुण्डेखाने शरीफ' को बहुत आया जाया करते थे। इन्सपेक्टर इस समय दुविधा में पड़ गया। एक तरफ तो इन गुण्डों को बचाना चाहता था, क्योंकि वह भली भांति जानता था कि नोआखाली में कोई भी ऐसा शख्स नहीं था, जिसके घर में एक दो नि.स्त्राव अबलायें न हों। फिर इन गुण्डों के सरदार जमींदार का क्या कहना। उसने होशियारी से काम लेना प्रारम्भ किया।

'साहबजादे साहब, आपके घर में कोई बाहर की औरत है?' इन्सपेक्टर ने पूछा। गुण्डेजादे कुछ ठिठके। उसकी आँखें कह रही थीं इन काफिरों को आप साथ क्यों लाये। इन्हें रास्ते में ही कसाइयों के हाथ क्यों नहीं सौंप दिया। कसाइयों की क्या नोआखाली में कमी थी। इन्सपेक्टर भी समझता था, पर विवश था। यह बात असम्भव थी। कब ही यह घटना भारतवर्ष के कोने कोने में फैल जाती। यह डरता तो नहीं था। हां यह बात थी कि अपनी कूटनीति पर भरोसा था। उसने आँखों से संकेत किया कि तुम स्वीकार कर लो।

'है तो सही' साहबजादे ने कुछ ताकत से कहा—'मगर…'

'मैं भी यही समझता था' इन्सपेक्टर ने कहा—'वह अपनी रजामन्दी से है, क्यों?'

साहबजादे ने कहा—'जी बिलकुल।'

'क्या हम उनसे पूछ सकते हैं?' कौशल ने आवेग में कहा।

'घबराइये नहीं' इन्सपेक्टर ने उत्तर दिया—साहबजादे साहब, क्या आप उस जनाने को यहां लाने की तकलीफ करेंगे?'

साहबजादे साहब कुछ और घबराये परन्तु इन्सपेक्टर की आँखों में अपने लिए धीरज और बचाव दोनों का प्रवाह समुद्र देख कर थोड़ी देर बाद बोले—'आप के हुक्म को मैं कैसे टाल सकता हूं।' कह कर भीतर चले गये। बाहर सब ज्यों के त्यों बैठे रहे।

गुण्डेजादे साहब घर में गये। उसके पिता तो कहीं बाहर गये थे। लूट का माल बांटने में कुछ झगड़ा हो गया था, उसी के निपटारे में लगे थे। गुण्डेजादे साहब चक्कर में पड़े, क्या करें। मां से पूछा, भाभी से पूछा, क्या करें? किन्तु वही राय कौन दे सकता था? सभी चक्कर में पड़ गये। अन्त में गुण्डेजादे साहब ने अपना एक बड़ा छुरा निकाला और हरम में पहुंच जहां अब भी बारह एक स्त्रियां मरणासन्न पड़ी थीं एक एक को देखा।

'मां इनमें से बाना कौन जाती है।'

'कभी कभी वह मोटी सी बाली बा लेती है' उसकी मां ने कहा।

'बस' गुण्डेजादे साहब उसे वहां से बाहर लाये।

'तुम यहां रजामन्दी से रहती हो?' गुण्डेजादे साहब ने कहा। परन्तु उसकी आँखों में आंसुओं के अतिरिक्त क्या उत्तर था।

'देख, रोना धोना बन्द कर, नहीं तो,' कटार दिखाते हुए उसने कहा —'अगर तुम एक बात मान जाओ तो। और नहीं तो तुम्हारे खानदान भर का इसी से खून कर डालूंगा।'

स्त्री ने कुछ भी नहीं कहा। गुण्डे को विश्वास हो गया, यह हां अवश्य कहेगी। और इन्सपेक्टर के पास उसे ले आया।

'तुम इस घर में रजामन्दी से रहती हो?' इन्सपेक्टर ने पूछा।

'कहिये,' कौशल ने कहा — 'क्या मैं इससे कुछ बातें कर सकता हूं? अगर आपकी आज्ञा हो?'

'ठीक है,' इन्सपेक्टर ने कहा।

नगर के बाहर से क्लान्त तथा म्लान मुख कौशल में रुचि लेते ही सन्यासी को शान्ति की कथा ज्ञात होती है। कौशल की वाग्दत्ता नोआखाली में घिर गई है। कौशल के पिता पहिले ही उधर जा चुके थे। किन्तु कौशल की दशा देख कर तथा जनसेवा के उद्देश्य से संन्यासी उसे लेकर उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्र की ओर रवाना हो गया। कौशल के पिता डा० सुरेश कलकत्ता से वेष बदल कर देहात में पहुँचते हैं और एक गुण्डे के यहां ही ठहरते हैं जिस के यहां अनेक युवतियाँ बन्द थीं। शान्ति भी कोठे के किवाड़ अन्दर से लगा कर कितने ही दिनों से उसी घर में पड़ी थी। वहां उन्होंने चतुराई से कुछ स्त्रियों को निकाला। उधर संन्यासी कौशल को ले कर उस क्षेत्रमें आ पहुँचा। इधर डा. सुरेश की शांतिके पितासे भेंट हो गई। दूसरी ओर सन्यासी व कौशल गुण्डे के मकान पर जा पहुँचे।

'बेटी' सन्यासी ने कहा — 'आगे आ जाओ।'

बड़ी देर तक वह स्त्री खड़ी रही। कौशल ने देखा उसकी आँखों से एक दो बूंद पानी का टपक कर पृथ्वी में विलीन हो गया। वह अभी तक चुप थी।

'बहन,' कौशल ने कहा — 'क्या कहना चाहती हो?'

वह क्या कहना चाहती थी? उसकी महाभारत की कथा एक दो मिनट में कैसे समाप्त हो जाती?

'कौशल,' सन्यासी ने कहा — 'तुम ठेठ बंगला में पूछो। एकान्त में पूछो। इन्सपेक्टर साहब आप की क्या राय है?'

'कोई हर्ज नहीं मैं तो दरयाफ्त करना चाहता हूं।' इन्सपेक्टर ने कहा। वह गुण्डेजादे की मूर्खता पर क्रोधित हो रहा था। वह समझता था कि वह अपनी ही स्त्री को पर्दे में लावेगा। केवल हां कहने के पश्चात् इन स्वयंसेवकों से पीछा छूट जायेगा। परन्तु गुण्डेजादे तो गुण्डेजादे ही थे। अब हो क्या सकता था।

'बहन साफ-साफ बताओ।' कौशल की आँखें भी डबडबा गईं — 'निडर हो कर कहो। सब कुछ बता दो। तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। और बिगाड़ भी सकता है तो क्या? तुम वही बात कहो जो तुम्हारी आत्मा कहती है, दूसरी नहीं। हम सब तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा में हैं।'

स्त्री की आँखों से अब स्वतन्त्रता पूर्वक अश्रुओं की धार बह निकली। अब तक रोने की भी स्वतन्त्रता नहीं थी। कसक आंसू बनके निकली, तो मुंह से आहें भी दबी-दबी आने लगीं।

'बहन,' कौशल ने कहा—'एक घंटे में संध्या हो जावेगी, इसके पहले हमें यहां से चला जाना चाहिये। साफ-साफ कहो।'

'क्या इन अत्याचारों के बाद भी साफ साफ कहने की जरूरत है? चारों ओर तबाह ताँडव नृत्य हो रहा है।' उसने रोते-रोते कुछ टूटे फूटे शब्दों में कहा—'चौदह और हैं।' 'वे मर जावेंगी।' 'मैं भी मर जाऊंगी', 'हम क्या करेंगी', 'कोई सहारा नहीं', 'भगवान कहां जावेंगी', 'हमें केवल मरना है', 'जी के क्या करेंगी', 'बारह दिन से सब बन्द हैं।' इत्यादि, इत्यादि के अतिरिक्त वह क्या कह सकती थी।

संन्यासी, इन्सपेक्टर और दूसरे भी ध्यानपूर्वक दूर से इन वाक्यों को सुनते रहे।

'सुना, आपने?' इन्सपेक्टर से संन्यासी ने कहा।

'साहबजादे, साहब' इन्सपेक्टर ने कहा—'सख्त अफसोस! आप हिरासत में हैं?'

'इन्सपेक्टर साहब!' गुण्डेजादे ने कहा।

'बस!'

वह आशा के सूर्य-प्रकाश से जब वंचित थी। रेखाओं को चमकती धूप ने पार कर लिया। वह और ऊपर चली गयी। प्रतिदिन इसी समय शान्ति इन रेखाओं की संख्या बढ़ाती जाती थी। किन्तु आज आंखें खोल कर इन रेखाओं की ओर देखने की भी शक्ति न रही। क्या आज से कभी सूरज नहीं डूबेगा। क्या इन रेखाओं की संख्या इससे अधिक नहीं बढ़ेगी। यदि सोच सकती, तो क्या सोचती?

इन्स्पेक्टर और सिपाहियों के साथ कौशल और सन्यासी के मकान में आते ही कौशल ने उंगली उठाकर फौरन संन्यासी से कहा—'वह कमरा'' ....'

'कौशल तुम बाहर बैठो' संन्यासी ने कहा।

'क्यों?' कौशल के आंखों में आंसू आ गये।

'शान्ति के ऊपर एक अचानक आघात पहुंचेगा?'

'उसने कहा था बारह दिन तक वह मेरी प्रतीक्षा करेगी? वह मेरी प्रतीक्षा अवश्य करती होगी।'

'ठीक है, लेकिन आज बारहवां दिन है। तुम बाहर जाओ'

'ऐसा कैसे हो सकता है?'

'तुम जाओ'

कौशल वहीं ठिठक गया। एक पुलिस के साथ संन्यासी उस कमरे के पास गया। इन्स्पेक्टर और कुछ सिपाही और एक स्वयं सेवक गुण्डेवाले के 'हरम' में गये।

पुलिस ने दरवाजे का ताला खोला। दरवाजा भीतर से बन्द था। पुलिस ने तोड़ना चाहा।

'रुको' संन्यासी ने कहा। उसने दरवाजे के छेद से देखा एक चटाई पर शान्ति पड़ी थी। प्रत्यक्ष ही उसमें उठकर खोलने की शक्ति नहीं थी।

'द्वार का पेच धीरे से खोल दो' संन्यासी ने कहा। और जेब से चाकू निकाल कर पुलिस को दे दिया। पुलिस ने कुछ देर बाद पेच खोला।

'तुम मेरे पीछे आना,' संन्यासी ने कहा—'मुझे अन्दर जाने दो।'

सन्यासी ने द्वार धीरे से खोल दिया। शान्ति चुप-चाप पड़ी रही। उसकी बन्द आंखें एक बार खुलीं, फिर बन्द हो गयीं।

'उठा बेटी,' सन्यासी ने मन्द स्वर में कहा। शान्ति की आंखें बन्द थीं।

'शान्ति!' संन्यासी ने कहा। उसने आंख खोली, किन्तु उसमें बल नहीं था।

'तुम यहां से मुक्त हो गयी' संन्यासी ने कहा।

'......' शान्ति की आंखें कुछ भीगी हो गयीं। परन्तु वह अभी तक मौन थी।

'चलो, बाहर चलें' संन्यासी ने कहा।

शान्ति की आंखें उन रेखाओं पर पड़ीं। वह मरते-मरते यही आशा लिए बैठी थी कि एक दिन कौशल आयेगा। उसे वह देखकर शून्य में मिल जायेगी। उसकी यही, यही एक अन्तिम कामना थी। मगर जब वह भी पूरी नहीं हो सकी तो, उसके लिए स्वतन्त्रता, प्रसन्नता जीवन मृत्यु सब समान था।

'चलो घर चलें' सन्यासी ने कहा—'आओ, मेरा हाथ पकड़ लो। मैं तुम्हारा पिता हूं।'

शान्ति की आंखों से आंसू की एक बूंद टपक पड़ी। संन्यासी ने उसकी आंखों को पोंछ दिया। बाहर पुलिस खड़ी थी। उसकी आंखें भी सजल हो गयीं। शान्ति वैसे ही पड़ी रही। उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। संन्यासी की आंखें उस दीवार की रेखाओं पर पड़ीं।

'कुछ कहो,' संन्यासी ने कहा—'तुम्हारे पिता ने मुझे भेजा है।'

संन्यासी भली भांति जानता था कि इस समय कौशल का नाम लेना भी कितना घातक सिद्ध हो सकता था।

'चलो तुम्हारे पिता के पास चलें।' संन्यासी ने कहा—'वह तुम्हें वहां बुला रहे हैं।'

किन्तु इस बात का प्रभाव भी शान्ति के ऊपर नहीं पड़ा। वह जानती थी उसके एक दिन भी, इस गुण्डे के घर में रहने के बाद, उसे अब कोई आदर के साथ नहीं बुलायेगा। वह सब कुछ समझती थी। उसके सामने मृत्यु स्वयं खड़ी थी, परन्तु उसकी अमर अभिलाषा की एक धुंधली छाया शेष थी। वह थी कौशल को एक बार देखने की कामना। केवल एक बार। इसलिए नहीं कि वह कौशल को अपना सकती है! केवल इसलिये कि वह शान्तिपूर्वक शून्य में मिल सकती है। वह इस प्रबल कामना को लिए परलोक में कैसे जाती? उसकी आत्मा प्रेत बनकर गोचालाओं में ही दिन रात कौशल को ढूंढा करती।

'देखिये, मेरा बैग बाहर होगा' संन्यासी ने सिपाही से कहा—'जरा...'

बैग में कुछ औषधियां थीं। संन्यासी ने एक शीशी निकाली और शीशे की प्याली में भरकर शान्ति के अधरों से लगाया।

'मर...' शान्ति ने सिर खिसकाया।

'पी लो बेटी' संन्यासी ने कहा—'दवा है। तुम्हें अभी जीना चाहिए' कह कर संन्यासी ने दवा उसके गले के नीचे उतार दी, और दूसरी प्याली भी भर ली।

'नहीं....' शान्ति ने कहा।

'ऐसा कैसे हो सकता है?' संन्यासी ने कहा—'तुम्हारे पिता तुम्हें देखना चाहते हैं। चलो।'

शान्ति की आंखों में दो चार आंसू की बूंदें और आ गईं। संन्यासी शान्ति की प्रारम्भिक चिकित्सा में लग गया।

उधर द्वार पर दूसरे स्वयंसेवक और पुलिस आ गई। इन्स्पेक्टर ने बारह स्त्रियों को बाहर निकाला। उनमें से कई गर्भवती हो चुकी थीं। उनको पुलिस के हवाले किया। स्वयं शान्ति के बन्दी-गृह के द्वार पर आ गया। कौशल भी भीड़ में था। उसकी आंखें अब भी भीगी थीं।

'स्वामी जी' इन्स्पेक्टर ने बाहर से कहा।

'कुछ देर लगेगी' संन्यासी ने कहा—'दशा ठीक नहीं, अस्पताल ले चलिये।'

'जरा रुकिये। सब ठीक हो जायगा।'

संन्यासी की औषधियां पीने के बाद शान्ति ने आंखें बन्द कर लीं। उसकी मुरझाती बेचैनी में शिथिलता आ गई। स्वयंसेवकों ने लकड़ी स्ट्रेचर, बनाया और सब लोग शान्ति को ले कर पुलिस समेत कस्बे को चले। वहीं थाना भी था और अस्पताल भी।

'बची है?' कौशल ने धीरे पूछा।

'चिन्ता न करो' उत्तर था।

स्त्रियों के साथ ज्यों ही पुलिस और स्वयंसेवक बाहर आये, स्वामी निर्वेदानन्द की नाक पर कपड़ा डाले बाहर बैठक में ही खड़े थे, पुलिस इन्स्पेक्टर से कहा—'देखिये मकान को घेरे गुण्डे खड़े हैं!'

'अच्छा!' कह कर पुलिस इन्स्पेक्टर बाहर आया, देखा सचमुच २० चालीस आदमी बाहर खड़े थे और दूर से अनेकों व्यक्ति लाठी लिए आ रहे थे।

'मीर साहब,' इन्स्पेक्टर ने गुण्डेवाले के पिता के पास जा कर कहा—'यह ठीक नहीं। आप गुण्डों को मना कर दें।'

'दारोगा जी,' मीर साहब ने कहा—'मैं हैरान हूं, आप मजहब के इन दीवानों को गुण्डा समझते हैं। मैं हैरान हूं आप की इस कार्रवाई पर!'

'मीर साहब!' इन्स्पेक्टर ने आंख मार कर कहा—'मैं मजबूर हूं। आपके साहबजादे साहब की गलती का सारा नतीजा है। उन्होंने घर में से एक औरत को इन बावलियों के सामने खड़ा कर दिया है। फिर तलाशी लेनी जरूरी हो गई।'

'फिर!' मीर साहब ने किंकर्तव्य-विमूढ़ हो पूछा।

'अब तो खैर इसी में है कि ये लोग हमें यहां से चुपके-चुपके जाने दें। पिछली पार्टी के पास ट्रान्समीटर है, यदि यहां कुछ हुआ तो खबर कल तक सारे अखबारों में छप जायेगी। इसमें मेरी बदनामी है, और बदनामी आप की भी।'

'खैर पर हमारा क्या होगा......?'

'जो हुआ सो हुआ। कल आप बयान दे देना कि मैंने निस्सहाय औरतों को केवल शरण दी थी, बदनियती से नहीं। आगे मैं सब सम्हाल लूंगा। पर इस वक्त तो कुछ करना सिर्फ बदनामी मोल लेना है।'

'जैसी आपकी मरजी।' कह कर मीर साहब ने सब गुण्डों को इशारा किया। कुछ शोर गुल मचाते रहे, पुलिस ने ख्याल न किया और सब लोग बचाई हुई औरतों के साथ थाने की ओर कस्बे में चल दिये। रास्ते में कई गुण्डों की टोलियां अवश्य मिलीं पर पुलिस साथ देख कर सब आश्चर्य में थे। उन्हें पता न चला कि आज पुलिस के व्यवहार में इतना एकाएक अन्तर क्यों आ गया है।

यूसुफ की निराशा

[पृष्ठ १२ का शेष]

काश, और मैं चाहता हूं कि हमेशा के लिए हिन्दुस्तान उसे भूल जाय…।'

'वाह भाई साहब। मैं तो हैरान हो रही हूं आपकी बातें सुन कर।'

'शायद आगे तुझे इससे भी ज्यादा हैरत होगी यह सुन कर कि यूसुफ अब कम्यूनिस्ट नहीं रहा और मुसलमान कहलाने में भी उसका सिर शर्म से नीचे झुक जाता है ……हमीदा तू देखेगी कि तेरा भाई एक दूसरी ही दुनिया का आदमी बन गया है।'

'अच्छा यह तो बताइये कि कैसे यह उलट-फेर हो गया है? आपने आज से पहले कभी बताया भी नहीं। कौन हैं वह साहब, जिन्होंने जादू कर दिया आप पर?' पहले वह गम्भीर थी पर उस प्रकार की उसकी प्रकृति नहीं। अस्तु हंसते हुए पूछा उसने, मानो यूसुफ दुनिया के लिये भले बदल जाय पर हमीदा को उसकी बहन है—उसके लिए क्या बदलेगा वह!

'सच, जादू भी हो गया हमीदा, सुन तुझे सब सुनाता हूं।'

और तब चाय का आखिरी घूंट पी, कप टेबल के किनारे खिसका कर वह ठीक से बैठ गई उत्सुक हो।

'कानपुर-जेल में मार-पीट हो गई और तब अफसरों ने हमें लखनऊ भेज दिया। मेरे साथ और दूसरे ४ कम्यूनिस्ट साथी भी थे। यहां आते ही हम लोगों ने कानपुर के केस की जांच करने पर जोर देना शुरू कर दिया पर अफसरों के कानों पर जब जूं न रेंगी तो भूख हड़ताल शुरू कर दी। आखिर मैजिस्ट्रेट ने हमारी बातें मान लीं और तीसरे दिन शाम को हमने भूख-हड़ताल तोड़ दी पर खाना न मिला। जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट ने कहा कि डाक्टर आयेगा अभी, खिचड़ी भी आयगी और तब दूध वगैरह जो भी वह बतायेगा मिलेगा। शाम ढल कर रात बढ़ता गया। बैरक बन्द हो गयी। पर डाक्टर का कहीं पता न था।'

'ऐसा क्यों होता है, आखिर जेल के भी कायदे कानून होते होंगे कि…।'

'तू नहीं जानती हमीदा, जेल का बड़ा भयंकर रूप होता है कैदियों के लिये। सिपाही कायदे-कानून कैदी का भला नहीं कर सकते वहां। जेल की पक्की पुख्ता ऊंची चहार-दीवारी उसे मजबूर कर देती है कि वह बेजबान और पढ़ा लिखा जानवर बन जाय और जेलर के डंडे के नीचे सिर झुका कर रहे, बस एक उसे रहना है वहां।'

'पढ़ा लिखा जानवर……?'

'हां हमीदा पढ़ा लिखा जानवर जो आदमी की बोली, आदमी का खाना-पीना और आदमी का रहन-सहन छोड़ दे। हां तो सुन, जैसे तैसे रात गुजरी पर जब सवेरे भी न डाक्टर आया और न किसी और ने ही खबर ली तो हम पेट के बल पड़ रहे। भूख बुरी होती है बहन, और तब मजबूर हो मैंने एक खत लिखा……।'

'खत! किसे?'

'काजिम साहब को, जिन्हें तू जानती होगी। उधर लाइ सके मकान है उनका। लीग के सेक्रेटरी रह चुके हैं और किसी ४२० के केस में वे पकड़ आये थे।'

'अच्छा वे काजिम मियां……।' जैसे वह उन्हें बहुत दिन बाद याद कर रही हो।

हां वही, तो मैंने उन्हें खत लिखा अपनी शर्म और शान बलाये-ताक रखकर कि जल्दी से जल्दी चंद रोटियों का इंतजाम कर दीजिये कहीं से, वरना हम में से एकाध जरूर चल बसेगा। पर अफसोस उन्होंने लिखा कि तुम्हारे दूसरे चारों साथी हिन्दू हैं, जिन्हें मर जाने देना ही बेहतर होगा और रहे तुम, तो धीरे धीरे चले आओ। रोटियां हमने रख ली हैं तुम्हारे लिये। जब तकलीफ थी तुम्हें तो फौरन बतानी चाहिये थी मुझे। मेरे जैसे आदमी के लिये जेल अपना घर है। एक दिन क्या, चाहो तो रोज अंडे पराठे तैयार करा दिया करूं तुम्हारे लिये……'

'उफ, कमाल हो गया भाईजान! हिन्दुओं से इतनी नफरत?'

'हां और वह इसलिये कि जितने ज्यादा हिन्दू मर जायेंगे—उनके इस्लाम की उम्र बढ़ती जायेगी और अगर ऐसी चन्द जानें उनकी वजह से जाया हो सकें तो बड़ी सवाब का बायस हो रहेगा उनके लिये। हां तो मैंने दोबारा लिखा कि मुझ पर बहुत सख्ती बरती जा रही है कानपुर जेल के झगड़े की वजह से। मेरा वहां आना ठीक नहीं। और रोटियां कल तक के लिये कम-से-कम भेज दें तो अच्छा हो क्योंकि अफसर नाराज हैं भूख-हड़ताल करने की वजह से कौन जाने क्या है उनके मन में?'

'तो आपने सिर्फ अपने लिये रोटियां मंगवा लीं?'

'नहीं हमीदा तेरा भाई इतना खुदगरज नहीं। बल्कि यह झूठ मैंने इसलिये बोला कि मेरे साथी भी खा लेंगे इसमें से, वरना दो चार रोटियों से होता क्या?'

'अच्छा तो काजिम साहब ने भेजीं रोटियां?'

'नहीं, सुन तो। पर्चा ले कर जो मेहतर गया था वह पहले वाला न था। ड्यूटी बदल गई थी इसलिये दूसरा चला गया था शाम के लिये, जिसके हाथ हमने दूसरा पर्चा भेजा था। पर बेहद ताज्जुब हुआ हमें, जब देखा कि जेल का एक हिन्दू वार्डर दो तश्तरियों में घी चुपड़ी रोटियां और ढेर सा साग लिये कह रहा है—'लीजिये बाबूजी—यह चिट्ठी भी दी है।'

'इतनी रोटियां कैसे भेज दीं उन्होंने?'

'नहीं! रोटियां काजिम ने नहीं रोटियां राम ने भिजवाईं थीं।'

'राम ने? क्या कह रहे हैं आप!' वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या कहे जा रहे हैं भाई साहब।

'हां इसी राम ने भिजवाईं थीं रोटियां, जिसे आज मैंने याद किया है। बात यह हुई कि दूसरा मेहतर जिसकी ड्यूटी बदल गयी थी नहीं जानता था कि काजिम साहब की कौन सी बैरक है या कौन जाने कुछ पी पिया आया हो वह। पर्चा लेकर वह उस बैरक में चला गया जिसमें संघ के करीब २० नौजवान बन्द थे। उन्हें बाहर नहीं निकलने दिया जाता था। काफी सख्ती बरती जाती थी उन पर। फिर भी जेल के कई बाबू, जमादार और वार्डर वगैरह उन्हें बहुत मानने लगे थे। बड़ी इज्जत करते थे उनकी। उनका बर्ताव ही ऐसा था। तुझे क्या बताऊं! एक सिख था जिसकी जेल में किसी से न पटती थी और जो एक एंग्लो-इंडियन का खून करके आया था। उन लोगों से इस कदर मुहब्बत करने लगा कि खाने के वक्त अपना तसला और रोटी ले उनकी लाइन में आ बैठता—उन्हीं के साथ खाता-पीता और बड़ा खुश होता। कई बार उसे डांट पड़ी पर वह हमेशा यही कहता—'ये सब गुरु नानक के चेले हैं, भाई हैं मेरे।'

'आप तो न जाने क्या बताने लगे—रोटियों की बात बीच में ही छोड़ दी……।'

'अरे हां—कहां से कहां आ पड़ा। और, मेरा पर्चा जब राम ने पढ़ा—जो उन सबों का लीडर था तो वार्डर को बुलवा कर उसने उस दिन की अपनी करीब आधी खुराक भेज दी हमें और लिखा कि काजिम साहब नहीं रहते इस बैरक में। आपको धोखा हो गया शायद, पर कोई बात नहीं। आपका पर्चा पढ़ कर लगा कि आप लोग बहुत भूखे हैं और परेशान हैं। हम काजिम न सही पर इन्सानियत का नाता तब भी है हमारा आपका, और हमें उम्मीद है कि हमारी ये चन्द रोटियां आप जरूर मंजूर करेंगे।'

'बड़े शरीफ थे वे लोग।' उसका हृदय कृतज्ञता से भर गया उनके प्रति।

'और हमीदा! हमने रोटियां ले लीं और बदले में लिखा कि रोटियां बहुत भेज दीं आपने। तकलीफ होगी आपको इससे … पर इसके लिये बहुत-बहुत शुक्रिया। आपने इन्सानियत का एक नया सबक दिखाया है हमें और जो मुझे शायद न सूझे शायद……। और इसमें बिल्कुल झूठ नहीं बहन कि उनमें से खुद उस दिन कई भूखे सो रहे होंगे!'

'फिर क्या हुआ?' हमीदा जैसे कोई ख्वाब देखते-देखते जग पड़ी हो।

'बस उसके बाद दिन बीतते गये और मैं रोज ब रोज उनकी तरफ खिंचता गया। राम से मेरी कई बार बातचीत हुई। उनको बाहर नहीं निकलने दिया जाता था। हम लोग धीरे धीरे आजादी से सर्किल के बाहर घूमने भी निकल जाते। उधर पहले राम की बैरक पड़ती और मैं उन्हें देखते ही हाथ जोड़ कर नमस्ते करता। मेरे दूसरे हिन्दू साथी मुझे बेवकूफ बनाते और मेरी उनकी तरफ बढ़ती हुई कशश (आकर्षण) देख कर मेरी हंसी उड़ाते। पर इससे क्या होता? सुबह तड़के जब बैरक खुलने का वक्त होता तो मैं सीखचों से कान लगा सुनता रहते उनके गाने। हमीदा, वे 'मां' के गाने गाते रहते। धीरे धीरे जैसे जैसे मैं उन्हें समझने लगा, सुनते सुनते मेरे दिल में उनकी उस 'मां' की मुहब्बत लहरें लेने लगती। कोई 'चाहत' मैं भी गुन-गुना पड़ता उनके साथ साथ और तब मेरे साथी मेरी हंसी उड़ाते हुए कहते कि जादू कर दिया है इस पर संघियों ने……।'

'और सुनिये, खत में आपने एक आर्टिस्ट का जिक्र किया है वह कौन था?' पूछा हमीदा ने जैसे वह सब कुछ जान लेना चाहती है।

'अरे हां, बड़ा अजीब आदमी था वह हमीदा। जेल के वार्डर और जमादार उसे कागज ला देते और उन पर वह उनकी हूबहू तसवीर खींच देता और तब वे सब बेहद खुश हो जाते। अक्सर वह उन बचे हुए कागजों पर उसी 'मां' की जिसके गीत मैं सुना करता था, तसवीर खींचता और मुझे राम लाकर दिखाता सीखचों के अन्दर से। मैं देखता और देखता रहता। कई बार मुझे लगा कि हिन्दुओं की यह मां—यह हिन्दोस्तान की पाक सर जमीन मेरी भी मां है। मैं भी इसी की कोख से पैदा हुआ हूं और एक दिन इसी के दामन में छिप जाऊंगा……पर मेरी बहन, इस मुस्लिम कौम से मैं बहुत मायूस (निराश) हो गया हूं और सोचता हूं, काश! यह बदकिस्मत कौम राम की उस प्यारी मां की इज्जत करना सीख सकती। और तभी इस्लाम के खूंखार नारों की बुलन्द आवाज मेरे कानों के पर्दे फाड़ने लगती है और तब मेरी रूह चिल्लाकर कहना चाहती है हमीदा, कि नहीं…तुम गलत कहते हो, अभी राम को तुमने नहीं देखा।

(एक सत्य अनुभव के आधार पर—)

सम्पादक के नाम पत्र

हमारे पाठक क्या कहते हैं ?

प्राचीन राजस्थान के निर्माण के साथ अनेक राज्य कर्मचारी आवश्यकता से अधिक हो गये थे और बहुतों को २५ साल की नौकरी व ५० साल की वयस हो जाने पर रिटायर कर दिया गया। चूंकि रियासतों में बहुत कम वेतन मिलता था—जो पेन्शन राज्य कर्मचारी पा सके वह इतनी—नाम मात्र को है कि उनको अपनी जीविका के लिये बनियों के यहां नौकरी करनी पड़ रही है। राज्य कर्मचारियों की योग्यता की जांच करने के लिये कई कमीशनें बिठाई गईं और कलक्टर, कमिश्नर एवं न्याय विभाग के न्यायाधीशों की नियुक्ति हुई। नये राजस्थान के निर्माण के पश्चात् एक एकीकरण का महकमा स्थापित हुआ। पब्लिक सर्विस कमीशन ने भिन्न-भिन्न कर्मचारियों के पुराने रेकार्ड को देखा और बुला बुलाकर प्रश्न भी किये। इसके पश्चात् कमिश्नरों, कलक्टरों और डिप्टी कलक्टरों की नियुक्तियां हुईं जिसमें पुराने राजस्थान के समय में जो व्यवस्था की गई थी, वह बहुत कुछ बदल दी गई और कई कर्मचारियों को पद नीचा मिलने का अपमान सहना पड़ा। इतनी जांच कर लेने के बाद भी सब कर्मचारियों की नियुक्ति अस्थाई की गई। इसके पश्चात् राजस्थान एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस के लिये उम्मेदवार छांटने के लिये एक कमीशन बिठाई गई जिसने सब राज्य कर्मचारियों की नौकरी का लेखा देखा और अपने सम्मुख बुलाकर भिन्न भिन्न विषयों पर प्रश्न किये। इस जांच के फलस्वरूप राज्यकर्मचारियों की एक फैहरिस्त निकाली गई जिसको सिनियोरीटी लिस्ट कहा जाता है। इस सूची के निकलने पर बड़ा हाहाकार मच गया। रेवेन्यू बोर्ड के मेम्बर और डिवीजन के कमिश्नर, तहसीलदारों के समीप पहुँच गये और बहुत से कलक्टरों का नम्बर तहसीलदारों के नीचे आ गया। जन-साधारण के लिये इस कौतुक को समझना कठिन है। कई तहसीलदार कलक्टर बनने के और कई कलक्टर कमिश्नर बनने के स्वप्न देखने लगे। परन्तु इस फेहरिस्त के अनुसार नियुक्तियां नहीं की जा सकीं। जो कलक्टर कमिश्नरों के ऊपर आते थे, उनको सिवाय डिप्टी कलक्टर बन जाने के कोई लाभ नहीं पहुँचा। पुरानी पुरानी नौकरी वाले बहुत अधिक संख्या में राजस्थान एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस में न आ सके जिसके कारण वैसे ही बड़ा असन्तोष था। परन्तु जो लोग राजस्थान एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस में आ गये उनको भी सम्मानित पद पाने का सन्तोष नहीं मिल सका। राजस्थान सर्विस के दो विभाग कर दिये गये। जिसमें एक की ग्रेड २५० से ५०० की और ऊंची ग्रेड ५०० से ७०० की रक्खी गई। जो लोग पहले से ही ६०० रुपये पा रहे थे और कलक्टरी इत्यादि के पद पर नियुक्त थे उनमें से अधिकतर को २५० से ५०० की ग्रेड में डाल दिया और आफिसीयटिंग बना दिया गया और बहुत से कलक्टरों को एस० डी० ओ० बना दिया गया।

जुडिशियल अफसरों की जांच करने के लिये भी एक कमीशन की नियुक्ति हुई जिसमें दो हाईकोर्ट जज और एक पब्लिक सर्विस कमीशन के मेम्बर भाग्य विधाता बनाये गये। इन्होंने प्रमुख प्रमुख स्थानों पर मुकाम करके जुडिशियल अफसरों से पूछताछ की। दीवानी कानून एक विस्तृत क्षेत्र है और सिवाय काम में आने वाली बातों के प्रतिदिन के काम करने वाले मुन्सिफ सिविल जज से यह आशा नहीं की जा सकती कि वह सारे कानून को याद रक्खे। परन्तु न्यायाधीशों को अयोग्य ठहराने के लिए तरह तरह के पेचीदा सवाल किये गये। इस जांच के फलस्वरूप जो जूडीशियल न्यायाधीशों की सूची निकाली गई है वह और भी रोष उत्पन्न करने वाली व अचम्भे में डालने वाली है। जो न्यायाधीश १५-१६ साल से काम कर रहे हैं, वे बहुत से इस सूची में स्थान नहीं पा सके, इसके विरुद्ध इसमें बहुत से कर्मचारी ऐसे भी आ गये हैं जिनकी नौकरी केवल दो दो, तीन तीन साल या कुछ हालतों में एक साल वाले कर्मचारी भी इसमें स्थान पा गये हैं। एक साधारण मनुष्य के मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि क्या कमीशन के पास कोई ऐसा भी वैज्ञानिक यन्त्र था जिससे उन्होंने पांच दस मिनट की पूछताछ में थोड़े समय की नौकरी वालों में प्रतिभा का आविष्कार कर लिया और पुराने पुराने कर्मचारियों की अयोग्यता की जांच कर ली। ये दस दस वर्ष काम किये हुए न्यायाधीश किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहे हैं और नहीं जानते कि इनके भाग्य में आगे क्या क्या लिखा है। इन लोगों ने कभी तहसीलदारी भी नहीं की है कि जिससे वे तहसीलदारी में ही 'फिट' किये जा सकें।

राजस्थान में जो ग्रेडें कायम की गई हैं, वह अन्य प्रान्तों से बहुत नीची हैं। जो कलक्टर की ग्रेड बनाई गई हैं वे अन्य प्रान्तों की डिप्टी-कलक्टरों की ग्रेड से भी नीची है, और जो डिप्टी-कलक्टरों व मुन्सिफों की ग्रेड बनाई गई है वह करीब करीब अन्य प्रान्तों के तहसीलदारों के बराबर है। यह स्पष्ट है कि राजस्थान के पुराने पुराने कर्मचारी व न्यायाधीश दस दस पन्द्रह-पन्द्रह वर्ष की नौकरी के पश्चात् भी उन पदों के अयोग्य ठहरा दिये गये हैं। अंग्रेजी राज्य काल में भारतवासी आई. सी. एस. में बैठने के अयोग्य समझे जाते थे। अंग्रेज भारत से निकल गये हैं, परन्तु उनके अनन्य भक्त जो हमारे भाग्य के निर्णायक हैं उनकी वही प्रवृत्ति राजस्थान में काम कर रही है। हरेक के मन में यह विचार उठता है कि देशी राजाओं का शासन क्या बुरा था। क्या हमारे लोक-नेता इस समस्या पर ध्यान देंगे ?

———

प्रभाकर परीक्षोपयोगी लेख

एकांकी नाटक

★ श्री सीताराम शास्त्री

प्रारम्भ—हिन्दी के एकांकी नाटकों के प्रारम्भ के विषय में विभिन्न मत हैं। कोई साहित्यकार भारतेन्दु से एकांकी नाटकों का प्रारम्भ मानता है, तो कोई प्रसादजी के 'एक घूंट' से तथा तीसरा डा० रामकुमार के 'चारु मित्रा' से।

उद्‌गम—एकांकी का उद्‌गम भी दो प्रकार से माना गया है, कोई संस्कृत से मानता है और कोई अंग्रेजी से।

एकांकी और नाटक का अन्तर—एकांकी नाटक और पूर्ण नाटक में वही अन्तर है, जो छोटी कहानी और उपन्यास में। पूर्ण नाटक यदि किसी उद्यान का पौधा है, तो एकांकी किसी गुलदस्ते का। अन्य अन्तर इस प्रकार है—

पूर्ण नाटक

१ कई पात्र समान रूप से प्रकाश में आते हैं।

२. पात्रों में अनेक उपकथा बिखरे रहते हैं। कई आवश्यक घटनाओं को भी स्थान दिया जा सकता है।

३. मानव तथा समाज का व्यापक दर्शन।

४ भाषा कठिन एवं सरल।

५. कई घटनाओं का समावेश।

६. कथावस्तु, पात्र, चरित्र-चित्रण, संविधान एवं कथोपकथन, ये पांचों तत्व प्रधान।

एकांकी नाटक

१ केवल एक पात्र का जीवन प्रकाश में लाया जाता है।

२. एक भी बात ऐसी नहीं रखी जाती, जिसका परा कोटि से सम्बन्ध न हो।

३. मानव तथा समाज में से किसी एक का संक्षिप्त किन्तु पूर्ण दर्शन।

४. भाषा सरल, सुबोध एवं दैनिक जीवन से सम्बन्धित।

५ एक मुख्य घटना, अन्य उसी से सम्बद्ध अथवा सहायक।

६ कथावस्तु, कथोपकथन और पात्र तो रहते ही हैं, पर चरित्र-चित्रण तथा संविधान में से किसी एक की मुख्यता रहती है।

एकांकी की अपनी अन्य विशेषताएं

१. एकांकी नाटक वह है, जो जीवन की एक घटना को लेकर बना हो, अपने भीतर पूर्ण हो एक ही अंक में जिसकी समाप्ति हो।

२. कम से कम पात्र हों और जिसमें कम से कम नाटकीय सामग्री होते हुए भी पूर्ण प्रभाव डालने की शक्ति हो।

३ जिसमें एक ही प्रधान कथानक हो तथा उपकथानक न हों।

४ वह भयानक, हास्य अथवा करुणा आदि में से किसी एक का जनक हो और साथ ही साथ अधिक प्रभावशाली हो।

५ जिसमें अधिक वर्णन का अभाव हो। नाटककार जहां अपनी ओर से कुछ न कह सकता हो।

६ जिसका एक वाक्य, एक शब्द, एक अक्षर कथानक, चरित्र एवं वातावरण को बनाने में सहायक हो।

७ इसका प्रारम्भ सीधा होता है। कोरी भूमिका एवं परिचयात्मक वर्णन से यह रहित होता है।

८ यह सीधा अपने लक्ष्य तक पहुंचता है।

९. एक ही घटना अपनी चरम सीमा तक पहुंचती है।

१०. थोड़े से थोड़े चरित्र-चित्रण होते हैं।

११ संवाद तीव्र, आकर्षक, सरल और दैनिक बातचीत से सम्बद्ध होते हैं।

१२. विषय सुन्दरता से प्रतिपादित दृढ़ता से व्यक्ति और अनावश्यक घटनाओं से शून्य होती हैं।

१३ पूर्णता का आभास देता है।

लोकप्रियता—(१) आज का जीवन संघर्षमय है। मनुष्य के पास इतना समय नहीं है कि वह रात्रि भर पूर्ण नाटक देखने में समय व्यतीत करे। वह सिनेमा की तरह अढ़ाई घंटे में अपना मनोरंजन चाहता है। इसकी पूर्ति एकांकी में ही हो सकती है।

(२) यह कालेजों और स्कूल के छात्रों के लिए उत्सवादि अनेक अवसरों पर थोड़ी सी तैयारी से थोड़े समय में दिखाये जाने की क्षमता रखता है।

वर्तमान एकांकी नाटक एवं नाटककार— १. भुवनेश्वरप्रसाद— १. कारवां (६ एकांकी) २ ऊसर ३. स्ट्राइक

२. गणेशप्रसाद द्विवेदी— सोहाग-बिंदी

३. रामकुमार वर्मा—पृथ्वीराज की की आंखें २. रेशमी टाई ३. चारुमित्रा

४. डा० सत्येन्द्र— कुणाल

५. द्वारकाप्रसाद— आदमी

६. सद्‌गुरुशरण अवस्थी— दो एकांकी

७. उदयशंकर भट्ट— सात एकांकी

८. सेठ गोविन्ददास— सप्तरश्मि, ३. पंचभूत ३. दो नाटक आदि

९. प्यारेलाल— माता की सौगात

१०. उपेन्द्रनाथ अश्क— देवताओं की छाया में

—

दो आंसू

इस चित्र के वितरण के अधिकार जनरल टाकीज लि० दिल्ली ने दिल्ली व उत्तर प्रदेश (यू० पी०) के लिये प्राप्त कर लिये हैं—११ मई से यह चित्र आगरा, देहरादून, सहारनपुर में प्रदर्शित हो रहा है स्थानीय मैजिस्टिक, रिवोली में शीघ्र प्रदर्शित होने वाला है—यह चित्र नौबहार फिल्म्स का है इसकी कहानी हकीम अहमद शुजा (शीश महल के विख्यात) ने लिखी है—गाने भी सुरीले और मनोहर हैं। इसमें अभिनेत्री शर्मिला काम कर रही है साथ में सुलोचना चोपड़ा और नई कोन सईदा हैं। (नायक) सन्तोषकुमार—हिमालय वाला—अजमल इत्यादि हैं—नवाब की दो पुत्रियों की जीवगाथा है—जो दो भिन्न समुदाय में पलीं—देखने योग्य चित्र है हर परिवार को आवश्यक देखना चाहिए।

— 'विमल'

नव-प्रकाशन

प्रभाकर-प्रबोधिनी — लेखक रणवीरचन्द्र एम० ए० साहित्यरत्न, श्री ओमप्रकाश बी० ए० साहित्यरत्न, श्री गणेश शर्मा शास्त्री साहित्याचार्य, प्रकाशक — नवसाहित्य मंडल घण्टाघर सब्जी मंडी दिल्ली ६. मूल्य ६॥) रु०

प्रभाकर के विद्यार्थियों की कठिनाइयों को ध्यान में रख कर गत वर्ष लिखी गई प्रस्तुत पुस्तक का दूसरा संस्करण भी प्रकाशित हो गया है, जिसमें विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार कुछ संशोधन तथा परिवर्द्धन किये गये हैं। छंद तथा अलंकार का प्रथम पत्र तथा व्यावहारिक योग्यता का छटा पत्र विद्यार्थियों के लिए एक बहुत बड़ी समस्या का कारण होता है। किन्तु प्रस्तुत पुस्तक में परीक्षा में समय-समय पर पूछे जाने वाले तथा इस वर्ष के लिए संभाव्य प्रश्नों के उत्तर बड़ी सरल तथा स्पष्ट भाषा में दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त भारतेन्दु, प्रसाद, पंत निराला आदि युग-प्रतिनिधि कवियों का आलोचनात्मक परिचय संक्षेप में इस प्रकार दिया गया है, जिससे विद्यार्थी बिना अन्य पुस्तकों को पढ़े भी सरलता से पास हो सकते हैं। आशा है कि नव साहित्य मंडल का उक्त प्रयास आगामी वर्ष और भी अधिक सुन्दर तथा सुचारु रूप में प्रकट होगा।

— सुरेश

बङ्गाल में नेताजी की चर्चा का रहस्य

डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी द्वारा 'जन संघ' की स्थापना की घोषणा नगर में चारों ओर चर्चा और कुतूहल का विषय बन गयी है। यह भी ज्ञात हुआ है कि कलकत्ता के अनेकों प्रमुख नागरिकों ने डा० मुकर्जी का समर्थन किया है और सहयोग का आश्वासन दिया है। बंगाल तथा देश के विभिन्न भागों से उन्हें उत्साहवर्धक पत्र प्राप्त हो रहे हैं।

पश्चिमी बंगाल का बुद्धिशाली वर्ग यह अनुभव करता है कि प्रान्त के गिरे हुए शासन प्रबन्ध और भ्रष्टाचार के लिए कांग्रेस सरकार की नीति ही उत्तरदायी है। पाकिस्तान के प्रति भारत-सरकार की तुष्टीकरण नीति के कारण ही पूर्वी बंगाल की सरकार वहां के हिन्दू नागरिकों पर अत्याचार कर सकी, जिसके फलस्वरूप इतनी विशालसंख्या में अपने घर छोड़ कर उन्हें पश्चिमी बंगाल में आना पड़ा। अतः आज प्रान्त में उत्पन्न हुई विषम समस्याओं की जिम्मेदारी कांग्रेस की राजनीतिक भूलों पर ही मानी जाती है।

लोगों का विचार है कि कांग्रेस की इस असफलता से निराश हुई जनता किसी भी विरोधी दल के अभाव में कम्यूनिस्टों की ओर आकर्षित हो रही थी। डा० मुकर्जी द्वारा जन संघ की स्थापना की घोषणा ने बंगाल की जनता का ध्यान तुरंत अपनी ओर खींच लिया है, और प्रथम प्रतिक्रिया बहुत अनुकूल हुई है। नेहरू-लियाकत सम-झौते से विरोध प्रकट करते हुए केन्द्रीय मंत्रि-मंडल से त्याग पत्र देते समय जिस प्रकार सारे बंगाल प्रांत की आंखें डा० मुकर्जी की ओर उठ गयी थीं, कुछ-कुछ वैसी ही प्रतिक्रिया इस घोषणा के पश्चात् भी दिखाई देती है।

जानकार क्षेत्रों का कथन है कि प्रान्तीय सरकार और कांग्रेस कमेटी को काफी पहिले ही ज्ञात हो चुका था कि डा० मुकर्जी नवीन दल की स्थापना करने वाले हैं। दिल्ली समझौते के विरोध में मन्त्रिपद को ठोकर मारने के कारण मिली लोकप्रियता ने डा० मुकर्जी को बंगाल का सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति बना दिया है। स्वयं प्रान्तीय कांग्रेस में फूट पड़ जाने और डा० घोष द्वारा स्वतन्त्र दल बना लेने के कारण पश्चिमी बंगाल में कांग्रेस के अस्तित्व के लिये सबसे बड़ा भय अब डा० मुकर्जी ही हो गये हैं। यह बात इसी से स्पष्ट हो जाती है कि डा० मुकर्जी को "जन-संघ" के लिये भारी समर्थन प्राप्त हुआ है और उसकी स्थापना में सारे प्रान्त भर से बहुत बड़ी संख्या में प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया था।

ऐसी स्थितिमें जनता की सहानुभूति अपनी ओर खींचने के लिये कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने नेताजी सुभाषचन्द्रबोस का नाम उठाना पुनः आरम्भ किया है। ज्ञात हुआ है कि पश्चिमी बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की एक बैठक में इस परिस्थिति पर गम्भीर विचार होने के पश्चात् यह मार्ग निश्चित किया गया है। कांग्रेस कार्यकर्ताओं का विचार है कि श्री शरत्चन्द्र बोस का देहान्त हो जाने के कारण उनके द्वारा नेताजी का नाम काम में लाने से रोकने वाला अब कोई नहीं रहा। श्री सुभाष बाबू का नाम आज भी बंगाल में भारी प्रभाव रखता है और इसीलिए डा० मुकर्जी के प्रभाव के विरुद्ध इसका प्रयोग करना कांग्रेस ने आरम्भ कर दिया है।

नगर कांग्रेसी समाचार पत्रों ने नेताजी सुभाष बोस को भारी प्रकाशन देना आरम्भ कर दिया है। उनसे संबन्धित प्रत्येक वस्तु को भारी प्रकाशन दिया जा रहा है। उनकी यूरोपियन पत्नी के तथा पुत्री के नाम का तथा उनके नाम लेने गये पत्रादि को भारी प्रकाशन देकर बंगाल को नेताजी के नाम की ओर आकर्षित करने का भारी प्रयास जोरशोर से आरम्भ हो गया है। यह भी ज्ञात हुआ है कि नेताजी की पत्नी और पुत्री को भारत में कुछ ही समय पूर्व भारत आमन्त्रित करने और कांग्रेस की ओर से देश भर में और विशेषकर पश्चिमी बंगाल में उनका भारी स्वागत आयोजित करने का सुझाव प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी द्वारा कांग्रेस अध्यक्ष श्री टंडनजी को उनके कलकत्ते के पिछले दौरे के अवसर पर दिया था।

किन्तु क्षेत्रों में कांग्रेस द्वारा नेताजी के नाम द्वारा स्वार्थ साधन के प्रयत्नों को बहुत ही बुरा और नीचतापूर्ण समझा जा रहा है। उनका कथन है कि नेताजी सुभाष की स्मृति बंगाल ही नहीं, समस्त भारत के लिए एक पवित्र स्मृति है और उनके पुण्य नाम का प्रयोग अपनी गद्दियां बनाये रखने के लिए करना अत्यन्त गर्हित प्रयत्न है। उनका कहना है कि नेताजी की आजाद हिन्द फौज के नाम का पूरा लाभ उठा कर कांग्रेस ने पिछले चुनाव जीते थे यद्यपि चुनाव जीतने के पश्चात् उनकी सुभाष-भक्ति और आजाद हिन्द फौज प्रेम का सबको भलीभांति पता है। वही लोग आज फिर नेताजी के पवित्र नाम से स्वार्थ सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

देश-विदेश का घटनाचक्र

कोरिया

कोरिया में कम्यूनिस्ट आक्रमण का बढ़िया दौर भारी क्षति उठाकर समाप्त हो चुका है। राष्ट्रसंघीय सेनाओं ने धीरे धीरे पुनः आगे बढ़ना आरम्भ कर दिया है। अनुमान है कि इस आक्रमण में कम्यूनिस्टों को ७०—७०,००० तक की जान हानि उठानी पड़ी है।

यह संख्या बहुत बड़ी है और यह कोई आश्चर्य नहीं कि इतना भारी मूल्य चुकाते हुए कम्यूनिस्ट कब तक आगे बढ़ सकेंगे। इससे एक बात कम से कम स्पष्ट है कि राष्ट्र संघीय सेनाओं के पैर कोरिया के प्रायद्वीप पर अधिक दृढ़ता से जम चुके हैं। इसलिए उन्हें समुद्र में धकेल देने के लिए कम्यूनिस्टों को इस प्रकार से प्राणों की चिन्ता छोड़ कर प्रयत्न करने के लिए बाध्य होना पड़ा है।

यह स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि अग्नि अस्त्र शस्त्रों में कम्यूनिस्ट राष्ट्रसंघीय सेनाओं की अपेक्षा निर्बल, जब कि जन-संख्या उनकी अधिक है। वायु तथा जल सेना में तो निर्विवाद रूप से राष्ट्र-संघीय पक्ष अत्यन्त प्रबल है। यह देखते हुए ही कम्यूनिस्ट अपनी वायुशक्ति बढ़ाने का प्राणपण से प्रयत्न कर रहे हैं।

जनरल रिजवे के मुख्य विभाग का कथन है कि कम्यूनिस्ट आक्रमण समाप्त नहीं हुआ है। वे ३८ अक्षांश के उत्तर में भारी संख्या में सैनिक तथा रसद एकत्रित कर रहे हैं। यालू नदी के उत्तर से हजारों गाड़ियों के काफिले युद्ध सामग्री ला रहे हैं। राष्ट्र संघीय वायु सेना इन पर भारी प्रहार कर रसद मार्गों को छिन्न भिन्न करने का प्रयास कर रही है।

ईरान का तेल

ईरान सरकार द्वारा तेल के राष्ट्रीय-करण किये जाने के निर्णय से ईरान तथा ब्रिटेन में भारी तनातनी बढ़ गई है। ब्रिटिश लोकसभा में हुए प्रश्नोत्तर से तो यहां तक ध्वनि निकलती थी कि ब्रिटेन कहीं ईरान में अपनी सेनाएं न उतार दे। उसी समय रूस द्वारा प्रकट किये गये इस निश्चय ने कि यदि अन्तर्राष्ट्रीय सेनाएं ईरान पहुंची तो वह भी अपनी सेनाएं तुरन्त ईरान भेज देगा, इसने विश्वयुद्ध के लिए एक नया कारण उपस्थित हुआ प्रतीत होने लगा था। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि रूस की इस घोषणा ने ब्रिटेन के रुख में परिवर्तन ला दिया।

ईरान सरकार ने किसी भी प्रकार के समझौते के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया है। ब्रिटिश तेल कम्पनी को यह आदेश हुआ है कि वह अपना हिसाब ईरान सरकार को उपस्थित करे। किन्तु ईरानी प्रधान मन्त्री ने ब्रिटिश राजदूत श्री मोरीसन को यह विश्वास दिलाया है कि कम्पनी के अधिकारों पर सहानु-भूति पूर्वक विचार किया जायगा। संभव है कि ब्रिटेन इस विषय को अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में ले जाय।

मैकार्थर-ट्रूमैन

वाशिंगटन और सम्पूर्ण संयुक्त राज्य अमेरिका में मेकार्थर-ट्रूमैन विवाद बहुत बढ़ गया है। हाल ही में सुदूरपूर्व की अमरीकी नीति की जांच करने वाली सीनेट कमेटी के संमुख अपनी गवाही में जनरल मेकार्थर ने अपने पक्ष और विचारों का दृढ़तापूर्वक प्रतिपादन किया है तथा ट्रूमैन शासन की नीति की कठोर आलो-चना की है। उसका सबसे प्रभावशाली तर्क यह है कि ट्रूमैन शासन की ढिलि-ढाला नीति के कारण ही कोरिया में प्रति मास सहस्त्रों अमरीकी-जापानों को अपने प्राण देने पड़ रहे हैं।

मेकार्थर की इस गवाही की प्रति-क्रिया काफी गम्भीर हुई है। प्रेसीडेंट ट्रूमैन को स्वयं पत्रकार परिषद् में मेका-आर्थर पर आक्रमण करना पड़ा। सीनेट कमेटी के सम्मुख गवाही देते हुए रक्षा मंत्री श्री जार्ज मार्शल ने भी मेकार्थर की आलोचना करने का मार्ग ग्रहण किया है। समाचार पत्रों में इस विवाद के और अधिक बढ़ने की सम्भावना है। यदि प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन के समान जनरल मैकार्थर ने भी प्रेस वक्तव्य का मार्ग ग्रहण किया, तो इस वाद विवाद में काफी गर्मी आने की सम्भावना है।

भारत व नेपाल

नेपाल में प्रारम्भ हुई अशांति इस समय अपने शिखर पर पहुंच चुकी है। नैपाली कांग्रेस ने महाराजाधिराज श्री त्रिभुवन से यह आग्रह किया है कि वर्तमान मंत्रिमंडल को भंग करके पूर्णतः कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल स्थापित करने की अनुमति दें। नैपाल मन्त्रिमण्डल के राणा सदस्यों और कांग्रेसी सदस्यों में भारी मतभेद है।

ऐसी स्थिति में भारत के प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू की राय लेने तथा वहां की परिस्थिति से उन्हें पूर्णतः परि-चित कराने के लिए नैपाल के प्रधान मन्त्री श्री मोहन शमशेर जंग बहादुर राणा अभी दिल्ली आये हुए हैं। मन्त्रि-मण्डल के कांग्रेसी सदस्य श्री कोइराला व सुवर्ण शमशेर भी राजधानी पहुंच चुके हैं।

ज्ञात हुआ है कि आगामी कुछ दिनों में भारत के प्रधान मन्त्री के सम्मुख नेपाल की स्थिति पर गम्भीर विचार होगा जिसमें दोनों ही ओर से यह प्रयत्न किया जायगा कि वे पं० नेहरू को अपनी ओर खींच सकें। यह भी स्पष्ट ही है कि नैपाल कांग्रेस की ओर उनके झुकाव का पूरा-पूरा लाभ उठाने का भी कांग्रेसी मन्त्रिगण प्रयत्न करेंगे। दिल्ली की यह वार्ता नैपाल के राजाशासन के लिए बहुत कुछ निर्णायक होगी यह आशा की जाती है।

'डेमोक्रेटिक फ्रंट'

श्री कृपलानी के नेतृत्व में संघटित 'डेमोक्रेटिक फ्रंट' के भंग होने से कांग्रेस में एकता स्थापित होने के जो स्वप्न कुछ लोग देखने लगे थे वे पूर्णतः भंग हो गए। 'फ्रंट' के नेताओं ने यह आशा की थी कि पं० नेहरू उन्हें कांग्रेस कार्य समिति तथा प्रान्तीय कार्यसमितियों में भी स्थान दिला सकेंगे। किन्तु यह सम्भावना पूर्णतः निराधार सिद्ध हुई। श्री टण्डन ने चुनाव बोर्ड के लिए श्री कृपलानी व किदवई के नाम स्वीकार कर लिए किन्तु इन दोनों महानुभावों ने इसे स्वीकार नहीं किया।

अब यह निश्चित हो चुका है कि कृप किद दल के लोग १५ मई तक कांग्रेस से त्यागपत्र देकर पृथक हो जायगे। जून के मध्य में पटना में एक अखिल भारतीय सम्मेलन होने की आशा है जिसमें वे सभी दल आमंत्रित किए जाएंगे जिन्होंने २ मई को श्री कृपलानी द्वारा आयोजित बैठक में भाग लिया था।

पूर्वी बंगाल

हाल ही में संसद में हुए प्रश्नों के विदेश मंत्रालय के उपमन्त्री डा० केसकर द्वारा दिए गये उत्तरों में परोक्ष रूप से यह स्वीकार कर लिया गया है कि पूर्वी बंगाल के हिन्दुओं का जीवन संकटा-पन्न है। अनेक प्रश्नों का उत्तर न देने के लिए मंत्री महोदय ने "अधिक समय" की आड़ ली।

दूसरी ओर बंगाल तथा आसाम से प्राप्त होने वाले समाचार पूर्वी पाकिस्तान स्थित हिन्दुओं के संकट को बड़े भया-नक रूप उपस्थित करते हैं। जब कि भारत सरकार केवल आपत्तियां करने और विरोध पत्र भेजने का कार्य करती रही है, हिन्दुओं के धन जन और सम्मान सभी नष्ट करने के प्रयत्न उस ओर अबाध रूप से चलते रहे हैं।

हिन्दुओं में पुनः भय निर्माण किया जा रहा है। भारत से लगती हुई सारी सीमा पर पांच मील अन्दर तक किसी भी हिन्दू को रहने नहीं दिया जा रहा। यहां मुसलमान बसाये जायेंगे। हजारों आदिवासी भाग कर भारतीय सीमा में पहुंचे हैं। उनके बयान पाकिस्तानियों के कुकृत्यों पर और अधिक प्रकाश डालते हैं। उनके अनुसार यहां हिन्दुओं में बलात् धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।

भिन्न क्षेत्रों का कथन है कि इससे तो अच्छा है कि भारत सारे हिन्दुओं को निकाल लें, अन्यथा यदि विरोधपत्रों के अतिरिक्त कोई अन्य कठोर कार्यवाही न की गई तो पूर्वी बंगाल में दिल्ली समझौते के कारण रूप हुए नरमेध की पुनरावृत्ति का भय उपस्थित हो गया है।

———

(पृष्ठ ४ का शेष)

गया। भीमदेव के रण कौशल के बावजूद वह अवहीन सौराष्ट्र में आ पहुँचा। इधर उसके पीछे पीछे मालवा की सेना राजा भोज के नेतृत्व में उत्तर पूर्व से चली आ रही थी।

सोमनाथ क्षेत्र की महिमा गुजरात में जैनों का शासन होने और कुमारपाल का संरक्षण मिलने तथा प्रसिद्ध हेमचन्द्र सूरी की प्रेरणा से बढ़ी। गुजरात के सोलंकी नरेशों और सौराष्ट्र के चूंडा-समस ने प्राणप्रण से इसके गौरव को दिल्ली के खिलजी शासकों और अहमदा-बाद के मुसलमान हुए टांक सुलतानों के आक्रमण होने तक कायम रखा। मुगल फौजदार ने इसकी उस समय भी रक्षा की जब तक कि रानी अहिल्या-बाई होल्कर द्वारा यात्रियों के लिए नवीन मन्दिर का निर्माण नहीं किया। इसके बाद से इसकी रक्षा का भार गायकवाड़ बड़ोदा को दिया गया। गायकवाड़ ने इसकी देख रेख का काम जूनागढ़ के नवाब को सौंपा, पर उस पर गायकवाड़ की देख रेख बनी रही और सोमनाथ में पूजा भी बराबर होती रही और यात्री भी सदा वहां आते रहे। इसलिए महमूद गजनवी द्वारा खण्डित किये गये और लूटे गये मन्दिर को पुनरुद्धार करने की कल्पना मात्र है, कोई ऐतिहासिक सत्य नहीं।

———

हमारी कुल राष्ट्रीय आय

(पृष्ठ ६ का शेष)

उपभोग स्वयं उत्पादकों द्वारा ही कर लिया जाता है या वस्तुओं और सेवाओं से इसका विनिमय हो जाता है। पश्चिमी देशों में सीधे व्यक्तियों से, उद्योगों से आर्थिक आंकड़े एकत्र किये जाते हैं। भारत में ऐसा करने के लिये योग्य व्यक्तियों का अभाव है। अधिकांश जनता अशिक्षित है। इसलिए विश्वस्त आंकड़े प्राप्त नहीं हो सकते। भारत में औद्योगिक वर्गीकरण कठिन है।

१९४८-४९ की आय का अनुमान लगाने के लिये कुल कृषि उत्पादन व अन्य उत्पादनों के अनुमान, कारखानों की प्रवृत्तियों, सरकार तथा सरकारी कार्यों की आय तथा खर्च, विदेशों के साथ आयात व निर्यात की मदें तथा काम करने वाली जनसंख्या से सम्बन्धित प्राप्त सूचना से काम लिया गया है।

छोटे उद्योग

कृषि—	४००० करोड़ रु०	
मछली उद्योग	२०	,,
छोटे उद्योग एवं व्यापार	८६०	,,
पेशे कर तथा अन्य सेवाएं	३२०	,,
घरेलू सेवाएं	१५०	,,
योग	५३५०	,,

बड़े उद्योग

कृषि	७० करोड़ रु०	
जंगलात	६०	,,
धन	६०	,,
कारखाने	५८०	,,
रेलें	२००	,,
यातायात	३०	,,
बैंकिंग और बीमा	५०	,,
योग	१०५०	,,

विभिन्न

व्यापार एवं यातायात के अन्य साधन	१०१० करोड़ रु०	
सरकारी शासन प्रबन्ध व्यवस्था	७६०	,,
घर आयदाद इत्यादि	४६०	,,
योग	२२३० करोड़ रु०	

इन तीन मदों के योग में से २० करोड़ रु० घाटे के रूप में घटाने से कुल आय ८७१० करोड़ रुपये आती है।

देश की कुल राष्ट्रीय आय का विस्तृत विवरण देते हुए समिति ने कुछ विशेष एवं मनोरंजक पृष्ठभूमियों का जिक्र किया है। आय का विश्लेषण करते हुए समिति ने बताया है कि कृषकों ने अपने आवश्यक कार्यों के लिए राष्ट्रीय आय का ४८ प्रतिशत भाग दिया। इस में कृषि, पशु पालन, क्रय विक्रय, आवा-जाई आदि अनेक बातें शामिल हैं। व्यापार, यातायात, डाक, तार १६.२ प्रतिशत दिया। विभिन्न दृष्टियों से इन आंकड़ों पर विचार करने के पश्चात पता चलता है कि कृषि, खान, खुदाई, उत्पादन, हाथों हाथ व्यापार से ५१.५० करोड़ की आय हुई जो कुल राष्ट्रीय आय का दो तिहाई है।

धन्धों की स्थिति की दृष्टियों से राष्ट्रीय आय के वितरण के विषय में पता चलता है कि छोटे छोटे धन्धों को ८३.६ प्रतिशत मिला है, जबकि बड़े उद्योगों को १६.४ प्रतिशत। छोटे उद्योगों की राशि बड़े उद्योगों की राशि से ५ गुना अधिक है। यह भी देखा गया है कि छोटे-छोटे उद्योगों का उत्पादन केवल घरेलू उत्पादन का ६१ वां प्रतिशत है।

वैसे तो प्रति व्यक्ति की वार्षिक आय २५५ रु० है, पर कामों में लगे हुए व्यक्तियों की आय से ज्ञात होता है कि राष्ट्रीय औसत आय ६६०) प्रति व्यक्ति है। विभिन्न धन्धों में लगे व्यक्तियों की आय निम्न प्रकार है—कृषि—५००), खान एवं कारखानों में लगे व्यक्तियों की १७००), छोटे धन्धों में लगे हुए व्यक्तियों की आय—६००), व्यापार, यातायात एवं डाक, तार में लगे व्यक्तियों की आय १६००), सरकारी नौकरी—१३००) पेशेवर—६००) घरेलू ४००)।

आर्थिक उन्नति शून्य

लेकिन यह बढ़ी हुई आय इस बात की सूचक नहीं है कि हमारी राष्ट्रीय आय वास्तव में कुछ बढ़ गई है। डा. राव ने (जो समिति के एक सदस्य थे) ने अभी हाल ही में [८ मई ५१] बताया है कि पिछले २० वर्षों में हमारी आर्थिक उन्नति नहीं के बराबर हुई है। सन् १९३१-३२ में प्रति व्यक्ति की आय डा० राव के अनुसार ६२) रु० थी। यदि आज की महंगाई का हिसाब लगाया जाय तो यह आय २६० रु० के लगभग आती है। पर आज हमारी वार्षिक आय २५५ रु० आंकी गई है। यह आय नई जनसंख्या के अनुसार भी केवल ५५०) रु० बैठती है। इस प्रकार इन वर्षों में हमारी आय बढ़ने के स्थान पर घटी है। यद्यपि इसके साथ डा० राव ने यह स्वीकार किया है कि कृषि में अपनी आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने वाले की वार्षिक आय आज पहले की अपेक्षा निश्चित रूप से अधिक है, पर कुल अनुपात में अन्तर नहीं पड़ा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक भारतीय की औसत आय बहुत ही कम है। २५० रु० प्रति वर्ष का अर्थ है २१ रु० प्रतिमास। पर असल में आमदनी इससे भी कम है। डा० राव के अनुसार १९३१-३२ में गांव में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की वार्षिक आय ५० रु० से कुछ कम थी और नगर में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की आय थी ११० रु०। गांवों में एक भूमिरहित कृषक की आय तो केवल ३५ रु० प्रति वर्ष ही आंकी गई थी। और ध्यान देने योग्य बात यह है कि भारत की ७० ०/० आबादी ऐसे ही लोगों की है। यह छोटी सी रकम भरपेट भोजन को भी पर्याप्त नहीं है। यही कारण है कि ३० प्रतिशत जनता को केवल इतना भोजन मिलता था कि वह किसी प्रकार जीवित रह सके। उचित परिमाण में खाद्यान्न न मिलने का नतीजा है। कि संसार में सबसे अधिक मृत्युसंख्या हमारी (२४ ४ प्रति हजार) है।

सन् १९४८-४९ के अनुमान के अनुसार भी हम अपनी कुल राष्ट्रीय आय में से ४६०० करोड़ रुपये अर्थात ५३ प्रतिशत खाद्यान्न पर व्यय करते हैं। गांवों में यह अनुपात और भी अधिक बढ़ जाता है। यद्यपि युद्ध के वर्षों में कृषकों की दशा पहले से कुछ अच्छी हो गई है, पर अब भी यह संतोषजनक होने से बहुत दूर है।

अन्य देशों से तुलना

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुमान के अनुसार विभिन्न राष्ट्रों की राष्ट्रीय आय के द्वारा हम अपनी तुलना अन्य राष्ट्रों से कर सकते हैं। अनुमान निम्नलिखित है—

देश	वर्ष	आय प्रति व्यक्ति (डालरों में)
अफगानिस्तान	१९४९	५०
आस्ट्रेलिया	,,	६७९
लंका	,,	६७
डेनमार्क	,,	६८९
मिश्र	,,	१००
फ्रांस	,,	४८२
भारत	१९४८-४९	५७
ईरान	१९४९	८५
जापान	,,	१००
पाकिस्तान	,,	५१
रूस	,,	३०८
इंगलैंड	,,	७७३
अमेरिका	,,	१४५३

इस प्रकार हम देखते हैं कि यूरोपियन राष्ट्रों से तो हमारी तुलना हो ही नहीं सकती। एशिया में भी जापान, लंका, मिश्र, ईरान, आदि से हमारी राष्ट्रीय आय कम है यद्यपि अफगानिस्तान, बर्मा, चीन तथा पाकिस्तान से हमारी आय अवश्य अधिक है।

कारण

हमारी राष्ट्रीय आय कम होने के कारण सर्वविदित है—यथा कृषि पर आवश्यकता से अधिक निर्भरता, कृषि का पिछड़ा हुआ होना, उद्योगों की कमी, यातायात के थोड़े साधन, बैंकों का न होना आदि आर्थिक कारण हैं। सामाजिक कारणों में शिक्षा की कमी, सहयोग की भावना का न होना, पुरानी लकीर के फकीर होना, बाहर न जाने की आदत आदि हैं। राजनीतिक परतन्त्रता भी एक बहुत बड़ी बाधा थी।

अंतिम बाधा अब दूर हो चुकी है। शेष बाधाएं हमें स्वयं हटानी हैं। इनमें भी जैसा डा० राव ने कहा है कि राष्ट्रीय आय में काफी वृद्धि सिर्फ उद्योगीकरण और अधिक पूंजीगत सामान से ही हो सकती है।

———

वीर अर्जुन साप्ताहिक का मूल्य

वार्षिक	१२)
अर्धवार्षिक	६॥)
एक प्रति	चार आना

(पृष्ठ २ का शेष)

वाटूमल को अपने इस कारोबार से प्रति वर्ष २० से ३० लाख डालर तक का मुनाफा होता है। वाटूमल ने इस धन का उपयोग अपने देशवासियों की उन्नति में करने की सोची। वह अमेरिका की तरह भारत को भी औद्योगिक दृष्टि से उन्नत देखना चाहते हैं। उनके विचार में भारत के समृद्ध होने का यही एक तरीका है। भारत के पास कच्चा माल और खनिज स्रोत प्रचुर मात्रा में है, पर उसके पास प्रशिक्षित टैक्निशियन नहीं है। विशाल खनिज स्रोतों को उपयोग में लाने के लिए उसके विशेषज्ञों की भी कमी है।

अपने मित्रों और अपनी पत्नी की सहायता से उन्होंने भारतीय छात्रों को अमेरिका की नवीनतम वैज्ञानिक प्रगति की जानकारी प्राप्त करने में मदद देने की एक योजना बनाई। उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त भारतीयों को छात्रवृत्तियां देने के लिए १९,००० डालर का एक कोष स्थापित किया। प्रथम वर्ष १००० उम्मीदवारों में से १४ भारतीय छात्रों को यह छात्रवृत्तियां मिलीं। वाटूमल ने इस सहायता कार्य का उचित रूप से संचालन करने के "वाटूमल फाउन्डेशन" नाम से एक निधि स्थापित कर दी है। इस संस्था का प्रधान कार्यालय लोस ऐंजिलेस में है। श्रीमती वाटूमल इस संस्था की प्रधान हैं और उन्हें सलाह देने के लिए भारतीयों और अमेरिकियों की एक समिति नियुक्त की गई है। छात्रों का चुनाव करने वाले निर्णायक अमरिका के प्रमुख वैज्ञानिक और शिक्षा-विशारद हैं। ये छात्रवृत्तियां पिछले ६ वर्षों से दी जा रही हैं और हाल में १८ भारतीय विश्वविद्यालयों के स्नातक छात्रों को यह सहायता दी गई है।

भारत के स्वतन्त्र हो जाने के बाद वाटूमल ने भारत और अमेरिका के मैत्री-सम्बन्धों को दृढ़तर करने के लिए एक संस्कृति विनिमय कार्यक्रम बनाया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत के प्रसिद्ध दार्शनिक सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन को अमेरिका का दौरा करने और भारत और उसकी संस्कृति के विषय में भाषण देने के लिए आमन्त्रित किया गया। बदले में विस्कान्सिन यूनिवर्सिटी के मर्ल कुर्टी को भारत भेजा गया। न्यूयार्क के डा० जौन हेनेस होम्स ने भी भारत में आकर यहां के कालेजों में व्याख्यान दिये।

अमेरिकी कांग्रेस द्वारा नागरिकता सम्बन्धी नीति को उदार कर देने के बाद, जो वन्दूमल पहले भारतीय थे, जिन्हें अमेरिका में २८ वर्ष तक रहने के बाद अमेरिकी नागरिकता का अधिकार प्रदान किया गया।

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

भारतीय क्रान्तिकारियों के गुरु— स्वातन्त्र्यवीर श्री सावरकर

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार १४ ज्येष्ठ सम्वत् २००८ [अङ्क ५

औद्योगिक विकास की दिशा में ठीक कदम

आज जबकि देश के प्रायः सभी राजनीतिज्ञ चुनाव, अन्नसंकट और नागरिक अधिकारों की ही चर्चा कर रहे हैं, भारत सरकार का योजना-आयोग एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर ध्यान दे रहा है। किसी भी राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए उद्योग व्यवसायों का विकास परम आवश्यक है। और आज के युग में, जबकि समस्त विश्व अत्यन्त संकुचित हो गया है, औद्योगिक विकास और भी अधिक आवश्यक हो गया है। गत महायुद्ध द्वारा परिवर्तित परिस्थिति ने इसकी आवश्यकता और भी बढ़ा दी है। हमारे देश की विशेष परिस्थितियों में, जबकि उदर-पूर्ति के लिए १। अरब रु० का अन्न ही हमें मंगाना पड़ता है, निर्यात व्यापार का बढ़ाना अनिवार्य हो गया है और यह औद्योगिक विकास के बिना सम्भव नहीं है।

किन्तु औद्योगिक विकास में आज बड़ी बाधाएं हैं, बाह्य भी और आन्तरिक भी विभाजन के बाद भारत में कच्चा माल कम मिलने लगा है और विदेश हमें बहुत मंहगा माल बेचते हैं। मुद्रा-अवमूल्यन के कारण पाकिस्तानी रुई भी हमें महंगी पड़ती है। अन्तर्राष्ट्रीय संकट के कारण सभी देश कच्चा माल संग्रह करने लगे हैं। दूसरी बाह्य बाधा यह है कि भारत के प्रतिस्पर्धी औद्योगिक राष्ट्र नई-नई मशीनों की सहायता से उत्पादन व्यय कम कर रहे हैं, जबकि भारत में इस दिशा में मजदूर नेताओं के विरोध के कारण प्रगतिशून्य ही हुई है। नई मशीनें मजदूरों की संख्या को कम कर देती हैं, मजदूरी का खर्च कम होकर कम मूल्य पर पदार्थ बेचे जा सकते हैं। देश के औद्योगिक विकास में आन्तरिक बाधाएं भी हैं। वर्ग हित पर राष्ट्रहित की बलि देकर कुछ मजदूर नेता औद्योगिक संघर्ष को प्रोत्साहन देते रहते हैं। १९४८, १९४९ और १९५० में क्रमशः १२५९, ९२० और ८१४ औद्योगिक संघर्ष हुए और इनमें क्रमशः करीब ७८ लाख, ६६ लाख और १२८ लाख मनुष्य-दिनों की हानि हुई। ये औद्योगिक संघर्ष होते तभी हैं, जबकि श्रमिक और पूंजी पति राष्ट्रहित को भूलकर स्वार्थ की चिन्ता करने लगते हैं। देश के स्वतन्त्र होते ही इन औद्योगिक झगड़ों व हड़तालों की बाढ़ आ गई। इसलिए सरकार ने मजदूर नेताओं को त्रिवर्षीय सन्धि का परामर्श दिया इस सन्धि का अपने समय में ही उचित पालन नहीं हुआ। और अब तो तीन वर्षों की अवधि भी समाप्त हो चुकी है।

औद्योगिक विकास की सम्भावनाओं तथा बाधाओं के निवारण पर विचार करने के लिए योजना-आयोग ने देश के पूंजी व श्रम दोनों के प्रतिनिधियों को बुलाया। इस त्रिपक्षीय सम्मेलन ने दो दिनों तक गम्भीर विचार विनिमय के बाद जो निर्णय किये हैं, वे बहुत आशाजनक हैं। नई मशीनें लगाकर उत्पादन व्यय को कम करने का सिद्धान्त मजदूर नेताओं ने भी स्वीकार कर लिया है और इस व्यवहार में लाने के लिए दोनों के एक सम्मिलित बोर्ड बनाने की राय दी। ग्रामोद्योग छोड़कर जब औद्योगिक विकास की दिशा मे देश ने पैर रखा, तो नई मशीनों द्वारा उत्पादन व्यय में कमी अनिवार्य कदम है। इसके बिना हम विदेशों की कभी प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते। इसी सम्मेलन ने यह भी स्वीकार किया है कि औद्योगिक संघर्ष केवल श्रम व पूंजी का आपसी मामला नहीं है, सरकार को भी इस दिशा में आवश्यक कदम उठाने का अधिकार है। औद्योगिक संघर्ष कम करने के लिए मजदूरों के संगठन का अधिकार मानते हुए भी सम्मेलन ने समझौते व पंचनिर्णय की मशीनरी को अधिक प्रभावकारी बनाने की सम्मति दी है। यदि इन निर्णयों को कोई व्यावहारिक रूप दिया जा सका, तो निश्चय ही देश के औद्योगिक विकास में सहायता मिलेगी। इस सम्मेलन ने परस्पर प्रतिस्पर्धा द्वारा विकास के लिए निजी उद्योग के सिद्धान्त को भी स्वीकार किया है।

इस सम्मेलन में अ० भा० राष्ट्रीय मजदूर संघ और समाजवादियों के हिन्द मजदूर सभा के भी प्रतिनिधि थे। इसलिए सम्भव है कि वे इन निश्चयों की ओर ध्यान दें, किन्तु इनकी सफलता के लिए राष्ट्रहित की भावना का सर्वोपरि होना आवश्यक है।

★★

कानूनमन्त्री का मर्यादा भंग

डाक्टर अम्बेदकर भारत सरकार के कानून मंत्री के उत्तरदायी पद पर हैं। उन्हें भी प्रत्येक नागरिक की भांति किसी भी प्रश्न पर अपने विचार प्रकट करने का अधिकार है, किन्तु पद के गौरव के साथ कुछ मर्यादायें भी आ जाती हैं, उनका विचार डाक्टर अम्बेदकर भूल जाते हैं। अभी उस दिन महात्मा बुद्ध की जयन्ती पर भाषण देते हुए उन्होंने हिन्दू धर्म की कठोर आलोचना की। वह आलोचना युक्तिसंगत थी, या निराधार, इस प्रश्न में हम यहां नहीं जाना चाहते, किन्तु एक बात अवश्य कहना चाहते हैं कि डा० अम्बेदकर आज जिस स्थान पर हैं, वहां रहते हुए भारत के किसी भी छोटे या बड़े धर्म-सम्प्रदाय की आलोचना करते हुए उन्हें अधिक सतर्कता और सावधानता से काम लेना चाहिये और अच्छा यह हो कि वे मन्त्री के पद पर रहते हुए मौन रहें। म० बुद्ध या बौद्धधर्म की प्रशंसा में वे जो कुछ कहें, कह सकते हैं, किन्तु हिन्दू धर्म की आलोचना करके वे देश की राजनीति को साम्प्रदायिकता के साथ जोड़ देते हैं, क्योंकि आज का उनका भाषण भावी चुनावों की पृष्ठभूमि कहा जा सकता है। यदि इस तरह मंत्री लोग ही देश के धर्मों का विरोध करने लगें, तो देश में ऐसे वातावरण के फैलने की सम्भावना है, जो किसी भी तरह वांछनीय नहीं होगा।

पंजाब की भाषा

पिछले दो-एक साल से पंजाब के साम्प्रदायिक सिख नेताओं ने पंजाबी प्रान्त बनाने की मांग बहुत जोरों से शुरु कर दी है। उनके अनुसार पंजाब की सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा पंजाबी है। पंजाब की भाषा पंजाबी है, ऐसा कोई भी मान लेगा परन्तु वस्तुस्थिति के यह बिलकुल विपरीत है। ऐसे सिख नेताओं का दावा किसी तर्क या युक्ति से सिद्ध नहीं होता। पंजाब की मैट्रिक परीक्षा में विद्यार्थी बैठे, उनमें हिन्दी, पंजाबी और उर्दू के परीक्षार्थियों की संख्या क्रमशः २०४१९, ८२८६ और ८९९१ थी। इसका अर्थ यह है कि उर्दू और पंजाबी के सम्मिलित विद्यार्थियों की अपेक्षा भी हिंदी के विद्यार्थी ३६०० अधिक थे। क्या अब भी सिख सांप्रदायिक नेता पंजाब की भाषा पंजाबी का नारा लगा सकते हैं?

आखिर कब तक ?

भोपाल की युवराज्ञी भारत से भाग कर पाकिस्तान चली गई। यह एक समाचार है, जो हमारी शासन-व्यवस्था तथा भारतीय मुसलमानों की आज की मनोवृत्ति दोनों पर बहुत अच्छा प्रकाश डालता है। एक समाचार के अनुसार भोपाल की युवराज्ञी ने वहां एक भाषण में कहा है कि मुझे पाकिस्तान की नागरिकता का जो सम्मान प्राप्त हुआ है, वह उस अपार सम्पत्ति से भी अधिक मूल्यवान् है, जो मैं वहां छोड़ आई हूं। पिछले दिनों भारतीय संसद के एक मुस्लिम सदस्य हसन इमाम भी पाकिस्तान की प्रशंसा करते हुए जरा भी संकुचित नहीं हुए। उत्तरप्रदेश के अनेक मुस्लिम अफसरों के भी इसी तरह भागने के समाचार जब तब मिलते रहते हैं। यह उस मनोवृत्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है, जो किसी भी समय भारत के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकती है और जिसकी ओर से हमारी सरकार की उदासीनता अर्थतत्व है दूसरी ओर वह हमारे शासन की दुर्बलता पर भी प्रकाश डालती है। कभी लायक अली और उसके साथी भाग जाते हैं, तो कभी बम्बई के सम्पन्न व्यापारी भारत को नुकसान पहुंचा कर भाग जाते हैं। हम पूछते हैं कि आखिर यह कब तक होता रहेगा? क्यों नहीं सरकार का खुफिया विभाग ऐसे देशद्रोही मुसलमानों की गतिविधि पर कड़ी दृष्टि रखता ?

हिन्दी का महान् सेवक

हिन्दी साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठ आलोचक श्री शुकदेव बिहारी मिश्र का लखनऊ में आकस्मिक देहावसान हो गया और इस प्रकार हमारे समक्ष स्वनामधन्य मिश्र बन्धुओं की स्मृति मात्र ही रह गई, जो उनकी साहित्यिक सेवाओं के रूप में सदैव अक्षुण्ण और चिरस्थायी रहेगी। रीतिकालीन ग्रन्थकारों तथा कवियों के प्रति वर्तमान आलोचकों का विरोधी तथा उपेक्षापूर्ण रुख होते हुए भी मिश्र बन्धुओं ने रीतिकालीन साहित्यिकों का उचित मूल्यांकन किया तथा उनकी रस और अलंकारों पर आश्रित शास्त्रीय परम्परा के आलोक में आधुनिक साहित्य को भी देखने का प्रयास किया है। मिश्र बन्धु विनोद हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक दिशा में मार्ग प्रदर्शक ग्रन्थ है। यद्यपि मिश्र बन्धुओं ने सामूहिक रूप से ही हिन्दी साहित्य की सेवा की है तथापि पृथक रूप से भी श्री शुकदेव-बिहारी मिश्र का महत्व किसी प्रकार कम नहीं है।

वीर सावरकर का संदेश

वीर सावरकर के आज के राजनीतिक विचारों से किसी भी भारतीय को कोई मतभेद हो, इस बात में किसी को सन्देह नहीं हो सकता कि उनका जीवन राष्ट्र भक्ति, अपूर्व त्याग और बलिदान का अमर संदेश देता है। आज से बहुत समय पूर्व, जब राष्ट्रीयता और देश प्रेम की भावना का जन्म भी नहीं हुआ, था, वीर सावरकर अपना समस्त जीवन राष्ट्र की वेदी पर बलि देने के लिए कटिबद्ध हो गये। यही उनका अमर संदेश है, जो आज उनकी ६८ वीं जयन्ती के दिवस पर हम उनसे ले सकते हैं।

दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्रों में अन्न-संग्रह

पांच सौ मन अन्न एकत्रित : वस्त्राभाव से तीव्र असन्तोष

श्री 'किरण'

दिल्ली के आस - पास, प्राय सर्वत्र तहसीलदारों तथा नम्बरदारों की तथाकथित प्रभुता के अनिश्चित भय से ग्रसित ग्रामीण जनता को प्रतिक्षण भयमुक्त करने के अत्यन्त दुरूह कार्य को यशस्वितापूर्वक निभाते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की दिल्ली शाखा के स्वयंसेवकों ने बिहार तथा मद्रास के पीड़ित बान्धवों की सहायतार्थ एकत्रित किये जाने वाले अन्न कोष में प्राय. ५०० मन अन्न एक ही दिन में प्राय: ३०० ग्रामों में एक साथ घूम कर एकत्रित कर दिखाया है।

ग्रामीण जनता अत्यन्त स्पष्ट भाषा में बताती थी कि यद्यपि हमें विश्वास नहीं है कि तहसीलदारों को दिया हुआ अन्न पूरी मात्रा में बिहार तथा मद्रास पहुंचेगा भी कि नहीं तथापि नम्बरदारों की सहायता से तहसीलदार जब हमसे डण्डे के बल पर अनाज वसूल करने ही वाला है तब हम अभी से अनाज देकर दुबारा अनाज देने की व्यर्थ हानि क्यों उठायें? ऐसा वह इसलिए कहते थे कि सरकार के सहायता अन्न-कोष के लिए तहसीलदार तथा नम्बरदार ही अन्न एकत्र कर रहे हैं।

स्वयंसेवकों के थैले भर दिये

इतना होने पर भी भारत के धर्म-प्राण ग्रामीणों ने द्वार पर हाथ फैला कर आए हुए अतिथियों को निराश नहीं लौटने दिया। भारतीयता में डूबे ग्रामीण हृदयों ने देश बान्धवों की सहायतार्थ श्रद्धा के अन्न से स्वयंसेवकों के अनेक थैले भर दिये। ग्रामीण कहते थे कि हम तो संघ को जानते हैं। संघ के स्वयंसेवक आये हैं, इसलिए हमें कुछ न कुछ अवश्य देना चाहिये। चमचमाती धूप में श्रम से थक गये स्वयंसेवकों को कितना आत्म-सन्तोष प्राप्त होता होगा इससे।

स्वयंसेवक चले

यह अन्न - संग्रह विगत रविवार (२०-५-२१) को किया गया है। पांच-पांच या छ: छ: स्वयंसेवकों की टोलियां बनाई गई थीं, जो दिल्ली से चतुर्दिक जाने वाली कच्ची-पक्की सड़कों पर प्याज-रोटी अथवा साग साथ लिए देशभक्ति पूर्ण गीत गातीं, पौ फटने के पूर्व ही चल पड़ी थीं। प्रात:कालीन शीतल मन्द समीर, सेवा के आवेश से पुलकित इन हृदयों को थपकी दे देकर आह्लादित कर रहा था। ज्योंही नवोदित बाल-मंदार की रश्मियों ने छू कर ग्रामों को जगाया कि स्वयंसेवकों की टोलियां ग्रामों में पहुंच गई, जो दिन मुंदे तक द्वार-द्वार जाकर अन्न एकत्रित करती रहीं। कुछ टोलियां शनिवार की रात को ही ग्रामों में आ पहुँची थीं।

अधिकांश ग्रामों में ग्रामीणों ने बड़ी आत्मीयता से स्वयंसेवकों का स्वागत किया। विगत दिनों संघ के साथ आए हुए सम्पर्क की उनकी स्मृतियां सजग हो उठीं। वे आत्मीय-अतिथियों की भांति उनकी आवभगत करने के लिए तत्पर दिखाई दिये। किन्तु कुछ ग्रामों में इन टोलियों को देख कर ग्रामीणों ने कौतूहल भी प्रकट किया। वे विस्फारित नेत्रों से स्वयंसेवकों की एक-एक गतिविधि को देखते रह जाते थे।

कुछ अनुभव

यों तो एक दिन पूर्व एक 'जीप' में ध्वनिवर्धक यन्त्र लगा कर इन सब ग्रामों में प्रचार किया जा चुका था कि शीघ्र ही रा० स्व० संघ के स्वयंसेवकों की टोलियां बिहार और मद्रास के पीड़ित बान्धवों की सहायतार्थ अन्न एकत्रित करने के लिए आने वाली हैं, किन्तु जब प्रत्यक्ष ग्रामीणों से अन्न मांगा गया, तब जो भिन्न भिन्न अनुभव आए वे निम्न प्रकार हैं—

हमारे लिए क्या ?

प्राय. सर्वत्र, सर्व प्रथम जो उत्तर मिलता था वह यह कि बिहार और मद्रास में जो लोग मरे जा रहे हैं, सो तो ठीक है, किन्तु यहां हम मर रहे हैं, उसके लिए क्या किया जा रहा है?

स्वयंसेवक मौन रह कर उनको सुन लेते थे। किन्तु शीघ्र ही ग्रामीणों में चतुर कोई पुनः बोलने लगता कि स्व-राज्य में तो बड़ा अंधेर मचा हुआ है। कूपन और परमिटों के चक्कर ने तो हमें अधमरा कर दिया है। अरे, जिस राज में तन ढंकने को कपड़ा नहीं मिलता, उसे क्या स्वराज कह सकते हैं? पर कांग्रेस इसी को स्वराज मानने पर मजबूर करती है। हमें कांग्रेस की तो कोई बात ही समझ में नहीं आती। न कहीं धरम और न कहीं सरकार! अरे, सरकार हमें धोती तक नहीं देती, देखा!—और वे अपनी फटी धोतियों को दिखाने लगते।

जले पर नमक

सोदाहरण सत्य बड़ा मार्मिक होता है। ग्रामीणों की इस असन्तुष्ट और आर्त दशा पर स्वयंसेवकों के हृदय फटे पड़ते थे किन्तु अपने आप में धीरज और हिम्मत बटोर कर वे उन्हें सान्त्वना देते हुए कहते कि आप लिखा-पढ़ी कीजिये, सम्बन्धित अधिकारी आपकी कठिनाइयों को अवश्य दूर करेंगे। किन्तु सान्त्वना

[शेष पृष्ठ २२ पर]

'भारत सरकार की विदेशी नीति'

विदेशी नीति के आधार साम्राज्य-वाद का विरोध, सत्य और शान्ति के लिये प्रयत्न है। इसलिये हमारी विदेशी नीति संसार के सब देशों की विदेशी-नीतियों से भिन्न है। सब देश स्वार्थ को अपनी नीति का आधार मानते हैं, और भिन्न भिन्न गुटों में शामिल हो जाते हैं। परन्तु भारत सरकार अपनी स्वतन्त्र सर्वदा नई नीति रखती है, इसलिए वह किसी गुट में शामिल नहीं हुई।

पिछले महायुद्ध के बाद रूस और अमेरिका की महान शक्तियां परस्पर संघर्ष में आई। दोनों अपने प्रभाव और अधि-कार को बढ़ाने के लिए गुट बन्दी के चक्कर में पड़ गईं। और आज इस का परिणाम यह हुआ है कि समस्त विश्व दो परस्पर विरोधी गुटों में बंट गया है। किन्तु भारत सरकार दोनों तरफ से आकर्षण और प्रलोभन होते हुए भी किसी गुट में शामिल नहीं होती। एक तरफ वह राष्ट्र मण्डल में शामिल है, दूसरी ओर वह कम्यूनिस्ट उत्तरी कोरिया को आक्रमण कारी घोषित करती है और चीन से आक्रमण न करने का आश्वासन चाहती है। किन्तु इसी के साथ वह कम्यूनिस्ट चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ में लेने और उसे आक्रमणकारी घोषित न करने का समर्थन करती है। एक ओर भारत सरकार अमेरिका से अन्न की सहायता चाहती है, दूसरी ओर वह रूस और चीन से भी अनाज ले रही है। अमेरिका और दोनों ही इस बात के लिए निश्चिन्त नहीं है कि भारत सदा उनका साथ देगा। अतः दोनों ही भारत को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। एक तरफ अमेरिका काश्मीर के मामले में पाकि-स्तान का समर्थन करता है, तो दूसरी ओर रूस के इशारे पर नाचने वाले कम्युनिस्ट भारत सरकार को लगातार परेशान कर रहे हैं। आश्चर्य की बात यह है कि चीन की जिस कम्यू-निस्ट सरकार के लिए भारत अमेरिकन विरोध भी सहन करता है, वह भी तिब्बत के मामले में भारत की आवाज नहीं सुनती।

भारत सदा से साम्राज्य विरोधी रहा है। इसलिए एशिया में वह किसी भी योरोपियन शक्ति का अधिकार नहीं चाहता। इन्डोनेशिया पर हालैण्ड ने अपना अधिकार करना चाहा तो भारत-वर्ष उसके विरुद्ध हो गया। उसकी स्वत-न्त्रता का श्रेय उसे भी है। जब हिन्द चीन में फ्रांसीसी सेना अधिक प्रवेश करने लगी, तब भारत ने उसका विरोध किया। चीन में भी कौन सी सरकार हो, यह निर्णय करने का अधिकार भारत चीनियों को ही देता है, अमेरिका या राष्ट्र संघ को नहीं। मलाया, स्याम (थाई) में भी वह अंग्रेजों का प्रभुत्व नहीं चाहता। अफ्रीका के उपनिवेशों से भी युरोपियन शक्तियों को वह बाहर निका-लना चाहता है। दक्षिण अफ्रीका से तो भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार के कारण उसका संघर्ष जारी ही है। इसलिए योरुप की साम्राज्यवादी शक्तियां भारत को प्रेम के साथ नहीं देखतीं और न देख सकती हैं।

पाकिस्तान का निर्माण विद्वेष, अन्याय और बर्बरता की नींव पर हुआ है। इस लिए वह भारत का विरोधी है। काश्मीर का संघर्ष, मुद्रा प्रसार तथा शरणार्थियों की अनेक समस्याओं ने दोनों के सम्बन्धों को और भी बिगाड़ दिया है। पाकिस्तान मुस्लिम देशों को इस्लाम के नाम पर भारत के विरुद्ध करना चाहता है। अमेरिका और इंगलैंड को भी वह इसलिए खुश करता है ताकि वे काश्मीर आदि के मामले में भारत के विरुद्ध उसका साथ दे सकें। पाकिस्तान से भी वह संघर्ष को बचाने की इतनी चेष्टा करता है कि देश की जनता उसे भीरु और आत्मघातिनी कहने लगी है। इसमें सन्देह नहीं कि पाकिस्तान के साथ उसकी असीम उदार नीति से भारत को बहुत नुकसान पहुँचा है। किन्तु पं० नेहरू सब हानि सहन कर विश्वशान्ति बनाये रखने को उत्सुक हैं। हां, काश्मीर के प्रश्न पर वे अड़े हुए हैं और राष्ट्र संघ का मुकाबला भी करने को तैयार दीखते हैं।

इस तरह हमने संक्षेप से देखा कि आज भारत वर्ष किसी देश को भी अपना घनिष्ठ मित्र कहने की स्थिति में नहीं है। और न कोई देश भारत पर पूरी तरह भरोसा कर सकता है। किन्तु इसके साथ यह भी सत्य है कि पाकिस्तान के सिवाय कोई देश भारत को अपना दुश्मन भी नहीं मानता। कुछ समय के बाद यह बहुत सम्भव है कि भारत की निष्पक्षता और न्याय, प्रेम बहुत से देशों का दिल जीत ले और तब अन्त-र्राष्ट्रीय राजनीति में उसका प्रभाव बहुत बढ़ जायेगा'

सार्वजनिक जीवन का सिंहावलोकन

कांग्रेस में प्रवेश

★ श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

[१]

यूरप का पहला महान् युद्ध १९१८ में समाप्त हुआ। युद्ध में भारतवर्ष की ओर से मित्रदल की भरपूर सहायता की गयी थी। भारतवासियों को विश्वास था कि उस सहायता के बदले में उन्हें इंगलैण्ड की ओर से इनाम के रूप में स्वाधीनता मिलेगी, परन्तु परिणाम उलटा ही निकला। अंग्रेजी सरकार ने पारितोषिक के तौर पर स्वाधीनता की जगह रौलट ऐक्ट देने की इच्छा प्रकट की। रौलट ऐक्ट सरकार को यह अधिकार देता था कि वह बिना अभियोग चलाये उन लोगों को जेल में बन्द कर सकती थी, जिन पर राज्य को विद्रोही होने का सन्देह हो। भारतवासियों को अमृत वर्षा की आशा थी, जब उन पर पत्थर बरसने लगे तो वह घबरा गये। अपनी घबराहट को प्रकट करने के लिए देशवासियों ने देहली में इण्डियन नेशनल कांग्रेस का अधिवेशन करने का निश्चय किया। मैं उन दिनों देहली के समीप, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का प्रधान अध्यापक था। बचपन से ही मेरी प्रवृत्ति राजनीति की ओर थी। विद्यार्थी अवस्था में ही मैं यह स्वप्न देखा करता था कि राजनीति में प्रवेश करके एक क्रान्तिकारी का जीवन व्यतीत करूंगा। जब कांग्रेस के अधिवेशन के लिए स्वागतकारिणी सभा का निर्माण होने लगा, तब मैं अपने उत्साह को न रोक सका, और देहली में आ कर स्वागत कारिणी का सदस्य बन गया।

स्वागत कारिणी का जो अधिवेशन स्वागताध्यक्ष के चुनाव के लिए हुआ, उसमें मैं भी सम्मिलित हुआ। अधिवेशन रायबहादुर सुलतानसिंह की कोठी में किया गया था। उस समय कांग्रेस की यह दशा थी कि उसके निमित्त से की हुई सभाओं के लिए कोई अच्छा स्थान भी नहीं मिलता था। मेरे जीवन में यह पहला अवसर था कि मैं कांग्रेस की किसी सभा में सदस्य बन कर सम्मिलित हुआ। इससे पूर्व मैं आर्यसमाज हिन्दी साहित्य सम्मेलन आदि संस्थाओं की सभाओं में भाग लेता रहा। मुझे आशा थी कि प्रायः हमारी सभाओं में जो अव्यवस्था या चोंचली होती है, वह कांग्रेस की सभा में न होगी, परन्तु मुझे बहुत निराशा हुई, क्योंकि इस सभा में मैंने जैसी अराजकता देखी, वैसी अभी तक नहीं देखी थी। अध्यक्ष पद के लिए दो नाम प्रस्तुत किए गए थे। एक हकीम अजमल खां साहब का और दूसरा रायबहादुर सुलतानसिंह जी का। दोनों नामों के समर्थकों में जोश था। उस समय तक मैं देहली के बहुत कम कार्यकर्ताओं को जानता था। उपस्थित लोगों में से ९९ प्रतिशत मूर्तियां सर्वथा अपरिचित थीं। बहुत ५-१ तक मैं यह भी नहीं समझ सका कि आखिर इतने हंगामे का कारण क्या है। एक ही समय में दस दस आदमी खड़े हो कर बोलते थे। निष्पक्ष समझ कर अजमेर के प्रसिद्ध वकील बाबू चण्डिकाप्रसाद जी को सामयिक सभापति बनाया गया था। वह बेचारे बहुत परेशान थे। सब लोग उन्हें तरह-तरह की हिदायत देने की कृपा कर रहे थे। कुछ लोग कुर्सी पर बैठे चिल्ला रहे थे, कुछ खड़े हो कर बोल रहे थे और जिन्हें इतने से भी संतोष नहीं होता था वे सभापति के पास जा कर उनके कान में सलाह देने का यत्न कर रहे थे। जब अव्यवस्था बहुत बढ़ गयी, तब घोषणा की गई कि मि० आसफअली साहब तकरीर फरमायेंगे। इस पर सभा में सन्नाटा हो गया। उर्दू के प्रभावशाली और परिष्कृत वक्ता के तौर पर मि० आसफअली ख्याति पा चुके थे। उनका नाम सुन मुझे भी उत्सुकता का अनुभव हुआ। सभा में मौन हो गया।

थोड़ी देर में एक सुन्दर अदा के साथ मि० आसफअली कुर्सी से उठे। ऊपर से नीचे तक सफेद वेश से परिष्कृत थे। सफेद लखनवी ढंग की दोपल्ली टोपी, खुली आस्तीनों वाला सफेद मलमल का कुर्ता, सफेद पायजामा और पैरों में सफेद देसी जूता। उनके गौरवर्ण पर यह वेश खूब सज रहा था। उन्होंने फसीह उर्दू में मीठे ढंग पर बोलना प्रारम्भ किया तो लोगों पर उसका काफी प्रभाव पड़ा। आपने प्रारम्भ में अव्यवस्था के लिए सदस्यों को हलका सा उलाहना दिया, फिर नामों के बारे में पार्टीबन्दी की निन्दा की और अन्त में यह सुझाव दिया कि रायबहादुर सुलतानसिंह हकीम साहब के पक्ष में अपना नाम वापस ले लें तो बहुत अच्छा। सुझाव इतने कुशल ढंग पर रखा गया था कि सुलतानसिंहजी को वह मानना ही पड़ा। इस प्रकार हकीम अजमल खां सर्वसम्मति से स्वागताध्यक्ष चुन लिये गये।

(२)

कांग्रेस का अधिवेशन पीपल पार्क में हुआ। पीपल पार्क वह स्थान था, जहां अब लाजपतराय मार्केट है। वहां इतना बड़ा पण्डाल बनाया गया था, जिसमें लगभग पांच छः हजार कुर्सियां रखी जा सकें। उन दिनों कांग्रेस का इतना ही बड़ा आकार माना जाता था। उस कांग्रेस के सभापति पं० मदन मोहन मालवीय थे। पुराने युग की यह अन्तिम कांग्रेस थी। इसके पश्चात् कांग्रेस के मंच पर कभी कोट, पैंट और बूट धारण करने वाले सज्जन विराजमान नहीं हुए। दिल्ली की कांग्रेस में तो अंग्रेजी ठाठ का पूरा बोल बाला था। दिल्ली के वकील और डाक्टर बढ़िया से बढ़िया विलायती ड्रेस और चरचराते हुए बूट पहिन कर प्लेटफार्म पर आ रहे थे, और मुझ जैसे धोती कुर्ते पहिनने वाले दर्शक दुबक दुबक कर बैठ रहे थे। उस अधिवेशन में मुख्यरूप से रौलट-ऐक्ट के विरोध में भाषण हुए, और प्रस्ताव स्वीकार किये गये।

यह आश्चर्यजनक बात है कि कांग्रेस के उस अधिवेशन का अन्य कोई भाषण मुझे विशेष रूप से याद नहीं, केवल पंजाब के डा० गोकुलचन्द नारंग के भाषण का एक अंश ही स्मृति पट पर अंकित है। आपने अपने व्याख्यान की समाप्ति पर कहा था कि हम रौलट ऐक्ट के विरोध में जोरदार आन्दोलन करेंगे, और सरकार का द्वार खटखटायेंगे। यदि हमें उतने से सफलता हो गई तो अच्छी बात है, अन्यथा हमारे शस्त्रागार में युद्ध के जो अन्य शस्त्रास्त्र पड़े हैं, उनसे भी काम लिया जायगा। डा० नारंग की इस द्वारा वीरोक्ति का उपस्थित जनता ने तालियों समर्थन किया था।

यह मेरी तीसरी कांग्रेस थी। कलकत्ते के पश्चात् लखनऊ, और लखनऊ के पश्चात् दिल्ली—इन तीन अधिवेशनों में मैंने कांग्रेस के तीन रूप देखे। पहला रूप मुख्य रूप से नर्म कांग्रेस का था, दूसरे में गर्मी और नर्मी का मिश्रण हुआ—और तीसरे में गर्मी का अंश कुछ बढ़ गया, क्योंकि दबे हुए शब्दों में आन्दोलन के अतिरिक्त अन्य उपायों के अवलम्बन की धमकी भी सुनाई देने लगी थी। मैंने राष्ट्रीय प्रगति में ये तीनों मोड़ देखे परन्तु मैं स्पष्ट रूप से कह सकता हूं कि अब तक भी कांग्रेस मेरे दिल तक नहीं पहुंची थी। दिल्ली कांग्रेस से भी मुझे उसमें बहुत-सी अवास्तविकता दिखाई दी। वह पढ़े लिखे लोगों की एक गोष्ठी प्रतीत होती थी, राष्ट्र की प्रतिनिधि सभा नहीं।

(३)

कांग्रेस के अधिवेशन के पश्चात् मुझे कांग्रेस कमेटी का पहला चुनाव देखने का अवसर मिला। इससे पहले मुझे कभी कांग्रेस की अन्तरंग स्थिति देखने का अवसर नहीं मिला था। दिल्ली की कांग्रेस कमेटी का वार्षिक चुनाव होने

[शेष पृष्ठ २० पर]

प्रजातन्त्र और विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता

★ श्री बलराज मधोक

विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता प्रजातन्त्र का मौलिक सिद्धान्त है। इस स्वतन्त्रता के बिना प्रजातन्त्र की कल्पना तक करना कठिन है। कारण प्रजा, जिसके नाम, पर जिसके लिये, और जिसके द्वारा प्रजातन्त्रीय राज्य चलाया जाता है, अपने विचारों को स्वतन्त्रता पूर्व अभिव्यक्त किए बिना अपनी सरकार को न प्रभावित कर सकती है और न बदल सकती है। प्रजातन्त्र स्वयं एक विचार है, जिसको संसार के बहुत से देश आज कार्य रूप में परिणत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। यदि प्रजा से इस पर विचार करने और निर्भीकता से अपना मत व्यक्त करने की स्वतन्त्रता छीन ली जाय तो प्रजातन्त्र का स्वरूप ही बिगड़ जाता है। एक प्रजातन्त्र राज्य जिसमें प्रजा को विचार-प्रकाशन की स्वतन्त्रता नहीं, प्रजातन्त्र का विकृत रूप ही हो सकता है।

विचार प्रकट करने के मुख्य साधन दो हैं—बोलना और लिखना। बोलने के द्वारा अपने विचार जन समूह तक पहुचाने का साधन है भाषण और लेखनी के द्वारा विचार प्रकाशन का मुख्य साधन है पुस्तकें और समाचार पत्र। विचार अभिव्यक्ति के ये दोनों साधन क्रमशः 'प्लेटफार्म' और 'प्रेस' के नाम से विख्यात हैं। इसलिये विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता को प्लेटफार्म व प्रेस की स्वतन्त्रता का नाम भी दिया जाता है।

प्रजातन्त्रीय शासन पद्धति का विकास विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता के विकास के साथ साथ ही हुआ है। कारण साधारण जनता में विचार करने और उन विचारों के अनुसार समाज व देश को चलाने की क्षमता सभा जगह कम ही रहती है। कुछ विचारक लोगों ने ही विचार करके लोकराज्य का विचार साधारण जनता के सामने रखा। सत्तारूढ़ लोगों ने उनके विचारों को अपने लिये बुरा समझा और उन विचारों के प्रसार के रास्ते में रोड़े अटकाने का प्रयत्न किया। इस प्रकार सत्तारूढ़ और लोकसत्तावादी शक्तियों में संघर्ष चलना शुरू हुआ। अन्त में जहां जहां लोकसत्तावादी शक्तियों की विजय हुई वहां जनता को विचार प्रकाशन की पूर्ण स्वतन्त्रता मिली और प्रजातन्त्रीय राज्य स्थापित हुए। ब्रिटेन और अमरीका में यह संघर्ष कई शताब्दियों तक चला। आज वहां विचार अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता है इसीलिये वहां प्रजातन्त्रीय राज्यप्रणाली सफल हो रही है।

प्रजातन्त्र के सिद्धान्त भारत के लिये नये नहीं हैं। अति प्राचीनकाल से यहां सभा समिति तथा गणराज्यों के द्वारा प्रजातन्त्रीय सिद्धान्तों को अपनाया जाता रहा है। इसीलिये यहां विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता और विचारों की समानता पर भी अति प्राचीन काल से बल दिया जाता रहा है। सभा और समितियों में भाग लेने वाले आर्यजन अपने विचारों को निर्भीकता से प्रकट कर सकते थे।

वर्तमान युगमें भारत का स्वतन्त्रता आन्दोलन बहुत कुछ विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता का आन्दोलन था। जनता के मनों में स्वतन्त्रता के भाव जागृत करने और विदेशी सरकार के अत्याचारों का ज्ञान कराने के लिये यह स्वतन्त्रता आवश्यक थी अंग्रेजी सरकार ने समय समय पर कड़े कानून बना कर स्वतन्त्रता से विचार प्रकाशन करने के अधिकार को भारतीयों से छीनने का प्रयत्न किया। भारत के बहुत से प्रमुख नेता स्वतन्त्रता पूर्वं अपने विचार प्रकट करने के अपराध में ही कई कई सालों के लिये जेलों में डाल दिये गये। परन्तु जब विदेशी सरकार ने देखा कि स्वतन्त्रता के विचार जन साधारण तक पहुँच चुके हैं तब उसे भारत से अपना बोरिया-बिस्तरा उठाना ही पड़ा।

स्वतन्त्र भारत को एक जनतन्त्रीय राज्य घोषित किया गया है। इसकी विधान सभा ने एक लिखित विधान तैयार किया है, जिसके अनुसार गत महीनों से भारत का राज्य चल रहा है। इस विधान के द्वारा भारतीय जनता को मौलिक अधिकार दिए गए हैं, उनमें विचार अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता प्रमुख है, यह स्वतन्त्रता पूर्ण नहीं है। इस पर कुछ अंकुश भी लगाए गये हैं।

परन्तु उन अंकुशों का दुरुपयोग न हो, इसलिए भारत के सर्वोच्च न्यायालय ही इस बात का निर्णय कर सकते हैं कि किसी व्यक्ति विशेष ने इस स्वतन्त्रता का दुरुपयोग किया है या नहीं।

भारत के आज के सत्तारूढ़ नेता लम्बे समय तक विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करते रहे हैं। इसलिए उनसे ये अपेक्षा थी कि सत्तारूढ़ होने पर जनता के इस मौलिक अधिकार की यह सतर्कता पूर्वक रक्षा करेंगे। परन्तु मालूम होता है कि सत्तारूढ़ होते ही उन्हें विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता से डर लगने लगा। सम्भवतः उनकी अपने कुकर्मों और कुनीति की आलोचना सुनने और उस पर विचार करने की शक्ति नष्ट हो चुकी है। वे विदेशी शासकों की तरह लोगों के विचार और भावनाओं को दबा अपनी सत्ता को स्थायी बनाना चाहते हैं।

इसी दृष्टि से ही भारतीय विधान की धारा में संशोधन करने के लिए संसद में बिल पास किया गया है। इस संशोधन के पास हो जाने पर सरकार को राज्य की रक्षा, अन्य राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध, सार्वजनिक व्यवस्था तथा शिष्टता और नैतिकता के हित में जनता की विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता पर नये अंकुश लगाने का अधिकार प्राप्त हो जायगा। इससे बढ़ कर अनर्थ यह किया जा रहा है कि न्यायालयों से इन अंकुशों का दुरुपयोग रोकने की शक्ति छीन ली गई है। यदि सरकार किसी राज्य अथवा व्यक्ति की विचार प्रकाशन स्वतन्त्रता पर अंकुश लगायेगी तो वे न्यायालय के पास उसकी जांच करने के लिए नहीं जा सकेंगे।

संशोधन के शब्द इतने व्यापक अर्थों वाले हैं कि कोई भी समाचार पत्र किसी राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय समस्या पर निर्भीकता से अपने विचार प्रकट नहीं कर सकेगा। भारत को फिर से अखण्ड करने के विषय में भी कोई विचार प्रकट करना जुर्म होगा। सत्तारूढ़ दल इस संशोधन द्वारा मिली शक्ति का उपयोग करके किसी भी समय अपने सभी विरोधियों का मुंह बन्द कर सकेगा। इस प्रकार प्रजातन्त्र एक मखौल सा बनकर रह जायगा।

आज भारत के सभी विचारवान लोग संविधान में इस संशोधन के विरुद्ध अपनी २ आवाज उठा रहे हैं। भारत के २० के लगभग प्रमुख वकीलों ने सरकार से अनुरोध किया है कि जनता के मौलिक अधिकारों पर कुठाराघात न किया जाय। सभी प्रमुख समाचारपत्रों ने अग्रलेख लिखकर इस संशोधन की निन्दा की है। अखिल भारतीय समाचार पत्र सम्पादक संघ की स्थायी समिति ने तीन दिन तक पं० नेहरू से बार बार मिलकर उनका ध्यान इस संशोधन के कारण हो सकने वाले अनर्थ की ओर खेंचा है।

परन्तु प्रधान मन्त्री नेहरू और उनके साथी अपने दल के आज के स्वार्थ के लिए प्रजातन्त्र के मूल सिद्धान्त पर कुठाराघात करने पर तुले हुए दीख पड़ते हैं। इसलिये भारत के जनतन्त्रवादी व्यक्तियों, संस्थाओं और शक्तियों को विचार करना होगा कि वे इस सरकार की विदेशी जैसी सरकारी नीति से देश की रक्षा किस प्रकार कर सकते हैं।

संविधान को रद्दी का टुकड़ा मत समझो

★ प्रधानमन्त्री ने देश को चुनौती दी है

★ क्या मैं भारत की अखंडता का प्रचार कर सकूंगा

★ दुरुपयोग के विरुद्ध क्या गारण्टी है ?

डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी

भारतीय संसद् में उपस्थित संविधान में संशोधन सम्बन्धी विधेयक का घोर विरोध करते हुए डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने संसद् में प्रथम बार एक विरोधी दल के नेता का रूप उपस्थित किया। डा० मुकर्जी का सबसे अधिक बल इसी बात पर था कि संविधान को पवित्र धाराओं के साथ बच्चों का सा खिलवाड़ निन्दनीय और त्याज्य है।

प्रधान मंत्री के द्वारा संशोधनों के पक्ष में उपस्थित किए गये तर्कों की गंभीर आलोचना करते हुए डा० मुकर्जी ने न केवल उन्हें निस्सार और अवांछनीय बताया वरन् यह भी घोषित किया कि उनकी स्वीकृति से भयानक परंपरा का सूत्रपात हो जावेगा।

मूलभूत परिवर्तन

संविधान की १६ वीं धारा के लिए प्रस्तावित संशोधन का उल्लेख करते हुए डा० मुकर्जी ने कहा कि ये मूलभूत परिवर्तन हैं और इसमें से कुछ तो संविधान की जड़ों पर आघात करते हैं, न केवल हमारे ही संविधान की वरन् ऐसे किसी भी देश के संविधान की, जहां के लोग विचार और कार्य की स्वतन्त्रता में विश्वास करते हैं।

प्रधान मंत्री ने भारत की जनता को यह चुनौती दी है। डा० मुकर्जी ने पूछा कि क्या प्रधान मंत्री यह अनुभव करते हैं कि अब तक उन्हें इस प्रकार के अधिकार नहीं मिल जाते जिससे किसी भी विषय पर उनका वाक्य ही प्रमाण हो, वे देश का शासन चलाने में आज असमर्थ हैं ?

प्रधान मंत्री की इस बात का उल्लेख करते हुए कि इन संशोधनों से तो केवल संसद् को ही अधिकार प्राप्त होते हैं। डा० मुकर्जी ने पूछा— क्या संसद पर सचमुच विश्वास किया जा रहा है ? क्या संविधान संबन्धी संशोधनों पर विचार के मामले में भी कांग्रेस सदस्यों को ह्वीप आदेश नहीं दिया गया ?

देश के कुछ समाचार पत्रों में हो रहे अनुचित प्रचार तथा सार्वजनिक व्यवस्था और अपराधों के लिए भड़काने आदि के सम्बन्ध में प्रधान मन्त्री के कथन की आलोचना करते हुए डा० मुकर्जी ने कहा कि संविधान में इस प्रकार के तत्वों के विरुद्ध कार्य वाही करने के लिए पर्याप्त व्यवस्था है।

विदेशों से सम्बन्ध

विदेश सम्बन्धों के विषय पर बोलते हुये डा० मुकर्जी ने कहा कि समस्त सभ्य संसार में मुझे एक भी ऐसा उदाहरण नहीं मिलता जहां संविधान की धाराओं के अन्तर्गत कानून बनाकर विदेशों की आलोचना पर प्रतिबन्ध लगाया गया हो। इस संशोधन के पश्चात तो किसी विदेश की तर्कसंगत आलोचना, अथवा विदेशों में हो रहे अपप्रचार का कोई योग्य उत्तर भी कानून द्वारा रोका जा सकेगा। इस प्रकार के प्रचार का उदाहरण देते हुए डा० मुकर्जी ने एक चीनी पुस्तक का उल्लेख किया जिसमें भारत की भीषणतापूर्ण निन्दा की गई है और अन्त में कहा गया है कि इंगलैण्ड अमरीका के पीछे दौड़ने वाला कुत्ता है और पं० जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत इंगलैण्ड का कुत्ता है।

अखण्ड भारत

एक अन्य बात जो डा० मुकर्जी ने कही वह यह थी कि क्या इस संशोधन के पश्चात वे विभाजन के विनाश और भारत की अखण्डता का आन्दोलन कर सकेंगे ? उन्होंने कहा कि लोग पहिले ही कह रहे हैं कि यह संशोधन केवल पाकिस्तान को प्रसन्न करने के लिए किया जा रहा है।

जमींदारी

भूमि सम्बन्धी सुधारों तथा जहां आवश्यकता हो वहां उचित क्षति पूर्ति देकर भूमि पर अधिकार करने का समर्थन करते हुए डा० मुकर्जी ने कहा कि धारा ३१ में संशोधन उस समय तक नहीं किया जाना चाहिये जब तक उच्चतम न्यायालय का निर्णय ज्ञात न हो जाय। उन्होंने कहा कि अभी ऐसी स्थिति आई नहीं प्रतीत होती कि ३१वीं धारा में परिवर्तन किया जाय।

संविधान की पवित्रता

संविधान की पवित्रता पर बल देते हुए डा० मुकर्जी ने पूछा कि इस प्रकार के भारी परिवर्तनों के लिए कौनसी अनिवार्य आवश्यकता उपस्थित हो गई है ? क्या उच्चतम न्यायालय ने विदेशी शक्तियों के सम्बन्ध में कोई निर्णय दिया है ? क्या देश में कोई ऐसी बात हुई है जो यह बताये कि इस प्रकार के निन्दनीय ढंग से संविधान की आकृति बिगाड़ी जाये ? सार्वजनिक व्यवस्था के विषय में क्या हुआ है ? क्या वर्तमान कानून पर्याप्त नहीं है ? क्या देश के पत्रकार पागल हो गए हैं ?

संसद के इतिहास में क्या कभी भी इस भवन में एक विधेयक ऐसा इतनी जल्दबाजी में उपस्थित किया गया है जिसका देश के प्रत्येक जन के अधिकारों और स्वतन्त्रता पर सीधा प्रभाव पड़ता है ? यदि आवश्यक है तो इन पर नई संसद् के द्वारा विचार किया जा सकता है। वह इस भवन की तुलना में अधिक उचित लोक प्रतिनिधि होगी और वह विचार कर सकेगी कि क्या संविधान में ऐसे संशोधन आवश्यक हैं।

जनमत आवश्यक

प्रधान मन्त्री ने यह विश्वास दिलाया है कि ये संशोधन किसी हल्केपन से या जल्दबाजी में उपस्थित नहीं किए गए। किन्तु संविधान में होने वाले ऐसे कोई भी परिवर्तनों पर जिन पर संसद् द्वारा विचार हो, सरकार तथा उसकी पसन्द के कुछ लोगों द्वारा गुप्त रूप से विचार किया जाना उचित नहीं। उन पर तो सारी जनता का मत जानना चाहिए। मैं प्रधान मन्त्री से यह जानना चाहता हूं कि जनता का मत जानने के लिए उन्होंने क्या करना निश्चित किया है ?

डा० मुकर्जी ने यह सुझाव दिया कि जनता का मत जानने के लिए इस विधेयक को प्रचारित किया जाय। उन्होंने बताया कि सदस्यों के द्वारा उपस्थित किये गए संशोधनों में यह प्रस्ताव रखा गया है कि इस प्रकार का जनमत १५ जुलाई के पूर्व जान लिया जाय।

जल्दबाजी क्यों ?

प्रधान मन्त्री ने यह कहा कि सरकार को इस प्रकार का कोई कानून बनाने की जल्दी नहीं है। संशोधन उपस्थित करते हुए प्रधान मन्त्री के विचार में शासन व्यवस्था के स्थान पर भावी संसद् और भावी संतति का हित अधिक है। यदि ऐसी ही उनकी विशाल हृदयता है और ऐसी ही उन्हें भावी पीढ़ी की चिंता है तो वे इस विधेयक को जनमत जानने के लिए प्रचारित करने के सुझाव को क्यों स्वीकार नहीं कर लेते ?

[शेष पृष्ठ २० पर]

परीक्षोपयोगी लेख

'कबीर और जायसी का तुलनात्मक निरूपण'

(लेखिका — कुमारी शील प्रभाकर)

हिंदी साहित्य गगन में कबीर और जायसी दो उज्ज्वल, प्रभासित नक्षत्र हैं, चिर ज्योतिष्मान्! जिनकी प्रतिभा-प्रभा युगयुगान्तर पर्य्यन्त हमारे हृदय-संसार को ज्योतित करती रहेगी। यह शुभ्र तारक एक ही समय में गगन मण्डल में उदीयमान हुए, पर दो भिन्न-भिन्न दिशाओं में। एक ने पूर्व को अपनाया और दूसरे ने पश्चिम को, पर लक्ष्य दोनों का एक ही था, उसी असीम (ईश्वर) में अन्तर्निहित हो जाना। अपनी-अपनी दिशा के अनुसार दोनों प्रेम के शाश्वत-अनन्त मार्ग पर अग्रसर हुए। एक ज्योति रेखा बनाते हुए। जिससे अनुगामियों का पथ-प्रदर्शन हो। पूर्व पंथी कबीर ने ज्ञान-भास्कर की तप्त-रश्मियें जनता पर डालीं। पर जायसी के प्रेम-सुधांशु की रजत-रश्मियां ज्योत्सना बन कर जगती-तल पर बिखर गईं शीतल-सरस और सुकुमार!

इसी शाश्वत-प्रेम का नामान्तर है रहस्यवाद! जब शुद्ध रूप में नहीं बल्कि लौकिक प्रतीकों द्वारा यह मधुर-भावना प्रकट होती है, तो यह रहस्यवाद की श्रेणी में आ जाती है। हमारे दोनों ही महात्मा रहस्यवादी हैं। अन्तर केवल इतना है कि प्रथम केवल महात्मा है, पर द्वितीय महाकवि भी। कभी कभी कबीर के ज्ञान-रवि पर भी प्रेम के बादल छा जाते हैं। कविता की सुकुमार, मोहक, मीठी मीठी रिमझिम होने लगती है। तब वह खण्डन-मण्डन-पोषक महात्मा न हो कर एक सरल सहृदय, भावुक कवि का कलेवर ग्रहण करते हैं। उनके प्रेम-घन की हल्की-हल्की फुहार कितनी शीतल है—

'प्रेम न बाड़ी ऊपजै,
प्रेम न हाट बिकाय।
राजा प्रजा जेहि रुचै,
सीस देइ लै जाय॥'

और भी—

'जा घट प्रेम न संचरै,
सो घट जान मसान।'

हमारे कबीर पूर्व दिशा में अवतरित हुए थे। प्राची की विमल-अरुणिमा उनके कण-कण में व्याप्त है। वह आत्मा को पत्नी और परमात्मा को पति का स्वरूप मानते थे। यह है सच्चा भारतीय आदर्श

'हरि मोर पिउ मैं राम की बहुरिया'

भक्ति और दैन्य भाई बहन हैं। कहीं-कहीं कबीर इस दैन्य भावना के वशीभूत हो कर ईश्वर को पिता मान कर कह उठते हैं—

'अवगुन मेरे बाप जी बकस गरीब निवाज'

और कहीं कहीं ममतामयी माता के रूप में—

'हरि जननी मैं बालक तोरा।'

इस सब विवरण के पश्चात् हम यही निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उनका आराध्य ही उनका सब कुछ था। पर प्रिय-प्रियतमा की भावना उत्कट रूप में व्यक्त हुई है और वस्तुतः यही रहस्यवाद का प्राण है। कबीर निरक्षर थे, इसलिए उनकी भाषा अटपटी और प्रेम अस्पष्ट सा हो गया है। उपदेशक होने के नाते उनका प्रेम कुछ गौण हो गया है। वह परमतत्व से एकीकरण चाहते हैं और माया को बाधक मानते हैं। तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार उन पर हठयोग का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। वह कवि न थे। वह ब्रह्मवादी थे, भक्त थे, इसलिए प्रेमी थे। उनका प्रेम कहीं-कहीं महानता के चरमोत्कर्ष पर आरूढ़ होता है—

ढाई अक्षर प्रेम के पढ़ें सो पंडित होय।

गाओ सखी मंगलाचार,
मेरे घर आये राम भतार।

कामिनी और कांचन इनकी माया के सबल अंग हैं। अतएव इन्होंने दोनों से दूर रहने का आदेश दिया है। गुरु की महत्ता को वह स्वीकार करते हैं और उपास्यदेव के मिलन मार्ग का दिग्दर्शक होने के कारण उसे अधिक महत्ता देते हैं—

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागों पाय,
बलिहारी गुरु आपको, जिन गोविन्द
दियो बताय।

इनका प्रेम-विवरण सीधा इष्टदेव से सम्बन्धित है। अन्य रहस्यवादी कवियों के समान इन्होंने किसी लौकिक प्रतीक का आश्रय नहीं लिया। इनका प्रेम मदिरा का मादक जाम न होकर पीयूष का झरता हुआ निर्झर है। भले ही यह सांसारिक जीवों को सरस न लगे, पर प्रेम की यह संजीवनी लतिका शस्य-श्यामला बन कर साहित्य-वाटिका की अमर शोभा बनी रहेगी। रहस्यवाद की तीसरी अवस्था में वह आराध्य में लीन हो जाते हैं और स्वयं ब्रह्म का अनुभव करते हैं। यह प्रेम की चरम सीमा है।

अब हम अपने हिमांशु की ओर प्रतिवर्तित होते हैं, जिसकी निर्मल, शुभ्र-तम चांदनी छिटकी हुई है, पद्मावत के रूप में। महाकवि जायसी की एक रचना 'अखरावट' भी है। पर 'पद्मावत' में वह अपनी पूर्ण आभा को प्राप्त हुए हैं। पूर्ण चन्द्र, स्वच्छ साहित्याकाश के देदीप्यमान इन्दु! प्रेम के प्रकाश में यह अमल है। भाषा अलंकृत, सुमज्जित, सुगठित और सरस है। आप विद्वान थे, प्रतिभाशाली थे, प्रेममार्गी थे, पर भारतीयत्व से दूर। आपका प्रेम अरस्तावत के आकाश की मनोहारिणी छटा से आच्छादित है। मुग्धकारी अरुण-रंजित पाश्चात्य प्रेम-प्रभा आपके ग्रन्थों में व्याप्त है। सूफी कवियों के समान आप आत्माको पति और परमात्माको पत्नि मानते हैं। उनके शब्दों में आशिक और माशूक का सम्बन्ध कहना चाहिये। आप शुद्ध रहस्यवादी थे। अपने प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए आपने लौकिक प्रबन्ध-कथा रत्नसिंह और पद्मावती का आश्रय लिया। अपने आध्यात्म पक्ष की पुष्टि में आप कहते हैं—

तन चितउर, मन राजा कीन्हा,
हिय सिंहल बुधि पद्मिनी चीन्हा।
गुरु सुआ जिहि पन्थ दिखावा,
बिन गुरु जगत को निरगुन पावा।
नागमती यह दुनिया धन्धा,
बांचा सोई न इहि चित बंधा।
राघव दूत सोई सैतानू,
माया अलाउद्दीं सुलतानू।
प्रेम कथा इहि भांति बिचारहु,
बेहु बूझि जो बूझै पारहु।

हां, यह थी उनकी प्रेम कथा। कुछ कुछ समस्या भी मालूम होती है। जब मन का 'इश्क' उस पर ममत्व से होता है। तो वह उसकी खोज में निकलता है। पथप्रदर्शक गुरु से उस असीम के मोहक स्वरूप की व्याख्या सुन कर वह प्रेम मार्ग की यातनाएं सहन करता हुआ उस परम तत्व को प्राप्त करता है। नागमती सांसारिक रूप में है। और तब सूफी साधना की तीसरी अवस्था आती है। मायारूपी अलाउद्दीन का बाधक बनना और दोनों का फिर विच्छेद। फिर एकीकरण हो जाता है। वास्तव में रत्नसिंह और पद्मिनी की प्रेम-कथा में पारमार्थिक तत्व का अध्यारोप है। सारी कथा जीवात्मा की परमात्मा को पाने के लिए व्याकुल चेष्टा और दोनों के सम्मिलन की कहानी है। जायसी की उपासना माधुर्य भाव से, प्रेमी और प्रिय के भाव से है। उनका प्रियतम संसार के परदे के पीछे छिपा हुआ है। जहां जिस रूप में उसका कोई आभास दीखता है, वहां उसी रूप में उसे देख कर वे गद्‌गद् होते हैं। वे उसे पूर्णतया ज्ञेय या प्रेम नहीं मानते। उन्हें यही दिखाई पड़ता है कि प्रत्येक मत अपनी पहुंच के अनुसार अपने मार्ग के अनुसार उसका कुछ अंशतः वर्णन करता है।

उन्होंने कबीर की भांति दूसरों का खंडन नहीं किया, पर प्रत्येक के प्रति किसी न किसी अंश में अपनी ग्राहिका रुचि ही प्रदर्शित की है। साधना-कर्म के लिए जायसी हठयोग से प्रभावित हुए हैं। उनका 'पद्मावत' मसनवियों के ढंग का होने पर भी महाकाव्य है। और लौकिक प्रेम-कहानी के बहाने, उसमें कवि के ईश्वर सम्बन्धी उत्तप्त प्रेम तथा विरह की मनोमुग्धकारी व्यंजना है।

'उन बानन्ह अस को जो न मारा,
बेधि रहा सगरौ संसारा।'

आशिक प्रिय-मिलन के लिए विकल हो उठता है। उस विकलता के आवेश में अमित अन्धकार में उसे दिग्भ्रम हो गया है। और वह अपने हृदय में प्रकाशित उस अमर-ज्योति को भूल कर भटकता और विलाप करता फिरता है।

पिउ हिरदय महं भेंट न होई।
कोरे मिला न कहौं केहि कोई॥

जायसी बड़े ही भावुक कवि थे। उनके रोम रोम में जैसे भावुकता भरी हुई थी। जायसी की भावुकता प्रेम अथवा श्रृंगार रस की है। संयोग का वर्णन कम है। सूफी रहस्यवादी मार्ग में 'प्रेम की पीर' विरह का ही विशेष महत्व है।

इस विस्तृत विवरण के अनन्तर यह अतिशयोक्ति न होगी कि प्रेम-गाथाकारों में जायसी सर्वश्रेष्ठ हैं। उनका काव्य उस प्रेम-पीयूष-मिश्रित मदिरा का छलछलाता जाम है जो हमें प्रेमोन्मत्त कर देता है। आप में हम सूफी और रहस्यवादी महात्मा की विशेषता को पूर्णरूप से पाते हैं।

पर कबीर! हमारा विषय था दोनों की प्रेम पद्धति का तुलनात्मक विवेचन! हमने दोनों के प्यार का वास्तविक चित्रण किया पर इसी तूलिका द्वारा हमें उसमें तुलना का रंग भरना होगा। नहीं तो हमारा चित्र अधूरा रह जाएगा। हां तो कबीर और जायसी के प्रेम में पूर्व-पश्चिम का अन्तर है। भारत और अरब कहिये। लक्ष्य एक था पर मार्ग विभिन्न, एक का उद्देश्य था उपदेश दूसरे का प्रेम। अतएव उद्देश्य की उच्चता से जायसी बाजी ले गये हैं।

निरक्षरता और विद्वत्ता का महान् अन्तर दोनों महात्माओं को और भी दूर ले जाता है। कबीर का प्रेम यदि झाड़-झखाड़ों से युक्त वनस्थली है, तो जायसी का सुन्दर मंजु, स्फुटित, सुमनों से सुसज्जित रमणीय वाटिका जिसके निपुण माली ने सुचारु रूप से उसे सजाया। लक्ष्य दोनों का एक था ऋतुराज का स्वागत। अस्तु भावना-जगत में कबीर और जायसी अमरत्व शोभायमान होते हैं। साहित्य जगत के दो पहलुओं में। प्रेम रस-संचारिणी काव्य-सरिता दोनों तटों को उर्वर बनाती है। दोनों ही अपने-अपने क्षेत्रों के राजा हैं। अपने-अपने स्थान पर महान् हैं। हमारे पूज्य-भावों के अधिष्ठाता, पथप्रदर्शक, महात्मा, महाकवि अमर हैं।

सिंह नाद !

श्री—
भोजराज चतुर्वेदी

★

प्रहरी शीघ्र खोल दे बन्धन !
सहन-शक्ति की मर्यादा को लांघ चुके अब तेरे नियमन !
प्रहरी शीघ्र खोल दे बन्धन !

[१]

काट कर सकें कवलित जिसको,
तेरा स्वेन नहीं है ऐसा,
वैनतेय ! उरगों के आगे
तुझको झुकना लगता कैसा ?
यों कब तक वनराज सहे,
गोमायु जाति के शौर्य प्रदर्शन।

[२]

कब तक दारुण अपमानों में
वह असमर्थ दहाड़ मचावे,
कापुरुषों की भांति अश्रु
धारा में संचित मर्म बहावे।
चरण-घात होवे किरीट पर,
विद्रोही होता प्रतिपल मन !

[३]

तीन वर्ष अपमान - गरल का
तूने घातक - घोल पिलाया,
पुरुषों को कापुरुषों के
आघातों में मतश्रीत कराया।
शोणित मरघट बने जाते हैं,
करने दे जौहर का साधन !

[४]

फूलों में, अथवा शूलों में
यौवन, सौरभ गुप्त न होता,
मलयानिल की मुसकानों में
ज्वालामुखी प्रसुप्त न होता।
हृदय चीर कर वसुंधरा का
होगा महाकम्प विस्फोटन !

[५]

अपमानित सतीत्व भूखे शिशु
मांग चुके शोणित की भिक्षा,
भृकुटि धूमिल होते ही यौवन
पार करे अब अग्नि-परीक्षा।
सेनानी ! आग्नेय दृगों से
देख रहे सब तेरा आनन !

[६]

जगद् जाल को प्रखर कर चुके,
सागर लांघ रहा तट रेखा,
मारुत हर-हर नाद कर उठा
तब समाधि को शिव ने देखा।
मारें ? आत्मघात कर लें ?
या छिन्न करें तेरा सिंहासन !

[७]

आज मुक्त कर, महोव्योम को
वज्रों से विद्युत उठें कर,
तुच्छ - शांत तम-धारा क्या ?
हम चुन बांध दो सकते सागर।
दमीचों के हृदय-रक्त को,
हैं प्यासे अब व्याघ्र-कराल !

★

जिसको मंजिल तक जाना है ....

[श्री रामनिवास जाजू]

जिसको मंजिल तक जाना है, राही कैसे रुके डगर में।

देवालय में शपथ उठा कर, निर्बलता का नाम मिटाने।
चरण बढ़ाये साहस भर कर, आजीवन संग्राम मचाने॥
मृत्यु मुकुट मस्तक पर रक्खा, जिसने देने हार हार को।
सागर ही मथना है जिसको, क्यों अकुलाये देख धार को?

वीर 'विजय' का रक्षक बनकर, कैसे रख दे खड्ग समर में।
जिसको मंजिल तक जाना है, ...

सदियों तक कवि करता चिंतन, भावों को भाषा ही देने।
युग को चक्की में पिसता है, युग को एक सन्देशा कहने॥
जीवन की अनुभूति समझने, जब बन दरवेश सा कर डाला।
पी युग का बन प्रतिनिधि पीता, अभिशापों का घूंट विषैला॥

उसके कंठों के स्वर कैसे, थामे भी थम सकें अधर में।
जिसको मंजिल तक जाना है, ...

देखा जिसने शोषण भी, देखे शोक के मग्न भाव भी।
घोर विषमता में पल कर, जो पीता है सबके अभाव भी॥
आंखों में अंगार लिये जो, निकला सच्ची क्रांति मचाने।
वही निकलता विकल घड़ी में, फूटे भाग्यों को सहलाने—

जो बन प्रलय रूप चमकेगा, मानवता के प्रलय पहर में।
जिसको मंजिल तक जाना है, ...

आज प्रगति की नींद लगी है, झूठे जग से सत्य चुराने।
गांठ खोलता छिटक प्रलय, कर्तव्य राह में यदि चढ़ आवे
आज खड़ा युग एक पैर पर, अपना अगला कदम बढ़ाने॥
इसीलिये तो चली लेखनी, कवि की उसको मार्ग दिखाने॥

जो बदलेगा वायु विश्व की, उसकी गति क्या रुकी लहर में
जिसको मंजिल तक जाना है, ...

★

गीत

[श्री चन्द्र भोगलेकर 'शशि']

साधना कर, साधना कर, साधना होगी सफल रे!

[१]

तू हृदय में आश लेकर, पंथ पर प्रस्थान कर दे!
सामने हैं शूल तेरे, शूल को तू फूल कर दे!

पंथ तेरा पूर्ण होगा, आश यदि होगी सबल रे!
साधना कर, साधना कर, साधना होगी सफल रे!

[२]

धूल का यह तुच्छ कण भी, आज अम्बर को चला है।
फूल का यह एक कण भी, आज लहरों में मिला है!

यह कणों का ही सुसंचित विश्व में करता प्रलय रे!
साधना कर, साधना कर, साधना होगी सफल रे!

[३]

साधना रत हो अटल तू विश्व को अपना बनाले!
जो बुझे दीपक पड़े हैं आज तू फिर से जलाले!

और इनकी ज्योति से ही, दूर करदे पथ-तिमिर रे!
साधना कर, साधना कर, साधना होगी सफल रे!

★

कहानी

ऐटम गिरेगा !

★ श्री सत्य

सुबह सुबह ही एक महाशय मेरे पास आए। बताया कि वे शांति कमेटी के सदस्य हैं और एटम बम पर रोक लगाना चाहते हैं। इसीलिए मुझसे प्रार्थना की गई कि मैं भी उस पर हस्ताक्षर करूं। मालूम हुआ कि वे कम्यूनिस्ट हैं। कुछ डर सा लगा। कह दिया—'भाई! हस्ताक्षर वगैरह हम कुछ करेंगे नहीं '

इससे पहले कि हम कुछ कह सकते वे महाशय गरम हो गए और ज़ोर से लम्बी उसासें ले ले कर कहने लगे—'तुम युद्ध चाहते हो, तुम चाहते हो कि एटम गिरे और सारी दुनिया का नाश हो जाय ··· !!'

मैंने चारों ओर देखा। लम्बी सांस ली। गनीमत थी, कि किसी ने सुना नहीं। दीवारों के भी कान होते हैं, सावधान रहना ज़रूरी है। कोई सुन ले और उसका प्रयोग किस किस रूप में कर दे, कौन कह सकता है?

तो भी मन में एटम बम के विषय में सोच ज़रूर डाला। वैसे मुझे अभी तक यह मालूम नहीं हो सका था कि एटम किन किन महा-मानवों के पास है और कौन कौन उसकी खोज में है। ईश्वर जाने इनमें किन किन को सफलता मिली।

पर जब आरोप मुझी पर आ पड़ा कि मैं ही एटम छुड़वाने वाला हूं तो एक बारगी तो सीना फूल कर कुप्पा सा हो गया। पर जब अगणित नरहत्या का दृश्य सामने आया तो मैं घबरा उठा, कहा—'राम! राम! क्या कह रहे हो? मैं और एटम बम! मेरा उसका कब का नाता?'

'तो आप हस्ताक्षर करने में हिच-किचा क्यों रहे हैं? जिस अपील पर आपके हस्ताक्षर करवा रहा हूं उस में भी यही बात लिखी गई है कि नर-हत्या न की जाय। हम दस्तखत बटोर कर राष्ट्रसंघ को भेज कर मांग करेंगे कि जनता युद्ध नहीं चाहती, तो उन्हें मजबूर हो कर युद्ध बन्द करना होगा, विवश होकर वे एटम का प्रयोग नहीं कर सकेंगे।'

घबराहट गई नहीं। पूछा—'यह तो अच्छी बात है। पर जो इस पर हस्ता-क्षर नहीं करेंगे, वे? उनका क्या होगा?'

मेरे सामने रूबे-रूआब फिर एक बारगी गरम हो गये बोले—'उन्हें पूंजी-वादी घोषित कर दिया जाएगा। उन्हें युद्ध लिप्सु प्रचारित कर दिया जाएगा, जिन्हें एक बहुत बड़े रूसी साहित्य-कार ने नरक का कुत्ता कहा है।'

गुस्सा हमारा जो कुछ कुछ अब तक दब चला था, बाहर उमड़ आया। झट से बोला 'तुम्हारी ऐसी की तैसी, आओ हम एटम का ही नहीं एटम के बाप का भी प्रयोग करेंगे। आओ कुछ करना हो कर लो। जब हमारा एटम छूटेगा आप की यह शांति अपील धरी रह जाएगी। जाओ हम हस्ताक्षर नहीं करते, नहीं करते? किसी और को उल्लू बनाओ। रूस के बादशाह का राज यहां करवाना चाहते हो तुम कल के छोकरे! मालूम नहीं हिन्दुस्तान कितना ही गया बीता क्यों न हो, वह अब युद्ध तो क्या महा युद्ध तक कर सकता है!

इस तरह मैंने जब हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया तो हमारे पड़ोसी विष्णुनाथ जी ने भी नकारात्मक सिर हिला दिया कि हम दस्तखत नहीं करने के।

भुनभुनाते हुए चले गए। बेलगे घर घर फेरा देकर घोषणा करने पंडित, जो बुर्जुआ पद्धति के आदमी हैं और युद्ध चाहते हैं।

हमने आज तक किसी की परवाह नहीं की सो इस कल के छोकरे की क्या परवाह करते। रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाय पर आन न जाई—यह बात हमारे दिल में अच्छी तरह से बैठी हुई है? सो अब एटम गिरे एटम का बाप गिरे, हमने सोच लिया है कि चुप-चाप मरना अच्छा पर शांति कमेटी की उस अपील पर हस्ताक्षर नहीं करेंगे।

दिल में कुछ विरक्ति सी आ गई। दुनिया कितनी मिथ्या है। आज है कल एटम गिरे तो सफाचट्ट। रविवार था सो आकर पड़ रहा आज भोलानाथ की मां और पड़ोसिन जब चख चख कर रही थी मैं शांति के साथ बिना किसी प्रकार का हस्तक्षेप किए बिछौने पर पड़ा था। यह एक अप्रत्याशित घटना थी। वे फिर भी जब लड़तीं रहीं तो मुझे इन माया में लिप्त रहने वाली भारतीय रमणियों पर दया आये बिना रह न सकी। धीरे से कहा क्यों इस तरह से लड़ रही हो, ज़िन्दगी दो दिन की मिली है तो हंस खेल कर बिता दो। इसमें लड़ना झगड़ना क्यों? यह सब अच्छा नहीं लगता। जिस वस्तु के लिए आज तुम लड़ रही हो वही कल तुम्हें मालूम होगा कि कितनी मिथ्या है। कल एटम गिरा और परसों सब समाप्त! बस फिर मौज करो। और इसी दुनिया के लिए तुम इस तरह लड़ रही है "राम! राम!"

भोलानाथ की मां ने आंखें तरेर कर मेरी ओर देखा। मन ने कहा क्यों बीच पड़ता है रे! तू अपनी देख, ये तो माया में प्रसित हैं, तेरे तो ज्ञानचक्षु खुल गए हैं। तू तो अपना राम भजन कर। क्यों किसी की पंचायत में पड़ता है रे!!

मन में डर रहा था। कितनी सुन्दर दुनिया है, सब समाप्त हो जाएगी। एटम गिरेगा ज़रूर, आज नहीं कल सही, समझ लो कल एटम बम गिराने वाले हवाई जहाज में किसी तरह का पंचर हो गया— किसी तरह की कोई खराबी आ गई तो परसों अवश्य गिरेगा, उसके बाद प्रलय आ जायेगा— यह सारी सुन्दर सृष्टि समाप्त हो जायेगी!

कमरे में लेटे लेटे ऊब गया था सो बाहर आ गया। देखता हूं कि बाहर पड़ोसी के साहब जादे अपनी कमीज में मिट्टी भर भर कर हमारे बरामदे में डालते आ रहे हैं, न किसी बात को फिक्र न चिन्ता। एक बार तो जी में आया कि एक चांटा रख दे कि 'टें' बोल जाय और फिर कभी इस तरह बदतमीजी करने का हौसला न करे। पर फिर रुक गया हूं। एटम के युग में चलने वाली यह दो दिन की दुनिया है। क्यों किसी की काया को कष्ट दिया जाय।

सामने देखता हूं तो एक साहब-जादे साहब बैठे बैठे देख रहे हैं, और दो महिलाएं लड़ रही हैं। कभी कभी किताब पढ़ते पढ़ते फरमा जाते हैं। "लड़ो मत! प्यारे बोलो!" आदि आदि। पर किसी प्रकार का ऐसा हस्तक्षेप नहीं था कि जिससे वे मजबूर होकर अपना यह वाग्युद्ध बन्द कर दें। अनुमान लगाया वे दो लड़ने वाली महिलायें तो एक अमेरिका और दूसरी रूस। बीच में बैठा है शेर जवाहर! किसी ने बातचीत से अधिक कुछ करने की ओर कदम बढ़ाया तो फिर खैर नहीं। पर वे शान्ति के साथ अपनी पोथी पढ़ते जा रहे हैं।

दोनों महिलाओं की जीभ संपाद-कीय कैंची की तरह चल रही थी। बातें छोटी, छोटी, पर रेकार्ड में छोटी लगे और बाद कर गम्भीर एसो। भारतीय युद्ध की भी क्या शानदार परम्परा है। न अस्त्र न शस्त्र! और युद्ध अपनी चरम सीमा पर मंत्रों के बल पर गुलाबियां खाए जा रहा है। इसे कहते हैं कला! कला ही नहीं साहब! उसकी अनुभूति में तीव्रगति से घुस कर उसकी चरम सीमा को छूना।

लड़ते लड़ते बात पण्डिताइन जी भोलानाथ की मां तक आ गई। बात यह है कि भोलानाथ की मां के साथ मेरा कुछ ऐसा सम्बन्ध है कि लड़ने झगड़ने के मामले में मेरी बहुत ही कड़ी पेशी हो जाया करती है। पेशी होते ही मामला समझाया जाने लगा। समझाने वाली दो महिलाएं थीं। इस-लिए पूरा समझ सकना तो और कठिन था ही! पर उसका सारांश इस प्रकार था। हमारे घर के आंगन में जो पेड़ है तथा जिसकी डाल हमारे पड़ोसी के मकान में चली गई है उस पर लगे हुए फल एक महिला ने तोड़ कर रखे और दूसरी ने उन्हें हजम कर लिया। बात तो यों समाप्त हो गई, फिर भी जब दोनों इस विषय को लेकर वाग्युद्ध करने ही लग गईं तो फिर भोलानाथ की मां को भी बुलाया गया कि आपकी डाल में लगे फल मैंने तो तोड़ कर आपके लिए रखे थे। इस चुड़ैल ने सब हजम कर लिए। इस प्रकार किन्हीं विशेष कानून के अन्तर्गत चलने वाली बात बढ़ कर हमारे पास तक चली आई थी। आवश्यक था कि हम इसका निर्णय करें।

पहले तो मैं इनकी ओर शांत उदास भाव से देखता रहा। ठीक महात्मा बुद्ध की तरह जिस प्रकार उन्होंने माया लिप्त व्यक्तियों की ओर दयामय दृष्टि से देखा होगा। फिर धीरे से बोला।—

'यह सब चर्चा छोड़ दो! बहुत गई, थोड़ी रही— पता नहीं कब एटम गिर जाय, कब सब समाप्त हो जाय। कुछ हरि भजन करो कि परलोक सुधरे इस दुनियादारी में कुछ रखा नहीं है। सब माया है, मोह है, मिथ्या है।'

पास बैठे पोथी बांचने वाले सज्जन चौंके, पूछा एटम? एटम अपने यहां क्यों गिरने लगा?'

मैंने ठंडी श्वास लेकर कहा। 'हमने शान्ति अपील पर हस्ताक्षर नहीं किए, इसलिए! चाहे अमेरिका वाला आदमी एटम छोड़े चाहे रूस वाला शांति नहीं रहने की।'

बिचारे, सब मुंह लटका कर के रह गए!!

———

रुपये की कीमत बढ़ाओ

मुद्रा के अवमूल्यन को बदल कर उन्मूल्यन की आवश्यकता बताते हुए प्रमुख उद्योगपति श्री रामकृष्ण डालमियां लिखते हैं — देश के खाद्यान्न-आयात के केवल भाड़े में जितना खर्च किया गया है — इस वर्ष के अन्त तक यह रकम एक अरब रुपये से भी अधिक होगी — इससे सुदृढ़ का अपना एक व्यापारिक पोत बन गया होता। विभाजन के समय सरकार के पास नकद रोकड़ ३ अरब ७० करोड़ रु० थी, जो घट कर लगभग आधी रह गयी है और १६ अरब रु० से भी अधिक का हमारा पौण्ड पावना अब लगभग ८ अरब रु० रह गया है। गत तीन वर्षों में एकत्र लगभग २ अरब २० करोड़ रुपये की पूंजी और राजस्व के घाटे के बावजूद उत्पादन में कोई वृद्धि नहीं दिखाई पड़ती। गत पांच वर्षों में 'अधिक अन्न उपजाओ' योजनाओं पर १८ करोड़ रु० बरबाद कर दिया गया। इस रकम को यदि विस्थापितों पर व्यय किया गया होता तो किसी हद तक पुनर्वास की समस्या हल हो गई होती।

आज ऐसी स्थिति पैदा हो गई है, जिसमें देश को विवश हो कर काफी मात्रा में बाहर से खाद्यान्न मंगाना पड़ता है। इस से भी अधिक दुखद चीज यह है कि अधिकारी ऐसी कार्यवाही करने से इन्कार करते हैं जो बाहर से मंगाये जाने वाले खाद्यान्न के मूल्य घटायेगी और उन करोड़ जनों को कुछ राहत पहुंचायेगी जो आज के बढ़े हुए भाव पर गेहूं या चावल नहीं खरीद सकते। उन्होंने रुपये का पुनर्मूल्यन भी नहीं किया, यद्यपि इस कार्यवाही से केवल खाद्यान्न-आयात के मूल्य में देश का लगभग एक अरब रुपया बच गया होता। हमने उस समय जूट खरीदने से इन्कार कर दिया था, जब पाकिस्तान झुका हुआ था और किसी भी मूल्य पर बेचना चाहता था और अब हम बहुत अधिक मूल्य पर खरीदने के लिए विवश हुए हैं। यदि हम रुपये का पुनर्मूल्यन तत्काल नहीं करते तो हमारी अस्तव्यस्त आर्थिक स्थिति में छोड़ देगी, जिसमें हम चाहते हुए भी उसका पुनर्मूल्यन नहीं कर पायेंगे। आग लगने पर कुंआ खोदने से कोई लाभ नहीं होगा

'पुनर्मूल्यन से न केवल बाहर से मंगाया गया गल्ला जनता के लिए सस्ता पड़ेगा, बल्कि देशी चीजों का मूल्य भी घट जायगा। रुई का मूल्य घटने से कपड़े का मूल्य घट जायगा। जूट का मूल्य कम होने से किसान सस्ते दाम में बोरे खरीद सकेगा। स्टोर और यातायात का मूल्य घट जायगा तथा सीमेंट का मूल्य कम करने में भी सहायता मिल जायगी। आवश्यक सामग्रियों के मूल्य में इस मर्यादापूर्ण ह्रास का कोयला तथा अन्य पदार्थों के मूल्य पर स्थायी प्रभाव पड़ेगा। आज की स्थिति में जब कि कच्चे माल के लिए विश्वव्यापी प्रतिद्वन्द्विता चल रही है बाहरी मुद्राप्रसार के दबाव में एकमात्र मार्ग देश के लिए यही है कि वह रुपये का पुनर्मूल्यन करे।

'मुद्राप्रसार का प्रश्न पर तीव्र प्रहार हो रहा है।

●

भारतीय संस्कृति पर एक दृष्टि

हमारी संस्कृति की शुरुआत प्राकृतिक शक्तियों की पूजा से, जो विज्ञान और वैज्ञानिक अवलोकन का स्रोत है, तथा अन्तर आत्मा की पूजा से जो मनोवैज्ञानिक है हुआ। इसी कारण भारतीय धर्म सेमिटिक धर्मों की तुलना में विचार युक्त और मनोवैज्ञानिक दोनों हैं। सेमिटिक धर्म या तो शुरू से ही जातीयता पर आधारित होते थे, या बाद में जातीयता के वातावरण में उन्नति करते थे। ऋग्वेदिक आर्य प्रकृति के उपासक थे, किन्तु उपनिषदों के समय तक उनका धर्म आध्यात्मिक बन गया। आर्यों से पहले ही भारत में जाति व्यवस्था थी, जिसे आर्यों ने अपनाया था। किन्तु ईसा मसीह से चार सौ वर्ष पूर्व वह व्यवस्था असामान्य हो गयी थी। जाति व्यवस्था का एक लाभ यह था कि युद्ध क्षत्रियों का काम था तथा योद्धाओं को जानमाल की क्षति नहीं पहुँचाई जाती थी। पहले के आर्य सन्यास को उतना महत्व नहीं देते थे, जितना बाद के आर्य। क्योंकि हिन्दू धर्म सब प्रकार के धर्म सम्प्रदायों और सामाजिक व्यवस्थाओं को लेकर जाति व्यवस्था के साथ-साथ आगे बढ़ा, पशु वध जैसी अनेकों अमानुषिक प्रथाएं चालू रह गयीं, यद्यपि उन्हें सांकेतिक स्वरूप दे दिया गया था।

ऐसे समय में बौद्ध और जैन-धर्म का जन्म हुआ, जिन्होंने संकेतवाद के बहिष्कार करने और आध्यात्मिक सत्य को उसके नग्न रूप में ग्रहण करने के उपदेश दिये। बौद्ध और जैन धर्म, आर्य धर्म या हिन्दू धर्म से भिन्न नहीं थे, किन्तु उसी के अन्दर सुधार करने के आन्दोलन थे। किन्तु उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सत्य को उसके बाहरी आडम्बर से अलग करके, नग्न रूप में ग्रहण किया जाय। इसी के कारण हिन्दू धर्म आध्यात्मिक बन गया और सन्यास लोकप्रिय हो गया। मौर्य शासकों ने बौद्ध और जैन धर्म दोनों को संरक्षण दिया, जिसके कारण मगध में अनेकों विहार और मठ स्थापित हो गये। इसका परिणाम यह हुआ कि देश के सामाजिक और धार्मिक जीवन को क्षति पहुँची। शुंग युग में ब्राह्मणों ने बौद्ध और जैन धर्म का विरोध किया। आंध्रों के समय में बौद्ध धर्म को शासकों से संरक्षण मिला, किन्तु उस समय तक बौद्ध धर्म के विचारों में परिवर्तन होना प्रारम्भ हो गया था। दोनों महायान स्कूलों ने उपनिषदों के विचारों का प्रचार करना शुरू कर दिया। आन्ध्र शासकों ने बौद्ध धर्म के साथ साथ हिन्दू धर्म को भी संरक्षण दिया।

इस प्रकार बौद्ध धर्म और हिन्दू धर्म में सम्पर्क स्थापित होता गया यहां तक कि बौद्ध धर्म पूर्णतया हिन्दू धर्म में मिल गया। बुद्ध विष्णु का अवतार माना गया। जैनों ने अपने आपको हिन्दू धर्म की जाति व्यवस्था के अनुकूल बना लिया और गुप्तवंश के ह्रास के पश्चात आठवीं शताब्दी के लगभग भारतीय समाज और संस्कृति में एक अद्भुत प्रकार का एकीकरण हुआ।

— डा पी. टी. राजू

●

एक दिन में १०००० पौदे

अमेरिका की उस भूमि में, जहां के वृक्ष काटे गये हैं, और जो बेकार पड़ी है, वृक्षारोपण कार्य को शीघ्रता से सम्पन्न करने और लोगों में वन लगाने की रुचि पुनः जाग्रत करने के लिए एक अद्भुत एवं उपयोगी मशीन का आविष्कार हुआ है जिसे ट्री प्लांटर (पौधे लगाने वाली मशीन) कहते हैं।

आज अमेरिका की कागज तैयार करने वाली अनेक कम्पनियां, अमेरिकी वन सेवा तथा वन-रक्षा विभाग और बेकार पड़ी हुई भूमि के स्वामी बसंत में अथवा पेड़ लगाने की अन्य ऋतुओं में लगभग २,००० पौधे लगाने वाली मशीनों से काम ले रहे हैं।

अमेरिका में पौधे लगाने वाली मशीनों का प्रचार दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। चूंकि ये तेजी से पेड़ लगाती हैं इस लिए खर्च में भी काफी बचत हो जाती है। ये मशीनें विभिन्न प्रकार की बनाई गई हैं और इनमें से अधिकांश ट्रैक्टर द्वारा खींची जाती हैं।

अमेरिका में १९५१ में प्रत्येक स्त्री तथा बच्चे पीछे तीन तीन वृक्ष लगाए जायेंगे।

एक परिश्रमी व्यक्ति ८ घंटे काम करके हाथ से १,००० पौधे लगा सकता है। यदि भूमि अच्छी हो तो एक मशीन पर केवल दो आदमी काम करके — एक ट्रैक्टर चालक और दूसरा मशीन चालक — एक दिन में ८,००० से १२,००० तक पौधे लगा सकते हैं। चूंकि वृक्षारोपण जैसे अस्थायी काम के लिए मजदूर कठिनाई से मिलते हैं और उन्हें मजदूरी भी बहुत अधिक देनी पड़ती है, इस लिए उक्त मशीन का प्रयोग अधिकाधिक बढ़ता जा रहा है। यह अनुमान लगाया गया है कि मशीन की अपेक्षा हाथ से वृक्ष लगाने में तिगुना खर्च पड़ता है।

विस्कोन्सिन राज्य में एक कागज तैयार करने वाले कारखाने के पास इस प्रकार की दो मशीनें हैं जिन से प्रति-

[शेष पृष्ठ १७ पर]

लू से बचिये

आजकल लू के दिन आगए हैं। लू से बचने के कुछ नियम नीचे दिए जाते हैं।

१ बाहर निकलते समय पहले जल का स्वच्छ पानी काफी व कई बार पीलें और उसमें २ से ४ रत्ती तक सादा नमक भी मिला लें।

२- भुने हुए आम का पना (शरबत) पीना भी अच्छा है।

३ ठण्डे से गरम वायु मण्डल में आने से बचना चाहिए।

४ कपड़ा शरीर पर न बहुत कम न अधिक हो, हवा जाने व पसीना सूखने योग्य कपड़ा होना चाहिए।

५- धूप में पैदल तथा नंगे सिर व नंगे पैर लम्बी यात्रा करना खतरनाक है। धूप से बचने के लिये छाया का प्रबन्ध जरूरी है।

६ लगातार अधिक परिश्रम न करके बीच बीच में आराम करना चाहिये।

७- बाजारू शर्बत, आइसक्रीम, लस्सी आदि से बचें। इनके प्रयोग से हैजा भी फैलता है।

८ कच्चे, अधिक पके हुए, सड़े, कटे फल खासकर बाजार के कटे तरबूज व आम आदि मक्खियां बैठी हुई या धूल जमी हुई पत्तियों व सड़क पर बिकने वाली गुड़ की गच्ची व अन्य मिठाईयां, चाय इत्यादि सेवन नहीं करना चाहिए।

९ अपने २ मकानों की टट्टियों को रोजाना साफ कराकर धुलवाइये और उनमें फिनाइल या चूना डलवाइये ताकि मक्खियां न हों।

●

अपनी परीक्षा दीजिये

क्या आप महापुरुष हैं?

★ श्री महावीरशरण अग्रवाल

इस संसार में बहुत सी ऐसी चीजें हैं जिन्हें हम नहीं जानते लेकिन जो हम में छिपा है उसे न जानना हमारी एक भूल होगी। हमारा व्यक्तित्व कैसा है, यह प्रश्न मानव को जीवन में बहुत कम सताता है, लेकिन इस प्रश्न का ठीक उत्तर न मिलने के कारण मानव पत्रिकाओं की ओर दृष्टि डालता है। इस छोटे से लेख में मैंने मानव के व्यक्तित्व पर दृष्टि डाली है जिसे समाज का हरेक पाठक ध्यान से पढ़ेगा और पूर्ण लाभ उठायेगा।

प्रश्न

१. आपको ऐसी चीज को करने को कहा जावे जिसे आप नहीं चाहते।

क. क्या आप उसी समय हां या ना कह देते हैं?

या ख. आप कहते हैं हां और करते हैं ना।

२. जब कभी कोई आपसे सहायता मांगता है

क. जो कुछ आपसे हो सकता है करते हैं?

या ख. आप तब तक नहीं करते जब तक आपका मनोरथ पूर्ण नहीं होता।

३. आप वायदा करते हैं?

क. आपका वायदा हरिश्चन्द्र के समान है?

या ख. आप अपने वायदे को भूल जाते हैं?

४. आपसे किसी बात पर राय मांगी जावे?

क. आप अपनी बुद्धि के अनुसार देते हैं?

या ख. कहने वाले को खुश करने के लिये उसकी हां में हां मिलाते हैं?

५. कोई आपके मित्रों को बुरा कहते हैं?

क. आप अपने मित्र का साथ देते हैं?

या ख. आप दूसरे की बातें मान लेते हैं और अपना उल्लू सीधा करते हैं?

६. एक आदमी गलती करता है?

क. उसे जितना होता है सहायता

या ख. अपनी बड़ाई करते हैं?

७. जब आप गलती करते हैं?

क. आप स्वीकार कर लेते हैं और क्षमा मांग लेते हैं?

या ख. गलती दूसरे पर डालते हैं?

८. क्या आप उधार लेते हैं?

क. उधार रुपये को समय पर या थोड़ा थोड़ा कर देते हैं

या ख. आप देते नहीं

९. जब कभी आपको कोई पुस्तक या जरूरी कार्य के लिए देता है

क. उसे अपनी वस्तुओं की तरह रखते हैं

ख. या बुरी तरह खराब करके देते हैं

१०. गलती से अधिक रुपया मिलने पर

क. गलती की खोज करते हैं

ख. मजे से जेब में रखते हैं

११. जब आपसे किराया नहीं मांगा जाता

क. आप अपनी तरफ से देने को कहते हैं

ख. कुछ पूछने की इच्छा ही नहीं करते।

१२. रास्ते [चलते] कोई कीमती वस्तु मिले

क. वस्तु के स्वामी की खोज करते हैं।

ख. अपनी [जेब को] ही स्वामी समझते हैं।

१३. दुकान में अपनी इच्छा की चीज पाते हैं।

क. जेब के अनुसार खरीदते हैं

ख. कर्ज पर भी लेने का प्रयत्न करते हैं

१४. कष्ट-दायक कार्यों में।

क. अपना सहयोग देना।

ख. दूसरों को ही करने को कहते हैं

१५. किसी को ऊंची पदवी मिले

क. आप पहले की तरह कार्य करते हैं।

ख. उस मनुष्य से द्वेष या उसे तंग करते हैं।

१६. आपको ही ऊंची पदवी मिले

क. बिना शोरगुल के शान्ति से कार्य करते हैं।

ख. दूसरों को दिखाने का प्रयत्न करते हैं।

१७. अधिक भीड़-भाड़ में

क. निकलने का प्रयत्न और शांति की चाह।

ख. किसी की जेब या तंग करने की चाह।

१८. जब कभी कोई क्रोध में हो

क. शांत होने की प्रार्थना करते हैं

ख. दूसरे को और क्रोध दिलाने के लिये भड़काते हैं।

१९. किसी को आपसे प्रेम हो।

क. उसका कष्ट अपना कष्ट समझते हैं।

ख. आप कुछ भी कहना अपनी इज्जत पर कमी समझते हैं।

२०. आप किसी के प्रेम में या चाह में।

क. दूसरों की इच्छाओं पर चोट आप अपनी चोट समझते हैं

ख. आप अपने घमण्ड में अपने को ही देखते हैं, दूसरे को नहीं।

अब जितने 'क' उत्तर हों उनको २ नम्बर दीजिये और अंत में देखिये कि आपका उत्तर क्या है? अगर ७० है तो आप प्रथम श्रेणी के पुरुष हैं। ५० के लगभग द्वितीय और इससे कम नम्बर हो तो वह आदमी तृतीय श्रेणी पावेगा।

(पृष्ठ १३ का शेष)

वर्ष १०,००,००० वृक्ष लगाए जाते हैं। उसी राज्य में एक अन्य कारखाने के पास भी ऐसी ही दो मशीनें हैं जिन से प्रतिवर्ष २०,००,००० वृक्ष लगाए जाते हैं।

●

रूसी एटम-बमों का संग्रह

पेरिस के एक समाचार पत्र ले फिगारो ने खबर दी है कि रूस के सारे एटम बम साइबेरिया के एक बारूदखाने में, जो टोमस्क नगर से १५० मील दक्षिण पूर्व में है, जमा हैं। इस पत्र ने कहा है कि उसे उपर्युक्त सूचना निम्नलिखित तीन सूत्रों से प्राप्त हुई है—

(१) रूसी सेना के एक भूतपूर्व मार्शल का (जो रूस की पंचवर्षीय शस्त्रीकरण योजना के डायरेक्टर थे) पुत्र जो रूस के एटम बम संबंधी सूचनाओं की पूरी फाइल लेकर पश्चिम जर्मनी भाग आया। इस फाइल में सिर्फ यह सूचना न थी कि रूस के पास कितने एटम बम हैं।

(२) वे २० लाख चीनी नागरिक जिन्हें रूस ने साइबेरिया में कारखाने बनवाने के लिए नौकर रखा था।

(३) कोरियाई लड़ाई में अमरीकी फौजों को कई नये रूसी हथियार मिले हैं जिनसे उपर्युक्त रूसी कमांडर के पुत्र द्वारा चुराकर लाये गये कागजात में विहित सूचनाओं की पुष्टि होती है।

ली फिगारो पत्र में कहा गया है कि रूस में एटम बम का निर्माण कई महीने पहले आरम्भ हो गया था।

इस पत्र में निम्नलिखित बातें और बताई गयी हैं— उपर्युक्त रूसी बारूदखाने में एटम बम जमीन से १२० फुट नीचे जमा हैं। बारूदखाने के समीप २३०० वर्गमील जमीन एटम बम का प्रयोग करके देखने के लिए खाली छोड़ी गयी है। इस एटम क्षेत्र की रक्षा के लिए चारों तरफ ५५ हवाई अड्डे बनाये गये हैं जिनमें २ हजार से ऊपर लड़ाकू विमान रहते हैं। रूसी सरकार जर्मन कारीगरों की सहायता से बी-२५ नाम का एक नया बम तैयार करने में संलग्न है। इस भयानक बम का संहारक्षेत्र २५० मील बताया जाता है।

परीक्षोपयोगी लेख

भारत का संविधान और उसकी विशेषताएं

नाम और स्वरूप

हमारे देश का नाम भारत है। इसका स्वरूप सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गण राज्य है।

उद्देश्य

इस संविधान का उद्देश्य देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक उन्नति, न्याय, विचार-प्रकाशन, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता और सब नागरिकों की उन्नति का अवसर प्रदान कर राष्ट्र की एकता कायम रखना है।

राष्ट्रपति

देश के सभी प्रान्तों, रियासतों और रियासत-संघों को मिला कर एक अखिल देशीय संघ सरकार बनाई गई है। देश का प्रमुख शासक राष्ट्रपति है। इसका चुनाव संसद् और विभिन्न राज्यों की विधान सभाओं के सदस्य मिल कर करेंगे। राष्ट्रपति की सहायता के लिए एक मन्त्रिमण्डल होगा, जो संसद् या पार्लियामेंट के प्रति उत्तरदायी होगा और वह सभा के बहुसंख्यक दल के द्वारा बनाया जायगा। राष्ट्रपति को संसद् में आवश्यक निर्देश भेजने उन सभाओं को बुलाने, स्थगित करने और विसर्जन करने का भी अधिकार दिया गया है। वह असाधारण परिस्थितियों में कुछ नये कानून भी बना सकता है, परन्तु इन कानूनों के लिए बाद में संसद् से स्वीकृति ले लेनी चाहिये। राष्ट्रपति को मंत्रिमण्डल के परामर्श पर युद्ध सन्धि आदि की घोषणा करने का और किसी के फांसी दंड को क्षमा करने का अधिकार होगा। संसद् के दो तिहाई सदस्यों द्वारा अविश्वास का प्रस्ताव पास होने पर उसे अपने पद से स्तीफा देना होगा।

राष्ट्रपति की अनुपस्थिति, आकस्मिक मृत्यु और पदच्युति की अवस्था में कार्य संचालन के लिए एक उपराष्ट्रपति की नियुक्ति की जाएगी।

मन्त्रिमंडल

राष्ट्रपति संसद् में बहुमत दल के नेता को अपना प्रधानमन्त्री बनायेगा और शेष सारी मन्त्री-परिषद् प्रधानमन्त्री की सहायता से बनायी जायगी। देश की रक्षा, आन्तरिक शासन, विदेशों से संबंध, अर्थ-व्यवस्था, व्यवसाय, यातायात, व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा, रेलवे, श्रम, निर्माण तथा खाद्य वस्तुओं के प्रबन्ध आदि के लिए एक-एक मन्त्री चुना जायगा, परन्तु इन सबकी जिम्मेदारी सम्मिलित रूप से होगी।

यह समस्त मन्त्रिमण्डल लोकसभा के प्रति अपने सब कार्यों के लिए जिम्मेदार होगा। मन्त्रिमण्डल का एक भी प्रस्ताव या बजट की एक रकम के फेल होने पर सारे मन्त्रिमंडल को त्यागपत्र देना होगा।

संसद्

इसके दो भाग होंगे। लोकसभा और राज्य परिषद्। लोकसभा के ५०० सदस्य होंगे। प्रत्येक बालिग नागरिक को इस चुनाव में वोट देने का अधिकार होगा। ये चुनाव साम्प्रदायिक न होकर सम्मिलित चुनाव होंगे।

राज्य परिषद् के सदस्यों का चुनाव राज्यों और रियासतों की प्रतिनिधि सभाएं होंगी। इनकी संख्या लगभग २०० होगी। साहित्य, कला, विज्ञान, शिक्षा, कृषि, आदि के प्रतिनिधित्व के लिए १२ सदस्य राष्ट्रपति द्वारा भी नियुक्त किये जायेंगे। इस सभा के एक तिहाई सदस्यों के स्थान पर बारी-बारी से दो वर्ष बाद नया चुनाव होगा।

कोई भी प्रस्ताव कानून बनने से पहले दोनों सभाओं में स्वीकृत होना आवश्यक है। परन्तु आर्थिक बजट के लिये राज्य परिषद् की अनुमति अनिवार्य नहीं। किसी दूसरे प्रश्न पर मतभेद होने की अवस्था में राष्ट्रपति दोनों की सभा कर के निर्णय करवायेगा।

मूलभूत सिद्धांत

इन दोनों सभाओं तथा शासकों के लिए संविधान सभा ने कुछ ऐसे मौलिक सिद्धांत भी स्वीकार कर लिए हैं, जिनका कोई उल्लंघन नहीं कर सकता। वे सिद्धांत निम्नलिखित हैं—

(क) प्रत्येक व्यक्ति को जीविका के पर्याप्त साधन।

(ख) उत्पत्ति के साधनों का इस तरह वितरण कि उससे समाज का अधिकतम कल्याण सम्पादन हो।

(ग) किसी बालक व बालिका को किशोरावस्था में किसी श्रम कार्य में लगाने पर प्रतिबन्ध।

(घ) प्रत्येक नागरिक को कार्य प्राप्त करने का अधिकार। बेकारी, बुढ़ापा तथा असमर्थता की अवस्था में राष्ट्र द्वारा उसकी सहायता।

(ङ) प्रत्येक श्रमिक को उचित तथा पर्याप्त वृत्ति।

(च) प्रत्येक नागरिक के लिए निःशुल्क प्रारम्भिक शिक्षा।

(छ) दलित जातियों की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति की उन्नति। अस्पृश्यता की पूर्ण समाप्ति।

(ज) राष्ट्र के प्राचीन स्मृति स्थानों, मन्दिरों आदि की रक्षा और उनकी सुरक्षा के लिए आवश्यक धन व्यय।

अन्तर्राष्ट्रीय शांति स्थापित करने के लिए सब प्रकार की सहायता।

ग्राम पंचायतें, शराब बन्दी, गोवध निषेध की दिशा में यथाशक्ति प्रयत्न।

नागरिक के अधिकार

१ जाति या धर्म, लिंग के भेदभाव के बिना प्रत्येक वयस्क नागरिक को मत देने, नौकरी व सहायता पाने का अधिकार।

२. भाषा लेखन, निःशस्त्र संगठन, देश में बिना रुकावट के भ्रमण, निवास और सम्पत्ति के उपार्जन तथा व्यवसाय की प्रत्येक नागरिक को स्वतन्त्रता होगी।

३. अदालत से दंड की स्वीकृति के बिना किसी नागरिक को कोई दंड नहीं दिया जा सकेगा।

४ बेगार नहीं ली जा सकेगी और न ही नर-नारी या बालक का विक्रय हो सकेगी।

५ धर्म, संस्कृति, पूजा पाठ की स्वतन्त्रता।

६ किसी नागरिक की सम्पत्ति बिना किसी मुआवज़े के न छीनी जा सकेगी।

निर्देशक सिद्धांतों और नागरिकों के उन अधिकारों की घोषणा ही वास्तव में संविधान का सबसे महत्वपूर्ण भाग हैं। इनके कार्यों में सरकार किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करेगी।

न्यायालय

समस्त भारत के लिए एक सर्वोच्च न्यायालय होगा। इसमें एक प्रधान न्यायाधीश तथा सात न्यायाधीश राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किए जायेंगे। भिन्न राज्यों के परस्पर तथा केन्द्र के साथ उठने वाले विवादास्पद विषय इसी सर्वोच्च अदालत में पेश होंगे। सब राज्यों के हाई कोर्टों के निर्णयों के विरुद्ध अपीलें सुनने का अधिकार भी इसको होगा। यदि कभी किसी प्रान्तीय या केन्द्रीय सरकार को किसी कानूनी विषय पर कोई सम्मति लेनी होगी, तो यही अदालत अपना मत प्रकट करेगी।

संविधान की विशेषताएं

१. यह प्रजातन्त्रात्मक विधान है। राजतन्त्र पद्धति को बिलकुल स्थान नहीं दिया गया। इस प्रकार भारत संसार के उन्नत देशों में शामिल हो गया है।

२. इस विधान में नागरिकों के मौलिक अधिकारों की घोषणा की गई है। हरएक नागरिक को बोलने, लिखने, अपना धर्म मानने, निःशस्त्र संगठन करने की स्वतन्त्रता दी गई है।

३ अस्पृश्यता की प्रथा को समाप्त कर दिया गया है।

४ देश का शासन विधान न बहुत केन्द्रीय है और न बहुत प्रान्तीय स्वराज्य मूलक। केन्द्रीय और सब विधान की बीच की परिस्थिति का स्वीकार किया गया है। प्रान्तों की स्वतन्त्रता को छीना नहीं गया। ऐसी व्यवस्था भी रखी गई है कि आवश्यकता पड़ने पर प्रान्तों पर नियन्त्रण किया जा सके। किन्तु फिर भी इस विधान से पृथक प्रान्तीयता की संकुचित प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है जो देश के लिए हानिकारक है।

५ शासन विधान में अमरीका की तरह से राष्ट्रपति को बहुत अधिक अधिकार नहीं दिए गये और मन्त्रिमंडल को इंग्लैंड की भांति उत्तरदायी माना गया है। इस तरह अमेरिका के राष्ट्रपति और ब्रिटेन के मन्त्रिमण्डल का समन्वय किया गया है।

६ प्रजातन्त्र में प्रत्येक बालिग को मत देने का अधिकार दिया गया है। स्त्री हो या पुरुष, अमीर हो या गरीब, शिक्षित हो या अशिक्षित। प्रत्येक इक्कीस वर्ष के नागरिक को मत देने का अधिकार है। अतः यह प्रजातन्त्रात्मक विधान है।

७ रूस की भांति यह विधान साम्यवादी नहीं है। इसमें व्यक्तिगत सम्पत्ति के अधिकार को स्वीकार किया गया है किन्तु उत्पादन के साधन वितरण आदि की ओर ध्यान देने का आदेश सरकार को दिया गया है।

ग्राम पंचायतों की स्थापना, गोवध निषेध और अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा आदि की ओर भी विधान में सरकार को आदेश दिए गए हैं।

पिछले दिनों भिन्न भिन्न राज्यों में नागरिकों ने संविधान के नागरिक अधिकारों के नाम पर सरकार की विरुद्ध कार्यवाहियों की उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय में अपील की। एक राज्य के उच्च न्यायालय ने जमींदारी उन्मूलन को गैर कानूनी करार दिया, तो दूसरे ने बहुत से लोगों की ... मुक-

[शेष पृष्ठ १८ पर]

मध्यभारत में ★ ★ ★

लेखक— श्री 'किशन'

राजधानी की जटिल समस्या और उसके उपाय

★ मध्यभारत की राजधानी भोपाल हो !

★ भोपाल का विलय मध्यभारत में हो !

★ "प्रादेशिक युद्ध" का नाश हो !

मध्य भारत प्रांतीय कांग्रेस में भी सर्वत्र विद्रोह की ज्वालायें धधक उठी हैं। राजधानी के प्रश्न पर प्रादेशिक मोर्चा बन्दी करली गई है जो एक सुदीर्घ काल से परस्पर 'युद्ध' में संलग्न है। इस प्रकार एक ओर जहां समय और शक्ति का अपव्यय हो रहा है वहीं दूसरी ओर प्रांत की भूखी नंगी जनताको 'राजधानी के मनोरम स्वप्न' दिखलाकर उसकी गाढ़ी कमाई का धन व्यर्थ उड़ाया जा रहा है।

कांग्रेस सरकार असफल

कांग्रेस एवं उसकी सरकार प्रांत की समस्याओं को हल करने में असफल रही है इससे प्रांत का जीवन दूभर हो उठा है। अपनी इन असफलताओं की ओर से जनता की दृष्टि धूमिल करने के लिये आज राजधानी के प्रश्न का काल्पनिक मूल उगाया गया है और व्यर्थ ही प्रादेशिक द्वेष और घृणा को प्रश्रय दे प्रांत भर में 'प्रादेशिक युद्ध' की सी स्थिति उत्पन्न कर दी है।

इस 'प्रादेशिक युद्ध' का शिलान्यास जनता ने नहीं, कांग्रेसियों ने किया है, प्रांत की शासन सुविधा के लिये नहीं, कांग्रेसियों की स्वार्थ लिप्सा के लिये हुआ है, तथा जनता के हित के लिये नहीं कांग्रेसियों की कुर्सी के लिये हुआ है।

अन्यथा क्या कारण है कि इस 'प्रादेशिक युद्ध' के नगाड़े प्रांत के छटे हुये कांग्रेसी एवं उनकी ताल पर नाचने वाले कतिपय विधान सभा के सदस्य ही बजा रहे हैं ? अन्यथा क्या कारण है कि अपने अपने प्रादेशिक हित साधन के लिये आज भी छुटे मोटे वक्तव्य की भाषा और उस पर कुछ व्यक्तियों के हस्ताक्षरों के लिये, छोटी मोटी सभा या जलूस के संगठन अथवा व्यय के लिये तथा प्रत्येक छुटे-मोटे शिष्ट मण्डल या वार्ता के भी संगठन एवं व्यय के लिये कांग्रेसी छुट भैय्ये ही जमीन आसमान के कुलावे मिला रहे हैं ? अन्यथा क्या कारण है कि जनता की ओर से कोई चहल पहल न होते हुये भी कांग्रेसी गुट बन्दियों के समाचार-पत्र उसे यह नारा लगाकर इस 'प्रादेशिक युद्ध' में जबरदस्ती भाग लेने के लिये उभाड़ रहे हैं कि 'ग्वालियर बर्बाद हो जायगा !' 'इन्दौर का शान चली जायगी !' ? अन्यथा क्या कारण है कि हड़ताल करने के लिये जनता का प्रचार द्वारा विवश किया जाता है ?

एकात्मता आवश्यक

महात्मा गांधी की चिता से उठने वाली अग्नि ज्वाला पर देशी रियासतों को भून कर 'कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, और भानुमती ने कुनबा जोड़ा'—ऐसे अनेक देशी राज्य प्रदेशों की चिन्दी चिन्दी जोड़ कर तो यह हमारा मध्यभारत प्रान्त बना है। इस अनेक अवयव वाले शरीर में आज एकात्मता निर्माण करने की आवश्यकता है ! पर आज क्या हो रहा है ? इन्दौर के विरुद्ध ग्वालियर और ग्वालियर के विरुद्ध इन्दौर को खड़ा किया जा रहा है। इस प्रकार क्या एकात्मता निर्माण हो सकेगी ? क्या समस्त प्रांत की जनता एकसूत्र में बद्ध हो सकेगी ? आज का अदूरदर्शी और निकम्मा नेतृत्व प्रांत में नवजीवन निर्माण करने के बजाय 'मंघर्षमय युद्ध' ला रहा है, जिसका स्वाभाविक परिणाम 'विनाश और मृत्यु' है।

उचित निर्णय किया जाय

मध्यभारत को इस 'विनाश और मृत्यु' से बचाने के लिये आवश्यक है कि राजधानी सम्बंधी किसी उचित निर्णय पर पहुंच कर इस 'प्रादेशिक युद्ध' के वातावरण को तुरन्त दफना दिया जाय।

भोपाल ! भोपाल ! भोपाल !

मध्य भारत की दृष्टि से भोपाल की स्थिति अत्यन्त मध्यवर्ती है। वह उपयुक्त एवं सुगम रेल मार्ग तथा सड़क-मार्ग द्वारा मध्यभारत के कोने कोने से जुड़ा हुआ है। इतना ही नहीं, वायु मार्ग द्वारा तो वह सम्पूर्ण देश से ही संबंधित है। मुख्य रेल-मार्ग द्वारा वह दिल्ली से तो स्वाभाविकतया सम्बन्धित है।

पहुँच की सुगमता

यह निर्विवाद है कि कम पैसे और समय में मध्यभारत भर की जनता किसी भी स्थान से जब चाहे तब भोपाल सुगमता से पहुंच सकती है। उसी प्रकार जनता से शासन की पहुंच भी अति सुगम एवं स्वाभाविक हो जायगी, जो आज नहीं है।

जलवायु

भोपाल का जलवायु भी इतना अच्छा है कि प्रायः सभी ऋतुओं में राजधानी स्थायीरूप से वहीं रह सकती है ग्रीष्म ऋतु में उसे अन्यत्र कहीं ले जाने की आवश्यकता न पड़ेगी।

विशाल भवन

भोपाल में विशाल भवन भी प्रायः इतनी अधिक मात्रा में हैं कि राजधानी के एक भी कार्यालय के लिये कोई नया भवन बनवाने का व्यय नहीं करना पड़ेगा।

सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह होगी कि इस प्रकार इन्दौर और ग्वालियर की प्रादेशिक-भावना का अन्त हो जायगा और वह संभावित 'युद्ध' भी टल जायगा जिसके बादल आज मध्यभारत भर में मंडरा रहे हैं।

निश्चय ही भोपाल सब रोगों की एक दवा है।

वैधानिक अड़चन

आज यद्यपि भोपाल-राज्य मध्यभारत के अंतरगत नहीं है। तथापि जैसे अनेक देशी राज्य मध्यभारत में विलीन कर दिये गये हैं वैसे ही भोपाल राज्य भी विलीन किया जा सकता है। कहते है कि भूतपूर्व नवाब भोपाल से केन्द्रीय सरकार के रियासती सचिवालय ने ऐसा कोई 'सौदा या समझौता' कर लिया है जिसके फलस्वरूप भोपाल राज्य पांच वर्ष तक कहीं विलीन नहीं किया जा सकता। यदि वास्तव में ऐसा कोई 'सौदा या समझौता' हुआ है तो वह योग्य नहीं है। जब इन्दौर और ग्वालियर जैसे विशाल राज्य तुरंत विलीन कर लिये गये तब भोपाल को ही शीघ्र न करने का पक्षपात क्यों ? क्या भोपाल-राज्य-विलीनीकरण में देश-हित सर्वोपरि नहीं है ?

यह जान कर हमें प्रसन्नता हुई है कि यदि भोपाल की जनता का कल्याण उसे किसी पड़ोसी राज्य में विलीन करने में होता है तो उक्त कार्य में अपना पूर्ण सहयोग देने के लिए भोपाल के नवाब साहब तत्पर हैं। इस विलीनीकरण से ही भोपाल की जनता को जनतन्त्रात्मक प्रगतिशील प्रशासन का लाभ अविलम्ब मिल सकता है। इस विषय में जहां तक मैं समझता हूं किसी भी क्षेत्र में किसी को कोई शंका नहीं होगी। अगर होगी तो मुझे आशा है कि उसके दूर होने में देर नहीं लगेगी। अतएव मुझे पूर्ण विश्वास है कि भोपाल और मध्यभारत के एकीकरण में अब अधिक समय नहीं लगेगा।

— तख्तमल जैन
मुख्यमंत्री मध्यभारत

यदि देश-हित के आधार पर ही भोपाल राज्य विलीनकरण की अवधि पांच साल रखी जा सकती है तब उसी आधार पर वह अवधि घटाई भी तो जा सकती है ! नवाब भोपाल देश-हित में बाधक न होने का अवश्य परिचय देंगे !

अत मध्यभारत की जनता की मांग है .—

१—मध्यभारत की राजधानी भोपाल हो !

२—भोपाल का विलय मध्यभारत में हो !!

३—'प्रादेशिक युद्ध' का नाश हो !!!

★

नगर के बाहर से क्लान्त तथा म्लान मुख कौशल मे खींच लेते ही सन्यासी को शान्ति की कथा ज्ञात होती है। कौशल की वाग्दत्ता नोआखाली में घिर गई है। कौशल के पिता पहिले ही उधर जा चुके थे। किन्तु कौशल की दशा देख कर तथा जनसेवा के उद्देश्य से संन्यासी उसे लेकर उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्र की ओर रवाना हो गया। कौशल के पिता डा० सुरेश कलकत्ता से वेष बदल कर देहात में पहुँचते हैं और एक गुण्डे के यहां ही ठहरते हैं जिस के यहां अनेक युवतियाँ बन्द थीं। शान्ति भी कोठे के किवाड़ अन्दर से लगा कर कितने ही दिनों से उसी घर में पड़ी थी। वहां उन्होंने चतुराई से कुछ स्त्रियों को निकाला। उधर संन्यासी कौशल को ले कर उस क्षेत्रमें आ पहुँचा। इधर डा. सुरेश की शांतिके पितासे भेंट हो गई। दूसरी ओर सन्यासी व कौशल गुण्डे के मकान पर जा पहुँचे। वहां और भी बहुत सी अपहृत महिलाओं को ढूंढ निकाला।

[गताङ्क से आगे]

डाक्टर सुरेश भली भांति जानते थे, कि अभी अपना पता बता देने से क्या हो जावेगा। ऐसा भी हो सकता है कि वही सिपाही भीतर जाने के बजाय उन गुन्डों के हाथ सौंप दें जो अभी तक वहां बैठ कर अस्पताल में आग लगाने की सोच रहे थे।

"तुम भीतर आने दो" डाक्टर सुरेश ने कहा—"हम भीतर आकर सब काम बना लेंगे।"

"शौक से आयेगा।" सिपाही ने कहा —"मगर रियायत की उम्मेद न रखियेगा।"

तीनों भीतर पहुँचे। परन्तु द्वार पर फिर रुकना पड़ा।

× × ×

१२

अस्पताल में कुल चौदह स्त्रियां थीं कुछ तो केवल दुर्बल थीं, परन्तु बीमार नहीं थीं। वे स्नान न करने के कारण अस्पताल में पड़ी थीं, क्योंकि आने पर इतने सिपाही न थे जो थाने और अस्पताल दोनों की रक्षा कर सकते। अतएव इन्स्पेक्टर ने सारी स्त्रियों और स्वयं सेवकों को अस्पताल में ही रखवा दिया था। स्वयं सेवक और कुछ स्त्रियां एक कमरे में बैठे बातें कर रहे थे। अपने दु:ख की कहानियां। सभी की आंखों में आंसू थे। कौशल भी वहीं खड़ा था, द्वार पर। एक दो स्त्रियां रोगियों के कमरे में लेटी थीं। शान्ति की दशा अभी ठीक नहीं हुई थी अतः वह एक कमरे में थी। डाक्टर कम्पाउन्डर और सन्यासी भी वहीं थे।

शान्ति चुप चाप चारपाई पर पड़ी थी। उसकी आंखें बंद थीं। तीनों उसी की ओर देख रहे थे।

"आप की क्या राय है?" सन्यासी ने कहा।

"केवल कमजोरी है।" डाक्टर ने कहा—उपवास के कारण बहुत कमजोरी आ गई है। इन्जेक्शन के बाद देखिये क्या होता है?"

शान्ति ने आंख खोलीं।

"बेटी" सन्यासी ने कहा। उसकी आंखें फिर बंद हो गयीं।

"इसका कोई सम्बन्धी नहीं?"

"है क्यों नहीं, परन्तु यहां नहीं।" सन्यासी ने कहा।

"कोई जान पहचान का?"

"उसको बुलाइये" डाक्टर ने कहा

सन्यासी ने बताया कि जान पहचान का केवल कौशल है। संक्षेप में यह भी बतला दिया कि उसके आने से कुछ बुरा प्रभाव तो नहीं पड़ेगा।

"बुलाइये" डाक्टर ने कहा—"देखिये क्या होता है?"

तीनों बाहर आए। कौशल द्वार पर उत्सुकता से आया। उसकी आंखों में हजारों प्रश्न छुपे थे, परन्तु मुंह पर एक भी नहीं था।

"आप भीतर आइये।" डाक्टर ने कहा। दरवाजा बंद कर दिया गया बाहर आने पर डाक्टर, शैलेन्द्र और ड्राईवर खड़े मिले। वे लोग उनसे बातों में लग गये।

कौशल भीतर गया। पूरे तीन महीनेके बाद आज उसने पहली बार शान्ति को देखा। रोशनी में उसका मुरझाया मुख चादर से बाहर निकला था। आंखें बंद थीं। स्वप्नों की सुन्दर अप्सरा कितनी मुर्झाई हुई थी। कौशल उसके सिर के पास झुकके से कुर्सी पर बैठ गया। उसके सामने ही बगल में शान्ति का दुबला पतला हाथ पड़ा था। कौशल ने उसे अपने दोनों हाथों में धीरे से ले लिया। आंखों में आंसू भर आये।

उसकी विवश आंखें शान्ति के मुख पर थीं और उसका हाथ उसके हाथों में। लगभग दस मिनट बीत गये। दोनों के हाथों के स्पर्श से दोनोंका हाथ गीला हो गया। कुछ पसीना आ गया। परन्तु शान्ति का हाथ कौशल के हाथों में ही रहा।

'शान्ति" कौशल फड़फड़ाते होठों से कहता कहता रुक गया। उसका गला भर गया। शान्ति वैसी ही लेटी रही। और कौशल उसको देखता रहा। थोड़ी देर में शान्ति ने फिर आंखों को खोला।

"शान्ति।" कौशल ने अधीर होकर एकाएक कहा।

एकाएक! इतना अचानक! शांति ने क्या देखा। स्वप्न था, या जीता जागता संसार! असीम कमकी था, असीम आनन्द! शान्ति की दुर्बल आंखों में पानी भर आया। बेचैनी से उसने करवट बदली।

"मैं हूं शान्ति" कौशल ने भावुक शब्दों में रुक कर कहा। उसके हाथों में अब भी शान्ति का दायां हाथ पड़ा था। उसने उंगलियों से उसका आंसू पोंछ दिया। कुछ देर बंद गई।

यदि शान्ति बोल सकती, यदि कौशल कुछ कह सकता। कितनी करुणा जनक सारी बातें थीं। वे उस समय मिले, जब अपनी मन की भावनाओं को प्रगट भी नहीं कर सकते थे। जब शब्द अधरों के बाहर आने के नाम से कांप उठते थे। जब मूक नेत्रों में जल के अतिरिक्त मन के भावों को किसी और रूप में प्रदर्शित करना असाध्य हो गया था।

भयंकर आंधियों में वृक्ष गिरते गिरते कैसे बच जाते हैं। वायु के झकोरों से दीपक बुझते बुझते कैसे बच जाते हैं। महा सागर के नाविक टूटे पतवार से, टूटी नौका के बल पर किनारे कैसे लग जाते? कौन जानता था कि शान्ति में आज का यह अपार सुख सहने की भी शक्ति हो जायगी। उसका हृदय निराशाओं से टूक टूक हो गया था। परन्तु अब थोड़ी देर के लिये।

"शौ.. " शान्ति ने करवट बदलते हुए कहा। उसका मुंह कौशल की ओर हो गया। आंखें अभी बन्द थीं, गीली थीं।

"शान्ति" उसके बालों पर हाथ रख कौशल ने कहा—".. " इसके आगे वह क्या कहता। किस प्रकार अपने मन की व्यथाओं को प्रगट करता। एक शब्द के आगे वह और क्या कह सकता था।

शान्ति ने आंख खोलने की चेष्टा की तो दो चार आंसू के बूंद और टपक पड़े। कहां से आये थे आंसू। कब तक तो ये आंखें सूख गई थीं। बरसात की नदी की भांति बहती ये आंखें तो ग्रीष्म निराशा से कई दिन पहले सूख गई थी, आज फिर कहां से बादल उमड़ आये जो इनको भर गये।

यदि कौशल दो-तीन दिन पहले मिला होता तो क्या होता? इस बात को शान्ति के अतिरिक्त कौन जानता था। वह शून्य से मिलने जा रही थी, किन्तु अब उसका दामन किसने खींच लिया। फिर यदि उसे शून्य में मिलने का अवकाश होता तो ···! परन्तु आज जब वह यहां बीमार सी पड़ी थी, जब उसे अपने हृदय की व्यथाओं को बाहर निकालने का अवसर भी न था, वह एकाएक एक अजनबी की भांति शून्य में कैसे मिलने जा सकती थी। उसका हाथ कौशल के हाथों में था। उसने फिर आंख खोलने की चेष्टा की।

और कौशल ने फिर 'शांति' कहा। परन्तु उसके आगे · · ।

'आ गये·· ····' शांति ने आंसू भरी आंखों को खोलते ही अधरों को कठिनाई से खोला।

'मैं आ गया, शान्ति' कौशल ने रो कर कहा — 'मुझे देर हो गई ······।'

कौशल उसके बिलकुल पास कुर्सी पर बैठा रहा। उसका हाथ शान्ति के बालों पर था। उसके दांयें हाथ में शान्ति का बांया हाथ अब भी था। अपने रूमाल से उसने शान्ति का मुंह पोंछ दिया।

'रो ···।' वह कहना चाहता था इतना आंसू क्यों बहा रही हो। रो मत। परन्तु कहने के पहले वह स्वयं रो पड़ा।

'उफ्!' एक बार शान्ति ने कहा।

'शान्ति।' कौशल ने उसके पास अपना मुंह झुका कर कहा। और उसके दोनों हाथों को अपने हाथों में ले लिया।

लगभग नव बज रहे थे। ठीक उसी कमरे के बाहर डाक्टर सुरेश और शैलेन्द्र संन्यासी के साथ बाहर खड़े थे। उन्हें भलीभांति मालूम था कि इसी कमरे में कौशल और शान्ति थीं।

× × ×

चारों ओर निस्तब्धता। यदि कौशल का ध्यान बाहर की ओर जाता तो उसे सुनने मिलता, संन्यासी और शैलेन्द्र की बातचीत सुनाई देती। वे लोग कमरे के बाहर ही आपस में कुछ कुछ बातें कर रहे थे। दूर गुण्डे अब भी नारे लगा रहे थे, और इसका अर्थ था कि अस्पताल पर कभी भी उनका आक्रमण हो सकता था। डाक्टर अब लौटने जाने लगा। अतः एक बार फिर आया। धीरे से कमरा खोला। कौशल का ध्यान उस ओर नहीं गया। वह धीरे से पास आकर खड़ा हो गया। उसके हाथों में कुछ औषधि थी। उसने एक बार शांति को देखा। औषधि कौशल को दे दी।

'मैं अब जा रहा हूं।' डाक्टर ने कहा — चिन्ता की कोई बात नहीं। आप तो यहीं रहेंगे?'

कौशल ने सर हिलाते हुए 'हां' कह दिया।

डाक्टर बाहर आया। शैलेन्द्र ने चुपके से उसके मुंह की ओर देखा कुछ कहा नहीं। डाक्टर समझ गया।

'आप लोग अब आराम कीजिये?' डाक्टर ने कहा — 'चिन्ता की कोई बात नहीं। अब रात अधिक होती जाती है। कल तक सब ठीक हो जायेगा। चिन्ता की कोई बात नहीं।'

स्वयंसेवकों ने कुछ खाने-पीने का प्रबन्ध किया था। किसे अच्छा लगता था खाना। सब को थोड़ा-थोड़ा बांट दिया। किसी ने खाया, किसी ने नहीं। वह रात भी बितानी थी। संन्यासी स्वयं आया और कौशल को कुछ चाय और टोस्ट दे गया। परन्तु वह खिड़की पर पड़ा ही रह गया।

रात बीतने लगी। दस ग्यारह और बारह भी बज गये। चारों ओर सुनसान। लैम्प का प्रकाश कमरे में था। कौशल उसी प्रकार कुर्सी पर बैठा रहा। उसकी आंखें उसी प्रकार शांति के ऊपर बिछी हुई थीं। शांति चुपचाप लेटी थी। उसकी हालत कुछ अच्छी थी। आज इस कुसमय में वह क्या नहीं कहना चाहती थी। कौशल भी कहना चाहता था। परन्तु इन दोनों दिलों की लम्बी दास्तान कैसे प्रारम्भ हो, किस प्रकार उसको शब्दों में वे व्यक्त करें। सैकड़ों बातें दिमाग में गूंज रही थीं, एक दूसरों से अधिक आवश्यक, अधिक सुखद और अधिक कष्टप्रद। शान्ति सोच रही थी। कौशल के सामने शान्ति थी। बस। इससे अधिक वह कुछ नहीं सोच रहा था। उसके प्रत्येक तन्त्रियों का संचालन, उसकी प्रत्येक करवट, उस के प्रत्येक सांस स्वर, केवल वे ही सब उसके कानों में थे। दिल में थे और मन में थे। इसके परे कुछ नहीं। आज उसके आंखों के सामने उसके हृदय की भावनाओं की अनन्त राशि पड़ी थी, इससे अधिक उसे क्या चाहिये। अजगर की भांति वह अपनी इसी अनमोल निधि को देख रहा था। कब वह अच्छी होगी?

कौशल आ गया। यह वह जानती थी। यह शान्ति की कामना थी। किस व्यग्रता से वह प्रतीक्षा कर रही थी। वह आंखें खोल कर उसे देखना चाहती थी, कुछ कह देना चाहती थी, परन्तु विवश थी। यह बात नहीं थी कि दुर्बलता के कारण कुछ कह न सके, या नेत्रों में आंसू भर आने के कारण देख न सके। वरन् कैसे कहे? क्या कहे? यही समस्या थी। वह यह समझती थी कि आज मैं कौशल से अन्तिम बार मिल रही हूं। वह इन दिनों सर्वदा यही सोचती थी। इसकी कामना वह थी। वह इससे अधिक कुछ नहीं सोचती थी। एक बार सब कुछ कह कर वह सर्वदा के लिए विदा हो जाना चाहती थी। इससे अधिक उसे और क्या आशा थी? जब उसने चौथे दिन अपने जन्मी गृह में बैठ कर उसे पत्र लिखा तो क्या सोचा?

लेकिन आज न तो मुंह में शब्द थे, न साहस न शक्ति।

क्या वह सोच रही थी। यह कहना कठिन है। जब सोचना कुछ छायामय बन जाता है, तो स्वप्न सा प्रतीत होता है। आज जब वह किन्हीं भी कारणों से बात करने में असमर्थ थी, तो किस व्यग्रता के साथ सोच रही थी।

उसने पत्र लिखना समाप्त किया। और उस लड़की से कहा—"इसको तुम उन्हें दे देना। एक दिन, दो दिन बीत गये। दीवार पर छः लकीरें ही अभी पड़ीं थी। और कल वह आवेगा। सूरज निकला तो शान्ति के मन में प्रसन्नता का प्रकाश फैल गया। वह आज आवेगा अब आज आवेगा।

'मैं कहती थी न, तुम आज आओगे?' शान्ति ने उस दिन ठीक यही सोचा था कि कौशल के आने पर मैं यही कहूंगी।

'मुझे देर हो गयी' कौशल यही उत्तर देगा, उसे विश्वास था।

'सचमुच देर हो गयी, अब क्या होगा?' शान्ति यही कहती।

'देर तो हुई, मगर अन्धेर नहीं।' शांति सोचा करती थी शायद कौशल यही कहे—'यह कैसे हो सकता है कि तुम मुझसे अलग रहो।'

'लेकिन अब पास पास भी कैसे रहेंगे?' शान्ति कहती—'मैं नहीं चाहती कि आपको मेरे कारण समाज में····'

इसके बाद वह क्या कहती, वह सोच भी नहीं सकती थी। क्या समाज में मेरा अधिकार नष्ट हो गया। क्या मैं सब कुछ खो चुकी। क्या अब इस घोर तिमिर में कोई प्रकाश नहीं। मगर इसमें मेरा क्या दोष? शान्ति सोचती, मैंने अपने प्राणों की बाजी लगा कर अपने मान मर्यादा और सतीत्व की रक्षा की है। मैंने तो अपना कर्त्तव्य पालन किया। परन्तु इसके बाद भी फिर—

परन्तु इस समय वह कुछ भी नहीं सोचती थी। वह यही सोचती थी। कौशल आ गया। क्या हुआ जो देर से आया। अब किन शब्दों में उससे विदा लूं।

'कौश·········' लगभग एक बजे रात को शान्ति ने कहा। उसका गला भर गया था। उसने जीवन में कभी भी उसे इस प्रकार सम्बोधित नहीं किया था नाम लेकर।

'शान्ति।' कौशल ने तुरन्त कहा। उसका मुंह शांति के मुंह से लगभग एक बालिश्त की दूरी पर था। शांति ने फिर कुछ नहीं कहा। कौशल उसे उसी प्रकार देखता रहा। उसे इतना विश्वास हो गया कि यदि मैं कुछ कहूंगा, तो शान्ति सुन सकेगी और वह सोचने लगा क्या कहूं?

'तबीयत कैसी है।' कौशल ने पूछा उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना धीरे धीरे कहता गया—'कुछ बोलो, मैं तुमको लाने आया हूं।'

शान्ति ने इन शब्दों को सुना। वह जानती थी कौशल यही कहेगा। मगर कहां ले जायगा वह। डाक्टर सुरेश इस को कैसे सहन कर सकते हैं। वह निराशा के बादल अभी भी छाये थे। उसके सामने से उस शून्य महासागर का दृश्य वैसे ही प्रत्यक्ष रूप से पड़ा था।

'अब जाओ।' सांस लेकर शांति ने कहा। फिर चुप हो गयी।

'ऐसा कौन कह सकता है?' कौशल के आंखों में आंसू भर गया। सचमुच ऐसा कैसे हो सकता था। उसके स्वप्नों का सुन्दर संसार इतनी जल्दी कैसे मिटाया जा सकता था।

शांति की आंखें अभी बन्द ही थीं। उसके कानों में कुछ जल भर आया था। वह कौशल से परिचित थी। उसके हृदय की तन्त्रियां क्या कह रही हैं, उसे वह भी ज्ञात था। मगर यही उसके लिए अधिक था। क्या वह जी कर उसके जीवन का भार नहीं बन जायगी। माना, उसे भी इससे कुछ सुख ही प्राप्त हो, परन्तु समाज की कठोर आंखों की ताड़ना वह कैसे सह सकती है। उसे यही कष्ट था।

रात तो बीत ही जायगी। सुबह क्या होगा, उसके बाद क्या होगा? वह सोच कर शांति व्यग्र हो उठी। कौशल बिलकुल उसके पास था। इससे उसे कुछ ढाढ़स था। परन्तु चिन्तायें अभी उसी प्रकार बनी थीं।

सूरज निकलने में अभी काफी देर थी। सारी रात बैठे बैठे कुछ थक-सा गया था। शांति रात में एक दो बार बोल चुकी थी और उसे पहचान भी लिया था, इसलिए कौशल को कुछ आराम-सा मिला। वह अब उतना व्यग्र न था।

'कौशल!' डाक्टर सुरेश ने धीरे से पूछा।

वह चुपके से खड़ा हो गया। कुछ आश्चर्य मिला और कुछ भय भी, क्योंकि वह डाक्टर सुरेश की आज्ञा के विरुद्ध ही यहां आया था। वह कुछ बोल न सका। एकाएक अपने पिता को देख कर उसे मानो कुछ विश्वास ही नहीं हुआ।

रात की अधियारी कुछ-कुछ साफ होने लगी। एकाएक कमरे में संन्यासी, शैलेन्द्र और एक दो स्वयं सेवक भी आ गये। सभी सुबह होने की प्रतीक्षा में बैठे थे। एक एक पल कितनी परेशानी से अब तक बिताया था। शांति की अभी आंखें बन्द थीं। कमरे में आदमियों की कितनी संख्या थी। उसे ठीक पता न था, पर बहुत से आदमी आ गये थे उसे इतना अवश्य ज्ञात था। उसे इतना नहीं मालूम था कि इन आदमियों में उसका पिता शैलेन्द्र और डाक्टर सुरेश भी थे।

चारों ओर सबके मुख पर एक निस्तब्धता थी। बगल में कोने में शैलेन्द्र था चुप चाप खड़ा। उसके मुंह पर कितनी मिश्रित रेखाएं थीं, उसका शब्दों में वर्णन करना कठिन है। वह इतना सोच चुका था, इतना व्याकुल हो चुका था, कि साधारण नेत्रों में वह विमूढ़ सा प्रतीत होता है। अपना सब कुछ खो

[शेष पृष्ठ १८ पर]

कच्छ के भारतीय प्रदेश में ★ ★ ★

हिन्दुओं पर पुनः संकट : भारत तथा अफगानिस्तान से भय : भारत में सैनिक गुप्तचर : अमरीका के हवाई अड्डे : 'हिन्दु महासभा पर प्रतिबन्ध

पूर्वी बंगाल से प्राप्त होने वाले समाचार उस प्रकार की घटनाओं में वृद्धि के ही समाचार देते हैं जिनका उल्लेख हमने गत सप्ताह किया था। हिन्दुओं के जीवन को पुनः भय उपस्थित होगया है। लूट पाट की घटनायें बढ़ती जा रही हैं। स्वयं पूर्वी बंगाल की राजधानी ढाका में इस प्रकार की घटनायें होने के कारण साम्प्रदायिक तनाव काफी बढ़ गया है।

नई दिल्ली में प्राप्त हुए समाचारों से ज्ञात हुआ है कि ढाका में मुसलमानों ने हिन्दु घरों में बलपूर्वक घुसने का प्रयत्न किया। महाजहानपुर और वरिवातुली नामक मोहल्ले में इस प्रकार की घटनायें गत कई दिवसों से हो रही हैं। एक हिन्दु के घर में घुसकर महिलाओं के आभूषण छीने जाने क भी समाचार मिले हैं। नगर में लगी धारा १४४ को तोड़कर मुसलमानों ने एक जुलूस निकाला और हिन्दु विरोधी प्रदर्शन किए एवं नारे लगाये।

× × +

पता चला है कि पूर्वी बंगाल में इस हिन्दु विरोधी उत्तेजना के बढ़ने के दो प्रमुख कारण हैं प्रथम तो वहां के मुसलमानों में यह प्रचार किया जा रहा है कि भारत जाने वाले मुसलमानों के साथ बुरा व्यवहार किया जा रहा है। दूसरे काश्मीर को जीतने के लिए उनके धार्मिक जोश को उभाड़ा जा रहा है।

काश्मीर के प्रश्न को लेकर समस्त पाकिस्तान में ही मतान्धता का भारी प्रचार किया जा रहा है। जेहाद का नारा तो साधारण बात बन चुकी है। केवल काश्मीर ही नहीं सारे हिन्दुस्थान पर अधिकार करने की भावना प्रसारित की जा रही है। हाल ही में स्थापित हुआ नवीन दल 'हिन्दुस्थान हमारा' केवल इन्हीं भावनाओं का प्रगटीकरण है। यह भी ज्ञात हुआ है कि उपरोक्त दल अधिकारियों के संकेत और सहायता पर बना है।

× × ×

पाकिस्तान में होने वाले सैनिक षडयंत्र की जड़ें बहुत गहरी प्रतीत होती हैं। हाल में पुन. एक प्रमुख सैनिक अधिकारी मेजर जनरल नजीर अहमद को उक्त षडयंत्र में भागी होने के कारण बन्दी बना लिया गया है। यह विचार की बात है कि पाकिस्तान स्थापना के इतने अल्पकाल में ही इतनी व्यापक राज्यक्रांति की योजना और वह भी विशेष कर सैनिक अधिकारियों द्वारा ही तैयार की गयी। क्या पाकिस्तानी सेना में कम्यूनिस्टों का प्रभाव इतना अधिक है? यह बात भी कुछ विचार करने की है कि पाकिस्तान सरकार इन लोगों पर खुला मुकदमा नहीं चला रही। कारण कुछ भी हो किन्तु यह स्पष्ट है कि श्री लियाकत अली इस 'षडयंत्र' की पृष्ठभूमि से पाक जनता और शेष संसार को परिचित नहीं होने देना चाहते। आखिर क्यों? यदि वे कम्यूनिस्ट हैं और उन्होंने देशद्रोह की योजना बनाई थी तो इसमें छिपाने की कौनसी बात है?

× × ×

ज्ञात हुआ है कि अमेरिका को अपनी ओर खींचने के लिए पाकिस्तान ने पेशावर क्षेत्र में रूस की सीमा के पास पर्वतीय प्रदेश में हवाई अड्डे बनाने की सुविधा उसे दी है। अनुमान है कि ये अड्डे चोर और चित्राल के प्रदेश में मिर्जाकलाई, बराई, गराई, तथा चकाई आदि स्थानों पर बनाये गये हैं। अभी तक बने अड्डों की संख्या आठ बताई जाती है। इनको सैनिक सामान पहुंचाने का आधार मलकंद के पास दरगाई में बनाया गया है। दरगाई शहर को पेशावर से रावलपिंडी जाने वाले मेन लाइन पर नौशेहरा से ब्रांच लाइन जाती है और यह उत्तर का सबसे अन्तिम स्टेशन है। इस क्षेत्र में दिखाई पड़ने वाले अमरीकनों के विषय में अधिकारियों ने यह कह दिया है कि वे खनिज पदार्थों की खोज करने तथा पाकिस्तानियों को वायुयान चलाने की शिक्षा देने के लिए आये हैं।

× × ×

यह रहस्य तब खुला जब पाक सरकार विरोधी षडयन्त्र के बहाने नौशेहरा में गिरफ्तारियां हुईं। कुछ लोगों का कथन है कि पाकिस्तान के जिन सैनिक अधिकारियों को बन्दी बनाया गया है वे इसके विरुद्ध थे। इसके विरोध के अग्रणी पाकिस्तान सेना के भूतपूर्व चीफ आफ स्टाफ मेजर जनरल अकबर खां थे। उन्होंने कड़े रूप से अमरीकियों को हवाई अड्डे बनाने के लिये स्थान देने का विरोध किया जहां से रूस बहुत निकट पड़ता है। पाक सरकार के सामने राजनीतिक कारण अधिक प्रबल थे और इसलिये सैनिक अधिकारियों का यह विरोध भारी अनुशासन हीनता समझी गई और इसमें सरकार के उलटने का षडयंत्र दिखाई दिया। फलस्वरूप मेजर जनरल अकबर खां तथा अन्य अधिकारी बन्दी बना लिए गए।

× × ×

अमेरिका द्वारा कोरिया में सेनायें भेजने की मांग को पाकिस्तान सरकार ने अस्वीकार कर दिया। ज्ञात हुआ है कि सुरक्षा विषयक कारणों को आड़ लेकर तथा भारत के मत्थे दोष मढ़ कर यह किया गया है। यह भी पता चला है कि पाक सरकार ने अमरीकी सरकारको यह सूचित किया है कि पाकिस्तान के सम्बन्ध अपने दोनों पड़ोसी, अफगानिस्तान तथा भारत से अच्छे नहीं हैं और उसे आक्रमण का भय है। काश्मीर को लेकर तनाव बढ़ता जा रहा है। पाक सरकार को भय है कि भारत कहीं काश्मीर में आक्रमणात्मक कार्यवाही न आरम्भ कर दे। ऐसी स्थिति में सेना का एक भाग कोरिया भेज सकना पाकिस्तान के लिए सम्भव नहीं है। यह भी ज्ञात हुआ है कि पाक सरकार ने अमरीकी सरकार को यह सूचित किया है कि काश्मीर समस्या के ठीक ढंग से हल हो जाने के पश्चात सम्भवतः वह इस मांग पर विचार कर सके।

× × ×

इसी प्रकार अफगानिस्तान का उल्लेख करते हुये लिखा बताया जाता है कि पाक सीमा में पठानों को भड़काने और पख्तून विद्रोह कराने के प्रयत्नों में अफगान सरकार का हाथ है। अफगानिस्तान चाहता है कि इस प्रकार पठानों को भड़का कर पाकिस्तान के कबाइली क्षेत्र पर स्वयं अधिकार करले। ऐसी स्थिति में उस क्षेत्र में सेना की एक बड़ी संख्या रखने के लिए पाकिस्तान बाध्य है। उसे भय है कि इस प्रश्न पर अफगानिस्तान से तनाव कहीं अधिक न बढ़ जावे।

पूर्वी बंगाल के विषय में भारत से भय की भारी सम्भावना प्रकट की गयी बताई जाती है। इस सम्बन्ध में गतवर्ष का उल्लेख करते हुए कहा बताया जाता है कि भारत ने आक्रमण की पूरी तैयारी कर ली थी, किन्तु अमरीकी राजदूत के प्रयत्नों से दिल्ली समझौता हो गया। भारत में पाकिस्तान को समाप्त करने की इच्छा वाले दल पनप रहे हैं। ऐसी स्थिति में सेना का एक बड़ा भाग पूर्वी पाकिस्तान की सीमा रक्षा के लिए रखना अनिवार्य है। अतः कोरिया के लिए सेना भेजना सम्भव नहीं।

× × ×

भारत में पाकिस्तानी गुप्तचरों के अधिक सक्रिय हो उठने के समाचार मिले हैं। काश्मीर को लेकर पाकिस्तान भारत से युद्ध करने की दृष्टि से तैयारी कर रहा है। इसी दृष्टि से पाकिस्तानी गुप्तचरों की गतिविधि भारत के सैनिक रहस्यों का पता लगाने की दिशा में ही विशेष रूप से बढ़ी है। भारत में विभिन्न सैनिक केन्द्रों के आसपास इस प्रकार के संदेह जनक व्यक्ति दीख पड़े हैं और कुछ को तो सन्देह में बन्दी बनाया गया है। हाल ही में जालन्धर छावनी में फौजी बैरिकों के निकट घूमते हुए एक मुसलमान को सन्देह जनक स्थिति में गिरफ्तार किया गया है। पूछताछ पर उसने स्वीकार किया है कि वह पूर्वी पाकिस्तान में चटगांव का निवासी है। सैनिक पुलिस ने उसे छावनी पुलिस के सिपुर्द कर दिया है। उसके पास भारत आने का कोई अनुमति-पत्र नहीं है।

× × ×

गत शनिवार को फरीदपुर जिले में आयी हुई आंधी में ३०० से अधिक व्यक्तियों के प्राणनाश और १२०० के लगभग के घायल होने का समाचार मिला है। जिन पांच गांवों को विशेष क्षति पहुँची है वे हैं : बराडी, हरिरामपुर, दामोदरदी, भद्रकांड और लक्ष्मीनारायण। ये सभी पूर्णत. नष्ट हो गये हैं।

यह इसी प्रकार का इस क्षेत्र के ऊपर आने वाला दूसरा तूफान है। पिछला तूफान २२ अप्रैल को आया था जिसमें सात मरे थे तथा दो सौ के लगभग व्यक्ति घायल हुए थे। पूर्वी बंगाल की प्रान्तीय सरकार ने अविलम्ब सहायता की व्यवस्था की है।

× × ×

पूर्वी पाकिस्तान में बंगाली तथा गैर बंगाली मुसलमानों में तनाव बढ़ता जा रहा है। बंगाली मुसलमान यह अनुभव करने लगे हैं कि शेष पाकिस्तान के मुसलमान उन पर बलपूर्वक शासन करना चाहते हैं। पाकिस्तान के प्रस्तावित संविधान के प्रकाशित होने से यह बात और भी स्पष्ट हो गई। अतः यह विरोध और भी बढ़ गया है। पूर्वी पाकिस्तान के सभी महत्वपूर्ण पदों पर पंजाब के मुसलमान अधिकारी हैं यह बात बंगाली मुसलमानों को बहुत खटकती है। इसी प्रकार के तनाव के फलस्वरूप बोगरा (पूर्वी पाकिस्तान) में बंगाली तथा गैर बंगाली मुसलमानों में झगड़ा हो जाने के कारण कर्फ्यू लगा दिया गया

[शेष पृष्ठ २० पर]

मुख्या प्रभाकर परीक्षोपयोगी—

हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद और छायावाद

★ पं० भवानीशंकर त्रिवेदी

सामान्य विचार पद्धति में जिसे साम्यवाद कहते हैं, वही साहित्यिक रूप ग्रहण करने पर 'प्रगतिवाद' के नाम से पुकारा जाता है। यों स्थूल रूप से इसका जन्म सन् १९३२ में योरोप में हुआ था, तथा १९३६ में भारत में हुआ। इसी वर्ष श्री प्रेमचन्द जी के सभापतित्व में प्रगतिशील लेखकों का एक सम्मेलन हुआ था। प्रगतिवाद कोई एक अद्भुत या जन-सामान्य के लिए गुह्यवाद नहीं, प्रत्युत वह तो साधारण जनता के हृदय की पुकार ही है। आज पूंजीपति श्रमिकों के शोषित का शोषण कर स्वयं सम्पूर्ण सम्पत्ति को हड़प लेना चाहता है। फलतः परिश्रम करने वाले को अपने काम का पूरा फल दिलाने के लिए और प्रत्येक व्यक्ति से पूरा परिश्रम लेने के लिए ही साम्यवाद का प्रचार हुआ है। पिछले दस-बारह वर्षों से साहित्य में भी यही विचार उत्तरोत्तर प्रमुख पद प्राप्त करता जा रहा है।

इससे पूर्व साहित्य छायावाद की छाप में सुख-स्वप्न देख रहा था। उसमें व्यक्ति की आशा-अभिलाषा, निराशा और वेदना तो अवश्य व्यक्त हो रही थी। किन्तु उसमें समाज के सुख दुःखों को कहीं स्थान न था। छायावादी रचनाओं ने खड़ी बोली के अक्खड़पन को दूर कर कविता के लिए कोमल कान्त पदावली तो प्रस्तुत करदी, पर वह संस्कृत के सुललित पदों पर आश्रित होने के कारण जन-सामान्य की पहुँच के परे की वस्तु बन गयी। फलतः कार्ल मार्क्स के दार्शनिक सिद्धान्तों के आधार पर प्रगतिवाद पनपने लगा।

यूं साहित्य में सदा कोई न कोई दार्शनिकवाद प्रधान रहता है। अद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि सभी पुराने दार्शनिक सिद्धान्त मनुष्य को आत्मचिन्तन या भक्ति में लगाने वाले हैं। वे उसे संसार से दूर भगाते हैं। पर मार्क्स का दर्शन मनुष्य में संसार को बदलने और उसे अनुकूल बनाने की भावनायें भरता है। इसलिए प्रगतिवादी कहता है कि 'हमें' परलोक नहीं प्रत्युत इस लोक को सुधारना है। साहित्य के द्वारा स्वर्गीय गीत नहीं सुनाना, प्रत्युत कविता में इस लोक की कहानी कहना है। आदर्शों या धार्मिकता में पड़ कर अपने दुःख, दैन्य और दोषों की दुर्गन्ध को अपने अन्तर में ही नहीं सड़ने देना, प्रत्युत अपनी सब विकृतियों को प्रकट कर स्वच्छ वातावरण प्रस्तुत करना चाहिए। कवि को केवल अप्सराओं के नूपुरों के सरस रव में ही तन्मय न हो कर दीन, दुःखी और पीड़ितों की कष्ट-कथा कहने और सुनने के लिए तत्पर हो जाना चाहिए। बालकृष्ण शर्मा, नवीन भगवती चरण वर्मा, उदयशंकर भट्ट आदि की रचनाओं में ऐसी भावनाएं प्रकट हुई हैं। प्रगतिवादी की दृष्टि में संसार की साम्राज्यशाही का इतिहास एक अत्यन्त ही तुच्छ और गर्हित युग का प्रतिबिम्बित्व करता है। प्रगतिवादी सुधार में नहीं, बल्कि नव निर्माण में विश्वास रखता है। बालकृष्ण शर्मा नवीन का "कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल पुथल मच जाए" इत्यादि कविता प्रगतिवाद के विचारों को ही प्रकट करती है।

> आ कोकिल बरसा पावक कण,
> नष्ट-भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन।
> पावक-पग धर आवे नूतन,
> हो पल्लवित नवल जनजीवन।

पंत की इस रचना में भी प्रगतिवाद स्पष्ट लक्षित होता है।

छायावादी कवि अपने ही सुख-दुःख के रोने रोता है और समाज को भी अपने आंसुओं की धारा में बहा देना चाहता है। वह स्वयं समाज की करुणा के प्रवाह में नहीं बहता, किन्तु प्रगतिवादी समाज के सुख-दुःखों को अपने सुख-दुःख समझता है।

बच्चनः—'मैंने भी जीवन देखा है' इत्यादि निशा-निमन्त्रण, एकांत संगीत, आदि में संगृहीत ऐसी रचनाओं के द्वारा अपने ही भावों या अभावों को समाज की अनुभूति में उतारना चाहता है। किन्तु आगे चल कर यही बच्चन 'बंगाल के अकाल' में पूरे प्रगतिवादी के रूप में प्रकट होते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि जहां एक ओर छायावादी कवि आत्म-चिन्तन में विश्वचिन्तन का अनुभव करता है, वहां प्रगतिवादी कवि विश्वचिन्तन में ही आत्मा की पुकार सुनता और सुनाता है। छायावादी सुकोमल और रसिक कवि अत्यन्त कोमल कांत पदावली में अपनी मृदुल तूलिका से अत्यन्त पेशल चित्र अंकित करता है। उसकी भाषा और भावनायें छुई-मुई से भी कोमल प्रतीत होती हैं। इसीलिये वह भी समाज की जर्जर अवस्था का चित्र खींचता भी है तो भी भाषा की पेशलता के कारण उसमें सजीवता और वास्तविकता नहीं आ पाती। पंत जी के 'परिवर्तन' की अनेक पंक्तियां पल्लव के अतिशय कोमल होने के कारण परिवर्तन के उद्दाम और विकट बवंडरों से परिपूर्ण भयंकर रूप का स्पष्ट चित्रपट नहीं अंकित कर पातीं। इसके विपरीत उदयशंकर भट्ट, जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द आदि प्रगतिवादी कवियों की भाषा आवश्यकतानुसार यथासम्भव विकट भावों को प्रकट करने के लिये परुष, कठोर और विकट रूप धारण कर लेती है। प्रगतिवादी नवीन सृष्टि का निर्माण चाहता है। इसलिये वह समाज के रूढ़ि सावनों के साथ भाषा, भाव, छन्द आदि के साहित्यिक बन्धनों को भी तोड़ फेंकना चाहता है। अपने विचारों को मूर्त रूप देने के लिए वह पुरानी उपमाओं और रूपकों के चक्कर से निकल कर मशाल, लोहा, प्रलय आदि नई नई उपमाओं का प्रयोग करता है।

प्रगतिवाद के गुण दोष

इस प्रकार पीड़ितों की कष्ट कथा कह कर तथा दलितों के दुःख दैन्य का दर्शन करा कर समाज में क्रान्ति उत्पन्न कर देना चाहता है— एक उथल-पुथल मचा देना चाहता है। किन्तु ऐसा करते हुए वह अनेक आवश्यक व जनहित के लिए उपयोगी तत्वों को ठुकरा देता है। जैसे कि वह [illegible] प्राचीन आर्य संस्कृति [illegible] रहस्यवाद और गांधी के राम शब्द से भी घृणा प्रकट करता है। साम्राज्यशाही के नाम पर ही विलासिता की कथा कह कर वह वाल्मीकी और कालिदास के रामायण और अभिज्ञान-शाकुन्तल सरीखे काव्यों को भी तिरस्कृत करने का साहस करता है। वह यथार्थवाद के नाम पर भाई-बहिन का वासनामिक पारस्परिक प्रेम दिखाने में भी संकोच नहीं करता। समाज के हेय और कुत्सित अंगों के प्रदर्शन में वह गौरव का अनुभव करता है। वह समाज के निम्न वर्ग को प्रोत्साहित कर उच्च वर्ग के प्रति घृणा का भाव फैलाता है और इस प्रकार वर्ग द्वेष के बीज बोता है। प्रगतिवादी कलाकार स्वयं तो विलासिता का पुतला और बड़ा ही छैलछबीला है। पर पाखंड रचता है, दुःखियों की करुणा कथा कहने का। वह अपने भारतीय की भावनाओं को छोड़ कर रूस के लेनिन और स्टालिन के गीत गाता फिरता है। इस प्रकार आधुनिक प्रगतिवाद के अनेक दोष दिखाए जा सकते हैं। यूं दरिद्र नारायण के दुःख-दैन्य का बखान और दलितों को उत्थान की ओर ले जाने की बात को भला कौन अच्छा नहीं कहेगा। पर किसी वाद विशेष में बंध कर या किन्हीं

(शेष पृष्ठ २० पर)

[पृष्ठ १९ का शेष]

देने के बाद, मान और मर्यादा छूट जाने के पश्चात्, अपने सम्बन्धियों के बीच में मनुष्य कैसेक्या रहता है? ठीक यही प्रकार शैलेन्द्र क्या सोच भी नहीं सकता था। उसके समक्ष ही आन्ति चारपाई पर पड़ी थी। वह उसके बारे में भी कुछ नहीं सोच रहा था। बहुत सोच चुका था, अब प्रश्न एक ही था। जी कर क्या करेंगे, कैसे रहेंगे, और कहां रहेंगे। अपने सम्बन्धियों के बीच में कैसे मुंह दिखायेंगे। यह बात नहीं थी कि शैलेन्द्र ने कोई पाप किया था, अत्याचार किया था, या व्यभिचार किया था। फिर भी उसको अवस्था में एक साधारण हिन्दू यही सोचता।

शैलेन्द्र के मन व्याख्या अत्यन्त कठिन है। जब किसी का सैन कट जाता है, तो वह क्या सोचता है। उसे एक एक पराजय यही एक समस्या नहीं रहती, क्या खायेंगे या कैसे निर्वाह होगा वरन एक पराजय का अनुभव होता है जिसे महान ग्लानि होती है। फिर सामने शांति पड़ी थी। उसका क्या होगा।

उसका क्या होगा? यह एक साधारण प्रश्न नहीं था।

उसके सामने कौशल भी खड़ा था, उसका पिता भी था। परन्तु इन तीन सप्ताहों के बाद, इन तीन ऐतिहासिक सप्ताहों के उपरान्त शैलेन्द्र को कौशल और डाक्टर सुरेश से क्या आशा रह गई थी। कुछ नहीं। वह आशा भी नहीं कर सकते थे।

— क्रमशः

●

[पृष्ठ ११ का शेष]

दमा चलाये गिरफ्तारी की, सुप्रीमकोर्ट ने कई अखबारों पर लगे प्रतिबन्ध को गैर कानूनी माना। मद्रास में दलित जातियों के साथ विशेष रियायत भी प्रतिबन्ध ठहराई गई। इन सब बातों को देखते हुए प्रधानमंत्री पं० नेहरू ने संसद में संविधान में कुछ संशोधन उपस्थित किये हैं, जिनकी चर्चा गत अंक में की गई थी। सब परीक्षार्थी उन्हें अवश्य पढ़ें। संसद ने इन संशोधनों को प्रवर समिति के विचारार्थ दिया है।

इस लेख में प्रान्तों (नये नाम के अनुसार राज्यों) का विधान नहीं बताया गया। राज्यों के प्रमुख शासक राज्यपालों की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है। वह किसी राज्य के कार्य पर नियंत्रण भी कर सकता है। राज्यपाल को निर्देश कर सकता है राज्य का शासन अपने हाथ में नियत समय के लिए ले सकता है। प्रत्येक राज्य में धारासभा के प्रति उत्तरदायी मंत्रिमंडल होगा। संविधान में राज्य और केन्द्र के कार्य क्षेत्रों का विभाजन भी किया गया है।

———

संतोष भैया और साधना की कहानी

नाम था उसका संतोष। प्यार से सब सन्तोष भैया कहते थे। हंसता तो फूल झड़ते थे। पतले-पतले होंठ, गुलाबी गाल, छोटी-सी नाक, कचनार जैसे लम्बे-लम्बे बाल गरदन पर लटकते थे। कैसा अच्छा है सन्तोष भैया, सब कहते थे। छोटे-छोटे पैर, फिर भी बड़ा तेज दौड़ता था वह सन्तोष! करोलबाग से नई दिल्ली और नई दिल्ली से करोलबाग। साइकिल चलाने सीख रखी थी। बड़ी अच्छी थी, छोटी-सी उसकी साइकिल, जैसे हवा से बातें करती हो। मजाल थी कि फिर उसे कोई पकड़ ले। छोटा सा वह सन्तोष भैया! बड़ा नटखट था, बड़ा ऊधमी था।

सन्तोष भैया पढ़ना-लिखना नहीं था, उसे पढ़ना अच्छा ही नहीं लगता था। साइकिल पर चढ़ना उसे भाता था। कहा करता—"साइकिल की दौड़ में इनाम मारा करूंगा और खूब मिठाई उड़ाया करूंगा।" मां चिल्लाती, पिताजी डांटते, मास्टरजी झिड़कते, बुआजी गुर्राती। कहतीं—"कमबख्त, थोड़ा-बहुत तो पढ़ ले। फिर किस-किस के सामने हाथ पसारेगा!" वह किसी की नहीं सुनता और ले अपनी नन्ही-सी साइकिल घूमने निकल जाता। उसने एक गीत भी सीख रखा था। घूमते २ उसे ही गाया करता—

आहा! आज क्या अच्छा होगा?
चढ़ जाते हम बादल पर।
जब हो जाता बन्द मदरसा,
तब हम आते वापिस घर॥

एक थी सन्तोष भैया की बहिन। नाम था साधना। साधना सन्तोष भैया से बड़ी थी। उसने दो अक्षर सीख लिये थे, सो सन्तोष भैया से बड़ी शान बघारती। कहती—"पढ़ता नहीं कमबख्त! मैं अब खूब पढ़ गई हूं और भी पढ़ जाऊंगी। फिर स्कूल में पढ़ाया करूंगी! पुष्पा दीदी की तरह मैं भी मास्टरनी बनूंगी और तू रहेगा मेरा नौकर। मैं खाया करूंगी रसगुल्ले और तू खाया करेगा रोटी—बगैर घी के!"

इस तरह की बातें सुनते-सुनते सन्तोष भैया का दिल भर आता और फूट-फूट कर रोने लगता। उसकी रूआंसी सूरत देखते ही साधना बाहर भाग जाती और मां आकर संतोष भैया को चुप कर देतीं।

एक दिन सन्तोष भैया लाल किले की रोशनी देखने गया। फिर न जाने कहां चला गया। घर में सब चिन्ता करने लगे। घर के लोग ढूंढने दौड़े, पर सन्तोष भैया का कुछ पता न चला। मां रोने लगी, साधना सिसकने लगी। उसने कुछ खाया पिया भी नहीं। बुआ जी बोलीं—"यह फौज वाले बड़े बेरहमी से मोटर चलाते हैं कहीं मेरा सन्तोष………!" यह कह कर उनकी आंखों से टपटप आंसू गिरने लगे। पिताजी ने पुलिस में उसके खो जाने की इत्तिला कर दी है। सन्तोष का हुलिया रूप-रंग सब लिखा दिया गया है। कुछ लोगों का ख्याल है कि वह किसी के साथ अपने मामा के यहां मेरठ चला गया है। पिताजी अब उसका पता लगाने मेरठ भी जाएंगे।

'अर्जुन' के बाल-पाठको! यदि तुम सन्तोष भैया का कुछ पता पा सको तो जरूर बताना। उसकी साधना बहिन अब बहुत दुःखी है। कहती है—"अब मैं सन्तोष भैया को कभी नहीं रुलाया करूंगी।"

—श्री केशवदेव मिश्र

ब्रिटिश बालकों की साहसिक यात्रा

'ब्रिटिश स्कूल अन्वेषक समाज' का लन्दन केन्द्र आजकल बहुत कार्य व्यस्त है। कारण, गर्मियों की छुट्टियों में लगभग ६० बच्चे केन्द्रीय आइसलैंड की साहसी यात्रा की तैयारियां कर रहे हैं। वह इस समाज की तेरहवीं यात्रा होगी। पहली साहसी यात्रा १९३२ में फिनिश लैपलैंड की हुई थी।

इस 'समाज' द्वारा आयोजित यात्राएं सचमुच साहसी यात्राएं होती हैं। लड़के विभिन्न प्रकार की आवश्यक सामग्रियां अपने साथ ले जाते हैं। इनके साथ एक साधारण और एक चीरफाड़ करने वाला डाक्टर रहता है। ये लोग प्रायः अपने खेमे बहुत ठण्डे प्रदेशों में लगाते हैं, प्रायः ये बरफ से ढके हुए निर्जन स्थानों की लम्बी छान बीन करते हैं।

'ब्रिटिश स्कूल अन्वेषक समाज' की स्थापना ब्रिटिश नौसेना के सर्जन कमान्डर जी० मरे लेविक की थी।

इसलिए १९३२ में वे स्कूली बच्चों के एक समूह को उत्तरी फिनलैंड ले गये थे और बच्चे ले गए थे साधन सामग्री और खाने पीने की चीजें अपनी अपनी पीठों पर लाद कर। उस समय से न्यूफाउंडलैंड, फिनिश लैपलैंड और उत्तरी नार्वे की यात्राएं की जा चुकी हैं। १९४८ में स्कूली बच्चों का एक दल उत्तरी क्यूबेक गया था।

आइसलैंड की यात्रा जो, उनको पहली यात्रा होगी, की प्रतीक्षा स्कूली बच्चे बड़ी उत्सुकता के साथ कर

[शेष पृष्ठ २० पर]

अन्धे बालकों का जीवन भी कितना असहाय हो जाता है। यह तुम लोग भी अनुभव करते होगे। क्या तुम्हें अपने अन्धे बाल-बन्धुओं पर दया आती है जो तुम्हारी तरह उछल कूद नहीं सकते। ब्रिटेन ने अन्धे बालकों के खेल कूद की व्यवस्था की है। जैसा कि चित्र में स्पष्ट है।

मेरा बचपन

माता-पिता ने जन्म दिया है,
पाल-पोस कर बड़ा किया है।
चार साल से होश लिया है,
कोमल-कोमल मेरा तन।
ऐसा है मेरा बचपन॥

पढ़ने को स्कूल में जाती,
कक्षा में पीछे रह जाती।
पाठ को अपने भूल मैं जाती,
कुढ़ता रहता मेरा मन।
ऐसा है मेरा बचपन॥

सोचा मैंने कारण क्या है,
भूल-चूक क्यों हो जाती है।
याद नहीं होता कारण क्या है,
"कुछ मगज ही" बोला मन।
ऐसा है मेरा बचपन॥

गोबर क्यों ना भरे मगज में,
खाना ही क्या मिलता घर में।
सूखी रोटी लेकर कर में,
रोता रहता मेरा मन।
ऐसा है मेरा बचपन॥

सुनती हूं संसार में घी था,
माखन-मिश्री दूध-दही था।
होगा, मेरे लिए नहीं था,
जर्जर होता मेरा मन।
ऐसा है मेरा बचपन॥

गेहूं मिलता खाने को जब,
दो मन चावल पूरे सौ का।
दूध में पानी दुगना जो का,
मजे उड़ाता कोटोक्रम।
ऐसा है मेरा बचपन॥

बिकती थी से किया किनारा,
तेल का मैंने लिया सहारा।
चोरों ने उसको भी मारा,
खोया उसका असली धन।
ऐसा है मेरा बचपन॥

कोसती हूं स्कूल में जाकर,
नल का ठण्डा पानी पीकर।
मोटे लाला पेट फुला कर,
लोड रहे हैं देश का धन।
ऐसा है मेरा बचपन॥

कुछ चारों से बिगड़ी मेरी,
बच्चों पर क्यों विपदा गेरी।
अब तो छोड़ें हेरा-फेरी,
याद करें अपना बचपन।
ऐसा है मेरा बचपन॥

राष्ट्र की जड़ हैं देश के बच्चे,
कहते हैं अधिकारी सच्चे।
स्वस्थ रहें ज्यों शेर के बच्चे,
कभी न होगा अध:पतन।
ऐसा है मेरा बचपन॥

—कुमारी कौशल्या मुद्गल

★

[पृष्ठ १५ का शेष]

रहे हैं। पेरिंग क्रास के पास 'रायल ज्यागरफर सोसाइटी' के भवन के कमरे उत्साह और उमंग के वातावरण से भरे हैं। दीवारों पर बर्फ की भूमि को पार करने वाले दलों के चित्र टंगे हैं। एक दीवार पर आइसलैण्ड का नकशा टंगा हुआ है और उसी के पास उत्तरी नार्वे के एक भाग का बड़ा नकशा जो अन्वेषण यात्रा के बाद दलों ने बनाया था। मेज पर साथ ले जाई जाने वाली खाने पीने की चीजों और अन्य वस्तुओं की एक सूची रखी हुई है।

ऐसी अन्वेषण यात्राओं की तैयारी करना सरल काम नहीं है। 'समाज' के मन्त्री, कमाण्डर एन० डी० बी० वेमाउथ के शब्दों में, 'आइसलैण्ड की यात्रा के लिए मैं पन्द्रह दिन पहले जाऊंगा और अपने साथ सारी सामग्रियां— कुल मिलाकर नौ टन—ले जाऊंगा। इसमें चार टन खाने पीने की चीजें होंगी। तब मैं एक मूल शिविर के लिये स्थान ढूंढकर वहां शिविर लगाऊंगा। दलों के आ जाने के बाद मैं वहां से किसी पास के स्थान में चला जाऊंगा और रेडियो के द्वारा मूल शिविर के साथ सम्पर्क बनाये रखूंगा। इसके बाद, उन्होंने कहा, लड़के तीन से लेकर पांच दिनों तक की यात्रा के लिये रवाना होंगे। रात को वे सोने का प्रबन्ध करेंगे और आवश्यक चीजें अपनी पीठों पर लिये रहेंगे। इसके बाद कुछ चुने हुये लड़के चौदह या पन्द्रह दिनों की लम्बी सफर करेंगे।

[पृष्ठ १८ का शेष]

सिद्धांतों का प्रचार करने के लिए या फैशन के नाते अपनी सम्पूर्ण प्राचीन परम्पराओं का प्रत्याख्यान कर नूतनता के राग अलापना तो उपयुक्त नहीं। नवीन और प्राचीन, श्रीमन्त और श्रमिकों का समन्वय करा देना अधिक हितकर है, बजाय इसके कि उन दोनों का ही सर्वनाश कर डालें। ऐसी समन्वय-मूलक भावनाएं तथा पूंजीपतियों के विचार के विरुद्ध प्रतिक्रियाएं हिन्दी साहित्य में सदा प्रकट होती रही हैं। कबीर, तुलसी, भूषण, भारतेन्दु, बाबू हरिश्चन्द्र, मैथलीशरण गुप्त, प्रसाद, रामनरेश त्रिपाठी आदि भारतीय संस्कृति के उपासक कविगण सदा से प्रगतिवादियों की श्रेष्ठताओं को स्वीकार करते रहे हैं, पर इनके दोषों से भी वे सदा बचते रहे हैं। इसलिए इसी साम्यवाद पर आधारित प्रगतिवाद के रूप को तिलांजलि देकर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय भावनाओं को चित्रित करने वाले और सामाजिक विषमताओं के प्रति विरोध प्रकट करने वाले प्रगतिवाद का प्रचार इस समय परमावश्यक है, इसमें कुछ सन्देह नहीं।

[पृष्ठ ७ का शेष]

"लोगों की स्वतन्त्रता पर प्रभाव डालने वाले इस प्रश्न को प्रधान मन्त्री एक दल के प्रश्न के रूप में ले रहे हैं," डा० मुकर्जी ने कहा। उन्होंने एक आदेश का उल्लेख किया जिसके द्वारा कांग्रेस दल के सदस्यों को आदेश दिया गया है कि दल के सदस्य कोई संशोधन उपस्थित न करें, पं० नेहरू का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जाय, और दल के बाहर के सदस्यों द्वारा उपस्थित संशोधनों का विरोध किया जाय।

उन्नीसवीं धारा

१९ वीं धारा में प्रस्तावित संशोधन का उल्लेख करते हुए डा० मुकर्जी ने कहा कि प्रधान मन्त्री ने कहा है कि देश के कुछ पत्र झूठे और अश्लील समाचार प्रकाशित कर देश के नवयुवकों का चारित्रिक पतन कर रहे हैं। यदि इस प्रकार के पत्र हैं तो वर्तमान संविधान ने उनको ठीक करने के लिए संसद को पर्याप्त अधिकार दिए हुए हैं और इसलिए प्रस्तावित संशोधन अनावश्यक है। प्रधान मन्त्री ने यह भी कहा है कि यह कथन कुछ अन्य पत्रों के विषय में भी लागू हो सकता है। फिर इस बात की गारण्टी कहां है कि इसका दुरुपयोग नहीं होगा ?

समस्या के कारण

डा० मुकर्जी ने कहा कि किसी भी देश पर सदा बल तथा दबाव से शासन नहीं हो सकता। यदि सचमुच में आज देश पागल हो गया है और यहां इस प्रकार के लोग हैं जो इस स्थिति को सह नहीं सकते—तो सरकार को चाहिए कि वह अपनी ओर देखे और उन कारणों को मालूम करे कि क्यों वे ही लोग जो आज से केवल दो वर्ष पूर्व सरकार का साथ देने की शपथ खा रहे थे, आज उनकी निन्दा कर रहे हैं। "उनको दबाए रखने के लिए गोलियों और पिस्तौलों की आवश्यकता क्यों पड़ती है ?" डा० मुकर्जी ने पूछा।

[पृष्ठ १७ का शेष]

है। कारण यह बताया जाता है कि कुछ गैर बंगाली मुसलमानों ने एक बड़े मकान पर अधिकार करना चाहा जिसका बंगाली मुसलमानों ने विरोध किया। फलस्वरूप झगड़ा हो गया और एक व्यक्ति के छुरा भोंक दिया गया। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर कई गिरफ्तारियां कीं तथा कर्फ्यू घोषित कर दिया गया।

× × ×

नई दिल्ली के राजनीतिक क्षेत्रों में पूर्वी बंगाल में हिन्दुओं के लिए पुनः असुरक्षित वातावरण उत्पन्न होने के पीछे पाकिस्तान की राजनीतिक चाल समझा जा रहा है। उनका कथन है कि यह देखा गया है कि पाकिस्तान में हिन्दुओं के लिए उत्पन्न होने वाले संकट के पीछे प्रत्येक बार एक योजना दिखाई देती है, मानों कुरसी जीतने में किसी दांव के समान उसका प्रयोग किया जा रहा हो। उनका कथन है कि गत वर्ष हुए दंगों और मारकाट का दायित्व भी श्री लियाकत अली ने हिन्दू महासभा के सिर रखा था और दिल्ली समझौते के लिए दिल्ली आने के पूर्व यह मांग की थी कि हिन्दू महासभाई नेता बन्दी बना लिए जावें। तदनुसार दिल्ली में सभाई नेताओं की गिरफ्तारियां हुई भी थीं। इस बार अखण्ड भारत का नारा लगाने पर पाक-सरकार ने भारत सरकार से यह मांग की थी कि महासभा पर प्रतिबन्ध लगा दिया जावे। पूर्वी बंगाल के दंगे भी इसी दिशा में एक कदम हैं कि पाक सरकार गत वर्ष की भांति पुनः यह कहे कि ये तो हिन्दू महासभा आदि के आन्दोलन की प्रतिक्रिया है।

[पृष्ठ ९ का शेष]

वाला था। कार्यकर्ताओं को यह विदित हो चुका था कि मेरे विचारों में कुछ गर्मी है—और चुनाव में गर्मों और नर्मों का संघर्ष होने वाला था, इसलिये गर्म पार्टी के नेता डा० शङ्करलाल जी (जो उस समय स्वदेशी स्टोर वाले कहलाते थे, और पीछे से इन्श्योरेन्स वाले कहलाये) मुझ से मिले और सदस्य बना लिया, मुझे भी चुनाव की सभा में पहुंचने के लिये निमन्त्रित किया गया। सभा बनारसी कृष्णा मेन्शन के किसी बड़े हाल में हो रही थी। उसमें लगभग तीस पैंतीस सदस्य इकट्ठे हुए थे। पुराने कार्यकर्ताओं ने पहल की और सभा के सामयिक सभापति पद के लिये स्वर्गीय डा० शिवनारायण वकील का नाम प्रस्तुत कर दिया। डा० शिवनारायण दृढ़ इच्छा शक्ति के व्यक्ति समझे जाते थे। उन्होंने नयी पार्टी के आवेग को बहुत देर तक रोका, परन्तु जब डाक्टर अन्सारी सभा में आ पहुंचे, तब तख्ता पलट गया। डा० अन्सारी उन दिनों भारतवासियों की दृष्टि में चढ़े हुए थे। भारत की ओर से जो मैडिकल मिशन तुर्की भेजा गया था डा० अन्सारी उसके नेता थे। वे प्रभूत यश कमाकर अभी अभी वापिस आये थे। वे जब सभा में आये तो सिपाहियाना वेष में थे। जोधपुर ब्रीचस, हण्टिंग कोट और कनपटोपा कैप के अतिरिक्त हाथ में एक छोटी सी छड़ी भी थी, जिससे प्रतीत होता था कि आप सीधे शिकार से आ रहे हैं। लोग आपके आदरार्थ खड़े हो गये। उस खड़े होने में सामयिक सभापति का रोब बह गया, और सम्मतियां लिये जाने पर बहुसम्मति से डा० अन्सारी कमेटी के प्रधान चुने गये। उनके लिए जिन लोगों ने राय दी, वे नौजवान पार्टी के सदस्य समझे गये। मैंने भी उन्हीं के साथ सम्मति दी थी। यह मेरा कांग्रेस की चुनाव-सभा का पहला अनुभव था।

देश-विदेश का घटनाचक्र

कोरिया

कोरिया में कम्यूनिस्ट बसन्त आक्रमण के दूसरे दौर को भी राष्ट्रसंघीय सेनाओं ने सफलतापूर्वक रोक ही नहीं लिया वरन पीछे भी धकेल दिया है। इस समय कोरिया में ३८ अक्षांश के निकट घमासान मच रहा है तो भी युद्ध की उग्रता अभी भी काफी मात्रा में है।

इस दूसरे आक्रमण में भी कम्यूनिस्टों ने पुनः राष्ट्र-संघ य सेनाओं को घेरने का और उनके मोर्चे में दरार डाल कर आगे बढ़ने का प्रयत्न किया था। किन्तु राष्ट्र-संघ पक्ष ने शीघ्र ही अपनी स्थिति संभाल ली और दरारों में प्रविष्ट हुई शत्रु सेना को पीछे धकेल कर अपनी स्थिति दृढ़ कर ली। सदा की भांति इस बार भी कम्यूनिस्टों ने प्राणों पर खेल कर आगे बढ़ने का प्रयास किया था, किन्तु राष्ट्र संघीय सेनाओं की भारी गोलाबारी से उन्हें भारी प्राणहानि उठानी पड़ी।

राष्ट्र-संघ

राष्ट्र संघ में अमरिका द्वारा प्रस्तुत कम्यूनिस्ट चीन को सामरिक उपयोग की सामग्री भेजने पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रस्ताव स्वीकृत हो गया है। इस प्रस्ताव के अनुसार राष्ट्र-संघ के सदस्य देशों द्वारा कम्यूनिस्ट चीन से सामरिक उपयोग की सामग्री का व्यापार करना मना हो गया। अब तक राष्ट्र संघ के अनेक सदस्य देश कम्यूनिस्ट चीन को इस प्रकार की सामग्री का निर्यात कर रहे थे, क्योंकि चीन इनका बहुत बड़ा ग्राहक था। विशेषकर इंगलैंड का तो भारी व्यापार हांगकांग के मार्ग से होता है। अब इस प्रकार का सारा व्यापार बन्द करना होगा।

समाचार प्राप्त हुए हैं कि सिंगापुर में चीन के लिए रबड़ से लदे जहाज रोक लिए गए हैं। यह उक्त प्रस्ताव पर आचरण है। हांगकांग का तो सारा व्यापार ही नष्ट हो जायगा और इसीलिए ब्रिटेन इस प्रस्ताव से सहमत नहीं था। किन्तु इस प्रस्ताव पर ब्रिटेन का मत पक्ष में था। कम्यूनिस्ट चीन ने प्रस्ताव की स्वीकृति को अमेरिका की चुनौती माना है और ब्रिटेन की चीन विरोधी नीति के लिए उसकी भर्त्सना की है।

ईरान

ईरान के तेल का प्रश्न अभी भी सुलझाव से दूर है। अमरीकी दूत द्वारा ईरान सरकार को अपनी सरकार का पत्र दे दिया गया है। इसमें कहा गया है कि अमेरिका तेल के प्रश्न पर ब्रिटेन के दृष्टिकोण को उचित समझता है और वह चाहता है कि ईरान सरकार इस प्रश्न को ब्रिटेन से चर्चा करके सुलझा ले। किन्तु ईरान ने अमरीकी अनुरोध को अस्वीकार कर दिया है।

ब्रिटेन के विदेश मन्त्री श्री मौरिसन ने ईरान को चेतावनी देते हुए कहा है कि ब्रिटेन चाहता है कि ईरान सरकार इस प्रश्न पर ब्रिटेन से सीधी बातचीत करले। एंग्लो ईरानी तेल कम्पनी की स्थिति पूर्णतः न्यायोचित है और ब्रिटेन इस राष्ट्रीयकरण की आड़ में उसका ईरान द्वारा हड़प लिया जाना सह नहीं सकता।

श्री मौरिसन ने कहा है कि यदि ईरान नहीं माना तो इसके परिणाम ईरान के लिए अच्छे नहीं होंगे। यह भी ज्ञात हुआ है कि यदि आवश्यकता हुई तो कम्पनी के हितों की रक्षा के लिए ईरान की भूमि पर सेना उतारने के प्रश्न पर ब्रिटेन अमरीका से चर्चा कर रहा है और इस प्रकार का कोई भी कदम अमेरिका की सहमति से ही उठाया जायेगा। दूसरी ओर रूसी राजदूत ने ईरान के प्रधान मंत्री को सूचित किया है कि यदि किसी विदेशी राष्ट्र की सेनाओं ने ईरान की भूमि पर कदम रखा तो रूसी सेनायें ईरान में प्रविष्ट हो जायेंगी।

वीर अर्जुन साप्ताहिक का मूल्य

वार्षिक	१२)
अर्धवार्षिक	६॥)
एक प्रति	चार आना

[पृष्ठ ४ का शेष]

के यह वाक्य बड़े पर नमक का काम करते थे। अधिकारियों से मिलने वाली सतत उपेक्षा ने उनको अत्यन्त असन्तुष्ट एवं अविश्वासी बना दिया है।

जब स्वयंसेवकों को ज्ञात होता कि कपड़े की समस्या के विषय में वे जितना तर्क करते हैं उतना ही ग्रामीण उत्तेजित हो जाते हैं तो वे चुप रह जाते और पुनः अनाज देने की प्रार्थना करते।

एक और तर्क

तब ग्रामीण एक और तर्क उपस्थित करते थे। वे कहते कि नम्बरदार के साथ तहसीलदार साहब आये थे। वे सरकारी अन्न सहायता कोष में हमसे अन्न देने को कह गये हैं। हम आपको भी दें और उनको भी दें तो हमारी स्वयं दुर्गत हो जायगी। तहसीलदार साहब को तो हम मना नहीं कर सकते। उनका तो डण्डा चलता ही है।

कुछ स्पष्टवक्ता ग्रामीण यहां तक कह देते थे कि हम नहीं जानते कि सरकारी सहायता कोष में दिया हुआ अन्न वहां ठीक ठीक पहुंचेगा भी कि नहीं या कारिन्दों की सहायता में ही सब हिसाब किताब बराबर हो जायगा।

पुण्यकार्य और ग्रामीण

किन्तु जब उनको दान जैसे पुण्य-कार्य में सहगामी होने का आह्वान दिया जाता तब वातावरण बदल जाता। वे कहने लगते कि हम तो संघ को जानते हैं। आप लोग आए हैं तब हम कुछ न कुछ अवश्य देंगे। और फिर वे घर घर से देते और दिलाते।

ग्रामीणों से अनाज प्राप्त करने का यह विवरण जितना पढ़ने में सरल प्रतीत होता है उतना वास्तव में है नहीं। यह तो कोई प्रत्यक्षदर्शी या प्रत्यक्षकर्मी ही जान सकता है कि यह कितना दुरूह कार्य है।

विभिन्न अनुभव

कुछ ग्रामों के ग्रामीण ऐसे भी थे जिन्होंने कहा कि हम तो आपकी बाट ही देख रहे थे। आपके परिश्रम से हमारा भी पुण्य कमाना हो जायगा। किन्तु कुछ ग्रामीण ऐसे भी थे जिन्होंने एक दाना भी अन्न नहीं दिया। उनका कहना था कि संघ के लोगों को सरकार जेल में डालती है, इसलिए हम तुम्हें अनाज नहीं देंगे। कहीं कहीं दल विशेष के लोगों ने अपमान सूचक भाषा से भी स्वयंसेवकों का स्वागत किया। जहां एक तहसीलदार महोदय ने प्रत्यक्ष खड़े होकर स्वयंसेवकों का विरोध किया वहां कुछ नम्बरदार ऐसे भी थे जिन्होंने स्वयं घर-घर घूम कर अनाज एकत्रित करवा दिया।

एक गांव में कुल सात घरों की ही बस्ती थी वहां से १२ सेर अनाज प्राप्त हुआ।

एक हजार मन का भंडार

एक ग्राम में दिल्ली किसान सभा ने, जो कांग्रेस से प्रभावित है, सहायतार्थ एक हजार मन अनाज एकत्रित कर रक्खा है। ग्रामीणों ने बताया कि उसमें से ९०० मन अनाज के तो कण्ट्रोल रेट पर पैसे मिल जायेंगे और शेष १०० मन हम यों ही दान दे देंगे। इसी गांव से स्वयंसेवकों को भी ४० मन अनाज प्राप्त हुआ।

एक हृदयग्राही घटना

एक अत्यन्त हृदयग्राही दृश्य उस गांव का था जहां के निवासी पत्थर की चट्टानों पर खिरकियों की झोंपड़ियां बना कर रह रहे हैं और पत्थर की गिट्टियां तोड़ने का काम करते हैं। इन श्रमिकों ने घर पीछे २-२ सेर अनाज देकर प्रायः ४१ सेर अनाज इकट्ठा कर दिया। स्वयंसेवक उनके हृदयों में बसने वाली राष्ट्रीयता से बड़े प्रभावित हुए।

एक सज्जन ऐसे भी थे जो नित्य ४॥ छटांक अन्न एक ही समय भोजन करके बचा रहे थे। स्वयंसेवकों को अपने द्वार पर खड़ा देखकर वे गद्‌गद् हो गए और उन्होंने चमकती आंखों से प्रायः दस सेर अन्न समर्पित कर दिया।

राष्ट्रीयता का द्योतक

इस अन्न-संग्रह से जहां एक ओर बिहार और मद्रास के पीड़ित बांधवों को सहायता पहुँचेगी वहां देश बांधवों के प्रति हमारे ग्रामीण जनसमूहों में विहित सहानुभूति का भी प्रदर्शन हो जायगा जो स्पष्टतः भारत की सुप्त राष्ट्रीयता का द्योतक है।

विदेश स्थित भारतीय दूतावासों पर व्यय

पिछले दिनों भारतीय संसद में उप-विदेश मन्त्री डा० बी० वी० केसकर ने मार्च १९५० के अन्त तक विदेश-स्थित भारतीय दूतावासों पर हुए व्यय की निम्न तालिका प्रस्तुत की थी—

दूतावास

	रुपये
१. अंकारा	६,२४,००८
२. बसल्स	३,७३,५१६
३. ब्यूनोस आयर्स	३,६२,०३०
४. काहिरा	५,८६,४८७
५. जकारता	५,०१,८२१
६. काबुल	७,५७,०२५
७. कठमांडू	३,४१,०७१
८. मास्को	०,१५,११६
९. पेरिस	१,७५,१२३
१०. पेकिंग	७,७१,०८१
११. प्रेग	३,१२,५१७
१२. रंगून	७,३९,११६
१३. रियो डि जनेरो	७,१०,५१०
१४. रोम	३,८३,२८५
१५. तेहरान	६,०६,५२१
१६. दी हेग	३,००,३२६
१७. वाशिंगटन	२४,३३,४८०

	रुपये
कुल (दूतावास)	१,०२,५४,८७०
भारतीय शिष्टमंडल कार्यालय न्यूयार्क	७,४३,२०७
भारतीय संपर्क मिशन टोकियो	२,६६,०१७

राजप्रतिनिधि तथा उप-राजप्रतिनिधि आवास आदि

	रुपये
१. अदीस अबाबा	१८,५११
२. बगदाद	१,८४,४५६
३. बैंकाक	१,३८,५१०
४. बर्न	०,२३,३८६
५. गैंगटोक	१,३६,८६७
६. गारटोक	३१,३९२
७. ग्यांत्सी	२,०३,३२२
८. जलालाबाद	२७,३७२
९. जद्दा	१,५५,४२६
१०. कन्धार	३२,२०६
११. काशगर	६१,३३६
१२. लिस्बन	१,७३,५६२
१३. मेशान	७१,४२३
१४. न्यूयार्क	४,३२,३१६
१५. सेगांव	२,४४,८५२
१६. सान फ्रांसिस्को	३,०२,१२०
१७. शंघाई	१,३२,३७८
१८. स्टाकहोम	२,८३,६६५
१९. यातुंग	४२,६२५
२०. जाहिदान	७२,३२५
२१. पांडीचेरी	१,६३,८६५
२२. गोवा गोवा	७१,३२८
कुल (राज,प्रतिनिधि तथा उपराजप्रतिनिधि आवास आदि)	४१,३१,३९३

हाई कमिश्नर के कार्यालय आदि

	रुपये
१. केनबरा	३,१८,३३०
२. कोलम्बो	२,०७,८६५
३. ढाका	९,२२,३३६
४. जोहन्सबर्ग	१,९२,३१५
५. कान्डो	५८,३१६
६. कराची	७,३६,७३८
७. कुआलालम्पुर	३०,६५४
८. लाहौर	२,३७,९३०
९. नैरोबी	३,३४,७५७
१०. ओटावा	२,०२,३५७
११. पोर्ट लुइस	१,७७,८५७
१२. सिंगापुर	४,७३,०३७
१३. सूवा	१,१२,४०८
१४. वेलिंगटन	२,३७,१२८
	रुपये ३२,६७,२१८

कुल हाई कमिश्नर के कार्यालय आदि रुपये

इंगलैंड में व्यय रुपये ३२,१२,३५२

(इनमें सूचना लेखकों का व्यय भी सम्मिलित है।)

रजि० नं० ई० पी० ४६१

'[illegible]' का एक दृश्य

'हिन्दुस्तान हमारा' में देवानन्द व नलिनी

'नगीना' में बिपीन गुप्ता व नूतन

'हिन्दुस्तान हमारा' का एक दृश्य

पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा, मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिए अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, देहली में छपवाकर प्रकाशित किया।
सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार ११ ज्येष्ठ सम्वत् २००८ [अङ्क ६

पहले सुरक्षासमिति उत्तर दे

काश्मीर के प्रश्न पर सुरक्षा समिति ने ब्रिटिश प्रतिनिधि का एक प्रस्ताव स्वीकार किया है, जिसमें समिति के अध्यक्ष को यह अधिकार दिया गया है कि वह भारत और पाकिस्तान की सरकार को इस आशय का पत्र लिखें कि दोनों सरकारें यथाशक्ति यह कोशिश करेंगी कि वे कोई ऐसा कार्य न करने पावें जो संयुक्त राष्ट्र संघ अथवा काश्मीर के भविष्य के लिए हानिकर हो। काश्मीर में बुलाई गई संविधान परिषद् का इस तार में विशेष रूप से उल्लेख किया गया है, जिसके सम्बन्ध में पाकिस्तानी प्रतिनिधि की यह आशंका भी प्रकट की गई है कि संविधान परिषद् काश्मीर के भावी विधान का रूप निर्णय करके उन आश्वासनों का विरोध करेगी, जो भारत सरकार ने निष्पक्ष जनमत द्वारा राज्य का भविष्य निश्चित करने के सम्बन्ध में संयुक्तराष्ट्र संघ को दिये थे। स्पष्टतः इस तार का उद्देश्य काश्मीर में संगठित संविधान परिषद् का विरोध करना है। पाकिस्तान के प्रतिनिधि ने सुरक्षा समिति में यह स्पष्ट किया कि काश्मीर में संविधान परिषद् संगठित करने का उद्देश्य जनमत लिये बिना ही काश्मीर के भविष्य का निश्चय करना है। ब्रिटिश प्रतिनिधि ने और उसके साथ सुरक्षासमिति के अन्य सदस्यों ने यह अनुभव किया कि काश्मीर की संविधान परिषद् के निश्चय के बाद वह सब कुछ आसानी से न किया जा सकेगा, जो उसके कूटनीतिक दिमाग काश्मीर में करना चाहते हैं।

भारतीय प्रतिनिधि ने सुरक्षा समिति में पाकिस्तान व उसके साथी ब्रिटेन व अमरीका के प्रतिनिधियों की आशंका का जो उत्तर दिया, उसकी चर्चा न करते हुए भी हम यह कहना चाहते हैं कि यदि उनकी आशंका ठीक भी हो, तो इसका उत्तरदायित्व अमेरिका और उसके साथी उन देशों पर है, जो काश्मीर की समस्या को पिछले तीन सालों से टाल रहे हैं। काश्मीर के प्रश्न में कहीं कोई उलझन नहीं थी। काश्मीर के महाराजा ने भारतीय संघ में सम्मिलित होने का निश्चय किया और काश्मीर भारत का एक अंग बन गया। पाकिस्तान का ऐसी स्थिति में भी आक्रमण स्पष्टतः भारत पर आक्रमण था। सं० रा० संघ का कर्तव्य था कि वह आक्रमणकारी का नाम घोषित करता, किन्तु ऐसा करने के विपरीत सुरक्षा समिति उसे बराबर टालती जाती है। वह पाकिस्तान व भारत को एक समान अपराधी मान कर दोनों को एक दृष्टि से देख रही है। करीब तीन साल होने आये और आज तक काश्मीर का निर्णय नहीं होने पाता।

आखिर यह स्थिति कब तक रहने दी जायगी ? श्री डिक्सन ने पाकिस्तान को जिस रिपोर्ट में आक्रमणकारी घोषित किया था, उसे भी दबा दिया गया है और अब भारत की इच्छा के विरुद्ध श्री ग्राहम को भेजा जा रहा है। काश्मीर की संविधान परिषद् सुरक्षा समिति की इस टालमटोल और दुरभिसन्धिपूर्ण नीति का ही वस्तुतः उत्तर है। पहले सुरक्षासमिति आक्रमणकारी का नाम घोषित करे और उसे दण्ड देने के लिए वही सैनिक कार्रवाही करे, जो उसने कोरिया में की थी और तब वह भारत से कोई उचित मांग कर सकती है। भारत को भी इस सम्बन्ध में अपनी नीति स्पष्ट कर देनी चाहिए। नये मध्यस्थ श्री ग्राहम को किसी तरह का सहयोग न देकर सुरक्षा समिति को यह बता देना चाहिए कि यदि वह निष्पक्ष हो कर अपराधी का नाम घोषित नहीं करती, तो भारत उससे सहयोग नहीं करेगा।

★★

शुभ प्रयत्न

आज जब कि देश के विविध सार्वजनिक नेता केवल आर्थिक और राजनैतिक प्रश्नों की ओर ही निरन्तर ध्यान दे रहे हैं, उनसे भी अधिक महत्वपूर्ण नैतिक समस्या घोर उपेक्षा का विषय बन गई है। पश्चिमी शिक्षा और पश्चिमी विचार धारा ने हमारा जीवन अन्तर्मुखी न कर के बहिर्मुखी कर दिया है। यही कारण है कि आज राष्ट्रीय अस्तित्व और उन्नति के मूल आधार चरित्र व नैतिक विकास की हम घोर उपेक्षा करने लगे हैं। जो संस्थाएं राजनैतिक व आर्थिक कार्यक्रम लेकर आज चुनाव के अखाड़े में कूद रही हैं, उनसे यह आशा भी करना युक्तिसंगत न होगा कि वे चरित्र और नैतिकता के विकास की दिशा में कुछ भी प्रयत्न करेंगी, इसलिए हम यह देख कर प्रसन्न हुए हैं कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी चारित्रिक उन्नति, अश्लील सगीत व चित्रों के विरोध आदि के संबन्ध में कोई कदम उठाने के बारे में विचार कर रहे हैं। अणुव्रती संघ के संस्थापक जैन आचार्य श्री तुलसी भी इस सम्बन्ध में प्रयत्नशील हैं। हमें आशा करनी चाहिए कि वे सब संस्थाएं, जो अपने को सांस्कृतिक व नैतिक कहती हैं, अपने अपने क्षेत्र में फैले हुए अनाचार, भ्रष्टाचार, कामोत्तेजक साहित्य व चित्रों के विरुद्ध सक्रिय प्रचार करने लगेंगी। सब काम सरकार पर छोड़ कर आलोचना मात्र की प्रवृत्ति किसी भी तरह वांछनीय नहीं। हमें स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश करनी चाहिए, तभी हम राष्ट्र - निर्माण में अपना भाग अदा कर सकेंगे।

———

भारतीय जनसंघ

पंजाब, हिमाचल प्रदेश, पेप्सु व दिल्ली में भारतीय जन संघ नाम की नई राजनीतिक संस्था का जन्म हुआ है। पाठक इस संस्था का घोषणापत्र और नीति अन्यत्र पढ़ेंगे। किसी नई संस्था का जन्म प्रायः तत्कालीन परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं का परिणाम होता है। पंजाब आदि राज्यों में उक्त संस्था का जन्म हुआ है, वह भी इस नियम का अपवाद नहीं है। संघ के घोषणा पत्र से यह अधिक स्पष्ट हो जाता है। इसमें कुछ घोषणाएं सैद्धान्तिक हैं, जो आज के समय को देखते हुए संघ की प्रगतिशीलता के प्रमाण हैं, कुछ घोषणाएं देश की वर्तमान परिस्थितियों के परिणामस्वरूप हैं और कुछ पंजाब की अपनी परिस्थितियों के। जनतन्त्र भारत के प्रथम चुनाव में यह आवश्यक है कि विभिन्न परिस्थितियों और समस्याओं पर सभी नागरिक अपने अपने विचार और कार्यक्रम प्रगट करें। जनतन्त्र की सफलता के लिये विभिन्न दलों की सत्ता अनिवार्य है। भारतीय जनसंघ इस आवश्यकता को पूर्ण करे और अपने क्षेत्र में स्वस्थ राजनीतिक चेतनता का प्रसार करे, इस आशा से सभी नागरिक इसका स्वागत करेंगे।

———

फिर ३८वीं अक्षांश रेखा

कोरिया का युद्ध फिर एक नई करवट ले रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ की सेनायें फिर कम्यूनिस्ट सेनाओं को खदेड़ कर ३८वीं अक्षांश रेखा पर, जो दक्षिणी कोरिया की अन्तिम सीमा है, पहुंच गई हैं। पहले भी ऐसी स्थिति आई थी और अनेक राष्ट्रों ने उस समय संघ की सेनाओं से आगे न बढ़ने का अनुरोध किया था, किन्तु संघ के विजयोन्मत्त सेनापति नहीं माने। परिणामतः चीन भी उलझ पड़ा और युद्ध लम्बा हो गया। आज फिर वही स्थिति सामने है। यदि दोनों पक्ष चाहें, तो सन्धि सम्भव हो सकती है। इसके लिए यह आवश्यक है कि संघ की सेनायें आगे न बढ़ कर सन्धि की भावना का परिचय दें और चीन भी कोरिया युद्ध से अपने को हटा लें। किन्तु क्या यह होगा भी कहीं ? क्या अमेरिका और चीन दोनों इस स्थिति को स्वीकार कर लेंगे ? हमें इसकी सम्भावना कम ही होती है, क्योंकि ऐसा करने से दोनों में से एक का भी उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा। न इससे कोरिया एक होगा और न उत्तरी कोरिया दक्षिणी कोरिया पर अधिकार कर सकेगा और पिछले साल भर किया गया रक्तपात व्यर्थ ही जायगा।

———

वित्त सम्मेलन

यद्यपि भारत के अर्थमन्त्री श्री चिन्तामणि देशमुख ने पाकिस्तान के साथ होने वाले वित्त-सम्मेलन की असफलता मानने से इन्कार कर दिया है, किन्तु यह स्पष्ट है कि पाकिस्तान सरकार का रुख आज भी निन्दनीय है। पाकिस्तान सरकार एक-एक मामले को निपटाने पर जोर देकर अपने हित की बात मनवा लेना चाहती है। किन्तु भारत की मांगों के सम्बन्ध में अनभिज्ञता प्रकट कर रही है। भारत सरकार ने एक साथ सब आर्थिक प्रश्नों का निपटारा की बात कह कर इस सम्मेलन को स्थगित करके अच्छा ही किया। सभी मामले एक साथ ही निपटाने पर हमें आग्रह करना चाहिये तभी समस्या सुलझेगी।

—x—

भारतयि जनसंघ का घोषणापत्र

पंजाब, पेप्सू, हिमांचल प्रदेश तथा दिल्ली के २१० के लगभग व्यक्तियों ने २७ मई को जालन्धर में इकट्ठे होकर एक नये राजनैतिक दल भारतीय जन संघ की स्थापना की। इस सम्मेलन में जन संघ का घोषणा पत्र तथा संविधान पास किया गया तथा कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये गये।

विभाजन के पश्चात भारत के इस महत्वपूर्ण भाग का यह अपनी तरह का पहिला ही राजनैतिक सम्मेलन था। इस में कई वर्षों के पश्चात पहिली बार हरयाना के तथा पंजाब के शहरी लोग एक ही मंच पर पंजाब का सामूहिक हित सोचने के लिए मिल बैठे।

जन संघ का घोषणा पत्र ही इस सम्मेलन में पास किया गया है घोषणा पत्र इस प्रकार है

घोषणा पत्र

१. यह संघ भारतीय संस्कृति की सर्वोच्च परम्पराओं के विस्तार और फैलाव का प्रयत्न करेगा। उसका विश्वास है कि भारतीय राष्ट्र में इस प्रकार के सभी लोग आते हैं जिनकी सांस्कृतिक देन भारतीय संस्कृति की मुख्य धारा का अंग सूत्र बन गई हैं।

संघ का प्रजातांत्रिक प्रणाली पर आधारित जीवन, नागरिक स्वतन्त्रता की सुरक्षा और न्याय की सर्वोच्चता में विश्वास है। जाति, मत अथवा सम्प्रदाय का कोई विचार न करते हुए यह दल नागरिकों को समान अधिकार और अवसर देने की गारन्टी करेगा।

२. संघ का उद्देश्य संयुक्त भारत की स्थापना है क्योंकि उसका विश्वास है कि यह शान्ति और स्वतन्त्रता का दृढ़ स्तम्भ सिद्ध होगा और जनता के सभी वर्गों के वास्तविक हित में होगा। भारत का विभाजन एक अदूरदर्शी कार्य था जिससे आर्थिक, राजनैतिक, सुरक्षा संबन्धी तथा अन्तर्राष्ट्रीय अनेकों गम्भीर प्रश्न खड़े हो गये हैं।

३ इस संघ का यह विश्वास है कि देश की अत्यावश्यक समस्या उसके नैतिक, आध्यात्मिक तथा भौतिक सभी साधनों को एकत्रित कर और समस्त जन शक्ति को संगठित कर उसे एक सुदृढ़ एवं बलशाली राष्ट्र बनाना है। केवल इसी प्रकार के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीयता की सच्ची भावना पनप और फल सकती है।

४. संघ इस बात की मांग करेगा कि देश की वर्तमान विदेशनीति का पुनर्निर्माण हो क्योंकि अनेक कठिन प्रसंगों पर यह स्पष्ट रूप से अनिश्चित, असंगत और अदूरदर्शितापूर्ण रही है।

यह इस अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में कर्म-स्वातन्त्र्य और जागृत राष्ट्रीय हित की नीति पर आचरण को मानता है जो प्रजातन्त्र और उन्नति के लिए खड़े हुए समाज की शान्ति और विश्वास से सगत हो।

जब तक विभाजन की स्थिति है, पाकिस्तान के प्रति संघ का दृष्टिकोण तुष्टीकरण नहीं वरन उसके व्यवहार के अनुरूप ही होगा। सब लोगों के लिए खाद्य वस्त्र तथा निवास की समस्या के हल करने के लिए संघ कोई कसर उठा नहीं छोड़ेगा।

५ देश के सामने सबसे भयानक समस्या खाद्य, वस्त्र तथा निवास की है। इनके हल के लिए संघ ने किसी निश्चित मार्ग से अपने आपको बांध कर नहीं रखा, किन्तु इसके लिए यह कोई भी कदम चाहे कितना भी कठोर क्यों न हो, उठाने में नहीं हिचकेगा।

संघ का विश्वास है कि हमारी आर्थिक मुक्ति कृषि और औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने और बिना किसी प्रकार का वर्ग-विद्वेष तथा घृणा फैलाए, एक उचित और अधिक सम्मान वितरण की पद्धति स्वीकार करने में है। केवल इसी के द्वारा मूल्यों के बढ़ाने की वर्तमान प्रवृत्ति रोकी जा सकती है जो जनता को भारी कष्ट दे रही है।

अत संघ प्रगतिशील कानून निर्माण करने में विश्वास करता है जो इस उद्देश्य के लिए उचित प्रेरणा देंगे।

लम्बी अवधि वाली भाखरा और नांगल नदी योजनाओं को पूर्ण करके ६ लिये शीघ्रता करते हुए, संघ छोटे पैमाने पर सिंचाई की योजनाओं को, जैसे सिंचाई का प्रबन्ध न होने वाले क्षेत्रों में नलकूप योजना को सर्वाधिक प्रमुखता देगा। संघ यह भी प्रयत्न करेगा कि और अधिक बिना जुती हुई भूमि जोती जाय और बीज, खाद तथा खेती के सामान की सुविधा देकर प्रति एकड़ भूमि की उपज बढ़ाने का भी उद्योग करेगा।

६. यथासंभव प्रादेशिक आत्मनिर्भरता-निर्माण करने के उद्देश्य से और बेकारी से लड़ने के लिए, विशेषकर निर्धन और मध्यमवर्ग की जनता में, संघ एक निश्चत योजनानुसार उद्योगों का विकेन्द्रीकरण करने और छोटे तथा मध्यम प्रकार के उद्योगों का विकास करने का कार्य करेगा।

संघ पूंजी तथा श्रम के सम्बन्ध सुधारने का प्रयास करेगा और हड़ताल तथा तालाबन्दी को दूर करने के लिए पंच फैसले को प्रोत्साहन देगा।

७ संघ यह अनुभव करता है कि स्वदेशी और आत्मनिर्भरता के हित में विदेशी व्यापार का नियंत्रण होना चाहिये। अन्तर्राज्य व्यापार पर लगे

अंग्रेज कम्पनी को ईरान से निकालने के लिए कटिबद्ध ईरानी प्रधानमन्त्री श्री मुसादिक।

बन्धन हटाने, सभी राज्यों में एक समान व्यापार नीति बरतने और कन्ट्रोलों का प्रयोग बुद्धिपूर्वक करने के लिए यह कार्य करेगा।

८. भ्रष्टाचार, चोरबाजारी और नफाखोरी को दूर करने और शासन की प्रामाणिकता तथा निपुणता का स्तर ऊंचा उठाने के पक्ष में एक स्वस्थ जनमत-निर्माण करने का संघ सर्वक्षम प्रयत्न करेगा।

९ यह संघ, पुनर्वास के प्रश्न को सर्वप्रथम स्थान देता है, क्योंकि यह इसे भारत का न्यायपूर्ण और नैतिक उत्तरदायित्व स्वीकार करता है। निर्वासित जनों की क्षतिपूर्ति करने और उन साधनों का विकास करने के दोहरे उद्देश्य से संघ देश के अब तक न छुए गए साधनों का उपयोग करने का भी प्रयत्न करेगा। पाकिस्तान में छोड़ी हुई संपत्ति की पूरी क्षतिपूर्ति लेने का भी यह उद्योग करेगा।

१० निम्नलिखित दृष्टि से संघ संपूर्ण शिक्षा पद्धति का सभी श्रेणियों में पुनर्निर्माण करेगा—

(क) सबको निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा।

(ख) व्यावसायिक और टैक्निकल विशेष कर ग्रामीण क्षेत्रों में जहां वह कुटीर उद्योग के साथ जोड़ी जा सके।

(ग) सभी वयस्कों को सैनिक शिक्षण और

(घ) राष्ट्रीय संस्कृति का अनुगामी बनाने तथा चरित्र - निर्माण करने का साधन बनाना।

जनता के पिछड़े हुए वर्गों का सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षणिक विकास करने की ओर संघ विशेष ध्यान देगा।

११ पंजाब और पेप्सू राज्यों के सभी भागों में रहने वाले सभी व्यक्तियों के लिए सब बच्चों की शिक्षा के माध्यम के विषय में विकल्प की स्वतन्त्रता में विश्वास करता है, भाषा और लिपि दोनों के विषय में—हिन्दी या पञ्जाबी, नागरी या गुरुमुखी।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

सार्वजनिक जीवन का सिंहावलोकन

सत्याग्रह कमेटी का मन्त्रित्व

★ श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

श्री गोपालकृष्ण गोखले का भाषण

आगे चलने से पूर्व एक भूल का सुधार कर देना आवश्यक है। वह भूल यह है कि मैंने श्री गोपालकृष्ण गोखले का दक्षिण अफ्रीका के सम्बन्ध में भाषण लखनऊ में नहीं, बांकीपुर में सुना था। बांकीपुर की कांग्रेस सन् १९१२ में हुई। रायबहादुर मुधोलकर उसके अध्यक्ष थे। माननीय गोखले ने उसमें वह वक्तृता दी थी, जिसका मुझ पर और अन्य श्रोताओं पर चमत्कारी प्रभाव हुआ था। मैं अपने संस्मरण प्रायः डायरी की सहायता के बिना ही लिखता हूं। जैसे कभी टेलीफोन के तारों के आपस में उलझ जाने से बातचीत करने में गड़बड़ हो जाती है, इसी प्रकार स्मृति की तारों के उलझ जाने से यह भ्रम हो गया। जिन मित्रों ने इस भूल की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया है, उनका मैं आभारी हूं।

रणक्षेत्र में महात्मा गांधी का प्रवेश

यूं तो महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी आन्दोलन के कारण भारतवर्ष में बहुत काल से न केवल विख्यात थे, अपितु पूजनीय समझे जाते थे, परन्तु भारत आकर मिल के मजदूरों और गुजरात के किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए उन्होंने जो आन्दोलन उठाया था, उसके कारण देश भर की दृष्टि उनकी ओर लग गई थी। फिर भी अभी तक भारत की प्रचलित व्यावहारिक राजनीति से वे अलग से ही रहते थे। रौलट ऐक्ट के आन्दोलन ने उन्हें साबरमती आश्रम के एकान्तवास से निकाल कर राजनीतिक क्षेत्र के केन्द्र दिल्ली में लाकर खड़ा कर दिया। १९१९ के फरवरी मास में वायसराय की कौंसिल में रौलट ऐक्ट उपस्थित होने वाला था, महात्माजी ने उससे पूर्व यह घोषणा कर दी थी कि यदि सरकार ने भारतवासियों की इच्छाओं का निरादर करके रौलट ऐक्ट को कानून की किताब में अंकित कर दिया तो मैं सत्याग्रह की शांतिमय लड़ाई आरम्भ कर दूंगा। फरवरी में रौलट बिल कौंसिल में उपस्थित हुए। प्रायः सभी प्रमुख भारतवासियों ने उसका विरोध किया, परन्तु सरकार ने उनकी एक न सुनी और सरकारी तथा नामिनेटिड सदस्यों के मतों से उसे पास कर दिया। फलतः महात्माजी रणक्षेत्र में उतर आये।

अपने सत्याग्रह के सिद्धांत का पालन करते हुए महात्माजी सत्याग्रह का नोटिस वायसराय तक स्वयं पहुंचाने के लिए दिल्ली आये। उस समय की दो घटनायें मुझे स्मरण हैं। पहली घटना महात्माजी के स्वागत के सम्बन्ध में थी। हम लोगों ने स्टेशन पर महात्माजी के स्वागत का प्रबन्ध किया था। उन्हें स्टेशन से लाने के लिए एक घोड़ा गाड़ी सजाई गई थी। ट्रेन प्रभात में पहुंचती थी, हम लोग जब स्टेशन पर पहुंचे तो गाड़ी तैयार थी, परन्तु लोग इकट्ठे नहीं हुए थे, होंगे कोई दस बारह आदमी। उनमें तीन प्रमुख थे—लाला शंकरलाल स्वदेशी स्टोर वाले, पं० नेकीराम शर्मा और मैं। महात्मागांधी ने तार भेजा था कि मेरे स्वागत या जलूस की व्यवस्था न की जाय, फिर भी हम लोगों ने व्यवस्था की, परंतु उषःकाल में लोग इकट्ठे न हो सके, तब यही सोचा गया कि स्वागत तथा जलूस को स्थगित कर दिया जाय, जब महात्माजी को स्टेशन से साधारण घोड़ा गाड़ी में लेकर प्रिंसिपल रुद्रा के मकान पर पहुंच गये, तो हममें से एक सज्जन बोले—

"महात्माजी, देख लीजिये, हमने आपकी आज्ञा का पालन करते हुए स्वागत का प्रबन्ध नहीं किया।"

महात्माजी ने उत्तर दिया—

"परन्तु मैंने स्टेशन पर फूलों से सजी हुई एक गाड़ी खड़ी देखी थी।"

महात्माजी कोरे महात्मा ही नहीं, बहुत सावधान निरीक्षक और आलोचक हैं, यह हमें उस समय मालूम हुआ। व्यावहारिक जीवन में हरेक बात की तह में जाने वाली जैसी दृष्टि महात्माजी ने पाई थी, वैसी कम व्यक्तियों को मिलती है। हमारे प्रवक्ता पर महात्माजी के उत्तर से मानो घड़ों पानी पड़ गया।

शायद पं० नेकीरामजी ने यह प्रश्न किया कि आप सत्याग्रह के लिए सीधा स्वराज्य को आधार न बना कर केवल रौलट ऐक्ट के प्रश्न को आधार क्यों बनाते हैं? तो महात्माजी ने उत्तर दिया कि "सर्वसाधारण जनता अव्यक्त आदर्शों को उतनी सुगमता से नहीं समझ सकती, जिस सुगमता से स्थूल रूप को समझ सकती है, मूर्तिपूजा के प्रचलन का यही मुख्य कारण है। मैं रौलट ऐक्ट को पराधीनता का स्थूल रूप समझ कर उसका विरोध करता हूं।"

महात्माजी वायसराय से मिले। किसी सुफल की तो आशा ही नहीं थी। वायसराय ने झुकने से इन्कार कर दिया इस पर महात्माजी ने सत्याग्रह की घोषणा कर दी। स्थान-स्थान पर सत्याग्रह समितियां बनने लगीं। दिल्ली में बनी। उपसमिति के दो मन्त्री बनाये गये जिनमें से एक मैं भी था। इस प्रकार मैंने सत्याग्रही सैनिक के रूप में देश की राजनीति में प्रवेश किया।

हकीम अजमल खां साहिब

सत्याग्रह के प्रारम्भिक दौर में दिल्ली में जो घटनाएं घटित हुईं, उनके सम्बंध में मैं अपने संस्मरण 'दिल्ली के वे स्मरणीय दिन' नामक पुस्तिका में लिख चुका हूं। उन्हें यहां दुहराने की आवश्यकता नहीं। यहां मैं उस समय के कुछ विशिष्ट नेताओं तथा कार्यकर्त्ताओं के विषय में अपनी अनुभूतियां अंकित करूंगा। वह देश के राजनीतिक इतिहास का विशेष अंग हो या न हो, मेरे राजनीतिक अनुभव की टुकड़ियां तो हैं ही, दिल्ली के उस समय के राजनीतिक जीवन में तीन व्यक्ति प्रमुख थे। वे तीन व्यक्ति थे (१) स्वामी श्रद्धानन्दजी (२) हकीम अजमल खां साहिब और (३) डा० अन्सारी, ये तीनों व्यक्ति अपने-अपने क्षेत्रों में पुराने और प्रख्यात होते हुए भी देश के राजनीतिक क्षेत्र में नये ही थे। उन्हें वस्तुतः राजनीति में तो उस युग की उपज ही कहना चाहिये। स्वामीजी के सम्बन्ध में मैं अधिक क्या लिखूं? वह सत्याग्रह के उन प्रारम्भिक दिनों में ही दिल्ली के इतिहास पर अपनी छाप छोड़ गये हैं। हकीम अजमल खां साहिब का व्यक्तित्व बहुत विशिष्ट था। उन्हें नगर की नीति का संचालन करते देख कर मुझे प्रायः मुगल बादशाहों के उन प्रसिद्ध वजीरों की याद आ जाती थी, जो अपनी बैठक में बैठ कर ही देश भर की नीति का संचालन किया करते थे। उनकी ठेठ मुगलिया ढंग की मूर्ति, शान्त और गम्भीर मुद्रा, आंखों पर सदा रहने वाली काली ऐनक, और दिन रात की साथी पान की डिबिया—यह सब वस्तुयें द्रष्टा को अनुभव करा देती थीं, कि वे मानो जन्मसिद्ध नीतिज्ञ हैं। नगर भर में हकीम साहिब का चमत्कारी प्रभाव था। शायद ही कोई बड़ा घराना हो, जिसके किसी न किसी व्यक्ति को उनके इलाज से जीवनदान न मिला हो, उन्हें किसी काम के लिए घर से बाहिर जाने की आवश्यकता नहीं होती थी, हजारों के चन्दे उनकी बैठक में हो जाया करते थे। हुक्म होता था कि ला० मदनमोहन लाल मिल वाले, ला० हजारी मल जौहरी, ला० रामचन्द्र किराने वाले ला० बुलाकीदास गोटे वाले और ऐसे अन्य चौधरियों को बुलाया जाय! शाम को वे सब उपस्थित हो जाते। उसी समय सूची बन जाती थी, मिलों पर ४ हजार, जौहरियों पर ४ हजार, किराने वालों पर चार हजार, गोटे वालों पर दो हजार—इसी तरह शहर भर के व्यापारियों पर चालीस-पचास हजार रुपया बांट दिया जाता था, और पांच सात दिन में चौधरियों द्वारा इकट्ठा कर दिया जाता था।

हकीम साहिब के मध्यकालीन ढंग के भवन में एक छोटी सी कोठरी थी। उसे नीली कोठरी कहें, तो असंगत न होगा। प्रसिद्ध था कि हकीम साहिब की आंखें कमजोर हैं, इस कारण वे अन्धेरी कोठरी में बैठते हैं। उसमें नीचे गलीचे बिछे हुए थे और गावतकिये लगे हुए थे। प्रायः हकीम साहब राजनीतिक बातचीत वहीं करते थे। वह स्थान कूट परामर्श के लिए बहुत ही उपयुक्त प्रतीत होता था। हकीम जी में एक विशेष बात यह थी कि वे बातचीत के समय बहुत ही धीरे स्वर से बोलते थे, उसके अतिरिक्त दूसरा व्यक्ति उनकी बात को नहीं सुन सकता था। उनका कहने का ढंग ऐसा शान्त और चतुराई पूर्ण था, उसके प्रभाव से निकल भागना कठिन था। दिल्ली के भाग्य के परकाले हैदरजा साहिब जी कहा करते थे कि उस कोठरी में न जाने कितने कार्यकर्त्ताओं की जमीनों का कत्ल हुआ है। जो व्यक्ति उस कोठरी में जा पहुंचता, वह हकीम साहिब की बात मान कर ही आता था।

शहर भर में हकीम साहिब का बहुत काफी प्रभाव था। वे यूं तो कट्टर मुसलमान थे, मुसलमान उलमाओं के वे प्रधान संरक्षक थे, परन्तु यह मानना पड़ेगा कि उनका शहर के हिन्दुओं पर बहुत गहरा प्रभाव था। सभी उनका आदर करते थे। यह सौभाग्य की बात थी कि महात्माजी को अपने आन्दोलन के दिनों में हकीम जी जैसे प्रभावशाली व्यक्ति का सहयोग मिल गया। यह भी महात्माजी के तपोबल का ही प्रभाव था।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

सं० राष्ट्रसंघ और विश्व शान्ति के प्रयत्न

प्रत्येक महायुद्ध के विध्वंस और विनाश को देखकर मानव शांति चाहता है और यही कारण है कि वह युद्ध न होने देने के लिए छटपटाता है। १९१४ के महायुद्ध के बाद १९१९ में एक राष्ट्रसंघ स्थापित भी हुआ था। उसमें कुछ समय तक दुनिया के विभिन्न राष्ट्रों ने संघर्ष रोकने के लिए प्रयत्न भी किये और उनमें थोड़ी बहुत सफलता भी प्राप्त की, किन्तु ज्यों ज्यों युद्ध को दिन बीतते गये, मनुष्य युद्ध की विभीषिका को भूलता गया और अपने-अपने स्वार्थ उसके आगे अधिक महत्वपूर्ण होने लगे। उसके सदस्य ही स्वयं विश्वशान्ति को भंग करने वाले हो गये। इटली ने अबीसीनिया पर, जापान ने मंचूरिया पर और जर्मनी ने कई पड़ोसी राज्यों पर अधिकार कर लिया। राष्ट्रसंघ के सब सदस्य स्वयं साम्राज्यवाद के अपराधी थे। फिर राष्ट्रसंघ के पास कोई ऐसी शक्ति भी न थी, जो आक्रमणकारी को दण्ड दे सकती। फलत राष्ट्रसंघ असफल हो गया।

१९३९ के महायुद्ध के बाद विश्वशान्ति का एक नया महान् प्रयत्न किया गया। १९४५ ई० में संयुक्तराष्ट्र संघ की स्थापना की गई। इसका उद्देश्य भी संसार में युद्धों की समाप्ति करके विश्वशान्ति स्थापित करना था। संसार के राजनीतिक संघर्षों को समाप्त करने के लिए इसकी एक विशेष समिति सुरक्षा-परिषद् (सैक्योरिटी कौंसिल) बनाई गई है। इसके कुल ११ देश सदस्य होते हैं। आजकल भारत भी इसका एक सदस्य है। ब्रिटेन, अमेरिका, रूस, फ्रांस और चीन के पांच स्थायी सदस्य हैं और शेष छः विभिन्न सदस्यों द्वारा बारी बारी से चुने जाते हैं। दुनिया के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक श्रम सम्बन्धी और खाद्य सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करने के लिए भी अलग-अलग समितियां हैं। संसार के पिछड़े देशों को उन्नत करने के लिए एक ट्रस्टीशिप कौंसिल बनाई गई है।

आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक प्रश्नों की चर्चा हमारा आज का विषय नहीं है। जिन राजनीतिक प्रश्नों पर राष्ट्रसंघ और उसकी सुरक्षा परिषद् ने विचार किया, उन पर हम इस लेख में एक सरसरी नजर डालना चाहते हैं। उससे आज की विषम अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का भी ज्ञान हो जायगा—कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न निम्नलिखित हैं —

इजरायल, काश्मीर, दक्षिणी अफ्रीका इण्डोनेशिया, दक्षिण पूर्वी अफ्रीका, ट्रिपोलिया आदि इटली के उपनिवेश, ग्रीस पर हमले, अणुबम पर नियन्त्रण, कम्यूनिस्ट चीन, कोरिया और बर्लिन।

इजरायल

फिलस्तीन में अरबों और यहूदियों के आपसी झगड़ों से परेशान होकर ब्रिटेन ने वहां के शासन से हाथ खींच लिया। ऐसा करते ही यहूदियों ने इजरायल नाम से एक यहूदी राज्य की घोषणा करदी। इस घोषणा के साथ ही यहूदियों व अरबों में युद्ध छिड़ गया। राष्ट्रसंघ ने बीच बिचाव के लिए बहुत कोशिश की। संघ का मध्यस्थ बर्नाडाट एक यहूदी द्वारा मार दिया गया। संघ ने बुंचे को मध्यस्थ बनाकर भेजा। युद्ध स्थगित अवश्य हो गया है। किन्तु अभी तक अन्तिम निर्णय नहीं हो सका। सीरिया व इजरायल में एक तटस्थ प्रदेश को लेकर छोटा सा झगड़ा फिर खड़ा हो गया था।

काश्मीर

यह प्रश्न राष्ट्रसंघ के सामने २॥ वर्ष से है, किन्तु अब तक भी यह प्रश्न सुलझा नहीं है। १ जनवरी १९४९ को दोनों देशों में अस्थायी सन्धि अवश्य हो गई है, किन्तु अमरीका और ब्रिटेन के पाकिस्तान के प्रति पक्षपात के कारण सुरक्षा-समिति अभी तक यह घोषणा करने में संकोच करती रही है कि पाकिस्तान आक्रमणकारी है, और उसे सेनाएं हटा लेनी चाहिएं। अब उसने डाक्टर ग्रेहम को मध्यस्थ बनाकर भेजने का निश्चय किया है। भारत ने इस प्रस्ताव को मानने से इन्कार कर दिया है। पहले मध्यस्थ डिक्सन की रिपोर्ट को, जिसमें पाकिस्तान को आक्रमणकारी घोषित किया गया था, सुरक्षा-परिषद् ने खटाई में डाल दिया है।

दक्षिणी अफ्रीका

दक्षिणी अफ्रीका की गोरी सरकार यहां भारतीयों के विरुद्ध अपमान-जनक कानून बनाती जा रही है। भारत ने यह मामला राष्ट्रसंघ में रखा था। अभी तक मामला लम्बा चल रहा है। राष्ट्रसंघ कुछ कर नहीं पा रहा।

इण्डोनेशिया

जापान से मुक्त हो जाने के बाद इण्डोनेशिया ने जब स्वतन्त्र रहना चाहा, तो हालैण्ड ने उस पर पुनः अधिकार करना चाहा और सेनाएं भेज दीं। यह मामला राष्ट्रसंघ ने अपने हाथ में लिया। इण्डोनेशिया के डचों का डटकर प्रतिरोध किया और आज वह स्वतन्त्र है।

अणुबम

अणुबम की दैत्यशक्ति मानवता को नष्ट कर देगी, इतनी भयंकर शक्ति किसी एक देश के हाथ में नहीं रहनी चाहिए, उस पर अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का नियन्त्रण हो, इस विचार से रूस और अमेरिका दोनों अपना अपना प्रस्ताव रख रहे हैं, पर दोनों अपना-अपना स्वार्थ रखना चाहते हैं। रूस अणुबम पर तो नियंत्रण करना चाहता है, किन्तु अपने अस्त्रास्त्रों के गुप्त निर्माण पर कोई बाधा नहीं चाहता।

कम्यूनिस्ट चीन

पिछले वर्ष १९४९ में चीन के कम्युनिस्टों ने चांगकाईशेक की सरकार को खदेड़ कर फारमोसा में जाने को विवश कर दिया। अब सारे चीन पर उसका अधिकार है। इसलिए रूस ने सं० रा० संघ में कम्यूनिस्ट सरकार के प्रतिनिधियों को लेने का प्रस्ताव किया। भारत भी उसका समर्थन करता है, किंतु अमेरिका इस प्रस्ताव को नहीं चलने देता। उसका बहुमत है। रूस ने पहले तो इसी बात पर संघ का बहिष्कार कर दिया, किन्तु पीछे से वह सम्मिलित होने लगा। कोरिया के साथ यह प्रश्न फिर सामने आया। किन्तु अमेरिका अपनी बात पर अड़ा हुआ है। अब तो उसने चीन को आक्रान्ता घोषित करा कर उसके विरुद्ध आर्थिक मोर्चाबन्दी का भी प्रस्ताव पास करा दिया है। कम्यूनिस्ट चीन भी अड़ा हुआ है।

कोरिया

जापान के पराजय के समय रूसी व अमेरिकन सेनाओं ने क्रमशः उत्तरी व दक्षिणी कोरिया को अपने अधिकार में ले लिया था। दोनों खण्डों को फिर एक करने के प्रयत्न में रूसी आग्रह के कारण राष्ट्रसंघ को सफलता नहीं हुई। दोनों देशों में अलग-अलग सरकारें बन गईं और कुछ समय बाद उत्तरी कोरिया ने दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण कर दिया, राष्ट्रसंघ ने इस प्रश्न को हाथ में लिया और अपनी सेनाएं उत्तरी कोरिया से लड़ने भेजदीं। यह युद्ध आज तक जारी है। चीन कम्यूनिस्ट कोरियनों का साथ देरहा है। राष्ट्रसंघ की सेनाओं ने कम्यूनिस्टों को दक्षिणी कोरिया से हटा दिया है। पर युद्ध अभी जारी है।

बर्लिन, ग्रीस, अफ्रीकन उपनिवेशों के प्रश्न भी इसमें पेश हुए, जिनकी चर्चा यहां स्थानाभाव से नहीं की जा सकती।

—————

मैं क्या चाहता हूं ?

राष्ट्रपति से

मैं चाहता बहुत कुछ हूं, किन्तु आज एक ही भीख मांगूंगा और वह है देश के प्रमुख शासक राष्ट्रपति से।

राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू म० गांधी के अनुयायियों में प्रमुख स्थान रखते हैं, किन्तु क्या आज उन पर होने वाला भारी व्यय भारत का दरिद्र नागरिक उठा सकता है? पं० नेहरू भले ही राष्ट्रपति के गौरवपूर्ण पद की 'शान' रखने के लिए बाह्य आडम्बर की आवश्यकता समझें, किन्तु ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम के आगे केवल वस्त्र पहन कर भारत का सच्चा प्रतिनिधित्व करने वाले म० गांधी का आदर्श राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू शायद सब से अधिक समझते हैं। तब क्या मैं यह आशा न करूं कि वह राष्ट्रपति के पद पर होने वाले असह्य व्यय को कम कर दो तीन हजार रु० मासिक लेंगे।

म० गांधी के सच्चे शिष्य श्रद्धेय राजेन्द्रप्रसाद से भारत इसी मार्ग प्रदर्शन की आशा करता है।

———

भाइयों से

सरकारी अधिकारी अपने कर्तव्य का पालन न करें, तो क्या जनता भी न करे? जनतन्त्र में जनता ही मार्ग प्रदर्शन करती है। इसीलिए उससे एक नम्र निवेदन करना है।

हिन्दी आपकी भाषा है और नागरी आपकी लिपि। किन्तु क्या आप सचमुच इस राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि का आदर करते हैं। क्या आपके सब कारोबार हिन्दी व नागरी में होते हैं! क्या आप केवल हिन्दी अखबार ही लेते हैं, अंग्रेजी या उर्दू अखबार नहीं? क्या आपकी चिट्ठी-पत्री भारत की—और आपकी — अपनी भाषा में होती है? क्या आपके घर या दुकान के साइन बोर्ड नागरी में ही हैं ?

यदि इन प्रश्नों का उत्तर हां में है, तो आप देशभक्त नागरिक हैं, किन्तु यदि न में है, तो क्या यह व्रत आप इन प्रश्नों को देखकर नहीं लेंगे कि दो मास तक इन प्रश्नों का उत्तर आप हां में देने योग्य हो जायेंगे?

———

प्रजातन्त्र के नाम पर तानाशाही का बोलबाला

मूल अधिकारों में परिवर्त्तन कर कांग्रेसी राज्य की सुरक्षा

★ श्री "आनन्द"

भारतीय संसद में प्रधान मंत्री पं० नेहरू द्वारा प्रस्तुत संविधान में संशोधन संबन्धी विधेयक पर प्रवर समिति का विवरण भी प्रकाशित हो गया है। प्रवर समिति ने विधेयक की मूल भाषा में केवल कुछ थोड़े से शब्दों का हेर फेर करने के अतिरिक्त कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण करके जिस परिवर्तन की घोषणा की गई वह संविधान की १९ वीं धारा में प्रस्तुत संशोधन में 'उचित' शब्द को स्वीकार कर लिया जाता है।

सारे देश का विरोध

इन संशोधनों के विषय में सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि समस्त देश में से एक कांग्रेस के अतिरिक्त अन्य किसी भी व्यक्ति, संस्था अथवा दल या समाचार पत्र ने इनका समर्थन नहीं किया है। प्रस्तुत सभी ने स्पष्ट और असंदिग्ध भाषा में अपना विरोध प्रकट किया है। प्रायः सभी राजनीतिक दल (कांग्रेस के अतिरिक्त) इनके विरुद्ध अपनी आवाज उठा चुके हैं। कई व्यापारी मण्डलों ने इनका विरोध किया है। कितने ही स्थानों के वकील मण्डलों ने इनके विरुद्ध आवाज उठाई है। बम्बई के वकीलों के सम्मेलन में पूना विश्वविद्यालय के उपकुलपति तथा विख्यात विद्वान डा० जयकर ने ऐसे किसी भी सरकारी कदम का घोर विरोध किया और सम्मेलन ने इसके विरुद्ध प्रस्ताव स्वीकार किया।

इसी प्रकार देश के सर्वोच्च न्यायालय की वकील सभा ने इसके विरुद्ध प्रस्ताव स्वीकार किया। देश विख्यात विधान शास्त्री तथा कानूनी पण्डित और कलकत्ता हाईकोर्ट के भूतपूर्व न्यायाधीश श्री एन० सी० चटर्जी ने इसका घोर विरोध किया है। अन्य भी अनेकों प्रमुख व्यक्तियों ने इसके विरुद्ध आवाज उठाई है। ऐसा एक भी व्यक्ति दिखाई नहीं देता जिसने इसका समर्थन किया हो। देश के कोने कोने से इसका विरोध किया गया है।

संसद व प्रवर समितियों में विरोध

उक्त विधेयक को जिस प्रवर समिति को सौंपा गया था उसके गैर कांग्रेसी सदस्यों ने व्यक्तिशः या सामूहिक रूप से इसके विरुद्ध अपनी सम्मति दी है। स्वयं श्री दुर्गाबाई (कांग्रेसी) ने विरुद्ध मत प्रकट किया है। प्रधान मंत्री को इस विधेयक पर अनेकों कांग्रेसी सदस्यों का समर्थन प्राप्त नहीं है। किन्तु जैसा कि डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने संसद में अपने भाषण में कहा कि कांग्रेस दल के नेता होने कारण प्रधान मंत्री ने दलनेता द्वारा प्रत्येक कांग्रेसी सदस्य को विधेयक के पक्ष में मत देने का आदेश दिया है। भाषण और प्रेस स्वतन्त्रता से सम्बन्धित संविधान की १९ वीं धारा सम्बन्धी संशोधन के विषय में स्वयं कांग्रेस दल के सदस्यों ने पं० नेहरू से यह प्रार्थना की थी कि उन्हें स्वतन्त्र मत देने का अधिकार दिया दिया जाय और उन पर दलादेश लागू न किया जाय। उक्त प्रार्थना इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है कि पं० नेहरू को विधेयक पर अनेकों कांग्रेसी सदस्यों का समर्थन प्राप्त नहीं है।

कांग्रेसी सत्ता बनाए रखने का उद्देश्य

यह सब होते हुए भी उक्त विधेयक को अत्यन्त भागापोदी में संसद द्वारा स्वीकार कराया जा रहा है क्योंकि प्रधान मंत्री पं नेहरू उसे स्वीकार कराना चाहते हैं, क्योंकि सत्तारूढ़ दल के कुछ प्रमुख नेता इसे स्वीकार कराना चाहते हैं? क्योंकि आगामी चुनावों में कांग्रेस के हाथ में शासन की बागडोर जाने के लिए उन्हें यह आवश्यक प्रतीत हो रहा है कि अन्यान्य विरोधी दलों को कुचल दिया जाय, कानून तथा सत्ता का लाभ उठा कर उनके मुंह बांध दिये जायें और बोलने वाले को बन्दीगृह की ऊंची दीवारों के पीछे फेंक दिया जाय और यह सब करने में समर्थ हो पाने के लिए इस विधेयक का स्वीकार होना आवश्यक है। संविधान द्वारा दी गई व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अपहरण आवश्यक है।

केवल कांग्रेस सरकार द्वारा

इस स्थल पर यह तथ्य अप्रासंगिक नहीं होगा कि संसार भर के देशों के जितने संविधान हैं, जिनको देख कर और जिनके आधार पर हमारे संविधान की रचना हुई है, उनमें प्रत्येक नागरिक को दिए गए मूलभूत अधिकारों में किसीने कोई परिवर्त्तन कभी नहीं किया। केवल सोलह मास के अत्यन्त अल्प कार्यकाल के पश्चात ही हमारी सरकार मूलभूत अधिकारों में ही परिवर्त्तन कर रही है। अन्य किसी भी देश में संविधान स्वीकृत होने के पश्चात् इतने अल्पकाल में संशोधन करने का कभी विचार तक नहीं किया गया। विश्व के इतिहास में एक भी उदाहरण देखने के लिए नहीं है।

गैरकानूनी कानून

प्रवर समिति की रिपोर्ट के विरुद्ध मत प्रकट करते हुए समिति के सदस्य डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने विधेयक की आलोचना करते हुए लिखा है—"हमारे देश में, विदेशी शासन काल में अनेक कानून ऐसे बनाए गए थे जो दमनकारी और प्रतिगामी थे। अनेक अवसर पर उनका उद्देश्य व्यक्ति स्वातन्त्र्य अथवा प्रेस स्वातन्त्र्य पर बंधन लगाना था। सरकार ने ऐसे कानूनों पर पुनर्विचार करने का कोई प्रयत्न नहीं किया है। दूसरी ओर इसी बीच में, हमने अपना संविधान स्वीकार कर लिया है जो सभी नागरिकों को कुछ मूलभूत अधिकारों का आश्वासन देता है। इस प्रकार के "गैर-कानूनी कानूनों" का सुधार करने और उनको मूलभूत अधिकारों से संगत बनाने के बजाय, हम इन प्रतिक्रियात्मक कानूनों से चिपके रहने और मूलभूत अधिकारों में परिवर्त्तन करने के विचित्र मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं जिससे [illegible] प्रकार के कानून उचित और वैध हो जायें।"

लिखित संविधान की महत्ता

जो होना चाहिये था उसके विरुद्ध हो रहा है। संविधान के अनुकूल कानून होने के स्थान पर कानून के अनुकूल संविधान तोड़ा मरोड़ा जा रहा है। संविधान की महत्ता और सरकारी कदम के अनौचित्य की ओर संकेत करते हुए डा० मुकर्जी ने लिखा है— 'यदि हमारा एक लिखित संविधान और मूलभूत अधिकार हैं, जैसा कि हमने गम्भीरता पूर्वक तथा जानबूझ कर रखना स्वीकार किया है, तो हमें उसकी व्यवस्था के अनुकूल चलना पड़ेगा। कोई भी सरकार उनको एक ओर नहीं हटा सकती अथवा जल्दबाजी में उनमें केवल इस बहाने से परिवर्तन नहीं कर सकती कि न्यायालयों द्वारा लगाया गया उनका अर्थ अथवा उनके निर्णय उसकी इच्छा के अनुकूल नहीं हैं। इससे तो कहीं अधिक सम्माननीय मार्ग यह होता कि किसी प्रकार का लिखित संविधान स्वीकार ही नहीं किया गया होता और संसद को ही सर्वोच्च संस्था बना दिया जाता।"

प्रजातन्त्र की हत्या

किन्तु किसी भी प्रकार के तर्क

पत्र जगत के प्रधानमन्त्री की भूल

अथवा औचित्य अनौचित्य की ओर से नेत्र बन्द कर और कान मूंद कर प्रधान मन्त्री पं० नेहरू संसद में कांग्रेसी सदस्यों के बहुमत के बल पर संविधान (प्रथम संशोधन) विधेयक को स्वीकार कराने पर तुले हैं। जो पं० नेहरू व्यक्ति स्वतन्त्रता के सब से बड़े समर्थक कहलाते हैं, जिन्होंने अभी केवल कुछ मास पूर्व अखिल भारत पत्र सम्पादक सम्मेलन में पत्र स्वातन्त्र्य को अक्षुण्ण रखने का अभिवचन दिया था, जो उस ब्रिटिश प्रजातन्त्र प्रणाली के भक्त हैं जहां व्यक्ति और पत्र स्वातन्त्र्य अबाध है, जो राष्ट्रीय ही नहीं अंतराष्ट्रीय हितों की रक्षा की ही सदा चिन्ता करते हैं और सम्पूर्ण मानवता के लिए व्याकुल हैं, वे ही अपने दल के स्वार्थ के लिए न केवल राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा ही वरन् घोर तानाशाही और प्रजातन्त्र के नाम पर कलंक लगाने वाली पद्धति का अनुसरण कर मूलभूत अधिकारों में परिवर्तन करने करेंगे, यह किसने सोचा था। प्रजातन्त्र के सबसे बड़े समर्थक हाथों ही यह प्रजातन्त्र की हत्या है।

अनुचित ढंग

वास्तव में प्रजातन्त्र को कलंक लगाने वाली पद्धति का इस विधेयक को स्वीकार करने के लिए अनुसरण किया जा रहा है। विधेयक पर विचार करने के लिए किसी को भी समय नहीं दिया जा रहा है। संशोधन स्वीकार करने के

[शेष पृष्ठ २२ पर]

विज्ञान द्वारा

समय से पूर्व जन्मे बच्चों को जीवन दान

१९२४ के पूर्व साढ़े पांच पौंड से कम वजन वाले बच्चों के जीवित रहने की आशा कम ही रहती थी। आज अधिकांश अमेरिकी अस्पतालों में समय से पूर्व जन्मे ८० प्रतिशत बच्चों की जान बच जाती है। किन्हीं-किन्हीं राज्यों में जहां इस ओर विशेष ध्यान दिया जाता है, जीवित रहने वाले बच्चों की संख्या और भी ज्यादा है। कनाडा के एक डाक्टर ने तो समय से ढाई महीने पूर्व जन्मे बच्चे की जान बचा ली थी। जिस समय वह बच्चा पैदा हुआ था, उसका वजन केवल १४ औन्स था।

इन बच्चों का लालन-पालन एक बक्स में रख कर किया जाता है। उसे इन्क्युबेटर कहते हैं। उसका तापमान नियन्त्रित किया जा सकता है और बच्चे के लिए मां के गर्भ के समान परिस्थितियां बना दी जाती हैं। उसे बराबर 'औक्सिजन' दी जाती है। जैसे जैसे बच्चा बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे तापमान और आक्सीजन भी कम कर दी जाती है। पहले दो चार रोज बिल्कुल साधारण दशा में रख कर बच्चे को बक्स के बाहर निकाल लिया जाता है। उस समय वह बच्चा भी अन्य उचित समय पर जन्मे बच्चों के समान ही स्वस्थ और सुन्दर होता है।

बच्चे को पीने के लिए एक विशेष पदार्थ दिया जाता है, जो मां के दूध से भी उत्तम है। शुरू में बच्चे के मुंह के द्वारा पेट में नली डाल कर वह पदार्थ पहुंचाया जाता है फिर धीरे-धीरे बक्स से निकलने के समय तक बच्चा स्वयं पीना सीख लेता है।

बहुत साल हुए, १९०८ में पेरिस के एक डाक्टर ने इस यन्त्र का विकास किया था। उनका नाम डाक्टर कौनी था। उन्होंने यह निश्चय किया कि वह समय से पूर्व जन्मे शिशुओं की जान बचाने का ही कार्य करेंगे। उनके उस प्रयास के फलस्वरूप आज इतनी प्रगति हो गई है। प्रारम्भ में डाक्टर कौनी को बहुत कठिनाइयां पड़ीं। बच्चों की मृत्यु-संख्या कम हो गई किन्तु उनकी निरन्तर सेवा करने से डाक्टर कौनी की शारीरिक शक्ति और धन समाप्त हो चुका था। उन बच्चों के मां-बाप बहुधा इतने निर्धन होते थे कि बच्चों की देख-भाल का खर्च नहीं उठा पाते थे। अस्पतालों ने इन्क्युबेटर को यह कह कर अस्वीकार कर दिया था कि यह तो जादूगर का तमाशा-सा है। डाक्टर कौनी के पास धन 'नहीं' के बराबर था। फिर भी उन्होंने हार मानी और यह निश्चय किया कि इन शिशुओं को दुनिया के सामने रख कर उन्हीं से अपने खर्चे हुए धन को वसूल करेंगे।

उन्होंने इन्क्युबेटर की छत और दीवारें शीशे की बनवाईं और बच्चों को प्रदर्शन के लिए एक कमरे में रख दिया। जल्दी ही काफी भीड़ होने लगी। बच्चों का नहाना, कपड़े बदले जाना आदि जनता के लिए कौतुक की वस्तुएं बन गईं। उस कमरे में प्रवेश की जो फीस ली जाती थी, उससे बच्चों का पूरा-पूरा खर्च निकल आता था।

अन्य डाक्टरों ने इस प्रदर्शनी की बहुत निन्दा की। डाक्टर कौनी की भर्त्सना की और उनके व्यापारी दृष्टिकोण की जोरदार शब्दों में आलोचना की। किन्तु डाक्टर चुप छिप कर समय से पूर्व जन्मे शिशुओं को कौनी के ही पास लालन-पालन के लिये लाते रहे। वे डा० भी यह भली भांति जानते थे कि अगर कोई उन बच्चों की जान बचा सकता था तो वह डाक्टर कौनी ही थे।

डा० कौनी अपनी इस प्रदर्शनी को यूरोप ले गए और वहां भाषण देते हुए यह समझाया कि समय से पूर्व जन्मे बच्चों के लिए यह न समझ लेना चाहिए कि वे मर ही जायेंगे। उनकी जान आसानी से बचाई जा सकती है। डा० कौनी अमेरिका भी गए। और सारे देश में अपने छोटे-छोटे "कलाकारों" की कला का प्रदर्शन किया।

अब ८१ वर्ष की आयु में वे हजारों सुयोग्य स्नातकों को देखते हैं, जो उनके यन्त्र द्वारा ही जीवित रह सके हैं। उन्हीं के प्रारम्भिक कार्य ने अनेक प्राणियों को प्राणदान दिया और उन्हीं की विचित्र प्रदर्शनी द्वारा आज विज्ञान इतनी प्रगति कर सका है।

एक तपस्विनी आदर्श माता

श्रीमती आचार्य विद्यावती सेठ की पूज्या माता श्रीमती सोहना देवी जी का गत १७ मई १९५१ बृहस्पतिवार को लगभग डेढ़ बजे दिन को देहरादून में स्वर्गवास हो गया है। उन की आयु इस समय ९० वर्ष के लगभग थी, फिर भी बीमारी से पूर्व अपना सब काम अपने आप ही करती थीं।

श्रीमती सोहना देवी कानपुर जिले के अमरौधा ग्राम में एक उच्च कुल मेहरोत्रा खत्री जमींदार के घर में पैदा हुई थीं। १३ वर्ष की आयु में सनातन प्रथा के अनुसार इनका विवाह श्रीमान वृजबिहारी सेठ के साथ हुआ था। विवाह प्रीतीभता तोड़ कर पंजाबी वर से गांव में ही आर्यप्रतिनिधि सभा यू० पी० के महोपदेशकों द्वारा समारोह से किया गया था। यह वैदिक रीति का पहिला विवाह था, अतएव बिरादरी का प्रबल विरोध था। बिसवां में जनता के लाभार्थ इन्होंने सेठ जयदयाल कालिज की स्थापना की। इसके बाद इन्होंने यह विचार किया कि दूसरी लड़की को आजन्म ब्रह्मचारिणी रख कर उसे पूर्ण संस्कृत और अंग्रेजी की शिक्षा देकर स्त्री शिक्षा प्रचार का काम करावेंगे और उसके तैयार हो जाने पर स्वयं भी नौकरी छोड़ कर ऋषि दयानन्द की शिक्षा-प्रणाली के अनुसार 'गुरुकुल द्वारा इसी परोपकार के काम में लगेंगे। इसी उद्देश्य से उसकी तथा अन्य लड़के लड़कियों की शिक्षा घर में प्रारम्भ हुई। घर एक ब्रह्मचर्य आश्रम के रूप में था और पत्नी उसकी अधिष्ठात्री। परन्तु दैव दुर्विपाक से वह अपनी इस इच्छा को पूरा होते हुए न देख सके। पारिवारिक झगड़ों के दुःख में उनका स्वर्गवास अकाल में ही १९०१ में हो गया। मृत्यु के समय उन्होंने अपनी अन्य इच्छाओं के साथ इस इच्छा को भी प्रगट किया, जिसे उन की सहधर्मिणी श्रीमती सोहना देवी जी ने बड़ी धीरता और शांति के साथ जीवन बिता कर पूर्ण किया। इसके फलस्वरूप देहरादून में स्थित कन्या गुरुकुल महाविद्यालय और महिला आश्रम लखनऊ चौक दो मूर्तिमान संस्थाएं हैं। वह बड़ी सुशील, मधुर भाषिणी, आतिथ्य सत्कार करने वाली त्याग की मूर्ति थीं। कन्या गुरुकुल के वातावरण में अपनी पुत्री आचार्या विद्यावती के साथ रहती हुई लगभग २५ वर्ष तक बच्चियों को वह नानी और दादी ही के रूप में दीखती थीं।

कर्मशीला विद्यावती वर्मा

इसी सप्ताह दिल्ली की एक कार्यकर्त्री साहित्यिक महिला श्रीमती विद्यावती का देहान्त हो गया। विवाह और गृहस्थ जीवन के सब संकटों में रहते हुए भी उन्होंने भूषण, प्रभाकर और फिर साहित्यरत्न की परीक्षा दी। आप हिन्दी में कविता भी करती थीं तथा रेडियो पर कविता पाठ के लिए जाती थीं। साहित्यिक रुचि के अलावा जन-सेवा की भावना भी आप में थी। कांग्रेस आन्दोलन में सक्रिय भाग आप लेती थीं। कांग्रेस सेविका दल की भी आप उत्साहिनी कार्यकर्त्री थीं। नया बाजार में एक बालसभा का संचालन करके बालकों के उत्थान में आप बराबर रुचि लेती थीं। अपनी मृत्यु से पूर्व भी वे बिहार के लिए अन्न संग्रह कर रही थीं। वे अपने पीछे चार सन्तानें छोड़ गई हैं। उनके पति श्री रामलालजी वर्मा व अन्य परिवार से हम सम्वेदना प्रकट करते हैं।

स्त्रियों के चार गुण

नये विधविधान में स्त्रियों की क्या स्थिति होगी, इस बारे में एक विदेश गामी सम्वाददात्री ने वहां के राष्ट्रपति डा० हो ची मिन्ह से हुई भेंट पर प्रकाश डाला था। जब उसने राष्ट्रपति हो से ऊपर लिखित प्रश्न किया तो उन्होंने, कहा कि कनफ्यूशियस के स्त्रियों के बारे में तीन सिद्धांत तो समाप्त हो जायेंगे पर स्त्रियों के लिए बताये गये चार गुण पहले की तरह लागू रहेंगे।

पर सम्वाददात्री को कनफ्यूशियस के बताये गए सिद्धांतों और गुणों का पता नहीं था। इसलिए उसने फिर, प्रश्न किया कि वह गुण और सिद्धांत कौन-कौन से हैं।

तो डा० हो ने बताया कि तीन सिद्धान्त यह हैं कि पहले स्त्री को अपने पिता पर आश्रित रहना चाहिए, फिर पति पर और उसके भी न होने पर अपने पुत्र पर।

और स्त्री के चार गुण हैं.—

गृहिणी चतुर होनी चाहिए, उसका व्यवहार अच्छा हो, मृदुभाषी हो और और देखने भालने में अच्छी हो।

कल के भारतीय प्रदेश में—

पूर्व बंगके साथ ही सिंधसे भी निष्क्रमण : काश्मीरके लिए दांवपेच : पाक गुप्तचरों का गतिविधि : पख्तून दमन के लिए सैन्य प्रयोग : आर्थिक सम्मेलन

पूर्वी बंगाल सरकार ने एक प्रेस विज्ञप्ति में यह स्वीकार कर लिया है कि ढाका में हिन्दू-घरों में बलात् प्रवेश की कुछ घटनायें हुई हैं और एक घर में स्त्रियों के आभूषण भी छीने गए। किन्तु साथ ही पूर्वी बंगाल के मुख्य मंत्री श्री नूरुल अमीन ने भारत पर पूर्वी पाकिस्तान पर आक्रमण करने की तैयारियां करने का आरोप लगाया है। 'उलटा-चोर कोतवाल को डांटे' इसी को कहते हैं। श्री नूरुल अमीन ने डाक्टर खरे के उस सुझाव को पाकिस्तान पर आक्रमणात्मक प्रवृत्ति का सूचक कहा है जिसमें हिन्दू महासभा के अध्यक्ष ने कहा है कि काश्मीर पाकिस्तान को देकर बदले में पूर्वी बंगाल ले लिया जावे।

× × ×

पूर्वी बंगाल के समान ही पश्चिमी पाकिस्तान के सिन्ध प्रांत में शेष बचे थोड़े से हिन्दुओं को निकाल बाहर करने के प्रयत्न भी प्रारम्भ हो गये हैं। सिन्ध प्रांत के थार पारकर नगर के ठाकुरों को किसी न किसी बहाने से निकाला जा रहा है।

थार पारकर सिंध प्रांत की पूर्वी सीमा पर प्रान्त का सबसे बड़ा जिला है यह राजस्थान के विख्यात थार मरुस्थल का एक भाग है। विभाजन के पूर्व हिन्दू यहां बहुसंख्या में थे और इसलिए आसाम के सिलहट जिले के समान इसे भी भारत में आना चाहिए था। किन्तु सिंध और भारत के कांग्रेसी नेता समय से इसकी मांग न रख सके और इस प्रकार यह भी मि० जिन्ना की लूट का एक भाग बन गया। जिस समय हिन्दुओं का निष्क्रमण आरम्भ हुआ था वहाँ के ठाकुरों और हिन्दू किसानों को अपनी सुरक्षा सम्बन्धी कोई भय नहीं दिखायी दिया, और वे वहां बने रहे। किन्तु अब जब विशेष सिंध लगभग 'पाक' किया जा चुका है। थार पारकर के 'नापाक' लोगों की भी बारी आ गई है।

× × ×

भारत की सीमा में पाक-गुप्तचरों की गतिविधि बढ़ने के अन्य भी समाचार प्राप्त हुए हैं। हाल ही में भारत के सेना विभाग के एक प्रमुख केन्द्र जबलपुर, में भी उनकी सक्रियता बढ़ी हुई ज्ञात हुई है। जबलपुर में इस सम्बन्ध में एक होटल में चार व्यक्ति पुलिस द्वारा बन्दी बनाए गए हैं। ज्ञात हुआ है कि चारों पाकिस्तानी हैं।

इसके अतिरिक्त देश में साम्प्रदायिक तनाव का वातावरण उत्पन्न किये जाने का प्रयास किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश तथा अन्य प्रांतों के भी कुछ लीगी समाचार-पत्र हिन्दुओं के विरुद्ध विषवमन कर रहे हैं। हिन्दू देवी देवताओं के विषय में अपशब्दों का प्रयोग किया जा रहा है। इस प्रकार इस प्रकार की अनेक चेष्टायें की जा रही हैं, जिससे जनता की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचे और उत्तेजना फैले।

× × ×

तथाकथित 'आजाद काश्मीर' के अध्यक्ष चौधरी गुलाम अब्बास तथा पाकिस्तान के प्रधान मंत्री श्री लियाकतअली खां की भेंट होने का समाचार प्राप्त हुआ है। ये भेंट कराची में हुई। भेंट के अवसर पर पाकिस्तान सरकार के काश्मीर मंत्री और सेक्रेटरी जनरल श्री मुहम्मद अली भी उपस्थित थे। ज्ञात हुआ है कि काश्मीर के सम्बन्ध में उठाये जाने वाले नये कदम पर विचार विनिमय हुआ यह भी ज्ञात हुआ है कि उपरोक्त बैठकके पश्चात सुरक्षा परिषद् में श्री जफरुल्ला को भी भेजा गया है। दूसरी ओर काश्मीर विराम रेखा के पाकिस्तानी ओर युद्ध की सामग्री और बढ़ा देने का भी निश्चय हुआ है। कुछ ही समय में पाकिस्तानी सेना के लाहौर तथा रावलपिंडी केन्द्रों से आने वाली यह सामग्री और भी बढ़ जायगी, यह आशा है। श्री जफरुल्ला को कहा गया है कि वे सुरक्षा परिषद् के सदस्यों पर दबाव डाल कर भारत को पंच फैसला स्वीकार करने के लिए बाध्य करें, अन्यथा भारत के विरुद्ध आर्थिक नाकेबन्दी का प्रस्ताव लाने की तैयारी करें।

प्राप्त समाचारों के अनुसार काबुल रेडियो ने पाक सेना द्वारा कन्धार नगर पर किये गये आक्रमण की निन्दा की है। यह भी ज्ञात हुआ है कि कन्धार के पठान निवासियों ने काबुल सरकार से यह प्रार्थना की है कि वह उनकी सहायता करे। पख्तूनिस्तान के प्रदेश में अन्य भी कई स्थानों पर पाकिस्तानी सैनिक कार्यवाही और दमन के समाचार मिले हैं। यह भी ज्ञात हुआ कि पाकिस्तान के इस कदम से उस क्षेत्र में भारी असन्तोष फैलता आ रहा है और इस प्रकार असन्तोष भड़का कर पाकिस्तान स्वयं पख्तूनिस्तान आन्दोलन के प्रचार में सहायक हो रहा है। दमन के विरुद्ध उठने की जनता की स्वाभाविक प्रवृत्ति रहा करती है और उसी के फलस्वरूप यहां की जनता भी इस आन्दोलन के पीछे आती जा रही है। कबाइली नेताओं के आपसी मतभेद भी कम होते जा रहे हैं और फलस्वरूप उन आन्दोलन जड़ पकड़ता जा रहा है।

× × ×

ज्ञात हुआ है कि एक बलूच नेता के नेतृत्व में बन्नू के उलेमाओं ने पाकिस्तान को एक विरोध पत्र भेज कर यह चेतावनी दी है कि यदि अफगानों तथा पख्तूनों के विरुद्ध अपने 'चंगेज खां' जैसे अत्याचारों, स्वतन्त्रता के लिए लड़ने वाले व्यक्तियों की नजरबन्दी, और गरीब जनता तथा दूकानदारों की कमर तोड़ने वाले भारी करों को समाप्त नहीं किया तो वे उसे तलवार के जोर से प्राप्त करेंगे।

उन्होंने कहा है कि हमने पाकिस्तान की स्थापना में कुर्बानियां दी हैं किन्तु उसने हमें नहीं पहिचाना है। अगर हमारे आजादी के दावे को पाकिस्तान सरकार ने ठुकरा दिया तो हम उसके विरुद्ध हथियार उठाने में न चूकेंगे। काबुल रेडियो ने भी इसी आशय का एक समाचार बख्तर समाचार समिति का उल्लेख करते हुए प्रसारित किया है।

ईरान के प्रश्न पर पाकिस्तान के सामने एक समस्या खड़ी हो गयी प्रतीत होती है। एक ओर तो ब्रिटेन ने उससे आग्रह किया है कि वह ईरान पर दबाव डाल कर उसे ब्रिटिश अनुरोध स्वीकार करने के लिये कहे। पाकिस्तान ब्रिटेन से बिगाड़ना नहीं चाहता क्योंकि पाकिस्तान की वर्तमान सैनिक तैयारियां ब्रिटेन की सहायता के बिना धरी रह जायेंगी। दूसरे सुरक्षा परिषद् में काश्मीर के प्रश्न पर पाकिस्तान ब्रिटेन के समर्थन को आवश्यक समझता है।

किन्तु दूसरी ओर इस्लामिस्तान की योजना है और ईरान उसमें एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। इसी योजना के अन्तर्गत मध्यपूर्व के सभी इस्लामी देश आते हैं। गत वर्ष ईरान के शाह का भारी स्वागत इसी दृष्टि से पाकिस्तान सरकार द्वारा किया गया था। अत: ईरान पर दबाव डाल कर वह उससे अपने सम्बन्धों को भी खराब करना नहीं चाहता। ईरान से सम्बन्ध खराब कर लेने का अर्थ इस्लामिस्तान का स्वप्न टूट कर नींद खुल जाना होगा और पाकिस्तान इस सुखद स्वप्न को तोड़ना नहीं चाहता।

× × +

सोमनाथ में ज्योतिर्लिङ्ग की प्रतिष्ठा के समाचार को लेकर पाकिस्तान भारत को काफी बदनाम करने का प्रयत्न कर रहा है। पाक समाचार पत्रों में कहा गया है कि भारत सरकार इस मन्दिर पर एक करोड़ रुपया व्यय कर रही है, जब कि बिहार में धन तथा अन्न के अभाव में लोग भूखे मर रहे हैं। इस चित्र का सबसे मनोरंजक अंग वह है जो पाकिस्तान ने भारत को अमरीकी अन्न मिलने के मार्ग में रुकावट डालने वाले प्रयत्नों से सम्बन्धित है। पाक सरकार ने अमेरिका में इस बात का प्रचार किया था कि पड़ोसी पाकिस्तान के अधिक गेहूं होते हुए भी भारत अमेरिका से अन्न क्यों मांग रहा है? इसी आधार पर कुछ सिनेटरों ने अन्न सहायता का विरोध भी किया था। भारत को अन्न सहायता के मार्ग में एक ओर से खाई खोदना और दूसरी ओर सोमनाथ के व्यय को अपव्यय बता कर बिहार के अकाल पीड़ितों के लिए आंसू बहाना पाकिस्तानी मनोवृत्त के सुन्दर चित्रों में एक और की वृद्धि करता है।

× × ×

नई दिल्ली में भारत पाक उच्चस्तरीय आर्थिक सम्मेलन प्रारम्भ हो गया है। इन पंक्तियों के प्रेस में जाने के समय तक उसकी कार्यवाही के कुछ विस्तृत समाचार प्राप्त नहीं हुये हैं, तो भी विचार है कि पाकिस्तानी प्रतिनिधि मंडल पुन: भारत से कपड़ा तथा कोयला और अधिक लेने का यत्न करेगा। इस सम्मेलन में तो विशेषकर गत आर्थिक सम्बन्धों में दोनों पक्षों की ओर से किये गये दावों पर ही विचार किया जायगा। किन्तु पाकिस्तानी मंडल इस विचार-विनिमय में ही उपरोक्त प्रयास करेगा। इस प्रयास का प्रारम्भ इन्हीं वस्तुओं के सम्बन्ध में भारत से हुये समझौते के क्रियान्वित होने से सम्बन्धित पाकिस्तानी दावों से होगा।

× × ×

आचार्य कृपलानी द्वारा तमाशबीनों को निमन्त्रण !

वोट सिर्फ उसे मत दीजिये जो—

★ स्वामी सत्यभक्त

स्वराज का अर्थ होता है जनता के हाथ में राज्य का अधिकार आजाना, पर इसका व्यावहारिक रूप होता है जनता जिसके हाथ में अधिकार सौंपे उसी का शासक बन जाना । आशा यह की जाती है कि जनता जिसको चुनती है वह जनता के हित के अनुसार काम करेगा, पर पंचानबे फीसदी ऐसा नहीं होता । इसलिए स्वराज्य मिल जाने पर भी सुराज्य नहीं मिल पाता । भारत की स्वतन्त्रता इसका उदाहरण है । वास्तव में जनता को-खासकर भारत में-वोट किस को दिया जाय इसका पता ही नहीं । आज तो जनता बच्चों की तरह है, जिसे कोई भी फुसलाकर या लुभाकर वोट ले ले । अधिकांश उम्मेदवारों को जनहित के अनुसार जीवन बनाने से और अनहित करने से कोई मतलब नहीं । मौके पर हाजरी बजाने, कुछ प्रदर्शन करने, कुछ बातें मारने, कुछ चापलूसी करने से मतलब है, इसी दम पर वे वोट ले लेते हैं, अथवा जाति सम्प्रदाय या राजनीतिक दल या पुरानी कीर्ति के नाम पर वोट ले लेते हैं । पर इनका सुशासकता से कोई सम्बन्ध नहीं । जनता अपने मताधिकार का ठीक उपयोग कर सके इसलिए उसे नीचे लिखी बातों पर ध्यान रखना चाहिए ।

१—उम्मेदवार का चुनाव में जितना अधिक खर्च आयेगा, सफल होने पर वह उतना ही अधिक वसूल करेगा । इसलिये उम्मेदवार से रिश्वत लेना, उस की गाड़ी का उपयोग करना, या खान पान आदि में उससे खर्च कराना, आदि इस बात की निशानी है कि आप उम्मेदवार को ईमानदार नहीं रखना चाहते, या ईमानदार आदमी को उम्मेदवार नहीं बनने देना चाहते । आप कल्पना तो करो कि जो दस पांच रुपए की सुविधा आप को मिल रही है, वह अगर न ले तो सच्चे आदमी को उम्मेदवार बनने का अवसर मिले, उससे जो सुशासन पैदा होगा उससे आगे चलकर आप को उस से अधिक मिल जावेगा जो आपने रिश्वत आदि में ले लिया है । आख़िर रिश्वत देने वाले जो कुछ वसूल करते हैं, वह जनता का ही पैसा होता है । भले ही सीधे तौर पर वह आप से वसूल किया हुआ मालूम नहीं होता, पर दुःशासन से जो रिश्वतखोरी, चोर बाजारी, महंगाई, आदि होती है, या अधिक टैक्स लगता है, उसका हिस्सा आपको भी चुकाना पड़ता है और पांच वर्ष में उससे पचासों गुना चुकाना पड़ता है, जितना आपने चुनाव की रिश्वत आदि में ले लिया है, इसलिये भूल से भी चुनाव में रिश्वत न लीजिए और न उम्मेदवार से अधिक खर्च कराइये ।

२—अपनी जाति या सम्प्रदाय का होने से किसी को वोट न दीजिये, क्योंकि अपनी जाति का होने से ही कोई ईमानदार विद्वान आदि नहीं हो जाता । अगर आपके जाति या सम्प्रदाय के व्यक्ति में ईमानदारी विद्वत्ता आदि हैं तो उन्हीं के कारण उसे वोट दीजिये, जाति या सम्प्रदाय के कारण नहीं । अगर जाति या सम्प्रदाय के पक्षपात के कारण आप किसी में गुण और ईमान देखने के आदी हैं तो यह आदत छोड़िये ।

३—कुछ लोग आपके सामने यह कहते हुये आवेंगे कि हम जेल गये हैं हमने देश के लिए अनेक कष्ट सहे हैं आदि ।

आप उनके उपकारों के लिए प्रणाम कीजिए पर इसी कारण उन्हें वोट न दीजिये । क्योंकि—

अयोग्य और बेईमान आदमी भी जेल जा सकते हैं तथा देश के लिये कष्ट सह सकते हैं । ऐसे लोग जेल गये भी हैं पर इससे वे सभी ईमानदार साबित नहीं हुए । स्वराज्य मिलने के बाद जिन लोगों के हाथ में सत्ता आई, उनमें ऐसे लोग काफी थे, पर उनकी ईमानदारी और योग्यता का कैसा दिवाला निकला, उसका फल आप काफी भुगत रहे हैं । ऐसे लोग सेवा के बदले में जागीर भले ही ले लें, पर शासनका अधिकार नहीं । जैसे किसी का उपकार होने के कारण ही आप उसे डाक्टर मानकर उसे अपना शरीर नहीं सौंप सकते, विद्वान मानकर उसे प्रोफेसर नहीं बना सकते उसी प्रकार उपकारी होने के कारण किसी को शासक न मानिए । साफ कह दीजिए कि अगर आप सचमुच उपकारी हैं तो आपको प्रणाम कर सकता हूं पर इसी कारण से हज़ारों लाखों आदमियों का जीवन नहीं सौंप सकता । शासन सेवा करने के लिए है, पुरानी सेवा का फल चखने के लिए नहीं ।

४—जो यह कहे कि 'हम खादी पहनते हैं चर्खा कातते हैं, गांधी जी की जय बोलते हैं, वे भी मेंबर बनने के लायक नहीं हैं ।

इन कारणों से आप उन्हें भी वोट न दीजिये, क्योंकि ऐसा कोई पाप नहीं जो चर्खा कातकर और खादी पहनकर या गान्धी जी की जय बोलकर न किया जा सकता हो । स्वराज्य मिलने पर जिन लोगों ने देश की आर्थिक और राजनैतिक दुर्दशा की, वे खादी पहिनने में चर्खा कातने में और गान्धी जी की जय बोलने में कुछ आगे ही रहे हैं । इन बातों का पवित्रता या योग्यता से कोई सम्बन्ध नहीं । फिर भी यदि कोई आर्थिक दृष्टि से चर्खा कातता है तो काते, उस योजना से लाभ उठाये, पर इस कारण से दुनिया पर अहसान लादने की कोशिश न करे ।

५—कुछ लोग कहेंगे कि हम कांग्रेसी हैं, कांग्रेस ने देश को स्वराज्य दिलाया है, वह देश की सर्वश्रेष्ठ संस्था है । इसलिए वोट दीजिए । पर उनसे कहिए—

क—जो लोग जीवनभर कांग्रेस के विरोधी रहे, देशद्रोही रहे आज वे भी पैसे आदि के बल पर कांग्रेस में शामिल हैं तब कांग्रेसी होने के महत्व क्या हैं ?

ख—जो लोग एक दिन कांग्रेसी थे तपस्वी थे, वे आज उसका फल चखने के लिए दुनिया भर के पाप करने को तैयार हैं । आज देश को सेवा की जरूरत है सेवा का फल चखने वालों की नहीं ।

ग—शासन के लिए बौद्धिक योग्यता और ईमानदारी की जरूरत है । कांग्रेसी होने से ये दोनों बातें आ जाती हैं और कांग्रेसी न होने से चली जाती हैं, ऐसा कोई नियम नहीं है । तब कांग्रेस के नाम से किसी को वोट क्यों ?

घ—कांग्रेस कोई भी व्यवस्थित आर्थिक योजना आज तक देश के सामने नहीं रख पाई । वह ग्राम्यवाद की दुहाई देती है जिसपर एक कदम नहीं चल पाती, पूंजीवाद पर चलने की कोशिश करती है पर पूंजीवादियों से यथेष्ट सहयोग नहीं ले पाती, समाजवाद से जितना अंश लिया जा सकता है उतना भी नहीं ले पाती । ऐसी अव्यवस्थित संस्था को क्यों वोट दिया जाय ?

इस प्रकार केवल कांग्रेस होने के कारण किसी को वोट देने की जरूरत नहीं है । उसमें योग्यता ईमानदारी आदि अन्य गुण देखना चाहिए ।

६—कोई कहेंगे कांग्रेस बहुत बुरी संस्था है, इसलिये हमने कांग्रेस छोड़ दी है और दूसरे दल में शामिल हो गए हैं या दूसरा दल स्थापित कर लिया है, इस लिए हमें वोट दीजिए ।

पर सिर्फ इस कारण से किसी को वोट न दीजिए । उनसे कहिए—

क—कांग्रेस में जिस प्रकार लीग

[शेष पृष्ठ १८ पर]

गीत

लेखक —
श्री कमल साहित्यालङ्कार

समय का आह्वान सुनकर घर रुका मुझसे न जाता।
भोग की घड़ियाँ सुनहली फिर मिलेंगी यदि रहे तो,
स्वर्ग में भी भोग ही है, कर्म पथ पर यदि मरे तो,
व्याधियाँ आती सतत पर, कर्म का अवसर न आता।
समय का आह्वान सुनकर प्रिय रुका मुझसे न जाता।
आज घर-घर जल रही है वेदना की विकल ज्वाला,
जगत के उर में नियति खुद घोलती दिन-रात हाला,
प्रलय के स्वर में मुखर हो मरण है संहार गाता।
समय का आह्वान सुन अब घर रुका मुझसे न जाता।
एक दिन आये यहाँ जो प्यार का सत्कार बन कर,
बह रही उनकी निशानी क्षार पारावार बनकर,
प्रति स्वर पीड़ित जगत का है मुझे पागल बनाता।
समय का आह्वान सुन अब घर रुका मुझसे न जाता।
जन्मभू ये और जननी संकटों में जब पड़ी हो,
शोक रोगों की घनी जब घेर जीवन पथ खड़ी हो,
सो रहा ऐसे समय जो अब क्या वह पाप जाता।
समय का आह्वान सुन प्रिय घर रुका मुझसे न जाता।
जब दिशा सोई युगों से स्मृतियाँ साकार लेकर
है जगाना शेष उनको फिर नया आधार देकर,
मैं न रुकने की शपथ खा जा रहा सुधियाँ जगाता।
समय का आह्वान सुनकर घर रुका मुझसे न जाता।
देखिये निःसीम नभ में एक तारा झिलमिलाता,
पथ गगन तक है शहीदों का इशारों से बताता,
जोड़ता हूँ प्रेमपथ से कर्म का मैं अटल नाता।
समय का आह्वान है प्रिय घर रुका मुझसे न जाता।
तुम रुलाना मत उन्हीं दो आँख को जो विहँसती थीं,
भूल जाना हृदय में जो स्मृतियाँ मेरी सजी थीं,
कर्म पथ में दो हृदय को प्रेम ही हँस-हँस मिलाता
" समय का आह्वान है प्रिय घर रुका मुझसे न जाता।

★

आज वेला जागरण की

[श्री परमेश्वर द्विरेफ]

आज वेला जागरण की
यामिनी के नव-हृदय का
ले रहा निश्वास सपना।
तम विरत जग में निशाचर
★ गा चुके हैं गीत अपना। ★
सुन रही धीमी शिथिल ध्वनि
शून्यतम के चल चरण की।
आज वेला जागरण की।

कलि-पटल के पास सज्जित—
सी हवा अधमाल सुरभित।
वे खगी, अविराम गायक
★ सुमन गन्ध के पास गीतित। ★
ला रहा उच्छ्वास निर्मल
वात परितः ही वरण की।
आज वेला जागरण की

उठो, जागो, अमर पुत्रो!
मांगता युग आज वैभव।
आज जन जन के हृदय में
★ दूर करना है पराभव। ★
फिर सृजन के गीत गूँजे
भावना त्यागो मरण की।
आज वेला जागरण की

× ×

विद्रोही

लेखक—
श्री रामनिवास सोनी

मैं विद्रोही सोये युग में,
विद्रोह मचाने आया हूँ।
नभ के तारागण तोड़ अरे!
भूलोक डुबाने आया हूँ।

सागर मंथन का कालकूट,
सब एक घूँट में पी डाला।
चपला के चंचल प्राणों से
अपनी अम्बर को सी डाला।

शेषों के मस्तक काट अरे,
युग-माल बनाने आया हूँ।
मैं विद्रोही सोये युग में,
विद्रोह मचाने आया हूँ।

भैरव की भीषण भूख लिए,
मैं टूट पड़ा घर नगर नगर!
तांडव की थिरकी तालों पर
मैं झूम उठा बन प्रलयंकर।

झंझा के घन सा उमड़ अरे,
सारा ब्रह्माण्ड हिला दूंगा।
मैं महाकाल की चल चपेट,
जड़ता सर्वत्र जला दूंगा।

मुझको जग-जग की क्या चिन्ता,
मैं ज्वाल जलाने आया हूँ।
मैं विद्रोही सोये युग में,
विद्रोह मचाने आया हूँ।

मैंने मानव की काया को,
दो पाटों में पिसते देखा,
भोले उर के अरमानों को,
मन ही मन में छिपते देखा।

मैंने देखा भूखी आँखें,
रोटी रोटी चिल्लाती हैं।
सोने चांदी के महलों में,
विप्लव की आग लगाती हैं।

मैं महा क्रांति का सूत्रधार
बन, आग लगाने आया हूँ।
मैं विद्रोही सोए युग में,
विद्रोह मचाने आया हूँ।

आंधी, तूफां मेरा नर्त्तन,
मेरा गर्जन युगपरिवर्त्तन।
मैं महाकाल की मुंड माल
ले, नाचा करता घूम झनन।

मैं विद्रोही, मेरी वाणी,
ज्वाला, पावक बरसाती है।
मुर्दे मानव को मानव के
जीने का मोल बताती है।

मत रोको मुझ को, मैं
जीवन का मोल बताने आया हूँ।
मैं विद्रोही सोए युग में,
विद्रोह मचाने आया हूँ।

★

गीत

श्री सुरेशकुमार 'सुमन'

भू पर उतरी लो, बिखरती प्रभा स्नात!

चपल क्षितिज-पार,
दिन का विनत भार,
धूमिल अरुण सांझ,
पहने तिमिर-हार,
अपलक विभा देख पुलका क्षमा-गात!

नभ के रजत-फूल,
झलके सरित-कूल,
चढ़-चढ़ लहर-दोल,
द्रुत-गति रहे झूल,
खिल-खिल, निरख पेंग, हँसती शलभ-पांत!

झिलमिल सुमनहार,
रिस-रिस झरा प्यार,
भर-भर तरल नेह,
खुलते निरन-द्वार,
सजल बतिकाएँ कंपाती मादर वात!

अस्फुट छिड़ी तान,
कन-कन मुखर गान,
युग से हृदय-मध्य,
दीपित अमर प्राण,
श्यामल हुआ श्वेत, दिशि में चली बात!
भू पर उतरी लो, बिखरती प्रभा स्नात!

★

कहानी

मरने के दिन

★ किशोर कुमार तिलारा

पुजारी के उत्तराधिकार के लिए जागेश्वर मन्दिर के ऊपर रामचन्द्र का अपने चचा और ताऊ कृपालदत्त से अधिक अधिकार था। धर्म-कर्म के ऊपर आस्था रखने वाले वे आधुनिक विचारधारा से दूर थे। प्राय: इलाके का भी विचार था कि उसके चचा और ताऊ सीधे स्वर्ग को जायेंगे, अन्य मनुष्यों की भांति बछड़ी की पूंछ पकड़, वैतरणी पार न करनी पड़ेगी।

बिरादरी के ख्याल से भी उनकी पहुंच अन्य जागेश्वर के पंडों से अधिक थी। उसके ताऊ की बड़ी लड़की अल्मोड़े के अन्दर किसी बड़े शहरी के घर ब्याही थी। उनके बड़े लड़के का ससुराल भी खानदान के ख्याल से बहुत ऊंचाई पर था। छोटा लड़का शहर के रामजे हाई-स्कूल की नौवीं कक्षा में पढ़ता था। वह गर्मियों की छुट्टियों में घर आता तो कुत्ते के गले में रस्सी बांध घूमने चल देता। जंगली फूलों को तोड़ कर बड़े गौर से देखता। उसको ऐसा करते देख, अन्य आसपास के लोगों को आश्चर्य होता। उनका विचार था, वह जल्दी ही औफिसर नहीं, तो डिप्टी तब भी बन जायगा।

पुजारीगीरी करते करते पिछले बरस रामचन्द्र के पिता की मृत्यु हो गई। कहते हैं, मृत्युंजय के मन्दिर में अन्य मन्दिरों की अपेक्षा वे अधिक फूल और चन्दन चढ़ाया करते, और अस्पष्ट पूजा के मन्त्रों का उच्चारण भी वहां स्पष्ट हो जाता। इससे लोगों का विचार था कि मृत्यु उनकी मनोकामना है, और वेद उनकी वाणी।

उनकी अन्त्येष्टि क्रिया समाप्त हुई, बारहवें दिन ब्रह्म-भोज के समय रामचन्द्र का ताऊ से कुछ मनमुटाव हो गया। बात यह थी — पिता की मृत्यु के उपरान्त मन्दिर की भेंट आदि लेने का अधिकार रामचन्द्र का था। पर चचा और ताऊ ने बारी के अनुसार दिन बांट, भेंट अपनी ही जेब में रखनी शुरू की।

यह बात रामचन्द्र को अच्छी न लगी। उसने ऐतराज किया। कहा — 'उन लाखों को महादेव की कसम, जो मेरे पेट में पत्थर फेंक रहे हैं। मेरे कहने पर यदि न छोड़ा, तो खून खराबे का सवाल है। बात आगे बढ़ेगी।'

रामचन्द्र की इस धमकी पर उसके चचा और ताऊ ने कोई ध्यान न दिया। उसके कहने पर ऐसी सुनी अनसुनी कर देते, जैसे वे उसको कुछ समझते ही नहीं। मेले ठेले आदि जितने भी पर्व होते, उनकी रकम भी वे अपनी ही जेब में रख लेते।

बात कुछ बिगड़ी। अब तक तो उन लोगों के बीच कोई सीधी लड़ाई न थी, परन्तु झगड़ा अब उनकी हाथापाई तक सीमित न रहा। बात आगे बढ़ी, फैसला कचहरी में जाकर हुआ। दोनों ओर हजारों रुपये खर्च हुए। जमीन का लगभग दो तिहाई भाग दोनों ओर बिक गया। अन्त में वकीलों की जिरह के अनुसार फैसला रामचन्द्र के ही पक्ष में हुआ। रामचन्द्र के ताऊ कृपालदत्त ने फैसला सुना और आंखों का खून आंखों में पी लिया।

× × ×

उत्तराधिकार के धुंधले भविष्य की ओर देखते हुए कृपालदत्त ने लम्बी सांस भरी, और छोड़ दी। उसने देखा कि वह तो अपनी जीवन-राह पर आकर ठीक खड़ा हो चुका है। जिन्दगी के कितने पड़ाव पार कर ऊंच-नीच, दु:ख-सुख, सर्दी-गर्मी के अनन्त प्रहारों को सहता हुआ, वह मृत्यु के समीप ही उसके संगम पर खड़ा है। उसे अपना ही जीवन असह्य हो उठा। देखा, वह काफी चल चुका। परन्तु सामर्थ्य की सीमा से आगे बढ़ने का प्रयास कभी भी उसकी आत्मा ने नहीं किया। कदाचित इसलिए उसके समस्त सांसारिक प्रयत्न निर्मूल एवं तथ्यहीन निकले। उसे अब लगा, मानों वह सफर की तैयारी कर चुका। दूसरी दुनिया की कल्पना में डूब चुका। पर उसकी अन्तिम इच्छापूर्ण नहीं हुई थी। मन्दिर के पुजारी के रूप में अपने पुत्र को देखना, उसकी कोरी कल्पना न थी। अब नित्य ही वे विचारों की उलझन में व्याकुल रहते। सांझ होते ही झपकी आने लगती। मन जैसे साकार हो अन्तिम मंजिल तक पहुंच चुकता।

अन्तर्दृष्टि में देखते कि उनका लड़का मन्दिर का पुजारी बन, आरती उतार रहा है। भेंट की रकम से जेबें भरी हैं, चवन्नी इधर, तो अठन्नी उधर। मूर्तिमान महादेव मानों अपना साक्षात्कार कर कह उठते — मांग तुझे क्या चाहिए? तभी उमड़ी हुई चाह में बेटा कह उठता — 'ढेर सा धन।'

एक सेठ और सेठानी तभी आते हैं, और दे देते हैं हजारों का माल। गरीबी दूर हो जाती है। मकान की जगह पर महल बन जाता है। बहू के खाली हाथ पांव जेवरों से लद जाते हैं। सहसा मन्दिर का घंटा जोर से बज उठता। मन का काल्पनिक चित्र क्षितिज फिर धुंधला हो उठता। देखता—वह तो अपने पुराने ही घर में पड़ा है। सामने रामचन्द्र, मन्दिर में आरती उतार भेंट अपनी जेब में डाले घर की ओर बढ़ रहा है। कृपालदत्त फिर खो जाता, आंखें खुलतीं तो औरत कहती रोटी बन गई। वह फिर भी अपनी कल्पना में अक्रान्त ही रहता। मन्दिर के सुनहले स्वप्न का स्वर्णिम संसार पूर्ववत बना रहता। उस कल्पना रचित संसार का सुख अवर्णनीय था।

इस प्रकार कृपालदत्त के दिन अत्यन्त दु:खमय अवस्था में बीतने लगे वेद उपनिषदों को वे अब कोरी स्याही से पुता हुआ देखते। उनको जिस वस्तु की आवश्यकता थी, उसे ग्रन्थ न दे सकते थे। मन की आकांक्षायें नित्य ही उठ घुट घुट कर रह जातीं। शरीर शिथिल हो गया। आंखें धंस गयीं। अस्थिपंजर लिए केवल मात्र शेष था। अन्त में एक दिन इसी प्रकार जागेश्वर की समाधी में सदा के लिए समा गये।

कृपालदत्त को दुनिया से गये अरसा हो गया। किन्तु अपने पीछे जिस बीज को बोकर वह गया था, वह अब अंकुर से बढ़ कर पेड़ की शक्ल में झूम रहा था। रामचन्द्र का सम्बन्ध अपने ताऊ कृपालदत्त के मरने पर भी उनके परिवार से टूटा रहा।

चचा ने तो बोलना शुरू कर दिया था, अब कभी रामचन्द्र के पीछे मौके-बेमौके पर मन्दिर भी जाने लगे थे। पर ताऊ का लड़का न बोला, खैर वह वह तो पहले भी नहीं बोलता था। लोगों का कहना था कि उसका दिमाग खराब है। छोटा लड़का कृष्णानन्द रामजे की पढ़ाई समाप्त कर घर आया, तो उसने तो कतई बोलना बन्द कर दिया। रामचन्द्र पर दृष्टि पड़ते ही आंखें नीची कर लेता। चलने फिरने में जब रामचन्द्र 'ॐ नमः शिवाय' गुनगुनाता तो वह जोर से गला चढ़ा गाने लगता—जिया बेकरार है, छाई बहार है, आजा मोरे बालमा, तेरा इन्तजार है। नित्य ही इस प्रकार की भद्दी बातें रामचन्द्र को अच्छी न लगतीं। टोकने को मन करता, फिर डर जाता। सोचता, शहर से लौटा है, न जाने क्या कह देगा। ऐसे अवसरों पर कृष्णानन्द भी अक्सर कर अंग्रेजी में गाली दिया करता।

इस प्रकार दिनोंदिन रामचन्द्र अपने अपमान में तप रहा था, चूंकि कृष्णानन्द के पिता ने हार खाई थी, इसलिए कृष्णानन्द भी बाप का बदला लेने की सोच रहा था। उसकी इच्छा रामचन्द्र के ऊपर कम्बल डालने की थी। गांव के दो चार साथियों से उसने इस बात का जिक्र भी किया। सब तैयार थे। अवसर के आने की देर थी। उनका विचार था—शाम के समय, जब रामचन्द्र धूप बत्ती लिए मन्दिर की आरती को आता है, तो उसके ऊपर, पीछे से कम्बल डाला जाय। कम्बल में लपेट कर खूब ठोक-बजाया जाय। जब अधमरा हो जाय तो कुण्ड के किनारे फेंक दिया जाय। कहा जाय, नहाने गया होगा, फिसल गया। कितने ही दिन उन्होंने मौके की ताक की, पर जब भी देखते, उसके साथ कोई न कोई लगा रहता। अकेला कभी भी नहीं मिलता।

कृष्णानन्द की इस नीयत को देख मां सिहर उठती। कहती—"बेटा, अब तू इस चले आते झगड़े को मिटा दे। जो हुआ, सो हुआ। वे गये, तो उनका झगड़ा भी उनके साथ गया। रामचन्द्र भला आदमी है, नेक है। जब कभी भी मुझे कहीं मिलता है; तो खुद ही बोल जाता है। अब तू उससे बोल-चाल करले। इस खुदी खाई को पाट दे।"

(शेष पृष्ठ १८ पर)

परीक्षोपयोगी लेख

भारत की चार आर्थिक समस्याएं

★ अन्नसंकट
★ औद्योगिक उन्नति
★ शरणार्थी-समस्या
★ राष्ट्रनिर्माण

जब अंग्रेज लोग भारत से गये, तब भारत की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। बंगाल के अकाल की छाया अभी तक दूर नहीं हुई थी। देश के विभाजन ने भारत के दो कृत्रिम भागों में बांट कर अनेक आर्थिक समस्यायें उत्पन्न कर दीं। कृषिबहुल प्रदेश पाकिस्तान में चले गये। जनता के परिवर्तन ने देश के आर्थिक संकट को कई गुना कर दिया। लाखों हिन्दू और सिख अरबों की सम्पत्ति छोड़ कर बेघरबार हो गये। देश का आन्तरिक व्यापार भी कृत्रिम विभाजन के कारण ठप हो गया। देश का आर्थिक संगठन शिथिल हो गया। ऐसी परिस्थितियों में हमारी सरकार ने शासन सूत्र को अपने हाथ में लिया। विकट परिस्थितियों से संघर्ष और आंशिक सफलता के बावजूद आज आर्थिक दृष्टि से देश के सामने निम्नलिखित समस्यायें उपस्थित हैं—

(क) अन्न संकट, (ख) उद्योग धन्धों की शोचनीय स्थिति, (ग) शरणार्थियों को बसाना और (घ) राष्ट्र निर्माण।

अन्न संकट

अन्न संकट देश की प्रधान समस्या है। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—अन्नबहुल प्रदेशों का पाकिस्तान में जाना, अनावृष्टि, टिड्डी और भूकम्प जैसे प्राकृतिक संकट, किसानों की अच्छी आर्थिक स्थिति (पहले वे सारी फसल एकदम बाजार में बेच देते थे, अब वे छिपा कर रखते हैं), सरकारी अंकुशों से माल के बाजार में आने में रुकावटें और जनसंख्या की तेजी से वृद्धि (पिछले १० सालों में ४ करोड़ जनसंख्या बढ़ गई है) आदि-आदि।

अन्न संकट को दूर करने के लिए, जिसने सारे देश के राजनीतिज्ञों, अर्थशास्त्रियों और विचारकों को विचलित कर दिया है, सरकार निम्नलिखित योजनायें बना रही है—

१. बड़े-बड़े बंजर प्रदेशों में ट्रैक्टरों द्वारा खेती और खेती के औजारों के लिए कारखानों का बनाना।

२. सिंचाई के लिए देश भर में बांध बना कर नहरों का जाल बिछा देना और बिजली के कुएं बनाना।

३. "अधिक अन्न उपजाओ" संबंधी आन्दोलन।

४ विदेशों से एक सवा अरब रु० का अनाज प्रतिवर्ष खरीदना।

५. खेती की उपज को बढ़ाने के लिए रासायनिक खाद तैयार करने के कारखाने।

६. राशन की व्यवस्था।

७. वर्षा ज्यादा करने के लिए वृक्षारोपण योजना।

औद्योगिक उन्नति

देश के विभाजन से रुई और जूट पैदा करने वाले प्रदेश पाकिस्तान में चले गये। सूती कपड़े और जूट के कारखानों के लिए एक नई समस्या खड़ी हो गई। बहुत से रुई के कारखाने बन्द होने को विवश हो गए। इसीलिए सरकार को न चाहते हुए भी पाकिस्तान के आगे झुकना पड़ा और उसके मुद्रा-विनिमय को स्वीकार करना पड़ा। युद्ध के दिनों में जो कारखाने बहुत माल तैयार करते थे, उन्हें भी एक नये संकट का मुकाबला करना पड़ा, क्योंकि इंगलैंड और जापान ने अपने व्यवसाय को फिर बढ़ा लिया और वह भारतवर्ष के कपड़े का मुकाबला करने लगे। पिछले ८-१० वर्षों से योरुप से नई मशीनरी के न आने के कारण भी कल-कारखानों के लिए एक विकट समस्या पैदा हो गई थी। इसे हल करने के लिए सरकार ने यह नीति अपनाई कि उपभोग की वस्तुओं पर डट कर अधिक लगाए जावें, कर तथा नियन्त्रण कड़े करके भारी मशीनरी मंगवाई जावे। अन्न संकट को दूर करने के लिए भारी मात्रा में अनाज मंगवाना आवश्यक था। इसलिए कल-कारखानों के तैयार किए हुवे माल पर ही पाबन्दी लगाई गई। हवाई जहाज, जहाज, मोटरें, साइकिल व इंजिन आदि के नये कारखाने इन वर्षों में बनाये गये हैं। औद्योगिक उन्नति के लिए शक्ति प्राप्त करना आवश्यक था। और इसके लिए केवल कोयले पर निर्भर नहीं रहा जा सकता था। वह मंहगा भी बहुत पड़ता है। इसलिए बड़े बड़े बांध बना कर नहरों के साथ-साथ बिजली निकालने की भी बीसियों योजनायें बनाई गईं। इन योजनाओं के पूरा हो जाने पर भारत में विद्युत शक्ति की कमी नहीं रहेगी और उससे हजारों छोटे बड़े कारखाने चलाये जा सकते हैं। ग्रामोद्योग के विकास की भी योजनाएं हैं। इन योजनाओं पर अरबों रुपया खर्च होगा, किन्तु इनके पूरा होने पर देश समृद्ध अवश्य हो जायगा।

औद्योगिक संघर्ष व हड़तालें भी आर्थिक उन्नति में बाधा पहुंचाती हैं। इन्हें रोकने या कम करने में सरकार को प्रयत्न करना पड़ा, यद्यपि बहुत सफलता प्राप्त नहीं हुई।

आज देश में महंगाई बहुत अधिक है। कृषि और औद्योगिक उत्पादन के बढ़ाने से ही महंगाई कम होगी। भारत सरकार ने देश के औद्योगिक विकास के लिए बहुत ऊंचे स्तर पर एक योजना आयोग बनाया है, जो देश के चतुर्मुखी विकास के लिए सरकार की नीति का निर्धारण करता रहेगा।

शरणार्थियों की समस्या

देश के विभाजन के परिणामस्वरूप पश्चिमी पाकिस्तान से करीब ६० लाख और पूर्वी पाकिस्तान से करीब ४० लाख हिन्दू सिख भारत में आ गये। वह अपनी अरबों रुपयों की सम्पत्ति भी छोड़ आये। उन सब के भोजन, आजीविका, मकान आदि की व्यवस्था में सरकार का करोड़ों रुपया प्रति वर्ष व्यय हो रहा है, वस्तुतः यह भारतवर्ष की सरकार पर भारी बोझ है। किन्तु इतना व्यय कर भी समस्या अभी तक सुलझी नहीं है। उनकी पाकिस्तान में छोड़ी हुई सम्पत्ति का मुआवजा देना सम्भव नहीं है। पाकिस्तान से निष्क्रान्त सम्पत्ति की समस्या पर बहुत भारी झगड़ा चल रहा है। पाकिस्तान यह कीमत किसी तरह भी नहीं चुका सकता। वस्तुतः इस सम्पत्ति की समस्या का एक ही उपाय है कि पाकिस्तान सब शरणार्थियों को सम्पत्ति, मान और प्रतिष्ठा की रक्षा का आश्वासन देकर वापस बुला ले अथवा कोई बड़ा प्रदेश भारत को सौंप दे।

राष्ट्र निर्माण की योजनाएं

अंग्रेजी शासन काल में सबसे अधिक उपेक्षित वस्तु राष्ट्र निर्माण थी। किसी राष्ट्र की सबसे बड़ी आवश्यकता जनता की शिक्षा, जनता का स्वास्थ्य, और व्यापार की समृद्धि होता है। किन्तु ब्रिटिश काल में इन सब की घोर उपेक्षा होती रही। भारत में साक्षरों की संख्या दस फीसदी से अधिक नहीं थी, जबकि इंग्लैंड, अमेरिका और रूस में यह संख्या ८० से ६५ फीसदी तक थी। हमारी देश में औसत आयु २३ वर्ष थी जबकि दूसरे सभ्य देशों में आयु ४५ से ६२ तक थी। यहां प्रति हजार बच्चों में से १५० बच्चे पहले वर्ष में ही गुजर जाते हैं। स्त्रियों या पुरुषों के हस्पतालों की संख्या बहुत कम थी। प्रसव काल में मरने वाली स्त्रियों की संख्या प्रायः सब देशों से यहां अधिक थी। गांवों और शहरों में सफाई की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। सड़कों का इन्तजाम बहुत खराब था, जिससे व्यापार के मार्ग में अनेक रुकावटें आती थीं। वास्तव में अंग्रेज सरकार का ध्यान अपने आर्थिक हितों और देश में शान्ति सुरक्षा की ओर अधिक था। भारतीयों के जीवन मान को बढ़ाना उनका उद्देश्य नहीं था। इसलिए जब भारत स्वतन्त्र हुआ तो उसके सामने राष्ट्र निर्माण के प्रायः सभी क्षेत्रों में भारी कमी महसूस हुई। किन्तु राष्ट्र निर्माण की योजनाएं बिना पैसे के पूर्ण नहीं हो सकतीं। इसलिए सरकार के सामने इन सब नई योजनाओं की नई समस्या उपस्थित हो गई। लोकतन्त्र में शिक्षा का कितना अधिक महत्व होता है, जानते हुए सरकार शिक्षा की ओर से लापरवाह नहीं हो सकती थी। उसने दस वर्षों में सारे देश को शिक्षित करने की एक योजना बनाई। शिक्षा पद्धति में भी अनेक दोष थे। विज्ञान, शिल्प की शिक्षा का सर्वथा अभाव था। संविधान में प्रारम्भिक शिक्षा को नागरिक का अधिकार माना गया था। देश पहले से ही आर्थिक बोझ से लदा हुआ था। महंगाई लगातार बढ़ती जा रही थी। इसलिए यह सम्भव नहीं था कि प्रजा पर भारी टैक्स लगाए जाएं। महंगाई को दूर करने के लिए जिन उपायों की आवश्यकता थी, वह सरकार के वश से बाहर थे। फिर भी सरकार ने केन्द्र में और राज्यों में शिक्षा, स्वास्थ्य, सफाई, ग्राम-सुधार आदि की ओर कुछ ध्यान दिया तथा इस दिशा में कुछ प्रगति की है। किन्तु इस दिशा में जो कुछ होना चाहिए था, अभी उसका सौवां भाग भी नहीं हुआ है। इसके लिए करोड़ों रुपया चाहिए और उससे भी अधिक जनता के अधिक प्रखर उत्साह और सहयोग की आवश्यकता है।

★

बृहत् राजस्थान संघ के २१ मास

✱ श्री गोपीनाथ गुप्त एम॰ ए॰

श्री हीरालाल शास्त्री

अब, जब कि राजस्थान संघ में दूसरा मन्त्रि मण्डल बन गया है, असाधारण कठिन तथा विषम परिस्थितियों में किये गये प्रथम कांग्रेसी मंत्रि मण्डल के कार्यों का सिंहावलोकन राजस्थान के प्रत्येक नागरिक को ऐतिहासिक और ज्ञानवर्द्धक सामग्री उपलब्ध कराने की दृष्टि से आवश्यक प्रतीत होता है। प्रस्तुत लेख इसी दृष्टि से लिखा गया है।

भारतीय राष्ट्र की परम्परागत वीरता, शूरता, शालीनता, उदारता, शरणागत वत्सलता, अध्यवसाय व श्रम शीलता के महान केन्द्र राजस्थान का जन्म उसके नवीन रूप में ३० मार्च, १९४९ को हुआ, जब भारत के तत्कालीन उप प्रधान मन्त्री स्वर्गीय श्री सरदार बल्लभ भाई पटेल ने भारी आशा उल्लास व उत्साह के वातावरण में इसका उद्घाटन किया। उसी दिन राजप्रमुख तथा प्रधान मंत्री ने अपने पद की शपथ ली। ७ अप्रैल, १९४९ को नये प्रान्त शामिल हुए। विभिन्न इकाइयों की सत्ता हस्तांतरित होने के बाद राजस्थान के मंत्रि मण्डल दल का निर्माण हुआ। प्रान्त की जो १८ इतिहासप्रसिद्ध रियासतें इस नये प्रान्त का अंग बन गई, इनके नाम इस प्रकार हैं—अलवर, बांसवाड़ा, भरतपुर, बीकानेर बूंदी, जोधपुर, धौलपुर डूंगरपुर, जयपुर, जैसलमेर झालावाड़, करौली, किशनगढ़, कोटा, मेवाड़, प्रतापगढ़, शाहपुरा और टोंक। इन अठारह रियासतों से मिलकर बना राजस्थान का यह राज्य क्षेत्र फल की दृष्टि से भारत का सब से बड़ा राज्य है, जिसका क्षेत्रफल १२८, ६९१ वर्गमील और जनसंख्या १॥ करोड़ के लगभग है।

राजस्थान जैसे गौरवान्वित तथा नाम के धनी, परन्तु सामन्तशाही के गढ़ छोटे छोटे राज्यों में विभाजित विशाल प्रान्त का एक इकाई के रूप में निर्माण जिन विषम परिस्थितियों में हुआ, वे कई दृष्टियों से विषम थीं। इन राज्यों के मिलने से साधन और शक्ति का जो समूहीकरण हुआ है, उससे राजस्थान की जनता को आने वाले जमाने में असाधारण लाभ होंगे, जिनकी पूरी कल्पना आज नहीं की जा सकती। इस राज्य की आर्थिक उन्नति इसके छोटी छोटी इकाइयों में विभाजित रहते हुए सम्भव नहीं थी। इसी प्रकार शिक्षा, स्वास्थ्य, सार्वजनिक निर्माण आदि जनहितकारी कार्यों के लिये जो शक्ति और धन चाहिये, वह भी इसके बिखरे हुये रहने पर उपलब्ध हो सकना मुश्किल था, पर आम जनता, जिसका मापदण्ड, भूत के मुकाबले में वर्तमान की तुलना के रूप में होता है और जो कल्पनातीत की बजाय प्रत्यक्ष को महत्व देती है, इन सब बातों का सही अनुमान नहीं कर सकी। राजस्थान के एकीकरण के रूप में उसके सामने असुविधाओं का ढेर सा टूट पड़ा और इसीको दृष्टिगत रखते हुए प्रांतके निर्माण के बारे में अपनी राय बनाई। एकीकरण से पहिले अलग अलग राज्यों के अपने अपने मंत्रिमण्डल, राजधानियां, तथा न्यायालय थे, जहां वे अपने दुख दर्द की बात सहज ही सर्वोच्च अधिकारी तक पहुँचा सकते थे परन्तु उन व्यवस्थाओं के हटने और अन्तरिम काल में पूर्ण व्यवस्था न होनेसे उनकी ये सब सुविधायें मिट गई और वे ऐसा मालूम करने लगे कि प्रान्त का एकीकरण उनके लिये वरदान के रूप में नहीं, अपितु अभिशाप के रूप में प्रकट हुआ है। इन बातों का प्रभाव किसी हद तक व्यक्तियों और स्थानों के महत्व पर भी पड़ा। स्थानीय विद्वेष और प्रतिस्पर्द्धा के लिए यह मसाला यथेष्ट था।

एकीकरण का कठिन कार्य

मंत्रि मंडल के आगमन से पूर्व अलग अलग राज्यों का अपना अपना अर्द्ध विकसित तथा कई क्षेत्रों में अव्यवस्थित शासन तन्त्र था, जिसका एकीकरण एक दुःसह और कठिन काम था। उदाहरण के तौर पर विभिन्न राज्य कर्मचारियों को एक सूत्र में संगठित करके राजस्थान राज्य कर्मचारी वर्ग का निर्माण करना था। विभिन्न प्रकार के वेतन मानों के स्थान पर प्रान्त भर के लिए समान वेतन मानों की स्थापना करनी थी। राज्य को कमिश्नरियों, जिलों, उपजिलों, तथा तहसीलों में विभक्त करना था। इस सारी व्यवस्था में कई प्रकार की उथल पुथल और परिवर्तन का होना स्वाभाविक था। यह उथल पुथल और परिवर्तन यदि कहीं कहीं व्यक्ति और स्थान विशेष की दृष्टि से असुविधाजनक मालूम पड़े तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं थी।

एक नये राज्य के निर्माण-सम्बन्धी कठिनाइयों के अलावा राजस्थान की कुछ अपनी विशिष्ट कठिनाइयां थीं, जैसे पाकिस्तान से मिली हुई इसकी ७०० मील लम्बी सरहद पर शान्ति और व्यवस्था रखने का प्रश्न। विभिन्न वर्गों और जातियों के परस्परागत ऐतिहासिक संघर्ष को दृष्टिगत रखते हुये इस प्रश्न की जटिलता का अनुमान किया जा सकता है।

सुसंगठित पुलिस दल न होने से भी शान्ति व्यवस्था के काम में कठिनाइयां अधिक सामने आईं। नये प्रान्त की आर्थिक स्थिति भी संतोषजनक नहीं थी। प्रान्त की विभिन्न इकाइयों का कुल मिलाकर खर्चा आमद से २ करोड़ ज्यादा था। अतः सिवाय परेशानी व चिन्ता के अन्य कुछ मिलने वाला नहीं था। इन सब मुश्किलों के अलावा जो देशव्यापी परिस्थितियों का दबाव अपने हिस्से का इस नये प्रान्त पर पड़ता वह तो था ही जैसे खाद्य संकट के मुकाबला करने का अथवा विस्थापितों के पुनः संस्थापित करने का अथवा मूल्य वृद्धि से उत्पन्न स्थिति का सामना करना संक्षेप में प्रथम मंत्रि मंडल को जिन परिस्थितियों में काम करना पड़ा, वे अत्यन्त विषम, दुःसह, जटिल व कष्ट-साध्य थीं।

सुव्यवस्थित शासनतन्त्र

कांग्रेसी मंत्रि मंडल का पहला काम राजस्थान में एक सुसंगठित और सुव्यवस्थित शासन तन्त्र का निर्माण करना था। इस दृष्टिकोण को मद्देनजर रखते हुए पब्लिक सर्विस कमीशन, रेवेन्यू बोर्ड, हाई कोर्ट आदि का गठन किया गया। राज कर्मचारियों का वर्गीकरण करके उनके वेतन मानों का सम्पूर्ण राजस्थान के आधार पर निर्धारण कर दिया गया और उनके आचरण और अनुशासन सम्बन्धी नियम बना दिये। अब विभिन्न विभागों का एकीकरण कार्य पूरा हो चुका है और उच्च कर्मचारियों का यथास्थान स्थानान्तरण कर दिया गया है।

सुदृढ़ आर्थिक स्थिति

जब विभिन्न इकाइयों का शासनतंत्र हाथ में लिया गया था, कुल मिलाकर नये राज्य की आय १७ करोड़ व व्यय १८॥ करोड़ था। इस प्रकार १॥ करोड़ के करीब घाटा था। मंत्रिमंडल ने कार्य प्रारम्भ करते ही सारे राजस्थान के आधार पर अक्टूबर १९४९ से मार्च ५० तक का बजट बनाया, जिसके अनुसार ८ करोड़ ८३ लाख की आय और ८ करोड़ २३ लाख के खर्च का अनुमान किया गया। अर्थात् ६० लाख की बचत का अनुमान किया गया। इस प्रकार पुराने बजटों के आधार पर होने वाले ७५ लाख के घाटे की तुलना में करीब इतनी ही बचत करने की कोशिश की गई। १९५०-५१ के बजट में भी ६ करोड़ की आय व १२॥ करोड़ के व्यय का अनुमान था। इसमें राज कर्मचारियों की वेतन वृद्धि और वेतन स्तरों में परिवर्तन से उत्पन्न व्यय के लिए ६० लाख, एक वर्षीय योजना के लिए ४५ लाख और अकाल कोष के लिए २० लाख मान लेने पर उपरोक्त बचत का अनुमान था। अपने कार्य काल में कोई नया कर नहीं लगाया और एकीकरण के परिणामस्वरूप हुई कमी बेशी के अलावा चालू दरों में कोई वृद्धि नहीं की। साथ ही जनहितकारी कार्यों के लिए भी यथेष्ठ अर्थात् कुल व्यय के आधे से अधिक रुपया रक्खा। पूंजी बजट में शामिल किया गया ५ करोड़ रुपया इससे अलग था। १९४९-५० के मुकाबले में सेवा कार्य के लिए २ करोड़ रुपया अधिक रक्खा गया। उसने अकाल कोष के लिए १ करोड़ विकास कोष के लिए १ करोड़, तकावी के लिये ३५ लाख रुपया और अनाज वितरण में होने वाले घाटे की पूर्ति के लिए ४० लाख रुपया रक्खा।

सफल गृहनीति

जिस समय प्रथम कांग्रेसी मंत्री-मंडल ने प्रान्त का कार्य भार सम्भाला, प्रान्त की शान्ति और व्यवस्था स्थिति सुदृढ़ नहीं थी। चोरी, डकैतियों का जोर था और किसानों तथा जागीरदारों में होने वाले पारस्परिक झगड़ों के कारण हिंसा का भय बना रहता था। ७००

[शेष पृष्ठ २० पर]

लेखक — श्री वीरबहादुर

नगर के बाहर से क्लान्त तथा म्लान मुख कौशल में रुचि लेते ही संन्यासी को शान्ति की कथा ज्ञात होती है। कौशल की वाग्दत्ता नोवाखाली में घिर गई है। कौशल के पिता पहिले ही उधर जा चुके थे। किन्तु कौशल की दशा देख कर तथा जनसेवा के उद्देश्य से संन्यासी उसे लेकर उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्र की ओर रवाना हो गया। कौशल के पिता डा० सुरेश कलकत्ता से वेष बदल कर देहात में पहुँचते हैं और एक गुण्डे के यहा ही ठहरते हैं जिस के यहा अनेक युवतियाँ बन्द थीं। शान्ति भी कोठे के किवाड़ अन्दर से लगा कर कितने ही दिनों से उसी घर में पड़ी थी। वहां उन्होंने चतुराई से कुछ स्त्रियों को निकाला। उधर संन्यासी कौशल को ले कर उस क्षेत्रमें आ पहुँचा। इधर डा. सुरेश की शांतिके पितासे भेंट हो गई। दूसरी ओर सन्यासी व कौशल गुण्डे के मकान पर जा पहुँचे। वहां और भी बहुत सी अपहृत महिलाओं को ढूंढ़ निकाला।

[गतांक से आगे]

शैलेन्द्र के बाद कौशल था, जिसके मुंह पर के उन अंकित भावों का वर्णन कठिन है। पिता के पूछे बिनावह नोवाखाली में आया था। उसे भय और लज्जा दोनों थीं। भय, इसलिये कि वह डाक्टर सुरेश की प्रकृति को जानता था। वे पिता के साथ-साथ एक[?]अच्छे शासक भी थे। लज्जा, इसलिये कि शान्ति उसकी होने वाली वधू थी। परन्तु यह लज्जा और भय उसके मस्तिष्क के उस कोने में छुपे थे, जहां से प्रत्यक्ष रूप से दिखाई भी नहीं पड़ते थे। शान्ति उसके सामने थी। और सन्यासी पर उसे विश्वास था। इसी से उसे एक प्रकार का साहस था। परन्तु इसके बाद क्या होगा? वह क्या करेगा उसे ठीक ठीक ज्ञात था। परन्तु होगा क्या? उसे ज्ञात नहीं था। वह यह भी भलीभांति जानता था, कि उसके पिता, उसे नोवाखाली में देख कर अत्यन्त प्रसन्न तो निश्चय ही होने वाले थे नहीं। और उसके चचा, उनका तो कहना ही व्यर्थ है।

इस समय डाक्टर सुरेश एक ही बात सोच रहे थे, केवल एक। वह उन्हें यदि अवकाश मिलता तो वे कौशल से साफ-साफ यही कह देते—'कौशल, अब व्यर्थ है, तुम यहां क्यों आये? मैं तुम्हें आने के लिए कोसता तो नहीं हूं, और न प्रशंसा ही करता हूं। परन्तु तुम आये क्यों? शायद तुम्हें शान्ति का ध्यान हो। ध्यान होना भी। मगर अब क्या हो सकता है। अब शान्ति तुम्हारी नहीं हो सकती।' ये सारी बातें डाक्टर के मन में गूंज रही थीं, परन्तु वह भी चुप ही था। सन्यासी ने कई बार डाक्टर सुरेश की ओर देखा था। रात को देर तक इसी प्रकार की बातें होती रहीं। सन्यासी डाक्टर सुरेश के मन की बातों को भलीभांति जान चुका था। विवाह और शुद्धि के ऊपर रात को बहुत सी बातें हो चुकी थीं। डाक्टर सुरेश ने सन्यासी के विचारों की प्रशंसा अवश्य की, परन्तु कहां तक उससे सहमत थे, यह कहना कठिन है।

सूरज की किरणें अब फैलने लगीं। नौ बजे स्टेशन पहुंच जाना था। अस्पताल के डाक्टर ने शान्ति को फिर देखा। डाक्टर सुरेश ने भी देखा और यह निश्चित हुआ कि आराम से रेल में वह यात्रा कर सकती थी। कमरे से सब बाहर आये और कोमिला जाने की तैयारी करने लग गये। कौशल और शैलेन्द्र शान्ति के पास ही रहे।

'कब आये ...?' शैलेन्द्र ने कौशल से पूछना चाहा कि एकाएक उसकी आंखें भर गयीं। उसे एक दिन आज से कई साल पहले का याद आया जब बचपन में कौशल, उसके घर आया था और शान्ति पास बैठी थी। उसकी मां ने कहा था—'कितनी अच्छी है जोड़ी इनकी।'

'कल ...' कौशल ने धीरे से उत्तर दिया।

कौशल और शैलेन्द्र दोनों बैठ गये। और शैलेन्द्र की आंखों से आंसू का बहना बन्द ही नहीं होता था।

'आप ...? रोते क्यों हैं? कौशल कहना चाहता था। शैलेन्द्र ने सुना।

'कौशल ...' आंखों को पोंछ कर शैलेन्द्र ने कहा—'अब क्या ...?' वह और न कह सका।

'आप ...' कौशल ने अपने हाथों में उसका हाथले कुछ कहना चाहा। उस की आंखों में देखा वह कहना चाहता था मैं भी तो आपका पुत्र ही हूं। आप चिन्ता क्यों करते हैं। शान्ति के बारे में आप क्यों चिन्ता करते हैं। उसे मैं अवश्य अपनाऊंगा। कौशल सब कुछ कह देना चाहता था, परन्तु कैसे कहे, क्या कहे। उसकी आंखों में सब बातें प्रत्यक्ष थीं। यदि शैलेन्द्र उन्हें ध्यान पूर्वक देखता तो उसे पता लग जाता। परन्तु उनमें आंसू भरे थे।

लगभग आठ बजे सब लोग स्टेशन चले। शैलेन्द्र को भी डाक्टर साहब ने साथ ले लिया और शान्ति को भी।

'स्वामीजी,' निर्वेदानन्द ने संन्यासी से कहा—'क्या आप भी कोमिला जायेंगे?'

'हां!' सन्यासी ने कहा—'मुझे दुःख है कि मैं कोमिला जाऊंगा। मुझे जल्द वापस आना है। अन्यों का प्रबन्ध करना है और मेरे यहां तक आने से दिल्ली से आने वाला रसादल ठीक प्रबन्ध न कर सकेगा। मैं फिर वापस आऊंगा। तब तक आप ....।'

'ठीक है। आप इन निस्सहाय स्त्रियों को भी कोमिला लेते जायें। जिन के सम्बन्धी मिल जायें, या पता लग जावे, उनको तो वहां पहुंच जाने का प्रबन्ध करा दीजियेगा। शेष को कलकत्ता में ही हमारे आश्रम में ...।'

'मैं सब कुछ कर दूंगा,' सन्यासी ने उत्तर दिया—'हो सका तो कोमिला से कुछ और स्वयंसेवक भी भेज दूंगा।'

रेल गाड़ी आई और सबके सब कोमिला की ओर चल पड़े। रास्ते में कई बार गुण्डों ने ट्रेन पर आक्रमण किया, पर बिना किसी दुर्घटना के सबके सब कोमिला में सुरक्षित पहुंच गये।

निस्सहाय स्त्रियों को एक धर्मशाला में—जो वास्तव में धर्मशाला न थी—पहुंचाया गया। वहां संरक्षक संस्थाओं की ओर से सन्यासी ने उनके रहने का प्रबन्ध करा दिया। कुछ तो कलकत्ता जाना चाहती थीं, क्योंकि उनके संबंधी कलकत्ता में थे। उन्हें कलकत्ता पहुंचाया गया।

डाक्टर सुरेश की प्रार्थना से शैलेन्द्र, शांति और सन्यासी कुछ अन्य निःस्सहाय स्त्रियों के साथ वकील साहब के यहां ही कुछ दिन ठहरे, क्योंकि डाक्टर सुरेश को यहां कुछ दिन रुक कर अपने गांव की बची-खुची सम्पत्ति का उचित प्रबंध करना था। वकील साहब का घर भी काफी बड़ा था, उन्हें इन अतिथियों को दो चार दिन अपने पास रखने में कोई विशेष असुविधा न थी। शैलेन्द्र अभी तक अपने और शान्ति के विषय में कुछ सोचने योग्य न था। लोग जो कहते थे, उसे वह मूढ़ की भांति करता जाता था। वह ठीक एक कुलीन ग्राम्य के जमींदार की भांति यही सोचता था कि बलात्कार से उसका धर्म भ्रष्ट होने और शांति का उस गुण्डे आदि से निकाह (विवाह) हो जाने के पश्चात् अब उसकी ऐसी मानहानि हुई थी, जिसका पूरक संसार में कुछ और न था। वह इन विषयों के अतिरिक्त कुछ और सोच नहीं सकता था।

कोमिला में आने डाक्टर सुरेश को एक सप्ताह होचला था। वे अब जल्द से जल्द दिल्ली वापस चले जाना चाहते थे। सबसे पहले तो वे वकील साहब के यहां अब अधिक रुकना नहीं चाहते थे और दूसरे उनको समाचार मिल चुका था कि दिल्ली में उनके भाई का कुटुम्ब सकुशल पहुंच गया है। इससे उनकी चिन्ताएं बहुत कम हो गयीं थीं। नोवाखाली में अपनी नष्ट हुई सम्पत्ति का बहुत शोक न रहा था। जमीन, धान के खेत और बागियों की उन्हें चिन्ता अवश्य थी, परन्तु वे सब उन्हें तत्काल ही कष्ट नहीं दे रही थीं। इस समय उन्हें कष्ट देने वाली केवल एक ही बात थी, केवल एक। यह बात उनके मन में इस प्रकार धुंधले वातावरण में अथमला रही थी, उन्हें ठीक-ठीक पता भी नहीं चलता था। इस बात की और उस वातावरण की, दोनों की व्याख्या भी कठिन है।

कौशल नोवाखली क्यों आया? इसका कारण न तो वे ठीक-ठीक जानते थे और न उनको कौशल से पूछने का अभी तक अवसर ही मिला था। दूसरी ओर कौशल शांति की अस्वस्थता के कारण कुछ खिन्न था, यद्यपि वह बहुत कुछ अच्छी हो गयी थी, फिर भी वह उसी की सेवा में लगा था। इसके अतिरिक्त कौशल स्वयं भी यह नहीं चाहता था कि वे किसी प्रकार के जटिल प्रश्न पूछ बैठें। अतः वह अपने पिता से कुछ बच बच कर ही रहता था। सच तो यह है कि शांति के कारण उसे कभी फुरसत से पिता के पास बैठने का अवसर भी

नहीं मिलता था। क्या कौशल शांति से प्रेम करता है? यही बात सोच कर उन्हें कुछ कष्ट होता था और इसी बात की वजह से वे जल्द से जल्द दिल्ली चला जाना चाहते थे और कौशल भी साथ में अवश्य जाता।

वकील साहब का घर, भीतर, बाहर एक छोटा सा धर्मशाला बन गया था। नोआखाली से आई हुई निस्सहाय स्त्रियां, अभी तक इन्हीं की शरण में थी। कुछ तो अपने सम्बन्धियों के पास चली गई और कुछ संरक्षक संस्थाओं में। परन्तु अभी भी तीन चार बाकी थीं। इनका भी दो-चार दिन में कुछ प्रबन्ध हो जायगा। परन्तु अभी वे उनकी कोठी में ही ठहरी थी। शैलेन्द्र को यहां रहना भी भार मालूम होने लगा क्योंकि वकील साहब उसके दूर के रिश्तेदार थे। वह कब तक यहां रहता। कलकत्ता में उसका चचेरा भाई था, उसके यहां रुक भी सकता था, पर वहां अधिक दिन रुकना कठिन ही था। हां, इतना था कि कलकत्ते में रहने की अधिक सुविधा थी। इसी बीच में वह बैंक का सारा हिसाब भी ले लेना चाहता था, परन्तु कागजों के न रहने के कारण उसे कुछ दिन और लगाना पड़ेगा। तब तक उसे यहीं रहना पड़ेगा।

रहे सन्यासी! वे भी जल्द से जल्द ही वापस जाना चाहते थे। और साथ में शैलेन्द्र और शांति को भी ले चलना चाहते थे। डाक्टर सुरेश कुछ और ही सोच रहे थे। कम से कम उन्हें शैलेन्द्र को साथ ले जाने का ध्यान न था। वे यह भलीभांति जानते थे कि शैलेन्द्र उनके साथ नहीं जावेगा। यद्यपि शैलेन्द्र का इस समय सब कुछ नष्ट हो चुका था, परन्तु वह सर्वथा निस्सहाय न था। जीवन बिताने और साधारण गृहस्थी के लिए उसके पास बैंक में अभी रुपया था। आज से एक सप्ताह पहले वह रुपया या जमीन के बारे में कुछ नहीं सोचता था, परन्तु शांति के स्वस्थ होने पर उसे एक बार इनकी चिन्ता भी हो आई। पहले वह निराश हो चुका था, परन्तु अब शान्ति के कारण उसे फिर से संसार में बसना पड़ा। अभी भी उसे कुछ अंधकार ही सा था। वह संसार से एकाएक मुंह मोड़ ले, यह असम्भव था। शान्ति को इस विकट संसार में अनाथ कैसे छोड़ सकता था। उसके लिए शान्ति उस मरुस्थल जीवन में मरुद्यान सी थी।

उसके सामने एक और समस्या भी थी। क्या वह हिन्दू समाज में फिर से अपनी मान मर्यादा स्थापित कर सकता था। एक और गूढ़ प्रश्न भी है, एक विचित्र प्रश्न। उसके मान मर्यादा को क्या हुआ था? सब ठीक है, लेकिन फिर भी कुछ था और नहीं भी था? क्या सचमुच वह धर्म-भ्रष्ट हो गया था? गुण्डों ने उसके साथ अत्याचार किया, उसका धन लूट लिया। इसमें उसका क्या दोष था? क्या वह कायर था? हो सकता है। परन्तु मौत को सामने रख कर पांच सौ हथियार बन्द गुण्डों ने उसके घर पर आक्रमण किया, तो उसकी कौन सी वीरता काम करती। वह मरने से भी डरता नहीं था, लेकिन वहां समस्यायें और थीं। एक बात की धमकी देकर गुण्डों ने दूसरा काम सिद्ध किया, और दूसरी बात की धमकी से तीसरा। धर्म से च्युत करने की धमकी देकर चन्दा लिया, हत्या करने की धमकी देकर घर लूट लिया, मान-मर्यादा और स्त्रियों पर अत्याचार करने की धमकी देकर धर्म-भ्रष्ट भी कर दिया, और अन्त में शान्ति की मर्यादा की धमकी देकर सब समाप्त किया और फिर......।

ये घटनायें जब शैलेन्द्र को याद आ जाती थीं, तो उसकी आंखें भर आती थी। क्या क्या हो गया।

सबसे मुख्य बात एक ही थी। शैलेन्द्र को अपने बारे में क्या चिन्ता थी? जीना मरना सब बराबर था उसको। सच या झूठ उसे ऐसा अनुभव होता था कि मैं पराजित और पतित हो गया हूं। वह बोलता भी कम था। उसे जीना था तो केवल शान्ति के लिए। उसका क्या होगा?

कौशल की आंखों में उसके लिए आश्वासन की गहरी छाया थी। परन्तु केवल इससे क्या हो सकता था। जब कभी उसे डाक्टर सुरेश की ओर देखने का अवसर मिला, उनकी आंखों में उसके लिए कोई आशा नहीं दिखलाई पड़ती थी। इस आशा और निराशा से वह अधिक घबराता भी न था। शान्ति बची थी, इतना उसे काफी था। उसे ढाढ़स के लिए यह भी काफी था कि संसार चाहे जो कुछ सोचे या समझे, शान्ति ने अपनी मान मर्यादा की रक्षा की है। इस पर उसे गर्व था। यह गर्व ठीक उसी प्रकार का था जिस प्रकार कंजूस का गर्व अपनी गुप्त सम्पत्ति पर होता है। परन्तु कितना शोक! कितना दुःख! कि धनी होने पर भी संसार कंजूस को निर्धन ही समझता है।

सारे दुःख, सुख, आशा और निराशा के उपरान्त, उसे एक और दुःख था। क्या शान्ति हिन्दू समाज में साधारण जीवन बिता सकेगी? यही उसे महान दुःख था। अपना, अपनी सम्पत्ति का, उसे किंचित ध्यान नहीं रहता था, जब यह प्रश्न उसके सामने आ जाता था, कितनी दुःख दायक और कसकमयी वह अवस्था होगी, जब अपने मान मर्यादा की बाल-बाल रक्षा करने के बाद भी, हिन्दुत्व के नियमों को अन्धविश्वासी की भांति पालन करके भी, शान्ति को समाज में एक साधारण जीवन बिताना भी दुर्लभ होगा, प्रतिष्ठा तो दूर रही।

बाजार से जल्दी जल्दी कौशल घर की ओर आया। जाते समय वह शान्ति को अकेला ही छोड़ गया था। घर आने पर न तो उसे शान्ति दिखाई पड़ी न शैलेन्द्र। वह इधर उधर देखने लगा किससे पूछे। एकाएक एक कमरे में सन्यासी और डाक्टर सुरेश कुछ बातें करते मिले। वह यह भली भांति जानता था वे क्या कर रहे थे। इसीलिए वह उस ओर न जाकर, सीधे भीतर आंगन में चला गया।

"मन्नू, शान्ति कहां है?" कौशल ने वकील साहब के लड़के से पूछा।

"घूमने गई है" मन्नू ने कहा।

"अकेले!"

"नहीं, चचा भी थे।" मन्नू शैलेन्द्र को चचा ही कहता था।

इसके बाद कौशल ने फिर दूसरा प्रश्न नहीं पूछा, सीधा पार्क की ओर चल दिया। शान्ति और शैलेन्द्र उधर ही टहलने गये थे। उसे विश्वास था।

सूरज की किरणें पीली पड़ रही थीं। पार्क इतना अच्छा तो नहीं था, पर कोमिला वासियों के लिए जी बहलाने को काफी था। शान्ति और उसका पिता एक ओर टहल रहे थे। कभी कभी शैलेन्द्र कुछ शान्ति से पूछता था, और शान्ति उत्तर देकर चुप हो जाती थी। सबसे मुख्य बात जो शैलेन्द्र शान्ति से पूछना चाहता था वह यह थी, अब दोनों कहां रहेंगे। कलकत्ता या कोमिला। क्योंकि रहने का प्रबन्ध अब दो एक दिन में ही करना पड़ेगा। शान्ति इस बात को पिता के ऊपर ही टाल देती थी और शैलेन्द्र को रहने का स्थान चुनने से पहले शान्ति की पसन्द जान लेना आवश्यक था, क्योंकि वह स्वयं तो कहीं भी रह लेता।

कौशल एकाएक उद्यान में आ पहुंचा। दूर से उसने शान्ति और उसके पिता को देखा और उधर ही बढ़ गया। तीनों कुछ देर तक इधर उधर की बातें करते रहे। शैलेन्द्र ने कुछ देर बाद उठ के कहीं चला गया। क्योंकि छः बजे उसे एक सज्जन को हिसाब था। और वह कौशल किस लिये आया था, यह भी जानता था।

"शान्ति!" कौशल ने शैलेन्द्र के जाने के कुछ देर बाद कहा। तब तक दोनों चुप थे। शान्ति कुछ सोच रही थी। उत्तर नहीं दिया। और न तो कौशल ने उत्तर की प्रतीक्षा ही किया—"मैं कई बार में तुम से कुछ बातें करने का अवसर ढूंढ रहा था, मगर अभी तक ··"

सचमुच कौशल को कभी तक कुछ बात करने का समय नहीं मिला था। और आज इस सुनहरी सुनसान एकान्त सन्ध्या को, केवल पहली बार उसे कुछ कहने अवसर मिला।

क्रमशः

परीक्षोपयोगी लेख

उपन्यास के तत्व

★ श्री सुरेशचन्द्र मिश्र

साहित्य जीवन और जगत की अभिव्यक्ति है। जीवन और जगत के निरन्तर पड़ने वाले आघात प्रत्याघातों से साहित्यकार अपने हृदय में कुछ रागात्मक अनुभूतियों का संचय करता है, उन्हीं का रसास्वादन वह साहित्य के विविध माध्यमों द्वारा अपने पाठकों अथवा श्रोताओं को भी कराता है। इस प्रकार उसकी अनुभूति स्वसंवेद्य ही न रहकर परसंवेद्य बन जाती है। जिस कृति में वार्ण्य विषय अथवा उसकी अभिव्यंजना की सफलता के कारण पाठक के हृदय में रसोद्रेक हो, उसका हृदय उसी में रम जावे, वही वास्तव में साहित्य है और उसी में साहित्यकार की सफलता का रहस्य भी निहित है।

अभिव्यंजना-प्रणाली की दृष्टि से साहित्य क्षेत्र में आने वाली समस्त रचनाओं में लोकप्रियता की दृष्टि से उपन्यास का अपना प्रमुख स्थान है। साहित्य के नाटक कविता आदि अंगों में शैली भेद तो अवश्य है, किन्तु उनमें एक ही मानवीय प्रवृत्ति कार्य करती है। उपन्यास साहित्य में मानवीय प्रकृति का जितना सरस और भावपूर्ण चित्रण होता है उतना किसी अन्य साहित्य में प्रायः नहीं हो पाता।

उपन्यास

कथा कहानियों की परम्परा का सूत्र अतीत के उस धुंधले काल से जुड़ा हुआ है जिसकी स्मृति इतिहास की वस्तु बन गई है। जिज्ञासा और उत्सुकता मानव मन की प्राचीनतम प्रवृत्ति है। वर्तमान उपन्यास साहित्य मनुष्य की इसी प्रवृत्ति का सफलतम उत्कर्ष है। विकसित होते होते साहित्य के इस अंग ने साहित्य में अपना प्रमुख स्थान बना लिया है। दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई साहित्यिक प्रवृत्तियों से यह भी भासित होता है कि अभी यह साहित्य क्षेत्र में और भी अधिक गौरव प्राप्त करेगा। यों तो सृष्टि के उषःकाल से ही मानव हृदय में काव्यात्मक वृत्ति का रसोद्रेक माना जाता है किन्तु घटना चमत्कार के कारण मानव वृत्ति उपन्यासों में ही अधिक रम सकी है।

उपन्यास के तत्व

(१) कथावस्तु—मनुष्य स्वभावतः गतिशील और क्रियाशील होता है। फलस्वरूप मानव जीवन घटनाओं तथा नाना भांति के क्रिया कलापों के बीच अबाध गति से प्रवाहित होता रहता है। मनुष्य के इसी संघर्षमय जीवन की प्रतिकृति ही उपन्यास है। संक्षेप में मानव जीवन की घटनायें, उसके सुख-दुःख, हर्ष विषाद की कहानी है वही सब उपन्यास की कथावस्तु कहलाती है। कथावस्तु ही उपन्यास का विषय है और इसी की संघटना और निर्वाह में उपन्यास और उपन्यासकार की कला है। यों तो जीवन में विविध घटनायें विशृंखलित रूप से घटित होती रहती हैं। उनमें किसी प्रकार का तारतम्य तथा एक घटना की दूसरे के साथ संगति नहीं होती, किन्तु उपन्यासकार जीवन की कुछ घटनाओं को शृंखला के रूप में व्यवस्थित कर किसी विशेष योजना की दृष्टि से उपन्यास की कथा को संगठित करता है। जीवन की विशृंखलता में कोई शृंखला, कोई क्रम ढूंढ़ कर योजना पूर्वक उपन्यास की कथा की योजना उपन्यासकार कथावस्तु के रूप में प्रस्तुत करता है। कथावस्तु के चयन में ही लेखक की वास्तविक सूझ बूझ की परख होती है। कथावस्तु ही उसकी कसौटी है। अतः इसमें रोचकता का अपना विशेष महत्व है। संसार के संघर्ष से ऊब कर पाठक उपन्यासकार के मन-कल्पित संसार में आता है। इसलिए उपन्यासकार का कर्त्तव्य है कि उसकी कथावस्तु निर्जीव न होकर पाठकों की अनुभूतियों के साथ न्याय कर सके।

चरित्र-चित्रण

उपन्यास का दूसरा किन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है चरित्र-चित्रण। उपन्यास मानव चरित्र का चित्र है। अतः चरित्र-चित्रण की सजीवता तथा स्वाभाविकता पर ही उपन्यास की लोकप्रियता निर्भर है। अन्य के क्षेत्र में चरित्र का वह अर्थ नहीं, जो प्रायः आचार शास्त्र में समझा जाता है। साहित्य में चरित्र-चित्रण का अर्थ मानव के रागों और मनोभावों का आधार लेकर मानव पात्रोंका चित्रण करना है। उपन्यासकार की काल्पनिक सृष्टि में यदि हम अपनी यथार्थ सृष्टि का आभास पा सकें, उसके पात्रों के साथ यदि हमारा रागात्मक सम्बन्ध स्थापित हो सके, पात्रों के सुख-दुःख, हर्ष विषाद की अनुभूति हमें भी हो और हम उनके साथ अपना संबंध अनुभव करें, तो हमें समझना चाहिये कि उपन्यासकार अपने पात्रों के चयन में उनके चरित्र-चित्रण में सफल हुआ है। चरित्र-चित्रण की सफलता इसी में है कि उपन्यास पढ़ने के बहुत समय बाद तक पात्रों की स्मृति हमारे मस्तिष्क में सजग रहे। चरित्र चित्रण के लिए आज कल प्रधानतः दो पद्धतियों का अवलम्बन किया जाता है। (१) विश्लेषणात्मक और नाटकीय। पहिली पद्धति में उपन्यासकार अपने पात्रों के भाव, विचारों और प्रवृत्तियों का चित्रण करता है। दूसरी प्रवृत्ति में उपन्यासकार अपने पात्रों को जीवन की रंगस्थली पर छोड़ देता है और पात्र स्वयं ही जीवन के संघर्षों से जूझता हुआ अपने मार्ग का निर्माण करता है। इस पद्धति द्वारा पात्र अपनी निर्बलता, सबलता, कुरूपता, सुरूपता को स्वयं ही अनावृत करता है। लेखक का कर्त्तव्य केवल उसकी गतिविधि की जाँच करना और उसमें प्राण-प्रतिष्ठा करना मात्र रह जाता है। पात्रों के सम्बन्ध में भी मानव प्रवृत्ति में दिन प्रतिदिन परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है। प्रारम्भिक पाठक औपन्यासिक पात्रों में आश्चर्यजनक शक्ति देख कर उनके द्वारा असाधारण कार्यों का निर्माण देख सन्तुष्ट होता था। असाधारण और आश्चर्यपूर्ण घटनाओंमें ही उसक वृत्ति रम जाती थी और वह अपने आपको भूल जाता था, किन्तु समय के गति-परिवर्तन के साथ पाठकों के चरित्र सम्बन्धी दृष्टिकोण में भी काफी परिवर्तन आ गया है। आज का पाठक उपन्यास के पात्रों को अपने ही समान क्रिया-कलाप करते देखना चाहता है। जासूसी तथा अमानवीय घटनाओं के चित्रण में उसकी कोई रुचि नहीं है।

कथोपकथन

वास्तविक जीवन के कथोपकथन की अनुरूपता ही औपन्यासिक कथोपकथन का मापदण्ड है। पात्रों की बातचीत जितनी प्रासंगिक तथा समयानुकूल होगी, कथोपकथन की दृष्टि से उपन्यास उतना ही सफल समझा जायगा। इसके अतिरिक्त कथोपकथन नितांत नीरस और प्रभावशून्य न हो जावे, इस ओर उपन्यासकार की दृष्टि विशेष रूप से रहनी आवश्यक है। कथोपकथन जब कहीं पर आवश्यकता से अधिक हो जाता है, तो उसकी रमणीयता प्रायः नष्ट हो जाती है। कथोपकथन से कथा की प्रगति और पात्रों के चरित्र-विकास के चित्रण में सफलता मिलती है। कथोपकथन में पात्रों की वैयक्तिकता का ध्यान रखना भी अत्यावश्यक है। बातचीत तथा उनका परिवर्तन पात्रों के अनुरूप ही होना चाहिये।

देश-काल

उपन्यास को अधिक सफल बनाने के लिए प्रायः देशकाल अथवा बाह्य परिस्थिति के चित्रण का आधार लिया जाता है। ऐसा न करने पर पात्रों में मानवता की अनुरूपता न आ सकेगी और वे शून्य में खड़े दिखाई देंगे। देशकाल के अंतर्गत उपन्यास के बाह्य उपकरण - समय के आचार-विचार, रीति-नीति, परिस्थिति आदि सभी पृष्ठभूमि के रूप में आ जाते हैं।

संक्षेप में यही चार उपन्यास के प्रधान तत्व हैं। इन सब के सम्यक विकास पर ही उपन्यास की सफलता अवलम्बित है।

कम्यूनिस्ट प्रवृत्तियों का नयी विधि से शमन

तैलंगाना (हैदराबाद) में कम्यूनिस्टों की अराजक प्रवृत्तियों को शान्त करने के लिए आचार्य विनोबा भावे आज प्रयत्नशील हैं। वे जमींदारों से भूमि का दान मांगते हैं। अब तक इस तरह ४००० एकड़ भूमि प्राप्त कर किसानों में वे बांट चुके हैं। इतनी भूमि से क्या होगा, यह पूछने पर वे कहते हैं कि आज मेरे लिए तीनपग भूमि भी पर्याप्त है। बाद में तो मैं वामन बन कर सब भूमि नाप लूंगा।

★

मरने के दिन

[पृष्ठ १२ का शेष]

किन्तु कृष्णानन्द किसी प्रकार सहमत नहीं हुआ। वह कहता—"जिसने मेरे बाप को कचहरियों में फिराया, दुख दिया, पानी की तरह रुपया बहवाया, उससे क्या उनका बेटा सम्बन्ध जोड़ेगा ? कभी नहीं। किसी न किसी दिन बाप का बदला अवश्य लूंगा, मां। भले ही बरस बीतें।" मां बेटे की भावना में झगड़े की आशंका पा द्रवीभूत हो उठती।

निदान वह बच्चों को समझाती। घर की औरतों को बोल-चाल के लिए कहती। मनमुटाव को मिटाने के लिए कहती। वह कृष्णानन्द की बहू को समझाती। कहती—'देख बहू, मेरी तो उमर ढल चुकी। अपने दिन मैंने भली-भांति बिता दिये। अब घर का भार तुझे ही सम्भालना है। कृष्णानन्द तो ऐसा ही है। जोशीला खून है, चढ़ती हुई उम्र है। अपने ही बाप का असर है। वे भी ऐसे ही थे। अब तू मेरे मरने के बाद घरबार की देख रेख करना।"

अपने धुंधले भविष्य को देख, चिन्ता में डूब, बहू गम्भीर हो उठती। देखती—बूढ़ी सास जिस बेटे को नहीं समझा सकी, उस अपने पढ़े-लिखे पति से, वह क्या कहेगी। आखिर वह तो एक दिन भी स्कूल नहीं गई। अन्त में अपना दुख सास के ही सामने प्रगट करती।

अन्त में एक दिन बुढ़िया भी सदा के लिये चल बसी। मरते समय कह गई—'देख बहू, रामचन्द्र को यदि कुछ हो गया, तो परिवार मिट जायगा। तू कलह को सदा दबाने की कोशिश करना।' और उसने आंखें बन्द कर लीं। फिर न खोलीं। बहू की आंखों में आंसू आ गया आंचल से उन्हें पोंछ कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध हो गई।

अब कृष्णानन्द के माता पिता संसार से चल चुके थे। मां के अंतिम शब्द—'बेटा, तू अब गुस्से को थूक दे, खुदी खाई को पाट दे' याद कर पुन अशांत हो उठता। अपने बाप का बदला लेने की सोच रहा था। आवेश में आकर रामचन्द्र को मार डालने की भी सोच बैठता। प्राय. निर्णय, वह अपनी नहीं दूसरों की सलाह से करता। रामचन्द्र को पराजित कर अपने बाप का बेटा बनने की उसकी इच्छा थी।

उसके दिल में दारुण वैमनस्य दहक उठता, जब कभी भी वह झगड़े को अंत करने की बात सुनता। अपने मन के अनुकूल बात करने वाले उसे विशेष प्रिय थे। उन्हीं में से उसके गांव के रिश्ते के चचा पंडित द्वारिका प्रसाद थे।

औरत से भी झगड़ा खत्म करने की बात सोचता, आखिर औरत ही तो है। साहस और मर्दों के से काम करने की सलाह कहां से दे। वह तो जहां तक हो सकेगा, बुजदिल बनाने ही में मदद करेगी।

इसी प्रकार लगभग पूरा बरस बीत गया। कृष्णानन्द के दिल की आग न बुझी।

उसके बुजर्ग द्वारिकाप्रसाद ने उसको बातें समझाईं। वे प्रायः उसके ही मन की बात करते, जिससे हुक्का-पानी का खर्चा उनका भी निकल आता। उन्होंने कहा—'श्रावण पूर्णिमा अब आने को है। मेले का मौका है। भीड़ काफी रहती है, पता भी नहीं चलेगा। तभी साले को............।'

'ठीक कहते हो'—अपने मन की बात पाकर कृष्णानन्द उछल पड़ा।

चलनी द्वारिका चाचा के हाथ में थमाते हुए कहा—'लो, तमाखू लो चाचा।'

'अरे रहने दे।'

'नहीं, रख तो लो।' कृष्णानन्द ने आग्रह किया।

'पर, बात चाचा तुम्हीं ठीक करना।'

'ठीक क्या !— पांवों में रस्सी का फन्दा डाल उल्टा न गिरा दूं, तो नाम बदल देना। तू तो अभी बटा बच्चा ही है, ऐसे उल्टे करके तो हमने कितने ठोके।'

कृष्णानन्द उनके झुर्रीदार चेहरे को देखता रहा। अपने अभिमान का आसरा था, द्वारिका ने फिर कहना शुरू किया—'क्या करें बेटा, हमारे साथ के तो एक नहीं बचे हैं, नहीं तो ऐसी पटकनी दूं, कि उठ कर पानी न मांगे। उस दिन, खैर तब तो तू छोटा ही होगा, उधर के गांव का एक आदमी मुझसे उलझ पड़ा। और खुद शरीफ बन, तुम्हारे पिता जी से कहने लगा—बदमाश ! बस, इतना सुना नहीं था उल्टी लंगड़ी ऐसी दी, फिर उठा नहीं। न जाने, रात में कराहते हुए कब उठा। खैर, तब ताकत थी, भरी जवानी थी, बदन में खून था।'

जरा देर सोच कर फिर द्वारिका ने कहा—'बदला, तो तुम्हें जरूर लेना है बेटा ! बस, मुझ पर छोड़ दो काम। लेकिन, खाना-पीना, खर्चा-वर्चा तैयार रखना। हम तो खुद ही गरीब ठहरे।'

'अहो ! गरीब क्यों कहते हो चाचा ! भला, मेरे रहते हुए तुम गरीब .... ! असम्भव है। लो इनकार मत करना। पांच रुपये का नोट द्वारीका के हाथ में थमाते हुए कहा—मदद करो, तो दो चार नोटों को भी लुटवा दूं।'

'सोचकर बतलाऊंगा। उसकी पसलियों को यदि उलटी न मरोड़ दूं तो....' द्वारिका ने कहा।

इससे कृष्णानन्द के आकुल हृदय को अत्यन्त सान्त्वना मिली। उसने कहा—'बस, कुछ कर दूंगा चाचा, यदि काम कर दिया तो, मुंहमांगा इनाम दूंगा।'

'ओह ! क्या कहते हो बेटे ? तुम्हारे पिता, जो खून करने को हमारी खातिर तैयार रहते, आखिर उनकी सन्तान के लिए हम इतना नहीं कर सकते। विश्वास रख, मौके पर देखा जायगा।'

भाग्य जब रूठता है, तो उसके कोप की सीमा नहीं रहती। घर के सौदे को रामचन्द्र बाजार गया, तो रास्ते में जिस दुकान में रात रहा, वहीं मर गया। दुकानदार का कहना था, कि रात को उसके पेट में मरोड़ उठे। सुबह देखा, तो मरा ही हुआ मिला। इस पर पुलिस ने आगे जांच पड़ताल नहीं की। गर्मियों के दिन होते हैं। प्राय:पेट की बीमारी अधिक होती है, यही लाश, उसकी लाश बिरादरी को मिल गई।

उसके मरने की खबर सुन, द्वारिका चाचा ने कृष्णानन्द से कहा—'मर गया साला। आ धुआं देखने श्मशान तक तू भी।'

कृष्णानन्द ने हर्ष की जो आशा की वह नहीं दिखी। उसने सिर झुका लिया। मुंह से एक शब्द भी न निकला। उसे लगा—उसने अपनी ही करनी से, अपने भाई को संसार से उठा लिया। भीड़ के साथ वह गया, पर उसके पांव जगह पर नहीं पड़ते थे। उसे लगा, मानों वह अब गिर ही पड़ेगा। अन्त में श्मशान पहुंचने पर वह गिर ही पड़ा। उसे सुधि में लाने की अनेक चेष्टाएं की, पर असफल हुईं। सुधि आने पर उसने देखा, उसके भाई का भौतिक शरीर पंचत्व सरोवर में समा गया है। भाई का पुन. चेहरा देखने का उसने प्रयत्न किया, पर समाधि के समीप राख के अतिरिक्त अन्य कुछ न मिला। सामने ही रामचन्द्र के अन्तिम दर्शन को आई उसकी औरत खड़ी थी। देख—वह कुछ न कह सका। रुंधे हुए स्वर में उसके मुंह से निकला—'हाय भाभी।' और वह फूट फूट कर रो पड़ा। अपनी भी समाप्ति को सोच उसने पत्थर उठाया ! पर उसे लगा, किसी ने उसका हाथ पकड़ लिया है। अधमुंदे नेत्रों से देखा—तो उसी का दुखियारी भाभी थी, जिसके जीवन को उसने सदा के लिए दुखदर्द बना दिया।

[पृष्ठ १० का शेष]

इकट्ठी हुई हैं, तो इसका कोई प्रमाण नहीं कि आपके दल का उम्मेदवार कांग्रेस के उम्मेदवार से अच्छा होगा ?

ख—बड़ी बड़ी बातें मारने से सफलता नहीं मिलती, किन्तु देश की परिस्थिति देखते हुए योजना में व्यावहारिकता होनी चाहिए।

७—कुछ लोग आपके वर्ग, धर्म या जाति की या आपकी वकालत करेंगे। इस प्रकार का ढोंग करेंगे, मानों वे आप के अकारण बन्धु हैं। आपकी हर बात में हां में हां मिलायेंगे। वर्गीय संघर्ष में आपके वर्ग के गीत गायेंगे।

निःसन्देह ऐसे लोगों को वोट देने को आप का जी चाहेगा, पर थोड़ा गहराई से विचार कीजिए और सोचिए।

क—इस तरह की ठकुर सुहाती सिर्फ चुनाव जीतने के लिए ही तो नहीं है ? यदि ऐसा मालूम हो तो उसके चक्कर में न आइये।

ख—शासन का सम्बन्ध किसी एक वर्ग, जाति या धर्म से ही नहीं होता। उसके लिए ऐसे आदमियों की जरूरत है जो न्याय का ध्यान रखते हुए सभी वर्गों व धर्मों के उचित हितों का ध्यान रख सकें।

ग—अयोग्य और बेईमान आदमी भी ठकुर सुहाती कर सकते हैं, कदाचित अधिक कर सकते हैं पर ऐसे लोगों से सुराज्य नहीं बनता।

८—मौके मौके पर कुछ प्रदर्शन करने वाले लोग भी अपनी तरफ आप का ध्यान खींचेंगे। कभी सड़क पर झाड़ू लगा दें, कहो तो कभी कभी संडास साफ कर दिया करें, किसी बात को लेकर उपवास करने लगें आदि।

यदि इन बातों में आप सचाई देखें और आपके दिल में इससे भक्ति पैदा हो जाय तो आप उनकी मूर्ति बनाकर देवता की तरह पूजा भले ही कर डालें, पर यह न समझें कि इससे वे शासन-तन्त्र को सम्हालने के योग्य हो गए। अयोग्य और अप्रामाणिक आदमी भी ऐसी बातों में बाजी मार सकते हैं। ये सब दिखाने के तमाशे ही सकते हैं। इस लिए इन बातों के भी चक्कर में न आइये। और शासन योग्य वास्तविक गुणों पर ध्यान रखिए।

बालक वैज्ञानिक

न्यूयार्क के १६ वर्षीय एच० स्टेर्नबर्ग को पिछले साल बर्ती साइंस टेलैंट सर्च द्वारा एक विज्ञान सम्बन्धी पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस इनाम के लिए संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के सैकेण्डरी स्कूलों का कोई भी छात्र प्रतियोगिता में बैठ सकता है। यह पुरस्कार २८००डालर (१ डालर सवा चार रु०) का होता है और पुरस्कार विजेता इसे अपनी कालेज शिक्षा के लिए व्यय कर सकता है। स्टेर्नबर्ग पेन्सेलवेनिया के स्वार्थ मोर कालेजों में पढ़ेगा। उसके अपने शब्दों में जब वह एक छोटा बच्चा था तो सफेद चूहे, जोंकें और छोटे छोटे पशु और कीड़े मकोड़े इकट्ठे किया करता था।

उनको जिस निबन्ध पर इनाम दिया गया है, उसमें उन्होंने फोटोग्राफिक प्लेट के आर पार जो हीलियम के परमाणुओं के द्वारा जो मार्ग बन जाते हैं, उनके नापने की विधि बताई है। इन मार्गों को मालूम करने के लिए उन्होंने ऐसी प्लेटें इस्तेमाल कीं, जिनमें बोरोन लगा हुआ था।

जहां उनकी विज्ञान में इतनी रुचि है, वहां संगीत में भी उतनी ही रुचि है। वे न्यूयार्क के कला और संगीत विद्यालय के सदस्य हैं और पियानो वायलिन तथा वायोला बजाना जानते हैं।

इस प्रतियोगिता में प्रति वर्ष हजारों स्कूल के विद्यार्थी बैठते हैं और इसके पुरस्कार एक प्राइवेट संस्था—वैस्टिंग हाउस इलैक्ट्रिक कारपोरेशन द्वारा दिये जाते हैं।

क्या अर्जुन के बाल बन्धुओं में भी प्रकृति निरीक्षण या विज्ञान की रुचि है। हम उन्हें सलाह देते हैं कि वे भी अपने आस पास की वस्तुओं में, खेतों में, बाग बगीचे, पशुओं और पक्षियों में दिलचस्पी लिया करें।

स्वदेश दर्शन

१ विश्व का प्रत्येक पांचवां मनुष्य भारतीय है।

२. भारत की जनसंख्या ३५ करोड़ है और प्रत्येक दशक में १० से १५ प्रतिशत बढ़ जाती है।

३. गंगा घाटी में भारत की प्रायः आधी जनसंख्या निवास करती है।

४. उत्तर प्रदेश में शहरों की संख्या अन्य सभी राज्यों से अधिक है। एक लाख से अधिक आबादी वाले दर्जन भारतीय नगरों में से डेढ़ दर्जन से अधिक उत्तर प्रदेश में हैं।

५. हिन्दुओं और मुसलमानों के पश्चात भारत का सबसे बड़ा धार्मिक सम्प्रदाय ईसाइयों का है, जिनकी संख्या लगभग ६० लाख है, ईसाई मतावलम्बी मद्रास तथा ट्रावनकोर- कोचीन में अत्यधिक संख्या में हैं।

जरा हंसिये

एक सैनिक को उसके कमाण्डर ने बुलवाया और डांट कर पूछा कि उसने अपने अफसर के प्रति अपमानजनक शब्द क्यों कहे।

पर श्रीमन्, मैंने केवल उनके एक प्रश्न का उत्तर दिया था— सैनिक ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

कमाण्डर ने बिगड़ते हुए पूछा, क्या प्रश्न था?

श्रीमन् अफसर ने मुझसे पूछा था कि तुम मुझे क्या समझते हो और मैंने बता दिया।

× × ×

कर्मचारी— मेरी पत्नी ने मुझे कहा है कि मैं आपसे अपनी वेतन वृद्धि के लिए प्रार्थना करूं।

मालिक—अच्छा मैं भी अपनी पत्नी से पूछूंगा कि मैं तुम्हारी वेतन वृद्धि करूं या नहीं?

× × ×

पत्नी (उतावली से)— मुन्नु ने स्याही पी ली है, मैं अब क्या करूं।

पति— कोई बात नहीं, तुम पैंसिल से लिख लो।

× × ×

स्त्री अपने भावी दामाद से— मेरी लड़की प्यानो बजा सकती है, गा सकती है। अभिनय करना, तैरना, नाचना और मोटर चलाना भी जानती है।

भावी दामाद—ठीक है, मैं भी रोटी पका सकता हूं और घर के बाकी सारे काम कर सकता हूं।

★

क्या आप जानते हैं

● संसार का सबसे छोटा पौधा 'विजिन' है। साल में यह हथेली की चौथाई के बराबर होती है। इसकी आयु दो सौ वर्ष की होती है।

● सब से अधिक अंगूर आस्ट्रिया के शहर प्रार में एक बेल उत्पन्न करती है इससे एक साल में इतने अंगूर उतारे जाते हैं कि उनसे दो सौ लिटर शराब बनाई जाती है।

● कनाडा में जो उत्तरी अमेरिका में स्थित है, एक गाय ने ३०६ दिन में २१२४२ पाऊंड अर्थात २६५ मन दूध दिया था और उससे दस मन से कुछ ऊपर मक्खन निकला था।

● दो हजार तीन सौ रेशमी कीड़ों से आध सेर रेशम प्राप्त होता है।

● संसार का सबसे बड़ा वृक्ष अमरीका के कैलेफोरनिया प्रदेश में है। यह २०३ फुट ऊंचा है और इसकी जड़ का घेरा १०२५ फीट है। इसकी सबसे बड़ी शाखा की लम्बाई १३० फीट है। इसका वजन २४ लाख पाऊंड है। अनुमानत: यह वृक्ष आज से ३१४२ वर्ष पूर्व उत्पन्न हुआ था, यदि इसको उचित रक्षा और देख भाल की जाय तो यह अभी दस हजार वर्ष और जीवित रह सकता है।

वीर अर्जुन साप्ताहिक का मूल्य

वार्षिक	१२)
अर्धवार्षिक	६॥)
एक प्रति	चार आना

नव-निहालों से

अपने पथ पर चलना सीखो!

यह पथ जिससे जग हित होगा,
जागे देश हमारा— सोता,
वैभव बीता फिर पा जावे;
जो अब तक आया है खोता।

सब का ही हित करना सीखो!
अपने पथ पर चलना सीखो!

दुःख की हो परवाह न तुमको
रुकने की हो चाह न तुम को,
चाहे शूल बिछें पैरों में;
या आगे हो राह न तुम को,

मिल को राह बनाना सीखो!
अपने पथ पर चलना सीखो!

हो भारत की पतवार तुम्हीं,
संचित वीणा के तार तुम्हीं!
बोझ तुम्हारे हो कन्धों पर—
मां की गरदन का हार तुम्हीं।

सब हिल मिलकर रहना सीखो!
अपने पथ पर चलना सीखो!

बृहत् राजस्थान के २१ मास

(पृष्ठ १४ का शेष)

लम्बी सरहद पर व्यवस्था रखने की भारी जिम्मेदारी भी इस मन्त्रिमंडल को निभानी थी। अतः इन सभी दृष्टियों से पुलिस को सुगठित और सुसज्जित करने का प्रयास किया गया। विभागीय एकीकरण के साथ ही साथ मौजूदा पुलिस कर्मचारियों के अल्पकालीन शिक्षण की व्यवस्था की गई। परीक्षा के आधार पर चुने हुए उम्मीदवारों को थानेदारी और शिक्षण देने के लिए किशनगढ़ में पुलिस ट्रेनिंग स्कूल का पुनर्गठन किया गया और उसका विस्तार भी किया गया। प्रान्त के एकीकरण से पहले यहां एक सुसंगठित और सुसंचालित सी. आई. डी और आई. बी.: अपराधियों सम्बन्धी जांच और सूचना विभाग की बड़ी कमी थी। इसी कमी को पूरा करने का प्रयत्न भी किया गया। अपराधों को रोकने की मजबूत और सफल व्यवस्था का दृष्टिकोण रखते हुए राजस्थान सशस्त्र पुलिस दल, आर ए. सी. का संगठन किया गया। डकैतियों को रोकने के लिए एन्टिडेकोयटी पार्टीज, की स्थापना की गई। ग्राम रक्षा संघों की योजना चालू की गई और उसे कानूनी आधार देने की दृष्टि से आवश्यक कानून बनाने का काम भी शुरू किया गया। सरहद की सुरक्षा पर यथोचित ध्यान दिया गया।

राजस्थान में २१ मास

जनता की तुरन्त सेवा और राहत पहुँचाने का यत्न भी करना चाहा। इस सम्बन्ध में तीन आधारभूत योजनायें बनाई गई। पहली योजना के अनुसार किसान, मजदूर आदिवासी, हरिजन और शरणार्थी भाइयों की प्रत्येक सेवा के लिए तथा ग्रामोद्योग, संस्कृत और आयुर्वेद के प्रसार के लिए स्वायत्त शासन और लोक-शिक्षण सम्बन्धी दूसरे प्रचार के लिए मन्त्रियों की अध्यक्षता में दस मंडल बनाये गये, जिनमें राजकर्मचारियों के अलावा सार्वजनिक कार्यकर्ताओं तथा उक्त कार्यों के अधिकारी, विद्वानों व अनुभव प्राप्त व्यक्तियों को भी शामिल किया गया, ताकि सबके सम्मिलित सहयोग से सेवा कार्यों की यह विशद और व्यापक योजना सुचारु रूप से संचालित की जा सके। दूसरी योजना के अनुसार सांभर में जनता की तात्कालिक आवश्यकता पूरी करने वाले और उसको शीघ्र राहत पहुंचाने वाले कामों की छांट की गई। इस योजना के अन्तर्गत स्कूल, छात्रावास, डिस्पेंसरी, औषधालय, प्रसूतिगृह और पशु चिकित्सालय खोलना तथा जल कष्ट के निवारण के उद्देश्य से और तालाब बनवाना और आवागमन के साधनों का विस्तार करने तथा उन्हें अनुकूल करने की दृष्टि से टूटे फूटे सड़कों के टुकड़े और पुलिया में बनवाना शामिल किया गया। तीसरी योजना का सम्बन्ध कस्बों और शहरों में रोजगार की नयी सुविधाएं उत्पन्न करके और मौजूदा सुविधाओं के विस्तार से था।

उपरोक्त तीन योजनाओं में से दो योजनाओं के अन्तर्गत काम शुरू हुआ भी। मंडलों में प्रायः सभी ने अपने-अपने क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ किया और उनमें से कइयों को परिस्थितियों की तुलना में सफलता मिली, यद्यपि जनता से बहुत कम सहयोग मिल सका, इससे मंडलों के कार्य में बहुत कम प्रगति हो पाई। फिर भी इन मंडलों में से कुछ ने उल्लेखनीय कार्य किया। 'ग्रामोद्योग' पत्र के द्वारा ग्रामोद्योग के पक्ष में वातावरण और विचारधारा पैदा करने का प्रयत्न किया तथा ग्रामोद्योग के क्षेत्र में राजस्थान और राजस्थान के बाहर की हलचलों से जनता को अवगत रखने का प्रयत्न भी किया जाता रहा। राजस्थान व्यापी आधारों पर ग्रामोद्योगों सम्बन्धी जांच का काम कराया गया। कुछ संस्थाओं के सहयोग से ग्रामोद्योगों के शिक्षण की व्यवस्था की गई और ताड़गुड़, तेल, खादी, ऊंन, चमड़ा और घी के ग्रामोद्योगों को कुछ प्रोत्साहन दिया गया। और ग्रामोद्योगों द्वारा उत्पन्न माल की बिक्री की व्यवस्था भी की गई। संस्कृत मंडल के तत्वावधान में एक पुरातत्व विभाग की स्थापना हुई, जिसने पुराने संस्कृत ग्रन्थों की खोज और सम्पादन के काम को शुरू किया। मजदूर मंडल के मजदूर केन्द्रों की स्थापना की जहां मजदूरों की शिक्षा; चिकित्सा, मनोरंजनादि की व्यवस्था की गई। आदिवासी मंडल द्वारा आदिवासी लोगों के लिए स्कूल व छात्रावास खोले गये और उनमें शिक्षा प्रसार करने की दृष्टि से उन्हें छात्रवृत्तियां दी, उनके लिए छात्रावास चलाये और उनका सांस्कृतिक विकास करने तथा उन पर लगाये गये अयोग्यता सम्बन्धी बन्धनों को भी तोड़ने का सफल प्रयास किया गया। शिक्षण मंडल ने किसान छात्रों को छात्रवृत्तियां दी तथा छात्रों द्वारा गर्मियों की छुट्टियों में प्रौढ़ शिक्षण का कार्य कराया। मंडल ने जनों के सांस्कृतिक उत्थान की दृष्टि से कई स्थानों पर रेडियो व प्रौढ़ शिक्षण केन्द्र खोले, यहां साधारण दवाइयों की व्यवस्था थी, पर विषम परिस्थितियों के कारण यह आधारभूत योजना भी सफल नहीं हुई। शरणार्थी मंडल ने शरणार्थियों को आर्थिक सहायता दी तथा आयुर्वेद मंडल ने औषधि प्रसार का कुछ काम किया। लोकशिक्षण मंडल के राजस्थान के विभिन्न स्थानों सार्वजनिक रेडियो का प्रबन्ध किया और प्रोजेक्टरों द्वारा उपयोगी फिल्मों का सार्वजनिक प्रदर्शन करने की योजना बनाई। स्वायत्त शासन मंडल ने 'पंचायत' नाम की पत्रिका प्रकाशित करके और पंचायतों में काम करने वाले कार्यकर्ताओं के शिक्षण शिविर चला करके और पंचायतों में काम करने वाले कार्यकर्ताओं शिक्षण शिविर चला करके स्वायत्त-शासन का जनता तक संदेश पहुँचाया।

सैकड़ों प्राइमरी स्कूल शुरू किये गये। कई स्थानों पर अस्पताल खोले गये तथा सड़कें बनाने की दिशा शुरूआत की गई। रोजगार सम्बन्धी योजना में कोई प्रगति नहीं हुई।

———

अपनी देववाणी सीखिए

भ्रष्टाचारविरोध्यान्दोलनम्

श्री धर्मदेवो विद्यावाचस्पति

अद्यत्वे भ्रष्टाचार सर्वत्र प्रसरन् इव प्रतीयते । यस्मिन् पवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्ते वा महर्षिणा मनुना

'एतद् देश प्रसूतस्य, सकाशादग्रजन्मन ।
स्वस्वचरित्रं शिक्षेरन्, पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

इयं घोषणा कृता आसीत्, यत्र च अश्वपति सदृशा राजान

न मे स्तेनो जनपदे,
न कदर्यो न मद्यपः ।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान्,
न स्वैरी स्वैरिणी कुत. ॥

एवंविधां घोषणां कुर्वन्त· संकोचं न कुर्वन्तिस्म, यत्र सदाचार एव अमाना चरम धनम् आसीत् तत्र एवं भ्रष्टाचारं दुराचारं च वर्धमानम् अवलोक्य कस्य चित्तं न खिद्यते । अस्य भ्रष्टाचारस्य निवारणाय सर्वैरपि देशहितैषिभि महानुभावै अवश्यं प्रयत्न कर्तव्य· । समस्तस्य आर्यजगतः शिरोमणिभूतया सार्वदेशिकार्यप्रतिनिधिसभया प्रबलरूपेण संघटितरूपेण च भ्रष्टाचारविरोधि आन्दोलनं चालयितुं निर्धारितं वर्तते तदर्थं च क्रियात्मकयोजना एका देहलीस्थानाम् आर्याणां पुरतः गते मासवासरे (मई मासस्य २७ तारिकायाम्) तस्य अधिकारिभिः उपन्यस्ता । यद्यपि भ्रष्टाचारस्य दुराचारस्य च बहूनि रूपाणि, तानि सर्वाणि च हानिकारकाणि, तेषां सर्वेषां विरोधश्च आवश्यकः तथापि विशेषरूपेण चतुर्णाम् अंशानां विषये एवं प्रबलम् आन्दोलन चालयिष्यते । ते चत्वार· अंशा अधोलिखिताः सन्ति ·

१. अश्लीलानां चलचित्राणां विषये ।

२. अश्लीलचित्राणां विषये, ये सार्वजनिक स्थाने दृश्यन्ते जनानां विशेषतो नवयुवकानां नवयुवतीनां च मनस्सु दूषितं प्रभावम् उत्पादयन्ति ।

३. रेडियो इत्यादि द्वारा प्रसारितानाम् अश्लीलगीतानां विषये ।

४. आपणेषु निर्बाधं विक्रीयमाणस्य प्रकाश्यमानस्य च अश्लीलसाहित्यस्य विषये जनतायाः सदाचाररक्षायै एषु चतुर्षु विषयेषु प्रयत्न, दुराचारप्रवृत्तिवर्धकानाम् एषां निवारणं च नितान्तम् आवश्यकम् इति मत्वा बहुषु अन्येषु दुराचाररूपेषु सत्सु अपि प्रारम्भे वैधानिकरूपेण, आवश्यकतायां सत्यां च सत्याग्रहादीनां लोकसाधनानाम् अवलम्बनेन अपि एतद्वारणार्थम् आन्दोलनं करिष्यते । वयम् आशास्महे यत् अस्मिन् पवित्रे कर्मणि सर्वेषां समाजदेशहितैषिणां पूर्णसहयोग. समया प्राप्स्यते ।

कृपलानी-त्यागपत्रम्

श्री रघुवीर शास्त्री

श्रीमान् आचार्यः जीवतराम भगवान्दासात्मज· कृपलानी गत पक्षे कांग्रेस सदस्यतायाः निजं त्यागपत्रं आधुनिक कांग्रेसाध्यक्षाय श्री पुरुषोत्तमदासटण्डनाय समर्पितवान् । निजत्यागपत्रस्य उचिततायाः अनिवार्यतायाश्च समर्थनं कुर्वन् श्री कृपलानी महोदय स्पष्टीकृतवान् यत् अद्यत्वे कांग्रेस-संस्था एतस्याः अधिकारिणां सदस्यानां च भ्रष्टाचारेण तथा दोषपूर्णं वरावर्ति यथा देशस्य किमपि हितं कर्तुं मयोग्याम् इमां परित्यज्य गमनमेव सम्प्रति उचितम् ।

श्री कृपलानी महोदयः 'अहं खलु देशे सफलप्रजातन्त्रप्रतिष्ठार्थम् एकस्य विधायक-विरोधिदलस्य संगठन करिष्यामि । सर्वोस्य प्रगतिवादिनः कांग्रेसीयान् अकांग्रेसियान् च एकत्र मेलयिष्यामि' इत्येव निजं भाविनं कार्यक्रमं प्रकाशितवान् ।

अयं खलु पूर्वं किदवईप्रभृतिसहयोगिसहायतया 'प्रजातन्त्रदलस्य' संगठनं सर्वराज्येषु सर्वोऽपि कांग्रेससंस्थाया एकतायै विघटितवान् । परन्तु अद्य वृद्धमहाराय· कथं स्वयमेव सर्वतः प्रथमं विघटन शंखध्वनिं कृतवान् इति अस्मादृशानां न केषां विस्मयं कुर्यात् ? 'मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना तुण्डे-तुण्डे सरस्वती' इति नियमानुसारं अस्मिन् विषये लोकाः अनेक प्रकारं तर्कयन्ति । आचार्यो नूनं अद्यापि त्यागपत्रं न ददता किदवई महाशयेन पदलोलुपेन वञ्चित, आवावेगवशतामापाद्य स्वराजनीतिक भविष्यमपि हारितो वराकः, किदवईसदृशैः अन्यैरपि त्यजत्येत् किमेको वराकः आचार्यं भवति, इत्यादय· अनेकाः अभिलापाः सर्वत्रापि श्रूयन्ते ।

वय तु इदमेव मन्यामहे यदयं कृपलानी-त्यागपत्र वृत्तान्तः कांग्रेससंगठने प्रतिकक्षं प्रविष्टस्य सत्तामदमहारोगस्य अनिवार्यं परिणाम· इव, अपारपदलोलुपताया विजृम्भितम् इव, वेपमान कांग्रेसभवनस्य शिखरपात इव च भविष्यद्गर्भे गूढं किमपि महापातं सूचयति । यदि एवं, तर्हि कांग्रेसीयानां केषांचित् वराकाणां वास्तविकदेशभक्तानां ईश्वर एव शरणम् ।

काश्मीर के लिए सुरक्षा परिषद द्वारा नियत मध्यस्थ श्री ग्राहम

[पृष्ठ ४ का शेष]

१२. संघ गोवध को पूर्णतः बन्द करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है। गावों की दशा सुधारने के लिए विशेष कदम उठाये जायेंगे, जिससे उसे हमारे कृषि जीवन में एक आर्थिक इकाई बनाया जा सके।

१३. सभी नागरिकों को निमूंल्य चिकित्सा देने का संघ प्रयत्न करेगा।

१४. संघ समान उद्देश्य रखने वाले अन्य संगठनों से सहयोग स्थापित कर कार्य करने को सदा उद्यत रहेगा।

प्रस्ताव—

सम्मेलन में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया—

पंजाब की कांग्रेस पार्टी के भीतर राजशक्ति को लेकर जो धपाधापी और अत्यन्त अशोभन खेंचातानी चल रही है और जिस प्रकार वह पार्टी अपने सिद्धान्तों को छोड़ साम्प्रदायिक अकाली सिक्खों के साथ लेनदेन की बातें करती रहती हैं, इसके फलस्वरूप पंजाब में भाषा विषयक सदर व्यवस्था सदृश नई उलझनें उत्पन्न हो रही हैं, जो विभाजित पंजाब की राजनैतिक और सामाजिक दृढ़ता के भंग का भय उपस्थित कर रही हैं। इन आपसी सौदों में उलझे रहने के कारण वे जनता के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करने में नितान्त असमर्थ रहे हैं। फलतः प्रदेश में कुशप, भ्रष्टाचार और परिणामस्वरूप जनता में घोर असंतोष फैल रहा है। इस कारण कांग्रेसजन अपने भविष्य के विषय में घबरा गये हैं और अपने वास्तविक या कल्पित विरोधियों के प्रति अपने व्यवहार में असंयत हो गये हैं।

इस निरपराध दमन का एक उदाहरण यह है कि इस जनसंघ के निर्माण के लिए बुलाई गई परिषद् की बैठक करने के लिए जालन्धर के अधिकारियों ने नगर की सीमा के भीतर अनुमति नहीं दी।

अतः इस संघ का यह दृढ़ मत है कि वर्तमान स्वार्थ-परायण सिद्धान्तहीन शासक के अधीन आगामी निर्वाचनों का शुद्ध और न्याय रूप में होना असम्भव है। अतः यह जनसंघ भारत शासन से अनुरोध करता है कि वे पंजाब के मंत्रिमण्डल को भंग कर दें और पंजाब का शासन अपने हाथों में लेके जब तक कि आगामी निर्वाचन समाप्त न हो जाय, जिससे जनता के अधिकारों और लोकतन्त्र पद्धति की रक्षा हो सके।

———

[पृष्ठ ७ का शेष]

लिए सरकार की ओर से जो कारण दिये गये हैं, उनको भी भली प्रकार देखने की सुविधा और किसी को क्या, स्वयं प्रवर समिति के सदस्यों को नहीं दी गई। अपनी विरुद्ध सम्मति में प्रवर समिति के सदस्य पं० हृदयनाथ कुंजरू लिखते हैं—"यह अत्यन्त खेद का विषय है कि सरकार ने समिति को इस प्रकार के कानूनों के विषय में जो हाल ही में न्यायालयों की घोषणाओं से अवैध हो गये हैं और जिन्हें धारा ३ (२) के अंतर्गत वैध किया जा रहा है, पूरी सूचना नहीं दी, यद्यपि ऊपर उल्लिखित निर्णयों से उत्पन्न हुई स्थिति का स्पष्ट चित्र समिति के सम्मुख रखने के लिए उनसे बारम्बार कहा गया था।"

———

दी कैलकटा कैमिकल कम्पनी लिमिटेड

३५ पण्डितिया रोड, कलकत्ता-२९

हमें दी कैलकटा केमिकेल कं० लि०, कलकत्ता (मैनेजिंग एजेन्ट्स- सेन लाल मैत्र एण्ड कं०) का ३० जून १९५० तक का नया बैलेन्स शीट और प्राफिट एण्ड लास एकाउन्ट की एक कापी मिली है, जिससे पता चलता है कि कम्पनी ने काफी तरक्की की है। कुल बिक्री ९२ लाख की हुई है यानी पिछले साल से १२ लाख अधिक और यही एक उन्नतिशील नतीजा का प्रमाण है।

सभी खर्च बाद देकर एवं डेप्रीसियेशन तथा बैड डेट के लिए पृथक रखकर प्राफिट एण्ड लास एकाउण्ट से मालूम होता है कि २,९६,९७०॥=)॥ का लाभ हुआ है। लाभांश आर्डीनरी शेयरों पर १२ प्रतिशत, प्रेफरेन्स शेयरों पर ६ एवं ४॥ प्रतिशत, प्रथम एवं द्वितीय ईसू, सभी आई० टी० मुक्त। सबसे खुशी की बात तो यह है कि कम्पनी ने अपने कर्मचारियों की ओर विशेष तौर पर ध्यान रखा है। २,३४,३५४।)॥ मुख्य तथा प्राबीडेण्ट फंड, बोनस, वेल फेयर एवं अन्यान्य खर्च दावा-दारु के काम में खर्च हुआ है जो नेट प्राफिट का ७२ प्रतिशत है।

दी कैलकटा कैमिकेल क० लि० को स्थापित हुए प्राय ३४ वर्ष से अधिक हुए एव इस अर्से में इसने अपने उच्चकोटि के पदार्थ तैयार कर काफी ख्याति प्राप्त करली है एवं इसका श्रेय फाउण्डर डाइरेक्टर्स क्रमश श्री के० सी० दास एवं श्री बी० मैत्र को है, जिनके अटूट प्रयत्न और परिश्रम से इस कम्पनी ने इतनी तरक्की की।

हम कम्पनी की हर प्रकार से उन्नति की कामना करते हैं।

अर्जुन

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार १८ ज्येष्ठ सम्वत् २००८ [अङ्क ७

राष्ट्र की अमर सम्पत्ति

ले०— श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

यह मनुष्य का स्वभाव है कि परोक्ष की अपेक्षा प्रत्यक्ष, और भविष्य की अपेक्षा वर्तमान की ओर अधिक आकृष्ट होता है। उसे किसी वस्तु के आन्तरिक मूल्य की अपेक्षा बाह्य चमक-दमक अधिक आकृष्ट करती है। विशेषतः उन देशों में जहां शिक्षा का कम प्रचार है या शिक्षा की गहराई कम है, सार्वजनिक प्रवृत्तियों का मूल्य अधिक बाह्य आडम्बर से मापा जाता है, उनकी स्थिर और आन्तरिक उपयोगिता से नहीं।

यही कारण है कि इस समय हमारे देश की दृष्टि अन्य सब राष्ट्रीय मार्गों को छोड़ कर केवल एक राजनीति के मार्ग की ओर झुक गई है। सभी का मुख्य विषय राजनीति बन गया है और सभी कार्यों का ध्येय राजनीतिक सफलता को मान लिया गया है। आप चारों ओर दृष्टि डाल कर देखिये, आपको प्रायः प्रत्येक धार्मिक समाज में यह चर्चा मिलेगी कि आगामी चुनाव में हम सफलता प्राप्त करें। सांस्कृतिक सम्मेलन होते हैं, तो उनके संयोजकों के मानसिक अन्तस्तल में राजनीति बैठी रहती है। यही कारण है कि प्रत्येक धार्मिक सभा के वार्षिकोत्सवों और सांस्कृतिक सम्मेलनों में जो व्याख्यान होते हैं, उनका एक बड़ा भाग कांग्रेस सरकार की प्रशंसा या निन्दा के अर्पण किया जाता है। इसी प्रकार साहित्यिक आयोजनों का रुख भी राजनीतिक ही रहता है। किसी कवि सम्मेलन में वीर जवाहर के गीत गाये जायेंगे, तो किसी में वीर सावरकर के। साहित्य के उद्यान में भी तलवार की झंकार सुनाना आजकल का रिवाज हो गया है। सरस्वती एक प्रकार से लक्ष्मी और दुर्गा की दासी बन गई है। डा० राधाकृष्णन् जैसे उत्कृष्ट विद्वान का विदेश में राजदूत बना कर भेजा जाना मेरे इस कथन का प्रमाण है।

यदि मनुष्य जाति के सामाजिक इतिहास पर दृष्टि डाली जाय, तो हमें प्रतीत होगा कि वस्तुतः सरस्वती का स्थान लक्ष्मी और दुर्गा से बहुत ऊंचा है। सरस्वती का आसन होने के कारण स्थिर है। हमारे देश में मनु वैवस्वत से लेकर हजारों राजा और सम्राट बने और बिगड़ गये। उनके बनाए हुए राज्य और साम्राज्यों के महल खड़े हुए और समय की चोटें खा कर विदीर्ण हो गये, उनके नाम भी बहुत कम लोग जानते हैं, परन्तु आज से सहस्रों वर्ष पूर्व जिन मुनियों ने ब्राह्मण और सूत्र ग्रंथ लिखे, उनकी रचनायें आज भी उसी रूप में विद्यमान हैं। अयोध्या के राज्य को नष्ट हुए कई युग व्यतीत हो गये, पर वाल्मीकी की रामायण आज भी घर घर में पढ़ी जाती है। इन्द्रप्रस्थ कई बार विदेशियों द्वारा पदद‍लित किया गया, लेकिन व्यास के महाभारत की श्लोक संख्या घटने की जगह बढ़ती ही गयी। विक्रम का साम्राज्य कथाशेष हो गया। यहां तक कि स्वयं राजा विक्रम की सत्ता भी कुछ लोगों की दृष्टियों में सन्दिग्ध हो गई, परन्तु कालिदास के काव्य आज भी भारत की कीर्ति को उज्ज्वल कर रहे हैं। राजनीति राष्ट्ररूपी खेत की बाड़ है। उसके बिना खेत की रक्षा नहीं हो सकती, परन्तु देश की सांस्कृतिक संपत्ति खेत की फसल है। बाड़ फसल की रक्षा के कारण उपयोगी अवश्य है, पर वह फसल का स्थान नहीं ले सकती।

मुझे यह पंक्तियां इसलिए लिखनी पड़ीं कि मुझे देश के विद्वानों और सरस्वती के उपासकों को क्षणिक राजनीति के प्रवाह में बहते हुए देख कर दुःख होता है। जहां यह सत्य है कि ऐसे प्रजातन्त्री देश में, जहां वयस्क मताधिकार का प्रचार हो, प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह राजनीतिक चुनाव में अपने मत का प्रयोग ठीक तरह से करें, वहां साथ ही राष्ट्र की सांस्कृतिक शिक्षासम्बन्धी और साहित्यिक प्रवृत्तियों और रचनाओं की ओर से रुचि हट जाना देश के भविष्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है। यदि राष्ट्र के मस्तक राजनीतिक भंवर में बह जायेंगे तो इस उखड़े हुए कागज को संभालने के लिए कोई पेपरवेट न रहेगा। देश के स्वतन्त्र हो जाने के कारण यह सुअवसर है कि देश के मस्तिष्कोपजीवी लोग स्वाधीन वातावरण में देश की अमर विभूति का संवर्धन करें, न कि राजनीति की वात्या में बह कर प्राप्त हुए सुअवसर को खो दें।

★★

पुस्तक हटा दी गई

उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग ने डा० श्रीवास्तव और प्रो० दुबे द्वारा लिखित 'विश्व इतिहास की रूपरेखा' नामक पुस्तक को पाठ्यक्रम में लगा कर फिर हटा दिया है। इसका कारण यह दीखता है कि जमीयत उल-उलेमा, अहरारे-जादिमे सफ़ आदि कुछ मुस्लिम संस्थाओं ने इसका विरोध किया था, क्योंकि इस पुस्तक में हजरत मुहम्मद के सम्बन्ध में सत्यशोधक ऐतिहासिक की दृष्टि से काम लिया गया था। उनके भ्रातृ प्रेम व समता के सन्देश, अद्भुत साहस और संगठन कुशलता आदि गुणों की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि "उन का नैतिक चरित्र महात्मा बुद्ध, कन्फ्युशस और और ईसा मसीह की भांति उच्च कोटि का न था और न वे शांति और अहिंसा के पुजारी थे। वृद्धावस्था में उन्होंने कई विवाह किये। इतिहासकार एच० जी० वेल्स लिखते हैं कि 'उनमें अहंकार, मक्कारी और आत्मवंचना की मात्रा अधिक थी, यद्यपि अपने धार्मिक विचारों में वे बहुत ईमानदार थे। मुहम्मद ने कहा कि कुरान उन्हें ईश्वर से आभासित हुई थी, किन्तु साहित्य अथवा दर्शन की हैसियत से वह इस योग्य नहीं है कि उसे ईश्वररचित माना जा सके।' इसी अवतरण पर मुस्लिम संसार में क्षोभ हो उठी और इसे न केवल भारत के ४ करोड़ मुसलमानों का, किन्तु दुनियाभर के मुसलमानों का कत्ल कहने लगी हैं। इस आन्दोलन से भयभीत होकर उत्तर प्रदेश की सरकार ने पुस्तक को ही पाठ्य क्रम से हटा दिया। इतिहास जब किसी सम्प्रदाय विशेष का लिहाज करके लिखा जाता है, तब वह सत्य से दूर हो जाता है। उत्तर प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री संपूर्णानन्द स्वयं इतिहास के विद्वान हैं। कुछ मुस्लिमों के आन्दोलन से भयभीत होकर इस सत्य से इन्कार उन्हें नहीं करना चाहिये था।

———

जनता का राजनैतिक शिक्षण

स्वतन्त्र भारत के विधान के अनुसार नये चुनाव में अभी छः महीने से कम समय नहीं है, किन्तु विविध राजनैतिक दलों ने चुनाव युद्ध की घोषणा कर दी है। हर एक दल नये पुराने नारों और सिद्धान्तों के साथ सामने आ रहा है। आगामी चुनावों में पहली बार देश के वालिग ... भाग लेंगे ... राजनैतिक समस्याओं पर लोग स्वयं बहुत कम सोचते हैं। इसलिए आज देश के विभिन्न राजनैतिक दलों, शिक्षा-संस्थाओं और नेताओं का कर्तव्य यह है कि वे सारे देश में घूम घूम कर राजनैतिक सिद्धान्तों तथा उपस्थित प्रश्नों की जानकारी जनता को दें ताकि जनता स्वयं इन प्रश्नों पर भावुकता को छोड़ कर विचार कर सके। यदि कुछ शिक्षा-संस्थाएं दलबन्दी से दूर रह कर यह कार्य कर सकें तो अधिक अच्छा हो।

———

महाराणा प्रताप का सन्देश

स्वातन्त्र्यसूर्य महाराणा प्रताप की ४१२ वीं जयन्ती इस सप्ताह थी, किन्तु यह मनाई गई केवल उदयपुर में। यह इस बात का सूचक है कि हम लोगों में अपने राष्ट्रवीरों के प्रति विशेष उत्साह नहीं है। जब प्रायः समस्त देश विदेशी मुगल शक्ति का शिकार बन चुका था महाराणा प्रताप अपने थोड़े से साधनों और थोड़े से वीरों को लेकर स्वाधीनता की ज्योति जगाये रहे। उन दिनों मुगल शासन संसार भर में सर्वाधिक शक्तिशाली था, उससे लोहा लेना स्वातन्त्र्य प्रेम का अद्भुत उदाहरण है और यह भावना प्रतिक्षण राष्ट्र में जागृत रहनी चाहिए।

———

काश्मीर सम्बन्धी दो समाचार

पाठक अन्यत्र दो समाचार देखेंगे। एक पं० नेहरू के पाकिस्तान को चेतावनी और दूसरा कुछ समय बाद काश्मीर में अराजकता के षड्यन्त्र का। हम जहां पं० नेहरू की स्पष्टवादिता और दृढ़ता के लिए हर्ष प्रकट करते हैं वहां दूसरे समाचार के कारण उन्हें अधिक सतर्क रहने की सलाह देते हैं। काश्मीर सीमा पर शत्रु के छुट-पुट हमले प्रारम्भ भी हो गए हैं, जो अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता सिद्ध करते हैं।

———

नंगे रहने की अनुमति ?

मिर्जापुर के लगभग ५०० नागरिकों ने एक वक्तव्य द्वारा जिला मजिस्ट्रेट से अपील की है कि उन्हें तन ढकने के लिए आवश्यक एवं सुलभ दर के कपड़ों की शीघ्र से शीघ्र वितरण की व्यवस्था करें। अगर सरकार वस्त्र वितरण की व्यवस्था में कठिनाई महसूस करती हो तो हम लोगों को दिगम्बर रहने की आज्ञा दी जाय। इन आवेदनकारियों में नगर के व्यवसायी वकील, पत्र-सम्पादक, अध्यापक, समाजसेवी, व्यवसायी, सभापति, किसानों एवं मजदूर समुदाय के लोग शामिल हैं। यह समाचार वस्तु स्थिति पर स्वयं प्रकाश डालता है, किसी टिप्पणी की आवश्यकता नहीं।

पंजाब के नये नेता

संक्षिप्त परिचय

कांग्रेसी मन्त्रियों की स्वार्थ-लोलुपता, राजनैतिक प्रतिद्वन्द्विता, ईर्षा एवं मन्त्रि पदों की बंदरबांट ने वीर भूमि पंजाब का उज्ज्वल इतिहास कलंकित कर दिया है। बहुत कुछ इन कारणों से भी पंजाब का जनजीवन दुखी हुआ है।

पंजाब की वर्तमान शोचनीय स्थिति पर गुरु गोविन्दसिंह, ला० लाजपतराय, सरदार भगतसिंह आदि की वीर आत्माएं क्या व्याकुल नहीं होती होंगी?

भारतीय जन-संघ

किन्तु जो भूमि सतत-संघर्ष एवं अमर पुत्रों को जन्म देने के लिये ही विख्यात रही है उसके क्षितिज पर एक नवीन नक्षत्र पुनः उदित हुआ है। भारतीय जन संघ अपने जन्मकाल में में ही यहां की जनता की आकांक्षाओं की पूर्ति का केन्द्र बन गया है।

स्व० महात्मा हंसराज जी के पुत्र लाला बलराज जी के सबल हाथों में जनता ने भारतीय जन संघ का नेतृत्व सौंपा है। लाला बलराज वास्तव में महात्मा हंसराज के सामाजिक उत्तराधिकारी है। लाला बलराज के रूप में वास्तव में महात्मा हंसराज जी की परम्परा अक्षुण्ण है।

आप लम्बे कद के गौर वर्ण व्यक्ति हैं। उन्नत ललाट पर अनुभव की आभा प्रदीप्त है। चश्मे में चमकती आंखों की दृष्टि इतनी पैनी है कि वह शीघ्र ही किसी के अन्तःकरण में बैठ कर उसे अपना बना लेती है। समाज के दुख से आपका अन्तःकरण आपन्न ही दुखी है, किन्तु मधुर व्यवहार कुशलता ने आपके व्यक्तित्व को अत्यन्त प्रभावशाली बना दिया है।

निरन्तर सफलताओं का जीवन

किसी कार्य को हाथ में लेने के पूर्व उसके अंग-प्रत्यंग पर गहराई से विचार करने का सहजस्वभाव होने के कारण असावधानी कभी भूल कर भी आपके जीवन में प्रवेश नहीं कर पाई। इसीलिये आपका जीवन एक के बाद एक, निरन्तर सफलताओं का ही जीवन है।

डी० ए० वी० कालेज, लाहौर के प्रथम अवैतनिक आचार्य महात्मा हंसराज जी के घर लाहौर में ही लाला बलराज ने १८८६ में जन्म लिया था। आज भी वह डी० ए० वी० शिक्षा संस्थाओं के योग्य संचालक हैं।

बलराज जी की धमनियों में महात्मा हंस[illegible] ... [illegible] ...। देशभक्ति के पाठ तो मानों आपने गर्भ में ही कण्ठस्थ कर लिये थे।

श्री बलराज

क्रान्तिकारी बलराज

आपका अल्हड़ यौवन तो देश के क्रांतिकारी युग की साकार प्रतिमा था। पराधीन, विवश मातृभूमि के विदेशी-पाशों को काटने के लिए युवक बलराज क्रांतिकारियों के दल में प्रविष्ट हो गया। तथा 'लार्ड हार्डिंग बाम्ब केस' के अभियुक्त के रूप में उसे काले पानी का आजन्म कारावास का दण्ड सुना दिया गया। फलस्वरूप बलराज को भारतवर्ष की सबसे गरम जेल मुलतान में सात वर्ष तक बन्द रखा गया।

कारावास की कठोर-यातनाओं की इस अग्नि परीक्षा से उत्तीर्ण हो, जब बलराज जी जेल से मुक्त हुए तब आपने अध्यवसायपूर्वक अपना साधारण कारोबार प्रारंभ किया। आपका देश भक्तिपूर्ण स्वर्ण-जीवन कारावास की यातना-अग्नि में तप कर और निखर आया। आप डी० ए० वी० शिक्षा संस्थाओं के संचालन में व्यस्त हो गये।

तरुण पंजाब पीछे है

समयचक्र के साथ देश का भाग्यचक्र भी घूमा। विभाजन हो गया। पंजाब उजड़ गया, बर्बाद हो गया। और अब, जब शनैः शनैः पंजाब का जीवन मृत्युपथानुगामी होता जा रहा है तब यह सिंह पुनः दहाड़ कर उठ खड़ा हुआ है। उसने पंजाब की समस्त प्रतिगामी शक्तियों को 'भारतीय जन संघ' के घोषणा पत्र के रूप में चुनौती दे डाली है। समस्त तरुण-पंजाब बलराज के पीछे ताल ठोंक कर खड़ा हो गया है।

श्री बालसहाय

महाराणा प्रताप द्वारा प्रयुक्त धनुष लिये राष्ट्रपति उनके चित्र के नीचे

विद्यार्थी प्रतियोगिता नं० ३ का परिणाम

प्रश्न नं (१) हमें आर्थिक [illegible] की सम्भावना है। (२) नये (३) वे सुन्दरता से लिखती हैं (४) प्रिन्टींग प्रेस (मुद्रणयंत्र) (५) श्री बी० पी० सेवक (या) कलकत्ता। पुरस्कार विजेताओं को सूचनायें दी जा चुकी हैं। व्यवस्थापक,
विद्यार्थी भवन रानी बाजार, बीकानेर

संयुक्त राष्ट्रसंघ को चेतावनी

भारत मध्यस्थ प्रस्ताव नहीं मानेगा

★ पहले जनमत की शर्तें पूरी करो
★ डा० ग्राहम से असहयोग
★ पाकिस्तान से पक्षपात
★ गलत तरीके के खतरे
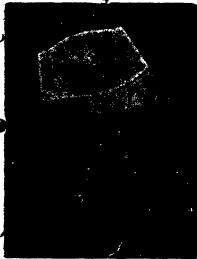
★ पं० जवाहरलाल नेहरू

पं० जवाहरलाल नेहरू

काश्मीर का भविष्य काश्मीर के लोगों पर और विशेषकर उनकी राष्ट्रीय परिषद् पर निर्भर है, जो उनकी प्रतीक और संरक्षिका है।

पिछले ३॥ वर्षों की घटनाओं ने संदेह और अनिश्चितता पैदा की है। यह अनिश्चितता सुरक्षा परिषद् के विभिन्न निर्णयों के कारण अब भी कायम है। काश्मीर के लोगों को यह बताने का पूरा अधिकार है कि वे क्या महसूस करते हैं, क्या चाहते हैं और स्थिति का किस तरह सामना करेंगे। उनके निर्णयों से मेरे सहमत होने या न होने का कोई प्रश्न नहीं है। सिवाय इसके कि जब मैं उचित और आवश्यक समझूं, तब उन्हें सलाह देने का मैं अपना अधिकार समझता हूं। किन्तु इस समय मैं भारत सरकार की स्थिति स्पष्ट कर देना चाहता हूं।

सन् १९४७ में काश्मीरियों के संघर्ष में भारतीयों की सहायता का भारत सरकार ने जो वचन दिया था, उस पर वह अटल रहेगी, चाहे कुछ भी हो। उस वचन में कहा गया था कि किसी बाहरी हस्तक्षेप के बिना काश्मीर के लोग ही अपने भाग्य का निर्णय करेंगे। वह आश्वासन अब भी कायम है और कायम रहेंगे।

भारतीय सेनाएं भीषण संकट के समय राज्य के वैधानिक अधिकारियों और लोगों के प्रतिनिधियों के आमन्त्रण पर काश्मीर में आई। अगर काश्मीरी उनके रहने की जरूरत न समझें, तो वे एक दिन भी काश्मीर की भूमि पर नहीं रहेंगी। किन्तु जब तक खतरा मौजूद है और लोगों को उनकी मदद की जरूरत है, तब तक वे सेनायें कम से कम आवश्यक-संख्या में रहेंगी।

जनमत की शर्तें पूरी की जायं

भारत सरकार द्वारा सुरक्षा परिषद् तथा उसके प्रतिनिधियों को राज्य के बारे में दिये गये अनेक आश्वासनों और वचनों का पालन किया जायगा, किन्तु यह ध्यान रखा जाना चाहिये कि वे आश्वासन कुछ परिस्थितियों में और कुछ शर्तों पर दिए गये थे, जो उस वक्त स्वीकार कर ली गई थीं। भारत सरकार ने काश्मीर के लोगों को जो वचन दिये हुए हैं, उनकी पूर्ति के लिए इन शर्तों को वह बहुत महत्वपूर्ण समझती है।

डा० ग्राहम का मिशन

संयुक्त राष्ट्रीय प्रतिनिधि के रूप में डा० ग्राहम अगर मध्यस्थ बन कर आते हैं, तो भारत सरकार सौजन्यपूर्वक उनका स्वागत करेगी, अपना दृष्टिकोण उसे पूर्ण रूप से समझावेगी, किन्तु सुरक्षा परिषद् के प्रस्ताव को कार्यान्वित करने में, जिसे उसने स्वीकार नहीं किया, किसी कदर सहयोग प्रदान नहीं करेगी।

राष्ट्रीय घोषणापत्र के खिलाफ रवैया

राज्य की सरकार भारत सरकार की पूर्ण सहमति से संविधान सभा बुला रही है। किसी और देश या अधिकारी को इसमें ऐतराज करने का कोई हक नहीं है। भारत सरकार ने कभी भी यह महसूस नहीं किया कि संविधान सभा की स्थापना सुरक्षा परिषद् के कार्य में बाधा डाल सकती है।

लेकिन अगर सुरक्षा परिषद् राज्य में सामान्य जीवन-यापन और प्रजातन्त्रीय संस्थाओं के विकास को आपत्तिजनक समझती है, तो हम यह नहीं समझ पाते कि ऐसे मामलों में संयुक्त राष्ट्र संघ ने क्या नीति अपनायी है और कहां तक वह नीति संयुक्त राष्ट्रीय घोषणापत्र की धाराओं के अनुकूल है।

गलत समाधान के खतरे
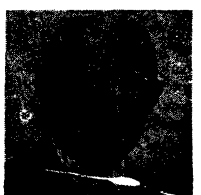
राज्य के भविष्य की बड़ी समस्या पर विचार करते हुए इस बड़ी चीज का भी ध्यान रखा जाना चाहिये कि राज्य के लोग क्या चाहते हैं? यह काश्मीर के ४० लाख लोगों का ही सवाल नहीं, भारत और पाकिस्तान का भी सवाल है और गलत तरीके से समाधान के प्रयत्नों के गम्भीर परिणाम हो सकते हैं।

श्री ग्राहम

पाकिस्तान के साथ पक्षपात

अभी हाल में ही सुरक्षा परिषद् ने बिना नोटिस दिये हुए संविधान सभा के प्रति पाकिस्तान के एक ऐतराज पर अपनी बैठक बुला ली और कुछ सदस्यों ने ऐसे भाषण दिये, जिन्हें हम अत्यन्त आपत्तिजनक और पक्षपातपूर्ण समझते हैं।

किन्तु उसी सुरक्षा परिषद् ने जिहाद के लिए उकसाने के बारे में पाकिस्तान के विरुद्ध बार बार की गई हमारी शिकायतों पर अभी तक विचार करना उचित नहीं समझा है, यद्यपि कोई भी यही कहेगा कि सुरक्षा परिषद् का प्रथम कर्त्तव्य इसी शिकायत पर विचार करना था।

यद्यपि दुश्मन सेनाओं ने काश्मीर पर कब्जा किया हुआ है, तो भी भारत सरकार ने यह कह दिया है कि भारत तब तक युद्ध नहीं करेगा, जब तक उस

[शेष पृष्ठ २० पर]

अवशिष्ट आयकर की वसूली

★ श्री महावीर त्यागी

केन्द्रीय सरकार की आमदनी-खर्च का हेर फेर लगभग ४०० करोड़ रुपये का है। यह रुपये इनकम टैक्स, एक्साइज और कस्टम ड्यूटी आदि से प्राप्त होता है। टैक्स की दर क्या हो, और किन किन मदों पर यह रुपये खर्च हों, इसका निर्णय हर साल जनता के प्रतिनिधगण पार्लियामेंट में बजट और फाइनेंस बिल द्वारा करते हैं। पार्लियामेंट के फैसले के अनुसार टैक्स की उगाही करना और खर्चों पर निगाह रखना 'फाइनेंस मिनिस्टर' का काम है।

अंग्रेजी राज के दिनों में जबकि भारत की जनता सरकार से सहयोग किये हुए थी, तो हमारी कुछ ऐसी मनोवृत्ति हो गई थी कि हम किसी प्रकार भी विदेशी हकूमत की सहायता न करें। 'न एक पाई और न एक भाई' का नारा बुलन्द था। रुपये वाले लोगों में खुले तौर से टैक्स रोक लेने की हिम्मत न थी, वे अपने बही खाते के हेर-फेर द्वारा कुछ बचा लेते थे। पिछली लड़ाई के दिनों में जब सरकार अन्धाधुन्ध खर्च कर रही थी तो लोगों को अपनी आमदनी छिपाने के बहुत अवसर मिले। इस तरह जो रुपया लोगों ने बचाया था वह अन्य व्यापार के लिए बाहर न आ सका, वही टैक्स से बचाई हुई आमदनी आजकल चोर बाजारी को प्रोत्साहन दे रही है। अब तो अंग्रेज चले गये हैं और हमारी अपनी हकूमत कायम हो गई है। अब अपनी आमदनी बचाना-छिपाना देश के साथ विश्वासघात करना है।

मेरे इनकम टैक्स के महकमे में करीब १२० करोड़ रुपया इनकम टैक्स का लोगों पर बकाया पड़ा है। उसके बहुत से कारण हैं। एक तो यह है कि पिछले वर्षों की छिपाई हुई आमदनी को बाहर लाने में लोग डरते हैं कि उन पर मुकदमा चल जावेगा, सजा हो जावगी और न जाने कितनी पैनेल्टी देनी पड़ेगी। वगैरह। और दूसरी बात यह है कि कई वर्ष को बकाया एकमुश्त अदा करना भी कठिन काम है। मैंने इन तमाम कठिनाइयों को दूर करने के लिये हिन्दुस्तान भर के इनकम टैक्स कमिश्नरों की कान्फ्रेंस बुलाई थी, और उनके परामर्श के बाद गवर्नमेंट ने २० मई को एक विज्ञप्ति द्वारा इनकम टैक्स विभाग की नीति में जो परिवर्तन किये हैं, आज मैं उन्हीं पर प्रकाश डालना चाहता हूं।

सबसे पहली बात जो मुझे मिनिस्टर होते ही लगी वह लोगों को शिकायत थी कि मेरे महकमे वाले 'रीफंड' यानी रुपये की वापसी में बहुत देर लगाते हैं। मुझे इस शिकायत में कुछ सचाई नजर आई। इस सिलसिले में सरकार की ओर से हिदायतें जारी हो चुकी हैं कि 'रीफंड' का रुपया जल्द से जल्द अदा कर दिया जाय। जिनका रुपया वाजिब है उन्हें चाहिए कि जरूरी कागजात मुकम्मिल करके जल्द से जल्द इनकम टैक्स आफिसरों के दफ्तर में जमा कर दें। बैंक की तरह रुपये की अदायगी के सिलसिले में मैं अपने महकमें की साख को बढ़ाना चाहता हूं। आशा है कि इनकम टैक्स के कर्मचारी मेरे इस वादे का ध्यान रखेंगे।

दूसरी बात यह है कि करीब पांच लाख आमदनियां ऐसी हैं कि जिन पर आयकर का अनुमान अभी पूरा नहीं हो सका। उसके भी कई कारण हैं। एक तो यह है कि आयकर देने वालों की तादाद तो बहुत बढ़ गई और अफसरों की तादाद उस हिसाब से नहीं बढ़ी। दूसरे व्यापारी लोग अपने हिसाब को बाकायदा आडिट नहीं कराते। यदि वह चार्टर्ड एकाउंटेंट की सहायता से हिसाब का आडिट करा कर इनकम टैक्स अफसर के पास भेजें, तो उन्हें भी महकमे को भी बहुत आसानी हो जावे। फिर कुछ लोग यह समझते हैं कि इनकम टैक्स आफिसर तो आमदनी को बढ़ावेगा ही। इसलिए कम से कम आमदनी दिखाओ। बस इस तरह से किस्सा लम्बा पड़ जाता है। गवर्नमेंट ने अपने अफसरों को हिदायत कर दी है कि भले ही टैक्स में थोड़ी बहुत कमी भी हो जावे, पर छोटी छोटी रकमों को दांत से मत पकड़ो। बड़ी सद्भावना और सत्कार के साथ लोगों से व्यवहार करो। आखिर यह रुपये को ले कहां जावेंगे। जिस किसी भी काम में लगावेंगे, उसी से कुछ न कुछ दौलत पैदा होगी, उसके पैसे पैसे में हमारी पत्ती है। इसलिए जितनी तिजारत और दस्तकारी बढ़ेगी उतनी सरकार की आमदनी बढ़ेगी गवर्नमेंट हर परिवार को फलता-फूलता देखना चाहती है और भारत को हरी भरी बाग-वाड़ी बनाना चाहती है। आप सब लोग फूल के समान हैं और मेरे महकमें के अफसर मधुमक्खी के समान बड़े, कोमल और मुलायम हाथों से थोड़ा सा शहद लिया चाहते हैं। वह भी इस ढंग से कि फूल की न तो पत्ती ही बिखरे और न रंग फीका पड़े। पर यह तभी हो सकता है कि जब फूल भी अपना दिल खोल कर बात करे।

तीसरी बात बकाया की है। गवर्नमेंट ने कुछ फैसले किये हैं, किस्तों की बाबत। इसकी तफसील आप अपने इनकम टैक्स आफिसर से मालूम करें। आप इस स्कीम से लाभ उठा सकते हैं, यदि आप ३१ जुलाई १९५१ से पहले पहले अपनी लिखित इच्छा इनकम टैक्स आफिसर के पास भेज दें। मोटे तौर से स्कीम इस प्रकार है। आपकी अरजी आते ही महकमें के लोग आप से बातचीत करके किस्तों की तादाद और रुपये का फैसला इस ढंग से करेंगे कि ३१ मार्च १९५२ तक पूरी चुकती हो जाये। और इस बीच में आपके खिलाफ हर किस्म की कानूनी कारवाही रुकी रहेगी। सिवाय इसके कि रुपये की मियाद न गुजर जायें और जमानत बनी रहे। यदि आप अपनी किस्तें समय समय पर अदा करते रहे तो इनकमटैक्स कमिश्नर इस सम्बन्ध की जुरमाने की रकम को या तो कम कर देंगे या कतई छोड़ देंगे। आय कर लगाते समय इनकम टैक्स अफसरों को कभी कभी कुछ ऐसी रकमें आपकी आमदनी में शामिल करनी पड़ती हैं कि जिनका जिकर आपने अपने हिसाब में न किया हो। ऐसी रकमों का रुपया आप अपने रोकड़ पर ले सकते हैं, परन्तु इस रुपये से आपको पहले टैक्स की बकाया चुकानी होगी। बाकी आप अपने और कामों में लगा सकते हैं। इस रुपये पर दुबारा इनकाम टैक्स नहीं लगेगा और न मुकदमा चलेगा और न किसी प्रकार की पैनेल्टी लगेगी। पर यदि आपने इस आमदनी के सिलसिले में कोई [illegible] आ-करना चाहते हों, तो उसको वापस लेना होगा।

अब रह जाती है वही बात। चारपाई के नीचे जमीन में गढ़ा धन कैसे बाहर आवे। वह तो परदे-नशीन दुल्हन की तरह मुंह दिखाई लिए किसी से बात नहीं करता। धन दौलत तो चलायमान वस्तु है। लाख तालों में छिपी हुई भी छलकती है। जिन लोगों के पास ऐसा धन है वह जेलखाने, जुर्माने और पैनेल्टी के डर से उसे बाहर नहीं लाते। न जाने कितनी पूंजी इस तरह बेकार पड़ी है। इससे देश की आर्थिक और नैतिक तरक्की रुक रही है।

इस सिलसिले में मैं आपको यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हमारे फाइनेंस मिनिस्टर श्री चिन्तामणि देशमुख भी एक फरिश्ते आदमी हैं। उनकी सचाई, गम्भीरता और ईमानदारी पर आप आंख मीच कर भरोसा कर सकते हैं। उन्होंने मुझे यह यह घोषित करने का अधिकार दिया है कि यदि आप ऐसी दौलत बाहर लाना चाहते हैं तो आपको सरकार अभयदान देती है। आप पर कोई मुकदमा नहीं चलेगा। यह सब इनकम टैक्स कमिश्नरों के परामर्श से [illegible] है। [illegible] उनके पास जाकर सारी बात कबूल कर सकते हैं। जिस सुघड़ाई से और सचाई के साथ और जितना जल्द आप अपनी छिपाई आमदनी को स्वीकार करेंगे उसी अनुपात से पैनेल्टी की रकम और टैक्स की अदायगी के लिए किस्तों वगैरा का फैसला किया जायगा। आप को टैक्स की अदायगी में ज्यादा से ज्यादा सहूलियत दी जायगी।

———

जन-संघ की कुछ विशेषताएं

✱ श्री रामगोपाल विद्यालंकार

प्रतिष्ठा की लालसा नहीं

पंजाब, पेप्सू, हिमांचल और दिल्ली के कुछ जन-सेवकों ने मिलकर भारतीय जन संघ के नाम से जिस नये राजनीतिक दल का संगठन किया है, उसकी बहुत बड़ी विशेषता यह है कि इसका संगठन करने वाले प्रमुख व्यक्ति, अन्य अनेक राजनीतिक दलों के सदस्यों की भांति नाम, सम्मान, सम्पत्ति अथवा प्रतिष्ठा के भूखे नहीं हैं। इन्होंने अपने जीवन में दीर्घकाल तक नाम अथवा यश की इच्छा किये बिना, अपने स्वतन्त्र ढंग से लोक-सेवा की है और अब भी वे उसी मार्ग पर आगे बढ़ना चाहते हैं।

यथार्थवाद

इस नये दल की दूसरी विशेषता यह है कि इसने अन्य दलों के अनुकरण में, अपने कार्यक्रम में दुनिया भर के आकर्षक आदर्शों की भरमार न करके देश के विभाजन से होने वाले अन्यायों के प्रतिकार को प्रमुख स्थान दिया है। इस दल ने, कांग्रेसी नेताओं की भांति धर्म निरपेक्षता अथवा सेक्यूलरिज्म के अमूर्त आदर्श के नाम पर मुस्लिम-परस्ती तथा हिन्दू हितों के दमन को अपना धर्म न बनाकर, स्पष्ट घोषणा की है कि वह हिन्दुओं के उचित अधिकारों की रक्षा करेगा।

सहयोग की इच्छा करे

इस दल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके संगठन कर्ताओं ने आरम्भ में ही, समान विचार और समान लक्ष्य रखने वाले अन्य व्यक्तियों और संगठनों के साथ सहयोगपूर्वक कार्य करने के महत्व को भली भांति समझ लिया है, और वे इस प्रयत्न में लग गये हैं कि हिन्दुत्व-निष्ठ विचार रखने वाले लोगों के साथ मिलकर आगे बढ़ने का मार्ग तलाश किया जाय। यह मार्ग आदर्श की दृष्टि से तो उचित है ही, व्यवहार की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। समाजवादी नेता जयप्रकाशनारायण ने इस महत्व को अब जाकर समझा है। उन्होंने लखनऊ में कहा है कि कांग्रेस-विरोधी सब दलों का यत्न करना चाहिए कि आगामी चुनावों में एक ही स्थान पर बहुमुखी संघर्ष न हो। व्यवहार में देखा गया है कि बहुमुखी संघर्ष होने पर प्रायः पदारूढ़ दल जीत जाता है, क्योंकि उसकी शक्ति अलग-अलग प्रत्येक दल से तो बहुधा अधिक होती ही है, विभिन्न दलों के प्रयत्न एक दूसरे से कट जाने के बाद, मैदान उसके ही हाथ में रह जाता है।

भारतीय जन संघ के नेताओं ने बहुमुखी संघर्ष की बुराइयों को पहले से ही अनुभव कर लिया है और वे अपने समान विचार तथा लक्ष्य रखने वाली सब शक्तियों को एकत्र करने का यत्न कर रहे हैं और क्योंकि इन नेताओं का अपना कोई वैयक्तिक स्वार्थ नहीं है, इसलिए आशा है कि वे अपने इस प्रयत्न में सफल भी हो सकेंगे।

गृहकलह नहीं होगा

एक से विचार रखने वाले परन्तु परस्पर विरोधी व्यक्तियों और दलों को एकत्र करने का जितना यत्न अब तक कांग्रेस दल में हुआ है, उतना अन्य किसी दल में नहीं हुआ। परन्तु वहां जितना यह यत्न किया गया उतनी ही असफलता हुई। उसका प्रधान कारण यह है कि कांग्रेस की आपसी फूट का आधार कोई आदर्श, लक्ष्य अथवा विचार न होकर, विविध व्यक्तियों की अपनी-अपनी स्वार्थमयी इच्छाओं का संघर्ष है। कांग्रेसजनों पर आजकल हिन्दी की "तू भी रानी मैं भी रानी, कौन भरेगा घर का पानी" कहावत चरितार्थ हो रही है। जहां इस कहावत के विपरीत, एक-से आदर्श और लक्ष्य को, सहयोग पूर्वक पूरा करने की भावना रहेगी वहां कांग्रेस-गृह-कलह कार्य की सिद्धि में बाधक नहीं बनने पावेगा। भारतीय जन संघ आरंभ से इस नीति पर चलने का यत्न कर रहा है, इसलिए आशा रखनी चाहिये कि वह अपने कार्य-क्षेत्र में शीघ्र ही लोकप्रिय हो सकेगा और सफलता प्राप्त कर सकेगा।

——

पंजाब के हिन्दू संयुक्त हो गये

इस संघ को जिस सम्मेलन में जन्म दिया गया, वह भी एक दृष्टि से असाधारण महत्व रखता था। एक प्रत्यक्षदर्शी संवाददाता के शब्दों में—

सम्मेलन की सर्वाधिक सफलता इसमें है कि प्रसिद्ध जाट नेता स्व० छोटूराम के राजनैतिक उत्तराधिकारी चौधरी श्रीचन्द्र के साथ हरियाना के बहुसंख्यक जाट इस सम्मेलन में भाग लेने आये। हिमांचल प्रदेश, देहली, पेप्सू तथा पंजाब के अन्य भागों से भी विभिन्न कस्बों के प्रसिद्ध व्यापारी, वकील, डाक्टर आदि भी एकत्रित हुए।

ग्रामों तथा नगरों के प्रतिनिधियों का एक ही मंच पर एकत्रित होना पंजाब के इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना है, क्योंकि विगत २० वर्षों से ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने, जिनको पंजाब के कुछ स्वार्थी नेताओं का सहयोग भी प्राप्त था, फूट भेद नीति से समस्त पंजाब (विशेषतः हिन्दू पंजाब) को नागरिक और ग्रामीण इन दो परस्पर विरोधी गुटों में बांट दिया था। समाज के इन दोनों महत्वपूर्ण वर्गों के बीच खड़ी की गई मिथ्याभिमान और संकीर्णता की इस दीवार के घातक परिणामों का फल समस्त पंजाब को, मुख्यतः हिन्दुओं को भोगना पड़ा। इसलिए जब जाट नेता चौधरी श्रीचन्द्र ने अपने साथ एक ही मंच पर महाशय कृष्ण को देखा, तो वे अपने उल्लास प्रदर्शन के लोभ का संवरण नहीं कर सके और प्रसन्नता से खिलखिला कर कह उठे "यह पंजाब का सौभाग्य है कि मैं अपने साथ महाशय कृष्ण को भी बैठा पा रहा हूं।"

सम्मेलन में सभी प्रतिनिधियों ने अनुभव किया कि पंजाब को भारत के समृद्धिशाली अंग के रूप में जीवित रखने के लिए पुरानी परम्पराओं को निर्मूल कर नई व्यवस्था निर्माण करना आवश्यक है। यह तभी सम्भव है, जब सभी कंधे से कन्धा मिला कर एक साथ कार्य करें।

संघ को वर्तमान समय में प्रचलित दक्षिण पक्ष तथा वामपक्ष आदि पक्षों में विभाजित नहीं किया जा सकता। इसमें दोनों पक्षों का सम्यक् समन्वय है—

"देश के सम्मुख उपस्थित समस्याओं में भोजन, वस्त्र तथा आवास की समस्याएं मुख्य हैं। इनके हल के लिए संघ किसी 'वाद' से बंधा हुआ नहीं है। जनता को भोजन और वस्त्र देने के लिए संघ कठोर से कठोर कदम उठाने में संकोच नहीं करेगा। इन समस्याओं को सर्वोत्तम ढंग से सुलझाना संघ के कार्यक्रम का एक विशेष अंग है।

——

हिन्दी में सबसे अधिक कहानी लेखक

हाल में ही अखिल विश्व कहानी प्रतियोगिता के सम्बन्ध में भारत की विभिन्न भाषाओं की कहानी प्रतियोगिता की हुई थी, जिन का आयोजन विभिन्न भाषाओं पत्रों ने किया था। उनके जो फल घोषित किए गये हैं, उनके अनुसार हिन्दी को प्रतियोगिता में सबसे अधिक २६०० कहानियां आईं। दूसरा स्थान तामील भाषा का रहा, जिसकी १०८४ कहानियां प्रतियोगिता के लिए आईं। अन्य भाषाओं की संख्या इस प्रकार रही—गुजराती २८२, उड़िया १८०, मराठी १९९, बंगला ८२८, कन्नड़ा १२०, तेलगू १२०, उर्दू १२० । इस प्रकार संख्या की दृष्टि से हिन्दी का स्थान सर्व परि रहा।

देश प्रेम हम भी करते थे

अंग्रेजों ने बताया देश प्रेम और मातृ भूमि के प्रति श्रद्धा का भाव हमारे अन्दर नहीं था। हम भी मान गये कि हमने अंग्रेजों से देश प्रेम सीखा। परन्तु प्रातः काल में भूमि को पदस्पर्श करने के पूर्व प्रणाम करना, स्नान करते समय भारत की प्रत्येक नदी का अति श्रद्धा-पूर्वक स्मरण करना, मातृ-भूमि के एक-एक कण को अत्यन्त आदरणीय और पूज्य मानना अति प्राचीन काल से चला आ रहा है। इसीलिए हमारी यह धारणा बहुत पूर्व से चली आ रही है कि—

दुर्लभं भारते जन्म,
मानुष्यं तु सुदुर्लभम् ॥

इस समाज में जन्म ग्रहण करने आज हम इतना पवित्र मानते आये हैं। मोक्ष-प्राप्ति के लिए भी इसी भूमी में जन्म लेना आवश्यक है-ऐसी एक अत्यन्त स्वाभिमानपूर्ण धारणा है। एक बार अपने एक परिचित साधु-महाराज से मैंने पूछा कि, मैक्समूलर आपवहार आदि वेद और अन्य हिन्दु धर्म ग्रन्थों के प्रकाण्ड पण्डितों का मोक्ष होगा या नहीं? तो उन्होंने उत्तर दिया कि मोक्ष-प्राप्ति के लिए उन्हें हिन्दु समाज में ही जन्म ग्रहण कर आ पड़ेगा। म्लेच्छ शरीर में मोक्ष पाना सम्भव नहीं। अपने समाज के प्रति कितना स्वाभिमान! ससार भर के समस्त पवित्र का एकमात्र स्थान यह हमारी मातृभूमी ही है, इस प्रकार का भाव अति प्राचीन काल से चला आ रहा है।

— गुरुजी

●

विदेशों में हिन्दी की शिक्षा

भारत से बाहर विदेशों के अनेक विश्वविद्यालयों में भी हिन्दी की शिक्षा दी जाने लगी है। इन विश्वविद्यालयों में हिन्दी के प्रोफेसर नियुक्त किये गये हैं जिन में कुछ भारतीय और शेष उन्हीं देशों के निवासी हैं। निम्न विद्यालयों में इस समय हिन्दी की शिक्षा दी जा रही है।

१. लन्दन विश्वविद्यालय ब्रिटेन २. आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, ब्रिटेन ३. लेनिनग्राड विश्वविद्यालय रूस ४. पेरिस विश्वविद्यालय फ्रांस ५. जकार्ता विश्व-विद्यालय, इन्डोनेशिया ६. पेकिंग विश्व-विद्यालय चीन ७. टोकियो विश्वविद्यालय जापान ८. काठमांडू विश्वविद्यालय नेपाल, ९. ल्हासा विश्वविद्यालय, तिब्बत १०. काबुल विश्वविद्यालय अफगानिस्तान ११ रंगून विश्वविद्यालय, बर्मा।

●

विज्ञान की विजय

आज एटम के विस्फोट और शृंखला-बद्ध-क्रिया के ज्ञान ने मानव को एक नयी परिस्थिति के सम्मुख उपस्थित कर दिया है।

आज हमें विज्ञान ने बता दिया है कि पृथ्वी का एक कण दूसरे कण को आकर्षित करता है।

आज हम यह भी जान गये हैं कि परमाणु के विभिन्न कण, शक्ति और समय के गुणनफल हैं। और एक मूलतत्व दूसरे मूलतत्व में परिवर्तित हो सकता है।

आज ब्रह्मांड का विस्तार जितना पहले हम मानते थे, उससे अधिक मान रहे हैं। आज हम जान गये हैं कि आकाश गंगा जैसे करोड़ों आकाश द्वीप ब्रह्मांड में पाये जाते हैं और कुछ चक्राकार नेबुलों में नक्षत्र-निर्माण की क्रिया अब भी जारी है।

किन्तु, जैसे जैसे हमारा भौतिक ज्ञान बढ़ता जा रहा है वैसे वैसे रहस्यों की संख्या बढ़ती जा रही है।

परमाणु का ज्ञान तो हमें हो गया, किन्तु उसके रचयिता कणों की गति और उनके स्वरूप और गुणों का ज्ञान हमें नहीं हुआ। और यह गुण क्यों है, परमाणु के कणों में आकर्षण शक्ति क्यों है?

इस प्रश्नों का उत्तर वेदान्त ही देता है। इस 'माया' के परदे में निहित वास्तविकता का स्वरूप वेदान्त ही बतलाता है।

सृष्टिक्रम की व्याख्या में प्रकृति-... विज्ञान और ब्रह्म ... वेदान्त के मन्तव्यों में दो मुख्य मतभेद थे। पहला यह कि विज्ञान अनेक भौतिक पदार्थ और उन पदार्थों की अनेक संक्रमणहीन शक्तियों के नाना स्वरूप मानता था। वेदान्त ने इस नानात्व को केवल प्रतीतिक कहा चेतन-तत्व से अभेद की स्थापना की। आज विज्ञान भी मान गया है कि पदार्थ और चेतन-तत्व एक ही सत्ता के दो रूप हैं। दोनों ही एक दूसरे में परिणत हो सकती है। यह वेदान्त की पहली जीत और भौतिक विज्ञान की पहली हार है।

दूसरा मतभेद था सृष्टिक्रम के आदि तत्व के सम्बन्ध में। विज्ञान अचेतन को सृष्टि का आदि तत्व मानता है, और वेदान्त चेतन को सृष्टि का आदि तत्व मानता है। भौतिक विज्ञान प्रकृति कारण वाद का पोषक है, वेदान्त ब्रह्म कारण वाद का प्रवर्तक। वेदान्त के अनुसार सृष्टि ब्रह्म-प्रसुत है। नये वैज्ञानिक भी अब वेदान्त की इस स्थापना को मान रहे हैं।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्सटाइन ने स्वीकार किया है।

'भौतिक विज्ञान हमें आदि तत्व का पता नहीं बता सका। वह तत्व सूक्ष्म अणु परमाणु या उससे भी सूक्ष्मतम वस्तुओं विद्युत्कणों (इलेक्ट्रोन) में भी नहीं है। हम इतना ही कह सकते हैं कि दिशा-काल और अनन्त-शक्ति के अन्तर्गत भिन्न भिन्न सम्बन्धों से सृष्टि उसकी चेतनता बनी है और उसका अंत दिशा काल और अनन्त शक्ति के सम्बन्धों के टूटने पर एक महान् अनन्त और निरपेक्ष सत्य में हो जाता है।

यह अनन्त और निरपेक्ष सत्य ही ब्रह्म है। सृष्टि-विकास-क्रम की व्याख्या में जिन वैज्ञानिकों को कुछ सफलता मिली है उनमें एल्बर्ट आइन्स्टाइन का स्थान सबसे प्रथम है।

— —

सबसे बड़ा अणु गुप्तचर

अमेरिका की अणु शक्ति-समिति के अनुसार अणु वैज्ञानिक डा. क्लोस फास इतिहास का सबसे अधिक हानिकारक गुप्तचर था। स्मरण रहे जर्मनी में पैदा हुये डा. फास को जो बाद में ब्रिटेन के नागरिक ... अणु-शक्ति सम्बन्धी भेद रूस को देने के अपराध में १४ वर्ष के कठोर कारावास का दंड दिया गया था। बाद में इसे ब्रिटिश नागरिकता से भी वंचित कर दिया गया था।

अणु-शक्ति समिति द्वारा प्रकाशित "अणु सम्बन्धी गुप्तचर गतिविधि" नामक पुस्तिका में कहा गया है कि डा. फास ने इतिहास में सबसे भयंकर गुप्तचरी की है। डा. फास प्रोफेसर ब्रुनो पोन्टकोर्वो, डा. एलान नन में और श्री डविड ग्रीन ग्लास के संयुक्त कार्यों से रूस का अणु-शक्ति सम्बन्धी कार्यक्रम १८ महीनों आगे हो गया है।

प्रो. पोन्टेकोर्वो ब्रिटेन के एक अणु-सम्बन्धी रसायन शाला में काम करते थे। आपका जन्म इटली में हुआ था। गत पतझड़ में आप अपने परिवार के साथ यूरोप की यात्रा के लिए यूरोप गये थे वहां से वह फिर वापिस नहीं लौटे।

ब्रिटिश वैज्ञानिक डा. नालन मय को सन् ४९ में कनाडा में गुप्तचरी के मामलों में १० वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी गई थी।

२९ वर्षीय सेना के भूतपूर्व सार्जेन्ट डेविड ग्रीन ग्लास ने न्यू मैक्सिको लोस अलामोस में अणुबम के कारखानों में काम किया था। श्री ग्रीन ग्लास ने यह स्वीकार किया था कि उन्होंने अणु सम्बन्धी गुप्त बातें रूस को दी हैं। श्री. ग्लास को १५ वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी गई।

आज प्रकाशित पुस्तिका में कहा गया है कि अगर युद्ध प्रारम्भ हुआ तो रूस द्वारा पश्चिम शक्तियों के अणु आक्रमण का सामना कर सकने की सामर्थ्य होने की सभी जिम्मेदारी इन चार महान गुप्तचरों पर होगी। प्रे. ट्र.

—

भारत में औद्योगिक विकास की समस्या

[श्री अशोक बी. ए.]

आज के औद्योगिक युग में किसी भी देश के आर्थिक निर्माण में वहां के उद्योग धन्धों का महत्वपूर्ण भाग होता है। अपने उद्योग धन्धों के बल पर ही इंगलैंड यूरोप में, जापान एशिया में सर्वाधिक महत्वपूर्ण राष्ट्र बन गये थे और भारत तथा चीन पीछे रह गये। एक बड़ी हानि, जो उद्योगों के न होने से होती है, यह है—उद्योगों के कम होने से देश की आय कम होती है, आय कम होने से पूंजी कम होती है। पूंजी कम होने से न तो देश के उद्योग धन्धे उन्नति कर सकते हैं न कृषि तथा अन्य वस्तु और देश पिछड़ा हुआ रह जाता है। पर जो देश पहले से उन्नत हैं, वहां की जनता की आय अधिक होती है और इसलिए पूंजी तथा उद्योग धंधे भी ज्यादा बढ़ते हैं। इसलिए प्रायः सब पिछड़े हुए देश विदेशी पूंजी की सहायता से अपने उद्योग धन्धे उन्नत करना चाहते हैं। भारत में आज जो औद्योगिक उन्नति शीघ्रतापूर्वक नहीं हो रही, उसका भी कारण यही है कि हमें स्वदेशी अथवा विदेशी पूंजी प्राप्त नहीं हो रही।

उत्पादन की कमी

१९४७ के पश्चात प्रायः सब उन्नत राष्ट्रों का उत्पादन बढ़ रहा है, पर भारत में वहीं का वहीं स्थिर है। यदि हम १९३७ ३८ का उत्पादन १०० मान लें तो विभिन्न राष्ट्रों का उत्पादन १९४७ और १९४९ में निम्न था—

देश	१९४७	१९४९
बेलजियम	८१	९९
डेनमार्क	९०	९७
फ्रांस	८४	१०२
प० जर्मनी	३९	७२
इंगलैंड	१०६	११८

सं० रा० अमेरिका में उत्पादन यदि हम १९३९ का १०० मान लें, तो १९३९-४० में वह था १२५ और १९५० में १९५। यद्यपि भारत में कुल उत्पादन के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, फिर भी १९४४ ४५ के पश्चात् यहां प्रायः प्रत्येक वस्तु का उत्पादन घटा ही है, बढ़ा नहीं। टाटा आयरन स्टील कम्पनी की एक रिपोर्ट के अनुसार यदि १९३९-४० में उन्होंने कुल २४·९१ टन स्टील तैयार किया, तो १९४९-५० में केवल १७·९१ टन, यद्यपि यह पिछले वर्ष से अधिक है, जब कि उत्पादन ११ ३ टन ह. ~ा। यही हाल अन्य उद्योगों तथा कपड़ा ~िका है। यहां पर ध्यान देने की बात यह है कि जहां अन्य स्थानों पर युद्ध काल में उत्पादन कम रहा है उसके बाद बढ़ा है, पर भारत में इसका हाल ठीक इसका उल्टा रहा है। युद्धकाल में, (१९४४-४५) हमारा उत्पादन अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया था। पर उसके बाद घटता ही गया। हमें इसका कारण ढूंढना ही चाहिये।

कारण

इस सम्बन्ध में हमें कई बातों पर प्रकाश डालना होगा। भारत के दो बड़े उद्योग हैं, जूट एवं वस्त्र। यदि हम १९३९ का उत्पादन १०० मानें, तो १९४१ ४२ में जूट का उत्पादन भी ११२ ३ था और १९४९ ५० में ८१ ५। इसी प्रकार वस्त्र का उत्पादन १९४३-४४ में था १३८७ तथा १९४९ ५० में ९८ ३। पर इस कमी का मुख्य कारण है कच्चे माल की कमी। पाकिस्तान के मुद्रा हठ के कारण हमें कपास तथा जूट का मिलना बन्द हो गया, नहीं तो उत्पादन काफी अधिक होता।

कम उत्पादन का एक अन्य कारण यह बताया जाता है कि संरक्षण प्राप्त होने के कारण और विदेशों से मुकाबला न होने के कारण हमारे उद्योगपति उत्पादन की ओर कोई ध्यान नहीं देते। पर वास्तविकता यह नहीं है। हमारा वस्त्र, सीमेंट, जूट, चीनी इत्यादि संसार भर में सबसे सस्ते । तब हमें और कोई कारण ढूंढना चाहिये।

हमारे उद्योग धन्धे आज छोटे परिमाण पर चल रहे हैं। हमारे सबसे बड़े उद्योग टाटा स्टील कम्पनी की कुल बिक्री १९४९-५० में केवल २६ ४८ करोड़ रुपये थी। इस कारण बड़ी मात्रा में तैयार होने के कारण जो लाभ अन्य देश उठाते हैं, वह हमें प्राप्त नहीं होता।

आज हमारे सामने वास्तविक समस्या अधिक कीमतों की नहीं, बल्कि कम उत्पादन की है और क्योंकि हमारा उत्पादन कम है, इसलिये बेकारी भी अधिक है और राष्ट्रीय आय भी कम, सिर्फ २२५ रु० प्रति व्यक्ति वार्षिक।

असली कारण

अब देखना यह है कि हमारा उत्पादन कम क्यों है? यद्यपि और उद्योगों के सम्बन्ध में तो पूर्ण आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, पर कोयला, फौलाद, सीमेंट और कपास के सम्बन्ध में सं० रा० संघ ने कई राष्ट्रों के सम्बन्ध में आंकड़े प्रस्तुत किये हैं। यदि हम भारत के आंकड़ों से ब्रिटेन, स० राष्ट्र अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी तथा जापान आदि अन्य उन्नत राष्ट्रों के आंकड़ों की तुलना करें तो इन ~~ की राष्ट्रीय स्थिति का वास्तविक ज्ञान हो सकता है। इन ~ पता चलता है कि हमारा उत्पाद~ राष्ट्रों में से किसी राष्ट्र से अधिक नहीं ~ यद्यपि भारत का सबसे बड़ा उद्योग उद्योग है, पर वह सं० रा० अमेरिका से केवल आधा ही है। हम स० राष्ट्र अमेरिका का सिर्फ १५ वां भाग ही कोयला निकालते हैं और ब्रिटेन का छठा भाग। और तो और, हम जापान से भी कम कोयला निकालते हैं। यही हाल कोयले, फौलाद और सीमेंट का भी है। यद्यपि हमारा नम्बर संसार के औद्योगिक राष्ट्रों में आठवां है, पर यह हमारे लिए कोई गर्व की वस्तु नहीं, क्योंकि पहले और आठवें में काफी बड़ा अन्तर है।

निराशा नहीं

पर हमारी आर्थिक स्थिति का यह चित्र इतना भयावना नहीं है जितना कि प्रतीत होता है। पूर्व में हमारा प्रतिद्वन्द्वी केवल जापान ही है। जापान तथा चीन को कोयले तथा लोहे के बारे में छोड़ कर भारत समस्त एशिया तथा पूर्व में सब से बड़ा औद्योगिक राष्ट्र है। पिछले १०-१२ वर्षों में हमारे यहां अधिक बिजली पैदा होने लगी है। १९३८ में पाकिस्तान समेत हमारा कुल विद्युत् उत्पादन था २५३०० लाख किलोवाट तथा १९४९ के पहले दस महीनों में पाकिस्तान को छोड़ कर हमारा कुल उत्पादन था ४६२०० लाख किलोवाट। इस प्रकार हमने चीन को पीछे छोड़ दिया तथा हमारा उत्पादन लंका, पाकिस्तान, कोरिया, फीलीपाइन्स, बर्मा और मलाया के कुल उत्पादन से भी अधिक है। पर जापान का साथ अभी हम नहीं कर पाये।

इस समय हमारी दशा ठीक वैसी ही है, जैसे १०० वर्ष पूर्व योरोपीय राष्ट्रों की थी। पर इसका यह मतलब नहीं कि आगे बढ़ने में हमें अभी १०० वर्ष और लगेंगे। आज के साधन सम्पन्न युग में यह काम बहुत जल्दी ही पूरा हो सकता है। यदि आवश्यकता है तो केवल काम में लग जाने की।

दो सत्य

अब देखना यह है कि पश्चिमी देशों ने किस प्रकार इतनी उन्नति कर ली और हम पीछे क्यों रह गये, तथा किस प्रकार उठ सकते हैं।

पहला और मुख्य कारण तो यह है कि योरोप में मशीनों का प्रयोग काफी मात्रा में किया जाता है। यदि वहां २९ ९ हार्स पावर शक्ति काम में लायी जाती है तो भारत में केवल १ २ हार्स पावर।

हमारी थोड़ी आयु (अर्थात २७ वर्ष) दूसरा कारण है। जहां विदेशों में ७० प्रतिशत जनता की आयु ४० वर्ष से अधिक होती है, भारत ~ अनुमान है~ ~ एक कारीगर का उत्पादन विदेश के एक कारीगर से (उन्हीं मशीनों पर) केवल एक चौथाई होता है। और जब कि उनकी मशीनें हम से कहीं अच्छी हैं, एक विदेशी कारीगर एक भारतीय कारीगर से प्रायः २५ गुना तक अधिक माल पैदा कर सकता है।

विचित्र चक्र

अब हम अपने सामने एक विचित्र समस्या देखते हैं। क्योंकि हमारा उत्पादन कम और सस्ता है, इसलिए यहां वेतन कम हैं, वेतन कम होने से क्रय शक्ति कम है और अतः माल की खपत कम है। और क्योंकि माल की खपत कम है, इसलिए उत्पादन कम है। मांग बढ़ाने के लिए कई लोग अधिक वेतन की मांग का समर्थन करते हैं। पर यदि वेतन अधिक हो जाएं, और उत्पादन न बढ़े तो परिणाम होता है मुद्रा प्रसार और यही भारत में हुआ है।

पिछले दस वर्षों में यद्यपि भारत का कुल उत्पादन बढ़ा है, पर प्रति व्यक्ति उत्पादन घट गया है। इसके साथ ही साथ रुपयों पैसों में मजदूरी अनुपात से अधिक बढ़ गई है। पिछले दो वर्षों में तो अमली तनख्वाहें भी बढ़ी हैं। यदि १९३९ ४० में प्रति व्यक्ति का वार्षिक वेतन २८७ ५ रुपये था तो १९४९-५० में यह १०१६ ८ रुपये था, जब कि महंगाई केवल ३ ४ गुना ही बढ़ी। दूसरे शब्दों में हमारा उत्पादन-व्यय बढ़ गया है। पर इसका यह मतलब नहीं कि लाभ कम हो गये हैं। लाभ भी बढ़ गए हैं। पर दूसरे उन्नत देशों में स्थिति इसके विपरीत है। वहां यद्यपि वेतन बढ़े हैं, पर उत्पादन उनसे भी अधिक बढ़ा है।

पूंजी की कमी

इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे औद्योगिक क्षेत्रों में पिछड़ने के कारण हैं, कम मशीनें, और सामर्थ्य व उत्साह की कमी और इनका परिणाम है प्रति व्यक्ति कम उत्पादन और इन सब का मूल कारण है पूंजी की कमी। अमेरिका में भारत की अपेक्षा प्रति व्यक्ति १० गुना अधिक पूंजी लगी हुई है। इसलिए आवश्यकता है आज पूंजी की। नई बढ़िया मशीनें अरबों करोड़ों रु० चाहती हैं। पर यह पूंजी कहां से आय? भारत की वार्षिक बचत कुल आय का केवल ४ प्रतिशत है। यदि इसमें से आधा उद्योग धन्धों पर व्यय किया जाय, तो यह केवल १२५ करोड़ रुपये वार्षिक बैठते है, जब कि हमारी आवश्यकता है १५,००० करोड़ रुपये की। हम यदि केवल अपने ऊपर निर्भर रहें तो हमारी आवश्यकता पूरी होने में १२० साल से भी अधिक समय लगेगा। ~ ~लिए ~ विदेशी पूंजी की

पुलों की कहानी

★ श्री डा० अरुणकुमार

सबसे पहले नल और नील द्वारा रामेश्वरम् सेतुबन्ध का उल्लेख इतिहास में मिलता है। वैज्ञानिक मानव ने पुलों के निर्माण में आज क्या उन्नति की है, इसका परिचय इस लेख में देखिये —.

मनुष्य ने जब अपना मार्ग बनाना सीख लिया तो उसके साथ ही उसे अपने मार्ग में आने वाली बाधाओं का भी कुछ न कुछ उपाय निकालना स्वाभाविक था। उसका मार्ग किसी नदी या नाले के किनारे आकर रुक जाता था। नदी को वह तैरकर पार करता था फिर दूर तक उसके किनारे किनारे आकर जहां पैदल उतरने योग्य जल पाता वहां से नदी को पार करता था। उसके पालतू पशुओं के लिए भी कम असुविधाजनक न था। नदी के दूसरे किनारे पर पहुंच कर फिर उसे मार्ग बनाना पड़ता था।

ऊंची-ऊंची दो चट्टानों में थोड़े से अन्तर के कारण एक से दूसरी चट्टान पर पहुंचने के लिए उसे मीलों लम्बा मार्ग तै करना पड़ता था। वह एक चट्टान पर खड़ा होकर सामने थोड़ी ही दूरी पर दूसरी चट्टान देखता था। जिस पर वह एक छोटा पत्थर हाथ से उठाकर फेंक सकता था, किन्तु बीच के खड्ड की गहराई के कारण उस पर सीधा पहुंच नहीं सकता। इस बेबसी पर उसका छटपटाना स्वाभाविक था। उसने अपने मार्ग की इस कठिनाई को दूर करना चाहा, प्रकृति ने भी उसकी सहायता की किसी झूंडे से नाले के तट का कोई लम्बा वृक्ष गिरकर दूसरे किनारे तक आ पहुंचा जिस पर से मनुष्य सरलतापूर्वक नाले के आर-पार आ जा सकता था। घने वृक्षों की लम्बी-लम्बी डालों पर होकर उसने बन्दरों को एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर जाते देखा, स्वयं भ गया और इस प्रकार उसने पुल के प्रारम्भिक नियम का ज्ञान प्रकृति से प्राप्त किया।

पहले उसने गहराई के दोनों किनारों पर लम्बी लम्बी बल्लियां वृक्ष से काट कर आर पार रखीं। किंतु यह युक्ति ऐसी गहराइयों के लिए ही काम आ सकती थी, जिनकी चौड़ाई अधिक नहीं होती थी। कुछ अधिक चौड़ाई के लिये बल्लियों या बांसों को जोड़ कर लम्बा किया और उनके नीचे टेकन लगाकर उन्हें अधिक बोझ सहने योग्य बनाया। शनै. शनै. उसने टेकन के लिए दो लकड़ियों का प्रयोग उनके एक ओर के सिरे जोड़कर और दूसरी ओर के खुले छोड़े रखकर किया। जुड़े हुए सिरे पुल की लकड़ी को सहारा देते थे और खुले हुए दोनों सिरे मनुष्य की टांगों के समान एक दूसरे से कुछ अन्तर पर पृथ्वी पर टिके रहते थे। ऐसा करने से ऊपर की बल्लियों की लचक कम हो जाती थी और इस प्रकार की टेकें लगाकर पुल को पर्याप्त लम्बा बनाया जा सकता था। इन दो टांगों वाली टेकन को उलटा कर देने से अंग्रेजी के वी (V) अक्षर का आकार बन जाता है। यही आगे [illegible]

करता जाता है। यह स्वीकार करना पड़ेगा कि इसमें आजकल के कोषोयाम (कैण्टीलीवर) का सिद्धान्त विद्यमान था। कोषोयाम का सिद्धान्त न ऊपर की लकड़ी को झुकने देता है और न नीचे वाली को उचकने। इस सिद्धान्त को 'दिवालगिरी' का सिद्धान्त भी कहते हैं। क्योंकि दिवालगिरी या छज्जों में ऊपर का बोझ सम्भालने के लिए जो लकड़ी लगाई जाती है वह भी इसी सिद्धान्त की द्योतक है।

यह तो स्पष्ट ही है कि आयताकार लगाई हुई लकड़ियों से त्रिकोण के रूप में लगाई लकड़ियां अधिक भार वहन कर सकती हैं। इसी लिए आयताकार टेकन से त्रिकोण टेकन अधिक दृढ़ पायी जाती है। त्रिकोण के ऊपर नीचे पत्तियां आड़ी रखने से 'कोषोयाम और पत्ती' (कैण्टीलीवर एण्ड गर्डर) के सिद्धान्त का आदर्श सामने आ जाता है। बीच में एक स्तम्भ खड़ा कर उसमें नीचे से इस प्रकार पत्तियां लगाने में कि वे उसके दोनों ओर समान और संतुलित रूप से निकली रहें और प्रत्येक पत्ती पर उससे कुछ बड़ी पत्ती इस प्रकार रखते चले जाने में भी कि स्तम्भ के दोनों ओर दो बाहु समान रूप से आगे बढ़ते चले जायं, कोषोयाम (कैण्टीलीवर) का ही सिद्धान्त काम करता है। चीन के कई प्राचीन काठ के पुल इसी सिद्धान्त पर बने हैं और ब्रिटेन का फोर्थ नदी पर बना पुल भी इसी सिद्धांत का आधुनिक उत्कृष्ट आदर्श है। कोषोयाम के इस सिद्धान्त में प्रमुख बात यह है कि इसमें लगे सब भाग समान रूप से भार का वहन करते हैं, इस कारण भार सब भागों पर बंट जाता है। फोर्थ के पुल में जब रेलगाड़ी एक ओर से प्रवेश करती है तब पुल के एक छोर से दूसरे छोर तक रेलगाड़ी का भार पुल के सब छोटे बड़े अंगों पर बंट जाता है।

प्राचीनकाल में जहां टेकने खड़ी करने की सुविधा नहीं होती थी वहां नदी या खड्ड के आर पार दोनों किनारों पर खड़े वृक्षों या बड़ी-बड़ी सुदृढ़ शिलाओं में मोटे मोटे रस्से और इन रस्सों में बांस या अन्य किसी लकड़ी के डंडे थोड़ी थोड़ी दूर पर या सर्वथा सटाकर बान्ध देते थे और पुल बन जाता था। पर्वतीय प्रदेशों में आज भी कई स्थानों पर इस प्रकार के पुल देखने को मिलते हैं। लोहे के रस्सों में आधुनिक बड़े बड़े पुलों [illegible] प्राचीन पुलों के [illegible]

सड़क की उन्नति के साथ साथ पुलों की निर्माण कला में भी उन्नति हुई। किन्तु कभी कभी अचानक आवश्यकता आ पड़ने पर भी कई बड़े बड़े पुलों का निर्माण हो गया है। भगवान राम को अचानक ही लंका पहुंचने के लिए सागर के कुछ भाग पर पुल बांधना पड़ा था। संसार के इतिहास इससे प्राचीन किसी पुल का उल्लेख नहीं मिलता। रामचन्द्र की सेना में वानर, आदि कई जातियों के सैनिक थे। इस सेना के नल नील नामक दो सूक्ष्म अभियन्ताओं ने सैनिकों की सहायता से उस पुल का निर्माण किया था। कहते हैं कि इस पुल के निर्माण में ऐसी शिलाओं का प्रयोग किया गया था, जो जल पर तैरती थीं।

अतीत के पृष्ठ

ईसा से ४८० वर्ष पूर्व फारस के जेर्क्सिस ने यूनान पर चढ़ाई की थी। उसके मार्ग में भी समुद्र पड़ा, उसे दरे दानियाल का जल डमरू मध्य पार करना था। नौकाओं के द्वारा पचास सहस्र सैनिकों को वाहनों और सैनिक सामग्री सहित दूसरे किनारे पर पहुंचाना कठिन था और उसमें समय भी बहुत अधिक लगता था। उसने एक किनारे से दूसरे किनारे तक एक के बाद दूसरी नौका थोड़े थोड़े अन्तर पर खड़ी कर उन पर लम्बी लम्बी बल्लियां लगवा कर और उन पर घास फूस और मिट्टी बिछवा कर एक काम चलाऊ मार्ग समुद्र के वक्षस्थल पर तैयार कर दिया, जिससे उसकी सारी सेना बड़ी सरलता से दूसरे किनारे पर आ पहुंची। भारत में इस प्रकार के पुलों का प्रचलन बहुत प्राचीन है। संस्कृत के पुरातन ग्रन्थों में ऐसे पुलों का नाम 'नौक्रम' मिलता है। सम्भव है, जेर्क्सिस को इन भारतीय पुलों का परिचय रहा हो।

दजला फरात की घाटी की सभ्यता किसी समय बहुत उन्नति पर थी। उस समय फरात नदी पर पत्थर के सौ खम्भों का एक पुल बनाया गया था। पहले फरात का प्रवाह दूसरी ओर मोड़ कर नदी पेटे में एक किनारे दूसरे किनारे तक खम्भे बनाये गए और फिर उन्हें साल और खजूर व लट्ठों से पाट दिया गया।

पुलों के निर्माण की कला में विशेष दक्षता सबसे पहिले चीनियों ने प्राप्त की थी, वहां के लकड़ी के प्राचीन पुल बड़े सुन्दर और कोषोयाम से मिलते जुलते एक निर्धारित सिद्धान्त पर बनाये जाते थे। लकड़ी के पुलों के साथ साथ पत्थर और चूने से भी पुलों का निर्माण हुआ। इसके लिए चाप (आर्च) के सिद्धान्त का आविष्कार किया गया। पेकिंग के पास सुप्रसिद्ध मार्कोपोलो नामक पुल कई शताब्दि पुराना है। इसमें ११ चाप हैं और पुल के ऊपर किनारे किनारे कई सौ सिंह मूर्तियां बनी हैं। भारत वर्ष में भी मुसलमानों के समय के कई पुल अब भी विद्यमान हैं। इनके चाप और खम्भे छोटी ईंटों या पत्थरों को चूने से जोड़ कर बनाए गये हैं। वर्षों प्रति संस्कार न होने पर भी वे ज्यों के त्यों सुदृढ़ हैं।

जावा द्वीप के आदि निवासी एक प्रकार का बांसों का पुल बनाया करते थे, जो कोषोयाम के सिद्धान्त की दृष्टि

(शेष पृष्ठ १४ पर)

कच्छ के भारतीय प्रदेश में

अक्तूबर में काश्मीर पर आक्रमण ?: सं. रा. संघ का भी सहयोग: आर्थिक सम्मेलन विफल : हमारा हिन्दुस्तान-दिवस : अकाल

पाकिस्तान में 'हमारा हिन्दुस्तान' नामक एक नया दल बना हुआ है, जिसका उद्देश्य भारतवर्ष पर अधिकार करना है। इस दल का दावा है कि हिन्दुस्तान भी मुसलमानों का है। इस दल ने ६ जून को 'हिन्दुस्तान हमारा' दिवस मनाने की घोषणा की थी। इस दिन का मतलब दुनिया का ध्यान भारत की सभ्यता में निहित खतरों की ओर खींचना था। दल ने अपने कार्यक्रम से सहानुभूति रखने वालों से यह दिन मनाने की अपील करते हुए निम्न कार्यक्रम उपस्थित किया था।

(१) लोग अपने मित्रों, सम्बन्धियों और पड़ोसियों से दल के घोषणा-पत्र पर विचार विनिमय करें और बतायें कि भारत में सभ्यता क्यों खतरे में पड़ गई है और उसे दूर करना मानवता के हित में है। (२) यह शपथ लें कि अवसर पड़ने पर अपने प्राणों की भी बाजी लगाकर पाकिस्तान की प्रादेशिक अखण्डता की, जिसमें जम्मू व काश्मीर भी शामिल हैं, रक्षा करेंगे।

भारत सरकार ने पाकिस्तान सरकार का ध्यान इस पार्टी के पक्ष में होने वाले प्रचार की ओर खींचा है और उससे अनुरोध किया है कि इस प्रकार के दल दोनों देशों के पारस्परिक सम्बन्ध के लिए अत्यन्त घातक हैं। परन्तु भारत सरकार के इस विरोध-पत्र का कोई प्रभाव पाकिस्तान पर पड़ेगा, इसमें पूर्ण सन्देह है।

× × ×

पाकिस्तान और भारत में जो अर्थ-सम्मेलन हो रहा था, वह पांच दिनों की बैठक के बाद बिना किसी समझौते के समाप्त हो गया।

भारत-पाक अर्थ-सम्मेलन

संयुक्त विज्ञप्ति में वर्तमान वार्ता की समाप्ति की घोषणा करते हुए कहा गया है कि कुछ मामलों में दोनों ही दलों को और अधिक जानकारी की आवश्यकता थी, अतः हम लोगों ने परस्पर निश्चय किया कि भविष्य में पुनः वार्ता की जाय। दोनों देशों के बीच उक्त विषय पर आगामी अगस्त में पुनः वार्ता होगी।

सम्मेलन २१ मई से आरम्भ हुआ। दोनों देशों के निम्नलिखित विषयों पर विचार करने के लिए चार उप समितियां नियुक्त की गयी थीं। विचार हुए प्रश्नों में (१) रिजर्व बैंक के नोट विभाग की विभाज्य सम्पत्ति स्थानान्तरण की व्यवस्था, (२) पाकिस्तान के स्टेट बैंक के जो रुपये रिजर्व बैंक में रखे हुये थे उनकी व्यवस्था (३) रिजर्व बैंक में जमा की हुई सिक्यूरिटियों का ब्याज पाकिस्तान के स्टेट बैंक को देने की व्यवस्था (४) रिजर्व बैंक के अजित लाभ का वितरण (५) पाकिस्तान स्थित सैनिक गोदामों का भारत को पाकिस्तान द्वारा मूल्य चुकाने की व्यवस्था। (६) विभाजन के पञ्चाट के अनुसार दोनों बंगाल, दोनों पंजाब तक दोनों देशों के भुगतान की व्यवस्था। (७) विदेशी भुगतान की व्यवस्था। (८) पाकिस्तान के भारतीय बैंकों की स्थिति का स्पष्टीकरण। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से प्रश्नों पर विचार हुआ।

पाकिस्तान एक एक प्रश्न को अलग-अलग निपटाना चाहता था, जब कि भारत एक साथ सब प्रश्नों पर निर्णय चाहता था।

× × ×

पुनः स्थापन मन्त्री श्री अजीतप्रसाद जैन ने गत सप्ताह संसद में बताया है कि पाकिस्तान ने वहां के निष्क्रान्त संपत्ति से वसूल किए गये किराये का एक भी पैसा भारत को अदा नहीं किया। पाकिस्तान सरकार के रवैये को दृष्टि में रखते हुए भारत सरकार के पास और कोई विकल्प नहीं रह जाता कि वह भारत में निष्क्रान्त सम्पत्ति का किराया इधर ही रख छोड़े। जनवरी १९४९ में कराची की अन्तर-डोमिनियन कान्फ्रेंस में दोनों डुमिनियनों के बीच हर छः मास के बाद किरायों की वसूली के स्टेटमैंटों के विनिमय का निश्चय हुआ था, लेकिन बाद में पता लगा कि पाकिस्तान ने शहरी सम्पत्ति का किराया घटा दिया और कृषि सम्बन्धी सम्पत्ति का किराया वसूल करना नहीं चाहता। कराची के कस्टोडियन ने पिछली फरवरी में ९ लाख रुपये की अदायगी की थी, लेकिन वह इस हिसाब में नहीं थी।

× × ×

काश्मीर का प्रश्न आज भी, दोनों देशों के लिए वैसा ही जटिल बना हुआ है। जैसा तीन वर्ष पूर्व था। संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा समिति में पाकिस्तानी प्रतिनिधि ने काश्मीर में शेख अब्दुल्ला द्वारा संयोजित संविधान-परिषद् के विरोध में कहा कि इस परिषद् के काश्मीर का विधान बना लेने पर फिर जनमत-ग्रहण ही सम्भव न रहेगा। यह सं० रा० संघ के कार्य में भारी बाधक है। इसे मान कर ब्रिटिश प्रतिनिधि मि० जैब ने एक प्रस्ताव पेश किया कि सुरक्षा समिति के अध्यक्ष दोनों देशों को यह पत्र लिखें कि वे कोई ऐसा काम न करें, जिससे सं० रा० विधान के काम में बाधा आय। इसका संकेत संविधान परिषद् के आयोजन से था। भारतीय प्रतिनिधि ने कहा कि संविधान परिषद् केवल विधान बनायेगी, काश्मीर के पाकिस्तान या भारत में मिलने पर अपना सम्मति भी दे सकती है, किन्तु अन्तिम निश्चय वहां जनमत-ग्रहण से ही होगा। इधर शेख अब्दुल्ला ने यह घोषणा करदी है कि वे संविधान-परिषद् की योजना को नहीं छोड़ेंगे और अपना कार्यक्रम पूर्ण करेंगे।

× × ×

काश्मीर राज्य के भविष्य का निर्णय करने के लिये आगामी अक्तूबर मास में श्रीनगर में विधान-परिषद् की स्थापना करने का निर्णय हो चुका है। बम्बई के अंग्रेजी साप्ताहिक ब्लिट्ज के अनुसार इसी अवसर पर पाकिस्तान सरकार ने तथाकथित 'आजाद काश्मीर' सरकार के साथ मिलकर शेख अब्दुल्ला की सरकार के विरुद्ध षड्यन्त्र करने तथा काश्मीर और भारत के अन्य भागों में भी व्यापक रूप से दंगे कराने की योजना पहले से ही बना ली है। इस षडयन्त्र में भारत में पहले से ही बसने वाले पंचमांगी मुसलमान तथा आंग्ल-अमेरिकन गुट द्वारा प्रभावित संयुक्त राष्ट्रीय संघ से भी पूर्ण सहयोग मिलने की आशा है।

उक्त योजनानुसार जब शेख अब्दुल्ला जैसे चोटी के नेताओं की हत्या करदी जायेगी, उस समय मुसलमानों की रक्षा के नाम पर पाकिस्तानी सेना काश्मीर में प्रवेश कर उस पर अपना अधिकार कर लेगी। संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा नियत मध्यस्थ श्री ग्रेहम, जो कि उन दिनों वहां होंगे, काश्मीर सरकार पर विधान परिषद् न बनाने के लिए दबाव डालेंगे। भारत द्वारा उक्त प्रस्ताव की अस्वीकृति

[शेष पृष्ठ १८ पर]

मैं क्या चाहता हूं—(२)

★ एक भिक्षुक

आज मैं अपनी भीख की झोली भारत सरकार के सामने फैलाये हूं।

कुछ कांग्रेसविरोधी भले ही म० गांधी को भारतीय स्वातन्त्र्य का श्रेय न दें, किन्तु मुझे विश्वास है कि भारत सरकार के कांग्रेसी नेता इस से रत्तीभर भी इन्कार नहीं करेंगे। तब आप शासक वर्ग में उनका मार्ग-प्रदर्शन क्यों नहीं स्वीकार करते? मद्यनिषेध उनका महान् स्वप्न था, जिसके लिए उनके आदेश से हजारों भारतीय युवक और युवतियां कड़कती धूप में तपने, लाठी खाने और जेल जाने से हिचकिचाये नहीं। आज रुपये का बहाना बना कर आप मद्यनिषेध नहीं कर रहे हैं। सच तो यह है कि पिछले तीन वर्षों से दिल्ली में शराब की बिक्री बढ़ रही है।

गांधी जी नैतिकता को रुपयों से अधिक महत्व देते थे। शराब की कमाई का अर्थ है जनता को अनैतिक बना कर रुपया कमाना और आप का वहिर्मुखी दृष्टिकोण इसे सहन करता है कि लोग स्वयं भूखे मर कर, अपने बालबच्चों को भूखा मार कर व अपने चरित्र को नष्ट कर शराब पीवें और आप उसकी कमाई को आन-शान में बरबाद कर दें। अपने वेतन कम कर दीजिये, छोटी बड़ी पार्टियों का आयोजन समाप्त कर दीजिये, रुपया न हो तो नये स्कूल और हस्पताल न बनाइये, किन्तु शराब की कमाई ले कर भारतीय नागरिक के चरित्र के साथ खिलवाड़ मत कीजिये।

दिवंगत गांधी का आत्मा आप के अर्थशास्त्र को सुन कर रो रहा और कल के शासक अंग्रेज मद्यनिषेध पर कांग्रेसी नेताओं के पुराने भाषण पढ़ कर हंस रहे हैं।

कहानी

पत्नी खो गई!

★ जेरोम के॰ जेरोम
अनु॰—भवानीलाल 'भारतीय'

कुछ मोटर साइकिल की सवारी में एक समस्या सदैव बनी रहती है। आगे बैठने वाले आदमी का यह सिद्धांत रहता है कि पीछे वाला कुछ नहीं करता और ठीक इसी प्रकार पीछे वाला सोचता है कि साइकिल की मुख्य संचालक शक्ति तो वही है और आगे वाला केवल झूठी प्रशंसा ही करता है। इस रहस्य का स्पष्टीकरण कभी नहीं होगा। एक तरफ तो आपकी बुद्धि कहती है कि इस प्रकार साइकिल चलाने का घोर परिश्रम कर कोई रोग मोल मत लो, ठीक उसी समय न्याय आपके दूसरे कान में कहता है—"तुम ऐसा करते ही क्यों हो? यह कोई घोड़ा गाड़ी नहीं है और पीछे बैठने वाला कोई किराया देने वाला मुसाफिर नहीं है।" इसी समय आवाज आई—"क्या हुआ? क्या पैडल छूट गये?"

हैरिस को अपने विवाहित जीवन के आरम्भिक दिनों में एक बार इसी कारण कठिनाई में पड़ना पड़ा, क्योंकि वह नहीं जानता था कि पीछे वाला आदमी क्या कर रहा है। वह अपनी पत्नी के साथ हालैंड की यात्रा कर रहा था। सड़कें पथ.[illegible] थीं और मोटर साइकिल काफी उछ.[illegible] रही थी।

"मजबूती से बैठो!" हैरिस ने बिना सिर घुमाये ही कहा।

श्रीमती हैरिस ने उसके कहने का तात्पर्य समझा—'कूद जाओ।' उनमें से यह कोई नहीं बतला सकता कि जब हैरिस ने मजबूती से बैठने के लिए कहा तो उसकी पत्नी ने कूद जाने का अर्थ कैसे निकाल लिया।

श्रीमती हैरिस अपनी बात को इस प्रकार रखती है—"यदि तुम मुझे मज बूती से बैठने के लिए कहते तो मैं कूद क्यों जाती?"

हैरिस कहते हैं—"यदि मैं यह चाहता होता कि तुम कूद जाओ तो तुमसे सावधानी से बैठने के लिए क्यों कहता?"

यद्यपि उनके व्यवहार की कड़
आ[illegible]ट [illegible] फिर भी वे आज
दिन तक इस बात पर तर्क करते हैं।

परन्तु इसका स्पष्टीकरण चाहे जो हो, इस सत्य से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि श्रीमती हैरिस साइकिल से कूद पड़ी और हैरिस इसी ख्याल से कि वह पीछे बैठी हुई है, पैडल मारता गया। ऐसा ज्ञात होता है कि पहले तो उसने सोचा कि वे केवल अपनी शक्ति के प्रदर्शन के लिए ही पहाड़ी पर चढ़ रहे हैं। उन दिनों वे दोनों नवयुवा थे और वह कभी कभी इस प्रकार किया करता था। उसे आशा थी कि वे पहाड़ी की चोटी पर पहुँच कर उतर जायेंगे और मोटर साइकिल पर असावधानी से झुक कर एक सुन्दर [illegible]

परन्तु इसके विपरीत उसने देखा कि वे पहाड़ी की चोटी को पार कर ढाल पर तेजी से उतर रहे हैं। पहले तो उसे आश्चर्य हुआ, फिर घृणा मिश्रित क्रोध हुआ और अन्त में वह भय से परास्त हो गई। वह चोटी पर पहुँची और जोर से चिल्लाई, परन्तु उसने अपना सिर मोड़ कर पीछे नहीं देखा। उसने हैरिस को डेढ़ मील जंगल में गायब होते देखा, इसके बाद वह बैठ गई और रोने लगी। उस दिन सवेरे किसी बात पर उनमें थोड़ा-सा मतभेद हो गया था, इसलिए वह सोच रही थी—शायद उसने इस मतभेद को गम्भीरता से देखा है और उसे त्याग देना चाहता है। न तो उसके पास पैसे हैं और न वह डच भाषा जानती है। कई लोग उसके पास से निकले और उसकी दशा को देख कर दु:खी हुए। उसने जो कुछ हुआ, उसे उन्हें समझाने का प्रयत्न किया। वे लोग इस परिणाम पर पहुँचे कि इसका कुछ खो गया है, परन्तु क्या खोया, यह वे नहीं जान सके। वे उसे सबसे नजदीक वाले गाँव में ले गये और उसे एक पुलिस के सिपाही के सुपुर्द कर दिया। वह उसके संकेतों से इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि किसी व्यक्ति ने उसकी बाइसिकिल चुरा ली है। उसने आस-पास के गाँवों में तार दिये और पता लगाया कि चार मील दूर एक गाँव में एक अभागा युवक एक पुराने मोडल की लेडी साइकिल पर जा रहा है। वे उसे एक गाड़ी में उसके पास लाये, परन्तु ऐसा प्रतीत हुआ कि न तो वह उस युवक को ही चाहती है और न उसकी साइकिल को ही, इसलिए उन्होंने स्वयं को परेशानी और हैरानी में डाल कर उसे जाने दिया।

इसी बीच में हैरिस बड़े मजे से अपनी यात्रा करता रहा। उसे ऐसी अनुभूति हुई मानो वह अचानक ही पहले से अधिक शक्तिशाली हो गया है। और हर प्रकार से अधिक योग्य साइकिल सवार बन गया है।

उसने श्रीमती हैरिस को अपने पीछे बैठा हुआ समझ कर कहा—"मैंने पिछले कई महीनों से इस साइकिल को इतना हलका नहीं समझा था। मेरे विचार से शायद यह हवा है, जो इस मशीन को इतना हलका बना रही है।

और उसके बाद उसने कहा कि घबराने की कोई जरूरत नहीं है। वह उसे बतलायगा कि वह कितना तेज जा सकता है। वह हैंडल पर झुक गया [illegible] से काम करने लगा।

साइकिल ने एक जीवित वस्तु की तरह सड़क पर छलांग लगाई। खेतों के मकान और गिरजे, कुत्ते और मुर्गियाँ आये और गुजर गये। भेड़ों के झुण्ड खड़े होकर उसे देखने लगे और बच्चे खुशी के मारे चिल्लाने लगे।

इस प्रकार लगभग पाँच मील तक वह प्रसन्नता से आगे बढ़ता रहा। इसके पश्चात् जैसा कि वह स्वयं कहता है, उसके मन में विचार आया कि कहीं हाल में काला जरूर है। उसे चुप्पी पर तो कोई आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि हवा तेज चल रही थी और साइकिल की खड़खड़ाहट भी काफी थी। उसे कुछ शून्यता सी प्रतीत हुई। उसने अपना हाथ पीछे फैलाया। उसे ज्ञात हुआ कि वहाँ खाली जगह के अतिरिक्त कुछ नहीं है। वह कूदा या यों कहिये गिर पड़ा और सड़क पर पीछे देखा—वह घने जंगल में सीधी और साफ पड़ी हुई थी और उस पर कोई भी जीवित प्राणी दिखाई नहीं देता था। वह फिर साइकिल पर सवार हुआ और पहाड़ी पर वापस आया। दस मिनट में वह उस स्थान पर आ गया, जहाँ से सड़क चार भिन्न-भिन्न दिशाओं में जाती थी। वहाँ वह उतर पड़ा और याद करने लगा कि वह किस सड़क से आया था।

जिस समय वह यह सोच रहा था, एक आदमी घोड़े पर चढ़ा हुआ पास से निकला। हैरिस ने उसे रोक लिया और उसे समझाया कि उसकी पत्नी खो गई है। उस आदमी के आचरण से ऐसा प्रतीत हुआ, मानो न तो उसे कोई आश्चर्य हुआ और न दु:ख ही। जिस समय वे बातें कर रहे थे, एक दूसरा किसान आया जिसे पहले व्यक्ति ने सारी बातें एक मजेदार कहानी की तरह समझाई न कि एक दुर्घटना समझ कर। दूसरे आदमी को इस बात का बड़ा आश्चर्य हुआ कि हैरिस एक छोटी-सी बात का बतंगड़ बना रहा है। उसे उन दोनों की बातों में कोई समझदारी की बात दिखाई नहीं दी। इसलिये वह उन्हें कोसते हुए अपनी साइकिल पर सवार होकर चलता बना। आधा रास्ता चलने के बाद हैरिस का एक पार्टी से सामना हुआ, जिसमें दो नवयुवती स्त्रियाँ और एक युवा पुरुष था। उसने अपनी पत्नी के बारे में पूछा। उन्होंने कहा कि उसकी पत्नी कैसी थी। वह इतना नहीं जानता [illegible] ठीक तरह से उसका [illegible] न कर सके। जो कुछ वह कह पाया वह यह था कि उसकी स्त्री एक मझोले कद की बहुत ही सुन्दर स्त्री थी। यह स्पष्ट है कि इस उत्तर से उन्हें सन्तोष नहीं हुआ, क्योंकि यह वर्णन बहुत व्यापक था और कोई भी आदमी ऐसा कह कर किसी स्त्री को अपनी पत्नी बता सकता था, जो वस्तुतः उसकी नहीं है। उन्होंने उसकी पोशाक के बारे में उससे पूछा, परन्तु वह ठीक प्रकार नहीं बता सका।

मुझे शक है कि कोई भी आदमी किसी स्त्री का साथ छोड़ने के दस मिनट बाद ही उसकी पोशाक के बारे में ठीक-ठीक बता सकता है। उसे एक नीले लाने का स्मरण हो आया। शायद एक ब्लाउज भी था। कमरबन्द का भी ध्यान आया परन्तु ब्लाउज किस तरह का था? वह हरा था, पीला या नीला? क्या उसके कालर भी था या फीते से बंधा हुआ था? क्या उसके हैट में पंख थे या फूल? और क्या हैट था भी या नहीं? उसे इस कारण कहने की हिम्मत नहीं हुई कि शायद उससे गलती हो जाय और उसे व्यर्थ ही मीलों घूमना पड़े। दोनों नवयुवतियाँ खिलखिला कर हँस पड़ीं, जिसने हैरिस को क्रोधित कर दिया। उस नवयुवक ने, जो कि इस आफत से पीछा छुड़ाना चाहता था, पास के नगर के पुलिस थाने में जाने की सलाह दी। हैरिस वहाँ गया। पुलिस ने उसे एक कागज दिया और उससे उसकी पत्नी का पूरा हुलिया लिख देने के लिए कहा और साथ ही यह भी कहा कि वह कब और कहाँ खोई? इसका पूर्ण विवरण देवे। उसे यह मालूम नहीं था कि वह कहाँ खोई? वह केवल उस गाँव का नाम बता सकता था, जहाँ से उसने अपनी यात्रा आरम्भ की थी। वह यो यह जानता था कि तब वह उसके साथ थी और उन्होंने वहाँ से साथ साथ ही प्रयाण किया था।

पुलिस भी संशयात्मक स्थिति मालूम होती थी। उन्हें तीन बातों का सन्देह था—प्रथम क्या वह वस्तुतः उसकी पत्नी थी? द्वितीय, क्या उसने वास्तव में उसे खो दिया? और तीसरे क्यों खो दिया था? जैसे तैसे एक होटल वाले की सहायता से, जो थोड़ी अंग्रेजी भी जानता था, उसने पुलिस वाले के सन्देह पर विजय पाई। उन्होंने उसकी पत्नी को ला देने का वचन दिया और संध्या को वे उसे एक बन्द गाड़ी में खर्चे के बिल सहित ले आये। उनका मिलन करुणापूर्ण नहीं था। श्रीमती हैरिस एक सफल अभिनेत्री नहीं है, इसलिए उसे अपने भावों को [illegible] रखने में बड़ी कठिनाई [illegible] है। इस पर भी वह स्पष्ट [illegible] से स्वीकार करती है कि उसने अपने भावों को छिपाने का कोई प्रयास नहीं किया।

—★—

रूस में

न्यायालय सरकार के संकेत पर चलते हैं !!!

★ श्री वाल्टर कोलार्ज

न्यायालयों पर सरकार का कोई प्रतिबन्ध न हो, इस सिद्धान्त के महत्व को मानते हुए भी जब रूस के अन्धे भक्त भारतीय कम्युनिस्ट भारत सरकार पर जनस्वातन्त्र्य के अपहरण का आरोप लगाते हैं, तब कुछ कम विस्मयजनक नहीं होता, क्योंकि रूस के न्यायालय स्वतन्त्र न्याय के मन्दिर नहीं, सरकार के राजनैतिक साधन समझे जाते हैं। यही रूस का जनतन्त्र है। रूस के न्यायालय व भारत के सुप्रीम कोर्ट का, जो बीसियों दफा सरकार के विरुद्ध निर्णय दे चुका है, भेद भी इससे कुछ स्पष्ट हो जायगा।

रूस के लौह आवरण के पीछे प्रति दिन कोई न कोई राजनैतिक मुकदमा चला करता है। प्रति-दिन लोगों को "विध्वंसक कार्रवाइयों", "देश द्रोह" इत्यादि अपराधों के लिये अदालतों में उपस्थित होना पड़ता है। कुछ मुकदमे सार्वजनिक रूप से होते हैं, कुछ गोपनीय रक्खे जाते हैं। इससे कठपुतली देशों की परिस्थिति कठोर भले ही हो पर वह कानून की व्यवस्था पर आधारित दीखती है।

सोवियट संविधान के ११२ वें अनुच्छेद के अनुसार, न्यायाधीश स्वतन्त्र होते हैं, और केवल कानून का पालन करना उनका कर्त्तव्य है। इस अनुच्छेद को भी रूस के सब कठपुतली देशों के संविधानों में स्थान दिया गया है।

बलगेरिया के संविधान के ६९ वें अनुच्छेद के अनुसार, न्यायाधीश स्वतन्त्र होते हैं वे केवल कानून के आदेश के अनुसार कार्य करते हैं। अल्बानिया के संविधान में तो यह बात और भी स्पष्ट कर दी गई है। उसमें कहा गया है कि न्यायालय प्रशासन के आदेशों के अन्तर्गत नहीं हैं। अन्य कठपुतली देशों के संविधान में भी न्यायालयों की स्वतन्त्रता सम्बन्धी ऐसी ही बातें पढ़ने को मिलती हैं।

भ्रामक आश्वासन

पर साम्यवादी व्यवहार से परिचित प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि संविधान में दिये गये ये आश्वासन बिल्कुल भ्रामक हैं। इसलिये पोस्पॉस्की जैसे प्रमुख सोवियट विधि विशेषज्ञ द्वारा न्यायाधीशों और न्यायालयों की स्वतन्त्रता जैसे शब्दों से उत्पन्न हो सकने वाले भ्रामक विचारों को दूर करने का प्रयत्न किया जाना निस्सन्देह सौभाग्य की बात है।

पोस्पॉस्की ने मॉस्को विश्वविद्यालय के पत्र में एक लेख प्रकाशित किया था, जिसमें उसने बताया था कि सोवियट न्यायालय साम्यवादी दल और सोवियट शासन की नीति का समर्थक है। इससे साम्यवादी राज्य में न्यायालयों के असली कार्य पर अच्छा प्रकाश पड़ता है और अनेक भ्रांतियां दूर हो सकती हैं।

एक ही शब्द के भिन्न अर्थ

पोस्पॉस्की के अनुसार न्यायाधीशों की स्वतन्त्रता नामक संविधानिक सिद्धान्त इस बात का उदाहरण है कि सोवियट और बुर्जुआ विधानों में एक ही शब्द के दो अत्यन्त भिन्न अर्थ हो सकते हैं। कभी-कभी तो इन शब्दों के व्यवहार से प्रकट होता है कि उनके अर्थ भिन्न ही नहीं, किन्तु बिल्कुल विपरीत भी हैं।

बुर्जुआ राज्यों में न्यायाधीशों की स्वतन्त्रता का अर्थ है राजनीति से न्यायाधीशों की स्वतन्त्रता। इससे प्रकट होता है कि बुर्जुआ राज्यों में न्यायाधीश न्याय की देवी के पक्षपातहीन अनुचर हैं। पोस्पॉस्की ने इस विचार को अपने उपहास और व्यंग का विषय बनाया है और कहा है कि, जहां तक सोवियट रूस का सम्बन्ध है, (और यह बात कठपुतली देशों पर भी लागू है) न्यायालय राजनैतिक साधन होते हैं। विधि और साम्यवादी दल एक हो बात।

न्याय राजनैतिक आन्दोलन के अनुसार

पोस्पॉस्की ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि न्यायाधीशों को निर्देश केवल कानून से ही नहीं, न्याय-मन्त्रालय से भी प्राप्त करना चाहिए। न्याय-मन्त्रालय समय समय पर न्यायालयों और न्यायाधीशों को इस आशय के आदेश दिया करता है कि किस प्रकार के अपराधों का कठोरता के साथ दमन किया जाना चाहिए। बार बार न्याय मन्त्रालय उन्हें बताया करता है कि उनके कर्त्तव्य साम्यवादी दल के और सोवियट राज्य के आधारभूत लक्ष्यों की पूर्ति तक सीमित नहीं हैं, पर प्रत्येक ... व्यक्ति के राजनैतिक और आर्थिक आन्दोलन का समर्थन करना भी उनका कर्त्तव्य है। वास्तव में कई दृष्टियों से न्यायालयों और न्यायाधीशों के कार्य किसी अर्थ मन्त्रालय की स्थानीय शाखाओं के कर्त्तव्यों से मिलते जुलते हैं।

एक उदाहरण

उदाहरणार्थ, यह सब जानते हैं कि सोवियट यूनियन में लकड़ी का अभाव है और इससे सम्बन्धित उद्योगों में जितनी भी योजना बनाई हैं वे बार बार अपूर्ण रही हैं। इसीलिये लकड़ी सम्बन्धी इस योजना की पूर्ति में सहायता देना न्यायालयों और न्यायाधीशों का कर्तव्य हो जाता है। पोस्पॉस्की द्वारा उद्घाटित न्याय-मन्त्रालय के एक पत्र में न्यायालयों को लकड़ी उद्योग के कर्मचारियों द्वारा काम की उपेक्षा के मामलों को प्राथमिकता देने का आदेश है। उसमें कहा गया है कि ऐसे मामले पर पांच दिनों के अन्दर विचार हो जाना चाहिये। पर यह सम्भव है कि सोवियट शासन में भी कोई न्यायालय या न्यायाधीश कुछ हद तक राजनैतिक स्वातन्त्र्य बनाये रखने का प्रयत्न करें। अतएव ऐसी अवस्था के लिए साम्यवादी-राज्य में बचाव की सारी आवश्यक व्यवस्था कर ली गई है।

प्राक्यूरेटर

साम्यवादी-राज्य न्यायालयों और न्यायाधीशों पर चौकीदारी करने के लिए "प्राक्यूरेटरों" से काम लेता है वे लोग एक शक्तिशाली 'प्राक्यूरेटर जनरल' के अन्तर्गत सारे देश में फैले हुए हैं, "अवैधानिक और पर्याप्त प्रमाणहीन "दंडादेशों" का विरोध करने का अधिकार रखते हैं।

संसार के अन्य सभी देशों में "अवैधानिक और पर्याप्त प्रमाणहीन दंडादेश स्पष्टतया और प्रत्यक्षतया कानून का उल्लंघन माने जायंगे, पर रूस में नहीं।

अभियोक्ता और न्यायाधीशों में अन्तर नहीं

पोस्पॉस्की ने बताया है कि दंडादेश उस समय भी अवैधानिक हो सकता है, जब कोई न्यायालय किसी कानून का राजनीतिक महत्व समझने में असमर्थ हो या कोई न्यायाधीश किसी भी अपराध के राजनीतिक महत्व को ठीक समझ न पाया हो। हां राजनीतिक दृष्टि से न्यायाधीशों के कार्यों की जांच करना सोवियट के प्राक्यूरेटरों और जन अभियोक्ताओं (पब्लिक प्रोसिक्यूटरों) के कर्तव्यों का एक अंगमात्र है। सोवियट यूनियन की न्याय पद्धति नामक अपनी पुस्तक में भी विशिंस्की ने कहा है कि अभियोक्ता (प्रासीक्यूटर) सोवियट शासन के हित में लड़ने और प्रचार करने वाला भी होता है। किन्तु यह परिभाषा तो स्वयं न्यायाधीशों पर भी लागू होती है। साम्यवादी राज्य में कानून अभियोक्ता (पब्लिक प्रासीक्यूटर) और न्यायाधीशों के मध्य में तत्व की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं होता।

———

पुलों की कहानी

[पृष्ठ १० का शेष]

से फोर्थ नदी के सुप्रसिद्ध पुल से किसी प्रकार भी कम नहीं होता था।

संसार के प्राय. सभी देशों में प्राचीन समय से ही किसी न किसी प्रकार के पुल बनते रहे हैं। किन्तु इस कला की उन्नति का प्रमुख श्रेय रोमन सम्राटों को

इनसे पूर्व इस दिशा में किसी ने इतना प्रयत्न नहीं किया। जिस प्रकार उन्होंने सड़कों को पक्का और सुन्दर बनाया उसी प्रकार ऐसी सड़कों के लिए वैसे ही पुलों के निर्माण की ओर भी उनका विशेष ध्यान देना स्वाभाविक था। इनके बनवाए पुलों के बड़े बड़े सुन्दर नमूने आज भी देखने को मिलते हैं। इटली में रोम नगर के पास टाइबर नदी पर चापों का बना रोमन कालीन एक पुल है। इसे बने २००० वर्ष से भी अधिक समय व्यतीत हो चुका है। किन्तु वह आज भी ज्यों का त्यों सुदृढ़ और सुन्दर बना है। स्पेन में टैगस नदी पर रोमन युग का एक दूसरा पुल है। इसकी विलक्षणता यह है कि इसमें चिनाई का काम किंचित्मात्र भी नहीं किया गया है। एक सुदृढ़ चट्टान को काट काट कर समूचा चाप पत्थर की एक मूर्ति के समान बना लिया गया है।

चापों से बना पुल बहुत सुदृढ़ होता है। किन्तु चूने का यह बना चाप अधिक लम्बा नहीं बनाया जा सकता। ऐसे चापों में सबसे बड़ा चाप लक्सेम्बर्ग के पुल का है। इस चाप की लम्बाई २७७ पाद ६ अंगुल है। इसमें चूना और वज्रलेप (सीमेंट) सब मिला कर २६ सहस्र घन गज मसाला लगा था।

पुलों के खम्भे सुदृढ़ बनाने के लिए रोमन युग में लकड़ी के लट्ठे नदी की तली में धंसाए जाते थे और उनकी सुरक्षा के लिए उनके चारों ओर लवा (कक्राट) और चूने की दीवार बना दी जाती थी। किन्तु हमारे यहां "कुए गलाने" का प्रचलन बहुत प्राचीन है। कुंए के गोले को तली की मिट्टी खोद-खोद कर तब तक निरन्तर गलाते जाते हैं जब तक वह मोटी रेत और मीठे जल के स्रोत तक पहुँचता है। जल में पुल का खम्भा खड़ा करने के लिए भी अब इसी रीति का प्रयोग किया जाता है। लोहे के बड़े बड़े ढोल जिन्हें अंग्रेजी में "कैसन" कहते हैं नदी की तली में डाले जाते हैं। इस ढोल के निचले किनारे धार वाले होते हैं। जब यह नदी की तली पर ठीक ठीक बैठा जाता है और इसका निचला भाग कीचड़ होने के कारण पृथ्वी में धंस जाता है तब इसका पानी लोहे के नलों द्वारा यन्त्रों की सहायता से बाहर निकाल दिया जाता है। इस ढोल को तब तक पृथ्वी में धंसाते जाते हैं जब तक वह कीचड़, मिट्टी और रेत को पार करता हुआ किसी सुदृढ़ चट्टान पर न पहुँच जाय। कीचड़ और मिट्टी आदि शनैः शनैः यन्त्रों द्वारा बाहर निकाल दी जाती है और सुदृढ़ चट्टान पर नल के खम्भे की नींव रखी जाती है। इस ढोल में काम करने वाले राज और श्रमिकों के लिए शुद्ध वायु नलों द्वारा ढोलों की तली तक जाती रहती है फिर भी वायु के अधिक दबाव के कारण वे वहां बहुत देरी तक कार्य नहीं कर सकते। इस ढोल के भीतर ही भीतर खम्भा ऊपर तक बना लिया जाता है। इन सुदृढ़ खम्भों पर कोन्क्रीम की रीति से बलाघात की चिन्नियां बैठा कर पुल का निर्माण कर लिया जाता है। भारत में ऐसे पुलों की संख्या अधिक है, क्योंकि यहां की नदियों में ८ मास जल बहुत कम रहता है किन्तु बरसात में बाढ़ के कारण नदियों का पाट बहुत चौड़ा हो जाता है, इस कारण इन पर लम्बे-लम्बे पुल बनाने की आवश्यकता होती है। इन पुलों के अधिकतर खम्भे बनाने के लिए सूखी भूमि मिल जाती है। जल में बहुत थोड़े ही खम्भे बनाने पड़ते हैं। गोदावरी पर पौने दो कोश (मील) लम्बा एक रेल का पुल है। यह १९०१ में बना था। इसमें ५१ खम्भे हैं जिनकी आपस की दूरी ५० गज है। बाढ़ के दिनों में १२ लाख घन पाद पानी प्रति क्षण इस पुल के नीचे से जाता है। ५१ खम्भों में इसके केवल ६ खम्भे पानी में बनाने पड़े थे। किन्तु यहां यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जिन खम्भों के लिये सूखी भूमि मिल जाती है उनके निर्माण के लिए भी पहले कुंए के गोले या कूपक भूमि के अन्दर तब तक गलाने या धसाने पड़ते हैं जब तक वे सुदृढ़ चट्टान तक न पहुँच जांय। फिर कीचड़ और नरम मिट्टी निकाल कर इन्हीं कुओं में लंगा, चूना और बजरी आदि भर कर खम्भे की नींव तैयार कर लेते हैं। गङ्गा नदी पर हार्डिंग्ज नामक पुल बनाते समय जल रहित भूमि में इसी रीति से १०० पाद की गहराई पर खम्भों की नींव डाली गई थी।

सड़कों पर भारी-भारी वाहन बड़े वेग से चलने लगे हैं। रेल की सड़कों का जाल भी सभी देशों में बिछ गया है। इस कारण पुलों के आकार और उनकी सुदृढ़ता की ओर विशेष ध्यान दिया जाने लगा है और बहुत बड़े बड़े विशालकाय पुल बनने लगे हैं। पुल-निर्माण-कला में ज्यों ज्यों उन्नति होती गई मनुष्य ऐसे स्थानों पर भी पुल के निर्माण की योजना बनाने लगा जहां इसका अनुमान भी नहीं किया जा सकता था। इस प्रकार आज अभियन्ताओं ने बड़े-बड़े दुर्गम स्थानों पर मीलों लम्बे विशालकाय पुल बना कर खड़े कर दिये हैं।

वास्तव में अभियन्ता के लिए समूचे पुल की अपेक्षा एक चाप की लम्बाई का अधिक महत्व है। जब से बलायस का प्रयोग पुलों के निर्माण में होने लगा तब से अभियन्ताओं का साहस बहुत बढ़ गया है। जहां खम्भे खड़े करने की सुविधा नहीं होती और बलायस की चन्नियां खम्भों पर नहीं टिकाई जा सकती वहां वे कोन्क्रीम के सिद्धान्त का विशेष रूप से उपयोग कर अथवा लोहे के तारों से बने मोटे-मोटे रस्सों की सहायता से अपना उद्देश्य सिद्ध करते हैं।

अब तो पुलों के चाप भी लोहे के ही बनाए जाते हैं। ईंटों और पत्थरों के चाप पुलों के लिए बहुत कम बनते हैं। लोहे के इन चापों के निर्माण में कोन्क्रीम के सिद्धान्त का ही प्रयोग किया जाता है।

ब्रिटेन की फोर्थ नदी का प्रसिद्ध पुल कोन्क्रीम के सिद्धान्त पर ही बनाया गया है। भारत में सिन्ध नदी पर सक्खर का पुल भी इसी प्रकार का है।

भारत में लोहे के रस्सों से बने पुल का एक सुन्दर न्यायदर्श ऋषिकेश से तीन क्रोशक ऊपर गङ्गा पर बना है। इस पुल का नाम लक्ष्मण झूला है। प्राचीन काल में वहां साधारण रस्सों का पुल था, उसके पश्चात लोहे के रस्सों का एक साधारण पुल बनाया गया। यह एक यात्री के चलने से भी हिलता था। किन्तु अब लोहे के मोटे तारों पर रस्सों से जो पुल बनाया गया है वह बहुत ही सुन्दर और अधिक स्थिर है। इस पर २ पैदल और घोड़े यात्री ही जा सकते हैं। किसी प्रकार की गाड़ी नहीं जा सकती। बद्रीनाथ धाम की यात्रा के दिनों में इस पर से लाखों यात्री गङ्गा के पार जाते हैं।

महान् उपन्यासकार

हिन्दी के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार श्री वृन्दावन लाल वर्मा को उनके 'मृगनयनी' नामक उपन्यास पर विविध साहित्यिक संस्थाओं की ओर से पुरस्कार प्रदान किये गये हैं। उत्तर प्रदेशीय सरकार ने आपको १०००) का पुरस्कार प्रदान किया। इसके अतिरिक्त आपको २५००) का डालमिया पुरस्कार, जगदीशप्रसाद साहू पुरस्कार तथा हिन्दुस्तानी एकेडेमी की ओर से ५०० का पुरस्कार प्रदान किया गया। मृगनयनी विगत कई वर्षों में प्रकाशित उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया है। आपका 'झांसी की रानी' उपन्यास भी काफी लोकप्रिय रहा तथा उस पर भी आपको कई पुरस्कार दिए गए। गढ़ कुण्डार भी आपका एक प्रसिद्ध उपन्यास है।

श्री वीर बहादुर

नगर के बाहर से क्लान्त तथा म्लान मुख कौशल में दाँव लेते ही संन्यासी को शान्ति की कथा ज्ञात होती है। कौशल की वाग्दत्ता नोवाखाली में घिर गई है। कौशल के पिता पहिले ही उधर जा चुके थे। किन्तु कौशल की दशा देख कर तथा जनसेवा के उद्देश्य से संन्यासी उसे लेकर उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्र की ओर रवाना हो गया। कौशल के पिता डा॰ सुरेश कलकत्ता से वेष बदल कर देहात में पहुँचते हैं और एक गुण्डे के यहा ही ठहरते हैं जिस के यहां अनेक युवतियाँ बन्द थीं। शान्ति भी कोठे के किवाड़ अन्दर से लगा कर कितने ही दिनों से उसी घर में पड़ी थी। वहां उन्होंने चतुराई से कुछ स्त्रियों को निकाला। उधर संन्यासी कौशल को ले कर उस क्षेत्रमें आ पहुँचा। इधर डा. सुरेश की शातिके पितासे भेंट हो गई। दूसरी ओर सन्यासी व कौशल गुण्डे के मकान पर जा पहुँचे। वहा और भी बहुत सी अपहृत महिलाओं को ढूंढ निकाला।

[गतांक से आगे]

'तुम्हारा इस प्रकार चुप रहना मुझे कितना खटकता है।' कौशल ने कुछ देर बाद फिर कहा अभी तक शांति की आँखें अनन्त में खिची हुई थीं। वह चुप थी। कौशल के आने के साथ भी वह अपनी मेधावी शक्ति मानों खो चुकी थी।

जब से कौशल नोआखाली में आया वह अपना अधिक से अधिक समय शांति के पास ही बिताता था। फिर भी जब कभी वह उसके पास आता था, शान्ति को ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह अभी अभी आया हो। शान्ति को हर बार यही अनुभव होता था कि अभी तक वह उसी कमरे में बन्द है। अभी तक उसके मन में शून्य से मिलने की बातें उसी प्रकार विराजमान थी। कौशल कुछ चुप रहा।

'...' थोड़ी देर बाद कौशल ने फिर कुछ कहना चाहा। लेकिन उसके गले में शब्द अटक कर रह गये। उसे याद आया एक दिन उन गर्मियों की छुट्टियों का। जब दोनों एक बार फिर उन्हीं गांव के खेतों में मिले थे। अचानक। शैलेन्द्र ने कई बार चाहा कि पिछली गर्मियों में ही शांति कौशल के सुपुर्द कर दी जावे। लेकिन डाक्टर सुरेश ने उसे अगली गर्मियों के लिए टाल दिया। कितना अच्छा होता यदि वह दिन टला न होता। मगर अब क्या हो सकता था। शान्ति की आँखें भर गई थी। वह आजकल यही सोचती थी। थी। उसने आंसुओं को बहने नहीं दिया जल का बादल आंखों में ही सूख गया। उसकी आँखें दूर पेड़ पर बैठी दो चिड़ियों पर थी। प्रत्यक्ष में वह उन्हें ही देख रही थी, परन्तु मन उसका कहीं और था।

'क्या सोच रही हो?' कौशल ने फिर साहस करके पूछा। उसके वाक्य का अन्तिम शब्द मुंह में ही रह गया।

शान्ति ने एक बार कहना चाहा—मैं अब क्या करूंगा। तुम्हारे बिना जीवन केवल सूना ही नहीं वरन् [illegible] कष्टदायक हो जावेगा। यह कितना असम्भव है कि मैं अपना तन मन सब कुछ सौंप कर भी, तुम्हारी न बन सकूंगी। शान्ति इस प्रकार की बहुत सी बातें कहना चाहती थी। वह यह भी कहना चाहती थी कि मेरा मरते मरते बच जाना मेरे लिये - और मेरे सम्बन्धियों के लिए—सबके लिए कांटे की भांति कष्ट का कारण बन गया।

'सोचती हूं, क्या जीवन मनुष्य के लिए सबसे अधिक बहुमूल्य वस्तु है।' शान्ति ने धीरे से उसी प्रकार अन्तरिक्ष की ओर देखते हुए कहा।

'ऐसा क्यों सोचती हो, शा... ... ?' कौशल के शब्दों से उतनी विवशता थी, जितनी कि उसकी आंखों में, उसके मुंह पर थी। वह कहता गया, परन्तु यह पता नहीं चलता था कि शब्द उसी के मुंह से आ रहे थे, क्योंकि आंखें नीची करके वह एक अगाढ़ चिन्ता में बैठा था—'ऐसा क्यों सोचती हो?'

शांति कुछ और कहना चाहती थी, परन्तु अपने मन की बातों को व्यक्त करने में वह असमर्थ थी। उसे ऐसा मालूम होता था कि वह कुछ खो चुकी है, लेकिन क्या खो चुकी है, उसे मालूम न था। और इस प्रकार से सोचने के कारण का सम्बन्ध भी किस अंश तक डाक्टर सुरेश के विचारों से था यह भी उसे मालूम न था।

'अब मैं क्या करूंगी?' शान्ति ने कहा।

'यह मुझे मालूम है, तुम केवल इस चिन्ता को हटा दो, कौशल ने उत्तर दिया—'तुम्हें चिन्तित देख कर मेरी बुद्धि कुछ काम नहीं करती। तुम इस चिन्ता ...'

कौशल ने शान्ति की उंगलियों को अपने हाथ में ले लिया। उस सुनसान सन्ध्या की घड़ियाँ कितनी जल्दी व्यतीत हो गईं उन्हें पता भी न चला। चन्द्रमा की हताहत पूर्वी बंगाल के शिविर के शीतल चन्द्रमा, अपनी तारिकाओं के साथ आज केवल पहली बार मुस्करा रहा था। कई महीनों से उसने अमृत वर्षा नहीं की थी। जनता कितनी व्याकुल थी, प्रेमी जन कितने अधीर थे। चकोर [illegible] और वनिता वृन्द कितना उदास था। आज [illegible] विमल चन्द्रिका में प्रेमियों का मूक और नीरव मिलन, हृदय की तन्त्रियों को किस प्रकार वीणा के तारों की भांति बजने के लिए उत्तेजित कर रहा था। आठ बज चुके और नौ बजने ही वाले थे। सुवर्ण चन्द्रिका की चादर से कोमिला का सारा नगर आच्छादित था। वह छोटा सा उद्यान। अभी तक शान्ति और कौशल वहीं बैठे थे। उसी प्रकार बैठे थे। किसी ने सोचा ही नहीं, उन्हें कहीं और जाना है। पेड़ की पत्तियों से छनी हुई झिलमिली चांदनी के नीचे, अभी तक मौन पड़े थे। मूर्ति की भांति, समय और संसार दोनों उनके लिये स्थिर हो चुके थे। दोनों के सामने एक ही समस्या थी, क्या वे जीवन साथी बन सकेंगे। कौशल जानता था, एक दिन अवश्य बनेंगे। अत्यन्त शीघ्र बनेंगे। परन्तु शांति के लिए केवल अन्धकार के और कुछ दिखाई नहीं देता था।

कौशल की आंखों में उसे अथाह प्रेम अवश्य दिखाई देता था। शान्ति का एक शब्द ही कौशल के लिए ब्रह्म-वाक्य था। केवल शान्ति के आदेश की देर थी, और उसके उपरान्त कौशल सारे समाज से अकेला निपट लेने को तैयार था। शान्ति कौशल को कष्ट देना नहीं चाहती थी। उसका जीवन सूना हो जाता। वह कौशल के बिना संसार में एक पल भी जिन्दा नहीं रह सकती थी, फिर भी वह कौशल को अपनाने में हिचकती थी। समाज और उसके कुटुम्ब की इच्छा के विरुद्ध वह कौशल पर असह्य भार नहीं बनना चाहती थी। उसकी आंखों के सामने अभी शून्य नहीं, महासागर था। उसमें अभी तक अन्धर नहीं था। वह उसी में लुप्त होना चाहती थी। अब केवल देर ही बाकी थी।

'कौशल!' शान्ति ने आज दूसरी बार कौशल का नाम लेकर उस अगाढ़ मौनता को घण्टों बाद में एकाएक भंग किया।

'शान्ति!' कौशल ने मानो जगते हुए कहा। शांति की उंगलियां अभी तक कौशल के हाथ में थी। शीतल मन्द पवन के रहते हुए भी उसका हाथ पसीने से कुछ गीला हो गया था।

'मेरे जीवन की' शान्ति ने कहा। [illegible] कठिनाई से उसके मुंह से निकल रहे थे—'केवल एक ही कामना थी ....' उसकी आंखें अन्तरिक्ष की ओर उसी प्रकार लगी थी—'और तुम्हारे आने से वह भी पूरी हो गई।'

इसके आगे गले में घुमते हुए शब्द और न निकल सके। वह यह भी कह देना चाहती थी कि तुम्हें देखने के अतिरिक्त मुझे और कुछ चाह न थी। वह जानती थी कि कौशल की आंखों में क्या था। वह उसे अपना जीवन संगिनी बनाने को उत्सुक था। इसके उत्तर में वह एक बात और कह देना चाहती थी। और इसी बात को कहने के लिए वह शब्द ढूंढ रही थी। कौशल चुपचाप पीयूष चन्द्रमा की भांति उसके मनोहर मुख को देखने में लीन था। आगे वह क्या कहेगी? उसका उत्तर वह क्या देगा? ये सब बातें किंचित उसके मन में नहीं थी। उसने देखा कि शान्ति के होंठ अत्यन्त लाल थे और सूख गये थे और उसकी आंखों को झिलमिलाती चन्द्रिका में देखने के लिए उसे अपना मुंह और समीप लाना पड़ा।

शान्ति सोच रही थी, सुख की यही चरम सीमा है। इससे अधिक सुख क्या होगा? कौशल सोच रहा था। सामने आंखों से थोड़ी दूर पर समय की पगडण्डी पर सुख की वह अनन्त राशि है। कब वह पहुंचेगा वहां। जब संसार में

उसे शान्ति को अपना कहने का पूरा अधिकार होगा। किन्तु कांटों की भांति कठोर समाज की आंखें, बीच में रुकावट थी। कौशल के लिए नहीं। परन्तु शांति के लिए अवश्य थीं। समाज का एक उच्छृंखल व्यंग भी इस समस्त सुख को उसके लिए उसी सुख के बराबर अपार दुःख में परिणत कर देता। वह इसी को सोच कर भयभीत हो उठती थी। उसके लिए कौशल के पास तक पहुंचना असाध्य प्रतीत होता था।

'शान्ति' कौशल ने शून्य और नीरव अंतरिक्ष को इस मधुर शब्द से गूंजाते हुए—'चल घर चलो?'

कौशल ने घर चलने के लिए अवश्य कहा, किन्तु उसी प्रकार बैठा रहा।

दोनों के मन में कुछ कसकपूर्ण, कुछ मधुर, और कुछ आनन्दजनक भाव थे। इन्हें व्यक्त करने के लिए उन्हें उचित शब्द नहीं मिलते थे। क्या-क्या एक दूसरे को उन्हें सुनाना था, परन्तु मूक बैठे थे। बिना सुनाये अ ते भी नहीं बनता था। समय कितनी तेजी से निकलता आ रहा था। दूर के घण्टेघर में नौ भी बज गये। चांद भी अब जाने ही वाला था। शान्ति ने देखा कौशल चांद को देख रहा था।

'कौशल!' शान्ति ने तीसरी बार उसे नाम से पुकारा—'मैं केवल एक ही बात कहूंगी—...'

'क्या ...' कौशल ने शान्ति को चुप देख कर कुछ देर बाद पूछा और उसकी आंखों में देखता रहा जो अभी तक अनन्त की ओर देख रहीं थी।

"देखो वह चांद अब छुप जावेगा' शान्ति ने फरफराते होंटों से कहा और उसकी आंखें एकाएक सजल हो आईं—'और चकोर ...'

'ऐसा कौशल ने एकाएक धीरे से कहा—'ऐसा कभी भी नहीं हो सकता—'

शान्ति ने मानो सुना नहीं। कुछ और उत्तर दिया नहीं। दोनों उसी प्रकार कुछ देर बैठे रहे। फिर शान्ति धीरे से उठ कर खड़ी हो गयी। कौशल भी खड़ा हो गया।

प्रेमियों का यह मौन मिलन समाप्त हुआ

'मुझे आश्चर्य है सुरेश बाबू' संन्यासी कहता गया—'आप शिक्षित हो कर भी इस प्रकार की बातें कर रहे हैं। किसी भी शास्त्र में आपकी बातों की पूर्ति के लिए ऐसा नहीं लिखा है।'

'स्वामी जी,' डाक्टर सुरेश ने उत्तर दिया—'आप मेरा अभिप्राय नहीं समझे। मैं शास्त्रों की बातें नहीं करता हूं, न तो मैंने उनका अध्ययन ही किया है। मैं तो केवल लोकमत की बातें ही कर रहा हूं। समाज में बहुत सी बातें प्रचलित हैं, क्या सभी शास्त्रों में हैं?'

'लगभग सभी बातें हैं।' संन्यासी ने उत्तर दिया 'जितनी धर्म की आवश्यक बातें हैं—रीति, रस्म, संस्कार, आचार, विचार—सब उनमें यथेष्ट हैं। केवल शास्त्र विरुद्ध समाज की प्रचलित कुरीतियां नहीं हैं, और उन्हीं को हटाना हमारा कर्तव्य है। क्या यह सच है कि शान्ति और कौशल का पाणिग्रहण एक प्रकार से निश्चित हो गया था।'

'यह तो सच ही है' डाक्टर सुरेश ने कहा—'हो भी गया होता। यही तो अफसोस है कि हुआ नहीं।'

'और अब आप को क्या आपत्ति है?'

'मुझे?' डाक्टर ने उत्तर दिया—'मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं स्वयं चाहता हूं। दोनों के लिए यही अच्छा होगा। लेकिन ।'

'लेकिन आप समाज से डरते हैं?' संन्यासी ने तत्काल कहा—'यही न। मैं इसको कायरता कहता हूं। आप क्या कहते हैं?'

'कायरता की क्या बात है?' डाक्टर ने उत्तर दिया—'मैं समाज को केवल अपने कुटुम्ब की ओर उंगली दिखाने का अवसर नहीं देना चाहता हूं। बस।'

'क्या समाज की अज्ञानता और अन्ध परम्परा को मिटाना हमारा कर्त्तव्य नहीं है?' सन्यासी ने कहा—'और ।'

'ठीक है' बीच में बात काट कर डाक्टर ने कहा—'परन्तु मैं अपना दामन गन्दा करके, दूसरे के सामने हास्यास्पद आदर्श बनने का विफल प्रयत्न नहीं करना चाहता। जब मैं ठीक ठीक यह जानता हू कि कौशल के साथ शान्ति का सम्बन्ध स्थापित करके, मुझे केवल यही एक लाभ होगा कि मेरे कुटुम्ब को मेरे सम्बन्धी कुछ हेट समझने लगें। आप ही बतलाइये और क्या लाभ होगा? क्या इस से हिन्दू समाज की प्रवृत्ति बदल जायेगी? क्या इससे समाज का सुधार हो जावेगा? आप मुझे जान बूझ कर जीती मक्खी निगलने को कह रहे हैं।'

'मुझे कितना दुःख है कि आप ऐसा सोचते हैं' संन्यासी ने कुछ देर बाद कहा—'शान्ति में कौन सा दोष है। क्या आपको उसके आचार-विचार और आचरण में शक है।'

'मेरे शक करने या नहीं करने का कोई प्रश्न नहीं' डाक्टर ने कहा—'जितनी सुन्दर उसकी आकृति है, उतनी ही सुन्दर उसकी प्रकृति भी है। मैं बराबर उसकी प्रशंसा करता था और अब उसकी और अधिक प्रशंसा करता हूं। मेरे विचारों से सभी सहमत न होंगे। यही तो समस्या है।'

'उसका दोष क्या है? आप जैसा सोचते हैं, उसके विपरीत औरों को सोचने का क्या कारण है?'

'कारण?' डाक्टर सुरेश ने उत्तर [illegible] एक गुण्डे के घर में कुछ दिन रह चुकी है। बस, और उसके साथ बलात्कार भी हुआ, उसका विवाह भी।'

'क्या उसने अपने सतीत्व और स्त्रीत्व की रक्षा नहीं की है? क्या उसने गुण्डे के घर का एक बूंद जल भी ग्रहण किया है? क्या दोष है उसका? हिंदुत्व के अस्तित्व की रक्षा करने वाले, क्या दोष उसके ऊपर लगायेंगे? कहां थे उस समय ये धर्मान्ध जो अपनी ओर से, अपने पड़ोस की बहुन बेटियों की रक्षा किये बिना कोरे प्राण लेकर नोआखाली से भाग गये? धर्म की रक्षा तो तब करनी थी। और अब, एक पवित्र युवती के साथ अत्याचार करके, वे लोग हिन्दू समाज को पवित्र रखना चाहते हैं?'

'स्वामीजी' डाक्टर सुरेश ने कहा—'मैं आपका अभिप्राय समझता हूं। किन्तु मेरे समझने और न समझने में कुछ लाभ नहीं। जब तक कि सभी न समझें। मैं यह भली भांति जानता हूं कि मेरे सम्बन्धी इस संयोग को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार नहीं करने वाले हैं। बस।"

'क्यों नहीं स्वीकार करेंगे?' संन्यासी ने कहा—'क्या एक आदर्श युवती के साथ अत्याचार करके उन्हें प्रसन्नता होगी?'

डाक्टर सुरेश और संन्यासी शाम को देर तक यही प्रश्न सुलझाते रहे। उन लोगों ने न तो चाय ही पी और न बाहर ही गये। लगभग आठ बज गए। अब तक घर में शैलेन्द्र या शांति या कौशल कोई भी वापस न आया था। इससे उन्हें वाद-विवाद करने की पूरी स्वतन्त्रता मिल गई थी।

'ओ शैलेन बाबू!' बात बदल कर डाक्टर सुरेश ने एकाएक उसे दूर आंगन में ही देखते कहा—'और शान्ति?'

'अभी तक आई नहीं?' शैलेन्द्र ने सकुचाते कहा।

'नहीं' डाक्टर ने कहा—'वह तो आपके साथ ही गई थी।'

'हां!' शैलेन्द्र ने कहा—'मैं मैनेजर साहब के यहां चला गया। उसे पार्क में ही कौशल बाबू मिल गये, मैंने पार्क में ही छोड़ दिया।'

—क्रमशः

जंगल के जानवर—४

भेड़िया : खून का प्यासा

★ श्री विराज

किसी पुस्तक में मनहर छपी हुई शेर और मेमने की कथा पढ़ी थी, जिसमें शेर ने अन्त में 'तूने नहीं तेरी माँ ने गाली दी होगी और अगर तेरी माँ ने नहीं तो तेरे बाप ने गाली दी होगी' का अकाट्य तर्क उपस्थित करके मेमने को उदरसात् कर लिया था। पढ़ते ही ध्यान आया कि वह मूल में भेड़िये और मेमने की है शेर और मेमने की नहीं। बात यह है कि ऐसी क्रूर युक्ति दे सकना केवल भेड़िये के लिए ही सम्भव है।

सारे पशु जगत में भेड़िये से बढ़ कर क्रूर और हिंस्र प्राणी कोई नहीं है। शेर में गौरव और बड़प्पन का भाव है बाघ में शक्ति है, चीते में चपलता है और फुर्ती है, पर भेड़िये में केवल क्रूरता और रक्त की प्यास है। इसलिये जब किसी व्यक्ति को नीच क्रूर और रक्त पिपासु कहना होता है तो उसे रूपक अलंकार का प्रयोग करके संक्षेप में भेड़िया कह दिया जाता है।

आकार प्रकार

भेड़िया आकार प्रकार में कुत्ते जितना ही होता है। यदि कुछ कुत्ते इससे छोटे होते हैं तो अनेक पालतू कुत्ते भेड़िये से काफी बड़े होते हैं। भेड़िये का मुख आगे से अधिक पतला और सिर के पास से चौड़ा होता है जिसके कारण उसका जंगलीपन और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है।

भेड़िया रूस अमेरिका यूरोप और भारत में पाया जाता है। उन उन स्थानों के जलवायु के अनुसार ही उसके रंग और बालों की लम्बाई में अन्तर पाया जाता है। गर्म प्रदेशों में भेड़िये रंग में भूरे और ठंडे, प्रदेशों के भेड़िये अपेक्षाकृत सफेद होते हैं।

झुंड में रहता है

मांसाहारी पशु प्रायः झुंड बना कर नहीं रहते, पर भेड़िये झुंड बना कर रहते हैं। बच्चे पैदा करने और कुछ दिन तक उनके पालन पोषण के अतिरिक्त सारे समय भेड़िये बड़े बड़े समूहों में इकट्ठे होते हैं और हिरन घोड़ा भेड़ बकरी जो कुछ भी मिल जाय उसे चट कर जाते हैं। आहत अवस्था में पड़ा हुआ तो उन्हें शेर या हाथी भी मिल जाय तो वे उसे जीवित नहीं छोड़ते।

ऊपर लिखी बातें रूस और अमेरिका के भेड़ियों के बारे में अधिक सत्य हैं। जब सब ओर बर्फ जम जाती है तब वहां भेड़ियों को आहार प्राप्त करना कठिन हो जाता है इसलिये भूखे होने के साथ साथ वे भयंकर भी अधिक हो जाते हैं। उत्तरी भारत में जो भेड़िये पाये जाते हैं वे साधारणतया बड़े झुंडों में नहीं रहते। वे भेड़ों बकरियों हिरनों और मौका लगे तो छोटे छोटे बच्चों पर हाथ साफ कर जाते हैं। पर वे बड़े प्राणियों से छेड़खानी नहीं करते।

दौड़ में हरा कर मारता है

मैंने अपने सिंह बाघ और चीता इन तीनों ही लेखों में इस बात पर जोर दिया है कि ये भयंकर प्राणी कुछ दूर तक ही अकल्पनीय वेग से झपट सकते हैं, परन्तु देर तक दौड़ कर शिकार का पीछा नहीं कर सकते तो कई धार्मिक मित्रों ने यह युक्ति सामने आ रखी कि कि मांसाहारी पशुओं में दम नहीं होता वे किसी संघर्ष में देर तक लगे नहीं रह सकते। तब मुझे भेड़िये का ध्यान आया। सारे पशुजगत् में यही एक प्राणी है जो अपने शिकार का पीछा कर के उसे निश्चित रूप से पकड़ लेता है। चाहे वह हिरन हो, खरगोश हो चाहे घोड़ा हो। भेड़िया अपने शिकार के पीछे उससे तेज चाल से निरन्तर दौड़ता रहता है जब तक कि वह उसे पकड़ न ले।

निराश भी होना पड़ता है

ऊपर लिखी बात वहीं ठीक उतरती है, जहां बरफ हो या खुले मैदान हो जिससे भेड़िया अपने शिकार को देखता रह सके। पर जहां बीहड़ जंगल हो, ऊंची ऊंची घास हो, वहां पर भेड़िया वेग और दम में अधिक होते हुए भी अपने शिकार को पकड़ नहीं पाता।

एक प्रत्यक्षदर्शी ने हमें अपने अनुभव का हाल सुनाते हुए बताया कि वे एक बार अकेले जंगल में घूम रहे थे। भाला उनके हाथ में था।

एकाएक मेरे सामने से एक तीर की तेजी से दौड़ता हुआ बारहसिंगा निकल गया। बारहसिंगा बुरी तरह हांफ रहा था। और उसकी छलांगों में वह सफाई नहीं थी जो साधारणतया निश्चिन्तता पूर्वक दौड़ते हुए हिरनों को छूट में होती है। वह ऐसा बेतहाशा दौड़ रहा था कि उसने बीच रास्ते में खड़े हुए मुझे देखा तक नहीं।

मैं अभी सोच ही रहा था कि वह हिरन इस तरह क्यों भागा जा रहा है, कि तभी कोई दस मिनट भी न बीते होंगे बिल्कुल ही तेजी से और उतनी ही एकाग्रता से दौड़ता हुआ एक भेड़िया आया और तीर की तरह मेरे सामने से निकल गया। उसने भी मुझे नहीं देखा।

मैं फिर रा[illegible] वह गया और कोई दो [illegible] चलकर रास्ते पर एक पेड़ की छाया में बैठ गया। कोई पन्द्रह मिनट बाद मैंने देखा कि वही भेड़िया श्रान्त और उदास रास्ते मेरी ओर लौट रहा था। वह इतना अन्यमनस्क था कि मुझसे २०० कदम निकट तक आ जाने पर भी उसने मुझे नहीं देखा। इतना अन्यमनस्क रहने से वन में पशुओं का जी सकना कठिन है। पर संभवतः वह इस समय बहुत थका हुआ था।

मैं भी भाला संभाल कर उठ खड़ा हुआ। और उत्सुकतापूर्वक उसके आने की प्रतीक्षा करने लगा। पर उठते ही उसने मुझे देख लिया और रास्ता छोड़ कर जंगल में हो लिया।

इससे स्पष्ट है कि यद्यपि भेड़िया बहुत भूखा था, पर अकेले वह बड़े आदमी पर आक्रमण करने का साहस नहीं कर सका।

एक और घटना हमें पं० हरिवंश ने सुनाई। एक बार कहीं उन्हें ग्वालों ने बताया कि जंगल में बाघ ने भैंस मारी है। तो वे मरी हुई अधखाई भैंस को देखने के लिये गये। भैंस वहां थी और उसका थोड़ा सा ही भाग खाया हुआ था। उस दिन देख कर वे लौट आये और अगले दिन केवल यह देखने के लिए कि बाघ दुबारा लाश पर आया था नहीं, वे फिर जंगल में जा पहुँचे। वहां जा कर देखते क्या हैं कि भैंस की लाश के पास एक और लाश पड़ी है और दोनों पर गिद्ध समाज जुट कर अपूर्व आनन्द का उपभोग कर रहा है। पत्थर मार मार कर उड़ाने के बाद देखा कि दूसरी लाश भेड़िये की थी।

मैंने सोचा कि भूख का मारा वह आकर इस लाश को खाने लगा होगा कि उसी समय बाघ भी आ पहुंचा होगा। अपने शिकार पर पहुंचने से पहले बाघ जिस प्रकार सावधान और सतर्क हो कर चलता है, उसमें उसने अवश्य ही भेड़िये को देख लिया होगा। और घात लगा कर बिजली की तरह जब वह टूटा होगा, तब भेड़िया वहीं ढेर हो गया होगा।

कुछ दिन बाद मैं फिर गया। गिद्धों की चोंचों, वर्षा और वायु के थपेड़ों से साफ हुई भेड़िये की खोपड़ी वहां पड़ी थी। इसे मैं उठा लाया और संग्रहालय में रख दिया।

चालाक शिकारी

तीव्रगामी होने के बावजूद भेड़िया शिकार करने में काफी चालाकी से काम लेता है। वहां वे बड़े झुण्डों में नहीं होते, केवल दो तीन या पांच सात होते हैं, वहां वे दो प्रमुख चालाकियां बरतते हैं। एक तो शिकार की वह चाल जो शेर काम में लाता है। अर्थात् एक दो भेड़िये तो रास्ते के आस पास झाड़ियों में छिप जाते हैं और बाकी भेड़िये शिकार को खदेड़ते हुए उस ओर लाते हैं। जब शिकार घबरा कर भागता हुआ पास से गुजरता है तो छिपे हुए भेड़िये उस पर टूट पड़ते हैं।

पर दूसरा दांव अपेक्षाकृत अधिक सुविचारित है। इसका प्रयोग हिरन जैसे तीव्रगामी पशुओं का शिकार करते समय भेड़िये करते हैं। पहले पांच-सात भेड़िये एक एक जगह एकत्रित होते हैं और बाकायदा योजना बना कर उस मार्ग में, जिस पर वे जानते हैं कि पीछा किया जाने पर शिकार दौड़ेगा, एक-एक भेड़िया काफी दूरी छोड़ छोड़ कर छिप रहता है। एक भेड़िया हिरन को खदेड़ता हुआ लाता है। पास पहुंचने पर झाड़ी में छिपा हुआ भेड़िया पीछा करने के लिए निकल पड़ता है। इसी प्रकार आगे-आगे दौड़ते जाने पर हिरन को ताजे बिना थके हुए भेड़िये पीछा करने के लिये मिलते जाते हैं जो उसे निश्चित रूप से थका कर मार डालते हैं। और फिर सब मिल कर उसे खा जाते हैं।

देहाती एरिक

भेड़ियों के साथ एक बड़ी भयंकर किन्तु मर्मस्पर्शी कहानी जुड़ी हुई है। घटना कहां तक सत्य है, पता नहीं किन्तु इसमें वर्णित भेड़ियों का स्वरूप बिल्कुल वास्तविक और सजीव है।

रूस का एक जमींदार अपनी स्त्री, बच्चे और नौकर के साथ ओखिसोव जा रहा था। नौकर का नाम एरिक था। जब वे लोग रोवलोव नामक कस्बे में पहुंचे तो रात हो गई। रूस की बर्फीली और ठण्डी रात। लोगों ने जमींदार से कहा कि आप लोग इस रात के अंधेरे में चले न जायें। ओखिसोव दूर है। रास्ते में जंगल पड़ता है। उसमें भेड़िये भरे हुए हैं। रात यहीं बिताइये और कल सवेरे आप आगे जांय तो अच्छा है।

पर जमींदार रुक नहीं सकता था। उसने अपनी चार घोड़ों वाली गाड़ी आगे बढ़ाने का हुक्म दिया। उसने और नौकर ने अपनी अपनी पिस्तौलों में गोलियां भर लीं। सफेद बर्फ पर गाड़ी दौड़ने लगी।

कुछ दूर आगे बढ़ने पर अनेक दारुण और उदास आवाजें सुन पड़ने लगीं। इसमें कोई सन्देह नहीं था कि वे खूंख्वार रूसी भेड़ियों के रोने और गुर्राने की आवाजें थीं, जो क्रमशः निकट और निकट आती जा रही थीं। अभी,

[शेष पृष्ठ २२ पर]

मूर्खों की स्वर्ग यात्रा

एक था मूर्ख। उसे स्वर्ग जाने की बड़ी इच्छा हुई, क्योंकि कथा वार्ता में उसने स्वर्ग के आनन्द सुन रखे थे। एक दिन उसने कथा वाचक पंडित से पूछ ही लिया कि स्वर्ग कैसे जाना होता है। पंडित जी ने स्वर्ग-प्राप्ति के बहुत से साधन, उपाय व मार्ग बताये। मूर्ख को तालाब बनवाने का मार्ग सरल जान पड़ा स्वर्ग ही फायदा लेकर दो तीन माह में अपने स्त्री-बच्चों व अन्य सम्बन्धियों को साथ लेकर एक तालाब खोद डाला। उसकी पक्की सीढ़ियां भी बंधवा डाली। एक दिन उस मूर्ख ने तालाब की कुछ सीढ़ियां टूटी व उखड़ी हुई देखीं तो उसे बड़ा दुःख हुआ। दूसरे दिन फिर और अधिक तालाब का नुकसान देखकर विचार किया कि आज रात भर यहां ही रह कर चोर और बदमाश को पकड़ना चाहिए।

आधी रात हुई तब एक बैल वहां तालाब पर आया और अपने सींगों से सीढ़िया तोड़ने लगा। मूर्ख ने यह सब देखा और विचार किया कि हो न हो यही भगवान शिव का नन्दी है, कैलाश पर्वत से यहां पानी पीने आता है। गांव के बैल तो सब अपने २ घरों में बंधे हुए हैं। यही स्वर्ग का बैल है। यह सोचकर उस की पूंछ पकड़ली। बैल आकाश में उड़ा और दिन निकलते ही कैलाश पर्वत पर पहुंच गया। मूर्ख का मन स्वर्ग में अकेले का न लगा। चार पांच दिन पश्चात विचार किया कि कुछ अपने साथियों को भी यहां ले आना चाहिए। बैल तो उसी तालाब पर रोज ही आता ही है। मूर्ख वापस अपने घर आया और अपने साथियों को स्वर्ग की मौज बहार के सुख आनन्द बढ़ा चढ़ाकर कहा। सबके मन में स्वर्ग जाने की इच्छा हो गई।

एक रात उसी तालाब पर सब मूर्ख इकट्ठे हो गए। बैल अपने समय पर आया, पहिले मूर्ख ने उसकी पूंछ पकड़ी और बाकी मूर्खों ने एक दूसरे के पांव पकड़ लिये। बैल आकाश में उड़ा। जब खूब ऊंचे उड़े तो रास्ते में सुन्दर नगर, ऊंचे पर्वत लम्बी नदियां, बड़ी बड़ी झीलें आदि देखकर सब मूर्ख खुश हो रहे थे, तब उन मूर्खों में से एक ने कहा, "यार भाग, बगीचे नदी, तालाब और गांव आदि सब तो पीछे ही रह गए, तुम वहां कैसे रहते थे। इन चीजों के बिना तुम्हारा मन कैसे लगता था। और वहां खाते क्या थे।" इस पर पहला मूर्ख जो इन सब को स्वर्ग में लिए जा रहा था, पूंछ छोड़ कर हाथ फैलाकर यह सब बताने लगा कि 'वहां इतने बड़े' बात पूरी भी न हुई कि सबके सब मूर्ख धड़ाम से फिर से पृथ्वी पर आ पड़े और पड़ते ही सब के प्राण उड़ गए।

— सरित सागर के आधार पर

७, ८, और ६

चार, पांच, छ दोनो सात,
गप्पी की या मानों बात।
पृथ्वी घूमे दिन और रात,
आलस्य लांघ उठप्रभात॥

पांच तीन होवे हैं आठ,
ऊंच नीच को मारो काठ।
धर्म नीति का है यह पाठ,
झूठा सपना जग के ठाठ।

एक से नौ तक आंकड़े,
ज्यों शून्य लगे बढ़ जावें।
अभिमान रहित जो सद्गुणी,
जग में पूजे जावें॥

क्या आप जानते हैं?

● श्रीमद्भगवत् गीता में श्रीकृष्ण भगवान् ने पांडवों तथा कौरवों के युद्ध स्थल पर वीर अर्जुन को उसके क्षत्रियोचित कर्तव्य-धर्म पालन के लिए उपदेश दिया था।

● महाभारत संस्कृत भाषा में मुनि श्री वेद व्यासजी ने लिखा है और राम चरित हिंदी भाषा में गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा।

● बड़-पीपल गूलर-अन्जीर आदि में बिना फूल के फल लगते हैं।

● न्यूयार्क अमेरिका की स्वतन्त्रता देवी की मूर्ति संसार में सब मूर्तियों से बड़ी है।

● सर्व प्रथम संसार में कागज का प्रयोग चीन देश में हुआ।

● स्वर्गीय बापू-महात्मा गांधी, पं. जवाहरलाल जी प्रधान मंत्री तथा राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी ने अपनी आत्म कथायें स्वयं लिखी हैं।

[पृष्ठ २ का शेष]

पर हमला ही न कर दिया जाय। किन्तु पाकिस्तान में भारत के विरुद्ध जिहाद का खोलबाला है और और यद्यपि भारत ने इसकी ओर सुरक्षा परिषद् का ध्यान आकर्षित किया है, तो भी उसने इस पर कोई ऐतराज नहीं किया और हमारी सरकार को संविधान सभा तैयारी करने पर चेतावनी भी दे दी है। हमें इस अत्यन्त पक्षपातपूर्ण रवैये को नहीं समझ सकते जिसने न केवल बुनियादी बातों की उपेक्षा ही की है, अपितु सचाई से आंख मूंद ली है।

पंचफैसला अमान्य

भारत सरकार, जहां ४० लाख लोगों के भाग्य का सवाल हो, वहां पंच-फैसले को नहीं मान सकती। इसके अलावा वह पंच-फैसले के लिए काश्मीर को दी गई अपनी प्रतिज्ञाएं भी नहीं तोड़ सकती।

मध्यस्थता के लिये यह प्रयत्न भी अब तक इसीलिए असफल रहे कि वे परस्पर विरोधी थे, उनमें भी स्वार्थियों ने अपना उल्लू सीधा करने का प्रयत्न किया। कुछ विदेशी राष्ट्रों ने पाकिस्तान के हठ को प्रोत्साहन दिया है। और इसके कारण शांतिपूर्ण समाधान और भी कठिन हो गया।

सुरक्षा परिषद ने अपने अन्तिम प्रस्ताव में भारत की बुनियादी स्थिति पर आक्षेप किए हैं, और वह अपने कई वायदों और आश्वासनों से मुकर गई। इसलिए हमने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया और हम उसे कार्यान्वित भी नहीं करेंगे।

दृष्टिकोणों में बुनियादी संघर्ष

भारत व पाकिस्तान के बुनियादी दृष्टिकोणों में गम्भीर खुमार हैं। भारत सरकार की चाहे कुछ भी विफलतायें रही हैं, एक सम्प्रदाय-निरपेक्ष राज्य की कल्पना पर वह दृढ़ रहा है। पाकिस्तान खुल्लमखुल्ला कहता है कि वह एक साम्प्रदायिक राज्य है। भारत सरकार पाकिस्तान के द्विराष्ट्र सिद्धान्त को कभी नहीं मानेगी, क्योंकि वह उसे बुनियादी रूप में गलत और खतरनाक समझती है।

काश्मीर में दोनों सिद्धान्तों और दृष्टिकोणों का संघर्ष हो रहा हो, इसलिए मामला केवल राजनीतिक या भौगोलिक ही नहीं अपितु और भी अधिक महत्वपूर्ण और गम्भीर है।

सौभाग्य से काश्मीर के लोग विभाजन से पहले ही यह घोषणा करते रहे हैं कि वे द्विराष्ट्र सिद्धांत और साम्प्रदायिक राज्य के विरुद्ध हैं।

पाकिस्तान के साथ काश्मीर के झगड़े का यही आधार है और भारत सरकार का उसको सहयोग देने का यही कारण है।

अन्ततोगत्वा काश्मीरियों की शक्ति और इच्छा ही प्रमुख रहेगी इसलिए मुझे आशा है कि प्रत्येक काश्मीरी अपनी इस सुन्दर मातृभूमि को शक्तिशाली बनाने में कोई प्रयत्न बाकी न रखेगा।*

* श्रीनगर में दिये गये एक भाषण के आधार पर।

वीर अर्जुन साप्ताहिक का मूल्य

वार्षिक	१२)
अर्धवार्षिक	६॥)
एक प्रति	चार आना

सिनेमा-जगत

वैजयन्ती माला ए० वी० एम० की "बहार" में।

काश्मीर : सफल चित्र

जिसके शान्त गिरि गह्वरों में अनन्त शक्ति का चिन्तन करते हुए ऋषियों ने मोक्ष प्राप्त किया, जिसके परम्परागत अनवरत स्रोत में बैठ कितने ही दार्शनिकों ने सुन्दर ग्रन्थों की रचना की, कुसुमित काननों में निवास पा अनंग ने भी अपने को धन्य माना और जिसकी गोदी में खेले हुए शूरजनों ने विदेशी आक्रमणकारियों को धूलि धूसरित किया, उस 'वीर प्रसू' स्वर्ग की छ'टावली 'काश्मीर को' सुस्वर्ग कहना अत्युक्ति न होगी। आज भारत के इस पावन भू-खण्ड की ओर सारे संसार की दृष्टि लगी हुई है और प्रत्येक भारतीय इस देव भूमि की रक्षा के लिए सजग है।

वर्तमान परिस्थिति में राजदीप पिक्चर्स ने 'काश्मीर' चल चित्र प्रस्तुत करके एक प्रशंसनीय कार्य किया है। इस सप्ताह यह चित्र राजधानी के दो सिनेमाओं—रीगल व मिनर्वा में तथा उत्तरभारत के कई प्रमुख नगरों में प्रदर्शित किया गया है और इसने विशेष सफलता प्राप्त की है।

चित्र का कथानक आज से ३ वर्ष पूर्व विदेशी लुटेरों द्वारा काश्मीर को हड़पने के प्रयास पर आधारित है। 'बारामूला' पर लुटेरों के सहसा आक्रमण से त्रस्त व निःसहाय काश्मीर निवासी भारतीय वायुसेना की सहायता से किस प्रकार प्रोत्साहित हुए, इसका वास्तविक चित्रण करने का प्रयास निर्माता ने किया है। मानवता से पतित लुटेरों द्वारा किये गये असभ्य अत्याचारों से वीभत्स दृश्यों को देख कर रोमांच हो आता है। देश प्रेम में मग्न भारतीय सैनिकों द्वारा लुटेरों के खदेड़ने के दृश्य देख कर एक वीर पुनः हूणों की याद हो आती है।

काश्मीर की रक्षा में दृढ़चित्त एवं मुस्लिम मतावलम्बी परिवार किस प्रकार अनेक विपदाओं का सामना करता है, यह देख कर विश्वास होता है कि भारत के संरक्षण में प्रत्येक भारत निवासी चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय का हो निज बलिदान दे देगा। परन्तु यह देख कर दुःख होता है कि स्थानीय कुछ संस्थाओं ने ऐसे चित्र का विरोध शुरू किया है। भारतीयता के द्योतक इस 'काश्मीर' का, जिसकी सराहना भारत के प्रधान मन्त्री लोकबन्धु नेहरू ने भी की है, विरोध करना अराष्ट्रीय प्रवृत्ति का प्रदर्शन नहीं तो क्या है।

★

सिनेमा में धूम्रपान का निषेध

पंजाब सरकार ने एक विज्ञप्ति द्वारा सिनेमा देखने वाले व्यक्तियों को स्मरण कराया है कि पंजाब में खेल प्रारम्भ होने से आध घण्टा पहले और अन्त तक सिनेमा या थियेटर हालों में धूम्रपान करने का निषेध है। न ही हाल, कमरे में या स्टेज पर धूम्रपान किया जा सकता है, जब तक कि धूम्रपान करना उनके अभिनय का अंश न हो।

धूम्रपान निषेध : सिनेमा और थियेटर हालों में · अधिनियम १९५१ नामक एक अधिनियम को राज्य की विधान-सभा द्वारा गत बजट अधिवेशन में अधिनियमित किया गया था और उसी समय लागू कर दिया गया था।

ऐसा कोई व्यक्ति, जो इस अधिनियम के उपबन्धों का उल्लंघन करेगा, वह सिनेमा या थियेटर हाल से निकाला जा सकता है, उसे न तो क्षतिपूर्ति दी जायगी और उसको टिकट का रुपया लौटाया भी नहीं जायगा। वह गिरफ्तार भी किया जा सकता है और २० रुपये तक जुर्माना किया जा सकता है। एक इन्स्पेक्टर इस बात का आश्वासन प्राप्त करने के लिए कि इस अधिनियम के उपबन्धों का उल्लंघन तो नहीं हो रहा, सिनेमा या थियेटर हाल में प्रवेश कर सकता है।

★

पृथ्वीराज को रूस का आमन्त्रण

पड़ौसी देशों से भारत के सांस्कृतिक सम्बन्ध सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता श्री पृथ्वीराज कपूर को अपनी मण्डली सहित भारत के सांस्कृतिक प्रतिनिधि की हैसियत से सोवियत रूस तथा चीन की सैर करने के लिए आमन्त्रित किया है।

★

मेरठ में आचार्य कृपलानी ने पत्र-कारों से कहा कि कांग्रेस से निकल कर मेरा खाना खराब हो गया।

यह कैसी सुनाई उस्ताद —

बर्बाद हो रहे हैं बर्बाद करने वाले।

आपने आगे कहा कि बिल्ली मेरे भाग नहीं आवे। इसलिए कि यूनिवर्सिटी की खिड़की से कुदाने फिर कौन आता।

× × ×

सरोत्तम केशवर नामक एक पाकिस्तानी ने मजिस्ट्रेट को बताया कि मैं तो ला-परवाह आदमियों को दण्ड देता हूं।

बहुत ठीक। अब भारतीयों को अपने मन्त्रियों को कोसने की कतई आवश्यकता नहीं। वे उच्च विचारों के सिद्धांत को ही मान कर चल रहे हैं।

× × ×

ईरान के प्रधान-मन्त्री का कहना है कि यदि ब्रिटेन ने एक भी गोली चलाई तो विश्व युद्ध शुरू हो जायगा।

कुछ तमाशाई इकट्ठे हो जायें तो हो जायें, लड़ने लड़ाने कोई नहीं आता। विश्वास रखिये।

× × ×

भारत सरकार का कहना है कि कैदियों को भी वोट देने की सुविधायें होंगी।

अब यह कैदियों के हाथ में है कि वह अपना वोट किसी कैदी को दें।

× × ×

दिल्ली म्युनिसिपल कमेटी के एक अधिकारी १००) रु० की रिश्वत मेहतरानी से लेते पकड़े गए।

वोट उनके पैर के पास मिला।

ना-समझ हो रहे। कोई में पड़ कर भी कमाना-खाना न आया। कह देते मेहतरानी की झाड़ू से उड़ कर आ गया है, कौन क्या कर लेता भला।

× × ×

बिहार की पुलिस शिशु-प्रजनन विभाग से चुराये गये शिशु की खोज कर रही है।

बेकार है वैसे तो, लेकिन अब की बात इतना ही है कि चोरों ने अस्पताल भी देख लिये, अब मरीजों पर भी हाथ साफ किया करेंगे।

× × ×

श्री मती सुचेता का कहना है कि कांग्रेस में रह कर गांधी जी का स्वप्न पूरा नहीं हो सकता।

और रहे अपने का सवाल, वह पूरा होना तो दूर, दीखना भी बन्द होने लगता है।

× × ×

अमेरिका के पर राष्ट्र मंत्री एचीसन का कहना है कि लेन सघर्ष के हल में ही स्वतन्त्र देशों की भलाई है।

हां, कम से कम घरों में दिये तो जलते रहें।

× × ×

पाकिस्तान की 'हिन्दुस्तान हमारा' पार्टी ने अपील की है कि सोमनाथ-शिलान्यास वाले दिन जन्म लेने वाले मुसलमानों का नाम महमूद रखा जाय।

और मरने वाले का कायदे आजम ठीक रहेगा।

× × ×

'हिन्दुस्तान हमारा' पार्टी के विरुद्ध भारत सरकार ने विरोध प्रकट किया है।

—एक सरकारी प्रवक्ता

विरोध के बजाय धन्यवाद देना चाहिये उन्हें, जब तक वह हिन्दुस्तान में रहे, तब तक तो एक दिन भी इस को अपना नहीं बताया और वहां जाते ही अक्ल आ गई।

× + ×

कांग्रेस पर सरकार का कब्जा हो गया।

—एक कांग्रेसी

उपाय ऐसा करिये कि न कभी कांग्रेस पर सरकार का कब्जा हो और न कभी सरकार पर कांग्रेस का हो।

× × ×

लायड्स बैंक के डाके में मैंने जो कुछ कहा, वह पुलिस ने कहलवाया था।

—अमोलकलाल

इस लाग लपेटे से अच्छा कहना तो यह रहता कि डाका ही पुलिस ने डलवाया था, कह देते।

× + ×

हमने जो ३ करोड़ पेड़ लगाये थे, पता चला है कि वह बड़े-बड़े हो गये हैं।

—श्री मुंशी

अपने राम को तो शक है कि कोई सीधा भी खड़ा है उनमें या नहीं।

× × ×

किसानों से ग्राम पंचायतों के द्वारा सारा गल्ला ले लिया जाय।

—डा० लोहिया

और जब आप गांव में जायें, तब किसानों से कहिये कि कन्ट्रोल भाव पर सरकार का गल्ला लेना किसान का गला घोंटना है।

× × ×

'हम दिल्ली सरकार बदलने वाले हैं' समाजवादी नारा।

और बाद दोपहर के नई दिल्ली देख कर अपने-अपने घर आन जायेंगे क्यों!

—रत्नाकर

उत्तर-प्रदेशीय सरकार के भूतपूर्व सभा सचिव चौ० चरणसिंह को न्याय और सूचना विभाग का मन्त्री नियुक्त किया गया है।

ईरान के नये वृद्ध प्रधान मन्त्री को भी मारने के लिये शत्रु घात लगाये बैठे हैं। अभी हाल में ही एक षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ हुआ है।

[पृष्ठ १६ का शेष]

दार ने हुक्म दिया और कोचवान ने घोड़ों को सरपट चाल पर छोड़ दिया, इतना तेज कि गाड़ी लड़खड़ाने लगी। पर हम लोगों ने अचरज के साथ देखा कि गाड़ी के पीछे सफेद बर्फ पर सैकड़ों भूरी छायाएं पास और पास आ रही हैं। जब वे पास आ गये तो जमींदार और नौकर ने उन पर गोलियां चलाईं। भेड़िये कुछ देर के लिए रुक गये और अपने मरे हुए साथियों को खाने में जुट गये। परमात्मा की कृपा से हमारी जान बच गई। जमींदार ने सन्तोष की सांस लेते हुए कहा। परन्तु इन शब्दों की गूंज अभी समाप्त भी न होने पाई थी कि भेड़ियों का झुंड फिर पास आता दिखाई पड़ा। थोड़ी देर में वे गाड़ी के पास दोनों ओर आ पहुंचे। घोड़े डर कर सरपट भाग रहे थे पर भेड़ियों की चाल तेज थी और वे बढ़ कर घोड़ों की टांगों को भंभोड़ने लगे।

एक घोड़े की रासें काट दो। उसे छोड़ दो। वे उसके पीछे भागेंगे तो बचने का मौका मिल जायगा जमींदार चिल्लाया।

एक घोड़े को छोड़ दिया गया। भेड़िये उसके पीछे भागे। पर कुछ ही देर में उसे मार कर खा कर फिर वापस आ गये। और घोड़ा छोड़ा गया। कोस लोव शहर दो मील रह गया था पर घोड़े थक गये थे और उनकी चाल धीमी पड़ रही थी। कोसिलोव की बत्तियां दीखने लगी थीं। और अभागे यात्री समझ रहे थे कि वे बच गये पर उसी समय दौड़ते हांफते और गुर्राते हुए भेड़िये फिर आ पहुंचे। आ कर उन्होंने गाड़ी को फिर तीन ओर से घेर लिया। बच्चा डर कर के रोने लगा और स्त्री भय के मारे थर थर कांपने लगी।

स्वामी मैं कूद जाता हूं। आप बच कर सुरक्षित कोसिलोव पहुंच जायें। एरिक बोला।

'नहीं नहीं एरिक' जमींदार ने मना करते हुए कहा।'

'यदि मैं न कूदा तो हम सब नहीं मारे जायेंगे, कहते' हुए एरिक नीचे कूद पड़ा। सैकड़ों भूखे भेड़िये उस पर एक-साथ टूट पड़े।

भेड़िया और अनाथ बच्चे

कई बार भेड़िया बच्चों को उठा ले जाता है और उन्हें मार कर खा जाने के बजाय स्नेहपूर्वक उनका पालन पोषण करता है एक दिन बात चीत करते हुए यह चर्चा चल पड़ी।

एक मित्र बोले 'क्या हम लोग सच-मुच इन बातों में विश्वास करते हैं।'

हां हां क्यों नहीं करते। हाल ही में अखबार में ऐसे लड़के के जंगल में से पकड़े जाने की खबर छपी थी।

मैंने स्वयं हैदराबाद सत्याग्रह के समय जेल में एक ऐसा युवक देखा था जिसके बारे में कहा जाता था कि वह जंगल में भेड़ियों द्वारा पाला गया था।

तब तो चिड़ियाघरों में भेड़िये के पिंजरे में बच्चा रख कर देखना चाहिए। एक मित्र बोले।

सब हंसने लगे। प्रस्ताव में गम्भीरता बिलकुल न थी।

और लगता है जंगल में भेड़ियों ने अनाथालय खोल रखे होंगे। फिर शहर में अनाथालय खोलने की आवश्यकता क्या है। फिर थोड़ा रुक कर बोले:

यदि भेड़ियों में अनाथ बच्चों को पालने का यह गुण प्रमाणित हो ही गया है तो अनाथालयों के प्रबन्ध के लिए रूस से दो तीन सौ भेड़िये ही न मंगा लिये जांय।

अब, दंगों का जोर कुछ कम हुआ। बोले शायद यही कारण है कि अनाथालय के प्रबन्धकों में भेड़िये के गुण बहुत अधिक पाये जाते हैं।

———

संगीत अमेरिकी जीवन का मुख्य अंग है

श्रीमती भानुमती

१९०८ में गुग्गनहिम ने कहा था, "मुझे अमेरिकी जनता पर दया आती है। उनके जीवन में प्रकाश नहीं है, संगीत नहीं है, और कला से सम्बन्धित विषयों में वे अभी बालक ही हैं।"

आज यह कथन सत्य से कितनी दूर है गुग्गनहिम अपने युग की अन्तिम सीढ़ी पर खड़े होकर उस काल के आकाश-मय संगीत की ओर देख रहे थे, जो मार्ग प्रदर्शक व्यक्तियों को अत्यन्त आनन्दप्रद रहा था। यदि उनमें कुछ वर्ष आगे तक देखने की शक्ति होती तो वह अमेरिकी कला के विलक्षण विकास के विषय में अधिक उत्साहपूर्ण बातें करते।

संगीत आज अमेरिकी जीवन का अविभाज्य अंग है। वहां २५० से अधिक वाद्य संगीत के सामूहिक वाद्य (सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा) हैं, जिन में कुछ तो विश्व-विख्यात हैं। व्यावसायिक संस्थाओं के अतिरिक्त कालेजों और समाजों के हजारों सामूहिक वाद्य और बैन्ड हैं। ५०० से ऊपर रेडियो स्टेशनों से हर एक की रुचि के अनुकूल संगीत सुन पड़ता है।

संगीत की वर्तमान स्थिति सौ वर्ष पूर्व के अमेरिकी संगीत से बहुत भिन्न है। उस समय तो कोई भी संगीत-सभा श्रोताओं को एक सरकस अथवा भाड़ों के अभिनय के समान लगती थी। शास्त्रीय संगीत उस समय लोकप्रिय नहीं हुआ था और संगीत सभा के कलाकार के युग का तब तक आरम्भ नहीं हुआ था।

थियोडोर टोमस ने सर्वप्रथम अमेरिका में वाद्य संगीत के सामूहिक वाद्य (सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा) की रचना करने में और जनता को उच्चकोटि का संगीत सुनाने में अपना जीवन अर्पित किया। उसके उपरान्त विकास की गति अत्यन्त तीव्र रही। आज अमेरिका संगीत के क्षेत्र में प्रौढ़ हो चुका है। सौ वर्ष पूर्व जहां एक स्वर भी सुनाई नहीं पड़ता था, वही शहर आज गर्व से अपने वाद्य संगीत के सामूहिक वाद्य (सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा) की गाथा गाते हैं। देश के हर कोने में संगीत रचयिता हैं और अमेरिकी संगीतज्ञ उच्च पदों को सुशोभित कर रहे हैं।

नई धाराएं

अब धारा प्रवाह बदल गया है। जहां पहले संगीत और संगीत रचयिता यूरोप से अमेरिका लाये जाते थे, वहां आज अमेरिका अपने कलाकारों को संसार के अन्य देशों में भेजता है। अमेरिका का अद्भुत और आकर्षक पुराना संगीत भावी संगीत की धारा में मिल गया है। फिलाडेल्फिया नगर ने इस बार दूसरे वर्ष भी ५०,००० डालर संगीत के लिए दान किए। अन्य नगर भी इसी भांति दान देते रहते हैं। आज अमेरिकी संगीत के विद्यार्थियों के लिए अनेक द्वार खुले हुए हैं। अन्वेषण कर्ता छात्रों ने भी बहुत सी सामग्री एकत्रित कर ली है।

१८९३ में बोहीमियन संगीत रचयिता एन्टोनिन ड्वोरक ने अमेरिकी जनता के भावों में स्फूर्ति डाली थी। उन्होंने उन भावनाओं को व्यक्त करने का प्रयत्न किया था, जिन्हें अमेरिका से ही प्रेरणा मिली थी। इन्डियनों और हब्शियों के सरस और मधुर गानों से प्रभावित और प्रेरित होकर 'न्यू वर्ल्ड सिम्फनी" की उन्होंने रचना की। उनकी इस रचना में अमेरिकी जनता ने अपने देश का संगीत पहली बार सुना। तभी से उनकी भावनाएं भी अपने देश और स्वदेश-वासियों से प्रेरणा पाने की ओर उन्मुख हुईं।

सरस मन्त्रोच्चारण

अमेरिकी संगीतज्ञों ने सब से पहले इन्डियनों के सरस मन्त्रोच्चारण का अध्ययन किया। उस काल के प्रमुख संगीत रचयिता एडवर्ड मैक्डोवल ने सामूहिक वाद्य के लिए 'इन्डियन स्वीट' की रचना की। फिर नीग्रो संगीत और भजनों का प्रचार हुआ। किन्हीं अमेरिकी संगीत रचयिताओं ने 'शास्त्रीय जैज' का निर्माण किया। रूढ़िवादी रचयिता भी जैज की वाद्य संगीत (सिम्फनी) के रूप में रचना करने प्रबल इच्छा को दबा न सके। अमेरिकी संगीत रचयिताओं में सब से अधिक मंजे हुए रचयिता वर्जिल टौम्सन गोष्ठी संगीत (चैम्बर म्यूजिक) में भी कहीं कहीं उन भजनों और प्रचलित गानों की ध्वनि मिलती है।

युद्ध काल में अमेरिकी संगीत को और भी स्फूर्ति मिली। संसार में आज अमेरिकी संगीत रचयिताओं की रचनाएं बहुत प्रचलित हैं। अमेरिकी संगीत ने अभी यूरोप के सर्वश्रेष्ठ गीतानाटक (ओपेरा) और वाद्य संगीत जैसी प्रौढ़ता नहीं प्राप्त की है, परन्तु उस के संगीत में एक नया स्वर सुन पड़ता है और एक स्वर अमेरिका का है। ओपेरा और वाद्य संगीत की वंश परम्परा इंगलैंड से सम्बन्धित है। नीग्रो अपने गानों की लय अफ्रीका से लाए थे। स्पेन का भी संगीत पर प्रभाव पड़ा और अमेरिका के उत्तरी राज्यों में फ्रांसीसी चरवाहों के गाने अब भी गाये जाते हैं।

लूइजियाना में फ्रांस के संगीत का प्रभाव स्पष्ट दीखता है। न्यूओर्लियन्स का संगीत फ्रांस और स्पेन, नीग्रो संगीत के मिश्रण से बना। पैनसिल्वेनिया के ग्राम्य क्षेत्रों में राइनलैंड से आये लोग जर्मन भजनों की शुद्ध परम्परा अपने साथ लाए। हंगरी से लोग अपने जिप्सी गाने अपने साथ लाए। मछुओं में पुर्तगाल वासी पूर्वजों से सीखे हुए गानों की परम्परा चली आई है। इटली के निवासी और यहूदी आदि पूर्वी यूरोप से अमेरिका के उत्तरी राज्यों के औद्योगिक समाज में अपना संगीत लाए। नार्वे और स्वीडन के निवासी अपना संगीत उत्तर पश्चिम प्रदेशों के मैदानों में ले गए।

दिन में १८ घंटे आप रेडियो सुन सकते हैं, उसमें से आधा समय संगीत ही दिया जाता है। अमेरिका में ६०० से अधिक रेडियो स्टेशन हैं। संगीत कार्यक्रम अधिकतर लोकप्रिय और रुचिकर संगीत का ही होता है। 'फिलहार्मोनिक' और 'मैट्रोपोलिटन' ओपेरा का साप्ताहिक प्रोग्राम लगभग १,२०,००,००० श्रोताओं तक पहुंच जाता है।

पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक ने महानन्द पब्लिकेशन्स लि. के लिए अर्जुन प्रेस दिल्ली में छपवाकर प्रकाशित किया। सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

लिए अधि-
... है।
अनाज
ों को
प्राव-
राज्यों
। वृद्धि

टन तक
,, तक
,, ,,
१ ,, ,,

१००० १९४७ १९४८ १९४९ १९५० १९५१ योजना

भारत ने अन्नसंकट की चरम सीमा पार कर ली

* श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी

ईश्वर को धन्यवाद दीजिए कि उसकी कृपा से महीनों की चिंता के बाद अब मैं इस स्थिति में पहुंचा हूं कि कह सकूं कि अकाल की स्थिति का हम जो सामना कर रहे थे, उसमें हमें काफी सफलता प्राप्त हुई है। हमारी खाद्य स्थिति में गर्मियों के महीनों में भी, जिसके प्रति हमें काफी शंका थी, सुधार हुआ है। अभावग्रस्त राज्यों में किये गये भारी कार्य, हम मित्र राष्ट्रों की स्वेच्छापूर्ण सद्भावना, जिन्होंने अपनी सहानुभूति, जहाजों और खाद्यान्नों से हमारी मदद की तथा प्रसन्नता की वह भावना जिसके साथ हमारे देशभाइयों ने कम राशन से उत्पन्न कठिनाइयों को सहन किया, वे मुख्य बातें हैं, जिनके कारण हमें यह सफलता प्राप्त हुई। सरकार के पास अन्न का स्टाक बढ़ गया है, अन्न की वसूली का काम भी देश में जोरों पर है और विदेशों से काफी अन्न मंगाने की भी व्यवस्था हो चुकी है। इन सब बातों से हमें काफी आशा होती है, किन्तु फिर भी हमें सतर्क रहना है, क्योंकि अभी भी हम खतरे के बाहर नहीं हैं। हमारी अर्थ व्यवस्था तथा स्वास्थ्य पर पड़े भार के कठिन ... भावों का हमें ... है। किन्तु यदि हम पूरा रूप से सावधान रहे, तो निश्चय ही हम भारत के निकट अतीत के अत्यधिक संकटपूर्ण काल पर विजय प्राप्त करेंगे।

निर्यातक देश

आप को यह जानने में दिलचस्पी होगी कि हमारे लिए अन्न कहां से आ रहा है। हमें सब से अधिक अन्न अमेरिका से प्राप्त होगा और आशा है कि हम उससे लगभग १७ लाख टन अन्न प्राप्त करेंगे, जिसमें ३ ... टन वह कोटा भी शामिल है, जो हमें रियायती शर्तों पर दिया गया है। इसके बाद इस प्रकार से अन्न प्राप्त होगा—अर्जेंटाइना से २,१३,००० टन, स्याम से ३,४३,००० टन, बर्मा से ३,९३,००० टन, रूस से १,००,००० टन, पाकिस्तान से २,१८,००० टन, कनाडा से २,३६,००० टन, आस्ट्रेलिया से २,५०,००० टन, उरुगुए से ३०,००० टन, और इसके अतिरिक्त अत्यधिक संकट में चीन से हमें ठीक समय पर शीघ्र ही अन्न देने का प्रस्ताव मिला। अब तक हम उनसे २,१०,००० अन्न खरीद चुके हैं। हम उनके मित्रतापूर्ण सकेत का हार्दिक समादर करते हैं। इस प्रकार कुल ... कर हम कोई ४० लाख टन से अधिक अन्न खरीदेंगे।

पिछले दिसम्बर में, जब हमारी खाद्य-सम्बन्धी स्थिति बहुत ही शोचनीय अवस्था में थी, हमने अमरीकी सरकार से ऋण और रियायती शर्तों पर २० लाख टन गेहूं देने की प्रार्थना की थी। अमेरिका के राष्ट्रपति से लेकर निम्न श्रेणियों के अधिकारियों तक ने, जिनमें भारत स्थित अमेरिकन दूतावास के अधिकारी भी सम्मिलित हैं, कठिनाई के समय में हमारी सहायता करने के लिए भारी प्रयत्न किया है। अमेरिका से जो यह २० लाख टन अन्न प्राप्त होगा, वह उस अन्न के अलावा है, जिसका उल्लेख मैं पहले कर चुका हूं। इस प्रकार अमेरिका के इस अन्न को मिला कर हमारे पास पर्याप्त अन्न हो जायगा, जिससे सारे देश में खाद्य स्थिति सुधर जायगी।

जहाजों की सहायता

अमेरिका और ब्रिटेन से हमें जहाजों की जो सहायता प्राप्त हुई है, उसका मैं ... की दशा पूरी तरह से सुधर जायेगी। यह आवश्यक है कि कमी वाले सभी स्थानों तक पहुंचने का दृढ़ प्रयत्न किया जाय और विशाल मात्रा में वहां अन्न

पहुंचाया जाय, जिससे कि जमा किया हुआ अन्न बाहर निकल आये और गरीब लोग सस्ते मूल्य पर अनाज खरीद सकें। ... लोगों में अनाज खरीदने के ... न लोगों के पास रुपया नहीं

...	७२ हजार से	,२०००० ,,
जम्मू काश्मीर	२००००	,, ४०००० ,,
मैसूर	७२०००	,, १२२००० ,,
राजस्थान	शून्य से	२०००० ,,
सौराष्ट्र	२०००० ,,	१००००० ,,
ट्रावनकोर कोचीन	३२१००० से	४००००
विन्ध्य प्रदेश	शून्य से	१०००० ,,
आसाम	२४००० से	१००००० ,,

अब मैं एक घोषणा करना चाहता हूं। हम इन राज्यों को अधिकार दे रहे हैं कि वे अपने अन्न के स्टाकों को देखते हुए, शीघ्र से शीघ्र किसी सुविधा जनक तारीख से, राशन की मात्रा ९ औंस से बढ़ा कर १२ औंस कर दें। इच्छा न होते हुए भी हमको साल के शुरू में राशन की मात्रा १२ औंस से घटा कर ९ औंस करनी पड़ी थी, परन्तु इसका फल अच्छा ही निकला। हम संकट काल से पार हो गये।

———

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार १० आषाढ़ सम्वत् २००८ [अङ्क ९

लोकतन्त्र में नागरिक की परीक्षा

यद्यपि अभी तक चुनावों के सम्बन्ध में समय आदि की निश्चित अधिकृत सूचना प्रकाशित नहीं हुई, देश में चुनावों की हलचल प्रारम्भ हो चुकी है। भिन्न-भिन्न प्रदेशों में स्थानीय और केन्द्रीय राजनीतिक दलों का निर्माण होने लगा है और अखबारों में चुनाव प्रायः प्रतिदिन की चर्चा का विषय बन गया है। स्थान-स्थान पर सभाएं होने लगी हैं, जिनका उद्देश्य भावी चुनाव में नागरिकों से मत प्राप्त ही होता है। विभिन्न राजनैतिक दल अपने-अपने चुनाव के घोषणापत्र प्रकाशित कर चुके हैं या करने वाले हैं। चुनाव के नारे भी चुने जाने लगे हैं और चुनाव के लिए मत पेटिकाओं के चिन्ह भी तय किये जाने लगे हैं। आचार्य कृपलानी ने पटना में शंखनाद किया है, पंजाब में भारतीय जनसंघ ने रणभेरी बजाई है। समाजवादी तो विविध प्रदर्शनों के आयोजन करके बहुत समय पूर्व ही वर्तमान सरकार को पछाड़ने का नारा लगाने लगे हैं। कांग्रेस आपसी संघर्ष के कारण अभी तक चुनाव संग्राम में बाकायदा नहीं कूदी, किन्तु वह उदासीन नहीं है। उसके पार्लमेण्टरी बोर्ड का चुनाव हो चुका है, घोषणापत्र पर अन्तिम मुहर बंगलोर में लग जायगी। पं० नेहरू ने पटना में आचार्य कृपलानी को जवाब देकर वस्तुतः चुनाव प्रचार का सूत्रपात कर भी दिया है। हिन्दू महासभा और रामराज्य परिषद् भी अखाड़े में उतर चुकी हैं। कम्यूनिस्ट जनवादी दल के नाम से मैदान में आ रहा है। फारवर्ड ब्लाक, डिमोक्रेटिक स्वराज्य पार्टी, उत्तर प्रदेश में जमींदारों की जनता पार्टी आदि दल भी अपने-अपने हथियार लेकर मैदान में आ रहे हैं। अनेक दल निकट भविष्य में जन्म लेने वाले हैं।

लोकतन्त्र शासन पद्धति में प्रत्येक नागरिक को मत देकर अपने देश की सरकार के निर्माण में भाग लेने का अधिकार है। यह हमारे सौभाग्य की बात है कि भारत में रूस आदि देशों की भांति तानाशाही या एक पार्टी का अस्तित्व नहीं है। यहां आज किसी भी देश की अपेक्षा नागरिक स्वतन्त्रता कम नहीं है। इसीलिए आगामी चुनाव में अधिकार के साथ साथ नागरिकों पर भारी जिम्मेवारी आ जाती है और उसी की ओर हम अपने पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं।

चुनाव में प्रत्येक उम्मीदवार या उसकी पार्टी नये-नये आकर्षक नारों और अच्छे बुरे सभी प्रकार के प्रचार साधनों से अपना पक्ष पुष्ट करने की और नागरिकों से वोट लेने का प्रयत्न करती है। एक से एक बढ़िया नारे और लच्छेदार भाषण नागरिकों के सामने आयेंगे। सभी उम्मेदवार विरोधी पक्ष की कठोर आलोचना करेंगे और तरह-तरह के सुनहले दृश्य खींच कर आपको मीठे-मीठे आश्वासन देंगे। यह सब कुछ स्वाभाविक है।

किन्तु यहीं मतदाता नागरिक की परीक्षा है। उसे किसी तरह के नारे के प्रवाह में बहना नहीं है। उसे स्वयं प्रत्येक प्रश्न पर विचार करना है। उसे सुननी सब की है, फिर यह निर्णय करना है कि वोट का भिक्षुक ईमानदार है या नहीं, जो कहता है, वह केवल प्रवंचना तो नहीं है, वस्तुस्थिति और यथार्थ के विपरीत तो नहीं है? केवल काल्पनिक नारा तो नहीं है? इसी लिए हम अपने प्रत्येक पाठक से आज यह कहना चाहते हैं कि वह संसार और देश की परिस्थितियों को सामने रख कर प्रत्येक राजनैतिक दल के नारे, घोषणापत्र, सिद्धान्त और आश्वासन पर विचार करे और फिर अपना मत निर्धारित करे। लोकतन्त्र में नागरिक की ही परीक्षा होती है।

★

समझौते की कसौटी

पं० जवाहरलाल ने पूर्वी बंगाल में हिन्दुओं की बिगड़ती हुई स्थिति को बचाने के लिए पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री लियाकतअली के साथ जो समझौता किया था, उसकी सफलता का ढोल बहुत पीटा गया था, किन्तु वह वस्तुतः कितना सफल हुआ, इसकी एक झांकी प्रो० समर गुहा ने एक छोटी सी पुस्तिका में चित्रित की है। विभाजन से पूर्व ढाका की ६० फीसदी आबादी हिन्दू थी। म्यूनिसिपिल कमेटी के १७ निर्वाचित सदस्यों में से १० हिन्दू थे और ७१७५ हिन्दू घर थे, आज केवल ६२० घर हिन्दुओं द्वारा आबाद हैं २७६ में बुढ़िया औरतें रहती हैं और शेष पर सरकार का अधिकार है। १७६६ दुकानों में से केवल १२७ दुकानें आज हिन्दुओं के पास हैं। ६२५० हिन्दू लड़कों और २०७४ लड़कियों में से आज वहां केवल १४२ और २५ लड़के और लड़कियां पढ़ती हैं। जगन्नाथ कालेज में पहले ८२६ हिन्दू छात्र पढ़ते थे, आज केवल ६१ गैर मुस्लिम छात्र हैं। ढाका विश्वविद्यालय में जहां पहले ६० फीसदी हिन्दू छात्र थे, आज १२०० विद्यार्थियों में से केवल १२ छात्र हिन्दू हैं। १९४७ ई० में वहां १८० हिन्दू वकील थे, आज वहां ६६ वकील हैं, किन्तु उनमें से कुछ ही वकील सपरिवार रहते हैं, शेष के परिवार पश्चिमी बंगाल में रहते हैं। यह स्थिति है, उस ढाका की, जो पूर्वी बंगाल की राजधानी है और जहां पाकिस्तान सरकार की सारी मशीनरी विद्यमान है। राजधानी से दूर अन्य स्थानों में तो स्थिति इससे कई गुना खराब होगी। यह स्थिति नेहरू लियाकत समझौते पर स्वयं बड़ी टीका है और भारत सरकार को अपनी नीति पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित कर सकती है।

———

भयकर विस्फोट

ब्रिटिश कम्पनी के सुझावों को ठुकरा कर ईरान सरकार ने तेल के राष्ट्रीयकरण को क्रियारूप में परिणत करने के लिए जो कदम उठाये हैं, उससे स्थिति अत्यन्त विषम हो गई है। ईरान सरकार ने कम्पनी के प्रबन्ध को गैर कानूनी स्वीकार करके सब कुछ प्रबन्ध अपने हाथों में ले लेने की आज्ञाएं जारी कर दी हैं। अब ब्रिटिश सरकार ने हेग के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय से यह मामला हाथ में लेने की प्रार्थना की है। वह न्यायालय क्या करेगा, और क्या कर सकता है? यह अभी नहीं कहा जा सकता। किन्तु नई विषम स्थिति में कभी भी बम विस्फोट हो सकता है। आज ईरान जैसा राष्ट्र, जिसके पास न सामरिक क्षमता है और न आर्थिक साधन, ब्रिटेन जैसी शक्ति से उलझ रहा है, किसी न किसी आधार पर ही और वह आधार सिवाय रूसी आश्वासन के और कोई नहीं हो सकता। गत महायुद्ध के बाद ब्रिटेन की स्थिति निरन्तर दुर्बल होती जा रही है। उसके हाथ से भारत के निकल जाने के कारण वह आर्थिक और सामरिक दृष्टि से बहुत दुर्बल हो गया है। ईरान मध्यपूर्व में मुस्लिम धर्मान्धता का लाभ उठा कर किसी भी समय ब्रिटेन के विरुद्ध वातावरण उत्पन्न कर सकता है। यदि ब्रिटेन ने किसी भी समय बल का प्रयोग किया, तो रूस की ईरान को सहायता अनिवार्य ही है। और मध्यपूर्व में कोरिया से भी भयंकर व्यापक विस्फोट होकर रहेगा। ब्रिटेन के राजनीतिज्ञ इस संकट को दूर करने में कहां तक सफल होंगे, यह इतिहास के विद्यार्थी के लिए अत्यन्त मनोरंजक पहेली है।

———

संशोधनों पर कानूनी आपत्ति

भारत सरकार ने देश के प्रायः सभी राजनीतिक दलों के मत की अवहेलना करके भी संसद् में पर्याप्त बहुमत का लाभ उठाकर संविधान में संशोधन करा लिया था। अब कुछ जमींदारों ने इसकी अवैधता पर कानूनी आपत्ति खड़ी करके देश के उच्चतम न्यायालय से इन संशोधनों को अवैध घोषित करने की मांग की है। उच्चतम न्यायालय के विद्वान् न्यायाधीश क्या निर्णय देंगे, यह तो नहीं कहा जा सकता, किन्तु यदि उनका निर्णय सरकारी पक्ष के विपरीत रहा, तो स्थिति अत्यन्त मनोरंजक हो जायगी।

———

कांग्रेस का मंत्रिमडल

पंजाब में कांग्रेस के नेताओं ने जो विषम और शोचनीय परिस्थिति पैदा कर दी, उसका परिणाम अब सामने आया है। कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल को अलग होना पड़ा और वहां समस्त शासनसूत्र राष्ट्रपति को अपने हाथ में लेने पड़े। पंजाब की जनता भ्रष्ट शासन के कारण दुःखी थी और इसलिए वह अपने अधिकार छिन जाने पर भी दुःखी नहीं हुई। प्रायः सर्वत्र पंजाब में इस पर हर्ष प्रकट किया गया है। इससे राजनैतिक नेताओं को यह शिक्षा ले लेनी चाहिए कि जनता नाम नहीं, काम देखती है और जनता का विश्वास सम्पादन करने के लिए स्वार्थ को छोड़ कर उसकी सेवा में ही प्रयत्नशील रहना चाहिए।

———

हिन्दू साम्राज्य दिवसोत्सव

★ श्री आनन्द

लगभग तीन शताब्दि पूर्व जब सह्याद्रि की पर्वतमालाओं की गोद में कुछ थोड़े से बालकों ने समस्त भारत वर्ष को विदेशी शासन से मुक्त करने का बीड़ा उठाया था, तब देश के वीर और राजनीतिज्ञ कहलाने वाले अधिकांश व्यक्ति उनके विचार को सुन कर हंस पड़े थे, और उसे 'युवावस्था की मूर्खता' अथवा 'पागलपन' कह दिया था। और जब इन पागलों ने यथार्थ में कुछ करके दिखाना आरम्भ किया तो उनका 'पागलपन' ठीक करने के लिये विदेशी शासकों के संकेत पर कितने ही वीरों ने अपनी ओर से कोई कसर भी नहीं उठा रखी थी। किन्तु पागल तो पागल ही थे।

भारत वर्ष मुगलों से पराधीन था। भारतीयों की फूट तथा गृह कलह का लाभ उठाकर मुट्ठीभर विदेशियों ने यहां प्रविष्ट होकर अपना राज्य जमा लिया था। किन्तु तुच्छ स्वार्थ में डूबे हुए हिन्दू नहीं चेते। कूटनीति सफल हुई और हिन्दुओं ने ही हिन्दुओं को परास्त कर यावनी शासन स्थापित किया, अपने हाथ से अपने गले में फंदा बांधकर रस्सी मुगलों के हाथ में दे दी। शीघ्र ही विदेशी शासन की विष बेल ने समस्त देश के जीवन को ढक लिया। सूर्य के प्रकाश के अभाव में इसकी विषाक्त छाया में सुगंधित पुष्पों के पौधे और कोमल लतायें मुरझा गईं।

औरंगजेब का शासन काल था। देश में बलात् धर्म परिवर्तन एक साधारण सी बात थी। शिखा और यज्ञोपवीत के मूलोच्छेदन का प्रयास था। हिन्दू ललनाओं का अपहरण प्रतिदिन की बात थी। मन्दिरों को मस्जिदों में बदला जा रहा था क्षत्रिय वर्ग मुगलों की आधीनता स्वीकार कर चुका था। उनमें इतना साहस ही न था कि प्रतिकार करता। मुगल साम्राज्य की विशाल शक्ति से अकेला टक्कर कौन लेता? एक दूसरे की चुगलखोरी कर मुगल दरबार में अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने में ही हिन्दू सरदार लगे हुए थे। दासता की हीन तम भावना से भरी हुई 'दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा' कहावत प्रचलित हो चुकी थी।

ऐसे ही भीषण काल में एक बालक के हृदय में भारतीय स्वातन्त्र्य की ज्वाला धधक उठी। वीर माता के पुत्र ने स्वधर्म तथा स्वदेश के प्रति जिस उत्कट स्वाभिमान को उसकी धमनियों में भरा था उसने विदेशी शासक के संमुख सिर झुकाना अस्वीकार कर दिया। उसकी बाल भुजा ने गौ पर हाथ उठाते हुए कसाई का सिर एक ही वार में काट कर बीजापुर के बाजार में फेंक दिया। और पिता ने जब बीजापुर दरबार की सेवा में ही नियोजित करने का प्रयास किया तो बीजापुर ही छोड़ कर चला आया।

उसके साथ ही सह्याद्रि की पर्वत मालाओं में भी लहर फैल गई। बालक अब युवक बन रहा था। उसकी तीक्ष्ण बुद्धि ने शीघ्र ही समझ लिया कि दो चार गोवध कर्ताओं को प्राणदण्ड देने से यह समस्या हल नहीं होती। समस्या बहुत अधिक व्यापक है! और इसके मूल में है अपने देशवासियों की आत्माभिमानशून्यता तथा विदेशी शासन जो इस आत्माभिमान को जाग्रत न होने देने के लिए, इस समाज को नष्ट कर डालने के लिए प्रत्येक प्रयत्न कर रहा है। इस असह्य स्थिति के निराकरण का एक ही उपाय है—विदेशी शासन की जड़ें उखाड़ फेंकी जांय, विशाल मुगल साम्राज्य को चूर चूर कर दिया जाय, अन्य कोई नहीं। और उसने एक महान स्वप्न को सत्य करने का प्रण कर डाला।

सह्याद्रि की पर्वत मालाओं में भारतीय स्वातन्त्र्यध्वज का अधिष्ठान हुआ। पर्वतों में घूम कर उसने अपनी छोटी सी सेना संगठित की। तब एक दिन पहिला दुर्ग इन पागलों के हाथ आया। उसके पश्चात तो दुर्ग पर दुर्ग हस्तगत होते गए। यह सारी सफलता बिना रक्त बहाये थी। इसका श्रेय उसी युवक की अप्रतिम बुद्धिमत्ता और कूटनीति को था। कुछ ही समय में उसने एक विशाल भूखण्ड पर विदेशी सत्ता को समाप्त कर दिया। समर्थ श्री गुरु रामदास स्वामी का आशीर्वाद उसके साथ था।

उसकी इन विजयों ने बीजापुर दरबार में खलबली मचा दी। एक के पश्चात् एक कर अनेक सरदार इस विद्रोह को शान्त करने के लिये भेजे गये किन्तु सभी बुरी तरह पराजित हुए। अन्त में प्रसिद्ध अफजल खां ने उसे जीवित अथवा मृत पकड़ने का बीड़ा उठाया। किन्तु प्रतापगढ़ की भवानी पर वह भी बलि चढ़ा दिया। उस वीर के चर्चों ने बीजापुर राज्य को जर्जरित कर दिया। अतः अन्त में बीजापुर सुलतान ने उससे सन्धि कर ली।

किन्तु हिन्दुओं के इस नवोदित सूर्य की किरणें दिल्ली तक पहुँच चुकी थीं। औरंगजेब को यह प्रकाश असह्य था। इधर उस महावीर ने भी विशाल मुगल साम्राज्य को ही खोद फेंकने का निश्चय किया। औरंगजेब का दक्षिणस्थित सूबेदार परास्त हुआ। शाइस्ता खां को अपने प्राण ले भाग कर ही प्राणरक्षा की। जसवन्तसिंह उसके भय से त्रस्त रहा। अन्त में बादशाह ने स्वयं अपने मामा शाइस्ता खां को भेजा। किन्तु अपने पुत्र का सिर और हाथ की दो अंगुली देकर उसे भी पूना से भागना पड़ा।

इन महान विजयों से जहां दिल्ली के विशाल मुगल साम्राज्य की नींव हिल उठी, औरंगजेब की नींद हराम हो गई, वहां भारतभर के समस्त हिन्दुओं का ध्यान इस महावीर पर केन्द्रित हो गया। जगदीश्वर की होड़ करने वाले सर्वशक्तिमान मुगल सम्राट् को इस प्रकार ठोकरें मारने वाला सिंह सभी के आदर और श्रद्धा का पात्र बन उठा। इसीलिए दक्षिण से संपूर्ण भारतविजय अति कठिन समझ कर राजा जयसिंह द्वारा भेजे हुए औरंगजेब के निमन्त्रण को स्वीकार कर उसने मुगल दरबार में ही मुगल सत्ता का तख्त उलटने के विचार से उत्तर की ओर प्रस्थान किया।

इतिहास साक्षी है कि मुगल दरबार में उपस्थित हिन्दू सरदारों में साहस तथा राष्ट्राभिमान की भावना क्षीण होने के कारण शिवाजी का यह स्वप्न सफल न हो पाया। तो भी उन्होंने औरंगजेब के भिजवाये समस्त जल्लाद खां का इतिहास दुहराने का निश्चय किया था, किन्तु वह साध अन्त तक पूर्ण न निकला। शिवाजी बन्दी बना लिए गए।

दिल्ली की यह क्रान्ति असफल हो जाने पर औरंगजेब की आंखों में धूल झोंक कर शिवाजी कारागार से मुक्त हो कर दक्षिण पहुंचे। उन्हें पुनः पकड़ पाने के सभी प्रयत्न व्यर्थ गए। अब केवल एक ही मार्ग बचा था। यदि सारा देश विदेशियों से मुक्त न हो सका तो जितना मुक्त हुआ है उसी पर स्वतन्त्रता का ध्वज लहराया जाय। इसी दृष्टि से समर्थ श्रीरामदास स्वामी के आदेश से ज्येष्ठ शुक्ल १३, सं० १७३१ को श्री शिवाजी का अभिषेक हुआ और उन्होंने छत्रपति की उपाधि धारण की। भारतीय इतिहास

[शेष पृष्ठ २२ पर]

सत्याग्रह का श्रीगणेश

★ श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

(पिछले अंक से आगे)

डा० अन्सारी

उन दिनों दिल्ली के जिन महानुभावों से सार्वजनिक जीवन में वास्ता पड़ा, उनमें से प्रमुख डा० अन्सारी थे। डा० अन्सारी के सम्बन्ध में मेरी यह सम्मति है कि वे महान् होने के साथ साथ सज्जन भी थे—उनका दिमाग राजनीतिज्ञ का या तो हकीम जी का था, यही कारण है कि वे आदर्श चिकित्सक थे। राजनीति में वे सीधी दिशा में सोचते थे, स्पष्ट भाषा में अपने विचारों को प्रकट करते थे, और विवेकपूर्वक कार्य करते थे। वे बोल-चाल में दिल्ली के शिष्टाचार के नमूने थे; और अतिथि सेवा में प्रख्यात थे—इतने प्रख्यात थे कि बहुत से लोग उनकी दिल्ली एकान्स के टाइमस की अंग्रेजी में करने लगे थे। मकान बन्धक रखकर भी मेहमानों की सेवा करना उनका धर्म सा बन गया था। वे अत्यन्त उदार और सहृदय मानव थे। दुर्योग से उनके आकस्मिक निधन के पश्चात् मैंने उनके सम्बन्ध में अपने जो संस्मरण लिखे थे, उन्हें यहां दुहराना व्यर्थ होगा। इतना ही लिख देना पर्याप्त है कि अपने जीवन में मेरा जिन महान् व्यक्तियों से वास्ता पड़ा है, उनमें सज्जनता शिष्टता और महानुभावता के लिये यदि कोई दो व्यक्ति ऐसे हैं, जो एक दूसरे की बराबरी कर सकते हैं, तो वे डा० अन्सारी और डा० राजेन्द्रप्रसाद हैं। मेरा यह विश्वास है कि यदि डा० अन्सारी १९४० में जीवित होते तो सम्भव है, वे ही हमारे पहले राष्ट्रपति बनाये जाते, और यदि पहला नम्बर डा० राजेन्द्रप्रसादजी को मिलता तो दूसरा, अवश्य ही डा० अन्सारी को प्राप्त होता।

डा० शंकरलाल स्वदेशी स्टोर वाले

यह भी एक भाग्यपूर्ण घटना थी कि दिल्ली के राजनीतिक जीवन में प्रवेश करने के साथ ही जिस सज्जन से मेरा प्रथम सम्पर्क हुआ, वे डा० शंकरलालजी थे, जो उन दिनों स्वदेशी स्टोर वाले कहलाते थे। वे उन दिनों कांग्रेस की गाड़ी के ड्राइवर समझे जाते थे। कल पुर्जों का नियन्त्रण उन्हीं के हाथ में था। उनका स्वदेशी स्टोर क्या था, मानों शहर भर की सार्वजनिक प्रवृत्तियों का हैड क्वार्टर था। दिन भर कार्यकर्ता आते और जाते रहते थे। डा० शंकरलालजी अपनी कुर्सी पर बैठे बैठे दिल्ली और दिल्ली से बाहिर के, राजनीतिक और अन्य व्यक्ति और संस्थाओं पर खुली और चटपटी सम्मतियां देते और निर्देश जारी करते रहते थे। 'गुलत' 'चुगद' आदि शब्द मैंने पहले पहल स्वदेशी स्टोर में ही सुने थे। गुरुकुल के सर्वथा अलग वातावरण में रहने के कारण मैं इन परिभाषाओं से सर्वथा अपरिचित सा था। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ था कि उस चौपाल में बैठनेवालों से लेकर साधारण कार्यकर्ता तक के प्रायः सभी देशभक्तों के लिये कोई न कोई चलता हुआ उपनाम तैयार रहता था। कभी-कभी ऊंचे स्वर में ऐसे शब्द भी प्रयुक्त होते रहते थे जिन्हें लौकिक भाषा में 'गाली' कहा जाता है। इन विशेषताओं के कारण वहीं स्वदेशी स्टोर एक नवागन्तुक को आश्चर्य की वस्तु प्रतीत होती थी, वहां नगर के सर्वसाधारण कार्यकर्ताओं के लिये वह आकर्षण का केन्द्र था। उस स्थान की यह विशेषता थी कि वहां इकट्ठे होने वाले कार्यकर्ताओं में मुसलमानों की अधिकता रहती थी। लालाजी आर्य-समाज और आर्यसमाजियों से विशेष रूप से असन्तुष्ट रहते थे, इस कारण मैं सत्याग्रह समिति का मन्त्री बनकर भी स्वदेशी स्टोर क्लब की अन्तरंग का सदस्य न बन सका। फिर भी मेरे हृदय में डा० शंकरलालजी की उग्र देशभक्ति निर्भिकता, और कर्मण्यता के विषय में पर्याप्त आदर भाव उत्पन्न हो गया था। मैं उन्हें कांग्रेस में अपना सीनियर मानने लगा था। स्टोर का वातावरण मेरे लिये अनुकूल और रुचिकर न होने से मेरा वहां जाना कम होता था। बनारसी कृष्णा मैन्शन के किसी कमरे में सत्याग्रह समिति का जो कार्यालय बनाया गया था, हम लोगों का मिलना प्रायः वहीं होता था।

मौलाना अब्दुल्ला चूड़ेवाले

यदि सम्भव होता, तो मैं लाला शंकरलाल और मौलाना अब्दुल्ला चूड़ी वाले के सम्बन्ध में इकट्ठी ही चर्चा करता, परन्तु दोनों के गुण-अवगुण अलग-अलग थे, इसलिए दो पैरे बनाने पड़े, परन्तु व्यवहार में वे दोनों उन दिनों एक प्राण दो शरीर बने हुए थे, जब तक मौलाना अब्दुल्ला बिल-कुल साम्प्रदायिक आंधी में बह कर हत्यारे डा० अब्दुलरशीद की सफाई के प्रमुख कार्यकर्ता नहीं बन गये। पर एक बात कहे बिना मेरा दिल नहीं मानता कि उस समय के कांग्रेस कर्मियों में सबसे अद्भुत और दिलचस्प व्यक्ति मौलाना अब्दुल्ला थे। नये युग के जिन कांग्रे-सियों ने मौलाना को नहीं देखा, वे उनका पूरा-पूरा अनुमान नहीं लगा सकेंगे। उनका कद लम्बा सा, रंग गोरा, आंखें भूरी, शरीर सुडौल तथा स्वस्थ और चेहरा गुलाबी रंग का लिये था। यह तो उनका बाह्य रूप, उनका आन्तरिक रूप तब प्रकट होता था, जब वह जबान खोलते थे, उसमें से ऐसी जोरदार, लच्छेदार और गालीदार भाषा की बौछार होती थी कि श्रोता लोग सब काम धन्धा छोड़ कर उधर ही देखने लगते थे। मैंने पहले पहल उन्हें सत्याग्रह समिति की एक बैठक में देखा। उनका जो पहला वाक्य मैंने सुना वह लगभग ऐसा था—"इस साले बनिये ने हमें ऐसी मुसीबत में डाल दिया कि जी चाहता है इसे पकड़ कर झिंझोड़ डालूं। पेट भर गोश्त खाने वाले को बकरी बनाना चाहता है। एक हम हैं कि बनने को तैयार हैं।"

आप इसका यह अभिप्राय न समझें कि वह मुसलमानों के सत्याग्रही बनने का विरोध कर रहे थे। वह स्वयं अहिंसा का व्रत लेकर सत्याग्रही बन गये थे और अन्य मुसलमानों को भर्ती कर रहे थे। सत्याग्रह युग के प्रारम्भिक १२ वर्षों में मौलाना अब्दुल्ला कांग्रेस की प्राय सभी क्रियात्मक योजनाओं के प्रधान संयोजक रहे, परन्तु रहे इसी भाषा और इसी भावना के साथ। मौलाना की एक विशेषता यह थी कि कार्य का संगठन करने में अद्वितीय थे। आप काम करने में अथक थे और दूसरों से डट कर काम लेते थे। काम करते समय आदमी या पैसे का कितना व्यय होता है, इसकी कभी पर्वा नहीं करते थे। स्वयंसेवक लोग उनकी गालियों और झाड़ से बेतरह डरते थे, परन्तु उनकी शाहखर्ची से प्रसन्न रहते थे। मौलाना जिससे नाराज होते थे, उसे डांटते हुए शब्दों की ऐसी बौछार करते थे कि उसमें पानी की बूंदों, ओलों या पत्थरों को अलग-अलग करना कठिन होता था। "जी चाहता है, तेरा खून पी जाऊं" यह तो उनका मानो तकिया कलाम था। उन दिनों एक पत्रकार ने उनकी उपमा लेनिन से की थी। इस उपमा में कमी इतनी ही थी कि कर्मण्यता में शायद लेनिन के बराबर होते हुए भी मौलाना फिलासफी से कोई वास्ता नहीं रखते थे। देशभक्त या नीति में उन्होंने एक ही को गुरु मान रखा था, और वह थे डा० शंकरलाल। लाला शंकरलाल और मौलाना अब्दुल्ला की जोड़ी लगभग १२ वर्षों तक दिल्ली की राजनीति पर छाई रही।

हड़ताल और गोलीकाण्ड

सत्याग्रह की घोषणा के पश्चात् देश में और दिल्ली में घटनाओं का जो चक्र चला, यहां उसका उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं। मुझे तो केवल उन्हीं स्मृतियों का उल्लेख करना है, जिनका मेरे सार्वजनिक जीवन से सम्बन्ध है। रौलट ऐक्ट पर असन्तोष प्रकट करने के लिये दिल्ली में जो हड़ताल हुई, और उसी सिलसिले में गोलीकांड की जो घटना हुई, वह भारत के इतिहास का अंग बन चुकी है, क्योंकि उन्होंने उस महायज्ञ का प्रारम्भ कर दिया था, जिसका अन्त सन् १९४७ के अगस्त मासमें हुआ। उस दिन वह सत्याग्रह यात्रा प्रारम्भ हुई, जिसका अन्त स्वराज्य भवन में प्रवेश के साथ हुआ। मैं अन्य करोड़ों भारत-वासियों के स्वर में स्वर मिला कर कह सकता हूं कि यह मेरा सौभाग्य था कि मैं उस यात्रा के प्रथम पर्व में भी सम्मिलित था।

महात्माजी के प्रवेश ने कांग्रेस की कार्यनीति में पूरी क्रान्ति पैदा कर दी थी। देश की राजनीति केवल फैशन की चीज न रह कर जीवन मरण की समस्या बन गई थी। जहां पहले सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का पुरस्कार फूल मालाओं के रूप में प्रकट होता था, वहां अब उन के लिए जेल और गोली को ही सबसे बड़ा पुरस्कार माना जाने लगा। इसका सबसे पहला परिणाम यह हुआ कि धनिक और मध्यम वर्ग के अधिकतर व्यक्ति कांग्रेस से ऐसे लुप्त हो गये, जैसे पतझड़ में वृक्षों के पत्ते। वे कोट पैंटधारी महानुभाव, जो पालिश किये हुए विला-यती बूट पहिन कर कांग्रेस की बैठकों में जाया करते थे, कांग्रेस को क्रान्ति-कारी जमात समझ कर सर्वथा अलग हो गये। दो एक को छोड़ कर शेष सब डाक्टर वकील और राय साहिब केवल तमाशाई बनकर अपने-अपने चौबारों परसे कांग्रेसियों के जलूस देखने का काम करने लगे, राजनीति के रूप परिवर्तन का दूसरा परिणाम यह हुआ कि देश की पुकार सर्वसाधारण जनता तक पहुंच गई। पहली हड़ताल ने ही शहर के कोने कोने में यह भाव फैला दिया कि सरकार बुरी है—और उसकी बुराई का विरोध करना हमारा कर्त्तव्य है। हड़ताल ने असंतोष की जिस भावना की चिनगारी सुलगाई थी, गोलीकांड ने उसे ज्वालाओं के रूप में परिणत कर दिया और मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि पान-तम्बाकू खा कर सन्तुष्ट रहने वाला दिल्ली शहर दो-तीन दिनों में ही धक-धक जलती हुई क्रांति का अखाड़ा बन गया।

मैंने उस युगकी प्राय. सभी घटनाओं को आंखों से देखा और एक स्वयंसेवक सदस्य की हैसियत से भाग लिया। मैंने इतिहास की अनेक क्रान्तियों के समाचार पढ़े हैं। मैं समझता हूं कि एक नगर या देश की मनोवृत्ति में प्रारम्भिक २४ घंटों में ही जैसा क्रान्तिकारी परिवर्तन दिल्ली के उस प्रारम्भिक हड़ताल ने किया, वैसा शायद ही कहीं हुआ हो।

—०—

जनसंघ की प्रगति से कांग्रेसी क्षेत्रों में खलबली

अन्य प्राँतों में भी शाखा स्थापना की माँग

श्री 'विजय'

भारतीय जनसंघ की स्थापना ने दिल्ली, पंजाब व हिमाचल प्रदेश के कांग्रेसी क्षेत्रों में खलबली मचा दी है। विभाजन के कटु अनुभव सबसे अधिक इसी प्रदेश को भोगने पड़े हैं और इसलिए यहां पर कांग्रेस की प्रतिष्ठा बहुत कम है। विभाजन के समय और उसके पश्चात् उत्पन्न हुई परिस्थिति का सामना करने में कांग्रेस पूर्णत असफल हुई और उसकी असफलता का इस प्रदेश के जीवन पर भारी प्रभाव पड़ा है। लाखों की संख्या में लोगों के आवागमन ने व्यापार, उद्योग धन्धे आदि को चौपट कर दिया, आर्थिक ढांचा टूट गया, पुनर्वास की महान् समस्या खड़ी हो गई और कांग्रेस दल तथा कांग्रेस सरकार स्थिति को संभालने में पूर्णतः असफल सिद्ध हुई।

कांग्रेस का पतन

जनसहयोग के आधार पर स्थिति को संभालने के बजाय कांग्रेस में स्वार्थ के लिए छीनाझपटी का दौर शुरू हो गया। भार्गव तथा सच्चर दल के रूप में राज्य कांग्रेस दो दलों में बट गई। इनमें से प्रत्येक एक दूसरे की टांग पकड़ कर घसीटने लगा। प्रान्त का शासन सुधारने के बजाय भार्गव दल का सारा ध्यान अपने दल को मजबूत बनाये रखने में लगा रहा और जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों द्वारा जेलों में हो रहे दुर्व्यवहार के विरुद्ध की गई प्राण त्यागी भूख हड़ताल पर उसका तख्ता पलटा और सच्चर मन्त्रिमंडल बना, तो उसे किस प्रकार अपदस्थ किया जाये, यही एकमात्र भार्गव दल की चिन्ता थी।

दूसरी ओर सच्चर ने गद्दी पा कर अपना पद प्रबल बनाने के लिए राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा कर साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन देने वाला कुख्यात सच्चर फार्मूला स्वीकार कर लिया। साथ ही भार्ग० मन्त्रिमण्डल की कोठे व इस्पात सम्बन्धी धांधली का भण्डाफोड़ कर दिया। किन्तु दलीय राजनीति में बड़ी से बड़ी गद्दगी क्षम्य है और इसी का लाभ लेकर डा० भार्गव ने अवसर पाकर सच्चर को चारों खाने चित्त कर दिया।

अन्तर्राष्ट्रीय दुर्बलता

स्वार्थ और दलबन्दी की इस खींचा-तानी ने पाकिस्तान की सीमा से लगे हुए इस महत्वपूर्ण प्रान्त की आन्तरिक स्थिति अत्यन्त दुर्बल बना रखी है। जिस प्रान्त के भारतीय वीरों ने सदा सदियों तक विदेशी आक्रमणकारियों से टक्कर ली, सिकन्दर महान् की सेना जिनकी चोटों से त्रस्त होकर भारत में आगे न बढ़ सकी, जिन्होंने पठानों और अफगानों को परास्त कर काबुल में भारत की विजयदुन्दुभी बजाई, उसी प्रान्त की आन्तरिक दुर्बलता देख कर अत्यन्त दुःख होता है। कांग्रेस की असफलता ने लोगों के हृदय में भयंकर निराशा का संचार कर दिया है। विभाजन के समय उनका सर्वस्व लूट लिया गया, स्त्रियों का वध कर दिया गया, युवतियों का अपहरण हुआ और कोई सहारा देने वाला तो क्या पूछने वाला भी न था। पाकिस्तान और मुस्लिम लीग के सम्मुख कांग्रेस के विश्वासघात से हुई घोर पराजय ने यहां के निवासियों के हृदय घोर निराशा तथा क्षोभ से भर दिये हैं।

साम्प्रदायिकता का विष

ऐसी ही स्थिति पेप्सू में भी है। सिखों के साम्प्रदायिक विष को उभारने का श्रेय यदि एक ओर अकालियों को प्राप्त है, तो दूसरी ओर कांग्रेस को भी कुछ कम प्राप्त नहीं है। सच्चर फार्मूला इसी का एक उदाहरण है। किन्तु इसके अतिरिक्त भी भार्गव तथा सच्चर दोनों ही अपने अपने दलों को बलवान् बनाये रखने के लिए इस साम्प्रदायिकता के विष-वृक्ष को सींचते रहे। यही नहीं आगामी चुनावों में अपने गिरते हुए प्रभाव को उठाने के लिए जिस प्रकार अखिल भारतीय कांग्रेस देश के मुसलमानों को अनेक प्रकार की सुविधायें देकर उनके मत अपने पक्ष में करने का यत्न कर रही है और करती रही है, उसी प्रकार पंजाब तथा पेप्सू में साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन देने का प्रयास सदा से कांग्रेस की ओर से होता रहा है।

फलस्वरूप जहां एक ओर पेप्सू में सब प्रकार से साम्प्रदायिक राज्य ही स्थापित करने के प्रयत्न हो रहे हैं, वहां पंजाब का वातावरण भी अशान्त है। कांग्रेस की ही कृपा से इस प्रदेश में सिख और शेष हिन्दू ऐसे दो वर्ग बन गये हैं, जिसके परिणामस्वरूप आये दिन झगड़े होते रहने के समाचार प्राप्त होते रहते हैं।

सुदृढ़ शासन की आवश्यकता

यथार्थ में पंजाब की स्थिति इस प्रकार की है कि यहां अत्यन्त सुदृढ़ शासन की आवश्यकता है। पाकिस्तान अपने जन्म के पूर्व से ही भारत के साथ शत्रुवत व्यवहार कर रहा है। भारत और पाकिस्तान के वर्तमान तनाव को देखते हुए कभी भी दोनों के मध्य युद्ध की स्थिति आ सकती है। परमात्मा न करे, किन्तु यदि ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई तो यह प्रदेश पुनः एक बार युद्ध की लपटों में झुलसेगा। निर्बल पंजाब में इतनी शक्ति नहीं होगी कि वह पाक लुटेरों को परास्त कर सके, यह बात इस प्रदेश के प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति को दिखाई देती है। ऐसी दशा में सुरक्षा की गम्भीर समस्या का एकमात्र हल यही दिखाई देता है कि पेप्सू व हिमाचल प्रदेश को पंजाब के साथ मिला कर एक सुदृढ़ राज्य निर्माण किया जाय।

अनिवार्य आवश्यकता

यही नहीं पुनर्निर्माण और विकास की दृष्टि से भी आन्तरिक एकता और सुदृढ़ता अति आवश्यक है। इस प्रदेश के सामने भयंकर समस्यायें हैं। पुनर्वास की समस्या अभी तक विकराल रूप में खड़ी हुई है। व्यापार और उद्योग-धन्धों को सम्भालना है। कृषि तथा उत्पादन का प्रश्न है। शिक्षा की समस्या है। अन्य अनेकों प्रश्न हैं जिन्हें ठीक प्रकार से सुलझाने के लिए आवश्यक है कि इस प्रदेश में एकता स्थापित हो और सुदृढ़ सरकार बने, जिसे सब का समर्थन प्राप्त हो और जिस पर जनता का विश्वास हो। कांग्रेस के द्वारा किये गए वायदे इतने झूठे सिद्ध हुए हैं कि जनता का उस पर से विश्वास ही उठ गया है।

भारतीय जन संघ इस विषय में जनता को अपनी ओर आकर्षित करता प्रतीत होता है। दिल्ली, पंजाब, पेप्सू व हिमाचल प्रदेश में सर्वत्र इसका भारी स्वागत हुआ है। प्रत्येक स्थान पर इस की शाखा खोलने के समय जनता के सभी वर्गों का सहयोग मिला है और मिल रहा है। जहां कांग्रेस की सभायें कई बार कोरम के अभाव में स्थगित हो जाती हैं, वहां जनसंघ की ओर से बुलाये गए व्यक्तियों में ९० प्रतिशत उपस्थित रहे हैं। सभी ओर से जन संघ की शाखाओं के खुलने तथा जन सहयोग मिलने के समाचार प्राप्त हो रहे हैं। ऐसा लगता है मानो जनसंघ ने एक आंधी के समान इस प्रदेश को घेर लिया है। जन संघ की यह लोकप्रियता ही कांग्रेसी क्षेत्रों में खलबली मचने का कारण है।

प्रथम विजय

यदि देखा जाय तो जनसंघ ने अपने जन्म के साथ ही अपनी प्रथम विजय प्राप्त कर ली है।

सच्चर तथा भार्गव दल के पारस्परिक झगड़े से प्रान्त का वातावरण इतना [illegible] हो गया था कि जनसंघ ने अपने जन्म के साथ ही यह मांग की थी कि पंजाब में मंत्रिमंडल को भंग कर राष्ट्रपति-शासन स्थापित कर दिया जाय। यह बात आज हो चुकी है। जनसंघ ने जिस समय यह मांग रखी थी, उस समय डा० भार्गव को भी यह कल्पना न थी कि मुख्यमन्त्री की गद्दी उन्हें इतनी जल्दी छोड़नी पड़ेगी। किन्तु यही हुआ और इसी लिए यह जनसंघ की प्रथम विजय है।

कांग्रेसी क्षेत्रों में हलचल

पंजाब के कांग्रेसी क्षेत्र यह अनुभव करने लगे हैं कि जनसंघ के विरोध में आगामी चुनाव में उन्हें पुनः गद्दी हथियाना बहुत कठिन हो जायगा। यद्यपि अभी जनसंघ का प्रारम्भिक काल है और इसका आन्दोलन अभी तक केवल जन के विस्तार तक ही सीमित है, जिसके फलस्वरूप दिल्ली के क्षेत्रों में अभी उतनी हलचल उत्पन्न नहीं हुई, तो भी जनता को इसकी ओर आकर्षित होते देख कर पंजाब कांग्रेस में पर्याप्त बेचैनी फैल गई है और वे दिल्ली का ध्यान भी इसकी ओर खींच रहे हैं। कुछ ही समय में जब इसका आन्दोलन इस समस्त प्रदेश में प्रबल हो उठेगा तो कांग्रेस कार्यकर्ताओं का जनता को अपनी ओर खींचना एक समस्या बन जायगी, ऐसा उन क्षेत्रों का विचार है।

पंजाब में जनसंघ की शाखायें, प्रमुख स्थानों से कस्बों और गांवों की ओर फैलती जा रही हैं। दिल्ली में वार्ड कमेटियां बन चुकी हैं और इसके २ में सभाओं द्वारा जनता को जनसंघ के उद्देश्य व कार्यक्रम से परिचित कराया जा रहा है। इस प्रकार की सभाओं में आशा से अधिक संख्या में लोग उपस्थित रहते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि संघ का उद्देश्य व कार्यक्रम जनता को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं।

(शेष पृष्ठ २० पर)

मुझे आपसे कुछ कहना है ——

[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार]

आचार्य जी,

न जाने कितने समय बाद उपर्युक्त शीर्षक से कुछ कहने लगा हूं। पिछले दिनों आपके जीवन में जो अप्रत्याशित परिवर्तन हुआ, उसने सचमुच मेरे हृदय पर एक बड़ा आघात किया और आपसे कुछ निवेदन करने की इच्छा इतनी बलवती हो उठी कि उसे संवरण करना असम्भव हो गया। इस लेखमाला में मैंने प्रायः उन्हीं महानुभावों से कुछ निवेदन किया है, जिनके प्रति मेरे हृदय में श्रद्धा और आस्था है और जिन तक अपना हृदय उंडेल कर रखने में मुझे यह संदेह नहीं है कि मुझे अन्यथा समझेंगे।

आचार्यजी,

आपकी राष्ट्रसेवा, देश - भक्ति, त्याग, योग्यता और निर्भीकता के गुणों का मैं सदा प्रशंसक रहा हूं। यही कारण है कि जब आप मेरठ कांग्रेस के सभापति हुए थे, मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ था और मेरी प्रसन्नता उस समय बहुत बढ़ गई, जब मैंने आपका अध्यक्ष पद से दिया गया भाषण अखबार में पढ़ा। आपने कांग्रेस की मुस्लिम-पोषिणी नीति की कठोर आलोचना करते हुए उस में क्रान्तिकारी परिवर्तन का सन्देश दिया था। नोआखाली के हृदय-विदारक काण्ड देख कर आपने गांधीजी के अनन्य अनुयायी होते हुए भी देश की मनःस्थिति को समझा था और उस समय सारा देश कांग्रेस के मंच से इस अप्रत्याशित सन्देश को सुन कर प्रसन्न हो गया था। कितनी स्पष्ट वादिता और निर्भीकता का परिचय दिया था आपने।

इसके बाद आया स्वराज्य और देश ने देखा अपने लोकप्रिय नेताओं को उन सरकारी कुर्सियों पर जिन पर बैठ कर अंग्रेज शासन करते थे। सारा देश प्रसन्न था, उसे आशा थी कि अब उसके दुःख दूर होंगे। कांग्रेस ने और गांधीजी ने देश को बहुत से आश्वासन दिये थे, त्याग और तपस्या का नया मार्ग दिखाया था। हमने आशा की कि सरकारी आडम्बर का सफेद हाथी न रहेगा, गांधीजी के आदेश से शराब देश भर में कथावस्तु रह जायगी, ग्रामोद्योगों का प्रसार होगा और इस तरह साम्यवाद का जन्म भारत में होगा। हमारे दुःख दर्द दूर होंगे। लेकिन सब कुछ वही था, सिर्फ अंग्रेजी हैट की जगह गांधी टोपी ने ले ली थी। ऐसे समय आपने कांग्रेस की अध्यक्षता से त्यागपत्र दे दिया। मैंने और मेरे साथ बहुत से साथियों ने आपकी स्थिति को समझा। आप ऐसे शासन में सहयोग नहीं दे सकते थे, जो कांग्रेस के नाम से चलता हो किन्तु जिसमें कांग्रेस की नीति, गांधीवाद और देश को दिये गये आश्वासनों की अवहेलना की जाती हो। आप नेहरू सरकार से संघर्ष में सफल नहीं हुए, किन्तु आपने त्यागपत्र देकर अपने को उत्तरदायित्व से बरी कर दिया। आपके हृदय द्वन्द्व को मैं कुछ कुछ समझ सकता हूं और आपने कांग्रेस अध्यक्षता के गौरवपूर्ण पद को भी अपने सिद्धान्तों के लिए लात मार दी। यह आपकी विजय थी।

इसके बाद देश ने एक मूर्ख हिन्दू द्वारा हिन्दुत्व के सबसे बड़े प्रतीक राष्ट्र-पितामह म० गांधी की हत्या का समाचार सुना। उस समय सब कांग्रेसी नेताओं ने, जिनमें अग्रणी नेहरूजी थे, गांधीजी की आत्मा, भावना और उसके सन्देश के अमर रहने की घोषणा बीसों बार की। गांधी स्मारक निधि की भी स्थापना हुई, किन्तु दो चार महीने बीते कि सारा देश गांधीजी को भूल गया और वे कांग्रेसी नेता भी भूल गये जो उन्हीं के त्याग, तप और बलिदान के कारण जेलों से निकल कर सरकारी कुर्सियों पर बैठे थे। और मैं यह आज आप से कहने में कोई संकोच नहीं देखता कि नेहरू जी इस दृष्टि से सबसे बड़े अपराधी हैं। वे चाहते तो देश के शासन व्यय और ठाठबाठ को कम करके करोड़ों रुपया बचा सकते थे, गांधीजी का आदेश मान कर कण्ट्रोल परमिट को खतम करके देश में से अनाचार, भ्रष्टाचार और चोरबाजारी को दूर कर सकते थे और उद्योगपतियों के हाथ में सरकार को न खेलने देकर ग्रामोद्योगों का विकास कर सकते थे। किन्तु यह सब कुछ न हुआ। गांधी जी का काम न रहा, सिर्फ नाम रहा। और सच पूछो तो नेहरू जी को भी दोष कैसे दें, उनकी शिक्षा दीक्षा सब विदेशी वातावरण में हुई, उनमें भारतीय संस्कृति के वे संस्कार ही न थे, जिन का पुनरुज्जीवन गांधीजी करना चाहते थे। परिणाम यह हुआ कि गांधीस्मारक कोष भी रह गया। देश ने उनकी जय बोल कर उनके ऋण से उऋण होने का सुलभ पा लिया था। ऐसे दिन थे, जब इन पंक्तियों के लेखक ने जयपुर कांग्रेस में आपके दो भाषण सुने थे। उन भाषणों में आपने अपना हृदय उंडेल दिया था। देश की कृतघ्नता पर आपके हृदयस्पर्शी उद्गार सचमुच किसी को आपकी सचाई और भावनाओं के प्रति आपको सश्रद्धा का कायल कर देने को काफी थे। गांधी - आश्रम के आजीवन साथ रह कर रचनात्मक कार्य की गांधी भावना को आप समझ पाये थे, इसमें कोई अस्वाभाविकता भी न थी। आपने भारतीय हृदय का ही सच्चा प्रतिबिम्बित किया था। और प्रेस प्रतिनिधियों की पंक्ति में बैठे हुए मैं यह सोच कर आश्वस्त हुआ कि गांधीवाद मरा नहीं, आचार्य कृपलानी उसे जीवित रखेंगे।

× × ×

इसके बाद - इसके बाद की कहानी बहुत अच्छी नहीं है और सच कहूं तो मेरे हृदय को वह दुःख पहुंचाती है। कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव का प्रश्न आया। कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने श्री शंकरराव देव का नाम पेश किया। वे कांग्रेस को शासन यन्त्र की कठपुतली बने रहने से न बचा सकते, इस धारणा से जनता ने श्रद्धेय टण्डन जी का नाम प्रस्तुत किया। वे भी गांधीवादी हैं और अपनी बात पर आग्रह कर सकते हैं, इसलिए देश ने समझा कि शायद जो काम आप अपने अध्यक्षत्व काल में नेहरूजी से नपवा न करा सके, वह टण्डनजी करा सकेंगे। मुख्य प्रश्न भी एक था कि कांग्रेस का अध्यक्ष नेहरू जी का 'जीहजूर' न बने। आपने भी इसी सिद्धान्त पर पहले त्यागपत्र दिया था। ठीक चुनाव के समय आपका नाम पेश कर दिया गया। हमारा—कम से कम इन पंक्तियों के लेखक का खयाल था कि आप व टण्डन जी में कोई मौलिक भेद नहीं है। टण्डन जी जीत गये, क्योंकि देश नेहरू सरकार के गांधीवाद-विरोधी तत्वों से दुःखी था और वह ऐसा नेता चाहता था, जिसमें निष्कलंक चरित्र के साथ साथ अपनी बात पर अड़नेकी क्षमता हो और वह गुण टण्डनजी में थे, इसलिये वे चुन लिये गये। दलबन्दी का भी इसमें हाथ रहा होगा, इसमें सन्देह नहीं किन्तु चुनाव में आप असफल हो गये और इसके बाद आप अपने हृदय का सन्तुलन खो बैठे। श्री टण्डन जी की विजय पर आप उन्हें बधाई देते और सच्चे खिलाड़ी की तरह अपनी पराजय को सहते, इसके बजाय आपने उनकी विजय को प्रतिगामिता की विजय, कांग्रेस में प्रतिगामी तत्वों की सत्ता का रूप दिया। अब तक आपको पं० नेहरू से शिकायत थी अब सरदार पटेल आपकी आलोचना के शिकार बन गये। आप अपनी पराजय से बौखला गये और यहीं से आपके जीवन में उस अवांछनीय अध्याय का प्रारम्भ होता है, जो मुझे और मेरे जैसे आपके भक्तों को दुःख देता है फिर कांग्रेस में डिमोक्रेटिक फ्रन्ट बना और आपको वे सब कांग्रेसी घेरने लगे, जो किसी न किसी स्वार्थ के कारण अधिकारी कांग्रेसियों से असंतुष्ट थे। कोई मंत्री पद से हट गया था किसी को प्रान्तीय कांग्रेस के चुनाव में सफलता न मिली। इन सब के असंतोष का कारण, आप मेरी अपेक्षा ज्यादा भली भांति समझते हैं कि कांग्रेस में भ्रष्टाचार की अपेक्षा अपना-अपना स्वार्थ था। प्रजातन्त्र संस्थाओं में दलबन्दी होती है, भले ही वह वांछनीय न हो।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

कारखानों का शोर गुल

कलकत्ते की सार्वजनिक स्वास्थ्य-शाला में कुछ अनुसंधान इस विषय में हुआ है कि कारखानों में होने वाले शोर-गुल का असर कर्मचारियों की कार्यक्षमता पर कैसा पड़ता है। प्रयोग द्वारा मालूम हुआ है कि यह असर भिन्न भिन्न व्यक्तियों पर भिन्न भिन्न रूप में पड़ता है। कुछ व्यक्तियों की कार्यक्षमता तो इस शोरगुल से वस्तुतः बढ़ भी जाती है। इस प्रकार से यह निष्कर्ष निकला है कि कारखानों का शोरगुल बंद करने के लिए जो धन खर्च किया जाता है, वह बेकार सा है, क्योंकि इस शोरगुल से न तो उत्पादन पर कोई असर पड़ता है, न मजदूरों के स्वास्थ्य पर, और न उनकी श्रवण शक्ति पर।

●

भारत में विश्व-विद्यालयीय शिक्षा

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय के शिक्षा-विभाग ने हाल ही में एक पुस्तक प्रकाशित की है, जिसका नाम है "भारतीय विश्वविद्यालयों में शिक्षा—१९४७-४८"

इस पुस्तक में बताया गया है कि १९३७-३८ में, विभक्त भारत में, कालेज के विद्यार्थियों की संख्या ६१,८१० से बढ़ कर २,११,२०८ हो गई, और शिक्षा-व्यय जो १९३८-३९ में १२,१८,६६,००१ रु० और १९३८-३९ में २०,८१,४४,२१२ रु० था, बढ़कर ४२,३०,३०,१०६ रुपये हो गया।

●

समझौता नहीं दबाव

डा० पर्सिवल स्पियर तिब्बत चीन समझौते के सम्बंध में लिखते हैं —

यद्यपि समझौते में दलाई लामा का पद और उसकी सरकार का अधिकार स्वीकार किया गया है, धार्मिक स्वतन्त्रता को बनाए रखने और लामा मन्दिरों को संरक्षण देने की बात कही गई है। इसके विपरीत, साम्यवादियों के समर्थक, साम्यवादियों द्वारा नामजद, पंचन लामा को वापस लौटने और उत्तरी तिब्बत में फिर से जमने की अनुमति दी गई है।

इस प्रकार दलाई लामा पर तिब्बत के अन्दर से ही राजनैतिक दबाव डालने का रास्ता निकाल लिया गया है। सच मुच यह एक ऐसी साम्यवादी विधि है, जिसका उपयोग हाल के वर्षों में पूर्वी योरप में इतनी सफलता के साथ किया जा चुका है। पहले एक जनतन्त्रवादी शासन के साथ साम्यवादी सहयोग की बात, तब मार्क्सवादी तानाशाही को स्थापित करने वाली "शान्तिपूर्ण" क्रान्ति की चाल। यदि इस प्रसंग में आप "जनतन्त्रवादी" की जगह "आध्यात्मिक" शब्द रख दें तो यह समता स्पष्ट हो जायगी।

तिब्बत की सेना चीन की सेना में मिलाई जायेगी और तिब्बत की सरकार उस सेना के प्रवेश में सहायता करेगी। दूसरे शब्दों में, तिब्बत में चीन की एक अधिकार सेना होगी, और, समझौते की पूर्ति निश्चित करने के लिये एक सैनिक मुख्य केन्द्र और राजनैतिक तथा सैनिक परिषद।

लोगों द्वारा "मांगे गये" सुधार कार्यान्वित किए जाएंगे। इसका अर्थ तो स्पष्ट है: अर्थात् यह कि पेकिंग की सरकार तिब्बतियों पर पेकिंग की इच्छानुसार सुधार मांगने के मामले में भरोसा नहीं करती। क्या क्या मांगा जाए, यह भी सिखाया जायेगा, फूट फैलाने का कार्य चीनी कमिश्नरों द्वारा किया जाएगा। विरोधियों को डराया जाएगा और, यदि आवश्यकता हुई तो, चीनी साम्यवादी शस्त्रास्त्रों से विरोध का दमन करने के लिए काम लिया जायेगा। चीन की घटनाओं से स्पष्ट है कि चीनी साम्यवाद लाल वेशभूषा में कनफूशियनवाद नहीं किन्तु स्तालिनवाद ही साम्यवाद है। ऐसी चतुराई से पेकिंग जिन "सुधारों" को कार्यान्वित कर सकता है वे केवल साम्यवादी होंगे। यदि इन चीजों की लोगों में स्वाभाविक इच्छा होती तो चतुरता की क्या आवश्यकता होती, शारीरिक बल की क्या जरूरत? इस बात की पुष्टि तिब्बत और चीन के शासनों पर दृष्टि डालने से ही हो सकती है।

●

राष्ट्रीयकरण भी पूंजीवाद है

केवल उद्योगों के राष्ट्रीयकरण से मानव-समाज का आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक संकट नहीं दूर हो सकता। उत्पादन को केन्द्रित रख कर अगर पूंजीपतियों को हटा देते हैं, तो उसके संचालन के लिए पूंजीपति के स्थान पर एक दल का दलपति आ जायेगा। जनता की छाती पर चाहे पूंजीपति बैठ जायें, चाहे दलपति, दोनों हालतों में कोई विशेष अन्तर नहीं होता है। बल्कि जब वितरण के लिए बनियाशाही और इन्तजाम के लिए नौकरशाही अलग होती है, तो कभी-कभी दोनों की पट्टी दारी का लाभ आम लोगों को मिल भी जाता है। लेकिन राष्ट्रीयकरण से वितरण और व्यवस्था दोनों एक नौकरशाही के हाथ में चले जाती हैं, तो आपको उस लाभ से भी वंचित होना पड़ता है। वस्तुतः जनता की छाती पर पूंजीपति बैठा रहता है, तो कम से कम जनता को अपनी तकलीफ की शिकायत करने तथा आह भरने का मौका रहता है। लेकिन उसकी छाती पर जब दलपति बैठ जाता है, तो उसके लिए चूं तक करने की गुंजायश नहीं रहती।

कुछ लोग पूंजीवाद का नाश करने के लिए उद्योगों के राष्ट्रीयकरण की बात जरूरी कहते हैं, लेकिन वे पूंजीवाद को ही समझने में सारी भूल करते हैं। पूंजीवाद पूंजीपति नहीं, बल्कि वह उत्पादन का तरीका है। अगर जनता अपनी जिन्दगी के साधनों के लिए अनिवार्य रूप से पूंजी पर निर्भर करती है, तो वह पूंजीवादी आर्थिक पद्धति होती है। वस्तुतः पूंजी और श्रम दो ही उत्पादनों से उत्पादन किया जा सकता है। अगर मुख्य तथा आधारभूत सामग्री पूंजी हुई, तो वह पूंजीवाद है और अगर मुख्य तथा आधारभूत सामग्री श्रम हुआ, तो वह श्रमवादी पद्धति है। पूंजीपति को हटाने मात्र से ही पूंजीवाद का नाश नहीं हो सकता। पूंजीवाद का नाश तब ही हो सकता है, जब आप लोग पूंजी की गुलामी से मुक्त होकर श्रम के आधार पर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लें। यह गांधी के चरखे से ही हो सकता है।

●

प्रश्न—देश भक्त, राजनीतज्ञ और सर्वोदयी में क्या अन्तर है?

उत्तर—देश भक्त देश की समस्त जनता के प्रति वफादार होता है। राजनीतज्ञ केवल अपनी पार्टी व वर्ग विशेष का वफादार होता है और सर्वोदयी समस्त विश्व और मानवता के कल्याण की सोचता है। पर वर्तमान में जिसे पद न मिलता हो देशभक्त, जो पदासीन हो वह राजनीतज्ञ और जो गाय भैंस का दूध पी जाने लगे वह सर्वोदयी कहा जाता है।

———

मैं क्या चाहता हूं—(४)

★ एक भिक्षुक

म० गांधी के अमर बलिदान के बाद उनके प्रति श्रद्धा व भक्ति की जो लहर देश में चली, सम्भवतः उसका एक परिणाम था सभी अदालतों में उनके चित्र लग गये। यह स्वाभाविक था। राष्ट्रदेव गांधी इस सम्मान के योग्य थे।

किन्तु आज मैं सरकार से और उसके न्यायविभाग से मैं यह प्रार्थना करना चाहता हूं कि वह सब अदालतों से म० गांधी के चित्र उतरवा दे। और ऐसी प्रार्थना में उनके प्रति असम्मान की भावना रत्ती भर भी मुझमें नहीं है।

न्यायालय न्याय के स्थान हैं, जहां दूध और पानी, सत्य और असत्य, पुण्य और पाप का विवेक होना चाहिए और ऐसे पुण्य स्थान म० गांधी के चित्र के लिए उपयुक्त स्थान हैं।

किन्तु आज की अदालतें क्या सचमुच इतनी पवित्र हैं? दुर्भाग्य से स्थिति इसके बिलकुल विपरीत है। सच तो यह है कि प्राय. ये अदालतें, झूठ, रिश्वत, धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार आदि के जितने बड़े अड्डे हैं, उतना शायद सरकार का कोई और महकमा नहीं होगा। रत्ती भर काम रिश्वत के बिना नहीं होता। इसके अपराधी वहां के कर्मचारी हैं, वकील हैं, गवाह हैं, वादी हैं, प्रतिवादी हैं और वह सारी व्यवस्था है, जो पंचायतों को नष्ट कर विदेशी शासन को दृढ़ करने के लिए वहां की गई थी।

और ऐसी अदालतों में म० गांधी जैसी सत्यमूर्ति का चित्र उनका उपहास है, भारी विडम्बना है।

कल के भारतीय प्रदेश में

पूर्वी पाकिस्तान में भी हमारा हिंदुस्तान : लीग विरोधी नया दल
पाकिस्तानी प्रेस कमीनेपन पर : रावलपिण्डी षड्यन्त्र केस

'हिन्दुस्तान हमारा' नामक हाल ही में पश्चिमी पाकिस्तान में स्थापित भारत विरोधी संगठन की पूर्वी पाकिस्तान में भी शाखा स्थापित की गई है। लाहौर के समाचार पत्रों ने इसके उद्घाटन सम्बन्धी समाचार प्रकाशित किये हैं। ढाका में उक्त दल का कार्य-क्रम इश्तिहारों द्वारा घोषित किया गया।

लाहौर का एक पत्र लिखता है कि ऐसी अफवाहें फैली हैं कि भारत में हिन्दू-महासभा पाकिस्तान पर आक्रमण करने के लिए डा० राजेन्द्र प्रसाद से आज्ञा मांगेगी। यह भी आशा है कि महा-सभा डा० श्यामाप्रसाद के नेतृत्व में पूर्वी बंगाल पर आक्रमण करेगी। अतः पाकिस्तानियों को अपनी प्रत्येक इंच भूमि की रक्षा के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

यह पाकिस्तान में हो रहे भारत-विरोधी प्रचार का एक छोटा उदाहरण है।

× × ×

पाकिस्तानी प्रेस की यह प्रवृत्ति है कि वह पाकिस्तान की प्रत्येक कमी का दोष भारत के सिर मढ़ देता है। साथ ही भारत के विषय में मनगढ़न्त अथवा अतिरंजित ऐसे समाचार प्रकाशित करता है, जो भारत को बदनाम करने के उद्देश्य से ही रहते हैं। पाकिस्तान को आये दिन ही भारत में मुसलमानों से द्वेष करते दिखाई देते हैं। इसी प्रकार पाकिस्तान की हिन्दू-विनाशक कार्यवाहियों को ढकने के लिए भारत के हिन्दू-उन्मूलन की कार्यवाही ठीक प्रकार से न करने का दोषी ठहराया गया है, और इस खोज का श्रेय स्वयं "डान" को प्राप्त है।

कम्यूनिस्टों के समान ही पाकिस्तानी अधिकारी भी यह समझते हैं कि अपने विरोधी को सदा गाली देना और उसके किसी भी कार्य में दोष देखते रहना चाहिए। इसी प्रकार उनका यह भी विश्वास है कि बार-बार बोल कर एक झूठ को सोलह आने सच बनाया जा सकता है। और इसके लिए प्रेस सबसे अच्छा साधन है। अतः प्रेस का यह सदुपयोग निरंतर करते रहने का उनका प्रयत्न रहता है। किन्तु इस प्रकार के प्रयत्नों की असफलता के बीज उन्हीं में छिपे हैं।

× × ×

धीरे-धीरे पाकिस्तान के सभी प्रांतों में मुस्लिम लीग के विरोध में अन्य संगठन पनप रहे हैं। हाल ही में लीग के

श्री जी एम सैयद

एक स्तम्भ श्री जी. एम. सैयद ने सिंध प्रांत में सभी विरोधी दलों को एक सबल विरोधी दल बनाने का निश्चय किया है। श्री सैयद श्री जिन्ना के पुराने साथी हैं। उनका आरोप है कि मुस्लिम लीग पाकिस्तान की समस्याओं को हल करने में पूर्णतः असफल हुई है, इसलिए अपदस्थ करना आवश्यक है।

किसी भी प्रकार के विरोध को कुचलने की सत्तारूढ़ दल की वर्तमान मनोवृत्ति के अनुकूल ही सिंध के मुख्य मंत्री श्री एम. ए. खुरो ने श्री सैयद के उक्त वक्तव्य के विषय में कहा है कि पाकिस्तान के इन शत्रुओं की चालें सफल नहीं हो सकेंगी। उन्होंने यह भी कहा कि सिंध असेम्बली में मुस्लिम लीग के अतिरिक्त कोई भी विरोधी दल नहीं है। पाकिस्तान के वर्तमान शासक लीग-विरोधियों को केवल पाकिस्तान का शत्रु ही नहीं वरन षड्यन्त्रकारी भी मानते हैं। तानाशाही का इससे बढ़ कर उदाहरण और क्या मिलेगा ?

× × ×

कुछ ही दिवस पूर्व भारत के प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने पाकिस्तान के व्यवहार से खीझ कर उसके वक्तव्यों को "झूठा" व "विकृत" कहा था। पं० नेहरू के मुंह से यद्यपि ये शब्द कठोर मालूम होते हैं, किन्तु पाकिस्तान के सत्तारूढ़ दल मुस्लिमलीग का मुख्य पत्र "डान" भारतीय प्रधान मन्त्री के विषय में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करता है यह भी देखने योग्य है।

नेहरू द्वारा ४ जून को श्री नगर में दिए गए भाषण पर टीका करते हुए "डान" ने अपने ८ जून के संस्करण में लिखा है:—

यह वह डाकू है, जिसने काश्मीरियों की आजादी लूटकर उन्हें अपनी सेना से दबाकर रखा हुआ है। यह वह लुटेरा है जो अब अपने सैनिकों की नंगी संगीनों से डराकर इस (काश्मीर) राज्य की असहाय जनता से यह घोषित कराने का इरादा रखता है कि वे उन ठोकरों को प्यार करते हैं जिन्होंने उन्हें कुचला है। कोरिया में संयुक्त राष्ट्रों ने ३८ वीं अक्षांश रेखा के ऊपर से बढ़ आने वाले डाकुओं को दंड देने के लिए युद्ध छेड़ा, परन्तु काश्मीर में डाकुओं को दंड देने के लिए वे क्या कुछ करने का इरादा रखते हैं ?

"अब केवल दलीलों में ही समय नष्ट करने के लिए नहीं रह गया है। हमारा सुझाव है कि हमारे विदेश मन्त्री तुरन्त अमेरिका पहुँचें, और यह मांग करें कि सुरक्षा परिषद् भारत को तुरन्त ही आक्रमणकारी घोषित करे, और उसे स्पष्ट तथा कड़े आदेश भेजे जायें कि यदि उस ने उसकी आज्ञा की अवहेलना की तो उसके विरुद्ध प्रतिबन्ध लगाया जायगा। हमारे विदेश मन्त्री को सुरक्षा परिषद् से यह कह देना चाहिये कि यदि उसने कोई कार्रवाई नहीं की तो पाकिस्तान अपनी कार्रवाई जरूर करेगा।"

यह "डान" का केवल अशिष्ट प्रचार मात्र ही नहीं है। इसके पीछे पाकिस्तान की निश्चित नीति है। पाकिस्तान सदा भारत के विरोध पर, मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़का कर बढ़ा और अब भी उसी पर पनपने का प्रयास कर रहा है। केवल भारत के प्रधान मंत्री इस तथ्य को नहीं समझ पाते।

× × ×

रावलपिण्डी षड्यंत्र केस से पाकिस्तानी सेना के छोटे अधिकारियों और पत्रकारों को धक्का पहुंचा है क्योंकि सार्वजनिक सुरक्षा कानून की मार किन पर न पड़ेगी यह कहना असंभव है, विशेषतः इस कारण कि मुकदमे की कार्यवाही गुप्त रखी जाएगी। एक ब्रिटिश संवाददाता का कथन है कि यदि ऐसा प्रसंग भारत में आता तो वहां अभियुक्तों को यह अधिकार होता कि भारतीय संविधान के मूलभूत अधिकारों के आधार पर स्थिति का सामना उच्च न्यायालय में अपील द्वारा किया जा सके। किन्तु पाकिस्तान में इस प्रकार की कोई सुविधा नहीं है क्योंकि पाक संविधान सभा ने अभी तक कोई संविधान तैयार ही नहीं किया है। पाकिस्तान में लीग से बाहर के लोग चाहते हैं कि पाक संविधान की रचना शीघ्रातिशीघ्र होकर वहां प्रजातन्त्र का कुछ रूप उत्पन्न हो, किन्तु सत्तारूढ़ दल बराबर इस विषय को टालता चला जा रहा है, और इतना समय हो जाने के पश्चात भी वहां कोई प्रगति करने के लक्षण नहीं हैं। कुछ क्षेत्रों का तो यहां तक विचार है कि आगामी चुनावों में पुनः सत्ता हथियाने के पूर्व मुस्लिम लीग के नेता पाक संविधान को किसी प्रकार का रूप देना नहीं चाहते।

× × ×

बराबर भड़काये जाने से पाकिस्तान में वर्ग विद्वेष की भावना कितनी बढ़ चुकी है इसका एक उदाहरण हाल ही में मिला। अहमदिया संप्रदाय के एक अफसर मेजर जनरल नसीर अहमद जो कि पाकिस्तान के विदेश मन्त्री सर मोहम्मद जफरुल्ला खां के साले हैं, रावलपिण्डी षड्यंत्र के सम्बन्ध में बन्दी बना लिया गया और लाहौर में अहमदिया संप्रदाय के विरुद्ध प्रदर्शन किए गए। फलस्वरूप उक्त संप्रदाय के विरुद्ध लोगों की भावना काफी भड़क हो गई है। कुछ लोग तो यहां तक कहते हैं कि यदि साले का षड्यन्त्र में हाथ है तो क्या सर जफरुल्ला को कोई खबर नहीं थी ! यदि यह भावना बढ़ी तो संभवतः जफरुल्ला को अपने पद से त्याग पत्र देना पड़े।

एजेन्टों की हर जगह जरूरत है—पत्र व्यवहार करें।

किसान मजदूरों के राज का नारा

आज नारों के दिन हैं और सबसे आकर्षक नारा है "किसान मजदूरों का राज"। समाजवादियों और कम्युनिस्टों के अलावा आचार्य कृपलानी ने भी अपने दल का नाम "किसान-मजदूर-प्रजा पार्टी" रख कर इसी नारे को स्वीकार किया है, लेकिन इस नारे की यथार्थता क्या है? क्या सचमुच किसान या मजदूरों का राज्य ही आदर्श है? इसका सुन्दर विवेचन इस लेख में देखिये।

★ श्री सत्यभक्त

आम चुनाव पर्वों ने यह आवाज उठाई कि भारत में किसान मजदूर राज्य होना चाहिए। भारत में किसान मजदूर ज्यादा हैं, जैसे कि हर देश में होते हैं। इसलिए चुनाव जीतने के लिए यह नारा बड़ा अच्छा है, [यह समझ कर कांग्रेस ने भी यह आवाज उठाई। छोटे लोगों की वकालत करना एक फैशन हो गया। गांधी जी ने भी कह दिया कि राष्ट्रपति के पद पर मैं एक भंगी की लड़की को देखना चाहता हूं। अमीर तो खैर ठीक, पर मध्यम श्रेणी के लोगों को भी दुरदुराया जाने लगा। म्युनिसिपल आदि चुनावों के लिए उम्मेदवार के रूप में मामूली मजदूरों को खड़ा करना जनराज्य का कार्यक्रम समझा जाने लगा। यह सीधा सा तर्काभास दिया जाने लगा कि मजदूर का भला मजदूर ही कर सकेगा, किसान का भला किसान ही कर सकेगा। इसका मतलब यह हुआ कि मूर्खों का भला मूर्ख ही कर सकेगा, बीमारों का भला बीमार ही कर सकेगा। यद्यपि इस नारे को न तर्क की गवाही मिलती है, न इतिहास की, न अनुभव की, फिर भी यह नारा चल पड़ा है। पर इसका व्यावहारिक मूल्य नहीं के बराबर है।

हां! यह है कि नेतृत्व करने के लिए हर वर्ग से आदमी आ सकते हैं इसलिए किसान वर्ग से भी आ सकते हैं, मजदूर वर्ग में से भी आ सकते हैं, दलित से भी आ सकते हैं, अपढ़ वर्ग से भी आ सकते हैं, और भी तुच्छ से तुच्छ वर्ग में से आ सकते हैं। आज वास्तविक सत्ता राष्ट्रपति या राजप्रमुखों के हाथ में नहीं है, वह है मंत्रियों के हाथ में। सो केन्द्रीय सरकार में दो हरिजन बैठे मंत्री बने हुए हैं, प्रान्तीय सरकारों में भी हैं। पर इनकी विशेषता हरिजनत्व, मजदूर या किसानपन नहीं है। विशेष मात्रा में पैदा हुई योग्यता है।

भले ही किसान मजदूर राज्य हो पर आज उसका नेतृत्व किसान मजदूर ही करेगा, यह भूल है। किसान मजदूर राज्य का पैगम्बर मार्क्स किसान मजदूर वर्ग से नहीं आया, मध्यम श्रेणी के शिक्षित वर्ग से आया, लेनिन का भी यही हाल था, स्टेलिन तो पादरी बनते बनते क्रांतिकारी बना। आज जो इस देश में वामपक्षी नेता हैं वे भी किसान मजदूर वर्ग के नहीं हैं, चाहे वे जयप्रकाश नारायण हों या आचार्य नरेन्द्र देव हों या मेहता, पटवर्धन, देसी हों या अमला देवी, सुभाष बाबू रहे हों या स्वामी सहजानन्द, इनमें किसान मजदूर कोई नहीं था।

इसमें सन्देह नहीं, कि किसान मजदूर का भला हुए बिना हम देश का भला नहीं कहा जा सकता। किसान मजदूर की उपेक्षा कर देने पर आखिर इस देश में आदमी ही कितने रह जायेंगे, जिनका भला देश का भला कहा जा सके। इसलिये उनकी उपेक्षा करने से, या उनसे संबंध कम करने से काम न चलेगा। उन की तकलीफों को समझना पड़ेगा, उनका उपाय ढूंढना पड़ेगा।

कारण

पर यह काम करे कौन? क्या मजदूर और किसान ही? वह अपनी तकलीफों का अधिक से अधिक अनुभव कर सकता है, कदाचित उस तरह दूसरा नहीं कर सकता, पर इसी से वह इलाज और पथ्य नहीं समझ सकता। यह कार्य वैद्य चिकित्सक ही कर सकता है, भले ही वह किसी भी वर्ग में से आया हो। किसान और मजदूर के हाथ में नेतृत्व सौंप देने से आज देश की समस्या हल नहीं हो पाती। इसके कारण निम्न लिखित हैं।

१—जो आदमी जिस आर्थिक वर्ग में होता है वह सिर्फ उसी वर्ग का विचार करता है। किसान को मजदूर की, व्यापारी की तथा अन्य किसी की पर्वाह नहीं होती, इसी प्रकार मजदूर को किसान आदि की पर्वाह नहीं होती। इसलिए सभी उचित व्यापक परिमाण में सहयोग नहीं कर पाते, सिर्फ एक संघर्ष पैदा कर देते।

२—स्वार्थ वृत्ति के कारण तथा व्यापक ज्ञान न होने से समग्र देश की समस्याओं का विचार न करके सिर्फ अपनी समस्या हल करना चाहते हैं। पर यह करीब ऐसी ही बात है कि सारे शरीर का बुखार दूर न करके सिर्फ हाथ या पैर का बुखार दूर करना। इससे सफलता नहीं मिलती।

३—बहुत सी हड़तालें इसी संकुचित वृत्ति का परिणाम होती हैं। मजदूर सिर्फ अपनी मजदूरी बढ़वा लेना चाहते हैं। वे यह नहीं सोचते कि इसका असर वस्तुओं के उत्पादन पर पड़ेगा इसलिये महंगाई बढ़ेगी। दूसरे क्षेत्र के लोग भी इसी अनुपात में मजदूरी या आमदनी बढ़वायेंगे, इस प्रकार महंगाई बढ़ने से आमदनी बढ़ने का कुछ अर्थ न होगा।

४—वे बहुत जल्दी प्रलोभन में आ जाते हैं। अगर उन्हें व्यक्तिगत या अपने झुंडे से वर्ग के तात्कालिक लाभ का प्रलोभन दिया जाय तो देश के सामूहिक हित का ध्यान न रख सकेंगे।

५—जो मजदूर कुछ ऊंचे दर्जे के होते हैं, साधारण मजदूर से कुछ अधिक कमा लेते हैं, वे आर्थिक समानता के कार्यक्रम को प्रायः पसन्द नहीं करते। अपनी इस ज्यादा आमदनी में पूंजीवादियों का सहयोग देख कर वे प्रायः उन्हीं के समर्थक हो जाते हैं।

६—साधारण किसान मजदूर एक तो इतना पढ़ा लिखा नहीं होता कि वह देश की या विश्व की सब समस्याओं पर व्यापक दृष्टि से विचार कर सके, दूसरे उसके पास इतना समय भी नहीं होता कि वह इस अध्ययन या नेतृत्व के लिए तैयार हो सके।

७—योग्यता के बिना ही नेतृत्व मिल जाने से अहंकार ईर्ष्या, दम्भ आदि पैदा होते हैं। इससे संगठन सहयोग आदि नष्ट हो जाते हैं।

८—अयोग्यता के कारण प्राप्त अधिकारों का दुरुपयोग होता है।

इन सब बातों के विचार से यह तो विचार ही छोड़ देना चाहिये कि मजदूरों का नेतृत्व मजदूर करे, किसानों का नेतृत्व किसान ही करें।

तब ?

तब सवाल यह खड़ा होता है कि क्या किसानों का नेतृत्व जमींदार ही करें और मजूरों का नेतृत्व पूंजीपति करें?

वास्तव में यह बात भी नहीं है। सच बात यह है कि आर्थिक दृष्टि से जो वर्ग बने हुए हैं, उनमें से कोई भी वर्ग इसका अधिकारी नहीं है। हर वर्ग के अधिकारी साधुता और ब्राह्मणता पा कर नेतृत्व के अधिकारी बन सकते हैं।

साधु का अर्थ किसी साम्प्रदायिक साधुवेष को स्वीकार करने वाला नहीं है, ब्राह्मण का अर्थ ब्राह्मण के घर में पैदा होने वाला नहीं है, किन्तु साधु का अर्थ है जन सेवा के किसी क्षेत्र के लिये जीवन समर्पित करने वाला, और ब्राह्मण का अर्थ है योग्य और आवश्यक विद्वत्ता प्राप्त करने वाला।

इस साधु ब्राह्मण वर्ग में ज्यादातर मध्यम श्रेणी के लोग आते हैं, अपवाद रूप में श्रीमन्त वर्ग और किसान मजदूर वर्ग से भी लोग आते हैं। पर सच बात तो यह है कि वे साधु ब्राह्मण बन जाने पर अपने आर्थिक वर्ग के पक्षपात से रहित हो जाते हैं।

इन लोगों की मजदूरी आदि बढ़ा का कोई रिश्ता नहीं बनता, क्योंकि वे मजदूर आदि नहीं होते, इनका किसी एक आर्थिक वर्ग से सम्बन्ध नहीं होता। इसलिए सम्पूर्ण देश के हित का वे ध्यान रख सकते हैं, किसी एक वर्ग का ही नहीं नेतृत्व ही इनका मुख्य कार्य होता है इसलिए क्रान्ति के शस्त्र के ये अच्छे ज्ञाता होते हैं। इनकी दृष्टि सर्वतोमुखी होती है।

इसलिए किसान मजदूर राज्य की ही स्थापना करना हो तो भी उसके लिये एक साधु ब्राह्मण वर्ग को सबल करना होगा और उसका नेतृत्व करना होगा।

निस्संदेह इसके लिए हमें देश की आम जनता को जगाना है, मताधिकार के सदुपयोग का ज्ञान देना है, उसके बिना उनके नेतृत्व में कुछ ही न आयगा, पर नेतृत्व स्वीकार करना है साधु ब्राह्मणों को अर्थात् विद्वान साधुओं को किसी एक आर्थिक वर्ग के स्वार्थ में फंसे हुए लोग देश का ठीक नेतृत्व नहीं कर सकते।

भारत का चक्रवर्ती साम्राज्य ऐतिहासिक तथ्य है

★ श्री पण्डित शिवदयालु

स्वर्गीय लौह पुरुष वल्लभ भाई पटेल ने अपने निधन से पूर्व गर्वोक्ति में यह कहा था कि भारत वर्ष में आज से पूर्व कभी इतना बड़ा राज्य नहीं हुआ। लौह-पुरुष की इस भ्रमपूर्ण धारणा को चैलेन्ज किया गया था, किन्तु उन्होंने मौन धारण कर लिया। आज पुनः भारत के राष्ट्रपति माननीय बाबू राजेन्द्र प्रसादजी ने, जो भारतीय इतिहास के पुनः संशोधित रूप में लिखे जाने का आयोजन कर रहे हैं, उसी पटेल जी वाली गर्वोक्ति को पुनः दोहराया है।

मैं नहीं समझता इतने गम्भीर विचारशील अनुभवी विद्वान् भी इस प्रकार की नितान्त मिथ्या, जातीय अपमानकारक बातें कहने की हिम्मत कैसे करते हैं।

अंग्रेज़ों द्वारा भारत का इतिहास लिखा गया है उसमें उसने चन्द्रगुप्त मौर्य से पूर्वकालीन भारत के इतिहास को 'दि हिस्टोरिक एज' की कथाओं से पुकारा है। ऐसा करने में उसका तो गूढ़ एवं कुटिल आशय था। भारत के प्राचीन वैभव, प्राचीन विशाल साम्राज्य की सत्यता से इन्कार करने में ही उसका अभीष्ट सिद्ध होता था। भारत वासियों में आत्मगौरव, स्वाभिमान एवं गौरव का भाव जाग्रत न हो, यह उसका ध्येय था और प्रत्येक विदेशी का ऐसा भाव हुआ ही करता है। किन्तु स्वतन्त्र देश के नागरिकों का दृष्टिकोण तो इससे सर्वथा भिन्न होना। किन्तु न जाने क्यों आज दिन हमारे देश के शासक एवं नेता जो स्वदेशी होने का, भारतीय संस्कृति के पुजारी बनने का, भारतीयता के उपासक होने का अभिमान दम भरते हैं, इस प्रकार की अयथार्थ राष्ट्रीय अपमानकारक बातें सार्वजनिक सभाओं में कहने का साहस करते हैं।

मेरी सम्मति में इसका एकमात्र कारण यही है कि यह लोग भले ही स्वदेशी हों, वेषभूषा भी स्वदेशीय धारण करते हों, किन्तु मस्तिष्क अभी वही विदेशी है, मस्तिष्क पर संस्कार आज भी उसी एंग्लो मुस्लिम संस्कृति के बने हुए हैं। विचार धाराएं अभी वही हैं जो गौरांग महाप्रभुओं ने निर्मित की थीं। आज के शासक एवं नेता निश्चय ही स्वदनजी के शब्दों में अंग्रेजों के मानस पुत्र हैं। जिस समय तक इनके मस्तिष्क का आधार वेद एवं वैदिक संस्कृति नहीं बन जाता तथा अंग्रेजों की मानसिक दासता तज कर ये भारत के प्राचीन ऋषियों के अनुचर नहीं बन जाते, इसी प्रकार की समय कुसमय अनर्गल अलीक असत्य आवनाएं एवं घोषणाएं करते रहेंगे। आज आवश्यकता है इस विदेशी मानसिक दासता से डट कर लोहा लेने की। अंग्रेजों की रची हुई नितान्त मिथ्या भावनाओं एवं विचार तरंगों का सर्वथा निराकरण एवं निर्मूलन करने की।

भारत का समस्त प्राचीन आर्य साहित्य एक स्वर से पुकार रहा है कि युगयुगान्तरों से अखिल विश्व में भारतवासियों का सार्वभौम चक्रवर्ती आधिपत्य रहा है। अब से ५००० वर्ष पूर्व जब कि पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ का सङ्कल्प किया था तो चारों दिशाओं में अर्जुन भीम आदि ने दिग्विजय यात्रा की थी और संसार के सर्व राष्ट्रों को करदीकरण किया था और एशिया यूरोप अमरीका आदि भूखण्डों के छोटे बड़े समस्त अधिपतियों ने प्रसन्नता पूर्वक धर्मराज युधिष्ठिर के ऐन्द्र महाभिषेक में अपने-अपने ध्वज एवं उपकरण भेंट की थी।

महाभारत के उपरान्त सम्राट परीक्षित पर नागदेश के महाराज तक्षक ने आक्रमण किया था और उनका वध किया था जिसका बदला उनके पुत्र सम्राट जनमेजय ने लिया और ऐसा सर्पमेध यज्ञ किया कि नागवंश का एक बार तो मूलोच्छेदन ही कर दिया। नाग देश को पराजित करने के उपरान्त जनमेजय ने ऐन्द्र महाभिषेक का आयोजन किया। कवष ऋषि के पुत्र तुरष के अधिष्ठातृत्व में महाभिषेक किया गया। विश्व विजय के चिन्ह स्वरूप सुनहरी आभूषणों से युक्त विद्युत्वेग गामी चित्र वर्ण अश्व को एक ऊंचे मञ्च पर ध्वज सहित प्रदर्शित किया गया।

जनमेजय के उपरान्त भी जब मिश्र देश की सम्राज्ञी ने द्रोह करके ४२००००० सेना से भारत पर आक्रमण किया था तो सम्राट् सुवत ने उसका सामना किया और इस बुरी तरह से सम्राज्ञी मिस सेमीरेमिस को परास्त किया कि केवल २० सैनिक भाग्य से वापिस लौट पाए थे (देखो भारत का प्राचीन इतिहास प्रोफेसर रामदेव कृत)

विश्व विजेता यवन सुन्दर के आक्रमण की गाथा कौन नहीं जानता जब कि मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त ने उसका सामना किया और इस विजेता को पराजित होना पड़ा और उसके सेनाध्यक्ष सैल्यूकस को अपनी कन्या सम्राट को विवाह में भेंट करनी पड़ी।

महाभारत कालीन भारतकी सीमाएं पूर्व में ब्रह्मा, स्याम, कम्बोज, अनाम, चीन तक थीं। पश्चिम में अफगानिस्तान, काबुल, कन्धार, बलख, ईरान तक थी। उत्तर में नेपाल, तिब्बत पर्यन्त भारत के भूभाग थे (देखो पं० चन्द्रगुप्त विद्यालंकार कृत बृहत्तर भारत)। इस उत्तरीय सीमा के भारत के विशाल प्रांत का नाम इन्द्रलोक अथवा स्वर्गलोक था। किन्नर, नाग, गन्धर्व, असुर आदि इस प्रदेश के निवासियों की प्रमुख जातियां थीं। यहां के महाराज का उपनाम इन्द्र विख्यात था। इस स्वर्ग लोक की सबसे ऊंची शिखर का नाम स्वर्गद्वार था जिसको आज दिन ऐवरेस्ट की चोटी कहते हैं। आप्टे ने अपने कोष में भी स्पष्ट लिखा है कि दक्षिण में सेतुबन्ध रामेश्वरम् तक दण्डकारण्य प्रदेश, लंका, मलय प्रदेश, सिंहल, जावा, सुमात्रा, बाली आदि द्वीप भारत के भूभाग हैं।

महान् ऐतिहासिक अटलान्टिस तक, जिसका वर्णन हिन्दू पुराणों, कुरान, बाइबिल तक में मिलता है, एवं अफ्रीका भारत से जुड़ा हुआ था और भारत का एक प्रदेश था, भारत के सम्राट का सीधा शासन इस प्रदेश में था। पाताल देश जिसे आज दिन अमेरिका कहते हैं वह भी भारत के सार्वभौम आधिराज्य का अंग था।

कतिपय अंग्रेजों के मानस पुत्र यह भी कहा करते हैं कि सौ दो सौ ग्रामों के जमींदारों को राजा महाराजा कहने की भारत की प्रथा है। अतः चक्रवर्ती साम्राज्य का जो रूप बतलाया जाता है वह यथार्थ नहीं है। भारत के अंतर्गत ही भावों का यह चक्रवर्ती साम्राज्य था। इस प्रकार के विचार रखने वाले सज्जनों की जानकारी के लिए यह बताना आवश्यक है कि भारतवर्ष में निरर्थक ही किसी को राजा आदि की उपाधि नहीं दी जाती थी। आचार्य शुक्र ने, जो विश्व के माने हुए उच्च कोटि के राजधर्म शास्त्र के विद्वान् हैं, अपने शास्त्र में लिखा है कि एक लाख से तीन लाख कर्ष तक प्रति वर्ष जिसका राजस्व हो वह सामन्त कहाता है, ३ लाख से १० लाख तक वाला मांडलिकशासक, १० से २० लाख तक वाला राजा, २० से ५० लाख तक वाला महाराजा, ५० लाख से १ करोड़ तक वाला सम्राट, १ से दस करोड़ तक वाला सम्राट्, १० से ५० करोड़ तक वाला विराट और उससे ऊपर सार्वभौम अधिपति कहाता है।

शुक्राचार्य के काल में कर्ष १६ माशे का चांदी का सिक्का होता था तथा उस समय ६ आने मन गेहूं व २पैसा मन दूध बिकता था, तो इस हिसाब से उस समय का एक लाख कर्ष आज के सात करोड़ रुपये के बराबर हुआ। शुक्राचार्य के कथनानुसार जिस देश का कुल राजस्व ७० अरब रुपया हो उस देश का शासक सम्राट् कहा सकता है

वर्तमान भारत का राजस्व यदि केन्द्र प्रदेश तथा स्थानीय बोर्डों को भी लगाया जावे तो भी ७० अरब नहीं है। फिर भी उस राजस्व में मादक द्रव्य बिक्री कर जैसा कोई कर न था। अतः भारत का साम्राज्य निश्चय ही बहुत दूर तक फैला हुआ था।

सार्वभौमाधिपति सम्राट् भरत स्वनामधन्य दुष्यन्त महाराज के पुत्र थे। उनका जन्म विश्वामित्र ऋषि के आश्रम में वन में हुआ और वहीं उनका बाल एवं शैशव काल बीता था। उन्होंने अपने जीवन में ५ ऐन्द्र महाभिषेक किए थे।

ऐतरेय ब्राह्मणों में इन पांचों महाभिषेकों का वर्णन आता है। इन महाभिषेकों में संसार के १०१ बड़े-बड़े राजा महाराजाओं ने स्वयं अधीनता अंगीकार की थी और उसने ध्वज एवं अश्व महाभिषेकों में प्रदर्शित किए थे।

यह ऐन्द्र महाभिषेक दक्षिण ध्रुव निवासिनी तपस्विनी ममता के पुत्र दीर्घतमा महर्षि के आचार्यत्व में सम्पन्न हुए थे। प्रथम अभिषेक दक्षिण अफ्रीका के मष्णार नगर में हुआ, जहां १०० महाराजाओं ने अधीनता स्वीकार की। इस यज्ञ की दक्षिण अफ्रीका में प्रत्येक कार्यकर्ता को प्रचुर स्वर्णयुक्त १०७ हाथी दिए गए। यह नगर स्वर्ण की खानों के लिए आज भी प्रसिद्ध है तथा यह प्रदेश आज भी हाथियों का देश कहलाता है।

दूसरा अभिषेक सांची में हुआ था जो भूपाल राज्य के अन्तर्गत है जहां बौद्ध काल में एक भव्य स्तूप का निर्माण किया गया।

तीसरा यमुना तटवर्ती प्रदेश में हुआ था जहां प्रत्येक कार्यकर्ता को ७८ गौ दक्षिणा में दी गईं। यहां ७८ महाराजाओं ने दूर देशों से आकर अधीनता स्वीकार की थी।

चौथा अभिषेक इन्द्रलोक में उस स्थान पर जहां सम्राट् इन्द्र ने वृत्र नाम के पराक्रमी राक्षसराज का वध किया था किया गया। इस अभिषेक में उत्तरीय ध्रुव तक के २५ महाराजाओं ने अधीनता स्वीकार की थी।

(शेष पृष्ठ १८ पर)

उत्तरी कोरिया को हराने वाली तीन सेनाएं

आत्मसमर्पण करने वाले उत्तरी कोरियन सैनिक

उत्तरी कोरिया की कम्यूनिस्ट सेनाओं से सं० रा० संघ की स्थल, जल व वायु सेनाएं परस्पर सहयोगपूर्वक युद्ध कर रही हैं।

विशालकाय टैंकों पर स्थित तोपें शत्रु शिविरों का ध्वंस करती हैं।

पहाड़ों, नदी नालों के कारण दुर्गम उत्तरी कोरिया में विजय का प्रमुख श्रेय छतरीधारी वायु सैनिकों को है, जो अपने साथ टैंक, तोपें व ट्रक भी ले जाते हैं।

वायु सेना का एक शक्तिशाली वायुयान

जल सेना के दो विशालकाय पोत, जिन्हें जापान ने भी फिलीपीन युद्ध में प्रयुक्त किया था।

तीन विशालकाय वायुयान शत्रु का विध्वंस करके वापस लौट रहे हैं।

स्थल सेना की एक टुकड़ी शत्रु पर वार करने की ताक में।

फिल्म अभिनेताओं से

मानवता के नाम पर एक अपील

★ श्री सत्येन्द्र चतुर्वेदी

किसी देश विशेष की सभ्यता, संस्कृति अथवा यह कहिये कि उदात्त दृष्टि से सोचने पर सम्पूर्ण मानवता के प्रति प्रत्येक कलाकार, वैज्ञानिक अथवा साहित्यिक का कुछ न कुछ कर्तव्य अवश्य होता है। उसके ऊपर एक गुरुतर उत्तरदायित्व होता है कि वह अपनी कला कृति अथवा निर्मित वस्तु को सर्व साधारण जनता के सम्मुख ऐसे मंगलमय रूप में रखे, जिससे उनका कुछ हित हो, मानसिक स्तर ऊंचा हो, जीवन की जटिल समस्याओं को सुलझाने में कुछ सहायता मिले। अतः सभी क्षेत्र के के व्यक्तियों विशेषतः कलाकार तथा साहित्यिकों का यह पुनीत कर्तव्य है कि वे पूर्ण सतर्कता से अपने इष्ट लक्ष्य की ओर अग्रसर हों।

पर सम्पूर्ण विश्व की बात छोड़िये, भारत में ही चारों ओर दृष्टि दौड़ाने पर अविवाद हमें इसी निर्णय पर पहुंचना होगा कि यहां के साहित्यिक तथा कलाकार अधिकांशतः अपने गुरुतर भार से विरत ही नहीं, वरन् विमुख आचरण कर रहे हैं, तथा इस प्रकार वे देश की संस्कृति को ही नहीं, वरन् मानवता को बहुत बड़ा धक्का पहुंचा रहे हैं। निम्न उपायों से अपनी धन लिप्सा की पूर्ति के लिये वे जनता को कुरुचिपूर्ण साहित्य तथा कला का कुत्सित रूप प्रदान कर उस अक्षम्य अपराध के भागी बन रहे हैं, जिसे भावी संतति, अगर वह हासोन्मुख होने से बच गई तो कभी क्षमा न करेगी।

भारत के चलचित्रों की वर्तमान अवस्था तथा उनके नैतिक पक्ष का मूल्यांकन करने पर प्रत्येक विचारशील व्यक्ति इस निष्कर्ष पर पहुंचे बगैर नहीं रह सकता कि उनकी दशा इस समय बहुत चिन्त्य और क्षोभास्पद है, और इस अपराध के लिये केवल निर्माता व्यवसाय ही नहीं अपितु वे सभी कलाकार तथा साहित्यकार समान रूप से उत्तरदायी हैं, जो इस व्यवसाय में कार्य कर रहे हैं, क्योंकि उनका योग दान भी चित्र-निर्माण में नगण्य नहीं है।

निर्माता व्यवसायियों को तो स्वभावतः उचित अनुचित सभी उपायों से काम के भूखे रहने के कारण कभी यह सोचने विचारने का अवकाश ही नहीं मिलता कि जन-साधारण के प्रति हमारा जो उत्तरदायित्व है, उसकी पूर्ति की ओर हम तनिक भी ध्यान दे रहे हैं अथवा नहीं। सर्व साधारण दर्शक समाज की चित्तवृत्ति पर किसी चित्र विशेष का कैसा प्रभाव पड़ता है, इस ओर सेठ चित्र व्यवसायी पूर्णतः उदासीन हैं। उनको तो धन प्राप्ति से अभिप्राय है, चाहे वह नितान्त घृणित तथा दूषित उपायों द्वारा जनता का चारित्रिक तथा मानसिक स्तर गिरा कर आवे अथवा अन्य किसी उपाय के अवलम्बन द्वारा। किसी भी वस्तु का नैतिक अथवा आध्यात्मिक पक्ष तो उनके लिये उपेक्षणीय है, क्योंकि वह उनकी धन वृत्ति में सहायता नहीं करता। एक दूसरी बात और है जिसके कारण हम कह सकते हैं कि फिल्मी सेठ अपेक्षाकृत दोष के कम भागी हैं। वे व्यक्ति, जिनका उचित अनुचित सभी उपायों से धन कमाना मुख्य उद्देश्य है, कला की मौलिक कीमत को क्या जानें, उनके कुंठित और शून्य अन्तःकरण में सच्ची कला के लिए सम्मान कहां? वे कला उसके प्रेरणा स्रोत और उसके पुनीत उद्देश्य को कहां समझते हैं, और न वे इसकी आवश्यकता ही अनुभव करते हैं। परन्तु वे तो व्यवसाई हैं, उनका दोष तो फिर भी क्षम्य है।

परन्तु आधुनिक चलचित्रों से उत्पन्न विषाक्त वातावरण के लिए मुख्यतः उत्तरदायी तो अभिनेतागण हैं। आज समाज में चारों ओर जो उच्छृंखलता, अपनी संस्कृति के प्रति तिरस्कार की भावना, जीवन का एकांगी दृष्टिकोण से ही मूल्यांकन करना तथा अन्य जीवनोपयोगी उदात्त समस्याओं के प्रति शोचनीय उपेक्षा भाव वास्तविक, स्वाभाविक, तथा प्राकृतिक प्रेम के स्थान पर कामुकता जन्य तथा वासनात्मक प्रेम के विकृत और बाजारू रूप तथा नग्न चित्रण आदि सभी विकारों के कारण आज के सिनेमा ही हैं। और मानवता के प्रति किए जाने वाले इस गंभीर अपराध के अपराधी इन चित्रों में कार्य करने वाले कलाकार हैं।

यह ठीक है कि फिल्मी सेठों के समान अभिनेता तथा अभिनेत्रियों की अधिक धन प्राप्त होने की आशा में प्रत्येक प्रकार के चित्रों में चाहे उसका प्रदर्शन समाज के लिए अत्यंत हानिकारक हो अभिनय करने के लिये तैयार हो जाते हैं, परन्तु उन्हें यह सोचना चाहिए कि कलाकार होने के नाते धनोपार्जन से भी अधिक महत्वपूर्ण उनका एक उद्देश्य और है, और वह है समाज का एक स्वस्थ अंग होने की दृष्टि से समाज की उन्नति और उत्थान करने वाले कार्य करना।

अभिनेत्रियां तथा अभिनेता चित्र निर्माताओं की अपेक्षा अधिक सुसंस्कृत होते हैं वे यह भली प्रकार समझते हैं कि जनता की रुचि को विकृत करने के क्या क्या दुष्परिणाम सम्भावित हैं। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में समय समय पर प्रकाशित होने वाले उनके लेख और वक्तव्यों से भी यही प्रकट होता है तथा इसी बात पर प्रायः सभी फिल्मी कलाकार जोर देते हैं कि हम सब का उद्देश्य अपने अभिनय द्वारा सर्वसाधारण दर्शक समाज में कलात्मक सुरुचि उत्पन्न कर उनका मानसिक और नैतिक धरातल उठाना है। और यह उचित भी है तथा भारत जैसे नव स्वतन्त्रता प्राप्त देश के लिए तो यह और भी अधिक आवश्यक तथा सामयिक है कि सभी कलाकार गण अपने निहित स्वार्थ और जीवन की एकांगी समस्याओं को भूलकर दत्तचित्त होकर देश के सुदृढ़ विकास में तथा भावी संस्कृति का जिनके कन्धों पर भविष्य में देश के उत्थान का भार आने वाला है, सब भांति सभ्य, सुसंस्कृत तथा शिक्षित बनाने के पुनीत अनुष्ठान में प्राण प्रण से जुट जांय।

इसी आशय के उद्गार पिछले दिनों अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों ने प्रेस प्रतिनिधियों से बातें करते समय प्रकट भी किये थे।

किन्तु जब इनके हृदय में ऐसे उच्च विचार हैं फिर क्या कारण है कि वे निरन्तर एक ही विकारग्रस्त प्रवृत्ति के द्योतक चित्रों में कार्य किये जा रहे हैं। उन्हें यह ज्ञात होना चाहिये कि ऐसा कर के समाज में अव्यवस्था तथा उच्छृंखलता फैलाने के अतिरिक्त जनता में विकृति उत्पन्न करने के भयंकर तथा अक्षम्य अपराध के अपराधी हो रहे हैं। हम देखते हैं कि आज के चलचित्रों की कहानियों का जीवन की शाश्वत समस्याओं से किंचित मात्र भी सम्बन्ध नहीं। वासनायुक्त प्रेम के नग्न और बेहूदे चित्रण के अतिरिक्त व्यक्ति, समाज अथवा देश के आर्थिक तथा राजनैतिक उत्थान या समाज सुधार के अन्यान्य उपायों पर प्रकाश डालना आज के चित्रों के लिए सर्वथा उपेक्षणीय और त्याज्य है।

परन्तु जनता को शिक्षित, सुसंस्कृत तथा जीवन की उच्च और वास्तविक समस्याओं को समझने तथा उनका हल ढूंढ निकालने में समर्थ सिनेमा जैसे बड़े साधन का अधिक दिनों तक इस शोचनीय अवस्था में रहना कभी समाज के लिए हितकर अथवा कल्याणकर नहीं कहा जा सकता। व्यवसायी निर्मातागण तो धनलिप्सु हैं, उनके लिए तो जनता की रुचि जितनी दूषित और विकृत होगी, उतना ही लाभ होगा, हालांकि यह तात्कालिक आर्थिक लाभ अंत में उनके भी विनाश का कारण बनेगा, परन्तु फिल्म क्षेत्र में कार्य करने वाले सभी अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों से यह जोरदार शब्दों में मैं अनुरोध करता हूं कि वे स्थिति की गम्भीरता को पहचानें तथा विद्यार्थी समाज में उद्दंडता एवं उच्छृंखलता को, पारिवारिक तथा गार्हस्थ्य जीवन में अशान्तिपूर्ण कलह को तथा समाज में व्याप्त एक प्रकार की निराशा की शोचनीय स्थिति को अधिक बढ़ने से रोकें। वे स्वयं स्वेच्छा से इस प्रकार के निस्सार तथा बाजारू चित्रों में कार्य करना बन्द कर दें - अवश्यमेव प्रारम्भ में थोड़े दिन उन्हें आर्थिक हानि सहना होगी, परन्तु उनके मन में अपने उत्तरदायित्व और समाज के प्रति कर्तव्य को पहिचानने का पुनीत भाव होगा और होगी उनके अन्तःकरण में सात्विक सन्तोष की एक अपूर्व झलक। जनता की रुचि को विकृत अथवा परिष्कृत बनाने वाले तो आप ही हैं, अगर आप दृढ़तापूर्वक कटिबद्ध होकर अवांछनीय चित्रों में अभिनय करना बंद कर देंगे तथा केवल श्रेष्ठ कोटि के चित्रों में ही कार्य करेंगे, तो स्वभावतः सर्वसाधारण दर्शक समाज जिसे मानसिक खाद्य के रूप में कुछ मनोरंजन चाहिये, उच्च कोटि के चित्रों की ओर आकृष्ट होगा।

आदर्श समाज निर्माण का आप पर बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है—इस पुनीत महा यज्ञ के सफल यजमान बन कर युग-धर्म का पालन कीजिये। समाज तथा मानवता आपकी चिरऋणी रहेगी।

———

अबोध बच्चे और मानवता के भयंकर अपराधी बच्चा चोर

किसी भी माता पिता के निरीह अबोध बालकों को चुरा ले जाना ऐसा कुत्सित पाप है कठोरतम दण्ड से भी उसका प्रायश्चित नहीं हो सकता। दिल्ली पुलिस ने सुराग के जगह में कई दिन तक खाक छानने के बाद अ० भा० बच्चा चोरों के दल के एक गिरोह को पकड़ लिया। इस गिरोह में ४ स्त्रियां भी हैं। चुराये हुए १० बालक भी बरामद हुए हैं। एक सूचना के अनुसार इस दल का कारोबार बम्बई कलकत्ता और अहमदाबाद तक में भी है।

तुलसी के काव्य में लोकसंस्कृति

श्री देवकीनन्दन श्रीवास्तव

तुलसी अपने युग के सबसे सफल लोकनायक थे। यद्यपि उनका युग केवल भारत में ही नहीं अपितु सामान्यतः विश्व के सभी सभ्य देशों के लिए साहित्यिक वैभव का स्वर्णयुग था जिसने शेक्सपियर जैसे अमर कवियों को इंगलैंड जैसे देशों में जन्म दिया, किन्तु वे अन्य साहित्यकार जीवन की अधिकाधिक समस्याओं को स्पर्श करते हुये भी लोकनायकत्व की पूर्णता के अधिकारी नहीं हो पाये। इसका सबसे प्रमुख कारण यही रहा है कि प्रायः उच्च वर्ग एवं मध्यम वर्ग के क्षेत्र तक ही उनकी अभिरुचि सीमित रही, और तुलसी की भांति सामान्य जनजीवन में बिखरी हुई संस्कृति का सर्वांगीण अनुभव तथा उस अनुभव के यथेष्ट प्रकाशन में समर्थ जनभाषा पर पर्याप्त अधिकार प्राप्त करने का अवसर उन्हें नहीं मिल सका। तात्पर्य यह है कि तुलसी का असाधारण एवं अद्वितीय लोकनायकत्व अधिकांश में उनके काव्य में चित्रित एवं व्याप्त लोकसंस्कृति के ही आधार पर प्रतिष्ठित है।

तुलसी की काव्यगत लोक संस्कृति को अधिकाधिक स्पष्ट रूप में समझने के लिये उसे तीन प्रमुख आधारों पर रख कर देखा जा सकता है। १ देश २ काल और ३ वर्ण्य विषय। इनमें देश और काल की अपेक्षा वर्ण्य विषय का आधार कहीं अधिक व्यापक एवं महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी के अन्तर्गत सांस्कृतिक जीवन के अंगों का समावेश होता है। प्रथम दो आधारों में विषय की पृष्ठभूमि अथवा कोटि का ही विचार प्रधान है। अस्तु देश के आधार पर तुलसी की रचनाओं में यत्र तत्र देखे हुए सारे सांस्कृतिक चित्रों को दो वर्गों में रख सकते हैं। १ प्रादेशिक और २. व्यापक अथवा मिश्रित। प्रादेशिक के अन्तर्गत अवध, ब्रज प्रदेश तथा काशी इन तीन प्रदेशों की लोक संस्कृति प्रायः स्थान ग्रहण करती है क्योंकि ग्रन्थों में प्राप्त विवरणों से तथा जीवनवृत्त से भी स्पष्ट है कि उनका अधिकांश जीवन इन्हीं स्थानों में बीता है। गीतावली में अवध रस की, श्रीकृष्ण गीतावली में ब्रज प्रदेश की तथा कवितावली और विनयपत्रिका में कुछ स्थलों में काशी की लोक संस्कृति विशेष प्रादेशिक रूपों में चित्रित मिलती है।

काल के आधार पर तुलसी की समस्त कृतियों में प्रस्तुत सांस्कृतिक वर्णनों को दो स्थूल वर्गों में रख कर परखना युक्तिसंगत होगा। एक तो वे वर्णन जहां अतीत कालीन वातावरण को अधिकाधिक ऐतिहासिक रूप में उपस्थित करने का प्रयत्न विद्यमान है अथवा जिनमें तुलसी किसी आदर्श जीवन रचना अथवा समाज रचना का स्वरूप प्रस्तुत करना चाहते हैं, दूसरे जिनमें तुलसी ने समकालीन परम्पराओं एवं विश्वासों की ओर संकेत करने का प्रयास किया है। इनमें यथार्थ चित्रण करते हुए कहीं कहीं पर अपनी आलोचना का पुट दे देना तुलसी ने उचित समझा है। कहना न होगा कि दूसरे प्रकार के वर्णन में ही लोक संस्कृति का रूप अधिक स्वाभाविक एवं सहानुभूतिपरक मिलेगा। प्रथम वर्ग में विशेषतः रामचरितमानस और द्वितीय में लगभग अन्य सभी रचनायें रखी जा सकती हैं।

वर्ण्य विषय के आधार पर तुलसी के काव्य में लोक संस्कृति का विश्लेषण निम्नलिखित क्षेत्रों अथवा वर्गों के अन्तर्गत किया जा सकता है।

१ पारिवारिक जीवन २ त्योहार ३ संस्कार ४. विश्वास ५ व्यवसाय और कला कौशल जीवन के इन सभी व्यापारों से सम्बन्धित इन सभी क्षेत्रों पर प्रकाश डालने वाले अनेक प्रसंग एवं वर्णन तुलसी ने इतने अधिक लिखे हैं कि उन का विशद विवेचन एक स्वतन्त्र ग्रन्थ का विषय है। यहां पर दिग्दर्शन रूपमात्र ही सम्भव हो सकता है। अस्तु संक्षेप में हम क्रमशः प्रत्येक वर्ग को लेकर कतिपय अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्यों का उल्लेख करेंगे।

पारिवारिक जीवन के अन्तर्गत भारतीय परिवार के बाल-वृद्ध नर नारियों के दैनिक जीवन का कार्यक्रम, खान पान, वस्त्राभूषण, आभूषण, मनोविनोद के साधन तथा शिष्टाचार इत्यादि से सम्बन्ध रखने वाली सभी बातें आ जाती हैं। साथ ही विभिन्न वर्गों— उच्च मध्यम और निम्न तथा विभिन्न वर्णों, जातियों एवं आश्रमों के व्यक्तियों एवं समुदायों के पारिवारिक जीवन के स्वरूप में जो भेद समाज में दिखाई पड़ता है उसका संकेत करने वाले स्थल भी इसी वर्ग में आ जाते हैं। तुलसी की दृष्टि पारिवारिक जीवन की छोटी से छोटी क्रियाओं तक पहुँची है। भारतीय परिवार के अन्तर्गत शिशुओं और बालकों का दैनिक जीवन किस प्रकार के आकर्षक कृत्यों एवं वातावरण में बीतता है इसके सर्वोत्कृष्ट उदाहरण निम्नलिखित पंक्तियों में मिलते हैं।

ललित ललित लघु लघु धनु सर कर,
तैसी तरकसी, कटि कसे पट पियरे।
ललित पनहीं पांय, पैंजनी किंकिनि धुनि
सुनि सुख लहैं मनु रहे नित नियरे।
सिरसि जाल, नीरज नयन बिसाल
सुन्दर बदन ठाढ़े सुरतरु सियरे।
खेलत अवध खोरि गोली भौंरा चकडोरि
मूरति मधुर बसै तुलसी के हियरे।

'खाल पिढ़ारा', 'गोली भौंरा चकडोरि' आदि विशुद्ध भारतीय परिवार के बालकों के जीवन का जीता जागता चित्र अंकित कर रहे हैं।

भारतीय बालक थोड़ा बड़े हो जाने पर जिन खेल कूद के व्यापारों में रमता दिखाई देता है उसका तुलसी के समय में जो रूप था वह अभी तक कितने मौलिक रूप में सुरक्षित है इस बात का पता निम्नलिखित पंक्तियों से चलता है।

रामलखन इक ओर भरत
रिपुदमनलाल इक ओर भये
सरजु तीर सम सुखद भूमिथल
गनि गनि गोइयां बांट लये
कर कमलनि विचित्र चौगानें
खेलन लगे खेल रिझिये।

निम्नलिखित उदाहरण में भारतीय शिशुओं की स्वाभाविक अभिरुचि के साथ चुपरी रोटी का कैसा स्वाभाविक वर्णन है।

छोटी मोटी मीसी रोटी चिकनी
चुपरि कै तू दे री मैया।

आजकल के नई रोशनी के परिवारों में चिकनी चुपरी रोटी के स्थान में पाव बिस्कुट आदि की जो प्रवृत्ति बच्चों में दिखाई पड़ती है वह यहां की लोक संस्कृति से कितनी दूर है। आज भी अपने सांस्कृतिक ढंग से रहने वाले परिवारों के बालकों में इस प्रवृत्ति के दर्शन नहीं होते